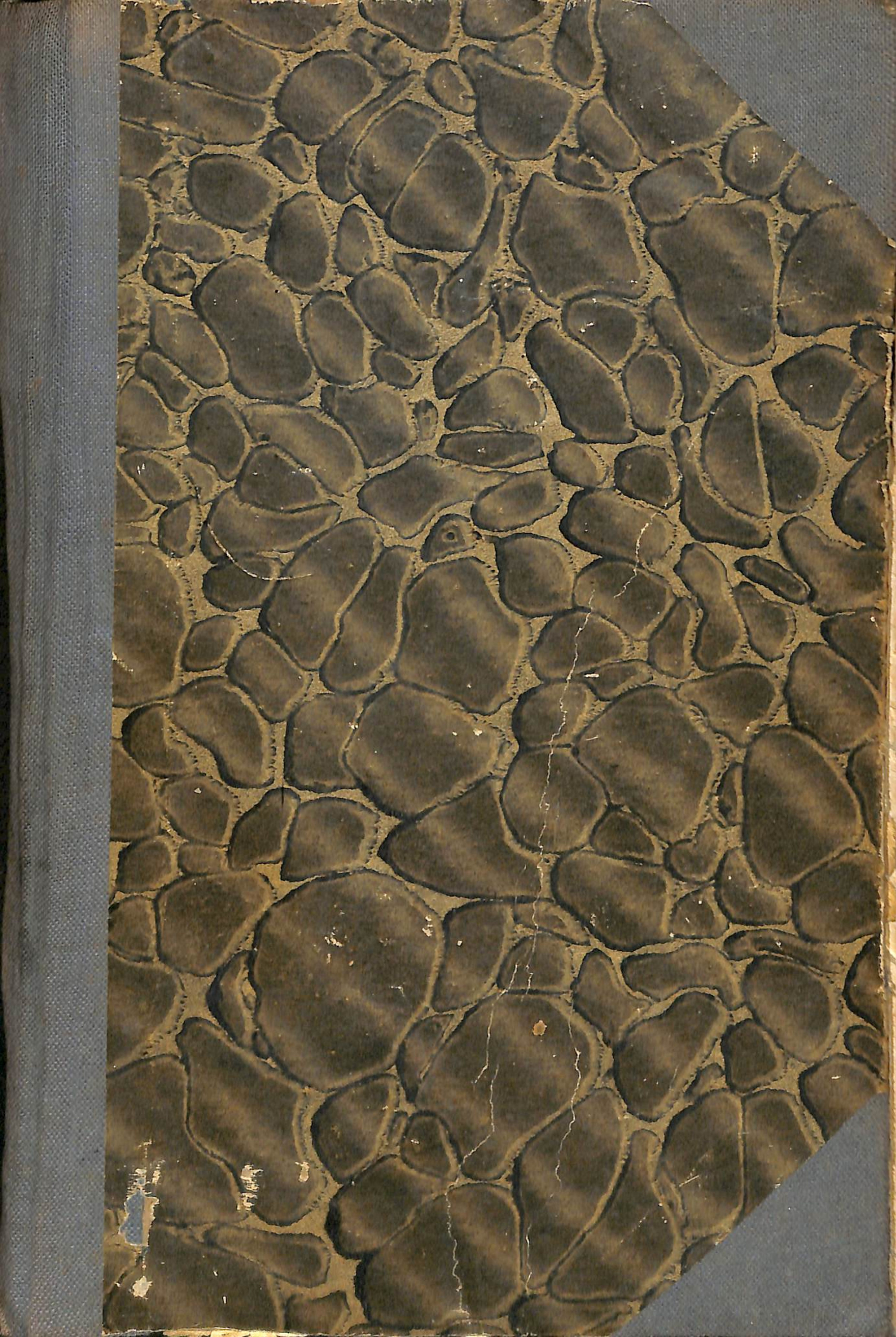


MAHABHARAT

23

15

इतिहासाःसवैयाख्या विविधाःश्रुतयोऽपिच । इहसर्वमनुक्रांतमुक्तं ग्रंन्थस्यलक्षणम् ॥ ५० ॥ विस्तीर्यैतन्महज्ज्ञान मृषिःसंक्षिप्यचाब्रवीत् । इष्टंहिविदुषांलोके समासव्यासधारणम् ॥५१॥ मन्वादिभारतंकेचिदास्तीकादि तथापरे । तथोपरिचराद्यन्ये विप्राःसम्यगधीयते ॥ ५२ ॥ विविधंसंहिताज्ञानं दीपयंतिमनीषिणः । व्याख्यातुंकुशलाःकेचिद् ग्रन्थांधारयितुंपरे ॥ ५३ ॥ तपसाब्रह्मचर्येण व्यस्यवेदंसनातनम् । इतिहासांममंचक्रे पुण्यंसत्यवतीसुतः ॥ ५४ ॥ पराशरात्मजोविद्वान् ब्रह्मर्षिःशंसितव्रतः । तदाख्यानवरिष्ठं सकृत्वाद्वैपायनःप्रभुः ॥ ५५ ॥ कथमध्यापयानीह शिष्यानित्यन्वचिंतयत् । तस्यतच्चिंतितंज्ञात्वा ऋषेर्द्वैपायनस्यच ॥ ५६ ॥ तत्राजगामभगवान् ब्रह्मालोकगुरुः स्वयम् । प्रीत्यर्थंतस्यचैवर्षे लोकानांहितकाम्यया ॥ ५७ ॥ तंदृष्ट्वा विस्मितोभूत्वा प्रांजलिःप्रणतःस्थितः । आसनंकल्पयामास सर्वैर्मुनिगणैर्वृत्तः ॥ ५८ ॥

व्याख्यासहित अनेक इतिहास, सम्पूर्ण प्रकारकी श्रुतियें इसमहाभारत में क्रमसे कही हैं, यही इसग्रन्थका विषय है ।५०। महर्षि व्यास ने इस वडेभारी ज्ञानको विस्तार और संक्षेपसे कहा है क्योंकि लोक में विद्वानों को संक्षेप और विस्तार प्रिय हैं ।५१। कोई भारत को 'नारायणं नमस्कृत्य' आदिसे आरंभ करते हैं कोई आस्तीक के चरितसे कोई वसुके चरित्रसे बतलाते हैं विद्वान लोग इस्को अच्छी तरह अध्ययन करते हैं ॥ ५२ ॥ अनेक प्रकार से संहिता के ज्ञानको विद्वान् प्रकाश करते हैं, कोई इस्की व्याख्या करनेमें चतुरहैं, कोई इसको कण्ठाग्र करते हैं ॥ ५३ ॥ तपस्या और ब्रह्मचर्य बल से सत्यवती के पुत्र व्यास ने सनातन वेदका विभाग करने के पश्चात् इस पवित्र इतिहासको बनाया ॥ ५४ ॥ पराशरके पुत्र विद्वान ब्रह्मर्षि उत्तम व्रतधारी प्रभु व्यासने इस उत्तम आख्यानकोरचकर यह बिचारकियाकि शिष्यों को किसप्रकार पढावें इसविचारको जानकर ऋषि की प्रसन्नता और लोक हितकी इच्छासे लोकके गुरू ब्रह्माजी स्वयं आये ॥५७॥ ब्रह्माजीको देखकर आश्चर्ययुक्त मुनिगण सहित नम्रता से व्यास ने ब्रह्मा जी को आसन दिया ॥५८॥ उस

Dharm, Arth and Kam, comprised in various books; the rules of conduct for mankind; histories discourses and various shrutis were known to Rishi Vyas and form the subject matter of this book. This book was prepared by Vyas, the sage, in both abridged and detailed forms. The learned like to read it in both forms. Some begin the book with the initial verse, others, with the story of Astik, others, with that of Uparichar. Learned men display their learning in either being able ts explain its meaning or to learn it by rote. Satyavati's son Vyas, by penance and meditation, having analysed the eternal Veda composed this holy history and when that learned *Brahmarshi* of rigid vows, the illustrious Vyas, son of

हिरण्यगर्भमासीनं तस्मिंस्तुपरमासने । परिवृत्यासनाभ्याशे वासवेयःस्थितोऽभवत्
॥ ५९ ॥ अनुज्ञातोऽथकृष्णस्तु ब्रह्मणापरमेष्ठिना । निषसादानाभ्याशे प्रीयमाणः
शुचिस्मितः ॥ ६० ॥उवाचसमहातेजा ब्राह्मणंपरमेष्ठिनम् । कृतंनयेदंभगवन् काव्यं
परमपूजितम् ॥ ६१ ॥ ब्रह्मन्वेदरहस्यंच यच्चान्यत्स्थापितंमया । सांगोपनिषदांचैव
वेदानांविस्तरक्रिया ॥ ६२ ॥ इतिहासपुराणाना मुन्मेषंनिर्मितंचयत् । भूतंभव्यंभ-
विष्यंच त्रिविधंकालसंज्ञितम् ॥ ६३ ॥ जरामृत्युभयव्याधि भावाभावविनिश्चयः ।
विविधस्यचधर्मस्य ह्याश्रमाणांचलक्षणम् ॥ ६४ ॥ चातुर्वर्ण्यविधानंच पुराणानांच
कृत्स्नशः । तपसोब्रह्मचर्यस्य पृथिव्याश्चन्द्रसूर्ययोः ॥ ६५ ॥ ग्रहनक्षत्रताराणां प्रमा-
णंचयुगैःसह । ऋचोयजूंषिसामानि वेदाध्यात्मंतथैवच ॥ ६६ ॥ न्यायशिक्षाचिकि
त्साच दानंपाशुपतंतथा । हेतुनैवसमंजन्म दिव्यमानुषसंज्ञितम् ॥ ६७ ॥ तीर्थानां
चैवपुण्यानां देशानांचैवकीर्तनम् । नदीनांपर्वतानांच वनानांसागरस्यच ॥ ६८ ॥

बडे आसन मे बैठे हुए ब्रह्मा जी के समीप व्यास मुनि खडे हुए ॥५९॥ ब्रह्मा जी की आज्ञा पाकर प्रसन्नता पूर्वक आसन में वैठे ॥६०॥ वडे तेजस्वी व्यास ने ब्रह्मा जी से कहा कि मैंने सर्वोत्तम काव्य वनाया है ॥६१। हे ब्रह्मन ! बेद का सार और जो कुछ और इस ग्रंथ में है अंगों सहित उपानिषदों का तत्व और वेदों का विस्तार और इतिहास और पुराण तीनों काल, वुढापा मृत्यु भयउत्पत्ति अभाव का निश्चय और अनेक प्रकारके धर्मों और आश्रमोंका लक्षण चारोंवर्णों और सम्पूर्ण पुराणों की उत्पति तपस्या ब्रह्मचर्य पृथ्वी चंद्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र तारे और युगों सहित इनका प्रमाण दान तीनों वेद अध्यात्म विद्या न्याय शिक्षा चिकित्सा परमेश्वरका महात्म्य और हेतुसहित मनुष्यों और देवताओं

Parashar had finished this, the greatest of books, he began to meditate upon the best method of teaching it to his pupils, and *Brahma*, the preceptor of mankind, knowing the anxiety of Vyas came himself to oblige the *rishi* and to benefit the world. *Vyas* was much surprised at seeing him, bowed to him with all his companion rishis and prepared him a dais When *Brahma* was seated *Vyas* peran ulated him and stood by, till allowed to sit down, his face full joy. The illustrious Sage then said:- " I have composed a great poem. The mystery of the *Vedas* and other subjects the different rites of the *Vedas* and *Upnishads*, with their branches, the *purans* and histories, the nature of decay, death, fear, disease, existence, non-existence, the creeds and the various stages of human life rules for the four castes and epitome of all the *Puranas*, asceticism and the duties of religious students, the dimensions of the sun the moon the planets, constellations and the four *Yugas*, the three *Vedas*, and

पुराणानांचैवदिव्यानां कल्पानांयुद्धकौशलम् । वाक्यजातिविशेषाश्च लोकयात्राक्रमश्चयः॥ ६९ ॥ यच्चापिसर्वगंवस्तु तच्चैवप्रतिपादितम् । परंनलेखकः कश्चिदेतस्यभुवि विद्यते ॥ ७० ॥ ब्रह्मोवाच । तपोविशिष्टादपिवै विशिष्टान्मुनिसंचयात् । मन्येश्रेष्ठतरं त्वांवै रहस्यज्ञानवेदनात् ॥ ७१ ॥ जन्मप्रभृतिसत्यांते वेद्मिगांब्रह्मवादिनीम् । त्वयाच काव्यमित्युक्तं तस्मात्काव्यंभविष्यति ॥ ७२ ॥ अस्यकाव्यस्यकवयो नसमर्थाविशेषणे विशेषणगृहस्थस्य शेषास्त्रयइवाश्रमाः ॥ ७३ ॥ काव्यस्यलेखनार्थाय गणेशः स्मर्यतांमुने । सौतिरुवाच । एवमाभाष्यतंब्रह्मा जगामस्वंनिवेशनम् ॥ ७४ ॥ ततः सस्मारहेरंबं व्यासःसत्यवतीसुतः । स्मृतमात्रोगणेशानो भक्तचिंतितपूरकः ॥ ७५ ॥ तत्राजगामविघ्नेशो वेदव्यासोयतःस्थितः । पूजितश्चोपविष्टश्च व्यासेनोक्तस्तदाऽनघ

का जन्म पवित्र तीर्थों और देशोंका कथन नदी पर्वत, वन, समुद्र, दिव्यपुरों शास्त्रों की विधि, युद्धकी कुशलता, वाक्योंकी अनेक जातियें संसार के निर्वाहका क्रम और जोकुछ और वस्तु संसार में है सब इस ग्रन्थ में प्रतिपादनकी हैं परन्तु इसकालेखक कोई नहीं मिलता ॥७०॥ ब्रह्माजीने कहा तुमको तप और कुल में बड़ा गुप्त ज्ञान के कारण मुनियों में श्रेष्ठ मानताहूँ ॥ ७१ ॥ जन्म से लेकर तुम वेदार्थ के जाननेवाले और सत्यबादीहो तुम ने इस भारतरूप आख्यानको काव्य कहाहै इसकारणसे यह काव्यही होगा । इस काव्य से बढकर और काव्य बनाने में कोई कविलोग समर्थ न होंगे । जैसे गृहस्थ आश्रम से अधिक और आश्रम नहीं ऐसेही इस काव्य से बढकर और काव्य नहीं है इस काव्य के लिखनेके वास्ते गणेशको यादकरो उग्रश्रवा सूत पुत्र ने कहा कि इसप्रकार ब्रह्माजी व्यास जीसे कहकर अपने स्थानको चलेगए ॥ ७२ । ७४ ॥ तत्पश्चात् सत्यवतीके पुत्र व्यास के स्मरण करतेही भक्तोंकी इच्छा पूर्णकरनेवाले विघ्नेश गणेश व्यासजीके समीप

the *adhyatma*, Logic, Orthoepy, Science of medicine, and *Pasupat*, births of gods and human beings and their reasons, a description of holy places of interest, rivers, mountains, forests, the Ocean cities in heavens, the divisions of time, the art of war, the nations, their languages and manners and the account of the omnipresent spirit. All these subjects I have described in this book but there is no writer—*Brahma* said " I know thou art master of the knowledge of divine mysteries, superior over other *Rishis* and sages. I know thou art from ever righteous and true. Thy work shall be a poem as thou hast called it. No other poet shall be able to compose such a poem. It shall be superior to other works as the domestic lifs is superior to other modes of life. Invoke Ganesh to write it." Brahma having thus advised him went home and *Vyas* invoked *Ganesh*, who

॥ ७६ ॥ लेखकोभारतस्यास्य भवत्वंगणनायक । मयैवप्रोच्यमानस्य मनसाकल्पितस्यच ॥ ७७ ॥ श्रुत्वैतत्प्राहविघ्नेशो यदिमेलेखनीक्षणम् । लिखतोनावतिष्ठेत तदास्यांलेखकोह्यहम् ॥ ७८ व्यासोऽप्युवाचतंदेव मबुद्धामालिखक्वचित् । ओमित्युक्त्वा गणेशोऽपि बभूवकिललेखकः ॥ ७९ ॥ ग्रंथग्रंथिंतदाचक्रे मुनिर्गूढंकुतूहलात् । यस्मिन् प्रतिज्ञयाप्राहमुनिर्द्वैपायनस्त्विदम् ॥ ८० ॥ अष्टौश्लोकसहस्राणि अष्टौश्लोकशतानिच अहंवेद्मिशुकोवेत्तिसंजयोवेत्तिवानवा ॥ ८१ ॥ तच्छ्लोककूटमद्यापि ग्रथितंसुदृढंमुने। भेत्तुंनशक्यतेऽर्थस्य गूढत्वात्प्रश्रितस्यच ॥ ८२ ॥ सर्वज्ञोऽपिगणेशो यत्क्षणमास्ते विचारयन् । तावच्चकारव्यासोऽपि श्लोकानन्यानवहूनपि ॥ ८३ ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यलोकस्यतुविचेष्टतः । ज्ञानांजनशलाकाभिर्नेत्रोन्मीलनकारकम् ॥ ८४ ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थैः समासव्यासकीर्त्तनैः । तथाभारतसूर्येणनृणांविनिहतंतमः ॥८५॥ पुराण

आगये और व्यास मुनि से पूजा किये हुए गणेश वहां बैठे व्यासजीने कहा कि हे गणेश ! मेरेबनाये हुए इस भारतको लिखो ॥ ७५ । ७७ ॥ यह सुनकर गणेश ने कहा यदि मेरी लेखनी क्षणभर भी लिखते हुए न रुके तौ मैं इसका लेखक होताहूँ ॥ ७८ ॥ व्यास ने गणेश जीसे कहा आपभी बिना समझे मत लिखिये गणेश जीने इस बात को स्वीकारकर लिखना आरम्भकिया॥७९॥व्यासमुनि नेभी ग्रंथकी गांठकुतूहल से दृढकी८०॥ आठहजार आठ सौ श्लोक इस ग्रन्थ में ऐसे हैं जिनको मैं जानता हूँ या शुकदेव सञ्जय के जानने में सन्देह है।वह श्लोकोंका समूह अबतक बहुत कठिन है और अर्थके गूढहोने से वहगांठ नहीं खोली जाती॥८२॥सर्वज्ञ गणेशजीभी उनको विचारतेहुए रुकजाते थे उतने समय में व्यासजी भी और बहुत श्लोक बनालेते थे ॥ ८३ ॥ अज्ञानरूपी अंधेरे में भ्रमते संसार को ज्ञानरूपी अंजनकी सलाइयों से नेत्रों का खोलने वाला संक्षेप और विस्तारसे कहेहुए धर्मार्थ मोक्ष काम से भारतरूपी सूर्य्य ने मनुष्यों का अन्धकार नाश

ever ready to the call of his votaries and remover of their difficulties came at once and was saluted by *Vyas* and given a respectable seat. Then *Vyas* rquested *Ganesh*, to write the *Mahabharat* which up to the time was in his mind. Upon hearing this *Ganesh* said " I shall write the book, on condition, that I shall never stop writing when once begun. " *Vyas* rplied, " But you must not proceed without understanding" *Ganesh* granted this request and began to write. By way of diversion *Vyas* made the composition so difficult and was able to fulfil his contract. *Sauti* says " There are 8,800 verses in the book which only Suka and I fully understand. It is not certain whether Sanjaya knows them. Even the all-knowing *Ganesh* took some time to understand them while *Vyas* found time to com-

पूर्णचंद्रेण श्रुतिज्योत्स्नाःप्रकाशिताः । नृबुद्धिकैरवाणांच कृतमेतत्प्रकाशनम् ॥८६॥ इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना। लोकगर्भगृहंकृत्स्नं यथावत्संप्रकाशितम्॥ ८७॥ संग्रहाध्यायवीजोवैपौलोमास्तीकमूलवान्। संभवस्कंधविस्तारः सभारण्यविटंकवान् ॥ ८८॥ अरणीपर्वरूपाढ्योविराटोद्योगसारवान्। भीष्मपर्वमहाशाखो द्रोणपर्वपलाशवान् ८९। कर्णपर्वसितैःपुष्पैःशल्यपर्वसुगंधिभिः स्त्रीपर्वैषीकविश्रामःशांतिपर्व महाफलः॥ ९०॥ अश्वमेधामृतरसस्त्वाश्रमस्थानसंश्रयः। मौसलः श्रुतिसंक्षेपःशिष्टद्विजनिषेवितः॥ ९१॥ सर्वेषांकविमुख्यानामुपजीव्योभविष्यति। पर्जन्यइवभूतानाम् क्षयोभारतद्रुमः॥ ९२॥ सौतिरुवाच। तस्यवृक्षस्यवक्ष्यामिशश्वत्पुष्पफलोदयम्।

कियाहै इस पुराणरूपी चन्द्रमा ने श्रुतिरूप चांदनी का प्रकाशकिया और मनुष्योंकी बुद्धि की बिकलता का यह दूर करनेवाला है॥ ८६॥ मोहरूपी ढकन के तोड़नेवाले ब्रह्मानन्द इतिहासरूपी दीपक से मनुष्यों के हृदय रूप घरके अंधेरे को यथार्थता से दूरकिया ८७ इस भारतरूपी वृक्षका संग्रहाध्याय बीज है पौलोमास्तीक पर्व जड़ हैं सम्भव पर्व गुद्दे हैं सभा और अरण्य पर्व इस के पक्षियों के बैठनेके स्थानहैं। और अरणीपर्व इसका पर्व रूप है। विराट और उद्योग पर्व्व इसका सारहै। भीष्मपर्व इसकी बड़ीभारी शाखाहैं। द्रोणपर्व्व इसके पत्ते हैं। कर्णपर्व्व इसका श्वेत पुष्पहैं।शल्यपर्व गंधहै स्त्री और ऐषिकपर्व्व इसकी छायाहै॥ शान्ति पर्व्व इसका बड़ा फलहै। अश्वमेध पर्व्व इस फलका अमृतरूपी रस है। और आश्रम बासिक पर्व्व इसका आश्रय है॥ मौसल पर्व्व इसकी शाखाओं का अन्त भाग है और महात्मारूपी पक्षियों से युक्तहै॥ प्राणियोंको बादल के समान यह नाश रहित भारतरूपी वृक्ष कवियों का आश्रय होगा॥९२॥ उग्रश्रवा ने कहा कि उस

pose many more. This work of wisdom has opened the eyes of many a man blind of ignorence. The Mahabharat like the sun removes the shadow of ignorance by its teaching of rligious and lay precepts and showing the way to salvation. The book enlightens the hearts with its *Vedic* light as the moon with its mild light opens the lily. The lamp of this history has illuminated the whole world and dispelled the darkness of ignorance.

Mahabharat is a tree; the chapter of contents is its seed; the sections *Paulom* and *Astik* are its roots; *Sambhav* is the trunk; *Sabha* and *Aranyak* are the nests of birds on it. *Aruni* is the joint of its stalk. Virat and *Udyog* are its sap. Bhishma its main branch *Drona* the leaves; *Karna* is the white flower; *Salya* is its sweet smell; *Stri* and *Ashika* the cooling shade; *S'anti* is its large fruit; *Ashwamedh* is the nectar; *Ashramvasik* is its base; *Mausal* an epitome of the Veda respscted by all. The *Mahabharat* like clouds

स्वादुमेध्यरसोपेतमच्छेद्यममरैमपि ॥ ९३ ॥ मातुर्नियोगाद्धर्मात्मागांगेयस्यचधीमतः ।
क्षेत्रेविचित्रवीर्यस्य कृष्णद्वैपायनःपुरा॥९४॥त्रीनग्नीनिवकौरव्यान्जनयामासवीर्यवान् ।
उत्पाद्यधृतराष्ट्रंच पांडुंविदुरमेवच ॥ ९५ ॥ जगामतपसेधीमान्पुनरेवाश्रमंप्रति । तेषु
जातेषुवृद्धेषुगतेषुपरमांगतिम् ॥ ९६ ॥ अब्रवीद्भारतंलोकेमानुषेऽस्मिन्महानृषिः । ज
नमेजयेनपृष्टः सनब्राह्मणैश्चसहस्रशः ॥ ९७ ॥ शशासशिष्यमासीनंवैशंपायनमंतिके ।
ससदस्यैःसहासीनःश्रावयामासभारतम् ॥ ९८ ॥ कर्मांतरेषुयज्ञस्यचोद्यमानःपुनःपुनः ।
विस्तरंकुरुवंशस्यगांधार्या धर्मशीलताम् ॥ ९९ ॥ क्षत्तुःप्रज्ञांधृतिंकुंत्याःसम्यग्द्वैपायनोऽब्र
वीत् । वासुदेवस्यमाहात्म्यंपांडवानांच सत्यताम् ॥ १०० ॥ दुर्वृत्तंधार्तराष्ट्राणामुक्तवान्
भगवानृषिः । इदंशतसहस्रंतु लोकानांपुण्यकर्मणाम् ॥ १०१ ॥ उपाख्यानैःसहज्ञेयमाद्यं
भारतमुत्तमम् । चतुर्विंशतिसाहस्रींचक्रेभारतसंहिताम् । १०२ । उपाख्यानैर्विनातावद्भा

भारतरूपी वृक्ष के सनातन पुष्प और फलकी उत्पत्ति को कहूंगा ॥ ९३ ॥ धर्मात्मा और पराक्रमी व्यासजीने पहिले अपनी माता और बुद्धिमान भीष्मजीकीआज्ञा से विचित्र वीर्य्य की स्त्री में अग्नि के समान तीन पुत्र धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर उत्पन्न किये इन तीन पुत्रोंको उत्पन्न करके बुद्धिमान व्यास फिर तपस्या के लिये आश्रम को गये उन पुत्रों के वृद्ध होने और मरजाने पर इस मनुष्य लोक में जनमेजय और सहस्रों ब्राह्मणों की इच्छा से व्यासऋषि ने समीप बैठेहुए वैशम्पायन शिष्यको भारत सुनाने की आज्ञा दी वह यज्ञ के बीच में बारम्बार प्रश्न कियाहुआ और सभासदों के साथ बैठा हुआ भारतको सुनाने लगा । कुरु वंश का विस्तार, गान्धारी की धर्मशीलता, विदुरकी बुद्धि कुन्ती का धैर्य्य श्रीकृष्ण का प्रताप पाण्डवोंकी सहायता दुर्योधनादिकों का दुर्व्रत भगवान् द्वैपायन ऋषि ने कहाहै । पुण्य कर्मवाले मनुष्यों के चरित्र वर्णन करतेहुए यह

will ever refresh the minds of poets wishing distinction. I shall now describe the everlasting flowers and fruits of this tree of holy and pleasant taste, not to be despised even by the gods. Formerly the great sage Krishna-dwaipayan *Vyas* at the request of his mother and Bhishm, produced, in the widows of *Bichitra Birya* three children named *Dhritrashtra Pandu* and *Bidur* and then went away to practice asceticism. After the three children had grown up to be old men and died, the great *rishi Vyas* composed this poem, and at the request of king *Janmejaya* and a great number of Brahmans assembled at the Snake sacrifice, he orderd his pupil *Vaishampayn* to repeat it before the assemblage after the daily rites of the Sacrifice.

Vyas has fully described the grandeur of the house of Kuru, the virtuous principles of Gandhari the wisdom of *Vidur* and the

रतंप्रोच्यतेबुधैः । ततोऽध्यर्धशतंभूयःसंक्षेपंकृतवानृषिः ॥ १०३ ॥ अनुक्रमणिकाध्या यंवृत्तांतानांसपर्वणाम्।इदंद्वैपायनःपूर्वं पुत्रमध्यापयच्छुकम् । १०४ । ततोऽन्येभ्योऽनु रूपेभ्यःशिष्येभ्यःप्रददौविभुः । षष्टिंशतसहस्राणि चकारान्यांससंहिताम् ॥ १०५ ॥ त्रिंशच्छतसहस्रंच देवलोकेप्रतिष्ठितम् । पित्र्येपंचदशप्रोक्तं गंधर्वेषुचतुर्दश ।१०६। एकं शतसहस्रंतु मानुषेषुप्रतिष्ठितम् । नारदोऽश्रावयद्देवान सितोदेवलःपितॄन् ।१०७। गंध र्वयक्षरक्षांसि श्रावयामासवैशुकः । अस्मिंस्तुमानुषेलोके वैशंपायनउक्तवान् । १०८। शिष्योव्यासस्यधर्मात्मा सर्ववेदविदांवरः । एकंशतसहस्रंतु मयोक्तंवै निबोधत।१०९। दुर्योधनोमन्युमयोमहाद्रुमः स्कंधःकर्णःशकुनिस्तस्यशाखाः । दुःशासनःफलपुष्पेसमृद्धे मूलंराजाधृतराष्ट्रोऽमनीषी । ११० । युधिष्ठिरोधर्ममयोमहाद्रुमः स्कंधोऽर्जुनोभीमसेनो

पहिले एक लक्ष भारत बनाया और एक भारत संहिता उपाख्यानोंके बिना चौवीस हजार था। तिसके बाद पर्वों का वृत्तान्त अनुक्रमणिका अध्याय ऋषि ने १५० श्लोकोंमें संक्षेपसे वर्णन किया। और पहिले अपने पुत्र शुकदेव को पढाया ॥ १०४ ॥ इसके उपरान्त और योग्य शिष्यों को यह विद्यादी, और साठलाख अन्य संहिता बनाई ।१०५। उसमें से ३० लाख संहिता देवलोक में पन्द्रह लाख पितृ लोकमें चौदह लाख गन्धर्व लोकमें और एक लाख मनुष्य लोकमें रही, नारदने देवताओं को असित देवल ऋषिने पित्रोंको ।।१०७।। शुकदेवजीने गन्धर्व यक्ष राक्षसों को और व्यासके शिष्य धर्मज्ञ वेदज्ञानी वैशम्पायन ने जनमेजय के सर्पयज्ञ में इस लोकको एक लक्ष भारत श्रवण कराया।।१०९।। क्रोधरूप दुर्योधन एक वडा भारी वृक्ष है। कर्ण उसका गुद्धा शकुनी शाखा दुःशासन फल और अजितेन्द्रिय राजा धृतराष्ट्र इसकी जड है ।। १९० ।। युधिष्ठिर धर्म रूप एक वडा

constancy of *Kunti.* The noble sage has also described the greatness of *Vasudev* the righteousness of the Pandavas and the bad nature of the sons of *Dhritrashtra.* The original composition of *Mahabharat* exclusive of stories, amounted to 24000 verses which the learned men call real *Mahabharat.* After-wards he composed an epitome consisting of only 150 verses containing the chapter of contents. He taught it to his son Shukdev and other able disciples. Afterwards he composed six millions of verses. Of these 3 millions are read by Devas; 1500000 by Pitris; 1400000 by Gandharvas; and 100000 by men. Narad taught them to the Devas; Devala to the Pitris; Shuka to the Gandharvas, Yakshas and Rakshases, and Vaishampayan the pupil of Vyas, to this world and Sauti recited them.

Duryodhan is the tree of pride; Karna its trunk; Sakuni its branch; Dushasan its ripe fruit and flower; the weak minded Dhritrashtra its root.

ऽस्यशाखाः । माद्रीसुतौपुष्पफलेसमृद्धे मूलंकृष्णोब्रह्मचब्राह्मणाश्च ॥ १११ ॥ पांडु
र्जित्वाबहून्देशान् युद्धया विक्रमणेनच।अरण्येमृगयाशीलो न्यवसन्मुनिभिःसह।११२।
मृगव्यवायनिधनात्कृच्छ्रां प्रापसआपदम्।जन्मप्रभृतिपार्थानां तत्राचारविधिक्रमः ११३
मात्रोरभ्युपपतिश्च धर्मोपनिपदंप्रति । धर्मस्यवायोःशक्रस्यदेवयोश्चतथा श्विनोः ११४॥
तापसैः सहसंवृद्धामातृभ्यां परिरक्षिताः । मेध्यारण्येषु पुण्येषुमहतामाश्रमेषुच ।११५।
ऋषिभिर्यत्तदानीता धार्तराष्ट्रान्प्रतिस्वयम । शिशवश्चाभिरूपाश्च जटिलाब्रह्मचारिणः
।११६। पुत्राश्चभ्रातरश्चेमेशिष्याश्च सुहृदश्चवः। पांडवाएतइत्युक्त्वामुनयोंऽतर्हितास्ततः
।११७।तांस्तैर्निवेदितान्दृष्ट्वापांडवान्कौरवास्तदा।शिष्टाश्चवर्णाः पौरायेतेहर्षाच्चुकुशुर्भृ
शम ।११८। आहुःकेचिन्नतस्यैतेतस्यैतइतिचापरे । यदाचिरमृतःपांडुःकथंतस्येतिचापरे

वृक्ष है गुद्धा अर्जुन है भीमसेन शाखा है नकुल सहदेव उसपर फल हैं । बेद, ब्राह्मण और श्रीकृष्ण उसकी जड है ॥ १११ ॥

पाण्डु बुद्धि और पराक्रमसे बहुतसे देशों को जीतकर शिकार करता हुआ मुनियों के साथ वन में रहने लगा ॥११२॥ और मृग रूप ऋषिको मैथुन करते समय मारनेसे वडी आपत्ति में पडा, आपद्धर्मानुसार धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनि कुमारों, से कुन्ती और माद्रीके गर्भ में पांच पुत्र उत्पन्न हुए । विधिके अनुसार पाण्डवों के सब संस्कार हुए तपस्वियों के साथ बन में माताओं से पालनकियेगये, और महात्माओं के पवित्र आश्रमों में रहे, और ऋषियों ने आप लेजा कर राजा धृतराष्ट्रको यहकहकर सौंपे, सुन्दररूप वाले जटाधारी ब्रह्मचारी यह पांचों भ्राता आपके पुत्र और पाण्डुके बेटे हैं यह कह कर मुनि चलेगये ॥११७॥ उन्हेंदेखकर सज्जन कौरव प्रसन्नतासे कोलाहल करने लगे ॥११८॥ अन्यलोग कहने लगे कि यह पाण्डुके पुत्र नहीं होसक्ते हैं । और नगरवासी बोलेकि आप

Yudhishthir is a large tree of religion and virtue; Arjun is its trunk; Bhim its branches; the twins of Madri its ripe fruits and flowers; Shree krishna, Ved and Brahmans are its roots,

Pandu, having conquered many provinces by his bravery and ability, began to live among rishis in a forest, and got into difficulty by killing a stag while coupling with mate. His two wives were given five sons by Dharm, Vayu, Indra and the two Aswini-kumars; When the children became boys under the protection of their mothers and in the society of the rishis living in sacred groves, they took them to *Raja Dhritrastra* in the habit of *Brahmcharis* with knots of hair on their heads. The *rishis* having introduced them as the sons of *Pandu* rtired to their abodes. The *Kauravas* and citizens welcomed them with shouts of joy. Some said they were the sons of *Pandu* while others said they could not be so as he had died long before. On all sides were heard the cries of welcome and

॥११९॥ स्वागतंसर्वथादिष्ट्यापांडोःपश्यामसंततिं। उच्यतांस्वागतमितिवाचोऽश्रूयंत
सर्वशः ॥ १२० ॥ तस्मिन्नुपरतेशब्देदिशः सर्वानिनादयन्। अंतर्हितानांभूतानांनिःस्व
नस्तुमुलोऽभवत् ॥१२१॥ पुष्पवृष्टिःशुभागंधाः शंखदुंदुभिनिःस्वनाः।आसन्प्रवेशेपा-
र्थानांतदद्भुतमिवाभवत् ॥१२२॥ तत्प्रीत्याचैवसर्वेषां पौराणांहर्षसंभवः। शब्दआसी
न्महांस्तत्रदिवस्पृक्कीर्तिवर्धनः ॥१२३॥ तेऽधीत्यनिखिलान्वेदान्शास्त्राणिविविधानिच।
न्यवसन्पांडवास्तत्रपूजिताअकुतोभयाः ॥ १२४ ॥ युधिष्ठिरस्यशौचेनप्रीताः प्रकृतयोऽ
भवन्। धृत्याचभीमसेनस्य विक्रमेणार्जुनस्यच ॥ १२५ ॥ गुरुशुश्रूषयाक्षांत्यायमयोर्वि
नयेनच। तुतोषलोकःसकलस्तेषांशौर्यगुणेनच ॥ १२६ ॥ समवायेततोराज्ञांकन्यांभर्तृ
स्वयंवराम्। प्राप्तवानर्जुनःकृष्णांकृत्वाकर्मसुदुष्करम् ॥ १२७ ॥ ततःप्रभृतिलोकेऽस्मिन्पू
ज्यः सर्वधनुष्मताम्। आदित्यइवदुष्प्रेक्ष्यः समरेष्वपिचाभवत् ॥ १२८ ॥ ससर्वान्

का शुभागमन हमारे बड़े भाग्यजो हम पाण्डु की सन्तानों को देखते हैं, नगर वासियों के
ऐसा कहने पर पाण्डवों ने कहा कि हमारा आना आपके लियेशुभहो ॥ १२० ॥ उस
स्वागत शब्दके बन्द होनेपर आकाशवाणी हुई कि यह पाण्डव हैं ॥ २१ ॥ और पुष्प
की वर्षा सुगन्ध युक्त और शंख नगाड़ोंकी ध्वनि आश्चर्य जनिक हुई और सम्पूर्ण नगर
वासियों का आनन्द मय भाशिशब्द स्वर्ग को पहुँचनेवाला हुआ ॥ २३ ॥ वह पाण्डव
चारों वेद और शास्त्रों को पढ कर भय रहित सबसे सत्कार पाते हुए वहां रहने लगे
॥ २४ ॥ युधिष्ठिर की पवित्रता, भीमसेनके धैर्य्य अर्जुन के पराक्रम, नकुल सहदेवकी
नम्रता और कुन्तीकी गुरुसेवा से प्रजा बहुत आनन्दितहुई और सम्पूर्ण लोक उन पांचों
भ्राताओंकी शूरता और गुणोंसे प्रसन्नहुआ,॥२६॥राजाओंके समूह में स्वयम्वर करतीहुई
द्रौपदी को अर्जुन ने शूरतासे पाया ॥ २७ ॥ उसीदिन से वह सम्पूर्ण धनुषधारियों में
श्रेष्ठ हुआ और संग्रामों में सूर्यके समान शत्रु उसकी ओर नहीं देख सकतेथे ॥ २८ ॥

thanksgiving. The echoes rang through the sky for a long time. There were showers of sweet scented flowers and the sounds ef conchs and drums. Such wonders happened at the arrival of the Pandawas. The citizens raised their cries of joy to heaven on that blissful day The Pandavas lived there in perfect security and rspect and read the Veds. The people were pleased with the purity of *Yudhishthir*, the bravery of *Bhimsena*, the prowess of Arjun, the humility of *Nakul* and *Sahdev*, and the submission of *Kunti* to the wishes of her superiors. 26.

After the lapse of some time *Arjun* acquired the virgin *Draupadi* at the *Swayamvar* in the presence of a large number of kings, by hitting the hard contested mark by his arrow. After this he was unquestionably the first archer of the day and the eyes of enemies were dazzled before him at the field of battle. He conquered all the

पार्थिवान् जित्वासर्वांश्चमहतोगणान्। आजहारार्जुनोराज्ञो राजसूयंमहाक्रतुम् ॥१२९॥
अन्नवांदक्षिणावांश्वसर्वैः समुदितोगुणैः। युधिष्ठिरेणसंप्राप्तो राजसूयोमहाक्रतुः।१३०।
सुनयाद्वासुदेवस्य भीमार्जुनबलेनच। घातयित्वाजरासंधं चैद्यंचबलगर्वितम् ॥१३१॥
दुर्योधनंसमागच्छन्नर्हणानि ततस्ततः।मणिकांचनरत्नानि गोहस्त्यश्वधनानिच।१३२।
विचित्राणिचवासांसि प्रावारावरणानिच। कंबलाजिनरत्नानि रांकवास्तरणानिच
॥ १३३ ॥ समृद्धांतांतथादृष्ट्वा पांडवानांतदाश्रियम्। ईर्ष्यासमुत्थः सुमहांस्तस्यमन्यु
रजायत ॥ १३४ ॥ विमानप्रतिमांतत्र मयेनसुकृतांसभाम्। पांडवानामुपहृतां सदृष्ट्वापर्य
तप्यत ॥ १३५ ॥ तत्रावहसितश्चासीत्प्रस्कन्दन्निवसंभ्रमात्। प्रत्यक्षंवासुदेवस्य भीमे
नानभिजातवत् ॥ १३६ ॥ सभोगानद्विविधान् भुंजन्रत्नानिविविधानिच। कथितोधृत

उसने सम्पूर्ण राजाओं और वडी सेनाओं के समूह को जीतकर राजा युधिष्ठिरको राज सूय यज्ञ कराया ॥ २९ ॥ युधिष्ठिर ने वहुत अन्न और दक्षिणा वाला और सम्पूर्ग गुणोंसे परिपूर्ण राजसूय यज्ञ किया ॥ ३० ॥ श्रीकृष्णकी उत्तम नीति और भीमसेन अर्जुन के वलसे जरासंध और घमंडी शिशुपाल उस यज्ञ में मारेगये ॥ ३१ ॥ उस यज्ञमें इधर उधर से माणि, सुवर्ण, गायें, हाथी, घोडे विचित्र चर्म वस्त्र, उत्तम २ प्रकार के रेशमी वस्त्र, और अनेक प्रकार के विछौने भेटसें दुर्योधन कोषाध्यक्ष के पास आये ॥ ॥ ३३ ॥ पांडवों के इस ऐश्वर्य को देखकर ईर्षासे दुर्योधन को क्रोध उत्पन्न हुआ और विमानों के सदृश मय की रची हुई पाण्डवों की सभाको देखकर अति दुःखित हुआ ॥ ३५ ॥ उस सभा में जल में स्थल के भ्रमसे गिरतेहुए दुर्योधनकी श्रीकृष्णके सम्मुख भीमसेन ने ग्रामीण के समान हँसी की ॥ ३६ ॥ वह अनेक प्रकार के भोगों और

princes and tribes. in every direction, for the *Rajsuya* sacrifice of his elder brother *Yudhisthir*, who after having slain *Jarasandh*(of Magadh) and *Shisupal* through the wise counsel of *Shree* Krishna and the valour of *Bhim* and *Arjun*; performed the great *Rajsuya* sacrifice in which he gave away largesse and provisions. *Duryodhan* was a guest during the Sacrifice and in his capacity of the treasurer received all the tribute of gold, jewels, precious stones, cows, elephants horses, clothing, shawls, furs, carpets and other valuables, 33. So he was filled with envy and d'sgust and when he saw the darbar room made by *Maya* the giant architect on the model of celstial court, his rage knew no bounds; and having been deceived by some architectural devices he was laughed at by *Bhimsen* like ene in a low position.

Dhritrashtra, learnt that his son *Duryodhan* was getting thin and pale every day in spite of all sorts of comforts and possession of

राष्ट्रस्य विवर्णोहरिणःकृशः ॥ १३७ ॥ अन्वजानात्ततोद्यूतं धृतराष्ट्रःसुतप्रियः । तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य कोपःसमभवन्महान् ॥ १३८ ॥ नातिप्रीतमनाश्चासी द्विवादांश्चान्वमोदत । द्यूतादीननयान्घोरान्विविधांश्चाप्युपैक्षत ॥ १३९ ॥ निरस्यविदुरंभीष्मंद्रोणंशारद्वतंकृपम् विग्रहेतुमुलेतस्मिन्दहन् क्षत्रंपरस्परम् ॥ १४० ॥ जयत्सुपांडुपुत्रेषु श्रुत्वासुमहदप्रियम् । दुर्योधनमतंज्ञात्वा कर्णस्यशकुनेस्तथा ॥ १४१ ॥ धृतराष्ट्रश्चिरंध्यात्वा संजयंवाक्यमब्रवीत् । शृणुसंजयसर्वंमेनचासूयितुमर्हसि ॥ १४२ ॥ श्रुतवानसिमेधावी बुद्धिमान्प्राज्ञसंमतः । नविग्रहेमममतिर्नचःप्रीयेकुलक्षये ॥ १४३ ॥ नमेविशेषः पुत्रेषुस्वेषुपांडुसुतेषुवा । वृद्धंमामभ्यसूयंति पुत्रामन्युपरायणाः ॥ १४४ ॥ अहंत्वचक्षुःकार्पण्यात्पुत्रप्रीत्यासहामितत् । मुह्यंतंचानुमुह्यामि दुर्योधनमचेतनम् ॥ १४५ ॥ राजसूयेश्रियंदृष्ट्वा पांडवस्यम-

रत्नों को भोगता हुआ पीला और दुर्वल होने लगा ॥ ३७ ॥ पुत्र के प्रेम से राजाधृतराष्ट्र ने जुआ खेलने की आज्ञादी इस को सुनकर श्रीकृष्णको बड़ा क्रोधहुआ ॥ ३८ ॥ और अप्रसन्न होकर झगड़े और द्यूतादि घोर अनीतियोंको देखा विदुर, भीष्म, द्रोणाचार्य, और कृपाचार्यकी सम्मतिके विरुद्ध क्षत्रियों को नष्ट करने वाले और विरोध जनिक जुयको देख श्रीकृष्णने कुछ न कहा ॥ ४० ॥ पाण्डवों के जयहोने पर भारी अप्रिय वचन को सुन दुर्योधन, करण, और शकुनि के मतको यादकर धृतराष्ट्र बहुत काल तक सोच कर संजयसे बोला कि हेसंजय ! मेरे सब बृतान्तको सुनकर मुझको दोषी नहीं बतलावेगा ॥ ४१ ॥ तू शास्त्रज्ञ बुद्धिमान और विद्वानों में माननीय है, इस विरोध में मेरी सम्मति नथी और न मैं इस कुल के क्षय से प्रसन्न हूं ॥ ४३ ॥ न मुझको अपने और पाण्डु के पुत्रोंमें भेद है मुझको बृद्ध जानकर क्रोधसे भरेहुए पुत्र मेरा कहा नहीं मानते ॥ ४४ ॥ मैं नेत्र रहित और दीनहूं इसलिये पुत्र प्रेमसे उस विरोधको सहताहूं और बेसमझ दुर्यो-

wealth, and being fond of his sons gave his consent to a match of dice. *Vasudeo* was very angry at it. Great was his displeaure, but, he did not meddle with the dispute and overlooked the gambling and its consequences which, in spite of *Vidura*, *Bhishma*, Drona and *Kripa* rsulted in the great bloodshed of kshetrias: 40

After hearing the account of the victory of *Pandavs* over the Kauravas and recollecting the rsolutions of Duryodhan, *Karna* and *Shakuni* he fell into a deep thought for a while and then addressed *Sanjaya* as follows:—

"Attend, O, *Sanjay* to all that I am to say to you and you will not think me wanting in reason as you are a very wise and learned pandit. I never wished for war, nor, did I ever feel pleasure in the destruction of my kinsmen. I made no distinction between my children and the Pandavas. My sons were conceited and disrega-rd-

हौजसः । तच्चावहसनंप्राप्यसभारोहणदर्शने ॥ १४६ ॥ अमर्षणःस्वयंजेतुमशक्तः पांड
वान्रणे । निरुत्साहश्चसंप्राप्तुं सुश्रियंक्षत्रियोऽपिसन् ॥ १४७ ॥ गांधारराजसहितश्छद्म
द्यूत ममंत्रयत् । तत्रयद्यद्यथाज्ञातं मयासंजयतच्छृणु ॥ १४८ ॥ श्रुत्वातुममवाक्यानि बुद्धि
युक्तानितत्त्वतः । ततोज्ञास्यसिमांसौते प्रज्ञाचक्षुषमित्युत ॥ १४९ ॥ यदाऽश्रौषंधनुरा
यम्य चित्रंविद्धंलक्ष्यंपातितंवैपृथिव्याम् । कृष्णांहृतांप्रेक्षतांसर्वराज्ञां तदानाशंसेविजया
यसंजय ॥ १५० ॥ यदाश्रौषंद्वारकायांसुभद्रां प्रसह्योढांमाधवीमर्जुनेन । इन्द्रप्रस्थंवृष्णि
वीरौचयातौ तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १५१ ॥ यदाश्रौषंदेवराजंप्रवृष्टं शरैर्दिव्यैर्वा
रितंचार्जुनेन । अग्नितथातर्पितंखांडवेच तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १५२ ॥ यदा
श्रौषंजातुषाद्वेश्मनस्तान्मुक्तान्पार्थान्पञ्च कुंत्यासमेतान् । युक्तंचैषां विदुरंस्वार्थसिद्धौ

धन के पीछे वैसाही हो जाताहूं ॥ ४७ ॥ राजसूय यज्ञ में बड़े प्रतापी युधिष्ठिर की
लक्ष्मी और सभाकी शोभा देख और हँसीको न सहकर और पांडवोंको रणमें आप जीत
ने को असमर्थहोकर शकुनिसे छलयुक्त जुएकी सम्मतिकी उस कालमें जो कुछ वृत्तान्त
मुझे विदित हुआ तू सुन ॥४८॥ हे संजय मेरे बुद्धियुक्त वचन सुनकर मुझे बुद्धिमान
जानेगा ॥ ४९ ॥ जब मैंने सुना अर्जुन ने विचित्र धनुषको चढ़ाकर लक्ष्यको मारा
और सब राजाओं के देखते द्रौपदीको ग्रहणकिया, उसी समय से मैं जयकी आशा नहीं
करता ॥ १५० ॥ जिससमय मैंने सुना कि द्वारका में जाकर अर्जुनने बलपूर्वकसुभद्रा
को हरा और राम और कृष्ण इन्द्रप्रस्थ में आये उससमय से मैं जयकी आशा नहीं
करता ॥५१॥ जिससमय मैंने सुना दिव्य अस्त्रों से इन्द्रकी वर्षाको अर्जुन ने रोका
और खाण्डववन में अग्निको तृप्त किया उसी समय से मैं जयकी आशा नहीं करता ५२
जिससमय मैंने सुना पांचो पाण्डव कुन्ती सहित लाक्षाभवन के अग्निदाह से बचगये

ed my advice as I was old. I endured all on account of my blindness and fondness and befooled myself like my son. 45. He could not endure the wealth of the Pandaves and the ridicule of Bhim and not finding himself their equal in open warfare debased his warrior blood by devising an unfair game of dice by *Sakuni's* advice. I will tell you, *Sanjay*, my resolutions at various stages and after knowing all you will believe me wise.

On learning an account of Arjun's feat at piercing down so difficult a mark and bearing away Draupadi from before all competitors I lost all hope of victory. When, O *Sanjay* I knew that Vasudev's sister was forcibly carried by Arjun from Dwarka and Balram with Krishna paid a friendly visit to Indraprasth my mind misgave me. When I learnt of Arjun's gratification of Agnidev by preventing Indr'a rain from falling over the Khandav forest I

तदा नाशंसे विजयाय संजय ॥ १५३ ॥ यदाश्रौषं द्रौपदीं रंगमध्ये लक्ष्यं भित्त्वा निर्जितामर्जुनेन। शूरान्पंचालान्पांडवेयांश्च युक्तांस्तदा नाशंसे विजयाय संजय ॥ १४ ॥ यदाश्रौषं मागधानां वरिष्ठं जरासन्धं क्षत्रमध्ये ज्वलन्तम्। दोर्भ्यां हतं भीमसेनेन गत्वा तदा नाशंसे विजयाय संजय ॥१५५॥ यदाश्रौषं दिग्जये पांडुपुत्रैर्वशीकृतान् भूमिपालान्प्रसह्य। महाक्रतुं राजसूयं कृतं च तदा नाशंसे विजयाय संजय ॥१५६॥ यदाश्रौषं द्रौपदीमश्रुकंठीं सभां नीतां दुःखितामेकवस्त्राम्। रजस्वलां नाथवतीमनाथवत्तदा नाशंसे विजयाय संजय १५७ यदाश्रौषं वाससां तत्र राशिं समाक्षिपत्कितवो मंदबुद्धिः। दुःशासनो गतवान्नैव चान्तं तदा नाशंसे विजयाय संजय ।१५८। यदाश्रौषं हृतराज्यं युधिष्ठिरं पराजितं सौबलेनाक्षवत्याम्।

और पाण्डवोंके स्वार्थ सिद्धि करने में विदुर नियुक्त है उससमयसे मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ५३ ॥ जब मैंने सुना द्रौपदीको स्वयम्बर भूमि में मत्स्यवेध कर अर्जुन ने जीता और बड़े पांचाल और पाण्डव मिलगये उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ५४ ॥ जब मैंने सुना मगधदेश के राजा क्षत्रियों में श्रेष्ठ जरासन्धको भीमसेन ने मारा है संजय मैं उससमय से जयकी आशा नहीं करता ॥ ५५॥ जब मैंने सुना दिग्विजय करते समय पाण्डवों ने सम्पूर्ण राजाओंको बल से अपने वश में करके बड़ा राजसूय यज्ञ कर लिया है संजय मैं उससमय से जयकी आशा नहीं करता ॥ ५६ ॥ जब मैंने सुना रोती हुई दुःखित एकवस्त्र पहिनेहुए रजस्वला और पतियों के होतेहुए अनाथातुल्य द्रौपदी सभा में लाई गई है संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ५७ ॥ जब मैंने सुना सभा के मध्य में कपटी और मन्दबुद्धि दुःशासन ने वस्त्रों के समूहको खेंचते २ वस्त्रका अन्त न पाया हेसंजय उसी समय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ५८ ॥ जब मैंने सुना अत्यन्त बलवान् भ्राताओं सहित युधिष्ठिर

could not expect for victory any more. When I knew of the escape of Pandavas with mother from burning in the dwelling of lac, by Vidur's friendly warning, I was not sure of victory. When I learnt of Arjun's prowess as marksman and winning of Draupadi in open contest and the consequent union of brave Panchals with Pandavas I gave myself to despair.* When I knew that Jarasandh a sion of the royal race of Magadh and warrior of renown was killed by Bhim unarmed, I became hopeless. On receiving news of Pandava's having conquered all princes in their general campaign and performed Rajsuya, I found victory was not easy. When I knew that Draupadi was dragged into court, crying and weeping with only one garment, like one having no protector, I saw victory was inpossible. When I learnt that wicked Dusasan in striving to strip Draupadi of

अन्वागतंभ्रातृभिरप्रमेयैस्तदानाशंसेविजयायसंजय ॥१५९॥ यदा श्रौषंविविधास्त्रचेष्टाधर्मात्मनां प्रस्थितानांवनाय। ज्येष्ठप्रीत्याक्लिश्यतांपांडवानां तदानाशंसेविजयायसंजय। १६०। यदा श्रौषंस्नातकानां सहस्रैरन्वागतं धर्मराजंवनस्थम्। भिक्षाभुजांब्राह्मणानांमहात्मनां तदानाशंसेविजयायसंजय। १६१। यदा श्रौषमर्जुनं देवदेवंकिरातरूपंत्र्यम्बकंतोष्ययुद्धे। अवाप्तवंतंपाशुपतं महास्त्रं तदानाशंसेविजयाय संजय। १६२। यदाश्रौषंत्रिदिवस्थं धनंजयं शक्रात्साक्षाद्दिव्यमस्त्रं यथावत्। अधीयानंशंसितंसत्यसंधं तदानाशंसेविजयायसंजय। १६३। यदा श्रौषंकालकेयास्ततस्ते पौलोमानो वरदानाच्चदृप्ताः। देवैरजयानिर्जिताश्चार्जुनेन तदानाशंसेविजयायसंजय

शकुनि से जुएमें अपना राज्य हारगया है संजय उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ५९ ॥ जब मैंने सुना बनको जातेसमयभी पांडव ज्येष्ठ भाई के प्रेम से क्लेश पाते हुए आज्ञाकारी हैं हे संजय उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ १६० ॥ जब मैंने सुना सहस्रों ब्राह्मण ब्रह्मचर्यव्रत के पूर्ण करने वाले और भिक्षा से निर्वाह करने वाले बन में रहतेहुए युधिष्ठिर से मिले हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६१ ॥ जब मैंने सुना भीलरूप महादेव जीको युद्ध में प्रसन्नकर अर्जुनने पाशुपत महाअस्त्र पाया हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६२ ॥ जब मैंने सुना स्तुति करने योग्य और सत्य प्रतिज्ञाकरनेवाला अर्जुन यथार्थ रीति से स्वर्ग में दिव्य अस्त्रविद्या इन्द्रसे सीख रहाहै हे संजय मैं उससमय से जयकी आशा नहीं करता ॥ ६३ ॥ जब मैंने सुना कालकेय नामवाले पुलोम दैत्य के पुत्र बडे घमंडी देवताओंसे न जीतने योग्य और वरदान पायेहुए अर्जुनने जीते हे संजय उससमय से

---

the single garment had only piled a vast length of cloth and could not come to its end, then, Sanjay, I had no hope of success.

When I knew that *Yudhishthir* in losing the game of dice had lost all and still his brothers accompanied him, then O Sanjay, I fore saw defeat. When I learnt that the noble Pandavs, weeping and distressed, had followed their brother to wilderness and tried to surround him with luxury, then, I became hopeless of success. 160. When I heard that noble-minded Brahmans, who live upon alms, had followed Yudhishthir to the wilderness, then, O *Sanjay* I had no hope of success. When I heard that Arjun, having pleased the three-eyed *Mahadev* in a duel, obtained the mighty weapon Pasupat then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that *Arjun* had obtained celestial weapons from *Indra*, then, O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heared that *Arjun* had defeated the proud kalkeys and the Paulomas whom even the gods could not destroy,

। १६४ । यदा श्रौषमसुराणांवधार्थेकिरीटिनंयांतममित्रकर्शनम् । कृतार्थंचाप्यागतं शक्रलोकात्तदानाशंसेविजयायसंजय । १६५ । यदाश्रौषंवैश्रवणेनसार्धं समागतं भीममन्यांश्चपार्थान्।तस्मिन्देशेमानुषाणामगम्ये तदानाशंसेविजयायसंजय । १६६ । यदाश्रौषंघोषयात्रागतानांबंधंगन्धर्वैर्मोक्षणंचार्जुनेन । स्वेषांसुतानांकर्णबुद्धौरतानां तदानाशंसेविजयायसंजय । १६७ । यदाऽश्रौषंयक्षरूपेणधर्मं समागतं धर्मराजेनसूत। प्रश्नान्कांश्चिद्विब्रुवाणंचसम्यक् तदानाशंसेविजयायसंजय । १६८ । यदा श्रौषंनविदुर्मामकास्तान् प्रच्छन्नरूपान्वसतःपाण्डवेयान्।विराटराष्ट्रे सहकृष्णया।चतदानाशंसेविजयायसंजय । १६९ । यदाऽश्रौषंमामकानां वरिष्ठान्धनंजयेनैकरथेनभग्नान्। विराटराष्ट्रेवसता महात्मना तदानाशंसेविजयायसंजय । १७० । यदाऽश्रौषंसत्कृतांमत्स्य

मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६४ ॥ जब मैंने सुना दैत्यों के मारने के लिये शत्रुनाशी अर्जुन गया और शस्त्र विद्या पढकर इन्द्रलोकसे आगया हे संजय उससमय से मैं जयकी आशानहीं करता ॥ ६५ ॥ जब मैंने सुना भीम आदि पाण्डव मनुष्यों के अगम्य देश में जाकर कुबेर से मिले हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहींकरता ॥ ६६ ॥ जब मैंने सुना कर्ण के मत में चलकर मेरेपुत्र घोषयात्रा में गन्धर्वों से पकडे गये और अर्जुन ने उनको छुडाया हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६७ ॥ जब मैंने सुना धर्मराज युधिष्ठिर ने यक्षरूप धर्म के प्रश्नोंका भलीप्रकार उत्तर दिया, हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६८ ॥ जब मैंने सुना विराटके राज्यमें द्रौपदी सहित गुप्त रहते हुए पाण्डवोंको मेरेपुत्रों ने न पहिचाना, हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ६९ ॥ जब मैंने सुना विराट नगर में इकले महात्मा अर्जुन ने मेरेपक्ष वाले बडे बलवानों को मारहटाया, हेसंजय उससमय

then, O *Sanjay* I had no hope of success. When I heard that *Arjun*, the dertroyer of enemies. had returned victorious, after destroying the asuras then, *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that *Bhim* and his brothers had reached the place impregnable to human beings, then, O *Sanjay* I had no hope of success. When I heard that my sons, acting upon the advice of Karna, were taken prisoners by the Gandharvas on their way to Ghos and were set free by Arjun, then O Sanjay I had no hope of success. When I heard that Dharma, the god of justice, in the disguise of a yaksh, had put certain questions to *Yudhishthir*, then O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that my sons had failed to discover the Pandavas residing in the capital of Virat, then, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that my allies were defeated by Arjun, at Virat, then, O Sanjay. I had no hope of success. When I heard

राज्ञासुतांदत्तामुत्तरामर्जुनाय । तांचार्जुनःप्रत्यगृह्णात्सुतार्थे तदानाशंसेविजयायसंजय । १७१ । यदाऽश्रौषंनिर्जितस्याधनस्य प्रव्राजितस्यस्वजनात्प्रच्युतस्य। अक्षौहिणीः सप्तयुधिष्ठिरस्य तदानाशंसेविजयायसंजय । १७२ । यदाऽश्रौषंमाधवंवासुदेवं सर्वात्मनापांडवार्थेनिविष्टम् । यस्येमांगांविक्रममेकमाहुस्तदानाशंसेविजयायसंजय । १७३ । यदाऽश्रौषंनरनारायणौतौकृष्णार्जुनौवदतो नारदस्य अहंद्रष्टाब्रह्मलोकेच सम्यक्तदानाशंसेविजयायसंजय।१७४यदाऽश्रौषंलोकहिताय कृष्णंशमार्थिनमुपयातं कुरूणाम् । शमंकुर्वाणमकृतार्थंचयातंतदानाशंसे विजयायसंजय ॥ १७५ ॥ यदाऽश्रौषंकर्णदुर्योधनाभ्यां बुद्धिंकृतांनिग्रहेकेशवस्य । तंचात्मानंबहुधादर्शयानं तदानाशं

से मै जयकी आशा नहीं करता ॥ ७० ॥ जब मैंने सुना विराट ने अपनी प्रिय पुत्री उत्तरा अर्जुनकोदी और अर्जुन ने अपने पुत्र के लिये ग्रहणकी उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ७१ ॥ जब मैंने सुना जुएमें हारेहुए, धन रहित देश से निकाले हुए और कुटुम्ब से भ्रष्ट युधिष्ठिर के पास सातअक्षौहिणी सेना है हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ७२ ॥ जब मैंने सुना वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण जिन्हों ने एक पग से पृथ्वी ग्रहणकी सबप्रकार पाण्डवोंका हित चाहते हैं हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ७३ ॥ जब मैंने नारद से सुना कि अर्जुन और श्रीकृष्ण नरनारायण ऋषि हैं और ब्रह्मलोक में उन्हें अच्छीतरह देखा है हे संजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ॥ ७४ ॥ जब मैंने सुना संसारके हित के लिये श्रीकृष्ण कौरवों के समीप आये और मेल न करसके और निरास लौटगए हेसंजय उससमय से मैं जय की आशा नहीं करता ॥ ७५ ॥ जब मैंने सुना कर्ण दुर्योधन ने श्रीकृष्णको पकडने की सलाह की और श्रीकृष्णने विराटरूप उनको दिखाया हे संजय उस समयसे मैं जयकी

that the king of Matsya had offerrd his beautiful daughter to *Arjun* and he accepted her for his son, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that Yudhishtir beaten at dice, deprived of his wealth, exiled and separated from allies, had assembled seven akshauhinis of army, then, OSanjay, I had no hope of success. When Iheard that *Vasudev*, who had covered the whole earth with one step was well- wisher of the Pandavas. then O Sanjay, I had no hope of success, When I heard from *Narad* that *Krishna* and *Arjun* were incarnations of *Nara* and *Narayan* and that he had seen them together then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that *Kkishna* had come to Duryodhana as peace maker and returned unsuccessful then O Sanjay, I had no hope of success. When I heared that *Karn* and *Duryodhan* had plotted for the captivity of *Shree* Krishna but he displayed wthin himself the whole universe, then, O Sanjay, I had no hope of Success. When I

सेविजयायसंजय ॥ १७६ ॥ यदाऽश्रौषंवासुदेवेप्रयातेरथस्यै कामग्रतस्तिष्ठमानाम् । अर्तांपृथांसांत्वितांकेशवेन तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १७७ ॥ यदाऽश्रौषंमंत्रिणं वासुदेवंतथा भीष्मंशांतनवंचतेषाम् । भारद्वाजंचाशिषोऽनुब्रुवाणंतदानाशंसेविजयाय संजय ॥ १७८ ॥ यदाऽश्रौषंकर्णउवाचवाक्यंनाहंयोत्स्ये युध्यमानेत्वयीति । हित्वा सेनामपचक्रामचापितदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १७९ ॥ यदाऽश्रौषंवासुदेवार्जुनौ तौतथा धनुर्गाण्डिवमप्रमेयम् त्रीण्युग्रवीर्याणिसमागतानि तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १८० ॥ यदाऽश्रौषंकश्मलेनाभिपन्नेरथो पस्थेसीदमानेर्जुनेवै । कृष्णंलोकान्दर्श-यानंशरीरे तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १८१ ॥ यदाऽश्रौषंभीष्ममममित्रकर्शनं निघ्नंतमाजावयुतंरथानाम् । नैषांकश्चिद्वध्यतेख्यातरूपस्तदानाशंसे विजयायसंजय ॥ १८२ ॥ यदाऽश्रौषंचापगेयेनसंख्ये स्वयंमृत्युंविहितंधार्मिकेण । तच्चाकार्षुःपाण्ड-

---

आशा नहीं करता ।७६। जब मैंनेसुना श्रीकृष्णके जातेसमय दीन कुन्ती रथके आगे खडी हो रोनेलगी और श्रीकृष्ण ने उनको धैर्य दिया उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता । ७७ । जब मैंने सुना पाण्डवों के सलाह देनेवाले श्रीकृष्ण और भीष्म हैं और द्रोणाचार्य्यभी उन्हीं का भला चाहते हैं हेसंजय उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ।७८। जब मैंने सुना कर्ण भीष्मपितामह से यह कहकर कि तेरेयुद्ध करतेसमय मैं युद्ध न करूंगा सैनाको छोडकर चलागया हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ७९। जब मैंने सुनाकि श्रीकृष्ण और अर्जुन और गाण्डीव धनुष बड़ी बलवान यह तीनों वस्तुएं मिलगई हे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८० । जब मैंने सुना अर्जुन ने मोहवश हो रथपर युद्धकी आशा छोड़दी और श्रीकृष्ण ने अपने शरीरमें सब लोकोंको दिखाया हे संजय उसी समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८१ । जबमैंने सुना शत्रुनाशी भीष्मने संग्राम में दशहजार रथियों को नाश करते हुएभी पाण्डवोंका कोई प्रतिष्ठित पुरुष न मारा हेसंजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८२ ।

---

heard that *Vasudev* and *Bhishma* were the counsellors of the Pandavas, and *Drona*, pronounced blessings on them, then, O Sanjay, I had no hope of success. When Karan told Bhishma, that he would not fight under him and left the field, then, O Sanjay I despaired of victory. When I heard that *Vasudev*, *Arjuna*, and the mighty *Gandiva* had united together then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that on Arjuna's intention of avoiding from battle Krishna showed all the worlds within his body, then O Sanjay I had no hope of success. When I heard that Bhishma, the destroyer of foes, killed 10,000 charioteers of the Pandavas every day, but no person of note was among the slain, then O Sanjay, I became hopeless. When I heard that *Bhishma*, had himself hinted at the means of his own death and the Pandavas joyfully acted on it, then O *Sanjay*, I had no hope of

वेयाःप्रहृष्टास्तदानाशंसे विजयायसंजय ॥ १८३ ॥ यदाऽश्रौषंभीष्ममत्यंत शूरंहतं पार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम् । शिखंडिनंपुरतः स्थापयित्वातदानाशंसे विजयायसंजय। १८४। यदाऽश्रौषंशरतल्पेशयानं वृद्धंवीरंसादितंचित्रपुंखैः । भीष्मंकृत्वासोमकानल्पशेषांस्त दानाशंसेविजयायसंजय ॥ १८५ ॥ यदाऽश्रौषंशांतनवेशयानेपानीयार्थे चोदितना-र्जुनेन । भूमिंभित्त्वातर्पितंतत्र भीष्मंतदानाशंसेविजयायसंजय ॥१८६॥ यदावायुश्चं द्रसूर्यौचयुक्तौकौंतेयानामनुलोमाजयाय । नित्यंचास्मान्श्वापदाभीषयंति तदानाशंसे विजयायसंजय ॥ १८७ ॥ यदाद्रोणो विविधानस्त्रमार्गान्निदर्शयन्समरेचित्रयोधी । नपाण्डवान् श्रेष्ठतरान्निहंतितदानाशंसे विजयायसंजय ॥ १८८ यदाश्रौषंचास्मदी

जब मैंने सुना धर्म्मात्मा गंगा पुत्र भीष्मने संग्राममें अपनी मृत्यु अपने आप बतलादी और पाण्डवोंने हर्षपूर्वक वैसाही किया हे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८३ । जब मैंने सुना [अत्यन्त बलवान भयरहित भीष्मको अर्जुनने शिखण्डीको रथ के आगे विठाकर] मारा उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८४ । जब मैंने सुना बडे वीर भीष्म सोमकों को कुछएक छोडकर वाणशय्यामें सोगये हे संजय उससमयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८५ । जब मैंने सुनाकि भीष्मने शर शय्यापर सोकर अर्जुनसे जलमांगा और अर्जुनने बांणसे भूमिको तोड़कर भीष्मको जलसे तृप्त कियाहे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८६ । जबसुनाकि वायु चन्द्रमाऔर सूर्य पाण्डवोंकी जय चाहते हैं और हमारेपक्ष को गीदड आदि भय दिखातेहैं हे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८७ । जब सुनाकि द्रोणाचार्य विचित्र युद्ध करके अनेक प्रकारकी शस्त्र विद्या दिखाताहुआ श्रेष्ठतम पाण्डवोंको न मारसका हे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८८ । जब सुना कि सन्सप्तकनाम

success. When I heard that *Arjun* having placed *Shikhandi* in front wounded *Bhishma*, of immense prowess, then, O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that Bhishma, the old hero, having decimated the army of Pandavas, was lying wounded on a bed of arrows then, O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that Bhishma, wounded and thirsty, asked for some water and *Arjun* supplied it from a hole made by his arrows, then O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that *Vayu*, *Surya*, and *Indra*, desire the success of Pandavas, and beasts of prey put our allies to fear then O *Sanjay*, I had no hope of success. When *Drona*, displaying wonders in warfare did not slay any warrior of note from among the Padavas then O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that the bravest Sansaptakas, appointed for the destruction of *Arjun*, were themselves destroyed by him, O *Sanjay*, I had no hope of success. When I heard that our impregnable phalanx guarded by *Drona* was forced through singly by the

यान्महारथान्व्यवस्थितानर्जुनस्यांतकाय संशप्तकान्निहतानर्जुनेन तदा नाशंसे विजयाय संजय ॥१८९॥ यदाऽश्रौषंव्यूहमभेद्यमन्यैर्भारद्वाजे नात्तशस्त्रेणगुप्तम । भित्त्वासौभद्रं वीरमेकंप्रविष्टं तदानाशंसेविजयायसंजय॥१९०॥यदाऽभिमन्युंपरिवार्यबालंसर्वेहत्वा हृष्टाबभूवुः । महारथाःपार्थमशक्नुवंतस्तदानाशंसे विजायायसंजय ॥१९१॥ यदा ऽश्रौषमभिमन्युंनिहत्यहर्षान्मूढान् क्रोशतोधार्त्तराष्ट्रान् । क्रोधादुक्तं सैंधवेचार्जुनेन तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १९२ ॥ यदाऽश्रौषंसैंधवार्थे प्रतिज्ञांप्रतिज्ञातां तद्वधायार्जुनेन । सत्यांतीर्णां शत्रुमध्येचतेन तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १९३ ॥ यदाऽश्रौषंश्रांतहयेधनंजये मुक्त्वाहयान्पाययित्वोपवृत्तान् । पुनर्युक्त्वावासुदेवंप्रयातं तदानाशंसे विजयाय संजय ॥ १९४ ॥ यदाऽश्रौषंवाहनेष्वक्षेमपुरथोपस्थे तिष्ठता

वाले योद्धाअर्जुनको मारने के लिये तैय्यार थे और अर्जुन ने उन्हें नाश किया हे संजय उसी समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । ८९ । जब सुना कि जिस किलेके द्रोणाचार्य रक्षकथे और वीरोंसे नहीं टूट सकता था उस को तोड कर सुभद्रा का पुत्र अकेला वीर अभिमन्यु भीतर चला गया हे संजय उस समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता । १९० । जब बालक अभिमन्युको कई रथियों ने घेरकर मारा और प्रसन्नहुए अर्जुनको न मार सके हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा करता । ९१ । जब सुना कि अभिमन्युको मार कर मेरेमूर्खपुत्र प्रसन्नता पूर्वक अपनी वडाई करनेलगे और क्रोध से अर्जुनने जयद्रथ के मारनेकी प्रतिज्ञाकी हेसंजय उससमयसे मैं जयकीआशा नहींकरता। ९२। जबसुना किअर्जुन ने जयद्रथके मारनेकी दृढ प्रतिज्ञा को दुश्मनों के मध्य में पूराकिया हेसंजय० । ९३। जब सुना अर्जुन के घोडे थकित होगये और श्रीकृष्णने उनको रथसे खोलकर पानीपिलाया और फिर जोडकर संग्राम में खडा कर दिया हेसंजय उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता

brave son of Subhadra, then O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that our bravest men being unable to kill *Arjun*, surrounded and killed *Abhimanyu*, then I had no hope of success. When the blind *Kavravs* were exulting over the death of *Abhimanyu* Arjun made a vow to kill *Jaydrath* then *O Sanjay* I had no hope of success. When Arjun fulfilled his vow by killing *Jaydruth* then my heart failed. When I heard that *Vasudev* took the tired and thirsty horses from Arjun's chariot to water and took them again to the battlefield, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that Arjun checked his enemies in spite of his horses being so tired, then, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that Yuyudhan of Vrishni family after throwing into confusion the army of Drona by his elephants reached the place where Arjuna and Shree Krishna were, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that Karna got Bhima, in his power, dragged him with his bow a short distance and released him with a few retorts,

पाण्डवेन । सर्वान्योधान्वारितानर्जुनेन तदानाशंसे विजयायसंजय॥ १९५ ॥ यदाऽ
श्रौषंनागवलैःसुदुःसहं द्रोणानीकंयुयुधानंप्रमथ्य । यातंवार्ष्णेयं यत्रतौकृष्णपार्थौ तदा
नाशंसेविजयायसंजय ॥१९६॥ यदाऽश्रौषंकर्णमासाद्यमुक्तंवधाद्भीमं कुत्सयित्वावचो
भिः । धनुष्कोट्यातुद्यकर्णेनवीरं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १९७ ॥ यदाद्रोणःकृतव
र्माकृपश्चकर्णोद्रौणिर्मद्रराजश्चशूरः । अमर्षयन्सैंधवंवध्यमानं तदानाशंसेविजयायसंजय
॥ १९८ ॥ यदाऽश्रौषंदेवराजेनदत्तां दिव्यांशक्तिंव्यंसितांमाधवेन । घटोत्कचेराक्षसेघो
ररूपेतदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १९९ ॥ यदाऽश्रौषंकर्णघटोत्कचाभ्यां युद्धेमुक्तांसूत
पुत्रेणशक्तिम् । ययावध्यःसमरेसव्यसाची तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ २०० ॥ यदाऽ
श्रौषंद्रोणमाचार्यमेकंधृष्टद्युम्नेनाभ्यतिक्रम्यधर्मम् । रथोपस्थेप्रायगतंविशस्तं तदानाशं-

।९४। जब सुना कि घोडोंके असमर्थ होनेपरभी रथमें बैठेहुए अर्जुनने सब योद्धाओं को सामने से हटाया हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ९५ । जब सुना कि हाथियों के दलसे बडी कठोर द्रोणाचार्यकी सेना से लडताहुआ सात्यकि श्रीकृष्ण और अर्जुन के निकट चलागया हेसंजय उसीसमयसे मैं जयकी आशा नहीं करता ।९६। जब सुना कि कर्ण ने भीमसेन को पकडा और दुर्वचन कहकर धनुषके सिरे से मारा और जीता छोड दिया हेसंजय तभी से मैं जयकी आशा नहीं करता ।९७। जब द्रोणाचार्य कृतवर्मा, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा और शल्य ने जयद्रथको मारने दिया उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता । ९८ । जब सुना कि इन्द्रकी दीहुई दिव्यशक्ति श्रीकृष्णने भयानक राक्षस घटोत्कच पर छुडवादी हेसंजय उसीसमय से मैं जयकी आशा नहीं करता ।९९। जबसुना कि घटोत्कचके युद्ध में जो शक्ति अर्जुन के मारनेको थी वह कर्ण ने छोडदी हेसंजय उसी समयसे मैं जयकी आशा नहीं करता ॥२००॥ जब सुना कि रथपर मरनेका निश्चय किये हुए अकेले द्रोणाचार्यको धर्म विरुद्ध धृष्टद्युम्न ने मारा तब से मैं हेसंजय जयकी आशा

then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that Drona, Kritvarma, Kripa, Salya and Drona's son could not save Jaydrath, from being slain, then, O Sanjay, I lost every hope. When I heard that the missile which was given by *Indra* and which was to kill Arjun, had been hurled by Karn against Ghatotkach then O Sanjay, I had no hope for victory. When I heard that Dhrishtdyumn killd Drona, sitting alone to die in his chariot, against the laws of war, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that Nakul, son of Madri, fought a duel with the son of Drona, on equal terms, and drove his chariot in circles then, O Sanjay, I had no hope of success. When, after the death of Drona, his son failed to destroy the Pandavas by his missile, named Narayana, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that no one could prevent Bhim from drinking the blood of his cousin, Dushasan, in the field of battle, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that

से विजयायसंजय ॥ २०१ ॥ यदाऽश्रौषंद्रौणिनाद्वैरथस्थं माद्रीसुतंनकुलंलोकमध्ये । समंयुद्धेमण्डलेभ्यश्चरंतं तदानाशंसे विजयायसंजय ॥ २०२ ॥ यदाद्रोणेनिहतेद्रोणपुत्रोनारायणंदिव्यमस्त्रंविकुर्वन् । नैषामंतंगतवान्पाण्डवानां तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ २०३ ॥ यदाऽश्रौषंभीमसेनेनपीतं रक्तंभ्रातुर्युधिदुःशासनस्य । निवारितंनान्यतमेनभीमं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ४ ॥ यदाऽश्रौषंकर्णमत्यंतशूरं हतंपार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम् । तस्मिन्भ्रातॄणांविग्रहेदेवगुह्ये तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ५ ॥ यदाऽश्रौषंद्रोणपुत्रंचशूरं दुःशासनंकृतवर्माणमुग्रम् । युधिष्ठिरंधर्मराजंजयंतं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ६ ॥ यदाऽश्रौषंनिहतंमद्रराजं रणेशूरंधर्मराजेनसूत । सदासंग्रामेस्पर्धतेयस्तुकृष्णं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ७ ॥ यदाऽश्रौषंकलहद्यूतमूलं मायाबलंसौबलंपाण्डवेन । हतंसंग्रामेसहदेवेनपापं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ८ ॥यदाऽश्रौषंश्रांतमेकंशयानंह्रदंगत्वास्तंभयित्वातदंभः । दुर्योधनंविरथंभग्नशक्तिं तदानाशंसेविजया

नहीं करता । १ । जब सुना कि माद्री के पुत्र नकुल ने द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामाके साथ मण्डल युद्ध किया हेसंजय उससमय से मैं जयकी आशा नहीं करता । २ । जब सुना कि द्रोणाचार्य के मरनेपर उनके पुत्र अश्वत्थामा ने नारायणनाम दिव्य अस्त्र छोडा और यह अस्त्र पाण्डवों का नाश न करसका हेसंजय तबसे० ।३। जब मैंने सुना कि संग्रामके मध्य में भीमसेनने युद्धमें अपनेभाई दुःशासनका रुधिरपिया और उसको किसीने न रोका हेसंजय उससमय० ।४। जब मैंनेसुना कि लडाईमें न डरनेवाला बडाशूरकर्ण अपने देवगुह्य भाई अर्जुन से मारागया हेसंजय मैं उससमय से जयकी आशा नहींकरता । ५ । जब मैंने सुना कि द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा, शूर दुःशासन और उग्र कृतवर्माको युधिष्ठिरने जीता हेसंजय उससमयसे० । ६ । जब मैंने सुना कि श्रीकृष्णसे युद्धकी इच्छाकरनेवाले मद्रराजको राजा युधिष्ठिरने मारा तबसे हेसंजय० ७। जब सुना जुएकी जड और छल बलवाले शकुनि को संग्राम में सहदेवने मारा तबसे हेसंजय० ।८। जब सुना कि तलावका जलबांधकरथकित

Karna the bravest of warriors, was slain by his own brother Arjun, the fact of their being brothers being a mystery even to gods, then O Sanjay I had no hope of success. When I heard that the brave king of Madra who challanged Krishna to battle, was killed by Yudhishthir then, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that Yudhishthir, the just, had defeated the brave son of Drona Dussasan, and Kritvarma, then, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that the wicked Saubala, of wonderful prowess, the root of gambling and feud was killed by Sahadev, the son of Pandu, then O Sanjay I had no hope of success. When I heard that Duryodhan had hidden himself within the lake of water and was lying there powerless with out a chariot, then, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that the Pandavas accompanied by *Vasudev*, having gone to the lake, used abusive language to Duryodhan, who was

यसंजय ॥ ९ ॥ यदाऽश्रौषंपाण्डवांस्तिष्ठमानान् गत्वाह्रदंवासुदेवेनसार्धम् । अमर्षणंधर्षयतःसुतंमे तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १० ॥ यदाऽश्रौषंविविधांश्चित्रमार्गान गदायुद्धेमण्डलशश्चरंतम् । मिथ्याहतंवासुदेवस्यबुद्ध्या तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ ॥ ११ ॥ यदाऽश्रौषंद्रोणपुत्रादिभिस्तैर्हतान्पंचालान द्रौपदेयांश्चसुप्तान् । कृतंबीभत्समयशस्यंचकर्म तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १२ ॥ यदाऽश्रौषंभीमसेनानुयाते नाश्वत्थाम्नापरमास्त्रंप्रयुक्तम् । क्रुद्धेनैषीकमवधीद्येनगर्भं तदानाशंसेविजयायसंजय॥१३॥ यदाऽश्रौषंब्रह्मशिरोऽर्जुनेन स्वस्तीत्युक्त्वाऽस्त्रमस्त्रेणशांतम् । अश्वत्थाम्नामणिरत्नंचदत्तं तदानाशंसेविजयायसंजय ॥ १४ ॥ यदाऽश्रौषंद्रोणपुत्रेण गर्भेवैराट्यांवैपात्यमाने महास्त्रैः । द्वैपायनःकेशवोद्रोणपुत्रं परस्परेणाभिशापैःशशाप ॥ २१५ ॥ शोच्या गान्धारीपुत्रपौत्रैर्विहीना तथाबन्धुभिः पितृभिर्भ्रातृभिश्च । कृतंकार्यंदुष्करं पाण्डवेयैः

अंकला और रथहीन दुर्योधन उसमें छिपा तबसे हेसंजय० ।९। जब सुना वासुदेवके साथ पाण्डव तालावपर गये और असहनशील दुर्योधनको दुर्वाक्यबोलकर उसमेंसे निकाला तबसे हेसंजय० ॥१०॥ जब सुना कि मण्डल महायुद्धमें भीमसेनने दुर्योधनको श्रीकृष्णकी मति अनुसार अधर्मसे मारा तबसे हेसंजय० ।११। जब सुना कि द्रोणाचार्यके पुत्रादिकों ने सोतेहुए पांचालों और द्रौपदीके पुत्रोंको मारा और बडाभयानक बुराकर्म किया हेसंजय० ।१२। जब सुना कि भीमसेनको पीछे आते देखकर अश्वत्थामाने क्रोधसे ऐषीकनाम अस्त्र उत्तराका गर्भनाश करनेके लिये छोड़ा हेसंजय० ।१३। जब सुना कि ब्रह्मशिर नामकअस्त्र स्वस्ति कहकर अर्जुनने अपने अस्त्र से शांतकिया और अश्वत्थामाने अपनामणि रत्नदिया हेसंजय० ।१४। जब सुना कि द्रोणाचार्यके पुत्रने बड़ेअस्त्र से उत्तराका गर्भ गिराना चाहा और व्यास और श्रीकृष्णने उसको शापदिया हेसंजय उससमय से मुझे जयकी आशा नहीं रही ।१५। इससमय पुत्र पौत्र भाई और पिता आदिकोंके मारेजानेसे गांधारी शोचकररही

unable to bear it, O Sanjay I had no hope of success. When I heard that in the duel which ensued, Duryodhn was unfairly struck by club by the advice of Shree Krishna, then O Sanjay, I had no hope of victory. Whan I heard that the son of Drona committed a horrible crime by slaying the Panchals and the sons of Draupadi in their sleep, then, O Sanjay I had no hope of victory. When I heard that *Aswathama*, being pursued by *Bhimsen*, and discharged the fearful missile *Ashika*, by which the embryo in the womb of *Uttara* was wounded, then, O Sanjay, I had no hope of success. When I heard that the missile discharged by *Ashwathama*, was repelled by *Arjun* aud that he had to give up his crown jewel, then, O *Sanjay* I had no hope of victory. When *I* heard that upon Uttara's embryo being wounded by Ashwathama's missile, Vyas and *Krishna* pronounced maledictions on him, them, O *Sanjay*, *I* had no hope af victory. "Woe is me *Gandhari* deprived of her chil-

पितृभिर्भ्रातृभिश्च । कृतंकार्यं दुष्करंपाण्डवेयैः प्राप्तंराज्यमसपत्नंपुनस्तैः ॥ २१६ ॥
कष्टंयुद्धेदशशेषाः श्रुतामेत्रयोऽस्माकं पांडवानांचसप्त । द्व्यूनाविंशतिराहताऽक्षौहि-
णीनां तस्मिन्संग्रामे भैरवे क्षत्रियाणाम् ॥२१७॥ तमस्त्वतीवविस्तीर्णं मोहआविश-
तीवमाम् । संज्ञांनोपलभेसूत मनोविह्वलतीवमे ॥ २१८ ॥ सौतिरुवाच ॥ इत्युक्त्वा
धृतराष्ट्रोऽथविलप्यबहुदुःखितः । मूर्छितःपुनराश्वस्तः संजयंवाक्यमब्रवीत् ॥ २१९ ॥
धृतराष्ट्रउवाच । संजयैवंगतेप्राणांस्त्यक्तु मिच्छामिमाचिरम् । स्तोकंह्यपिनपश्यामि
फलंजीवितधारणे । २२० । सौतिरुवाच । तंतथावादिनंदीनं विलपंतं महीपतिम ।
निःश्वसंतंयथानागं मुह्यमानं पुनः पुनः ॥ २२१ ॥ गावल्गणिरिदं धीमान्महार्थं वा-
क्यमब्रवीत् । सजयउवाच । श्रुतवानासिवैराजन् महोत्साहान्महाबलान् ॥ २२२ ॥
द्वैपायनस्यवदतो नारदस्यच धीमतः । महत्सुराजवंशेषु गुणैः समुदितपुच ॥ २२३ ॥

है और पाण्डवोंने दुष्कर कामकिया कि राज्यको शत्रुरहित करलिया ॥ १६ ॥ सुना है इसयुद्ध में दशबाकीरहे, तीन हमारी ओरके और सात पाण्डवोंकी ओरके, उसभयानक संग्राममें क्षत्रियोंकी अठारहअक्षौहिणीसेना नाशहोगई ॥ १७ ॥ हेसूत अन्धकार मेरेसामने फैल गयाहै और मोहसे मुझ में ज्ञान नहींरहा और मेरामन विह्वल है ऐसा कहकर धृतराष्ट्र विलाप करते २ मूर्छितहोगया और फिर सावधानहोकर संजयसे बोला हेसंजय ऐसी दशा में प्राणोंको इसीसमय छोडनाचाहताहूं प्राणोंके रखनेका कुछभी फल नहीं देखता ॥ २० इसप्रकार कहतेहुए दीन और विलापकरतेहुए सर्पकीसमान श्वासलेतेहुए वारम्बार घबराते हुए राजाधृतराष्ट्रसे बुद्धिमानसंजयने इसअर्थसहित वचनको कहा कि हेराजन ! बडेउत्साह छलवाले दिव्य अस्त्रविद्याके जाननेवाले और इन्द्रकेसमान तेजस्वीगुणोंसे भरेहुए राजाओं

dren, grand children, parents, brothers and kinsmen is in a pitiable plight. Pandavas have performed a brave deed and recovered the kingdom. "Alack a day! *I* hear that the war has left only ten men alive, three on our side and seven on that of the Pandavas. 18 akshauhinis of Kshatryas have been destroyed in the war. *I* feel darkness on all sides. *I* am in a fit of swoon and am ovescome by unconsciousness. My mind if distracted." Bewailng his fate in these and such like terms, *Dhritrashtra* lost his conciousness, in extreme anguish, for a time, then having come to, he again continued:-'After these sad events *I* have a great desire for continuing life no longer. *Sanjay* then addressed the king, who was thus raving, bewailing, sighing like a serpent and losing consciousness at times— "Thou hast heard, O king! an account of powerful and famous men from Vyas and Narad: men born of great royal families, virtuous, famous for their knowledge of the art of war, glorious like *Indra*, men who having subdued the world reigned justly and performed great sacrifices of numerous offerings, gained world wide fame and died at

जातान् दिव्यास्त्रविदुषः शक्रप्रतिमतेजसः । धर्मेण पृथिवींजित्वायज्ञैरिष्ट्वाऽऽप्तद-क्षिणैः ॥ २२४ ॥ आस्मिँल्लोकेयशःप्राप्यततः कालवशंगतान् । शैव्यंमहारथंनरिसृंजयं जयतांवरम् । २२५ । सुहोत्ररंतिदेवंचकाक्षीवन्तमथौशिजम् । बाल्हीकंदमनंचैद्यं श-र्यातिमजितनलम् ॥ २५ ॥ विश्वामित्रममित्रघ्नमम्बरीषं महाबलम् । मरुत्तमनुमिक्ष्वाकुं गयंभरतमेवच ॥ २७ ॥ रामंदाशरथिंचैव शशबिंदुंभगीरथम । कृतवीर्यंमहाभागं त-थैवजनमेजयम् ॥ २८ ॥ ययातिंशुभकर्माणंदेवैर्योयाजितः स्वयम् । चैत्ययूपांकिता भूमिर्यस्येयंसवनाकरा ॥ २२९ ॥ इतिराज्ञां चतुर्विंशन्नारदेनसुरर्षिणा । पुत्रशोका-भितप्तायपुरा श्वैत्यायकीर्तितम् ॥ २३० ॥ तेभ्यश्चान्येगताः पूर्वंराजानोबलवत्तराः महारथामहात्मानः सर्वैः समुदितागुणैः ॥ २३१ ॥ पूरुःकुरुर्यदुःशूरोविष्वगश्वोमहा-द्युतिः अणुहोयुवनाश्वश्चककुत्स्थोविक्रमीरघुः ॥ २३२ ॥ विजयो वीतिहोत्रोंऽगोभव

के वंशमें उत्पन्नहुए जिन्होंने धर्म स सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर पूर्ण दक्षिणावाले यज्ञकिये थे इसलोकमें यशको प्राप्तकिया ऐसेमहारथी शैव्य, वीर सृंजय,सुहोत्र,रन्तिदेव,काक्षिवान्, बाल्हीक, दमन, चैद्य शर्याति, अजितनल, विश्वामित्र, अम्बरीष, मरुत्त, मनु, इक्ष्वाकु, गय,भरत,परशुराम,रामचन्द्र,शशिबिन्दु,भगीरथ,कृतवीर्य,जन्मेजय,ययाति, [जिसकोदेव-ताओंने यज्ञकराया, और जिसके यज्ञशालाओं और खम्भों से यहपृथ्वी भरीहुई है] इन के मरने का वृतांत नारद और व्यास से तूनेसुना है इन चौबीस राजाओंकी कथानारद ने पुत्रशोक से विकलराजा श्वेतसे कहीथी ॥ २३० ॥ इनपहले कहेहुए राजाओं के सिवाय और भी बलवानमहात्मा सब गुणोंसे भरेहुए राजा मरचुके हैं ॥ २३१ ॥ जैसेपुरु, कुरु, यदु, विष्वगश्व, अणुह, युवनाश्व, ककुत्स्थ, रघु, विजय, वीतिहोत्र, अंग, भव,

last. Such were Saivya, the valiant Srinjay, Suhotra Rantidev, Kakshivant of great glory, Valhika, Daman, Saryati, unconquerable Nala. Viswamitra, the destroyer of enemies; Amvarisa of great strength, *Manu*, *Ikshwaku*, *Gaya*, *Bharat*, *Ram*, the son of *Dasarath*, Sasavinda, Bhagiath, Janmejay, the virtuous *Yayati*, who was assisted in his sacrifices by gods and the altars and pillars of whose sacrificeęs are still to be found all over the earth. The history of these kings was told by Narad before Saivya, who was greatly distressed at the loss of his sons. *Besides* these many others were more powerful, noble-minded mighty charioteers having every virtue. These were Puru, *Kuru*, Yadu, *Sur*, Viswagaswa, Anuha, Yuvanaswe, *Kakutsth*, Vikrami, Raghu, Vijay, Vitihotra, Anga, Bhava, Sweta, Vrihadguru, Usiner, Satrath Kank, Duliduh Drum, unconquerable Parasu, Pundra, Devavridh Supritim, Supritik, Vrihadrath Mahots Vinitatma, Sukratu, Nala, the king of Nishadhas, Satyavrat Santbhay Sumrit, Subal, Janujangh Ark, Aryabhritya, Shuchibrat Dalabandh Niramard Ketusrang Brihadbal, Dhrishtketu, Brahad

श्वेतोबृहद्गुरुः । उशीनरःशतरथः कंकोदुलिदुहोद्रुमः ॥ २३३ ॥ दंभोद्भवःपरोवेनः
सगरःसंकृतिर्निमिः । अजेयःपरशुःपुंड्रः संभुर्देवावृधोऽनघः ॥ २३४ ॥ देवाह्वयःसु-
प्रतिमः सुप्रतीकोबृहद्रथः । महोत्साहोविनितात्मा सुक्रतुर्नैषधोनलः ॥ २३५ ॥ सत्य
व्रतःशांतभयः सुमित्रःसुवलःप्रभुः । जानुजंघोऽनरण्योऽर्कः प्रियभृत्यः शुचिव्रतः
॥ २३६ ॥ वलवंधुर्निरामर्दः केतुश्टङ्गोबृहद्वलः । धृष्टकेतुर्बृहत्केतुर्दीप्तकेतुर्निरामयः
॥ ३७ ॥ अविक्षिच्चपलोधूर्त्तः कृतवन्धुर्दृढेषुधिः । महापुराणसंभाव्यः प्रत्यङ्गःपरहा-
श्रुतिः ॥ ३८ ॥ एतेचान्येचराजानः शतशोऽथसहस्रशः । श्रूयंतेशतशश्चान्ये संख्या
ताश्चैवपद्मशः ॥ ३९ ॥ हित्वासुविपुलान् भोगान् बुद्धिमन्तो महावलाः । राजानो-
निधनंप्राप्तास्तवपुत्राइवप्रभो ॥ २४० ॥ येषांदिव्यानिकर्माणि विक्रमस्त्यागएवच ।
माहात्म्यमपिचास्तिक्यं सत्यंशौचंदयार्जवम् ॥ ४१ ॥ विद्वद्भिः कथ्यतेलोके पुरा-
णेकविसत्तमैः । सर्वर्द्धिगुणसंपन्नास्तेचापिनिधनंगताः ॥ ४२ ॥ तवपुत्रादुरात्मानः

श्वेत,बृहतगुरु,उशीनर,शतरथ,कंक,दुलि,द्रुह,द्रुम,दम्भोद्भव,पर,वेन,सगर,संस्कृति,निमि,
अजेयपरशु,पुँड्र,शम्भु,पापरहितदेवावृध,देवाह्वय,सुप्रतिमसुप्रतीक,बृहद्रथ,महोत्साह,विनी
तात्मा,सुक्रतु,निषध देशका स्वामी नल, भयरहितसत्यव्रत,सुमित्र,समर्थ,सुवल, जानुजङ्घ,
अनरण्य,अर्क,प्रियभृत्य,भृत्य शुचिव्रत,वलवन्धु,निरामर्द,केतुशृङ्ग,बृहदवल, धृष्टकेतु,बृहद-
केतु,रागरहित,दीप्तकेतु,चपल,धूर्त,अविक्षित, कृतवन्धु,दृढेषुधि,महापुराण,सम्भाव्य,प्रत्यंग
परह,श्रुति,यह और इनके अतिरिक्त औरभी सैकडों हजारों सुनेजाते हैं जिनकी गिन्तीपद्मों
है,बडे बुद्धिमान् और बडे बलवाले राजा बडे २ भोगोंकोछोडकर तेरेपुत्रों के समान नष्टहो
गये ॥२४०॥ जिनके दिव्यकर्म और पराक्रम दान और जिनकी बडाई आस्तिकता और
सत्य पवित्रता और दया सधापन लोकमें विद्वानों ने और पुराणोंमें श्रेष्ठ कवियोंने कहाहै
जो सम्पूर्ण ऋद्धियोंसे भरेहुएथे वहभी मृत्युको प्राप्तहोगये।४२।तेरेपुत्र दुष्ट और क्रोधी लोभी

ketu, Dripta ketu, Niramay, Abikshit, Chapal, Dhurt, Kritbandhu, Drirshuddhi, Mahapuransombhaya, Pratyang, Praha and Sruti. These kings and many more, amounting to hundreds and thousands, of great power and wisdom, have like thy sons, left this world, with its enjoyments. Their holy deeds, valour, generosity, faith, truth, purity, simplicity and mercy are known, far and wide in the records of old and sacred poets of great learning. They gave up their Ghost in spite of all their virtues.242.Thy sons were wicked passionate, avaricious and ill-tempered. Thou art intelligent, wise and a scholar of holy books. They are never swayed by misfortune whose mind is enlightened by holy books. Thou knowest, O prince, the vicissitudes of fortune and hence thy sorrow for the loss of thy sons is utterly unbecoming.285. Moreover, it is unwise to grieve for that which will happen, for who can wisely alter the

मतस्त्राश्चैवमन्युना । लुब्धाद्दुर्वृत्तभूयिष्ठाञ्जताञ्छोचितुमर्हसि । २४३ । भवतवानसिमेधा
वीबुद्धिमान्प्राज्ञसंमतः । येषांशास्त्रानुगाबुद्धिर्नते मुह्यंतिभारत ॥ ४४ ॥ निग्रहानुग्र-
हौचापिविदितौतेनराधिप । नात्यंतमेवानुवृत्तिः कार्य्यातेपुत्ररक्षणे ॥ ४५ ॥ भवि-
तव्यंतथातच्चनानुशोचितुमर्हसि । दैवंप्रज्ञाविशेषेणकोनिवर्त्तितुमर्हति ॥ ४६ ॥ वि-
धातृविहितंमार्गंनकश्चिदतिवर्त्तते । कालमूलमिदंसर्वं भावाभावौसुखासुखे ॥ ४७ ॥
कालःसृजति भूतानि कालः संहरतेप्रजाः । संहरंतंप्रजाः कालं कालःशमयते पुनः
॥ २४८ ॥ कालोहिकुरुतेभावान् सर्व्वलोकेशुभाशुभान् । कालःसंक्षिपतेसर्वाः प्रजा-
विसृजतेपुनः ॥ २४९ ॥ कालःसुप्तेषु जागर्त्तिकालोहिदुरतिक्रमः । कालःसर्वेषुभूते
षुचरत्यविधृतः समः ॥ २५० ॥ अतीतानागताभावा येचवर्त्तन्तिसांप्रतम् । तान्का-
लनिर्मितान्बुद्ध्वा नसंज्ञांहातुमर्हसि ॥२५१ ॥ सौतिरुवाच । इत्येवपुत्रशोकार्त्तंधृतराष्ट्रं

और बडे दुष्कर्मी थे उनका तू शोच करने योग्य नहीं है तू शास्त्र पढाहुआ और विद्वानों से माननीय है । सो हेधृतराष्ट्र जिनकी बुद्धि शास्त्रानुकूलहै वह मोह नहीं करते ।४४। हे धृतराष्ट्र दण्ड और अनुग्रह दोनों तुझको विदितहैं अपनेपुत्रोंकी रक्षामें तुझको अत्यन्त ध्यान नहीं देनाचाहियेथा।४५।और यहबात ऐसीहीहोनी थी इसलिये तुझको शोच न करना चाहिये कौन भवितव्य को विशेष वुद्धि से हटा सकताहै ? प्रारब्ध के रचेहुएको कौनहटा सकताहै ! इससब संसारका कारण काल है, और नष्टहोना सुख और दुःख इस सवका कारण कालही है ।४७। काल इस संसारको उत्पन्न करताहै और कालही नाशकरताहै काल ही सबप्रजाको नाशकरताहै और कालही फिर उत्पन्न कर देताहै, प्रलयके समय कालही जागताहै काल किसीसे हटानेयोग्य नहींहै, काल सम्पूर्णप्राणियोंमें समानरूपसे किसी के रोके नहींरुकता ॥२५०॥ बीतेहुए और आनेवाले वर्तमान सम्पूर्णभावोंको कालसेबनाया हुआजानकर बेहोश मतहो ।५१। उग्रश्रवा बोले इसप्रकार पुत्रशोक से घबराए हुए प्रजा

decrees of fate ? No one can deviate from the way marked out by Providence. Birth and death, pleasure and pain, go with Time. Time creates all beings and it is Time, who destroys them again. Time burns and time extinguishes fire. All good and bad states are brought about by Time. Time kills all beings and creates them again. Time alone keeps vigil when all nature is asleep. Indeed Time is in-capable of being overcome. Time passes over all things without stopping. Knowing as thou dost, that all beings born in Past, Present, or Future are the offspring of time, it is not worthy of thee to abandon reason. *Sanjay* thus administered comfort to the royal Dhritrashtra, over-come by grief for his sons. Taking these for his subject Vyas composed a holy poem which has been brought before the world by learned and holy poets by means of purans composed by them. The reading of this book is an act of

जनेश्वरम् । आश्वासयस्वस्थमकरोत् सूतोगावल्गणिस्तदा ॥ २५२ ॥ अत्रौपनिषदं-
पुण्यं कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् । विद्वद्भिः कथ्यतेलोके पुराणेकविसत्तमैः ॥ २५३ ॥
भारताध्ययनंपुण्यमपिपादमधीयतः श्रद्दधानस्यपूयंते सर्वपापान्यशेषतः ॥ २५४ ॥
देवादेवर्षयोह्यत्र तथाब्रह्मर्षयोऽमलाः । कीर्त्यंतेशुभकर्माणस्तथायक्षामहोरगाः । २५५ ।
भगवान्वासुदेवश्च कीर्त्यतेऽत्रसनातनः । सहिसत्यमृतंचैव पवित्रंपुण्यमेवच ॥ २५६ ॥
शाश्वतंब्रह्मपरमंध्रुवं ज्योतिःसनातनम् । यस्यदिव्यानिकर्माणि कथयंतिमनीषिणः ।
॥ २५७ ॥ असच्चसदसच्चैव यस्माद्विश्वंप्रवर्तते । संततिश्चप्रवृत्तिश्च जन्ममृत्युपुनर्भवाः
॥ २५८ ॥ अध्यात्मंश्रूयतेयच्च पंचभूतगुणात्मकम् । अव्यक्तादिपरंयच्चसएवपरिगी
यते ॥ २५९ ॥ यत्रयतिवरामुक्ता ध्यानयोगबलान्विताः । प्रतिबिंबमिवादर्शे पश्यं
त्यात्मन्यऽवस्थितम् ॥ २६० ॥ श्रद्दधानःसदायुक्तः सदाधर्मपरायणः । आसेवन्नि-

के स्वामी राजाधृतराष्ट्रको संजय ने समझाकर सावधान किया ।५२। इसशोक विषयको
पवित्र आत्माव्यासने कहाहै जो लोकमें विद्वानोंने और पुराणोंमें उत्तम कवियों ने कहा है
पवित्र महाभारतकाथोड़ासाभी श्रद्धासे पढना सबपापोंको दूरकरताहै ५४ इसमहाभारत में
देवता देवर्षि और पापरहित ब्रह्मऋषि शुभकर्म करनेवाले यक्ष और बड़े सर्पोंकी कथाहैं
और सत्य,नित्य,पवित्र सनातन श्रीकृष्णकाभी वर्णनहै । कार्य कारणरूप, सृष्टिके आदि
अन्त में न दीखनेवाला संसार जिससे उत्पन्नहुआ ब्रह्मा यज्ञ जन्म मृत्यु और फिर सं-
सारकी उत्पत्ति जिससे हुई और पञ्चज्ञानेंद्रिय जोकि पंचभूत गुण कहलाती हैं जो इस
सूक्ष्मरूप सृष्टिकी आदि है और जो सबसे परहै वह इसमहाभारत में कहागयाहै जिस
परमात्माका मुक्त और ध्यान करनेवाले योगबलसे हृदयके दर्पणमें प्रतिबिम्ब देखते हैं ।
॥२६०॥ श्रद्धाकरनेवाला और सदा जितेंद्रिय मनुष्य इसअध्यायको पढकर पाप से छूट

piety. He who reads even a single portion of it, has truly, all his sinful habits removed. This book contains an account of gods, sages, virtuous rishis, Yakshes and Nagas. This book also contains the history of Vasudev, possessor of all virtues, true and just, pure and holy, the eternal Brahm the greatest, the true and constant light, whose holy deeds learned and wise men recount, from whom have sprung up the principles of generation, birth and death. This book also contains an account of Adhyatm which partakes of the nature of the five elements. That being is also described in this book, who is defined by Yogis as free from death and reflections of whose image are seen in the mirrors of their hearts when cleansed by meditation.260. A religious man, devoted to piety, always engaged in the exercise of virtue is freed from sin on reading this portion. The believer, who always hears this portion of the Mahabharat called "Introduction" does not fall into difficulties. He who

ममध्यायं नरःपापात्प्रमुच्यते ॥ २६१ ॥ अनुक्रमणिकाध्यायं भारतस्येममादितः । आस्तिकःसततंशृण्वन्नकृच्छ्रेष्ववसीदति ॥ २६२ ॥ उभेसंध्येजपन्किंचित् सद्योमुच्ये तकिल्बिषात्। अनुक्रमण्यायावत्स्यादह्नारात्र्याच संचितम् ॥ २६३ ॥ भारतस्यवपु र्ह्येतत्सत्यं चामृतमेवच । नवनीतंयथादध्नो द्विपदांब्राह्मणोयथा ॥ २६४ ॥ आरण्य- कंचवेदेभ्य ओषधिभ्योमृतंयथा । ह्रदानामुदधिःश्रेष्ठो गौर्वरिष्ठाचतुष्पदाम् ॥ २६५ ॥ यथैतानीतिहासानां तथाभारतमुच्यते । यश्चैनंश्रावयेच्छ्राद्धे ब्राह्मणान्पादमंततः । २६६। अक्षय्यमन्नपानंवै पितॄंस्तस्योपतिष्ठते । इतिहासपुराणाभ्यां वेदंसमुपबृंहयेत ।२६७। बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदोमामयंप्रहरिष्यति । कार्ष्णंवेदमिमंविद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते ॥ २६८ ॥ भ्रूणहत्यादिकं चापि पापं जह्यादसंशयम् । यइमंशुचिरध्यायंपठेत्पर्वणि पर्वणि ॥ २६९ ॥ अधीतंभारतंतेन कृत्स्नंस्यादितिमेमतिः । यश्चैनंशृणुयान्नित्यमार्षं

जाताहै जो आस्तिकपुरुष भारतके आदि के इस अनुक्रमणिका अध्यायको सदैव सुनता है वह बडी २ आपत्तियोंसे नहीं घबराता ।६२। प्रातःकाल सायंकाल अनुक्रमणिका अध्याय के कुछभागको पढनेवाला दिन और रात्रिके पापोंसे छूटजाता है यह अध्याय भारत का सत्य और अमृत से भराहुआ देहहै जैसे दही में मक्खन दो पांववालों में ब्राह्मण, वेद में आरण्यक औषधियोंमें अमृत नदोंमें समुद्र और चौपायोंमें गऊ जैसे उत्तम है वैसेही महा भारत सबइतिहासोंमें बडा है जोमनुष्य श्रद्धासे इसके एकअध्यायका चतुर्थभाग ब्राह्मणों को सुनावे उसका दियाहुआ अन्नपान पितरोंको अक्षय मिलताहै । इतिहास और पुराणोंसे वेदकाअर्थ प्रकाशहोताहै थोडेपढेहुए मनुष्यसे वेदहानिका भयकरताहै सम्पूर्ण वेदको सुनाकर विद्वान् अपने अर्थको पाता है ।६८।और सम्पूर्णपापको निश्चय दूरकरता है जो पवित्रहोकर इस अध्यायको पर्व२ करके पढता है उसको सम्पूर्ण महाभारतका फलहोता है जो पुरुष

reads a portion of the Introduction, morning and evening, is freed from sins. This portion is liks nectar in the Mahabharat. As butter is among curds, Brahman among bipeds, Aranyak among the Vedas, nectar among medicines, the Ocean among the receptacles of water, cow among quadrupeds, so is the Bharat among histories. He who recites even a small portion of this book to the Brahmans during a sradh, his offerings of food and drink to the manes of his ancestors become inexhaustible. By the aid of history and the purans, the Vedas may be explained, but it is afraid of one with imperfect knowledge lest one should injure it. A learned man, who recites this store of knowledge composed by Vyas, is happy No doubt it may save one from the greatest sins. One who reads this chapter every month, reads the whole of Mahabharat. He who respectfully listens this sacred book acquires long life and fame. In former days they weighed this book against

श्रद्धासमन्वितः ॥ २७० ॥ सदीर्घमायुःकीर्त्तिञ्च स्वर्गतिंचाप्नुयान्नरः । एकतश्चतु-
रोवेदाभारतंचैतदेकतः ॥ २७१ ॥ पुराकिलसुरैःसर्वैः समेत्यतुलयाधृतम् । चतुर्भ्यः
सरहस्येभ्यो वेदेभ्योऽह्यधिकंयदा ॥ २७२ ॥ तदाप्रभृतिलोकेऽस्मिन्महाभारतमुच्यते ।
महत्वेचगुरुत्वेच ध्रियमाणंयतोऽधिकम् ॥ २७३ ॥ महत्वाद्भारवत्वाच्च महाभारत
मुच्यते निरुक्तमस्ययोवेद सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ २७४ ॥ तपोनकल्कोऽध्ययनंनकल्कः
स्वाभाविकोवेदविधिर्नकल्कः । प्रसह्यवित्ताहरणं नकल्कस्तान्येव भावोपहतानिकल्कः
इति श्रीमन्महाभारते आदिपर्वणि अनुक्रमणिकापर्वणि प्रथमोऽध्याय. ॥ १ ॥

॥ अथपर्व संग्रहपर्व ॥

ऋषयऊचुः ॥ समंत पंचकमितियदुक्तं सूतनन्दन । एतत्सर्वंयथातत्वं श्रोतुमि
च्छामहेवयम् ॥ १ ॥ सौतिरुवाच ॥ शृणुध्वंममभोविप्रा ब्रुवतश्चकथाःशुभाः । समंत
पंचकाख्यंच श्रोतुमर्हथसत्तमाः ॥ २ ॥ त्रेताद्वापरयोःसंधौ रामःशस्त्रभृतांवरः । अस

सिद्धियुक्त इसअध्यायको सुनताहै वह दीर्घायु और कीर्तिवालाहोकर स्वर्गको जाता है पूर्व-
काल में देवताओंने तराजू में एकतरफ चारों बेदोंको और दूसरीओर महाभारतको रक्खा
यह सबसे भारीहुआ उस दिन से महाभारत नामहुआ जो मनुष्य इसके सत्यार्थ को जानता
है वह सबपापों से छूटजाता है ७४। तपस्या पढना और संध्यादि सम्पूर्ण बेदविधि और
दुःखों को सहकर शिलोंछन बृत्तिकरना कदापि पाप नहीं होसक्ताहै पर यदि यह झूंठे अ-
भिप्राय से किये जांय तो निःसन्देह पापहोते हैं ॥ २७५ ॥

अथ पर्व संग्रहपर्व ॥

ऋषियोंने सूतजीसे प्रश्नकिया कि समन्त पंचकका नाम जो तुमने कहा इसको यथार्थ
रीति से सुनना चाहते हैं ।१। सूतपुत्रने कहा हेब्राह्मणो मैं कहताहूं तुम सुनों समन्त पंचक
पवित्र स्थानका बृत्तान्त सुनने के तुम योग्यहो त्रेता और द्वापरकी संधि में शस्त्रधारियों में

the four Vedas and it was found that the Mahabharat was the heavier of the two. From that day it is called the Mahabharat as being great, both in substance and weight. He who knows its meaning is saved from all sin. Asceticism is innocent, study is harmless, the rituals prescribed by the Vedas for all are harmless, the acquisition of wealth by exertion is harmless; but when they are abused they become sources of evil.275.

CHAPTER II.

The rishis asked Ugrashrava to give in full an account of Samantpanchak. The account given by Ugrashrava is as follows:- "At the end of *Treta* and the beginning of Dwaper Yug, Rama, the son of Jamadagni, the great warrior, repeatedly extirpated the Kshatrya race, for the wrongs done to his family. On the anni-

कृत्वार्थिवंक्षत्रं जघानामर्षचोदितः ॥ ३ ॥ ससर्वंक्षत्रमुत्साद्य स्ववीर्यणानलद्युतिः ।
समंतपंचकेपंच चकाररौधिरान्हृदान ॥ ४ ॥ सतेषुरौधिरांभःसु हृदेषुक्रोधमूर्च्छितः ।
पितॄन्संतर्पयामास रुधिरेणेतिनःश्रुतम् ॥५॥ अथर्चीकादयोऽभ्येत्यपितरोराममब्रुवन् ।
रामराममहाभाग प्रीताःस्मतवभार्गव ॥ ६ ॥ अनयापितृभक्त्याचविक्रमेणतवप्रभो ।
वरंवृणीष्वभद्रंते यमिच्छसिमहाद्युते ॥ ७ ॥ रामउवाच ॥ यदिमेपितरःप्रीता यद्यनु-
ग्राह्यतामयि । यच्चरोषाभिभूतेन क्षत्रमुत्सादितंमया ॥ ८ ॥ अतश्चपापान्मुच्येऽह
मेषमेप्रार्थितोवरः । हृदाश्चतीर्थभूतामे भवेयुर्भुविविश्रुताः ॥ ९ ॥ एवंभविष्यतीत्येवं
पितरस्तमथाब्रुवन् । तंक्षमस्वेतिनिषिषिधुस्ततः सविररामह ॥ १० ॥ तेषांसमीपेयो
देशोहृदानांरुधिरांभसाम् । समंतपंचकमितिपुण्यं तत्परिकीर्तितम् ॥ ११ ॥ येनलिं-

श्रेष्ठ परशुराम ने क्रोधसे कईवार क्षत्रियोंको नाश किया ।३। उस अग्नि के समान तेजस्वी ने अपनेबलसे क्षत्रियोंको नाश करके समन्त पंचकमें रक्तके पांचतालाब बनाये, और क्रुद्ध होकर रुधिर से अपनेपितरोंका तर्पणकिया तत्पश्चात् रिचीकादि पितर परशुराम के पास आकर बोले हेभृगुवंशी महाभागराम हम तेरेऊपरप्रसन्नहैं तू बडापराक्रमी और पितरों का भक्तहै तेरा भलाहो हे बडीकान्तिवाले हमसे अपनीइच्छानुसार बरमांग ।७।परशुरामनेकहा यदि आप मुझपर प्रसन्नहैं और मुझको अनुग्रहयोग्य समझतेहैं तो मैंने जो क्रोधित हो कर क्षत्रिय वंश को नाश किया है उसके पाप से छूटजाऊं यही मेरी इच्छा है यह पाँचो तालाबरुधिर के जोमैंनेबनायेहैंसोसंसारमें तीर्थ प्रसिद्धहों ।९। पितरोंने कहा ऐसाही होगा इसके उपरान्त उसके क्षत्रियोंकीहिंसाका निषेधकिया और परशुरामने स्वीकार किया ।१०। उन रुधिर के तालाबोंकेसमीप का पवित्र देश समन्तपंचक प्रसिद्ध है ।११। विद्वानोंनेकहा

hilation of the whole race he filled at Samant Panchak five lakes of blood. Standing in the midst of bloody water he offered, in rage, oblations of blood to his Pitris. It was then that Richik, and other ancestors, appered before him and said:—'O Ram! Blessed Ram! child of Bhragu, we are gratified with the service thou hast rendered to thy ancestors, with the force of thy arms. Blessings be upon thee, O great and illustrious one! Ask the boon of thy desire.' Ram said:'If you, my ancestors, are favourably disposed towards me, the boon I crave is that I may be freed from the sins I have committed in annihilating the Kshatrya race and the lakes which I have formed of blood may be turned into famous sacred places.' His ancestors then said. "It shall be as you desire. Be no longer bloody." So Ram was pacified and the region that lies near those lakes of blood has been called Samant Panchak, from that day. Wise men say that every country should have a name denoting some famous event which might have taken place there.

गेनयेोदेशोयुक्तः समुलक्ष्यते । तेनैवनाम्नायंदेशंवाच्यमाहुर्मनीषिणः ॥ १२ ॥ अंतरेचैवसंप्राप्ते कलिद्वापरयोरभूत् । संतपंचकेयुद्धं कुरुपांडवसेनयोः ॥ १३ ॥ तस्मिन्परमधार्मिष्ठे देशभूदोषवर्जिते । अष्टादशसमाजग्मुरक्षौहिण्योयुयुत्सया ॥ १४ ॥ समेत्यतंद्विजास्ताश्च तत्रैवनिधनंगताः । एतन्नामाभिनिर्वृत्तं तस्यदेशस्यवैद्विजाः । १५ । पुण्यश्चरमणीयश्चसदेशोवः प्रकीर्तितः । तदेतत्कथितंसर्वं मयाब्राह्मणसत्तमाः । यथादेशः सविख्यातस्त्रिषुलोकेषुसुव्रताः ॥ १६ ॥ ऋषयऊचुः ॥ अक्षौहिण्यइतिप्रोक्तं यत्त्वया सूतनंदन । एतदिच्छामहेश्रोतुं सर्वमेवयथातथम् ॥ १७ ॥ अक्षौहिण्याःपरीमाणंनरा श्वरथदंतिनाम् । यथावच्चैवनोब्रूहिसर्वंहिविदितंतव ॥ १८ ॥ सौतिरुवाच एकोरथोगज श्चैकोनराः पंचपदातयः । त्रयश्चतुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते ॥ १९ ॥ पत्तिंतु त्रिगुणामेतामाहुः सेनामुखंबुधाः । त्रीणिसेनामुखान्येकोगुल्मइत्यभिधीयते ॥ २० ॥ त्रयोगुल्मागणोनाम वाहिनीतुगणास्त्रयः । स्मृतास्तिस्रस्तुवाहिन्यः पृतनेतिविचक्षणैः ॥ २१ ॥ चमूस्तुपृतनास्तिस्रस्तिस्रश्चम्वस्त्वनीकिनी । अनीकिनींदशगणां प्राहुरक्षौ

हैकिजो देशजिस चिन्ह से युक्तहो वहउसी नामसे प्रसिद्ध होताहै ।१२। कलियुग औरद्वापर के संगम में समंतपंचकमें कौरवों और पाण्डवों की सेनाकायुद्धहुआ ।१३। उसअत्यन्तधर्म युक्त, पवित्रदेशमें युद्धके लिये १८ अक्षोहिणी सेना एकात्रित हुई ।१४। हेब्राह्मणों वहसब वहीं नाशहुई।यह समन्त पंचक नामका कारणहै ।१५। पवित्र और सुन्दरसमन्त पंचक देशके प्रसिद्धहोनेका वृत्तान्त मैंने तुम से कहा ऋषियोंने कहा हे सूतपुत्र अक्षौहिणी किसको कहते हैं हमको बतलाइये । अक्षोहिणीके मनुष्य घोडे रथ हाथियोंका प्रमाण हमें बतलाओ क्योंकि तुम सबबात जानतेहो ।१८। उग्रश्रवा ने कहा १ रथ १ हाथी ५ प्यादे ३ घोडे का नाम पत्ति है।१९। ३पत्तिका १सेनामुख ३सेनामुखका १गुल्म ।२०। ३गुल्मका १गण ३ गणकी १ बाहिनी ३वाहिनीकी १ प्रतनाहोती है ।२१। ३प्रतनाका १चमू और ३ चमूकी

At the end of Dwapar and the beginning of Kaliyug the great war between the Kauravas and the Pandavas was fought on the same plain. On that holy plain were assembled I8 Akshauhinis of warriors eager for battle and were extirpated on the spot. I have now explained the reason why of the name Samant panchak and the country described by me is holy and charming. I have told you all I knew about it."16. The sages then said "You have used the term Akshauhini. Please explain the meaning of it. Tell us fully the number of horse, foot, chariots and elephants comprising an Akshohini as you know all about it." Sauti replied "1 Chariot, 1 elephant, 5 foot soldiers and 3 horse form one Patti; 3 Putis make one Senamukh; 3 Senamukhs make one Gulm; 3Gulms make one Gun; 3 Guns a Vahini; 3 Vahinis one Pratana; 3 Pratanas a Chamu;3 Chamus one Anikini and10Anikinis taken together

हिणींबुधाः ॥ २२ ॥ अक्षौहिण्याःप्रसंख्यातारथानांद्विजसत्तमाः। संख्यागणिततत्त्वज्ञैः
सहस्राण्येकविंशतिः ॥ २३ ॥ शतान्युपरिचैवाष्टौतथाभूयश्चसप्ततिः। गजानांचपरी
माणमेतदत्रविनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥ ज्ञेयंशतसहस्रंतु सहस्राणिनवैवतु। नराणामपिपंचा
शच्छतानित्रीणिचानघाः ॥ २५ ॥ पंचषष्टिसहस्राणितथाश्वानांशतानिच। दशोत्तरा
णिषट्प्राहुर्यथावदिहसंख्यया ॥ २६ ॥ एतामक्षौहिणींप्राहुः संख्यातत्त्वविदोजनाः
यांवःकथितवानस्मि विस्तरेणतपोधनाः ॥२७॥ एतयासंख्ययाह्यासन्कुरुपांडवसेनयोः
अक्षौहिण्योद्विजश्रेष्ठाः पिंडिताष्टादशैवतु ॥ २८ ॥ समेतास्तत्रवैदेशे तत्रैवानिधनंगताः।
कौरवान्कारणंकृत्वा कालेनाद्भुतकर्मणा। अहानियुयुधेभीष्मोदशैव परमास्त्रवित्।
अहानिपंचद्रोणस्तु ररक्षकुरुवाहिनीम् ॥ ३० ॥ अहनीयुयुधेद्वेतु कर्णःपरबलार्दनः।
शल्योऽर्धं दिवसंचैव गदायुद्धमतःपरम् ॥ ३१ ॥ तस्यैवदिवसस्यांते द्रौणिहार्दिक्य
गौतमाः। प्रसुप्तंनिशिविश्वस्तं जघ्नुर्यौधिष्ठिरंबलम् ॥ ३२ ॥ यत्तुशौनकसत्रेते भारता
ख्यानमुत्तमम्। जनमेजयस्यतत्सत्रे व्यासशिष्येणधीमता ॥ ३३ ॥ कथितंविस्तरार्थंच

१ अनीकिनी होती है और १० अनीकिनी को विद्वान पुरुष अक्षौहिणी कहते हैं ।२२। हे
ब्राह्मणों अक्षौहिणीमें २१८७० रथ इतनेही गज ॥२४॥ १०९,३५० मनुष्य और ६५६१०
घोडे होतेहैं ॥ हेतपस्वियों विद्वानोंने अक्षौहिणीकी यह संख्या कही है ॥२७॥ ऐसी १८
अक्षौहिणी कौरव और पाण्डवोंकी सेना में इकट्ठी थीं ॥ २८ ॥ उस देश में इकट्ठी हुई
कौरवों को कारण बनाकर अद्भुतकाल से सब नाश हुई ॥ २९ ॥ अद्भुत अस्त्र विद्या
जाननेवाला भीष्म १० दिनतक और द्रोण ५दिनतक कौरवों के सेनापति रहे ॥३०॥ कर्ण
(शत्रुओंका नाश करनेवाले) ने दोदिनतक और शल्य ने आधे दिनतक युद्धकिया तत्पश्चात्
गदायुद्धहुआ उसी दिनके अन्तभागमें अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्यने रात्रिके समय
युधिष्ठिरकी सेनाको नाश किया। ३२। हेशौनक तेरेयज्ञमें जो भारतका आख्यान मैंने

make one Akshauhini. Mathematicians have found out by calculation that an Akshauhini contains 21,870 Chariots, as many Elephants, 109350 Foot soldiers, 65,610 Horse. These, O learned men, as I have fully explained, are the numbers which make up an Akshauhini and Mathematicians concur in saying so. 18 such Akshauhinis made up the armies of the Kauravas and Pandavas. Time, whose acts are wonderful, assembled them on that field and having made the Kauravas the cause, destroyed them all. Bhishm, acquainted with the use of choice arms fought ten days; Drona protected the Kourava lists for five days; Karn, the destroyer of enemies fought 2 days; Salya for half a day. In the after noon was fought the duel, with clubs, between Duryodhana and Bhim. In the night of the same day Aswathama, Kratvarma, and Kripa destroyed the army of Yudhishthir while

यशोवीर्यमहीक्षिताम् । पौष्यंतत्रचपौलोममास्तीकंचादितः स्मृतम् ॥ ३४ ॥ विचित्रार्थ पदाख्यानमनेकसमयान्वितम् ।। प्रतिपन्नंनरैःप्राज्ञैर्वैराग्यमिवमोक्षिभिः ॥ ३५ ॥ आत्मैववेदितव्येषु प्रियेष्विवहिजीवितम् । इतिहासःप्रधानार्थः श्रेष्ठःसर्वागमेष्वयम् ॥ ३६ ॥ अनाश्रित्यैदमाख्यानं कथाभुविनविद्यते । अहारमनपाश्रित्य शरीरस्येव धारणम् ॥ ३७ ॥ तदेतद्भारतंनाम कविभिस्तूपजीव्यते । उदयप्रेप्सुभिर्भृत्यैरभिजातइवेश्वरः ॥ ३८ ॥ इतिहासोत्तमेयस्मिन्नर्पिता बुद्धिरुत्तमा । स्वरव्यंजनयोःकृत्स्ना लोकवेदाश्रयेववाक् ॥ ३९ ॥ तस्यप्रज्ञाभिपन्नस्य विचित्रपदपर्वणः । सूक्ष्मार्थन्यायुक्तस्य वेदार्थैर्भूषितस्यच ॥ ४० ॥ भारतस्येतिहासस्य श्रूयतांपर्वसंग्रहः । पर्वा

संक्षेपसे कहा । वह महाभारत जनमेजयके यज्ञ में व्यास के शिष्य बुद्धिमान् वैशम्पायनने कहाथा विस्तारके लिये क्षत्रियोंके यश और वीर्य्यका बढानेवाला पौष्य, पौलोम, आस्तीक जिसके आदि में है वह कहाजाताहै । ३४ । विचित्र पद आख्यान और अनेकप्रकारके नियमों से युक्त मोक्षकी इच्छा करनेवालों से वैरागकी तरह ग्रहण किया जाताहै । ३५। प्रिय वस्तुओं में जैसे जीव सबसे प्यारा है ज्ञानकी वस्तुओं में जैसे आत्माका ज्ञान सब सेउत्तमहै ऐसेहिप्रधान अर्थवालायह इतिहास सम्पूर्ण शास्त्रोंमें श्रेष्ठहै जैसेभोजन विनाशरीर काधारणनहीं होसकता ऐसेहीभारतके आश्रयके विनाकोईकथापृथ्वीमें नहींहोसकती वहयह भारत आख्यान् कवियोंको ऐसा आश्रयहै जैसा उदय चाहनेवाले कर्मचारियोंको कुलीनस्वामी का आश्रय ।।३८।। इसउत्तर इतिहासमें ब्रह्मविद्याके विचार शक्तिवाली बुद्धि स्वर व्यंजनों से युक्तसंसार की और वेदकी बाणीकी तरह दीजातीहै ।।३९। उस बुद्धियुक्तऔरविचित्र पर्व और पदवाले और सूक्ष्म अर्थ न्याय से युक्त और वेदके अर्थों से अलंकृत भारत इति-

sleeping unsuspicious of danger.32."OSaunak, this best of narratives called Bharat, which I am reciting at thy sacrifice was formerly read at the sacrifice of Janmejay by one of the wise desciples of Vyas. It is divided into many sections.In the beginning are Paushya, Paulom and Astik, describing fully the great deeds of kings. It is a book with various descriptions, dictions, and senses, containing an account of the manners and rites. It is the desired of the learned as Vairagya life by those who desire salvation. As the study of self is among things worthy of being known, as life is dear, so among sacred books is this history which shows the way to the knowledge of *Brahma.* No story current in the world but takes its food from this history. As noble lords are attended upon by the servants desirous of promotion, so is the Bharat cherished by all poets. As the words comprising various books on Vedic and Lay literature are made up of vowels and consonants so is this history the root of all wisdom." "Listen,O ye ascetics, to the outlines of the different books

नुक्रमणीपूर्वं द्वितीयःपर्वसंग्रहः ॥ ४१ ॥ पौष्यंपौलोममास्तीक मादिरंशावतारणम् ।
ततःसम्भवपर्वोक्त मद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ ४२ ॥ दाहोजतुग्रहस्यात्र हैडिंबंपर्वचोच्यते ।
ततोबकवधःपर्वपर्वचैत्ररथंततः ॥ ४३ ॥ ततःस्वयम्बरोदेव्याः पांचाल्याःपर्वचोच्यते ।
क्षात्रधर्मेणनिर्जित्यततोवैवाहिकंस्मृतम् ॥ ४४ ॥ विदुरागमनंपर्व राज्यलंभस्तथैवच ।
अर्जुनस्यवनेवासःसुभद्राहरणंततः ॥ ४५ ॥ सुभद्राहरणादूर्ध्वं ज्ञेयाहरणहारिका ।
ततःखांडवदाहाख्यंतत्रैवमयदर्शनम् ॥ ४६ ॥ सभापर्वततःप्रोक्तंमंत्रपर्वततःपरम् ।
जरासन्धवधःपर्व पर्वदिग्विजयंतथा ॥ ४७ ॥ पर्वदिग्विजयादूर्ध्वं राजसूयिकमुच्यते ।
ततश्चार्घाभिहरणं शिशुपालवधस्ततः ॥ ४८ ॥ द्यूतपर्वततःप्रोक्तं मनुद्यूतमतःपरम् ।
ततआरण्यकंपर्व किर्मीरवधउच्यते ॥ ४९ ॥ अर्जुनस्याभिगमनं पर्वज्ञेयमतःपरम् ।
ईश्वरार्जुनयोर्युद्धं पर्वकैरातसंज्ञितम् ॥ ५० ॥ इन्द्रलोकाभिगमनं पर्वज्ञेयमतःपरम् ।
नलोपाख्यानमपिचधार्मिकं करुणोदयम् ॥५१॥ तीर्थयात्राततःपर्व कुरुराजस्यधीमतः ।
जटासुरबधःपर्व यक्षयुद्धमतःपरम् ॥ ५२ ॥ निवातकवचैर्युद्धं पर्वचाजगरंततः ।

हासके पर्वसंग्रहको सुनो पहिला अनुक्रमणिका दूसरा पर्वसंग्रह ३ पौष्य ४ पौलोम ५ आस्तीक, और संभवपर्व जो अद्भुत और रोमांचकर देनेवालाहै ।४२। लाक्षके घरका दाह और हैडिंब इस के बाद बकबध चैत्ररथ तिसके बाद द्रौपदी का स्वयम्बर, और क्षत्रिय धर्मसे जीतकर उसका बिवाह पर्व ॥ ४४ ॥ विदुरागमन, राज्यलाभ अर्जुन का बनवास, सुभद्राहरण, हरण हरिका, खाण्डव दाह, मयदर्शन, सभापर्व, मन्त्रपर्व, जरासंध वध, दिग्विजय, राजसूयिक, अर्घ्याभिहरण, शिशुपाल वध पर्व, ॥ ४८ ॥ द्यूतपर्व, अनद्यूत, अरण्यक, किर्मीरबध, ॥ ४९ ॥ अर्जुनस्याभिगमन कैरातपर्व जिस मेंअर्जुनऔर महादेवकायुद्ध हुआहै।।५०।। इन्द्रलोकाभिगमन पर्व, नलोपाख्यान्, करुणामय है धार्मिक, ॥५१॥ युधिष्ठिरका तीर्थयात्रा पर्व, जटासुरवधपर्व, यक्षयुद्धपर्व, निबातकवच

in this history, called *Bharat*, full of wisdom, of won derful chapters and paras, of subtile meaning and logical connection, and embel-lished with the Vedic lore. The first book is named Anukramanika; the second Sangrah; then Pausya, Poulom, Astik; Adivashavataran; Sambhava of wonderful and thrilling incidents; Jatugrihadah; Hidimb Badh; Baka Badh; Chaitrarath; Swayamvar, in which Arjun won Draupadi for wife by his dexterity in the use of arms; then Viduragaman; Rajlabh; Exile of Arjun;Subhadra Haran; Haran Harik; Khandavdah;Maya darshana; Sabha, Mantra, Jarasandh; Digbijay; Rajsuyik Argyaviharan; Shishupal badh; Dyut; Anudyut; Aranyaka; Kirm-irabadh; Arjununonabhigaman, Kairati,in which is described the duel between Arjun and Mahadev, disguised likea Kirat or hunter; then Indraloka bhigaman; the story of Nala; the pilgrimage, death of Jatasur bat

मार्कण्डेयसमास्याच पर्वानन्तरमुच्यते ॥ ९३ ॥सम्वादश्चततःपर्व द्रौपदीसत्यभामयोः घोषयात्राततःपर्व मृगस्वप्नोद्भवन्ततः ॥ ९४ ॥ व्रीहिद्रौणिकमाख्यान मैंद्रद्युम्नंतथैवच । द्रौपदीहरणंपर्व जयद्रथविमोक्षणम् ॥ ९५ ॥ पतिव्रतायामाहात्म्यं सावित्र्याश्चैवमद्भुतम् । रामोपाख्यानमत्रैवसर्वंज्ञेयमतःपरम् ॥ ५६ ॥ कुण्डलाहरणम्पर्वततः परमिहोच्यते।आरणेयंततःपर्व वैराटंतदनन्तरम् । पांडवानांप्रवेशश्च समयस्यचपालनम् ॥ ५७ ॥ कीचकानांवधःपर्व पर्वगोग्रहणंततः । अभिमन्योश्चवैराट्याः पर्ववैवाहिकंस्मृतम् ॥ ५८ ॥ उद्योगपर्वविज्ञेय मतऊर्ध्वमहाद्भुतम् । ततःसंजययानाख्यं पर्व ज्ञेयमतःपरम् ॥ ९९ ॥ प्रजागरंतथापर्व धृतराष्ट्रस्यचिन्तया । पर्वसानत्सुजातंवै गुह्यमध्यात्मदर्शनम् ॥ ६० ॥ यानसंधिस्ततः पर्वभगवद्यानमेवच । मातलीयमुपाख्यानं चरितंगालवस्यच ॥ ६१ ॥ सावित्रं वामदेव्यञ्च वैन्योपाख्यानमेवच । जामदग्न्यमुपाख्यानं पर्वषोडशराजकम् ॥ ६२ ॥ सभाप्रवेशःकृष्णस्य विदुलापुत्रशासनम् । उद्योगः सैन्यानिर्याणं विश्वोपाख्यानमेवच ॥ ६३ ॥ ज्ञेयंविवादपर्वात्र कर्णस्यापि-

युद्धपर्व, आजिगरपर्व, मार्कण्डेय समस्यापर्व, ॥ ५६ ॥ द्रौपदी और सत्यभामाका सम्वाद पर्व, घोषयात्रा पर्व, मृगस्वप्नोद्भवपर्व, ।९४। ब्रीहिद्रौणिकआख्यानपर्व, ऐन्द्रद्युम्नपर्व, द्रौपदी हरण, जयद्रथ विमोक्षण, पतिव्रता सावित्री महात्म्य, रामोपख्यान।५६।कुण्डलाहरण आरणेय, वैराट पाण्डवप्रवेश, समयपालन, कीचकवध, गोग्रहण, अभिमन्यु और उत्तराकाविवाह, अद्भुत उद्योग, संजययान, धृतराष्ट्र की चिन्ताका प्रजागरगुप्त और अध्यात्मविद्या सनत् सुजान ।६०। यान सिद्धि, भगवद्यानमातली उपाख्यान, गालवचरित, ॥६१॥सावित्री, वामदेव्य, वैन्यउपाख्यान, जामदग्नि उपाख्यान, षोडश राजिक, कृष्ण का सभा प्रवेश, विदुलापुत्र

tle of the Yakshas; the battle with the Nibat Kabaches, Ajgar parb Markendeya samasya; the dialogue between Draupadi and Satyabhama; Ghosh-yatra; Mrigswapna; the story of Brahedaranyak and Aindradyumn; Draupadi haran and Jaidrath bimokshan; the history of Savitri and her chastity, story of Ram, Kundal-haran, Aranya; Virat. The story of the Pandavas and the vow of concealment; the destruction of Kichak; the attempt to robbery of kine; the marriage of Abhimanyu with the daughter of Virat; Udyog, Sanjaya-yan; Prjagar; Sanat-sujat full of spiritual philosophy; Yansandhi; the stories of Bhagvaduan, Matali and Galav, of Savitri, Vamdeo, and Vainya, the story of Yamadagni and Shodasrajik; the arrival of Krishna at the court; Bidulaputra-shasan the muster of troops and the story of Bishav; the quarrel of high minded Karn, the march of the two armies to the field of battle; the number of Ratish and Atiraths; the wrath-provoking arrival of the messenger, named Uluk; the story of Amba; thrilling account

माहत्मनः निर्याणंचततः पर्वकुरुपांडवसेनयोः ॥ ६४ ॥ रथातिरथसंख्याच पर्वोक्तं तदनंतरम् उलूकदूतागमनंपर्वामर्षविवर्धनम् ॥ ६५ ॥ अंबोपाख्यानमत्रैव पर्वज्ञेयमतः परम् । भीष्माभिषेचनंपर्व ततश्चाद्भुतमुच्यते ॥ ६६ ॥ जम्बूखण्डाविनिर्माणं पूर्वोक्तं तदनंतरम् । भूमिपर्वततःप्रोक्तं द्वीपविस्तारकीर्तनम् ॥ ६७ ॥ पूर्वोक्तंभगद्गीता पर्व-भीष्मवधस्ततः । द्रोणाभिषेचनंपर्वसंशप्तकवधस्ततः ॥ ६८ ॥ अभिमन्युवधःपर्वः प्रतिज्ञापर्वचोच्यते । जयद्रथवधःपर्व घटोत्कचवधस्ततः ॥ ६९ ॥ ततोद्रोणवधः पर्वविज्ञेयं लोमहर्षणम् । मोक्षोनारायणास्त्रस्यपर्वानंतरमुच्यते ॥७०॥ कर्णपर्वततोज्ञेयं शल्यपर्व ततःपरम्। ह्रदप्रवेशनंपर्व गदायुद्धमतःपरम् ॥७१॥ सारस्वतंततःपर्व तीर्थवंशानुकीर्त्तनम् अतऊर्ध्वंसुबीभत्सं पर्वसौप्तिकमुच्यते ॥७२॥ ऐषीकंपर्वचोद्दिष्टमत ऊर्ध्वंसुदारुणम् । जलप्रदानिकंपर्व स्त्री विलापस्ततःपरम् ॥७३॥ श्राद्धपर्वततोज्ञेयं कुरूणामौर्ध्वदेहिकम् । चार्वाकनिग्रहःपर्व रक्षसोब्रह्मरूपिणः ॥७४॥ आभिषेचनिकंपर्व धर्मराजस्यधीमतः । प्रविभागोगृहाणांच पर्वोक्तंतदनंतरम् ॥ ७५ ॥ शांतिपर्वततोयत्र राजधर्मानुशासनम् आपद्धर्मश्चपूर्वोक्तं मोक्षधर्मस्ततःपरम् ॥ ७६॥ शुकप्रश्नाभिगमनं ब्रह्मप्रश्नानुशासनम्

शासन, उद्योग, सैन्य निर्याण विश्वोपाख्यान,महात्माकर्णका विवाद, कुरु पाण्डव सेनाका निर्याण ।६४। रथातिरथ संख्या उलूक दूता गमन , अमर्ष विवर्द्धन , अम्बो पाख्यान , भीष्माभिषेचन । ६६ । जम्बूखण्ड विनिर्माण, भूमि, द्वीपविस्तार कीर्त्तन, भगवद्गीता पर्व, भीष्मवध, द्रोणाभिषेचन संशप्तक,अभिमन्युवध, प्रतिज्ञा जयद्रथ वध' घटोत्कचवध, ।६९। द्रोण वध, नारायणास्त्र मोक्ष, कर्ण, शल्य, हृदयप्रवेश, गदा युद्ध, ।७१। सारस्वत, तीर्थ वंशानुकीर्त्तन, भयानक सौप्तिक पर्व, ।७२। ऐषीक, जलप्रदानिक, स्त्रीविलाप, ।७२। श्राद्धपर्व, चार्वाक निग्रह ७४ अभिषेचनिकपर्व,ग्रह प्रविभाग शान्तिपर्वमेराजधर्मानुशासन, आपद्धर्म, मोक्ष पर्व ।७६। शुकप्रश्नाभिगमन, ब्रह्म प्रश्नानुशासन, दुर्वासा प्रादुर्भाव और

of the installation of Bhishm as commander-in chief; the creation of the insular country, called Jumbu; the formation of Islards; Bhagvatgita; the death of Bhishma; the installation of Drona; the destruction of Sansaptaks, death of Abhimanyu; the vow of Arjun and consequent death of Jaidrath, the death of Ghatotkatch, wonderful story of the death of Drona, the discharged of the weapon called Narayan; the parts named after Karn and Salya; then comes the immersion (of Duryodhan) into the waters of the lake and afterwards the duel with clubs, then comes an accouut of Saraswat, the holy shrines and genealogies, Sauptik describing disgraceful incidents, then comes the Aishik of heart rending incidents, then the Jalpradan and the grief of women, then comes the Shradh or the funeral rites of the slain, then comes the death of the Rakshas Charvak in the guise of a Brahman,

प्रादुर्भावश्चदुर्वासः संवादश्चैवमायया ॥ ७७ ॥ ततःपर्वपरिज्ञेय मानुशासनिकंपरम् । स्वर्गारोहणिकंचैव ततोभीष्मस्यधीमतः ॥ ७८ ॥ ततोऽश्वमेधिकंपर्व सर्वपापप्रणाशनम् । अनुगीताततः पर्वज्ञेय मध्यात्मवाचकम् ॥ ७९ ॥ पर्वचाश्रमवासाख्यं पुत्रदर्शनमेवच । नारदागमनं पर्वततः परमिहोच्यते ॥ ८० ॥ मौसलंपर्वचोद्दिष्टं ततोघोरंसुदारुणम् । महाप्रस्थानिकंपर्व स्वर्गारोहणिकंततः ॥ ८१ ॥ हरिवंशस्ततःपर्व पुराणंखिलसंज्ञितम् । विष्णुपर्वशिशोश्चर्या विष्णोःकंसवधस्तथा ॥ ८२ ॥ भविष्यं पर्वचाप्युक्तं खिलेष्वेवाद्भुतंमहत् । एतत्पर्वशतंपूर्णं व्यासेनोक्तंमहात्मना ॥ ८३ ॥ यथावत्सूतपुत्रेण लौमहर्षणिनाततः । उक्तानिनैमिषारण्ये पर्वाण्यष्टादशैवतु ॥ ८४ ॥ समासोभारतस्याय मत्रोक्तः पर्वसंग्रहः । पौष्यंपौलोममास्तीक मादिरंशावतारणम् ॥ ८५ ॥ संभवोजतुवेश्माख्यं हिडिंबवकयोर्वधः । तथाचैत्ररथंदेव्याः पांचाल्याश्चस्वयंवरः ॥ ८६ ॥ क्षात्रधर्मेणनिर्जित्य ततोवैवाहिकंस्मृतम् । विदुरागमनंचैव राज्यलंभस्तथैवच ॥ ८७ ॥ वनवासोऽऽर्जुनस्यापि सुभद्राहरणंततः । हरणाहरणंचैव दहनंखाण्डवस्यच ॥ ८८ ॥ मयस्यदर्शनंचैव आदिपर्वणिकथ्यते पौष्यंपर्वणिमाहात्म्य

माया के साथ सम्वाद ।७७। अनुशासनिक पर्व, भीष्मका स्वर्गारोहणिक पर्व, सब पापों कानाश करनेवाला अश्वमेध पर्व अनुगीता ।७६। हरिवंश पर्व विष्णुपर्व जिसमें शिष्णोश्चर्या और कंसबध है, अद्भुत भाविष्य पर्व यह महात्मा व्यास के कहेहुए सौपर्वहैं।८३। तत्पश्चात् लोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवा ने नैमिषारण्य में १८पर्व कः के कहाहै । ८४ । ऊपर संक्षेपसे पर्वोंकासंग्रह कहागया पौष्य पौलोम आस्तीक अंशावतरण संभव,जतुग्रहदाहडिडिम्ब और बकका वध चैत्ररथ, द्रोपदीका स्वयम्बर क्षत्रिय धर्म से उसे जीतकर बिवाह, विदुरागमन, राज्यलाभ, अर्जुनका बनबास, सुभद्राहरण, हरणाहरण, खाण्डवदाहमय-

an account of the coronation of Yudishthir, the wise, then *Grihaprabibhag*, then come in succession Shanti and Rajdharmanushasan; Apad and Moksh dharm; then follow the *Suka-prashnavigaman*, *Brahma-prashnanushasan*; the origin of *Durvasa* and disputes with *Maya*, then *Anushasanik*, the ascension of *Bhishma* to heaven, the horse sacrifice destroyer of sins, then *Anugita* full of spirtiual philosophy, then come in succession Asramvas, puttradarshan, and the arrival of Narad, then Mousal, full of dreadful events, Mahaprasthanic or ascension to heaven, then, Harivanshpuran containing Krishn's early life, the destruction of Kans, Bhavishya Parva. The high-minded Vyas divided the book into 100 parts, described above but Sauti divided it into eighteen parts and recited the whole in the forest of Naimish. The division into 18 parts is as follows:—Adi Parva, containing Pausya Paulom, Astik, Adivanshavataran, Sambhav the conflagration of the house of lac, the deaths

मुत्तंकस्योपवर्णितम् ॥ ८९ ॥ पौलोमेभृगुवंशस्य विस्तार परिकीर्त्तितः । आस्तीके सर्वनागानां गरुडस्यचसंभवः ॥ ९० ॥ क्षीरोदमथनंचैव जन्मोच्चैःश्रवणस्तथा ॥ ॥ यजतः सर्वक्षत्रेणराज्ञः पारिक्षितस्यच ॥ ९१ ॥ कथेयमभिनिर्वृत्ता भारतानांमहात्मनाम् । विविधाः संभवाराज्ञामुक्ताः संभवपर्वणि ॥ ९२ ॥ अन्येषांचैवशूराणा मृषेद्वैपायनस्यच । अंशावतरणंचात्रदेवानां परिकीर्तितम् ॥ ९३ ॥ दैत्यानांदानवानांच यक्षाणांचमहौजसाम् । नागानामथसर्पाणां गन्धर्वाणां पतत्रिणाम् ॥ ९४ ॥ अन्येषां चैवभूतानां विविधानांसमुद्भवः । महर्षेराश्रमपदे कण्वस्यचतपस्विनः ॥ ९५ ॥ शंकुतलायांदुष्यं ताद्भरतश्चापिजज्ञिवान् । यस्यलोकेपुनाम्नेदं प्रथितंभारतंकुलम् ॥ ९६ ॥ वसूनांपुनरुत्पत्ति र्भागीरथ्यांमहात्मनाम् । शांतनोर्वेश्मनिपुनस्तेषांचारोहणंदिवि ९७ तेजोंशानांचसंपातोभीष्मस्याप्यत्रसंभवः । राज्यान्निवर्तनंतस्य ब्रह्मचर्यव्रतेस्थिति ९८ प्रतिज्ञापालनंचैव रक्षा चित्रांगदस्यच । हतेचित्रांगदेचैव रक्षाभ्रातुर्यवीयसः ॥ ९९ ॥

दर्शन यह १९ आदिपर्वमें कहे हैं पौष्णपर्व में उत्तंकका माहात्म्य वर्णनहै पौलोम में भृगु वंशका विस्तार आस्तीक पर्वमें नागों और गरुडकी उत्पत्ति ॥९०॥ समुद्रमथन, उच्चैः श्रवा घोड़ेकी उत्पत्ति, सर्प यज्ञकरनेवाले जनमेजयकी कथा, महात्मा भरतवंशी राजाओं की उत्पत्ति संभवपर्व में कहीगई है बडे २ शूरोंकी और ऋषि व्यासकी उत्पत्ति अंशावतरण देवताओ दैत्य, दानव और बलवान यक्ष नाग सर्प गन्धर्व पक्षी और अनेकप्रकार के प्राणियोंकी उत्पत्ति, महर्षि तपस्वी कण्व के आश्रम में शकुन्तला और राजा दुष्यन्त से भरतकी उत्पत्ति, जिससे संसार में यह कुल भारतकहलाया गंगासे ८ वसुओंकी उत्पत्ति और भीष्मका घरलाना, और पहले ७ वसुओंका स्वर्गमें जाना, भीष्म तेजोंके अंशका संपात और उत्पत्ति तथा उसका राज्यसे निवर्त्तन ब्रह्मचर्य्य व्रत में स्थिति और ॥९८॥ प्रतिज्ञापालन चित्रांगद की रक्षा चित्रांगदके मृत्यु उपरान्त छोटेभाईकी रक्षा और विचित्र

of Hidimb and Vak; Chaitrarath, the Swayambar of Draupadi, marriage after the defeat of the rivals, the arrival of Vidur, the restoration, Arjun's exile, Subhadra Haran, Harna Haran the burning of Khandav forest and the meeting with Maya. In the Pausya Parv is described the greatness of Utank, in Paulom of the race of Bhrigu. The Astik describes the birth of Garur and the races of Nagas, the churning of the Ocean, the discovery of Uchaisrawa, the race of Bharat as described in the snake sacrifice of king Janmejaya. The Sambhav parv gives detail of the births of various kings and heroes, the birth of Krishna Dwaipayan (Vyas), the incarnation of gods, demons, Yakshes, Nagas, Gandharves, birds and other creatures; the life of Bharat, the fonnder of the dynasty named after him, born of Shakuntala and Dushyant in

वि!चित्रवीर्यस्यतथाराज्येसंप्रतिपादनम् । धर्मस्यनृषुसंभूतिरणीमांडव्यशापजा ।१००।
कृष्णद्वैपायनाच्चैव प्रसूतिर्वरदानजा । धृतराष्ट्रस्यपांडोश्चपांडवानांचसंभवः ।१।वारणा
वतयात्रायांमंत्रोदुर्योधनस्यच । कूटस्यधार्त्तराष्ट्रेणप्रेषणंपांडवान्प्रति ।२। हितोपदेशश्चप
थिधर्मराजस्यधीमतः । विदुरेणकृतोयत्र हितार्थंम्लेच्छभाषया ।३। विदुरस्यचवाक्येन
सुरुंगोपक्रमक्रिया । निषाद्याःपंचपुत्रायाः सुप्तायाजतुवेश्मनि ।४। पुरोचनस्यचात्रैव
दहनंसंप्रकीर्तितम् । पांडवानांवनेघोरे हिडिंबायाश्चदर्शनम् ।५। तत्रैवचहिडिंबस्य बधो
भीमान्महाबलात् । घटोत्कचस्यचोत्पत्ति रत्रैवपरिकीर्तिता ।६। महर्षेदर्शनंचैव व्यास
स्यामिततेजसः । तदाज्ञयैकचक्रायां ब्राह्मणस्यनिवेशने ।७। अज्ञातचर्ययावासोयत्रते
षांप्रकीर्तितः । वकस्यनिधनंचैव नागराणांचविस्मयः ।८। संभवश्चैवकृष्णायाधृष्टद्युम्न
स्यचैवह।ब्राह्मणात्समुपश्रुत्य व्यासवाक्यप्रचोदिताः ।९। द्रौपदींप्रार्थयंतस्ते स्वयम्बर
दिदृक्षया । पंचालानभितोजग्मुर्यत्रकौतूहलान्विताः ।१०। अंगारपर्णं निर्जित्यगंगाकू

वीर्यका राज्याभिषेक, अणिमाण्डव्य के शाप से धर्मका मनुष्यों में जन्म लेना ॥ १०० ॥ व्यास के वरदानसे धृतराष्ट्र पाण्डवोंका जन्महोना ॥१॥ वारणावतकी यात्रामें दुर्योधनकी सलाहसे पाण्डवोंके प्रति कपट व्यवहार ॥२॥ रास्तेमें बुद्धिमान युधिष्ठिरको विदुर का म्लेच्छ भाषामें हित समझाना और विदुर के वचन से उनका सुरंगके रास्तेसे निकलजाना भीलनी और उसके पांच पुत्रोंको पुरोचनसहित उसमें जलजाना, पाण्डवोंका घोरवन में हिडिम्बा राक्षसीका दर्शन ॥ ५ ॥ हिडिम्बका भीमसेन बलीके हाथसे माराजाना, घटो. त्कचकी उत्पत्ति ॥६॥ व्यास ऋषिका पाण्डवोंको दर्शनदेना, व्यासजीकी आज्ञासे एक चक्राग्राममें पाण्डवों का गुप्तरूपसे ब्राह्मण के घरमें बास, बकराक्षस का भीमके हाथ से माराजाना और उसके मारेजानेसे नगरवासियों का आश्चर्य ॥ ८ ॥ द्रौपदी और धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति ब्राह्मण के मुखसे व्यासकी आज्ञापाकर पांचाल देशको द्रौपदी के स्वयम्बर में पाण्डवोंका जाना अंगारपर्ण को गंगा किनारे अर्जुन का जीतना और उस से मित्रता

the hermittage of Kanwa; the birth of Vasus from Bhagirathi and Shantanu; the birth of Bhishma, his dreadful vow of celibacy and renunciation of kingdom, his protection of Chitrangad and after Chitrangad's death, of his younger brother Vichtravirya. The incarnation of Vichitravirya. The birth of Dharm among men in consequence of the curse of Animandavya, the births of Pandu and Dhritrashtra from Vyas, the birth of Pandavas, the plot of Duryodhan to send the Pandavas to Barnavat and other plots of the sons of Dhritrashtra against the Pandavas; the advice of Vidur, the wellwisher of the Pandavas, in Mlech language, to Yudhishthir, on his way to Barnavat and digging of the subterranean passage, the burning of Purochan and Bhil woman with her five sons sleeping in the house of lac, the meeting of the Pandavas with Hidimba

लेऽर्जुनस्तदा। सख्यंकृत्वाततस्तेन तस्माद्देवचशुश्रुवे ॥११॥ तापत्यमथवासिष्ठमौर्वंचाख्यानमुत्तमम्। भ्रातृभिःसहितःसर्वैः पंचालानभितोययौ॥१२॥ पांचालनगरेचापिलक्ष्यं भित्वाधनंजयः। द्रौपदींलब्धवानत्रमध्येसर्वमहीक्षिताम् ॥१३॥ भीमसेनार्जुनौयत्र संरब्धान्पृथिवीपतीन्। शल्यकर्णौचतरसा जितवन्तौमहामृधे ॥१४॥ दृष्ट्वातयोश्चतद्वीर्यमप्रमेयममानुषम् शंकमानौपांडवांस्तान् रामकृष्णौमहामती॥ १५ ॥ जग्मतुस्तैःसमागंतुंशालांभार्गववेश्मनि। पंचानामेकपत्नीत्वेविमर्शोद्रुपदस्यच। १६। पंचेंद्राणामुपाख्यानमत्रैवाद्भुतमुच्यते। द्रौपद्यादेवविहितो विवाहश्चाप्यमानुषः। १७। क्षत्तुश्चधार्तराष्ट्रेणप्रेषणंपांडवान्प्रति। विदुरस्यचसंप्राप्तिर्दर्शनंकेशवस्यच ॥ १८ ॥ खांडवप्रस्थवासश्चतथाराज्यार्धसर्जनम्। नारदस्याज्ञयाचैवद्रौपद्याःसमयक्रिया॥ १९॥ सुंदोपसुंदयोस्तद्वदाख्यानंपरिकीर्तितम्। अनंतरंचद्रौपद्यासहासीनंयुधिष्ठिरम्॥ २० ॥ अनुप्रविश्यविप्रार्थे फाल्गुनोगृह्यचायुधम् मोक्षयित्वागृहंगत्वाविप्रार्थेकृतनिश्चयः ॥ २१ ॥ समयंपालयन्वी

करना और उस से तापत्य वासिष्ठ और कौरव के आख्यानों का सुनना और सब भाइयों के साथ पाञ्चाल देश को जाना द्रुपद के नगर में जाकर सम्पूर्ण राजाओं के बीच में लक्ष्य भेदकर अर्जुन का द्रौपदी को जीतना, अर्जुन और भीमका स्वयम्वरमें क्रोधित राजाओं तथा शल्य और कर्ण को अपने पराक्रमसे जीतना ॥ ११४ ॥ भीम और अर्जुन के अत्यंत और मनुष्य शक्ति से बाहर पराक्रम को देखकर बडे बुद्धिमान बलराम और श्रीकृष्ण का इनको पाण्डव समझना और उनसे मिलने के लिये भार्गवकी शालामें राम और कृष्णका जाना पांचो भाइयोंका एक द्रौपदीके साथ विवाहहोने से द्रुपद का विचार, द्रौपदी का अमानुषविवाह, धृतराष्ट्रका विदुरको पाण्डवों के पासभेजना, विदुरका उनकेपास पहुंचना और श्रीकृष्णका दर्शन ॥१५॥ खांडवप्रस्थमेंपाण्डवोंकावास धृतराष्ट्र से उन का आधा राज्यपाना, नारद की आज्ञासे द्रौपदीके मिलनेका समय नियत करना ॥१८॥ सुन्दोपसुन्द की कथा, द्रौपदी के साथ युधिष्ठिर के एकान्त वैठहोने पर अर्जुनका ब्राह्मणकी रक्षाके लिये वहांसे शस्त्रों के लाने के लिये प्रवेशकरना, और ब्राह्मणको उस

in the dreadful forest and the destruction of Hidimba by mighty Bhim, the birth of Ghatotkach; the meeting of the Pandavas with Vyas and their stay at *Ekchakra* by his advice in the house of a Brahman; the destruction of the demon Vak to the amazement of the inhabitants; the extra-ordinary births of Dhrishtdyumn and Draupadi; the journey of the *Pandavas* to Panchal by the advice of Vyas to see the swayamvar of Draupadi heard of by a Brahman, the victory of Arjun over Angarparn, a Gandharv, on the bank of the Ganges and then their friendship, his hearing from the Gandharv, the histories of Tapti; Vasisth and Aurav, continuation of their journey to Panchal, the winning of Draupadi amidst all

रोवनंयत्रजगामह। पार्थस्यवनवासेचउलूप्यापथिसंगमः। २२। पुण्यतीर्थानुसंयानंबभ्रुवाहनजन्मच। तत्रैवमोक्षयामासपंचसोऽप्सरसःशुभाः। २३। शापाद्ग्राहत्वमापन्नब्राह्मणस्यतपास्विनः। प्रभासतीर्थेपार्थेनकृष्णस्यचसमागमः ॥२४॥ द्वारकायांसुभद्राचक्रामयानेनभामिनी वासुदेवस्यानुमतेप्राप्ताचैवकिरीटिना ॥ २५ ॥ गृहीत्वाहरणंप्राप्तेकृष्णेदेवकिनंदने। अभिमन्योःसुभद्रायांजन्मचोत्तमतेजसः। २६। द्रौपद्यास्तनयानांचसंभवोऽनुप्रकीर्तितः। विहारार्थंचगतयोः कृष्णयोर्यमुनामनु ॥ २७ ॥ संप्राप्तिश्चक्रधनुषोःखांडवस्यचदाहनम्। मयस्यमोक्षोज्वलनाद्भुजंगस्यचमोक्षणम्। २८। महर्षेर्मंदपालस्य शार्ङ्ग्यांतनयसंभवः। इत्येतदादिपर्वोक्तंप्रथमंबहुविस्तरम् ॥ २९ ॥ अध्यायानांशतेद्वेतुसंख्यातेपरमर्षिणा। सप्तविंशतिरध्यायाव्यासेनोत्तमतेजसा ॥ ३० ॥ अष्टौश्लोकसहस्राणिअष्टौश्लोकशतानिच। श्लोकाश्चचतुराशीतिर्मुनिनोक्तामहात्मना। ३१। द्वितीयं

आपत्ति से छुडाना ॥२१॥ प्रतिज्ञा पालनकरने के लिये वीरअर्जुनको वनवासमें उलूपीका मिलना ॥२२॥ पुण्य तीर्थों में जाना बभ्रुवाहनका जन्म औरपांच अप्सराओंका जो ब्राह्मण के शाप से ग्राहबनीहुईथीं अर्जुनके स्पर्श से मोक्ष, प्रभास तीर्थ में अर्जुन का श्रीकृष्णसे समागम, द्वारका में जाकर अर्जुन का श्रीकृष्णकी सम्मति से सुभद्रा ग्रहण दहेज लेकर श्रीकृष्णका अर्जुनके पास जाना, प्रतापी अभिमन्युका सुभद्रा से जन्म ॥ २६ ॥ द्रौपदी के पुत्रोंकी उत्पत्ति, श्रीकृष्ण और अर्जुनका विहार करने के लिये यमुनामें जाना ॥२७॥ चक्र और धनुष की प्राप्ति, खाण्डवदाह और दाहसे मय और सर्पका छुडाना ॥ २८ ॥ महर्षि मन्दपाल का शारंगी से पुत्र पैदाहोना, ऊपर लिखीहुई कथायें विस्तार से आदिपर्व में कहीहैं इस में महर्षि व्यास ने २२७ अध्याय ॥ ३० ॥ और ८८८४ श्लोक कहे हैं ॥

---

the kings by Arjun, after hitting the mark; the defeat of Karn, Salya and other potentates, in the ensuing struggle, by Bhim and Arjun; the guessing of Balram and Krishna, at the sight of such prowess to the effect that the winners were the Pandavas and ther arrival at the place where the Pandavas were staying; the dejection of Drupad at hearing that Draupadi was to be married to five husbands, the wonderful story of the five Indras; the extraordinary marriage of Draupadi; the embassy of Vidur to the Pandavas from Dhritrashtra, the arrival of Vidura and his meeting with Shri Krishna, the removal of the Pandavas to Khandav prasth and their rule over half the kingdom, the fixing of the terms of intercourse with Draupadi by each brother by the advice of Narad, the story of Sund and Udsund, the self exile of Arjun under the terms agreement among the brothers, the meeting of Arjun with Ulupi of Naga race and his visit to several sacred places; the birth of Babruvahan, the deliverance by Arjun's touch

तुसभापर्वबहुवृत्तांतमुच्यते । सभाक्रियापांडवानांकिंकराणांचदर्शनम् "३२" लोकपालसभाख्यानंनारदाद्देवदार्शिनः। राजसूयस्यचारंभोजरासंधवधस्तथा।३३।गिरिव्रजोनिरुद्धानांराज्ञांकृष्णेनमोक्षणम् । तथादिग्विजयोऽत्रैवपांडवानांप्रकीर्तितः ।३४। राज्ञामागमनंचैव सार्हणानांमहाक्रतौ। राजसूयेऽर्घसंवादेशिशुपालवधस्तथा ॥ ३५ " यज्ञेविभूतिंतांदृष्ट्वादुःखामर्षान्वितस्यच। दुर्योधनस्यावहासोभीमेनचसभातले ॥ ३६ ॥ यत्रास्यमन्युरुद्भूतोयेनद्यूतमकारयत् । यत्रधर्मसुतंद्यूतेशकुनिःकितवोऽजयत् " ३७" यत्रद्यूतार्णवेमग्नांद्रौपदींनौरिवार्णवात् ' धृतराष्ट्रोमहाप्राज्ञःस्नुषांपरमदुःखिताम् ॥ ३८ ॥ तारयामासतांस्तीर्णान्ज्ञात्वादुर्योधनोनृपः। पुनरेवततोद्यूतेसमाह्वयतपांडवान् । ३९ । जित्वासवनवासाय प्रेषयामासतांस्ततः । एतत्सर्वंसभापर्व समाख्यातंमहात्मना " ४० ॥ अध्यायाःसप्ततिर्ज्ञेयास्तथाचाष्टौप्रसंख्यया। श्लोकानांद्वेसहस्रेतुपंचश्लोकशतानिच॥४१॥

दूसरा बडे वृत्तान्तवाला सभापर्व है, इस में पाण्डवों का सभावनाना, किंकरों का दर्शन, दिव्य दृष्टिवाले नारद द्वारा लोकपालोंकी सभाका वर्णन, राजसूयका आरम्भ और जरासन्धका वध, गिरिव्रज में कैदीराजाओं को श्रीकृष्णका छुडाना, पाण्डवोंका दिग्विजय ॥ ३४ ॥ भेटें लेकर राजसूय यज्ञ में राजाओंका आना, पूजा के झगडेमें शिशुपालको श्रीकृष्ण का मारना ।३५ यज्ञ में पाण्डवों के भारीऐश्वर्यको देखकर भीमसेनका सभा में दुर्योधनकी हँसीकरना ॥३६॥ जिससे दुर्योधनको क्रोध उत्पन्नहुआ वही क्रोध जुएका मूलथा जिसमें कपटी शकुनि ने युधिष्ठिर को जुए में जीता ॥३७॥ उस जुएके समुद्रमें डूबीहुई दुःखित द्रौपदीको धृतराष्ट्र ने नावके समान तारा राजादुर्योधनने युधिष्ठिरको जुए के समुद्रसे ताराहुआ जानकर फिर उनको जुएके लिये बुलाया ॥ ३८ ॥ और जुएमें जीत उन्हें वन में भेजा। यह सब कथायें महात्माव्यास ने सभापर्व में कहीहैं ॥ ४० ॥ इस में

of five celestial damsels, transformed into alligators by the curse of a Brahman; the meeting of Arjun and Shri Krishna at Prabhas; the abduction of Subhadra by Arjun with the consent of her brother ShreeKrishna;(the birth of the valliant Abhimanyu from Subhadra) and the coming of Shree Krishna with dower;) 126. The birth of Draupadi's children; the pleasure trip of Arjun and on the waters of the Jamna and their receiving the discus the celeberated bow, Gandiv; the burning of the forest of Khandav and the rescue of Maya and the serpent from the conflagration, the birth of Mandpal's son from Sarangi. Vyas has divided this section into 227 chapters and 8884 stanzas. The second section, Sabha, is a great book full of matter. The subjects are: the establishment of the grand hall of Pandavas; a description of the courts of Lokpals by Narad, well acquainted with the celestial regions; preparations for the great Rajsuya sacrifice; the death of Jarasandh; the deliverance by Vasu-

श्लोक।श्चैकादशाज्ञेयाःपर्वण्यस्मिन्द्विजोत्तमाः । अतःपरंतृतीयंतुज्ञेयमारण्यकंमहत्॥४२॥ वनवासंप्रयातेषु पांडवेषुमहात्मसु । पौरानुगमनंचैव धर्मपुत्रस्यधीमतः ॥ ४३ ॥ अन्नौषधीनांचकृतेपांडवेनमहात्मना । द्विजानांभरणार्थंचकृतमाराधनंरवेः ॥ ४४ ॥ धौम्योपदेशात्तिग्मांशुप्रसादादन्नसंभवः । हितंचब्रुवतःक्षत्तुःपरित्यागोऽम्बिकासुतात् ॥४५॥ त्यक्तस्यपांडुपुत्राणां समीपगमनंतथा । पुनरागमनंचैव धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ४६ ॥ कर्णप्रोत्साहनाच्चैवधार्त्तराष्ट्रस्यदुर्मतेः । वनस्थान्पांडवान्हंतुंमंत्रोदुर्योधनस्यच ॥४७॥ तंदुष्टभावंविज्ञायव्यासस्यागमनंद्रुतम् । निर्याणप्रतिषेधश्च सुरभ्याख्यानमेवच ॥४८॥ मैत्रेयागमनंचात्रराज्ञश्चैवानुशासनम् । शापोत्सर्गश्चतेनैव राज्ञोदुर्योधनस्यच ॥ ४९ ॥ किर्मीरस्यवधश्चात्र भीमसेनेनसंयुगे । वृष्णीनामागमश्चात्र पंचालानांचसर्वशः ॥ ५० ॥ श्रुत्वाशकु

७८ अध्यायहैं और २५११ श्लोकहैं, तत्पश्चात् तीसरा बड़ा आरण्य पर्व है ॥ ४२ ॥ महात्मा के बन जातेसमय नगरवासियों का बुद्धिमान धर्म पुत्र युधिष्ठिरके पीछे जाना ॥ ४३ ॥ महात्मा युधिष्ठिरका ब्राह्मणों के पालन के लिये सूर्य का आराधन करना ॥ ४४ ॥ धौम्य के उपदेश और सूर्य के प्रसादसे अन्न उत्पन्न होनेका पात्र मिलना; और हितवादी विदुरका धृतराष्ट्र से त्याग ॥ ४५ ॥ धृतराष्ट्रसे त्यागकिये हुए विदुरका पाण्डवों के समीप जाना धृतराष्ट्र का फिर विदुरको बुलाना ॥४६॥ कर्ण के भडकानेसे दुर्बुद्धि धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन का पांडवोंके मारने का विचार ॥४७॥ दुर्योधन के उस दुष्ट विचारको जानकर व्यासजीका शीघ्रआना और दुर्योधनको जाने से रोकना सुरभीका आख्यान ॥४८॥ मैत्रेय ऋषिका आगमन और राजाको शिक्षा देना और दुर्योधन को शाप देना, । ४९ । किर्मीरका भीमसेनसे संग्राम में माराजाना वृष्णियों और

dev of the princes confined in the mountain fortress; the conquest of princes of all directions by the Pandavas and their attendance at the Rajsuya with tribute; the discussion at the offering of Argh and the consequent destruction of Shishupal; 135. The ridicule of Duryodhan and his envy and dissatisfaction at the sight of the great wealth of the Pandavas; the preparation for the game at dice and the loss of Yudhishthir in it by foul play; the deliverance of the distressed Draupadi from being drowned in the sea of gambling; the plot of Duryodhan against the Pandavas in a second gambling match(140)and the consequent defeat and exile of the Pandavas. The Sabhaparva is divided into 78 chapters and 2511 stanzas. The third section is named Aranyak. In it is described the wandering of the Pandavas in the forest followed by Brahmans; Yudhishthir's asking of the boon from the sun god to provide means for the maintenance of his followers and the gift of the sun; the expulsion of the faithful Vidur by Dhritrashtra; his coming to the Pandavas and

निनाय्ते निकृत्यानिर्जितांश्चताम् । क्रुद्धस्यानुप्रशमनंहरेश्चैवाकिरीटिना ॥ ५१ ॥ परिदे
वनंचपांचाल्यावासुदेवस्यसन्निधौ । आश्वासनंचकृष्णेनदुःखार्तायाःप्रकीर्तितम् । ५२ ।
तथासौभवधाख्यान मत्रैवोक्तंमहर्षिणा । सुभद्रायाःसपुत्रायाःकृष्णेनद्वारकांपुरीम् ।५३ ।
नयनंद्रौपदेयानांधृष्टद्युम्नेनचैवह । प्रवेशःपांडवेयानां रम्येद्वैतवनेततः ॥५४॥ धर्मराज
स्यचात्रैव सम्वादःकृष्णयासह । संवादश्चतथाराज्ञा भीमस्यापिप्रकीर्तितः ॥५५॥ स
मीपंपांडुपुत्राणां व्यासस्यागमनंतथा । प्रतिस्मृत्याथविद्याया दानराज्ञोमहर्षिणा ।५६
गमनंकाम्यकेचापि व्यासेप्रतिगतेततः । अस्त्रहेतोर्विवासश्च पार्थस्यामिततेजसः ।५७।
महादेवेनयुद्धंच किरातवपुषासह । दर्शनंलोकपालानामस्त्रप्राप्तिस्तथैवच ॥ ५८ ॥ म
हेंद्रलोकगमनमस्त्रार्थेचकिरीटिनः यत्रचिंतासमुत्पन्ना धृतराष्ट्रस्यभूयसी ॥५९॥ दर्शनं

पांचालों का वनमें पांडवों के पास आना ॥ ५० । जुए में शकुनि के कपटसे पांडवों को जीता हुआ सुनकर कृष्णका क्रोध होना और अर्जुन का उनको शांतकरना । ५१ । दुःख से व्याकुल द्रोपद्री का श्रीकृष्ण के समीप विलाप करना और कृष्णका उसको धैर्यदेना । ५२ । महर्षि व्यास का सौभवध की कथा कहना पुत्र सहित सुभद्राको कृष्णका द्वारिका में लेजाना धृष्टद्युम्न का द्रोपदी के पुत्रोंको लेजाना, तिसके उपरांत पांडवोंका रमणीय द्वैत वनमें जाना ॥ ५४ ॥ युधिष्ठिर का द्रौपदी और भमिसेन से संवाद, पांडवों के समीप व्यासका आना, और राजाको विद्याका देना ॥ ५६ ॥ व्यासके जानेपर पांडवों का काम्यकवन के जाना, बडे तेजस्वी अर्जुन का अस्त्रके लेने को जाना ॥ ५७ ॥ भीलरूपबनाये हुए महादेवका अर्जुनसे युद्ध, लोकपालों का दर्शन और अस्त्रकी प्राप्ति ॥ ५८ ॥ इन्द्रलोक में अस्त्रके लिये अर्जुन का जाना, और उसके जाने से धृतराष्ट्र को बडीचिंन्ता उत्पन्न होनी ॥ ५९ ॥ और शुद्ध

returning at the request of Dhritrashtra;146The plots of the wicked Duryodhan to destroy the Pandavas in the forest by the advice of Karn; the coming of Vyas and dissuading Duryodhan from going to the forest, the history of Surbhi, the arrival of Maitreya and his advice to Dhritrashtra and curse on Duryodhan; Bhim's encounter with Kirmir, the arrival of the Panchals and the Vrishnis in the forest on hearing the sad news of the defeat of Yudhishthir at the unfair game by Sakuni; Arjun's allaying the wrath of Krishn;151 Draupadi's lamentations before Krishn and his cheering her; the fall of Sauva; Krishn's taking Subhadra with him to Dwarika and Dhrishtdyuman's taking the children of Draupadi to Panchal; the entrance of the Pandavas into the romantic Dwaitwood; 154. Conversation among Yudhishthir, Bhim and Draupadi; the visit of Vyas to the Pandavas and his teaching of a certain science to Yudhishthir; after the departure of Vyas removal of the Pandavas to Kamyak wood; Arjun's journey in search of weapons; his

बृहदश्वस्यमहर्षेर्भावितात्मनः । युधिष्ठिरस्यचार्त्तस्य व्यसनंपरिदेवनम् ॥ १६० ॥ न
लोपाख्यानमत्रैव धर्मिष्ठंकरुणोदयम् । दमयंत्याःस्थितिर्यत्र नलस्यचरितंतथा ॥६१॥
तथाऽक्षहृदयप्राप्तिस्तस्मादेवमहर्षितः । लोमशस्यागमस्तत्र स्वर्गात्पांडुसुतान्प्रति ।६२।
वनवासगतानांच पांडवानांमहात्मनाम् । स्वर्गेप्रवृत्तिराख्याता लोमशेनार्जुनस्यवै
॥ ६३ ॥ सन्देशादर्जुनस्यात्रतीर्थाभिगमनक्रिया । तीर्थानांचफलप्राप्तिः पुण्यत्वंचापि
कीर्तितम् ॥ ६४ ॥ पुलस्त्यतीर्थयात्राच नारदेनमर्षिणा। तीर्थयात्राचतत्रैवपांडवानां
महात्मनाम् ॥ ६५ ॥ कर्णस्यपरिमोक्षोऽत्र कुण्डलाभ्यांपुरंदरात् । तथायज्ञविभूतिश्च
गयस्यात्रप्रकीर्तिता ॥ ६६ ॥ आगस्त्यमपिचाख्यानं यत्रवातापिभक्षणम् । लोपा-
मुद्राभिगमनमपत्यार्थमृषेस्तथा ॥ ६७ ॥ ऋष्यशृङ्गस्यचरितं कौमारब्रह्मचारिणः ॥
जामदग्न्यस्यरामस्य चरितंभूरितेजसः ॥ ६८ ॥ कार्त्तवीर्य्यवधोयत्र हैहयानांच

आत्मा वाले महर्षि बृहदश्व का युधिष्ठिर को दर्शनदेना और युधिष्ठिरका उनसे अपना दुःख
कहना ॥ ६० ॥ धर्मयुक्त और करुणा पैदा करने वाली नलकी कथा का वर्णन और दम-
यन्ती का आपत्ति में भी धर्ममें स्थिर रहना और नलके चरित्रों की कथन ॥ ६१ ॥ उन्हीं
महर्षि से फांसोंकी विद्याकी प्राप्ति, पांडवों के समीप लोमश ऋषिका स्वर्ग से आना ।६२।
बनवासमें गयेहुए पांडवों के पास लोमश ऋषिका आना और स्वर्ग में गयेहुए अर्जुनका
वृत्तांत उनको सुनाना ॥६३॥ अर्जुन के संदेह से पांडवोंकी तीर्थयात्रा और तीर्थों के फल
कीप्राप्ति और उनके पवित्रहोनेका वर्णन॥६४॥ महर्षिनारद और पांडवोंका पुलस्त्यतीर्थमेंजाना
इन्द्रका कर्णके कुंडलोंको लेजाना, राजागयके यज्ञकी विभूतिका वर्णन ।६६। अगस्त्य ऋषिका
आख्यान और आतापी का भक्षण और संतान के लिये लोपा मुद्राके साथ विवाह ।६७।
वालक ब्रह्मचारी ऋष्यशृङ्ग के चरित्रका वर्णन, और वडेतेजस्वी परशुरामकी कथा, कार्त्ति

battle with Mahadev in the form of a hunter; his meeting with the Lokpals and receipt of weapons from them. 158. His journey to the court of Indra for arms and the anxiety of Dhritrashtra, the lamentations of Yudhishthir on the occasion of his meeting with the great sage Brihadaswa; the pathetic story of Nala, showing the patience of Damayanti and virtues of Nala; the acquirement by Yudhishthir of the mysteries of dice from that learned sage; the arrival of Lomas rishi from heaven to the Pandavas and their hearing from him the news of the welfare of Arjun in heaven. 163. The pilgrimage of the Pandavas to various sacred places according to the desire of Arjun and the description of the places of pilgrimage. The meeting of Narad and the Pandavas at Pulastya during the pilgrimage; Indra's deprivation of Karan's earrings, the sacred magnificence of Gaya; the story of Agastya, his eating up of Asur Vapti and his marriage with Lopa Mudra for offspring.

र्य्यते प्रभासतीर्थेपांडूनां वृष्णिभिश्चसमागमः ॥ ६९ ॥ सौकन्यमपिचाख्यानं च्यवनोयत्रभार्गवः । शर्यातियज्ञानासत्यौ कृतवान्सोमपीतिनौ ॥ ७० ॥ ताभ्यांचयत्रसमुनिर्यौवनंप्रतिपादितः । मांधातुश्चाप्युपाख्यानंराज्ञोऽत्रैवप्रकीर्तितम् ॥ ७१ ॥ जंतूपाख्यानमत्रैव यत्रपुत्रेणसोमकः । पुत्रार्थमयजद्राजालेभेपुत्रशतंचसः ॥ ७२ ॥ ततः श्येनकपोतीयमुपाख्यानमनुत्तमम् । इंद्राग्नीयत्रधर्मश्चाप्यजिज्ञासञ्छिबिंनृपम् ॥ ७३ ॥ अष्टावक्रीयमत्रैवविवादोयत्रवन्दिना । अष्टावक्रस्यविप्रर्षेर्जनकस्याध्वरेऽभवत् ॥ ७४ ॥ नैय्यायिकानांमुख्येन वरुणस्यात्मजेनच । पराजितोयत्रवंदीविवादेनमहात्मना ॥ ७५ ॥ विजित्यसागरंप्राप्तंपितरंलब्धवानृषिः । यवक्रीतस्यचाख्यानं रैभ्यस्यचमहात्मनः । गन्धमादनयात्राच वासोनारायणाश्रमे ॥ ७६ ॥ नियुक्तो भीमसेनश्च द्रौपद्या गन्धमादने व्रजन्पथि महावाहुर्दृष्टवान्पवनात्मजम् ॥ ७७ ॥ कदलीषण्डमध्यस्थं

वीर्य्य और हैहय की कथा पाण्डवोंका प्रभास तीर्थ में वृष्णियोंसे मिलना ॥६९॥ और सौकन्या आख्यान जिस में भृगुवंशी च्यवन ऋषि ने अश्विनिकुमारोंको शर्य्याती के यज्ञ से सोमपान का भागदिया अश्विनीकुमारोंका उस मुनि च्यवनको तरुण बनाना, और मांधाता राजाकी कथा कही गई है ॥७१॥ जन्तुकी कथा जिसमें राजासोमकने पुत्ररूप पशुसे सौ पुत्रोंके लिये यज्ञकिया ॥७२॥तिसके बाद श्येनकपोतीका उत्तर उपाख्यान कहागयाहै,जिसमें इन्द्र अग्नि औरधर्मने राजाशिविकी परीक्षाकी ॥७३॥ बन्दीके साथ अष्टावक्र विप्रऋषि का जनक के यज्ञ में विवाद ॥७४॥ वरुण के पुत्रका शास्त्रार्थ में वन्दीको जीतना ॥७५॥ और समुद्रमें पडे कहोड नाम पिताको ऋषि अष्टावक्रने पाया यवक्रीत और महात्मा रैभ्य का आख्यान गन्धमादन पर्वत में पाण्डवोंकी यात्रा और नारायण आश्रममें रहना ॥७६॥ गन्धमादनपर्वतमें द्रौपदीसे भेजेहुए भीमसेनका रास्तेमें हनुमान को देखना ॥७७॥ केलों

167. The story of Rishya Sring who practiced Brahmcharya from his boyhood; the history of the valliant Ram, the son of Yamdagni and the death of Kritvirya and Hayhay; the meeting of the Pandavas and Vrishnis at Prabhas; the story of Sukanya in which Chyavan, the son of Bhrigu offered a portion of som-juice to (the formerly excluded) Aswins at the sacrifice of king Saryati and his acquiring perpetual youth, the history of Mandhata; the story of prince Jantu, the only son of king Somak who sacrificed him to get a hundred sons; the story of the hawk and the pigeon and the trial of king Shivi by Indra, Agni, and Dharm. 170. The story of Ashtavakra and his dispute with the great logician Vandi the son of Varun, at the sacrifice of Janak. The defeat of Vandi and the consequent release of Ashtavakra's father from the prison in the Ocean; the story of Yavkrit and great Raivya; Pandava's departure to Gandhamadan and stay at Narain; Bhimsen's journey to Gandh-

हनूमंतंमहाबलम् । यत्रसौगंधिकार्थेऽसौ नलिनींतामधर्षयत् ॥ ७८ ॥ यत्रास्ययुद्धमभ वत्सुमहद्राक्षसैःसह । यक्षैश्चैवमहावीर्यैर्मणिमत्प्रमुखैस्तथा ॥ ७९ ॥ जटासुरस्यचवधो राक्षसस्यवृकोदरात् । वृषपर्वणोराजर्षेस्तयोऽभिगमनंस्मृतम् ॥ ८० ॥ आर्ष्टिषेणाश्र मेचैषां गमनंवासएवच । प्रोत्साहनंचपांचाल्या भीमस्यात्रमहात्मनः ॥ ८१ ॥ कैला सारोहणं प्रोक्तंयत्रयक्षैर्बलोत्कटैः । युद्धमासीन्महाघोरंमणिमत्प्रमुखैःसह ॥८२॥ समा गमश्चपांडूनां यत्रवैश्रवणेनच । समागमश्चार्जुनस्यतत्रैव भ्रातृभिःसह ॥८३॥ अवाप्य दिव्यान्यस्त्राणि गुर्वर्थंसव्यसाचिना । निवातकवचैर्युद्धं हिरण्यपुरवासिभिः ॥८४॥ निवातकवचैर्घोरैर्दानवैःसुरशत्रुभिः । पौलोमैःकालकेयैश्चयत्रयुद्धंकिरीटिनः ॥ ८५ ॥ वधश्चैषांसमाख्यातो राज्ञस्तेनैवधीमता । अस्त्रसंदर्शनारंभोधर्मराजस्यसन्निधौ ॥ ८६ ॥ पार्थस्यप्रतिषेधश्च नारदेनसुरर्षिणा । अवरोहणंपुनश्चैव पांडूनांगंधमादनात् ॥ ८७ ॥

के वन में बैठेहुए बडे बलवाले हनुमानजी से मिलकरकल्हारके पुष्पके वास्ते भीमसेनका पुष्करणीको व्याकुल करना॥ ॥७८॥ भीमसेनका राक्षसों औरबडेबलवाले मणिमत्त आदिक यक्षोंकेसाथ युद्धहुआ ॥७९॥ जटासुर नामवाले राक्षसका भीमसेनसेवध,राजऋषि वृषपर्वा का आगमन ॥८०॥ आर्ष्टिषेणके आश्रममें पाण्डवोंका जाकररहना, और द्रौपदीका महात्मा भीमसेनको उत्साह दिलाना ॥८१॥ भीमका कैलास में जाना और बडे बलवान् मणिमत्त आदिक यक्षों के साथ घोरयुद्ध होना ॥८२॥ पाण्डवों के साथ कुबेरका समागम और अर्जुनका भाइयोंकेसाथ समागम॥८३॥दिव्य अस्त्रोंको पाकर गुरुदक्षिणा के लिये हिरण्यपुरके वासी निवात कवचों और देवताओं के दुश्मन पौलोम और कालकेय दानवोंके साथ युद्धका वर्णन इन पूर्वोक्तोंका बध राजाके समीप अर्जुनका अस्त्रविद्या दिखानेका आरम्भ युधिष्ठिर केसमीप अर्जुनको ॥८६॥अस्त्र विद्या दिखातेहुए नारदसे निषेध फिर पांडवोंका गन्धमादन

maden at the request of Draupadi, in search of a certain flower and his meeting with Hanuman of great prowess in a group of bannanas; Bhim's entrance in the tank and spoliation of the orchard in getting the coveted flower. 178. Bhimsen's encounter with the guards and destruction of the Demon, Jatasur; the meeting (of the Pandavas) with Vrishaparva, the royal sage; their departure to the hermitage of Arishtisen and dwelling there. The incitement of *Bhim* to vengeance by *Draupadi*; *Bhimsen's* ascent on mount Kailas and encounter with Yakshes healed by Maniman, the meeting of the Pandavas with Kuber and the return of Arjun with celestial weapons, Arjuns's encounter with Nibat Kabaches dwelling in Hiranya Pur, Pauloms and Kalkeyas and their destruction by Arjun; the production of weapons for the examination of Yudhishthir and the hinderance of Narad; the return of Pandavas from Gandmadan, the seizure of Bhim in the coils of a mighty

भीमस्यग्रहणंचात्र पर्वताभोगवर्ष्मणा। भुजगेंद्रेणवलिना तस्मिन्सुगहनेवने ॥ ८८ ॥ अमोक्षयद्यत्रचैनं प्रश्नानुक्त्वायुधिष्ठिरः। काम्यकागमनंचैव पुनस्तेषांमहात्मनाम् ॥ ८९ ॥ तत्रस्थांश्चपुनर्द्रष्टुंपांडवान्पुरुषर्षभान वासुदेवस्यागमनं तत्रैवपरिकीर्तितम् ॥ १९० ॥ मार्कंडेयसमास्याया मुपाख्यानानिसर्वशः। पृथोर्वैन्यस्ययत्रोक्तमाख्यानं परमर्षिणा ॥ ९१ ॥ संवादश्चसरस्वत्यास्तर्क्ष्यर्षेः सुमहात्मनः। मत्स्योपाख्यचान्न मत्रैव प्रोच्यतेतदनंतरम् ॥ ९२ ॥ मार्कंडेयसमास्याच पुराणंपरिकीर्त्यते। ऐंद्रद्युम्न मुपाख्यानं धौंधुमारंतथैवच ॥ ९३ ॥ पतिव्रतायाश्चाख्यानं तथैवांगिरसंस्मृतम् द्रौपद्याःकीर्तितश्चात्र संवादःसत्यभामया ॥ ९४ ॥ पुनर्द्वैतवनंचैव पांडवाःसमुपागताः घोषयात्राचगंधर्वैर्यत्रबद्धःसुयोधनः ॥ ९५ ॥ ह्रियमाणस्तुमन्दात्मा मोक्षितोऽसौकिरीटिना ॥ धर्म्मराजस्यचात्रैव मृगस्वप्ननिदर्शनात् ॥ ९६ ॥ काम्यकेकाननश्रेष्ठे

पर्वत से उतरना ॥ ८७॥ पर्वत कैसा देहवाले बलवान् सर्पसे बडे बनमें भीमसेनका पकड़ाजाना ।८८। युधिष्ठिरका सर्पके प्रश्नोंका उत्तरदेकर भीमसेनको छुड़ाना, महात्मा पांडवोंका काम्यकवन में आना ॥ ८८ । काम्यकवनमें रहते हुए पुरुषोंमें श्रेष्ठ पांडवों को देखने के लिये श्रीकृष्णका आगमन ॥ १९० ॥ मार्कण्डेय ऋषिके साथ पांडवों का बैठना, और वैन्य के पुत्र पृथुकी कथा का महर्षि मार्कण्डेय ऋषिसे वर्णन होना ॥ ९१ ॥ सरस्वती महात्मा तार्क्ष्य से सम्वाद, मत्स्योपाख्यान ॥९२॥ मार्कण्डेय ऋषिके साथ पांडवोंका बैठना ऐन्द्रद्युम्न और धौन्धुमार आख्यान ॥९३॥ पतिव्रता और अंगिरस का आख्यान द्रौपदी और सत्यभामाका सम्वाद ॥ ९४ ॥ फिर द्वैतवनमें पांडवोंका आगमन और घोषयात्रा का वर्णन जिसमें गन्धर्वोंसे दुर्योधनका पकड़ाजाना॥९५॥ और उस मन्दबुद्धि दुर्योधन को अर्जुन का छुटाना, और धर्मराज युधिष्ठिरका मृगस्वप्न देखकर फिर उत्तम काम्यक-

snake and release on Yudhishthir's answering certain questions and the entrance of thePandavas in the Kamyak wood.189.Another visit of Vasudev to the mighty Pandavas the arrival of Markaneday and his recital of various stories including those of *Pritha*, son of Ven, Saraswati Tarkhya, Mastya, Indradyumn, Dhundhumar, the chaste wife and Angira; the dialogue between Satyabhama and Draupadi; the return of the *Pandavas* to the Dwait wood; the procession to see the calvas and the captivity of Duryodhan; his release with the help of Arjun, dream of the deer; reentry of the *Pandavas* in the Kamyak wood; the long story of Brihadaran. yak; the story of Durvasa; the abuduction of Draupadi by Jaidrath, Bhim's pursuit; Bhim's punishment of Jaidrath by leaving several tufts of hair on the head and shaving the rest; Ram and his war with Ravan and destruction of the latter.200The story of

पुनर्गमनमुच्यते ॥ ब्रीहिद्रौणिकमाख्यान मत्रैवबहुविस्तरम् ॥ ९७ ॥ दुर्वाससोऽप्युपाख्यानमत्रैवपरिकीर्तितम् ॥ जयद्रथेनापहारो द्रौपद्याश्चाश्रमांतरात् ॥ ९८ ॥ यत्रैनमन्वयाद्भीमो वायुवेगसमोजवे ॥ चक्रेचैनंपंचशिखं यत्रभीमोमहाबलः ॥ ९९ ॥ रामायणमुपाख्यान मत्रैवबहुविस्तरम् ॥ यत्र रामेणविक्रम्य निहतोरावणोयुधि ॥ ॥२०० ॥ सावित्र्याश्चाप्युपाख्यान मत्रैवपरिकीर्तितम् ॥ कर्णस्यपरिमोक्षोऽत्रकुण्डलाभ्यांपुरंदरात् ॥ २०१॥ यत्रास्यशक्तिंतुष्टोऽसावदादेक वधायच ॥ आरण्येयमुपाख्यानं यत्रधर्मोऽन्वशात्सुतम् ॥ २०२ ॥ जग्मुर्लब्धवरायत्रपांडवाः पश्चिमांदिशम् ॥ एतदारण्यकंपर्व तृतीयंपरिकीर्तितम् ॥ २०३ ॥ अत्राध्यायशतेद्वेतु संख्ययापरिकीर्तिते ॥ एकोनसप्ततिश्चैव तथाध्यायाःप्रकीर्तिताः ॥ २०२ ॥ एकादशसहस्राणि श्लोकानां षट्शतानिच। चतुःषष्टिस्तथाश्लोकाः पर्वण्यस्मिन्प्रकीर्तिताः ॥ २०५ ॥ अतःपरंनिबोधेदं वैराटंपर्वविस्तरम् ॥ विराटनगरेगत्वाश्मशानेविपुलां शमीम् ॥ २०६ ॥

वन में जाना और बड़े विस्तारवाले ब्रीहिद्रौणिक आख्यानका वर्णन ॥ ९७ ॥ दुर्वासाके उपाख्यानका वर्णन, जयद्रथका द्रौपदीको आश्रम से हर लेजाना, ॥ ९८ ॥ वायु के समान वेगवान भीमसेन का जयद्रथ के पीछे जाना, जयद्रथ को पंचशिखा बनाना ।९९। बड़ा विस्तारवाला रामायण कथा का वर्णन और जिसमें रामचन्द्र ने अपने पराक्रम से संग्राम में रावण को मारा ॥ २०० ॥ सावित्रीकी कथाका वर्णन इन्द्रका करणके कुंडलों को हरना ।१। प्रसन्नहोकर इन्द्रका करणको एकके मारने के लिये शक्ति प्रदान करना, आरण्येक उपाख्यान जिसमें धर्म ने अपने पुत्रको शिक्षादी, इसीमें वर पाएहुए पाण्डव पश्चिमदिशा को गये, यह तीसरा आरण्येक पर्व कहागयाहै ।३। इसमें २६९अध्याय ।४। और ११६६४ श्लोकहैं । ५। इस से आगे बड़े विस्तारवाला विराट पर्व है विराट नगर

Savitri; Karan's deprivation by Indar of his earrings and present of a shakti (power or missile) which was sure to kill the person against whom it would be hurled, the story of Aranya in which Dharm advised his son (Yudhishthir) and after having obtained a boon the Pandavas went on a westward journey. The above is the detail of the subjects contained in the Aranyak section of the Mahabharat. There are 269chapters in it and 11664 verses. 205. Then comes Vairat Parv. The Pandavas' concealment of their weapons in a tree standing on the cemetery in the outskirts of Virat; their entrance into the city and stay in disguise; Kichak's evil intention towards Draupadi and his death by the hands of Bhim; Duryodhan's unsuccessful attempt to seek out the Pandavas with the help of clever spies; capture of Virat's cattle by the Trigarts; imprisonment of Virat in the battle which followed and his rescue by Bhimsen; the release of his cattle by the Pandavas; re-

दृष्टासन्निदधुस्तत्रपांडवाह्यायुधान्युत ॥ यत्रप्रविश्यनगरं छद्मनान्यवसँस्तुते ॥ ७ ॥ पांचालींप्रार्थयानस्यकामोपहतचेतसः ॥ दुष्टात्मनोवधोयत्रकीचकस्यवृकोदरात् ॥८॥ पांडवान्वेषणार्थंच राज्ञादुर्योधनस्यच ॥ चाराःप्रस्थापिताश्चात्रनिपुणाः सर्वतोदिशम् । नचप्रवृत्तिस्तैर्लब्धा पांडवानांमहात्मनाम् ॥ गोग्रहश्चविराटस्य त्रिगर्तैःप्रथमंकृतः ॥ १० ॥ यत्रास्ययुद्धं सुमहत्तैरासीह्लोमहर्षणम् ह्रियमाणश्चयत्रासौ भीमसेनेनमोक्षितः ॥ ११ ॥ गोधनंचविराटस्य मोक्षितंयत्रपांडवैः ॥ अनंतरंचकुरुभिस्तस्य गोहरणं कृतम् ॥ १२ ॥ समस्तायत्रपार्थेन निर्जिताःकुरवोयुधि ॥ प्रत्याहृतंगोधनंच विक्रमेणकिरीटिना ॥ १३ ॥ विराटेनोत्तरादत्ता स्नुषायत्रकिरीटिनः । अभिमन्युंसमुद्दिश्यसौभद्रमरिघातिनम् ॥ १४ ॥ चतुर्थमेतद्विपुलं वैराटंपर्ववर्णितम् । अत्रापिपरिसंख्याता अध्यायाःपरमर्षिणा ॥ १५ ॥ सप्तषष्टिरथोपूर्णा श्लोकानामपिमेशृणु । श्लोकानांद्विस

में जाकर श्मशान भूमि में जाकर बडे शमीके पेडको देखकर पाण्डवों का उसमें अपने शस्त्रों को रखना और नगर में जाकर छिपकर रहना ॥ ७ ॥ काम में मोहित कीचक दुष्टात्मा द्रोपदीके ग्रहणकरने की इच्छा करताहुआ भीमसेन से मृत्युको प्राप्तहुआ और पांडवों के ढूंढने के लिये राजा दुर्योधन ने चारों ओर चतुरगुप्त दूत भेजे ॥ ९ ॥ और महात्मा पांडवों का पता उनको न मिला, प्रथम त्रिगर्त वासियों से विराटकी गउओं का पकडाजाना । १० । त्रिगर्तके साथ बडे घोर युद्धकाहोना और त्रिगर्तोंसे पकडकर लेजाते हुए विराटको भीमसेनका छुडाना, पांडवों ने विराट के गोधन को बचाया, तत्पश्चात् कौरवों से विराटकी गउओंका पकडाजाना ॥ १२ ॥ और अर्जुनका संग्राम में सम्पूर्ण कौरवोंको जीतना और उनसे गोधनको छुडाना विराटने अपनीपुत्रीउत्तरा अर्जुनकेद्वारा सुभद्राके पुत्र शत्रुनाशक अभिमन्यु के लिये दी । १४ । यह चौथा बडाभारी विराटपर्व वर्णन कियागया, इसमें महर्षि व्यास ने अध्यायोंकी संख्या ६७ कहीहै और वेद के

capture of Virat's cattle by the Kauravas; their defeat by Arjun and release of the king's kine; Virat's offer of his own daughter Uttara to Arjun;Arjun's acceptance of her for his son Abhimanyu.214. The above is the list of contents in the fourth section. The learned Vyas has divided it into 67 chapters and 2050 verses. The fifth section is Udyog consisting of the following:- The Pandavas residing in Upaplavya expressed their intention of beating down the Kauravas; Arjun and Duryodhan, both, came to Vasudev at one and the same time, and asked his help in the war; Vasudev's reply to the effect that the parties should choose one of the two alternatives i. e. one side was to have him (Vasudeo) alone without taking part in fighting, while the other would have one Akshauhini army. The foolish Duryodhan's choice was to

इत्येतु श्लोकाःपंचाशदेवतु । १६ । उक्तानिवेदवित्दुषा पर्वण्यस्मिन्महर्षिणा । उद्योगपर्वविज्ञेयं पंचमंशृण्वतःपरम् । १७ । उपप्लव्ये निविष्टेषु पांडवेषुजिगीषया । दुर्योधनोऽर्जुनश्चैव वासुदेवमुपस्थितौ । १८ । साहाय्यमस्मिन्समरेभवान्नो कर्तुमर्हति इत्युक्तेवचनेकृष्णो यत्रोवाचमहामतिः । १९ । अयुध्यमानमात्मानंमन्त्रिणंपुरुषर्षभौ । अक्षौहिणींवासैन्यस्य कस्यकिंवाददाम्यहम् । २० । वव्रेदुर्योधनः सैन्यं मंदात्मा-यत्रदुर्मतिः । अयुध्यमानंसाचिवंवव्रेकृष्णंधनंजयः ॥ १९ ॥ मद्रराजंचराजान मायांतं पांडवान्प्रति । उपहारैर्वंचयित्वा वर्त्मन्येवसुयोधनः ॥ २२ ॥ वरदंतंवरंवव्रेसाहाय्यं क्रियतांमम । शल्यस्तस्मैप्रतिश्रुत्य जगामोद्दिश्यपांडवान् । २३ । शांतिपूर्वंचाकथयद्यत्रेंद्र विजयंनृपः । पुरोहितप्रेषणंच पांडवैः कौरवान्प्रति । २४ । वैचित्रवीर्यस्यवचः समादायपुरोधसः । तथेंद्रविजयंचापि यानंचैवपुरोधसः ॥ २५ ॥ संजयं-प्रेषयामास शमार्थपांडवान्प्रति । यत्रदूतंमहाराजो धृतराष्ट्रःप्रतापवान् ॥ २६ ॥ श्रु

जानेनवाले महर्षि व्यास ने २०५० श्लोक कहेहैं,इसके आगे पांचवां उद्योगपर्व है पांडवों के उपप्लव्यमें रहने पर जीतनेकी इच्छा से दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णके पासजाना । १८ । और उनके सहायता मांगने पर श्रीकृष्णका यह कहना सलाह बतानेवाले और युद्ध न करनेवाले अपनेको युद्धकरने वाली अक्षोहिणी सेना को इन दोनोमेंसे कहो किस को क्यादूं जिसमें मन्दबुद्धि और असावधान चित्त दुर्योधनने सेनाको मांगा औरअर्जुन ने न लडनेवाले और सलाहबताने वाले श्रीकृष्णको मांगा ॥ २१ ॥ पांडवों के समीप जातेहुए मद्रदेशके राजा शल्यको रास्तेमेंही अनेक प्रकार के सत्कारोंसे दुर्योधनने प्रसन्न किया और प्रसन्नहोकर बरदान देतेहुए शल्य से दुर्योधनने अपने सहायकारी बरदान मांगा, और वह दुर्योधन के बरदान को स्वीकार कर पांडवों के समीप गया ।२३। जहां पर शांति पूर्वक युधिष्ठिर ने इन्द्र विजयकी कथा कही, पांडवों ने पुरोहित को कौरवों के पास भेजा । २४ । पुरोहितसे विचित्र पराक्रमवाले पाण्डव अर्जुन के इन्द्रविजय तात्पर्य को सुनकर शान्ति चाहनेवाले प्रतापी धृतराष्ट्रका पांडवों के पास संजय दूतको भेजना ।

take the army while Arjun accepted Shree Krishna to be his non-fighting counseller. Duryodhan's obtaining by deceipt a promise from Shalya, king of Madra, to fight on Duryodhan's side; Shalya's visit to Yudhishthir after the promise and his consolation of the Pandavas by reciting the history of Indra's victory; the embassy of the priest of the Pandavas to the Kauravas.224. Dhrirashtra's reception of the embassy and after hearing the story of Indra's victory from the ambassador his appointment of Sanjay as his ambassador of peace to the Pandavas; the sleeplessness of Dhritrashtra on hearing the account of Vasudev's friendship with Yudhishthir; Vidur's wise counsels to Dhritrashtra; Sanat

त्वातुपांडवान्यत्र वासुदेवपुरोगमान् । प्रजागरःसंप्रजज्ञे धृतराष्ट्रस्यचिंतया ॥ २७ ॥ विदुरोयत्रवाक्यानि विचित्राणिहितानिच । श्रावयामासराजानं धृतराष्ट्रमनीषिणम् ॥ २८ ॥ तथासनत्सुजातेन यत्राध्यात्ममनुत्तमम् । मनस्तापान्वितोराजाश्रावितःशोकलालसः ॥ २९ ॥ प्रभातेराजसामंतौ संजयोयत्रवाविभो । ऐकात्म्यंवासुदेवस्य प्रोक्तवानर्जुनस्यच । ३० । यत्रकृष्णोदयापन्नः संधिमिच्छन्महामतिः । स्वयमागाच्छमंकर्तुंनगरंनागसाह्वयम् । ३१ । प्रत्याख्यानंच कृष्णस्य राज्ञादुर्योधनेनवै । शमार्थेयाचमानस्य पक्षयोरुभयोर्हितम् । ३२ । दंभोद्भवस्यचाख्यान मत्रैवपरिकीर्तितम् । वरान्वेषणमत्रैव मातलेश्चमहात्मनः । ३३ । महर्षेश्चापिचरितं कथितंगालवस्यवै । विदुलायाश्चपुत्रस्य प्रोक्तंचाप्यनुशासनम् । ३४ । कर्णदुर्योधनादीनां दुष्टंविज्ञायमन्त्रितम् । योगेश्वरत्वंकृष्णेन यत्रराज्ञांप्रदर्शितम् । ३५ । रथमारोप्यकृष्णेन तत्रक-

।२६। वासुदेव और पांडवोंकी बात सुनकर धृतराष्ट्र का चिन्तासे प्रजागर अर्थात् रात्रि को निद्रा आनी बन्दहोगई । २७ । जिसप्रजागर में विदुरने बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र को बडे २ विचित्र हित वचन सुनाये । २८ । और सुनत्सुजात ने सर्वोत्तम अध्यात्मविद्या मन के तापसे युक्त और शोकसे भरेहुए राजाको सुनाई और प्रातःकाल के समय सभा में श्रीकृष्ण और अर्जुनकी एकताको कहा दया से युक्त बडी बुद्धिवाले श्रीकृष्ण शान्तिकी इच्छा करतेहुए आप हस्तिनापुरको गये । ३१ । दोनों पक्षकी शान्तिकी इच्छा करतेहुए श्रीकृष्णका दुर्योधन ने तिरस्कार किया।३२। और दम्भोद्भवका आख्यान महात्मा मातली को दुहिताके लिये वरका प्राप्तहोना ३३ और महर्षि गालव का चरित्रभी कहागया, और विदुलाके पुत्रका अनुशासन कहागयाहै ।३४। कर्ण और दुर्योधन आदि के दुष्ट अभिप्रायको जानकर श्रीकृष्णने अपना योगेश्वरत्व राजाओं को दिखाया ॥ ३५ ॥ श्रीकृष्ण

Sujan's recital of spiritual philosophy before Dhritrashtra. Sanjay's account of the identity of Arjun and Shri Krishna; Shri Krishna's friendly visit to establish peace and Duryodhan's rejection of the offer; the story of Dambodbhav; high-minded Matuli's search for a husband to his daughter; the history of the great sage Galav; discipline of the son of Bidula; the display by Shree Krishn of his Yog power before the assembled king, on learning the evil intentions of Duryodhan and Karan. 235. Krishna's drive with Karan and the latter's refusal to hear good advice; Krishna's return to Upaplavya and giving an account of the events at Hastinapur; the Pandavas' preparation for war after consulation; the march from Hastinapur of the army consisting of foot soldiers, horse, charioteers and elephants; the mission of Uluk as ambassador of Duryodhan on the eve of battle; the tale of charioteers of different ranks; the story of Amba. This is a detail of

णोऽनुमन्त्रितः । उपायपूर्वंशौटीर्यात्प्रत्याख्यातश्चतेनसः । ३६ । आगम्यहास्तिनपुरा दुपप्लव्यमरिंदमः । पांडवानांयथावृत्तं सर्वमाख्यातवान्हरिः ॥३७॥ ततस्तयवचनंश्रुत्वा मंत्रयित्वाचयद्धितम् ॥ सांग्रामिकंततःसर्वंसज्जंचक्रुः परंतपाः ॥ ३८ ॥ ततोयुद्धायनिर्याता नराश्वरथदंतिनः ॥ नगराद्धास्तिनपुराद्बलसंख्यानमेवच । ३९ । यत्रराज्ञाह्युलूकस्यप्रेरणंपांडवान्प्रति ॥ श्वोभाविनिमहायुद्धे दौत्येनकृतवान्प्रभुः ।४०। रथातिरथसंख्यान मंत्रोपाख्यानमेवच ॥ एतत्सुबहुवृत्तांतं पंचमंपर्वभारते ॥ ४१ ॥ उद्योगपर्वनिर्दिष्टंसंधिविग्रहमिश्रितम् । अध्यायानांशतंप्रोक्तं षडशीतिर्महार्षिणा ॥४२॥ श्लोकानांषट्सहस्राणि तावन्त्येवशतानिच । श्लोकाश्चनवतिःप्रोक्तास्तथैवाष्टौमहात्मना ।४३। व्यासेनोदारमतिना पर्वण्यस्मिंस्तपोधनाः । अतःपरंविचित्रार्थं भीष्मपर्व प्रचक्षते । ४४ । जम्बूखण्डविनिर्माणं यत्रोक्तंसंजयेनह । यत्रयौधिष्ठिरंसैन्यं विषादमगमत्परम् ।४५ । यत्रयुद्धमभूद्घोरं दशाहानिसुदारुणम् । कश्मलंयत्रपार्थस्य वासु

ने करण को रथ में बैठाकर समझाया परन्तु उस ने गर्व से उनका कहना न माना ।३६। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर से उपप्लव्य में आकर पांडवों से वहांका वयान कहा वह पाण्डव श्रीकृष्णके वचनको सुनकर और अपने हितके विचारको करके तिसके बाद शत्रुओं को ताप देनेवाली संग्रामकी सब वस्तुओंको तैयार किया तिसके बाद युद्धके लिये नगर से मनुष्य, घोड़े, रथ, हाथी निकले और सेनाकी संख्याभी कहीगई ॥ ३९ ॥ और राजा दुर्योधनका पांडवों के समीप उलूक दूत से कहलाकर भेजना कि कलको युद्धहोगा अम्बा का उपाख्यान । यह बडे वृत्तान्तवाला पांचवां भारत में उद्योगपर्व सन्धि और विग्रह से युक्त कहाहै हेतपस्वियों महात्मा महर्षि व्यास ने इस पर्व में १८६ अध्याय और ६८९८ श्लोक हैं, इससे आगे विचित्र अर्थवाला भीष्मपर्व है ॥४४॥ इस में संजय ने जम्बूखण्ड का निर्माण युधिष्ठिरकी सेनाका खेद ॥४५॥ और उस दिन के घोरयुद्धका वर्णन, श्री

subjects described in the fifth section. It is divided into 186 chapters and 6698 verses. Then comes Bhishm Parva of wonderful events.244. It contains the description of Jambu Khund; the depression prevailing in Yudhishthir's army and ten days of hard fighting. Vasudeva's philosophical discourses and urging on Arjun the necessity of fighting and leaving out thoughts of relationship. The nobleminded Krishna seeing the havoc caused by Bhishm's slaying large numbers leaped from the chariot, whip in hand, to chastise Bhishm; the sharp retorts of Krishn to Arjun, the bearer of Gandiv and the formost of warriors; the fall of Bhishm from his chariot after having been pierced by Arjun's sharp arrows shot under cover of Shikhandi and his lying on the bed of arrows. This extensive section is the sixth in the Maha-

देवोमहायतिः। ४६ । मोहजंनाशयामास हेतुभिर्मोक्षदार्शीभिः। समीक्ष्याधोक्षज
क्षिप्रंयुधिष्ठिरहितेरतः। ४७ । रथादाप्लुत्यवेगेन स्वयंकृष्णउदारधीः। प्रतोदपा-
णिराधावद्भीष्मं हंतुंव्यपेतभीः। ४८। वाक्यप्रतोदाभिहतो यत्रकृष्णेनपांडवः। गां-
डीवधन्वासमरेसर्वशस्त्रभृतांवरः। ४९। शिखंडिनंपुरस्कृत्ययत्रपार्थोमहाधनुः। वि-
निघ्नन्निशितैर्बाणै रथाद्भीष्ममपातयत्। ५०। शरतल्पगतश्चैव भीष्मोयत्रबभूवह।
षष्ठमेतत्समाख्यातं भारतेपर्वविस्तृतम्। ५१। अध्यायानांशतंप्रोक्तं तथासप्तदशापरे
पंचश्लोकसहस्राणि संख्ययाऽष्टौशतानिच। ५२। श्लोकाश्चचतुराशीतिरस्मिन्प-
र्वणिकीर्तिताः। व्यासेनवेदविदुषा संख्याताभीष्मपर्वणि। ५३। द्रोणपर्वततश्चित्रं
बहुवृत्तान्तमुच्यते। सेनापत्येऽभिषिक्तोऽथयत्राचार्यः प्रतापवान्। ५४। दुर्योधन-
स्यप्रीत्यर्थं प्रतिजज्ञेमहास्त्रवित्॥ ग्रहणंधर्मराजस्य पांडुपुत्रस्यधीमतः॥ ५५॥ यत्र
संशप्तकाः पार्थमपनिन्यूरणाजिरात्। भगदत्तोमहाराजो यत्रशक्रसमोयुधि॥ ५६॥

कृष्णका अर्जुन के मोहको युक्तिके वचनों से दूरकरना, युधिष्ठिर के हितचाहनेवाले श्रीकृष्ण का भीष्मको दुर्जय देखकर वेगसे रथसे कूदकर स्वयं भीष्म के मारने को निडर कोड़ा लेकर दौड़ना॥४८॥ श्रीकृष्णका अर्जुन को वचनरूपी कोड़ेमारना और शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुनका शिखंडी को आगे करके तीक्ष्ण वाणोंद्वारा भीष्मको रथसे गिरा देना, और भीष्मका वाण शय्यापर सोना महाभारतका बड़ा विस्तारवाला यह छठा भीष्मपर्व है और इस पर्व में वेदके जाननेवाले व्यास ने ११७ अध्याय और ५८८४ श्लोक कहे हैं।५३। तत्पश्चात् बडे वृत्तांतवाला द्रोणपर्व है इसमें प्रतापी द्रोणाचार्य्य सेनापति बनाये गये॥ ५४॥ उस वडी अस्त्रविद्याके जाननेवाले द्रोणाचार्य ने दुर्योधनकी प्रसन्नता के लिये धर्मपुत्र युधिष्ठिरके पकडनेकी प्रतिज्ञाकी युद्ध में संशप्तक सेना ने अर्जुनको अलगहटा दिया, और अर्जुनने इन्द्रके समान लडनेवाले राजा भगदत्त को सुप्रतीक हाथी सहित

bharat. It consists of 117 chapters and 5884 verses composed by the learned Vyas. 253. Then comes Dron Parv, full of wonderful incidents; Dron, the great instructor of arms was made general of the army; his vow to capture Yudhishthir, to please Duryodhan; the retreat of Arjun from fiell before Sansaptaks; Bhagdat's Indra-like prowess on the back of elephant, called Supratik, and his downfall by Arjun; the death of the boy-hero Abhimanyu by Jayadrath and others; Arjun's slaughter of seven Akshauhinis of army including Jayadrath; the entry of the valliant Bhim and the great archer, Satyaki, in Kaurav rank, impenetrable to gods, by order of Yudhishthir, in search of Arjun and the annihilation of the remaining Sansaptaks, to the extent of 90000000; the deaths of the sons of Dhritrashtra, the army which

सुप्रतीकेननागेनसहिशांतः किरीटिना । यत्राभिमन्युंबहवोजघ्नुरेकंमहारथाः ॥ ५७ ॥
जयद्रथमुखाबालं शूरमप्राप्तयौवनम् । हतेऽभिमन्यौक्रुद्धेनयत्रपार्थेनसंयुगे ॥ ५८ ॥
अक्षौहिणीःसप्तहत्वा हतोराजाजयद्रथः । यत्रभीमोमहाबाहुःसात्यकिश्चमहारथः ।५९।
अन्वेषणार्थंपार्थस्ययुधिष्ठिरनृपाज्ञया । प्रविष्टौभारतींसेनामप्रधृष्यांसुरैरपि ॥ ६० ॥
संशप्तकावशेषंचकृतंनिःशेषमाहवे । संशप्तकानां वीराणांकोट्योनवमहात्मनाम् । ६१।
किरीटिनाभिनिष्क्रम्यप्रापितायमसादनम् ॥ धृतराष्ट्रस्यपुत्राश्च तथापाषाणयोधिनः
॥ ६२ ॥ नारायणाश्चगोपालाः समरेचित्रयोधिनः ॥ अलंबुषःश्रुतायुश्चजलसंधश्च
वीर्यवान् ॥ ६३ ॥ सौमदत्तिर्विराटश्चद्रुपदश्चमहारथः ॥ घटोत्कचादयश्चान्येनिहता
द्रोणपर्वणि ॥ ६४ ॥ अश्वत्थामाऽपिचात्रैव द्रोणेयुधिनिपातिते । अस्त्रंप्रादुश्चकारो-
ग्रंनारायणममर्षितः ॥ ६५ ॥ आग्नेयंकीर्त्यतेयत्ररुद्रमाहात्म्यमुत्तमम् । व्यासस्यचा-

मारा, और जयद्रथ आदि बहुत से महारथियों ने बालक और बीर अभिमन्यु को घेर कर मारा, अभिमन्यु के मारे जाने पर अर्जुन ने क्रोधितहोकर राजा जयद्रथ को सातअक्षोहणी सेनासहित संग्राम में मारा महारथी, सात्यकि और बडी भुजा वाला भीमसेन युधिष्ठिरकी आज्ञा से अर्जुन के ढूंढने के लिये उस सेना के भीतर घुसगए जिसमें देवताभी न जासकें "६०" संशप्तक सेना में जो कुछ बकीथी वह अर्जुनने सब नाश करदी, बीर संशप्तकों की सेना ९००००००० संग्राममें यमलोकको पहुँचाई, धृतराष्ट्र के पुत्र और पाषाण से लडनेवाले और विचित्र युद्ध करनेवाले नारायण गोपाल जाति के लोग और अलम्बुष, शतायुध, वीर्य्यवान, जलसन्ध, सोमदत्त का पुत्र विराट, और महारथ द्रुपद घटोत्कचादि बहुत से लोग द्रोणपर्व में मारेगये ॥ ६४ ॥ इसी द्रोण पर्व में अश्वत्थामाने क्रोधमें होकर द्रोणाचार्य के मरनेके पश्चात् नारायण नाम अस्त्र छोडा, जिसके छोडनेपर आग्नेय और उत्तम रुद्रमाहात्म्य कीर्तन कियागया, जिसमें व्यास का

fought with stones, and wonderful warriors called Narayan of Gopal race, Alamvush, Shatayudh, Jarasandh, Virat, the great charioteer Draupad, Ghatotkach and others; Aswathama's hurling the famous weapons Narayan to revenge the death of his father Drona; the glory of Rudra in burning cities; the arrival of Vyas and his account of the greatness of Krishn and Arjun. 266. All this is given in the seventh Parva called Drona. Most of the noteworthy persons whe fell in the great war are mentioned in this section. It contains one hundred and seventy chapters and eight thousand, nine hundred and nine Shlokas, composed by the learned Maharshi Vyas. Then comes the most wonderful section named after Karn. It describes the appointment of Shalya, king of Madr, as chaioteer to Karn; the fall of the Asur, Tripura; the dispute and passing of harsh

त्यागमनंमाहात्म्यंकृष्णपार्थयोः ॥ ६६ ॥ सप्तमंभारतेपर्व महदेतदुदाहृतम् ॥ यत्रतेपृथिवीपालाः प्रायशोनिधनंगताः ॥६७॥ द्रोणपर्वणियेशूरानिर्दिष्टाः पुरुषर्षभाः। अत्राध्यायाशतंप्रोक्तंतथाऽध्यायाश्चसप्ततिः ॥ ६८ ॥ अष्टौश्लोकसहस्राणि तथानवशतानिच। श्लोकानवतथैवात्रसंख्यातास्तत्त्वदर्शिना। ६९। पाराशर्येणमुनिनासंचिंत्यद्रोणपर्वणि। अतःपरंकर्णपर्वप्रोच्यतेपरमाद्भुतम्। ७०। सारथ्येविनियोगश्चमद्रराजस्यधीमतः। आख्यातंयत्रपौराणंत्रिपुरस्यनिपातनम्। ७१। प्रयाणेपरुषश्चात्रसंवादःकर्णशल्ययोः। हंसकाकीयमाख्यानंतत्रैवाक्षेपसंहितम् ॥ ७२ ॥ वधःपांड्यस्यचतथाश्वत्थाम्नामहात्मना। दंडसेनस्यचततोदंडस्यचवधस्तथा ॥ ७३ ॥ द्वैरथेयत्रकर्णेनधर्मराजोयुधिष्ठिरः। संशयंगमितोयुद्धेमिषतांसर्वधान्विनाम् ॥ ७४ ॥ अन्योन्यंप्रतिचक्रोधोयुधिष्ठिरकिरीटिनोः। यत्रैवानुनयःप्रोक्तो माधवेनार्जुनस्यहि ॥ ७५ ॥ प्रतिज्ञापूर्वकंचापिवक्षोदुःशासनस्यच। भित्त्वावृकोदरोरक्तंपीतवान्यत्रसंयुगे ॥ ७६ ॥ द्वैरथे

आगमन और कृष्ण और अर्जुनका माहात्म्य कहागया। ६६। भारत में बडाभारी यह सातवां पर्व कहाहै। द्रोणपर्व में पुरुषोंमें श्रेष्ठ और शूरराजे बहुत से नाशहुए, इसमें १०७ अध्याय कहेहैं और ॥ ६८ ॥ पराशर के पुत्र तत्त्वके देखनेवाले व्यासमुनि ने द्रोणपर्व में ८९०१ श्लोक कहे हैं इसके उपरांत कर्णपर्व कहाजाता है ॥ ७० ॥ बुद्धिमान शल्यसारथी बनायागया, इसमें त्रिपुरके तीनपुरों का गिराना कहाहै कर्ण के युद्धमें जानेके समय कर्ण और शल्यका सम्वाद, हंसकाकी का आख्यान आक्षेपके साथ कहागयाहै। ७२। महात्मा अश्वत्थामाने राजा पाण्डव, दण्डसेन तथा दण्डका वधकिया ॥ ७३ ॥ दोरथकी लड़ाईमें कर्ण ने सब राजाओं के देखतेहुए राजा युधिष्ठिर को संशयमें प्राप्तकर दिया ॥ ७४ ॥ युधिष्ठिर और अर्जुन में परस्पर क्रोधहोना, और उसी स्थान में श्रीकृष्णका अर्जुनको समझाना, भीमसेन का प्रतिज्ञा अनुसार दुःशासन के हृदय को चीरकर खून पीना ॥ ७६ ॥ और दो रथ

words between Karn and Shalya at the time of going to the field of battle; the story of the swan and the crow applied to Karn; the fall of *Pandya* at the hands of *Aswathama*; the fall of Dandsen and Dand, Yudhishthir's duel with Karn in the presence of the armies; the dispute between Yudhishthir and Arjun and Krishn's pacification of Arjun's wrath; Bhim, in fulfilment of his vow, having ripped open Dushasan's breast drank his life's blood; death of Karn in the duel with Arjun. 277. This, the eighth section, of the Mahabharat contains sixty nine chapters and four thousand, nine hundred and sixty four verses. Then comes the wonderful section called Salya. The king of Madra became the leader of the army after the former warriors of note had been slain. The description of the duel of chariteers in succession and the fall of the great Salya at the hands of

यत्र ।ार्थेन हतःकर्णोमहारथः । अष्टमंपर्वनिर्दिष्टमेतद्भारतचिंतकैः ॥ ७७ ॥ एकोनसप्त
तिःप्रोक्ता अध्यायाःकर्णपर्वणि । चत्वार्येवसहस्राणिनवश्लोकशतानिच ॥ ७८ ॥ च
तुःषष्टिस्तथाश्लोकाःपर्वण्यस्मिन्प्रकीर्तिताः । अतःपरंविचित्रार्थंशल्यपर्वप्रकीर्तितम् ॥
॥ ७९ ॥ हतप्रवीरेसैन्येतुनेतामद्रेश्वरोऽभवत् । यत्रकौमारमाख्यानमभिषेकस्यकर्मच ।
। ८० । वृत्तानिरथयुद्धानिकीर्त्यंतेयत्रभागशः । विनाशःकुरुमुख्यानां शल्यपर्वणिकी
र्त्यते । ८१ । शल्यस्यनिधनंचात्रधर्मराजान्महात्मनः । शकुनेश्चवधोऽत्रैवसहदेवेनसं-
युगे ॥ ८२ ॥ सैन्येचहतभूयिष्ठे किंचिच्छिष्टेसुयोधनः । ह्रदंप्रविश्ययत्रासौसंस्तभ्या-
पोव्यवस्थितः ॥ ८३ ॥ प्रवृत्तिस्तत्रचाख्यातायत्रभीमस्यलुब्धकैः । क्षेपयुक्तैर्वचोभिश्च
धर्मराजस्यधीमतः ॥८४॥ ह्रदात्समुत्थितोयत्रधार्तराष्ट्रोऽत्यमर्षणः । भीमेनगदयायुद्धं
यत्रासौकृतवान्सह । ८५ । समवायेचयुद्धस्यरामस्यागमनंस्मृतम् । सरस्वत्याश्चती-
र्थानांपुण्यतापरिकीर्तिता ॥ ८६ ॥ गदायुद्धंचतुमुलमत्रैवपरिकीर्तितम् । दुर्योधनस्य-

संग्राम में अर्जुनका कर्ण को मारना यह आठवां कर्णपर्व भारत के जाननेवालों ने कहा है ॥ ७७ ॥ इस पर्व में ६९ अध्याय और ४९६४श्लोक कहे हैं। इसके पश्चात् बड़े विचित्र अर्थ वाला शल्यपर्व है॥७९॥ जहांपर वीर सेनाके के नाश होनेपर मद्र देशका राजा शल्य सेनापति किया गया जहां पर कौमार आख्यान और अभिषेकका वर्णन कियागया ॥८०॥ जिसमें रथियों का वृत्त युद्ध कहागयाहै और कौरवोंका नाश शल्य पर्वमें कहा गया है धर्मराज ने शल्य का बध और शकुनिका वधसहदेवने किया, वहुत सेनाके नाश होने के पश्चात कुछवाकी रहने पर दुर्योधन एकतालावमें घुसा और उसकेपानी को रोक कर वैठगया ॥८३॥ जिस का वृत्तान्त व्याधों ने भीम से कहा और युधिष्ठिरके आक्षेप वचनों से क्रोधी धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने तालावसे निकलकर भीमसेनके साथ गदायुद्ध किया ॥८५॥ उसयुद्धकी भीड़में बलरामजी का आगमन कहा गया, और सरस्वती और

Yudishthir the just. The death of Shakuni in battle by Sahdev; upon only a small number of the soldiers being left from destruction Duryodhan's retreat to the lake and hiding beneath its waters for a short time. Bhim heard this news from some fowlers. Duryodhan, ever unable to bear insulting language, was forced to come out of water by Yudhishthir's taunts. Then is narrated the duel between Duryodhan and Bhim with clubs; the arrival of Balram at this time. Then is narrated the holiness of the Saraswti and other rivers. During the duel, Bhim's breaking of duryodhan's thigh with his club. The above are described, in detail, in the wonderful ninth section. It contains fifty nine chapters and three thousand two hundred and twenty verses composed by Vyas, the narrator of the history of Kuru family. Then

राज्ञोऽथयत्रभीमेनसंयुगे ॥८७॥ ऊरूभग्नौप्रसह्याजौगदयाभीमवेगया। नवमंपर्वनिर्दिष्ट
मेतदद्भुतमर्थवत् ॥ ८८ ॥ एकोनषष्टिरध्यायाःपर्वण्यत्रप्रकीर्तिताः। संख्यातावहुवृ-
त्तांताः श्लोकसंख्याऽत्रकथ्यते ॥ ८९ ॥ त्रीणिश्लोकसहस्राणिद्वेशतेविंशतिस्तथा। मु
निनासंप्रणीतानिकौरवाणांयशोभृता ॥ ९० ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिसौप्तिकंपर्वदारुणम।
भग्नोरुंयत्रराजानंदुर्योधनममर्षणम् ॥ ९१ ॥ अपयातेषुपार्थेषु त्रयस्तेऽभ्यायशूरथाः॥
कृतवर्माकृपोद्रौणिः सायान्हेरुधिरोक्षितम् ॥ ९२ ॥ समेत्यददृशुर्भूमौपतितंरणमूर्धनि।
प्रतिजज्ञेदृढक्रोधोद्रौणिर्यत्रमहारथः ॥ ९३ ॥ अहत्वासर्वपंचालान्धृष्टद्युम्नपुरोगमान्।
पांडवांश्चसहामात्यान्नविमोक्ष्यामिदंशनम् ।९४। यत्रैवमुक्त्वाराजानमपक्रम्यत्रयोरथाः
सूर्यास्तमनवेलायामासेदुस्तेमहद्वनम् ॥ ९५ ॥ न्यग्रोधस्याथमहतोयत्राधस्तद्व्यव
स्थिताः। ततःकाकान्बहूनरात्रौदृष्ट्वोलूकेनाहिंसितान् ॥ ९६ ॥ द्रौणिःक्रोधसमाविष्टः

अन्यतीर्थोंकी पवित्रता कहीगई, राजा दुर्योधनके साथ भीमसेनका इस पर्व में घोरगदा
युद्ध कहाहै ॥ ८७ ॥ और बलपूर्वक भयानक वेगवाली गदासे दुर्योधनकी टांगें तोडी
गई, यह अद्भुत अर्थवाला नवांपर्व पूर्णहुआ, कौरवों के यश वर्णन करनेवाले मुनिव्यास
ने इस पर्व में बडेवृत्तान्तवाले ५९ अध्याय और ३२२० श्लोक कहे हैं ॥ ९० ॥ इससे
आगे भयानक सौप्तिक पर्व कहूंगा, जिस में जांघ टूटेहुए राजा दुर्योधनके पास पांडवोंके
चले जानेपर कृतवर्मा, कृपाचार्य अश्वत्थामायह तीन रथी आए ॥९२॥ और जाकररणभूमि
में पडेहुएको देखा और महारथ अश्वत्थामा ने क्रोध में होकर प्रतिज्ञाकी ॥९३॥ धृष्टद्युम्न
आदि सम्पूर्ण पंचालों को और मन्त्रियों सहित पांडवों को बिनामारे कवच न खोलूंगा ९४
ऐसा कहकर तीनोंरथी राजा दुर्योधन को छोडकर सूर्यास्त समय में बडे बनको गए,
और बड़े बडके बृक्षके नीचे बैठकर बहुतसे कव्वों को रात्रि के समय उल्लुओं से मारेहुए
देखकर क्रोध में भराहुआ अश्वत्थामा पिताकी मृत्यु को स्मरणकरताहुआ सोतेहुए पंचा-

is described the section, called Sauptik, of dreadful incidents. When the Pandavas had gone away, the valliant, Kritvarma, Kripa and Drona's son came to the battle-field in the evening and there saw king Duryodhan lying on the ground, his thigh broken, and covered with blood. The vow of the son of Drona, the great charioteer, that he would not take off his armour before killing all the Panchals, Dhrishtdyumn among them, the Pandavas, and their allies. Having made this vow the three warriors left *Duryodhan* to his fate and entered, at sunset, in the great forest. While sitting there under a large banyan tree, at nightfall, they saw an owl killing many crows, one after another. On seeing this, Aswathama, enraged at the thought of his father's death, planned the death of the sleeping Panchals. On reaching the

पितुर्वधमनुस्मरन् । पंचालानांप्रसुप्तानांवधंप्रातिमनोदधे ॥ ९७ ॥ गत्वाचशिविरद्वा-
रिदुर्दर्शंतत्रराक्षसम् । घोररूपमपश्यत्सदिवमावृत्याधिष्ठितम् ॥ ९८ ॥ तेनव्याघातम-
स्त्राणांक्रियमाण मवेक्ष्यच । द्रौणिर्यत्रविरूपाक्षंरुद्रमाराध्यसत्वरः ॥ ९९ ॥ प्रसुप्तान्नि
शिविश्वस्तान् धृष्टद्युम्नपुरोगमान् ॥ पंचालान्सपरीवारान्द्रौपदेयांश्चसर्वशः । १०० ।
कृतवर्मणाचसहितःकृपेणचनिजघ्निवान् । यत्रामुच्यंततेपार्थाः पंचकृष्णबलाश्रयात्
॥ १ ॥ सात्यकिश्चमहेष्वासः शेषाश्चनिधनंगताः पंचालानांप्रसुप्तानांयत्रद्रोणसुता
द्वधः ॥ २ ॥ धृष्टद्युम्नस्यसूतेनपांडवेषुनिवेदितः । द्रौपदीपुत्रशोकार्तापितृभ्रातृवधा-
र्दिता ।३। कृतानशनसंकल्पायत्रभर्तृनुपाविशत् । द्रौपदीवचनाद्यत्रभीमोभीमपराक्रमः
।४। प्रियंतस्याश्चिकीर्षन्वैगदामादायवीर्यवान् । अन्वधावत्सुसंक्रुद्धोभारद्वाजंगुरोः
सुतम् ॥ १०५ ॥ भीमसेनभयाद्यत्र दैवेनाभिप्रचोदितः । अपांडवायेतिरुषाद्द्रौणि
रस्त्रमवासृजत् ॥ १०६ ॥ मैवमित्यब्रवीत्कृष्णःशमयंस्तस्यतद्वचः । यत्रास्त्रमस्त्रेणचत

लोंके मारने का मन में विचार करनेलगा ॥ ९७ ॥ और फौजके सेना निवेशके दरवाजे में जाकर वहां भयानकरूप राक्षस को देखा जो कि आकाश घेरेहुए था ॥ ९८ ॥ उस राक्षस पर अस्त्रों के व्याघात को वृथा जाताहुआ देखकर अश्वत्थामा ने शीघ्रही महादेव का आराधन किया और सोतेहुए धृष्टद्युम्न आदि पांचालों और सम्पूर्ण द्रौपदीके पुत्रोंको कृतवर्मा और कृपाचार्यकी सहायता से मारा कृष्णकी मन्त्रिणा से पांच पाण्डव और बड़े धनुषवाला सात्यकि बचे और बाकी सब मृत्युको प्राप्तहुए और धृष्टद्युम्न आदि के मरने का वृत्तांत सूतने पाण्डवों से कहा और पुत्रों और भाइयों की मृत्यु के शोकसे व्याकुल द्रौपदी अनशनका संकल्पकर पतियोंको क्रोध दिलातीहुई और द्रौपदीके वचनों से भयानक पराक्रमवाला भीमसेन द्रौपदी की प्रीति और क्रोध से गुरु के पुत्र अश्वत्थामाके पीछे गदा लेकर दौड़ा ॥ ५ ॥ जहांपर प्रारब्ध वश और भीमसेन के भयसे अश्वत्थामा ने पांडवों के नाश के लिये अस्त्र छोड़ा “ मत ऐसाकर ,, ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने उसके वचन

Entrance to the Pandava's camp they saw a demon of dreadfull countenance, his head touching the sky, guarding it. On seeing him invulnerable, the son of *Drona* invoked the aid of Rudra and then with the help of Kritvarma and Kripa killed all the sons of *Draupadi* and the Panchals including *Dhrishtdyumn*, sleeping soundly. All but the five Pandavas and the valiant Satyaki perished that night. They escaped death by Krishna's advice. The charioteer of *Dhristdyumn* brought the sad news to Yudhishthir and Draupadi, distressed at the destruction of her kinsmen, resolved to die of starvation. Then the valiant Bhim having made up his mind to please her, started in pursuit of the murderers. Ashwathama through anger, fate, and

च्छमयामासफाल्गुनः ॥ ३०७ ॥ द्रौणेश्चद्रोहवुद्धित्वंवीक्ष्यपापात्मनस्तदा ॥ द्रौणिद्वै
पायनादीनांशापाश्चान्योन्यकारिताः ॥ ३०८ ॥ मणिंतथासमादायद्रोणपुत्रान्महारथा
त् । पांडवाःमदर्हृष्टाद्रौपद्यैजितकाशिनः ॥३०९॥एतद्दशमंपर्वसौप्तिकंसमुदाहृतम्
अष्टादशास्मिन्नध्यायाःपर्वण्युक्तामहात्मना ॥ ३१० ॥ श्लोकानांकथितान्यत्रशतान्य
ष्टौमसंख्यया । श्लोकाश्चसप्ततिःप्रोक्तामुनिनाब्रह्मवादिना ॥ ३११ ॥ सौप्तिकैषीके
संवद्धेपर्वण्युत्तमतेजसी । अतऊर्ध्वमिदंप्राहुः स्त्रीपर्वकरुणोदयम् ॥ ३१२ ॥ पुत्रशोका
भिसंतप्तः प्रज्ञाचक्षुर्नराधिपः । कृष्णोपनीतांयत्रासावायसींप्रतिमांदृढाम् ॥ ३१३ ॥
भीमसेनद्रोहबुद्धिर्धृतराष्ट्रोवभंजह । तथाशोकाभितप्तस्यधृतराष्ट्रस्यधीमतः ॥ ३१४ ॥
संसारगहनंबुद्ध्याहेतुभिर्मोक्षदर्शनैः । विदुरेणचयत्रास्यराज्ञआश्वासनंकृतम् । ३१५।
धृतराष्ट्रस्यचात्रैवकौरवायोधनंतथा । सांतःपुरस्यगमनंशोकार्त्तस्यप्रकीर्तितम् ॥ ३१६॥
विलापोवीरपत्नीनांयत्रातिकरुणःस्मृतः ॥ क्रोधावेशःप्रमोहश्चगांधारीधृतराष्ट्रयोः

को शांत किया और अर्जुन ने अपने अस्त्र से उसके अस्त्रको शांत किया द्रोह बुद्धिवाले पापी अश्वत्थामाकी उस बुद्धि को देखकर अश्वत्थामा और द्वैपायनादि ने एक दूसरेको शाप दिया ॥ ८ ॥ जय पाकर प्रशंसा योग्य पांडवों ने महारथी अश्वत्थामाकी मणि द्रौपदी को दी यह दसवां सौप्तिक पर्व कहा ब्रह्मोपदेशक व्यास ने इस पर्वमें १८ अध्याय और ८७० श्लोक कहे हैं सौप्तिक और ऐषीक दोनों मिलेहैं इस के उपरांत दया उत्पन्न करने वाला स्त्रीपर्व है ॥ १२ ॥ पुत्र के शोकसे राजा धृतराष्ट्र ने कृष्णसे लाईहुई लोहेकीप्रतिमा को भीमसेन के द्रोहसे चूर्ण कर दिया । और शोक से तपेहुए बुद्धिमान धृतराष्ट्रका यह समझकर कि संसार एक वडावन है मोक्ष के दिखानेवाले वाक्यों से राजा को विदुर का समझाना और धृतराष्ट्र का राणियों को लेकर कौरवों के रणभूमि में जाना ॥ १६ ॥ वीर पत्नियोंका अत्यन्त करुणामय विलाप कहाहै और गान्धारी और धृतराष्ट्र का क्रोध और

fear of Bhim discharged the celestial weapon for the destruction of the Pandava race. Krishna then said "This shall not be" and thus neutralised it. Arjun then checked his weapon by his own. Then Krishn and Vyas cursed him and were cursed in return. ThePandavas then took his head jewel with pleasure and presented it to Draupadi as a trophe. These are the contents of the tenth Parv called Sauptic. It contains 18 chapters and 870 verses. It is made up of two sections viz., Sauptic and Aishik. Then comes the highly pathetic section called *Stri*. The far seeing Dhritrashtra, afflicted at the loss of his children, broke in anger an iron statue substituted for Bhim by Krishna; Vidur's advice to Dhritrashtra and pointing to him the way to final release and satisfaction of the king; departure of the distressed Dhritrashtra with women to the

॥ १७ ॥ यत्रतान् क्षत्रियाःशूरान्संग्रामेष्वानि वर्तिनः । पुत्रान्भ्रातॄन्पितॄंश्चैवददृशुर्निहतान्रणे ॥ १८ ॥ पुत्रपौत्रवधार्त्तायास्तथात्रैवप्रकीर्तिता । गांधार्याश्चापि कृष्णेन क्रोधोपशमनक्रिया ॥ १९ ॥ यत्रराजामहाप्राज्ञः सर्वधर्मभृतांवरः । राज्ञांतानिशरीराणिदाहयामासशास्त्रतः ॥२०॥ तोयकर्मणिचारब्धे राज्ञामुदककदानिके । गूढोत्पन्नस्यचाख्यानं कर्णस्यपृथयाऽऽत्मनः ॥२१॥ सुतस्यैतदिहप्रोक्तं व्यासेनपरमर्षिणा ॥ एतदेकादशंपर्वशोकवैक्लव्यकारणम् ॥ २२ ॥ प्रणीतंसज्जनमनोवैक्लव्याश्रुप्रवर्त्तकम् । सप्तविंशतिरध्यायाः पर्वण्यस्मिन्प्रकीर्तिताः ॥ २३ ॥ श्लोकसप्तशतीचापिपंच सप्तति संयुता । संख्ययाभारताख्यान मुक्तंव्यासेनधीमता ॥ २४ ॥ अतः परं शांति पर्व द्वादशंबुद्धिवर्द्धनम् । यत्रनिर्वेदमापन्नो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ २५ ॥ घातयित्वा पितॄन्भ्रातॄन्पुत्रान्सम्बन्धिमातुलान् । शांतिपर्वणिधर्माश्च व्याख्याताःशारतल्पिकाः ॥ २६ ॥ राजभिर्वेदितव्यास्ते सम्यग्ज्ञानबुभुत्सुभिः । आपद्धर्माश्चतत्रैव कालहेतुप्रदर्शिनः ॥२७॥ यान्बुद्ध्वापुरुषःसम्यक्सर्वज्ञत्वमवाप्नुयात् । मोक्षधर्माश्च कथिता वि

मोह । १७ । क्षत्रियाणियोंका संग्राम से न भागनेवाले कुटुम्बियों को देखना ॥ १८ ॥ बेटे और पोतोंकी मृत्यु से व्याकुल गांधारी को श्रीकृष्णका शांत करना ॥ १८ ॥ बडी बुद्धि वाले धर्मात्माओं में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरका राजाओं के शरीरों को दाहकराना ॥ २० ॥ उदकदान के प्रारम्भहोने पर कुन्ती का गुप्त उत्पन्नहुए अपनेपुत्र कर्णका वर्णनकरना २१ परमर्षि व्यास ने शोक और व्याकुलताको प्राप्त करनेवाला और सज्जनों के मन को व्याकुल करनेवाला और आंसुओंको डालनेवाला यह ग्यारहवां पर्व कहाहै। इस पर्व में २७ अध्याय और ७७५ श्लोक कहे हैं। इस के पश्चात् बारवां बुद्धिको बढानेवाला शांति पर्व है जिस में राजा युधिष्ठिरको ॥ २५ ॥ पिता भाई पुत्र सम्बन्धी मातुल आदि के नाश होनेसे दुःखहुआ, शांतिपर्व में शर शय्यापर सोयेहुए भीष्म ने ॥ २६ ॥ ज्ञानकी इच्छा करनेवाले राजाओंके लिये जो आपद्धर्म और काल धर्म जानना चाहिये ॥ २७ ॥ जिनको

battle-field and wailings of the widows; anger of Dhritrashtra and Gandhari and their insensibility, their seeing the dead bodies of their kinsmen who would never return and Krishna's pacification of the wrath of Gandhari at the death of her sons and grandsons; the cremation of the bodies of the deceased heroes by Yudishthir, the wise and virtuous; at the time of offering water to the deceased, Kunti's declaration that Karn was her son. The above subjects are described by the great *Rishi Vyas* in this section. The readers are moved to tears. It contains 27 chapters and 775 verses. *Shanti* is the 12th section which increases wisdom. In it is described the sorrow of Yudhishthir at the destruction of relations; Bhishm's exposition of the different duties of kings desirous of knowledge, as

चित्रानहृविस्तरा: ॥ २८ ॥ द्वादशंपर्वनिर्दिष्टमेतत्प्राज्ञजनप्रियम् ॥ अत्रपर्वणिविज्ञेय मध्यायानांशतत्रयम् ॥ २९ ॥ विंशच्चैवतथाध्यायानवचैवतपोधनाः । चतुर्दश सहस्राणि यथाशप्तशतानिच ॥ ३० ॥ सप्तश्लोकास्तथैवात्र पंचविंशति संख्यया ॥ अतऊर्ध्वंच विज्ञेयमनुशासनमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ यत्रप्रकृतिमापन्नः श्रुत्वाधर्मविनिश्चयम् भीष्माद्भागीरथीपुत्रात्कुरुराजायुधिष्ठिरः ॥ ३२ ॥ व्यवहारोऽत्रकात्स्न्येनधर्मार्थीय: प्रकीर्तितः । विविधानांचदानानांफलयोगाः प्रकीर्तिताः ॥ ३३ ॥ तथापात्रविशेषाश्च दानानांचपरोविधिः । आचारविधियोगश्च सत्यस्यचपरागतिः ॥ ३४ ॥ महाभाग्यं गवांचैव ब्राह्मणानांतथैवच । रहस्यंचैवधर्माणां देशकालोपसंहितम् ॥ ३५ ॥ एतत्सु बहुवृत्तांत मुत्तमंचानुशासनम् । भीष्मस्यात्रेवसंप्राप्तिः स्वर्गस्यपरिकीर्तिता ॥ ३६ ॥ एतत्त्रयोदशंपर्वधर्मनिश्चयकारकम् अध्यायानांशतंत्वत्रषट्चत्वारिंशदेवतु ॥ ३७ ॥

भलीप्रकार जानकर मनुष्य सर्वज्ञता प्राप्त करताहै विस्तारयुक्त और विचित्र मोक्ष धर्म कहे हैं । २८ । यह बारहवां बुद्धिमानों को प्रिय शान्तिपर्व हुआ इस पर्व में ३२९ अध्याय और १४७३२ श्लोक हैं इस के उपरांत उत्तम अनुशासनपर्व जानो ॥ ३१ ॥ जिस में भागीरथी के पुत्र भीष्म से धर्मों के निश्चय को सुनकर कुरुराज युधिष्ठिर शान्तिको प्राप्त हुआ । ३२ । यहांपर सम्पूर्णता से धर्मार्थ सम्बन्धी व्यवहार कहाहै और अनेकप्रकारके दानों के फलकी प्राप्तिभी दिखाई है । ३३ ॥ और दान देनेयोग्य पात्रों काभी वर्णन किया है और दानों की उत्तम विधि भी कही है और आचारों की विधि और सबकी सर्वोत्तम दशाभी दिखाई गई है गऊ और ब्राह्मणों का माहात्म्य और धर्मों का गूढ विषय देश काल के संग कहा है ॥ ३५ ॥ यह बडा उत्तम और विस्तार युक्त अनुशासन पर्व हुआ और इस में भीष्म की स्वर्ग को प्राप्तिभी कही है ॥ ३६ ॥ धर्म का निश्चय करने वाला यह तेरहवांपर्व है इसमें १४६ अध्याय और ८००० श्लोक

well as the duties at the times of emergencies with fit occassions and reasons. By learning these one gains experience. The mysteries of final release are also disclosed. This 12th section is the favourite of the wise. It contains 329 chapters and 14732 verses. Then comes the *Anushasan* Parv. It describes the reconciliation of Yudhishthir on hearing the exposition of duties from Bhishm, It gives the rules of Dharm, Arth, charity and its benefits, the qualifications of the donees and the golden rule regrding gifts. In it is also deescribed the duty of individuals; the rules of couduct and the matchless merit of truth. It shows the esteem in which Brahmans and cows are held and the duties with regard to times and places. The above are dealt with fully in this sectien and finally the departure of Bhi-

श्लोकानांतुसहस्राणिप्रोक्तान्यष्टौप्रसंख्यया ॥ ततोऽश्वमेधिकंनामपर्वप्रोक्तंचतुर्दशम ॥ ३८ ॥ सत्संवर्तमरुत्तीयंयत्राख्यानमनुत्तमम् ॥ सुवर्णकोशसंप्राप्तिर्जन्मचोक्तंपरीक्षितः ॥ ३९ ॥ दग्धस्यास्त्राग्निनापूर्वंकृष्णात्संजीवनंपुनः ॥ चर्यायांहयमुत्सृष्टंपाडवस्यानुगच्छतः ॥ ४० ॥ तत्रतत्रच युद्धानिराजपुत्रैरमर्षणैः ॥ चित्रांगदायाः पुत्रेण पुत्रिकायाधनंजयः ॥ ४१॥ संग्रामेबभ्रुवाहनसंशयंचात्रदर्शितः ॥ अश्वमेधेमहायज्ञेनकुलाख्यानमेवच । ४२ । इत्याश्वमेधिकंपर्वप्रोक्तमेतन्महाद्भुतम् । अध्यायानांशतंचैव त्रयोऽध्यायाश्चकीर्तिताः । ४३ । त्रीणिश्लोकसहस्राणितावंत्येवशतानिच ॥ विंशतिश्च तथाश्लोकाःसंख्यातास्तत्त्वदर्शिना ।४४।ततस्त्वाश्रमवासाख्यंपर्वपंचदशंस्मृतम् ।यत्रराज्यंसमुत्सृज्यगांधार्यासहितोनृपः । ४५ । धृतराष्ट्रोश्रमपदंविदुरश्चजगामह ॥ यंदृष्ट्वाप्रस्थितंसाध्वीपृथाप्यनु ययौतदा । ४६ । पुत्रराज्यंपरित्यज्य गुरुशुश्रूषणेरता ।

कहेहैंइसके उपरान्त अश्वमेधिक नाम चौदहवां पर्व कहा हैंजिसमें सम्वर्त्त मरुत्तीय सुवर्ण कोष की प्राप्तिऔर परिक्षित का जन्म कहा है ॥३९॥ अग्नि से जले हुए परीक्षितको कृष्ण का जिलाना और पर्यटन करने में छोडेहुए घोडे के पीछेजाते हुए अर्जुन का क्रोधसे भरे हुए राजाओं के पुत्रों से युद्ध पुत्र कल्पना कीहुई चित्राङ्गदा के पुत्र बभ्रुवाहन से संग्राम में अर्जुन का प्राणान्तके निकट होना और अश्वमेध महायज्ञमें नकुलाख्यानका वर्णन ॥४२॥ यहबड़ा अद्भुत अश्वमेधिक पर्वकहा, तत्वके जाननेवाले व्यासने इसपर्वमें१०३अध्याय और ३३२० श्लोक कहेहैं ॥४४॥ इस के उपरान्त आश्रम वासिक पन्द्रहवां पर्व हैजिस में राजा धृतराष्ट्र गान्धारी और विदुर सहित राज्य छोडकरआश्रम को चलेगये धृतराष्ट्रको जाता देख पतिव्रता कुन्ती पुत्र के राज्य का परित्यागकर धृतराष्ट्र की सेवा के लिये साथ

---

shma to heaven. It contains 146 chapters and 800 verses. The fourteenth section is named *Aswamedhik.* The subjects are:—The excellent story of Samvart and Marut; the discovery of treasures; the birth of Parikshit, hurt by the missile of *Aswathama* and revived by Krishn; the battles of Arjun with various princes who malignantly seized the sacrificial horse; the narrow escape of *Arjun* in the battle with Vavrubahan, his son by Chitrangada; the story of mungoose. This is the most wonderful section called Aswamedhik. It contains 1o3 chapters and 3320 verses The fifteenth section is called Ashrambasik. The subjects are:- Dhritrashtra's abdication of the throne and his departure to the woods with Gandhari, Vidur and Kunti; their seeing the souls of the heroes, slain in battle, through the kindness of Vyas. Dhritrashtra's acquiring peace of mind and his departure with wife to heaven. After leading a

यत्रराजाहतान्पुत्रान्पौत्रा नन्याश्चपार्थिवान्। ४७। लोकांतरगतान्वीरान पश्यत्पुनरा
गतान्। ऋषेःप्रसादा त्कृष्णस्य दृष्ट्वाऽऽश्चर्यमनुत्तमम्। ४८। त्यक्त्वाशोकंसदारश्च
सिद्धिंपरामिकांगतः। यत्रधर्मंसमाश्रित्य विदुरःसुगतिंगतः। ४९। संजयश्चसहामात्यो
विद्वान्गावल्गणिर्वशी। ददर्शनारदंयत्रधर्मराजोयुधिष्ठिरः। ३५०। नारदाच्चैवशुश्राव
वृष्णीनांकदनंमहत्। एतदाश्रमवासाख्यं पर्वोक्तंमहदद्भुतम्। ५१। द्विचत्वारिंशदध्याया
पर्वैतदभिसंख्यया। सहस्रमेकंश्लोकानां पंचश्लोकशतानिच। ५२। षडेवचतथाः
श्लोकाः संख्याताास्तत्वदर्शिना। अतःपरंनिबोधेदं मौसलंपर्वदारुणम्॥ २५३॥
यत्रतेपुरुषव्याघ्राः शस्त्रस्पर्शहतायुधि। ब्रह्मदंडविनिष्पिष्टाः समीपेलवणांभसः। ५४।
आपानेपानकलिता दैवेनाभिप्रचोदिताः। एरकारूपिभिर्वज्रैर्निजघ्नुरितरेतरम्॥५५॥
यत्रसर्वक्षयंकृत्वा तावुभौरामकेशवौ। नातिचक्रामतुःकालं प्राप्तंसर्वहरंमहत्॥ ५६॥

गई आश्रम में राजाधृतराष्ट्र ने मरेहुए पुत्र पौत्र तथा अन्य राजाओं को जोकि लोकान्तर को प्राप्त होगय थे, कृष्ण ऋषि के प्रसाद से फिर देखा और वडे आश्चर्यवान् हुए। ४८ गान्धारी सहित राजाधृतराष्ट्र शोकको त्यागकर परमसिद्धि को प्राप्तहुआ, जिस में धर्मका आश्रम कर विदुर और जितेन्द्रिय गावल्गणका पुत्र संजय भी सुगतिको प्राप्तहुआ और जहां धर्मराज युधिष्ठिर ने ।५०। नारद से वृष्णियों का वडा नाश सुना यह वडा अद्भुत आश्रम वासिक पन्द्रहवां हुआ, तत्त्वदर्शी व्यास ने इस पर्व में ४२ अध्याय औ १५०६ श्लोक कहे हैं, इसके उपरान्त दारुण मौसल पर्वहै जहां वह पुरुषों में श्रेष्ठ वृष्णी संग्राम में शस्त्रों के स्पर्श से नष्ट और ब्रह्मदण्डसे खारी समुद्रके समीप मदिरासे उन्मत्त प्रारब्ध से प्रेरणा किये हुए एरका रूप वज्रों से परस्पर नाशहुए। ५५॥ राम और कृष्ण ने सब का क्षय होनेपर सब के आयेहुए काल का तिरस्कार न किया॥ ५६॥

virtuous life, throughout, Vidur's attainment of the highest good. The death of Sanjay, the prime minister, who had passions under control. The meeting of Yudhishthir with Narad and hearing from him the account of the extinction of Vrishni race. The Asramvasik Parv contains 42 chapters and 1506 verses. Then comes the section called Mausal. It gives an account of how the brave vetero s of the Vrishni race, through a Brahman's curse, made insane by wine, and impelled by fate, slew each other on the sea shore with grass weapons. After the annihilation of their race Balram and Krishna breathed their last by the effect of all destroying time. Arjun's going to Dwarka and his grief at seeing the place destitute of Vrishnis. His performance of

यत्रार्जुनोद्वारवती मेत्यवृष्णिविनाकृताम् । दृष्ट्वाविषादमगमत्परांचार्त्तिनरर्षभः ॥ ॥५७॥ ससंस्कृत्यनरश्रेष्ठं मातुलंशौरिमात्मनः । ददर्शयदुवीराणा मापानेवैशसंभव त् । ५८ । शरीरंवासुदेवस्य रामस्यचमहात्मनः । संस्कारंलंभयामास वृष्णीनांच प्रधानतः । ५९ । समृद्धबालमादाय द्वारवत्यास्ततोजनम् । ददर्शापदिकष्टायां गां डीवस्यपराभवम् । २६० । सर्वेषांचैवदिव्याना मस्त्राणामप्रसन्नताम् । नाशंवृष्णिक लत्राणां प्रभावानामनित्यताम् ॥ ६१ ॥ दृष्ट्वानिर्वेदमापन्नो व्यासवाक्यप्रचोदितः । धर्मराजंसमासाद्य संन्यासंसमरोचयत् ॥ ६२ ॥ इत्येतन्मौसलंपर्व षोडशंपरिकीर्त्ति तम् । अध्यायाऽष्टौसमाख्याताः श्लोकानांचशतत्रयम् ॥ ६३ ॥ श्लोकानांविंशतिश्चैव संख्यातातत्त्वदर्शिना । महाप्रस्थानिकंतस्मा दूर्ध्वंसप्तदशंस्मृतम् ॥ ६४ ॥ यत्रराज्यं परित्यज्य पाण्डवाःपुरुषर्षभाः । द्रौपद्यासहितादेवा महाप्रस्थानमास्थिताः ।६५। यत्र

अर्जुन ने वृष्णियों से रहित द्वारिका में जा और उसकी दशा देख बड़ा क्लेश पाकर अपने मामा शौरीका संस्कार किया और मदिरापीनेसे वीर यादवोंका बड़ा नाश देखा ॥ ५८ ॥ श्रीकृष्ण बलरामजी और मुख्य २ वृष्णियोंका संस्कार किया और वृद्ध और बालकों को द्वारिकासे लाते समय रास्ते में आपत्तिमें पड़ा गाण्डीव धनुषका तिरस्कार भी देखा सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंकी शक्ति और वृष्णियोंकी स्त्रियोंके नाश और प्रतापकी अनित्यताको देखकर क्लेश पाताहुआ व्यासजीके उपदेश से युधिष्ठिर के पास जाकर राज्य के त्याग का निश्चय किया ॥ ६२ ॥ तत्वदर्शी व्यास ने यह सोलहवां मौसल पर्व कहा है इस में ८ अध्याय और ३२० श्लोक हैं इस के आगे महाप्रस्थानिक सत्रहवां पर्व है ॥ ६४ ॥ जिस में पुरुषों में श्रेष्ठ पाण्डव राज्य को छोडकर द्रौपदी सहित देहकेत्याग

---

the funeral ceremony of his maternal uncle Vasudev the king of Vrishnis, and seeing the dead bodies of the heroes of that race.57. The ceremony of the bodies of Balram and Krishn and other persons of note among the Vrishnis. Arjun's departure from Dwarka accompanied with the women, children and old men, the remnants of the Yadu race and his coming face to face with a calamity in the way where his famous Gandiv and other celestial weapons were of no avail; Arjun's going in disgrace and sorrow before Yudhishthir and, with the advice of Vyas asking his permission to retire from the worldly life. The sixteenth section, Mousal, contains 8 chapters and 320 verses.64. The seventeenth section is *Mahaprasthanik.* The great journey of the Pandavas, the best of men. Their meeting with Agni at the Red Sea. Arjun's return-

तेऽग्निंददृशिरे लौहित्यंप्राप्यसागरम् । यत्राग्निनाचोदितश्च पार्थस्तस्मैमहात्मने ।६६।
ददौसंपूज्यतद्दिव्यं गांडीवंधनुरुत्तमम् । यत्रभ्रातृन्निपतितान्द्रौपदींचयुधिष्ठिरः ।६७।
दृष्ट्वाहित्वाजगामैव सर्वाननवलोकयन । एतत्सप्तदशंपर्व महाप्रस्थानिकंस्मृतम् ॥
॥ ६८ ॥ यत्राध्यायास्त्रयःप्रोक्ताः श्लोकानांचशतत्रयम् । विंशतिश्चतथाश्लोकाः सं-
ख्यातास्तत्वदर्शिना ॥ ६९ ॥ स्वर्गपर्वततोज्ञेयं दिव्यंयत्तदमानुषम् । प्राप्तं दैवरथं
स्वर्गान्नेष्टवान्यत्र धर्मराट् ॥ ७० ॥ आरोढुं सुमहाप्राज्ञ अनृशंस्याच्छुनाविना । ताम
स्याविचलां ज्ञात्वास्थितिंधर्मे महात्मनः ॥ ७१ ॥ स्वरूपंयत्र तत्यक्त्वा धर्मेणाऽसौ
समन्वितः । स्वर्गप्राप्तः सच तथा यातनाः विपुलाभृशम ॥ ७२ ॥ देवदूतेननरकं
यत्रव्याजेनदर्शितम् । शुश्रावयत्रधर्मात्मा भ्रातृणांकरुणागिरः ॥ ७३ ॥ निदेशे
वर्त्तमानानां देशे तत्रैव वर्तताम् । अनुदर्शितश्चधर्मेण देवराज्ञाच पाण्डवः ॥ ७४ ॥
आप्लुत्याकाशगङ्गायां गेहंत्यक्त्वा समानुषम् । स्वधर्मनिर्जितंस्थानं स्वर्गेप्राप्य सध-
र्मराट् ॥ ७५ ॥ मुमुदेपूजितः सर्वैः सेन्द्रैः सुरगणैःसह । एतदष्टादशंपर्व प्रोक्तं व्यासे

के लिये उत्तर को गये ॥ ६५ ॥ जहां पर उन्हों ने लौहित्य सागर में अग्नि को देखा और उसकी प्रेरणासे अग्निकी पूजा के साथ गाण्डीव धनुषका दान किया राजायुधिष्ठिर चारों भाई और द्रौपदी को नष्टहोताहुआ देखकर इकला आगे गया यह सत्रहवां महा प्रस्थानिक पर्व कहा है इस में तीन अध्याय और ३२० श्लोक तत्वदर्शी व्यास ने कहेहैं ॥ ६९ ॥ दिव्य रथमें कुत्तेके विना धर्मराजने चढ़ने की इच्छा न की उसकी उस निश्चल बुद्धि और धर्म में स्थिति को देख कर धर्मने कुत्ते के रूप को त्याग कर युधिष्ठिर को साथ लिया ॥ ७२ ॥ देवदूत ने किसी बहाने से नरक भी दिखाया और वहां पर आज्ञाकारी भाइयोंको रोते और पुकारते हुए देखा यह सब बातें धर्मराज और देवराज ने युधिष्ठिर को दिखलाई ॥ ७४ ॥ आकाश गङ्गा में स्नान कर मनुष्य देह को त्याग किया अपने धर्म से जीतेहुए स्वर्गीय स्थान को प्राप्तहो देवताओं से सत्कार पाता

ing the bow, Gandiv, to Agni with due respect. Yudhishthir's leaving behind in the course of journey the brothers and Draupadi who died one after another. The 17th section, called Mahaprasthanik, contains 3 chapters and 320 verses. The eighteenth section is Swarg. When the heavenly car came to take Yudhishthir he kindly refused to ascend it without the dog who had accompanied him. Seeing him firm in virtue the dog, who was Dharm in disguise manifested himself.72. The guide then took them to hell by stratagem and Yudhishthir was much annoyed at seeing it. There he heard the painful cries of his brothers undergoing punishment.

नधीमता ॥ ७६ ॥ अध्यायाः पञ्चसंख्याताः पर्वण्यस्मिन्महात्मना । श्लोकानांद्विशतैव प्रसंख्याततपोधनाः ॥७७ ॥ नवश्लोकास्तथैवान्ये संख्याताःपरमर्षिणा।अष्टादशैवमेतानिपर्वाण्येतान्यशेषतः ॥७८॥ खिलेषुहरिवंशश्चभविष्यंचप्रकीर्त्तितम्।दशश्लोकसहस्राणिविंशच्छ्लोक शतानिच ॥७९॥ खिलेषुहरिवंशेच संख्यातानिमहर्षिणा एतत्सर्वंसमाख्यातंभारतेपर्वसंग्रहः ॥ ८० ॥ अष्टादशसमाजग्मु रक्षौहिण्यो युयुत्सया । तन्महादारुणंयुद्धं महान्यष्टादशाभवत् ॥ ८१ ॥ योविद्याच्चतुरोवेदान्सांगोपनिषदोद्विजः नचाख्यानमिदंविद्या नैवसस्याद्विचक्षणः ॥ ८२ ॥ अर्थशास्त्रमिदंप्रोक्तं धर्मशास्त्रमिदंमहत् । कामशास्त्रमिदंप्रोक्तं व्यासेनामितबुद्धिना ॥ ८३ ॥ श्रुत्वात्विदमुपाख्यानं श्राव्यमन्यन्नरोचते । पुंस्कोकिलगिरंश्रुत्वा रूक्षाध्वांक्षस्यवागिव ॥८४॥ इतिहासोत्तमादस्माज्जायंते कविबुद्धयः । पंचभ्यइव भूतेभ्यो लोकसंविधयस्त्रयः ॥ ॥ ८५ ॥ अस्याख्यानस्य विषये पुराणं वर्ततेद्विजाः । अंतरिक्षस्यविषये प्रजाइवचतु

हुआ स्वर्ग में रहने लगा यह अठारहवां पर्व व्यास ने कहा है इस पर्व में पांच अध्याय और २०९ श्लोक परमर्षि व्यास ने कहे हैं यह सम्पूर्ण अठारह पर्व हैं ॥ ७८ ॥ हरिवंश का वर्णन, जिस में १२००० श्लोक हैं यह सब महाभारतके पर्वों का संग्रह होगया ॥ ८० ॥ अठारह अक्षौहिणी सेना ने एकत्रित होकर अठारह दिन तक घोर युद्ध किया ॥ ८१ ॥ जो ब्राह्मण अङ्गों के साथ चारों वेदोंको पढले और इस आख्यान को न जाने वह चतुर नहीं होगा ॥ ८२ ॥ बडी बुद्धिवाले व्यासने अर्थ शास्त्र धर्म शास्त्र, काम शास्त्र, इस में वर्णन कियाहै ॥ ८३ ॥ जिस प्रकार कोयल का शब्द सुन कर कौवेकी वाणी रूखी मालूम होती है इसी प्रकार इस आख्यान को सुन कर और आख्यानों को सुनने की रुचि नहीं होती जैसे पंच महाभूतों से आध्यात्मिक, आधिदैविक रचना होती हैं इसी प्रकार इस उत्तम आख्यान से कवियों की बुद्धियें उत्पन्न होती हैं ।

Then Dharm and Indra showed him the inner recesses. Yudhishthir then having bathed in the water of the celestial Ganges left his wordly form and acquired one suitable for that region and began to live joyfully among gods. These are the contents of the 18th section. It contains 5 chapters and 209 verses. The above is a detail of the contents of the 18 sections.78.To these are added the *Hari-vansh* and *Bhavishya*, containing 12000 verses. The *Parv Sangrah* has come to an end. 18 Akshauhinis collected for battle which lasted 18 days with terrible slaughter. He who knows the 4 Vedas with branches and *Upnishads*, but does not know this book can not be called wise. *Vyas*, of immense wisdom, has included in the Mahabharat treatises

विधाः ॥ ८६ ॥ क्रियागुणानांसर्वेषा मिदमाख्यानमाश्रयः । इंद्रियाणांसमस्तानां।चि
त्राइवमनःक्रियाः ॥ ८७ ॥ अनाश्रित्यै तदाख्यानं कथा भुवि न विद्यते । आहारम
नपाश्रित्य शरीरस्येव धारणम् ॥ ८८ ॥ इदंकविवरैः सर्वै राख्यानमुपजीव्यते ।
उदयप्रेप्सुभिर्भृत्वै रभिजातइवेश्वरः ॥ ८९ ॥ अस्यकाव्यस्यकवयो नसमर्थाविशेष
ण । साधोरिवगृहस्थस्य शेषास्त्रयइवाश्रमाः ॥ ३९० ॥ धर्ममतिर्भवतुवःसततोत्थिता
नां सह्येकएवपरलोकगतस्यबन्धुः । अर्थाःस्त्रियश्चनिपुणैरपिसेव्यमाना नैवाप्तभाव
मुपयांतिनचस्थिरत्वम् ॥ ९१ ॥ द्वैपायनोष्ठपुटनिःसृतमप्रमेयं पुण्यंपवित्रमथपापहरं
शिवंच । योभारतं समधिगच्छतिवाच्यमानं किंतस्यपुष्करजलैरभिषेचनेन ॥ ३९२॥
यदन्हाकुरुतेपापं ब्राह्मणस्त्विन्द्रियैश्चरन् । महाभारतमाख्याय संध्यांमुच्यतिपश्चिमाम्

॥ ८६ ॥ हे ब्राह्मणों इस भारत आख्यान में सम्पूर्ण पुराण ऐसेही वर्तमान हैं जैसे आकाश में चार प्रकार की सृष्टि ५८६ लौकिक और वैदिक कर्मों के फल से यह आख्यान ऐसा भरा है जैसे मन में सम्पूर्ण इन्द्रियों की विचित्र क्रिया रहती है ॥८७॥ इस आख्यान के आश्रय विना संसार में कोई कथा नहीं है जैसे भोजन के बिना शरीरका आधार नहीं है ॥८८॥ सम्पूर्ण कवियों का आश्रय यह आख्यान है जैसे बुद्धिके चाहने वाले भृत्यों को सज्जन राजा ८९ इस काव्य से कवि लोग किसी को अधिक नहीं कहते जैसे गृहस्थ के तुल्य और तीन आश्रम नहीं होसक्के निरन्तर धर्म में उद्यत रहो क्योंकि धर्मही परलोक में गएहुए का बंधु है चतुर लोग धन और स्त्रियों का सेवन करते हैं परन्तु इनको चिरस्थाई नहीं पाते ॥ ९१ ॥ जो मनुष्य द्वैपायन ऋषि के बनाये बड़े पवित्र, पाप के हरने वाले, कल्याण कारी भारत को श्रवण करता है। उसको अनेक जलों के स्नानों की क्या आवश्यकता है ॥ ९२ ॥ जो ब्राह्मण इन्द्रियों

on *Arth*, *Dharm* and *Kam*.83. Those who have read this book would never prefer another as those who have heard the sweet notes of the cuckoo would disregard the cawing of a crow. As the three worlds are formed out of five elements so the poets take all their ideas from this book. As the four kinds of living beings live in space so the *Purans* have the source of their life in this book. As mind is the master of the functions of senses so do all the morals depend upon this book. All the stories extant in the world depend upon this book as the body does upon food. All the poets rely upon the Mahabharat as persons desirous of promotion serve their noble lords. As the domestic life is superior to the other three so is this work over those of other poets. O ye ascetics, be up and doing and practice virtue which is the only thing that accompanies after death. Even the wisest beings cannot make the wealth

॥३९३॥ यद्रात्रौकुरुतेपापंकर्मणामनसागिरा। महाभारतमाख्याय पूर्वांसंध्यांप्रमुच्यते ॥ ३९४ ॥ योगोशतंकनकशृङ्गमयं ददाति विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय । पुण्यांच भारतकथांशृणुयाच्चनित्यं तुल्यंफलंभवतितस्य च तस्यचैव ॥३९५॥ आख्यानंतादि दमनुत्तमंमहार्थविज्ञेयं महदिहपर्वसंग्रहेणश्रुत्वाऽऽदौभवतिनृणांसुखावगाह विस्तीर्ण-लवणजलंयथाप्लवेन ॥ ३९६ ॥

इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणिसंग्रहपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः । २ । समाप्तंपर्वसंग्रहपर्व ।

से दिन में पाप करता है वह महाभारत का आख्यान सायंकालके समय पढ़कर उसपाप से छूट जाता है ॥ ९३ ॥ जो कर्म, मन वाणी से रात्रि में पाप करता है वह प्रातः कालकी संध्या में छूटजाते हैं ॥ ९४ ॥ जो सोने के सींगवाली सौ गौ वेद के जान ने वाले ब्राह्मण को देता है, और जो पवित्र भारत की कथा को सुनता है उन दोनों का पुण्य बराबर है ॥ ९५ ॥ इस सर्वोत्तम बडे अर्थ वाले पर्वों के संग्रह से महाभारत को जानो इस को आदि में श्रवण करने से मनुष्यों को महाभारत सुगम हो जाता है जैसे बड़े चौंडे खारी समुद्र में नाव से तरना ॥ ३९६ ॥ आदि पर्व का दूसरा अध्याय पर्व संग्रह नाम समाप्त हुआ ॥

and beauty of woman everlasting.91.The *B*harat composed by Vyas is unparallelled in teaching virtue.It destroys sin and produces good.91. He who listens to it has no need of bathing in the sacred tanks. Whatever sins one may commit during the day are destroyed by reading this book in the evening and likewise the nocturnal sins are removed by reading it in the morning. To give a hundred cows to a *B*rahman learned in the Vedas and to hear the *M*ahabharat daily are both equal. As the ocean can be easily crossed by means of a good ship so the Mahabharat is easily understood after reading this section called Parbsangrah.96.



अथपौष्यपर्व । सौतिरुवाच । जनमेजयःपारिक्षितः सहभ्रातृभिःकुरुक्षेत्रेदीर्घसत्रमु
पास्ते। तस्यभ्रातरस्त्रयःश्रुतसेनउग्रसेनोभीमसेनइति। तेषुतत्सत्रमुपासीनेष्वागच्छत्सा
रमेयः ॥१॥ जनमेजयस्यभ्रातृभिरभिहतो। रोरूयमाणोमातुःसमीपमुपागच्छत् ॥२॥
तंमातारोरूयमाणमुवाच । किंरोदिषिकेनास्यभिहत इति ॥३॥ सएवमुक्तोमातरंप्रत्युवा
चजनमेजयस्य भ्रातृभिरभिहतोऽस्मीति ॥४॥ तंमाताप्रत्युवाचव्यक्तंत्वयातत्रापराद्धं
येनास्यभिहतइति ॥५॥ सतांपुनरुवाचनापराध्यामि किंचिन्नावेक्षेहवींषिनावलिहइति
॥६॥ तच्छ्रुत्वातस्यमातासरमापुत्रदुःखार्ता तत्सत्रमुपागच्छद्यत्रसजनमेजयःसहभ्रातृ
भिर्दीर्घसत्रमुपास्ते ॥७॥ सतयाक्रुद्धयातत्रोक्तोऽयंमेपुत्रोनकिंचिदपराध्यतिनावेक्षतेह
वींषिनावलेढिकिमर्थमभिहत इति ॥८॥ नकिंचिदुक्तवन्तस्तेसातानुवाचयस्मादयमभिह

पौष्य पर्व ॥

सूतजी बोले ! परीक्षित का पुत्र जन्मेजय अपने भाइयों के साथ कुरुक्षेत्र
के बडे यज्ञ में स्थित था, उसके श्रुतसेन, उग्रसेन, भीमसेन यह तीन भाई थे उन के
यज्ञ कार्य्य में सम्मिलित होने पर एक कुत्ता आया और जन्मेजयके भाइयों ने उसे मारा
और वह रोता हुआ अपनी माता के पास गया ॥ २ ॥ उसको रोता देख उसकी
मा ने कहा कि तू क्यों रोता है तुझे किस ने मारा ॥ ३ ॥ वह इस प्रकार माता के
पूछने पर बोला कि जन्मेजय के भाइयोंने मुझको मारा ॥ ४ ॥ उससे माताने कहा कि
तू ने वहां अवश्य कोई अपराध किया होगा ॥ ५ ॥ उसने अपनी माता से कहा
कि न मैंने कोई अपराध किया और न मैंने हव्य को देखा न चाटा ॥ ६ ॥ यह
सुन कर उसकी माता सरमा पुत्र के दुःख से व्याकुल होकर यज्ञ स्थान पर गई
॥ ७ ॥ वह क्रोधातुर हो बोली कि मेरे पुत्र ने न कोई हव्य पदार्थ देखा और
न उस को चाटा फिर किस लिये मेरा पुत्र ताड़न किया गया ॥ ८ ॥ उन्हों ने

CHAPTER III

(PAUSHYA PARV)

*J*anmejaya, the son of Parikshit, with his brothers was engaged in his large sacrifice on the plains of Kurukshetra. He had three brothers, viz., Surut *S*en, Ugra *S*en and *B*him Sen. When they were engaged in the sacrifice, a dog came there and was beaten by the king's brothers. He ran away to his mother crying. 2. The mother eagerly asked him the cause of so much grief and he informed her of what had taken place. The mother then said, "You must have committed some fault for which you were beaten." He replied that he had done nothing. He did not pollute the sacrificial butter nor even looked at it. His mother Sarma hearing this was much distressed and went to the place of sacrifice. She demanded

तोऽनपकारीतस्मादृदृष्टंत्वांभयमागम्यतीति। ९। जनमेजयएवमुक्तोदेवशुन्यासरमया भृशंसंभ्रांतोविषण्णश्चासीत्। १०। सतस्मिन्सत्रेसमाप्तेहास्तिनपुरंप्रत्येत्य पुरोहितमनरूपमन्विच्छमानः परंयत्नमकरोद्योमे पापकृत्यांशमयेदिति।११। सकदाचिन्मृगयांगतः पारीक्षितोजनमेजयःकस्मिंश्चित्स्वविषय आश्रममपश्यत्। १२। तत्रकश्चिदृषिरासांचक्रे श्रुतश्रवानाम। तस्यतपस्याभिरतःपुत्रआस्तेसोमश्रवानाम। १३। तस्यतंपुत्रमभिगम्य जनमेजयः पारिक्षितःपौरोहित्यायवव्रे। १४। सनमस्कृत्यतमृषिमुवाचभगवन्नयंतवपुत्रो ममपुरोहितोऽस्त्विति। १५। सएवमुक्तःप्रत्युवाचजनमेजयं भोजनमेजयपुत्रोऽयंममसर्प्यांजातोमहातपस्वीस्वाध्यायसंपन्नो मत्तपोवीर्यसंभृतोमच्छुक्रं पीतवत्यास्तस्याःकुक्षौ जातः। १६। समर्थोऽयंभवता सर्वाःपापकृत्याःशमयितुमंतरेण महादेवकृत्याम्।१७।

यह सुनकर कुछ उत्तर न दिया। फिर वह सरमा कुत्ती कहने लगी। कि हे राजन् तेरे भाइयों ने बिना अपराध मेरेपुत्र को ताडन किया है इस लिये तुझ को अदृष्ट भय आवेगा॥ ९॥ इस प्रकार देवताओं की कुत्ती सरमा के वचन को सुनकर दुःखित होकर वह सोचने लगा॥ १०॥ वह उस यज्ञ के समाप्त होनेपर हस्तिना पुर में आकर योग्य पुरोहित की खोज करने लगा। कि जो इस पापको दूर करे॥ ११॥ जनमेजय कभी शिकार में गया और वहां एक आश्रम को देखा॥ १२॥ उस आश्रम में श्रुतश्रवा नाम ऋषि रहताथा उसका तपस्वी पुत्र सोमश्रवाथा॥ १३॥ राजा जन्मेजयने उसपुत्र के समीप जाकर पुरोहित होनेकी प्रार्थना की॥ १४॥ और उस ऋषि को नमस्कार कर बोला हे भगवन् यह आपका पुत्र मेरा पुरोहित होवे॥ १५ वह ब्राह्मण ऐसा कहने पर जनमेजय से बोला हे जन्मेजय यह मेरा पुत्रबडा तपस्वी और वेद पाठी है मेरेतप से पुष्ट हुए बीर्य को एक सर्पणीपी गई उस से यह उत्पन्न

of Janmejaya the cause of her son's beating when he had committed no wrong.8. No reply was given to her and then she said, "You have beaten my son without any fault, so an unexpected evil will befall you." On hearing this from the celestial bitch *Sarma*, Janmejaya was much alarmed. After the conclusion of sacrifice he returned to Hastinapur and began to search for a Purohit who could save him from the curse. One day when he was out hunting he reached the hermitage of the sage *Shrutsrava* who had a son, *Somsrava*, engaged in deep asceticism. Janmejaya, desiring to appoint the son to be his Purohit went to the sage and respectfully said, "Noble Sage, allow me to take thy son for my Purohit." The sage replied, "My son, deep in devotion, scholar of Vedas and having the power of my asceticism was born of a Naga woman.16. He is powerful enough to free thee from the curse of all but *Mahadeo*

अस्यत्वेकमपांशुव्रतंयदेनं कश्चिद्ब्राह्मणःकंचिदर्थमभियाचेत्तंतस्मैदद्यादयंयद्येतदुत्सहसे ततोनयस्वैनमिति। १८। तेनैवमुक्तोजनमेजयस्तं प्रत्युवाचभगवंस्तथाभविष्यतीति। १९। सतंपुरोहितमुपादायोपावृत्तो भ्रातॄनुवाचमयाऽयंवृतउपाध्यायो यदयंब्रूयात्तत्कार्यमविचारयद्भिर्भवद्भिरिति। तेनैवमुक्ताभ्रातरस्तस्य तथाचक्रुःसतथाभ्रातॄन्संदिश्यतक्षशिलांप्रत्यभिप्रतस्थेतंचदेशं वशेस्थापयामास। २०। एतस्मिन्नंतरेकश्चिदृषिर्धौम्योनामापोदस्तस्य शिष्यास्त्रयोबभूवुः। २१। उपमन्युरारुणिर्वेदश्चेति सएकंशिष्यमारुणिंपांचाल्यंप्रेषयामासगच्छकेदारखंडंबधानेति। २२। सउपाध्यायेनसंदिष्टआरुणिःपांचाल्यस्तत्रगत्वातत्केदारखंडंबद्धुंनाशकत्। सक्लिश्यमानोऽपश्यदुपायं भवत्वेवंकरिष्यामि। २३। सतत्रसंविवेशकेदारखंडे शयानेचतथातस्मिंस्तदुदकंतस्थौ। २४। ततः

हुआ है॥ १६॥ और यह महादेव के सिवाय सब का शाप दूर कर सकता है इस का यह एक दृढव्रतहै कि जो कोई इस से कुछमांगे उसको यह वह वस्तु अवश्य देताहै यदि तुम इस भारके उठानेकी सामर्थ्य रखते हो तो इसको लेजाओ। १८। इसप्रकार उसब्राह्मणके वचन को सुन जनमेजयने कहा किहेभगवन् मुझको स्वीकारहै। १९। वह उस पुरोहितको संगले अपने नगरको आया और अपने भाइयोंसे कहनेलगा कि हे भ्राताओ जिसकार्य को यहकहे उसको विनाविचारे तुमकरो वह इसप्रकार अपने भ्राताओं से कहकर तक्षशिला नामनगर को गया और उस नगरको अपनी प्रणाली में किया। २०। इसीके मध्यमें धौम्यनाम जलभक्षी तपस्वीथा और उसके तीनशिष्य। २१। उपमन्यु आरुणि वेदथे उसनेएक शिष्यको जिसकानाम आरुणी था आज्ञादी कि खेतकेपानी को बांध २२ वह पांचालवासी आरुणि उपाध्यायकी आज्ञा स्वीकारकर वहांगया और बंदेको न बांध सका और बहुतक्लेशातुरहो उपाय सोचने लगा। २३। वह उसके जल में सोगया इससे

He has one peculiarity in his habit. He will give away anything that a Brahman might beg of him. If you can bear this you have my permission to take him home." Janmejaya agreed to it and returned to his capital with the new Purohit. He introduced the Purohit to his brothers and enjoined them to comply with his wishes without hesitation. Having given this direction to his brothers the king invaded Takshshila and brought it under his rule. 20. About this time there was a sage named Ayodh Dhoumya who had three desciples, named, Upamanyu, Aruni and Ved. He bade Aruni of Panchal go and stop up a breach in the water course of a certain field. He went there and found that he was unable to stop it up. He was much distressed at his inability to obey the command of his preceptor. At length he stopped it by lying down in the channel.

कदाचिदुपाध्याय आपोदोधौम्यःशिष्यान पृच्छत्क्क आरुणिःपाञ्चाल्योग इति ॥२५॥ ततंप्रत्यूचुर्भगवंस्त्वयैव प्रेषितोगच्छकेदारखण्डंवधानेति।सएवमुक्तस्तान्शिष्यान्प्रत्यु वाचतस्मात्तत्र सर्वेगच्छामोयत्रसगतइति ॥२६॥सतत्रगत्वातस्याह्वानायशब्दंचकार। भोआरुणेपांचाल्यक्वासिवत्सैहीति ॥२७॥ सतच्छुत्वाआरुणिरुपाध्याय वाक्यंतस्मा त्केदारखण्डात्सहसोत्थायमुपाध्यायमुपतस्थे ॥२८॥ प्रोवाचचैनमयमस्म्यत्रकेदारखं-डेनिःसरमाणमुदकमवारणायंसंरोद्धंसंविष्टोभगवच्छब्दंश्रुत्वैवसहसाविदार्यकेदारखंडं भवंतमुपस्थितः। २९। तदभिवादयेभगवंतमाज्ञापयतु भवान्कमर्थंकरवाणीति।३०। सएवमुक्तउपाध्यायः प्रत्युवाचयस्माद्भवान्केदारखण्डंविदार्योत्थितस्ततस्मादुद्दालकएव ना म्नाभवान् भविष्यतीत्युपाध्यानानुग्रहीतः।३१। यस्माच्चत्वयामद्वचनमनुष्ठितंतस्मा

जल रुकगया ॥ २४ ॥ तत्पश्चात गुरूने और बाकी शिष्यों से पूछा कि पांचालनिवासी आरुणि कहांगया ॥ २५ ॥ वह गुरुसे कहने लगे भगवन् ! आपने ही जलको वांधनेकी आज्ञा देकर भेजाहै इस प्रकार शिष्यों के वचन सुनकर गुरुने कहा चलो हम सब उसी स्थानको जावें जहां आरुणि गया है २६ वह वहां जाकर उसको पुकारने लगा हे आरुणि ! पांचाल वासी तू कहांहै हे पुत्र मेरे समीप आ ॥२७॥ वह आरुणि गुरुके ऐसे शब्द सुन शीघ्रता से गुरु के समीप आया ॥ २८ ॥ और बोला कि मैं आपका शिष्य आयाहूं और वहते हुए जलको रोकेथा आपका शब्द सुन अति शीघ्रता से वंदा तोड़ आप के समीप आयाहूं ॥ २९ ॥ सो आपको नमस्कार के पश्चात् प्रेरणा करताहूं कि मेरे लिये क्या आज्ञा है ॥ ३० ॥ इस प्रकार उसके वचन को सुन गुरुबोला जो तू वंदे को तोड़ कर मेरेपास आया है इस से तेरा नाम लोकमें उद्दालक प्रसिद्ध होगा यह गुरुने उस पर अनुग्रह किया ॥ ३१ ॥ जो तूने मेरे वचन को मान वैसाही किया इस से तेरा कल्याण होगा चारों

After some time the preceptor enquired his other disciples of the where abouts of Aruni and they informed him that he had himself sent him to stop the water from flowing out of the field. The preceptor then said " Let us all go, then to the place where he is." Having reached there he called out the name of Aruni who hearing the voice of his preceptor at once came out of the water course and said " I could not prevent water from flowing by any other means and so I entered the water course. On hearing. your voice I have come out and thus have let the water flow. Instruct me what I have further to do."38.The preceptor replied " Because you have come out of the water course you will henceforth be called Uddalak and good fortune will smile on you because you have obeyed me.

च्छ्रे योऽवाप्स्यसि। सर्वेचवेदाःप्रतिभास्यंतिसर्वाणिचधर्मशास्त्राणीति।३२। सएवमुक्त उपाध्यायेनेष्टंदेशंजगाम। अथापरःशिष्यस्तस्यैवापोदस्यधौम्यस्योपमन्युर्नाम।३३। तंचोपाध्यायःप्रेषयामासवत्सोपमन्योगारक्षस्वेति ॥३४॥ सउपाध्यायवचनादरक्षद्गाः सचाहनिगारक्षित्वादिवसक्षये गुरुगृहमागम्योपाध्यायस्याग्रतःस्थित्वानमश्चक्रे ॥३५॥ तमुपाध्यायः पीवानमपश्यदुवाचचैनंवत्सोपमन्योकेनवृत्तिंकल्पयसिपीवानसिदृढमिति।३६। सउपाध्यायंप्रत्युवाचभोभैक्ष्येणवृत्तिं कल्पयामीतितमुपाध्यायःप्रत्युवाच।३७। मय्यनिवेद्यभैक्ष्यनोपयोक्तव्यमिति। सतथेत्युक्तोभैक्ष्यंचरित्वोपाध्यायन्यवेदयत् ॥ ३८ ॥ सतस्मादुपाध्यायःसर्वमेवभैक्ष्यमगृह्णात्। सतथेत्युक्तः पुनररक्षद्गाअहनिरक्षित्वानिशामुखंगुरुकुल मागम्यगुरोरग्रतःस्थित्वानमश्चक्रे ॥३९॥ तमुपाध्यायस्तथापि

वेद और धर्म शास्त्र तुझ को आजावेंगे।३२। ऐसा कहकर गुरुने उसको अपने इष्ट देशमें भेजा तिस उपरान्त दूसरा उपमन्यु नाम जो शिष्यथा उसको धौम्यने आज्ञादी कि हे पुत्र तू जा और मेरी गायोंको चरा ॥३४॥ वह गुरुके वचन से गायों को वनो में चरालाता और सायंकाल को आकर गुरु को नमस्कार किया करता ॥ ३५ ॥ उस को गुरु ने मोटा ताजा देख एक दिन पूछा हे पुत्र उपमन्यु तूने किस आजीविकासे उदर का पालन किया क्योंकि तू मोटा और बलवान है ॥३६॥ उस ने कहा कि महाराज मैं भिक्षा मांग कर अपना पेट भरताहूं गुरु ने उपमन्यु से कहा ॥ ३७ ॥ मेरे आगे भिक्षा को रक्खे विना तुझ को न खाना चाहिये, वह उस बातको स्वीकार कर भिक्षा गुरु के समीप रखने लगा ॥ ३८ ॥ वह गुरु उस चेले से सब भिक्षा ले लेता था, वह इस आज्ञा को स्वीकार कर गायों की रक्षा करने लगा दिन में रक्षा कर सायंकाल को गायों को ले गुरु के आश्रम में जा उस ने नमस्कार किया ॥ ३९ ॥ वह फिर उस को

You will be a scholar of the Vedas and *D*harm Shastras. Aruni then went to his native country. The other disciple was Upamanyu. Dhaumya ordered him to graze his cows and he obeyed his preceptor. He went every day to graze the cows and returned in the evening. His preceptor seeing him one day in good condition of body said, " Upmanyu, my child, what dost thou feed upon ? Thou art very fat." Upmanyu replied, " Sir I live upon alms."37. "Thou must not eat any thing," said the preceptor " without offering it to me." Upmanyu thence-forh offered his preceptor whatever he got as alms and the preceptor kept the whole of it for himself. Upmanyu, thus treated, went away to attend the cattle and brought them back in the evening .to his preceptor's abode and saluted him as

पीवानमेवदृष्ट्वोवाच । वत्सोपमन्योसर्वमशेषतस्तेभैक्ष्यं गृह्णामिकेनदानींवृत्तिंकल्पयसीति ॥४०॥ सएवमुक्तउपाध्यायंप्रत्युवाचभगवते निवेद्यपूर्वमपरंचरामितनवृत्तिंकल्पयामीतितमुपाध्यायःप्रत्युवाच ॥४१॥ नैषान्याय्यागुरुवृत्तिरन्येषामपिभैक्ष्योपजीविनांवृत्त्युपरोधंकरोषिइत्येवंवर्तमानालुब्धोऽसीति ॥४२॥ सतथेत्युक्त्वागाअरक्षद्रक्षित्वाच पुनरुपाध्यायगृहमागम्योपाध्यायस्याग्रतः स्थित्वानमश्चक्रे ।४३। तमुपाध्यायस्तथापि पीवानमेवदृष्ट्वापुनरुवाच । वत्सोपमन्योअहंतेसर्वभैक्ष्यंगृह्णामिनचान्यच्चरासिपीवानसिभृशंकेनवृत्तिंकल्पयसीति ।४४। सएवमुक्तस्तमुपाध्यायंप्रत्युवाच । भोएतासांगवांपयसावृत्तिंकल्पयामीति । तमुवाचोपाध्यायोनैतन्न्याय्यंपयउपयोक्तुंभवतोमयानाभ्य

मोटा ताजा देख कर बोला हे पुत्र अभिमन्यु तेरी सम्पूर्ण भिक्षा को मैं ले लेता हूं अब तू काहेसे अपनी आजीविका करता है वह इस प्रकार उपाध्याय के वचन को सुन कर बोला महाराज पहली भिक्षा आप के अर्पण कर फिर भिक्षा मांग उस से अपनी आजीविका करताहूं ॥ ४१ ॥ गुरु ने कहा ऐसा करना योग्य नहीं है यह गुरु वृत्ति से विपरीत है और बहुत से भिक्षा मांगने वालोंकी आजीविकामें बाधा डालता है इस से तू बड़ा लोभी है। ४२ । वह उस बातको भी स्वीकार कर गौओं की रक्षा करने लगा और फिर सायंकाल को आ गुरु के समीप खडाहो नमस्कार किया ॥ ४३ ॥ उस को उपाध्याय ने फिर मोटा ताजा देख पूंछा कि पुत्र उपमन्यु मैं तेरी सब भिक्षा को लें लेताहूं और दूसरी और कोई वृत्ति भी नहीं है फिर तू किस कारण मोटा ताजा है और किस से तू आजीविका करता है ॥ ४४ ॥ वह इस प्रकार गुरु के वचन को सुन बोला कि हे गुरु इन गौओं के दूध से अपनी आजीविका करता हूं उस से गुरु ने फिर कहा कि तुझ को यह कार्य उचित नहीं क्योंकि मेरी आज्ञा बिना तू दूध नहीं

usual. His preceptor seeing him still fat said to him, "Upmanyu, my child, I take away from thee all that thou obtainest in alms. What dost thou live upon?" Upmanyu replied, "Sir, having made you a present of my first begging I go for it again." "This is not the way," said his preceptor, "to carry on my order. Thou deprivest others of their livelihood and showest thy covetuousness at the same time." Upmanyu bowed his assent and went away to tend the cattle. When he came he saluted his preceptor as usual. 43. On, seeing him the preceptor said, "Upmanyu, my child, I take from thee all that thou obtainest in alms aud thou dost not go abegging again. Pray tell me how dost thou manage to remain stout." To this Upmanyu replied, "Sir I drink the milk of these cows." The preceptor then said, "Thou hast no right to drink milk with-

नुज्ञातामिति ।४५। सतथेतिप्रतिज्ञायगारक्षित्वापुनरुपाध्यायगृहमेत्यगुरोरग्रतःस्थित्वा नमश्चक्रे ॥४६॥ तमुपाध्यायःपीवानमेवदृष्ट्वोवाच । वत्सोपमन्योभैक्ष्यंनाश्नासिनचान्यच्चरसिपयो नपिबसिपीवानसिभृशंकेनेदानींवृत्तिंकल्पयसीति ।४७। सएवमुक्तउपाध्यायंप्रत्युवाच । भोःफेनंपिबामियमिमेवत्सामातॄणांस्तनात्पिबंतउद्गिरंति ॥४८॥ तमुपाध्यायःप्रत्युवाच । एतेत्वदनुकंपयागुणवंतोवत्साःप्रभूततरंफेनमुद्गिरंति।।तदेषामपिवत्सानांवृत्त्युपरोधंकरोष्येवंवर्तमानः ॥ फेनमपिभवान्नपातुमर्हतीतिसतथेतिप्रतिश्रुत्यपुनररक्षद्गाः ॥ ४९ ॥ तथाप्रतिषिद्धोभैक्ष्यंनाश्नातिनचान्यच्चरतिपयोनपिबति फेनंनोपयुंक्तेसकदाचिदरण्येक्षुधार्तोऽर्कपत्राण्यभक्षयत् ॥५०॥ सतैरर्कपत्रैर्भक्षितैः क्षारतिक्तकटुरूक्षैस्तीक्ष्णविपाकैश्चक्षुष्युपहतोऽधोबभूव ततः सोऽधोऽपिचक्रम्यमाणः

पीसकता है ॥ ४५ ॥ वह बहुत अच्छा कह कर गऊ चराने चला गया और संध्या को लौट कर फिर गुरु को नमस्कार की ॥ ४६ ॥ उपाध्यायने उसको पुष्ट देख कर कहा बेटे अभिमन्यु तू भिक्षा नहीं करता दूसरी वारभी भिक्षा को नहीं जाता और दूधभी नहीं पीता अब क्या वृत्ति करता है । ४७ । वह गुरु के पूछे जाने पर बोला जब यह बछड़े अपनी माताओं का दूध पीते हैं उस समय इन के मुखसे जो फेन निकलते हैं उसको पीकर वृत्ति करताहूं ॥४८॥ उपाध्याय ने फिर कहा यह बछडे तेरे ऊपर अनुग्रह कर के अधिक झाग छोडते हैं इस लिये तू बछड़ों की वृत्तिका नाश करता है ऐसा न कर वह बहुत अच्छा कहकर जंगल को गया ॥४९॥ इस प्रकार गुरु से निषेध कियाहुआ उपमन्यु न भिक्षा करता न दूध पीता न फेनको काम में लाता इस लिये भूखसे अत्यन्त व्याकुलहोकर आकके पत्तेखानेलगा५०और रूखे खारी कडुए तीक्ष्ण आकके पत्तोंको

---

out my permission." Upmanyu could not gainsay it and went away to tend the cattle. He came back and saluted the preceptor, in his usual manner, the preceptor seeing him still fat said, "Upmanyu, my child, you make me a present of what you bring as alms and donot go a begging again. You do not drink milk. What do you live upon now"? Upmanyu replied, "Sir, I suck up the froth which the calves drop while sucking." The preceptor said. "These generous calves throw out froth in larger quantities for your sake and thus you keep them hungry. The sucking of froth is therefore unlawful for you." Upmanyu then went again to tend cows. 49. He would not now take anything forbidden by his preceptor, so one day, oppressed by hunger, he ate, in the forest, leaves of Arka plant, which being pungent, acrimonius, crude and saline affected his eyes

कूपेपपात ॥ ५१ ॥ अथतस्मिन्ननागच्छतिसूर्येचास्ताचलावलं बिनि उपाध्यायः शि ष्यानवोचत् । नायात्युपमन्युः तऊचूर्वनंगतोगारक्षितुमितितानाहउपाध्यायः ॥५२॥ मयोपमन्युःसर्वतःप्रतिषिद्धः सनियतंकुपितस्ततोनागच्छातिचिरम् । ततोऽन्वेष्यइत्येवमु क्त्वाशिष्यैः सार्द्धमरण्यंगत्वातस्याह्वानायशब्दं चकारभो उपमन्योक्वासिवत्सैहीति । ॥ ५३ ॥ सउपाध्यायवचनं श्रुत्वाप्रत्युवाचोच्चैरयमस्मिन्कूपेपतितोऽहमितितमुपाध्या यः प्रत्युवाचकथंत्वमस्मिन्कूपे पतित इति ॥ ५४ ॥ सउपाध्यायंप्रत्युवाच अर्कपत्रा णि भक्षयित्वांऽधीभूतोऽस्म्यतः कूपे पतित इति तमुपाध्यायःप्रत्युवाच ॥ ५५ ॥ अ श्विनौस्तुहितौदेवभिषजौ त्वां चक्षुष्मंतं कर्तारावितिं । सएवमुक्त उपाध्यायेनोपम-न्युरश्विनौस्तौतुमुपचक्रमे देवावश्विनौ वाग्भिर्ऋग्भिः ॥५६॥ प्रपूर्वगौ पूर्वजौ चित्रभा नू गिरावाऽऽशंसामितपसाह्यनंतौ । दिव्यौ सुपर्णौ विरजौ विमानावधिक्षिपंतौ भुव

भक्षणकरके अंधाहोगया और गुरुके आश्रम को आताहुआ कुएं में गिरपड़ा ५१ सूर्य के अस्तहोनेपर जब वह न आया तौ उपाध्यायने शिष्यों से कहा क्या उपमन्यु नहीं आया शिष्यों ने कहा कि गऊचराने गयाथा, उपाध्याय ने फिर कहा ॥ ५२ ॥ मैंने उस को सर्वथा निषेध कर दिया इस से कुपितहोकर इस काल तक नहीं आया उसको ढूंढना चाहिये और शिष्योंसहित जंगल में ढूंढने गये और वहां जाकर पुकारा हे बेटे उपमन्यु तू कहां है आ । ५३ । वह उपाध्याय का वचन सुनकर ऊंची आवाज से बोला मैं यहां कुएं में पड़ाहूं उस से उपाध्याय ने पूछा कैसे कुएं में गिरपड़ा ॥ ५४ ॥ उस ने उत्तर दिया आक के पत्ते खाकर अन्धाहोगया इस से कुएं में गिरपड़ा उपाध्याय ने कहा देवताओंके वैद्य अश्विनिकुमारोंकी स्तुति कर वह तुझको नेत्र सहित करदेंगे, उपमन्यु इसप्रकार गुरुकी आज्ञा पाकर देव्यावश्विनौवाग्भिरित्यादि ऋग्वेद के मंत्रोंसे उनकी स्तुति करने लगा ॥ ५६ ॥ जो सृष्टि से पहले थे और सब से पहले उत्पन्न हुए अनेक

and he became blind. When feeling his way home he fell into a pit. In the evening his preceptor missed him and was informed by his disciples that Upmanyu had gone out with the cattle. The preceptor then said, "Upmanyu is displeased by my forbidding him to take anything and so has not returned. Let us go now in search of him." Having said this he went with his disciples into the forest and began to shout saying, "Upmanyu! where art thou?"53. Upmanyu having heard his preceptor's voice answered in a loud tone, "Here I am at the bottom of a pit." His preceptor then asked him how he had fallen there. Upmanyu then said, "having eaten the leaves of *Arak* plant I lost my eye-sight and fell into the pit." His preceptor then directed him to glorify the twin Aswins, the physi-

नानिविश्वा ॥५७॥ हिरण्मयौ शकुनीसांपरायौ नासत्यदस्रौ सुनसौ वैजयंतौ । शुक्लं वयंतौ तरसासुवेमा वधि व्ययंतावासितं विवस्वतः ॥५८॥ ग्रस्तांसुपर्णस्य बलेनवर्तिका ममुंचतामाश्विनौसौभगाय । तावत्सुवृत्ता वनमंतपायया वसत्तमागा अरुणाउदाऽव हन् ॥ ५९ ॥ षष्टिश्चगावस्त्रिशताश्च धेनव एकंवत्सं सुव्रते तं दुहंति । नानागोष्ठा विहिता एक दोहनास्ता वश्विनौ दुहतो घर्ममुक्थ्यम् ॥ ६० ॥ एकां नाभिं सप्तशता अराः श्रिताः प्रधिष्वन्या विंशतिरर्पिता अराः । अनेमि चक्रं परिवर्ततेऽजरं मायाऽश्वि

प्रकार से प्रकाशमान अन्तरहित पक्षिस्वरूप रजोगुण रहित अपरिमित सम्पूर्ण भुवनों को सत्वगुण में लानेवाले अश्विनिकुमारों से वाणी और तपद्वारा प्रार्थना करताहूं तेज स्वरूप महाप्रलय में सब के निवासस्थान मिथ्याज्ञान से रहित सुन्दर नासिका वाले रात्रि दिन के तन्तुओं को बुननेवाले शुक्ल दिनरूपी तन्तु से संवत्सर रूपी कपडे को बुनने वाले अच्छी शलाका (बुननेकी लकड़ी) वाले रात्रि के तन्तु को प्रकाश के साथ बुनने वाले परमात्मा के बल से काल शक्तिद्वारा खाई हुई पक्षिनी को फिर ऐश्वर्य के हेतु छुड़ाने वाले अश्विनिकुमार ! मिथ्यारूप अज्ञान को शरीर से उद्धारकरने वाले । ५९ । ३६० दिन रूपगायें सम्वत्सर रूप बछड़े को उत्पन्न करती हैं और भिन्न २ प्रकारकी क्रिया वाली भी एक प्रकार के ज्ञान को उत्पन्न करती हैं, उन के हेअश्विनि-कुमारों तुम दुहने वालेहो और वह सम्वत्सररूप बछडाही सर्व संसारका हरनेवाला और कर्मों का उत्पादक है ॥ ६० ॥ सम्वत्सर चक्र में एक नाभी है और सातसौ बीस दिन रात्रि रूप अरे लगे हैं और वह चक्र नियत प्रचारसे रहित है और अक्षय

cians to gods, to restore his sight and Upmanyu thus began with the hymns of the Rig Veda:— You have existed previous to the creation. You, primeval beings, are displayed in this wondrous universe of five elements! I come to you by the help of knowledge derived from meditation and handed down from ear to ear, for you are Infinite! You are the course of nature and the soul that pervades it! You are birds of beautiful feathers perched on the tree of body! You are free from the three restrictions under which every soul lies! You are incomparable! You are the soul of the universe! You are golden Eagles! All things disappear in you! You are free from sin and deterioration! Your beautiful beaks do not hurt unjustly and you are victorious in every battle! You have control over time. Having created the sun, you weave the wonderful cloth of the year by means of white and black threads of the days and nights, and with it you established the courses of

नौ समनाक्तिचर्षणी ॥ ६१ ॥ एकं चक्रं वर्तते द्वादशारं षण्णाभिमेकाक्षमृतस्य धारण-
म् । यस्मिन्देवा अधिविश्वेविषक्तास्तावाश्विनौ मुंचतं माविषीदतम् ॥ ६२ ॥ आश्विना
विंदु ममृतंवृत्तभूयौ तिरोधत्तामाश्विनौ दासपत्नी ॥ हित्वागिरिमश्विनौगामुदाचरंतौ
तदवृष्टिमन्हाप्रस्थितौ बलस्य ॥ ६३ ॥ युवां दिशो जनयथो दशाग्रे समान मूर्ध्निरथ
यानं वियंति । तासांयातमृषयोऽनुप्रयांति देवा मनुष्याः क्षितिमा चरंति ॥६४॥ युवां
वर्णान्विकुरुथोविश्वरूपांस्तेऽधिक्षियंते भुवनानिविश्वा ॥ तेभानवोऽप्यनुसृताश्चरंति
देवा मनुष्याः क्षितिमाचरंति ॥६५॥ तौनासत्या वाश्विनौवांमहेऽहं स्रजं च यां विभृथः

है, माया रूप है हे अश्विनिकुमारो जो इस लोक और इस लोक के पाने वाली प्रजा है
उस को तुम उस चक्र से युक्त करतेहो । ६१ । बारह महीने जिस के अर हैं ऐसा
सम्वत्सर रूप चक्र है और छः ऋतु उसकी नाभि हैं जो चक्र सत का धारण करने
वाला है जिसमें सम्पूर्ण देवता व्यवहार को प्राप्तहैं उस चक्र में फँसे हुए हे अश्विनि-
कुमारो मुझे बचाओ । हे अश्विनिकुमारो आप से भूत, भविष्यत, वर्त्तमान उत्पन्न हैं
हे अश्विनिकुमारो तुम ब्रह्महो अविद्या जानित बल सम्पत्ति आदिक को दूर करते हो
और तुम्हीं इंद्रियों को विषय में लगाते हो और बल के शीघ्र बढाने वालेहो ॥ ६३ ॥
हेअश्विनिकुमारो तुम सृष्टि से प्रथम प्राचीक आदि दस दिशाओं को उत्पन्न करते हो
और अन्तरिक्षमें सूर्य के रथ के मार्ग को जिससे ऋषि लोग कर्म में प्रवृत्तहोते हैं जिस
से देव और मनुष्य ऐश्वर्य को भोगते हैं ॥ ६४ ॥ हे अश्विनिकुमारो तुम लाल, शुक्ल
कृश इन वर्णों को उत्पन्न करतेहो और इन्हीं रंगों के मेलसे सम्पूर्ण लोकों को उत्पन्न
करतेहो और सम्पूर्ण प्रकाश मय जीव देव मनुष्य इस पृथ्वी का आश्रय करके इस में

Devas ond Pitris respectively ! You set free the bird of life from the claws of time to gain the greatest happiness ! Ignorant people, under delusion, attribute a form to you who are free from the attributes of matter ! 360 cows, representing the days, give birth to the calf of the year which is the creator and destroyer of all ! Seekers of truth draw the milk of true knowledge in various ways with its help. You Aswins are the creator of that calf ! The year is but the nave of the wheel which has 720 spokes representing the days and nights. Its circumference has no end. It is full of delusion and knows no deteroration. It affects the creatures of this world as well as the others. You Aswins set this wheel of time in motion ! The wheel of time representing the year, has the six seasons for its naves and twelve sings of the Zodiac for its spokes. It brings forth the fruits of the acts of all beings. The gods of time reside in that wheel. Subject as I am to its distressful influence I crave the

पुष्करस्य ॥ तौनासत्याववमृताहृताबृधावृते देवास्तत्प्रपदेनसूते ॥ ६६ ॥ मुखेनगर्भं-
लभेतां युवानौगतासु रेतत् प्रपदेनसूते ॥ सद्योजातो मातरमात्तिगर्भस्तावश्विनौ मुंचथो
जीवसेगाः ॥ ६७ ॥ स्तोतुंनशक्नोमिगुणैर्भवंतौ चक्षुर्विहीनः पथिसंप्रमोहः ॥ दुर्गेऽहम-
स्मिन्पतितोऽस्मिकूपेयुवांशरण्यौशरणंप्रपद्ये ॥ ६८ ॥ इत्येवंतेनाभिष्टुना वश्विनावा
जग्मतुराहतुश्चैनं प्रीतौस्वएषतेऽपुपोऽशानैनमिति ॥ ६९ ॥ सएवमुक्तःप्रत्युवाचना-
नृतमूचतुर्भगवंतौनत्वहमेतमपूपमुपयोक्तुमुत्सहेगुरवेनिवेद्येति ॥ ७० ॥ ततस्तमश्विना
वूचतुः ॥ आवाभ्यांपुरस्ताद्भवतउपाध्यायेनैवमेवाभिष्टुताभ्यामपूपोदत्तउपयुक्तःसते-

फिरते हैं उन प्रसिद्ध अश्विनिकुमारों को मैं यजन करताहूं यह अश्विनिकुमार इस आकाशमें मला को धारणकरते हैं और तुम सत्यरूपहो और कर्म के शुभाशुभ फलके देनेवाले हैं और सम्पूर्ण देवता उनकी स्तुति करने को नहीं समर्थ होते । ६६ । तुम दोनों प्रथम मुखसे गर्भ को धारणकरतेहो इस के उपरांत माता पिताके द्वारा गर्भ को धारण कराते हो तिसके उपरांत उत्पन्नहुआ गर्भ माता का दुग्ध पानकरताहै तुम दोनों अश्विनिकुमार जीनेके लिये मुझे चक्षुदो ।६७। मैं नेत्र रहित और अज्ञानवाला आपकी स्तुति नहीं कर सकता हूं और इस गहरे कुएं में गिरा हूं सो तुम दोनों की शरण ली है ॥ ६८ ॥ इस प्रकार स्तुति किये हुए अश्विनिकुमार आये और कहने लगे कि हम तुझपर प्रसन्न हैं और यह पुआ तुझको देते हैं इसको खा ॥ ६९ ॥ इस प्रकार अश्विनिकुमारों के वचन सुन उपमन्यु ने कहा कि आप असत्य नहीं कहते मैं विना गुरु के अर्पण किये इस को नहीं खा सकता ॥ ७० ॥ अश्विनिकुमारों ने कहा

favour of your liberating me from it. You are this universe of five elements! You are the objects that are enjoyed in this world and the other! Set me free from the influence of the elements. Though you are the Supreme Being you move over the earth in forms enjoying the delights that are enjoyed by the senses! In the beginning you created the ten directions in space and placed the sun and sky above! According to the course of the same sun the Rishis perform their sacrifices and the gods and men perform their sacrifices according to it and enjoy the fruits of those acts. 64. You have mixed the three colours to produce all the visible objects of nature. From these objects has sprung the universe on which the gods, men and all other living beings are engaged in their respective occupations! O Aswins, I adore you. The sky is your handiwork. You are ordainers of the fruits of all acts from which even the

नानिवेद्यगुरवेत्वमपितथैवकुरुष्वयथाकृतमुपाध्यायेनेति ॥ ७१ ॥ सएवमुक्तः प्रत्युवाच एतत्प्रत्यनुनयेभवंतावाश्विनौनोत्सहेऽहमनिवेद्यगुरवेऽपूप मुपयोक्तुमिति ॥७२॥ तमश्विनावाहतुः प्रीतौस्वस्तवानयागुरुभक्त्या।उपाध्यायस्यतेकार्ष्णायसादंता भवतोऽपिहिरण्मया भविष्यंति चक्षुष्मांश्चभविष्यसीतिश्रेयश्चावाप्स्यसीति ॥ ७३ ॥ सएवमुक्तोऽश्विभ्यांलब्ध चक्षुरुपाध्याय सकाशमागम्याभ्यावादयत् ॥ ७४ ॥ आचचक्षेच सचास्यप्रीति मान्बभूव ॥ ७५ ॥ आहचैनं यथाऽश्विनावाहतुस्तथात्वंश्रेयोऽवाप्स्यसि ॥ ७६ ॥ सर्वेचतेवेदाः प्रतिभास्यंति सर्वाणिच धर्मशास्त्राणीति ॥ एषातस्यापि-परीक्षोपमन्योः ॥ ७७ ॥ अथापरः शिष्यस्तस्यैवापोदस्य धौम्यस्य वेदोनामतमुपाध्यायः समादिदेशवत्सवेदइहास्यतांतावन्ममगृहेकंचित्कालं शुश्रूषुणाचभवितव्यंश्रेय

कि प्रथम तेरेगुरु ने हमारी स्तुतिकी थी और हमने उनको पुआ दिया था उस ने बिना गुरु के अर्पण किये खा लिया था ऐसेही तूभी खाले ॥ ७१ ॥ इस प्रकार उन के वचनों को सुन कर कहने लगा कि इस विषय के वचन को मैं सहन नहीं करसक्ता और मैं नहीं खासकता ॥ ७२ ॥ अश्विनिकुमारों ने कहा कि हम तेरी गुरुभक्ति देख कर अति प्रसन्न हैं तेरा उपाध्याय अविजनित सुख दुःख के रूप कर्मों का भोगने वाला होगा और तुझे संकल्पमात्र से सम्पूर्ण सुख प्राप्तहोंगे और नेत्रवानहोकर परम कल्याण को प्राप्तहोगा ॥ ७३ ॥ इस प्रकार अश्विनिकुमारोंके बचन सुन उस के नेत्र खुले और गुरु के समीप आकर नमस्कार किया ॥ ७४ ॥ सब वृत्तांत गुरु को सुनाया और गुरु उस पर प्रसन्न हुआ ।७५। और इस शिष्य से कहा कि जैसा तुझसे अश्विनिकुमारोंने कहा वैसाहीहोगा । ७६ । सम्पूर्ण वेद और धर्मशास्त्र तुझ को प्रकाश होंगे यह दूसरे शिष्य उपमन्युकी परीक्षा हुई ॥ ७७ ॥ इस के बाद तीसरे शिष्य

gods are not free. You are yourself free from the fruits of your actions! You are the parents of all. As males and females, you swallow the food which creates life blood. You take the shape of the babe that sucks its mother! Give me back my eye sight to protect my life. The twin Aswins, thus invoked, appeared and said, "We are satisfied. Take this cake and eat it." Upmanyu replied "Your words are never in vain but I may not take it without first offering it to my preceptor." The Aswins then said, "Formerly, the preceptor was given such a cake by us and he ate it without offering it to his preceptor. Do as thy preceptor did before."71.Upmanyu then said, "O Aswins, I thank you but I may not use it without offering it to my preceptor." Upon this Aswins remarked, "We are pleased with this devotion of thine to thy preceptor. Thy master

स्तेभविष्यतीति ॥ ७८ ॥ सतथेत्युक्त्वागुरुकुले दीर्घकालं गुरुशुश्रूषणपरोऽवसत् ।
गौरिवनित्यंगुरुणाधूर्षुनियोज्यमानः शीतोष्णक्षुत्तृष्णा दुःखसहःसर्वत्राप्रतिकूलस्त
स्य महताकालेनगुरुः परितोषंजगाम ॥ ७९ ॥ तत्परितोषाच्चश्रेयः सर्वज्ञतांचावाप
एषातस्यापिपरीक्षा वेदस्य ॥ ८० ॥ सउपाध्यायेनानुज्ञातःसमावृतस्तस्माद्गुरु-
कुलवासाद्गृहाश्रमं प्रत्यपद्यत तस्यापि स्वगृहेव सतस्त्रयःशिष्याबभूवुः सशिष्यान्न
किंचिदुवाचकर्मवाक्रियतांगुरुशुश्रूषाचेति दुःखाभिज्ञोहि गुरुकुलवासस्यशिष्यान्परि
क्लेशेन योजयितुंनेयेष ॥ ८१ ॥ अथकस्मिंश्चित्काले वेदं ब्राह्मणं जनमेजयःपौष्यश्च
क्षत्रिया वुपेत्यवरयित्वोपाध्यायंचक्रतुः ॥८२॥ सकदाचिद्याज्यकार्येणाभि प्रस्थित
उत्तंकनामानं शिष्यं नियोजयामास ॥ ८३ ॥ भोयत्किंचिद स्मद्गृहे परिहीयते

वेद से गुरु ने कहा कि हेपुत्र मेरेघर रहकर सेवा कर तेरा कल्याणहोगा ॥ ७८ ॥
वह गुरु के वचन को स्वीकार कर शिष्य समान सेवा में तत्परहुआ वह जुएमें नियुक्त
हुए बैल की तरह गरमी और शीत को सहताहुआ गुरु सुश्रषा में रहने लगा कुछ
काल में गुरु प्रसन्न हुए ॥ ७९ ॥ और उनकी कृपा से बड़े कल्याण को प्राप्तहो
सर्वज्ञहोगया, यह तीसरे वेद शिष्य की परीक्षा कही ॥ ८० ॥ वह उपाध्याय से
आज्ञा लेकर समावर्त्तन को प्राप्तहोकर गुरु कुल से घर को आया गृहस्थमें रहते हुए
उस केभी तीन शिष्य हुए वह उन शिष्यों से किसी कार्य व सेवा को नहीं कहताथा
क्योंकि उस को गुरुकुल निवास के दुःख का ज्ञानथा इस कारण उस ने उन शिष्यों
को क्लेश देनेकी इच्छा न की ॥ ८१ ॥ इस के उपरांत कुछ काल के वीतने पर वेद
ब्राह्मण को जनमेजय और पौष्य दो क्षत्रियों ने उपाध्याय बनाने की पार्थना की ।८२।
वह कदाचित् यजमान के कार्य में जाता हुआ उत्तंक नामक शिष्य को किसी कार्य में

is cruel but thou shalt be kind-hearted. Thy eye sight shall be restored and thou shalt have good luck." Thus spoken to by the Aswins he recovered his eye sight and then went to his preceptor and informed him of what had happened. His preceptor was well pleased with him and said, "Thou shalt be prosperous as the Aswins have said. All the Vedas and Dharm Shastras shall shine in thee" This was the trial of Upmanyu.77.The third disciple,Ved was bidden by the preceptor to remain at his house and serve him. Ved remained long in the house of his preceptor, did hard work like an ox and bore heat and cold and the pangs of hunger and thirst till his master was satisfied and he had learnt all the Vedas. This was the trial of Ved.80.Ved, after completion of his studies returned home with the

तदिच्छाम्यहं मपरिहीयमानं भवता क्रियमाण मिति स एवं प्रतिसंदिश्योत्तंकं वेदः प्रवासंजगाम ॥८४॥ अथोत्तंकः शुश्रूषुर्गुरु नियोग मनुतिष्ठमानो गुरुकुले वसतिस्म सतत्रवसमान उपाध्यायस्त्रीभिःसहिताभिराहूयोक्तः ॥ ८५ ॥ उपाध्यायिनी ते ऋतुमती उपाध्यायश्च प्रोषितोऽस्या यथाऽयमृतुर्वंध्योनभवति तथा क्रियता मेषा विषीदतीति ॥ ८६ ॥ एवमुक्तस्ताःस्त्रियःप्रत्युवाच । नमयास्त्रीणांवचनादि दमकार्यं करणीयम् । नह्यहमुपाध्यायेनसंदिष्टोऽकार्यमपित्वयाकार्यमिति ८७ ॥ तस्यपुन रुपाध्यायःकालांतरेणगृहमाजगामतस्मात्प्रवासात् । सतुतद्वृत्तस्याशेषमुपलभ्यप्रीति मानभूत् ॥ ८८ ॥ उवाचचैनंवत्सोत्तंककिंते प्रियंकरवाणीति ॥ धर्मतोहिशुश्रूषितो ऽस्मिभवतातेनप्रीतिःपरस्परेणनौसंवृद्धातदनुजानेभवंतंसर्वानेवकामानवाप्स्यसिगम्य

लगा गया ॥ ८३ ॥ हे शिष्य जो कुछ हमारे घर के काम में कमी हो उस काम को तू कर इस प्रकार उत्तंक से कह गुरु परदेश को चला गया ॥ ८४ ॥ तत्पश्चात् उत्तंक को एक दिन उस आश्रम की रहने वाली स्त्रियों ने बुलाया और कहा । ८५ । कि हे उत्तंक तेरी उपाध्यायनी ऋतुमती है और गुरु तेरा परदेश में गया है जिस प्रकार इसका यह ऋतुकाल वन्ध्यान हो वैसा कर यह अति व्याकुल है ॥ ८६ ॥ वह इस प्रकार उन स्त्रियों के वचन सुन कर बोला न मैं स्त्रियों के वचन से इस कुकर्मको करूंगा और न मुझ को उपाध्याय ने ऐसा करने की आज्ञा दी है । ८७ । उत्तंक का गुरु कुछ काल के पश्चात् परदेश से घर आया वह उस वृत्तांतको सुनकर बहुतप्रसन्न हुआ ॥ ८८ ॥ और उस से कहा कि हे वत्स मैं तेरे किस प्रियकार्य को करूं धर्म से तू ने मेरी सुश्रूषाकी है और परस्पर तुझ में और मुझ में प्रीति है अब तू अपने घर को

permission of his preceptor and entered domestic life. He then took three pupils but never ordered them to do hard work for he had had an experience of the harsh treatment of his preceptor. After some time two kings viz., Janmejaya and Paushya came to him and appointed him their Upadhyaya. One day as he left home to attend certain ceremonial he put Utank, one of his disiples, in charge of household work. Utank, always mindful of the command of his preceptor, perfomed his duty faithfully. In the meantime the women of the precetor's household came to him in a body and said, "The wife of thy preceptor is desirous of an offspring and the preceptor is not at home. We request you to satisfy her desire." Utank said, " I will not obey women in this matter, such a work is beyound the scope of my duty." The preceptor returned home in

तामिति ॥ ८९ ॥ सएवमुक्तःप्रत्युवाचकिंतेप्रियं करवाणीति एवमाहुः ॥ ९० ॥
यश्चाधर्मेणवैब्रूयाद्यश्चाधर्मेणपृच्छति । तयोरन्यतरःप्रैतिविद्वेषंचाधिगच्छति ॥ ९१ ॥
सोऽहमनुज्ञातो भवताइच्छामीष्टंगुर्वर्थमुपहर्तु मिति । तेनैवमुक्तउपाध्यायःप्रत्युवाचव
त्सोत्तंकउष्यतांतावादिति ॥९२॥ सकदाचिदुपाध्यायमाहोत्तंकआज्ञापयतुभवान्किंते
प्रिय मुपाहरामिगुर्वर्थमिति ॥ ९३ ॥ तमुपाध्यायःप्रत्युवाचवत्सोत्तंकबहुशोमांचो
दयसिगुर्वर्थमुपाहरामीतितद्गच्छैनांप्रविश्योपाध्यायिनींपृच्छ किमुपाहरामीति ॥९४॥
एषायद्ब्रवीतितदुपाहरस्वेति।सएवमुक्तउपाध्यायेनोपाध्यायनीमपृच्छद्भगवत्युपाध्या
येनास्म्यनुज्ञातोऽहं गंतुमिच्छामीष्टंतेगुर्वर्थमुपहृत्यानृणोगंतुमिति ॥९५॥ तदाज्ञापय
तुभवतीकिमुपाहरामिगुरुर्वर्थमिति । सैवमुक्तोपाध्यायिनी तमुत्तंकंप्रत्युवाच । गच्छपौ

जा मैं आज्ञा देताहूं तेरे सम्पूर्ण मनोर्थ सिद्धहों।८९। वह इसप्रकार सुनकरबोला आपने कहा क्या तेरा प्रिय कार्य करूं इस विषयमें ऐसा बृद्धलोग कहते हैं जो अधर्मसे कहता व सुनता है अथवा करता वा कराता पढता व पढाता है उन दोनों में से एक द्वेष और मृत्यु को प्राप्तहोता है ॥ ९१ ॥ सो मैं आप से घर जाने की आज्ञा दिया हुआ प्रेरणा करता हूं कि मैं कुछ आपकी सेवा करूं इस प्रकार उत्तंक के वचन को सुन गुरु ने कहा कि हे पुत्र कुछ दिन और रह ॥ ९२ ॥ वह उत्तंक फिर गुरु से बोला कि मैं आपकी गुरुदक्षिणा क्या लाऊं।९३।उपाध्याय ने कहा कि हेपुत्र बारंबार तू गुरु दक्षिणा को कहता है सो तू जा और अपनी उपाध्यायनी से पूछ कि मैं तेरेलिये क्या प्रिय वस्तु लाऊं।९४।जो वह आज्ञादे वह ले आ वह इसप्रकार गुरुकीआज्ञासे उपाध्यायनीसे कहनेलगा कि हे माता मुझको गुरुने घर जानेकी आज्ञादीहै मैं इच्छा करताहूं तेरी इष्ट वस्तु देकर गुरु के ऋणसे छूटकर घरको जाऊं।९५।सो आपआज्ञादें कि क्यागुरु दक्षिणालाऊं उपाध्यायनी

time and was much pleased at hearing what had happened and said, 88." Utank my child, what can I do for you? You have performed your duty well and our mutual friendship is confirmed. I therefore give thee leave to go home if thou so desirest." Utank said, "Let me do something for you, for it is said, out of those, who give or receive instruction contrary to usage one dies or enmity springs up between the two. I would, therefore, before saying good bye to you, bring something as fee." The preceptor then told him to tarry a little longer. Sometime after Utank again reminded the preceptor to speak out his desire and was told in reply that as he was so anxious to pay him for his instruction he had better go to his (instructor's) wife and bring whatsoever she desired. So Utank went to her and said, "Madam, I have got my master's

ष्यंप्रतिराजानंकुंडले भिक्षितुंतस्यक्षात्रियायापिनद्धे ॥ ९६ ॥ आनयस्वचतुर्थेऽहानिपुण्यकंभवितातोभ्यामावद्धाभ्यांशोभमानाब्राह्मणान्परिवेष्टुमिच्छामि ॥ तत्संपादयस्व एवंहिकुर्वतः श्रेयोभविताऽन्यथाकृतःश्रेयइति ॥ ९७ ॥ सएवमुक्तस्तयाप्रातिष्ठतोत्तंकः सपथिगच्छन्नपश्यदृषभमतिप्रमाणंतमधिरूढं च पुरुषमतिप्रमाणमेव सपुरुषउत्तंकमभ्यभाषत ॥ ९८ ॥ भोउत्तंकैतत्पुरीषमस्यऋषभस्यभक्षयस्वेतिसएवमुक्तोनैच्छत् ॥९९॥ तमाहपुरुषोभूयोभक्षय स्वोत्तंकमाविचारयोपाध्यायेनापितेभक्षितंपूर्वमिति ॥ १०० ॥ सएवमुक्तोवाढमित्युक्त्वातदातदृषभस्यमूत्रंपुरीषंचभक्षयित्वोत्तंकःसंभ्रमादुत्थितएवाप उपस्पृश्यप्रतस्थे ॥ १०१ ॥ यत्रसक्षत्रियःपौष्यस्तमुपेत्यासीनपश्यदुत्तंकः ॥ सउत्तंकस्तमुपेत्याशीर्भिरभिनंद्योवाच ॥ १०२ ॥ अर्थीभवंतमुपागतोऽस्मीतिसएनमभिवाद्योवाच ॥ भगवन्पौष्यः खल्वहंकिंकरवाणीति ॥ १०३ ॥ तमुवाच गुर्वर्थंकुंडलयो

इस प्रकार उसके बचनको सुन कहनेलगी जा और पौष्य राजासे उसकी स्त्रीके पहने हुए कुंडललेआ आज से चौथे दिन मेरे घर उत्सव है मैं उन कुण्डलोंको पहिन कर ब्राह्मणोंको भोजनपरोसूंगी उनके लानेसे तेरा कल्याणहै औरप्रकारनहीं । ९७ । उत्तंकने रास्तेमें जातेहुए एक बड़े मोटे ताजे बैलपर चढ़ेहुए एक मनुष्य को देखा और उस मनुष्य ने कहा ॥ ९८ ॥ हे उत्तंक इस का गोबर तू खा ले उसने खानेकी इच्छा न की ॥ ९९ ॥ फिर वह पुरुष उत्तंक से कहने लगा कि इस गोवर को खाले मत बिचार पहिले तेरे गुरु ने खाया था ॥ १०० ॥ वह ऐसा कहने पर अच्छा कहकर उसके मूत्र और गोवर को खा शीघ्रता से आचमन कर आगे बढ़ा ॥ १ ॥ और पौष्य को उत्तङ्क ने बैठा देखा, और उसके समीप जा आशीर्वादों से प्रसन्न कर बोला ॥ २ ॥ मैं याचक आपके समीप आया हूं वह राजा इस को नमस्कार कर बोला हे भगवन् मैं पौष्य राजाहूं क्या आपकी आज्ञा करूं ॥ ३ ॥ उस राजा से उत्तङ्क

permission to go home but I desire to bring as fee the thing you like best." She said, "Bring me the ear-rings worn by the queen of king Paushya. Four days hence I shall hold a festival. I wish to wear them at the time of distributing food to Brahmans. You must bring them in time if you desire to be blessed." Utank went away to execute her order. 97. In the way he met a man of extraordinary size who rode on a great bull. The man accosted Utank saying, "Eat of the dung of this bull." And when Utank hesitated to obey him he said, "Hesitate not. Thy master did so before." Utank then ate of the dung and drank of the urine of that bull and having cleaned his hands and mouth went to king Paushya. He saw the king sitting there and after pronouncing benedictions on him said, "I have come with a request." The king enquired of him the pur-

रर्थेनाऽभ्यागतोऽस्मीति ॥ येवैतेक्षत्रियया पिनद्धेकुंडलेतेभवान्दातुमर्हतीति ॥ १०४
तंप्रत्युवाचपौष्यःप्रविश्यांतःपुरंक्षत्रियायाच्यतामिति ॥ सतेनैवमुक्तःप्रविश्यांतःपु
क्षत्रियांनापश्यत् ॥ १०५ ॥ सपौष्यंपुनरुवाचनयुक्तंभवताऽहमनृतेनोपचरितुंनतेंऽन्त
पुरेक्षत्रिया सन्निहितानैनांपश्यामि ॥ १०६ ॥ सएवमुक्तःपौष्यःक्षणमात्रं विमृश्यो
त्तंकंप्रत्युवाच ॥ नियतंभवानुच्छिष्टःस्मरतावन्नहिसाक्षत्रियाउच्छिष्टेनाशुचिनाशक्य
द्रष्टुंपतिव्रतात्वात्सैषानाशुचेर्दर्शनमुपैतीति ॥ १०७ ॥ अथैवमुक्तउत्तंकःस्मृत्वोवाच
स्तिखलुमयोत्थितेनोपस्पृष्टं गच्छताचेति ॥ तंपौष्यःप्रत्युवाचएषतेव्यतिक्रमोनोत्थिते
नोपस्पृष्टंभवतीतिशीघ्रंगच्छताचेति ॥ १०८ ॥ अथोत्तंकस्तंतथेत्युक्त्वाप्राङ् मुख
उपविश्यसुप्रक्षालितपाणिपादवदनोनिः शब्दाभिरफेनाभिरनुष्णाभिर्हृद्गताभि

ने कहा कि गुरु की आज्ञा से मैं कुण्डलों को लेने के लिये तेरेपास आया हूं जो कुण्डल
तेरी स्त्री ने पहिने हैं वह मुझ को दे ॥ ४ ॥ उस से पौष्य बोला कि रनवास में जाकर
क्षत्रियाणी से याचनाकर उस ने रणवास में जा राणी को न देखा ॥ ५ ॥ उत्तंक पौष्य
से बोला कि तू ने मुझ से झूठ कहा यह योग्य नहीं है तेरे रनवासमें रानी नहीं है और
उसको मैंने नहीं देखा ॥ ६ ॥ इस प्रकार पौष्य कुछ सोचकर उत्तंक से बोला, आप
अपवित्र हैं याद करो वह अपवित्र को दिखाई नहीं देती और अपवित्र के सम्मुख भी
नहीं होती ॥ ७ ॥ इस के बाद उत्तङ्क यादकर बोला ठीक है मैंने उठकर चलते २ आ-
चमन किया था उस से पौष्य फिर बोला कि यह तेरी भूल है चलते, उठते, और खड़े
होने वाले का आचमन ठीक नहीं होता ।८। इसके बाद उत्तङ्क ने कहा ठीक है और पूर्व
की तरफ बैठकर हाथ, पांव, मुँह धोकर शब्द झाग उष्णता रहित और हृदय

port of his visit. 3. Utank then informed him that he had come to beg of him the ear-rings worn by his queen to make a present of them to his preceptor. The king then directed him to go to the palace and beg of the queen. He went there but returned without having seen the queen. He then accused the king of playing tricks on him and said that the queen was not in the palace. The king thought for a while and asked him to remember if he had purified himself or not after taking some food, and added that his wife was chaste and could not be seen by unclean persons. Utank reflected for a while and confessed his fault saying that he had made his ablutions standing in a hurry. Paushya said, "You have erred. Purification is not properly affected by one in a standing posture, nor by one who is in motion." 8. Utank owned his mistake and sat

द्भिस्त्रिःपीत्वाद्भिःपरिमृज्यखान्यद्भिरुपस्पृश्याचांतः पुरंप्रविवेश ॥ १०९ ॥ ततस्तां-
क्षत्रियामपश्यत्सा चदृष्ट्वैवो त्तंकंप्रत्युत्थायाभिवाद्योवाचस्वागतं तेभगवन्नाज्ञापयाकिंक
रवाणीति ॥ ११० ॥ सतामुवाचैतेकुण्डलेगुर्वर्थंमेभिक्षितेदातुमर्हसीति।साप्रीतातेनतस्यस
द्भावेनपात्रमयमनातिक्रमणीयश्चेतिमत्वातेकुण्डलेऽवमुच्यास्मैप्रायच्छदाहचैनमेतेकुण्डले
तक्षकोनागराजःसुभृशंप्रार्थयत्यप्रमत्तोनेतुमर्हसीति ॥ १११ ॥ सएवमुक्तस्तांक्षत्रियां
प्रत्युवाचभगवति सुनिर्वृत्ताभव । नमांशक्तस्तक्षको नागराजोधर्षयितुमिति ॥ ११२ ॥
सएवमुक्त्वातांक्षत्रियामामंत्र्यपौष्यसकाशमागच्छत् । आहचैनंभोःपौष्यप्रीतोऽस्मीति
तमुत्तंकंपौष्यः प्रत्युवाच ॥ ११३ ॥ भगवंश्चिरेणपात्रमासाद्यतेभवांश्चगुणवानतिथि
स्तदिच्छे श्राद्धं कर्तुंक्रियतांक्षणइति ॥ ११४ ॥ तमुत्तंकःप्रत्युवाचकृतक्षणएवास्मि

तक पहुँचतेहुए जल से तीन आचमन कर दो बार मुँह शुद्ध कर जल से इन्द्रियों को छूकर रनवास में गया ॥ ९ ॥ इस बार रानी को देखा और वह नमस्कार कर बोली हे भगवन् आपका शुभ आगमनहो मैं क्या आपकी आज्ञा करूं ॥ १० ॥ यह उस से बोला तेरेकुण्डल मैं गुरू के लिये मांगता हूं उनको तू दे, वह उसकी गुरु भक्ति से प्रसन्नहोकर बोली कि यह देने का पात्र है और निषेध करने के अयोग्य है और कुण्डलों को खोलकर बोली कि तक्षक नागों का राजा इन कुण्डलों को लेने की अत्यन्त इच्छा करता है इस से तू सावधानहोकर ले जा ॥ ११ ॥ वह इस प्रकार वचन सुन उस से बोला हेभगवती तू इस बात की चिन्ता मत कर तक्षक मुझ से धोका देकर नहीं छीन सकता है ॥ १२ ॥ रानी से यह कह रानीकी आज्ञा ले वह पौष्य के समीप आया और कहा हे पौष्य मैं प्रसन्न हूं, पौष्य ने कहा ॥ १३ ॥ हे भगवन् बड़े समय से पात्र मिलता है आप गुणवान अतिथि हैं इस से मैं श्राद्ध करने

down facing towards the East. He then made his ablutions and quietly sipped thrice of water that was free from froth, not warm, and just sufficient to reach the stomach; wipped his mouth twice, touched the organs of his senses and entered the Zenanah where he he saw the queen who at once bowed to him and saying that he was welcomed, enquired of him the purpose of his visit. Utank told her that he had come to beg her ear-rings for a present to his preceptor. The queen was much pleased with Utank's bearing and gave him the ear-rings saying, "Take special care of them for Takshak, the king of Nags, has a great desire to possess them." "Never mind," said he, "Takshak shall have no power over me."12. He took leave of the queen, went again to the king and said that he had got what he wanted. Then the king said to him that a fit object of charity

शीघ्रमिच्छामि। यथोपपन्नमन्नमुपस्कृते भवतेतिसतथेत्युक्त्वा यथोपपन्नेनान्नेनैनंभो
जयामास ॥ ११५ ॥ अथोत्तंकः सकेशंशीतमन्नंदृष्ट्वा अशुच्येतदितिमत्वातं पौष्य
मुवाच । यस्मान्मेअशुच्यन्नंददासि तस्मादंधोभविष्यसीति ॥ ११६ ॥ तंपौष्यःप्रत्यु
वाच । यस्मात्त्वमप्यदुष्टमन्नंदूषयासि तस्मात्त्वमनपत्योभविष्यसीतितमुत्तंकः प्रत्युवाच
॥ ११७ ॥ नयुक्तं भवताऽन्नमशुचिदत्त्वाप्रतिशापंदातुं तस्मादन्नमेवप्रत्यक्षीकुरु ।
ततः पौष्यस्तदन्नमशुचिदृष्ट्वा तस्याशुचिभावमपरोक्षयामास ॥ ११८ ॥ अथतदन्नं
मुक्तकेश्यास्त्रियायत्कृत मनुष्णंसकेशंचाशुच्ये तादितिमत्वातमृषिमुत्तंकंप्रसादयामास
॥ ११९ ॥ भगवन्नेतदज्ञानादन्नं सकेशमुपाहृतं शीतंतत्क्षामयेभवंतंनभवेयमंधइति ।
तमुत्तंकःप्रत्युवाच ॥ १२० ॥ नमृषाब्रवीमिभूत्वात्वमंधोन चिरादनंधोभविष्यसीति ।

की इच्छा करता हूं आप क्षणमात्र ठहरें ।१४। उत्तंक ने कहा स्थित हूं शीघ्रता से आप श्राद्ध करें और जो भोजन तयार है वह शीघ्र दें वह स्वीकार कर जो भोजन तयार था उसको लाया ॥ १५ ॥ इस के बाद वह उस भोजन को ठंडा और बाल सहित देख अशुद्ध जान पौष्य से बोला तूने अपवित्र और ठंडा भोजन मुझको दिया है इस लिये तू अन्धाहोजायगा पौष्य ने कहा कि तू शुद्ध अन्न को अपवित्र कहता है इस लिये तू सन्तान रहितहोगा, फिर उत्तंक ने कहा ॥ १७ ॥ तूने ठीक नहीं किया कि अपवित्र भोजन देकर उलटा मुझको शाप देता है अन्न को प्रत्यक्ष देख, तत्पश्चात् पौष्य ने उस अन्न को अपवित्र देख, अपवित्र मान लिया ॥ १८ ॥ वह समझकर कि खुले केश वाली स्त्री ने अपवित्र और ठंडा अन्न किया है उसकी प्रार्थना करने लगा ॥ १९ ॥ हे भगवत् यह बाल सहित ठंडा अन्न अज्ञान से आप के समीप लाया गया इस से क्षमा मांगता हूं कि मैं अन्धा न हूं उत्तंक ने कहा ॥ २० ॥ मेरा वचन झूंठा

was hard to find, that he had found such a person in Utank and wished to perform a Sradh if he would tarry a while. Utank agreed and told him to send for the food that was then ready. The king placed food before him but, seeing that the food was cold and had hair in it he said, " Thou hast given me unclean food therefore thou shalt become blind." Paushya replied, " And because thou hast called a clean food unclean, thou shalt have no issue." Utank said that it was improper for the king to curse in return when he had offered impure food. Paushya saw that the food was really unclean and began to pacify Utank saying, 19. " Sir, I am sorry the food brought before you was cold and unclean and therefore I crave your pardon that I may not be blind." Utank replied, " *My* words are never in vain. *Th*ou shalt become blind but thy eye sight shall soon be restored. Let thy curse have no effect on me."

गतापिशापोभवता दत्तोनभवेदिति ॥ १२१ ॥ तंपौष्यःप्रत्युवाच नचाहंशक्तःशापं प्रत्यादातुंनहिमेमन्युरद्याप्युपशमगच्छति किंचैतद्भवतानज्ञायतेतथा ॥ १२२ ॥ नवनीतं हृदयंब्राह्मणस्य वाचिक्षुरोनिशितस्तीक्ष्णधारः। तदुभयमेतद्विपरीतंक्षत्रियस्य वाङ्नवनीतं हृदयंतीक्ष्णधारमिति ॥ १२३ ॥ तदेवंगतेनशक्तोऽहंतीक्ष्णहृदयत्वात्तं शापमन्यथा कर्त्तुंगम्यतामितितमुत्तंकः प्रत्युवाच। भवताऽहमन्नस्याशुचिभावमालक्ष्य प्रत्युनुनीतः प्राक्चतेऽभिहितम् ॥ १२४ ॥ यस्माद दुष्टमन्नं दूषयसितस्मादनपत्योभ विष्यसीति। दुष्टेचान्नेनैषममशापोभविष्यतीति ॥ १२५॥ साधयामस्तावादित्युक्त्वा प्रतिष्ठतोत्तंकस्तेकुण्डलेगृहीत्वासोप ऽश्यदथपथिनग्नंक्षपणकमागच्छतंमुहुर्मुहुर्दृश्यमान

नहीं होता तू अन्धाहोकर थोड़े काल में अच्छा होजावेगा, और मुझ को जो तू ने शाप दिया है वह न हो उस से पौष्य ने कहा मैं अपने शाप को नहीं हटासकता और मेरा क्रोधभी अभी तक शांत नहीं होता है क्या तू इस बात को नहीं जानत ॥ २२ ॥ ब्राह्मण का हृदय मक्खनकी समान होता है और वाणी में छुरे की समान तीक्ष्ण धार होती है क्षत्रिय का हृदय तीक्ष्ण धारवाले छुरे के समान होता है और वाणी मक्खन के समान होती है हृदय के कठोर होने से मैं अपने शाप को नहीं लौटसकता हूं तू जा फिर उत्तंक ने कहा तू ने अन्न को अपवित्र जानकर प्रथम मेरेप्रसन्न होने को कहा था ॥ २४ ॥ जिस कारण शुद्ध अन्न को तू दोष लगाता है तिस से तू सन्तति रहितहोगा ऐसा शाप तू ने मुझे दिया है अन्न के दूषित होने पर मुझ को यह शाप न होगा ॥ २५ ॥ इस कारण शाप के नहोने का मैं निश्चय करता हूं ऐसा कह उत्तंक कुण्डलों को ले चलागया उस ने मार्ग में एक नंगे पाखण्डी भिक्षुक को आते देखा जो

Paushya said, " I cannot revoke my curse. My anger is not yet appeased. (Do you not know that a Brahman's heart is soft like butter and his speech sharp like a razor's edge, on the other hand a Kshatrya's words are soft but his heart is hard ?) On account of hard-heartedness I cannot revoke my curse. You may now leave me." Utank then said, " I proved the uncleanliness of the food offered to me. Thy curse cannot affect me because it was under a condition which is not fulfilled." Having said this Utank departed with the ear-rings. In the way he saw a naked beggar who was seen and lost sight of at times.26. Utank put the ear-rings on the road and sat down to make his ablutions. In the meantime the beggar came stealthily and ran away with the ear-rings. Utank, having performed his ablutions and having bowed to the gods and

मदृश्यमानंच।१२६। अथोत्तंकस्तेकुण्डलेसन्यस्य भूमावुदकार्थंप्रचक्रमे । एतास्मिन्नंतरे सक्षपणकस्त्वरमाणउपसृत्यते कुंडलेगृहीत्वाप्राद्रवत् ॥१२७॥ तमुत्तंकोऽभिसृत्यकृतोदककार्य्यःशुचिः प्रयतोनमोदेवेभ्यो गुरुभ्यश्चकृत्वामहता जवेनतमन्वयात् ॥ २८॥ तस्य तक्षकोदृढमासन्नः सतं जग्राह गृहतिमात्रः सतद्रूपं विहाय तक्षकस्वरूपंकृत्वा सहसाधरण्यां विवृतं महाविलं प्रविवेश ॥ २९॥ प्रविश्यचनागलोकं स्वभवनमगच्छत् । अथोत्तंकस्तस्याः क्षत्रियायावचः स्मृत्वातं तक्षकमन्वगच्छत् ॥ ३० ॥ स तद्विलंदण्डकाष्ठेन चखाननचाशकत् तंक्लिश्यमान मिंद्रोऽपश्यत्सवज्रं प्रेषयामास ॥ ३१ ॥ गच्छास्यब्राह्मणस्य साहाय्यंकुरुष्वेति। अथवज्रंदण्डकाष्ठमनुप्रविश्यतद्विल मदारयत् ॥ ३२ ॥ तमुत्तंकोऽनुविवेशतेनैवाविलेनप्रविश्यच तं नागलोक मपर्यंतमनेक विधप्रसादहर्म्यवलभीनिर्यूहशतसंकुलमुच्चावचक्रीडाश्चर्यस्थानावकीर्णमपश्यत् ॥

कि बारम्बार दृश्य और अदृश्यहो जाताथा ॥ २६ ॥ उत्तंक उन कुण्डलों को पृथ्वी पर रख जल के समीप शौच और आचमन को गया इसी समय वह भिक्षुक शीघ्रता से कुण्डलों के समीप आकर उन्हें उठा लेगया ॥ २७ ॥ शौचादि से उत्तंक निवृत्त हो गुरु और देवताओं को नमस्कार कर अति शीघ्रतासे उस के पीछे दौड़ा ॥ २८ ॥ तक्षक उस के समीप आया और उस ने तक्षक को पकडा पकडतेही वह भिक्षुक रूप को छोड तक्षक रूप से पृथ्वी के एक विलमें घुसगया ॥ २९ ॥ और अपने घर नागलोक को चला गया इस के बाद उत्तंक उस क्षत्रियाणी के वचन को याद कर उस के पीछे गया ॥ ३० ॥ और वह उस विल को डण्डे से बढाने में असमर्थ हुआ उस को दुःखित देखकर इन्द्र ने वज्र को । ३१ । ब्राह्मणकी सहायता को भेजा, इस के बाद वज्र ने डण्डे में प्रवेश कर बिल को बढादिया उत्तंक ने उस के पीछे उसी रास्ते से घुसकर नागलोक को देखा जिसमें भिन्न २ प्रकार के मनुष्यों और देवताओं के क्रीडा

his preceptor, ran after the thief and with great difficulty overtook him. But as soon as he touched him the beggar was transformed into Takshak and at once having entered a hole in the ground went to his abode in the Nag-lok. Utank remembered the words of the queen and pursued him. He began to enlarge the hole with his stick but could not do it. Indra beholding his distress sent his vajra which entering his stick soon enlarge the hole. He now entered the region of Nagas which was very extensive and had thousands of palaces and elegant mansions, abounding with various places for games and recreation. Utank then praised the Nagas in the following strain. "You serpents, subjects of king Airavat, glorious in battle and showering weapons like lightning, handsomes of various forms and decked with beautiful ear-rings' children of Airavat that

॥ ३३ ॥ सतत्रनागांस्तानस्तुवदेभिः श्लोकैः । यऐरावतराजानः सर्पाः समितिशोभनाः । क्षरंतइवजीमूताः सविद्युत्पवनेरिताः ॥ ३४ ॥ सुरूपावहूरूपाश्च तथाकल्माषकुण्डलाः । आदित्यवन्नाकपृष्ठे रेजुरैरावतोद्भवाः ॥ ३५ ॥ वहूनिनागवेश्मानि गङ्गायास्तीरउत्तरे । तत्रस्थानपिसंस्तौमि महतः पन्नगानहम् ॥ ३६ ॥ इच्छेत्कोऽर्कांशुसेनायां चर्तुमैरावतंविना । शतान्यशीतिरष्टौच सहस्राणिचविंशतिः ॥ ३७ ॥ सर्पाणांप्रग्रहायांति धृतराष्ट्रोऽयदैजति । येचैनमुपसर्पतियेच दूरपथं गताः ॥ ३८ ॥ अहमैरावतज्येष्ठ भ्रातृभ्योऽकरवंनमः । यस्यवासःकुरुक्षेत्रे खांडवेचाभवत्पुरा ॥ ॥ ३९ ॥ तंनागराजमस्तौषं कुण्डलार्थायतक्षकम् । तक्षकश्चाश्वसेनश्च नित्यंसहचरावुभौ ॥ ४० ॥ कुरुक्षेत्रंच वसतांनदीमिक्षुमतीमनु । जघन्यजस्तक्षकश्च श्रुतसेनेतियः

के स्थान और महल आदिक को देखा उस ने वहां नागोंकी स्तुतिकी जिनका राजा ऐरावत है जो संग्राम में बड़े वीर और बादलों के समान शस्त्रों के धारणकरनेवाले और विजली की समान शीघ्रगामी । ३४ । अनेक रूप वाले और सुन्दर बिचित्र कुण्डल पहिरेहुए ऐरावतकी सन्तान सूर्यकी समान शोभितहोते हैं ॥ ३५ ॥ बहुत से नागों के मकान गङ्गा के उत्तर कोण में हैं वहांपर रहनेवाले सर्पोंकीभी मैं स्तुति करता हूं ।३६। सूर्यकी किरणों के सामने ऐरावत के सिवाय और कोई नहीं जाता है जब ऐरावत का भाई धृतराष्ट्र नाग निकलता है तब २८००८ सर्पोंकी सेना साथ चलती हैं उस के पीछे और दूर मार्ग में जानेवाले ऐरावत के भाइयोंको मैं नमस्कार करता हूं जिस का निवास पहिले कुरुक्षेत्र और खाण्डव बन में था उस राजा तक्षक से कुण्डलों के लिये प्रार्थना करता हूं तक्षक और अश्वसेन दोनों सर्वदा साथ रहते हैं और कुरुक्षेत्र और इक्षुमती के रहनेवाले जिसका छोटा पुत्र तक्षक है और श्रुतसेना का जो छोटा पुत्र

shine like the sun in the sky.35. On the Northern banks of the Ganges are many habitations of the Nagas. I adore those serpents also. Who except Airavat can move in the burning rays of the Sun? When his brother, Dhritrashtra, goes out 28008 Nagas follow him. I adore all who move near him and those who remain at a distance. I adore all whose elder brother is Airawat. I adore Takshak also who formerly dwelt in Kurukshetra and the forest of Khandav. Takshak and Ashwa Sen are constant companions who dwell in Kurukshetra, on the banks of the Ikshumati. I adore Srutsen, the younger brother of Takshak, who resided at the holy place called Mahadyumn to become the chief of serpents.42.Utank did not get the earrings in spite of all his eulogies and became very dejected. Then he saw two women weaving fine cloth with a fine shuttle over a loom.

सुतः ॥ ४१ ॥ अत्रसन्योमहद्युम्नि प्रार्थयन्नागमुख्यताम् । करवाणिसदाचाहं नमस्त-
स्मैमहात्मने ॥४२॥ एवंस्तुत्वास विप्रर्षिरुत्तंकोभुजगोत्तमान् । नैवतेकुण्डलेलेभेततश्-
चिंतामुपागमत् ॥ ४३ ॥ एवंस्तुवन्नापिनागान्यदाते कुण्डलेनालभत्तदाऽपश्यात्स्त्रियौ-
तंत्रेआधिरोप्यसुवेमेपटंवयंत्यौ । तस्मिंस्तत्रैकृष्णाः सिताश्चतंतवश्चक्रं चापश्यद् द्वाद-
शारं षड्भिः कुमारैः परिवर्त्यमानं पुरुषं चापश्यदश्वं च दर्शनीयम् ॥ ४४ ॥ सतान्
सर्वांस्तुष्टावएभिर्मंत्रवदेव श्लोकैः ॥ ४५ ॥ त्रीण्यर्पितान्यत्रशतादिमध्ये षष्टिश्चनित्यं-
चरतिध्रुवेऽस्मिन् । चक्रेचतुर्विंशतिपर्वयोगेषड्वै कुमाराःपरिवर्तयंति ॥ ४६ ॥ तंत्रं-
चेदंविश्वरूपेयुवत्यौवयत स्तंतून्सततंवर्त्तयंत्यौ । कृष्णान्सितांश्चैवविवर्त्तयंत्यौ भूतान्य
जस्रंभुवनानिचैव ॥ ४७ ॥ वज्रस्यभर्त्ताभुवनस्यगोप्तावृत्रस्यहंतानमुचेर्निहंता । कृष्णे

तक्षक है वह नागों में मुख्यताकी इच्छा करता हुआ महद्युम्न नाम स्थान में बसा उस
महात्मा को मैं नमस्कार करता हूं ॥ ४२ ॥ इस प्रकार स्तुति करते हुए उत्तंक ने
जब कुण्डलों को न पाया तौ बड़ी चिंता को प्राप्तहुआ ॥ ४३ ॥ उस ने दो स्त्रियों
को देखा जो कि तन्त्र से सूत को चढाकर अपने वस्त्र को बुनरही थीं और उस में
काला और सफेद सूत था और वहां बारह अरों से युक्त चक्र देखा जिस को छः
कुमार चलारहे थे और एक उस के अधिष्ठाता को और सुन्दर घोड़े को देखा । ४४ ।
वह सबकी इन मन्त्रोंसे स्तुति करनेलगा इस चक्रमें ३६० अरे हैं और अरोंसे मिलेहुए
२४ पर्व हैं और छः कुमार चलारहे हैं इस तन्त्र को विश्वरूप स्त्रियें बुनती हैं । और
सदैव काले और श्वेत तन्तुओं को मिलाती हैं और सम्पूर्ण प्राणी और लोक इससे युक्त
हैं ॥४७॥ वज्र का धारण करने वाला संसारका रक्षा करने वाला वृत्र नमुचि का मारने

Black and white threads were mixed to make it. He also saw a wheel with twelve spokes turned by six boys and a man with a fine horse. He then addressed them as follows:—The wheel has 24 division (lunar changes) and 360 spokes. It is turned continually by 6 boys. These women (nature) are weaving continually with black and white threads creating many worlds with inhabitants.47.Thou, possessor of thunder bolt, the protector of the world, the slayer of Vrit and Namuchi, wearer of black cloth, displayer of truth and untruth, owner of the horse received from the Ocean, I bow to thee. Lord of creation,Purandar! The owner of the horse said,"Iam pleased with thy praise. What do you want?"Utank replied,"I want the serpents to be under my control."The man then directed him to blow into

वसानोवसनेमहात्मा सत्यानृतेयोविविनक्तिलोके ॥ ४८ ॥ योवाजिनंगर्भमपांपुराणं वैश्वानरंवाहनमभ्युपैति । नमोऽस्तुतस्मैजगदीश्वराय लोकत्रयेशायपुरंदराय ॥ ४९॥ ततःसएनंपुरुषः प्राहप्रीतोऽस्मितेहमनेनस्तोत्रेण किंतेप्रियंकरवाणीतिसतमुवाच ।५०। नागामेवशमीयुरितिसचैनंपुरुषः पुनरुवाचएतमश्वमपाने धमस्वेति ॥ ५१ ॥ ततोऽश्वस्यापानमधमत्ततोऽश्वाद्धम्यमानात्सर्वस्रोतोभ्यः पावकार्चिषः सधूमानिष्पेतुः ।५२॥ ताभिर्नागलोकउपधूपितेऽथसंभ्रांतस्तक्षकोऽग्नस्तेजोभयाद्विषण्णः कुण्डलेगृहीत्वासहसाभवनान्निष्क्रम्योत्तंकमुवाच ॥ ५३ ॥ इमेकुण्डलेगृह्णातुभवानितिसतंप्रतिजग्राहोत्तंकः प्रतिगृह्यचकुण्डलेऽचिंतयत् ॥ ५४ ॥ अद्यतत्पुण्यकमुपाध्यायिन्यादूरंचाहमभ्यागतः सकथंसंभावयेयमितिततएनं चिंतयानमेवसपुरुषउवाच ॥ ५५ ॥ उत्तंकए

वाला कृष्ण वस्त्रों को धारण करने वाला, महात्मा, लोकमें सत्य और झूठ का प्रकाश करने वाला ॥ ४८ ॥ जो जलों के गर्भ से उत्पन्न हुए अग्नि के समान तेजस्वी अश्व वाहन को प्राप्त होता है उस जगत के ईश्वर तीनों लोक के स्वामी को नमस्कार है ।४९। इस के बाद वह पुरुष उत्तंक से बोला मैं तेरी स्तुति से तुझपर प्रसन्न हूं क्या तेरा प्रिय कार्य करूं उत्तंक ने कहा नाग मुझपर प्रसन्न हों वह पुरुष फिर बोला इस घोड़े के गुदा स्थान में फूंक लगा ॥ ५१ ॥ फिर घोड़ेके गुदा स्थानमें उस ने फूंका और उस के सब छिद्रों से अग्नि निकली उस अग्नि की लपटसे नागलोक जलने लगा व्याकुल और भय से उदास तक्षक कुण्डलों को हाथ में लेकर उत्तंकसे बोला ॥ ५३ ॥ इन कुण्डलों को आप लो ऐसा कहने पर उसने उन्हें ले लिया और लेकर सोचने लगा ॥ ५४ ॥ आज मेरी गुरुकी स्त्री का मंगल दिन है । और मैं बहुत दूर हूं किस प्रकार गुरुकी स्त्री को यह कुण्डल पहुँचाऊं इस प्रकार सोचते हुए उत्तङ्क से उस पुरुष ने फिर कहा ।५५। हे उत्तङ्क

horse and as soon as he did this sparks of fire began to come out from every pore in the body of the horse. The horse gave out so much heat and smoke that the place became too hot to live in. Takshak then brought the ear-rings and gave them to Utank. Utank, on receiving them began to think that he was so far from his preceptor's abode and the day of festival had come. He was at once relieved of his anxiety by the man who allowed him the use of horse which carried him to his preceptor's abode in a very short time.57.The preceptress that morning after having bathed was dressing her hair and was thinking of pronouncing a curse on Utank if he should not return with in the appointed time. At that moment Utank entered his preceptor's abode and having bowed to his precep-

नमेवाश्वमधिरोहत्वां क्षणेनैवोपाध्यायकुलं प्रापयिष्यतीति ॥ ५६ ॥ सतथेत्युक्त्वात मश्वमधिरुह्य प्रत्याजगामोपाध्याय कुलंउपाध्यायिनीचस्नाता केशानावापयंत्युप विष्टोत्तंको नाच्छतीति शापायास्यमनोदधे ॥ ५७ ॥ अथैतस्मिन्नंतरेस उत्तंकः प्रविश्य उपाध्यायकुलं उपाध्यायिनीमभ्यवादयत चास्यैकुंडले प्रायच्छत्सा चैनंप्रत्युवाच ॥ ५८ ॥ उत्तंकदेशेकालेऽभ्यागतः स्वागतंतेवत्सत्वमनागासि मयानशप्तः श्रेयस्तवोपास्थितं सिद्धिमाप्नुहीति ॥ ५९ ॥ अथोत्तंकउपाध्यायमभ्यवादयत् ॥ तमुपाध्यायः प्रत्युवाचवत्सोत्तंकस्वागतंते किंचिरंकृतमिति ॥ १६० ॥ तमुत्तंकउपाध्यायं प्रत्युवाच । भोस्तक्षकेणमेनागराजेनविघ्नः कृतोऽस्मिन्कर्मणितेनास्मिनागलोकंगतः ॥ ६१ ॥ तत्रचमयादृष्टेस्त्रियौतंत्रेऽधिरोप्यपटंवयंत्यौ तस्मिंश्च कृष्णाः सिताश्चतंतवः किंतत् ॥ ६२ ॥ तत्रचमयाचक्रंदृष्टंद्वादशारं षड्चैनंकुमाराः परिवर्त्तयंतितदपिकिम्

इस घोड़ेपर चढ यह तुझको एक क्षण में उपाध्याय के घर पहुँचा दे । ॥ ५६ ॥ वह अच्छा कह उस घोडे पर चढ गुरु के घर आगया और गुरुकी स्त्री स्नान कर केशोंको गुहने बैठी थी और उत्तङ्क नहीं आया समझ कर शाप देनेका विचार करने लगी ।५७। इसी बीचमें उत्तंक ने गुरुके घर जा नमस्कार कर कुण्डल गुरुकी स्त्री को दिये और गुरुकी स्त्रीने कहा हे उत्तंक बड़े सुन्दर समय पर तू आया तेरा आना शुभहो हे पुत्र तू निष्पाप है मैंने तुझको शाप नहीं दिया तेरे कल्याण का समय आगया है इस लिये तू सिद्धि को प्राप्तहो ॥ ५९ ॥ फिर उत्तंक ने गुरू के पास जा नमस्कार किया गुरु ने उत्तंक से कहा हे पुत्र देर करने का क्या कारण है ॥ ६० ॥ उस ने गुरु से कहा हे गुरु नागों के राजा तक्षक ने मेरे कार्य में विघ्न किया इस कारण मुझ को नाग लोक में जाना पड़ा॥ ६१ ॥ वहां दो स्त्रियें तंत्र में काले और श्वेत डोरोंसे कपडा बुनती देखीं

---

tress presented her the ear-rings. "Utank," said she, "thou hast arrived in time. Welcome, my child! thou art innocent and has escaped my curse! Thou shalt have good luck and thy desires shall be fulfilled." Utank then went to his preceptor who said, "Thou art welcomed. What was the reason of thy long absence? 60. Utank then told his preceptor how he was way laid by *Takshak*, the king o Nagas and his journey to the regions of nagas where he saw two women weaving a cloth with black and white threads over a loom and asked his preceptor who they were. He saw there a wheel, too, with twelve spokes, turned continually by 6 boys. In the way he saw a bull with a rider who had lovingly told him to eat the dung of the bull saying that his (Utank) preceptor also had done it

To the inner meaning given therein

पुरुश्चापिमयादृष्टः सचापिकः । अश्वश्चातिप्रमाणोदृष्टः सचापिकः ॥ ६३ ॥ पथि-
गच्छताचमयाऋषभोदृष्टस्तंचपुरुषोऽधिरूढस्तेनास्मिसोपचारमुक्त उत्तंकास्यऋषभस्य
पुरीषंभक्षयउपाध्यायेनापि तेभक्षितमिति ॥ ६४ ॥ ततस्तस्यवचनान्मयातदृषभस्य-
पुरीष मुपयुक्तंसचापिकः ॥ तदेतद्भवतोदिष्टमिच्छेयं श्रोतुंकिंनदिति ॥ सतेनैवमुक्त
मुपाध्यायः प्रत्युवाच ॥ ६५ ॥ येतेस्त्रियौधाताविधाताचयेचकृष्णाः सितास्तंतवस्ते-
रात्र्यहनी ॥ यदपितच्चक्रंद्वादशरषट्वैकुमाराः परिवर्तयंतितेपिऽषट्ऋतवःसंवत्स-
रश्चक्रम् ॥ ६६ ॥ यःपुरुषः सपर्जन्यःयोश्वःसोग्निः यऋषभस्त्वयापथिगच्छतादृष्टः
सऐरावतोनागराट् ॥ ६७ ॥ यश्चैनमधिरूढःपुरुषः सचेन्द्रः यदपितेभक्षितंतस्य ऋष
भस्य पुरीषंतदमृतंतेनखल्वासितास्मिन्नागभवनेनव्यापन्नस्त्वम् ॥ ६८ ॥ सहिभग-
वानिन्द्रोममसखात्वदनुक्रोशादिममनुग्रहंकृतवान् ॥ तस्मात्कुण्डलेगृहीत्वापुनराग-

---

यह कौन थीं ॥ ६२ ॥ और १२ अरे वाला चक्र जिसको ६ कुमार चलाते थे वह
क्या था और एक पुरुष वहां और देखा और जो बडा घोडा देखा वह क्या था ।
॥ ६३ ॥ मार्ग में जाते हुए एक बैल पर एक पुरुष को देखा उस पुरुष ने नम्रता
पूर्वक मुझ से कहा हे उत्तंक इसके गोबर को तू खा तेरेगुरुने भी खाया था ॥ ६४ ॥
इस के उपरान्त उस पुरुष के कहने पर मैंने गोबर को खाया वह कौन था यह सब
आप से जानने की इच्छा करता हूं कि वे कौन थे वह इस प्रकार कहने लगा
स्त्रियें जो थीं वह धाता और विधाता थीं काले और श्वेतडोरे दिन और रात थे
बारह अरे वाला चक्र सम्वत्सर है छः कुमार छःऋतुऐं हैं ॥ ६६ ॥ और पुरुष पर्जन्य
था घोडा अग्नि था बैल जो मार्ग में देखा वह नागों का राजा ऐरावत था ॥ ६७ ॥
और सवार उसपर इन्द्र था और बैल का गोबर अमृत था उसी से तू नाग लोक में
जाकर न मरा॥६८॥ वह इन्द्र मेरा मित्र है इसीसे तुझ पर अनुग्रह कर तुझपर दयाकी

---

before and his eating of the dung by his order. All these things he said he had seen, and asked his preceptor to tell him all about them. His preceptor replied that the women whom he saw there were Dhata and Bidhata; the black and white threads denoted night and day; the wheel having 12 spokes, moved by 6 boys, was an emblem of the year and 6 seasons. The man was Parjanya, the god of rain and the horse was Agni. The bull that he saw in the way was Airavat, the king of Nagas, the rider was Indra and the dung he ate was Amrit which had saved him from region of Nagas, that he had allowed him to eat of it out of friendship to the preceptor. 76. The preceptor then gave him leave to depart with bless-

तोऽसि ॥ ६९ ॥ तत्सौम्यगम्यतामनुजाने भवंतंश्रेयोऽवाप्स्यसीति ॥ सउपाध्यायेनानुज्ञातोभगवानुत्तंकः क्रुद्धस्तक्षकं प्रतिचिकीर्षमाणो हास्तिनपुरंप्रतस्थे ॥ १७० ॥ सहास्तिनपुरं प्राप्यनचिराद्विप्रसत्तमः ॥ समागच्छत राजानमुत्तंकोजनमेजयम् ॥ १७१ ॥ पुरातक्षशिलासंस्थं निवृत्तमपराजितम् ॥ सम्यग्विजयिनंदृष्ट्वासंमतान्मंत्रिभिर्वृतम् ॥ १७२ ॥ तस्मैजयाशिषःपूर्वं यथान्यायंप्रयुज्यसः। उवाचैनंवचःकाले शब्दसम्पन्नयागिरा ॥ १७३ ॥ उत्तंक उवाच । अन्यस्मिन्करणीयेतु कार्येपार्थिवसत्तम। वाल्यादिवान्यदेवत्वं कुरुषेनृपसत्तम ।१७४। सौतिरुवाच एवमुक्तस्तुविप्रेण सराजाजनमेजयः । अर्चयित्वायथान्यायं प्रत्युवाचद्विजोत्तमम्। ॥ १७५ ॥ जनमेजय उवाच । आसांप्रजानांपरिपालनेन स्वंक्षत्रधर्मंपरिपालयामि। प्रब्रूहिमेकिंकरणीयमद्य येनासिकार्येणसमागतस्त्वम् ॥ १७६ ॥ सौतिरुवाच । सएव

इसी कारण तू कुण्डलों को लेकर यहां आगया ॥ ६९ ॥ हे सौम्य तुझको जाने की आज्ञा देता हूं जा तेरा कल्याण होगा, गुरु से आज्ञा पा और तक्षक पर क्रोधकर तक्षक से बदला लेनेकी इच्छा कर हस्तिनापुर गया ॥ ७० ॥ और राजा जन्मेजय से मिला ॥ ७१ ॥ और उस तक्षशिला को जीता हुआ अन्य कार्यों से निवृत्त अपराजित चारोंओर मन्त्रियों से घिरा हुआ देखा और जय आशीर्वाद दे अर्थयुक्त बाणी में राजा से कहने लगा, हे राजाओं मैं श्रेष्ठ करने योग्यको कार्य छोड कर मूर्खता से अन्य कार्य को करता है ॥ ७४ ॥ उग्रश्रवा शौनकादिक ऋषियों से बोले इस प्रकार जन्मेजय उस ब्राह्मण को यथायोग्य सत्कार कर बोला, इन प्रजाओं के भली प्रकार पालन करने से अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करता हूं आप कहें मेरा इस समय क्या कर्त्तव्य है जिस के लिये आप यहां आये हैं, इस प्रकार राजा से कहा हुआ श्रेष्ठ और

---

ings. Utank, having got leave of his preceptor resolved to revenge himself on Takshak and went to Hastinapur and saw king Janmejaya who had then returned victorious from Takshahila. He saw the king in the midst of his ministers and pronounced benedictions on him. He then addressed the king thus:—"O best of monarchs! You spend your time child-like instead of attending to the most important business." The king paid his respect to Utank and replied, "I do discharge the duties, enjoined for my race, by administering justice to my subjects. What is thy mission and what other duty have I to perform?" Utank said, "The business relates to yourself and therefore must be done promptly. Thy father was bitten by Takshak and thou must revenge his death

मुक्तस्तुनृपोत्तमेन द्विजोत्तमःपुण्यकृतांवरिष्ठः । उवाचराजानमदीनसत्वंस्वमेकार्यंनृपते कुरुष्व ॥ १७७ ॥ उत्तंकउवाच । तक्षकेणमहींद्रेंद्र येनतेहिंसितःपिता । तस्मैप्रतिकुरुष्वत्वं पन्नगायदुरात्मने ॥ १७८ ॥ कार्यकालंहिमन्येऽहं विधिदृष्टस्यकर्मणः । तद्गच्छापचितिंराजन् पितुस्तस्यमहात्मनः ॥ १७९ ॥ तेनह्यनपराधीस दष्टोदुष्टांतरात्मना । पञ्चत्वमगमद्राजा वज्राहतइवद्रुमः ।१८०। बलदर्पसमुत्सिक्तस्तक्षकः पन्नगाधमः अकार्यंकृतवान्पापो योऽदशत्पितरंतव । १८१ । राजर्षिवंशगोप्तार ममरप्रतिमंनृपम् यियासुंकश्यपंचैव न्यवर्तयतपापकृत् । १८२ । होतुमर्हसितंपापं ज्वलितेहव्यवाहने। सर्पसत्रेमहाराज त्वरितंतद्विधीयताम् ।१८३। एवंपितुश्चापचितिंकृतवांस्त्वं भविष्यसि ममप्रियंचसुमहत्कृतं राजन्भविष्यति ।१८४। कर्मणःपृथिवीपाल ममयेनदुरात्मना । विघ्नःकृतोमहाराज गुर्वर्थंचरतोऽनघ । १८५ । सौतिरुवाच । एतच्छ्रुत्वातुनृपतिरत

पुण्यात्मा उत्तंक बड़े प्रतापी राजा से बोला उत्तंक ने कहा हे राजन् ! तू अपना कार्य कर ॥ ७७ ॥ हे पृथ्वीनाथ तक्षक ने तेरेबापको नाश किया, तू उस दुरात्मा तक्षक से बदला ले ॥ ७८ ॥ इस कार्य के करने का यही काल है हे राजन् ! अपने महात्मा पिता का बदला ले ॥ ७९ ॥ उस दुष्ट तक्षक ने तेरेपिता को डसा और वह वज्रके टूटे हुए वृक्षकी समान मृत्यु को प्राप्तहुआ ॥ ८० ॥ बल के घमण्ड से बढे हुए सर्पों में नीच तक्षक ने न करने योग्य कार्य किया जो तेरेपिता को डसा ।८१। राजर्षिवंशकी रक्षा करने वाले देवताओं की समान तेरेपिता के समीप आते हुए कश्यप ब्राह्मण को उस पापी ने लौटा दिया, हे महाराज सर्प यज्ञ में उस पापी को जलतीहुई अग्नि में होम करो इस से शीघ्र उस यज्ञ का प्रारम्भ किया जाय ॥ ८३ ॥ इस प्रकार तू अपने बापका बदला ले मुझेभी इस में सुखहोगा ॥ ८४ ॥ हे पृथ्वीपाल उस दुरात्मा ने गुरु के लिये कार्य करते हुए विघ्न किया उग्रश्रवा बोले राजा ने उस

on Takshak. This is the proper time to do it. Thy father, bitten by Takshak, fell on the ground like a tree struck down by lightning. The wicked Takshak, vilest of his race, proud of power, bit thy saintly father without any fault. 18. Takshak was mean enough to cause Kashyap the chief of physicians to return home without curing the king. You should therefore throw him into the fire. Make preparations for the sacrifice. Thus thou wilt be avenged for the death of thy father, and will oblige me at the same time. For that malignant wretch much annoyed me by throwing obstacle in my way when I was doing my preceptor's work." The king having heard these words was enraged with Takshak. The words of Utank inflamed the fire of prince's wrath like butter. 86. In the presence of Utank the king asked his ministers the particulars of

क्षकायचुकोपह । उत्तंकवाक्यहविषा दीप्तोऽग्निर्हविषायथा ॥१८६॥ अपृच्छत्ससतदा राजा मंत्रिणस्तान्सुदुःखितः । उत्तंकस्यैवसान्निध्यं पितुःस्वर्गगतिंप्रति ।१८७। तदैव हिसराजेंद्रो दुःखशोकाप्लुपोऽभवत् । यदैव वृत्तंपितरमुत्तंकादशृणोत्तदा॥१८८॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौष्यपर्वणि पौष्याख्याने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

समाप्तंच पौष्यपर्व ॥

अथपौलोमपर्व ॥ लोमहर्षपुत्रउग्रश्रवाः सौतिः पौराणिको नैमिषारण्येशौनकस्यकुलपतेर्द्वादशवार्षिकेसत्रेऋषीनभ्यागतानुपतस्थे ।१। पौराणिकःपुराणेकृतश्रमः सकृतांजलिस्तानुवाच । किंभवंतःश्रोतुमिच्छंतिकिमहंब्रवाणीति ॥ २॥ तमृषयऊचुः परमंलोमहर्षणेवक्ष्यामस्त्वांनः प्रतिवक्ष्यासिवचः शुश्रूषतांकथायोगंनः कथायोगे ।३। तत्रभगवान्कुलपतिस्तुशौनकोऽग्निशरणमध्यास्ते ।।४।। योऽसौदिव्याः कथावेददेवता

के वाक्य को सुन घी डाले अग्निकी समान तक्षक पर क्रोध किया ॥ ८६ ॥ दुःखित हुआ राजाजनमेजय उत्तंक के समीप पिताके मरने का हाल मंत्रियों से पूछनेलगा।८७। उत्तंकसे उसी समय हाल सुन जनमेजय बहुत दुःखित हुआ ॥ ८८ ॥

पौष्यपर्व समाप्तः ॥

पौलोमपर्व.

पुराणका जाननेवाला लोमहर्षण सूतका पुत्र उग्रश्रवा नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक कुलपति के बारहवर्षके यज्ञ में आयेहुए ऋषियोंसे १ हाथजोडकरबोला,हेऋषियो आप क्यासुनना चाहते हैं और क्या मैं आप से कहूं उस से ऋषि बोले हेपुत्र हम तुमसे उत्तमबचन कहेंगे तू हमको कथा सुना पूजनीय कुलपति शौनक इससमय अग्नि स्थानमें बैठे हैं ॥ ४ ॥

his father's death and was much grieved when he heard what his father has borne at the hands of Takshak.

CHAPTER IV.
PAULUM PARV.

Ugrashrava, the son of *Lomharshan Sut*, scholar of the Parans stood before the *Rishis* at the forest of Naimish in the 12 year's sacrifice. *Shaunak*, Surnamed Kulpati, the scholar of the Purans addressed them thus with joined palms:—" I have described to you the history of Utank who instigated Janmejaya to perform the snake sacrifice. What do you wish to hear now ?" The sages replied, "We shall presently ask you to tell some pleasant stories. Shaunak, our reverend master, is engaged in performing his daily

सुरसश्रिताः । मनुष्योरगगंधर्वकथावेदचसर्वशः ॥ ५॥ सचाप्यस्मिन्मखेसौतेविद्वान् कुलपतिर्द्विजः । दक्षोधृतव्रतोधीमान् शास्त्रेचारण्यकेगुरुः ॥६॥ सत्यवादीशमपरस्तपस्वीनियतव्रतः । सर्वेषामेवनोमान्यः सतावत्प्रतिपाल्यताम् ।७। तस्मिन्नध्यासतिगुरावासनंपरमार्चितम् । ततोवक्ष्यसियत्त्वांसम्प्रक्ष्यतिद्विजसत्तमः ॥ ८ ॥ सौतिरुवाच एवमस्तुगुरौतस्मिन्नुपविष्टेमहात्मनि । तेनपृष्ठःकथाःपुण्या वक्ष्यामिविविधाश्रयाः ।९। सोऽथविप्रर्षभःसर्वंकृत्वाकार्यंयथाविधि । देवान्वाग्भिःपितृनद्भिस्तर्पयित्वाऽऽजगामह ।१०। यत्रब्रह्मर्षयः सिद्धाःसुखासीनाधृतव्रताः । यज्ञायतनमाश्रित्यसूतपुत्रपुरः सराः ॥ ११ ॥ ऋत्विक्ष्वथसदस्येषुसवैगृहपतिस्तदा । उपविष्टेषूपविष्टः शौनकोऽथाब्रवीदिदम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौलोमपर्वणिकथाप्रवेशोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

यह देवता और असुरोंकी कथाओंको जानते मनुष्य सर्प गन्धर्वोंकी सब कथाओं को भी जानते हैं यह कुलपति, विद्वान, वृत्तों के धारण करने वाले बुद्धिमान कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड में गुरू हैं वह इस यज्ञ में । ६ । सत्यवादी, जितेन्द्रिय, तपस्वी, नियमपूर्वक वृत्तोंके करनेवाले हम सबों के मान्यहैं उनको भी आने दो ॥ ७ ॥ उन के उत्तम आसन में बैठनेपर जो वह तुम से प्रश्न करें उसको आप कहें ॥ ८ ॥ उग्रश्रवाने कहा ऐसाही किया जाय वह महात्मा गुरु आसनपर बैठकर जिन कथाओंको सुनना चाहेंगे उन अनेक प्रकारकी पवित्र कथाओं को मैं कहूंगा, तिस उपरान्त वह श्रेष्ठ सम्पूर्ण कार्योंको विधि पूर्वक करके देवताओं को वाणी से पित्रों को जल से तृप्तकर जहां वृत्तों के धारण करनेवाले सिद्ध ब्रह्मऋषि लोग यज्ञस्थान का आश्रय कर उग्रश्रवा के साथ सुख से बैठे थे वहां आये ॥ ११ ॥ इस के उपरांत ग्रहपति शौनक ऋत्युक और सदस्यों के बैठनेपर यह वचन बोले ॥ १२ ॥

worship. 4. He is acquainted with the stories of gods and Asurs and knows as well the histories of men, serpents and Gandharvas moreover he is our chief in this sacrifice. He is able, true and wise. He is a scholar of the Shastras and the Aranyaks, a lover of truth and peace and an observer of rigid vows and penances. He is respected by us all. It is therefore proper to wait his arrival here. When he comes here you may amuse us by your recital." 8. Sauti said, "Let it be as you say. When the noble master will be here I shall entertain you with my narrations in answer to his questions." After a while that learned Brahman having worshiped the gods with prayers and the *Pitris* with water came to the place of sacrifice where *Sauti* and the rest were sitting peacefully. When he was seated amidst the Ritwiks and *Sadasyas* (officials at the sacrifice) he began as follows:—

शौनक उवाच । पुराणमखिलंतातपितातेऽधीतवान्पुरा । कच्चित्त्वमपितत्सर्व मधीषेलौमहर्षणे ॥ १ ॥ पुराणेहिकथादिव्याआदि वंशाश्चधीमताम् । कथ्यंतेयेपुराऽस्माभिःश्रुतपूर्वाःपितुस्तव ॥ २ ॥ तत्रवंशमहंपूर्वंश्रोतुमिच्छामिभार्गवम् । कथयस्व कथामेतांकल्याःस्मश्रवणेतव ।३। सौतिरुवाच । यदधीतंपुरासम्यक्द्विजश्रेष्ठैर्महात्मभिः वैशंपायनविप्राग्र्यैस्तैश्चापिकथितंयथा ॥ ४ ॥ यदधीतंचपित्रामेसम्यक्चैवततोमया। तावच्छृणुष्वयोदेवैः सेंद्रैःसर्षिमरुद्गणैः ॥ ५ ॥ पूजितःप्रवरोवंशो भार्गवोभृगुनन्दन। इमंवंशमहंपूर्वंभार्गवंतेमहामुने ॥६॥ निगदामियथायुक्तं पुराणाश्रयसंयुतम् । भृगुर्महर्षिर्भगवान्ब्रह्मणावैस्वयंभुवा ॥७॥ वरुणस्यक्रतौजातः पावकादितिनःश्रुतम् । भृगोः सुदयित पुत्रश्च्यवनोनामभार्गवः ॥ ८ ॥ च्यवनस्यचदायादः प्रमतिर्नामधार्मिकः । प्रमतेरप्यभूत्पुत्रोघृताच्यांरुरुरित्युत ॥ ९ ॥ रुरोरपिसुतोजज्ञे शुनकोवेदपारगः । प्रम

शौनकजी बोले हे पुत्र तेरेपिता ने पहिले सम्पूर्ण पुराणों को पढाथा क्या तूभी उस सब विद्या को जानता है । १ । पुराण में बुद्धिमानों के दिव्य आदि बंश कहे गये हैं जो कथा तेरेपिता से हम ने सुनीथीं उन को अब हम कहा करते हैं ।।२।। उनमें सब से पहिले भृगुवंश के सुननेकी इच्छा करताहूं तू इसको कह हम सुनते हैं । ३ । उग्रश्रवा ने कहा, मैंने जो पहिले महात्मा श्रेष्ठ वैशम्पायनादिकों से पढा है और जो कुछ उन्होंने कहा है । ४ । जो मेरेपिताने पढाथा उस से जो कुछ मैंने पढाहै हे भृगुनन्दन इन्द्रसहित सम्पूर्ण देवता ऋषि, मरुतों से जो श्रेष्ठ भृगुवंश स्तुति किया गया है उस पुराणकी कथाओं से युक्त भृगुवंशको कहता हूं आप सुनिये । महर्षि भगवान् भृगुस्वयंभू ब्रह्मा के यज्ञ में अग्नि से उत्पन्नहुआ मैंने सुना है उसका पुत्र च्यवन नाम भार्गव हुआ । ८ । च्यवन का पुत्र प्रमति हुआ घृताचि से रुरु नाम पुत्र हुआ । ९ । उस

CHAPTER V.

(*PAULUM PARB CONTINUED*)

Shaunak said, "Thy father knew all Purans and the Mahabharat of Vyas. Hast thou also made them thy study ? In the Purans are found old histories and amusing stories of the men of old and thy father knew them all. I wish to hear the history of Bhrigu race. Let us hear it." 3. Sauti replied, "I have studied all that the noble minded Brahmans, Vaishampayan and my father among them, knew. I shall relate to you, Bhargav, the history of the race of Bhrigu, respected by gods, rishis and Maruts!" The great rishis Bhrigu was begot by Brahma from Varun's Sacrificial fire. Bhrigu had a son, named Chyavan whose son was the virtuous Pramati. The latter had a son named Ruru from Gritachi, an Apsara. Ruru's wife,

द्रुरायां धर्मात्मानवपूर्वेपितामहः ॥ १० ॥ तपस्वीयशस्वीचश्रुतवान् ब्रह्मवित्तमः ।
धार्मिकःसत्यवादीचानियतोनियताशनः ॥ ११ ॥ शौनक उवाच । सूतपुत्रयथातस्य
भार्गवस्यमहात्मनः ॥ च्यवनत्वंपरिख्यातं तन्ममाचक्ष्वपृच्छतः ॥ १२ ॥ सौति-
रुवाच । भृगोःसुदयिताभार्यापुलोमेत्याभि विश्रुता । तस्यांसमभवद्गर्भोभृगुवीर्यसमु-
द्भवः ॥ १३ ॥ तस्मिन्गर्भेऽथसंभूतेपुलोमायांभृगूद्वह ॥ समयेसमशीलिन्यांधर्मप-
त्न्यांयशस्विनः ॥ १४ ॥ अभिषेकायनिष्क्रांतेभृगौधर्मभृतांवरे ॥ आश्रमंतस्यरक्षोऽ
थपुलोमाभ्याजगामह । १५ । तंप्रविश्याश्रमंदृष्ट्वाभृगोर्भार्यामनिंदिताम् ॥ हृच्छयेन
समाविष्टोविचेताःसमपद्यत ॥ १६ ॥ अभ्यागतंतुतद्रक्षः पुलोमाचारुदर्शना ॥ न्य-
मंत्रयत वन्येनफलमूलादिनातदा ॥ १७ ॥ तांतुरक्षस्तदाब्रह्मन्हृच्छयेनाभिपीडितम् ।
दृष्ट्वाहृष्टमभूद्राजनजिहीर्षुस्तामनिंदिताम् ॥ १८ ॥ जातमित्यब्रवीत्कार्यंजिहीर्षुर्मुदितः

का प्रमद्वरा से वेदका जाननेवाला धर्मात्मा शुनक नाम पुत्र हुआ जो तेरा दादाथा १० वह बड़ा तपस्वी यशवाला, शास्त्रज्ञ, ब्रह्मविद्याका जाननेवाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, जितेन्द्रिय लघु भोजन करनेवाला था । ११ । शौनक ने कहा हे सूत पुत्र, भृगु के पुत्र महात्मा च्यवन का जिसप्रकार नाम पड़ा उस कथा को मुझे सुनाओ, उग्रश्रवा ने कहा भृगुकी भार्या पुलोमा नाम से प्रसिद्ध थी, भृगुके वीर्य से उसको गर्भ हुआ ॥ १३ ॥ उस के धारणहोने पर वह धर्मपत्नी यशवाले भृगुकी समान थी ॥ १४ ॥ किसी समय स्नान के लिये धर्मात्मा भृगु के आश्रम से जाने पर उस के आश्रम में पुलोमा नाम राक्षस आया ॥ १५ ॥ उस स्थान में जाकर उसकी भार्या पुलोमा को देखकर काम से अत्यन्त पीडितहो वह राक्षस अचेतहोगया ॥ १६ ॥ सुन्दर स्वरूपवती पुलोमा उसे देख कर बन के फलों से सत्कार करने लगी । १७ । काम से अत्यन्त पीडित वह राक्षस उसे देखकर प्रसन्नहो उस पतिव्रता को हरनेकी इच्छा करनेलगा । १८ । उस उत्तम

Pramadvara gave birth to Sunak who was thy great grand father. 10. He was a famous ascetic, learned in the law, and eminent among those having a knowledge of the Vedas. He was virtuous, truthful and of well regulated fare." Shaunak enquired of Lomharshan why the son of *Bhrigu* was called Chyavan. Sauti replied that Bhragu had a wife whom he dearly loved. *S*he became quick with child by him. 14. One day he went out to bathe and a demon, called Pulom, entered his abode and seeing the beautiful lady was enamoured of her and lost his reason. The beautiful Puloma entertained him as a guest with roots and fruits but he resolved to take her away. 18. He found a fit opportunity to accomplish his evil desire. She was betrothed by her father to the demon but married to Bhrigu. The

शुभाम् ॥ साहिपूर्वंवृतातेन पुलोम्नातुशुचिस्मिता ॥ १९ ॥ तांतुमादात्पितापश्चाद्-
भृगवेशास्त्रवत्तदा । तस्यतत्किल्बिषंनित्यंहृदिवर्त्ततिभार्गव ॥२०॥ इदमंतरमित्येवंह-
र्तुंचक्रेमनस्तदा ॥ अथाग्निशरणेऽपश्यज्ज्वलंतंजातवेदसम् ॥ २१ ॥ तमपृच्छत्ततो-
रक्षःपावकंज्वलितंतदा ॥ शंसमेकस्यभार्येयमग्नेपृच्छेऋतेनवै ॥ २२ ॥ मुखंत्वमसि-
देवानांवदपावकपृच्छते ॥ मयाहीयंवृतापूर्वंभार्यार्थेवरवर्णिनी ॥ २३ ॥ पश्चादिमां
पितामादाद्भृगवेऽनृतकारकः । सेयंयदिवरारोहाभृगोर्भार्यारहोगता ॥ २४ ॥ तथास
त्यंसमाख्याहिजिहीर्षाम्याश्रमादिमाम् । समन्युस्तत्रहृदयंप्रदहन्निवतिष्ठति । मत्पूर्व-
भार्यांयदिमांभृगुरापसुमध्यमाम् । २४ । सौतिरुवाच । एवंरक्षस्तमामंत्र्यज्वलितंजा-
तवेदसम् । शङ्कमानंभृगोर्भार्यांपुनःपुनरपृच्छत ॥ २६ ॥ त्वमग्नेसर्वभूताना मंतश्चर-

स्त्रीकी इच्छा करनेवाला राक्षस प्रसन्नता से अपनी कार्य सिद्धि समझने लगा और वह पहिले इस राक्षस से बरी गई थी ॥ १९ ॥ पश्चात् उस के पिता ने शास्त्रानुसार भृगु के साथ व्याहदी, वह दुःख उस राक्षस के हृदय में वर्तमान था ॥ २० ॥ यह समय इस के हरने का समझ कर उस ने उस के हरनेकी इच्छाकी, फिर उस ने अग्निशाला में अग्नि को जलते देखा । २१ । तब वह राक्षस अग्नि से पूछने लगा कि यह भार्या किसकी है । २२ । हे अग्ने तू देवताओं का मुख है इस लिये तू मुझ से सत्य कह२३ पीछे इस के पिताने इसे भृगुको व्याहदिया सो यह उत्तम नितम्बवाली एकान्त में प्राप्त हुई भृगु की भार्या है या मेरी है । २४ । सत्य कह इसको अब मैं हरता हूं, क्रोध से भरा मेरा हृदय जलते हुए अग्निकी समान है मेरी प्रथम भार्या है पश्चात् इसको भृगु ने ग्रहण किया ॥ २६ ॥ उग्रश्रवा बोले, वह राक्षस इस प्रकार जलती हुई अग्नि से कह कर भृगु की है या मेरी है वह शंका करता हुआ वारम्वार अग्नि से पूछने लगा

demon was therefore much enraged at her father's act. 20. He saw the sacrificial fire burning brightly in the adjoining apartment and asked the god of fire whose wife the woman was by right and insisted to hear the truth from the mouth of Agni saying, "This beautiful woman was first betrothed to me, but then her father gave her to the false Bhrigu. Tell me if this woman can he *Bhrigu's* wife, for having found her alone I wish to take her away from this place. I am much enraged at finding that Bhrigu has made my betrothed his wife." Agni, thus being asked repeatedly by the demon as to whether the woman was Bhrigu's wife, was in a dilemma. 10. He continued, "Thou art a witness of truth and falsehood within every heart and so can answer my question truly. Has not Bhrigu taken for his wife my affianced. ? Thou mayst tell me that she is my wife by first choice. I shall take her

सिनित्यदा । साक्षिवत्पुण्यपापेषु सत्यंब्रूहिकवेवचः ॥ २७ ॥ मत्पूर्वाऽपहृताभार्या भृगुणाऽनृतकारिणा । सेयंयदितथागेत्वं सत्यमाख्यातुमर्हसि ॥ २८ ॥ श्रुत्वात्वत्तो भृगोर्भार्यां हरिष्याम्याश्रमादिमाम् । जातवेदः पश्यतस्तेवदसत्यांगिरंमम ॥ २९ ॥ सौतिरुवाच । तस्यैतद्वचनंश्रुत्वा सप्तार्चिर्दुःखितोऽभवत् । भीतोऽनृताच्चशापाच्च भृगोरित्यब्रवीच्छनैः ॥ ३० ॥ अग्निरुवाच । त्वयावृतापुलोमेयं पूर्वंदानवनन्दन । किंत्वियंविधिनापूर्वं मंत्रवन्नवृतात्वया ॥ ३१ ॥ पित्रातुभृगवेदत्तापुलोमेयंयशस्विनी ददातिनपितातुभ्यं वरंलोभान्महायशाः ॥ ३२ ॥ अथेमां वेददृष्टेनकर्मणाविधिपूर्वकम् । भार्य्यामृषिर्भृगुः प्रापमांपुरस्कृत्यदानव ॥ ३३ ॥ सेयमित्यवगच्छामिनानृतं वक्तुमुत्सहे । नानृतंहिसदालोके पूज्यतेदानवोत्तम ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौलोमपर्वणिपुलोमाग्नि सम्वादे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

॥ २७ ॥ हे अग्नि तू सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में सदा पुण्य और पाप का साक्षी है इससे सत्य वचन कह मिथ्या कारी भृगुने मेरी स्त्री को ग्रहण किया, सो यह यदि मेरी भार्या है तू सत्य कह ॥ २८ ॥ तुझ से सुन कर इस स्त्री को मैं इस आश्रम से हरले जाऊंगा ॥ २९ ॥ उग्रश्रवा ने कहा, उसके इस वचन को सुन झूंठसे और भृगु के शाप से अग्नि दुःखित हुआ और सहज से बोला ॥ ३० ॥ हे राक्षस तूने यह पुलोमा वरीथी परन्तु विधि पूर्वक शास्त्रासार तूने इस को ग्रहण नहीं किया ॥ ३१ ॥ अच्छे वर भृगु के लोभ से पिता ने पुलोमा भृगु को दी तुझ को न दी ॥ ३२ ॥ फिर इस को वेद विधि से भृगु ने ब्याहा मैं साक्षी था ॥ ३३ ॥ इस प्रकार यही मैं जानताहूं और झूंठ कहने को मैं समर्थ नहीं हूं और झूंठ लोक में कभी नहीं पूजा जाता ॥ ३४॥

पौष्यपर्व समाप्तः ।

---

away from this place when thou answerest me in the affirmative. Therefore answer me truly." The seven flamed god having heard this was much perplexed. He was afraid of telling a lie as well as of Bhrigu's curse. At last he answered hesitatingly, "This Puloma was, indeed, chosen by thee but she was never married to thee and her father gave her to Bhrigu because he thought the latter a worthy spouse. She was made Bhrigu's wife with Vedic rites in my presence. 33. I will not tell a lie, for a liar is never respected in the world."

सौतिरुवाच । अग्नेरथवचःश्रुत्वा तद्रक्षःप्रजहारताम् । ब्रह्मन वराहरूपेण मनोमारुतरंहसा । ततःसगर्भोनिवसन् कुक्षौभृगुकुलोद्वह । रोषान्मातुश्च्युतःकुक्षेश्च्यवनस्तेनसोऽभवत् ॥ २ ॥ तंदृष्ट्वामातुरुदराच्च्युतमादित्यवर्चसम् । तद्रक्षोभस्मसाद्भूतंपपातपरिमुच्यताम् ॥ ३ ॥ सातमादायसुश्रोणी ससारभृगुनन्दनम् । च्यवनंभार्गवंपुत्रं पुलोमादुःखमूर्च्छिता ॥४॥ तांददर्शस्वयंब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । रुदतींबाष्पपूर्णाक्षीं भृगोर्भार्यामनिन्दिताम ॥ ५ ॥ सांत्वयामासभगवान्वधूंब्रह्मापितामहः । अश्रुबिंदूद्भवातस्याः प्रावर्ततमहानदी ॥ ६ ॥ आवर्तंतीसृतिंतस्या भृगोःपत्न्यास्तपस्विनः । तस्यामार्गंसृतवतीं दृष्ट्वातुसरितंतदा ॥ ७ ॥ नामतस्यास्तदानद्याश्चक्रेलोकपितामहः । वधूसरेतिभगवांश्च्यवनस्याश्रमंप्रति ॥ ८ ॥ सएवंच्यवनोजज्ञे भृगोःपुत्रःप्रतापवान् । तंददर्शपितातत्र च्यवनंतांचभाविनीम् । सपुलोमांततोभार्यां पप्रच्छकुपितोभृगुः ॥ ९ ॥ भृगुरुवाच । केनासिरक्षसेतस्मै कथितात्वंजिहीर्षते । नहि-

उग्रश्रवा ने कहा, हे ब्रह्मन् ! अग्निके वचन को सुन वह राक्षस मन और वायु के समान वेगवाले बराह रूपसे उस स्त्रीको हरलेगया ॥ १ ॥ फिर हे शौनक वह भृगुका गर्भ जो उस स्त्रीको था माताकी कोख से गिर गया जिस से उस का नाम च्यवन हुआ माता के उदर से गिरे हुए सूर्यकी समान तेजस्वी उस गर्भको देख कर वह राक्षस उसे छोड़ पृथ्वी में गिर कर भस्म होगया । ३ । वह उत्तम स्त्री भृगु के पुत्र च्यवन को ले दुःख से व्याकुला आगेको चली, । ४ । पितामह ब्रह्माने रोती हुई स्त्रीको देखा ॥ ५ ॥ अपने पुत्र भृगुकी स्त्रीको समझाया और उस के आसुओं से एक बड़ी नदी ॥ ६ ॥ तपस्वी भृगुकी स्त्री के मार्ग में बहने लगी उस नदी को देखकर ।७। ब्रह्मा उसका वधूसरा नाम रक्खा जो च्यवनके आश्रम के समीप बहती है।८।इसप्रकार प्रतापी च्यवन भृगुका पुत्रहुआ और भृगुने अपने पुत्र और स्त्रीको देख क्रोधातुर हो उससे पूछा

CHAPTER VI.

(PAULOM PARB CONTINUED)

The demon, having heard Agni's words, assumed the shape of a boar and carried her away with the swiftness of wind or thought. Then the child of Bhrigu, in the womb of the woman, enraged at the violence, dropped down in the way and thus was called Chyavan. The demon saw the child, glorious like the Sun and leaving the woman alone was instantly burnt to ashes. The beautiful woman in her grief, lifted the child and returned homeward. 4. Brahma, the grandfather of all, saw the innocent wife of his son in this state and gave her comfort. The drops of tears falling from her eyes flowed in a stream at the foot of Bhrjgu's wife and the grandfather, Brahma, seeing the stream follow the footsteps of his son's wife called it *Ba-*

त्वांवेदतद्रक्षो भार्य्यांचारुहासिनीम् ॥१०॥ तत्त्वमाख्याहितंह्यद्य शप्तुमिच्छाम्यहं रुषा । बिभेतिकोनशापान्मेकस्यचायंव्यतिक्रमः ॥ ११ ॥ पुलोमोवाच । अग्निनाभगवंस्तस्मै रक्षसेऽहंनिवेदिता । ततोमामनयद्रक्षः क्रोशंतींकुररीमिव । १२ । साऽहं तवसुतस्यास्य तेजसापरिमोक्षिता । भस्मीभूतंचतद्रक्षो मामुत्सृज्यपपातवै ॥ १३ ॥ सौतिरुवाच ॥ इतिश्रुत्वापुलोमाया भृगुःपरममन्युमान् । शशापाग्निमतिक्रुद्धः सर्वभक्षोभविष्यसि ॥ १४ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्व्वणि पौलोमपर्व्वणि
अग्निशापेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

। ९ । कि किसने हरनेवाले राक्षस से कहा कि तू मेरी भार्या है वह राक्षस नहीं जानताथा कि यह भृगुकी स्त्री है ॥ १० ॥ तू ठीक ठीक कह मैं क्रोध से शाप देना चाहता हूं किस ने मेरे शाप से न डरकर मेरा भारी अपमान किया ॥ ११ ॥ पुलोमा बोली, अग्नि ने उस राक्षस से मेरा हाल कहा तिस के उपरांत कुररी पक्षी के समान रुदनकरती हुई मुझ को उस ने हरा सो मैं तेरेपुत्रके तेजसे उस से छुटी और राक्षस भी भस्महोकर गिरपड़ा उग्रश्रवाबोले, बड़े क्रोधातुर भृगुने स्त्रीके वचन सुन अग्निको शाप दिया कि तू सर्वभक्षीहोगा ॥ १४ ॥

छठा अध्याय समाप्तः ॥

dhusara. It flows by the hermitage of Chyavan. This is the history of the birth of Bhrigu's son, Chyavan. Bhrigu saw his child and its beautiful mother and the rishi asked her in rage, "Who told the demon that you were my wife? The demon did not know this. My curse shall fall on the person who told the demon that you were my wife." Puloma replied, "Agni had informed him of it and I was borne by him crying. I was rescued from his clutches by the glory of the son, for as soon as the demon saw the child he left me and his body took fire and was burnt in an instant." *Bhrigu*, upon hearing this from Puloma, was much enraged and cursed Agni, saying, "Thou shalt eat all things." 14.



सौतिरुवाच । शप्तस्तुभृगुणावह्निः क्रुद्धोवाक्यमथाब्रवीत् । किमिदंसाहसंब्रह्मन्कृतवानसिमांप्रति ॥१॥ धर्मेप्रयतमानस्यसत्यंचवदतः समम् । पृष्टोयदब्रुवन् सत्यंव्यभिचारोऽत्रकोमम ॥ २ ॥ पृष्टोहिसाक्षीयः साक्ष्यंजानानोऽप्यन्यथावदेत् । सपूर्वानात्मनः सप्तकुलेहन्यात्तथापरान् ॥ ३ ॥ यश्चकार्यार्थं तत्त्वज्ञोजानानोऽपि न भाषते । सोऽपितेनैवपापेन लिप्यतेनात्रसंशयः ॥ ४ ॥ शक्तोऽहमपिशप्तुंत्वां मान्यास्तुब्राह्मणामम । जानतोऽपिचते ब्रह्मन्कथयिष्येनिबोधतत् ॥ ५ ॥ योगेनबहुधात्मानं कृत्वातिष्ठामिमूर्तिषु । अग्निहोत्रेषुसत्रेषु क्रियासुचमखेषुच ॥ ६ ॥ वेदोक्तेनविधानेनमयियद्धूयतेहविः । देवताःपितरश्चैवतेनतृप्ताभवंतिवै ॥ ७ ॥ आपोदेवगणाः सर्वे आपः पितृगणास्तथा । दर्शश्चपौर्णमासश्च देवानांपितृभिःसह ॥ ८ ॥

उग्रश्रवा बोले भृगुके शाप देनेपर क्रोधमें हो अग्निने कहा हे ब्राह्मण आपने क्या किया ॥ १ ॥ धर्मानुसार और पक्षपात् रहित मैंने पूछनेपर सत्यकहा मेरा क्या अपराध है ।२। जो जानताहुआ साक्षी पूछनेपर अन्यथा कहताहै वह अपने सात पहिले पुरुष और इतनेही वर्त्तमानों को भस्म करता है । ३ । जो कार्य को यथार्थ रीतिसे जानता हुआ भी नहीं कहता है वह पूर्व कहे पापोंका भागी है ॥४॥ मैंभी तुमको शाप देनेको समर्थ हूं परन्तु ब्राह्मणमेरे मान्य हैं । इस कारण शाप नहीं देता हे ब्रह्मन् आप जानते हैं तो भी मेरेकहने को सुनो । योग बलसे अपने आत्मा को अनेक प्रकार का बनाकर गार्हपत्यादि मूर्तियों में रहता हूं और अग्निहोत्र और मंत्रो में गर्भाधानादि संस्कारों में ज्योतिष्टोमादि यज्ञों में रहता हूं ॥ ६ ॥ वेदोक्त बिधि से जो मुझ में होम किया जाता है उस से देवता, पितर तृप्त होते हैं ॥ ७ ॥ सोम, आज्य पय आदिक से जो होमकिया जाता है वही देवता हैं और पित्र हैं दर्श और पौर्णमास मित्रों सहित देवता हैं ।८।

CHAPTER VII.

(*PAULUM PARB CONTINUED*)

The god of fire enraged at the curse of *Bhrigu*, thus addressed the rishi:—" What is this that thou hast done in rashness. Was it a fault on my part that I spoke the truth.? The witness who gives a false answer to the questions put to him defames his ancestors and descents to the seventh degree. He who having a full knowledge of the matter in issue, does not speak the truth, is guilty. I could curse you in return but I hold the *Brahmans* sacred. Although you know all yet I can not restrain myself from saying that I make myself manifold by the power of asceticism and am seen in various forms in daily sacrifices, holy rites and long sacrifices. The Devas and Pitris are fed by the ghee poured over my flames according to Vedic rites. The two have an equal right to the sacrifices and

देवताः पितरस्तस्मात्पितरश्चापिदेवताः । एकीभूताश्चदृश्यन्ते पृथक्त्वेनचपर्वसु ॥९॥ देवताःपितरश्चैव भुंजते मयियद्धुतम् । देवतानांपितॄणांच मुखमेतदहंस्मृतम् ॥ १० ॥ अमावास्यां हिपितरः पौर्णमास्यांहिदेवताः । मन्मुखेनैवहूयंते भुंजतेचहुतंहविः ॥११॥ सर्वभक्षः कथंत्वेषां भविष्यामिमुखंत्वहम् । सौतिरुवाच । चिंतयित्वाततोवह्निश्चक्रे संहारमात्मनः ॥ १२ ॥ द्विजानामग्निहोत्रेषु यज्ञसत्रक्रियासुच। निरोंकारवषट्काराः स्वधास्वाहा विवर्जिताः ॥ १३ ॥ विनाऽग्निनाप्रजाः सर्वास्ततआसन्सुदुःखिताः । अथर्षयः समुद्विग्नादेवान् गत्वाब्रुवन्वचः ॥ १४ ॥ अग्निनाशात्क्रियाभ्रंशाद्भ्रांतालोकास्त्रयोऽनघाः । विधध्वमत्रयत्कार्यं नस्यात्कालात्ययोयथा ॥ १५ ॥ अथर्षयश्चदेवाश्च ब्रह्माणमुपगम्यतु । अग्नेरावेदयन्शापं क्रियासंहारमेवच ॥ १६ ॥ भृगुणावैमहाभाग शप्तोऽग्निः कारणांतरे । कथंदेवमुखोभूत्वा यज्ञभागाग्रभुक्तथा ॥१७॥

इससे देवता पितर और पितर देवता है ।९। जो मुझ में होम किया जाता है उसको देवता और पितरखातेहैं इससे उन दोनोंका मैं मुखहूं, अमावस्या में पितर, पूर्णमासी में देवता मेरे मुखके द्वारा पूजेजाते हैं मुझ में छोड़े हुए हविको खाते हैं ॥ ११ ॥ इनका मुख होकर मैं सर्व भक्षी कैसे होसकता हूं उग्रश्रवा बोले तिस के उपरान्त सोचकर अग्नि ने अपनी आत्मा को अन्तर्ध्यान किया ब्राह्मणों के अग्निहोत्रों, यज्ञों मंत्रों और क्रियाओं में ओंकार वषट्कार स्वधा और स्वाहा लोप होगए ॥ १३ ॥ अग्नि के विना सम्पूर्ण प्रजा दुःखित होगई इसके उपरांत संपूर्ण ऋषि व्याकुल हो देवताओं के समीप जाकर बोले ॥ १४ ॥ अग्निके नाश से क्रियाओं का नाश होगया और क्रियाओं के नाश से तीनों लोक व्याकुल होगये, हे पाप रहित देवताओं जो करना योग्य है शीघ्रता से करो ॥ १५ ॥ इसके उपरान्त ऋषि और देवताओं ने ब्रह्मा के पास जा अग्नि के शाप और क्रियाओं के नाश को कहा ॥ १६ ॥ हे महाभाग ब्रह्मन् भृगुने किसी का-

are virtually identical though worshipped at different times. They partake of what is poured on me, I am therefore the mouth of Devas and Pitris. The *Devas*, at the full moon, and the Pitris, at the new moon, are fed by the butter poured over me. Being their mouth, how can I be an eater of all things." After reflecting a while, Agni withdrew himself from all Sacrifices; from the holy *homa* of Brahmans, their rites and Sacrifices, whether of short or long duration. Without fire they could not pronounce the Vedic hymns and could not perform their sacrifices. All the *rishis* were in a great distress and went to the gods to complain to them and requested them to do the needful without delay. The *rishis* and gods, then, went together in the presence of Brahma and informed him with all that had taken place. They said, " Agni has been

हुतभुक्सर्वलोकेषु सर्वभक्षत्वमेष्यति । श्रुत्वातुतद्वचस्तेषा मग्निमाहूय विश्वकृत् ।१८। उवाचवचनं श्लक्ष्णं भूतभावनमव्ययम् । लोकानामिहसर्वेषां त्वंकर्ताचांतएवच।१९। त्वन्धारयसिलोकांस्त्रीन क्रियाणांचप्रवर्त्तकः । सतथाकुरुलोकेश नोच्छिद्येरन्यथा क्रियाः ॥ २० ॥ कस्मादेवंविमूढस्त्वमीश्वरः सन् हुताशन । त्वंपवित्रं सदालोके सर्वभूतगतिश्चह ॥ २१॥ नत्वंसर्वशरीरेण सर्वभक्षत्वमेष्यासि । अपानेह्यर्चिषोयास्ते सर्वभक्ष्यंतिताःशिखिन् ॥ २२ ॥ क्रव्यादाचतनुर्यातेसासर्वंभक्षयिष्याति यथासूर्यांशुभिःस्पष्टं सर्वंशुचिविभाव्यते ॥ २३ ॥ तथात्वदर्चिर्निर्दग्धं सर्वंशुचिभविष्यति । त्वमग्नेपरमंतेजः स्वप्रभावाद्विनिर्गतम् ॥ २४॥ स्वतेजसैवतंशापं कुरुसत्यमृषेर्विभो ।

रण अग्नि को शाप दिया कैसे देवताओं का मुख और यज्ञों में अग्रभोक्ता अग्नि सर्व भक्षक होसकता है, विश्व के कर्त्ता ब्रह्माने उनके वचन को सुन सम्पूर्ण भूतों के उत्पन्न करने वाले नाश रहित अग्नि को बुला कर नम्रता से कहा हे अग्ने इस संसार में तू लोकों का करता और नाश करने वाला है ॥ १९ ॥ तू तीनों लोकों को धारण करता और सम्पूर्ण क्रियाओं का प्रवर्तक है । हे संपूर्ण लोक के स्वामी तू ऐसाकर कि क्रियाएँ नाश न हों ॥ २० ॥ हे हुताशन् ईश्वर होकर कैसे तू मूर्ख होगया लोक में तू सदाही पवित्र है और सम्पूर्ण प्राणियों की गती है । २१ । तू सम्पूर्ण शरीर से सर्व भक्षी न होगा, हे शिखिन ! जो तेरे गुदा स्थानकी ज्वाला हैं वह सर्व भक्षक होंगी ॥ २२ ॥ जो तेरी मनुष्य मांसकी भक्षण करनेवाली देह है वह सर्व भक्षकहोगी जैसी सूर्य की किरणोंसे छुई हुई सब वस्तु पवित्र समझी जाती है इसीप्रकार तेरी ज्वालाओंसे जलीहुई सब वस्तु पवित्रहोंगी हे अग्ने तू बड़ा तेजस्वरूपहै अपने प्रभाव से ऋषि के वचन को

---

cursed by Bhrigu for some reason. Being the mouth of gods and the first partaker of the offerings he cannot be an eater of all things." Brahma, then called Agni to his presence and said, "Thou art the creator and the destroyer of worlds. Thou art the preserver of the worlds and the promoter of sacrifices and ceremonies. Therefore you should not let the sacrifices cease. Being the lord of all how can you act so foolishly? Thou art always pure in the world and art its stay. Thou shalt not eat all things with thy whole body. Thy lower flames shall eat all things, i. e., those that are flesh eater. Every thing burnt in thy flames shall become pure like that touched by sun's rays. Thou, O fire, art the supreme energy born of thy own power. Thou canst make the Brahman's curse true by that power. Continue to receive thy portion and that of gods through

वेवानांचात्मनोभागं गृहाणत्वंमुखेहुतम् । २५ । सौतिरुवाच॥एवमस्त्विततिंतंवन्हिः प्रत्युवाचपितामहम् । जगामशासनंकर्तुं देवस्यपरमेष्ठिनः । २६ । देवर्षयश्चमुदितास्ततोजग्मुर्यथागतम् । ऋषयश्चयथापूर्वं क्रियाःसर्वाःप्रचक्रिरे ॥ २७ ॥ दिविदेवामुमुदिरे भूतसंघाश्चलौकिकाः । अग्निश्चपरमांप्रीति मवापहतकल्मषः ॥ २८ ॥ एवंसभगवांछापं लेभेऽग्निर्भृगुतःपुरा । एवमेषपुरावृत्त इतिसाहोऽग्निशापजः । पुलोम्नश्च विनाशोऽयं च्यवनस्यचसम्भवः ॥ २९ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौलोमपर्वणि अग्निशापमोचने सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

सत्य कर ॥ २४ ॥ अपने तेज से हे विभु तू ऋषिके शाप को सत्य कर तेरेमुखमें होम किये हुए देवताओं और अपने भाग को ग्रहणकर ॥ २५ ॥ उग्रश्रवाबोले अग्नि ने ब्रह्मा से कहा ऐसाही होगा और ब्रह्मा के वचनानुसार फिर यज्ञादिकों में गया ॥२६॥ देवार्षि आदि प्रसन्न होकर निज स्थानों को गये और सम्पूर्ण क्रियायें रीत्यानुसारहोनेलगीं ।२७। सम्पूर्णप्राणी और स्वर्ग के देवता प्रसन्न हुए क्लेश रहित अग्निभी बड़ी प्रीति को प्राप्त हुआ ॥ २८ ॥ इसप्रकार भगवान अग्निने भृगुसे पहिले शाप पाया भृगुसे अग्नि के शाप पुलोमा राक्षस के नाश और च्यवनकी उत्पत्तिका यह पुराना इतिहास है ।।२९।।

सप्तम अध्याय समाप्त ॥

---

thy mouth." The god of fire was thus pacified by Brahma and acted according to the directions of the lord ef creation. The gods and the rishis also returned to their respective abodes satisfied. The rishis were engaged in their sacrifices and the gods in heaven and all creatures of the world were overjoyed. Agni, too, was rejoiced at the prospect of being free from sin. This is the history of how Agni was cursed by Bhrigu in the days of old, the destruction of the de-demon Pulom and the birth of Chyavan

सौतिरुवाच " सचापिच्यवनोब्रह्मन् भार्गवोजनयत्सुतम्। सुकन्यायांमहात्मानंप्रमतिंदीप्ततेजसम् ॥१॥ प्रमतिस्तुरुरुंनाम घृताच्यांसमजीजनत् । रुरुःप्रमद्वरायांतुशुनकं समजीजनत् " २ " शुनकस्तुमहासत्वः सर्वभार्गवनन्दनः। जातस्तपसितीव्रेच स्थितः स्थिरयशास्ततः ॥३॥ तस्यब्रह्मन्रुरोःसर्वं चरितंभूरितेजसः। विस्तरेणप्रवक्ष्यामितच्छृणुत्वमशेषतः "४" ऋषिरासीन्महान्पूर्वं तपोविद्यासमन्वितः ' स्थूलकेशइतिख्यातः सर्वभूतहितेरतः "५" एतस्मिन्नेवकालेतु मेनकायांप्रजज्ञिवान्। गन्धर्वराजोविप्रर्षेविश्वावसुरितिस्मृतः "६॥ अप्सरामेनकातस्य तंगर्भंभृगुनन्दन।उत्ससर्जयथाकालंस्थूलकेशाश्रमंप्रति ।७। उत्सृज्यचैवतंगर्भं नद्यास्तीरेजगामसा' अप्सरामेनकाब्रह्मन्निर्दया निरपत्रपा ।८। कन्याममरगर्भाभां ज्वलंतीमिवचश्रिया । तांददर्शसमुत्सृष्टां नदीतीरे महानृषिः ।९। स्थूलकेशःसतेजस्वी विजनेबन्धुवर्जिताम् ' सतांदृष्ट्वातदाकन्यांस्थूल

आठवां अध्याय ॥

उग्रश्रवा बोले हे ब्रह्मन् शौनक ! भृगुके पुत्र च्यवन ने सुकन्या से बड़े तेजस्वी पुत्र प्रमति को उत्पन्न किया ॥ १ ॥ प्रमति ने घृताचि से रुरु नाम पुत्र उत्पन्न किया रुरुने प्रमद्वरा नाम स्त्रीमें शुनक नामपुत्र उत्पन्न किया ॥ २ ॥ शुनक बडा प्रतापी, सम्पूर्ण भृगुवंशियों को आनन्द देनेवाला, स्थिर यशवाला तपस्याकरने वाला था हे ब्रह्मन् बडे तेजस्वी रुरु के सम्पूर्ण चरित्र को विस्तार से कहूंगा तू श्रवण कर ॥ ४ ॥ पहिले तप और विद्यायुक्त सम्पूर्ण प्राणियों का हित चाहने वाला स्थूलकेश ऋषिथा ॥ ५ ॥ उसी समय मेनका में गधर्वों के राजा विश्वावसु नाम गन्धर्व ने गर्भ स्थापित किया ॥ ६ ॥ हे शौनक अप्सरा मेनकाने उसगर्भ को स्थूल केशके आश्रम में छोड़ दिया ।७। वह दया और लज्जा रहित मेनका उस गर्भ को छोड़ कर नदी किनारे गई—देवताओं के गर्भ के समान तेजस्वी कन्या पड़ी हुई स्थूलकेश ऋषि ने देखी ॥ ८ ॥ तेजस्वी

CHAPTER VIII.

(PAULUM PARB CONTINUED)

Chyavan, the son of Bhrigu had a son named Pramati from his wife Sukanya. Pramati's son from Ghritachi was Ruru whose son was Shunak by *Pramadvara*. It is this Ruru with whose history we have to deal in this chapter. In the days of yore there was a great Rishi named Sthool Kesh. He possessed great powers of asceticism and learning and was kind to all beings. In those days Vishwavasu, the Gandharv king, loved Menika, the famous *Apsara*. She became the mother of a female child and left it in the vicinity of the hermitage of Sthulkesh, at the bank of the river. She felt no pity

केशोमहाद्विजः ॥१०॥ जग्राहचमुनिश्रेष्ठः कृपाविष्टःपुपोषच । ववृधेसावरारोहातस्याश्रमपदेशुभे ॥११॥ जातकाद्याःक्रियाश्चास्या विधिपूर्वंयथाक्रमम् । स्थूलकेशोमहाभागश्चकारसुमहानृषिः ॥ १२ ॥ प्रमदाभ्योवरासातु सत्वरूपगुणान्विता । ततःप्रमद्वरेत्यस्या नामचक्रेमहानृषिः ॥ १३ ॥ तामाश्रमपदेतस्य रुरुर्दृष्ट्वाप्रमद्वराम् । बभूवकिलधर्मात्मा मदनोपहतस्तदा ॥ १४ ॥ पितरंसखिभिःसोऽथ श्रावयामासभार्गवम् ॥ प्रमतिश्चाभ्ययाचत्तां स्थूलकेशंयशस्विनम् । १५ । ततःप्रादात्पिताकन्यांरुरवेतांप्रमद्वराम् । विवाहंस्थापयित्वाग्रे नक्षत्रेभगदैवते । १६ । ततःकतिपयाहस्य विवाहेसमुपस्थिते । सखीभिःक्रीडतीसार्धं साकन्यावरवर्णिनी ॥१७॥ नापश्यत्संप्रसुप्तंवै भुजंगंतिर्यगायतम् । पदाचैनंसमाक्रामन्मुमूर्षुःकालचोदिता । १८ । सतस्याःसंभ्रमत्तायाश्चोदितःकालधर्मणा । विषोपलिप्तान्दशनान्भृशमंगेन्यपातयत् ॥ १९ ॥ सादष्टातेन

स्थूलकेश ऋषि ने निर्जनवन में वन्धु रहित कन्याको देख कर कृपा कर के उठालिया और पाला, वह कन्या उस महात्मा के शुभ आश्रम में बढी ॥ ११ ॥ महाभाग महर्षि ने उस कन्या के जातकर्मादि संस्कारविधि पूर्वक किये ॥ १२ ॥ वह कन्या सम्पूर्ण स्त्रियों में श्रेष्ठ गुणयुक्त और रूपवान् हुई इसी कारण मुनि ने उस का प्रमद्वरा रक्खा ॥१३॥ उस कन्या को ऋषि के आश्रम में रुरु ने देखा और वह महात्मा कामातुर होगया ॥ १४ ॥ मित्रों द्वारा रुरु ने अपने पिता को यह समाचार सुनाया उस के पिता प्रमतिने स्थूलकेश से अपने पुत्र के लिये उस कन्याकी याचनाकी ॥ १५ ॥ स्थूलकेश ने रुरु को अपनी कन्या का देना स्वीकार किया और पूर्वाफाल्गुणि में उस का विवाह निश्चय किया ॥ १६ ॥ विवाह निश्चय हुए पश्चात् सखियों के साथ खेलती हुई प्रमद्वरा ने तिरछे सोते हुए सर्पको न देखा काल से प्रेरणा की हुई मरने वाली ने पांव से सर्प का स्पर्श किया । १८ । उसकाल से प्रेरणा किये हुए सर्प ने अपने विष भरे

for the babe. The rishi found the child, which was as beautiful as the child of a god, lying in the wilderness. He felt compassion on the forsaken child and brought it home. The lovely child grew up in the hermitage and the rishi performed all the ceremonies(Sanskars) enjoined by the divine law and because she was superior to her sex, in goodness, beauty and other qualities, he named her Pramadvara. The saintly Ruru having seen the girl in the hermitage was shot with the golden shaft of the god of love. Ruru's friends told his father the news of his love towards Pramadvara and his father, Pramati, asked her of Sthulkesh for his son. Pramadvara was betrothed to Ruru and the day of their marriage was appointed. Within a few days of the time fixed for the nuptials the beautiful virgin while playing with

सर्पेण पपातसहसाभुवि । विवर्णाविगतश्रीका भ्रष्टाभरणचेतना ।२०। निरानंदकरी तेषां बन्धूनांमुक्तमूर्धजा । व्यसुरप्रेक्षणीयसाप्रेक्षणीयतमाऽभवत् ॥ २१ ॥ प्रसुप्तेवाभवच्चापि भुविसर्पविषार्दिता । भूयोमनोहरतरा बभूवतनुमध्यमा ॥ २२ ॥ ददर्शतांपिताचैव येचैवान्येतपस्विनः । विचेष्टमानांपतितां भूतलेपद्मवर्चसम् ॥२३॥ ततः सर्वेद्विजवराः समाजग्मुःकृपान्विताः । स्वस्त्यात्रेयोमहाजानुः कुशिकःशंखमेखलः । । २४ । उद्दालकःकठश्चैव श्वेतश्चैवमहायशाः । भरद्वाजःकौणकुत्स्य आर्ष्टिषेणोऽथगौतमः ॥ २५ ॥ प्रमतिःसहपुत्रेण तथान्येवनवासिनः । तांतेकन्यांव्यसुं दृष्ट्वाभुजंगस्यविषार्दिताम् ॥ २६ ॥ रुरुदुःकृपयाविष्टा रुरुस्त्वार्तोबहिर्ययौ । तेचसर्वेद्विजश्रेष्ठास्तत्रैवोपाविशंस्तदा ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौ० प० प्रमद्वरासर्पदंशे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दांतों को उस कन्या के अंग में गढा दिया । १९ । सर्प के काटने से उस कन्या का रंग बिगडगया और भूषण गिरपडे और अचेतहोकर पृथ्वी में गिरपडी । २० । बन्धुओं को क्लेश देनेवाली बालखोले हुए मृत्यु को प्राप्तहोकरभी वह कन्या देखने में अतिउत्तम थी । २१ । सर्प के विषसे पीडित सोईहुईके समान अत्यन्त मनोहर दिखलाई देती २२ उस के पिता और अन्य ऋषियोंने आकर उस कमलसदृश शरीरवालीको जमीनपर पड़ा पाया । २३ । कृपा करके सम्पूर्ण ऋषि उसस्थान पर आये स्वस्ति, आत्रेय, महाजानु, कुशिक, शंखमेखल । २४ । उद्दालक, कठ, अत्यंत यशस्वीश्वेत, भरद्वाज, कौणकुत्स्य, आर्ष्टिषेण, गौतम । २५ । पुत्र सहित प्रमति आदि बनबासी आये और सर्पके काटने से मरीहुई कन्या को देखकर करुणा से रोने लगे रुरु घबराकर बाहर चला गया और शेष ब्राह्मण उस कन्या के समीप बैठगये ॥ २७ ॥

आठवां अध्याय समाप्त ॥

her companions, trod upon a serpent unawares and was bitten by that reptile. She instantly dropped senseless on the ground and her whole body became discoloured. With dishevelled hair she became a sight of woe to her household. Her beautiful form became too painful to look at and the slenderwaisted girl, lying as if in sleep affected by the poison of the snake was still beautiful. Her adopted father and the other Brahmans saw her lying dead on the ground. Then came there many a Brahman from the neighbourhood and sat around her. Swastatreya, Mahajanu, Kushik, Sankhyamekhal, Uddalak, Kath, Shwet, the famous Bharddwaj, Kaunkutsya, Arshtisen, Gautam, Pramati, his son Ruru, and other inhabitants of the forest came there and wept over the dead body of the girl, bitten by serpent. Ruru could not bear the sight and went a way.

सौतिरुवाच । तेषुतत्रोपविष्टेषु ब्राह्मणेषुमहात्मसु । रुरुश्चुक्रोशगहनंवनंगत्वाऽति दुःखितः ।१। शोकेनाभिहतःसोऽथविलपन्करुणंबहु । अब्रवीद्वचनंशोचन्प्रियांस्मृत्वा प्रमद्वराम् । २ । शेतेसाभुवितन्वंगीममशोक विवर्धिनी । बांधवानांचसर्वेषां किंनदुःख मतःपरम् । ३ । यदिदत्तंतपस्तप्तं गुरवोवामयायदि । सम्यगाराधितास्तेन संजीवतु ममप्रिया । ४ । यथाचजन्मप्रभृतियतात्माऽहंधृतव्रतः । प्रमद्वरातथाह्येषा समुत्तिष्ठतुभा मिनी । ५ । एवंलालप्यतस्तस्यभार्यार्थे दुःखितस्यच । देवदूतस्तदाऽभ्येत्यवाक्यमाह रुरुंवने ॥६॥ देवदूतउवाच । अभिधत्सेहयद्वाचारुरो दुःखेनतन्मृषा । यतोमर्त्यस्यध र्मात्मन्नायुरस्मिगतायुषः ॥७॥ गतायुरेषाकृपणागंधर्वाप्सरसोःसुता । तस्माच्छोकेमन स्तात माकृथास्त्वंकथंचन ॥८॥ उपायश्चात्रविहितः पूर्वंदेवैर्महात्मभिः । तंयदीच्छसि

अध्याय ९ ॥

उग्रश्रवाबोले उन ब्राह्मणों के पास बैठने पर रुरु ने घने बन में जा दुःखित हो रुदन किया । १ । शोक से अनेक प्रकार के दीनवचनों से विलापकर अपनी प्रिया प्रमद्वरा को यादकर बोला । २ । वह सूक्ष्म अंगवाली मेरे और अपने सब बान्धवों के शोकको बढ़ातीहुई पृथ्वी पर सोती है इस से अधिक और क्या दुःख होगा । ३ । यदि मैंने कुछ दान वा तप किया है और गुरुओं का भली प्रकार आराधन किया है तौ उस पुण्य से मेरी प्रियाजी जावे । ४ । जो मैं जन्म से ब्रतों का धारण करनेवाला और जितेन्द्रीहूं तो मेरी स्त्री जीती होकर खड़ी होवे । ५ । इसप्रकार बिलाप करते हुए स्त्री के लिये दुःखित रुरु के समीप देव दूत आकर यह वचन बोला हे रुरु दुःख से जो तू कहताहै वह सब वृथा है क्योंकि मरनेवाले मनुष्यकी आयु नहीं रहती । ७ । यह दीन गन्धर्व अप्सराकी पुत्री गत आयु होचुकी है हे तात तू किसी प्रकार शोकातुर

CHAPTER IX.

Ruru left the Brahmans there and withdrew to a dense forest to cry out over his grief. In an agony of grief he called out the name of his beloved Pramadvara and said, "That delicate woman is lying on the earth to my great grief. What trouble can be greater than this to me and my friends. If I have ever given alms and done service to my superiors let the merit of those acts restore my love to life. If from birth I have kept passions under my control and adhered to my vows, my fair Pramadvara may rise up" While Ruru was thus giving vent to his grief at the loss of his wife, a messenger from heaven came to him and said, "Thy words are useless. (For, the mortal whose days are run out can never return to life.) This poor offspring of a Gandharv and Apsara was fated to die, therefore, donot trouble yourself for

कर्तुंत्वं प्राप्स्यसीहप्रमद्वराम् ॥ ९ ॥ रुरुरुवाच । कउपायःकृतोदेवैर्ब्रूहितत्वेनखेचर करिष्येऽहंतथाश्रुत्वात्रातु मर्हतिमांभवान् ।१०। देवदूतउवाच । आयुषोऽर्धंप्रयच्छत्वं कन्यायैभृगुनन्दन । एवमुत्थास्यतिरुरोतवभार्याप्रमद्वरा ॥११॥ रुरुरुवाच । आयुषोऽर्धंप्रयच्छामिकन्यायैखेचरोत्तम । शृङ्गाररूपाभरणासमुत्तिष्ठतुमेप्रिया ॥ १२ ॥ सौतिरुवाच । ततोगंधर्वराजश्चदेवदूतश्चसत्तमौ । धर्मराजमुपेत्येदंवचनंप्रत्यभाषताम् ॥ १३ ॥ धर्मराजायुषोर्धेनरुरोर्भार्याप्रमद्वरा । स्वमुत्तिष्ठतुकल्याणीमृतैवंयदिमन्यसे ।१४। धर्मराज उवाच । प्रमद्वरांरुरोर्भार्यांदेवदूतयदीच्छसि । उत्तिष्ठत्वायुषोऽर्धेनरुरोरेवसमन्विता ॥१५॥ सौतिरुवाच । एवमुक्तेततःकन्यासोदतिष्ठत्प्रमद्वरा। रुरोस्तस्यायुषोऽर्धेनसुप्तेववरवर्णिनी ।१६। एतद्दृष्टंभविष्येहिरुरोरुत्तमतेजसः । आयुषोऽतिप्रवृद्ध

न हो । ८ । यहां पर देवताओं ने कुछ उपाय भी कहा है यदि तू उस उपाय को करना चाहता है तो इस स्त्रीको पावेगा । ९ । रुरु बोला हे आकाश गामी देवदूत ! कौन उपाय देवताओं ने कहा है मेरे समीप ठीक २ कह मैं वही करूंगा और तू मेरी रक्षा करने योग्य है। १० । देव दूत बोला हे रुरु तू अपनी आयु से आधा भाग इस को देदे ऐसा करने से यह जीजावेगी । ११ । रुरु बोला हे आकाश गामियों में श्रेष्ठ ! मैं अपनी आयु का आधा भाग इसको देताहूं यह मेरी स्त्री जीवित होवे । १२ । उग्रश्रवा बोले तिस के उपरान्त विश्वावसु और देवदूत धर्मराज के समीप आ कहनेलगे । १३ । हेधर्मराज यह रुरु की मरीहुई भार्या इसकी आधी आयु से जीवित होवे यदि आप स्वीकार करें धर्मराज बोले यदि तुम चाहते होतो यह इसकी भार्या इसकी आधी आयु से जीती होवे । १५ । उग्रश्रवा बोले ऐसा कहने पर वह कन्या प्रमद्वरा रुरु की आधी आयुसे सोतीकी समान उठी । १६ । बहुत बड़ी आयु का भाग उसने भार्या के लिये दिया

---

nothing. If thou wishest to get back thy Pramadvara, there is only one remedy." Ruru asked him what it was and promised to profit by it. The messenger told him that he might give away half his life for the revival of his bride. Ruru consented to this proposal and went with the Gandharv king (Pramadvara's father) to the god Dharm and said, "If it be thy will, Dharmraj, let the beautiful Pramadvara, the betrothed of Ruru, now lifeless, live with a moity of Ruru's life." Dharmraj granted the request. The beautiful girl, Pramadvara, regained her life and rose up as if it were from sleep. The term of Ruru's life was reduced to half its natural time. On an auspicious day their hands were joined in marriage, with due rites, by their fathers and the couple passed their days in harmony. Ruru having found that bride, matchless in beauty and of the colour

स्यभार्यार्थेऽर्धमलुप्यत ॥१७॥ ततइष्टेऽहनितयोःपितरौचक्रतुर्मुदा। विवाहंतौचरेमाते परस्परहितैषिणौ ॥१८॥ सलब्ध्वादुर्लभांभार्यांपद्मकिंजल्कसुप्रभाम् । व्रतंचक्रेविनाशायजिह्मगानांधृतव्रतः ॥ १९ ॥ सदृष्ट्वाजिह्मगान्सर्वांस्तीव्रकोपसमन्वितः । अभिहंतियथासत्वंगृह्यप्रहरणंसदा ॥२०॥ सकदाचिद्वनंविप्रोरुरुरभ्यागमन्महत् । शयानं तत्रचापश्यत् डुंडुभंवयसाऽन्वितम् ॥२१॥ ततउद्यम्यदंडं सकालदंडोपमंतदा। जिघांसुः कुपितोविप्रस्तमुवाचाऽथडुंडुभः ॥२२॥ नापराध्यामितेकिञ्चिदहमद्यतपोधन। संरंभाच्च किमर्थंमामभिहंसिरुषाऽन्वितः ॥ २३ ॥

इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणिपौ० प० प्रमद्वराजीवने
नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

रुरुरुवाच । ममप्राणसमाभार्या दष्टासीद्भुजगेनह। तत्रमेसमयोघोरआत्मनोरगवैकृतः

॥ १७ ॥ तिस उपरान्त उन दोनों के पिताओं ने अच्छे दिन हर्ष पूर्वक उन दोनों का विवाह किया, और एक दूसरे के हितके चाहने वाले परस्पर विहार करने लगे, रुरु ने कमल कीसी कान्ति वाली उस भार्या को पाकर सर्पों के नाश करने के कारण व्रत धारण किया, औन अति क्रोधातुर्हो सर्पों को मारने लगा ॥ २० ॥ वह ब्राह्मण कभी बड़े वन को गया, वहां निर्विष बूढ़े सांप को सोता देखा ॥ २१ ॥ क्रोधातुर ब्राह्मण ने उस के मारनेकी इच्छा से काल के समान डण्डे को उठाकर मारना चाहा, तभी वह सर्प बोला, ॥ २२ ॥ हे तपोधन तेरा मैंने इस समय कुछ अपराध नहीं किया है मुझको क्रोधित होकर क्यों मारता है ॥ २३ ॥

अध्याय १० ॥

रुरु बोला मेरी प्रिय भार्या को सर्प ने काटा, उससमय से मैंने यह प्रण किया

of lotus, made a vow for the annihilation of the serpent race. Whenever he found a serpent he killed it with his club. One day Ruru entered a deep forest and there saw an old serpent of the Dundubh species lying on the ground. Ruru thereupon lifted up his staff in anger to strike it dead. Seeing this the Dundubh said, "Brahman, I have done thee no wrong. Why then wouldst thou slay me?"

CHAPTER X.

[Paulom Parv Continued.]

Ruru replied, "My dear wife was bitten by a snake; from that time I have made it a rule to kill every snake that comes in my way and therefore am bound to kill you." The Dundubh said, "The

chapter

॥१॥ भुजंगंवैसदाहन्यांयंयं पश्येयमित्युत।ततोऽहंत्वांजिघांसामि जीवितेनाद्यमोक्ष्यसे
॥२॥ डुंडुभ उवाच। अन्येतेभुजगाब्रह्मन् येदशंतीहमानवान्। डुंडुभानहिगंधेननत्वं
हिंसितुमर्हसि ॥ ३ ॥ एकानर्थान्पृथगर्थानेक दुखान्पृथक्सुखान। डुंडुभान्धर्मविद्भू-
त्वानत्वंहिंसितुमर्हसि ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच। इतिश्रुत्वावचस्तस्य भुजगस्यरुरुस्तदा।
नावधीद्भयसंविग्नमृषिं मत्वाऽथ डुंडुभम् ॥ ५ ॥ उवाचचैनंभगवान् रुरुसंशमयन्निव।
कामंमांभुजगब्रूहिकोऽसीमां विक्रियांगतः ॥ ६ ॥ डुंडुभ उवाच ॥ अहंपुरारुरोनाम्ना
ऋषिरासंसहस्रपात्। सोऽहंशापेनविप्रस्य भुजगत्वमुपागतः ।७। रुरुरुवाच। किमर्थं
सप्तवान् क्रुद्धो द्विजस्त्वांभुजगोत्तम। कियंतंचैवकालंते वपुरेतद्भविष्यति ॥ ८ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौलोमपर्वणि रुरुडुंडुभसम्वादे दशमोऽध्यायः।१०।

कि जिस सर्प को मैं देखूंगा उसी को मारूंगा इस लिये तुझको मारताहूं तू अपने प्राणों को त्यागेगा, सर्पबोला हेब्रह्मन मनुष्यों को काटनेवाले सर्प और जाति के हैं, तू सर्पोंको एकसा जानकर डुण्डुभों को न मारकर एक के अनर्थ करने से सबको दुःख और एक शुभकरने से सब को सुख नहीं होनाचाहिये क्योंकि तू धर्मज्ञहै इसकारण दण्डनीयको दण्डहोना चाहिये डुण्डुभों को न मार, रुरु ने इसप्रकार उस के वचन को सुन और भयभीत देख उस सर्पको जान से न मारा, रुरु शांतहोकर कहने लगा हेसर्प मुझसेसत्य कह कि सर्प के देह में तू कौन है डुंडुभबोला मैं प्रथम सहस्रपात ऋषि था मैं ब्राह्मण के शाप से सर्पहोगया ।७। रुरुबोला हे भुजंगोत्तम ब्राह्मण ने तुझे क्यों शाप दिया और कितने कालतक तेरा यह देह सर्प रहेगा ॥ ८ ॥

---

snakes that bite are not of the class of which I am a fellow. We are serpents in name only, sharing the same calamity with other serpents but not their good luck. You must not kill Dundubhs as you know right and wrong." Ruru having heard these words from the serpent and seeing its timidity did not kill it. He gave him comfort and said, "Let me know, Dundubh, who art thou in disguise?" Dundubh replied, "I was formerly a rishi named Sahasrapat but by the curse of a Brahman I was changed into a snake." Ruru then asked him the cause of the Brahman's curse and the duration of his remaining in that form.

डुंडुभउवाच । सखाबभूवमेपूर्वं खगमोनामवैद्विजः । भृशंसंशितवाकृतात तपोवल-समन्वितः ॥ १ ॥ समयाक्रीडताबाल्ये कृत्वातार्णभुजंगमम् अग्निहोत्रेप्रसक्तस्तु भीषितःप्रमुमोहवै ॥ २ ॥ लब्ध्वासचपुनः संज्ञांमामुवाचतपोधनः निर्दहन्निवकोपेन सत्यवाक्संशितव्रतः ॥ ३ ॥ यथावीर्यस्त्वयासर्पः कृतोऽयंमद्बिभीषया तथावीर्योभुजंगस्त्वं ममशापाद्भविष्यसि ॥ ४ ॥ तस्याहंतपसोवीर्यं जानन्नासंतपोधन । भृशमुद्विग्नहृदयस्तमवोच महंतदा ॥ ५ ॥ प्रणतः संभ्रमाच्चैवप्रांजलिःपुरतःस्थितः । सखेतिसहसेदंते नर्मार्थेवैकृतंमया ॥ ६ ॥ क्षंतुमर्हसिमेब्रह्मन् शापोऽयंविनिवर्त्यताम् । सोऽथमामब्रवीद्दृष्ट्वा भृशमुद्विग्नचेतसम् ॥ ७ ॥ मुहुरुष्णंविनिः श्वस्यसुसंभ्रांतस्तपोधनः । नानृतंवैमयाप्रोक्तं भवितेदंकथंचन ॥ ८ ॥ यत्तुवक्ष्यामितेवाक्यं शृणुतन्मेतपोधन ।

अध्याय ११ ॥

डुण्डुभबोला खगम नामी ब्राह्मण मेरा मित्र था हे तात वह तपस्या के बलसे युक्त तीक्ष्ण वचन वाला था ॥१॥ वह अग्निहोत्र करताथा बालकपन में खेलते हुए मैंने तुनकों का सर्प बनाकर डराया और वह डर गया ॥२॥ और बेहोश हुआ थोड़ी देरमें सावधनहुआ और कोपकर मुझ से बोला ॥३॥ जैसा बलहीन यह सर्प तूने मेरे डराने को बनाया है वैसाही सर्प तू मेरेशाप से होगा ॥ ४ ॥ हे तपोधन उसके तप के बल को जानने वाला मेरा हृदय अत्यन्त व्याकुल हुआ और फिर मैंने ॥ ५ ॥ नीचा शिर कर हाथ जोड़ व्याकुलता से उस के समीप खड़ाहो कहा हे मित्र तूने शाप देने में बड़ी जल्दीकी मैंनेतो केवल क्रीड़ा करने को यह सर्प बनाया था ॥ ६ ॥ हे ब्रह्मन् मुझ से क्षमा पूर्वक इस शाप को दूर कर फिर मुझ को अत्यन्त दुःखित देख ॥ ७ ॥ उष्ण श्वास लेकर उस तपोधन ने मुझ से कहा कि मैंने आज तक मिथ्या वाणी नहीं कही तो यह वचन कैसे मिथ्या हो सकेगा ॥ ८ ॥ जो मैं तुझसे कहता हूं उस को तू श्रवण

CHAPTER XI

[Paulom Parv Continued.]

The Dundubh replied, "I had, once, a friend named Khagam. He was a great ascetic. One day as he was engaged in Agnihotra, I made a snake of grass and attempted to frighten him with it in joke and he swooned. When he had regained consciousness, he spoke these words burning with rage. "In as much as thou hast frightened me with a powerless snake, thou shalt become metamorphosed into a venomless serpent by the virtue of my curse. I well knew the power of his word, therefore with a trembling heart I begged his pardon saying that I had done it by way of joke, in order to excite laughter and begged him to revoke his curse. On seeing me much troubled he relented and felt sorry for me but

श्रुत्वाचहृदिलेवाक्य मिदमस्तुसदाऽनघ ॥ ९ ॥ उत्पत्स्यतिरुरुर्नाम प्रमतेरात्मजः शुचिः । तंदृष्ट्वाशापमोक्षस्ते भवितानचिरादिव ॥ १० ॥ सत्वंरुरुरितिख्यातः प्रमतेरात्मजोऽपिच । स्वरूपंप्रतिपद्याहं मद्यवक्ष्यामितेहितम् ॥ ११ ॥ सडौंडुभंपरित्यज्य रूपंविप्रर्षभस्तदा । स्वरूपंभास्वरंभूयः प्रतिपेदेमहायशाः ॥ १२ ॥ इदंचावाचवचनंरुरु मप्रतिमौजसम् । अहिंसापरमोधर्मः सर्वप्राणभृतांवर ॥ १३ ॥ तस्मात्प्राणभृतः सर्वान्नहिंस्याद्ब्राह्मणः क्वचित् । ब्राह्मणः सौम्यएवेह भवतीतिपराश्रुतिः ॥ १४ ॥ वेदवेदाङ्गविन्नाम सर्वभूताभयप्रदः । अहिंसासत्यवचनं क्षमाचेति विनिश्चितम् ॥ १५ ॥ ब्राह्मणस्यपरोधर्मो वेदानांधारणाऽपिच । क्षत्रियस्यहियोधर्मः सहिनेष्येतवैतव ॥ १६ ॥ दण्डधारणमुग्रत्वं प्रजानांपरिपालनम् । तदिदंक्षत्रियस्याशीत्कर्मवैशृणुमेरुरो ॥ १७ ॥ जन्मेजयस्ययज्ञेऽस्मिन् सर्पाणां हिंसनंपुरा । परित्राणं

कर हे अनघ यह वचन सदा तेरे हृदय में रहे प्रमति के पवित्र पुत्र रुरु नाम को देख कर तेरा यह शाप शीघ्र छूट जायगा ॥ १० ॥ वह रुरु नाम से प्रसिद्ध प्रमति का पुत्र तूही है अब मैं अपने सर्परूप को त्याग असली अवस्था को प्राप्त कर तेरे हितकारी वचनों को कहूंगा ॥ ११ ॥ वह श्रेष्ठ ब्राह्मण डुण्डुभ के रूप को त्याग अपने पहिलेरूप को प्राप्त हुआ और ॥ १२ ॥ अत्यन्त पराक्रम वाले रुरु से कहने लगा हे श्रेष्ठ अहिंसा परमधर्म है ॥ १३ ॥ इस लिये ब्राह्मण कभीभी किसी प्राणीमात्र को न मारै और उसको सौम्य होना अवश्य चाहिये ॥ १४ ॥ वेद और वेदांग का जानने वाला सम्पूर्ण प्राणियों का अभय देनेवाला ब्राह्मण होता है अहिंसा सत्य वचन वेदों का धारण करना यह ब्राह्मणोंका परम धर्म है क्षत्रिय के धर्म को न करे ॥ १६ ॥ दण्डका धारण करना उग्र कठोर प्रजा पालक होना क्षत्रिय का कर्म है सो तू जान ॥ १७ ॥

---

said he could not revoke his curse. He then said that as soon as I should see Ruru, the pious son of Pramati I would be released from the curse. I have now seen you. I shall give you a piece of good advice, when I shall have regained my natural form in a short time." The Brahman then left his snake body and resumed his real form. He then told Ruru that the highest morality consisted in sparing life and that therefore a Brahman ought to desist from destroying a life. It is the duty of a Brahman to be always mild, enjoined by the Veds. A Brahman should always be engaged in reading the Vedas and the books leading to them and be kind to all creatures. He should be benevolent, true and forgiving. He should learn the Vedas. The duties of a Kshetria are to be stern, to hold the sceptre and to rule the subjects. A Brahman should never take

चभीतानां सर्पाणांब्राह्मणादपि ॥ १८ ॥ तपोवीर्यबलो पेताद्वेदवेदाङ्गपारगात् ।
आस्तीकादद्विजमुख्याद्वैसर्पसत्रेद्विजोत्तम ॥ १९ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वाणि पौलोमपर्वणि डुंडुभशापमोक्षे
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

रुरुरुवाच । कथंहिंसितवान्सर्पान् सराजाजनमेजयः ॥ सर्पावाहिंसितास्तत्र
किमर्थं द्विजसत्तम ॥ १ ॥ किमर्थं मोक्षिताश्चैव पन्नगास्तेनधीमता । आस्तीकेन
द्विजश्रेष्ठ श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ श्रोष्यसित्वंरुरोसर्वं मास्तीक
चरितंमहत् । ब्राह्मणानां कथयता मित्युक्त्वांतरधीयत ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच ॥
रुरुश्चापिवनंसर्वंपर्यधावत्समंततः ॥ तमृषिंनष्टमन्विच्छन् संश्रांतोन्य पतद्भुवि ॥ ४ ॥
समोहंपरमंगत्वा नष्टसंज्ञइवाभवत् । तदृषेर्वचनंतथ्यं चिन्तयानः पुनः पुनः ॥ ५ ॥

जन्मेजय के यज्ञ में पहिले सर्पों की हिंसा हुई थी और डरेहुए सर्पोंकी तपोबल से युक्त,
वेद वेदांगों के पार जानने वाले आस्तीक नाम ब्राह्मण से रक्षा हुईथी ॥ १९ ॥

अध्याय १२ ॥

रुरु बोला राजा जन्मेजय ने सर्पों को किस प्रकार मारा और किस प्रयोजन से
उनकी हिंसाकी बुद्धिमान आस्तीक ने उस यज्ञ से क्यों सर्पों को बचाया यह सम्पूर्ण
कथा मैं सुनना चाहता हूं ॥ २ ॥ ऋषि बोले हे रुरु आस्तीक के सम्पूर्ण बड़े चरित्र
को तू ब्राह्मणों के मुख से सुनेगा ऐसा कहकर अन्तर्ध्यान होगया उग्रश्रवा बोले रुरु
भी उस सम्पूर्ण वन में चारों ओर उस ऋषि को ढूंढने लगा और दौड़ता २
थकित हो पृथ्वी पर गिरपड़ा ॥ ४ ॥ वह बड़े मोह को प्राप्त होकर उस ऋषि के वचन

---

upon himself the duties of kshetryas. He then advised Ruru to jisten the history of the snake sacrifice performed by Raja Janmelaya and the deliverance of snakes the learned by Brahman, Astik.

CHAPTER XII.

Ruru then asked him to relate how king Janmejaya was induced to engage in snake sacrifice and the cause of Astik's intervention, in detail. But the rishi disappeared saying that he would hear it from other Brahmans. Ruru ran after him but his attempt was in vain and he fell down on the ground keeping in mind the words of the rishi. He lost his sense for a time and when he

लब्धसंज्ञोरुरुश्चाया त्तदाचख्यौपितुस्तदा । पिताचास्यतदाख्यानं पृष्टः सर्वंन्यवेद यत् ॥ ६ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि पौलोमपर्वणि सर्पसत्रप्रस्तावनायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ समाप्तं पौलोमपर्व ॥

अथास्तीकपर्व ॥ शौनकउवाच ॥ किमर्थंराजशार्दूलः सराजाजनमेजयः । सर्पसत्रेणसर्पाणां गतोऽतंतद्वदस्वमे ॥ १ ॥ निखिलेनयथातत्त्वं सौतेसर्वमशेषतः । आस्तीकश्चद्विजश्रेष्ठः किमर्थंजयतांवरः ॥२॥ मोक्षयामासभुजगान् प्रदीप्ताद्वसुरेतसः कस्यपुत्रः सराजासीत्सर्पसत्रंयआहरत् ।३। सचद्विजातिप्रवरः कस्यपुत्रोऽभिधत्स्वमे सौतिरुवाच । महदाख्यानमास्तीकं यथैतत्प्रोच्यतेद्विज ।४। सर्वमेतदशेषेण शृणुमेवद तांवर । शौनक उवाच । श्रोतुमिच्छाम्यशेषेण कथामेतांमनोरमाम् ॥ ५ ॥ आस्ती-

को बार २ सोचता हुआ बेहोश होगया ॥ ५ ॥ रुरु सावधानहोकर घर आया और वनकी सब वार्त्ता अपने पिता से कही तब पिता ने आस्तीक की सब कथा उसे सुनाई ।६।

पौलोम पर्व समाप्तः ॥

अध्याय १३ ॥

शौनकबोले राजाओं में श्रेष्ठ जन्मेजय ने सर्प यज्ञ द्वारा उनका नाश किया ॥ १ ॥ हे सूतपुत्र यह सम्पूर्ण कथा कुछ न छोड़कर वर्णन करो ब्राह्मणों और जितेन्द्रियों में श्रेष्ठ आस्तीक ने प्रज्वलित अग्नि में से सर्पों को क्यों बचाया, जिसने सर्प यज्ञ किया वह राजा जन्मेजय किस का पुत्र था ॥ ३ ॥ और आस्तीक किसका पुत्र था सो कहो उग्रश्रवा ने कहा हे ब्राह्मण आस्तीक आख्यान बहुत बड़ा है ॥ ४ ॥ हे शौनक यह सम्पूर्ण मुझ से श्रवण कर, शौनक बोले सम्पूर्णता से प्राचीन ऋषि आस्तीक की मनोहर कथा को मैं सुनना चाहता हूं ॥ ५ ॥ उग्रश्रवाबोले हे ब्राह्मणों इस इतिहास

returned home and asked his father to relate to him the history of Astike anh his father gave the following account.

CHAPTER XIII,

(ASTIK PARB.)

Shaunak enquired of Sauti the reason why of the Snake sacrifice by King Janmejay; their rescue by *Astik*, who had his passions under control; the name of *Janmejaya*'s father and that of Astik. Sauti told him that the story of Astik was very long yet he expressed his willingness to repeat it at full length and on *Shaunk*'s expressing a strong desire to hear it the former thus began:- " The history first recited by Vyas is called Puran by Brahmans. It was formerly narrated by my father, the wise Lomharhan, the desciple of Vyas, at the request of the inhabitants of Naimisha-

कस्यपुराणेंब्राह्मणस्ययशस्विनः । सौतिरुवाच । इतिहासमिमंविप्राः पुराणंपरिच
क्षते ॥ ६ ॥ कृष्णद्वैपायनप्रोक्तंनैमिषारण्यवासिषु । पूर्वंप्रचोदितःसूतः पितामेलो-
महर्षणः ॥ ७ ॥ शिष्योव्यासस्यमेधावीब्राह्मणेष्विदमुक्तवान् ॥ तस्मादहमुपश्रुत्य
प्रवक्ष्यामियथातथम् ॥ ८॥ इदमास्तीकमाख्यानंतुभ्यंशौनकपृच्छते । कथयिष्याम्य
शेषेणसर्वपापप्रणाशनम् ॥ ९ ॥ आस्तीकस्यपिताह्यासीत्प्रजापतिसमःप्रभुः । ब्रह्म-
चारीयताहारस्तपस्युग्रेरतःसदा ।१०। जरत्कारुरितिख्यातउर्ध्वरेतामहातपाः। याया-
वराणांप्रवरोधर्मज्ञः संशितव्रतः ॥ ११ ॥ सकदाचिन्महाभागस्तपोवलसमन्वितः ।
चचारपृथिवींसर्वांयत्रसायंगृहोमुनिः ॥ १२ ॥ तीर्थेषुचसमाप्लावंकुर्वन्नटति सर्वशः ॥
चरन्दीक्षांमहातेजादुश्चरामकृतात्मभिः ॥ १३ ॥ वायुभक्षोनिराहारः शुष्यन्नानिमि-
षोमुनिः । इतस्ततः परिचरन्दीप्त पावकसप्रभः ॥ १४ ॥ अटमानः कदाचित्स्वा-

---

को पुराण कहतेहैं नैमिषारण्य के निवासी ब्राह्मणोंसे व्यासजी के कहेहुए इतिहास को पहिले मेरेपिता व्यासजीके शिष्य बुद्धिमान लोमहर्षणने कहाथा उस से सुने सम्पूर्ण पापोंके नाश करनेवाले आस्तीक आख्यान को हे शौनक कहूंगा और यह सम्पूर्ण पापों का नाश करनेवाला आख्यान है । ९ । प्रजापति के तुल्य ब्रह्मचारी अल्प भोजन करने वाला सर्वदा उग्र तपकाकरनेवाला, सदैव ब्रह्मचारी, बड़ा तपस्वी यायावरों में श्रेष्ठ धर्मज्ञ उत्तम ब्रतधारी, जरत्कारु नाम आस्तीक का पिताथा वह तपस्या के बल से युक्त महाभागी जहां सांझहो वहीं ठहरनेवाला मुनि कभी सम्पूर्ण भूमिपर फिरा और सब तीर्थों में स्नान करताहुआ उसदीक्षा का आचरण करताहुआ जो अजितेन्द्रिय से दुष्कर है। १३ । जलतीहुई अग्निके समान तेजस्वी वायु भक्षी, निराहार, निद्रा को जीतेहुए

---

ranya, in my presence and I shall repeat it verbatim in thy presence. Listen attentively the sin-destroying story. Astik's father was a great Brahmchari and a rigid devotee, equal in glory to Prajapati. Abstemious in food, a mighty ascetic with passions under control, he was known as Jaratkaru. That son of Yayavar race once set off for a travel over the world to visit the holy places and slept whenever night over took him. He practised austerties such as were hard to be borne by men of lessenergy. Sometimes he remained without food and sleep. In the course of his travels he saw one day, his ancestors hanging in a pit, head downward. 15. Seeing them he asked them the reason of their being thus hanging by a grass rope which was secretly eaten by mice. They said that they were ascetics of

Urania

न्सददर्शपितामहान् ॥ लंबमानान्महागर्ते पादैरूर्ध्वैरधोमुखान् ॥ १५ ॥ तानब्रवीत्सदृष्ट्वैव जरत्कारुःपितामहान् । केभवन्तोऽवलंबंतेगर्तेह्यस्मिन्नधोमुखाः ॥ १६ ॥ वीरणस्तंबकेलग्नाः सर्वतःपरिभक्षिते । मूषकेननिगूढेन गर्तेऽस्मिन्नित्यवासिना ।१७। पितर ऊचुः । यायावरानामवयमृषयःसंशितव्रताः । संतानप्रक्षयाद्ब्रह्मन्नधोगच्छाम मेदिनीम् ॥१८॥ अस्माकंसंततिस्त्वेकोजरत्कारुरितिस्मृतः । मंदभाग्योऽल्पभाग्यानां तपएकं समास्थितः ॥ १९ ॥ नसपुत्रान्जनयितुंदारान्मूढश्चिकीर्षति । तेनलम्वामहेगर्तेसंतानस्य क्षयादिह ॥ २० ॥ अनाथास्तेननाथेन तथा दुष्कृतिनस्तथा । कस्त्वंबंधुरिवास्माकमनुशोचसिसत्तम ।२१।ज्ञातुमिच्छामहेब्रह्मन्कोभवानिहनःस्थितः। किमर्थंचैवनः शोच्यानतुशोचसिसत्तम ॥ २२ ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ ममपूर्वेभवंतोवैपितरः सपितामहाः । ब्रूतकिंकरवाण्यद्यजरत्कारुरहंस्वयम् ॥२३॥ पितरऊचुः ॥

सूखे शरीर वालाथा उस ने चारोंओर घूमते हुए कभी बड़े गढेमें उलटे लटके हुए अपने पितरों को देखा । १५ । उन को देखतेही अपने पितामहों से कहा तुम कौनहो जो चूहे से काटेहुए तिनके के सहारे लटके हो । १७ । पितरों ने कहा, हेब्रह्मन् यायावर नामवाले और उत्तम व्रत के रखनेवाले हम ऋषि हैं सन्तान के क्षय होने के कारण नीचे पृथ्वी में जाते हैं हम मन्द भाग्यों का जरत्कारु नाम एक पुत्र है जो सर्वदा तपस्याही में स्थित रहता है १९ वह मूर्ख विवाह करने की इच्छा नहीं करता तिस कारण सन्तान क्षय होने से हमारी यह गतिहै ।२०। उस पुत्र के होने परभी पापी अनाथोंकी तरह हम हैं, हे श्रेष्ठ पुरुष कौन है तू जो बन्धु की समान हमारा शोच करता है ।२१। हे ब्राह्मण तुझको हम जानना चाहते हैं और तू हमारा शोच क्योंकर रहा है । २२ । जरत्कारु बोला, तुम मेरे पितृ पितामह हो और जरत्कारु मैंही हूं आज्ञादो अब मैं

Yayavar race who had come to this state on account of the extinction of their race. They said that they had a son named Jaratkuru who, to their misfortune, had made a vow of celibacy. 21. They asked him who he was that felt sorrow on their fate like a kinsman and Jaratkara told them that he was the cause of their misfortune and he would atone for it the way they would desire him to act. The ancetsors then directed him to marry for the extension of their race. They said that the practice of penance and devotion did not produce that effect which is achieved by the production of an offspring. They told him to marry for their good as well as his own. 26. Jaratkaru

यतस्वयत्नवांस्तात संतानायकुलस्यनः । आत्मनोऽर्थेस्मादर्थेचधर्म इत्येववाविभो ॥ २४ ॥ नहिधर्मफलैस्तात नतपोभिः सुसंचितैः ॥ तांगतिंप्राप्नुवंतीहपुत्रिणोयांव्रजंतिवै ॥ २५ ॥ तद्दारग्रहणेयत्नंसंतत्यांचमनःकुरु। पुत्रकास्मन्नियोगात्त्वमेतन्नःपरमं हितम् ॥ २६ ॥ जरत्कारुरुवाच । नद्दारान्वैकरिष्येऽहंनधनं जीवितार्थतः । भवतांतु हितार्थाय करिष्येदारसंग्रहम् ॥ २७ ॥ समयेनच कर्त्ताऽहमनेनविधिपूर्वकम् । यथा यद्युपलप्स्यामिकरिष्येनान्यथाह्यहम् ।२८।सनाम्नीयाभवित्रीमेदित्सिताचैवबन्धुभिः। भैक्ष्यवत्तामहंकन्या मुपयंस्ये विधानतः ॥ २९ ॥ दरिद्रायहिमेभार्यां कोदास्यति विशेषतः । प्रतिग्रहीष्येभिक्षांतु यदिकश्चित्प्रदास्यति ॥ ३० ॥ एवंदारक्रियाहेतोः प्रयतिष्येपितामहाः । अनेन विधिनाशश्वन्नकरिष्येऽहमन्यथा॥ ३१ ॥ तत्रचोत्पत्स्य

क्या करूं पितर बोले हे तात हमारे कुल के बढ़ाने को सन्तान का उद्योग कर अपने और हमारे लिये जो तू धर्म चाहता है तो यही है । २४ । हे तात न बड़े २ धर्म्मोंके फल से न इकट्ठा की हुई तपस्याओं से उस गति को जाते हैं जिस गतिको सन्तानवाले जाते हैं हे पुत्र हमारी आज्ञा से तू विवाह करके अपनी सन्तान उत्पन्न करने की चेष्टा कर इसी में हमारा परम हित होगा । २६ । जरत्कारु बोला मैं कभी स्त्री और धन के इकट्ठा करनेकी इच्छा नहीं करता, हे पितरो तुम्हारे हित के वास्ते अब मैं विवाह करूंगा परन्तु इस नियम की विधिसे कि यदि कोई मुझ को उत्तम कन्या मिली । २८ । जो कि मेरेनामवाली हो और मेरेही समान तपस्विनीहो और उससे बान्धव भिक्षाके समान मुझको दें तो उस कन्या के साथ मैं विवाह करूंगा, मुझ दरिद्री को अपनी कन्या कौन देगा यदि भिक्षा के समय किसी ने देदी तो ग्रहण करलूंगा । ३० । हे पितरो इस प्रकार मैं अपने विवाह का यत्न सदा करूंगा अन्यथा नहीं । ३१ । उस में जो पुत्र उत्पन्न

---

said that he would not marry a woman or earn money for the sake of his own enjoyment but should do it for their welfare. He promised to marry accoding to Vedic rites provided a bride could be got of the same name as he had and whose friends would give her to him in marriage as charity. But, said he, these conditions were rather hard and so he would accept any girl given in charity and would marry. 31 He reassured his ancesters that he would try his best to get an offspring for their sake.

तंजेतुर्भवतांतारणायवै ॥ शाश्वतंस्थानमासाद्यमोदंतांपितरोमम ॥ ३२ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि जरत्कारुतत्पितृ सम्वादे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

सौतिरुवाच । ततोनिवेशायतदा सविप्रःसंशितव्रतः । महींचचारदारार्थी नच दारानविंदत ॥१॥ सकदाचिद्वनंगत्वा विप्रःपितृवचःस्मरन् । चुक्रोशकन्याभिक्षार्थी तिस्रोवाचःशनैरिव ॥ २ ॥ तंवासुकिःप्रत्यगृह्णादुद्यम्यभगिनींतदा । नसतांप्रतिज ग्राहनसनाम्नीतिचिंतयन् ॥ ३ ॥ सनाम्नींचोद्यतांभार्यां गृह्णीयामितितस्यहि । मनो निविष्टमभवज्जरत्कारोर्महात्मनः ॥ ४ ॥ तमुवाचमहाप्राज्ञो जरत्कारुर्महातपाः । किं नाम्नीभगिनीयंते ब्रूहिसत्यंभुजंगम ॥ ५ ॥ वासुकिरुवाच । जरत्कारोजरत्कारुः स्वसेयमनुजामम । प्रतिगृह्णीष्वभार्यार्थेमयादत्तांसुमध्यमाम् । त्वदर्थंरक्षितापूर्वंप्रती-

---

होगा वह तुम्हारे तारण करने को होगा हे मेरे पितरो सदा रहने वाले उत्तमस्थान में जाकर आनन्द करियो । ३२ ।

अध्याय ॥ १४ ॥

उग्रश्रवा बोले उत्तम व्रतधारी वह ब्राह्मण जरत्कारु स्त्री ग्रहण करने को पृथ्वीमें फिरने लगा परन्तु स्त्रीको न पाया । १ । वह ब्राह्मण अपने पितरों के वचन को याद कर कभी वनमें जाकर कन्याकी भिक्षा को मधुर वाणी तीन वार बोला । २ । उस समय वासुकी सर्प अपनी बहिन को ले ब्राह्मण को भिक्षार्थ देने लगा, उस ने अपने नामवाली न जान कर स्वीकार किया । ३ । क्योंकि उसके मनमें यह बात प्रविष्टथी कि मैं अपनेही नामवाली भार्या को ग्रहण करूंगा । ४ । वह बड़ा बुद्धिमान तपस्वी ब्राह्मण उस वासुकी से बोला हे सर्प इस तेरी बहिन का क्या नाम है सत्य कह । ५ । वासुकि बोला हे जरत्कारु इस मेरी छोटी बहिन का नाम जरतकारु है मैं इस को तेरी भार्यार्थ देताहूं

CHAPTER XIV,

(ASTIK PARB CONTINUED.)

Jaratkaru then searched for a wife but could find none. One day remembering the words of his ancestors, he begged for a bride three times in a forest with a feeble voice and Vasuki brought his beautiful sister to offer him. Jaratkaru hesitated to accept her as bride, as he thought she might not be of the same name with him and he asked Vasuki the name of his sister. Vasuki replied that the name of his sister was Jaratkaru and begged to accept her as bride. Jaratkaru accepted her and the two were married with due rights.

च्छोमांद्विजोत्तम ॥ ६ ॥ एवमुक्त्वाततःप्रादाद्भार्यार्थे वरवर्णिनीम् । सचतांप्रतिज-
ग्राहविधिदृष्टेनकर्मणा ॥ ७ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वाणि वासुकिस्वसृ
वरणे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सौतिरुवाच । मात्राहिभुजगाःशप्ताः पूर्वंब्रह्मविदांवर । जनमेजयस्यवोयज्ञेधक्ष्यत्या
निलसारथिः ॥१॥ तस्यशापस्यशांत्यर्थं प्रददौपन्नगोत्तमः । स्वसारमृषयेतस्मैसुव्रताय
महात्मने ॥ २ ॥ सचतांप्रतिजग्राह विधिदृष्टेनकर्मणा । आस्तीकानामपुत्रश्चतस्यांजज्ञे
महामनाः ॥ ३ ॥ तपस्वीचमहात्माच वेदवेदाङ्गपारगः । समःसर्वस्यलोकस्य पितृमातृ
भयापहः ॥ ४ ॥अथदीर्घस्यकालस्य पाण्डवेयोनराधिपः । आजहारमहायज्ञं सर्पसत्र

तू इसे ग्रहण कर—और मैंने प्रथमसे इसको तेरेही लिये रक्खा है ॥ ६ ॥ ऐसा
कहकर अपनी भगिनी जरत्कारु को देदी, उस ब्राह्मण ने भी शास्त्रकी रीति से उस
को ग्रहणकिया ॥ ७ ॥

१४ अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय १५ ॥

उग्रश्रवाबोले ! हे ब्राह्मण पहिले सर्पोंकी माता ने सर्पों को शाप दिया था कि
अग्नि तुमको जन्मेजय के यज्ञ में भस्म करेगा ॥ १ ॥ उस शापकी शांति के लिये
वासुकि ने उस महात्मा उत्तम ऋषि को अपनी बहिन दी ॥ २ ॥ जरत्कारु ने
शास्त्रानुसार उस कन्या को ग्रहण किया और उस कन्या से आस्तीक उत्पन्नहुआ ३ ॥
वह तपस्वी, महात्मा, वेद ज्ञानी, सम्पूर्ण प्राणियों में समान और अपनी पितृ और
मातृभय को दूर करनेवाला हुआ ॥ ४ ॥ तिस उपरान्त बहुत काल व्यतीतहोनेपर
पाण्डवोंकी सन्तान राजा जन्मेजय ने बड़ा सर्प यज्ञ किया ऐसा सुनाजाता है ॥ ५ ॥

CHAPTER XV.

Sauti told the truth loving rishi (Shaunak) that in former days the mother of serpents had cursed her sons that they should be burnt in the sacrifice of Janmejaya. To weaken the effect of that curse Vasuki brought about the union of his sister with Jaratkaru. Astik was born of the rishi and Vasuki's sister. He learnt all the Vedas and was kind to all. He was the remover of the fear of his parents. When, after a long time, king Janmejaya performed his great snake sacrifice to annihilate the serpent race, Astik came to the rescue and saved the kinsmen of his mother from being burnt, He did good to his father's side also by producing sons. He paid his other debts study of the Vedas and asceticism. He

मितिश्रुतिः ॥५॥ तस्मिन्प्रवृत्तसत्रेंतुसर्पाणा मंतकायवै । मोचयामासताम्नागा नास्तीकःसुमहातपाः ॥ ६ ॥ भ्रातृंश्चमातुलांश्चैव तथैवान्यान्सपन्नगात् । पितृँश्चतारयामास संतत्यातपसायथा ॥ ७ ॥ व्रतैश्चविविधैर्ब्रह्मन्स्वाध्यायैश्चानृणोऽभवत् । देवांश्चतर्पयामासयज्ञैर्विविधदक्षिणैः ॥८॥ ऋषींश्चब्रह्मचर्येणसंततयाचपितामहान् । अपहृत्यगुरुंभारंपितॄणांसंशितव्रतः ॥९॥ जरत्कारुर्गतःस्वर्गंसहितःस्वैःपितामहैः । आस्तीकंचसुतंप्राप्य धर्मंचानुत्तमंमुनिः ॥१०॥ जरत्कारुःसुमहताकालेनस्वर्गमेयिवान् । एतदाख्यानमास्तीकं यथावत्कथितंमया । प्रब्रूहिभृगुशार्दूलकिमन्यत्कथयामिते ॥ ११ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्व० सर्पाणांमातृशाप मस्तात्रे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सर्पों के नाश के लिये उस यज्ञ के प्रवृत्तहोनेपर आस्तीक ने उस यज्ञ से सर्पों को बचाया अपनी नम्रता और तपस्या से आस्तीक ने मामा और उस के पुत्र तथा अन्य सर्पों को और अपने पितरों कोभी तारा ॥ ७ ॥ अनेक प्रकार के व्रतों से और वेद वेदांगसे ऋषि युक्तहुआ देवताओं को अनेक प्रकारकी दक्षिणाओं से तृप्त किया, जरत्कारु ब्रह्मचर्य व्रतसे ऋषियों को सन्तानके उत्पन्न करने से पितरों को तारकर और पितरों के बड़े भारको दूरकर, आस्तीक पुत्रको उत्पन्नकर उत्तम धनको प्राप्तहो कुछ बड़े काल के उपरान्त अपने पितरों के साथ स्वर्ग को गया यह बड़ाभागी आस्तीक आख्यान मैंने तुम से कह दिया हेभृगुवंशियों में श्रेष्ठ शौनक कहो अब मैं क्या कथा तुमसे कहूं ११॥

१५ अध्याय समाप्तः ॥

pleased the gods with sacrifices, the rishis with Brahmcharya and the pitris by producgin children. Long after the birth of Astika, Jaratkaru went with his ancestors to heaven. Sauti said, "The story of Astik has come to an end, What more do you wish to hear ?"

शौनकउवाच। सौतेत्वंकथयस्वेमां विस्तरेणकथांपुनः। आस्तीकस्यकवेःसाधोः शुश्रुषापरमाहिनः ॥ १ ॥ मधुरंकथ्यते सौम्यश्लक्ष्णाक्षरपदंत्वया। प्रीयामहेभृशंतात पितेवेदंप्रभाषसे ॥२॥ अस्मच्छुश्रूषणेनित्यं पिताहिनिरतस्तव। आचष्टैतद्यथाख्यानं पितातेत्वंतथावद ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच। आयुष्मन्निदमाख्यानमास्तीकं कथयामिते। यथाश्रुतंकथयत सकाशाद्वैपितुर्मया ॥४॥ पुरादेवयुगेब्रह्मन्प्रजापतिसुतेशुभे। आस्तां भगिन्यौरूपेण समुपेतेऽद्भुतेऽनघ ॥ ५ ॥ तेभार्येकश्यपस्यास्तांकद्रूश्चविनताचह। प्रादात्ताभ्यांवरंप्रीतः प्रजापतिसमःपतिः ॥६॥ कश्यपोधर्मपत्नीभ्यां मुदापरमयायुतः। वरातिसर्गंश्रुत्वैवं कश्यपादुत्तमंचते ॥ ७ ॥ हर्षादप्रतिमांप्रीतिं प्रापतुःस्मवरस्त्रियौ। वव्रेकद्रूःसुतान्नागान्सहस्रंतुल्यवर्चसः ॥ ८ ॥ द्वौपुत्रौविनतावव्रे कद्रुपुत्राधिकौबले।

अध्याय १६ ॥

शौनक बोले, हे सूत पुत्र, सज्जन और बड़े विद्वान् आस्तीककी इस कथाको बिस्तार से फिर कह क्योंकि हमको सुननेकी बड़ी इच्छा है । १ । हे सौम्य मधुर अक्षर वाले पदोंकी मधुरवाणी से तू कहता है हे तात हम बड़े प्रसन्न हैं तू अपने पिताकी समान भाषण करता है । २ । हमारे सुनाने में तेरा पिता सर्वदायुक्त रहता था और जैसे तेरेपिताने इस आख्यान को कहा था उसीप्रकार तू कह ॥ ३ ॥ उग्रश्रवाबोले, आयु के बढ़ानेवाले इस आख्यान को जिसप्रकार से मैंने अपने पिता से सुनाहै उसी रीति से मैं कहताहूं । ४ । हे ब्रह्मन् पहिले सतयुग में प्रजापतिकी पुत्री रूपवती और बड़ी अद्भुत दोबहिनें हुईं । ५ । उन में एककद्रु और दूसरी विनतानाम वालीथी वो कश्यप को ब्याही गई, और प्रजापतिकी समान कश्यपने प्रसन्नहोकर अपनी धर्म पत्नियोंको बर मांगनेकी आज्ञादी, इस वचन को सुनकर वह दोनों स्त्रियें बड़े हर्ष को प्राप्तहुईं, और उन में से कद्रु ने बराबर तेजवाले सहस्र नागपुत्र मागे । ८ । और

CHAPTER XVII.

(ASTIA PARV CONTINUED.)

Shaunak directed Sauti to relate in detail the history of the virtuous and learned Astik of which he was very fond, praised his eloquence which he said was equal to that of his father and requested him to repeat his father's version. 4. Sauti began to repeat what his father had once narrated, "In the Krita [golden] age;" he said, "Prajapti [Brahma] had two daughters, fair and virtuous, named Kadru and Vinta,, who were marriad to Kashyap. Being pleased with his good wives, he promised to grant each of the two a boon. The women were very happy on the prospect of getting a boon from their lord. Kadru asked the gift of a thousand children of equal power and Vinata expressed a desire to have

तेजसावपुष चैव विक्रमेणाधिकौचतौ ॥ ९ ॥ तस्यैभर्तावरंप्रादादत्यर्थंपुत्रमीप्सितम् । एवमास्त्विततिंचाह कश्यपंविनतातदा॥१०॥ यथावत्प्रार्थितंलब्ध्वाबरंतुष्टाऽभवत्तदा। कृतकृत्यातुविनतालब्ध्वावीर्याधिकौसुतौ ॥ ११ ॥ कद्रुश्चलब्ध्वापुत्राणां सहस्रंतुल्य वर्चसाम् । धार्यौप्रयत्नतोगर्भावित्युक्त्वा समहातपाः ॥ १२ ॥ तेभार्येवरसंतुष्टेकश्य पोवनमाविशत् । सौतिरुवाच ॥ कालेनमहताकद्रु रंडानांदशतीर्दश ॥१३॥ जनयामास विप्रेन्द्र द्वेचांडेविनतातदा । तयोरंडानिनिदधुःप्रहृष्टाःपरिचारिकाः ॥ १४ ॥ सोपस्वे देषुभांडेषु पंचवर्षशतानिच । ततःपंचशतेकालेकद्रूपुत्राविनिस्सृताः ॥१५॥ अंडाभ्यां विनतायास्तु मिथुनंनव्यदृश्यत । ततःपुत्रार्थिनीदेवी व्रीडिताचतपस्विनी ॥ १६ ॥ अंडंविभेदविनता तत्रपुत्रमपश्यत । अध्यर्धकायसम्पन्न मितरेणाप्रकाशता ॥ १७ ॥ सपुत्रःक्रोधसंरब्धःशशापैनामितिश्रुतिः । योऽहमेवं कृतोमातस्त्वयालोभपरीतया॥१८॥

विनता ने कद्रु से तेज, देह, बल और पराक्रम में अधिक दो पुत्र मागे ॥ ९ ॥ कश्यप ने उन को इच्छानुसार पुत्रों का वर दिया ऐसाही हो ऐसा विनता से कश्यप ने कहा ॥ १० ॥ इच्छित वर को पाकर विनता अति प्रसन्न हुई ॥ ११ ॥ और कद्रु समान तेजवाले हजार पुत्रों के वर को पाकर प्रसन्न हुई, यत्न से गर्भोंको धारण करना, इस प्रकार वरदान से प्रसन्न चित्तवाली स्त्रियों से कहकर कश्यप वनको चला गया, उग्रश्रवाबोले ! कुछकाल बाद कद्रु ने हजारअण्डे उत्पन्न किये और विनता ने दो, उनदोनों के अण्डोंकी दासियों ने ऊष्णपात्रों में पांचसौ वर्ष तक और रक्षा की ॥ १४॥ फिर कद्रु के पुत्र अण्डों में से निकले ॥ १५ ॥ विनता के दोनों अंडोंमें दोपुत्र न मालूम पड़े, फिर विनता ने लज्जितहो एक अंडे को तोड़ा, और उन में कमर से उपरांत आधा शरीरपुत्र का देखा और अर्धअंग को न देखा ॥ १७ ॥ उस पुत्र ने क्रोध में होकर

---

only two sons, superior to her sister's thousand in strength, vigour, size and bravery. 9. Kashyap granted their requests. They were very happy—Vinata with her two sons and Kadru with her thousand. Having satisfied the desires of his two wives, Kashyap went to the forest after advising them to rear their offspring carefully. After a long time Kadru laid a thousand eggs and Vinata two. The eggs were deposited carefully by maidservants in vessels containing warm water. 14. After the lapse of five hundred years Kadru's offspring burst out of the eggs but Vinata's eggs showed no such sign. She was therefore jealous and broke open one of the eggs which contained an embryo with the upper part of its body developed while the lower one was not yet formed. The child in the egg became very angry and cursed its mother saying, "Mother since thou hast maimed me by breaking the egg prematurely, thou shalt become

शरीरेणासमग्रेण तस्माद्दासीभविष्यसि। पंचवर्षशतान्यस्या ययाविस्पर्धसेसह ॥१९॥ एषचत्वांसुतोमातर्दासीत्वान्मोचयिष्यति । यद्येनमपिमातस्त्वं मामिवांडविभेदनात् ॥ २० ॥ नकरिष्यस्यनंगंवाव्यंगंवापितपस्विनम् । प्रतिपालयितव्यस्ते जन्मकालोऽस्य धीरया ॥ २१ ॥ विशिष्टबलमीप्संत्या पंचवर्षशतात्परः । एवंशप्त्वाततःपुत्रोविनता मंतरिक्षगः ॥ २२ ॥ अरुणोदृश्यते ब्रह्मन्प्रभात समयेयदा । आदित्यरथमध्यास्ते सारथ्यंसमकल्पयत् ॥ २३ ॥ गरुडोऽपियथाकालं जज्ञेपन्नगभोजनः। सजातमात्रोविनतां परित्यज्यखमाविशत् ॥ २४ ॥ आदास्यन्नात्मनोभोज्य मन्नंविहितमस्ययत् । विधात्राभृगुशार्दूल क्षुधितःपतगेश्वरः ॥ २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआदिपर्वणिआस्तीकपर्वणिसर्पादीनामुत्पत्तौ
षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अपनी माता को शाप दिया कि हे माता लोभ युक्त तूने मुझको असम्पूर्ण अंग से युक्त किया इस कारण पांचसौ वर्ष तक जिसकी तू हिर्स करती है उसकी दासी होगी, और हे माता यह दूसरा तेरा पुत्र तुझको दासी भाव से छुड़ावेगा यदि अण्डे को तोड़ने से तू इसको भी मेरेसमान अपूर्णांग न करेगी और धैर्य के साथ तुझे जन्मकाल को पूर्ण करना चाहिये ॥ १२ ॥ यदि तू इसको अधिक बलवान् करना चाहती है तो इस को ५ सौ वर्ष के उपरान्त तोड़ना चाहिये ऐसा शाप माताको देकर वह पुत्र आकाशको उड़गया और हे ब्रह्मन् प्रभात समय में वह अरुण दिखाई देता है, और सूर्य के रथ का सार्थी है ॥ २३ ॥ गरुड पन्नगों का खानेवालाभी अपने समय में उत्पन्न हुआ और उसी काल माताको त्याग आकाश को उड़गया ॥ २४ ॥ हे भृगु-वंशियों में श्रेष्ठ ! वह भूखा और पक्षियों में श्रेष्ठ ईश्वर के दिये भोग्यपदार्थ को पाने की चेष्टा करने लगा ॥ १६ ॥ अध्याय समाप्तः ॥

---

a slave and if thou wait another five hundred years without destroying the other egg, the child in that egg will deliver thee from bondage. If thou wish to bring forth a healthy child take care of the egg." Having thus cursed the mother the child rose to the sky and became the charioteer of the Sun. After the lapse of the five hundered years came out *Gadur* the serpent eater, from the other egg. As soon he saw the light of the day the king of birds rose upon wings in search offood.

सौतिरुवाच। एतस्मिन्नेवकालेतु भगिन्यौतेतपोधन। अपश्यतांसमायातेउच्चैःश्रवसमंतिकात् ॥ १ ॥ यंतंदेवगणाःसर्वेहृष्टरूपमपूजयन्। मथ्यमानेऽमृतेजातमश्वरत्नमनुत्तमम् ॥ २ ॥ अमोघबलमश्वानामुत्तमंजगतांवरम्। श्रीमंतमजरंदिव्यंसर्वलक्षणपूजितम् ॥ ३ ॥ शौनकउवाच। कथंतदमृतंदेवैर्मथितंक्वचशंसमे। यत्रजज्ञेमहावीर्यःसोऽश्वराजोमहाद्युतिः ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच। ज्वलंतमचलंमेरुंतेजोराशिमनुत्तमम्। आक्षिपंतंप्रभांभानोः स्वशृंगैःकांचनोज्ज्वलैः ॥ ५ ॥ कनकाभरणंचित्रंदेवगंधर्वसेवितम्। अप्रमेयमनाधृष्यमधर्मबहुलैर्जनैः ॥ ६ ॥ व्यालैरावारितंघोरैर्दिव्यौषधिदीपितम्। नाकमावृत्यतिष्ठंतमुच्छ्रयेणमहागिरिम् ॥ ७ ॥ अगम्यंमनसाऽप्यन्यैर्नदीवृक्षसमन्वितम्। नानापतंगसंघैश्चनादितंसुमनोहरैः ॥ ८ ॥ तस्यशृंगमुपारुह्य बहुरत्नाचितंशुभम्।

अध्याय ॥ १७ ॥

उग्रश्रवाबोले हेतपोधन? इसी बीच में दोनों बहिनों कद्रु और विनताने समीप आयेहुए उच्चैश्रवा नाम घोड़े को देखा, जिस रूपवान् अश्व को सम्पूर्ण देवताओं ने अमृत के लिये मथन कियेहुए समुद्र से निकालाथा ॥ २ ॥ जो अश्वों में अमोघबल, चलनेवालों में श्रेष्ठ शोभायुक्त, वृद्धभाव से रहित सम्पूर्ण दिव्य लक्षणों से युक्तथा ॥ ३ ॥ शौनकबोले कैसे देवताओं ने अमृत मथा और कहां मथा, जिस मथन समय में वह पराक्रमी अश्व उत्पन्न हुआ ॥ ४ ॥ उग्रश्रवाबोले जलतेहुए तेज के समूह, सर्वोत्तम सुवर्णकी समान उज्वल अपने शिखरों से सूर्यकी कान्तिको ढकतेहुए विचित्र सुवर्ण के आभर्णों से युक्त देवता और गन्धर्वों से सेवित, मन वा वाणी से प्रमाण करने के अयोग्य, अधर्म प्रधान प्राणियों से और भयानक सर्पों से व्याप्त दिव्य औषधियों से प्रकाशमान् स्वर्गकी समान ऊंचे साधारण मनुष्यों का मन से न प्राप्त होने लायक नदी और वृक्षों से युक्त मनोहर और अनेक प्रकार के

CHAPTER XVII.

(ASTIK PARV CONTINUED.)

In those days the two sisters saw *Uchchaisrava*, the beautiful steed which was received from the Ocean at the time of its churning for nectar. The horse was the best of its kind, divinely beautiful and of permanent youth and strength. 3. *Shaunak* asked *Sauti* to tell all about the churning of the Ocean for the sake of nectar. Sauti said, " Meru is a mountain looking like a blaze of light. The suns's rays are dispersed by its peaks. Abounding in gold and other precious materials that mountain is a favourite resort for gods and the Gandharvs. Its heights are not accessible to sinners, It is the home of various ferocious animals and has a great store of medicinal herbs. Its peaks rising to the sky are un-

अनंतकल्पमुद्विद्धंसुराःसर्वेःमहौजसः ॥ ९ ॥ तेमंत्रयितुमारब्धास्तत्रासीनादिवौकसः
अमृतायसमागम्य तपोनियमसंयुताः ॥१०॥ तत्रनारायणोदेवो ब्रह्माणमिदमब्रवीत्।
चिंतयत्सुसुरेष्वेवं मंत्रयत्सुचसर्वशः ॥ ११ ॥ देवैरसुरसंघैश्च मथ्यतांकलशोदधिः।
भविष्यत्यमृतंतत्रमथ्यमानेमहोदधौ ॥ १२ ॥ सर्वौषधीःसमावाप्य सर्वरत्नानिचैवह।
मंथध्वमुदधिंदेवावेत्स्यध्वममृतंततः ॥ १३ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि अमृतमंथने
सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

सौतिरुवाच। ततोऽभ्रशिखराकारैर्गिरिशृंगैरलंकृतम्। मंदरंपर्वतवरंलताजालसमा
कुलम् ॥ १ ॥ नानाविहंगसंघुष्टंनानादंष्ट्रिसमाकुलम्। किन्नरैरप्सरोभिश्चदेवैरपिचसे

पक्षियोंके शब्दों से नादित विष्णु व आकाश की समान बड़े सुमेरु पर्वत के अनेक प्रकार के रत्नोंसे युक्त ऊंचे शिखर में चढ़ कर सम्पूर्ण बलवान् देवता बैठकर अमृतको प्राप्त करनेकी सलाह करने लगे। १०। वहांपर इस प्रकार सम्पूर्ण देवताओं के विचार और सोच करतेसमय नारायण ने ब्रह्मा से कहा।११। देवता और असुरों के समूह ने समुद्रको मथने का विचार किया है उस के मथन होने पर वहां अमृत निकलेगा।१२। सम्पूर्ण औषधि और रत्नों को प्राप्त होकर हे देवताओं समुद्रको मथो तिस के उपरान्त अमृत को प्राप्त करोगे। १३।

१७ अध्याय समाप्त ॥

अध्याय १८ ॥

उग्रश्रवाबोले, बादल के शिखरों की समान पर्वतके शिखरों से शोभित लताओंके समूह से व्याप्त नानाप्रकारकी पक्षियों की वाणियों से युक्त और अनेक प्रकार के हिंस-

surpassed. Graced with trees and streams it resounds with the melody of the singing birds. On the heights of that ancient mountain the high and mighty gods once held a conclave. They were in search for nectar. They had practiced penances and were observers of the rules of law (divine). 10. Having observed the assembly of gods so anxious for nectar, Narayan said to Brahma, " Churn Ocean with the help of gods and Asurs to get necatr with other mediaines and gems.

CHAPTER VXIII,

(ASTIK PARB CONTINUED.)

Sauti said, " There is a mountain named Mandar with peaks touching the clouds. It is the foremost in beauty of its verdure. It abounds in singing birds and beasts of prey. It is the resort

वितम् ॥ २ ॥ एकादशसहस्राणियोजनानांसमुच्छ्रितम् । अधोभूमेःसहस्रेषुतावत्स्वे
वप्रतिष्ठितम् ॥ ३ ॥ तमुद्धर्तुमशक्तावैसर्वेदेवगणास्तदा । विष्णुमासीनमभ्येत्यब्रह्मा
णंचेदमब्रुवन् ॥ ४ ॥ भवंतावत्रकुर्वातांबुद्धिंनैःश्रेयसीपराम् । मंदरोद्धरणेयत्नः क्रियतां
चहितायनः ॥ ५ ॥ सौतिरुवाच । तथेतिचाब्रवीद्विष्णुर्ब्रह्मणासहभार्गव । अचोदय
दमेयात्माफणींद्रंपद्मलोचनः ॥ ६ ॥ ततोऽनंतःसमुत्थायब्रह्मणापरिचोदितः । नाराय
णेनचाप्युक्तस्तस्मिन्कर्मणिवीर्यवान् ॥ ७ ॥ अथपर्वतराजानंतमनंतोमहाबलः ।
उज्जहारबलाद्ब्रह्मन्सवनंसवनौकसम् ॥ ८ ॥ ततस्तेनसुराःसार्धंसमुद्रमुपतस्थिरे ।
तमूचुरमृतस्यार्थेनिर्मथिष्यामहेजलम् ॥ ९ ॥ अपांपतिरथोवाचममाप्यंशोभवेत्ततः ।
सोढाऽस्मिविपुलंमर्दं मंदरभ्रमणादिति ॥ १० ॥ ऊचुश्चकूर्मराजानमकूपारेसुरासुराः ।

कजीवों से युक्त, किन्नर, अप्सरा और देवताओं से सेवित ११००० योजन ऊँचा इतने ही योजन पृथ्वी में वर्त्तमान ऐसे पर्वतों में श्रेष्ठ मंद्राचल को उठाने में सम्पूर्ण देवता असमर्थ हो विष्णु और ब्रह्मा के समीप जाकरबोले। ४ । आप दोनों यहांपर सर्वोत्तम कल्याणकारी बुद्धि का विचार करें, जैसेहो हमारेहित के लिये मंद्राचल को उठाने का यत्न करें। ५ । उग्रश्रवाबोले हे भार्गवब्रह्मा और विष्णु ने कहा ऐसाही किया जायगा, विष्णुने अनन्त सर्प को इस विषय में आज्ञादी फिर ब्रह्मा और नारायणके कहने से अनन्त ने उस के करनेकी चेष्टाकी हे ब्रह्मन् ! अनन्त ने वनों सहित पर्वत को अपने बल से उठालिया । ८ । फिर उस अनन्त के साथ सम्पूर्ण देवता समुद्र के समीप जाकरबोले कि अमृत के लिये तेरेजल को हम मथेंगे । ९ । समुद्र ने देवताओं से कहा कि मेराभी अंश उस में होना चाहिये क्योंकि मंद्राचल के घुमाने से बड़ेभारी मर्दन को मैं सहूंगा। १० । सुर और असुर कूर्मों के राजा से बोले कि समुद्र में इस पहाड़ का

---

of gods, Apsaras and Kinners. The gods failed to tear it up from its deeprooted base and came to Vishnu and Brahma and asked them to devise some good scheme to uproot the mountain. 5. Vishnu and Brahma granted their request and Vishnu entrusted the hard task to Anant, the chief of snakes, who lifted it up with all its inhabitants and wood. The gods came with Anant to the Ocean and asked the sea god's permission to churn the water. 9. He consented to it on the promise of receiving a share from the nectar. The gods then went to the Tortise king and asked him to hold the mountain on his back. The king agreed to it and Indra placed the mountain or his back with machinery. The gods and Asurs joined to make Mandar their churning staff and Vasuki the rope for the purpose of bringing out nectar from the Ocean. The

अधिष्ठांनगिरेरस्यभवान्भवितुमर्हति ॥ ११ ॥ कूर्मेणतुनथेत्युक्त्वाहष्ठमस्यसमर्पितम् । तंशैलंतस्यपृष्ठस्थंयंत्रेणेंद्रोन्यपीडयत् ॥ १२ ॥ मंथानंमंदरंकृत्वा तथानेत्रंचवासुकिम् । देवामथितुमारब्धाःसमुद्रंनिधिमंभसाम् ॥ १३ ॥ अमृतार्थेपुराब्रह्मँस्तथैवासुरदानवाः । एकमंतमुपाश्लिष्टानागराज्ञो महासुराः ॥ १४ ॥ विबुधाःसहिताःसर्वेयतःपुच्छंततः स्थिताः । अनंतो भगवान्देवो यतो नारायणस्ततः । शिरउत्क्षिप्य नागस्यपुनः पुनर वाक्षिपत् ॥ १५ ॥ वासुकेरथनागस्यसहसाऽऽक्षिप्यतः सुरैः । सधूमाः सार्चिषोवा-तानिष्पेतुरसकृन्मुखात् ॥ १६ ॥ तेधूमसंघाः संभूतामेघसंघाः सविद्युतः । अभ्यवर्ष न्सुरगणान्श्रमसंतापकर्शितान ॥ १७ ॥ तस्माच्चगिरिकूटाग्रात्प्रच्युताः पुष्पवृष्टयः । सुरासुरगणान्सर्वान्समंतात्समवाकिरन ॥ १८ ॥ बभूवात्रमहानादोमहामेघरवोपमः । उदधेर्मथ्यमानस्यमंदरेणसुरासुरैः ॥ १९ ॥ तत्रनानाजलचराविनिष्पिष्टामहाद्रिणा ।

आधार तू होने के योग्य है । ११ । कूर्मने स्वीकार किया और उस पर्वत के लिये अ-पनी पीठ दी, इन्द्र ने उस पर्वत को कछुएकी पीठ पर रख यन्त्र से मथना प्रारम्भ किया रई मन्द्राचल को बनाया और वासुकी सर्पकी मथन रस्सी बनाई, देवताओं ने समुद्र को मथना प्रारम्भ किया ॥ १३ ॥ हे ब्रह्मन् ! पहिले अमृत के हेतु असुर और दानव वासुकी के मुखकी तरफ लगे ॥ १४ ॥ और सम्पूर्ण देवता पूँछकी तरफ युक्त हुए, अनन्त भगवान देव नारायण ने वासुकी के शिर को उठा २ कर बारम्बार उसके विषको ग्रहण किया, फिर नागराज वासुकी के मुखसे शीघ्र मथने पर धुएँ और अग्नि से मिश्रित वायु निकली ॥ १६ ॥ वह धुओं के समूह बिजुली सहित बादलहोकर परिश्रम से दुर्बल देवताओंपर वर्षनेलगे ॥ १७ ॥ और उस पहाड़ के ऊपर से देवता और असुरों के समूहपर पुष्पोंकी बर्षा चारों तरफ से गिरने लगी ॥ १८ ॥ मथेहुए समुद्र मेंसे बड़े बादलोंके

Asurs took the serpent by the hood and the gods held the tail. Anant raised the hood and lowered it at intervals. Smoke and flames came out of the mouth of Vasuki with friction and being changed into clouds and lightning fell upon the tired gods. 17. Flowers fell on the gods from the trees on the whirling Mander. A terrible roar then came out of the Ocean like the thunder at the last dissolution of the world. Numerous animals in the water were crushed to death as well as, many inhabitants of the lower regions and the world of Varun. Large trees fell down from the mountain top in the waters below and the forests on it took fi e by the friction of trees and whole looked like clouds charged with lightning. As the fire spread it burnt the lions, elephants and other animals living on the mountain and numberless corpses rolled down

विलयंसमुपाजग्मुःशतशोलवणांभसि ॥ २० ॥ वारुणानिचभूतानिविविधानिमही
धरः । पातालतलवासीनिविलयंसमुपानयत् ॥ २१ ॥ तस्मिंश्चभ्राम्यमाणेऽद्रौसंघृ-
ष्यंतः परस्परम् । न्यपतन्पतगोपेताःपर्वताग्रान्महाद्रुमाः ॥ २२ ॥ तेषांसंघर्षजश्चाग्नि
रर्चिर्भिःप्रज्वलन्मुहुः । विद्युद्भिरिवनीलाभ्रमावृणोन्मंदरंगिरिम् ॥ २३ ॥ ददा
हकुंजरांस्तत्रसिंहांश्चैवविनिर्गतान् । विगतासूनिसर्वाणिसत्वानिविविधानिच ॥ २४ ॥
तमग्निममरश्रेष्ठःप्रदहंतमितस्ततः । वारिणामेघजेनेंद्रःशमयामाससर्वशः ॥ २५ ॥
ततोनानाविधास्तत्रसुस्रुवुःसागरांभसि । महाद्रुमाणांनिर्यासावहवश्चौषधीरसाः ॥२६॥
तेषाममृतवीर्याणांरसानांपयसैवच । अमरत्वंसुराजग्मुःकांचनस्यचनिःस्रवात् ॥२७॥
ततस्तस्यसमुद्रस्यतज्जातमुदकंपयः । रसोत्तमैर्विमिश्रंचततःक्षीरादभूद्घृतम् ॥ २८ ॥
ततोब्राह्मणमासीनंदेवावरदमब्रुवन् । श्रांताःस्मसुभृशंब्रह्मन्नोद्भवत्यमृतंचतत् ॥२९॥

गर्जनाकी समान भारीशब्द होनेलगा वहांपर अनेकप्रकार के जलजीव समुद्र में नष्ट होगये ॥ २० ॥ और वरुण लोक के अनेक प्रकार के प्राणी और पाताल बासी बहुत से उस पर्वत ने नाश किये और उस पहाड़ के घूमने पर परस्पर टकराकर पक्षियों सहित बड़े २ बृक्ष पर्वत के अग्रभाग से नीचे गिरे ॥ २२ ॥ उन पेड़ोंके घिसने से उत्पन्न हुई अग्नि ने बारबार जलती हुई विजुलीकी समान मन्द्राचल पर्वत को घेर लिया और वहांपर हाथी, शेर जो पहाडों की गुफाओं से निकले थे और अनेक पकार के जीवों को गतप्राण किया ॥ २४ ॥ इधर उधर जलती हुई अग्नि को देवता इन्द्र ने बादलों के जल से शांत किया ॥२५॥ तिसके उपरान्त बड़े २ बृक्षों और बहुतसी औष-धियों के नाना प्रकार के रस समुद्र में गिरने लगे ॥ २६ ॥ अमृत के गुण वाले उन रसों और दूध से और सुवर्ण पर्वत के दिव्य प्रभाव से देवता अमर होगये ॥ तिस के उपरान्त उस समुद्र का जल उन उत्तम रसों के मिलनेसे दूध होगया और उस से घृत

and floated on the waters.24. Indra extinguished the fire by rain fall. When churning had gone on for some time the gums of various trees and herbs were mixed in the waters of the Ocean and the gods became immortal by drinking out of that water which had acquired the properties of nectar. After a long time the milky waters produced butter having the properties of various medicinal herbs and gums, but necter did not come out yet. Then the gods went to Brahma and said. "We are tired with churning and can work no more. There is no trace of nectar as yet. We can do nothing more without the aid of Narayan." 30. Brahma then requested Narayan to give fresh energy to the gods for churning the Ocean. Narayan granted the request and gave them additional strength. The churning was recommenced with redoubled

विनानारायणंदेवंसर्वेऽन्येदेवदानवाः। चिरारब्धमिदंचापिसागरस्यापिमंथनम् ॥३०॥
ततोनारायणंदेवंब्रह्मावचनमब्रवीत्। विधत्स्वैषांबलंविष्णोभवानत्रपरायणम् ॥३१॥
विष्णुरुवाच ॥ बलंददामिसर्वेषांकर्मैतद्येसमास्थिताः। क्षोभ्यतांकलशःसर्वेर्मंदरःपरि
वर्त्यताम् ॥ ३२ ॥ सौतिरुवाच ॥ नारायणवचःश्रुत्वाबलिनस्तेमहोदधेः। तत्पयः
सहिताभूयश्चक्रिरेभृशमाकुलम् ॥ ३३ ॥ ततःशतसहस्रांशुर्मथ्यमानात्तुसागरात्।
प्रसन्नात्मासमुत्पन्नाः सोमःशीतांशुरुज्ज्वलः ॥ ३४ ॥ श्रीरनंतरमुत्पन्नाघृतात्पांडुर
वासिनी। सुरादेवीसमुत्पन्नातुरगःपांडुरस्तथा ॥ ३५ ॥ कौस्तुभस्तुमणिर्दिव्यउत्प
न्नोघृतसंभवः। मरीचिविकचः श्रीमान्नारायणउरोगतः ॥ ३६ ॥ श्रीःसुराचैवसोमश्च
तुरगश्चमनोजवः। यतोदेवास्ततोजग्मुरादित्यपथमाश्रिताः ॥३७॥ धन्वंतरिस्ततोदेवोव

हुआ ॥ २८ ॥ फिर ब्रह्मा से देवताबोले कि हेब्रह्मन्! हम अत्यन्त थकितहोगये और वह अमृत अभी उत्पन्न नहीं हुआ, नारायण देवके बिना बहुतकाल से आरम्भ कियेहुए समुद्र के मथनको समर्थ नहीं हैं ॥ ३० ॥ ब्रह्मा ने नारायणदेवसे कहा कि हे विष्णु इन देवताओं के बलको बढ़ाओ और आपही यहांपर रक्षकहैं ॥ ३१ ॥ विष्णु बोले जो इस कर्म में युक्त हैं मैं उन सबको बलदेताहूं यह सब समुद्र को मंद्राचलसे मथें ॥ ३२ ॥ उग्रश्रवाबोले नारायण के वचन को सुनकर बड़े बलवान् देवता असुरों ने एकत्रितहो समुद्र के जलको अत्यन्त मथा। ३३। फिर लाख किरणोंसे युक्त प्रसन्नात्मा उज्वल शीतल किरणोंवाला चन्द्रमा समुद्रसे उत्पन्न हुआ। ३४। इस के उपरांत घृतरूप समुद्र से श्वेतवस्त्र पहिने लक्ष्मी सुरादेवी और श्वेतघोड़ा उत्पन्नहुए ॥ ३५ ॥ और नारायण के हृदय में प्राप्तहुए किरणों से प्रकाशमान् शोभायुक्त दिव्य कौस्तुभमणि उस समुद्र से उत्पन्नहुआ ॥ ३६ ॥ लक्ष्मी सुरादेवी चन्द्रमा सूर्यके मार्ग को आश्रय कर देवताओंकी

---

energy. After some time the moon with its mild rays came out of the Ocean. Then came out in succession Lakshmi, in her white dress, wine, the white horse, and Kaustav, the precious gem worn on the breast by Narayan. All these came on the side of the gods. 37. Then came out Dhanwantri holding nectar in a white vessel. The Asurs set up a loud cry on seeing him for nectar. Then came out the large elephant, having two pairs of white tusks and was taken possession of by Indra. With further churning poison appeared and gave out obnoxious fumes stupefying those who in haled it. Mahadev poured it into his throat to save the living beings, at the request of Brahma and he his called Nilkanth (blue throat) from that day. Seeing this the Asurs prepared to fight

पुष्पानुदतिष्ठत । श्वेतंकमंडलुंबिभ्रदमृतंयत्रतिष्ठति ॥ ३८ ॥ एतदत्यद्भुतंदृष्ट्वादानवानांसमुत्थितः । अमृतार्थेमहान्नादोममेदमितिजल्पताम् ॥ ३९ ॥ श्वेतैर्दंतैश्चतुर्भिस्तुमहाकायस्ततः परम् । ऐरावणोमहानागोऽभवद्वज्रभृताधृतः ॥ ४० ॥ अतिनिर्मथनादेवकालकूटस्ततःपरः । जगदावृत्यसहसासधूमोऽग्निरिवज्वलन् ॥ ४१ ॥ त्रैलोक्यंमोहितंयस्यगंधमाघ्रायतद्विषम् । प्राग्रसल्लोकरक्षार्थंब्रह्मणोवचनाच्छिवः ॥ ४२ ॥ दधारभगवान्कंठेमंत्रमूर्तिर्महेश्वरः । तदाप्रभृतिदेवस्तुनीलकंठइतिश्रुतिः ॥ ४३ ॥ एवंतदद्भुतंदृष्ट्वानिराशादानवाःस्थिताः । अमृतार्थेचलक्ष्म्यर्थेमहांतंवैरमाश्रिताः ॥ ४४ ॥ ततोनारायणोमायांमोहिनींसमुपाश्रितः। स्त्रीरूपमद्भुतंकृत्वादानवानभिसंश्रिताः॥४५॥ ततस्तदमृतंतस्यैददुस्तेमूढचेतसः । स्त्रियैदानवदैतेयाःसर्वेतद्गतमानसाः ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि अमृतमंथनेअष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

ओर को गये । ३७ । धन्वन्तरीदेव अमृत पात्र को हाथमें लिये समुद्र से निकले ।३८। इस आश्चर्य को देख अमृत के लिये मेरा २ कहते हुए दानवों ने बड़ा शब्द किया ।३९। फिर चार श्वेत दांतोंवाला बड़ा ऐरावत हाथी उत्पन्नहुआ जो इन्द्र ने ग्रहणकिया ॥४०॥ फिर अत्यन्त मथने से विष धुएं सहित अग्नि के समान सम्पूर्ण जगत् को घेरताहुआ उत्पन्न हुआ जिसकी गन्ध से त्रैलोक्य मोहितहुआ उस विष को ब्रह्मा के कहने से लोक कीरक्षाके कारण शिवने ग्रहणकिया ॥ ४२ ॥ मन्त्र मूर्त्ति शंकर भगवान ने उस विषको कण्ठ में रख लिया और उसी दिनसे नीलकण्ठ नाम से प्रसिद्धहुए ॥ ४३ ॥ इस अद्भुत बातको देख अमृत और लक्ष्मी के लिये बड़े बैरको आश्रय कर निराश खड़े रहे ।४४। तिस उपरांत नारायण अद्भुत स्त्री का मोहनी रूप बनाकर दानवों के सन्मुख खड़े हुए और मूढ चित्तवाले दानव और दैत्यों ने जो उस स्त्री पर आसक्तहोगये थे वह अमृत का कलश उस स्त्री को देदिया ॥ ४६ ॥

अध्याय समाप्तः ॥

---

with the gods for possession over Lakshmi and nectar.44. There upon Narain called his bewitching Maya to his aid, and assuming a ravishing female form coquetted with the Asurs. They lost their senses on seeing her beaunty and gave her the vessel containing nectar.56.

सौतिरुवाच ॥ अथावरणमुख्यानिनानाप्रहरणानिच। प्रगृह्याभ्यद्रवन्देवान्सहितादैत्य दानवाः ॥ १ ॥ ततस्तदमृतंदेवोविष्णुरादायवीर्यवान्। जहारदानवेंद्रेभ्योनरेणसहितःप्रभुः ॥२॥ ततोदेवगणाःसर्वेपपुस्तदमृतंतदा। विष्णोःसकाशात्संप्राप्यसंभ्रमेतुमुले सति ॥ ३ ॥ ततः पिबत्सुतत्कालंदेवेष्वमृतमीप्सितम्। राहुर्विबुधरूपेणदानवःप्रापिबत्तदा ॥ ४ ॥ तस्यकंठमनुप्राप्तेदानवस्यामृतेतदा। आख्यातंचंद्रसूर्याभ्यांसुराणांहितकाम्यया ॥ ५ ॥ ततोभगवतातस्यशिरश्छिन्नमलंकृतम्। चक्रायुधेनचक्रेणपिबतोऽमृतमोजसा ॥ ६ ॥ तच्छैलशृंगप्रतिमंदानवस्यशिरोमहत्। चक्रच्छिन्नंखमुत्पत्यननादातिभयंकरम् ॥ ७ ॥ तत्कबंधंपपातास्यविस्फुरद्धरणीतले। सपर्वतवनद्वीपांदैत्यस्याकंपयन्महीम् ॥ ८ ॥ ततोवैरविनिर्बंधःकृतोराहुमुखेनवै। शाश्वतश्चंद्रसूर्याभ्यांग्रसत्य

अध्याय ॥ १९ ॥

उग्रश्रवा बोले उत्तम २ कवचों और आयुधों को लेकर दैत्य और दानव एकत्रितहो देवताओं पर दौड़े ॥ १ ॥ इस के उपरान्त उस अमृत को नर सहित विष्णु ने दानवों से लेलिया ॥ २ ॥ दोनों समूह के उस अमृत को ग्रहण करने पर अत्यन्त प्रीति पूर्वक विष्णु से लेकर देवताओं ने वह अमृत पिया ॥ ३ ॥ उसी समय अभीष्ट अमृत को राहुने देवता बन कर पिया ॥ ४ ॥ उस दानव के कण्ठ में अमृत के पहुँचने पर देवताओं के हितकी इच्छा से चन्द्रमा और सूर्य ने इस बातको प्रकाश कर दिया और अमृत पीते हुए उस राहु के शिर को भगवान विष्णु ने चक्र से काटा ॥ ६ ॥ वह पर्वत के शिखरकी समान उस दानव का शिर आकाश को गया और उस ने बड़ा भयंकर शब्द किया ॥ ७ ॥ और बाकी शरीर पृथ्वी पर गिरा जिस ने गिरते समय पर्वत वन और द्वीपों सहित पृथ्वी को हिला दिया ॥ ८ ॥ तिस के उपरान्त बैर का

CHAPTER XIX.

(ASTIK PARB CONTINUED.)

The Asurs with arms and armour attacked the gods and Narayan and Nar carried away the nectar from the Asurs. Then all classes of gods drank nectar which Vishnu distributed among them. While the gods were partaking of the long-wished for nectar, one of the Asurs, named Rahu joined the party in the disguise of a god. The sun and the moon discovered him to the gods and Narayan beheaded him with his discus. The huge head of the Danav, resemling a mountain peak, cut off by the discus rose to the sky and began to utter dreadful noises. The earth, with its mountains, forests and islands shook at the fall of his body. From that time a deadly enmity has sprung up between Rahu's head and the sun and the moon and it tries to swallow

ग्रापिचैवतौ ॥ ९ ॥ बिहायभगवांश्चापिस्त्रीरूपमतुलंहरिः । नानाप्रहरणैर्भीमैर्दानवा-
न्समकंपयत् ॥ १० ॥ ततःप्रवृत्तःसंग्रामःसमीपेलवणांभसः । सुराणामसुराणांचसर्व
घोरतरोमहान् ॥ ११ ॥ प्रासाश्चविपुलास्तीक्ष्णान्यपतंतसहस्रशः । तोमराश्चसुतीक्ष्णा
ग्राःशस्त्राणिविविधानिच ॥ १२ ॥ ततोऽसुराश्चक्रभिन्नावमंतोरुधिरंबहु । असिशक्ति
गदारुग्णानिपेर्धरणीतले ॥ १३ ॥ छिन्नानिपट्टिशैश्चैवशिरांसियुधिदारुणैः । तप्त
कांचनमालीनिनिपेतुरनिशंतदा ॥ १४ ॥ रुधिरेणानुलिप्तांगानिहताश्चमहासुराः ॥
अद्रीणामिवकूटानिधातुरक्तानिशेरते॥१५॥ हाहाकारःसमभवत्तत्रतत्रसहस्रशः । अन्यो
न्यंछिंदतांशस्त्रैरादित्येलोहितायति ॥ १६ ॥परिघैरायसैस्तीक्ष्णैःसन्निकर्षेचमुष्टिभिः ।
निघ्नतांसमरेऽन्योन्यंशब्दोदिवमिवास्पृशत् ॥ १७ ॥ छिंधिभिंधिप्रधावत्वंपातयाभि

प्रारम्भ राहु के मुख ने चन्द्र सूर्य के साथ किया और अबतकभी चन्द्रमा और सूर्य को ग्रास करता है ॥ ९ ॥ भगवान नारायण नेभी उस उत्तम स्त्री रूप को छोड़ कर नाना प्रकार के भयानक अस्त्रों से दानवों को कपाया ॥ १० ॥ तिस के उपरान्त खारी समुद्र के किनारे देवता और असुरों का महा घोर युद्ध हुआ, प्रास आयुध जो बड़े तीक्ष्ण थे वह हजारों सेना में बरसने लगे औरभी अनेक प्रकार के शस्त्र छूटने लगे ॥ १२ ॥ फिर चक्र से काटे हुए राक्षस रुधिर गिराते हुए तलवार आदि शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी पर गिरने लगे ॥ १३ ॥ बड़े कठोर पट्टिस नाम आयुधों से कटेहुए और उत्तम सुवर्णकी माला पहिरेहुए शिर निरन्तर कट २ कर गिरने लगे ॥१४॥ रुधिर से सनेहुए मरेहुए दैत्य जमीन में पड़े ऐसे जान पड़ते थे जैसे गेरुकी धातुवाले शिखरैं ।१५। वहां अनेक शस्त्रों से प्रहार करनेवालों का बड़ा हाहाकार शब्द होनेलगा, सूर्य्यास्त के समय ॥ १६ ॥ बड़े तीक्ष्ण लोहे के बने हुए आयुधों से और समीप होनेपर मुष्टियों से संग्राममें एक दूसरेको मारनेकी ध्वनि आकाशतक गई ॥ १७ ॥ और चारोंतरफसेमारो

them. Narayan then left his female form and with terrible weapons made the enemy's lines tremble. Thus on the salt sea shore was held the battle between the gods and the Asurs. Lances with sharp points and other missiles were thrown by both parties. Killed and wounded with the discus, swords, missiles and maces the Asurs lay dead in large numbers on all sides. Heads adorned with gold fell hither and thither on the field of battle. The blood stained bodies of the Asurs lay stretched on all sides like red mountains. Thousands of warriors were killed during the day and cries of pain from the wounded were heard on all sides. The warriors fought with missiles as well as with blows of the fist. The air rang with cries of distress. At this time Nar and Narayan entered the field. Seeing Nar armed with the celestial bow, Narayan

सरोतिच । व्यश्रूयंतमहाघोराःशब्दास्तत्रसमंततः ॥ १८ ॥ एवंसुतुमुलेयुद्धेवर्तमाने
महाभये । नरनारायणौदेवौसमाजग्मतुराहवम् ॥ १९ ॥ तत्रदिव्यंधनुर्दृष्ट्वानरस्य
भगवानपि । चिंतयामासतच्चक्रंविष्णुर्दानवसूदनम् ॥ २० ॥ ततोऽम्बराच्चिंतितमा
त्रमागतंमहाप्रभंचक्रममित्रतापनम् । विभावसोस्तुल्यमकुंठमंडलंसुदर्शनंसंयतिभीमदर्श
नम् ॥ २१ ॥ तदागतंज्वलितहुताशनप्रभंभयंकरंकरिकरबाहुरच्युतः । मुमोचवैप्रबल
वदुग्रवेगवान्महाप्रभंपरनगरावदारणम् ॥ २२ ॥ तदंतकज्वलनसमानवर्चसंपुनःपुनर्न्यपत
तवेगवत्तदा ॥ विदारयद्दितिदनुजान्सहस्रशःकरेरितंपुरुषवरेणसंयुगे ॥ २३ ॥ दहत्क्वचि
ज्ज्वलनइवावलेलिहत्प्रसह्यतानसुरगणान्न्यकृंतत ॥ प्रवेरितंवियतिमुहुःक्षितौतथाप-
पौरणेरुधिरमथोपिशाचवत् ॥ २४ ॥ तथाऽसुरागिरिभिरदीनचेतसोमुहुर्मुहुःसुरगण
मार्दयंस्तदा । महाबलाविगलितमेघवर्चसःसहस्रशोगगनमभिप्रपद्यह ॥ २५ ॥ अथा

इत्यादि बड़े घोर शब्द सुनाई देनेलगे ॥ १८ ॥ इसप्रकार बड़े घोर भयदाई युद्धकेहोने पर नर और नारायण देव संग्राम में आये ॥ १९ ॥ नारायणने नरके दिव्य धनुष को देखकर दैत्योंके नाश करनेवाले चक्रकी याद की ॥ २० ॥ तिसके उपरान्त आकाश से विचार के साथ ही आयेहुए बड़ी कान्तिवाले शत्रुओंके ताप देनेवाले अग्नि के तुल्य निष्फल तेजवाले संग्राम में भयानक भयंकर शत्रुओंके नगरों को अपनी कान्ति से नाश करनेवाले सुदर्शन चक्र को अपनी हाथीकी सूंड की समान भुजाओं में विष्णु ने धारणकर बड़े जोरसे दैत्यों पर छोड़ा संग्राम में नारायण के हाथ से छोड़े हुए महाप्रलयकी अग्नि के समान तेजस्वी चक्र ने बारम्बार दैत्यों पर गिरकर हजारों दैत्यों और दानवों को नाश किया ॥ २३ ॥ कहीं २ अग्नि के समान दैत्यों को भस्म किया और आकाश में फैला-हुआ फिर २ पृथ्वी में आकर पिशाचों की समान रुधिर को पीनेलगा ॥ २४ ॥ और इसी तरह घबराये हुए असुर पहाडों से बारम्बार देवताओं पर आकाश में जा श्वेत मेघकी समान कान्ति और बलवाले प्रहार करने लगे ॥ २५ ॥ इस के उपरान्त

sent for his discus named Sudarshan, bright as fire, dreadful in battle and it came at once. Then the fierce Achyut, having arms like the trunk of an elephant, hurled his discus with a force that was sufficient to destroy the whole population of a town. The discus blazing like fire of the last conflagration, hurled with great force from the hand of Narayan, ceaselessly destroyed the Danavs by thousands. Like fire it consumed all that came in its way or like goblin it drank their life blood. The Asurs on their part flew to the sky and hurled mountains over the gods which striking with each other produced a great noise and harrassed the gods. The earth trembled with the fall of heavy mountains and the noise of the warriors. The divine *Nara* broke the mountains into particles

बराङ्गयजननाःमपेदिरेसपादपाबहुविधमेघरूपिणः । महाद्रयःपरिगलिताग्रसानवःपर स्परंद्रुतमभिहत्यसस्वनाः ॥ २६ ॥ ततोमहीप्रविचलितासकाननामहाद्रिपाताभिहता समंततः । परस्परंभृशमभिगर्जताग्मुहूरणाजिरेभृशमभिसंप्रवर्तिते ॥२७॥ नरस्ततोवरक नकाग्रभूषणैर्महेषुभिर्गगनपथंसमावृणोत् । विदारयन्गिरिशिखराणिपत्रिभिर्महाभये ऽसुरगणविग्रहेतदा ॥ २८ ॥ ततोमहींलवणजलंचसागरंमहासुराःप्रविविशुरर्दिताः सुरैः ॥ वियद्गतंज्वलितहुताशनप्रभंसुदर्शनंपरिकुपितंनिशम्यते ॥ २९ ॥ ततःसुरै र्विजयमवाप्यमंदरःस्वमेवदेशंगमितःस्वपूजितः॥विनाद्यखंदिवमपिचैवसर्वशस्ततोगताः सलिलधरायथागतम् ॥ ३० ॥ ततोऽमृतंसुनिहितमेवचक्रिरेसुराःपरांमुदमभिगम्यपुष्क- लाम् । ददौचतंनिधिममृतस्यरक्षितुंकिरीटिनेबलभिदथामरैःसह ॥३१॥ इतिश्रीमहा- भारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि अमृतमंथनसमाप्तिर्नामएकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

आकाश से भय उत्पन्न करने वाले वृक्षों सहित अनेक प्रकार के बादल रूपी जिनके अग्रशिखर टूटगये हैं एक दूसरे के साथ टकराते बड़ी आवाज करतेहुए बड़े २ पर्वत चारों तरफ से गिरने लगे । २६ । बड़े २ पर्वतोंके गिरनेसे ताड़ित पृथ्वी चारों ओर से बनों के साथ कांपने लगी संग्राम में परस्पर गर्जना करते हुओंकी ध्वनि चारों तरफ फैलगई । २७ । नर ने बड़े भारी असुरों के समूह में भय देने वाले युद्धके प्रवृत होने पर उत्तम सुवर्ण से शोभायमान बाणों से पहाड़ के शिखरों को तोड़कर आकाश को ढक दिया । २८ । आकाश में प्राप्त प्रज्वलित अग्नि के समान सुदर्शन चक्रको देखकर देवताओं से पीड़ा दियेहुए असुरों ने पृथ्वी और खारी समुद्र का आश्रय लिया, और देवताओं ने विजय पाकर मन्द्राचल पर्वत का सत्कार कर अपने स्थान में पहुँचा दिया, आकाश और स्वर्ग में शब्द कर सम्पूर्ण बादल अपने स्थानों को चलेगये, फिर बड़ेभारी हर्ष को प्राप्त कर अमृतकी रक्षाकी, इन्द्रने देवताओं के साथ उस निधिरूप अमृत को रक्षा के लिये नर को दिया । ३१ ।

by his gold headed arrows. Thus harrassed by the gods and the discus, the *Asurs* hid themselves in the caverns of the earth or beneath the water of the Ocean. The gods were thus victorious and triumphantly reestablished Mandar on its base. Having found nectar, the gods made the skies resound with their cries of joy and went to their respective homes. After great rejoicing the vessel containing nectar was delivered to Nar for safe custody.

सौतिरुवाच । एतत्तेकथितंसर्वममृतंमथितंयथा । यत्रसोऽश्वःसमुत्पन्नःश्रीमानतुल विक्रमः १ यंनिशम्यतदाकद्रुर्विनतामिदमब्रवीत् । उच्चैःश्रवाहिकिंवर्णोभद्रेप्रब्रूहिमाचिरम् ॥ २ ॥ विनतोवाच । श्वेतएवाश्वराजोऽयंकिंवात्वंमन्यसेशुभे । ब्रूहिवर्णंत्वमप्यस्यततोऽत्रविपणावहे ॥ ३ ॥ कद्रूरुवाच । कृष्णवालमहंमन्येहयमेनंशुचिस्मिते । एहिसार्धंमयादीव्यदासीभावायभामिनि ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच । एवंतेसमयंकृत्वादासीभावायवैमिथः । जग्मतुः स्वगृहानेवश्वोद्रक्ष्यावइतिस्मह ॥ ५ ॥ ततःपुत्रसहस्रंतुकद्रूर्जिह्मंचिकीर्षती । आज्ञापयामासतदावालाभूत्वाऽञ्जनप्रभाः ॥ ६ ॥ आविशध्वंहयंक्षिप्रंदासीनस्यामहंयथा । नावपद्यंतयेवाक्यंतानशशापभुजंगमान् ॥ ७ ॥ सर्पसत्रेवर्तमानेपावकोवःप्रधक्ष्यति । जनमेजयस्यराजर्षेः पांडवेयस्यधीमतः ॥ ८ ॥

अध्याय २० ॥

उग्रश्रवाबोले यह सब कथा अमृतमथनेकी तुमसे कहदी जहांसे शोभायुक्त बड़ापराक्रमी अश्व उत्पन्न हुआ था जिस घोड़े को देखकर कद्रु ने विनता से यह बचन कहा कि हे भद्रे यह घोड़ा किस रंग का है शीघ्र कह । २ । बिनताबोली हे शुभे यह अश्व श्वेतरंग का है तू कैसा मानती है तू भी इसके रंग को बता तिसके उपरान्त हम इस में शर्त करेंगी ।३। कद्रु बोली मैं इसको काले बालवाला मानती हूं हे भामिनी मेरे साथ शर्त दासी भाव की कर । ४ । उग्रश्रवा बोले, इस प्रकार वह दोनों आपस में दासी भावकी शर्त रख कलको देखने का निश्चय कर अपने २ घर को चलीगई । ५ । तिस के उपरान्त कपटी कद्रुने हजार पुत्र सर्पों को यह आज्ञा दी तुम काले बाल होकर इस घोड़े को चिपटो जिस से मैं दासी न बनूं और जिस २ सर्पने इस वचन को न माना उन्हें कद्रने शाप दिया । ७ । कि बुद्धिमान पाण्डवों की सन्तान जन्मेजय राजर्षि के सर्प यज्ञ में उसको

CHAPTER XX.

(ASTIK PARV CONTINUED.)

Sauti said, "The history of churning the Ocean for nectar has come to an end. I have also informed you of the circumstances under which Uchchaisrava of matchless beauty and prowess was obtained. It was this horse the colour of which was the object of discussion between Kadru and Vinata. Vinata said, "The horse is white." What do you think its colour to be? Let us lay a wager upon it. Kadru replied, "I think the horse's tail is black. O beautiful one let us lay a wager that whoever loses shall become the slave of the other" Sauti said, "Thus each having agreed on becoming a slave of the other, the two sisters went home thinking of seeing the horse on the next day. And Kadru, with a view to deceive her sister, ordered her thousand sons to change themselves

शापमेनंतुशुश्रावस्वयमेवापितामहः । अतिक्रूरंसमुत्सृष्टंकद्र्वादैवादतीवहि ॥ ९ ॥
सार्द्धंदेवगणैःसर्वैर्वाचंतामन्वमोदत । बहुत्वंप्रेक्ष्यसर्पाणांप्रजानांहितकाम्यया ॥ १० ॥
तिग्मवीर्यविषाह्येतेदंदशूकामहाबलाः । तेषांतीक्ष्णविषत्वाद्धिप्रजानांचहितायच ११॥
युक्तंमात्राकृतंतेषां परपीडोपसर्पिणाम् । अन्येषामपिसत्वानांनित्यंदोषपरास्तुये १२॥
तेषांप्राणांतिकोदण्डोदैवेनविनिपात्यते । एवं संभाष्यदेवस्तुपूज्यकद्रूंचतांतदा ॥१३॥
आहूयकश्यपंदेव इदंवचनमब्रवीत् । यदेतेदंदशूकाश्च सर्पाजातास्त्वयाऽनघ ॥१४॥
विषोल्वणामहाभोगा मात्राशप्ताःपरन्तप । तत्रमन्युस्त्वयातातनकर्त्तव्यःकथंचन १५॥
दृष्टंपुरातनंह्येतद्यज्ञसर्पविनाशनम् । इत्युक्त्वासृष्टिकृद्देवस्तंप्रसाद्यप्रजापतिम् । प्रादाद्वि-
षहरींविद्यां कश्यपायमहात्मने ॥ १६ ॥

इतिश्रीम० आदिपर्वणि आस्तीकप० सौपर्णे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अग्नि जलावेगा । ८ । ब्रह्माने आप अत्यन्त क्रूर दैवयोग से कद्रु के दिये हुए बड़े शाप को सुना । ९ । सर्पों के बड़े समूह को देख प्रजा के हित की इच्छा से ब्रह्मा ने देवताओं के समूह के साथ शाप रूप वाणी का अनुमोदन किया । १० । यह सर्प बलवान् और तीक्ष्ण विषयुक्त हैं इसी कारण दूसरों को पीड़ा देनेवाले इन को जगत हितकारी माता का शाप शुभ है और प्राणियों कोभी जो हानि करने वाले हैं उनको भी परमेश्वर की ओर से प्राणांतिक दण्ड दिया जाता है, ब्रह्मा ऐसा कह कद्रूकी स्तुति कर कश्यप देव को बुला यह वचन बोले यह जो काटने वाले, तीक्ष्ण विषयुक्त सर्प तुझ से उत्पन्न हुए हैं वह मातासे शाप दियेगये हे तात इस विषय में तुझे किसी प्रकार क्रोध न करना चाहिये । १५ । सर्पों का यज्ञ में नाश प्राचीन देखागया है सृष्टि को रचने वाले ब्रह्मा ने कश्यप को प्रसन्न किया और उसे विष हरनेकी विद्या बताई । १६ ।

---

into black hair forming part of the tail of the horse in order to save her from becoming a slave. Those of the serpents that disobeyed her command were fated to die in the snake sacrifice of king Janmejaya by her curse. The grandfather (Brahma) heard the curse of the mother and, knowing that the serpents had become numerous, sanctioned it out of compassion for his creatures. The conduct of the mother towards the serpents, who had grown very strong and poisonous and did much harm by their biting was very proper as regards public safety. Those who contrive the death of others are themselves fated to die. The gods applauded Kadru's conduct and Brahma told Kashyap that the poisonous snakes had grown too troublesome and were cursed by their mother, and he should not grieve for their fate which was already settled. Thus Brahma pacified Prajapati (Kashyap) and bestowed on him the knowledge of neutralising the poison of snakes.

सौतिरुवाच ॥ ततोरजन्याव्युष्टायां प्रभातेऽभ्युदितेरवौ । कद्रुश्च विनताचैव भगिन्यौततपोधन ॥ १ ॥ अमर्षितेसुसंरब्धे दास्येकृतपणे तदा । जग्मतुस्तु रगंद्रष्टु मुच्चैः श्रव समन्तिकात् ॥ २ ॥ ददृशातेऽथ तेतत्र समुद्रनिधिमंभसाम् । महांतमुदकागाधं क्षोभ्यमाणंमहास्वनम् ॥ ३ ॥ मिमिंगिलझषाकीर्णं मकरैराष्टतंतथा। सत्वैश्चबहुसाहस्रैर्नानारूपैःसमावृतम् ४ भीषणैर्विकृतैरन्यैर्घोरैर्जलचरैस्तदा।उग्रैर्नित्य मनाधृष्यं कूर्मग्राहसमाकुलम् ५ आकरंसर्वरत्नाना मालयंवरुणस्यच । नागानामालयं रम्य मुत्तमंसरितांपतिम् ६ पातालज्वलनावाससमसुराणांचबांधवम् । भयंकरंचसत्वा नांपयसांनिधिमर्णवम् ७ शुभं दिव्यममर्त्याना ममृतस्याकरंपरम् । अप्रमेयमचिंत्यंच सुपुण्यजलमद्भुतम् ॥ ८ ॥ घोरंजलचराराव रौद्रंभैरवनिःस्वनम् । गंभीरावर्तकालि- लं सर्वभूतभयंकरम् ॥ ९ ॥ वेलादोलानिलचलं क्षोभोद्वेगसमुच्छ्रितम् । वीचीहस्तैः

अध्याय ॥ २१ ॥

उग्रश्रवा बोले फिर रात बिताने और सूर्योदय प्रभातके समय क्रोधातुर और शीघ्रता से दासी भाव की शर्त रख कद्रु और विनता दोनों बहिनें उच्चैश्रवा घोड़े को समीप से देखने को गईं । २ । इस के उपरान्त जलों के निधी बड़े अगाध जल वाले और मत्स्यादिकों से भरे बड़ा शब्द करते हुए तिमिङ्गिल जाति के जन्तुओं और मकरों से भरेहुए अनेक प्रकार के जीवों से युक्त, भयानक अन्य जलचरों से नित्य सदा अगम्य कछुए और ग्राहोंसे परिपूर्ण सम्पूर्ण रत्नों की खान, वरुण के घर, नागों के उत्तम स्थान, बड़वाग्नि के निवासस्थान, असुरों के बान्धव भयङ्कर अनेक प्रकार के जीवोंके निधि शुभ दिव्य रूप देवताओंके अमृतका निधि प्रमाण रहित विचार शक्ति से पृथक, पवित्र, जलयुक्त, विचित्र, भयानक जलचरोंके शब्द से भयानक, और भयानक शब्दवाले, गहरे भ्रमरों से युक्त, सब प्राणियों को भय दाई, लहरों के आनेपर वायु, चंचल जल के उछ-

CHAPTER XXI.

Early in the next morning the two sisters Kadru and Vinta, having laid a wager for slavery, went, with haste and impatience, to have a close view of the horse, *Uchaisrava.* On their way they saw the Ocean, wide and deep, making an uproar with its waves, full of large and small fishes, huge crocdiles and other aquatic creatures and monsters who are the terror of voyagers, abounding with tortoises, crocodiles and gems of all sorts, the home of *Varun* the residence of *Nagas,* the lord of rivers, the abode of subterranean fire, the hiding place of *Asurs,* the terror of all creatures, the great receptacle of water, without end, holy, beneficial to gods, who received nectar from it, inconceivable wonderful, with terrible sounds of the aquatic animals, of tremendous roars, full of deep caves, terror of all creatures, moved by the winds, the rise and

प्रचलितैर्नृत्यंतमिवसर्वतः ॥ १० ॥ चंद्रवृद्धिक्षयवशा दुद्वृत्तोर्मिसमाकुलम्।पांचजन्य स्यजननं रत्नाकरमनुत्तमम् ॥ ११ ॥ गांविंदताभगवता गोविंदेनामितौजसा। वराह रूपिणाचांतर्विक्षोभितजलाविलम् ॥ १२ ॥ ब्रह्मर्षिणाव्रतवता वर्षाणांशतमत्रिणा। अनासादितगाधंच पातालतलमव्ययम् ॥ १३ ॥ अध्यात्मयोगनिद्रांचपद्मनाभस्यसेव तः। युगादिकालशयनं विष्णोर मिततेजसः ॥ १४ ॥ वज्रपातनसंत्रस्तमैनाकस्याभय प्रदम्। डिंवाहवार्दितानांचअसुराणांपरायणम्। १५। बडवामुखदीप्ताग्नेस्तोयहव्य प्रदं शिवम्। अगाधपारं विस्तीर्णं मप्रमेयंसरित्पतिम्। १६। महानदीभिर्वह्वीभिः स्पर्धयेवसहस्रशः। अभिसार्यमाणमनिशं ददृशातेमहार्णवम्। आपूर्यमाणमत्यर्थंनृत्य मानमिवोर्मिभिः। १७। गंभीरंतिमिमकरोग्रसंकुलंतं गर्जंतंजलचररावरौद्रनादैः। विस्तीर्णंददृशतुरंवरप्रकाशंतेऽगाधं निधिमुरुमंभसामनंतम्। १८।
इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणिआस्तीकपर्वणि सौपर्णेएक विंशतितमोऽध्यायः २१॥

लने में बड़े ऊंचे, लहर रूपी हाथों से चारों ओर से नाचते हुए की सदृश चन्द्रमा की वृद्धि और क्षय के वश से ऊंची लहरोंसे युक्त पांच जन्य शंखकी उत्पत्ति करने वाले सर्वोत्तम पृथ्वी को ग्रहण करते हुए भगवान् वराह रूप से हिलाये हुए जल से व्याप्त सौ वर्ष तक व्रतों के धारण करने वाले महर्षि अतृ ने जिसकी थाह न पाई गई ऐसे विकाररहित पाताल तल वाले और आत्मामें योग निद्रा को सेवन करते हुए विष्णु के युगादिकाल की शय्या वज्र के भय से डरेहुए मैनाक का अभय देनेवाला, संग्राम में डरने वाले और मारेहुए असुरों के निवासस्थान प्रदीप्त बड़वाग्नि को जलरूपी हव्य के देनेवाले कल्याण वाले बड़े चौड़े जिसका पार न प्राप्तहो नादियों के पति बड़ी २ बहुत सी हजारों नादियों के जल से भरते हुए गम्भीर, अनेक प्रकार के जलचरों से शब्दयुक्त आकाश के समान प्रकाश वाले अनन्त समुद्र को देखा। १८।

fall of its waves resembling a dancer's stretched hands, the tibes in whose waves are caused by the moon, the birth place of Panchjanya, the great store of gems, whose waters were agitated by the Lord Govind of great prowess when he assumed the form of a wild boar, whose fathomless bottom the Brahmarsi Atri could not reach after a hundred years, the resting place of Vishnu during the interval of rest at the end of every Yug, the refuge of Mainak from thunder and of fugitive Asurs when they lost battle, the keeper of subterranean fire, bottomless, unlimited and the lord of rivers. They saw that minghty rivers rushed into it like rivals in love trying to outstrip each other, always full of the dancing waves, waves, deep, abounding fierce fishes and crocodiles, resounding with the terrible noises of the aquatic animals, stretched far and wide, fathomless and limitless, and the great receptacle of water.

सौतिरुवाच॥नागाश्चसंविदंकृत्वाकर्त्तव्यमितितद्वचः॥निःस्नेहावैदहेन्माताअसंप्राप्तमनो
रथा।१।प्रसन्नामोक्षयेदस्मांस्तस्माच्छापाच्च भामिनी॥कृष्णंपुच्छंकरिष्यामस्तुरगस्यनसं
शयः २ तथाहिगत्वातेतस्यपुच्छेवालाइतिस्मृताः॥ एतस्मिन्नंतरेतेतुसपत्न्यौपणितेतदा
॥३॥ ततस्तेपणितंकृत्वाभगिन्यौद्विजसत्तम। जग्मतुःपरयाप्रीत्यापरंपारंमहोदधेः॥४॥
कद्रूश्चविनताचैवदाक्षायण्यौविहायसा। आलोकयंत्यावक्षोभ्यंसमुद्रंनिधिमंभसाम्॥
५॥ वायुनाऽतीवसहसाक्षोभ्यमाणंमहास्वनम्। तिमिंगिलसमाकीर्णमकरैरावृतंतथा
॥६॥ संयुतंबहुसाहस्रैःसत्वैर्नानाविधैरपि। घोरैर्घोरमनाधृष्यंगंभीरमतिभैरवम्॥७॥
आकरंसर्वरत्नानामालयंवरुणस्यच। नागानामालयंचापिसुरम्यंसरितांपतिम्॥८॥
पातालज्वलनावासमसुराणांतथालयम्। भयंकराणांसत्वानांपयसोनिधिमव्ययम्॥९॥
शुभ्रंदिव्यममर्त्यानाममृतस्याकरंपरम्। अप्रमेयमचिंत्यंचसुपुण्यजलसंमितम्॥ १०॥
महानदीभिर्बह्वीभिस्तत्रतत्रसहस्रशः। आपूर्यमाणमत्यर्थंनृत्यंतमिवचोर्मिभिः॥११॥

अध्याय ॥ २२ ॥

सर्पों ने परस्पर सलाहकी कि यह माताका वचन करना चाहिये घोड़ेकी कालीपूंछ करेंगे इस में सन्देह नहीं क्योंकि स्नेह रहित माता अपने मनोरथ को न पाकर हमको भस्म करेगी और प्रसन्नहोकर हमको शाप से बचादेगी॥२॥ यह विचार सर्प उसघोड़े की पूंछ में काले बालहोकर प्राप्तहुए इसीसमय वह दोनों कश्यपकी स्त्रियें दासीभावकी शर्त रख समुद्र के पारगई दक्षकी पुत्री कद्रु और विनता आकाशमार्ग से जलों के निधि वायुके वेग से उछलते हुए बड़े शब्दवाले तिमिंगिलजाति के नाकों और मकरों से युक्त भयानक हजारों प्रकार के जीवों से भरेहुए गहरे अगम्य, सम्पूर्ण रत्नों के निधि वरुणों और नागों के रहने के स्थान, मनोहर बड़वाग्नि और असुरों के रहने के स्थान, भयंकर जीवों के निवासस्थान शुद्ध दिव्यरूप अप्रमाण रहित देवताओं के अमृत स्थान विचार शक्तिसे पृथक् बड़ी २ नदियों से भरते हुए लहरों से नाच करते हुएकी समान चंचल

CHAPTER XXII.

(ASTIK PARV CONTINUED.)

The serpents, at last, thought it best to obey their mother's command for, they argued, if she failed in her enterprise she might be cruel enough to burn them; on the other hand if she were graciously inclined, she might remove the curse from them by her magnanimity 2. So they made the horse's tail black. In the meantime the two sisters Kadru and Vinata, the daughters of Daksh, having laid the wager, proceeded cheerfully, through the air to the other side of the Ocean, the receptacle of water, incapable of being easily disturbed, greatly agitated at times by the wind and roaring tremendously, abounding with fishes large enough to swallow a large fish (timi) full of crocodiles, horrible monsters, difficult

इत्येवंतरलतरोर्मिसंकुलंतेगंभीरंविकासितंमवरप्रकाशम् । पातालज्वलनशिखाविदीपितांगंगर्जंतंद्रुतमभिजग्मतुस्ततस्ते ॥१२॥ इतिश्रीमहाभारतेआदिपर्वणिआस्तीकपर्वणि सौपर्णेसमुद्र दर्शनंनाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

सौतिरुवाच ॥ तंसमुद्रमतिक्रम्यकद्रूर्विनतयासह । न्यपतत्तुरगाभ्याशेनचिरादिवशीघ्रगा ॥ १ ॥ ततस्तेतंहयश्रेष्ठंददृशातेमहाजवम् । शशांककिरणप्रख्यंकालवालमुभे तदा ॥२॥ निशम्यचबहून्वालान्कृष्णान्पुच्छसमाश्रितान् । पिषण्णरूपांविनतांकद्रूर्दास्येन्ययोजयत् ॥३॥ ततःसाविनतातस्मिन्पणितेनपराजिता । अभवद्दुःखसंतप्तादासीभावंसमास्थिता ॥ एतस्मिन्नंतरेचापिगरुड़ःकालआगते । विनामात्रामहातेजाविदार्यांडमजायत ॥ ५ ॥ महासत्वबलोपेतःसर्वाविद्योतयनदिशः । कामरूपःकामगमः कामवीर्योविहंगमः ॥ ६ ॥ अग्निराशिरिवोद्भासन्समिद्धोऽतिभयंकरः । विद्युद्विस्पष्ट

तरंगों से भरे हुए आकाशकी समान बड़े बड़वाग्निकी ज्वालाओं से प्रकाशमान गर्जना करते हुए समुद्र को प्राप्तहुई ॥ १२ ॥ अध्याय समाप्त ॥

अध्याय २३ ॥

उग्रश्रवाबोले, इस प्रकार कद्रु विनता के साथ उस समुद्रका अतिक्रमण कर के शीघ्र गामिनी घोड़े के समीप पहुँची तिसके उपरान्त बड़े बेगवाले उस घोड़े को जो चन्द्रमाकी समान उज्वल और काले बालोंकी पूंछसे युक्त था उसको दोनों ने देखा अति काले बालोंकी पूंछ से युक्त उस को देख कर उदास विनता को कद्रु ने अपनी दासी बनाया तिस उपरांत विनता अपनी शर्त हारक दुख से तप्त दासी भावको प्राप्तहुई।४। समय के आने पर गरुड़ माताके विनाही अण्डे को तोड़ उत्पन्नहोगया बलवान इच्छाचारी रूप का धारण करनेवाला इच्छानुसार गमन करनेवाला प्रदीप्त अग्निकी समान तेजस्वी अत्यन्त भयंकर और बिजली के समान तेजवाला महा प्रलय की अग्नि

to be crossed, deep, terrible mine of various, the home of Varun and Nagas, the lord of rivers, the abode of sub-terranean fire, the Asylum of Asurs and other dreadful beings, the receptacle of water, knowing no decay, wonderfully romantic, the mine of nectar for celestials, immense, inconceivable, fed by thousands of great rivers, dancing with its waves vast as the expanse of the deep, having the subterranean fire under its bed and roaring. The sisters passed it over quickly. 12.

CHAPTER XXIII.

(ASTIK PARB CONTINUED.)

Having crossed the Ocean, Kadru and Vinata soon reached near the horse who was the fore most of his kind in swiftness of pace. They saw that his whole body was as white as the moonbeams but the tail had black hair. Seeing black hairs in the tail Kadru

पिंगाक्षोयुगांताग्निसमप्रभः ॥ ७ ॥ प्रवृद्धः सहसापक्षीमहाकायोनभोगतः । घोरो घोरस्वनोरौद्रोवन्हिरौर्वइवापरः ॥ ८ ॥ तंदृष्ट्वाशरणंजग्मुर्देवाः सर्वेविभावसुम् । प्रणिपत्याब्रुवंश्चैनमासीनंविश्वरूपिणम् ॥ ९ ॥ अग्नेमात्वंप्रवर्धिष्ठाःकच्चिन्नोनदिधक्षसि ॥ असौहिराशिःसमुहान्समिद्धस्तवसर्पति ॥ १० ॥ अग्निरुवाच ॥ नैतदेवंयथा यूयंमन्यध्वमसुरार्दनाः ॥ गरुडोबलवानेषममतुल्यश्चतेजसा ॥ ११ ॥ जातःपरमतेजस्वीविनतानन्दवर्धनः ॥ तेजोराशिमिमंदृष्ट्वायुष्मान्मोहःसमाविशत् ॥ १२ ॥ नागक्षयकरश्चैवकाश्यपेयोमहाबलः ॥ देवानांचहितेयुक्तस्त्वहितोदैत्यरक्षसाम् ॥ १३ ॥ नभीःकार्याकथंचात्रपश्यध्वंसहितामम ॥ एवमुक्तास्तदागत्वागरुडंवाग्भिरस्तुवन् ॥ १४ ॥ तंदूरादभ्युपेत्यैनंदेवाःसर्षिगणास्तदा ॥ देवाऊचुः ॥ त्वमृषिस्त्वंमहाभाग-

के समान तेजस्वी शीघ्रही वह बड़ी कायावाला पक्षी बढ़ता हुआ भयानक शब्दोंसे युक्त बड़वाग्नि की सदृश दसो दिशाओं को प्रकाश कर उत्पन्न हुआ ॥ ८ ॥ सम्पूर्ण देवता उस को देखकर अग्नि की शरणगये और बैठेहुए अग्नि को नमस्कार कर बोले ॥९॥ हे अग्ने तू मत बढ़ क्या तू हमको भस्म करना चाहता है यह तेरा बड़ा समूह जो प्रदीप्त हो रहा है वह फैलताहै अग्नि बोला हे असुरों के नाश करनेवाले देवताओं जैसे तुम समझ रहेहो वह बात नहीं है यह मेरे समान तेजस्वी गरुड़है ॥ ११ ॥ यह विनता के आनन्द को बढ़ानेवाला उत्पन्न हुआ इस तेजके समूहको देख तुमको यह अज्ञान प्राप्त हुआ ॥ १२ ॥ यहनागोंका क्षय करनेवाला बड़ा बलवान कश्यप का पुत्र देवताओं का हितकारी दैत्य राक्षसों का शत्रु है ॥ १३ ॥ किसीप्रकार तुमको यहां भय न करना चाहिये और मेरेसाथ इसको देखो ऐसा कहनेपर गरुड़ के पासजा सम्पूर्ण देवता गरुड़की वाणियों से स्तुति करने लगे ॥ १४ ॥ ऋषिगण सहित वह देवता दूर से

made the disappointed Vinata her slave. Having lost the wager and her freedom, Vinata was much dejected. 4. At the proper time Gadur of immense prowess burst out of his egg and illumined all the world with his glory. He was very powerful, capable of assuming any form at will, going everywhere at pleasure and calling to his aid any amount of energy. Bright himself like the mass of fire at the end of the Yug, his eye flashed like lightning. The bird soon grew large and flew towards the sky. Roaring fiercely he looked like the great subterranean fire. 8. All the gods seeing him of such glory went to Agni and bowing before that god of multifarious forms said to him, "Donot enlarge thy body, Agni. Wouldst thou consume us. See thy flames are coming forward from yonder direction." Agni replied, "This is not, as

स्त्वंदेवःपतगेश्वरः ॥ १५ ॥ त्वंप्रभुस्तपनःसूर्यःपरमेष्ठीप्रजापतिः । त्वमिंद्रस्त्वंहय
मुखस्त्वंशर्वस्त्वंजगत्पतिः ॥१६॥ त्वंमुखंपद्मजोविप्रस्त्वमग्निःपवनस्तथा । त्वंहिधाता
विधाताचत्वंविष्णुःसुरसत्तमः ॥ १७ ॥ त्वंमहानभिभूःशश्वदमृतंत्वंमहद्यशः । त्वं
प्रभास्त्वमभिप्रेतंत्वंनस्त्राणमनुत्तमम् ॥ १८ ॥ बलोर्मिमान्साधुरदीनसत्वः समृद्धिमा
न्दुर्विषहस्त्वमेव । त्वत्तःसृतंसर्वमहीनकीर्तेह्यनागतंचोपगतंचसर्वम् ॥ १९ ॥ त्वमुत्त
मःसर्वमिदंचराचरंगभस्तिभिर्भानुरिवावभाससे । समाक्षिपन्भानुमतःप्रभांमुहुस्त्वमं
तकःसर्वमिदंध्रुवाध्रुवम् ॥२०॥ दिवाकरःपरिकुपितोयथादहेत्प्रजास्तथादहसिहुताशन
प्रभ । भयंकरःप्रलयइवाग्निरुत्थितोविनाशयन्युगपरिवर्तनांतकृत् ॥ २१ ॥ खगेश्वरं

ही इस गरुड़ से बोले तू ऋषि है तू भाग्यवान है और पक्षियों का स्वामी है ॥१५॥ तू
सम्पूर्ण जगत का स्वामी है तू सबका प्रलय कर्ता और उत्पादक है तू ब्रह्मा है तू प्रजापतिहै
इन्द्रहै हयग्रीवावतार है तू माहादेव का विष्णुरूपी बाण है तू जगत्पति है ॥ १६ ॥
तू ब्राह्मणरूप मुख है तू चतुर्मुख है तू ज्ञान युक्त है तू अग्नि वायु है तू चेतन्यस्वरूपमाया
है तू सर्वव्यापक सम्पूर्ण देवताओंका ईश्वर बिष्णुहै तू महत्तत्व है तू अहंकारहै, तू सना-
तन ब्रह्महै, और तू तेजस्वरूप है तू बुद्धिकी वृत्ति है, तू सर्वोत्तम हमारा रक्षकहै १८॥
बल का समुद्र है तू सबका उपकार है तू अदीन प्रकास है, और तू ऐश्वर्य युक्त है,
तू दूसरे से असह्य है, हेअहनि कीर्ते जो कुछहोगया और होनेवाला है सब तुम से
है। १९ । तुम सर्वोत्तमहो, और चराचर सम्पूर्ण जगत् को सूर्यकी समान प्रकाश
करते हो तुम सूर्य चर अचर जगत् के अन्तहो जैसे सूर्य अपनी किरणों से सम्पूर्ण
जगत् को भस्म कर दे इसप्रकार हे हुताशन प्रभु तुम सम्पूर्ण जगत् को भस्म करदेते
हो उठीहुई प्रलयकी अग्नि के समान भयंकर हो और तुम काल के भी काल हो ॥२१॥

you persecutors of Asurs, imagine, my flame. It is Gadur of immense prowess, my equal in glory, of great strength, born to promote the joy of Vinata. You are deceived at the sight of this luminary. 21. He is the mighty son of Kashyap, the destroyer of the Nagas, intent upon the welfare of the gods and an enemy to the Asurs. You have no cause of fear from him. Come, let us see him." At this the gods and the rishis moved towards Gadur and adored him from distance thus:— "Thou receivest the largest share in sacrifices; thou art the lord of birds; the lord of the universe, the creator and destroyer of all beings; Brahma, the Prajapati, Indra, Hayagreve, Mahadev's arrow, the lord of the world, Brahman, the four faced, knowledge, Agni, Vayu, Maya, the omnippresent lord of gods, Vishnu, the great power, the ancient Brahma, glorious, wise, the best guard, the store of power and goodness,

शरणमुपागतावयंमहौजसंज्वलनसमानवर्चसम् । तडित्प्रभंवितिमिरमभ्रगोचरंमहाव
लंगरुडमुपेत्यखेचरम् ॥ २२ ॥ परावरंवरदमजय्यविक्रमंतवौजसासर्वमिदंप्रतापितम् ।
जगत्प्रभोतप्तसुवर्णवर्चसात्वंपाहिसर्वांश्चसुरान्महात्मनः ॥ २३ ॥ भयान्वितानभासि
विमानगामिनोविमानितावेपथगातिंप्रयांतिते । ऋषेःसुतस्त्वमसिदयावतःप्रभोमहात्म
नःखगवरकश्यपस्यह ॥ २४ ॥ समाक्रुधःकुरुजगतोदयांपरांत्वमीश्वरःप्रशममुपैहिपा
पिनः । महाशनिस्फुरितसमस्वनेनतेदिशोऽवरंत्रिदिवमियंचमेदिनी ॥२५। चलंतिनः
खगहृदयानिचानिशंनिगृह्यतांवपुरिदमग्निसन्निभम् । तवद्युतिंकुपितकृतांतसन्निभांनि
शम्यनश्चलतिमनोऽव्यवस्थितम् । प्रसीदनःपतगपतेप्रयाचतांशिवश्चनोभवभगवन्सु-

अग्नि के समान तेजस्वी बड़े बलवान् विजलीकी समान प्रकाशमान अन्धकार रहित बादलोंमें दीखते हुए आकाशगामी गरुड़ की हम शरण लेते हैं ॥ २२ ॥ कारण और कार्य रूप बर देनेवाले अजित पराक्रम वाले गरुड़ की शरण हैं तुम्हारेही प्रताप से यह अब जगत् प्रदीप्त है हे जगत् प्रभो ! तुम अपने सुवर्ण केसे तेज से सम्पूर्ण देवताओंकी रक्षा करो ॥ २३ ॥ भययुक्त आकाश में विमान पर चढे हीन गतिको प्राप्त देवता इधर उधर फिरते हैं तुम दयावान् कश्यप ऋषि के पुत्रहो तुम क्रोधित मतहोओ और जगत् पर दयाकरो तुम ईश्वरहो शांति को प्राप्तहोओ और हमारी रक्षा करो बड़े वज्रके शब्दकी समान तुम्हारे शब्द से दिशा और आकाश स्वर्ग पृथ्वी और हमारे हृदय चलायमान होते हैं अग्नि की समान इस देहको संक्षिप्त करो क्रोध से काल की समान तुम्हारी इस कान्ति को देखकर हमारा मन व्याकुल और चलायमानहोताहै और हम प्रार्थना करते हैं हम पर प्रसन्नहोओ हेभगवन् हमको सुखदायक और कल्याणकारी

helper of the needy; the Past and Future is from thee. 19. Thou givest light to world like the sun. Thou art glorious like the fire at the last conflagration. Thou art dreadfully rising like the fire at the last conflagration. Thou art the destroyer of the revolution of Yugs. We come to thee, mighty *Gadur*, who movest in the skies, for protection. Might lord, of great energy, thy splendour is like fire; thy brightness like lightning. No darkness can approach thee. Thou reachest the clouds. 22. Thou art both cause and effect, the dispenser of boons and invincible in prowess. Lord, thy splendour, bright as heated gold, heats the whole universe. Protect us, who overcome and terror-striken are flying in every direction through the sky. Thou, chief of birds and lord of creation, art the son of the merciful and noble rishi Kashyap and therefore you should show mercy to the world and be not angry with us. The earth and sky tremble at the sound of thy thunder like roar. Diminish thy

स्वावहः "२६" एवंस्तुतःसुपर्णस्तुदेवैःसर्षिगणैस्तदा । तेजसःप्रतिसंहारमात्मनःसच कारह । २७ ।

इति श्रीमहाभारते आ० आ० सौपर्णेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

॥ सौतिरुवाच ॥ सश्रुत्वाऽथात्मनोदेहंसुपर्णःप्रेक्ष्यचस्वयम् ॥ शरीरंप्रतिसंहारमात्मनःसंप्रचक्रमे ॥ १ ॥ सुपर्णउवाच ॥ नमेसर्वाणिभूतानिबिभियुर्देहदर्शनात् । भीमरूपात्समुद्विग्नास्तस्मात्तेजस्तुसंहरे ॥ २ ॥ सौतिरुवाच ॥ ततःकामगमःपक्षीकामवीर्योविहंगमः ॥ अरुणंचात्मनःपृष्ठमारोप्यसपितुर्गृहात् ॥ ३ ॥ मातुरंतिकमागच्छत्परंतीरंमहादधेः ॥ तत्रारुणश्चनिक्षिप्तोदिशंपूर्वांमहाद्युतिः ॥ ४ ॥ सूर्यस्तेजोभिरत्युग्रैर्लोकान्दग्धुमनायदा । रुरुरुवाच ॥ किमर्थंभगवान्सूर्योलोकान्दग्धुमनास्तदा ॥ ५ ॥ किमस्यापहृतंदेवैर्येनेमंमन्युराविशत् ॥ प्रमतिरुवाच ॥ चन्द्रादित्यैर्यदाराहुराख्यातो

हो ओ ॥ २६ ॥ इसप्रकार ऋषि गण सहित देवताओं से स्तुति किये हुए गरुड़ ने अपने तेज को संक्षेप किया २७ ॥ अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय ॥ २४ ॥

उग्रश्रवाबोले, गरुड़ने देवताओंसे अपने शरीरके महत्वकोसुन और देख उस को छोटा कर लिया ॥ १ ॥ गरुड़बोले सम्पूर्ण प्राणी मेरेदेहको देख भय न करें, मेरे भयानकरूप को देख तुम भयभीत हुएहो इसकारण मैंने शरीर को छोटा करलिया २॥ उग्रश्रवाबोले कि इच्छाचारी गमन करनेवाला और इच्छानुसार पराक्रमी वह पक्षी बाप के ग्रह से अरुण को पीठपर चढ़ाकर समुद्र के पार माताके समीप आया वहां जब सूर्य ने अपने उग्रतेजोंसे लोकों को भस्म करनेकी इच्छाकी तब बड़ी कांतिवाले गरुड़ने पूर्वदिशाकी ओर अरुण को फेंका (रुरुबोला) भगवान सूर्य ने क्यों लोकोंके जलानेकी इच्छाकी ॥ ५ ॥ देवताओं ने उसकी क्या हानिकी जिससे उसे क्रोध आया, (प्रमति बोला) जब चन्द्रमा और सूर्य ने अमृत पीते हुए राहु को बतलाया ॥ ६ ॥ तब

body. Our hearts quake with awe at the sight of thy form resembling that of *Yam* (the god of death) in anger. O thou lord of birds we solicit the favour of your bestowing on us good fortune and joy. 26. That bird of fair feathers, thus adored by the gods and rishis diminished his splendour and energy.

CHAPTER XXIV.

At hearing their prayer, *Gadur* decreased his body and said "Let no one fear my large size, I am decreasing it at your request." Then *Gadur*, capable of going everywhere at will, ranger of the sky and calling to his help any amount of energy, bore *Arun* on his back from his father's residence to that of his mother on the other side of the Ocean and hurled *Arun* towards the East

ह्यमृतंपिबन् ॥६॥ वैरानुबन्धंकृतवांश्चन्द्रादित्यतदाऽनघ । बध्यमानेग्रहेणाथ आदित्ये मन्युराविशत् ॥७॥ सुरार्थायसमुत्पन्नो रोषाराहोस्तुमांप्रति।बह्वनर्थकरंपाप मेकोऽहंसमवाप्नुयाम् ॥ ८ ॥ सहायएवकार्येषुनचकृच्छ्रेषुदृश्यते । पश्यन्तिग्रस्यमानंमां सहंते वैदिवौकसः ॥ ९ ॥ तस्माल्लोकविनाशार्थं ह्यवतिष्ठेनसंशयः । एवंकृतमतिःसूर्योह्यस्तमभ्यगमद्गिरिम् ॥१०॥ तस्माल्लोकविनाशाय संतापयतभास्करः । ततो देवानुपागम्य प्रोचुरेवंमहर्षयः ॥११॥ अद्यार्धरात्रसमये सर्वलोकभयावहः । उत्पत्स्यतेमहान्दाहस्त्रैलोक्यस्यविनाशनः ॥१२॥ ततोदेवाःसर्षिगणा उपगम्य पितामहम् । अब्रुवन् किमिहैवाद्य महद्दाहकृतंभयम् ॥१३॥ नतावद्दृश्यतेसूर्यः क्षयोऽयंप्रतिभातिच । उदिते भगवन्भानौकथमेतद्भविष्यति ॥ १४ ॥ पितामहउवाच ॥ एषलोकविनाशाय रवि-

चन्द्रमा सूर्यका राहु बैरी हुआ, और राहु से सूर्य को पीड़ा मिलने पर सूर्य को क्रोध आया । ७ । देवताओं के हित के कारण यह विरोधहुआ और राहुका क्रोध सूर्य पर हुआ, बड़े अनर्थकी बातहुई । ८ । और इस कठिन कार्य में कोई सहायक नहीं और सूर्य को ग्रास करते हुए राहु से देवता कुछ नहीं कहते ॥ ९ ॥ इस से लोक के नाश के कारण सूर्य ने यत्न किया, और अस्ताचल में जाकर लोकके विनाश के लिये सन्ताप देनेलगा तब सम्पूर्ण महर्षि देवताओं के समीप जाकरबोले ॥ ११ ॥ आज अर्द्धरात्रि के समय सम्पूर्ण लोकका भय देनेवाला तीनों लोक का विनाशक बड़ाभारी दाह है ॥१२॥ तब सम्पूर्ण ऋषि और देवता ब्रह्मा के पास जाकरबोले आज बड़े दाहसे उत्पन्नहुआ भय किस लिये है ॥ १३ ॥ सूर्य नहीं दीखता क्षय करनेवाला दाह प्रतीतहोता है और भगवान् सूर्य के प्रतीत होने पर कैसा भयहोगा ॥ १४ ॥ ब्रह्माबोले सूर्य लोकोंके

where the sun had resolved to burn the universe with his fierce rays. Shaunak, then asked, "What for did the sun resolve to burn the world ? 5. What did the gods do to provoke his anger ?" *Sauti* replied, "The sun informed the gods of *Rahu's* drinking the nectar. The latter from that time became his enemy and tried to devour him. He therefore became angry because he thought that he endured all this through his desire to do good to the gods who did nothing to free him from the calamity. He was therefore angry with them and resolved to burn the whole world. He began to send forth his heat for the destruction of the world. The rishis went to gods and said that they were being scorched to death even at midnight. The gods then took them to Brahma and said to him, "What is this great heat that has caused such panic ? The sun has not shone yet but the heat is intolerable. What will be the extent of heat when he shines forth ?" 14. The Grandfather

रुग्रंतुमुद्यतः। दश्यन्नेवहिलोकान्स भस्मराशीकरिष्यति ॥१५॥ तस्यप्रति विधानंच विहितंपूर्वमेवहि । कश्यपस्यसुतोधीमान रुणत्यभिविश्रुतः ॥१६॥ महाकायोमहातेजाः सस्थास्यतिपुरोरवेः । करिष्यतिचसारथ्यं तेजश्चास्यहरिष्यति ॥१७॥ लोकानां स्वस्तिचैवस्या दृषीणांचदिवौकसाम् ॥ प्रमतिरुवाच॥ततःपितामहाज्ञातःसर्वंचक्रेतदाऽरुणः ॥१८॥ उदितश्चैवसविताह्यरुणेनसमावृतः । एतत्तेसर्वमाख्यातं यत्सूर्यमन्युराविशत् ॥१९॥ अरुणश्चयथैवास्य सारथ्यमकरोत्प्रभुः । भूयएवापरंप्रश्नं शृणुपूर्वमुदाहृतम् ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीक पर्वणि सौपर्णे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

सौतिरुवाच ॥ ततःकामगमःपक्षी महावीर्योमहाबलः । मातुरंतिकमागच्छत्परंपारं महोदधेः ॥१॥ यत्रसा विनतातस्मिन्पणितेनपराजिता । अतीवदुःखसंतप्तादासीभाव

नाश के लिये उदयहोगा और सम्पूर्ण लोकों को भस्म करेगा ॥ १५ ॥ उस का उपाय कश्यप के पुत्र बुद्धिमान् अरुण से होगा ॥ १६ ॥ वह बड़े देहवाला तेजस्वी सूर्य के सम्मुख बैठकर सार्थी बन उस के तेज को हरेगा ॥ १७ ॥ इसप्रकार लोकों देवताओं और ऋषियों का कल्याणहोगा, प्रमतिबोला तब पितामह से आज्ञा दियेहुए अरुण ने वैसाही किया । १८ । सूर्य उदयहुआ और अरुण ने उस के तेज को ढका यही सब कथा सूर्य के क्रोधितहोनेकी है जिस प्रकार अरुण उसका सार्थी हुआ वहभी सब कह दी अब फिर पहिले कहेहुए प्रश्न को श्रवण करो ॥ २५ ॥

अध्याय समाप्त: ॥

अध्याय २५ ॥

उग्रश्रवाबोले इस के उपरांत इच्छाचारी और बड़ा पराक्रमी वह पक्षी समुद्र के पार माताके समीप आया ।१। जहां उसकी माता विनता शर्तहारी अतिदुःखित दासीभावको

---

replied, "Indeed the sun has resolved to destroy the whole world to day. But I have already devised a remedy. The famous son of Kashyap, Arun, with his huge body and great splendour, shall be placed in front of the sun, as his chairoteer to sercen the world from being scorched." So Arun was made the sun's Charioteer in accordance with the orders of Brahma to protect the world from the sun's scorching rays. This is the account of the anger of the sun and of Arun's being made his Charioteer, I shall, now continue my former narration. 20.

CHAPTER XXV

(Astik Parva Continued)

Then that bird of great strength and energy, having power to go

सुपागता ॥२॥ ततःकदाचिद्विनतांप्रणतांपुत्रसन्निधौ । कालेचाहूयवचनंकद्रूरिदमभाषत ॥३॥ नागानामालयंभद्रेसुरम्यंचारुदर्शनम् । समुद्रकुक्षावेकांतेतत्रमांविनतेनय॥४॥ ततःसुपर्णमातातामवहत्सर्पमातरम् । पन्नगान्गरुणश्चापिमातुर्वचनचोदितः ॥५॥ स सूर्यमभितोयातिवैनतेयोविहंगमः । सूर्यरश्मिप्रतप्ताश्चमूर्छिताः पन्नगाऽभवन् ॥ ६ ॥ तदवस्थान्सुतान्दृष्ट्वाकद्रूःशक्रमथास्तुवत् । नमस्तेसर्वदेवेशनमस्तेवलसूदन ॥ ७ ॥ नमुचिघ्ननमस्तेऽस्तुसहस्राक्षशचीपते । सर्पाणांसूर्यतप्तानांवारिणात्वंप्लवोभव ॥ ८ ॥ त्वमेवपरमंत्राणमस्माकममरोत्तम । ईशोह्यसिपयःस्रष्टुंत्वमनल्पंपुरंदर ॥ ९ ॥ त्वमेवमेघस्त्वंवायुस्त्वमग्निर्विद्युतोंवरे । त्वमभ्रगणविक्षेप्तात्वामेवाहुर्महाघनम् ॥१०॥ त्वंवज्रमतुलंघोरंघोषवांस्त्वंवलाहकः । स्रष्टात्वमेवलोकानांसंहर्ताचापराजितः ॥११॥

प्राप्तथी ॥ २ ॥ कभी पुत्र के समीप बैठी हुई विनता को कद्रू ने बुलाकर कहा ॥ ३ ॥ हेभद्रे समुद्रकी कोख में बड़ा सुन्दरस्थान है वहां तू मुझको लेचल ॥ ४ ॥ तब विनता कद्रू को और माताकी आज्ञा से गरुड़ सर्पों को उठाकर ले चले ॥ ५ ॥ वह गरुड़ सूर्य के सन्मुख चलता था सूर्यकी किरणों से तपकर सर्प मूर्छितहोगये ॥ ६ ॥ यह अवस्था कद्रू ने अपने पुत्रोंकी देखकर इन्द्रकी स्तुतिकी हे सर्व देवेश आप के अर्थ नमस्कार है । हेबलसूदन आप को नमस्कार है ॥ ७ ॥ हेनमुचि के मारने वाले हजार नेत्रवाले इन्द्राणि के पति आप को नमस्कार है सूर्यकी किरणों से तपेहुए सर्पोंकी जल से रक्षाकरो, हे देवताओं में श्रेष्ठ आपही हमारे परम रक्षक हैं हे पुरन्दर तुम बहुत से जल के वर्षाने में समर्थ हो ॥ ९ ॥ आकाश में तुम्ही मेघहो तुम्ही वायु हो तुम्ही अग्निहो और तुम्ही बिजली हो तुम बादलोंके समूह के चलाने वालेहो तुम्हीको महाघन कहते हैं ॥ १० ॥ तुम अतुल और भयानक बज्रहो और शब्दकरनेवाले बादलहो

everywhere, reached the other side of the Ocean, where his mother, Vinata, having become a slave by the loss of her wager, was in great distress. One day Kadru ordered Vinta to bear her to a certain pleasant Oceanic island inhabited by the Nagas. The mother of Gadur bore her there on her back and Gadur had to carry the snakes by his mother's orders. 5. He rose up through the sky too near the sun and the snakes being scorched by sun's rays began to swoon. Their mother saw them in this plight and prayed Indra thus:—Chief of the gods, I bow to thee. To thee I bow, O slayer of *Bal* and *Namuchi*, to thee of thousand eyes. Protect the snakes from the scorching rays of the sun with thy rain. Thou, best of gods, art our only protector. Purandar, thou hast power over rain. 9. Thou art Air, Clouds, Fire and the Lightning. Thou movest the clouds and art thyself the great cloud. Thou art the

त्वंज्योतिःसर्वभूतानांत्वमादित्योविभावसुः । त्वंमहद्भूतमाश्चर्यंत्वंराजात्वंसुरोत्तमः ॥१२॥ त्वंविष्णुस्त्वंसहस्राक्षस्त्वंदेवस्त्वंपरायणम् । त्वंसर्वममृतंदेवस्त्वंसोमःपरमार्चितः ॥ १३ ॥ त्वंमुहूर्तस्तिथिस्त्वंचत्वंलवस्त्वंपुनःक्षणः । शुक्लस्त्वंबहुलस्त्वंचकलाकाष्ठात्रुटिस्तथा । संवत्सरर्त्तवोमासारजन्यश्चादिना निच ॥ १४ ॥ त्वमुत्तमास गिरिवनावसुंधरासभास्करंवितिमिरमंबरंतथा । महोदधिःसतिमितिर्मिगिलस्तथामहोर्मिमान्बहुमकरोझषाकुलः ॥ १५ ॥ महायशास्त्वमितिसदाऽभिपूज्यसेमनीषिभिर्मुदितमनामहर्षिभिः । अभिष्टुतःपिबसिचसोममध्वरेवषट्कृतान्यपिचहवींषिभूतये ॥१६॥

तुम लोकोंके उत्पन्न और प्रलयकरनेवालेहो और अपराजितहो ॥ ११ ॥ तुम सम्पूर्ण प्राणियों को प्रकाश देनेवाले सूर्य और अग्निहो तुम सब से बड़े आश्चर्यरूप राजा और सब देवताओं में श्रेष्ठहो॥१२॥ तुम विष्णु, सहस्राक्ष इन्द्र,देव और सर्वोत्तम आश्रयहो तुम मोक्षहो और सम्पूर्ण देवताओंसे पूजे हुए चन्द्रहो ॥ १३ ॥ तुम महूर्त तिथि पल क्षण शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, कला, काष्ठा त्रुटि, सम्वत्सर ऋतु और मास रात और दिन सब तुम्हीहो ॥ १४ ॥ तुम सर्वोत्तमहो तुम गिरि वनसहित पृथ्वीहो तुम सूर्य और भास्कर सहित अन्धकार रहित आकाशहो तुम तिमि और तिमिंगिल और अनेक प्रकार के मकर और मच्छियों से भरे समुद्रहो ॥ १५ ॥ तुम प्रसन्न चित्तवाले विद्वान महर्षियोंसे पूजितहो और बड़े यशवाले हो और स्तुति कियेहुए यज्ञ में आकर सोमवली और हवि और संसार के ऐश्वर्य को पान करते हो ॥ १६ ॥ तुम फल के लिये ब्राह्मणों से सदा पूजे जाते हो हे अतुलबलवाले तुम वेदांगोंमें गायेजातेहो और तुम्हारेही कारण

dreadful the matchless thunder. Thou art the creator of the worlds as well as their destroyer. Thou art unconquerable, the light of the world, *Aditya, Vibhavasu*, the highest knowledge, the wonderful and the greatest being. Thou art a wonderful king, the best of gods, *Vishnu*, thousand eyed, the final recourse. Thou art the highly praised *Amrti*, Som the Time, the minute, the day, the fortnights, light and darkness. *Kalta, Kastha Truti* (divisions of time), the year, the season, the month the, night and the day. 14. Thou art the earth with her mountains and forests and the Sky with the sun. Thou art the great Ocean with huge waves, abounding with various fishes and crocodiles. Of great fame, thou art adored by all sages and saints. For the good of the universe thou drinkest *Som* juice and butter offered in sacrifices with *Vedic* hymns. 16. Brahmans, desirous of a boon, adore thee in sacrifices. O thou, of

त्वंविप्रैःसततमिहेज्यसेफलार्थं वेदांगेष्वतुलबलौघगीयसेच । त्वद्धेतोर्यजनपरायणा द्विजेंद्रावेदांगान्यभिगमयंतिसर्वयत्नैः ॥ १७ ॥

इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणिसौपर्णे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

सौतिरुवाच ॥ एवंस्तुतस्तदाकद्र्वा भगवान्हरिवाहनः। नीलजीमूतसंघातैःसर्व मंबरमावृणोत् ॥ १ ॥ मेघानाज्ञापयामासवर्षध्वममृतंशुभम् । तेमेघामुमुचुस्तोयंप्रभूतं विद्युदुज्वलाः ॥ २ ॥ परस्परमिवात्यर्थं गर्जतःसततंदिवि । संवर्तितमिवाकाशंजलदैः सुमहाद्भुतैः ॥३॥ सृजद्भिरतुलंतोय मजस्रंसुमहारवैः। संप्रनृत्तमिवाकाशं धारोर्मिभिर नेकशः ॥ ४॥ मेघस्तनितनिर्घोषैर्विद्युत्पवनकंपितैः। तैर्मेघैःसततासारं वर्षद्भिर निशं तथा ५ नष्टचन्द्रार्ककिरण मंबरंसमपद्यत । नागानामुत्तमोहर्षस्तथावर्षतिवासवे ॥६॥

यज्ञ करनेवाले बड़े ब्राह्मण सम्पूर्ण यत्नोंसे वेदांगों को यज्ञादिकों में सफल कराते हैं१७॥

अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय २६ ॥

उग्रश्रवाबोले इसप्रकार कद्रु से स्तुति किये हुए इन्द्र ने नीले बादलोंसे आकाश ढक दिया ॥ १ ॥ मेघों को उत्तम जल वर्षानेकी आज्ञादी और बिजली से उज्वल उन मेघोंसे बड़ा जल वर्षा ॥ २ ॥ आकाश को गर्जते हुए मेघों ने ढक लिया निरन्तर बड़े शब्दों से जल को बर्साते हुए बादलों की धाराओं से आकाश में नृत्यसाहोगया ४॥ आवाज के साथ बिजुली और पवन से कांपते हुए बादलोंसे आकाश चन्द्र और सूर्य रहितहोगया और इन्द्रके इस प्रकार बर्साने पर सर्पों को बड़ा आनन्द हुआ और

---

matchless power, sung in the Vedangas, Brahmans adore thee through Vedangas.

CHAPTER XXVI.

Indra, the possessor of the best of horses, thus adored by Kadru covered the whole sky with masses of blue clouds and commanded them to pour forth the rain in torrents. The clouds charged with thunder and lightning began to pour forth an incessant shower of rain and the aspect of the sky was such as if the storm would annihilate the world. 4. By the torrents of rain, the deep roar of clouds the flashes of lightning, the storm of wind, and the general agitation, the sky looked as if dancing in madness. The light of the sun disappeared altogether and the sky became dark with clouds and the serpents

आपूर्यतमहीचापिसलिलेनसमंततः। रसातलमनुप्रासंशीतलंविमलंजलम् ॥ ७ ॥ तदा भूरभवच्छन्नाजलोर्मिभिरनेकशः। रामणीयकमागच्छन्मात्रासहभुजंगमाः ॥ ८ ॥

इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि—
सौपर्णेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सौतिरुवाच ॥ संप्रहृष्टास्ततोनागा जलधाराप्लुतास्तदा । सुपर्णेनोह्यमानास्ते जग्मुस्तंद्वीपमाशुवै ॥१॥ तंद्वीपंमकरावासं बिहितंविश्वकर्मणा । तत्रतेलवणंघोरंददृशुः पूर्वमागताः ॥२॥ सुपर्णसहिताःसर्पाः काननंचमनोरमम् । सागरांबुपरिक्षिप्तं पक्षिसंघनिनादितम् ॥३॥ विचित्रफलपुष्पाभिर्वनराजिभिरावृतम् । भवनैरावृतंरम्यैस्तथा पद्माकरैरपि ॥ ४ ॥ प्रसन्नसलिलैश्चापि ह्रदैर्दिव्यैर्विभूषितम् । दिव्यगन्धवहैःपुण्यैर्मा

चारों तरफ जल से पृथ्वी पूर्णहोगई और शीतल और निर्मल जल रसातल तक प्राप्त हुआ ॥ ७ ॥ और पृथ्वी तरंगों सहित जलसे भरगई और सर्प माताके साथ रमणीय द्वीपमें आपहुँचे ॥ ८ ॥

अध्याय २७ ॥

उग्रश्रवा बोले तिसके उपरान्त जलवर्षने से न्हाए और गरुड पर सर्प प्रसन्न हो शीघ्र उस द्वीप में पहुँच गए वह द्वीप विश्वकर्मा ने मकरोंके रहने का स्थान बनाया था वहां आतेही सर्पों ने भयानक लवणासुर को देखा ॥ २ ॥ और गरुड़ सहित सर्पों ने समुद्र के जल से व्याप्त और अनेक प्रकार के पक्षियोंके शब्दों से युक्त मनोहर बन को देखा ॥ ३ ॥ जो विचित्र फल पुष्पवाली बृक्षोंकी लंगारों से भराहुआ था और मनोहर प्रहों से कमल वाले तालाबों से युक्त था ॥ ४ ॥ निर्मल जलवाले दिव्य तालाबों से शोभित था दिव्य गन्ध से युक्त पवित्र पवनों से युक्त था और आकाश से मिले हुओंकी समान वायु के वेग से पुष्पों की वर्षा बरसाते हुए मलयाचल के बृक्षों से

were much pleased with it. All the earth was covered over with water, rising high. The snakes reached safely the intended island.

CHAPTER XXVII.

(ASTIK PARVA CONTINUED)

The serpents were very glad at the refreshing shower and soon arrived at the island on the back of *Gadur*. Crocodiles, in large numbers lived in that island. It was formerly the abode of a fierce demon named Lavan. They saw there a beautiful forest, washed by the waters of the sea and resoundiug with the songs of birds. 3. There were clusters of trees of various kind bearing fruits and flowers, beautiful places for recreation, tanks covered with lotus and filled with pure water. It was refreshed with pure incense breath-

रुतैरुपवीजितम् ॥५॥ उत्पतद्भिरिवाकाशं वृक्षैर्मलयजैरपि। शोभितंपुष्पवर्षाणिमुंचद्भिर्मारुतोद्धतैः ॥६॥ वायु विक्षिप्तसुकुसुमैस्तथाऽन्यैरपिपादपैः। किरद्भिरिवतत्रस्थान्नागान्पुष्पांबुवृष्टिभिः ७ मनःसंहर्षजं दिव्यं गन्धर्वाप्सरसांप्रियम्। मत्तभ्रमरसंघुष्टं मनोज्ञाकृतिदर्शनम् ॥८॥ रमणीयं शिवंपुण्यं सर्वैर्जनमनोहरैः। नानापक्षिरुतंरम्यंकद्रूपुत्रप्रहर्षणम् ९ तत्तेवनंसमासाद्य विजह्रःपन्नगास्तदा। अब्रुवंश्चमहावीर्यं सुपर्णंपतगेश्वरम् १० वहास्मानपरंद्वीपं सुरम्यंविमलोदकम्। त्वंहिदेशान्वहून्रम्यान्व्रजन्पश्यसिखेचर ॥११ सविचिंत्याब्रवीत्पक्षी मातरंविनतांतदा। किंकारणंमयामातः कर्तव्यंसर्पभाषितम् ॥ १२ ॥ विनतोवाच ॥ दासीभूतास्मिदुर्योगात् सपत्न्याःपतगोत्तम। पणंवितथमास्थाय सर्पैरुपधिनाकृतम् ॥ १३ ॥ तस्मिंस्तुकथितेमात्रा कारणे

शोभित था वायु से पुष्प गिरेहुए अनेक प्रकार के वृक्षों से ऐसे प्रतीत होते थे मानों नागों पर पुष्प और जलकी वर्षा की समान वर्षते थे और मन को हर्ष देनेवाले दिव्य गन्धर्व और अप्सराओं के प्रिय और उन्मत्त भ्रमरों के शब्दसे युक्त मनोहर आकृतिवाले रमणीय कल्याण रूप पवित्र सम्पूर्ण जगत्के मनोंको हरण करने वाले अनेक प्रकार के पक्षियों के शब्द से मनोहर शब्दयुक्त कद्रु के पुत्रों को हर्ष देनेवाले उस वन को प्राप्त होकर वह सर्प आनन्द से रहनेलगे और बड़े पराक्रमी पक्षियों के स्वामी गरुड़ से बोले ॥ १० ॥ हे आकाश गामिन गरुड़ तू अनेक प्रकार के मनोहर देशों में फिरताहुआ देखता है इस कारण हमको बड़े मनोहर उत्तम जल वाले किसी दूसरे द्वीप में लेजा। ११ ॥ वह गरुड सोचकर अपनी माता विनतासे बोला हे मातः क्या कारण है जो मुझको सर्पों की आज्ञा करनी पड़ती है ॥ १२ ॥ विनता बोली हे गरुड़ मैं अपनी सपत्नी की दुर्योग से दासी होगई हूं सर्पों ने कपट से शर्त को उलटा करदिया ॥ १३ ॥ गरुड ने उस माता के कारण कहने पर

---

ing breeze which passed through the numerous tall sandal trees. Flowers were dropping from the trees as if to welcome the snakes as guests. That beautiful forest was the favourite haunt of *Gandharvs.* It was full of bees producing honey. With all these appendages the island was as beautiful as could be desired and the sons of Kadru were overjoyed. They then commanded Gadur to take them to some other beautiful island having pure water. 11. Gadur, after some reflection asked his mother, Vinta, "Mother, why should I obey the snakes?" The mother replied, "O best of birds, from misfortune I have become the slave of my sister-in-law. The

गगनेचरः । उवाचवचनंसर्पांस्तेनदुःखेनदुःखितः ॥ १४ ॥ किमाहृत्य विदित्वावा किंवाकृत्वेहपौरुषम् । दास्याद्वोविप्रमुच्येयं तथ्यंवदतलेलिहाः ॥ १५ ॥ सौतिरुवाच। श्रुत्वातमब्रुवन्सर्पाआहरामृतमोजसा। ततोदास्याद्विप्रमोक्षो भवितातवखेचर ॥१६॥

इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि—

सौपर्णेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

सौतिरुवाच ॥ इत्युक्तोगरुडःसर्पैस्ततोमातरमब्रवीत् । गच्छाम्यमृतमाहर्तुंभक्ष्य मिच्छामिवेदितुम् ॥ १ ॥ विनतोवाच ॥ समुद्रकुक्षावेकांते निषादालयमुत्तमम् । निषादानांसहस्राणि तान्भुक्त्वामृतमानय ॥२॥ नचतेब्राह्मणंहन्तुं कार्याबुद्धिःकथंचन। अवध्यःसर्वभूतानां ब्राह्मणोह्यनलोपमः ॥३॥ अग्निरर्को विषंशस्त्रं विप्रोभवतिकोपितः।

दुःखित हो सर्पों से कहा कि हे सर्पो किस वस्तु के लाने से वा किस के जानने से या किस पुरुषार्थ के करने से तुम्हारे दासी भाव से मेरी माता छूटे ॥ १५ ॥ उग्रश्रवा बोले, सर्पों ने यह सुनकर कहा कि तू अमृत को ला तो हे खेचर तू दासभाव से छूटजायगा ॥ १६ ॥

अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय २८ ॥

उग्रश्रवा बोले, सर्पों से इस प्रकार कहाहुआ गरुड़ अपनी माता से बोला मैं अमृत लेने जाताहूं बताओ मैं क्या खाऊं विनता बोली, समुद्र की कोष में एकान्तपर निषाधों का स्थान है और वहांपर सहस्रों निषाध रहते हैं उनको खाकर अमृत को ला ॥ २ ॥ तू ब्राह्मण को मारने की बुद्धि किसी प्रकार न करना ब्राह्मण सम्पूर्ण प्राणियों का अवद्ध्य है क्योंकि अग्नि तुल्य है ॥ ३ ॥ क्रोधा-

---

snakes deceived me and I lost the wager." Hearing this Gadur was sorry and thus addressed the snakes, "Tell me snakes, what thing or information should I bring you or what deed of bravery should I do for you to be freed from slavery ?" The snakes thereupon directed him to bring nectar by force in order to be free from bondage.

CHAPTER XXVIII.

Gadur, then, said to his mother, "I am ready to go in search of nectar. Let me know, mother, how to appease my hunger." Vinata replied, "Many *Nishads* live upon an island. You may eat them up. 2. Donot kill a *Brahman* who, when angry, burns like fire

गुरुर्हिसर्वभूतानां ब्राह्मणःपरिकीर्तितः । ४ । एवमादिभीरूपैस्तु सतांवैब्राह्मणोमतः । सतेतातनहंतव्यः संक्रुद्धेनापिसर्वथा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणानामभिद्रोहोनकर्तव्यःकथंचन । नह्येवमाग्निर्नादित्योभस्मकुर्यात्तथानघ ॥ ६ ॥ यथाकुर्यादभिक्रुद्धोब्राह्मणःसंशितव्रतः । तदेतैर्विविधैर्लिंङ्गैस्त्वंविद्यास्तंद्विजोत्तमम् ॥ ७ ॥ भूतानामग्रभूर्विप्रोवर्णश्रेष्ठःपिता गुरुः । गरुडउवाच । किंरूपोब्राह्मणोमातःकिंशीलः किंपराक्रमः ॥ ८ ॥ किंस्वि-दग्निनिभोभातिकिंस्वित्सौम्यप्रदर्शनः । यथाहमभिजानीयांब्राह्मणंलक्षणैःशुभैः॥९॥ तन्मेकारणतोमातःपृच्छतोवक्तुमर्हसि । विनतोवाच । यस्तेकंठमनुप्राप्तोनिगीर्णंबाडिशं यथा ॥ १० ॥ दहेदंगारवत्पुत्रतंविद्याद्ब्राह्मणर्षभम् ॥ विप्रस्त्वयानहंतव्यःसंक्रुद्धे

तुर ब्राह्मण अग्नि सूर्य विष शस्त्ररूप हो जाता है सम्पूर्ण प्राणियों को गुरु ब्राह्मण कहा है इत्यादि रूपों से सज्जनों ने ब्राह्मणों को सर्वोत्तम माना है, हे तात ब्राह्मण को क्रोधातुरहोकरभी न मारना चाहिये और उन के साथ द्रोहभी किसी प्रकार न करना चाहिये जैसे उत्तम ब्रतोंका रखनेवाला ब्राह्मण क्रोध से भस्मकरता है ऐसे सूर्य को भी बल नहीं तिस से अनेक प्रकार के चिन्हों से तू ब्राह्मण को जान । ७ । सम्पूर्ण प्राणियों में ब्राह्मण प्रथम है चारों वर्णोंमें श्रेष्ठ है और सबका पिता और गुरु है गरुड़ बोले, हेमाता ब्राह्मण रूप गुण पराक्रम व स्वभावमें कैसा होता है क्या अग्नि के समान या शांतस्वरूप विदितहोताहै किसप्रकारसे शुभ लक्षणों से ब्राह्मण को मैं जानूं । ९ । हेमाता उसकारणको पूछते हुए तू कहने के योग्यहै, विनताबोली जो तेरेकण्ठमें गयाहुआ निगले हुए मछली तारने वालों के कांटेके समान प्रतीतहो और जो अंगारेकी समान कण्ठको जलावे उसको

or the sun and kills, like poison or an edged weapon. He is the foremost of creatures and consequently revered by the good. Never kill a *Brahman* even in anger. Neither the fire nor the sun burns so badly as a *Brahman* when angry. Thou must know a *Brahman* by these signs. Indeed he is the foremost of men." Gadur then asked her about the shape, behaviour and prowess of a *Brahmun* and as to whether he were a shining creature like fire or otherwise. 9. Vinata replied, "A true Brahman will prick thy throat like a thorn and burn it like charcoal and thy stomach will refuse to digest a Brahman." And out of affection she prayed for her sons's safety although she knew his great power:—"May Marut (the

नापिसर्वदा ॥ ११ ॥ प्रोवाचचैनंविनतापुत्रहार्दादिदंवचः । जठरेनचजीर्येद्यस्तंजानी
हिद्विजोत्तमम् ॥ १२ ॥ पुनःप्रोवाचविनतापुत्रहार्दादिदंवचः । जानन्त्यप्यतुलंवीर्य-
माशीर्वादपरायणा ॥ १३ ॥ प्रीतापरमदुःखार्तानागैर्विप्रकृतासती । विनतोवाच ।
पक्षौतेमारुतःपातुचंद्रसूर्यौचपृष्ठतः ॥ १४ ॥ शिरश्चपातुवन्हिस्तेवसवःसर्वतस्तनुम् ।
अहंचतेसदापुत्रशांतिस्वस्तिपरायणा ॥ १५ ॥ इहासीनाभविष्यामिस्वस्तिकारे-
रतासदा । अरिष्टंव्रजपंथानं पुत्रकार्यार्थ सिद्धये ॥१६॥ सौतिरुवाच ॥ ततःसमातु
र्वचनंनिशम्यवितत्यपक्षौ नभउत्पपात । ततोनिशादान्बलान्नुपागतोबुभुक्षितःकालइ
वांतकोऽपरः ॥१७॥ सतान्निषादानुपसंहरंस्तदारजःसमुद्धूयनभःस्पृशंमहत् । समुद्र
कुक्षौच विशोषयन्पयःसमीपजान्भूधरजानविचालयन् ॥ १८ ॥ ततःसचक्रेमहदाननं

ब्राह्मण श्रेष्ठ जान और सदा क्रोध में होकरभी तुझे ब्राह्मण को न मारना चाहिये । ११ ।
विनता पुत्र के स्नेहसे फिर गरुड़ से बोली जो पेटमें जाकर न पचे उसको तू द्विजोत्तम
जान ॥१२॥ विनता ने फिर कहा यद्यपि उसके पराक्रम को जानती थी तौभी आशीर्वाद
की इच्छा से अत्यन्त दुःख से व्याकुल नागों से अपमानित विनताबोली हेपुत्र तेरेपक्षोंकी
वायु और तेरे पृष्ठभागकी चन्द्रमा और सूर्य रक्षा करैं ॥ १४ ॥ और अग्नि तेरेसिरकी
रक्षा करे, हेपुत्र तेरेअर्थ शांति और स्वस्ति करतीहुई यहांपर बैठीहुई तेरे कल्याणकीइच्छा
करती रहूंगी और हेपुत्र कार्य सिद्धि करने के लिये निर्विघ्न मार्ग को जा ॥ १६ ॥
उग्रश्रवाबोले तिस के उपरांत उस गरुड़ ने माताके वचन को सुनकर और परोंको फैला
आकाश मार्ग को गमन किया तिस के उपरांत भूखा गरुड़ दूसरे कालकीसमान बलवान
निषाधों के समीप पहुँचा ॥ १७ ॥ निषाधों को संहार करनेवाले गरुड़ के पंखों से उड़ी
हुई रज आकाश तक प्राप्तहुई और समुद्रकी कोष में जलों को सुखा और पहाड़ों को

---

god of wind) protect thy wings; the sun and moon protect thy limb, Angni protect thy head and Vasus protect thy whole body." She then told him to go on his journey and that in the mean time she would pray for his success. 61. Gadur then flew towards the sky and soon alighted on the island of Nishadas. He came down upon them, like the angel of Death, raising a storm of dust and shaking the trees of the forest with his wings. He then checked the thorough fare of the Nishads with his mouth wide open and they fled in confusion into the mouth of the great serpent eater like birds flying in various directions when a storm of wind shakes the trees of the

तदानिषादमार्गमतिरुध्यपक्षिराट् । ततोनिषादास्त्वरिताःप्रवव्रजुर्यतोमुखंतस्यभुजंग
भोजिनः ॥ १९ ॥ तदाननंविवृतमतिप्रमाणवत्समभ्ययुर्गगनमिवार्दिताःखगाः । सहस्र
शःपवनरजोविमोहितायथाऽनिलप्रचालितपादपेवने ॥ २० ॥ ततःखगोवदनममित्र
तापनःसमाहरत्परिचपलोमहाबलः । निषूदयन्बहुविधमत्स्यजीविनोबुभुक्षितोगगन
चरेश्वरस्तदा ॥ २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि सौपर्णेअष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

सौतिरुवाच।तस्यकंठमनुप्राप्तोब्राह्मणःसहभार्यया। दहन्दीप्तइवांगारस्तमुवाचांत
रिक्षगः ॥ १ ॥ द्विजोत्तमविनिर्गच्छतूर्णमास्यादपावृतात् । नहिमेब्राह्मणोवध्यःपापे-
ष्वपिरतःसदा ॥ २ ॥ ब्रुवाणमेवंगरुडंब्राह्मणःप्रत्यभाषत । निषादीममभार्येयंनिर्ग

हिलाते हुए उस गरुड़ ने निषाधों के मार्ग को रोक कर अपना मुख फैलाया तिस के उपरांत शीघ्रही निषाध गरुड़के मुखकी ओर गये ॥ १९ ॥ जैसे पीड़ायुक्त पक्षी आकाश को जाते हैं तिसिप्रकार उस के बड़ेभारी मुखमें सम्पूर्ण निषाध धसगए हजारों वायु से बड़ीहुई रज से अन्धेहोकर जैसे वायु से हिले हुए वृक्ष बन में भययुक्तहोते हैं उसी प्रकारहोगये, निषाधों के भक्षण करने को गरुड़ ने मुखको संकोच किया और अनेक प्रकार के निषाधों को उस दुश्मनों के ताप देनेवाले गरुड़ ने अनेकप्रकार के मत्स्यों के खानेवाले मत्स जीवियोंका नाश किया ॥ २१ ॥

अध्याय समाप्त ॥

अध्याय २९ ॥

उग्रश्रवाबोले, उस के कण्ठ में एक ब्राह्मणभी आगया और वह जलतेहुए अंगारे कीसमान उस के कण्ठ को जलारहाथा उस से गरुड़ बोला, हे दुजोत्तम तू शीघ्र मेरेइस खुलेहुए मुखसे निकलजा मैं कभी पापी ब्राह्मण कोभी नहीं मारता इसप्रकार कहते हुए गरुड़से ब्राह्मणबोला यह जो निषाधजातिकी स्त्री है वहभी निकले गरुड़बोले इस निषाधी

---

forest and then the hungry bird closed his mouth killing thousands of Nishads at one stroke.

CHAPTER XXIX.

(ASTIK PARVA CONTINUED).

A certain *Brahman* entered the mouth of Gadur together with his wife and he began to burn his throat as if it were a live coal. Garur said, "Come out, O Brahman, from my mouth which I have opened for thy exit. I donot kill a Brahman, sinful though he be." The Brahman replied, "Let my wife, who is of Nishada

च्छतुमयासह ॥ ३ ॥ गरुडउवाच । एतामपिनिषादींत्वंपरिगृह्याशुनिष्पत । तूर्णं संभावयात्मानमजीर्णममतेजसा ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच । ततःसविप्रोनिष्क्रांतोनिषादीसहितस्तदा । वर्धयित्वाचगरुडमिष्टंदेशंजगामह ॥ ५ ॥ सहभार्येविनिष्क्रांतेतस्मिन्विप्रेचपक्षिराट् । वितत्यपक्षावाकाशमुत्पपातमनोजवः ॥ ६ ॥ ततोऽपश्यत्सपितरंपृष्टश्चाख्यातवान्पितुः । यथान्यायममेयात्मातंचोवाचमहानृषिः ॥ ७ ॥ कश्यपउवाच । कच्चिद्वःकुशलंनित्यंभोजनेवहुलंसुत । कच्चिच्चमानुषेलोकेतवान्नंविद्यतेबहु ॥ ८ ॥ गरुडउवाच । मातामेकुशलाशश्वत्तथाभ्रातातथाह्यहम् । नहिमेकुशलंतातभोजनेबहुलेसदा ॥ ९ ॥ अहंहिसर्पैःप्रहितःसोममाहर्तुमुत्तमम् । मातुर्दास्यविमोक्षार्थमाहरिष्येतमद्यवै ॥ १० ॥ मात्राचात्रसमादिष्टोनिषादान्भक्षयेतिह । नचमेतृप्तिरभवद्भक्षयित्वासहस्रशः ॥ ११ ॥ तस्माद्भक्ष्यंत्वमपरं भगवन्प्रदिशस्वमे । यद्भुक्त्वाऽमृतमाहर्तुंसमर्थःस्यामहंप्रभो ॥ १२ ॥ क्षुत्पिपासाविघातार्थं भक्ष्यमाख्यातुमेभवान् । कश्यपउवाच ।

कोभी लेकर शीघ्र निकलजा और जो मेरे तेज से नहीं बचाहै ऐसे अपने शरीरको जीवितकर । ४ । उग्रश्रवाबोले, इसके उपरांत वह ब्राह्मण उस निषाधी समेत निकल गरुड़ को आशीर्वाद दे अपनी इच्छा के देशको चलागया ॥ ५ ॥ मनकी समान वेगवाले गरुड़ ने उस ब्राह्मण के स्त्री सहित कण्ठ से निगलने पर आकाश को गमनकिया । ६ । तिस के उपरांत उस ने अप ने पिता कश्यप को देखा और पिताके पूंछने पर उसने यथा योग्य उत्तर दिया और उस से फिर महर्षि कश्यप ने कहा हेपुत्र तुम्हारे कुशल है और भोजन पूर्ण रीति से मिलता है क्या इस मनुष्य लोक में अन्न बहुत है ॥ ८ ॥ गरुड़ बोला हेतात मेरी माता और भाई और मैं कुशल से हूं लेकिन अन्न नहीं मिलता । ९ । और मुझको सर्पोंने अमृत लाने को भेजा है मैं अपनी माता को दासीभाव से छुड़ानेके लिये अमृत को लाऊंगा और मातानेमुझको आज्ञा दीथी कि तू निषादों को भक्षण कर परन्तु उन हजारोंको खाकरभी मेरी तृप्ति न हुई । ११ । तिससे हेभगवन् मुझको और कुछ भोजन आप बतावें हेस्वामिन् जिसको खाकर मैं अमृत लाने को समर्थहोजाऊं १२

caste, come out with me." Gadur granted the request and told the Brahman to come out with the Nishad woman, as soon as possible, before the woman be digested by the heat of his stomach. The Brahman came out with his wife and after praying for Gadur went away. Then Gadur flew towards the sky with the swiftness of lightning and saw his father who welcomed him and questioned about his own welfare and that of family. Gadur said, "My mother, brother and I are well but I donot get enough food to appease my hunger. I am sent by the snakes to fetch nectar and I shall accomplish

इदंसरोमहापुण्यंदेवलोकेपिविश्रुतम् ॥ १३ ॥ यत्रकूर्मोग्रजंहस्तीसदाकर्षत्यवाङ्मुखः। तयोर्जन्मांतरेवैरं संप्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥१४ ॥ तन्मेतत्वंनिबोधस्वयत्प्रमाणौचतावुभौ । आसीद्विभावसुर्नाममहर्षिःकोपनोभृशम् १५भ्रातातस्यानुजश्चासीत्सुप्रतीकोमहातपाः। सनेच्छतिधनंभ्रातासहैकस्थंमहामुनिः ।१६। विभागंकीर्तयत्येवसुप्रतीकोहिनित्यशः । अथाब्रवीचतंभ्रातासुप्रतीकंविभावसुः ।१७। विभागंबहवोमोहात्कर्तुमिच्छंतिनित्यशः । ततोविभक्तास्त्वन्योऽन्यंविक्रुध्यंतेऽर्थमोहिताः ।१८। ततःस्वार्थपरान्मूढान्पृथग्भूतान्स्वकैर्धनैः । विदित्वाभेदयंत्येतानमित्रामित्ररूपिणः ।१९। विदित्वाचापरेभिन्नानंतरेषुपतंत्यथ । भिन्नानामतुलोनाशःक्षिप्रमेवप्रवर्तते ॥ २० ॥ तस्माद्विभागंभ्रातॄणांप्रशंसंति साधवः । गुरुशास्त्रेनिबद्धानामन्योन्येनाभिशंकिनाम् ॥ २१ ॥ नियंतुंनहिशक्यस्त्वं भेदतोधनमिच्छसि । यस्मात्तस्मात्सुप्रतीकहस्तित्वंसमवाप्स्यसि ॥ २२ ॥ शप्तस्त्वे-

भूख और प्यास दूरकरने के लिये आप मुझको भोजन बताने के योग्यहैं कश्यपबोले यह तालाब पवित्र और देवलोक मेंभी प्रसिद्ध है । १३ । जिसमें बड़े भ्राताकूर्म को नीचेकी ओर मुख किये हाथी खैंचताहै, उस के दूसरे जन्म के सम्पूर्ण बैरको कहूंगा ॥ १४ ॥ उसको तू मुझसे सुन ऐसे बलवान वहदोनों भ्राता हैं विभावसु नामवाला महर्षि अत्यन्त क्रोधी था और उसका छोटाभाई सुप्रतीक नाम महा तपस्वी था वह महामुनि नहीं चाहता था कि भाई का और उसका धन एकत्रित रहे और वह सुप्रतीक सदैव विभाग करने को कहताथा इस के उपरान्त विभावसु ने भाईसे कहा । १७ । सर्वदा बहुत से लोग अज्ञान से विभाग करनेकी इच्छा करते हैं और अलगहोकर धन से मोहितहो परस्पर क्रोध करतेहैं ।१८। इनस्वार्थ पर तत्पर अपने धन के साथ अलगहुए मूर्खोंकोजान मित्ररूप बनकर दुश्मन भेद कराते हैं और कोई बैरी इनको अलग जानकर इनकी त्रुटियों पर नाश के कारण बैरको चमका देते हैं जब आपस में भाई अलगहोते हैं तो इनका शीघ्र नाशहोजाताहै । २० । इसीकारण महात्माओं ने बड़ों के बड़प्पन जाननेवाले शास्त्र के बतानेवाले परस्पर मर्यादा भंग के कारण शंका करनेवाले भाइयों का विभाग अच्छानहीं कहा है, जो भेद से धन चाहनेवाला तू रोकने से नहीं रुक सकता इस से हे सुप्रतीक तू मेरेशापसे हाथीके देहको धारण करेगा ॥ २२ ॥ इसप्रकार सुप्रतीक विभावसुसे बोला

this deed to set my mother free from bondage. My mother had directed me to eat the *Nishads* but in spite of my eating up thousands of Nishadas my hunger in not appeased. Please point me out some other food so that I may become strong enough to bring the nectar by force." His father, Kashyap, said, "Yon lake is famous and holy. On the bank of it you will see an elephant struggling with a big tortoise. I shall explain to you the reason why they are so enemical towards each other. In former days

वंसुप्रतीकोविभावसुमथाब्रवीत् ॥ त्वमप्यंतर्जलचरः कच्छपःसंभविष्यसि ॥ २३ ॥ एवमन्योन्यशापात्तौसुप्रतीकविभावसू । गजकच्छपतांप्राप्तवर्थार्थंमूढचेतसौ ॥ २४ ॥ रोषदोषानुषंगेणतिर्यग्योनिगतावुभौ ॥ परस्परद्वेषरतौप्रमाणवलदर्पितौ ॥ २५ ॥ सरस्यस्मिन्महाकायौपूर्ववैरानुसारिणौ । तयोरन्यतरःश्रीमान्समुपैतिमहागजः ॥२६॥ यस्यबृंहितशब्देनकूर्मोऽप्यंतर्जलेशयः । उत्थितोसौमहाकायःकृत्स्नं विक्षोभयन्सरः ॥ २७ ॥ यंदृष्ट्वावेष्टितकरःपतत्येषगजोजलम् ॥ दंतहस्ताग्रलांगूलपादवेगेनवीर्यवान् ॥ २८ ॥ विक्षोभयंस्ततोनागःसरोवहुरुषाकुलम् ॥ कूर्मोऽप्यभ्युद्यताशिरायुद्धायाभ्येतिवीर्यवान् ॥ २९ ॥ षडुच्छ्रितोयोजनानिगजस्तद्द्विगुणायतः ॥ कूर्मस्त्रियोजनोत्सेधोदशयोजनमण्डलः ॥ ३० ॥ तावुभौयुद्धसंमत्तौपरस्परवधैषिणौ ।उपयुज्याशुकर्मेदंसाधयेहितमात्मनः ॥ ३१ ॥ महाभ्रघनसंकाशंतंभुक्त्वामृतमानय । महागिरि

तूभी मेरेशापसे जलवासी कच्छपहोगा ॥ २३ ॥ इसप्रकार मूर्ख सुप्रतीक और बिभावसु धन के लिये एक दूसरे को शाप देकर हाथी और कछुए के देहको प्राप्तहुए क्रोधरूपी दोषके साथ से दोनों तामस योनीको प्राप्तहुए, अपने शरीरके बड़े प्रमाणबलके घमण्ड से दोनों परस्पर बैरीहुए ॥ २५ ॥ इस तालाब में बड़ी देहवाले और पूर्व परके अनुसार द्वेषयुक्तहैं उन दोनों में से एक शोभायुक्त हाथी इस तालाब में आता है ॥ २६ ॥ उसकी आवाज को सुनकर कछुआभी जल के भीतरसे बड़ेदेहके साथ उठाहुआ सम्पूर्ण तालाब को हला देता है । २७ । उसको देखकर हाथी सूंड़को लपेट जल के भीतर अपने शरीरके वेग से जलमें दौड़ताहै । २८ । तिसके उपरान्त वह बड़े क्रोधसे व्याकुल होकर जलको हिलाताहुआ युद्धकी इच्छा करताहै, और कछुआभी युद्ध करने को शिर निकालकर दौड़ताहै॥२९॥हाथी छःयोजन ऊंचा और बारहयोजन चौड़ाहै और कछुआ तीन योजन ऊंचा और दसयोजन चौड़ाहै । ३० । उन दोनों परस्पर युद्ध में उनमत्त एक दूसरोंके मारनेकी इच्छा करनेवालों को खाकर अपने कार्य को सिद्धकर बड़ेबादलों

there was a great Rishi named Vibhavasu. His younger brother *Supritik* was a great *rishi*. The Younger one asked the elder for a partition of their wealth. After repeated requests on the part of the younger brother, *Vibhavasu* said that it was foolish for him to speak of partition as it lead to quarrel and perpetual enmity and urged on him the abvantages of union. But the younge brother was obdurate and was cursed by the other to be turned into an elephant. The elder in return, saying, "Thou shalt become a tortoise living in the waters of the lake." Thus by mutual curse the two have become elephant and tortoise. Both fools are still engaged in hostilities with each other and are proud of their streng-

समप्रख्यंघोररूपंचहस्तिनम् ॥ ३२ ॥ सौतिरुवाच । इत्युक्त्वागरुडंसोऽथमांगल्य-
मकरोत्तदा ॥ युध्यतःसहदेवैस्तेयुद्धेभवतुमङ्गलम् ॥ ३३ ॥ पूर्णकुंभोद्विजागावोयच्चा
न्यत्किञ्चिदुत्तमम् ॥ शुभं स्वस्त्ययनं चापि भविष्यति तवाण्डज । युध्यमा-
नस्य संग्रामे देवैः सार्द्धं महाबल ॥ ३४ ॥ ऋचोयजूंषि सामानि पवित्राणि हवींषि
च । रहस्यानि च सर्वाणि सर्वे वेदाश्च ते बलम् ॥ ३५ ॥ इत्युक्तो गरुडः पित्रा
गतस्तं ह्रदमान्तिकात् । अपश्यन्निर्मलजलं नानापक्षिसमाकुलम् ॥ ३६ ॥ स तत्
स्मृत्वा पितुर्वाक्यं भीमवेगोऽन्तरिक्षगः । नखेन गजमेकेन कूर्ममेकेन चाक्षिपत् ।३७।
समुत्पपात चाकाशं तत उच्चैर्विहङ्गमः । सोऽलम्बं तीर्थमासाद्य देववृक्षानुपागमत् ।
॥ ३८ ॥ ते भीताः समकम्पन्त तस्य पक्षानिलाहताः । न नो भञ्ज्यादिति तदा
दिव्याः कनकशाखिनः ॥ ३९ ॥ प्रचलांगान् स तान् दृष्ट्वा मनोरथफलद्रुमान् ।

के समान भयानक पर्वतकीसी देहवाले हाथी को खाकर अमृत लाओ ॥ ३२ ॥
उग्रश्रवाबोले गरुड़ से ऐसा कहकर कश्यप ने उस के जाने का मंगल किया और कहा
देवताओंके साथ युद्धकरतेहुए तेरा कल्याणहो ।३३। भराहुआकलश ब्राह्मण गायें और
जोकुछ उत्तम वस्तु शुभ और कल्याणकी सूचकहैं हेगरुड़ वह तेरेसम्मुखहोंगी और संग्राम
में देवताओंके साथ लड़तेहुए तुझको ऋग यजु सामवेद और पवित्रहवि और सम्पूर्ण
रहस्य तुझको बल दें इसप्रकार पितासे आशीर्वाद दियाहुआ गरुड़ उस तालाब के
समीप गया उस आकाशमार्ग में जानेवाले और भयानक वेगवाले अनेकप्रकारके पक्षियों
से युक्त निर्मल जल वाले तालाब को देखा और पिताके वचन को यादकर एक पंजे में
हाथी को और दूसरे में कछुए को पकड़ वह गरुड़ आकाश को गया वह बेसहारे सुमेरु
पर्वतके तीर्थ रूप शिखर में जाकर कल्प बृक्षों के समीप बैठने को तैयारहुआ और वह
बृक्ष उस के परोंकी वायु से भययुक्त कम्पायमान हुए ।३९। गरुड़ के डर से सुमेरुपर्वत

---

th and bulk. The elephant is coming towards the lake and hearing his scream the tortoise will surely come out. The two huge beasts will then encounter each other. When they are engaged in their struggle seize both of them. They will form a capital food for thee and thou wilt be able to keep up thy spirit in the struggle for nectar." *Kashyap*, then, blessed his son saying, "May thou be successful in thy struggle for *Amrit*. May all auspicious objects bless thee. May the *Vedas* Yajurand Sam be thy strength in your encounter with the gods for nectar." Thus directed, *Gadur* went to the side of the lake and, having seen the two engaged in fierce combat on the beautiful lake, caught hold of them in his

अन्यानतुलरूपाङ्गानुपचक्राम खेचरः ॥ ४० ॥ काञ्चनै राजतैश्चैव फलैर्वैदूर्य्यशाखिनः । सागराम्बुपरिक्षिप्तान् भ्राजमानान्महाद्रुमान् ॥४१॥ तमुवाच खगश्रेष्ठं तत्र रौहिणपादपः । अतिप्रवृद्धःसुमहानापतन्तंमनोजवम् ॥४२॥ रौहिणउवाच॥यैषामम महाशाखा शतयोजनमायता। एतामास्थायशाखात्वं खादमौगजकच्छपौ ॥ ४३ ॥ ततोद्रुमं पतगसहस्रसेवितं महीधरप्रतिमवपु प्रकम्पयन् । खगोत्तमो द्रुतमभिपत्य वेगवान बभञ्चताम बिरलपत्रसञ्चयाम् ॥ ४४ ॥

इतिश्री महाभारते आदिपर्वाणि आस्तीकपर्वणि सौपर्णे ऊनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

के दिव्य बृक्षकांपे वह उन हिलतेहुए फलवाले बृक्षों को देखकर दूसरे बड़े सुन्दर रूप वाले बृक्षोंके समीप गया जोकि सुवर्ण और चांदीके फलवाले वैदूर्यमणिकीसी शाखावाले और समुद्रके जल से सींचे हुए थे । ४१ । वहांरौहिण नामवाले बड़े बृक्ष ने मनकी समान बेगवाले गरुड़ से कहा । ४२ । यहजो सौयोजन लम्बी मेरी शाखा है इस पर बैठकर तू हाथी और कछुए को खाले फिर हजारों पक्षियों से युक्त और पर्वतके समान देहवाले उस बृक्षको हिलाते हुए उस गरुड़ ने उसपर शीघ्र बैठकर अत्यन्त पत्तों से भरीहुई उस शाखा को तोड़ दिया । ४४ ।

claws. He then flew away with them to a holy place named *Alamva*, overgrown with huge trees. He shook the trees by the wind set in motion by his wings and there was a danger of their breaking down. He saw the trees washed by holy waters and bearing fruits of various colours like precious gems. Among the trees there was a large banyan tree and *Gadur* perched on a wide spread branch of it. But the branch could not bear the weight and was broken from its joint.

सौतिरुवाच ॥ स्पृष्टमात्रातुहङ्घ्रयां सागरुडेनवलीयसा । अभज्यत तरोःशाखा
भग्नांचैकामधारयत् ॥ १ ॥ तांभक्त्वा स महाशाखां स्मयमानो विलोकयन् ।
अथात्र लम्वतोपश्यद्वालिखिल्यानधोमुखान ॥ २ ॥ ऋषयो ह्यत्र लम्बन्ते न हन्या
मितितानृषीन् । तपोरतान् लम्बमानान् ब्रह्मर्षीनभिवीक्ष्यसः ॥ ३ ॥ हन्या-
देतान सम्पतन्ती शाखेत्यथ विचिन्त्यसः। नखैर्दृढतरं वीरः प्रगृह्य गजकच्छपौ ॥
४ ॥ स तद्विनाशसन्त्रासा दभिपत्यखगाधिपः । शाखामास्येन जग्राह तेषा मेवान्व
वेक्षया ॥ ५ ॥ अति दैवन्तु तत्तस्य कर्म दृष्ट्वामहर्षयः । विस्मयोत्कम्पहृदया नाम
चक्रुर्महाखगे ॥६॥ गुरुं भारं समासाद्योड्डीनएवविहंगमः । गरुडस्तु खगश्रेष्ठस्तस्मात्
पन्नगभोजनः ॥ ७ ॥ ततः शनैः पर्य्यपतत् पक्षैः शैलान् प्रकम्पयन् । एवं सो
ऽभ्यपतद्देशान् बहून् सगजकच्छपः ॥८॥ दयार्थं वालखिल्यानां नचस्थानमविन्दत ।

अध्याय ॥ ३० ॥

उग्रश्रवाबोले बलवान गरुड़ के बैठतेही वह शाखा टूटगई और उस ने अपनीचोंच से रोक लिया । १ । उस ने उस टूटीहुई शाखा को देखकर नीचे को लटकतेहुए वाल-खिल्य ऋषियों को देखा । २ । तपयुक्त ब्रह्मर्षियों को शाखा में लटकते देख गिरतीहुई शाखा इनका नाश न करे यह बिचार कर नखों से हाथी और कछुए को मजबूतपकड और उन ऋषियों के विनाश के त्रास से गरुड़ ने शाखाको मुहसे पकड़ा । ५ । उस के अति दिव्य कर्म को देख विस्मितहो तपस्वियों ने उस पक्षी का नाम गरुड़ रक्खा वह सर्पभक्षी पक्षी उस बड़ेभार को उठाकर आकाशमें उड़ा इसकारण इसकानाम गरुड़ किया गया ।७। उपरान्त परोंकी वायु से पहाड़ों को कम्पायमान करता हौले२ उड़नेलगा इसप्रकार गज और कछुए सहित वह बहुत से नगरों को प्राप्तहुआ । ८ । बालखिल्यों

CHAPTER XXX.

No sooner *Gadur* perched on the branch of the tree than it broke. But did not let it fall to the ground for he saw that many *rishis* of *Valkhilya* tribe were hanging head downwards on that gigantic bough. He said to himself that the penance observing *rishis* suspended from it must not be killed. So he held the elephant and the tortoise yet more firmly in his claws and supported the branch in his beak and rose up on the air. The *rishis* seeing this deed, beyond the power of gods, and wondering at it gave him the name saying, "As this ranger of the skies bears such a heavy burden on its wings, therefore this foremost of birds, this great snake eater, will be called *Gadur*. And as he was flying leisurely through the sky, with the elephant and the

स गत्वा पर्वतश्रेष्ठं गन्धमादनमञ्जसा ॥ ९ ॥ ददर्शकश्यपं तत्र पितरं तपसि स्थितम् । ददर्श तं पिता चापि दिव्यारूपं विहङ्गमम् ॥ १० ॥ तेजोवीर्य्य बलोपेतं मनोमारुतरंहसम् । शैलश्रृङ्गप्रतीकाशं ब्रह्मदण्डमिवोद्यतम् ॥ ११ ॥ आचिन्त्यमनभिध्येयं सर्वभूतभयङ्करम् । महावीर्य्यधरं रौद्रं साक्षादग्निमिवोद्यतम् ॥ १२॥ अप्रधृष्यमजेयञ्च देवदानवराक्षसैः । भेत्तारं गिरिशृङ्गाणां समुद्रजलशोषणम् ।१३ लोकसंलोडनं घोरंकृतान्तसमदर्शनम् । तमागतमभिप्रेक्ष्य भगवान् कश्यपस्तदा । विदित्वा चास्य संकल्पमिदं बचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥ कश्यप उवाच ॥ पुत्र मासाहसं कार्षीर्मासद्यो लप्स्यसेव्यथाम् । मा त्वां दहेयुः संक्रुद्धा वालखिल्या मरीचिपाः ॥ १५॥ सौतिरुवाच । ततः प्रसादयामास कश्यपः पुत्रकारणात् । वालखिल्यां

कछिया के कारण जाते हुए पक्षी ने कोई ऐसा स्थान न पाया जहां उस शाखाको रक्खे गरुड़ ने श्रेष्ठ नन्दमादन पर्वत में अपने वेग से जाकर तपस्या करतेहुए अपने पिताको देखा और पितानेभी तेज और पराक्रमयुक्त पर्वतकी शिखरके समान ऊंचे उठाये हुए ब्रह्मदण्डकी समान दिव्यरूप उसपक्षी को देखा तब भगवान कश्यप ने अद्भुत आकृति कठोर मूर्त्ति सम्पूर्ण प्राणियों को भय देनेवाले बड़े पराक्रमी प्रज्वलित अग्निकी समान भयानक और शत्रुओं से न डरनेवाले देव, दानव और राक्षसों से न जीतने योग्य पहाड़ों के शिखरों को तोड़नेवाले समुद्र के जलको सुखानेवाले संसार को मथ ने योग्य कालकीसमान भयानक गरुड़ को देखकर और उस के मन के संकल्पको जानकर यह वचन कहा ।१४। हेपुत्र मत ऐसा साहस कर और न तुझको शीघ्र व्यथा प्राप्तहो सूर्यकी किरणों में तपस्या करनेवाले यह ऋषि तुझको भस्म न करदें । १५ । उग्रश्रवा बोले, कि कश्यप ने पुत्र के कारण बड़े भागवाले तप के बल से पाप रहित बालखिल्य

tortoise in his claws, he beheld many countries under neath but could not find a suitable place to land the *Balkhilyas* in safty. At last he went to his father, *Kashyap*, engaged in asceticism on monnt *Gandhmadan*. *Kashyap* also saw his son—that ranger of the sky, divine in form, splendour, energy and strength, like wind or the mind in speed, of gigantic size, ready to strike, down as the curse of a *Brahman*, inconceivable, indescribable, dreadful, powerful, like *Agni* in splendour, unconquerable by gods and *Asurs*, capable of spliting mountain tops and destroying the world like a second *Yam*. *Kashyap* knowing the difficutly his son was in, said, "Child, donot act rashly for thou wouldst have to suffer for it. The *Valkhilyas*, if angry, can burn thee." He then pacified the *rishis* for his son's sake and said,

महाभागांस्तपसा हतकल्मषान् ॥ १६ ॥ कश्यप उवाच । प्रजाहितार्थमारम्भो गरुडस्य तपोधनाः । चिकीर्षति महत्कर्म तदनुज्ञातुमर्हथ ॥ १७ ॥ सौतिरुवाच ॥ एवमुक्ता भगवता मुनयस्ते समभ्ययुः । मुक्त्वाशाखां गिरिं पुण्यं हिमवन्तं तपोऽर्थिनः ॥ १८ ॥ ततस्तेष्वपयातेषु पितरं विनतासुतः । शाखाव्याक्षिप्तवदनः पर्य्यपृच्छत कश्यपम् ॥ १९ ॥ भगवन् क विमुञ्चामि तरोः शाखामिमामहम् । वर्जितं मानुषैर्देशमाख्यातु भगवान्मम ॥ २० ॥ ततो निष्पुरुषं शैलं हिमसंरुद्धकन्दरम् । अगम्यंमनसाप्यन्यैस्तस्या चख्यौ स कश्यपः ॥२१॥ तं पर्वतं महाकुक्षिमुद्दिश्यससद्‌गा खगः । जवेनाभ्यपतत्तार्क्ष्यः सशाखागजकच्छपः ॥ २२ ॥ न तां वध्री परिणहेच्छत चर्मा महातनुम् । शाखिनो महतीं शाखां यां प्रगृह्ययौ खगः ॥ २३ ॥ स ततः शतसाहस्रं योजनान्तरमागतः । कालेन नातिमहता गरुडः पतगेश्वरः ॥ २४ ॥

ऋषियों को स्तुति से प्रसन्न किया ॥१६॥ कश्यपबोले ! हे तपोधन वाले ऋषियों गरुड़ का प्रजाके हित के लिये कार्यका आरम्भहै यह बड़े कर्म को करना चाहताहै इस से तुम इसको आज्ञा देने के योग्यहो इसप्रकार भगवान् कश्यपसे कहेहुए वह ऋषि उस वृक्षकी शाखा को छोड़कर तपकी इच्छासे पवित्र हिमालयको चलेगये ॥१८॥ इस के उपरांत उन के जाने पर विनता के पुत्र गरुड़ने पितासे कहा ।१९। हेभगवन् इस वृक्षकी शाखा को मैं कहां छोड़ूं जो देश मनुष्यों से वर्जितहो उसको मुझे बताओ ।२०।तिसके उपरांत कश्यपने बर्फसे भरीहुई गुफाओंवाले निर्जन और जवोंके मन सेभी न जाने योग्य पहाड़ को उसे बताया ॥२१॥ शाखा, हाथी और कछुए सहित गरुड़ बड़ी कोखवाले उसपर्वत में शीघ्रतासे गया ॥ २२ ॥ वह पक्षी वृक्षकी बड़ी शाखाको लेकर ॥ २३ ॥ थोड़ेकाल

"O ascetics, *Gadur* is working for the public good. The task he has undertaken is difficult and great and deserves encouragement." The *rishis* left the branch and went to the *Himalyas* to practice asceticism. When the *rishis* had left the branch *Gadur* asked his father where to throw it away, 20. *Kashyap* indicated him a mountain, without human beings, the defiles of which were always covered with snow. *Gadur* then went to that mountain with the elephant tortoise and the branch and let the branch fall over it. The branch fell with great noise and the mountain shook as with a storm, the trees on it dropping showers of flowers. Large stones which contained gold and gems were detached from their bases by the shock and rolled on all sides. The

सतंगत्वाक्षणेनैव पर्वतंवचनात् पितुः । अमुंचन्महतींशाखां सस्वनंतत्रखेचरः ॥२५॥ पक्षानिलहतश्चास्य प्राकम्पतसशैलराट् । मुमोचपुष्पवर्षंच समागलितपादपः ॥२६॥ शृंगाणिचव्यशीर्यन्त गिरेस्तस्यसमन्ततः । मणिकांचनचित्राणि शोभयन्तिमहागिरिम् ॥ २७ ॥ शाखिनोबहवश्चापि शाखयाभिहतास्तया । कांचनैःकुसुमैर्भान्ति विद्युत्वन्तइवाम्बुदाः ॥ २८ ॥ तेहेमविकचाभूयो युताःपर्वतधातुभिः । व्यराजन्शाखिनस्तत्र सूर्यांशुप्रतिरंजिताः ॥ २९ ॥ ततस्तस्यगिरेःशृङ्ग मास्थायसखगोत्तमः । भक्षयामासगरुडस्तावुभौगजकच्छपौ ॥ ३० ॥ तावुभौभक्षयित्वातु सताक्ष्यःकूर्मकुंजरौ । ततःपर्वतकूटाग्रा दुत्पपातमहाजवः ॥ ३१ ॥ प्रावर्त्तन्ताथदेवाना मुत्पाताभयशंसिनः इन्द्रस्यवज्रंदयितं प्रजज्वालभयात्ततः ॥ ३२ ॥ सधूमान्यपतत्सार्चिर्दिवोल्कानभ-

में सौहजार योजन दूरचला गया ॥ २४ ॥ और उस पक्षी ने पिताके बसाये पर्वत में क्षणभर पर जा उस शाखाको वहां छोड़ दिया ॥ २५ इस के परोंकी वायु से वहपर्वत कांपने लगा और गिरेहुए पेड़ोंसे पहाड़पर पुष्पोंकी वर्षा के समानहोगई ॥ २६ ॥ जो मणि और कांचन के शिखर उस पहाड़को शोभित कररहेथे वह चारोंओरसे टूटकर गिर पड़े ॥ २७ ॥ और उस शाखा के गिरने से बहुत से वृक्षों के टूटेहुए सुवर्ण के से पुष्पों से बिजुलियों सहित बादलकी समान शोभायमान हुए ॥ २८ वह वृक्ष सुवर्णकी समान उज्वल और पर्वत के धातुओं से युक्त सूर्यकी किरणों के पड़नेसे अति शोभायमान हुए ॥ २९ ॥ फिर वह पक्षी पहाड़ के शिखर में बैठकर हाथी और कछुए दोनों का भक्षण करने लगा ॥ ३० ॥ बड़े बेगवाला गरुड़ उस कछुए और हाथी को खाकर उस पर्वत के शिखर से आकाशको उड़ा ॥ ३१ ॥ इस के उपरांत देवों को भय जनानेवाले उत्पात होने लगे इन्द्रका प्रिय वज्र भय से जलने लगा । ३२ । धुंएं सहित आकाश से उलका

falling branch struck down large trees that shone like lightning among the clouds, with flowers among their dark foliage. The trees lying on the gold scattered over the mountain looked as if they were dipped in the rays of the sun. *Gadur*, the chief of birds, perched on the summit of that mountain to eat the elephant and the tortoise. Having finished his meal, he flew once more towards the sky. 30. Various omens, foreboding evil appeared among the gods. Indra's favourite thunderbolt blazed frightfully, meteors, with flames and smoke, shot down from the sky throughout the day. The weapons of the Vasus, the *Rudras*, the *Adityas* the *Sadhyas* and *Maruts* clashed with one another. Such things had never happened even in the war between the gods and the *Asurs*. The wind blew accompanied with thunder and meteors fell by thousands. Tremendeous roar

सश्च्युता । तथावसूनांरुद्राणा मादित्यानांचसर्वशः ॥ ३३ ॥ साध्यानांमरुतांचैव ये चान्ये देवतागणाः । स्वं स्वं प्रहरणं तेषां परस्परमुपाद्रवत् ॥ ३४ ॥ अभूतपूर्वे संग्रामे तदा देवासुरेऽपि च । ववुर्वाताः सनिर्घाताः पेतुरुल्काः सहस्रशः ॥ ३५ ॥ निरभ्रमेव चाकाशं प्रजगर्ज्ज महास्वनम् । देवानामपि यो देवः सोऽप्यवर्षत शोणितम् ॥ ३६ ॥ मम्लुर्माल्यानि देवानां नेशुस्तेजांसि चैवहि । उत्पातमेघा रौद्राश्च ववृषुःशोणितंबहु ॥ ३७ ॥ रजांसिमुकुटान्येषामुत्थितानिव्यधर्षयन् । ततस्त्रास-समुद्विग्नःसहदेवैःशतक्रतुः । उत्पातान्दारुणान्पश्यन्नित्युवाचबृहस्पतिम् ॥ ३८ ॥ इन्द्रउवाच । किमर्थंभगवन्घोराउत्पाताःसहसोत्थिताः । न च शत्रुं प्रपश्यामि युधियोनःप्रधर्षयेत् ॥ ३९ ॥ बृहस्पतिरुवाच । तवापराधादेन्द्रप्रमादाच्चशतक्रतो । तपसा वालिखिल्यानांमहर्षीणांमहात्मनाम् ॥ ४० ॥ कश्यपस्यमुनेःपुत्रोविनता

गिरने लगीं इसीप्रकार वसु, रुद्र और आदित्य, साध्य मरुतादि देवताओंके समूहों के अस्त्र एक दूसरे पर दौड़ने लगे जैसे पहले देवासुर संग्राम मेंभी नहीं हुआथा और वायु वज्रोंकी ध्वनि के साथ बहने लगी और सहस्रों उलकायें गिरनेलगीं ।३५। विनाबादलों के आकाश से गर्जनाहोने लगी । ३६ । देवताओंकी मालायें कुम्हलागई और तेज नष्ट होगये उत्पात के जाननेवाले बादल बड़ी रुधिरकी वर्षा करने लगे । ३७ । और उड़ती हुई धूल मुख में जमनेलगी देवताओंसहित त्रास से घबरायाहुआ इन्द्र उन भयानक उत्पातों को देखकर बृहस्पति से बोला । ३८ । हे भगवन् बहुत जल्दी २ भयानकउत्पात क्यों प्रकटहोते हैं मैं उस शत्रु को नहीं देखता जो हमारा संग्राम में तिरस्कार करे ।३९। बृहस्पतिजी बोले हेइन्द्र बालखिल्य ऋषियों के अपमान रूप अपराध से और तेरेअहंकार

of thunder was heard from the cloudless sky. Clouds poured forth showers of blood. The everlasting flowers in the garlands of the gods were faded and the courage of the gods abated. Being perplexed at the sight of these fearful omens, *Indra* said to *Brahashati*, "Can you tell me the cause of these disasters? I see no enemy powerful enough to defeat the gods in battle." 39. And *Brahsapati* replied, "It is through thine own fault and carelessness, as well, as the ascetic penances of the noble *rishis*, the *Valkhilyas*, that the son of *Kashyvp* and *Vinta*, the ranger of skies, of great strength and capable of assuming any form at will is coming to seize nectar and he is powerful enough to take it from you by force. He can perform deeds which no one else can. The impossible to others is possible to him. Having heard these words, *Indra* said to those who guarded the

याश्च खेचरः । हर्तुं सोममभिप्राप्तो बलवान्कामरूपधृक् ॥ ४१ ॥ समर्थो बलिनां श्रेष्ठो हर्तुं सोमं विहंगमः । सर्वसम्भावयाम्यस्मिन्नसध्यामपि साधयेत् ॥ ४२ ॥ सौतिरुवाच । श्रुत्वैतद्वचनंशक्रः प्रोवाचामृतराक्षिणः । महावीर्य्यबलः पक्षी हर्तुं सोममिहोद्यतः ॥ ४३ ॥ युष्मान् सम्बोधयाम्येष यथा न स हरेद्बलात् । अतुलं हि बलं तस्य बृहस्पतिरुवाचह ॥ ४४ ॥ तच्छ्रुत्वा विबुधा वाक्यं विस्मिता यत्नमास्थिताः । परिवार्य्यामृतं तस्थुर्वज्रीच्चेन्द्रः प्रतापवान् ॥ ४५ ॥ धारयन्तो विचित्राणि कांचनानि मनस्विनः । कवचानि महार्हाणि वैदूर्य्यविकृतानिच ॥ ४६ ॥ चर्मण्यपि च गात्रेषु भानुमन्ति दृढानि च । विविधानि च शस्त्राणि घोररूपाण्यनेकशः ॥ ४७ ॥ शिततीक्ष्णाग्रधाराणि समुद्यम्य सुरोत्तमाः । सविस्फुलिंगज्वालानि सधूमानि च

से महात्मा महर्षि बालखिल्यों के तप के बल से और कश्यप ऋषि से विनतामें उत्पन्न हुआ पुत्र आकाशगामी अमृत के हरने के हेतु यहां आताहै वह बलवान और इच्छारूप धारी है । ४१ । बलवानों में श्रेष्ठ अमृत हरने को समर्थ है और वह सम्पूर्ण कामों को जो औरों से नहीं होसकता करसकता है । ४२ । उग्रश्रवा बोले, इन्द्र इसप्रकार बृहस्पति जीसे सुनकर अमृत के रक्षकों से बोला बड़ा बलवान पक्षी अमृत के हरने के हेतु यहां आताहै इस से तुम से कहताहूं कि तुम ऐसा करो कि वह बलपूर्वक अमृत को हरकर न लेजावे और बृहस्पति ने यह कहाहै कि उस पक्षी के बलका प्रमाण नहीं है । ४४ । इस को सुनकर देवता अचम्भे में आये और इन्द्र सहित अमृतको घेरकर बैठे ॥४५॥ सुवर्ण के विचित्र कवचों को जो वैदूर्य मणियोंसे जटित थे पहरने लगे ॥ ४६ ॥ और मजबूत प्रकाशमान ढालोंको शरीर में बांधलिया और अनेकप्रकार के भयानक तीक्ष्ण धार वाली

Amrit: "A bird having great strength and energy is coming to take away the *Amrit*. *Brahaspati* has told me that his strength is unbounded. Guard it very carefully that he may not take it away." The gods were amazed at hearing this and began to guard it carefully. They surrounded the place and *Indra* also joined them. 45. The gods had gold breast plates, decked with gems of great value, and bright armour of tough leather, on their bodies. They were armed with sharpedged weapons of terrible shapes, beyond number, shining like fire. They were also armed with discuses, maces of iron with spikes, tridents, battleaxes, missiles having sharp points and polished maces. Decked with heavenly ornaments and bright arms. They took courage. 50. The gods, match-

सर्वशः ॥ ४८ ॥ चक्राणि परिघाश्चैव त्रिशूलानि परश्वधान् । शक्तींश्च विविधास्तीक्ष्णाः करवालांश्च निर्मलान् । स्वदेहरूपाण्यादाय गदाश्चोग्रप्रदर्शनाः ॥ ४९ ॥ तैः शस्त्रैर्भानुमद्भिस्ते दिव्याभरणभूषिताः । भानुमन्तःसुरगणास्तस्थुर्विगतकल्मषाः ॥ ५० ॥ अनुपमबलवीर्य तेजसो धृतमनसः परिरक्षणेऽमृतस्य । असुरपुरविदारणाः सुराज्वलनसमिद्धवपुःप्रकाशिनः ॥ ५१ ॥ इति समरवरं सुराः स्थितास्ते परिघसहस्रशतैः समाकुलम् । विगलितमिव चाम्बरान्तरं तपनमरीचि विकाशितं बभासे ॥ ५२ ॥

इत्यादिपर्वणि सौपर्णे त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

शौनकउवाच । कोऽपराधोमहेन्द्रस्यकःप्रमादश्चसूतज । तपसा बालखिल्यानां सम्भूतो गरुडःकथम् ॥ १ ॥ कश्यपस्यद्विजातेश्च कथंवैपक्षिराट्सुतः । अधृष्यःसर्वभूतानामव-

---

अनेक शस्त्रों को जिनके अग्नि से सधूम चिंगारे निकलते थे लेकर और चक्र परिघ त्रिशूल फर्शे और अनेकप्रकारकी तीक्ष्ण शक्तियें और चमकीली तलवारें जो उन के शरीर के अनुकूल थीं और भयानक गदाओंको लेकर उन प्रकाशमान शस्त्रों और सुन्दर आभूषणों से शोभितहो तेजस्वी निष्पाप देवता अमृत के चारों ओर रक्षा करने लगे ।५०। दैत्योंके नगर नाश करनेवाले प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशमान देहवाले अनुपम बल औरतेज वाले अमृतकी रक्षामें संग्राम के लिये दत्तचित्त और स्थित सूर्यकी किरणों से प्रकाशमान आकाशकी तरह विदितहोते थे ५२ ॥

अध्याय ३१ ॥

शौनकजी कहने लगे हेसूतपुत्र महेन्द्रका क्या अपराध और क्या आलस्यथा और बालखिल्योंके तप से कैसे गरुड़ पैदा हुआ ॥ १ ॥ ब्राह्मण, कश्यप ऋषि के पक्षिराज

---

less in strength, energy and splendour, capable of storming the towns of *Asurs,* resolutely guarded the nectar and showed themselves in forms bright as fire, The battle field with thousands of gods, bearing bright maces, looked like another sky decked with the rays of hte sun.

CHAPTER XXXI

Shaunak asked *Sauti* what fault or carelessness *Indra* was guilty of and the connection of *Gadur's* birth with the ascetic penances of Valkhilyas as well as the reason of *Gadur*, bird,

ध्यश्चाभवत्कथम् ॥ २ ॥ कथञ्चकामचारीसकामवीर्यश्चखेचरः । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुंपुराणे यदिपठ्यते ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच ॥ विषयोऽयंपुराणस्ययन्मांत्वंपरिपृच्छसि शृणुमवदतःसर्व मेतत्संक्षेपतोद्विज ॥ ४ ॥ यजतःपुत्रकामस्यकश्यपस्यप्रजापतेः । साहाय्यमृषयोदेवा गन्धर्वाश्चददुःकिल ॥ ५ ॥ तत्रेध्मानयनेशक्रो नियुक्तःकश्यपेनह । मुनयोवालखिल्याश्च येचान्यै देवतागणाः ॥ ६ ॥ शक्रस्तुवीर्यसदृशमिध्मभारंगिरिप्रभम् समुद्यम्यानयामासनातिकृच्छादिवप्रभुः ॥ ७ ॥ अथापश्यदृषीन्ह्रस्वानंगुष्ठोदरव-र्ष्मणः । पलाशवर्त्तिकामेकांवहतःसहतान्पथि ॥८॥ प्रलीनान्स्वेष्विवांगेषुनिराहारां

गरुड़जी किसप्रकार पुत्रहुए सम्पूर्ण प्राणियों में अतिरस्करणीय और अवध्य कैसेहुए २ और इच्छाचारी गमन करनेवाले और यथेच्छा पराक्रमी आकाश चारी कैसे हुए यह मैं आप से सुननेकी इच्छा करताहूं यदि आपने इस प्रसंग को पुराण में पढ़ाहो ॥ ३ ॥ उग्रश्रवावाले हेद्विज ! यह पुराणका विषय जो तूने मुझसे पूछा इसको संक्षेपमें मैं वर्णन करता हूं तू सुन ॥ ४ पुत्रकी इच्छाकर प्रजापति कश्यपजीने यज्ञ किया और उस यज्ञ के देवता, ऋषि और गन्धर्व सहायक हुये ॥ ५ कश्यप ऋषिने इंधन आदि सामग्री के लानेको उसयज्ञमें इन्द्रको नियुक्तकिया बालखिल्यादि मुनि औरभी देवतागण उसयज्ञ कार्य में प्रवृत्त थे।६।इन्द्र अपने पराक्रम के समान पर्वतके तुल्य इंधन आदि के बोझको उठा कर लेआत था वह बलवान् और समर्थ था इसकारण उसको कुछ कष्ट नहीं होताथा।७। बालखिल्यऋषि जोकि अँगूठेके बराबर छोटेदेहवाले थे वहभी उसर स्त में इकट्ठे होकर एक छोटीसी ढाककी लकड़ीको उठा ले चले ८ जो वालखिल्य निराहारी व्रतधारण करनेवाले

being the son of *Kashyap*, a *Brahman* and his being unconquerable in war, capable of going everywhere and mustering any amount of energy at will. *Sauti* replied that he would relate all as given in the Purans. *Santi* said, " *Kashyap*, the *Prajapati*, was once engaged in a grand sacrifice for the purpose of offspring and was given help by the gods, the rishis and the *Gandharvas*. *Indra* was appointed by *Kashyap* to bring fuel for the purpose and the *Valkhilyas* were his fellow workmen. 6. *Indra* being very powerful brought mountain loads of fuel each time. He saw the *Valkhilyas* a pigmy race, in the way bringing together a small stalk of *Palas* tree. The rishis were very lean for want of food and were so weak as to be able to get out of a little pool of water, formed by the hoofs of cattle, with great difficulty. *Indra*, proud of his power, looked down upon them with ridicule and left them far behind.

स्तपोधनान् । क्लिश्यमानान्मन्दबलान्गोष्पदेसंप्लुतोदके ॥ ९ ॥ तान्सर्वान्विस्म
स्मयाविष्टोवीर्य्योन्मत्तःपुरन्दरः । अवहस्याभ्यगाच्छीघ्रंलङ्घयित्वावमन्यच ॥ १०॥
तेऽथरोषसमाविष्टाःसुभृशंजातमन्यवः । आरेभिरेमहत्कर्मतदाशक्रभयंकरम् ॥ ११ ॥
जुहुवुस्तेसुतपसोविधिवज्जातवेदसम् । मन्त्रैरुच्चावचैर्विप्रायेकामेनतच्छृणु ॥ १२ ॥
कामवीर्य्यःकामगमोदेवराजभयप्रदः । इन्द्रोन्यःसर्वदेवानांभवेदितियतव्रताः ॥ १३ ॥
इन्द्राच्छतगुणःशौर्य्येवीर्य्येचैवमनोजवः । तपसांनःफलेनाद्यदारुणःसम्भवत्विति १४
तद्बुद्ध्वाभृशसन्तप्तोदेवराजःशतक्रतुः । जगामशरणंतत्रकश्यपंसंशितव्रतम् ॥ १५ ॥
तच्छ्रुत्वादेवराजस्यकश्यपोऽथप्रजापतिः।वालिखिल्यानुपागम्यकर्मसिद्धिमपृच्छत १६

तपोधन, और अपने अंगों को सकोड़ हुए गऊ के चरणके समान जल में भी उतरने में क्लेश को प्राप्तहोते थे—थोड़े पराक्रमी ॥९॥ उन सब ऋषियों को देखकर आश्चर्य से मदोन्मत्त इन्द्र ने हँसी और उल्लंघन तथा अपमानभी किया ॥ १० ॥ इस के उपरांत वे बड़ाभारी क्रोध करके शक्र के भयदायक बड़ेभारी एक कर्म का आरम्भ करनेलगे ११ वह तपस्वी बिधि पूर्वक अग्नि में हवन करने लगे और बड़े २ मन्त्रों को पढने लगे जिस कामनाके लिये उन ऋषियों ने यह काम किया उस को तुम सुनो ॥ १२ ॥ कि इच्छानुसार पराक्रम और गमन करनेवाला इन्द्र को भय देनेवाला सब देवताओंका दूसरा इन्द्रहो इसप्रकार उन उत्तम व्रतवाले ब्राह्मणों ने हवन किया इन्द्रसे पराक्रम में सौगुना और मन के समान गतिवाला और इन्द्रका भयदाई हमारे तपके फल से होवे ॥ १४ ॥ इसबातको जानकर देवताओं का राजाइन्द्र अति क्लेशित हुआ और उस यज्ञ में उत्तम व्रत के करनेवाले कश्यपऋषि की शरण गया ॥ १५ ॥ फिर कश्यप ने इन्द्र के

They were, therefore, much enraged at their disrespect and made preparations for a grand revenge which terrified *Indra*. They poured butter over the sacrificial fire and with Vedic hymns prayed for the birth of another *Indra*, capable of going everywhere at will and calling to his aid any amount of the existing one. They said "He will be hundred times greater in courage, strength swiftness and fiercenss than *Indra*." 14. When *Indra* knew this he was much disturbed and sought the protection of *Kashyap*, the *Prajapati* who went to *Valkhilyas* and asked them about the success of their enterprise. They relied him in the affirmative and *Kashyap*, having appeased their anger said, "*Brahma* has made *Indra* chief over the gods, You, ascetics, are striving to create another. 18. I hope you donot mean to stand in the way of *Brahma's* doings. That your toil may not be in vain, let me

एवमस्त्विततिञ्चापि प्रत्यूचुः सत्यवादिनः । तान्कश्यपउवाचेदं सान्त्वपूर्वं प्रजापतिः ॥ १७ ॥ अयमिन्द्रस्त्रिभुवनेनियोगाद्ब्रह्मणःकृतः । इन्द्रार्थेचभवन्तोऽपि यत्नवन्तस्तपोधनाः ॥ १८ ॥ नमिथ्याब्रह्मणोवाक्यंकर्तुमर्हथसत्तमाः । भवतांहिनमिथ्यायंसंकल्पोवैचिकीर्षितः ॥१९॥ भवत्वेषपतत्त्रीणामिन्द्रोऽतिबलसत्ववान् । प्रसादः क्रियतामस्यदेवराजस्ययाचतः ॥ २० ॥ एवमुक्ताःकश्यपेनवालिखिल्यास्तपोधनाः । प्रत्यूचुरभिसम्पूज्यमुनिश्रेष्ठंप्रजापतिम् ॥ २१ ॥ वालिखिल्याऊचुः । इन्द्रार्थोऽयंसमारम्भःसर्वेषांनःप्रजापते । अपत्यार्थंसमारंभोभवतश्चायमीप्सितः ॥ २२ ॥ तदिदं- सफलंकर्मत्वयैवप्रतिगृह्यताम् । तथाचैवंविधत्स्वात्र यथाश्रेयो ऽनुपश्यसि ॥ २३ ॥ सौतिरुवाच । एतस्मिन्नेवकालेतुदेवीदाक्षायणीशुभा । विनतानामकल्याणी पुत्रकामा

वचन को सुन बालखिल्य ऋषियों के समीप जा कर्मकी सिद्धि को पूछा । १६ । उस सत्यवादी ऋषियों ने कश्यपसे कहा कि कार्य सिद्धहुआ कश्यप ने उस से शांति पूर्वक यह कहा कि । १७ । यह इन्द्र तीनों लोक में ब्रह्माकी आज्ञा से नियत किया गयाहै तुम नेभी इन्द्रहोने को यह यत्न किया है । १८ । हे ऋषियो ब्रह्मा के वाक्य को तुम मिथ्या करने योग्य नहीं और तुम्हाराभी इच्छा कियाहुआ यह संकल्प मिथ्या नहो इसलिये तुम्हारे संकल्पसे अत्यन्त बलवान यह जो उत्पन्नहोगा यह पक्षियोंका इन्द्रहोवे और प्रार्थनाकरते हुए इस इन्द्रकाभी सत्कार करनाचाहिये।२०।इसप्रकार कश्यप से कहेहुए वहऋषिकश्यप का सत्कार करबोले हेप्रजापते, हम सभोंने इन्द्र के उत्पन्न करने का यत्न किया और आपने सन्तानकी इच्छा से इसका आरम्भ किया।२२।तिससे इस सफल कर्मको आप ग्रहण करें और जिसमें कल्याणहो वैसाकरें।२३। उग्रश्रवाबोले इसीसमय दक्षकी पुत्री विनता देवी

---

bring forth an *Indra* of winged creatures with immence strength. *Indra* begs your pardon. Be merciful to him. The *Valkhilyas* said, "We have done our best to produce an *Indra* as thy son. Accept our offer, O *Prajapati*! We leave the matter in thy hands. Settle it according to thy wish." 23. Mean while *Vinta*, the good daughter of *Daksh*, having finished her ascetic penances and purified herself, came to get offspring and *Kashyap* said to her, "I have completed my sacrifice and thou shalt get the boon thou desiredst. Two heroic sons, the lords of the three worlds will be born to thee. They will be of very good fortune and revered by the world by the virtue of my sacrifices and the ascetic penances of the *Valkhilyas*. Take good care of them

यशस्विनी ॥ २४ ॥ तपस्तप्त्वाव्रतपरास्नातापुंसवनेशुचिः । उपचक्रामभर्तारंतामुवा
चाथकश्यपः॥ २५ । आरम्भः सफलोदेवि भवितायस्त्वयेप्सितः । जनयिष्यसिपुत्रौद्वौ
वीरौत्रिभुवनेश्वरौ २६ । तपसावालिखिल्यानांममसङ्कल्पजौतथा । भविष्यतोमहाभागौ
पुत्रौत्रैलोक्यपूजितौ ।२७।उवाचचैनांभगवान्कश्यपःपुनरेवह । धार्य्यतामप्रमादेनगर्भो
यंसुमहोदयः ॥ २८ ॥ एतौसर्वपतत्रीणामिन्द्रत्वंकारयिष्यतः । लोकसम्भावितौवीरौ
कामरूपौविहङ्गमौ ॥ २९ । शतक्रतुमथोवाचप्रीयमाणःप्रजापतिः । त्वत्सहायौमहा-
वीर्य्यौभ्रातरौतेभविष्यतः ॥ ३० ॥ नैताभ्यांभवितादोषःसकाशात्तेपुरन्दर । व्येतुते
शक्रसन्तापस्त्वमेवेन्द्रोभविष्यसि ॥३१॥ नचाप्येवंत्वयाभूयः क्षेप्तव्याब्रह्मवादिनः ।
नचावमन्यादर्पात्तेवाग्वज्राभृशकोपनाः ॥ ३२ ॥ एवमुक्तोजगामेंद्रोनिर्विशंकस्त्रिवि-
ष्टपम् । विनताचापिसिद्धार्थाबभूवमुदितातथा ॥ ३३ ॥ जनयामासपुत्रौद्वावरुणंगरुणं

पुत्र की कामना से युक्त व्रतों को करने वाली तप करके गर्भाधान की इच्छा से पति कश्यप के समीप गई और कश्यप ने उस से कहा ॥ २५ ॥ हे देवी जो तूने इच्छा की है वह तेरा मनोरथ सफल होगा तीन लोक के ईश्वर दो पुत्रों को तू उत्पन्न करेगी ॥ २६ ॥ वालखिल्य ऋषियोंकी तपस्या से और मेरेसंकल्प से उत्पन्न हुए त्रैलोक्य में पूजित तेरेभाग्यवान दो पुत्र उत्पन्न होंगे ॥ २७ ॥ और भगवान कश्यपने फिर विनता से कहा कि सावधानता से इस बड़े उदयवाले गर्भ को धारण करनाचाहिये यह दोनों लोक में सत्कार किये हुए इच्छा के सदृश रूप धारण करने वाले पक्षी सम्पूर्ण पक्षियों की इन्द्रपदवी को प्राप्तहोंगे ॥२९॥ इसके उपरान्त प्रसन्न होता हुआ कश्यप, प्रजापति, इन्द्रसे बोला ! तेरे सहायकारी और पराक्रमी यह दोनों भ्राताहोंगे ॥३०॥ हेइन्द्र ! इन दोनों से तुझको किसीप्रकार का क्लेश न होगा और तू अपने सन्तापको दूरकर त्रैलोक का इन्द्र तूही होगा ।३१। और तू फिर इसप्रकार ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान न करना वाणी रूप वज्र के रखनेवाले और अनिष्फल क्रोध वाले ब्राह्मण का अपमान न करना चाहिये ।३२। इस प्रकार कश्यप ऋषि से कहा हुआ इन्द्र स्वर्गलोक को चलागया और सिद्ध मनोर्थ वाली विनताभी अत्यन्त प्रसन्न हुई ॥३३॥ विनता ने अरुण गरुड़ दोपुत्रों को

for they will be lords of the winged creatures." 30. *Prajapati* then told *Indra* that he shall have two brothers of great energy and prowess, from whom he will get every help and no injury, and he should have no fear of losing his kingdom. He then warned him against looking down upon any rishi with contempt for when angry their words are like lightning. *Indra's* fear was thus abated and he went home with a cheerful heart. *Vinata* also was very cheerful at the prospect of having two sons according to her desire. 35. She gave birth to *Arun* and Gadur. The former,

तथा । विकलांगोऽरुणस्तत्रभास्करस्यपुरःसरः ॥ ३४ ॥ पतत्त्रीणाञ्चगरुडइन्द्रत्वेना भ्यषिच्यत । तस्यैतत्कर्म्मसुमहच्छ्रूयतां भृगुनन्दन ॥ ३५ ॥

इत्यादिपर्व्वणिसौपर्णेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

सौतिरुवाच । ततस्तस्मिन्द्विजश्रेष्ठसमुदीर्णेतथाविधे । गरुडःपक्षिराट्तूर्णसम्प्राप्तोविबुधान्प्रति ॥ १ ॥ तंदृष्ट्वातिवलश्चैवप्राकम्पन्तसुरास्ततः । परस्परञ्चप्रत्यघ्नन सर्व्वप्रहरणान्युत ॥ २ ॥ तत्रचासीदमेयात्माविद्युदग्निसमप्रभः । भौमनःसुमहावीर्य्यः सोमस्यपरिरक्षिता ॥ ३ ॥ सतेनपतगेन्द्रेणपक्षतुण्डनखक्षतः । मुहूर्त्तमतुलंयुद्धंकृत्वा विनिहतोयुधि ॥ ४ ॥ रजश्चोद्धूयसमुहत्पक्षवातेनखेचरः । कृत्वालोकान्निरालोकांस्ते नदेवानवाकिरत् ॥ ५ ॥ तेनावकीर्णारजसादेवामोहमुपागमन् । नचैवददृशुश्छन्ना

उत्पन्न किया उन दोनों में अरुण अपूर्णाङ्ग हुआ जो सूर्य्य का सार्थी है और गरुड़ने पक्षियों की स्वामित्व का अभिषेक लिया, हेभृगुनन्दन उसीगरूड का यह बड़ा भारी कर्म सुनो ॥३५॥

अध्याय समाप्त ॥

अध्याय ३२ ॥

उग्रश्रवा बोले, हे शौनक देवताओं की सेना के उसप्रकार कवच अस्त्र शस्त्रों को धारणकर युद्धार्थ तैयारहोने पर पक्षियों का राजा गरुड़ देवताओंके समीप अतिशीघ्र आ पहुँचा ॥ १ ॥ उस अत्यन्त बलवान् को देखकर देवता कांपगये, उन के सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र परस्पर छूटने लगे, वहांपर अप्रमाण बलवाला अग्नि और विजलीके समान तेजस्वी बड़ा पराक्रमी अमृतका रखनेवाला विश्वकर्मा था वह उस पक्षियों के राजा गरुड़ के पक्ष और चोंच से घायलहोकर महूर्त मात्र बड़ा युद्ध करके मृतक के तुल्य पृथ्वीपर गिरपड़ा ॥५॥ और उस आकाशगामी पक्षीने अपने परोंकी वायुसे धूलि को उड़ाकर लोकों को अप्रकाशितकर देवताओं को ढक दिया उस से ढके हुए देवता अज्ञान को प्राप्तहुए और

with his body half developed became the Charioteer of the sun and the latter was apointed king of the birds.

CHAPTER XXXII.

(ASTIK PARV CONTINUED)

When the gods had prepared themselves for war, Gadur the king of birds, soon came upon them. The gods began to quake with fear at the sight of his extraordinary size. Among the guards of nectar was Bhauman of great strength, who, after a short encouuter with Gadur, lay wounded by the sharp claws beak and wings of that king of birds. The gods were perplexed by the dust storm raised by the bird's wings and could not see

रजसामृतरक्षिणः ॥ ६ ॥ एवंसंलोडयामासगरुडस्त्रिदिवालयम् । पक्षतुण्डप्रहारैस्तु देवान्सविददारह ॥ ७ ॥ ततोदेवः सहस्राक्षस्तूर्णवायुमचोदयत् । विक्षिपेमांरजोवृष्टिंतवेदंकर्ममारुत ॥ ८ ॥ अथवायुरपोवाहतद्रजस्तरसावली । ततोवितिमिरेजातेदेवाः शकुनिमार्दयन् ॥ ९ ॥ ननादोच्चैःसवलवान्महामेघइवाम्बरे । बध्यमानः सुरगणैः सर्वभूतानिभीषयन् ॥ १० ॥ उत्पपातमहावीर्य्यः पक्षिराट्परवीरहा । समुत्पत्यान्तरिक्षस्थं देवानामुपरिस्थितम् ॥ ११ ॥ वर्मिणोविबुधाःसर्वे नानाशस्त्रैरवाकिरन् । पाट्टिशैः परिघैः शूलैर्गदाभिश्च सवासवाः ॥ १२ ॥ क्षुरप्रैर्ज्वलितैश्चापि चक्रैरादित्यरूपिभिः । नानाशस्त्रविसर्गैस्तैर्वध्यमानः समन्ततः ॥ १३ ॥ कुर्वनसुतुमुलंयुद्धं पक्षिराट् नव्यकम्पत । निर्दहन्निवचाकाशे वैनतेयः प्रतापवान् ।

अमृत के रखवाले देवताओं ने गरुड़ को न देखा ॥६॥ इसप्रकार गरुड़ ने वर्गको व्याकुल कर दिया और पक्ष और चोंचोंकी चोटसे देवताओं को विदीर्ण किया । ७ । तिस के उपरांत हजार नेत्रवाले इन्द्र ने शीघ्र वायुको आज्ञा दी कि हे मारुत इस धूलि की वर्षाको अपने वेग से दूर उड़ाकर लेजा यह तेरा कर्म है, बलवान वायु ने अपने वेगसे उस धूलको दूर उड़ादिया अन्धकार के दूरहोनेपर देवताओंने उस पक्षीपर प्रहारकिया९ देवताओंके शस्त्रों से ताड़ित वह सम्पूर्ण प्राणियों को भय दिलाताहुआ आकाशमें बादलों के समान उच्च स्वर से गर्जने लगा । १० । और शत्रुओं का नाश करनेवाला बड़ा बलवान् पक्षियों का राजा गरुड़ आकाशको उड़गया, देवताओंके ऊपर आकाश में वर्तमान गरुड़ के ऊपर कवच पहिरेहुए सब देवता आकाश में जाकर शस्त्रोंकी वर्षा करनेलगे इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवताओंके पट्टिस, परिघ, शूल, गदा, चक्र, जोकि सूर्यकी समान चमकदार थे, और नानाप्रकार के अस्त्रोंकी वर्षा से पीड़ित वह गरुड़ घोरयुद्धको करता हुआ न डरा , और आकाशमें प्रतापशाली वह गरुड़ देवताओं को भस्म करते हुए के

the foe. He then severely wounded the gods by his beak and talon. *Indra* ordered *Vayu* to dispell the storm of dust, which was soon done and when the darkness was dispelled the gods attacked Gadur, and he began to roar loudly like the thunder that is heard at the last day, frightning every body. 10. The king of birds, destroyer of enemies, then rose on his wings and staying over the heads of the gods who were armed with double edged swords, iron maces, pointed lances and discuses shining like the the sun, was attacked by them from all sides and fought for a

पक्षाभ्यामुरसाचैव समन्ताद्व्यक्षिपत् सुरान ॥ १४ ॥ ते विक्षिप्तास्ततोदेवा दुद्रुवुर्गरुडार्दिताः । नखतुण्डक्षताश्चैव सुस्रवुः शोणितंबहु ॥ १५ ॥ साध्याप्राचींसगन्धर्वा वसवोदक्षिणांदिशम् । प्रजग्मुःसहितारुद्रैः पतगेन्द्रप्रधर्षिताः ॥ १६ ॥ दिशंप्रतीचीमादित्या नासत्यावुत्तरान्दिशम् । मुहूर्मुहुःप्रेक्षमाणा युध्यमानामहौजसः ॥ ॥ १७ ॥ अश्वक्रन्देनवीरेण रेणकेनचपक्षिराट् । कथनेनचशूरेण तपनेनचखेचरः ॥ ॥ १८ ॥ उलूकश्वसनाभ्याञ्च निमेषणचपक्षिराट् । प्ररुजेनचसंग्रामं चकारपुलिनेनच ॥ १९ ॥ तान् पक्षनखतुण्डाग्रैरभिनद्विनतासुत । युगान्तकालेसंक्रुद्धः पिनाकीवपरन्तपः ॥ २० ॥ महाबला महोत्साहास्तेनते बहुधाक्षताः । रेजुरभ्रघनप्रख्या-रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ २१ ॥ तान् कृत्वा पतगश्रेष्ठः सर्वानुत्क्रान्तजीवितान । अतिक्रान्तोऽमृतस्यार्थे सर्वतोऽग्निमपश्यत ॥ २२ ॥ आवृण्वानं महाज्वालमर्चिर्भिःसर्वतो

सदृश परों और हृदयके चारों ओर देवताओं को फेंकनेलगा वह गरुड़से पीड़ित हुए देवता भागने लगे नख और चोंच के घावों से बहुतसा रुधिर बहने लगा । १५ । गन्धर्वों सहित साध्य देवता पूर्व दिशा को, बसु रुद्रों सहित दक्षिण दिशा को भाग गये । १६ । आदित्य पश्चिम दिशा को, बारम्बार गरुड़कीओर देखतेहुए गये । १७ । अश्वकन्द और रेणुक शूर कथन, तपन, उलूक, स्वसन, परुज से उरुड़ ने युद्ध किया ।१९। विनता के पुत्र गरुड़ ने इनको पर, नख और चोंच से विदीर्ण किया हे परन्तप ! महा प्रलय के समय क्रोधहोकर महादेव जैसे नष्ट करते हैं बड़े बलवाले और बड़े उत्साह युक्त उस पक्षी गरुड़ के प्रहारों के अनेक घावों से युक्त रुधिरसे बादलों के जलकी समान बर्षाने लगे । २१ । गरुड़ ने उन सभों को प्राण रहित सा कर अमृतके कारण गमन किया और चारोंओर उस ने अग्नि को प्रज्वलित देखा । २२ । जो अग्नि अपने बड़े बड़े लटों

---

long time without flinching. Blood began to flow from the bodies of the gods wounded by the talons and beak of Gadur. 16. Defeated by that lord of birds, the *Sadhyas* and the Gandharvas fled Eastwards, Vasus and Rudras fled Southwards, the *Adityas* to the west and the *Asuins* Northwards. At the time of flying the gods looked again and again, back towards Gadur. Gadur then had to cope with other gods and defeated them also with his beak and talons like Mahadeo in anger at the end of the Yug. The wounded bodies of the *Yakshes* looked like black clouds dropping showers of blood. 21. Having killed them, Gadur went to the place where they had hidden nectar and saw the place surrounded

ऽम्बरम् । दहन्तमिवतीक्ष्णांशुं चण्डवायुसमीरितम् ॥२३॥ ततोनवत्यानवतीर्मुखानां कृत्वामहात्मा गरुडस्तपस्वी । नदीःसमापीयमुखैस्ततस्तैः सुशीघ्रमागम्यपुनर्ज्जवेन ॥ ॥ २४ ॥ ज्वलन्तमग्निं तम मित्रतापनः समास्तरत्पत्ररथो नदीभिः । ततः प्रचक्रे वपुरन्यदल्पं प्रवेष्टुकामोऽग्निमभिप्रशाम्य ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि सौपर्णे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

से सम्पूर्ण आकाश को वायु के सम्मिलितहोने से सूर्य की समान घेररहा था, तिसके उपरान्त महात्मा तपस्वी गरुड़ ने ८१९० मुँह बनाकर और मुखों से नदियों को पी कर शीघ्र प्रज्वलित अग्नि को उन नदियों से ढक दिया और उसे शान्तकर अमृत के स्थान में जानेकी इच्छाकर अपना बहुत छोटा शरीर बना लिया ॥ २५ ॥

अध्याय समाप्तः ॥

on all sides by fire with flames rising to the sky, moved by a violent storm of wind, that seemed burning like the sun. The glorious Gadur then assumed 8190 mouths and filling them all with water from rivers poured it over the fire which was extinguished.

सौतिरुवाच। जाम्बूनदमयोभूत्वा मरीचिनिकरोज्ज्वलः। प्रविवेशबलात्पक्षी बारिवेगइवार्णवम् ॥ १ ॥ सचक्रंक्षुरपर्य्यन्तमपश्यदमृतान्तिके । परिभ्रमन्तमनिशं तीक्ष्णधारमयस्मयम् ॥ २ ॥ ज्वलनार्कप्रभंघोरं छेदनंसोमहारिणाम् । घोररूपंतदस्य र्थं यन्त्रंदेवैः सुनिर्मितम् ॥ ३ ॥ तस्यान्तरंसदृष्ट्वैव पर्य्यवर्त्तत खचरः । अरान्तरेणाभ्य पतत् संक्षिप्यांगं क्षणेनह ॥ ४ ॥ अधश्चक्रस्यचैवात्र दीप्तानलसमद्युती । विद्युज्जिह्वौ महावीर्य्यौ दीप्तास्यौ दीप्तलोचनौ ॥ ५ ॥ चक्षुर्विषौमहाघोरौ नित्यंक्रुद्धौतरस्विनौ । रक्षार्थमेवामृतस्य ददर्शभुजगोत्तमौ ॥ ६ ॥ सदासंरब्धनयनौ सदाचामिषेक्षणौ । तयोरेकोऽपियंपश्येत् सतूर्णम्भस्मसाद्भवेत् ॥ ७ ॥ तयोश्चक्षूंषिरजसा सुपर्णःसहसा-

अध्याय ॥ ३३ ॥

उग्रश्रवाबोले सुवर्ण रूप सूर्यकी किरणोंकी समान उज्वल उस पक्षी ने समुद्र में जल के वेगकी समान उस चक्र में प्रवेश किया उस पक्षी ने अमृत के समीप चारोंओर छुरों से युक्त और निरन्तर भ्रमण करतेहुए और लोहेके बनेहुए तीक्ष्ण धारवाले अग्नि और सूर्यकी समान कान्तियुक्त भयानक अमृत के हरण करनेवालों का छेदन करने वाले चक्र को देखा जो कि देवताओं ने बनवाया था उस पक्षी ने उस चक्र के मध्य भाग को देखकर चारों ओर देखा और क्षण मात्र में अंग को छोटा बनाकर अरों के बीच में से भीतर को गया । ४ । चक्र के नीचे प्रज्वलित अग्नि के समान कान्तिवाले बिजली के समान जिव्हावाले बड़े पराक्रमी प्रज्वलित मुख और नेत्रवाले और बिषवाले महा भयानक नित्य क्रोध और बेगयुक्त बड़े सर्पों को जो अमृतकी रक्षाके हेतु निवास करते थे देखा ॥ ६ ॥ सदा क्रोधयुक्त और पलकों को न लगानेवाले उन में से एकभी जिस को देखले वह शीघ्रही भस्महो जावे ७ गरुड़ ने उन के नेत्रों को शीघ्रधूल से ढक दिया और उन से न देखा हुआ वह गरुड़ चारों तरफ से ताड़न करने लगा

CHAPTER XXXIII.

(ASTIK PARV CONTINUED)

Gadur, then assumed a very fine form to make a forcible entry into the place where *Amrit* was kept. He saw there an iron wheel with edges sharp as razor, revolving continuously. That terrible instrument, bright as the sun, was devised by the gods for cutting to pieces all robbers of the nectar. Gadur waited to find a passage through it. Then assuming a tiny body passed through the spokes of the wheel. There he saw two venomous snakes stationed to Guard the nectar, Their eyes flashed like lightning and flashes of fire came out with their breath their eyes inflaming ceaselessly without winking. A look at their eyes was enough to kill one with fright. 70. Gadur threw dust in their eyes and then attacked the blinded snakes and tore them piecemeal.

वृणोत् । ताभ्यामदृष्टरूपोऽसौ सर्वतःसमताडयत् ॥ ८ ॥ तयोरंगेसमाक्रम्य वैनतेयो ऽन्तरिक्षगः । अच्छिनत्तरसा मध्ये सोममभ्यद्रवत्ततः ॥ ९ ॥ समुत्पाठ्यमृतंतत्र वैनतेयस्ततोवली । उत्पपातजवेनैव यन्त्रमुन्मथ्य वीर्य्यवान् ॥ १० ॥ अपीत्वैवामृतं पक्षी परिगृह्याशु निःसृतः । अगच्छदपरिश्रान्त आवार्य्यार्कप्रभांततः ॥११॥ विष्णुनाचतदाकाशे वैनतेयः समेयिवान् । तस्यनारायणस्तुष्टस्ते नालौल्येनकर्मणा ॥१२॥ तमुवाचाव्ययोदेवो वरदोऽस्मीति खेचरम् । सवव्रेतत्र तिष्ठेयमुपरीत्यन्तरिक्षगः ।१३। उवाचचैनंभूयोऽपि नारायणमिदंवचः। अजरश्चामरश्चस्याममृतेन विनाप्यहम् ॥१४॥ एवमस्त्वितितंविष्णुरुवाच विनतासुतम्।प्रतिगृह्यवरौतौच गरुडो विष्णुमव्रवीत् ।१५। भवतेऽपिवरन्दद्यां वृणोतुभगवानपि । तंवव्रेवाहनं विष्णुर्गरुत्मन्तं महावलम् ॥१६॥ ध्वजञ्च चक्रेभगवानुपरि स्थास्यसीतितम् । एवमस्त्वितितंदेवमुक्त्वा नारायणंखगः

॥ ८ ॥ आकाश गामी गरुड़ ने उन के अंग को आक्रमण कर वेगसे टुकड़े कर दिया तिसके उपरान्त अमृत के समीप गया । ९ । यह बलवान् गरुड़ अमृतको लेकर और उस चक्रको तोड़ आकाश को उड़गया वह पक्षी अमृत को बिना पान किये और सूर्यको अपनी कान्तिसे ढकताहुआ परिश्रम रहित बाहरआया । ११ । फिर वह पक्षी आकाश में विष्णु से मिला और भगवान नारायण उस पक्षी को लोभ रहित देखकर अति प्रसन्न हुए । १२ । और उस से कहा कि मैं तुझको वर देता हूँ उस ने कहा मैं आपकी ध्वजा में रहूं यह वर मांगता हूं । १३ । फिरभी नारायण से यह वचन बोला मैं अमृत पान किये बिनाही अजर अमर रहूं । १४ । भगवान विष्णु ने कहा ऐसाही होगा गरुड़ ने दोनों वरों को विष्णु से लेकर कहा कि । १५ । मैं आपकोभी वरदान देताहूं आप मांगें भगवान् ने उस बलवान् गरुड़ से अपने वाहन होने का वरमांगा १६ भगवान ने कहा कि तू मेरी ध्वजा के ऊपर रहेगा, गरुड़ ने नारायणसे ऐसेही होगा

He then approached the nectar without delay and the mighty son of *Vinta* took nectar from the place and rose on his wings breaking the machinery that surrounded the place. The bird soon came out into the open air but did not drink of it and flew away at once, without fatigue, darkening the splendour of the sun. He then met Vishnu in his way along the sky and *Narayan* was much pleased with the self denial of Gadur and said to him, "I am inclined to grant thee, a boon." Gadur replied, "I would be placed above thee, and be immortal and free from disease with out nectar. 14. Vishnu granted the reqeuest. Having received the boons from Vishnu he desired him to receive on from him (Gadur). There upon Vishnu asked Gadur to become his vehicle and he made him perch on the flage staff of his car, saying, "Thus thou shalt stay above me." The swift ranger

॥ १७ ॥ बभ्राजतरसावेगाद्वायुं स्पर्द्धन्महाजवः । तंव्रजन्तंखगश्रेष्ठं वज्रेणेन्द्रोऽभ्यता डयत् ॥ १८ ॥ हरन्तममृतंरोषाद्गरुडं पक्षिणांवरम् । तमुवाचेन्द्रमाक्रन्दे गरुडः पततां वरः ॥ १९ ॥ प्रहसन श्लक्ष्णयावाचा तथावज्रसमाहतः । ऋषेर्मानंकरिष्यामि वज्रं यस्यास्थिसम्भवम् ॥ २० ॥ वज्रस्यचकरिष्यामि तवैवचशतक्रतो । एतत् पत्रंत्यजा म्येकं यस्यान्तंनोपलप्स्यसे ॥२१॥ नचवज्रनिपातेन रुजामेऽस्तीहकाचन । एवमु क्त्वाततः पत्रमुत्सर्ज्जसपक्षिराट् ॥ २२ ॥ तदुत्सृष्टमभिप्रेक्ष्य तस्यपर्णमनुत्तमम् । हृष्टानिसर्वभूतानि नामचक्रुर्गरुत्मनः ॥२३॥ सुरूपंपत्रमालक्ष्य सुपर्णोऽयंभवत्विति। तदृष्ट्वामहदाश्चर्यं सहस्राक्षःपुरन्दरः । खगोमहदिदं भूतमितिमत्वाभ्यभाषत ॥ २४ ॥

शक्र उवाच । बलंविज्ञातुमिच्छामि यत्तेपरमनुत्तमम् । सख्यंचानन्तमिच्छामि त्वयासहखगोत्तम ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि सौपर्णे त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

कहकर वायु के समान आकाश मार्ग से गमन किया अमृत को हर कर जाते हुए उस पक्षी गरुड़ के ऊपर इन्द्र ने क्रोध से बज्रमारा, और बड़े कोलाहल में गरुड़ने हँसते २ मधुर वाणी से कहा जिसके अस्थि से यह बज्र बना है उस ऋषि का और बज्रका और हेइन्द्र मेराभी सत्कार कर इस एक अपने पर को बज्रकी चोटसे त्याग करताहूं जिसका तू अन्त न पावेगा ॥ २१ ॥ और मुझको इस के लगने से किंचित् मात्रभी पीड़ा नहीं है ऐसा कह उस पक्षी ने अपना एक पर त्याग कर दिया । २२ । उस के त्याग किये हुए श्रेष्ठ पर को देख कर सम्पूर्ण प्राणियों ने प्रसन्नहो गरुड़ का नाम सपर्ण रक्खा हजार नेत्रवाले इन्द्र ने इस बड़े आश्चर्य को देखकर और यह पक्षी कोई बड़ाहै ऐसा समझ कर पक्षी से कहा । २४। इन्द्रबोला ! हेपक्षियों में श्रेष्ठ तेरे इससर्वोत्तम बलके जाननेकी मैं इच्छा करताहूं और तुझ से अत्यन्त मित्रता करनी चाहताहूं ॥ २५ ॥

of the skies then went away mocking the winds with his fletness. While that foremost of winged creatures, Gadur, was flying through the air after robbing nectar, Indra hurled at him his thunderbolt and Gadur being struck with it laughed scornfully and said, "I revere the Rishi of whose bone thy bolt was made, I respect thee also of a thousand sacrifice and I cast this feather of mine whose end thou shalt not attain. 21. I have not been hurt in the least with thy bolt." Having said this, Gadur cast off a feather, the delight of the beholders, who named the bird *Suparn* or fair feather. The thousand-eyed Purandar, looking at this strange incident thought him to be some great being and addressed him thus;—O best of birds, I desire to know the limit of thy great strength and desire eternal frindship with thee."

गरुड़ उवाच । सख्यंमेऽस्तुत्वयादेव यथेच्छसिपुरन्दर । बलन्तुममजानीहि मह्चासह्यमेवच ॥ १ ॥ कामंनैतत्प्रशंसन्ति सन्तः स्वबलसंस्तवम् । गुणसङ्कीर्त्तिनं चापि स्वयमेवशतक्रतो ॥ २ ॥ सखेतिकृत्वातु सखे पृष्टोवक्ष्याम्यहंत्वया । नह्यात्मस्तवसंयुक्तं वक्तव्यमनिमित्ततः ॥ ३ ॥ सपर्वतवनामुर्वीं ससागरजलामिमाम् । वहे पक्षेणवैशक्र त्वामप्यत्रावलम्बिनम् ॥ ४ ॥ सर्वान्सम्पिण्डितान्वापि लोकान्सस्थाणुजङ्गमान् । वहेयमपरिश्रान्तो विद्धीदंमेमहद्बलम् ॥ ५ ॥ सौतिरुवाच । इत्युक्तवचनं वीरं किरीटी श्रीमताम्वरः । आहशौनकदेवेन्द्रः सर्वलोकहितःप्रभुः ॥ ६ ॥ एवमेव यथात्थत्वं सर्वसम्भाव्यतेत्वयि संगृह्यतामिदानींमे सख्यमत्यन्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥ न कार्य्यंयदिसोमेन ममसोमः प्रदीयताम् । अस्मांस्तेहिप्रबाधेयुर्येभ्यो दद्याद्भवानिमम् ॥ ८ ॥ गरुड़ उवाच । किञ्चित्कारणमुद्दिश्य सोमोऽयंनीयतेमया । नदास्यामिसमा

अध्याय ३४ ॥

गरुड़ बोला हे देव इन्द्र ! जो तू मेरीमित्रता चाहता है सो योग्यहै और मेराबल बड़ा और असह्य जान । १ । हे इन्द्र अपने बल और गुणोंकी प्रशंसाकरना महात्माओं ने अच्छा नहीं कहा है तुझ को अपना मित्र समझ तेरेप्रश्नों का उत्तर दूंगा और बिना कारण अपनी स्तुति के वचन न कहने चाहिये । ३ । हेइन्द्र पर्वत बन और समुद्र के जल से युक्त और तेरेसहित इस पृथ्वी को अपने ऊपर उठा लूं । ४ । या स्थावर और जंगम सहित एकत्रित सम्पूर्ण लोकोंको बिना परिश्रम उठाल्लूं इतना बड़ा मेरा बलजान ५ उग्रश्रवाबोले इसप्रकार गरुड़ के वचन को सुन श्रीमनों में श्रेष्ठ मुकुट पहिनेहुये सम्पूर्ण लोकका हितकारक देवताओंका इन्द्रबोला । ६ । जैसा तू कहताहै सो ठीक है और तू सब कुछ कर सकताहै अब अति उत्तम मेरी मित्रता को स्वीकार कर । ७ । यदि अमृत से तुझको कुछ प्रयोजन न होतो मुझको देदे और जिनको तू इस अमृत को देगा वह हमें बड़ी पीड़ा देवेंगे । ८ । गरुड़ बोला ! कुछ काम के कारण इस अमृत को मैं लेजाता हूं

CHAPTER XXXIV

(ASTIK PARV CONTINUED)

And Gadur said, "I accept thy proffer of friendship. If thou wouldst know the extent of my great strength I shall let you know of it although it is not proper to praise self, yet being a friend and asked by thee, I shall tell you though it be self praise, that I can bear, on a single feather of mine, this earth with her mountains, forests and the waters of the Ocean, with thee also stationed on. My strength is so great that I can bear all the worlds together without fatigue. After Gadur of great courage had thus spoken, the chief of Gods, the wearer of crown, bent upon doing good to the worlds, replied, "It is true what you say. Everthing

Let You think ... ready as soon as You Can

दातुं सोमं कस्मैचिदप्यहम् ॥ ९ ॥ यत्रेमन्तुसहस्राक्ष निक्षिपेयमहंस्त्वयम् । त्वमादाय ततस्तूर्णं हरेथास्त्रिदिवेश्वर ॥ १० ॥ शक्र उवाच । वाक्येनानेनतुष्टोऽहं यत्त्वयोक्तमिहाण्डज । यमिच्छसिवरंमत्तस्तं ग्रहाण खगोत्तम ॥ ११ ॥ इत्युक्तः प्रत्युवाचेदं कद्रूपुत्रानअनुस्मरन् । स्मृत्वाचैवोपधिकृतंमातुर्दास्यंत्यनिमित्ततः ।१२। ईशोऽहमपिसर्वस्य करिष्यामितुतेऽर्थिताम् । भवेयुर्भुजगाःशक्रममभक्ष्यामहाबलाः १३ तथेत्युक्त्वान्वगच्छत्तं ततोदानवसूदनः । देवदेवंमहात्मानंयोगिनामीश्वरंहरिम् ॥ १४ ॥ सचान्वमोदत्तंचार्थंयथोक्तंगरुडेनवै । इदंभूयोवचःप्राह भगवांस्त्रिदशेश्वरः ॥ १५ ॥ हरिष्यामिविनिक्षिप्तंसोममित्यनुभाष्यतम् । आजगामततस्तूर्णंसुपर्णोमातुरान्तिकम् । १६ । अथसर्पानुवाचेदंसर्वान्परमहृष्टवत् । इदमानीतममृतंनिक्षेप्स्यामिकुशेषुवः ॥ १७ ॥ स्नातामङ्गलसंयुक्तास्ततः प्राश्नीतपन्नगाः । भवद्भिरिदमासीनैर्यदुक्तंतद्वचस्तदाः ॥ १८ ॥ अदा

और पीनेके लिये किसीको भी नहीं दूंगा । ९ । हे हजार नेत्रवाले इन्द्र जहां मैं इस को धरूं वहांसे तू शीघ्र उठाकर ले आ । १० । इन्द्रबोला हे पक्षिन् इस तेरेकहेहुए वचन से मैं अति प्रसन्नहूं जो तू बर चाहता है सो मुझसे मांग । ११ । उग्रश्रवाबोले इस प्रकार इन्द्र के वचन को सुन और सर्पों को यादकर छल से बिना कारण माताके दासी भावको यादकर इन्द्र से बोला । १२ । मैं सर्पोंके मारने में समर्थहूं तेरी प्रार्थनाकोभी करूंगा हे इन्द्र बड़े बलवान् सर्प मेरेभक्ष्यहों । १३ । तिस के उपरांत ऐसाही होगा गरुड़ से कहकर भगवान् योगियोंके ईश्वर देवताओंके देवता से मिला । १४ । और जो कुछ गरुड़ने इन्द्रसे कहा था उसकी इन्द्र ने विष्णुके समीप प्रशंसाकी फिर इन्द्र भगवान से बोला गरुड़ के रक्खेहुए अमृत को मैं हर कर ले जाऊंगा तिसके उपरांत वह गरुड़ अतिशीघ्र माताके समीप गया । १६ । और अति प्रफुल्लितहो सम्पूर्ण सर्पोंसे बोला कि यह मैं तुम्हारे लिये अमृत लायाहूं और इसको मैं कुशापर रखताहूं यह तुम्हाराहै ।१७। हेसर्पो स्नान और मंगलसे युक्तहोकर इसको पियो यहांपर बैठेहुए तुम ने जोकुछ वचन

is possible for thee. Accept me of a sincere friend and if thou hast no business with the nectar return it to me. Those to whom you wish to give it are enemies of us." And Gadur said, "I bear the nectar for certain reasons. I shall not give it to any one to drink. You may take it away from the place where I shall put it." Indra was much pleased with this speech and the two became fast friends. *Gadur*, recollecting the sons of *Kadru* and the bondage of his mother by deception, said, " Although I have power over all creatures, yet I shall receive the permission to eat serpents as a boon from you. *Indra* sanctioned it. He then went to *Hari*, the *Yogeesawar*, who sanctioned all that *Gadur* had said and told *Gadur* that he would bring the nectar when it is placed by him. *Gadur* then went to his mother and there told the snakes that he

सचिवैनया तेयमद्यप्रभृतिचास्तुमे । यथोक्तंभवतामेतद्वचोमेप्रतिपादितम् ॥ १९ ॥ ततः स्नातुं गताः सर्पाः प्रत्युक्त्वाते तथेत्युत । शक्रोऽप्यमृतमाक्षिप्यजगाम त्रिदिवं-पुनः ॥ २० ॥ अथागतास्तमुद्देशं सर्पाःसोमार्थिनस्तदा । स्नाताश्चकृतजप्यामहृष्टाः कृतमङ्गलाः ॥ २१ ॥ यत्रैतदमृतंचापिस्थापितंकुशसंस्तरे । तद्विज्ञायहृतंसर्पाः प्रति-मायाकृतञ्चतत् ॥ २२ ॥ सोमस्थानमिदंचेतिदर्भास्तेलिलिहुस्तदा । ततोद्विधाकृता जिव्हाःसर्पाणांतेनकर्मणा ॥ २३ ॥ अभवंश्चामृतस्पर्शाद्दर्भास्तेऽथपवित्रिणः । एवंतद मृतंतेनहृतमाहृतमेवच । द्विजिह्वाश्चकृता सर्पागरुडेनमहात्मना ॥२४॥ ततःसुपर्णःपरम प्रहर्षवान् विहृत्यमात्रासहतत्रकानने । भुजङ्गभक्षः परमार्चितः खगैरहीनकीर्त्तिर्विनता ममंदयत् ।२५। इमाङ्कथांयःशृणुयान्नरःसदापठेत् वाद्विजगणमुख्यसंसदि । असंशयंत्रि-दिव मियात्सपुण्यभाङ्महात्मनः पतगपतेःप्रकीर्त्तनात् ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीकेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ सौपर्णं समाप्तं ॥

मुझसे कहाथा वह मैंने तुम्हारे कहे अनुसार कर दिया और आज मेरीमाता दासित्वसे छूटजावे । १९ । ऐसाहीहोगा गरुड़ से कहकर सर्प स्नान करने को गये और इन्द्रभी उस अमृत को उठाकर फिर स्वर्ग को चलागया । २० । इस के उपरांत सर्प स्नान जप मंगल कियेहुये प्रसन्न चित्त अमृत पीने को उस स्थान में आये । २१ । जहां कुशों पर वह अमृत रक्खा गयाथा सर्पों ने उसे वहां न देखकर और उस गरुड़के कपटपूर्वक अमृत दानको जानकर यह अमृतके रखनेकी जगहहै यह समझकर उस स्थानको सर्पोंने चाटा और उसके चाटने से और कुश के लगने से उनकी जिह्वा कटगई और दोफांकें होगई । २३ । और वह कुश अमृत के स्पर्श से पवित्रहोगई इसप्रकार गरुड़ने स्वर्ग लोक से अमृत को ला सर्पों के समीप ला उसको द्विजिह्वा बनाया । २४ । इसप्रकार सर्पों का भक्षण करनेवाला पक्षियों से पूजित बड़ी कीर्त्तिवाला यह गरुड़ माताके साथ आनन्दित हो परमसुख करने लगा २५ जो मनुष्य सर्वदा इसकथाको सुने या ब्राह्मणों के मध्य में कहे वह पुण्यभागी होकर महात्मा गरुड़के कीर्त्तनसे वह निःसन्देह स्वर्ग को जायगा२६

---

had brought them nectar and would place it on the grass for them to drink of it after bathing. He then asked the serpents to release his mother from bondage as he had done their bidding. The snakes granted the requ st and went to bathe. *Indra*, in the meantime took away the nectar to heaven. The serpents, when they returned from bathing, found the place empty and knew that they had been deceived. They then licked the grass and their tongues were bisected by that act. The grass (Kusa) too from contact with *Amrit* has become holy from that time. Thus nectar was brought by *Gadur* for the snakes from heaven and the tongues of the serpents became divided. Gadur enjoyed the company of his mother in the wood and pleased his mother by eating the serpents. He who listens to this story of Gadur's prowess or reads it to an assembly of *Brahmans*, acquires great merit and is sure to gain heaven.

शौनक उवाच । भुजङ्गमानां शापस्य मात्राचैव सुतेन च । विनतायास्त्वया प्रोक्तं कारणं सूतनन्दन ॥ १ ॥ वरप्रदानंभर्त्रा च कद्रूविनतयोस्तथा । नामनी चैव ते प्रोक्ते पक्षिणोर्वैनतेययोः ॥ २ ॥ पन्नगानन्तु नामानि न कीर्त्तयसि सूतज । प्राधान्येनापि नामानि श्रोतुमिच्छामहे वयम् ॥३॥ सौतिरुवाच । बहुत्वान्नामधेयानि पन्नगानां तपोधन । नकीर्त्तयिष्ये सर्वेषां प्राधान्येनतुमे शृणु ॥ ४ ॥ शेषःप्रथमतोजातो वासुकिस्तदनन्तरम् । ऐरावतस्तक्षकश्च कर्कोटकधनञ्जयौ ॥ ५ ॥ कालिकेयोमणि-नागश्च नागश्चापूरणस्तथा । नागस्तथापिंजरक एलापत्रोऽथवामनः ॥ ६ ॥ नीला-नीलौतथा नागौ कल्माषशवलौतथा । आर्य्यकश्चोग्रकश्चैव नागःकलशपोतकः । ७। सुमनाख्यो दधिमुखस्तथा विमलपिण्डकः । आप्तःकर्कोटकश्चैवशंखो वालिशिखस्तथा ।८। निष्ठानकोहेमगुहो नहुषःपिङ्गलस्तथा । वाह्यकर्णो हस्तिपदस्तथामुद्गरपिण्डकः ।९।

अध्याय ३५ ॥

शौनकबोले मातासे सर्पोंको शापहोने का कारण और विनता को अरुण से शाप का कारण हेसूतनन्दन आपने कहा । १ । और कश्यप ने कद्रु और विनता को जो बरदान दिया वहभी कहा अरुण और गरुड़ दोनों के नाम आपने कहे ।२। हे सूत सब सर्पों के नामों को आप नहीं कहते तो हम मुख्य २ नामों को सुननेकी इच्छा करते हैं ॥ ३ ॥ उग्रश्रवाबोले हेतपोधन शौनक सर्पोंके बहुत होने के कारण तुम मुख्य २ नागों को मुझ से सुनो ॥ ४ ॥ १ शेष २ वासुकि, ऐरावत तक्षक, करकोटक धनंजय ॥ ५ ॥ काली यह, मणि, अपूर्ण पिंजरक, एलापात्र, वामन ६ ॥। नील और अनील कलमाष, शवल, अर्यक, उग्र, कलशपोतक, सुमनाख्य, दधिमुख, विमल पिण्डक, कर्कोटक, शंख, बालिशिख, ८ ॥। निष्ठानक, हेमगुह, नहुष पिंगल, वाह्यकगण, हस्तिपद,

CHAPTER XXXV

"Thou hast told us, Sauti," said Shaunk, "How the serpents were cursed by their mother and Vinata by her son and the grant of the boons to Kadru and Vinata by their husband. Thou hast also told us the names of Vinata's sons. But thou hast not yet told us the names of the snakes. We wish to know the names of principal ones." And Sauti replied, "I shall not mention the names of all the snakes as I fear the list would be a lengthy one but I give you the names of the principal ones:— The first born among them was *Sesh* and then *Basuki*. Then, in order, *Airavat*, *Tahshak*, *Karkotak*, *Dhananjaya*, *Kalkeya*, *Mani*, *Apuran*, *Pinjarata*, *Elaprata Vaman*, *Nil*, *Anil*, *Kalmash*, *Saval*, *Aryak*, *Ugra*, *Kalaspotak*, *Sanhh*, *Balisika*, *Nishthanah*, *Hemyuh*, *Apt*, *Karotak*, *Sankh*. *Valisikh*,

कम्बलाश्वतरौचापिनागःकालीयकस्तथा । वृत्तसम्वर्त्तकौनागौद्वौचपद्मावितिश्रुतौ ॥ १० ॥ नागःशङ्खमुखश्चैवतथाकुश्माण्डकोपरः । क्षेमकश्चतथानागोनागःपिण्डारकस्तथा ॥ ११ ॥ करवीरःपुष्पदंष्ट्रोविल्वकोविल्वपाण्डुरः । मूषकादःशंखशिराः पूर्णभद्रोहरिद्रकः ॥ १२ ॥ अपराजितोज्योतिकश्चपन्नगःश्रीवहस्तथा । कौरव्योधृतराष्ट्रश्चशङ्खपिण्डश्चवीर्य्यवान् ॥ १३ ॥ विरजाश्चसुबाहुश्चशालिपिण्डश्चवीर्य्यवान् । हस्तिपिण्डःपिठरकःससुमुखःकौणपाशनः ॥ १४ ॥ कुठरःकुञ्जरश्चैवतथानागः प्रभाकरः । कुमुदःकुमुदाक्षश्चतित्तिरिर्हलिकस्तथा ॥ १५ ॥ कर्दमश्चमहानागोनागश्चबहुमूलकः । कर्कराकर्करौनागौकुण्डोदरमहोदरौ ॥ १५ ॥ एतेप्राधान्यतोनागाःकीर्त्तिता द्विजसत्तम । बहुत्वान्नाम धेयाना मितरे नानु कीर्त्तिताः ॥ १७ ॥ एतेषांप्रसवोयश्चप्रसवस्यचसन्ततिः । असंख्येयेतिमत्वातान्नब्रवीमितपोधन ॥ १८ ॥ बहूनीहसहस्राणिप्रयुतान्यर्वुदानिच । अशक्यान्येवसंख्यातुंपन्नगानांतपोधन ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणिआस्तीके सर्पनाम कथने पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

मुद्गर, पिण्डारक ॥ ९ ॥ कम्बल और अश्वतर कालीय, वृत्त, सम्वर्तक, मुसकाद, शंखशिर, पूर्णभद्र, हरिद्रक ॥ १२ ॥ अपराजित, ज्योतिक, श्री वह कौरव्य, धृतराष्ट्र, शंखपिण्ड, विरजा, सुबाहु, शालिपिण्ड, हस्तिपिण्ड पिठरक, सुमुख, कौणपाशन, कुठर कुंजर, प्रभाकर नाग, कुमुद और कुमुदाक्ष, तितृम हलिक, महानाग, कर्दम बहुमूलक नाग, करकर अकरकर ॥ १६ ॥ यह मुख्य २ नाग मैंने तुमसे कह दिये बहुतहोने से और नाम नहीं कहे १७ इनकी सन्तान और सन्तानकी सन्तानको असंख्य समझ वह मैं नहीं कह सकता १८ हेतपोधन इस संसार में अगणित सर्प हैं १९ ॥

Nisthauk, Hemguh, Nahns, Pingal, Bahiyakarn, Hastipad, Mudparpindak, Kamval, Asawatra, Kaliyak, Virtt, Samvartak, Padma, Mahapadm, Sankhmuka, Kushmandak, Kshemak, Pindarak, Karvir, Fuhpdanstrah, Vilwak, Vilwapandra, Musakakad, Sankhshira, Purnbhadra, Haridrak, Aparajit, Jyotik, Shrivah, Kauravya, Dhritrashra, Sankpind, Viraj Subahu, Sulipind, Hastipind, Pitharak, Sumnkh, Kaunpashan, Kuthur, Kunjar, Prabhakar, Kamud, Kumudakshya, Tittiri, Halika, Kardam, Vahumulak, Karakar Akarkar, Kundodar, Mahodar and many others whose names I have not mentioned for the fear of being lengthy. They have become innumerable with their children and grand children.

शौनक उवाच । आख्याताभुजगास्तातवीर्य्यवन्तोदुरासदाः । शापंतंतेऽभिविज्ञायकृतवन्तःकिमुत्तरम् ॥ १ ॥ सौतिरुवाच । तेषान्तुभगवाञ्छेषःकद्रूंत्यक्त्वामहायशाः । उग्रंतपःसमातस्थेवायुभक्षोयतव्रतः ॥ २ ॥ गन्धमादनमासाद्य बदर्य्याञ्चतपोरतः । गोकर्णेपुष्करारण्ये तथाहिमवतस्तटे ॥ ३ ॥ तेषुतेषुचपुण्येषुतीर्थेष्वायतनेषुच एकान्तशीलोनियतः सततंविजितेन्द्रियः ॥ ४ ॥ तप्यमानंतपोघोरं तंददर्शपितामहः संशुष्कमांसत्वक्स्नायुं जटाचीरधरंमुनिम् ॥ ५ ॥ तमब्रवीत्सत्यधृतिं तप्यमानंपितामहः । किमिदंकुरुषेशेष प्रजानांस्वस्तिवैकुरु ॥ ६ ॥ त्वंहितीव्रेणतपसा प्रजास्तापयसेऽनघ । ब्रूहिकामंचमेशेष यस्तेहृदिव्यवस्थितः ॥७॥ शेष उवाच । सोदर्य्याममसर्वेहि भ्रातरोमन्दचेतसः । सहतैर्नोत्सहेवस्तुं तद्भवाननुमन्यताम् ॥ ८ ॥ अभ्यसूयन्तिसत

अध्याय ३६ ॥

शौनकबोले हेतात उग्रश्रवा बड़े पराक्रमयुक्त सर्पों के नाम तुम ने कहे सर्पोंने अपनी माताके शापको सुनकर क्या उत्तर दिया उग्रश्रवाबोले उन सर्पोंमें बड़े यशवाला शेष अपनी माता कद्रूको त्यागकर वायु भक्षण कर नियम पूर्वक व्रतों को करने लगा ॥ २ ॥ गन्धमादन में जाकर और बद्रीके बन में जाकर तप करने लगा, गोकर्ण में पुष्कर में हिमाचल के तट में और पुण्य तीर्थों, प्रसिद्ध स्थानों और एकान्त में रहताहुआ नियम पूर्वक जितेन्द्रियहोकर घोर तप करते हुए और सूखे मांस त्वक और गर्दनवाला जटा और भोजपत्रादि को पहिरेहुए मुनि रूप से शेषनागको ब्रह्मा ने देखा ॥ ५ ॥ पितामह ब्रह्मा ने सत्य धैर्युक्त तप करते हुए शेष से कहा कि तू यह क्या करता है प्रजाओं के कल्याणको कर ॥ ६ ॥ हे पापरहित शेष तू इस तीव्र तप से लोकोंको ताप देता है हे शेष अपने काम को मुझसे कह ॥ ७ ॥ शेषबोला मेरेसगेभाई सबमन्दबुद्धिहैं इसकारण मैं उन के साथ रहना नहीं चाहता, इस बातको आप जानें ॥ ८ ॥ शत्रुओंके सदृश

CHAPTER XXXVI.

(ASTIK PARV CONTINUED)

Shaunak said, "O child, thou hast named many snakes of great energy and invincible in battle. What did they do after hearing the curse of their mother? *Sauti* said, "The illustrious *Shesh*, of great renown, left his mother to practice penance and lived upon air to observe his Gandamadan, Vadari, Gokarn Pushkar and the Himalyas. He passed many years in these places which were holy on account of their water or soil and kept his passions fully under control. Brahma saw him, that ascetic with knotted hair clad in rags, his flesh, skin and siniews dried up by hard penances. And Brahma said, "What is this that thou art doing, Shesh? Why do you not employ your time in doing good to the world? Thou

तंतं परस्परममित्रवत् । ततोऽहंतपआस्थितो नैतानपश्येयमित्युत ॥ ९ ॥ नमर्षयन्तिस सुतां सततंविनतांचते । अस्माकंचापरोभ्राता वैनतेयोऽन्तरिक्षगः ॥ १० ॥ तंचद्वि-षन्तिसततं सचापिबलवत्तरः । वरप्रदानात्स पितु कश्यपस्यमहात्मनः ॥ ११ ॥ सोऽहंतपः समास्थाय मोक्ष्यामीदंकलेवरम् । कथंमेप्रेत्यभावेऽपि नतैःस्यात्सहसंगमः ॥ १२ ॥ तमेवंवादिनंशेषं पितामहउवाचह । जानामिशेष सर्वेषांभ्रातृणांतेविचेष्टितम् ॥ १३ ॥ मातुश्चाप्यपराधाद्वै भ्रातृणांतेमहद्भयम् । कृतोऽत्रपरिहारश्च पूर्वमेवभुजंगम ॥ १४॥ भ्रातृणांतवसर्वेषां नशोकंकर्त्तुमर्हसि । वृणीष्वचवरंमत्तः शेषयत्तेऽभिकांक्षितम् ॥ १५ ॥ दास्यामिहिवरंतेऽद्य प्रीतिर्मेपरमात्वयि । दिष्ट्याबुद्धिश्चतेधर्मे निविष्टा पन्नगोत्तम । भूयोभूयश्चते बुद्धिर्धर्मे भवतुसुस्थिरा ॥ १६ ॥ शेष उवाच । एषएव

एक दूसरे को बुरा कहते हैं इसकारण इनको मैं न देखूं यह समझकर तपस्या में बैठ गयाहूं ॥ ९ ॥ यह पुत्रोंसहित विनता को वह मेरेभाई अच्छा नहीं समझते, औरहमारा आकाशगामी जो दूसरा भाई गरुड़ है उस के साथ सदा विरोध रखते हैं और वहगरुड़ पिता महात्मा कश्यपके बरदान से अत्यन्त बलवान है ११ इसकारण मैं सबको त्यागूं गा मरे पश्चात्भी उन के साथ मेरा समागम नहो १२ इसप्रकार कहते हुए शेष से ब्रह्माजीने कहा हे शेष तेरे सम्पूर्ण भाइयों के कर्मों को मैं जानताहूं १३ और तेरीमाता के शाप से तेरेभाइयों को बड़ा भय प्राप्तहुआहै, इस विषय में मैंने पहिलेही उपाय कर दिया है १४ इन सब भाइयों के लिये शोक करने के योग्य तू नहीं है और मुझसे जो तू चाहताहै बरदान मांग, १५ मैं तुझसे अति प्रसन्नहूं और तेरी इच्छानुसार बरदूंगा हेसर्पों में श्रेष्ठ मुझको अति प्रसन्नता है कि तेरी बुद्धि धर्म कार्य में लगी और बारम्बार

---

art giving trouble to the creatures of the world by your hard penances. Let me know thy heart's-desire." Shesh replied, "My own brothers are wicked. I donot desire to live with them. Like enemies they always quarrel with one another. So I have resolved never to see them again and am engaged in asceticism. My brothers are cruel to Vinata and her son, who is our mighty cousin, a ranger of the skies. They always envy him. He is stronger than any of us by the favour of our father, the highminded Kashyap. For this purpose I am engaged in ascetic penances and will cast off my body to avoid their society even in the life to come. Brahma then told Shesh that he knew the behaviour of all his brothers and their great danger owing to their mother's curse. He then said that he had provided a remedy for his brother snakes,

वरोदेव कांक्षितोमेपितामहः । धर्मेमे रमतांबुद्धिः शमेतपसिचेश्वर ॥ १७ ॥ ब्रह्मोवाच । प्रीतोऽस्म्यनेनतेशेष दमेनचशमेनच । त्वयात्विदंवचःकार्य्यं मन्नियोगात् प्रजाहितम् ॥ १८ ॥ इमां महीं शैल वनो पपन्नां ससागरग्राम विहार पत्तनाम् । त्वंशेषसम्यक्चलितां यथावत् संगृह्य तिष्ठस्व यथाचलास्यात् ॥ १९ ॥ शेष उवाच । यथाहदेवोवरदः प्रजापतिर्महीपतिर्भूतपतिर्ज्जगत्पतिः । तथामहींधारयितास्मि निश्चलां प्रयच्छतांमे शिरसिप्रजापते ॥ २० ॥ ब्रह्मोवाच । अधोमहीं गच्छ भुजंगमोत्तम स्वयं तवैषा विवरं प्रदास्यति । इमां धरां धारयतात्वयाहिमे महत् प्रियं शेष कृतं भविष्यति ॥ २१ ॥ सौतिरुवाच । तथैवकृत्वाविवरं प्रविश्य स प्रभुर्भुवो भुजगवराग्रजःस्थितः । बिभर्त्तिदेवीं शिरसामहीमिमां समुद्रनेमिंपरिगृह्यसर्वतः ॥२२॥

तेरी बुद्धि धर्म में स्थिरहो १६ शेषबोला हे देव ब्रह्मन् यही मुझको प्रिय बरदान है कि वेद विहित कर्मों में और मन के जीत में और तत्वके विचरने में मेरी बुद्धिहो १७ ब्रह्मा बोले हे शेष तेरी इनबाह्य इन्द्रियों के जय करनेसे और मन के जय करने से मैं प्रसन्न हूं तुझको मेरी आज्ञा से वह वचन मानना चाहिये जिससे प्रजाका हितहो, पहाड़ और बन, समुद्र, ग्राम, नगर, विहार स्थान सहित इस चंचल पृथ्वीका यथार्थ रीति से गृहण कर जिस से वह चलायमान न हो ॥ १९ ॥ शेषबोला जिसप्रकार बरों का देनेवाला प्रजा, पृथ्वी, जगत, प्राणि और सम्पूर्ण का पति देव ब्रह्मा कहता है उसीप्रकार निश्चल पृथ्वी को मैं धारण करूंगा हे प्रजापते मेरे शिर पर पृथ्वी को स्थापन करो ॥ २० ॥ ब्रह्मा बोले ! हे सर्पों में श्रेष्ठ शेष तू पृथ्वी के अधोभाग में जा वह तुझे जाने को मार्ग देगी और इस के धारण करने से मुझे तेरा कार्य प्रियहोगा ॥ २१ ॥ उग्रश्रवा बोले इस प्रकार पृथ्वी से मार्ग दिया हुआ पृथ्वी में जाकर सर्पों में प्रथम प्रभु शेष

---

for whom he was so sorry, and desired him to ask a boon as he was much pleased with the virtuous principal of Shesh. And Shesh replied, that the greatest desire of his heart lay in keeping always in the path of virtue and penance. Brahma said, "O Shesh, I am much pleased with thy self denial and love of peace. I command you to keep the earth, with her mountains, forests, seas and towns, firm and steady for the good of my creatures." And Shesh replied, "O divine lord of all created beings, giver of boons, lord of the Earth and its creatures, lord of the universe, I shall obey thy command and shall keep the earth steady. Place it on my head." Brahma said, "O best of snakes, go beneath the Earth. She will give thee a passage. By holding the Earth firmly on thy head thou wilt perform a deed which I prize greatly." Shesh

ब्रह्मोवाच । शेषोऽसिनागोत्तम धर्मदेवो महीमिमां धारयसेयदेकः । अनन्तभोगैःपरि
गृह्य सर्वां यथाहमेवंबलभिद्यथावा ॥ २३ ॥ सौतिरुवाच । अधोभूमौवसत्येवं नागो
ऽनन्तःप्रतापवान् । धारयन्वसुधामेकः शासनाद्ब्रह्मणो विदुः ॥ २४ ॥ सुपर्णंच-
सहायंवै भगवानमरोत्तमः । प्रादादनन्तायतदा वैनतेयंपितामहः ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके शेषवृत्तकथने षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

सौतिरुवाच । मातुः सकाशात्तंशापं श्रुत्वावैपन्नगोत्तमः । वासुकिश्चिन्तयमास
शापोऽयंनभवेत्कथम् ॥ १ ॥ ततः समन्त्रयामास भ्रातृभिःसहसर्वशः । ऐरावतप्रभृ
तिभिः सर्वैर्धर्मपरायणैः ॥ २ ॥ वासुकिरुवाच । अयंशापोयथोद्दिष्टो विदितंव त ॥

स्थितहुआ देवी पृथ्वी को जिसके चारोंतरफ समुद्र है उसको अच्छीतरह पकड़कर पनने
शिरपर धारणकरताहै ॥ २२ ॥ ब्रह्माबोले हे नरोत्तम ! तू शेष और धर्म का जाननेवाला
है क्योंकि अकेला अपने अनन्त फणों से इस पृथ्वी को उठाकर इसप्रकार धारण करता
है जैसे मैं और इन्द्र ॥ २३ ॥ पाताल लोक में बसताहुआ प्रतापवान अनन्त नाग
अकेला ब्रह्माकी आज्ञा से पृथ्वी को धारण करके रहताहै ऐसा सब जानते हैं ॥ २४ ॥
भगवान् ब्रह्मा ने अनन्तकी सहायता के लिये पक्षी गरुड़को दिया २५ ॥

अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय ३७ ॥

उग्रश्रवाबोले वासुकी ने माताके उस शापको सुनकर यह शाप कैसे हमें न हो
ऐसा विचारा । १ । और जो धर्म के जानने वाले ऐरावत आदि भाई थे उन के साथ
विचारकरना प्रारम्भ किया, वासुकीबोला, यहशाप जैसा कि माताने दिया है हे पाप

then entered a hole and reaching the other side of the Earth, supported her on his head. Brahma said. "O Shesh, the best of snakes, thou art *Dharm* personified, as thou alone canst support her like myself or *Indra*." *Sauti* says, "The snake, the lord *Anant*, of great prowess, supports the whole of the Earth at the command of *Brahma* and the illustrious Grandfather, the chief of immortals, gave to *Anant* the bird of fair feathers, the son of Vinata, as his help mate.

CHAPTER XXXVII.

(ASTIK PARV CONTINUED)

Sauti said, "On hearing his mother's curse, Vasuki, the best of snakes, reflected how to render it abortive. Then he held a consultation with all his brothers, Airavat and others, who were wellwishers of

नघाः । तस्यशापस्य मोक्षार्थं मन्त्रयित्वायतामहे ॥ ३ ॥ सर्वेषामेवशापानां प्रतिघा तोहिविद्यते । नतुमात्राभिशप्तानां मोक्षः क्वचनविद्यते ॥ ४ ॥ अव्ययस्याप्रमेयस्य सत्यस्यचतथाग्रतः । शप्ता इत्येव मे श्रुत्वा जायते हृदि वेपथुः ॥ ५ ॥ नूनं सर्वविनाशोऽयमस्माकं समुपागतः । न ह्येतां सोऽव्ययो देवः शपन्तीं प्रत्यषेधयत् ॥ ६ ॥ तस्मात्संमन्त्रयामोऽद्य भुजङ्गानामनामयम् । यथा भवेद्धि सर्वेषां मा नः कालोऽत्यगादयम् ॥७॥ सर्व एव हि नस्तावद्बुद्धिमन्तो विचक्षणाः । अपि मन्त्रयमाणा हि हेतुं पश्याममोक्षणे ॥८॥ यथा नष्टं पुरा देवा गूढमग्निं गुहागतम् । यथा स यज्ञो न भवेद्यथा वापि पराभवः । जनमेजयस्य सर्पाणां विनाशकरणायवै ॥ ९ ॥ सौतिरुवाच तथेत्युक्त्वाततःसर्वे काद्रवेयाःसमागताः। समयंचक्रिरेतत्र मन्त्रबुद्धिविशारदाः १०॥ एकेतत्राब्रुवन्नागा वयं भूत्वा द्विजर्षभाः । जनमेजयं तु भिक्षामो यज्ञस्तेन भवे

रहित भाइयो तुम को विदित है उस के दूरहोनेका विचार कर यत्न करो । ३ । सम्पूर्ण शापों का उपाय है परन्तु मातासे शाप दिये हुओं का वचना कहीं नहीं मालुम होता है । ४ । जरा मरण रहित अनन्त महिमावाले सत्य लोक के स्वामी ब्रह्मा के आगे सर्पशाप दिये गये यह सुनकर मुझको कम्पहोती है और हम सबका नाश समय निश्चय होगया है और ब्रह्मा ने शाप देतीहुई हमारी माता को निषेध नहीं किया । ६ । इसकारण सर्पों के अभय का हम सब विचार करें और जिस से सबका भलाहो और हमारा समय विना विचार के व्यतीत न होवे । ७ । हम सब बुद्धिमान और चतुर हैं विचार से अपने छुटने के हेतुको विचारें । ८ । जैसे पहिले वायु में लयहुए अग्नि के लिये देवताओं ने विचार कियाथा जिससे जनमेजयका यज्ञ नहो और जिसप्रकार यज्ञका तिरस्कार हो जो यज्ञ सर्पों के विनाश करने को होता है उसका विचार करें । ९ । उग्रश्रवाबोले, इस के उपरांत कद्रु के पुत्र एक चित्तहो ऐसा विचारेंगे कहकर उननीति के जाननेवालोंने एक मतिकी । १० । वहां कोई सर्प बोले कि हम ब्राह्मणहोकर जन्मेजय से याचनाकरेंगे कि

the family. Vasuki began, "You all know the purport of curse. You should try to neutralise it. Other curses have remedies but a mother's curse has none. My heart trembles to remember that the curse was pronounced in the presence of the immutable, and the true one. Surely the time of our annihilation is come; otherwiee, Brahma would have prevented her from cursing us. We have gathered here today to consult how we can best secure the safety of our race. Let us not lose time. All of you are wise and intelligent. We shall consult together to find out the means of deliverance, as the gods did formerly to discover Agni when he hid himself within the cavern of the sky, so that the sacrifice of Janmejaya for the annihilation of our race may not take place," Thus

दिति ॥ ११ ॥ अपरेत्वबुवन्नागास्तत्र पण्डित मानिनः । मन्त्रिणोऽस्य वयं सर्वे भविष्यामः सुसम्मताः ॥१२॥ स नः प्रक्ष्यति सर्वेषु कार्य्येष्वर्थ विनिश्चयम् । तत्र बुद्धिं प्रदास्यामो यथा यज्ञो निवर्त्स्यति ॥ १३ ॥ सनोबहुमतान् राजा बुद्ध्या बुद्धिमतांवरः । यज्ञार्थं प्रक्ष्यति व्यक्तं नेति वक्ष्यामहे वयम् ॥ १४ ॥ दर्शयन्तो बहून् दोषान् प्रेत्य चेह च दारुणान् । हेतुभिः कारणैश्चैव यथा यज्ञो भवेन्नसः ॥ ॥ १५ ॥ अथवाय उपाध्यायः क्रतोस्तस्य भविष्यति । सर्पसत्रविधानज्ञो राजकार्य हिते रतः ॥ १६ ॥ तं गत्वा दशतां कश्चिद्भुजंगः स मरिष्यति । तस्मिन्मृते यज्ञकारे क्रतुः स न भविष्यति ॥ १७ ॥ ये चान्ये सर्पसत्रज्ञा भविष्यन्त्यस्य चर्त्विजः । तांश्च सर्वान् दक्षिष्यामः कृत मेवं भविष्यति ॥१८॥ अपरे त्वब्रुवन्नागा धर्मात्मानो दयालवः । अबुद्धिरेषाभवतां ब्रह्महत्यान शोभनम् ॥ १९ ॥ सम्यक् सद्धर्ममूला

तेरा यज्ञ नहो । ११ । दूसरे अपने को अति बुद्धिमान् माननेवाले बोले हम इस राजा के बड़े प्रिय मन्त्री बनेंगे । १२ । वह राजा जनमेजय सम्पूर्ण कार्यों में हमारी सम्मति लेगा तब हम यज्ञ नहोनेकी बुद्धि उसको देवेंगे । १३ । वह श्रेष्ठ राजा हम से यज्ञ के लिये जब पूछेगा तब हम साफ यह कहेंगे कि यह यज्ञ नहोना चाहिये इस लोक और परलोक में यज्ञ के बहुतसे दोषों को (ब्राह्मणों का शाप निष्फल नहीं होता इत्यादि वचनों से) दिखाते हुये जिससे वह यज्ञ नहो वही उपायकरेंगे । १५ ।इस यज्ञका वह उपाध्याय श्रेष्ठ होगा जोकि सर्पयज्ञकी विधि को ठीक जानताहै और राजाका हितकारी है ऐसा कहेंगे१६ कोई सर्प राजा के समीप जाकर उसको काटे वह मरजावेगा और यज्ञकरनेवाले के मरने पर फिर वह यज्ञ नहोगा। १७। और जो सर्प यज्ञ के जाननेवाले ब्राह्मण इस के रित्विज बनेंगे इसप्रकारभी हमारा कार्यहोगा । १८ । दूसरे धर्मात्मा दयालु सर्प बोले यह तुम लोगोंका कहना बुद्धि पूर्वक नहीं है क्योंकि ब्राह्मणोंकी हत्याकरना अच्छा नहीं है १९ ।

addressed, the sons of Kadru assembled together and the wise ones among them began to give their opinion. One said, "We shall go as Brahman and ask Janmejaya to desist from the sacrifice." Another wise one said, "Some of us will become his favourite councelors. He will certainly ask our advice in all matter of importance. We shall thus be able to advise him against the sacrifice. We shall point him its evils in this world and the world to come, giving reasons and causes carefully, so that the sacrifice may not take place. Or one of us shall bite the chief priest who, intent on doing the monarch good and well acquainted with the rites of snake sacrifice, may be appointed leader of the sacrifice. The chief priest being dead, the work of sacrifice will remain incomplete. We shall also bite all those who, acquainted with the rites of snake sacrifice,

वैव्यसने शान्तिरुत्तमा । अधर्मोत्तरता नाम कृत्स्नं व्यापादयेत् जगत् ॥२०॥ अपरे त्वब्रुवन्नागाः समिद्धं जात वेदसम् । वर्षैर्निर्वापयिष्यामो मेघाभूत्वा सविद्युतः २१॥ स्रुग्भाण्डं निशिगत्वा च अपरे भुजगोत्तमाः । प्रमत्तानांहरन्त्वाशु विघ्नएवं भविष्यति ॥ २२ ॥ यज्ञेवा भुजगास्तस्मिन् शतशोऽथ सहस्रशः । जनान् दशन्तु वै सर्वे नैवं त्रासो भविष्यति ॥ २३ ॥ अथवा संस्कृतं भोज्यं दूषयंतु भुजंगमाः। स्वेन मूत्रपुरीषेण सर्वभोज्यविनाशिना ॥२४॥ अपरे त्वब्रुवंस्तत्रऋत्विजोऽस्यभवामहे यज्ञविघ्नं करिष्यामो दीयतांदक्षिणाइति ॥ २५ ॥ वश्यताञ्चगतोऽसौनः करिष्यति यथेप्सितम् । अपरेत्वब्रुवंस्तत्रजले प्रक्रीडितंनृपम् ॥ २६ ॥ गृहमानीयबध्नीयः क्रतुरेवंभवेन्नसः । अपरेत्वब्रुवंस्तत्रनागाःपण्डितमानिनः ॥ २७ ॥ दशामस्तंप्रगृह्याशुकृतमेवंभविष्यति । छिन्नं मूल मनर्थानां मृतेतस्मिन् भविष्यति ॥ २८ ॥ एषानो

आपत्तिके समय में भलीप्रकार सज्जनोंका यह धर्म है कि देव और ब्राह्मणोंकी प्रार्थनाकरें और अधर्म सम्पूर्ण जगत् को नाशकरता है, दूसरे सर्पबोले बिजली सहित बादल बनकर यज्ञ में प्रदीप्त अग्नि को जलवर्षाकर शांत करदेंगे २१ दूसरे सर्पोंमें उत्तम सर्पबोले रात में जाकर स्रुवाआदि यज्ञपात्रों को ब्राह्मणों के सोनेपर उठालावेंगे जिससे यज्ञ में विघ्न होवे २२ और सैकड़ों हजारों सर्प यज्ञमें आये हुये मनुष्यों को काटें ऐसा करनेपर यज्ञ न होगा क्योंकि उनको त्रास होजावेगा २३ या सर्प यज्ञ में शुद्धकिये अन्न और सम्पूर्ण भोज्य पदार्थ को अपने मूत्र से दूषितकरो २४ दूसरे सर्पबोले ब्राह्मणहोकर इस के रित्विज हम बनेंगे और हमको दक्षिणादे, यह कहकर जज्ञ में विघ्न करेंगे २५ और हमारे वश में होकर राजा जैसा हम चाहेंगे वैसा करेगा दूसरे सर्प वहांपर बोले कि जलमें क्रीड़ा करतेहुये राजाको अपने घर लाकर बांधले ऐसा करने पर वह यज्ञ न होगा जो अपनेको पण्डित मानने थे वह सर्पबोले २७ उस राजाको पकड़कर शीघ्र काटें ऐसा करनेपर

may be appointed managers and thus gain our object.'' Others, being more virtuous and kindhearted, objected to it saying, "This is not a good proposal. It is a sin to kill Brahmans. One must employ honest means to avoid danger, for dishonesty is the source of destruction." Others said, "We shall extinguish the sacrificial fire by becoming clouds, charged with lightning and pouring down rain." Other snakes, the best of their kind, said, "Let us steal the vessel of Som juice at night; this will disturb the rite. Or let us bite the people there and spread the terror all round. Or let us defile the pure food with our urine and dung." Others said, "Let us become the king's *ritwijas* and demand sacrificial fee from him when the sacrifice begins. The king being placed in our power shall do as we like." Others said, "We shall take the king prisoner

नैष्ठिकीबुद्धिः सर्वेषामीक्षणश्रवः । अथयन्मन्यसेराजनद्धततत्संविधीयताम् ॥ २९ ॥ इत्युक्त्वासमुद्वैक्षन्तवासुकिंपन्नगोत्तमम् । वासुकिश्चापिसञ्चिन्त्यतानुवाच भुजङ्गमान् ॥ ३० ॥ नैषावोनैष्ठिकीबुद्धिर्मताकर्तुंभुजङ्गमाः । सर्वेषामेवमेबुद्धिःपन्नगानांनरोचते ॥ ३१ ॥ किंतत्रसाम्प्रविधातव्यंभवतां स्याद्धितंतुयत् । श्रेयःप्रसादनंमन्येकश्यपस्यमहात्मनः ॥ ३२ ॥ ज्ञातिवर्गस्यसौहार्दादात्मनश्च भुजङ्गमाः । नचजानामिमेबुद्धिः किञ्चित्कर्तुंवचोहियः ॥ ३३ ॥ मयाहीदंविधातव्यंभवतांयद्धितंभवेत् । अनेनाहंभृशंतप्येगुणदोषौमदाश्रयौ ॥ ३४ ॥ इत्यादिपर्वण्यास्तीकेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

यज्ञ नहोगा उस के मरने पर हमारी बुराइयोंकी जड़ कट जावेगी हे वासुके यह हमसबों की सर्वोपरि बुद्धि है इस के उपरांत हेवासुके जोकुछ आप अच्छा समझते हैं वह किया जावे २९ ऐसा कह सब बासुकिकी तरफ देखनेलगे और उसनेभी विचारकर उनसर्पों से कहा हेसर्पो यह तुम्हारी बुद्धि उत्तम नहीं है मुझको अच्छी नहीं मालूमहोगी इस विषय में क्या करना योग्य है जिससे तुम सब सर्पोंका हितहो और महात्मा कश्यप को प्रसन्न करके पूंछना योग्य है यही मैं श्रेष्ठ मानताहूं ३२ आपने जाति के समूह के प्रेम से और अपनेभी हितके लिये हेसर्पो मेरी बुद्धि तुम्हारे वचन के करने को कुछभी नहीं समझती ३३ और मैं तुम्हारा हितकारी कार्य करना चाहताहूं इस से मैं अत्यन्त दुःखी हूं क्योंकि बड़ाहोने से बुराई और भलाई मेरेआश्रय है ३४ ॥

---

when he will be amusing in water and detain him that the sacrifice may not take place." Others who were self conceited, said, "Let us bite the king to accomplish our object. By his death the root of all evil will be severed. Let all who hear, be resolved on this and do speedily what is proper." Having said this they looked at Vasuki who, after reflection answered the snakes, thus, "This proposal which you call final does not appear to me so. I donot like this advice. I would adopt a proposal good to all of you. I think the illustrious Kashyap is the only man who can help to extricate us from this difficulty. I have not made up my mind which of your proposals to adopt. I am anxious to do you good for the result."

सौतिरुवाच । सर्पाणांतुवचःश्रुत्वा सर्वेषामितिचेतिच । वासुकेश्चवचःश्रुत्वाएलापत्रो ऽब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ नमयज्ञोनभवितानसराजातथाविधः जनमेजयःपाण्डवेयोयतोऽस्मा कंमहद्भयम् ॥ २ ॥ दैवेनोपहतोराजन्यो भवेदिहपूरुष । सदैवमेवाश्रयतेनान्यत्तत्र परायणम् ॥ ३ ॥ तदिदंचैवमस्माकं भयंपन्नगसत्तमाः दैवमेवाश्रयामोऽत्र शृणुध्वं चवचोमम ॥ ४ ॥ अहंशापेसमुत्सृष्टेसमश्रौषंवचस्तदा । मातुरुत्सङ्गमारूढो भयात्पन्नगसत्तमाः ॥ ५ ॥ देवानांपन्नगश्रेष्ठास्तीक्ष्णास्तीक्ष्णाइतिप्रभो । पिता- महमुपागम्यदुःखार्त्तानांमहाद्युते ॥ ६ ॥ देवऊचुः । काहिलब्ध्वा प्रियान्पुत्रान् शपेदेवंपितामह । ऋतेकद्रूंतीक्ष्णरूपां देवदेवतवाग्रतः ॥ ७ ॥ तथेतिचवचस्तस्या स्त्वयाप्युक्तं पितामह । एतदिच्छाम विज्ञातुंकारणं यन्नवारिता ॥ ८ ॥ ब्रह्मोवाच ।

अध्याय ३८ ॥

सम्पूर्ण सर्पों और वासुकि के वचन को सुनकर एेलापत्र सर्प बोला वह यज्ञ और पाण्डवोंकी सन्तान राजा जनमेजय वैसे नहीं हैं जिसको हम दुःख देसकें जो प्रारब्ध करके नष्ट पुरुष है उसको योग्य है कि वह उसी प्रारब्ध रूप ईश्वरही का आश्रय करें और कोई उनका आश्रय नहीं है । ३ । हेसर्पोत्तम प्रारब्ध से आया हुआ यह हमारा भय प्रारब्ध के आश्रय करने सेही दूरहोसकता है और मेरे इसवचन को सुनो मैंनेमाता के शाप के देनेपर भयसे अपनी माताकी गोदी में बैठेहुए देवताओं का यह बचन दुःख से व्याकुलहो ब्रह्मा के समीप जाकर सुना था कि स्त्रियें बड़ी कठोर हैं इस ने अपने पुत्रों को शाप दिया, देवताबोले कौन ऐसी स्त्री कद्रु के सिवाहोगी जो ऐसे प्रिय पुत्रों को हे पितामह शाप दे, ॥ ७ ॥ और तुमनेभी ऐसाही कह होगा उस के शाप देनेके उपरान्त यह क्या कारण है जो उस को शाप देनेसे न रोका सो हम सुनना

CHAPTER XXXVIII

(ASTIK PARV CONTINUED)

Having heard the speeches of all the serpents including that of Vasuki, Elapatra began to address them as follows:—The sacrifice will take place without doubt and king *Janmejaya*, our enemy is not to be made away with. The person who is afflicted by fate can have no other recourse than fate. This fear arises from fate which will be our only refuge. Listen to what I say. When the curse was pronounced I crouched with fear on the lap of my mother and from there I heard the words of the sorrowing gods to the Grandfather, the god of gods! Who can be more cruel than Kadru, who has cursed her dear children in thy presence? And Grandfather,

बहवः पन्नगास्तीक्ष्णा घोररूपा विषोल्वणाः । प्रजानां हितकामोहं नचवारित-
वांस्तदा ॥ ९ ॥ ये दन्दशूकाः क्षुद्राश्च पापाचारा विषोल्वणाः। तेषांविनाशोभविता
न तु ये धर्म चारिणः ॥ १० ॥ यन्निमित्तंच भविता मोक्षस्तेषां महाभयात् । पन्न
गानां विबोधध्वं तस्मिन् कालसमागते ॥ ११ ॥ यायावरकुलेधीमान् भविष्यति
महानृषिः। जरत्कारुरितिख्यातस्तपस्वी नियतेन्द्रियः ॥ १२ ॥ तस्यपुत्रोजरत्कारो
र्भविष्यति तपोधनः। आस्तीकोनामयज्ञंस प्रतिषत्स्यति तं तदा । तत्र मोक्ष्यन्ति
भुजगाये भविष्यन्ति धार्मिकाः ॥ १३ ॥ देवाऊचुः। समुनिप्रवरोब्रह्मन् जरत्कारु
र्महातपाः। कस्यां पुत्रं महात्मानं जनयिष्यतिवीर्यवान् ॥ १४ ॥ ब्रह्मोवाच ॥
सनामायांसनामास कन्यायांद्विजसत्तमः। अपत्यंवीर्यसंपन्नंवीर्यवान्जनयिष्यति१५

चाहते हैं ॥ ८ ॥ ब्रह्माबोले ! बहुत से सर्प तीक्ष्ण भयानक और विष से भरे हुएहैं इस
कारण मैंने प्रजा के हित के लिये शाप देती हुई कद्रूको निषेध न किया ॥ ९ ॥ जोसर्प
नीच, पापी और विष से भरेहुये हैं उनका नाश इस शाप से होगा और जो धर्मात्मा हैं
उनका नाश नहोगा ॥ १० ॥ जिससे उन सर्पोंका भय से मोक्षहोगा उस को सुनो,
यायावरों के कुल में बुद्धिमान प्रसिद्ध तपस्वी जितेन्द्रिय जरत्कारु नाम उत्पन्नहोगा १२
उसका पुत्र तपस्वी आस्तीक नाम का होगा और वह उस यज्ञ को रोकेगा जो धार्मिक
सर्प हैं वह इसप्रकार छुटेंगे ॥ १३ ॥ देवताबोले हे ब्रह्मन मुनियों में श्रेष्ठ बड़ा तपस्वी
जरत्कारु किस स्त्री से उस आस्तीक पुत्रको उत्पन्न करेगा १४ ब्रह्माबोले ? वह मुनियों
में श्रेष्ठ वह तपोबल जरत्कारु अपनी नामवाली स्त्री में तपोबलयुक्त पुत्र को उत्पन्न करेगा

---

thou also, hast sanctioned it. We wish to know the reason why thou didst not prevent her." Brahma replied, "The snakes have grown cruel, terrible in form and very poisonous. I did not prevent her from a desire of doing good to my creatures. Those poisonous snakes always bite for little faults and are cruel to my creatures. Such snakes only shall be destroyed by fire and not the harmless and virtuous ones. They shall escape the dreadful calamity in the following manner. There shall be born in the race of the Yayavars a great *rishi* known by the name of Jaratkaru, intelligent, given to ascetic devotions and having his passions fully under control. He shall have a son, named Astik who shall put a stop to the sacrifice from which only the virtuous snakes shall escape.' The gods again said, "O thou truth knowing one, in whom

वासुकेः सर्पराजस्यजरत्कारुः स्वसाकिल । सतस्यां भवितापुत्रः शापान्नागांश्च मोक्ष्यति ॥ १६ ॥ एलापत्र उवाच । एवमस्त्विति तं देवाः पितामहमथाब्रुवन् । उक्त्वैवं वचनं देवान् विरिञ्चिस्त्रिदिवंययौ ॥ १७ ॥ सोऽहमेवंप्रपश्यामि वासुके भगिनीतव । जरत्कारुरितिख्याता तां तस्मैप्रतिपादय ॥ १८ ॥ भैक्षवद्भिक्षमाणायनागानां भयशान्तये । ऋषयेसुव्रतायैना मेषमोक्षः श्रुतोमया १९ ॥

इत्यादि पर्वण्यास्तीके अष्टात्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

सौतिरुवाच ॥ एलापत्रवचःश्रुत्वा तेनागा द्विजसत्तम । सर्वेप्रहृष्टमनसः साधुसाध्वित्यथाब्रुवन् ॥ १ ॥ ततःप्रभृतितांकन्यांवासुकिःपर्यरक्षत । जरत्कारुंस्वसारंवै

१५ सर्पों के राजा वासुकिकी बहन जरत्कारुनामवाली है उसी से पुत्रको उत्पन्न करेगा और वह पुत्र शापसे सर्पों को मोक्ष करेगा १६ इस के उपरांत एलापत्रबोला कि सम्पूर्ण देवताओं ने ऐसाही हो ब्रह्मा से कहा और फिर ब्रह्मा अपने लोक को चलागया ।१७। तिस से मैं ऐसा सर्पों के बचने का उपाय देखताहूं हेवासुके तेरी बहिन जो जगत्कारुनाम वाली है उस को उस के साथ विवाह करदे १८ नागों के भयकी शान्ति के लिये अच्छे व्रत करनेवाले जरत्कारु भिक्षा मांगते हुये ऋषि को अपनी बहिनदे यह अग्नि से बचने का उपाय मैंने सुनाहै १९ ॥

अध्याय समाप्त ॥

अध्याय ३९ ॥

उग्रश्रवाबोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ एलापत्र के वचन को सुनकर सम्पूर्ण सर्प प्रसन्न हो अच्छा कहा बोले ॥ १ ॥ उसी दिन से वासुकि ने अपनी बहिनकी

shall Jaratkaru, the foremost among *rishis*, the great ascetic, beget this illustrious son?" And Brahma replied, "Gifted with great energy, that Brahman shall beget a son in a wife of the same name with him. Vasuki, the king of snakes has a sister named Jaratkaru in whom shall be born the liberator of snakes." The gods seconded Brahma who then went to heaven. Vasuki, I see yonder thy sister named Jaratkaru. To relieve us from fear you may give her to the *rishi* Jaratkaru, of excellent vows, roaming as a beggar for bride. This mean of release has been heard of by me."

CHAPTER XXXIX

On hearing this from *Elapatra*, all the serpents exclaimed in great delight, "Well said, well said!" and from that time

परं हर्षमवापच ॥ २ ॥ ततोनातिमहानकालः समतीतइवाभवत् । अथदेवासुराःसर्वे ममन्थुर्वरुणालयम् ॥ ३ ॥ तत्र नेत्रमभून्नागो वासुकिर्बलिनांवरः । समाप्यैवचतत् कर्म पितामहमुपागमन् ॥ ४ ॥ देवावासुकिनासार्धं पितामहमथाब्रुवन् । भगवंशाप भीतोयं वासुकिस्तप्यतेभृशम् ॥ ५ ॥ अस्यैतन्मानसं शल्यं समुद्धर्तुं त्वमर्हसि । जनन्याः शापजं देव ज्ञातीनां हित मिच्छतः ॥ ६ ॥ हितोह्ययंसदास्माकं प्रियकारीच नागराट् । प्रसादंकुरुदेवेश शमयास्यमनोज्वरम् ॥ ७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ मयैवतद्वितीर्णं वैवचनंमनसाऽमराः । एलापत्रेणनागेन यदस्याभिहितंपुरा ॥ ८ ॥ तत्करोत्वेष नागेन्द्रः प्राप्तकालंवचःस्वयम् । विनशिष्यन्तियेपापा नतुयेधर्मचारिणः ॥ ९ ॥ उत्पन्नः

रक्षा की और इस वचन को सुनकर अति प्रसन्नहुआ ॥ २ ॥ जब कुछकाल व्यतीत हुआ सम्पूर्ण देवता समुद्र को मथने लगे ॥ ३ ॥ उस के मथने में बलवानों में श्रेष्ठ वासुकि मथनेकी रस्सी बनायागया और उस कर्म के समाप्तहोने पर सम्पूर्ण देवता वासुकि को साथ लेकर ब्रह्मा के पास जा यह बोले कि हेभगवन् यह वासुकि शाप से अत्यन्त तापयुक्त है ॥ ५ ॥ हे देव अपनी जाति के हित चाहनेवाले इस वासुकि को माताके शाप से उत्पन्न हुये क्लेश से छुड़ाओ हे देवताओंके स्वामी यह वासुकि हमारा सदा हितकारी और प्रियकारी है इसपर आप प्रसन्नहों और इस के मन के दुःख को शांत करें ॥ ७ ॥ ब्रह्माबोले वह वचन मैंनेही अपने मन से कहाथा जो एलापत्र ने इस के समीप कहाथा ॥ ८ ॥ उस वचन को समयानुसार सर्पोंका राजा यह वासुकि आप करे ऐसा करने से पापी सर्प नष्टहोंगे और धर्मात्मा नष्ट न होंगे ।९।

Vasuki brought up his sister, the maiden, *Jaratkaru*, very carefully and with great delight. Shortly afterwards, the gods and the *Asurs* assembled together to churn the Ocean and Vasuki, the strongest creature was made the churning cord. When the work of churning was finished, Vasuki came to Brahma in the company of some gods who said to the Grandfather, "Vasuki is in great distress on account of his mother's curse and prays the favour of your extricating the thorn of affliction from his heart. He is ever our friend and help-mate. O thou, god of gods, relieve him of the pain in his heart." Brahma replied, "I have already considered over the matter. The king of *Nagas* may act as he has been told to do by *Elapatra*. The time has come. Only the wicked ones shall perish and not the good. Jaratkaru is born and is engaged in hard ascetic enances. Let Vasuki, at the proper time, bestow on him his sister.

सजरत्कारुस्तपस्युग्रेरतो द्विज । तस्यैषभगिनींकाले जरत्कारुंप्रयच्छ तु ॥ १० ॥ एला
पत्रेणयत्प्रोक्तं वचनंभुजगेनह । पन्नगानांहितंदेवास्तत्तथानतदन्यथा ॥ ११ ॥
सौतिरुवाच । एतच्छ्रुत्वातु नागेन्द्रः पितामहवचस्तदा । सन्दिश्यपन्नगान् सर्वान्
वासुकिःशापमोहितः ॥ १२ ॥ स्वसारमुद्यम्यतदा जरत्कारुमृषिंप्रति । सर्पान्बहून्
जरत्कारौ नित्ययुक्तान्समादधत् ॥ १३ ॥ जरत्कारुर्यदाभार्या मिच्छेद्वरयितुंप्रभुः ।
शीघ्रमेत्य तदाख्येयं तन्नःश्रेयो भविष्यति ॥ १४ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

शौनकउवाच ॥ जरत्कारुरितिख्यातो यस्त्वयासूतनन्दन । इच्छामितदहंश्रोतुं
ऋषेस्तस्यमहात्मनः ० १ ॥ किंकारणं जरत्कारोर्नामैतत्प्रथितंभुवि । जरत्कारु नि-

---

वह जरत्कारु ब्राह्मण उत्पन्नहोगयाहै और उग्रतप में लगा है उसको यह वासुकि समय
आने पर अपनी बहिनको देवे ॥१०॥ एलापत्र सर्प ने जोकुछ वचन कहाहै हेदेवताओ
वह सर्पों का हितकारी है और किसीप्रकार सर्पोंका अहित नहीं, उग्रश्रवाबोले इसब्रह्मा
के वचन को सुनकर वासुकि ने सम्पूर्ण सर्पोंसे कहकर शाप से व्याकुलहो अपनी बहिन
जरत्कारु ऋषि के लिये लेकर जरत्कारु को ढूंढने को सम्पूर्ण सर्पों को आज्ञादी १३॥
यह समर्थ जरत्कारु जब स्त्री इच्छा करे तब तुम मेरेपास आकर शीघ्र कहना इस से
हमारा कल्याणहोगा । अध्याय समाप्त ॥

अध्याय ४० ॥

शौनकबोले ! हे सूतपुत्र जो तुमने जरत्कारू नामवाला ऋषि हमारे पास कहा
उसको मैं सुननेकी इच्छा करताहूं और उसका नाम किसकारण पृथ्वी में जरत्कारु

What the snake *Elapatra* has disclosed is true to a letter." Vasuki the king of snakes, on hearing these words from Brahma, was relieved of the aflaction which he bore on his heart on account of the curse of his mother and resolved to give the *rishi*, Jaratkaru, his sister. He appointed a large party of snakes to look out for Jaratkaru and to inform him, at once, when they saw Jaratkaru begging for a wife, as the weal of the serpent race depended on it.

CHAPTER XL

"Let me know *Sauti*," said *Saunak*, "The reason why *Jaratkaru* was so called." "The word Jaratkaru mean great waste," said

रुक्ति त्वं यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ २ ॥ सौतिरुवाच । जरेतिक्षयमाहुर्वैदारुणं कारुसंज्ञितम् । शरीरंकारुतस्यासीत्तत्सधीमान्शनैशनैः ॥ ३ ॥ क्षपयातासतीव्रेण तपसेत्यत उच्यते । जरत्कारुरितिब्रह्मन्वासुकेर्भगिनीतथा ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्तुधर्मात्माशौनकः प्राहसत्तदा । उग्रश्रवसमामन्त्र्य उपपन्नमितिब्रुवन् ॥ ५ ॥ शौनकउवाच । उक्तंनाम यथापूर्वं सर्वंतच्छ्रुतवाहनम् । यथातुजातोह्यास्तीक एतदिच्छामि वेदितुम् । तच्छ्रुत्वा वचनंतस्य सूतःप्रोवाचशास्त्रतः ॥ ६ सौतिरुवाच । सन्दिश्यपन्नगान्सर्वान्वासुकिः सुसमाहितः । स्वसारमुद्यम्यतदा जरत्कारुमृषिंप्रति ॥ ७ ॥ अथकालस्यमहतः स मुनिः संशितव्रतः । तपस्यभिरतोधीमान् सदारान्नाभ्यकांक्षत ॥ ८ ॥ सतूर्ध्वरेता-

प्रसिद्ध हुआ सो कहिये ॥ २ ॥ उग्रश्रवाबोले [जर, क्षय को कहते हैं और कारु दारुण को कहते हैं उसका शरीर कामादि के उत्पन्न करने का कारणहोनेसे कारु संज्ञक था उस बुद्धिमान ने धीरे २ तीव्र तपस्या से उस शरीर को घटाया है शौनक इसकारण वह जरत्कारु कहलाताथा और इसीप्रकार वासुकिकी बहनका नामभी जरत्कारु था इस प्रकार धर्मात्मा शौनक ने सूत के वचन को सुनकर उससे पुकार कर यह कहा कि यह अति योग्य विवाह हुआ, शौनकबोले हे सूत जैसे जरत्कारु नाम पड़ा इस तेरे सबकथन को मैंने श्रवणकरा अब जिसप्रकार जरत्कारु के आस्तीक पुत्र हुआ उस के सुननेकी इच्छा करताहूं यह वचन सुनकर शास्त्रानुसार सूत ने शौनक से कहा । उग्रश्रवाबोले सम्पूर्ण सर्पोंसे कहकर वासुकि सावधानता के साथ अपनी बहिन को लेकर सर्वदा उस ऋषि के आनेकी आकांक्षा करने लगा ॥ ७ ॥ इस के उपरांत अतिकालव्यतीत होने पर उस ऋषिने तपस्या में मग्नहो स्त्रीकी इच्छा न की वह अखण्डित ब्रह्मचारी तपस्या

Sauti, "As the *rishi* had reduced his huge body by severe penances. For the same reason the sister of Vasuki was called Jaratkaru." Shaunak, the good, smilingly said, "It is true as you say. Be pleased to let me know all about the birth of Astik." Sauti began:— "Vasuki, desirous of bestowing his sister upon the *Rishi* Jaratkaru, ordered the snakes to be on the look out. But days grew into years and no Jaratkaru was seen in search of wife. For the great Rishi engaged in study and deeply engaged in asceticism, his passions under full control, fearlessly wandered over the whole earth without ever thinking of marriage. And there was a king named *Parikshit*, a member of the family of Kurus, and like his grandfather *Pandu*, a mighty warrior, the first among archers and fond of chase. 12. The monarch, when wandering about, chasing

स्तपसिमसक्तः स्वाध्यायवान्वीतभयःद्दृतात्मा । चचारसर्वां पृथिवीं महात्मा न चापिदारान्मनसाप्यकांक्षत ॥ ९ ॥ ततोऽपरस्मिन्संप्राप्ते कालेकस्मिंश्चि देवनु। परीक्षिन्नामराजासीद् ब्रह्मन्कौरववंशजः॥१०॥यथापाण्डुर्महाबाहुर्धनुर्भरवरोयुधि। बभूवमृगयाशीलः पुरास्यप्रपितामहः ॥ ११ ॥ मृगान् विध्यन्वराहांश्च तरक्षून्महिषांस्तथा। अन्यांश्च विविधान्वन्यांश्चचारपृथिवीपतिः ॥ १२ ॥ सकदाचिन्मृगंविद्ध्वा बाणेनानतपर्वणा। पृष्ठतोधनुरादाय ससार गहनेवने ॥१३॥ यथैव भगवान् रुद्रो विद्ध्वायज्ञमृगं दिवि । अन्वगच्छद्धनुष्पाणिः पर्य्यन्वेष्टु मितस्ततः ॥ १४ ॥ नहितेनमृगोविद्धो जीवन्गच्छतिवैवने। पूर्वरूपन्तुतत्तूर्णं सोऽगात्स्वर्गगतिंप्रति १५ ॥

में लगाहुआ भय रहित जितेन्द्रिय, महात्मा, सम्पूर्ण पृथ्वीमें फिरने लगा और मन सेभी स्त्रीकी इच्छा नकी ॥ ९ ॥ तिसके उपरांत किसी समय के प्राप्तहोने पर कौरव वंशमें परीक्षित नाम राजा उत्पन्नहुआ ॥ १० ॥ जिसप्रकार धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़ी भुजा वाला और शिकारी राजा पाण्डु इसका प्रपितामहहुआ वह पृथ्वीका पति राजापरीक्षित मृग, वराह और रिक्ष और भैंसे औरभी अनेकप्रकारके जीवों को मारताहुआ बन में फिरने लगा ॥ १२ ॥ उस राजा ने किसी समय एक मृगको तिरछे अग्रभागवाले बांण से बेधकर और धनुष को हाथमें लेकर उस मृग के पीछे बड़े बन में भागना प्रारम्भ किया ॥ १३ ॥ जैसे भगवान् रुद्रने यज्ञरूप मृगको बेधनकर और आकाश में धनुष को हाथमें लेकर उस मृगको ढूंडने के लिये इधर उधर गमन कियाथा ॥ १४ ॥ उस राजाका बेधाहुआ मृग बन में जीता नहीं रहसकताथा वह राजा परीक्षित शीघ्र स्वर्गगति को गया और वह मृगकाअदर्शनहोनाही राजाको स्वर्गगति का पहिलाही कारणहै ॥१५॥

the wild boar, the dear, the wolves and the buffaloes, pierced a deer with his sharp arrow and slinging his bow on his back, entered into the deep forest in search of the animal, like the illustrious *Rudra.* No deer pierced by *Parikshit's* arrow had ever escaped in to the woods with life. This deer, however, wounded again and again fled into the forest with great speed and was lost sight of by the monarch in the great forest. And fatigued and thristy he come upon a *Muni* (ascetic) in the forest, seated in a cattle pen and drinking the froth that came out of the mouths of calves sucking the milk of cows. Approaching him hastily, the monarch, hungry and tired, asked of him, " O Muni, I am king *Parikshit*, the son of *Abhimanyu.* Have you seen a wounded deer passing this way. He could not speak on account of his vow of silence and the king

परीक्षितोनरेन्द्रस्य विद्धोयत्रष्टवान्मृगः । दूरंचापहृतस्तेन मृगेणसमहीपतिः ॥ १६ ॥ परिश्रान्तःपिपासार्त्त आससादमुनिंवने । गवांप्रचारेष्वासीनं वत्सानांमुखनिःसृतम् ॥ १७ ॥ भूयिष्ठमुपयुञ्जानं फेनमापिबतांपयः । तमभिद्रुत्यवेगेन सराजासंशितव्रतम् ॥ १८ ॥ अपृच्छद्धनुरुद्यम्य तंमुनिंक्षुच्छ्रमान्वितः । भो भो ब्रह्मन्नहं राजा परीक्षिद भिमन्युजः ॥ १९ ॥ मया विद्धो मृगो नष्टः कच्चित्त्वं दृष्टवानसि । समुनिस्तंतु नो वाच किञ्चिन्मौनव्रतेस्थितः ॥ २० ॥ तस्यस्कन्धेमृतंसर्पं क्रुद्धोराजासमासजत् । समुत्क्षिप्यधनुष्कोट्या सचैनंसमुपैक्षत २१ नसकिंचिदुवाचैनं शुभंवायदिवाऽशुभम् । सराजाक्रोधमुत्सृज्य व्यथितस्तंतथागतम् २२ दृष्ट्वाजगामनगर मृषिस्त्वासीत्तथैवसः नहितंराजशार्दूलं क्षमाशीलोमहामुनिः ॥ २३ ॥ स्वधर्मनिरतंभूपं समाक्षितोऽप्यध

राजापरीक्षितका विधाहुआ जो मृग भागगया था वह राजाको बहुत दूर लेगया ॥१६॥ थकन और प्यास से व्याकुल राजावन में मुनिके समीप आया जो मुनि गौशाला में बैठे हुए और दूध पीतेहुए बछड़ों के मुँहसे बहुत से गिरेहुए झागों को पीतेहुए उत्तमव्रत वाले उस ऋषि के समीप जाकर भूक और परिश्रमसे व्याकुल राजा ने पूछा कि हे ब्रह्मन् मैं राजा अभिमन्यु का पुत्र परीक्षितहूँ ॥१९॥ मैं ने एक मृगको बाणसे बेधा है आप ने उस को देखाहै ? वह मुनि मौनव्रत में था इस कारण राजाको कुछ उत्तर न दिया ॥२०॥ इस कारण क्रोध में होकर राजाने उस मुनि के कन्धेपर धनुषकी नोकसे मरे हुए सर्प को डाल दिया और फिर उस मुनि ने उसको देखा ॥२१॥ उस ऋषि ने भला या बुरा कुछ न कहा, तब राजा उसऋषि को शांत स्वभाव देखकर मन में दुःखी होकर नगर को चलागया और वह ऋषि वैसेही बैठा रहा ॥२२॥ उस क्षमाशील मुनिने उस तीक्ष्ण हृदय वाले राजाओं में श्रेष्ठराजा परीक्षित को अपराध करने पर भी कुछनकहा ॥२३॥

in anger placed on his shoulder, a dead snake, with the end of his bow. 21. The Muni showed no sign of resistance and did not say any thing good or bad. The king seeing him in that state, cast off his anger and was sorry for what he had done. The king returned to his capital but the *rishi* remained in the same state and, knowing that the king was true to his duties, did not curse him though he was insulted. The lionhearted monarch of the Bharat race knew him not to be a virtuous *rishi* and so had insulted him unknowingly. The *rishi* had a son, named *Shringi,* young, energetic, a great ascetic of rigid vows, easily enraged and difficult to please. He

र्षयत् । न हितं राजशार्दूलस्तथा धर्मपरायणम् ॥ २४ ॥ जानातिभरतश्रेष्ठस्ततएन मधर्षयत् । तपुणस्तस्यपुत्रोऽभूत्तिग्मतेजा महातपाः ॥ २५ ॥ शृंगी नाम महाक्रोधो दुष्प्रसादोमहाव्रतः । सादेवं परमासीनं सर्वभूतहिते रतम् ॥ २६ ॥ ब्रह्माणमुपतस्थे वै कालेकालेसुसंयतः । सतेनसमनुज्ञातो ब्रह्मणागृहमेयिवान् ॥२७॥ सख्योक्तःक्रीड मानेन स तत्र हसता किल । संरम्भात्कोपनोऽतीव विषकल्पोमुनेः सुतः ॥ २८ ॥ उद्दिश्य पितरं तस्य यच्छ्रुत्वारोषमाहरत् । ऋषिपुत्रेणधर्मार्थे कृशेनद्विजसत्तम २९॥ कृशउवाच । तेजस्विनस्तव पिता तथैवच तपस्विनः । शवं स्कन्धेन वहति मागृंगिन् गर्वितोभव ॥ ३० ॥ व्याहरत् स्वृषिपुत्रेषु मास्म किञ्चिद्वचो वद । अस्मद्विधेषु

उस भरत वंशियों में श्रेष्ठ राजाओं में बड़े राजा परीक्षितने उस धर्म में तत्पर मुनि को नहीं जाना तिस कारण उसका तिरस्कार किया ॥२४॥ उस ऋषिका तरुण और कठोर स्वभावी और बड़ा तपस्वी बड़ा क्रोधी और कठिनतासे प्रसन्न होनेवाला शृंगी नाम पुत्र था ॥२५॥ वह शृङ्गी ऋषि सम्पूर्ण प्राणियों के हितकरने वाले और ब्रह्मलोक में बैठेहुए ब्रह्माजी के समीप समय २ पर स्तुती करने को आताथा ॥२६॥ उस शृङ्गी ऋषिने ब्रह्माजी की आज्ञा से घर को आते हुए और खेलते हुए और हँसते हुए अपने सखासे यह वचन सुना ॥२७॥ और क्रोध के आजाने से अत्यन्त तीक्ष्ण विषके सदृश वह मुनी का पुत्र शृङ्गी था हे शौनक ऋषि पुत्र कृशने धर्म विषय में जो उसके पिताका नाम लेकर कहा था उसको सुन कर उसने क्रोध किया ॥२८॥ कृश बोला । तेजस्वी तेरेहोने पर तेरा पिता मरे हुए सर्प को कन्धे में धारण किये हुए है इससे तू मत अहङ्कार कर ॥२९॥ बोलते हुए हम सबोंके सिद्ध और ब्रह्म विद्या के जानने वाले ऋषि पुत्रों के मध्य में मत कुछ अहंकार का वचन कह तेरी घमण्डताकी बातें कहां गई जो तू मरेहुए सर्पको

worshipped with great attention and respect, his preceptor, seated with ease on his seat and ever engaged in the good of all creatures. 26. He was coming home with the permission of his preceptor when a companion of his, a *Rishi's* son, named *Krisha*, told him, laughing playfully, what had happened to his father and he flamed up in a rage like poison. *Krisha* said to him, "Be not proud, *Sringi* for in spite of thy asceticism and energy, thy father wears a dead snake on his shoulder. Have no intercourse with sons of *Rishis* like ourselves who possess truth and asceticism. Where will thy manliness and pride go when thou seest thy father wearing a dead snake

सिद्धेषु ब्रह्मवित्सुतपस्विषु ॥ ३१ ॥ क्वते पुरुषमानित्यं क्वते वाचस्तथा विधाः । दर्पजाः पितरं द्रष्टा यस्त्वं शवधरंतथा ॥ ३२ ॥ पित्राचतवतत्कर्म नानुरूपामिवात्मनः । कृतं मुनिजनश्रेष्ठ येनाहं भृशदुःखितः ॥ ३३ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४० ॥

सौतिरुवाच । एवमुक्तःसतेजस्वी शृंगीकोपसमन्वितः । मृतधारंगुरुंश्रुत्वापर्य्यतप्यतमन्युना ॥ १ ॥ सतंकृशमभिप्रेक्ष्य सूनृतांवाचमुत्सृजन् । अपृच्छत्कथंतातः समेऽद्यमृतधारकः ॥२॥ कृशउवाच । राज्ञापरिक्षितातात मृगयांपरिधावता । अवसक्तःपितुस्तेऽद्य मृतःस्कन्धेभुजंगमः ॥ ३ ॥ शृंग्युवाच ॥ मेकिं पित्राकृतंतस्य राज्ञोऽनि

कन्धेमें डालेहुए पिता को जाकर देखेगा ॥ ३१ ॥ और हेशृंगी तेरेपिता ने यह कर्म अपने योग्य नहीं किया, जिसको देखकर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ ३२ ॥

अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय ४१ ॥

उग्रश्रवाबोले ! इसप्रकार उस के वचन को सुन शृंगी अत्यन्त क्रोध में हो और अपने पिताका मरेहुए सर्प को धारण करना सुन क्रोध से अत्यन्त तपने लगा ॥ १ ॥ और उस ने सत्यवाणी बोलते हुए कृषकी ओरं देखकर पूछा कि मेराबाप क्यों इससमय मरेहुए सर्प को धारण कररहाहै कृषबोला । हेतात शिकार खेलते हुए राजा परीक्षित ने तेरेपिता के कन्धे पर मरे सर्प को डालाहै ३ ॥ शृंगी बोला । हेकृष उस दुरात्मा

---

on his shoulder? Thy father had done nothing to deserve this treatment and therefore I am particularly sorry and feel the injury." 32.

CHAPTER XI.

(ASTIK PV CONTINUED)

The great *Shringi's* rage knew no bounds at hearing that his father was wearing a dead snake. He gently asked *Krisha* to explain why his father had worn it. And *Krisha* replied, " The king *Parikshit*, when wandering along after the chase, placed it on his shoulder." *Shringi* again asked of him, " What harm had my father done to

छंदुरात्मनः । ब्रूहितत्कृशतत्वेन पश्यमेतपसोबलम् ॥ ४ ॥ कृशउवाच ॥ सराजा मृगयांयातः परीक्षिदभिमन्युजः । संसारमृगमेकाकी विद्धाबाणेन शीघ्रगम् ॥ ५ ॥ नचापस्यन्मृगंराजा चरंस्तस्मिन्महावने । पितरंतेसदृष्ट्वैव पप्रच्छानभिभाषणम् ॥ ६ ॥ तंस्थाणुभूतिष्ठन्तं क्षुत्पिपासाश्रमातुरः । पुनःपुनर्मृगंनष्टं पप्रच्छपितरंतव ॥७॥ सच मौनव्रतोपेतो नैवतंप्रत्यभाषत । तस्यराजाधनुष्कोट्या सर्पंस्कन्धेसमासजत् ॥ ८ ॥ शृंगिस्तवपितासोऽपि तथैवास्ते यतव्रतः । सोऽपिराजास्वनगरं प्रस्थितोगजसाह्वयम् ॥ ९ ॥ सौतिरुवाच । श्रुत्वैवमृषिपुत्रस्तु शवंस्कन्धे प्रतिष्ठितम् । कोपसंरक्तनयनः प्रज्वलन्निवमन्युना ॥१०॥आविष्टःसहिकोपेन शशापनृपतिंतदा । वार्य्युपस्पृश्यतेजस्वी क्रोधवेगबलात्कृतः ॥ ११ ॥ शृंगीउवाच । योऽसौवृद्धस्यतातस्य तथाकृच्छ्रगतस्यह।

राजाका मेरेपिता ने क्या बुरा कियाथा यह वार्त्ता भलीप्रकार मुझ से कह और फिरमेरे तपके बलको देख ॥ ४ ॥ कृषबोला । वह राजा परीक्षित शिकार के लिये वन में आया, और मृगको वाण से वेधकर शीघ्र भागते हुए मृग के पीछे अकेला भागा ॥ ५ ॥ उसको ढूंढते हुए राजा ने वन में न देखा और मौनव्रत धारण किये हुए तेरेपिता को देखकर राजा ने पूछा ॥ ६ ॥ तेरा पिता सूखे वृक्षकी समान बैठाहुआ था राजाने बारम्बार भूख और प्यास और परिश्रम से व्याकुलहोकर पूछा ॥ ७ ॥ उस मौन व्रतवाले तेरे पिताने राजाको कुछ उत्तर न दिया तब उस के कन्धे पर राजा ने धनुष के किनारे से उस मरेसर्प को रख दिया ॥ ८ ॥ और तेरा पिता जोकि व्रतयुक्त था वह उस सर्पसहित वैसेही बैठारहा और वह राजा अपने नगर हस्तिनापुर को गया, उग्रश्रवाबोले ऋषिपुत्र ने अपने पिता के कन्धे पर मरेसर्प को सुनकर क्रोधरूपी अग्नि से बलतेहुएकी सदृश क्रोध से लाल नेत्र किये ॥ १ क्रोध के वेगसे भराहुआ तेजस्वी और क्रोधके आधीन हुए उस शृंगीने आचमनकर राजाको शापदिया ११ शृंगी बोला जिसपापीराजाने वृद्धऔ

---

that wicked monarch ? Tell me this, *Krisha*, and you will see the power of my asceticism." And Krisha answered, "The king *Parikshit* son of *Abhimanyu*, having wounded a fleet stag with his arrow chased it alone and lost sight of it in the wilderness. Having seen thy father, who was then observing a vow of silence, he asked him repeatedly about the missing deer. The prince was tired, hungry and thirsty and the sage, sitting motionless, was under the vow of silence and could make no reply. So the king placed the dead snake on the shoulder of thy father with his bow. The sage is still sitting in the same posture and the king has left for *Hastinapur*."

स्कन्धेमृतंसमासाक्षीत् पन्नगंराजकिल्बिषी ॥ १२ ॥ तंपापमतिसंक्रुद्धस्तक्षकः पन्नगेश्वरः । आशीविषस्तिग्मतेजा मद्वाक्यबलचोदितः ॥ १३ ॥ सप्तरात्रादितोनेता यमस्यसदनंप्रति । द्विजानामवमन्तारं कुरूणामयशस्करम् ॥ १४ ॥ सौतिरुवाच । इति शप्त्वातिसंक्रुद्धः शृंगीपितरमभ्यगात् । आसीनंगोव्रजेतस्मिन् वहन्तंशवपन्नगम् १५ सतमालक्ष्यपितरं शृंगीस्कन्धगतेनवै । शवेनभुजगेनासीद्भूयः क्रोधसमाकुलः ॥१६॥ दुःखाच्चाश्रूणि मुमुचे पितरंचेदमब्रवीत् श्रुत्वेमांधर्षणांतात तवतेनदुरात्मना ॥ १७ ॥ राज्ञापरीक्षिता कोपादशपं तमहंनृपम् । यथार्हतिसएवोग्रं शापंकुरुकुलाधमः ॥ सप्त मेहनि तं पापं तक्षकः पन्नगोत्तमः ॥ १८ ॥ वैवस्वतस्यसदनं नेतापरम दारुणम् । तमब्रवीत् पिताब्रह्मंस्तथा कोपसमन्वितम् ॥ १९ ॥ शमीक उवाच । नमेप्रियंकृतंतात् नैषधर्मस्तपस्विनाम् । वयंतस्यनरेन्द्रस्य विषये निवसा महे

मौनव्रत धारण किये हुये मेरे पिता के गले में मराहुआ सर्प डालाहै ॥ १२ ॥ उसपापी को अत्यन्त क्रोध में भराहुआ और दाढमें विषको रखनेवाला और तीक्ष्ण तेजयुक्त और मेरेवचन से प्रेरणा कियाहुआ सर्पोंका राजा तक्षक आजसे सातवें दिन डसकर यमलोक को पहुँचावेगा जो राजा कुरुओं के यशको नाश करनेवाला और ब्राह्मणों का अपमान करनेवाला है ॥ १४ ॥ उग्रश्रवाबोले । इस प्रकार अत्यन्त क्रोध में हो शृंगी शापदेकर गऊशाला में बैठेहुए पिता के समीप गया ॥ १५ ॥ वह शृंगी ऋषि कन्धे पर मरेहुए सर्प से युक्त अपने पिता को देख अत्यन्त क्रोध से व्याकुलहोगया ॥ १६ ॥ औरदुःख से अश्रु बहाता हुआ अपने पिता से बोला । हे तात ! उस दुष्ट राजा परीक्षित से तुम्हारे इस तिरस्कार को सुनकर क्रोध से मैंने उसको शाप दिया जिस कठोर शाप के योग्य वह कुरु वंश में अधम राजा था वैसाही शाप दिया, उसकठोर पापी राजाको सातवें दिन सर्पों में उत्तम तक्षक डसकर यमलोक को पहुँचावेगा हेब्रह्मन् उस अपने पुत्र से जो क्रोधयुक्त था पिता ने कहा ॥ १९ ॥ शमीक बोले । हे पुत्र ! उस ने मेरा कुछ बिगाड़ नहीं किया, और यह शाप देना तपस्वियों का धर्म नहीं है और हम उस

Having heard that a dead snake was placed upon his father's shoulder, the son's eyes were inflamed with anger and being overcome by rage he touched water and cursed the king in the following words:—" That sinful wretch of a monarch who has placed a dead snake on the shoulder of my old father, that insulter of *Brahmans* and destroyer of the Kaurav fame, shall die, within seven nights, bitten by *Takshak*, the prince of snakes." And having thus cursed, *Shringi* came to his father, sitting in the cattle-pen with the dead snake on, and seeing him in that state he was doubly enraged and shedding tears of grief, he addressed his father, saying, " Father,

॥ २० ॥ न्यायतोरक्षितास्तेन तस्यपापंनरोचये । सर्वथावर्त्तमानस्य राज्ञोह्यस्मद्विधैःसदा ॥२१॥ क्षन्तव्यंपुत्रधर्मोहि हतोहन्तिनसंशयः । यदिराजानसंरक्षेत् पीडानःपरमाभवेत् ॥ २२ ॥ नशक्नुयामचरितुं धर्मं पुत्रयथासुखम् । रक्ष्यामाणाबयंतात राजभिर्धर्मदर्शिभिः ॥ २३ ॥ चरामोविपुलंधर्मं तेषां भागोऽस्तिधर्मतः । सर्वथावर्त्तमानस्य राज्ञःक्षन्तव्यमेवहि ॥ २४ ॥ परीक्षित्तुविशेषेण यथास्यप्रपितामहः । रक्षस्य स्मांस्तथाराज्ञा रक्षितव्याःप्रजाविभो ॥ २५ ॥ तेनेहक्षुधितेनाद्य श्रान्तेनचतपस्विना अजानताकृतंमन्ये व्रतमेतदिदंमम ॥ २६ ॥ अराजकेजनपदे दोषाजायन्तिवैसदा । उद्वृत्तंसततंलोकं राजादण्डेनशास्तिवै ॥ २७ ॥ दण्डात्प्रतिभयंभूयः शान्तिरुत्पद्यते तदा । नोद्विग्नश्चरतेधर्मं नोद्विग्नश्चरतेक्रियाम् ॥ २८ ॥ राज्ञाप्रतिष्ठितोधर्मोधर्मात्स्वर्गः

राजा के राज्य में रहते हैं । २० । और न्याय से उस ने हमारी रक्षाकी है उस का द्रोह मुझको अच्छा नहीं लगा और हम सरीके तपस्वियों को सदा अपने अपराधकरते हुए राजाकोभी क्षमा करनी चाहिये त्याग कियाहुआ धर्म नाश करदेता है इसमें सन्देह नहीं यदि राजा नहो तो प्रजाको बड़ी पीड़ाहोवे । २२ । और राजा के नहोने पर हे पुत्र हम धर्म नहीं करसकते और धर्म के देखनेवाले राजाओं से सम्पूर्ण प्रजा बड़े धर्म को कर सकतेहैं इस लिये धर्म से राजाका हमारे तप में भाग है, और पापकरतेहुएभी राजाको क्षमाकरना योग्यहै । २४ । और यह राजा परीक्षित जैसे इसका प्रपितामह हमारी रक्षा करताथा वैसेही यह रक्षा करताहै, और राजा प्रजाकी रक्षाकरता है इस लिये राजाको शापदेकर नाश करने से तुझको प्रजाका पापहुआ मार्गसे थकित और क्षुधा युक्त उस तपस्वी राजाने मेरेमौनव्रत को न जानकर यह कर्म किया ऐसा मैं जानताहूं । २६ । राजा रहित देश में सर्वदा बड़े २ दोषहोते हैं और मर्यादातोड़नेवाले लोगों को राजा दण्ड से शिक्षा करताहै । २७ । दण्डरूप भय से तब शान्तिहोजाती है औरत्रास युक्त मनुष्य से उत्तम क्रिया नहीं होसकती और न धर्म करसकताहै, राजा से धर्मकी स्थितिहोती है और धर्म से स्वर्गकी प्राप्तिहोती है औरराजाहीके होने से यज्ञोंकी सम्पूर्ण

---

having been informed of thy disgrace, I have cursed in anger the king *Parikshit* and he richly deserved it, seven days hence, Takshak, the prince of snakes shall kill him." And the father said to the enraged son, "Child I am not pleased with thee. Ascetics should not act thus. We live in his domains and are protected by him. We should pardon his transgressions. If we were not protected by the king we could not perform our sacrifices. He was then fatigued and hungry. Ignorant of my vow of silence he did this. A country would go to the dogs if there were no prince to protect it from

प्रतिष्ठितः । राज्ञायज्ञक्रियाःसर्वा यज्ञाद्देवाःप्रतिष्ठिताः ॥ २९ ॥ देवाद्वृष्टिःप्रवर्त्तेत वृष्टेरोषधयः स्मृताः । ओषधिभ्यो मनुष्याणां धारयेत् सततंहितम् ॥ ३० ॥ मनुष्या न्नयेधाता राजा राज्यकरः पुनः । दशश्रोत्रियसो राजा इत्येव मनुरब्रवीत् ॥ ३१॥ तेतेहक्षुधितेनाद्य श्रान्तेन च पतस्विना । अजानता कृतं मन्ये व्रतमेतदितदं मम ॥ ३२॥ कस्मादिदंत्वयाबाल्यात् सहसादुष्कृतंकृतम् । नह्यर्हतिनृपशापमस्मत्तःपुत्रसर्वथा ॥ ३३॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

क्रियायें होसकती हैं और यज्ञ से देवताओंकी स्थितिहोतीहै । २९ । और देवताओं के होनेसे वृष्टिहोतीहै और उस से अन्न उत्पन्नहोता है और राजा अन्नों से मनुष्यों के हितको करताहुआ मनुष्यों का पोषण कर्त्ताहोता है और वही राज्यका करनेवाला है मनु ने कहा है कि दस बेदपाठियोंकी समान राजाहोताहै । ३१ । उस मार्ग के श्रमसेथकित और क्षुधायुक्त तपस्वी राजाने मेरेव्रत को न जानकर यह कर्म किये क्यों तूने बालकपन के अज्ञान से शीघ्र ऐसा बुराकर्म किया और हेपुत्र वह राजा हमारे साथ अपराधकरता हुआभी हम से शाप देनेयोग्य नहीं है ३३ ॥

---

offenders and the peace of the country would be disturbed. The king protects *Dharm* and sacrifices. The latter produces rain which produces medicines. You have committed this act of childishness rashly. The king did not deserve this treatment at your hands."

शृंगी उवाच ॥ यद्यतत्साहसतात यादवादुष्कृतं कृतम् । प्रियंवाप्यप्रियंवाते वागुक्तानमृषाभवेत् ॥ १ ॥ नैवान्यथेदंभविता पितरेषब्रवीमिते । नाहंमृषाब्रवीम्येव स्वैरेष्वपिकुतः शपन् ॥ २ ॥ शमीक उवाच । जानाम्युग्रप्रभावं त्वांतातसत्यगिरंतथा नानृतंचोक्तपूर्वंते नैतन्मिथ्या भविष्यति ॥ ३ ॥ पितापुत्रोवयःस्थोऽपि सततंवाच्य एवतु । यथास्याद्गुणसंयुक्तः प्राप्नुयाच्चमहद्यशः ॥ ४ ॥ किंपुनर्बालएवत्वं तपसा भावितःसदा । वर्द्धतेचप्रभवितां कोपोऽतीवमहात्मनाम् ॥ ५ ॥ सोऽहंपश्यामिवक्त व्यं त्वयिधर्मभ्रतांवर । पुत्रत्वंबालतांचैव तवावेक्ष्यचसाहसम् ॥ ६ ॥ सत्वंशमपरो भूत्वा वन्यमाहारमाचरन् । चरक्रोधमिमंहत्वा नैवंधर्मंमहास्यासि ॥ ७ ॥ क्रोधोहिधर्मं

अध्याय ४२ ॥

शृंगी बोला । हेतात यदि यह मेरा कियाहुआ कर्म न करने योग्य है या मैंने यह बड़ा पाप किया अथवा भलाहो या बुरा मेरी वाणी मिथ्या नहीं होती और हे पिता ! यह मेरा शाप बिपरीत नहीं होसकता यह मैं तुम से सत्य कहताहूं मेरा वचन कभी हास्य मेंभी झूंठ नहीं निकलता और शाप देनेपर तो क्यों झूंठ निकलेगा ॥ २ ॥ शमीकबोला हेपुत्र ! उग्रप्रभाव और सत्य वाणीवाला तुझको मैंभी जानता हूं और पहिलेभी कभी तूने झूंठ नहीं बोला और यह वचनभी तेरा झूंठा नहोगा बड़ी अवस्था युक्त पुत्रकोभी पिताका सदा शिक्षा करना योग्यहै जिस से वह पुत्र गुणवानहो और संसार में उसका यशहोवे और तूतो अभी बालकही है और तपस्या से तूने सदाअपनी आत्मा को पवित्र कियाहै तपोबलसे युक्त महात्माओंका क्रोधभी बढजाता है हे धर्मज्ञों में श्रेष्ठ पुत्र ! मैं तुझ से कुछ कहनायोग्य समझताहूं तेरेबालकपन और इस न करने योग्य कामको और अपने पुत्रत्वकोभी देखकर शिक्षाकरना ठीक समझताहूं । ६ । इस से तू क्रोध त्याग शान्ति पूर्वक वन के फल मूल खाकर तपस्या कियाकर इसप्रकार फिर

CHAPTER XLII.

Shringi replied to his father, saying, "Father, the act which I have done may be improper or of rashness and you, may like it or not, but my words will not be false. The curse can not be recalled for I have never told a lie even in jest." And *Shaumak* said, "Child I know thy prowess and truthfulness. Thou hast never spoken an untruth and thy curse will not prove false. A father has the right of moralising even a grown up son for his benifit. Being of tender age you stand more in need of my advice. Thou art ever engaged in ascetic penances. Even wise ones are over powered by wrath. Seeing that thou, the foremost of law-observing persons, art my son and of tender age, I must reprove thy rashness. My son, may you live in peace, eating the roots and fruits of the forest. Subdue thy

हरति यतीनांदुःखसंचितम् । ततो धर्मविहीनानां गतिरिष्टानविद्यते ॥ ८ ॥ शमएव यतीनांहि क्षमिणांसिद्धिकारकः । क्षमावतामयंलोकः परश्चैवक्षमावताम् ॥९॥ तस्मा च्चरेथाःसततं क्षमाशीलो जितेन्द्रियः । क्षमयाप्राप्स्यसे लोकान् ब्रह्मणः समनन्तरान् ॥ १० ॥ मयातु शममास्थाय यच्छक्यं कर्त्तुमद्यवै । तत्करिष्याम्यहंतात प्रेषयिष्ये नृपायवै ॥ ११ ॥ ममपुत्रेणशप्तोऽसि बालेनाकृतबुद्धिना । ममेमांधर्षणां त्वत्तः प्रेक्ष्य राजन्नमर्षिणा ॥ १२ ॥ सौतिरुवाच । एवमादिश्यशिष्यं सप्रेषयामाससुव्रतः । परिक्षितेनृपतये दयापन्नोमहातपाः ॥ १३ ॥ सन्दिश्यकुशलप्रश्नं कार्यवृत्तांतमेवच । शिष्यंगौरमुखंनाम शीलवन्तंसमाहितम् ॥ १४ ॥ सोऽभिगम्यततःशीघ्रं नरेन्द्रंकुरुवर्द्धनम् । विवेशभवनंराज्ञः पूर्वंद्वाःस्थैर्निवेदितः ॥ १५ ॥ पूजितस्तुनरेन्द्रेण द्विजोगौ-

---

धर्मक्षय न करना, क्योंकि जितेन्द्रिय पुरुषोंका बड़े क्लेश से बटोराहुआ धर्म क्रोध से लोपहोजाताहै और धर्म के लोपहोने से सद्गति नहीं मिलती क्षमाही सिद्धिकी जड़ है तुम सदा क्षमाशील और जितेन्द्रियहोकर तप करतेरहे और क्षमासेही तू ब्रह्मलोक से मोक्ष पर्यन्त लोकोंको प्राप्तहोगा हेपुत्र मैं शान्तिका आश्रय कर जोकुछ कर्त्तव्यहै उसको करूंगा और राजा के पास एक पुरुषको भेजूंगा । ११ । जो कहे कि हेराजन् थोड़ीबुद्धि युक्त क्रोधी मेरेपुत्र ने तुझसे मेरे इस अपमान को देखकर शाप दिया है ।१२। उग्रश्रवा बोले ऐसा कहकर उस उत्तम व्रतोंके रखनेवाले बड़े तपस्वी शमीक ऋषि ने शिष्य को राजा परीक्षित के पास भेजा । १३ । जोकि गौरमुख नामवाला सावधान और शील-वानथा उसको कुशल प्रश्नादिक और कार्य समझाकर भेजा । १४ । वह शिष्य शीघ्र वहां जाकर कौरवोंके कुलको बढ़ानेवाले महाराज परीक्षितके स्थान में गया और ड्योढी वानोंने राजा से जाकर निवेदनकिया । १५ । मार्ग के परिश्रम से थकित उस ब्राह्मणका

---

passions and donot destroy thus the fruit of thy asceticism. Surely wrath diminishes the virtue of asceticism, acquired with great pains. Those who are deprived of virtue donot attain a blessed state. Peacefulness always gives success to forgiving ascetics. This world and the next are both won by forgiveness. Thou shouldst always keep thy passions under control and forgive other and thus wilt attain the world hard of access. With a view to do as much good as lies in my power I shall send some one to warn the king that he has been cursed by my son, in wrath, on account of the disrespect shown to me by him." And that great vow observing ascetic kindly sent one of his disciples, named *Gurmukh*, an ascetic of goodmanners, with instructions that he should first enquire about

रमुखस्तदा । आचख्यौचपरिश्रान्तो राज्ञःसर्वमशेषतः ।१६। शमीकवचनंघोरं यथोक्तं मन्त्रिसन्निधौ । गौरमुख उवाच । शमीकोनामराजेन्द्र वर्त्तते विषयेतव ॥ १७ ॥ ऋषिः परमधर्मात्मा दान्तःशान्तोमहातपाः । तस्यत्वयानरव्याघ्र सर्पःप्राणैर्वियोजित. ॥ १८ ॥ अवसक्तोधनुष्कोट्या स्कन्धेमौनान्वितस्यच । क्षान्तवांस्तवतत्कर्म पुत्रस्तस्य नचक्षमे ॥ १९ ॥ तेनशप्तोसिराजेन्द्र पितुरज्ञातमद्यवै । तक्षकःसप्तरात्रेण मृत्युस्तव भविष्यति ॥ २० ॥ तत्ररक्षांकुरुष्वेति पुनःपुनरथाऽब्रवीत् । तदन्यथानशक्यंच कर्तुं केनचिदप्युत ॥ २१ ॥ नहिशक्नोतितंयन्तुं पुत्रंकोपसमन्वितम् । ततोऽहंप्रेषितस्तेन तव राजन हितार्थिना ॥ २२ ॥ सूत उवाच । इतिश्रुत्वावचोघोरं सराजाकुरुनन्दनः । पर्यतप्यततत्पापं कृत्वाराजामहातपाः ॥ २३ ॥ तंचमौनव्रतंश्रुत्वा वनेमुनिवरंतदा ।

राजाने सत्कार किया और उसने सम्पूर्ण घोर वृत्तान्त राजा से कहा शिष्य के उस भयानक वृत्तान्तको मन्त्रियों नेभी विस्तारपूर्वक सुना, गौरमुखबोला हेराजेन्द्र बड़ाधर्मात्मा, चतुर, शांत बड़ा तपस्वी शमीक नामऋषि आप के राज्यमें रहता है हे नरव्याघ्र जिस मौनव्रत धारण किये हुए के कन्धे में तुमने मराहुआ सर्प उठाकर डालाथा उसने उस तुम्हारे कर्म को क्षमा किया परन्तु उस के पुत्र ने नहीं किया । १९ । हेराजेन्द्र ! उस ने अपने पिता के परोक्ष आज तुमको शाप दिया है कि आजसे सातवें रोज तक्षक से तेरी मृत्युहोगी ।२०। अब तुमको इस शाप से जैसेहोसके रक्षा करनी चाहिये ऐसा बारम्बार तुमसे कहाहै और उसके पुत्र के शाप को लौटाने में कोई समर्थ नहींहै और वह ऋषिभी क्रोध में भरेहुए अपने पुत्रको नहीं रोक सकताहै तब तेरेहित चाहनेवाले उस महात्मा ने मुझको तेरेपास भेजा है । २२ । उग्रश्रवाबोले वह कुरुकुलका आनन्द देनेवाला महातपस्वी राजा परीक्षित उस पापको करके और उस घोर वचन को सुन अत्यन्त तापयुक्त हुआ । २३ । उस मुनियों में श्रेष्ठ को बन में मौन व्रतवाला सुनकर

the welfare of the king and then to communicate the real message. The messenger soon arrived at the king's palace and having sent the notice of his arrival entered therein. The *Brahman Gurmukh* was received by the king with proper courtesy and after resting awhile he gave out the message of *Shamik* before the king and his ministers, as he was directed to do, in the followings words:— "O king of kings, *Shamik*, virtuous Rishi, with his passion under control, peaceful and given up to severe penances, lives in thy domains, O lion hearted king, thou didst place a dead snake with the end of thy bow upon his shoulders while he was observing a vow of silence. He himself forgave thy deed. But not so his son, who cursed thee, O king of kings, today, without the knowledge of his father, to the effect that within a week hence shall Takshak be thy death. Shamik

भूयएवाभवद्राजा शोकसन्तप्तमानसः ॥ २४ ॥ अनुक्रोशात्मतांतस्य शमीकस्यावधा र्यच । पर्यतप्यतभूयोऽपि कृत्वातत् किल्बिषंमुनेः ॥ २५ ॥ नहिमृत्युंतथाराजा श्रुत्वावैसोऽन्वतप्यत । अशोचदमरप्रख्यो यथाकृत्वेहकर्मतत् ॥ २६ ॥ ततस्तंप्रेषया मास राजागौरमुखंतदा । भूयःप्रसादंभगवान् करोत्विह ममेतिवै ॥२७॥ तस्मिंश्च- गतमात्रेऽथ राजागौरमुखेतदा । मन्त्रिभिर्मन्त्रयामास सहसम्विग्नमानसः ॥ २८ ॥ संमंत्र्यमन्त्रिभिश्चैव सतथामन्त्रतत्त्ववित् । प्रासादंकारयामास एकस्तम्भंसुरक्षितम् ॥ २९ ॥ रक्षांचविदधेतत्र भिषजश्चौषधानिच। ब्राह्मणान्मन्त्रसिद्धांश्च सर्वतोवैन्ययो जयत् ॥ ३० ॥ राजकार्याणितत्रस्थः सर्वान्येवाकरोचसः । मन्त्रिभिःसहधर्मज्ञः स- मन्तात् परिरक्षितः ॥ ३१ ॥ नचैनंकश्चिदारूढं लभतेराजसत्तमम् । वातोऽपि निश्चरं

अत्यन्त शोक सन्तप्त हुआ । २४ । और उस महात्मा शमीककी दयालुता को विचार कर और उस बड़ेभारी मुनि के अपराधको कर के फिर अति सन्तप्त हुआ उस देवता- ओंके तुल्य राजा ने मृत्युको सुनकर ऐसा सोच नहीं किया जैसा उस कर्मको कर के सोच किया । २६ । राजाने गौर मुखको विदा किया और कहा कि भगवान शमीक ऋषि मुझपर फिर अनुग्रह करें । २७ । उस के जाने पर विकल मनवाले राजा ने मन्त्रियों के साथ विचार करना आरम्भ किया । २८ । उस विचार के तत्व जान ने वालेने राजमन्त्रियों के साथ निश्चय कर एक स्तम्भ वाला महल बनवाया जो चारों ओर से रक्षितथा । २९ । उस स्थानकी रक्षा के लिये वैद्य और मन्त्र सिद्ध ब्राह्मणोंको चारों तरफ से नियुक्त किया । ३० । उस स्थानपर बैठा हुआ राजा धर्मज्ञ और चारों तरफ से मन्त्रियों से युक्त सम्पूर्ण राज्य कार्यों को करने लगा । ३१ । और उस स्थान में

---

repeatedly asked his son to forgive thee but the words could not be revoked and being unable to pacify his son's anger, he has sent me for thy good." The Kaurav King having heard these words and recollecting his own sinful act was very sorry. And the king, learning that the great Rishi had been observing the vow of silence, was doubly afflicted by sorrow. He repented much when he learnt the kind message of the Rishi and his own misdeed. The god-like monarch did not grieve so much for his own death as for having done that act to the *Rishi*. He then sent away *Gurmukh* saying, "Let the illustrious one be gracious to me." After Gurmukh's departure the king, at once, asked the counsel of his ministers and with their advice the wise king caused a mansion to be erected upon only one column and it was well-guarded day and

स्तत्र प्रवेशे विनिवार्य्यते ॥ ३२ ॥ प्राप्तेचदिवसेतस्मिन् सप्तमे द्विजसत्तमः । काश्य-
पोऽभ्यागमद्विद्वांस्तं राजानंचिकित्सितुम् ॥३३॥ श्रुतंहितेनतदभूद्यथा तंराजसत्तमम्
तक्षकःपन्नगश्रेष्ठो नेष्यतेयमसादनम् ॥ ३४ ॥ तंदष्टंपन्नगेन्द्रेण करिष्येऽहमपज्वरम्
तत्रमेऽर्थश्चधर्मश्च भवितेति विचिन्तयन् ॥ ३५ ॥ तंददर्श स नागेन्द्रस्तक्षकः काश्यपं
पथि । गच्छन्तमेकमनसं द्विजोभूत्वावयोऽतिगः ॥ ३६ ॥ तमब्रवीत्पन्नगेन्द्रः काश्यपं
मुनिपुङ्गवम् । क्वभवांस्त्वरितोयाति किंचकार्य्यंचिकीर्षति ॥ ३७ ॥ काश्यप उवाच
नृपंकुरुकुलोत्पन्नं परीक्षितमरिन्दमम् । तक्षकःपन्नगश्रेष्ठस्तेजसाऽद्य प्रधक्ष्यति ॥३८॥
तंदष्टंपन्नगेन्द्रेण तेनाग्निसमतेजसम् । पाण्डवानांकुलकरं राजानममितौजसम् । गच्छामि

चढे हुए राजा के समीप कोई नहीं जासकता था और वायुभी उस के समीप जाने में निवारण किया जाताथा । ३२ । उस सातवें दिन के आने पर विद्वान् काश्यप ब्राह्मण राजाकी चिकित्सा के लिये आताथा । ३३ । उस ने सब वृत्तान्त उस राजा का सुन लिया था कि तक्षक उसे सातवें दिन यमलोक को पहुँचावेगा उस राजा को मैं निर्विष करूंगा उससे मुझको धन और धर्मकी प्राप्ति होगी यह विचारने लगा । ३५ । उस काश्यप ब्राह्मण को तक्षक ने मार्ग में देखा जो कि एकान्त चित्त किये चला जाता था तब तक्षक वृद्ध ब्राह्मण का रूप बनाकर मुनियों में श्रेष्ठ उस काश्यप से बोला हे ब्राह्मण तू कहां शीघ्रता से जाता है और क्या कार्य करना चाहता है काश्यप बोला शत्रुओं के नाश करनेवाले कुरु कुलमें उत्पन्न राजा परिक्षित को सर्पों में श्रेष्ठ तक्षक आज अपने तेज से भस्म करेगा । ३८ । हे ब्राह्मण अग्नि के समान तेजस्वी पाण्डवों के कुलको वढ़ाने वाले

night. All round it were posted learned Brahmans and physician with antidotes. The king, surrounded by his ministers and protected by the guards discharged his duties and no one could approach him, and when the seventh day dawned the learned *Kashyap*, was coming to cure the king. He had heard that *Takshak* the prince of snakes, would bite him and he would gain wealth and fame by the cure. He was seen by Takshak, the prince of snakes, disguised as an old Brahman, who accosted him saying, "Whither and on what business art thou going with such speed ?" And *Kaskyap* thus addressed, replied, "Takshak will burn today king Parikshit of the Kuru family, the oppressor of enimies, by his venomed bite, I go with speed to cure him of the bite," Takshak said "I am the Takshak, O *Brahman*, who shall burn the king. Thou mayst

त्वरितसौम्य सद्यः कर्तुमपज्वरम् ॥३९॥ तक्षक उवाच । अहंसतक्षकोब्रह्मंस्तं धक्ष्यामि महीपतिम् । निवर्त्तस्वनशक्तस्त्वं मयादष्टं चिकित्सितुम् ॥ ४० ॥ काश्यप उवाच अहंतंनृपतिंगत्वा त्वयादष्टमपज्वरम् । करिष्यामीतिमे बुद्धिर्विद्याबलसमन्वितम् ।४१

इत्यादिपर्वण्यास्तीके द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

तक्षक उवाच । यदिदष्टंमयेहत्वं शक्तःकिञ्चिचिकित् सितुम् । ततोवृक्षंमयादष्टमिमं जीवयकाश्यप ॥ १ ॥ परंमन्त्रबलंयत्ते तद्दर्शययतस्वच । न्यग्रोधमेनंधक्ष्यामि पश्यतस्तेद्विजोत्तम ॥ २ ॥ काश्यप उवाच । दशनागेन्द्रवृक्षंत्वं यद्येतदभिमन्यसे । अहमेनंत्वयादष्टं जीवयिष्ये भुजंगम ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच । एवमुक्तः सनागेन्द्रः काश्यपेनमहात्मना । अदशद् वृक्षमभ्येत्य न्यग्रोधंपन्नगोत्तमः ॥ ४ ॥ सवृक्षस्तेनदष्टस्तुपन्न

और बड़े बलवान् उस तक्षक से काटे हुए राजाको निर्विष करने को मैं शीघ्र जाता हूं तक्षकबोला हे ब्राह्मण वह तक्षक मैंहूं और परीक्षित को अपने विषसे भस्म करूंगा तू लौट जा क्योंकि मेरे काटे हुए की तू चिकित्सा नहीं कर सकता । ४० । काश्यप बोला मैं उस राजा को जिसको तू काटेगा विद्याबल से निर्विष करदूंगा । ४१ ।

॥ अध्याय समाप्तः ॥

अध्याय । ४३ ।

तक्षकबोला यदि तू मेरे काटेहुए की चिकित्सा करने को समर्थ है तो मेरे काटेहुए वृक्षको फिर हराकर । १ । और अपने विद्याबल दिखाने का यत्नकर हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तेरेदेखते हुए मैं इस गूलर के वृक्षको भस्मकरता हूं काश्यपने कहा हे सर्पोंमें श्रेष्ठ तक्षक ! यदि तू ऐसा समझता कि तेरे भस्म कियेहुएको नहीं जिला सकता हूं तो इस वृक्षको काट, उग्रश्रवा बोले उस काश्यप महात्मा के इस बचनको सुन उस तक्षक ने वृक्ष के समीप जाकर उसे काटा । ४ । उस सर्पसे काटा हुआ वह वृक्ष विषकी

---

depart for thou shalt not be able to cure my bite. Kashyap said, "I am sure that by the virtue of my knowledge, I shall cure him.

CHAPTER XLIII

Takshak said, "I burn this banyan tree, Kashyap. Revive it if you can cure a living being bitten by me." Kashyap replied, "You may bite this tree if you wish to see the extent of my knowledge. I shall revive it presently." Having heared this the Prince of Snakes bit the banian tree which began to burn on all sides by the venom. And having burnt the banian tree, the snake

गेनमहात्मना । आशीविषविषोपेतः प्रजज्वाल समन्ततः ॥५॥ तंदग्ध्वासनगंनागः कश्यपंपुनरब्रवीत् । कुरुयत्नं द्विजश्रेष्ठ जीवयैनं वनस्पतिम् ॥ ६ ॥ सौतिरुवाच । भस्मीभूतंततोवृक्षं पन्नगेन्द्रस्य तेजसा । भस्मसर्वंसमाहृत्य काश्यपोवाक्यमब्रवीत् ७॥ विद्याबलंपन्नगेन्द्र पश्यमेऽस्यवनस्पतौ । अहंसञ्जीवयाम्येनं पश्यतस्तेभुजंगम ८ ॥ ततःसभगवान्विद्वान् काश्यपोद्विजसत्तमः । भस्मराशीकृतंवृक्षं विद्ययासमजीवयत् ९ अंकुरंकृतवांस्तत्र ततःपर्णद्वयान्वितम् । पलाशिनंशाखिनञ्चतथाविटपिनंपुनः ॥१०॥ तंदृष्ट्वाजीवितंवृक्षं काश्यपेनमहात्मना । उवाचतक्षकोब्रह्मन् नैतदित्यद्भुतंत्वयि ११॥ द्विजेन्द्रयद्विषंहन्या ममवामद्विधस्यवा । कंत्वमर्थमभिप्रेप्सुर्यासितत्रतपोधन ॥ १२ ॥ यत्तेभिलषितंप्राप्तुं फलंतस्मान्नृपोत्तमात् । अहमेवप्रदास्यामि तत्तेयद्यपिदुर्लभम् ॥ ॥ १३ ॥ विप्रशापाभिभूतेच क्षीणायुषिनराधिपे । घटमानस्यतेविप्र सिद्धिःसंशयि

ज्वालाओं से चारों ओर से प्रज्वलित होगया । ५ । तक्षक ने उसवृक्ष को जलाकर फिर काश्यप से कहा कि हे ब्राह्मण अपने यत्न से इस वृक्षको जिला ६ उग्रश्रवा बोले कि उस सर्पके तेजसे भस्महुए वृक्षकी सम्पूर्ण भस्मको एकत्रित कर काश्यपने तक्षक से कहा । ७ । हे सर्पों में श्रेष्ठ तक्षक इस वृक्षपर मेरे विद्याके बल को देख, हे सर्प तेरे देखते हुए मैं इसको जिलाताहूं । ८ । इसके उपरान्त भगवान् काश्यप ने भस्म के समूह को अपनी विद्या से जिलादिया । ९ । प्रथम अंकुर उत्पन्न हुआ फिर दोपत्ते हुए फिर बहुत से पत्ते और बड़ी २ शाखाएें उत्पन्नहुई और फिर जैसे पूर्वथा वैसाही होगया । १० । महात्मा काश्यप ने जब उस वृक्षको हराकर दिया उसको देखकर तक्षकबोला तेरे लिये मेरे विषको दूर करना अद्भुत बात नहीं है हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तेरी क्या इच्छा है । १२ । जिस वस्तुकी तुझे राजा परीक्षित से मिलनेकी इच्छाहो मैं तुझको वही दूंगा यद्यपि दुर्लभ वस्तुभी हो । १३ । ब्राह्मण के शाप से युक्त नष्टायु परीक्षित से तेरी

told Kashyap to try his best to revive it. The tree was reduced to ashes by the poison of the prince of snakes. Kashyap collected the ashes and told Takshak to see the power of his knowledge applied in reviving that lord of the forest. And then that best of Brahmans, the famous Kashyap, revived, by his knowledge, the tree that had been reduced to ashes. A sprout came out first, then he furnished it with two leaves and so on from the stem and branches to the full grown tree with leaves and all. 10. Takshak seeing the tree revived by the learned Kashyap said to him, " I see that it is not impossible for thee to destroy the effect of my poison or that of another like myself. What amonnt of wealth do you expect to get there ? I shall give it to thee however large it may be, that you expect from that great monarch. He is

ताभवेत् ॥ १४ ॥ ततोयशःप्रदीप्तंते त्रिषुलोकेषुविश्रुतम् । निरंशुरिवघर्मांशुर्न्तर्द्धान मितोव्रजेत् ॥ १५ ॥ काश्यपउवाच ॥ धनार्थीयाम्यहंतत्र तन्मेदेहिभुजङ्गम । ततो ऽहंविनिवर्त्तिष्ये स्वापतेयंप्रगृह्यवम् ॥ १६ ॥ तक्षकउवाच ॥ यावद्धनंप्रार्थयसेतस्मा द्राज्ञस्ततोऽधिकम् । अहमेवप्रदास्यामि निवर्त्तस्व द्विजोत्तम ॥ १७ ॥ सौतिरुवाच । तक्षकस्यवचःश्रुत्वा काश्यपोद्विजसत्तमः । प्रदध्यौसुमहातेजा राजानंप्रतिबुद्धिमान् । ॥ १८ ॥ दिव्यज्ञानःसतेजस्वी ज्ञात्वातंनृपतिंतदा । क्षीणायुषंपाण्डवेय मपावर्त्तत का श्यपः ॥१९॥ लब्ध्वावित्तंमुनिवरस्तक्षकाद्यावदीप्सितम् । निवृत्तेकाश्यपेतस्मिन् सम येनमहात्मनि ॥ २० ॥ जगामतक्षकस्तूर्णं नगरंनागसाह्वयम् । अथशुश्रावगच्छन् स तक्षकोजगतीपतिम् ॥ २१ ॥ मन्त्रैर्गदैर्विषहरै रक्ष्यमाणं प्रयत्नतः । सूत उवाच । स चिन्तयामासतदा मायायोगेनपार्थिवः । मयावञ्चयितव्योऽसौ उपायोकोभवेदिति

सिद्धि में संदेह है । १४ । इस के उपरान्त तीनोंलोक में प्रसिद्ध और प्रकाशमान तेरा यश राहुसे ग्रसेहुए सूर्यके समान मन्दहोजायगा काश्यपने कहा हे सर्प धनकी इच्छासे राजा परीक्षित के पास जाताहूं यदि तू मुझको धन दानकरेतो मैं लौटा जाताहूं ।१६। तक्षक ने कहा हे ब्राह्मण जितने धनकी राजापरीक्षित से मिलनेकी तुझे अभिलाषा हो उस से कुछ अधिक मैं तुझे दूंगा तू लौटजा । १७ । उग्रश्रवा ने कहा तक्षक के वचनको सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी बुद्धिमान काश्यपने राजाके विषयमें ध्यान किया । १८ । उस दिव्य ज्ञानवाले तेजस्वी ब्राह्मण ने पाण्डव राजाको क्षीणायु जान कर यथेच्छा धन तक्षक से लेलिया और लौटकर घरगया गुप्तरूप से महात्मा काश्यपके लौट जानेपर तक्षक शीघ्रही हस्तिनापुर को गया और वहां पहुँचकर राजाके विषय में यह सुना । २० । कि वहराजा मन्त्रों और विषकी हरने वाली औषधियों द्वारा रक्षित

affected by the curse of a Brahman and the term of his life is short. Thy fame may suffer as thy success is doubtful there and thou standest in the fear of losing the lustre of thy fame like the sun (under eclipse). " To this Kashyap replied, " I go there for the sake of wealth and shall retrace my steps if thou promise to give me a goodly sum. " Takshak offered that best of Brahmans wealth beyound his expectations if he would promise not to go the king, and Kashyap, of great prowess and intelligence, hearing these words from Takshak, meditated a while, and gifted with spiritual knowledge he came to the conclusion that the period of the life of that king of the Pandav race had really come to an end. So he accepted Takshak's offer of wealth, beyound his expectation, and returned home. After his clandestive departure Takshak, at proper time, speedily entered the city of Hasthinapur and on his way

॥ २२ ॥ ततस्तापसरूपेण प्राहिणोत्सुभुजङ्गमान् । फलदर्भोदकंगृह्य राज्ञेना गोथ तक्षकः ॥ २३ ॥ तक्षकउवाच । गच्छध्वंयूयमव्यग्रा राजनंकार्यवत्तया । फलपुष्पोदकंनाम प्रतिग्राहयितुंनृपम् ॥ २४ ॥ सौतिरुवाच । तेतक्षकसमादिष्टास्तथाचक्रुर्भुजङ्गमाः । उपनिन्युस्तथाराज्ञे दर्भानापःफलानिच ॥ २५ ॥ तच्चसर्वंसराजेन्द्रः प्रतिजग्राहवीर्यवान् । कृत्वातेषांचकार्य्याणि गम्यतामित्युवाचतान् ॥ २६ ॥ गतेषुतेषु नागेषु तापसच्छद्मरूपिषु । अमात्यान्सुहृदश्चैव प्रोवाचसनराधिपः ॥ २७ ॥ भक्षयन्तुभवन्तो वै स्वादूनीमानिसर्वशः । तापसैरुपनीतानि फलानिसहितामया ॥२८॥ ततोराजाससचिवः फलान्यादातुमैच्छत । विधिनासम्प्रयुक्तांवै ऋषिवाक्येनतेनतु । ॥ २९ ॥ यस्मिन्नेवफलेनागस्तमेवाभक्षयत्स्वयम् । ततोभक्षयतस्तस्य फलात्कृमिरभूदणुः ॥ ३० ॥ ह्रस्वकःकृष्णनयनस्ताम्रवर्णोऽथशौनक । सतंगृह्यनृपश्रेष्ठः सचिवा

है उग्रश्रवाने कहा कि तक्षक विचार करने लगा कि राजाको किस कपट से छलना और मारना उचित है तत्पश्चात् तक्षक ने सर्पोंको तपस्वीका रूपवना कर फलपुष्प सहित राजाके पासभेजा और उन से कहा हे सर्पों तुम सावधानी के साथ कार्य करो । २४ । और फलपुष्पादि राजाको दो उग्रश्रवाने कहा कि सर्पोंने तक्षक के कहने से ऐसाही किया । २५ । और कुशादि राजा के पास लेगये और बड़े पराक्रमी राजाने उन से लेलिया । २६ । और उनको दक्षिणा देकर जानेको कहा कपट से तपस्वियों का रूप बनाये हुए सर्पोंके चलेजाने के पश्चात् राजा ने मंत्री और मित्रों से कहा यह सम्पूर्ण फल बड़े स्वादिष्ट हैं इन तपस्वियों के लाये फलोंको मेरे साथ खाओ इस के उपरान्त राजाने मन्त्रियों सहित फलोंके उठानेकी इच्छाकी । २९ । उस ऋषि के वाक्य से प्रेरणा किये हुए राजा ने उस फलको आप खाया जिसमें तक्षक छिपाथा इस के उपरान्त

he learned that the king was very carefully protected by means of poison neutralising mantras and medicines. And he reflected upon the best method of deceiving the king. He sent some serpents, disguised as Brahmans, with fruits and Kusa grass, with directions to obtain the king's audience on the plea of urgent business and without showing any signs of impatience to ask the king to accept the present of fruits. 25. The snakes acted according to the directions of Takshak and took Kusa, fruit and water to the king who accepted the offering. The king then dismissed them and when they had gone away, the monarch invited his courtiers to partake of the fruits brought by them. And moved by fate and the curse of the rishi the king and the ministers began to eat them. The fruit in which Takshak was hidden fell to the lot of the king himself. In the fruit he found an ugly insect, very minute, with black eyes and colour of

निदमब्रवीत् ॥ ३१ ॥ अस्तमभ्येतिसविता विषादद्यनमेभयम् । सत्यवागस्तुसमुनिः कृमिर्मान्दशतामयम् ॥ ३२ ॥ तक्षकोनामभूत्वा वै तथापरिहृतंभवेत् । तेचैन मन्ववर्त्तन्तमन्त्रिणः कालचोदिताः ॥ ३३ ॥ एवमुक्त्वासराजेन्द्रो ग्रीवायांसन्निवेश्यह । कृमिकंमाह सत्तूर्णं मुमूर्षुर्नष्टचेतनः ॥ ३४ ॥ प्रहसन्नेवभोगेन तक्षकेणत्ववेष्टचत । तस्मात्फलाद्विनिष्क्रम्य यत्तद्राज्ञेनिवेदितम् ॥ ३५ ॥ वेष्टयित्वाच वेगेन विनद्यच महास्वनम् । अदशत्पृथिवीपालं तक्षकःपन्नगेश्वरः ३६ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

राजा के खाते हुए उसफलमें से एक छोटा काले नेत्र लालरंग वाला बुगकीड़ा निकला उस राजाओं में श्रेष्ठने उस कीड़ेको हाथमें उठाकर मन्त्रियों से कहा सूर्य अस्तहोता है अबमुझे बिष से भय नहीं रहा । ३२ । वह मुनिसत्यवादीहो और यहकीड़ा तक्षक नामकाहोकर मुझे काटे इस प्रकार ब्राह्मण का अपमान निवृत्त होगा । ३३ । काल से प्रेरणा कियेहुए उन मन्त्रियों ने इस बातको पुष्ट किया राजा ने मन्त्रियों से यह कह कर उसकीड़ेको अपनी गर्दन पर रखलिया । ३४ । नष्टज्ञान और मृत्युको प्राप्त हुआ राजा उसकीड़ेसे हँसताहुआ बोला कि तक्षक रूपसे मेरीगर्दनको लिपटजा । ३५ । और फल से निकला हुआ सर्पों का स्वामी तक्षक बड़ी गर्जना करके राजा के गलेको लिपट गया और उस को काट लिया । ३६ ।

---

copper. And the foremost of kings took up the insect and addressed his councillors, saying, " The sun is setting; I should have no more fear from poison to-day. Let this insect becoming Takshak bite me, so that my sinful act be expiated and the words of the ascetic proved true. " And those councillors also, impelled by fate, seconded the king. The monarch's hour of death having come, he lost his senses and smiled. He then placed the insect on his neck. The insect, in reality Takshak hidden in the fruit offered to the king, coiled round the neck of the monarch and uttering tremendous roar, bit him.

सौति रुवाच। तेतथामन्त्रिणोदृष्ट्वा भोगेनपरिवेष्टितम्। विषण्णावदनाःसर्वे रुरु दुर्भृशदुःखिताः॥ १॥ तन्तुनादंततःश्रुत्वा मन्त्रिणस्तेप्रदुद्रुवुः। अपश्यन्ततथा यान्तमाकाशे नागमद्भुतम्॥ २॥ सीमन्तमिवकुर्वाणं नभसःपद्मवर्चसम्। तक्षकंपन्नगश्रेष्ठं भृशंशोकपरायणाः॥ ३॥ ततस्तुतेतद्गृहमग्निनावृतं प्रदीप्यमानं विषजेनभोगिना। भयात्परित्यज्यदिशःप्रपेदिरे पपातराजाशनिताडितोयथा॥ ४॥ ततोनृपे तक्षकतेजसाहते प्रयुज्यसर्वाःपरलोकसत्क्रियाः। शुचिर्द्विजोराजपुरोहितस्तदातथैवते तस्यनृपस्यमंत्रिणः॥ ५॥ नृपं शिशुंतस्यसुतंप्रचक्रिरेसमेत्यसर्वेपुरवासिनोजनाः। नृपं यमाहुस्तममित्रघातिनं कुरुप्रवीरंजनमेजयंजनाः॥ ६॥ सबालएवार्यमतिर्नृपोत्तमः सहैवतैर्मन्त्रिपुरोहितैस्तदा। शशासराज्यंकुरुपुङ्गवाग्रजो यथास्यवीरःप्रपितामहस्तथा

अध्याय ४४॥

उग्रश्रवाने कहा कि उन मन्त्रियों ने सर्प को राजा के शरीर से लिपटाहुआ देख कर उदास मुख होकर अत्यंत रुदन किया। १। सर्पकी गर्जना को सुन सम्पूर्ण मंत्री भाग गये अत्यंत शोकसे भरेहुए उन मंत्रियों ने अद्भुत कंवल के रंगवाले सर्पों में श्रेष्ठ तक्षक को लाल रेखाकी समान आकाश में जाते देखा इस के उपरान्त वह मंत्री सर्पके विषसे उत्पन्न हुई अग्नि से घर जलता हुआ देख कर चारों ओरको भाग गये और राजा वज्र से मारे हुएकी समान गिरपड़ा। ४। तक्षक के तेजसे मरेहुए राजाकी सम्पूर्ण क्रियाओंको करके पवित्र राजपुरोहित ब्राह्मण और सम्पूर्ण मंत्रियों और नगर निवासियोंने मिलकर उसके बालक पुत्रको राजाबनाया उसशत्रुनाशी कौरव श्रेष्ठपुत्रका नाम जनमेजय था ६ वहबुद्धिमान कुरुवंशी राजाओंमें श्रेष्ठ बालकही राज्यकी रक्षा अपनेप्रपितामहकी समान

CHAPTER XLIV

The councillors beholding the king fastened in the coils of Takshak, became pale with fear and wept with grief. Hearing the roar of Takshak all the ministers fled away in great grief and saw Takshak, the prince of snakes, coursing through the sky like a red streak dividing the black hair of a woman. The mansion, occupied by the king, was burnt down with the poison of Takshak and the king's councillors fled away in all directions with fear. The king fell dead like one struck by lightning. The royal priest, a holy Brahman, performed the funeral ceremonies of the dead monarch and an assembly of the citizens gave the crown to the minor son of the king. The new monarch, a hero of the Kaurav race and slayer of enemies, was the famous Janmejaya. The king, though a child, was wise and ruled the country like his heroic great grand-father. When the ministers saw that the youthful monarch could keep his

॥७॥ ततस्तुराजानमामित्रतापनं समीक्ष्यतेजस्यनृपस्यमन्त्रिणः । सुवर्णवर्माणमुपेत्य काशिपंवपुष्टमार्थंवरयाम्बचक्रमुः ॥ ८ ॥ ततःसराजाप्रददौवपुष्टमां कुरुप्रवीराय परीक्ष्यधर्मतः । सचापितांप्राप्यमुदायुतोभवन्नचान्यनारीषुमनोदधेक्वचित् ॥ ९ ॥ सरःसुफुल्लेषुवनेषुचैव प्रसन्नचेता विजहारवीर्यवान् । तथासराजन्यवरो विजह्रिवा न यथोर्वशींप्राप्यपुरूरवाः ॥ १० ॥ वपुष्टमाचापिवरंपतिव्रताप्रतीतरूपासमवाप्यभूपतिम् । भावेनरामारमयाम्बभूव तं विहारकालेष्ववरोधसुन्दरी ११ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

करनेलगा।७।उसके मन्त्रियोंने शत्रुओं के नाश करनेवाले और सुवर्ण के कवच पहिननेवाले उस राजाको देख और काशी के राजाके समीप जा उसकी पुत्री वपुष्टमाको अपने राजा के लिये मांगा ।८। काशीनरेश ने वरको उत्तम जानकर उस जन्मेजयको अपनी पुत्री वपुष्टमा व्याहदी और जन्मेजय ने भी उस उत्तम स्त्रीको पाकर अन्यस्त्रीकी कभी इच्छानकी ।९। वह क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा जन्मेजय खिलेहुये कमल वाले तालाबों और बनोंमें उसस्त्री सहित ऐसे विहार करनेलगा जैसे पहिले राजा पुरूरवा उर्वशी से विहार करता था, पतिव्रता और प्रसिद्ध रूपवाली बड़ी सुन्दरी वपुष्टमा रनवास में उस उत्तमपति जन्मेजय को पाकर अनुराग से उसके चित्तको प्रसन्न रखने लगी ११ ॥

enemies in check, they went to the king of Benares to demand his daughter Vapushtama, in marriage for him. The king of Benares, finding in him a fit spouse for his daughter gave her to the Kaurav king with due rites. Janmejaya was very happy with that bride and did not seek another. He passed many a pleasant day with her, on river excursions and amidst woods and flower gardens, like Pururava of old in the company of Urvasi, the apsara. The beautiful Vapushtama also was as devoted to her lord as she was fair and having gained a desirable husband, she pleased him by her affection during their pleasant life. 11.

सौति रुवाच ॥ एतस्मिन्नेवकालेतु जरत्कारुर्महातपाः । चचारपृथिवींकृत्स्नां यत्रसायंगृहोमुनिः ॥ १ ॥ चरन्दीक्षांमहातेजा दुश्चरामकृतात्मभिः । तीर्थेष्वाप्लुवनं कृत्वा पुण्येषुविचचारह ॥ २ ॥ वायुभक्षो निराहारः शुष्यन्नहरहर्मुनिः । सददर्श पितॄन्गर्ते लम्बमानानधोमुखान् ॥ ३ ॥ एकतन्त्ववशिष्टं वै वीरणस्तम्बमाश्रितान तंतन्तुंचशनैराखुमाददानंबिलेशयम् ॥ ४ ॥ निराहारान्कृशान्दीनान् गर्त्ते स्वत्राण मिच्छतः । उपसृत्यसतान्दीनान दीनरूपोऽभ्यभाषत ॥ ५ ॥ केभवन्तोऽवलम्बन्ते वीरणस्तम्बमाश्रिताः । दुर्बलंखादितैर्मूलैराखुनाबिलवासिना ॥ ६ ॥ वीरणस्तम्बकेमूलं यदप्येकमिहस्थितम् । तदप्ययंशनैराखुरादत्तेदशनै शितैः ॥ ७ ॥ छेत्स्यते

अध्याय ॥ ४५ ॥

उग्रश्रवा बोले ! इसी समय में बड़ा तपस्वी और जहां शाम होवे वहीं रहने वाला जरत्कारु सम्पूर्ण पृथ्वीपर ।१। उस नियम को लियेहुए जो अजितेन्द्रिय पुरुषोंसे दुष्करहै पुण्य तीर्थों में स्नान करता हुआ फिरने लगा वह वायु का भक्षण कर निराहार अपने शरीर को सुखाता था उस मुनि ने एक बड़े गहरे गढे में नीचे को मुँह कियेहुए लटकते अपने पितरों को देखा ।३। जो घास के एक तिनकेका आश्रय कियेहुएथे जिस को चूहे काटरहे थे ।४। निराहार होने से दुर्बल और दीन दुःखी जो उस गढे में अपने रक्षक की इच्छा कररहे थे उनके समीप जाकर दुःखित होकर उसने कहा ।५। कि तुम कौन हो जो इस गढे में इस घास के सहारे से लटकरहे हो जिसका डंठल चूहे के खाने से बहुत कमजोर हो गया है ।६। और इसका जो एक तन्तु शेष रहगया है उसको भी यह चूहा हौले २ अपने तीक्ष्ण दांतों से काटरहा है ।७। उस के किञ्चित होने से यह चूहा अति शीघ्र

CHAPTER XLV

Meanwhile, the great ascetic Jaratkaru wandered over the whole earth, making the place where evening fell his home for the night and during his career he practiced many vows unbearable by the immature. He bathed in many holy rivers, for day he had simple air for food, was free from the desire of worldly enjoyments and emaciated his body. He saw one day his ancestors, hanging, head downward, by a thin grass rope which was gradully being nibbled by a rat living in that pit. They were pitiable lean for want of food and longed for freedom. Jaratkaru asked them, "Why are you hanging by this grass rope, which is almost entirely devoured by rats living in this pit? The little that remains of the rope will soon be eaten away and you will undoubtedly

ऽल्पा वशिष्ठत्वादेतदप्यचिरादिव । ततस्तुपतितारोऽत्र गर्त्ते व्यक्तमधोमुखाः ॥८॥ तस्यमेदुःखमुत्पन्नं दृष्ट्वा युष्मानधोमुखान् । कृच्छ्रमापदमापन्नान् प्रियंकिंकरवाणिवः ॥ ९ ॥ तपसोऽस्यचतुर्थेन तृतीयेनाथवापुनः । अर्धेनवापि निस्तर्त्तुमापदं ब्रूतमाचिरम् ॥ १० ॥ अथवापिसमग्रेण तरन्तुतपसामम । भवन्तःसर्वएवेह काममेवं विधीयताम् ॥ ११ ॥ पितरऊचुः ॥ वृद्धोभवान् ब्रह्मचारी योनस्त्रातुमिहेच्छसि । नतुविप्राग्र्यतपसा शक्यतेतद्व्यपोहितम् ॥ १२ ॥ अस्तिनस्तातपसः फलं प्रवदतांवर सन्तानप्रक्षयाद्ब्रह्मन् पतामनिरयेऽशुचौ ॥ १३ ॥ सन्तानंहिपरोधर्म एवमाहपितामहः । लम्बतामिहनस्तात नज्ञानंप्रतिभातिवै ॥ १४ ॥ येनत्वांनाभिजानीमो लोके विख्यातपौरुषम् । वृद्धोभवान्महाभागो योनः शोच्यान सुदुःखितान् ॥ १५ ॥ शोचतेचैवकारुण्याच्छृणु येवैवयंद्विज । यायावरानाम वयमृषयः संशितव्रता ॥१६॥

काटेगा और तुम इस गढे में निःसंदेह गिरोगे तुमको नीचे मुँह किये और बड़ी कठिन आपत्ति में देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है सो मैं तुम्हारा क्या प्रिय करूं मेरी तपस्या के चौथे या तीसरे या आधे भाग से भी यदि तुम पार होजाओतो विलम्ब मत करो १० अथवा मेरी सम्पूर्ण तपस्या से ही तरते होतो कहो मैं सब तपस्या तुमको देता हूं ११ पितरबोले जो तू वूढा ब्रह्मचारी हमारी रक्षा करना चाहता है हे ब्राह्मण तपस्या से यह हमारा दुःख दूर नहीं होसकता । १२ । हे तात हमारीभी तपस्याका कियाहुआ बहुतसा फलहै हम केवल सन्तानके क्षयहोजाने से इस अपवित्र नरक में गिराये जाते हैं क्योंकि ब्रह्मा ने कहाहै कि सन्तानकाहोना बड़ाभारी धर्म है और इसमें लटकतेहुए हमारा ज्ञान नष्टहोगया है । १४ । जिससे संसारमें प्रसिद्ध पुरुषार्थी तपस्वी को हम नहींजानते जोकि बड़े भागवाला वृद्ध हमारा सोचकररहाहै और हे ब्राह्मण जिसका तू दयासे सोच करताहै उनकाहाल हम तुझसे कहते हैं तू श्रवण कर हम उत्तम व्रतों के रखनेवाले याया

fall into the pit head downward. I feel pity on your calamity. Can I help you in any way? Tell me if a fourth, third, or even half of my asceticism can secure your freedom. I will part with my whole if I can help to relieve you." And they answered, "Venerable ascetic, you wish to do us good! Know then that even the whole of your asceticism can do us no good. Child, we too, have practised asceticism. It is only for want of children that we are going down to the bottomless perdition. Brahma, himself, says that a son is a great blessing. With our heads downward our ideas are not clear therefore, we do not recognise you although you are well known to the world. You must be venerable and of good fortune as you feel pity on our great affliction. We ard rishis of Yayavar race, of rigid vows. But for want of child-

लोकात् पुण्यादिहभ्रष्टाः सन्तानप्रक्षयान्मुने । प्रनष्टंनस्तपस्तीव्रं नहिनस्तन्तुरास्तिवै ॥ १७ ॥ अस्तित्वेकोऽद्यनस्तन्तुः सोऽपिनास्तियथातथा । मन्दभाग्योऽल्पभाग्यानां तपएकंसमास्थितः ॥ १८ ॥ जरत्कारुरितिख्यातो वेदवेदांगपारगः । नियतात्माम हात्माच सुव्रतःसुमहातपाः ॥ १९ ॥ तेनस्मतपसोलोभात् कृच्छ्रमापादिता वयम् । नतस्यभार्य्यापुत्रोवा बान्धवोवास्तिकश्चन ॥ २० ॥ तस्माल्लम्बामहेगर्त्ते नष्टसंज्ञाह्य नाथवत् । सवक्तव्यस्त्वयादृष्टो ह्यस्माकंनाथवत्तया ॥ २१ ॥ पितरस्तेऽवलम्बन्ते गर्त्ते दीनाह्यधोमुखाः । साधुदारान्कुरुष्वेति प्रजामुत्पादयेतिच ॥ २२ ॥ कुलतन्तु र्हिनः शिष्टस्त्वमेवैकस्तपोधन । यस्त्वंपश्यसिनोब्रह्मन् वीरणस्तम्बमाश्रितान् ॥२३॥ एषोऽस्माकंकुलस्तम्बआस्ते स्वकुलवर्द्धनः । यानिपश्यसिवै ब्रह्मन्मूलानीहास्यवीरु धः ॥ २४ ॥ एतेनस्तन्तवस्तात कालेनपरिभाक्षिताः । यत्त्वेतत् पश्यसि ब्रह्मन्मूलम

वर नाम ऋषि हैं । १६ । और हेमुनि पुण्यलोकसे सन्तान नष्टहोने के कारण हम यहां गिराये गये हैं और आगे को सन्तान नहोने से हमारा बड़ातीव्र तप नष्टहोगयाहै ।१७। एक हमारे वंशका चलानेवाला पुत्रहै हम मन्दभागियोंका वह मन्दभागी जैसाहुआ वैसा न हुआ बराबर है क्योंकि वह तपस्या मेंही लगाहुआहै । १८ । वेद और वेदाङ्गों का जाननेवाला जितेन्द्रिय महात्मा उत्तमव्रतों का रखनेवाला बड़ा तेजस्वी जोकि जरत्कारु नाम से प्रसिद्धहै । १९ । उसने हमको तपस्या के लोभ से इस नरक में डालाहै क्योंकि वह पुत्र स्त्री भाई आदि से हीन है । २० । इसीकारण नष्ट ज्ञान अनाथकी समान हम इस गढेमें लटकरहे हैं हे ब्राह्मण कहीं तुमको जरत्कारु मिलेतो दयाकरके हमारा हाल कहना और कहना कि तेरेपिता गढ़ेमें नीचेको मुँह कियेहुए लटक रहे हैं इसकारण तू विवाहकरके सन्तान उत्पन्न कर । २२ । हमारा एक तार जो कुलको बढ़ानेवाला शेष है हे ब्राह्मण तू हमको एक घास के तिनके में लटकता देखरहाहै । २३ । यही हमारा

ren we have fallen down in such bad state. Our severe penances have been destroyed. We have yet a thread left. It is single though. But his existence and non-existence are both equal. Unfortunate as we are we have yet a lonely thread, named Jaratkaru, who disregarding the Vedas relies on asceticism alone. Having his passions under complete control, ambitious, vow observing and deeply engaged in ascetic penances, he has reduced us to this deplorable state. He has neither wife nor children or kinsmen on earth and we are having thus like those who have none to care for. If you happen to meet him, please tell him that his ancesters are hanging head downward in a pit and will remain so until he marries and begets children. He is the last of his race. The cord of *Viran* root, representing our race, shows its weakness. The threads

स्यार्द्धभक्षितम् ॥ २५ ॥ यत्रलम्बामहे गर्त्ते सोऽप्येकस्तपआस्थितः। यमाखुंपश्यासि ब्रह्मन् कालएषमहाबलः ॥ २६ ॥ सतंतपोरतंमन्दं शनैःक्षपयतेतुदन्। जरत्कारुंतपो लुब्धं मन्दात्मानमचेतसम् ॥ २७ ॥ नहितस्तत्तपस्तस्य तारयिष्यतिसत्तम। छिन्न मूलान् परिभ्रष्टान् कालोपहतचेतसः ॥ २८ ॥ अधःप्रतिष्ठान् पश्यास्मान् यथादुष्कृतिनस्तथा। अस्मासु पतितेष्वत्र सहसर्वैःसबान्धवैः ॥२९ ॥ छिन्नःकालेनसोऽप्यत्र गन्तावैःनरकंततः। तपोवाप्यथवायज्ञो यच्चान्यत् पावनंमहत् ॥ ३० ॥ तत् सर्वमपरं तात न सन्तत्यासमंमतम्। सतातदृष्ट्वाब्रूयास्तं जरत्कारुंतपोधनम् ॥ ३१ ॥ यथादृष्टमिदंवात्र त्वयाख्येमशेषतः। यथादारान्प्रकुर्य्यात्स पुत्रानुत्पादयेद्यथा ॥ ३२ ॥ तथाब्रह्मंस्त्वयावाच्यः सोऽस्माकंनाथवत्तया। बान्धवानां हितस्येह यथाचात्मकुलं

कुल है और जो इसकी जड़ें हैं उनको हेतात कालरूप चूहे के खाये जाते हैं। २५। और जिसके सहारेसे हम इसमें लटकरहे हैं वह हमारा पुत्र जरत्कारु है जो तपस्या में निमग्नहै मानो वही एक तार है और चूहा जिसको तू देखताहै वह बड़े बलवाला कालहै। २६। वह कालरूपी चूहा तपस्या में लगेहुए मन्द बुद्धि और तपस्या के लोभयुक्त और विचार रहित पाषाण के सदृश उस जरत्कारु को काटरहाहै। २७। और हे श्रेष्ठब्राह्मण उसकी तपस्या हमको नहीं तारेगी जिनकी जड़ कटगई और काल जिनका ज्ञान नष्टहो गया पापियोंकीसमान अधोगति को जाते हुए हमको देख और हमारे सम्पूर्ण बान्धवों सहित नरक में जानेपर काल से खायाहुआ यहभी नरक को जावेगा तप यज्ञ या और कुछ पवित्र कर्म यह सब सन्तानकी बराबर नहीं है सो हे तात हमको ऐसा देखकर हमारे पुत्र जरत्कारुसे हमारी दशा यथार्थ रीति से कह दे। ३१। जैसा तूने यहां देखा है सब वार्त्ता कहनी योग्यहै और जिसप्रकार वह विवाहकर पुत्रोंको उत्पन्न करे हेब्राह्मण

of the cord eaten away by the rat represent ourselves who have been up by time. The half eaten root, that thou seest eaten and by which we are hanging in the hole, is he who has relied upon asceticism alone. The rat which thou seest is Time of infinite strength, who is gradually weakening the wretch Jaratkaru ambitious to obtain high rank among ascetics but wanting in kindness. His asceticism can not avail us. Behold us, our roots broken, cast down from superior rank, made unconcious bp Time and going downward like sinful wretches. Even he, being eaten up by Time, shall go down with us in to perdition. O child, asceticism, sacrifice and other holy acts cannot avail us and are inferior to a son in position. Tell Jaratkaru the ascetic, what thou hast seen here. Tell him all that he may be induced to take a wife and beget children. But let us know

तथा ॥ ३३ ॥ कस्त्वबन्धुमिवास्माकमनुशोचासि सत्तम । श्रोतुमिच्छाम सर्वेषां को भवानिहनिष्ठति ॥ ३४ ॥ इत्यादिपर्वण्यास्तीके पंचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

सौतिरुवाच। एतच्छ्रुत्वाजरत्कारुर्भृशं शोकपरायणः । उवाचतान् पितॄन् दुःखाद्बाष्पसन्दिग्धया गिरा ॥ १ ॥ जरत्कारुरुवाच । गमपूर्वेभवन्तोवै पितरःसपितामहाः तद्ब्रूतयन्मयाकार्य्यं भवतां प्रियकाम्यया ॥ २ ॥ अहमेवजरत्कारुः किल्विषी भवतां सुतः। तेदण्डंधारयतमे दुष्कृतेरकृतात्मना ॥ ३ ॥ पितर ऊचुः । पुत्रदिष्ट्यासिसंप्राप्त इमंदेशंयदृच्छया । किमर्थंचत्वया ब्रह्मन्नकृतोदारसंग्रहः ॥ ४ ॥ जरत्कारुरुवाच । ममायंपितरो नित्यं हृद्यर्थःपरिवर्त्तते । ऊर्द्धरेताः शरीरंवै प्रापयेयममुत्रवै ॥५॥ नदारान् वै करिष्येऽहमितिमे भावितंमनः । एवंदृष्ट्वातुभवतः शकुन्तानिवलम्बतः ॥ ६ ॥

हमपर दयाकरके वह वचन हमारे पुत्र से कहने चाहिये तू हमारे वान्धवों या कुल के समान सोच करता है इसप्रकार हमारा सोच करनेवाला तू कौनहै हम सुननाचाहतेहैं ३४

अध्याय ४६ ॥

उग्रश्रवा बोले ! यह सुनकर अत्यन्त शोकमें भराहुआ जरत्कारू दुःखसे उत्पन्नहुए आंसुओं से गद्गद् होकर अपने पितरों से बोला मेरे आप पितर हैं कहो तुम्हारी प्रीति के वास्ते क्या कामकरना योग्य है । २ । तुम्हारा पुत्र पाप युक्त मैंही जरत्कारूहूं और बुद्धिहीन मुझदुष्ट आकृति वालेको आप दण्डदेवें ।३। पितरबोले हे पुत्र हमको बड़ा हर्ष है कि तू अकस्मात इस देशमें आगया और हेब्राह्मण तूने विवाह क्यों नहीं किया ? ।४। जरत्कारू बोला हे पितरो मेरे हृदय में यह वार्ता सदा है कि अखण्डित ब्रह्मचर्ययुक्त इसशरीरको परलोक में लेजाऊं इसकारण बिवाह न करने का मुझको प्रणरहा और अब

---

whether you are his friend or our kinsman to grieve thus for us like a friend. We wish to know who you are.

CHAPTER XLVI

Having heard all this, Jaratkaru was very sorry and in words broken by tears of sorrow he said to his ancestors;—" You are my own ancestors. Please let me know how I can serve you. I am that sinful son of yours, Jaratkaru ! Worthless as I am you may punish me for my crime.." The ancesters replied, " Good fortune and thy rambles have brought you here, child. Pray tell us know the reason of your not marrying. Jaratkaru said, " I had made up my mind to remain single to the end of my life and to abstain from

मया निवर्त्तिता बुद्धिर्ब्रह्मचर्य्यात् पितामहाः । करिष्येवः प्रियंकामं निवेक्ष्येऽहमसंशयम् ॥ ७ ॥ सनाम्नीं यद्यहं कन्यामुपलप्स्ये कदाचन । भविष्यतिच या काचिद्भैक्षवत् स्वयमुद्यता ॥ ८ ॥ प्रतिग्रहीता तामस्मि न भरेयञ्च यामहम् । एवंविधमहं कुर्य्यां निवेशं प्राप्नुयांयदि ॥ ९ ॥ अन्यथा नकरिष्येहं सत्यमेतत् पितामहाः । तत्र चोत्पत्स्यते जन्तुर्भवतां तारणायवै शाश्वताश्चाव्ययाश्चैव तिष्ठन्तु पितरो मम ॥ १० ॥ सौतिरुवाच । एवमुक्त्वातु सपितॄंश्चचार पृथिवींमुनिः । नचस्मलभते भार्य्यां वृद्धोऽयमिति शौनक ॥ ११ ॥ यदा निर्वेदमापन्नः पितृभिश्चोदितस्तथा । तदारण्यं स गत्वोच्चैश्चुक्रोश भृशदुःखित ॥ १२ ॥ सत्वरण्यगतःप्राज्ञः पितॄणांहितकाम्यया । उवाच कन्यां याचामि तिस्रो वाचः शनैरिमाः ॥ १३ ॥ यानि भूतानि सन्तीह स्थावराणि चराणिच । अन्तर्हितानि वा यानि तानि शृण्वन्तु मेवचः ॥ १४ ॥

पक्षियों की समान तुमको लटकता देख कर हे पितरो मेरी बुद्धि ब्रह्मचर्य से हटगई और तुम्हारा कार्य विवाह कर के करूंगा ।७। यदि अपने नाम वाली कन्या को कभी मैं पाऊंगा और जो वह कन्या भिक्षाकी सदृश प्राप्तहोगी और जिसका मैं पालन न करूं उस कन्याको मैं ग्रहण करूंगा हे पितरो इस प्रकार जो मुझ को कन्या प्राप्तहुई तौ मैं विवाह करूंगा अन्यथा नहीं ।९। उस में जो उत्पन्न होगा वह तुम्हारे तारने के लिये होगा और फिर तुम सदा सुखसे निवास करो १० उग्रश्रवा बोले उस मुनिने पितरों से यह कह फिर वहां से गमन किया और हे शौनक वह वृद्धथा इस कारण उसको कहीं भार्या नहीं मिली ११ जब भार्या न मिली तब वह उदास होकर पितरों की आज्ञा से प्रेरित जङ्गल में जाकर अत्यन्त दुःखितहो ऊंचे स्वर से बोला १२ वह बुद्धिमान अपने पितरोंका हित चाहता हुआ जङ्गल में जाकर हौले २ तीनवार कन्याको मांगताहूं यह वाणी बोला ॥१३॥ जो स्थावर या जंगम जो छिपे हुए या प्रकट जीवहैं वह मेरे इस वचन को सुनें ॥१४॥

a woman for ever, but having seen you, my ancestors, hanging like birds, I have broken my vow of celibacy and shall act according to your desire. I promise to marry if I can get a wife of my own name. I shall accept the woman offered to me as alms and whom I shall not have to maintain. I shall marry if I can get such a one and not otherwise. I have spoken the truth. The offspring will save you from hell and will rescue you for ever from such danger." Having said so, Jaratkaru began to wander over the earth. He was very sorry for his ill success but did not leave searching for the bride. And going into the forest he wept bitterly out of grief. With a desire to do his ancestors good he said to himself, "I shall beg thrice loudly for a bride." And he said, "Inmates of this place! whether fixed, moving or invisible, hear my words! My ancestors, aff

उग्रे तपसि वर्त्तन्ते पितरश्चोदयन्ति माम् । निविशस्वेति दुःखार्त्ताः सन्तानस्यचिकीर्षया ॥ १५ ॥ निवेशायाखिलां भूमिं कन्याभैक्षं चरामिभोः । दरिद्रो दुःखशीलश्च पितृभिः सन्नियोजितः ॥ १६ ॥ यस्य कन्यास्ति भूतस्य ये मयेह प्रकीर्त्तिताः । तेमेकन्यांप्रयच्छन्तु चरतः सर्वतो दिशम् ॥१७॥ ममकन्या सनाम्नी या भैक्ष्यवच्चोदिता भवेत् । भरेयञ्चैव यां नाहं तां मे कन्यां प्रयच्छत ॥ १८ ॥ ततस्ते पन्नगाये वै जरत्कारौ समाहिताः । तामादाय प्रवृत्तिं ते वासुकेः प्रत्यवेदयन् ॥ १९ ॥ तेषां श्रुत्वास नागेन्द्रस्तां कन्यां समलंकृताम् । प्रगृह्यारण्यमगमत् समीपं तस्य पन्नगः ॥ २० ॥ तत्रतां भैक्ष्यवत् कन्यां प्रादात्तस्मै महात्मने । नागेन्द्रो वासुकिर्ब्रह्मन्न सतां प्रत्यगृह्णत ॥ २१ ॥ असनामेति वै मत्वा भरणे चाविचारिते । मोक्षभावे स्थित

उग्रतपके करने वाले मेरे पितर दुःखसे व्याकुलहो सन्तान की इच्छा से मुझको विवाह करने को कहते हैं और पितरों से आज्ञा दिया हुआ दरिद्री दुःखयुक्त विवाहके लिये सम्पूर्ण पृथ्वी में फिरताहुआ कन्या की भिक्षा मांगता हूँ ॥ १६ ॥ जिन प्राणियों से मैंने कहाहै जिस किसी के कन्या हो वह मुझ को कन्यारूप भिक्षादे ॥१७॥ जो कन्या मेरे नाम वालीहो और भिक्षामें दीजावे और जिसका मैं पालन न करूं उसको मुझेदो॥१८॥ इस के उपरान्त जिन सर्पों को वासुकि ने इस कार्य को भेजाथा वह इस खबर को पाकर वासुकि के समीपजा कहने लगे वासुकि उनके वचन को सुन और अलंकार युक्त उस कन्या को लेकर उस ब्राह्मण के समीप जंगल में गया । २० । हे ब्रह्मन् शौनक सर्पोंके स्वामी वासुकिने वहांजाकर वह कन्या उस महात्मा को भिक्षाकी समानदी और उसने अपने नामवाली न जानकर और पालन के विचार के नहोने से और बिवाहका करना

ted with grief, have desired me, engaged as I was in severe penances to marry for the sake of a son. I am roaming therefore, in poverty and sorrow, all over the world to marry a maiden that I may get as alms. Is there among you any one who may bestow his daughter on me, a wandering man? The bride must be of my name, given me as alms and whom I may not have to maintain" Having heard this, the snakes who had been appointed by Vasuki to be on the look out for Jaratkaru, brought him the tidings. The king of snakes forthwith took the maiden, decked with ornaments, to the *Rishi* in the forest and offered her as alms to the high minded *Rishi*. But he did not at once accept her as he did not know whether the maiden was of the same name with him and the question of her maintenance was not

श्चापि द्वन्द्वीभूतः परिग्रहे ॥ २२ ॥ ततो नाम स कन्यायाः पप्रच्छ भृगुनन्दन । वासुकिं भरणं चास्या न कुर्य्यामित्युवाचह ॥ २३ ॥

इत्यादिपर्व्वणि आस्तीके षट् चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

सौतिरुवाच। वासुकिस्त्वब्रवीद्वाक्यं जरत्कारुमृषिं तदा। सनाम्नी तव कन्येयं स्वसा मे तमसान्विता ॥ १ ॥ भरिष्यामिच ते भार्य्यां प्रतीच्छेमां द्विजोत्तम। रक्षणञ्च करिष्येऽस्याः सर्वशक्त्या तपोधन। त्वदर्थं रक्ष्यते चैषा मया मुनिवरोत्तम ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ नभरिष्येऽहमेतां वै एषमे समयः कृतः। अप्रियञ्च न कर्त्तव्यं कृते चैनां त्यजाम्यहम् ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच। प्रतिश्रुतेतु नागेन भरिष्ये भगि

दुःखका कारण है इत्यादि बातोंको सोचकर उसको ग्रहण न किया।२२। तिसके उपरान्त हे शौनक उस जरत्कारु ने उस का नाम पूछा और वासुकि से कहा मैं इसका पालन न करूंगा। २३।

अध्याय। ४७।

उग्रश्रवा बोले तब वासुकि ने कहा यह मेरी बहिन तपस्विनी जरत्कारु नाम कीहै। १। हे ब्राह्मण मैं इस तेरी भार्या को पालन करूंगा हे तपोधन सब प्रकार मैं इसकी रक्षा करूंगा हे मुनिवर यह कन्या तेरेही लिये रक्खी है। २। जरत्कारु बोला इसका मैं पालन न करूंगा यह मेरा नियम है और मेरी अप्रीति इसको कभी न करनी ऐसा होने पर इसको त्याग दूंगा। ३। उग्रश्रवा बोले। अपनी बहिन का मैं पालन

yet settled. So he reflected for a few moments and was in hesitation to accept her. He then questioned Vasuki about her name and said to him, " I shall not maintain her. "

CHAPTER XLVII

Vasuki made the following reply to the *rishi Jaratkarn*, " O best of *Brahmans*, this maiden is of the same name with thee. She is my sister, and an ascetic, and I shall maintain her. You may accept her. O ascetic, I shall protect her with all my power. She has been brought up to become thy bride. " *Jaratkarn* said, " Then it is settled between us that I shall not be asked to maintain her and she

नीमिति । जरत्कारुस्तदा वेश्म भुजगस्य जगामह ॥ ४ ॥ तत्र मन्त्रविदां श्रेष्ठस्तपो वृद्धो महाव्रतः । जग्राह पाणिं धर्मात्मा विधिमन्त्रैः पुरस्कृतम् ॥ ५ ॥ ततो वासगृहं रम्यं पन्नगेन्द्रस्य सम्मतम् । जगाम भार्य्यामादाय स्तूयमानो महर्षिभिः ॥ ६ ॥ शयनं तत्र संक्लृप्तं स्पर्ध्यास्तरणसंवृतम् । तत्र भार्य्यासहायो वै जरत्कारुरुवासह ॥ ७ ॥ स तत्र समयं चक्रेभार्य्यया सह सत्तमः । विप्रियं मे न कर्त्तव्यं नचवाच्यं कदाचन ॥८॥ त्यजेयं विप्रियेचत्वां कृते वासञ्चते गृहे । एतद्गृहाण वचनं मया यत्स मुदीरितम् ॥ ९ ॥ ततःपरमसम्बिग्ना स्वसा नागपतेस्तदा । अतिदुःखान्विता वाक्यं तमुवाचैवमस्त्विति ॥१०॥ तथैवसा च भर्त्तारं दुःखशीलमुपाचरत् । उपायैःश्वेतकाकीयैः प्रियकामा यशस्विनी ॥ ११ ॥ ऋतुकाले ततःस्नाताकदाचिद्वासुकेःस्वसा ।

करूंगा ऐसी वासुकिकी प्रतिज्ञा करने पर जरत्कारु उस के साथ उस के घरको गया । ४ । वहां जाकर वेदों के जानने वालों में श्रेष्ठ तपोवृद्ध बड़े व्रतोंवाला । ५ । सर्पोंके राजा वासुकि की सम्मति के अनुसार मनोहर निवास गृह में ऋषियों से स्तुति किया हुआ जरत्कारु स्त्री सहित चलागया उस मकान में बड़े श्रेष्ठ नर्म बिछौने शय्यों पर बिछे थे उस में स्त्री सहित रहने लगा । ७ । जरत्कारु ने उस घरमें जाकर अपनी स्त्री के साथ यह नियम किया कि तू मेरा अप्रिय न करना और न मुझको अप्रिय वचन कहना ।८। और जिसदिन तूने ऐसा किया उसीदिन मैं इसतेरे घरके निवास और तुझको छोड़दूंगा इस मेरे कहेहुए वचनको गृहणकर नागोंके पति वासुकिकी बहिन दुःख से व्याकुल होकर बोली कि ऐसेही होगा उसी प्रकार वह अपने पतिका सेवन करने लगी वह अपने पतिको प्रसन्न रखनेकी इच्छा करनेवाली बड़े यशवाली वासुकिकी बहिन कुत्ते और बगुलेके जो आचरणहैं उनउपायों

shall never act against my will. I shall leave her when she acts against my wishes." when the snake had promised to maintain her *Jaratkarn* Went to his house and the learned *Brahman*, observant of rigid vows, virtuous and veteran ascetic, joined hands with her according to *Vedic* rites. The great *Rishi* then took the bride to the room furnished for them with great care. The chamber contained a bed covered with valuable bed cloth. *Jaratkarn* lived there with his wife. The *rishi* then enjoined his wife never to do or say aught that he did not like for he should leave her whenever she did such a thing. the king's sister in great anxiety and grief accepted the condition. Intent upon doing good to her kinsmen and of

भर्त्तारं वै यथान्यायमुपतस्थे महामुनिम् ॥ १२ ॥ तत्र तस्याः समभवद्गर्भो ज्वलन
सन्निभः । अतीवतेजसा युक्तो वैश्वानरसमद्युतिः ॥ १३ ॥ शुक्लपक्षे यथा सोमो
व्यवर्द्धत तथैवसः । ततःकतिपयाहस्य जरत्कारुर्महायशाः ॥१४॥ उत्सङ्गेऽस्याःशिरः
कृत्वा सुष्वाप परिखिन्नवत् । तस्मिंश्च सुप्ते विप्रेन्द्र सवितास्तमियाद्गिरिम् ॥ १५ ॥
अन्हः परिक्षये ब्रह्मंस्ततः साचिन्तयत्तदा । वासुकेर्भगिनीभीता धर्मलोपान्
मनस्विनी ॥ १६ ॥ किन्नुमेसुकृतं भूयाद्भर्त्तुरुत्थापनं नवा । दुःखशीलोहिधर्मात्मा
कथं नास्यपराध्नुयाम् ॥१७॥ कोपोवाधर्मशीलस्य धर्मलोपोऽथवापुनः । धर्मलोपो
गरीयान् वै स्यादित्यत्राकरोन्मतिम् ॥ १८ ॥ उत्थापयिष्ये यद्यनं ध्रुवंकोपंकरिष्य-
ति । धर्मलोपोभवेदस्य सन्ध्यातिक्रमणेध्रुवम् ॥ १९ ॥ इतिनिश्चित्यमनसा जरत्कारु

से अपने स्वामीका सेवन करने लगी इसके उपरान्त ऋतुकाल के आनेपर वह वासुकि
की बहिन स्नानकर योग्यतासे महामुनि पति के पास गई और वहां अग्नि के समान
तेजस्वी और बड़ा प्रतापशाली और बड़ा प्रतापी गर्भ उसको स्थितहुआ ।१३।शुक्लपक्षमें
जिसप्रकार चन्द्रमा बढ़ता है उसीप्रकार वह गर्भ बढ़ने लगा तिसके उपरान्त बड़े यशवाला
जरत्कारु अपनी स्त्री की गोद में शिर रखकर थकेहुएकी समान सोगया उसके सोनेपर
सूर्य अस्त होगया ।१५। हे ब्रह्मन् शौनक ! तिस के उपरान्त दिनके क्षयहोने पर धर्म के
लोपसे डरीहुई और विदुषी उस वासुकि की बहिन ने विचार किया ।१६। किस प्रकार
मेरा शुभ होगा पति को उठाऊं या न उठाऊं और दुःख देनेकेस्वभाववाला यह धर्मात्मा
है कैसे इसका अपराध मुझ से न बने इस धर्मात्माको क्रोध हो या धर्म का लोप इन
दोनों में धर्मका लोप बड़ा पाप है यह बुद्धि उसने निश्चयकी । १८ । यदि इसको
उठातीहूं तो यह अवश्य क्रोध करेगा और सन्ध्या समय के बीत जाने पर निश्चय धर्म
का नाश होगा वासुकिकी बहिन जरत्कारु ने यह बिचारकर उस तपस्या से प्रकाशमान

unsullied fame, she began to attend upon her lord with the wakefulness of a dog, the timidity of the deer and sagacity of the crow. And the sister of Vasuki, one day on her season, approached her lord, the great Muni, after being purified according to custom. She became pregnant and the child within her was like a luminary, of excessive energy and resplendent as fire. It grew like the moon in the lighted fortnight. A few days after this, the famous Jaratkaru was one day sleeping—his head on her knee, like one fatigued, and as he was sleeping, the sun began to set in the west. The good sister of Vasuki became very anxious for her husband losing his time for worship. She reflected upon the best course to be followed—whether to wake him or not. She said to herself, "He is both exacting and punctual in his religious duties. How can I so

र्भुजङ्गमा । तमृषिंदीप्ततपसं शयानमनलोपमम् ॥ २० ॥ उवाचेदंवचः श्लक्ष्णं ततो
मधुरभाषिणी । उत्तिष्ठत्वंमहाभाग सूर्य्योऽस्तमुपगच्छति ॥ २१ ॥ सन्ध्यामुपास्व
भगवन्नपः स्पृष्ट्वायतव्रतः । प्रादुष्कृताग्निहोत्रोऽयं मुहूर्त्तोरम्यदारुणः ॥२२॥ सन्ध्या
प्रवर्त्ततेचेयं पश्चिमायांदिशिप्रभो । एवमुक्तःसभगवान् जरत्कारुर्महातपाः ॥ २३ ॥
भार्य्यांप्रस्फुरमाणोष्ठ इदंवचनमब्रवीत् । अवमानःप्रयुक्तोऽयं त्वयाममभुजङ्गमे ।२४।
समीपेतेनवत्स्यामि गमिष्यामियथागतम् । शक्तिरस्तिनवामोरु मयिसुप्ते विभावसोः
॥ २५ ॥ अस्तंगन्तुंयथाकाल मितिमे हृदिवर्त्तते । नचाप्यवमतस्येह वासोरोचेतक-
स्यचित् ॥ २६ ॥ किंपुनर्धर्मशीलस्य ममवामद्विधस्यवा । एवमुक्ताजरत्कारुर्भर्त्रा
हृदयकम्पनम् ॥ २७ ॥ अब्रवीद्भगिनीतत्र वासुकेःसन्निवेशने । नावमानात्कृतवती
कृत्वाहंविप्रबोधनम् ॥ २८ ॥ धर्मलोपोनतेविप्र स्यादित्येतन्मया कृतम् । उवाचभा-

और अग्निकी समान तेजस्वी से यह शुभ बचन कहा वह मधुर भाषण करनेवाली बासु-किकी बहिनबोली कि हे महाभाग सूर्य अस्तहोगया है आपउठो हे भगवन् आचमन कर नियम से सन्ध्या करो प्रदीप्त अग्नि में हवनकरो और मनोहर और दारुण यह महूर्त है और हे स्वामिन् यह सन्ध्या समय प्रवृत्त है ऐसा कहने पर वहबड़ा तपस्वी जरत्कारु अपनी भार्या से यह वचनबोला हे वासुकिकी भगनी तूने यह मेरा अपमान किया ।२४। अब मैं तेरे समीप न रहकर अपने इच्छा के देशको चला जाऊंगा और हेवामोरु मेरेसोने पर सूर्य अस्ताचलको जानेकी शक्ति नहीं रखताथा यह मुझको निश्चय है और किसी कोभी अपमान के स्थान में रहना अच्छा नहीं लगता । २६ । मुझ से धर्मात्माको कैसे अच्छा लगसकता है वह वासुकिकी बहिन इस प्रकार पति के हृदयको कँपाने वाले वचन सुन उस स्थान में बैठी हुई बोली हे ब्राह्मण अपमान से मैंने आपको नहीं जगाया है । २८ । इस मेरे पतिका धर्म लोपै नहो यह समझ कर मैंने तुमको जगाया है ऐसा

act as not to offend him ? The alternatives are his anger and the loss of his virtue. The latter is the worser of the two. If I wake him he will be angry, but if the son sets he shall sustain the loss of his virtue." And having made up her mind at last, Jaratkaru, the sister of Vasuki, said to the rishi in a sweet voice, "Awake. The sun is setting. May fortune smile upon thee! Say your evening prayer after making ablution. The time for evening Hawan (worship of god by throwing incence into the fire) has come and night approaches." The illustrious ascetic, Jaratkaru, thus addressed said to his wife, his upper lip quivering in anger, "Thou hast insulted me, beautiful woman of Naga race. I shall leave thee to wander at will. The sun could not set, I believe, while I was sleeping. One should not stay in the place where one is not respected;

र्यामित्युक्तो जरत्कारुर्महातपाः ॥ २९ ॥ ऋषिः कोपसमाविष्टस्त्यक्तुकामो भुजंगमाम् । नमेवागनृतंप्राह गमिष्येऽहं भुजंगमे ॥ ३० ॥ समयोह्येषमेपूर्वं त्वयासह मिथः कृतः । सुखमस्म्युषितो भद्रे ब्रूयास्त्वं भ्रातरंशुभे ॥ ३१ ॥ इतोमयिगतेभीरु गतःसभगवानिति । त्वंचापिमयिनिष्क्रान्ते नशोकंकर्त्तुमर्हसि ॥ ३२ ॥ इत्युक्तासानवद्यांगी प्रत्युवाचमुनिंतदा । जरत्कारुं जरत्कारुश्चिन्ताशोकपरायणा ॥ ३३ ॥ वाष्पगद्गदया वाचा मुखेनपरिशुष्यता । कृतांजलिर्वरारोहा पर्य्यश्रुनयनाततः ॥ ३४ ॥ धैर्य्यमालम्ब्य वामोरूर्हृदयेनप्रवेपता । नमामर्हसिधर्मज्ञ परित्यक्तुमनागसम् ॥ ३५ ॥ धर्मे स्थितां स्थितोधर्मे सदाप्रियहितेरताम् । प्रदानेकारणंयच्च ममतुभ्यं द्विजोत्तम ॥३६॥ तदलब्धवतींमन्दां किंमांवक्ष्यतिवासुकिः । मातृशापाभिभूतानां ज्ञातीनां ममसत्तम ॥

कहने पर जरत्कारु अपनी स्त्री से बोला । २९ । क्रोधमें भराहुआ जो कि अपनी स्त्री को त्यागकरना चाहताथा बोला कि मेरी वाणी झूंठ नहीं होती और अब मैं तुझको त्याग कर जाऊंगा । ३० । मैंने तुझ से पहिले यह नियम कर लियाथा मैं तेरे यहां बहुत सुखसे रहा और तू अपने भाईसे मेरे चलेजाने पर यह कह कि वह ब्राह्मण गया औरभी मेरे जानेपर शोक न करना ऐसा कहने पर चिन्ता और शोक से भरीहुई वह वासुकि की बहिन जरत्कारु उस मुनिसे आंसुओं के बहने से गद्गद् कण्ठ युक्त और सूखे मुख से हाथ जोड़ कर । ३४ । हृदय कंपित धैर्य धारण करके वह उत्तम वासुकिकी बहिन बोली हे धर्मज्ञ निरपराधिनी मुझको छोड़ने के योग्य नहीं हो जोकि मैं धर्मस्थिति और आपकी हित चिन्तक हूं और आपभी धर्मज्ञ हैं और हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जिस कारण मुझको तुम्हें दिया वह प्रयोजनभी मुझ मन्द भागवाली से न प्राप्त हुआ अब मेरा भाई वासुकि मुझ से क्या कहेगा और माताके शापसे युक्त जो सर्प हैं उनको तुमसे मेरे सं-

far less should I, a virtuous man, or one like myself." Jaratkaru, the sister of Vasuki, thus addressed by her lord, began to tremble with fear and said to him, "I did not wake thee, O Brahman, by way of insult, but I have done it so that thy daily worship may not remain unperformed." The great rishi Jaratkaru, desirous of leaving his wife, replied, "I never speak a falsehood. I shall not therefore, stay here. Besides this was our mutual contracion. I had a happy time in thy company. Tell thy brother, fair one, when I am gone, that I have left thee. I desire you never to grieve for my sake when I am gone." Thus addressed the fair sister of Vasuki, of faultless features, in great anxiety and sorrow, having mustard all his courage and patience, spoke with a trembling heart to the Rishi Jaratkaru. With words obstructed with tears, her hands joined together in a supplicatory attitude, she said, "It is not proper for thee to leave me

॥ ३७ ॥ अपत्यमीप्सितं त्वत्तस्तच्च तावन्नदृश्यते । त्वत्तोह्यपत्यलाभेन ज्ञातीनांमे शिवं भवेत् ॥ ३८ ॥ संप्रयोगोभवेन्नायं मममोघस्त्वयाद्विज । ज्ञातीनां हितमिच्छन्ती भगवंस्त्वांप्रसादये ॥ ३९ ॥ इममव्यक्तरूपंमे गर्भमाधायसत्तम । कथंत्यक्त्वामहात्मा सन गन्तुमिच्छस्यनागसम् ॥ ४० ॥ एवमुक्तस्तुसमुनिर्भार्य्यां वचनमब्रवीत् । यद्युक्तमनरूपंच जरत्कारुं तपोधनः ॥ ४१ ॥ अस्त्ययंसुभगेगर्भस्तव वैश्वानरोपमः । ऋषिःपरमधर्मात्मा वेदवेदांगपारगः ॥४२॥ एवमुक्त्वासधर्मात्मा जरत्कारुर्महानृषिः उग्रायतपसेभूयो जगामकृतनिश्चयः ॥ ४३ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

तान होनेकी इच्छाथी सो वह कार्य मुझको अभी नहीं मालूम होता है और तुमसे जो सन्तान का मुझको लाभ होगा वह मेरे जातिके सर्पोंका कल्याणकारी है । ३८ । हे भगवन् अपने बान्धवोंकी हितकी इच्छा करतीहुई मैं तुम्हारे और अपने सम्बन्ध के सफल होनेकी इच्छा से प्रार्थना करती हूँ कि तुम प्रसन्न हो और हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जिस का कि निश्चय नहीं कि क्या होगा ऐसे गर्भको और निरपराधिनी मुझको छोड़ कर आप क्यों जाने की इच्छा करते हैं । ४० । इस प्रकार उस के वचन को सुनकर वह जरतकारु अपनी भार्या से बोला हे शुभगे मुझसे तेरे गर्भ स्थापन हुआ है वह बड़ा तपस्वी और तेजस्वी वेद और वेदांगों को जानने वाला ऋषि उत्पन्न होगा । ४२ । वह जरत्कारु धर्मात्मा महर्षिऐसा कह और तपस्याका निश्चयकर उग्रतप करने को चलागया ४३।

---

without fault. Thou art ever virtuous. I, too have followed the way of virtue, intent on the good of my kinsmen. The purposefor which I was given to thee is not yet accomplished. Unfortunate as I am, what shall Vasuki say to me? O excellent one, the offspring which my kinsmen, cursed by their mother, expected from thee, has not yet come forth. The welfare of my kinsmen depends on thy ofispring and in order that my connection with thee may not become fruitless I have asked this question of thee. O high souled Rishi why dost thou leave me without fault. My conception is yet indistinct." Thus addressed, the rishi made the following repy to his wife, "The child which thou will bring forth will be a virtuous rishi, like Agni and master of the Vedas and Vedangs." Having said so the great rishi Jaratkaru, went away to practice penances in their severest form.

सौतिरुवाच ॥ गतमात्रंतुभर्त्तारं जरत्कारुरवेदयत् । भ्रातुःसकाशमागत्ययथा तथ्यंतपोधन ॥ १ ॥ ततःसभुजगंश्रेष्ठः श्रुत्वासुमहदप्रियम् । उवाचभगिनींदीनांतदा दीनतरःस्वयम् ॥ २ ॥ वासुकिरुवाच ॥ जानासिभद्रेयत्कार्यं प्रदानेकारणंचयत् । पन्नगानांहितार्थाय पुत्रस्तेस्यात्ततोयदि ॥ ३ ॥ ससर्पसत्रात् किलनो मोक्षयिष्यति वीर्यवान् । एवंपितामह पूर्वं मुक्तवांस्तुसुरैःसह ॥ ४ ॥ अप्यस्तिगर्भःसुभगे तस्मा त्तेमुनिसत्तमात् । नचेच्छाम्यफलंतस्य दारकर्ममनीषिणः ॥ ५ ॥ कामश्चममनन्या-य्यं प्रष्टुंत्वांकार्यमीदृशम् । किन्तुकार्यगरीयस्त्वात्ततस्त्वाहमचूचुदम् ॥ ६ ॥ दुर्वा-र्यतांविदित्वाच भर्त्तुस्तेऽतितपस्विनः । नैनमन्वागमिष्यामि कदाचिद्धिशपेत्ससाम् । ॥ ७ ॥ आचक्ष्वभद्रेभर्त्तुस्त्वं सर्वमेवविचेष्टितम् । उद्धरस्वचशल्यंमे घोरंहृदि चिरस्थितम् ॥८॥ जरत्कारुस्ततोवाक्य मित्युक्त्वाप्रत्यभाषत । आश्वासयन्तीसंतप्तं वासुकिं

अध्याय ४८ ॥

उग्रश्रवाबोले, पतिके जातेही जरत्कारु ने अपनेभाई वासुकि के समीप जाकर यथार्थ रीति से पतिके जाने का हाल कहा वासुकि ने यह वचन सुनकर अत्यन्तदीनहोकर उस अपनी बहिन से कहा । २ । कि हेभद्रे तू जानती है जिसकारण इन ऋषि को मैंने तुझे दियाथा सर्पोंके हितके लिये इन को तुझे दियाथा जो तेरा पुत्रहोगा वह सर्पोंको सर्पयज्ञ से छुड़ावेगा और यही बार्ता पहिले देवताओं से ब्रह्माजीने कहीथी हेशुभगे ! उस श्रेष्ठ मुनि से क्या तुझे गर्भ हुआ, उस महात्माका बिवाहकरना निष्फलहो यह मैं नहींजानता हेभगनी तुझे छोटी बहिन से इसबातका पूछना योग्य नहीं है परन्तु कार्य के बड़ेहोनेसे मैंने ऐसा प्रश्नकिया और तेरे उसतपस्वी पतिके लौटाने को कठिन समझकर मैं नहीं जाऊं गा कदापि मुझको शापदेदेवे हेभद्रे तू अपने पतिकी सम्पूर्ण चेष्टाओंको कह और मेरे हृदय मेंसे उसघोर क्लेश को दूरकर । ८ । वह वासुकिकी बहिन जरत्कारु इसप्रकार

CHAPTER XLVIII.

Sauti said that as soon as her husband had left her, Jaratkaru went to her brother and told him all that had happened. The king having heard the heart-rending news, said to his miserable sister, "Thou knowest, my dear, the purpose for which thou wast given in marriage. His son, born in thee, shall save us all from the snake sacrifice. The Grand father said so in the midst of the gods. The welfare of the snakes depneds on your having a so. Has thy union with the rishi been fruitful? Are you in a way to become a mother? I hope that thy marriage with that rishi will not be fruitless. Truly it is not proper for me to question thee about such matters, but the importance of it compels me to do this. Knowing the obstinacy of thy husband, ever engaged in severe penances, I dare not fallow

पन्नगेश्वरम् ॥ ९ ॥ जरत्कारुरुवाच । पृष्टोमयापत्यहेतोः समहात्मामहातपाः। अस्ती
त्युत्तरमुद्दिश्य ममेदंगतवांश्चसः ॥ १० ॥ स्वैरेष्वपिनतेनाहं स्मरामिवितथंवचः । उ-
क्तपूर्वंकुतोराजन् सांपरायेसवक्ष्यति ॥ ११ ॥ नसन्तापस्त्वयाकार्य्यः कार्य्यंप्रतिभु-
जंगम । उत्पत्स्यतितवेपुत्रो ज्वलनार्कसमप्रभः ॥ १२ ॥ इत्युक्त्वासहिमां भ्रातर्गतो
भर्त्तातपोधनः । तस्माद्व्येतुपरंदुःखं तवेदंमनसिस्थितम् ॥ १३ ॥ सौतिरुवाच । एत
च्छ्रुत्वासनागेन्द्रो वासुकिःपरयामुदा । एवमस्त्वितितद्वाक्यं भगिन्याःप्रत्यगृह्णत १४।
सान्त्वमानार्थदानैश्च पूजयाचारुरूपया । सोदर्य्यांपूजयामास स्वसारंपन्नगोत्तमः ॥
॥ १५ ॥ ततःप्रववृधेगर्भो महातेजामहाप्रभः । यथासोमोद्विजश्रेष्ठः शुक्लपक्षोदितोदि
वि ॥ १६ ॥ अथकालेतुसाब्रह्मन् प्रजज्ञेभुजगस्वसा । कुमारंदेवगर्भाभं पितृमातृभ-

वासुकि के वचन को सुन उसके हृदय को आनन्द देती हुई बोली उस महात्मासे मैंने सन्तान के लिये पूछा था और वह मुझ से ऐसा कहकर चलागया हँसीके समयभी उस के झूठवचनबोलने का स्मरण नहीं है तो इस संकट में वह झूठ क्यों कहता और मुझसे कहा कि हेवासुकिकी बहिन तू अपने मन में संदेह न करना तेरा अग्निकी समान पुत्र होगा । १२ । हे भाई ऐसा मुझ से कह वह तपस्वी चलागया इसकारण तू अपने मन के दुःख को दूरकर । १३ । उग्रश्रवाबोले उसने इसप्रकार अपनी बहिन के वचन को अति प्रसन्नतासे सुनकर ऐसेहीहो कहकर उस अपनी बहिन के वचन को ग्रहण किया मधुरवचन और मान धन देना और बहुत प्रकार से वासुकि ने अपनी बहिनका सत्कार किया । १५ । जिसप्रकार शुक्लपक्ष का चन्द्रमा बढ़ता है उसीप्रकार वह तेजस्वी गर्भ बढ़नेलगा । १६ । इस के उपरांत समयके आनेपर वासुकिकी बहिनके देवताओं के पुत्र

him lest he should curse me. Tell me in detail, my dear, all that thy lord did, and extract the deep rooted dark that has been giving me pain for long, from my heart." Jaratkaru, thus addressed, consoled him by saying, "I asked the high minded ascetic about the offspring and he replied in affirmative. I do not know a single example of his ever speaking a falsehood even in jest. How could he do so in earnest? He said, "Do not grieve, daughter of the Naga race, for, from our union a son, glorious like the sun, shall be born to thee." O brother, saying so my husband, the rishi, went away. Be therefore cheerful, brother. Vasuki, the king of snakes was overjoyed on hearing these hopeful words of his sister and much praised her skill and made her rich presents. The child in her womb grew, in energy and splendour like the moon, and in due time she gave birth to a son like the child of a god, born to relieve the fear of his ancestors, as well as, the kinsmen of his mother. The child grew up in the

यापहम् ॥ १७ ॥ बवृधेसतुतत्रैव नागराज निवेशने । वेदांश्चाधिजगेसांगान् भार्गवाच्चयवनान्मुनेः ॥१८॥ चीर्णव्रतोबालएव बुद्धिसत्वगुणान्वितः । नामचास्याभवत्ख्यातं लोकेष्वास्तीकइत्युत ॥१९॥ अस्तीत्युक्त्वागतोयस्मात् पितागर्भस्थ मेवतम्। वनंतस्मादिदंतस्य नामास्तीकेति विश्रुतम् ॥ २० ॥ सबालएव तत्रस्थश्चरन्न मित बुद्धिमान् । गृहेपन्नगराजस्य प्रयत्नात्परिरक्षितः ॥ २१ ॥ भगवानिव देवेशः शूल पाणिर्हिरण्मयः ॥ विबर्द्धमानःसर्वांस्तान् पन्नगानभ्यहर्षयत् २२ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

कीसगान अपने माता पिताओंके भयका दूरकरनेवाला पुत्र उत्पन्नहुआ । १७ । वह बालक उसी घर में वृद्धिको प्राप्तहुआ और अंगोंसहित बेदोंका उसने च्यवन मुनि से अध्ययन किया । १८ । यह बालकही ब्रतोंका धारण करनेवाला और बुद्धि और सत्व गुण से युक्तहुआ और उसका नाम लोक में "अस्ति" प्रचालितहुआ क्योंकि उसकापिता अस्तीक कहकर इस के गर्भ में रहनेही पर बनको चलागयाथा तिसीकारण इसका नाम आस्तीक प्रसिद्ध हुआ । २० । वह बालकही वहां रहताहुआ बड़ा बुद्धिमान था और सर्पों के राजा वासुकि के यहां बड़े यत्न से उसकी रक्षा होतीथी और देवताओंके स्वामी शिवजी के समान बड़ा तेजस्वी था और उन सब सर्पोंको अपने शरीरकी वृद्धि से उस ने प्रसन्न किया २२ ॥

house of the king of snakes. Bhrigu's son, the Muni Chyvan taught him the Vedas and Vedangas. Even in boyhood he practiced rigid vows and was gifted with great intelligence, virtue, knowledge, freedom from wordly indulgence, and sanctity. He was called Astik because his father at the time of his departure had uttered the compound word '*Astik*,' meaning 'there is one'. Though a boy he was grave and intelligent. He was brought up with great care in the palace of the king of snakes. He bore a resemblance to the illustrious god of gods, Mahadeo. He grew up day by day, the delight of all the snakes."

शौनक उवाच । यदपृच्छत्तदाराजा मन्त्रिणो जनमेजयः । पितुःस्वर्गगतिंतन्मे विस्तरेणपुनर्वद ॥ १ ॥ सौतिरुवाच । शृणुब्रह्मन्यथापृच्छन् मन्त्रिणोनृपतिस्तदा यथाचाख्यातवन्तस्ते निधनंतत्परिक्षितः ॥२॥ जनमेजय उवाच । जानन्तिस्म भवन्तस्तद्यथावृत्तं पितुर्मम । आसीद्यथासनिधनं गतःकालेमहायशाः ॥ ३ ॥ श्रुत्वाभवत्सकाशाद्धि पितुर्वृत्तमशेषतः । कल्याणंप्रतिपत्स्यामि विपरीतंनजातुचित् ॥४॥ सौतिरुवाच । मन्त्रिणोऽथाब्रुवन् वाक्यं पृष्टास्तेनमहात्मना । सर्वेधर्मविदः प्राज्ञा राजानंजनमेजयम् ॥ ५ ॥ मन्त्रिणऊचुः । शृणुपार्थिवयद्ब्रूषे पितुस्तवमहात्मनः । चरितंपार्थिवेन्द्रस्य यथानिष्ठांगतश्चसः ॥६॥ धर्मात्माचमहात्माच प्रजापालःपितातव ।

अध्याय ४९ ॥

शौनक बोले राजा जन्मेजयने अपने पिताके स्वर्गलोक में जाने के पश्चात् अपने मन्त्रियों से पूछा कि उस कथा को फिर कहो उग्रश्रवा बोले । हे शौनक ! जैसे राजा ने अपने मन्त्रियों से फिर प्रश्न किया और जिसप्रकार राजा परीक्षित के मरने का हाल कहा सो तुम सुनो ।२। जन्मेजय ने कहा, हे मन्त्रियो तुम जानतेहो कि मेरे पिताका जैसा आचरण था और काल के आनेपर उसके मृत्युको प्राप्त होनेका भी हाल तुम जानते हो ।३। तुम से सम्पूर्ण उसके मरनेकी कथा को सुनकर यदि सम्पूर्ण लोकका हितहोगातो इसका उपाय करूंगा नहीं तो न करूंगा, उग्रश्रवा बोले । सम्पूर्ण धर्म के जाननेवाले बुद्धिमान मंत्रियों ने राजा के बचन को सुनकर जन्मेजय से कहा कि हे राजन् जो तुम प्रश्न करते तो उस महात्मा राजाके सम्पूर्ण आचरण को और उसकी मृत्युकोभी श्रवण करो ।६। धर्मात्मा, महात्मा और प्रजा का पालन करनेवाला तेरा पिता था और जैसा

CHAPTER XLIX.

Shaunak said, "Tell us all that Janmejaya had asked his ministers about his father's death." and Sauti continued, "Janmejaya asked, "Do you know, my ministers, what befell my father?' How did the famous king die? Having heard an account of my father's death, I shall ordain something for the good of the world." The ministers replied, "Hear, O monarch. an account of your father's life and that of his meeting with death. Thy father, noble and virtuous, passed his life in protecting his people. An embodiment of justice and virtue, the monarch virtuously protected the four castes who were engaged in their respective duties. Matchless in prowess and fortunate, he protected the earth. He did not hate any one and

आसीदिह यथावृत्तः समहात्माशृणुष्वतत् ॥७॥ चातुर्वर्ण्यंस्वधर्मस्थं सकृत्वापर्यरक्षत
धर्मतो धर्मविद्राजा धर्मोविग्रहवानिव ॥ ८ ॥ ररक्षपृथिवींदेवीं श्रीमानतुलविक्रमः ॥
द्वेष्टारस्तस्यनैवासन् सचद्वेष्टिनकञ्चन ॥ ९ ॥ समःसर्वेषुभूतेषु प्रजापतिरिवाभवत्
ब्राह्मणाःक्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैवस्वकर्मसु ॥ १० ॥ स्थिताःसुमनसोराजंस्तेन राज्ञा
स्वधिष्ठिताः । विधवानाथविकलान् कृपणांश्च बभारसः॥ ११ ॥ सुदर्शःसर्वभूताना
मासीत् सोमइवापरः । तुष्टपुष्टजनःश्रीमान् सत्यवाग्दृढविक्रमः ॥ १२ ॥ धनुर्वेदेतु-
शिष्योऽभून्नृपः शारद्वतस्यसः । गोविन्दस्यप्रियश्चासीत् पितातेजनमेजय ॥ १३ ॥
लोकस्यचैवसर्वस्य प्रियआसीन्महायशाः । परिक्षीणेषुकुरुषु सोत्तरायामजीजनत् ॥
॥ १४ ॥ परिक्षिद्भवत्तेन सौभद्रस्यात्मजोबली । राजधर्मार्थकुशलो युक्तः सर्वगुणै-

उसका आचरण था वहभी तू श्रवण कर उस धर्म के जानने वाले राजाने [जो कि देह धारण कियेहुय धर्म ही था] चारोंवर्णों को अपने धर्म में स्थापन कर धर्म से उनकी रक्षा की अनुपम बलयुक्त श्रीमान उस राजा ने पृथ्वी देवी की रक्षाकी उसके कोई शत्रु न थे और न वह किसी के साथ शत्रुता करताथा ।९। वह प्रजापति के समान सम्पूर्ण प्राणियों में समान था और उस राजा की अच्छी रक्षा से प्रसन्नता युक्त चारों वर्ण अपने २ कर्मों में स्थित थे ।११। विधवा अनाथ दीनों और अंग भंगो की रक्षा करता था ।१२। वह चन्द्रमाके समान सम्पूर्ण प्राणियों को बड़ा प्रियथा और उस के राज्यमें मनुष्य अति हृष्टपुष्ट रहते थे और शोभा युक्त सत्यवक्ता और दृढ विक्रमी था हे जन्मेजय तेरेपिताने कृपाचार्य से धनुष विद्या ग्रहणकीथी और वह भगवान गोविन्द को बड़ा प्रियथा और वह बड़े यशवाला सम्पूर्ण लोकको प्रियथा और कुरुवंश के क्षयहोने पर वह उत्तरा से उत्पन्न हुआ । १४ । इसी कारण वह बलवान् अभिमन्यु का पुत्र परिक्षित नाम से

was hated by none. Like Prajapati (Brahma) he was impartial to all the four castes. He was a patron of the widows, the orphans, the poor and the maimed. Of handsome face like the moon, cherishing his subjects and keeping them contented, blessed with fortune, a speaker of truth, of great prowess, he had learned the science of arms from Kripacharya. O Janmejaya, thy father was dear to Govind. Of great fame, he was loved by all men. He was born of Uttara when the Kuru race was almost extinct and therefore the mighty son of Abhimanyu was called Parakshit (born of extinct race). Well versed in the duties of kings he was gifted with every virtue. Having his passions under control, intelligent, possessing a retentive memory, virtuous, of vigorous mind, the most excellent and fully

ह्र्तः ॥ १५ ॥ जितेन्द्रियश्चात्मवांश्च मेधावीधर्मसेविता । षड् वर्गजिन्महाबुद्धिर्नीति-
शास्त्रविदुत्तमः ॥ १६ ॥ प्रजाइमास्तव पिता षष्ठिवर्षाण्यपालयत् । ततोदिष्टान्तमाप-
न्नः सर्वेषांदुःखमावहन् । ततस्त्वंपुरुषश्रेष्ठ धर्मेणप्रतिपेदिवान् ॥ १७ ॥ इदंवर्षसहस्रा
णि राज्यं कुरुकुलागतम् । बाल एवाभिषिक्तस्त्वं सर्वभूतानुपालकः ॥ १८ ॥ जनमे-
जय उवाच । नास्मिन् कुले जातु बभूवराजा यो न प्रजानां प्रियकृत् प्रियश्च । विशे-
षतः प्रेक्ष्य पितामहानां वृत्तं महद्वृत्तपरायणानाम् ॥ १९ ॥ कथं निधनमापन्नः पिता
मम तथाविधः । आचक्षध्वं यथावन्मे श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ २० ॥ सौतिरुवाच ।
एवं सञ्चोदिता राज्ञा मन्त्रिणस्ते नराधिपम् । ऊचुः सर्वे यथावृत्तं राज्ञा प्रियहितै-
षिणः ॥ २१ ॥ मन्त्रिण ऊचुः । सराजापृथिवीपालः सर्वशस्त्रभृताम्वरः । बभूव

प्रसिद्ध हुआ और राजनीति के अर्थ ज्ञानमें कुशल और सम्पूर्ण गुणयुक्त था । १५ । जितेन्द्रिय, गून्थोंकी धारणशक्ति से युक्त, बुद्धिमान धर्मका सेवन करनेवाला और काम क्रोधादि का जीतने वाला बड़ी बुद्धि युक्त और नीतिशास्त्र के जानने वालों में श्रेष्ठ था तेरे पिताने इस प्रजाका ६० वर्षतक पालन किया तब सबोंको क्लेश देकर मृत्युको प्राप्त होगया तिसके उपरान्त हे पुरुषों में श्रेष्ठ हजारों वर्ष से कुरुकुल से पालन किये राज्य को तूने धर्म से प्राप्तकिया और सम्पूर्ण प्राणियों का पालन करनेवाला तु बालकही इस राज्य में अभिषेक किया गया इस कुरुकुल में ऐसा राजा कदापि नहीं हुआ जो प्रजाको प्रिय नहो और जो प्रजाका प्रियकारी नहो और जोकि श्रेष्ठों के आचरणों के करनेवाले तेरेपितामह थे उन के व्रतको देखकर विशेषतः यह बात प्रतीत होती है । १९ । ऐसा धर्मात्मा वह मेरा पिता किस प्रकार मृत्युको प्राप्त हुआ यह कथा मुझ से कहो मैं यथार्थतासे सुनना चाहता हूं इस प्रकार राजा से पूंछेहुए और हित चिन्तक मन्त्रियोंने जिस प्रकार राजाकी मृत्यु हुईथी उस प्रकार राजा जनमेजय से कहने का प्रारम्भ किया ।२१।

acquainted with the sciences of morality and polities, thy father ruled over this country for sixty years. His subjects were very sorry at his death and after him, "O prince, thou hast acquired sovereign sway over the hereditary dominion of the *Kauravas*, of a thousand years standing. Thou wast a child at the time of installation and hast protected thy subjects since then." And *Janmejaya* said, "Every king of our family has been good to his people and been loved in return. My grand fathers, ever engaged in grand achievements were exemplary. Pray tell me how my virtuous father met his death." The ministers thus questioned gave the account as follows;—"O king, thy father the protector of the earth, the foremost of all who observe the divine law, was very fond of chase, like Pandu of mighty arms, and the first among archers. He entrusted

मृगया शीलस्तत्र राजन् पिता सदा ॥ २२ ॥ यथा पाण्डुर्महाबाहुर्द्धनुर्द्धरवरोयुधि ।
अस्मास्वासज्य सर्व्वाणि राजकार्य्याण्यशेषतः ॥ २३ ॥ सकदाचिद्वनगतो मृगं
विव्याध पत्रिणा । विद्ध्वाचान्वसरत्तूर्णं तंमृगं गहने वने ॥२४॥ पदातिर्वद्धनिस्त्रिंश
स्तततायुधकलापवान् । नचाससाद गहने मृगं नष्टं पितातव ॥ २५ ॥ परिश्रान्तो
ववस्थश्च षष्टिवर्षोजरान्वितः । क्षुधितः स महारण्ये ददर्श मुनिसत्तमम् ॥ २६ ॥ स
तं पप्रच्छ राजेन्द्रो मुनिं मौनव्रते स्थितम् । नचकिञ्चिदुवाचेदं पृष्टोऽपिसमुनिस्तदा
॥ २७ ॥ ततो राजा क्षुच्छ्रमार्त्तस्तं मुनिं स्थाणुवत् स्थितम् । मौनव्रतधरं शान्तं
सद्यो मन्युवशं गतः ॥ २८ ॥ नवुबोधचतं राजा मौनव्रत धरं मुनिम् । सतंक्रोध
समाविष्टो धर्षयामास ते पिता ॥२९॥ मृतं सर्पं धनुष्कोट्या समुत्क्षिप्यधरातलात् ।
तस्यशुद्धात्मनः प्रादात् स्कन्धे भरतसत्तमः ॥ ३० ॥ नचोवाचसमेधावी तमथो

मंत्रियोंके जिस प्रकार बड़ी भुजा वाला राजा पांडु धनुष धारियों में उत्तमथा उसी प्रकार पृथ्वी का पालन करने वाला वह तेरा पिता राजा परीक्षित मन्त्रियों को राजकार्य सौंप कर मृगया का इच्छुकथा । २३ । उसने एक दफा बनमें मृगको बांण से मारा और बड़े घनेबन में शीघ्र उस के पीछे गया २४ राजाने पैदल शास्त्रधारी तीरों से भराहुआ तर्कश बांधेहुए मृगका पीछा किया पर मृग को न पाया । २५ । बूढ़े भूखे थकेहुए राजाने उस जंगल में एक मुनिको देखा । २६ । राजाने उस मौनव्रत बैठे हुए मुनिसे पूछा और मुनि से कुछ उत्तर न पाकर भूक और परिश्रम से घबराया हुआ राजा उस सूखे वृक्षकी नाईं बैठे हुए मौन व्रतधारी मुनि पर क्रोधित हुआ । २८ । उसका मौनव्रत न जान कर क्रोधवश तेरे पिताने उसका तिरस्कार किया । २९ । हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उस राजाने मरेहुए सर्पको धनुष से उठा कर उस शुद्धात्मा मुनि के कंधे पर रखदिया उस

धनुष से

---

all the affairs of state to us-ministers. One day going through a wood he pierced a deer with his arrow and armed with sword and quiver, he followed it on foot into the forest. He lost sight of the deer. The aged monarch of sixty soon grew tired and hungry. He saw there an excellent rishi who was then observing a vow of silence And the king asked him about the deer but he made no reply, " The king tired with exertion and hunger, was suddenly over powered by anger and knew not that the rishi was observing the vow of silence. Being over powered by anger, thy father insulted him and taking up a dead snake from the ground, with the end of his bow, he placed it on the shoulders of the noble minded rishi who

साध्व साधुवा । तस्थौ तथैव चाक्रुद्धः सर्पं स्कन्धेन धारयन् ३१ ॥

इत्यादि पर्वण्यास्तीक एकोनपञ्चाशोऽध्यायः ४९ ॥

मन्त्रिणऊचुः ॥ ततःसराजाराजेन्द्र स्कन्धेतस्यभुजङ्गमम् । मुनेः क्षुत्क्षामआसज्य स्वपुरं मययौ पुनः ॥ १ ॥ ऋषेस्तस्यतुपुत्रोऽभूद्गविजातोमहायशाः । शृंगी नाम महातेजास्तिग्मवीर्य्योऽति कोपनः ॥ २ ॥ ब्रह्माणं समुपागम्य मुनिःपूजांचकारह । सोऽनुज्ञातस्ततस्तत्र भृङ्गीशुश्राव तं तदा ॥ ३ ॥ सख्युःसकाशात् पितरं पित्रा ते धर्षितं पुरा । मृतं सर्पं समासक्तं स्थाणु भूतस्य तस्य तम् ॥ ४ ॥ वहन्तं राजशार्दूल स्कन्धेनानपकारिणम् । तपस्विनमतीवाथ तं मुनिप्रवरंनृप ॥ ५ ॥ जितेन्द्रियविशुद्धं च स्थितं कर्मण्यथाद्भुतम् । तपसा द्योतितात्मानं स्वेष्वङ्गेषु यतंतदा ॥ ६ ॥ शुभाचारं

बुद्धिमान ऋषिने भला बुरा कुछ न कहा और क्रोध रहित उसी प्रकार सर्प को कंधे पर डाले बैठा रहा । ३१ ।

अध्याय । ५० ।

मंत्रीबोले तत्पश्चात् भूकसे घबराया हुआ परीक्षित उस मुनिकी गर्दन में सर्प डालकर घरको गया ।१। बड़ा तेजस्वी तीक्ष्ण बलवाला अत्यंत क्रोधी बड़ा यशवाला शृङ्गी नाम उसका पुत्रथा ।२। वह शृङ्गी ब्रह्माकी पूजा किया करताथा जब वह ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर घरआया उस ने अपने मित्र से सुना कि राजाने मुनिका तिरस्कार किया अर्थात् सूखे वृक्षकी नाईं बैठे हुए मुनि के कंधे पर सर्पडाला ।४। कंधे पर सर्प धारण किये हुए किसी का बुरा न करने वाले तपस्वी मुनियों में श्रेष्ठ जितेन्द्रिय शुद्ध अद्भुतकर्मोंमें स्थित जिसका आत्मा तपस्या से प्रकाशमान है इन्द्रियों को वश में किये हुए शुभ आचरण वाले जिसकी कोई बुराई नहीं करता सावधान चंचलता रहित, गंभीर किसी की निन्दा न कर

did not speak any thing good or bad, not did he display any anger; but continued sitting in the same posture with the 'dead snake on."

CHAPTET L

Santi continued, "The Maharaja, tired and hungry, having placed the dead snake on the rishi's shoulder came back to his capital. The rishi had a son, name Shringi who was a very energetic and wrathful rishi. He used to attend on Brahma on certain occasions and as he was returning home with the permission of his preceptor, he heard in the way, from a friend of his, what had happened to his father. He was told that his father, without any fault, was bearing a dead snake on his shoulder. The old rishi, insulted by Parikshit was a penance observing ascetic, the foremost of Munis

शुभकथं सुस्थितं तमलोलुपम्। अक्षुद्रमनसूयञ्च वृद्धं मौनव्रते स्थितम् ॥ ७ ॥
शरण्यं सर्वभूतानां पित्रा विनिकृतं तव। शशापाथ महातेजाः पितरं तेरुषान्वितः ८॥
ऋषिः पुत्रो महातेजा बालोऽपि स्थविरद्युतिः। स क्षिप्रमुदकं स्पृष्ट्वा रोषादिदमुवाच
च ॥ ९ ॥ पितरं तेऽभिसन्धाय तेजसा प्रज्वलन्निव। अनागसि गुरौ यो मे मृतंसर्पम-
वासृजत् ॥ १० ॥ तं नागस्तक्षकः क्रुद्धस्तेजसा प्रदहिष्यति। आशीविषस्तिग्मतेजा
मद्वाक्यबलचोदितः ॥ ११ ॥ सप्तरात्रादितः पापं पश्य मे तपसो बलम्। इत्युक्त्वा
प्रययौ तत्र पिता यत्रास्य सोऽभवत ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा च पितरं तस्मै तं शापं मत्यवेदयत्
सचापि मुनिशार्दूलः प्रेषयामास ते पितुः ॥ १३ ॥ शिष्यं गौरमुखंनाम शीलवन्तं
गुणान्वितम्। आचख्यौ स च विश्रान्तो राज्ञः सर्वमशेषतः ॥ १४ ॥
शप्तोऽसि मम पुत्रेण यत्तो भव महीपते। तक्षकस्त्वां महाराज तेजसासौ दहिष्यति

ने वाले वृद्ध मौन व्रत धारी, सम्पूर्ण प्राणियोंकी रक्षा करने वाले मुनि का राजाने अप-
मान किया ।७। तब क्रोधित होकर उस बड़े तेजस्वी ऋषि पुत्र ने जो कि बालकपन में
भी वृद्ध था राजा को शाप दिया ।८। शीघ्र आचमन कर और राजा को स्मरणकर तेज
से प्रज्वलितहो क्रोध से बोला जिसने निरपराध मेरेपिता के गले में सर्प डालाहो उस
पापी को क्रोधित विषैलामेरे वाक्य से प्रेरणा कियाहुआ तक्षक सर्प आज से सातवें दिन
अपने तेज से भस्म करे और वहमेरे तपोबल को देखे ।११। यह कहकर अपने पिता के
समीप गया और अपने पिता से शाप का वृतान्त कहा ।१२। उस श्रेष्ठ मुनि ने शील
गुण युक्त गौरमुख शिष्य को तेरेपिता के पास भेजा ।१३। उसने सावधान होकर राजा
से गुरु का संदेशा कहा कि हे राजन तुझ को मेरेपुत्र ने शाप दिया है तू सावधान होजा
।१४। हे महाराज तक्षक तुझ को अपने तेज से भस्म करेगा हे जन्मेजय तेरा पिता उस

---

who had his passions under control, pure, wonder working, having his soul enlightened with ascetic penances, contented, magnanimous and without envy and the refuge of all the creatures in distress. He was observing a vow of silence when he was insulted by the king and the latter was cursed by the former's son in return. The son, though young in years had great power of asceticism and hastly touching water, he spoke the following words:— "Behold the power of my asceticism! By the virtue of my words, Takshak, the prince of snakes, shall, within a week, burn with his poison, the wretch who has placed the dead snake upon the shoulder of my innocent father." He then came to his father and told him of his curse. The rishi sent a virtuous and well-behaved disciple, named

साध्व साधुवा । तस्थौ तथैव चाक्रुद्धः सर्पं स्कन्धेन धारयन् ३१ ॥
इत्यादि पर्वण्यास्तीक एकोनपञ्चाशोऽध्यायः ४९ ॥

मन्त्रिणऊचुः ॥ ततःसराजाराजेन्द्र स्कन्धेतस्यभुजङ्गमम् । मुनेः क्षुत्क्षामआसज्य स्वपुरं प्रययौ पुनः ॥ १ ॥ ऋषेस्तस्यतुपुत्रोऽभूद्गविजातोमहायशाः । शृंगी नाम महातेजास्तिग्मवीर्योऽति कोपनः ॥ २ ॥ ब्रह्माणं समुपागम्य मुनिःपूजांचकारह । सोऽनुज्ञातस्ततस्तत्र शृङ्गीशुश्राव तं तदा ॥ ३ ॥ सख्युःसकाशात् पितरं पित्रा ते धर्षितं पुरा । मृतं सर्पं समासक्तं स्थाणु भूतस्य तस्य तम् ॥ ४॥ वहन्तं राजशार्दूल स्कन्धेनानपकारिणम् । तपस्विनमतीवाथ तं मुनिप्रवरंनृप ॥ ५ ॥ जितेन्द्रियविशुद्धं च स्थितं कर्मण्यथाद्भुतम् । तपसा द्योतितात्मानं स्वेष्वङ्गेषु यतंतदा ॥ ६ ॥ शुभाचारं

बुद्धिमान ऋषिने भला बुराकुछ न कहा और क्रोध रहित उसी प्रकार सर्प को कंधे पर डाले बैठा रहा । ३१ ।

अध्याय । ५० ।

मंत्रीबोले तत्पश्चात भूकसे घबराया हुआ परीक्षित उस मुनिकी गर्दन में सर्प डालकर घरको गया ।१। बड़ा तेजस्वी तीक्ष्ण बलवाला अत्यंत क्रोधी बड़ा यशवाला शृङ्गी नाम उसका पुत्रथा ।२। वह शृङ्गी ब्रह्माकी पूजा किया करताथा जब वह ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर घरआया उस ने अपने मित्र से सुना कि राजाने मुनिका तिरस्कार किया अर्थात् सूखे वृक्षकी नाईं बैठे हुए मुनि के कंधे पर सर्पडाला ।४। कंधे पर सर्प धारण किये हुए किसी का बुरा न करने वाले तपस्वी मुनियों में श्रेष्ठ जितेन्द्रिय शुद्ध अद्भुतकर्मोंमें स्थित जिसका आत्मा तपस्या से प्रकाशमान है इन्द्रियों को वश में किये हुए शुभ आचरण वाले जिसकी कोई बुराई नहीं करता सावधान चंचलता रहित, गंभीर किसी की निन्दा न कर

did not speak any thing good or bad, not did he display any anger; but continued sitting in the same posture with the 'dead snake on."

CHAPTET L

Santi continued, "The Maharaja, tired and hungry, having placed the dead snake on the rishi's shoulder came back to his capital. The rishi had a son, name Shringi who was a very energetic and wrathful rishi. He used to attend on Brahma on certain occasions and as he was returning home with the permission of his preceptor, he heard in the way, from a friend of his, what had happened to his father. He was told that his father, without any fault, was bearing a dead snake on his shoulder. The old rishi, insulted by Parikshit was a penance observing ascetic, the foremost of Munis

शुभकथं सुस्थितं तमलोलुपम्। अक्षुद्रमनसूयञ्च बृद्धं मौनव्रते स्थितम् ॥ ७ ॥
शरण्यं सर्वभूतानां पित्रा विनिकृतं तव । शशापाथ महातेजाः पितरं तेरुषान्वितः ८॥
ऋषिः पुत्रो महातेजा बालोऽपि स्थविरद्युतिः । स क्षिप्रमुदकं स्पृष्ट्वा रोषादिदमुवाच
च ॥ ९ ॥ पितरं तेऽभिसन्धाय तेजसा प्रज्वलन्निव । अनागसि गुरौ यो मे मृतंसर्पम-
वासृजत् ॥ १० ॥ तं नागस्तक्षकः क्रुद्धस्तेजसा प्रदहिष्यति । आशीविषस्तिग्मतेजा
मद्वाक्यबलचोदितः ॥ ११ ॥ सप्तरात्रादितः पापं पश्य मे तपसो बलम् । इत्युक्त्वा
प्रययौ तत्र पिता यत्रास्य सोऽभवत् ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा च पितरं तस्मै तं शापं मत्यवेदयत्
सचापि मुनिशार्दूलः प्रेषयामास ते पितुः ॥ १३ ॥ शिष्यं गौरमुखंनाम शीलवन्तं
गुणान्वितम् । आचख्यौ स च विश्रान्तो राज्ञः सर्वमशेषतः ॥ १४ ॥
शप्तोऽसि मम पुत्रेण यत्तो भव महीपते । तक्षकस्त्वां महाराज तेजसासौ दहिष्यति

ने वाले वृद्ध मौन व्रत धारी, सम्पूर्ण प्राणियोंकी रक्षा करने वाले मुनि का राजाने अप-
मान किया ।७। तब क्रोधित होकर उस बड़े तेजस्वी ऋषि पुत्र ने जो कि बालकपन में
भी वृद्ध था राजा को शाप दिया ।८। शीघ्र आचमन कर और राजा को स्मरणकर तेज
से प्रज्वलितहो क्रोध से बोला जिसने निरपराध मेरेपिता के गले में सर्प डालाहो उस
पापी को क्रोधित विषैलामेरे वाक्य से प्रेरणा कियाहुआ तक्षक सर्प आज से सातवें दिन
अपने तेज से भस्म करे और वहमेरे तपोबल को देखे ।११। यह कहकर अपने पिता के
समीप गया और अपने पिता से शाप का वृतान्त कहा ।१२। उस श्रेष्ठ मुनि ने शील
गुण युक्त गौरमुख शिष्य को तेरेपिता के पास भेजा ।१३। उसने सावधान होकर राजा
से गुरु का संदेशा कहा कि हे राजन तुझ को मेरेपुत्र ने शाप दिया है तू सावधान होजा
।१४। हे महाराज तक्षक तुझ को अपने तेज से भस्म करेगा हे जन्मेजय तेरा पिता उस

who had his passions under control, pure, wonder working, having his soul enlightened with ascetic penances, contented, magnanimous and without envy and the refuge of all the creatures in distress. He was observing a vow of silence when he was insulted by the king and the latter was cursed by the former's son in return. The son, though young in years had great power of asceticism and hastly touching water, he spoke the following words:— "Behold the power of my asceticism! By the virtue of my words, Takshak, the prince of snakes, shall, within a week, burn with his poison, the wretch who has placed the dead snake upon the shoulder of my innocent father." He then came to his father and told him of his curse. The rishi sent a virtuous and well-behaved disciple, named

॥ १५ ॥ श्रुत्वाच तद्वचोघोरं पिता ते जनमेजय । यत्तोऽभवत् परित्रस्तस्तक्षकात्
पन्नगोत्तमात् ॥ १६ ॥ ततस्तस्मिंस्तु दिवसे सप्तमे समुपस्थिते । राज्ञःसमीपं ब्रह्मर्षिः
काश्यपो गन्तुमैच्छत ॥ १७ ॥ तं ददर्शाथ नागेन्द्रस्तक्षकः काश्यपं तदा । तमब्रवी-
त्पन्नगेन्द्रः काश्यपं त्वरितं द्विजम् । क भवांस्त्वरितो याति किञ्च कार्य्यं चिकीर्षति
॥ १८ काश्यप उवाच । यत्र राजा कुरुश्रेष्ठः परिक्षिन्नाम वै द्विज । तक्षकेण भुजङ्गेन
धक्ष्यते किलसोऽद्यवै ॥ १९ ॥ गच्छाम्यहं तं त्वरितः सद्यः कर्तुमपज्वरम् । मया-
भिपन्नं तं चापि न सर्पो धर्षयिष्यति ॥ २० ॥ तक्षक उवाच । किमर्थंतं मया दष्टं
सञ्जीवयितुमिच्छसि । अहं स तक्षको ब्रह्मन् पश्य मे वीर्य्यमद्भुतम् ॥ २१ ॥ न
शक्तस्त्वं मयादष्टं तं सञ्जीवयितुं नृपम् । इत्युक्त्वा तक्षकस्तत्र सोऽदशद्वै वनस्पतिम्
॥ २२ ॥ सदष्टमात्रो नागेन भस्मीभूतोऽभवन्नगः । काश्यपश्च ततो राजन्नजीवयत
तं नगम् ॥ २३ ॥ ततस्तं लोभयामास कामं ब्रूहीति तक्षकः । स एवमुक्तस्तं प्राह

घोर शापको सुनकर तक्षक सर्प श्रेष्ठसे भयभीत होकर सावधान हुआ परपश्चात् उस सातवें दिन के आनेपर ब्रह्मर्षि काश्यप राजा के समीप जानेकी इच्छा कररहाथा परन्तु उस को तक्षक ने देख कर कहा कि हे ब्राह्मण तू शीघ्रता से किस कार्य के हेतु जाता है काश्यप ने कहा हे ब्राह्मण कुरु वंशियो में श्रेष्ठ राजा परीक्षित को तक्षक आज काटेगा ।१९। मैं शीघ्रता से उस राजा को निर्विष करने के लिये जाता हूं मेरी रक्षा में सर्प उसको नहीं मार सकेगा ।२०। तक्षक ने कहा कि हे ब्राह्मण मेरे काटेहुए के जिलाने की किस लिये इच्छा करताहै मैंही उस राजाका काटनेवाला तक्षक हूं मेरेअद्भुत वीर्य को देख २१ मेरेकाटेहुए राजाको तू नहीं जिला सकता यह कह तक्षक ने एकवृक्ष को काटा । २२ । काटतेही वह वृक्षभस्महोगया और काश्यप ने उसवृक्ष को जिलादिया । २३ । इस के

Gaurmukh, to the king. Gaurmukh, delivered his preceptor's message, thus:—"Thou hast been cursed, O king by my son. Takshak shall burn thee with his poison; therefore, O king, be careful." Having heard these terrible words, O Janmejaya, thy father took every precaution against the venomous snake and the seventh day saw the Brahmarshi, Kashyap coming to the king. But Takshak saw him and said, "Where do you go so quickly and what is your business?" And Kashyap replied, "I am going to king Parikshit, the best of Kauravs, who shall be burnt by the poison of Takshak to-day. I am going there with haste to cure him and I believe that Takshak's bite will not kill him when I am present." Takshak said, "Why will you cure the king bitten by me? I am

काश्यपस्तक्षकं पुनः ॥ २४ ॥ धनलिप्सुरहं तत्र यामीत्युक्तश्च तेन सः । तमुवाच महात्मानं तक्षकः श्लक्ष्णयागिरा ॥२५॥ यावद्धनं प्रार्थयसे राज्ञस्तस्मात्ततोऽधिकम् । गृहाण मत्तएवत्वं सन्निवर्त्तस्व चानघ ॥ २६ ॥ स एवमुक्तो नागेन काश्यपो द्विपदां वरः । लब्ध्वा वित्तं निववृते तक्षकाद्यावदीप्सितम् ॥ २७ ॥ तस्मिन् प्रतिगते विप्रे छद्मनोपेत्य तक्षकः । तं नृपं नृपतिश्रेष्ठं पितरं धार्मिकं तव ॥ २८ ॥ प्रासादस्थं यत्तमपि दग्धवान् विषवन्हिना । ततस्त्वं पुरुषव्याघ्र विजयायाभिषेचितः ॥ २९ ॥ एतद्दृष्टं श्रुतं चापि यथावन्नृपसत्तम । अस्माभि र्निखिलं सर्वं कथितं तेऽतिदारुणम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वाचैतन्नरश्रेष्ठ पार्थिवस्य पराभवम् । अस्य चर्षेरुतङ्कस्य विधत्स्व यदनन्तरम् ॥ ३१ ॥ सौतिरुवाच । एतस्मिन्नेव कालेतु स राजा जनमेजयः । उवाच मन्त्रिणःसर्वा निदं वाक्यमरिन्दमः ॥ ३२ ॥ जनमेजय उवाच । अथ तत्कथितं केन

उपरांत तक्षक ने उसको लोभ दिखाकर कहा कि तू अपना मनोरथ कह ब्राह्मण ने उत्तर दिया । २४ । कि मैं राजा के पास धनकी इच्छा से जाता हूं । तक्षक ने उसमहात्मा ब्राह्मण से मनोहर बाणी से फिर कहा ॥ २५ ॥ कि हे शुद्धब्राह्मण जितना धन तू उस राजासे चाहता है वह मुझसे ले और यहांसे लौटजा इसप्रकार तक्षक के कहनेपर मनुष्यों में श्रेष्ठ काश्यप उस से इच्छानुसार धन लेकर लौटआया ॥ २७ ॥ उस ब्राह्मणके चले जाने पर कपटरूप बनाकर तक्षक ने महलपर बैठेहुए श्रेष्ठ धर्मात्मा और सावधानतेरेपिता को विषाग्निसे भस्म किया इस के उपरांत संसारकी रक्षा के हेतु तुझको अभिषेक किया गया ॥ २८ ॥ यह वृत्तांत अत्यन्त दारुण देखा और सुनाहुआ सब तुझसे कह दिया ३० उतंकऋषि और राजा के इस तिरस्कार को सुनकर जो इच्छाहोकर ॥ ३१ ॥ उग्रश्रवा ने कहा कि शत्रुनाशी राजा जन्मेजय सम्पूर्ण मंत्रियों से बोला ॥ ३२ ॥ कि वृक्षका वृत्तांत

Takshak. Behold the wonderful power of my poison. Thou canst not cure the king bitten by me. So saying, Takshak bit a banyan tree, which soon turned into ashes by the poison of the snake. Kashyap revived it and Takshak thereupon tempted him saying, "Let me know thy desire." Kashyap then told him that he was going there in the hope of a reward. But Takshak offered him a larger sum than what he expected from the king. Kashyap accepted it, and returned home. When Kashyap had gone, Takshak came in disguise and burnt with his poison thy good father who was then seated in a well protected house. And then thou O lion among men, wast installed on the throne. We have given you a true account of what we had seen and heard. Now that you have heard

यद्वृत्तं तद्वनस्पतौ । आश्चर्य्यभूतं लोकस्य भस्मराशीकृतं तदा ॥ ३३ ॥ यद्वृक्षं जीवयामास काश्यपस्तक्षकेण वै । नूनं मन्त्रैर्हतविषो न प्रणश्येत काश्यपात् ॥ ३४ ॥ चिन्तयामास पापात्मा मनसा पन्नगाधमः । दष्टं यदि मया विप्रः पार्थिवं जीवयिष्यति ॥ ३५ ॥ तक्षकः संहतविषो लोके यास्यति हास्यताम् । विचिन्त्यैवं कृता तेन ध्रुवं तुष्टिर्द्विजस्य वै ॥ ३६ ॥ भविष्यतिह्युपायेन यस्य दास्यामि यातनाम् । एवन्तु श्रोतुमिच्छामि तद्वृत्तं निर्ज्जने वने ॥ ३७ ॥ सम्वादं पन्नगेन्द्रस्य काश्यपस्य वचस्तथा ॥ श्रुतवान् दृष्टवांश्चापि भवत्सु कथमागतम् ॥ श्रुत्वा तस्य विधास्येऽहं पन्नगान्तकरीं मतिम् ॥ ३८ ॥ मन्त्रिण ऊचुः। शृणु राजन्यथास्माकं येन तत्कथितं पुरा । समागतं द्विजेन्द्रस्य पन्नगेन्द्रस्य चाध्वनि ॥ ३९ ॥ तस्मिन् वृक्षेनरः कश्चिदिन्धनार्थायपार्थिव विचिन्वन् पूर्वमारूढ़ः शुष्कशाखां वनस्पतौ ॥ ४० ॥ न बुध्येतामुभौ तौ च नगस्थं

कैसे विदित हुआ कि आश्चर्य रूप तक्षक से भस्म कियाहुआ वृक्ष काश्यप ने जिलादिया और काश्यप के मन्त्रों द्वारा वृक्ष नष्ट न हुआ ॥ ३४ ॥ सर्पों में अधम पापात्मा तक्षक ने विचार कियाहोगा कि यदि मेरेकाटे राजाको ब्राह्मण जिला देगा उसकी लोक में यह हँसी होगी कि तक्षक हतविषहुआ ऐसा सोच तक्षक ने अवश्य ब्राह्मणकी प्रसन्नताकी होगी ३६ यदि उपायहोसका तो यत्नकरके उसका बदला उसको दूंगा परन्तु एक वृत्तान्त सुनना चाहताहूं कि उस निर्जन वन में तक्षक और ब्राह्मण का सम्वाद किसने देखा और सुना और तुम से किसने कहा यह सुनकर उस सर्प के नाश करने का विचार करूंगा ॥ ३८ ॥ मंत्रीबोले हेराजन् आप सुनिये कि हमको यह वृत्तांत कैसे विदितहुआ वन में उसीवृक्ष की सूखी शाखापर एक मनुष्य इंधनके लिये पहिलेसे चढ़ाथा ॥ ४० ॥ तक्षक और

---

of your father's death and of the insult to the rishi Utank you may act as you deem proper." Janmejaya the chastiser of enemies, then, asked his ministers to tell him how they had came to know that the banyan tree was burnt by Takshak and revived by Kashyap, saying, "Surely the account is wonderful and my father could not die, for the poison would be neutralised by Kashyap. The basest of snakes, of sinful soul, thought within himself that if Kashyap would revive the king bitten by him he (Takshak) would be laughed at by people owing to the neutralisation of his poison. Assuredly this thought prompted him to tempt the Brahman. But I have hit on a plan to punish Takshak. I like to know first how did you see or hear what passed in a lonely forest-i. e. the conversa-

पन्नगद्विजौ । सहतेनैव वृक्षेण भस्मीभूतोऽभवन्नृप ॥ ४१ ॥ द्विजप्रभावाद्राजेन्द्र व्यजीवत् स वनस्पतिः । तेनागम्य द्विजश्रेष्ठ पुंसास्मासु निवेदितम् ॥ ४२ ॥ यथा वृत्तन्तु तत् सर्वं तक्षकस्य द्विजस्यच । एतत्ते कथितं राजन यथा दृष्टं श्रुतञ्चयत् । श्रुत्वाच नृपशार्दूल विधत्स्व यदनन्तरम् ॥ ४३ ॥ सूत उवाच । मन्त्रिणान्तु वचः श्रुत्वा सराजा जनमेजयः । पर्य्यतप्यत दुःखार्त्तः प्रत्यपिंषत्करं करे ॥ ४४ ॥ निःश्वासमुष्णमसकृद्दीर्घं राजीवलोचनः । मुमोचाश्रुणिचतदा नेत्राभ्यांमरुदन्नृपः४५॥ उवाच च महीपालो दुःखशोकसमन्वितः । दुर्धरंबाष्पमुत्सृज्य स्पृष्ट्वाचापोयथाविधि ॥४६॥ मुहूर्त्तमिवचध्यात्वा निश्चित्यमनसानृपः । अमर्षीमन्त्रिणःसर्वा निदं वचनमब्रवीत् ॥ ४७ ॥ जनमेजय उवाच । श्रुत्वैतद्भवतां वाक्यं पितुर्मे स्वर्गतिंप्रति ॥ निश्चित्तेयं

ब्राह्मण को उसका हाल मालूम न था वह वृक्ष उस मनुष्य सहित भस्महोगया । ४१ । उस काश्यप के प्रताप से वृक्ष के साथ वह मनुष्यभी जीउठा, उस पुरुष ने आकर यह समाचार हम से कहा । ४२ । तक्षक का और ब्राह्मण का सम्पूर्ण वृत्तान्त जैसा देखा और सुनाथा तुम्हसे कह दिया हे राजाओं में श्रेष्ठ इसको सुनकर जो करना चाहताहो कर । ४३ । उग्रश्रवा ने कहा मन्त्रियों के वचन को सुन राजाने बड़ा दुःखमाना और हाथ मले । ४४ । कँवल सदृश नेत्रवाले राजा जन्मेजय ने रोते हुए बड़े श्वाससे अश्रुपातकिया । ४५ । दु:ख और शोकसे युक्त बहुत आंसू गिराकर और विधि पूर्वक आचमनकर एक मुहूर्त तक ध्यानकिया और मन से निश्चयकर क्रोधितहोकर राजाने संपूर्ण मन्त्रियों से यह वचन कहा । ४७ । कि अपने बापके स्वर्गबासी होने का वृत्तान्त तुम

tion between Kashyap and Takshak. After hearing about it I shall devise some means to exterminate the whole serpent race." The ministers replied that a certain person had climbed on that tree to bring down some dry branches for sacrificial fuel. He was not seen by Takshak and Kashyap and so was reduced to ashes alone with the tree and was revived with it by the power of that Brahman. That man, a Brahman's servant, came to tell us all that had passed between the Brahman and Takshak. And now, O king, you know all." Janmejaya, having heard all this from his ministers, began to weep with grief. He rubbed his hands and began to draw long sighs. He shed tears of grief from his eyes and cried aloud, In this state of grief, the king touched water with his hand and spoke after some reflection, as if he was settling something in his mind. The angry monarch addressed his ministers saying, " I have heard your account of my father's death and this is my resolution:—I believe I should lose no time in avenging this injury upon the wretch Tak-

ममपतिर्या च तां मे निबोधत । अनन्तरञ्च मन्येऽहं तक्षकाय दुरात्मने ॥४८॥ प्रतिकर्त्तव्यमित्येवं येनमे हिंसितः पिता । शृङ्गिणं हेतुमात्रं यः कृत्वा दग्धवाच पार्थिवम् ॥ ४९ ॥ इयंदुरात्मता तस्य काश्यपं यो न्यवर्त्तयत् । यद्यागच्छेत् स वै विप्रो ननु जीवेत्पिता मम ॥ ५० ॥ परिहीयेत किं तस्य यदि जीवेत् स पार्थिवः । काश्यपस्य प्रसादेन मन्त्रिणां विनयेनच ॥ ५१ ॥ सतु वारितवान्मोहात्काश्यपं द्विजसत्तमम् सञ्जिजीवयिषुंप्राप्तं राजानमपराजितम् ॥५२॥ महानतिक्रमोह्येष तक्षकस्य दुरात्मनः द्विजस्य योऽददद्द्रव्यं मा नृपं जीवयेदिति ॥ ५३ ॥ उत्तङ्कस्यप्रियं कर्त्तु मात्मनश्च महत् प्रियम् । भवतांचैव सर्वेषां गच्छाम्यपचितिं पितुः ॥ ५४ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५० ॥

से सुनकर मैंने यह निश्चय किया है ' कि दुरात्मा तक्षक को इसका बदला देना उचित ही है तक्षक ने शृंगीऋषि के मिस से मेरेपिता को नष्ट किया । ४९ । और अपनीदुष्टता से काश्यप को लौटादिया । यदि वह ब्राह्मण आतातो अवश्य मेरापिताजीजाता । ५० । यदि काश्यप के प्रसाद और मन्त्रियोंकी नम्रतासे मेरा पिताजीतातो तक्षककी क्या हानि होती । ५१ । उसने मेरेबलको न जानकर काश्यप को जो ब्राह्मणों में श्रेष्ठ और राजा के जिलानेकी इच्छा करके आयाथा लौटादिया । ५२ । और इसलिये कि राजा न जिये ब्राह्मण को द्रव्य दिया यह उस पापात्मा तक्षक का बड़ाभारी अपराधहै ५३ उत्तंकऋषि और तुम सबों के प्रिय करने को अपने पिताका बदलालूंगा ५४ ॥

---

shak, who killed my father. He has burnt my father, making Shringi only a secondary cause. From malignity alone he caused Kashyap to return home. If that Brahmans had arrived, my father would surely have lived. What would he have lost if the king had revived by Kashyap's grace and the precautions of his ministers? He did not know my wrath and so he sent away Kashyap whom he could not fairly defeat, and who was coming to cure my father. Takshak's bribing Kashyap to send him away without curing the king, was an act which I cannot pardon. I must avenge on my father's enemy to gratify myself, the rishi Utank and my ministers,"

सौतिरुवाच । एवमुक्त्वाततः श्रीमान्मन्त्रिभिश्चानुमोदितः। आरुरोह प्रतिज्ञांस सर्पसत्रायपार्थिवः ॥ १ ॥ ब्रह्मन्भरतशार्दूलो राजापारिक्षितस्तदा । पुरोहितमथाहूय ऋत्वजोवसुधाधिपः ॥ २ ॥ अब्रवीद्वाक्यसम्पन्नः कार्य्यसम्पत्करंवचः । योमेहिंसितवांस्तातं तक्षकःसदुरात्मवान ॥ ३ ॥ प्रतिकुर्य्यांतथातस्य तद्भवन्तोब्रवन्तुमे अपितत्कर्मविदितं भवतांयेनपन्नगम् । तक्षकंसंप्रदीप्तेऽग्नौ प्रक्षिपेयंसबान्धवम् । यथा तेनपितामह्यं पूर्वंदग्धोविषाग्निना । तथाहमपितं पापं दग्धुमिच्छामिपन्नगम् ॥ ५ ॥ ऋत्विज ऊचुः । अस्तिराजन्महत्सत्रं त्वदर्थंदेवनिर्मितम् । सर्पसत्रमितिख्यातं पुराणे परिपठ्यते ॥ ६ ॥ आहर्त्तातस्यसत्रस्यत्वन्नान्योऽस्तिनराधिप । इतिपौराणिकाः प्राहुरस्माकंचास्तिसक्रतुः ॥ ७ ॥ सौतिरुवाच । एवमुक्तःसराजर्षिर्मेने दग्धंहितक्षकम्

अध्याय ५१ ॥

उग्रश्रवा बोले । ऐसा कहकर मन्त्रियोंसे अनुमोदन किये हुए उस श्रीमान् राजाने सर्प यज्ञकी प्रतिज्ञा की ।१। हे ब्राह्मण भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ राजा जन्मेजयके पुरोहित और ऋत्विजोंको बुलाकर कार्योंकी सम्पत्ति के बढ़ाने वाले वचन राजा बोला जिस दुष्टात्मा तक्षक ने मेरे पिता को नष्ट किया है उसका बदला उसको दूंगा उसके विषय में मुझसे कहो क्या वह कर्म आपको विदित है जिससे उस तक्षक सर्प को वान्धवोंसहित प्रज्वलित अग्नि में आहुति दूं जैसे उस ने पहिले मेरे पिताको विषाग्नि से भस्म किया है उसी प्रकार मैंभी उस पापी सर्पको जलाना जाहता हूं ।५। ऋत्विजबोले । कि हेराजन् बड़ाभारी एक यज्ञतेरे लिये देवताओं ने निर्माण किया है जो कि सर्प सत्रनाम से पुराणों में कहा गया है ।६। हे राजन् उस सत्रका करनेवालातेरे सिवाय और कोई नहीं है यह वार्ता पौराणिक लोगकहते हैं और हम उस यज्ञको जानते हैं ।७। हे शौनक ऐसा कहने पर उस राजर्षि

CHAPTER LI

The ministers seconded Janmejaya's speech and the monarch then expressed his determination of performing the snake sacrifice. The son of Parikshit then called his priest and other Brahmans and spoke to them these words regarding the accomplishment of the great task:— "I must avenge on the wretch Takshak who killed my father. Tell me what I am to do. Do you know any act by which I may cast the wretch Takshak, with his relatives, into the blazing fire? I would like to burn him as he, formerly, had burnt my father by the fire of his poison." The chief priest replied, "Gods themselves, O king, have ordained for thee a sacrifice, known as the snake sacrifice in the Purans. O king, thou, alone, art the accomplisher of it. Men versed in the Purans say there is such a sacrifice."

Having heard this, the king thought Takshak as already thrown

हुताशनमुखेदीप्ते प्रविष्टमितिसत्तम ॥ ८ ॥ ततोऽब्रवीन्मन्त्रविदस्तान् राजाब्राह्मणां
स्तदा । आहरिष्यामि तत्सत्रं सम्भाराः संभ्रियन्तुमे ॥ ९ ॥ ततस्तुऋत्विजस्तस्य
शास्त्रतोद्विजसत्तम । तंदेशं मापयामासुर्यज्ञायतनकारणात् ॥ १० ॥ यथावद्वेदविद्वां
सः सर्वेबुद्धःपरंगताः । ऋद्ध्यापरमयायुक्त मिष्टं द्विजगणैर्युतम् ॥ ११ " प्रभूतधनधा
न्याढ्यमृत्विग्भिः सुनिषेवितम् । निर्मायचापि विधिवद्यज्ञायतनमीप्सितम् ॥ १२ ॥
राजानंदीक्षयामासुः सर्पसत्राप्तयेतदा । इदंचासीत्तत्रपूर्वं सर्पसत्रेभविष्यति ॥ १३ ॥
निमित्तंमहदुत्पन्नं यज्ञविघ्नंकरंतदा । यज्ञस्यायतनेतस्मिन् क्रियमाणेवचोऽब्रवीत् १४
स्थपतिर्बुद्धिसम्पन्नो वास्तुविद्याविशारदः । इत्यब्रवीत्सूत्रधारः सूतः पौराणिकस्तदा

जन्मेजय ने प्रदीप्त अग्नि में पड़कर तक्षक को भस्महुआ माना ।८। तिसके उपरान्त जन्मेजय ने मन्त्र के जानने वाले ब्राह्मणों से कहा कि मैं उस यज्ञ को करूंगा मेरेयहां उसकी सब सामग्री तैयारकी जावे ॥९॥ तिसके उपरांत ऋत्विजों ने शास्त्रानुसार उस राजा के यज्ञ के लिये यज्ञशाला बनाने के लिये स्थान को नापा ॥१०॥ बुद्धि के पारगामी और वेदगामी ऋत्विजोंने बड़ी समृद्धिसे युक्त और इच्छा के सदृश ब्राह्मणों के समूह से युक्त और बहुतधनसे भरेहुए और ऋत्विजों से युक्त यथार्थ रीति से मनोहर यज्ञशाला को बनाकर राजा को सर्प सत्र के फल प्राप्तिकी दीक्षा दी और आगे सर्प सत्र में यह होगा ।१३। इसप्रकार जाति के सूत और शिल्प विद्या के जानने वाले ने कहा कि यज्ञ के विघ्न करने वाला एक बड़ा कारण हुआ है और वह विघ्न यज्ञशाला के बनाते समय विदितहुआ इसप्रकार बुद्धिमान और शालाओं के बनाने में चतुर एक शिल्प विद्या के जानने वाले ने कहा जिस देश और काल में इस शालाकी नाप हुईथी उससे विदित

into the blazing mouth of the eater of sacrificial butter, and burnt. The king then addressed the learned priest, " I shall make preparations for the sacrifice. Give me a list of the things that are necessary." And the king's Retwijas, versed in the Vedas, learned in the Shastras, measured the land for sacrificial platform according to the Shastras. The platform was decked with valuable articles by Brahmans and sprinkled over with paddy. The Ritwijas sat upon it with ease. When the ssrificial platform had been constructed according to the rules and directions, the king was seated on the platform to perform it. But before the sacritice began, an event foreboding some obstruction to it took place. For when the platform was in the course of preparation, a man, well acquainted with architecture, a Suta by caste and a scholar of the Purans, said that the situation of the plateform and the time of laying its foundation indicated that the sacrifice would be put to a stop by a Brahman and

॥ १५ ॥ यस्मिन्देशेचकालेच मापगंयंप्रवर्त्तिता । ब्राह्मणंकारणंकृत्वा नायंसंस्थास्य
ते क्रतुः ॥ १६ ॥ एतच्छ्रुत्वातुराजासौ प्राङ्दीक्षाकालमब्रवीत् । क्षत्तारंनहिमे कश्चि-
दज्ञातः प्रविशेदिति ॥ १७ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके एकपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

सौतिरुवाच । ततःकर्मप्रववृते सर्पसत्रविधानतः । पर्य्यक्रामंश्च विधिवत् स्वे
स्वे कर्मणियाजकाः ॥ १ ॥ प्रावृत्यकृष्णवासांसि धूमसंरक्तलोचनाः । जहुवुर्मन्त्र-
वच्चैव समिद्धंजातवेदसम् ॥ २ ॥ कम्पयन्तश्च सर्वेषामुरगाणां मनांसिच। सर्पानाज
हुवुस्तत्र सर्वानग्निमुखेतदा ॥ ३ ॥ ततःसर्पाःसमापेतुः प्रदीप्तेहव्यवाहने । विचेष्टमा-
नाः कृपणमाह्वयन्तः परस्परम् ॥४॥ विस्फुरन्तःश्वसन्तश्च वेष्टयन्तःपरस्परम् । पुच्छैः

होता है कि ब्राह्मण को निमित्त बना यह यज्ञ समाप्त नहीं होगा । १६ । यह सुनकर
द्वारपाल से कहा कि दीक्षा काल पहिले कोई मेरी आज्ञा बिना भीतर न आवे १७ ॥

अध्याय ५२ ॥

उग्रश्रवाबोले, तिसके उपरान्त विधि पूर्वक सर्पयज्ञ आरम्भहुआ और अपने अपने कर्म में याजकलोग विधि पूर्वक सम्मिलित हुए और काले वस्त्रों को पहिरकर रक्त नेत्र वाले प्रज्वलित अग्नि में मन्त्रों से हवनकरना प्रारम्भ किया । २ । और सम्पूर्ण सर्पों के मनों को कँपाते हुए ऋत्विजों ने उस यज्ञ में सम्पूर्ण सर्पोंका आवाहन किया। ३ । तिस के उपरांत उस प्रज्वलित अग्निमें तड़पते हुए और एक एक को दीन शब्द से पुकारते हुए सर्प गिरे । ४ । कांपते और स्वांस लेते और एक दूसरे को लिपटते हुए उस अग्नि

the king on learning this, ordered the doorkeepers not to admit any one without his special permission.

CHAPTER LII

Sauti thus continued his narration:—The snake sacrifice commenced in due form and the priests competent in their eyes red with smoke, poured ghee over the fire with proper hymns. They pronounced the names of snakes as they poured ghee over the blazing fire, making the heart of the snakes tremble with fear. The snakes began to fall into the blazing fire, benumbed and uttering piteous cries, swollen, breathing heavily and twining each other with their heads and tails, they came in large numbers and fell into the fire. Snakes of every colour ond every age fell into the fire, uttering

शिरोभिश्च भृशं चित्रभानुंमपेदिरे ॥ ५ ॥ श्वेताःकृष्णाश्चनीलाश्च स्थविराः शिशवस्तथा । नदन्तोविविधान्नादान् पेतुर्दीप्तेविभावसौ ॥ ६ ॥ क्रोशयोजनयात्राहि गोकर्णस्यप्रमाणतः । पतन्त्यजस्रं वेगेन वन्हावग्निमतांवर ॥ ७ ॥ एवंशतसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच । अवशानिविनष्टानि पन्नगानान्तु तत्रवै ॥ ८ ॥ तुरगाइवतत्रान्ये हस्तिहस्ताइवापरे । मत्ताइवचमातङ्गा महाकायामहाबलाः ॥ ९ ॥ उच्चावचाश्चवहवो नानावर्णाविषोल्वणाः । घोराश्चपरिघप्रख्या दन्दशूकामहाबलाः । प्रपेतुरग्नावुरगा मातृवाग्दण्डपीडिताः ॥ १० ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके द्विपंचाशोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

में गिरने लगे । ५ । श्वेत काले नीले वृद्ध बालक सर्प अनेकप्रकार के शब्दोंको करतेहुए अग्नि में गिरे । ६ । कोई छोटे और कोईबड़े और कोई गऊ केसे कानवाले सर्प बड़ेवेगसे अग्निमें गिरने लगे । ७ । इसप्रकार सैकड़ों हजारों अर्बों सर्प उस यज्ञमें परवशहोकर नष्टहोगये कोई घोड़े कोई हाथी की सूंड और कोई मतवाले हाथियों के समान बड़े देहवाले और बड़े बलवान और कोई बड़े और छोटे अनेक रंगवाले बड़े विषैले भयानक सर्प माताके शाप रूपी दण्ड से अग्निमें पड़े १० ॥

---

various cries. Some of them were of great length. They fell into the fire by hundreds and thousands and were drawn irresistibly to perish there. Of those that perished there some were like horses, others like the trunk of an elephant, others of huge bodies and strength like mad elephants. Of different colours, poisonous, terrible, looking like mades furnished with iron pikes, ever inclined to bite and afflicted with the curse of their mother, they fell into the fire.

शौनक उवाच । सर्पसत्रेतदाराज्ञः पाण्डवेयस्यधीमतः । जनमेजयस्यके त्वास न्नृत्विजः परमर्षयः ॥ १ ॥ केसदस्याबभूवुश्च सर्पसत्रेसुदारुणे । विषादजननेऽत्यर्थं पन्नगानांमहाभये ॥ २ ॥ सर्वंविस्तरशस्तात भवाञ्छंसितुमर्हति । सर्पसत्रविधानज्ञा विज्ञेयाःकेचसूतज ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच । हन्ततेकथयिष्यामि नामानीह मनीषिणाम् । येऋत्विजःसदस्याश्च तस्यासन्नृपतेस्तदा ॥ ४ ॥ तत्रहोताबभूवाथ ब्राह्मणश्चण्डभार्गवः । च्यवनस्यान्वयेख्यातो विप्रोवेदविदांवरः ॥ ५ ॥ उद्गाताब्राह्मणोवृद्धो विद्वान् कौत्सोऽथजैमिनिः । ब्रह्माभवत्सांगरवो अध्वर्य्युश्चापिपिंगलः ॥ ६ ॥ सदस्यश्चाभवद्व्यासः पुत्रशिष्यसहायवान । उद्दालकःप्रमतकःश्वेतकेतुश्चपिंगलः ७॥ असितोदेवलश्चैव नारदःपर्वतस्तथा । आत्रेयःकुण्डजठरो द्विजः कालघटस्तथा ॥८॥

अध्याय ५३

शौनकबोले पाण्डवोंकी समान बुद्धिमान् राजा जन्मेजय के सर्प यज्ञ में कौन परमर्षि ऋत्विज बने । १ । और सर्पों को खेद और महा भयके उत्पन्न करने वाले उस यज्ञ में कौन सदस्य बनाये गये ।।२।। हे तात सूत पुत्र इस सम्पूर्ण कथा को विस्तार से कहने को योग्यहो और सर्प सत्रके विधिके जानने वाले कौनथे उग्रश्रवाबोले हां मैं उस राजाके सर्प यज्ञ में जो विद्वान ऋत्विज थे उनके नामों को कहूंगा और जो सदस्य थे उनकेभी नामों को कहूंगा च्यवनवंशी प्रसिद्ध वेदजानने वालों में श्रेष्ठ चण्ड भार्गव नाम ब्राह्मण उस यज्ञ में होता था और कुकुत्सवंश में उत्पन्न जैमिनी विद्वान और वृद्ध ब्राह्मण उद्गाताथा, और शांगरव ब्रह्माथा और पिंगल नाम ब्राह्मण अध्वर्युथा । ६ । पुत्र और शिष्यों के साथ व्यासऋषि, उद्दालक और प्रमतक, श्वेतकेतु, पिंगल, असित, देवल, नारद

CHAPTER LIII

Shaunak asked, " What great Rishi were made Ritwijas in the snake sacrifice of the Pandav Janmejaya, the wise king, and who were the Sadasyas in that sacrifice on the snakes ? Give a list of their names, Sauti, my child, so that we may know who were acquainted with the sacrifice," Sauti answered, " I shall tell you the name of the wise Ritwijas and Sadasyas of that monarch:—Chand-vargava, the Hota in that sacrifice, was a Brahman of the family of Chyavan and a scholar of the Vedas. Kukutsa, a learned Brahman was the Udgata; Jaimini the Brahma, Sangrav and Pingal the Adhwaryus; Vyas with his son and disciples, Uddatak,

वात्स्यःश्रुतश्रवावृद्धो जपस्वाध्यायशीलवान्। कोहलोदेवशर्माच मौद्गल्यःसमसौरभः ॥ ९ ॥ एतेचान्येचबहवो ब्राह्मणावेदपारगाः। सदस्याश्चभवंस्तत्र सत्रे पारीक्षितस्य ह ॥ १० ॥ जुह्वत्स्वृत्विक्ष्वथ तदा सर्पसत्रेमहाक्रतौ। अहयःप्रापतंस्तत्र घोराःप्राणिभयावहाः ॥ ११ ॥ वसामेदोवहाः कुल्या नागानांसम्प्रवर्त्तिताः। ववौगन्धश्चतुमुलो दह्यतामनिशंतदा ॥१२॥ पततांचैवनागानां धिष्ठितानांतथाम्बरे। अश्रूयतानिशंशब्दः पच्यतांचाग्निनाभृशम् ॥ १३ ॥ तक्षकस्तुसनागेन्द्रः पुरन्दरनिवेशनम्। गतः श्रुत्वैव राजानंदीक्षितंजनमेजयम् ॥ १४ ॥ ततःसर्वं यथावृत्तमाख्याय भुजगोत्तमः ॥ अगच्छच्छरणंभीत आगस्कृत्वा पुरन्दरम् ॥ १५ ॥ तमिन्द्रःप्राहसुप्रीतो नतवास्तीहतक्षक। भयंनागेन्द्रतस्माद्वै सर्पसत्रात् कदाचन ॥ १६ ॥ प्रसादितोमयापूर्वं तवार्थाय

पर्वत, आत्रेय, कुण्ड, जरठ, कालघट, वात्स्य, जप, स्वध्या और शालियुक्त तथा वृद्ध श्रुतश्रवा, कोहल, देवशर्मा, मौद्गल्य, समसौरभ, यह और इनके सिवाय और बहुतसे जोकि वेद और वेदांगों के जानने वाले थे वह ब्राह्मण उस यज्ञ में सदस्य थे । १० । उस बड़े सर्प यज्ञ में ऋषियों के आहुति के डालने पर प्राणियों के भयदायी और भयानक सर्प अग्नि में गिरने लगे । ११ । सर्पोंकी चर्बीवसा और मेदकी छोटी २ नदियें वहां से बहने लगीं और निरंतर जलनेका बड़ा घोर शब्दचारों तरफ फैलगया गिरते हुए और आकाश में वर्त्तमान और अग्निमें जलतेहुओं का निरन्तर शब्द सुनाई देनेलगा १३ और सर्पों के राजा तक्षक ने जन्मेजय को यज्ञकी दीक्षामें बैठाहुआ सुनकर स्वर्गमें इन्द्र के समीप गमन किया इसके उपरान्त तक्षक ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त और अपराध इन्द्र से कहा और इन्द्र की शरण हुआ । १५ । इन्द्रने प्रसन्न होकर कहा कि हे तक्षक उस यज्ञ में तुझको किसी प्रकार का भय न होगा । १६ । और मैंने पहिलेही तेरे

Pramatak, Shataketu, Asit, Deval, Narad, Parvat, Atreya, Kund, Jathar, Kalghat, Vatsya, Shrutsrava, Kohal, Devsharma, Maudgalya, Somsrava and many others, learned in the Vedas, were officials in the sacrifice, performed by Parikshit. When they began to pour ghee into the fire, terrible snakes began to fall into it and their fat began to flow in a stream. The atmosphere was filled with an insufferable stench from the burning bodies of the snakes and the air rang with the cries of the burning snakes and those about to be burnt. Takshak himself, when he heard that the sacrifice had began, took refuge in the palace of Indra and having acknowledged his fault, craved Indra's protection. Indra gave him hope, saying, "*Takshak*, the prince of snakes, thou hast no fear from that sacrifice.

पितामहः । तस्मात्तवभयंनास्ति व्येतुतेमनसोज्वरः ॥ १७ ॥ सौतिरुवाच । एवमा-
श्वासितस्तेन ततःसभुजगोत्तमः । उवासभवनेतस्मिन् शक्रस्यमुदितःसुखी ॥ १८ ॥
अजस्रंनिपतत्स्वग्नौ नागेषुभृशदुःखितः । अल्पशेषपरीवारो वासुकिः पर्यतप्यत ॥
॥ १९ ॥ कश्मलंचाविशद्घोरं वासुकिंपन्नगोत्तमम् । सघूर्णमानहृदयो भगिनीमिद-
मब्रवीत् ॥ २० ॥ दह्यन्त्यंगानिमेभद्रे नदिशःप्रतिभान्तिच । सीदामीवचसम्मोहात्
घूर्णतीवचमेमनः ॥ २१ ॥ दृष्टिर्भ्राम्यतिमेऽतीव हृदयंदीर्यतीवच । पतिष्याम्यवशो
ऽद्याहं तस्मिन्दीप्तविभावसौ ॥ २२ ॥ पारिक्षितस्ययज्ञोऽसौ वर्त्ततेऽस्मज्जिघांसया
व्यक्तंमयापिगन्तव्यं प्रेतराजनिवेशनम् ॥ २३ ॥ अयंसकालःसंप्राप्तो यदर्थमसिमेस्व
सः । जरत्कारौमयादत्ता त्रायस्वास्मान् सबान्धवान् ॥ २४ ॥ आस्तीकःकिलयज्ञंतं

लिये ब्रह्माको प्रसन्न कियाथा इस कारण तुझको भय नहीं है तू अपने मन के भयको दूर कर । १७ । उग्रश्रवा बोले इस प्रकार इन्द्र से समझाया हुआ वह तक्षक इन्द्र के घर प्रसन्नता से सुख पूर्वक रहा सर्पों के निरन्तर अग्नि में पड़ने पर अत्यन्त दुःखित और जिसका परिवार न्यून शेष रहगया है ऐसा वासुकि खेद करने लगा और अत्यन्त भयको प्राप्त हुआ और हृदय कंपित वासुकि ने अपनी बहिन से कहा कि हे भद्रे मेरेअंग जलते हैं और दिशामुझको प्रतीत नहीं होती और मोहसे नष्ट होरहाहूं और मेरा मन कांपता है २१ और मेरी दृष्टि धुंधली है और हृदय अत्यन्त फटने के सदृश होरहा है और अब मैं परवश पराधीन हूं अवश्य उस प्रदीप्त अग्निमें गिरूंगा । २२ । जन्मेजय का यह यज्ञ हमारे मारनेकी इच्छा से होरहा है अवश्य मैंभी यमराज के स्थानों को जाऊंगा २३ हे मेरी भगनी यह वह समय प्राप्त होगया है जिस लिये मैंने तुझे जरत्कारुको दियाथा और हमको कुटुम्ब सहित रक्षाकर, हे सर्पनियों में श्रेष्ठ यह निश्चय है

I pacified Brahma for the sake." Thus encouraged by Indra, Takshak, the prince of snakes began to live there in joy and happyness. But Vasuki, seeing that the snakes were incessantly falling into the fire and his large family was reduced only to a few, became very sorry and calling his sister, he said to her, "The member of my family are being burnt, I see darkness on all sides and am about to fall down with giddiness. My mind is upset, my sight is dim and my heart is breaking down. My turn may come to-day. The sacrifice is for the annihilation of our race. The time is come, my dear sister, for which thou wast given to Jaratkaru. Thou canst

वर्त्तन्तंभुजगोत्तमे । प्रतिषेत्स्यतिमांपूर्वं स्वयमाहपितामहः ॥ २५ ॥ तद्भद्रेब्रूहिवत्संस्वं कुमारंवृद्धसम्मतम् । ममाद्यत्वंसभृत्यस्य मोक्षार्थं वेदवित्तमम् ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके त्रिपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

सौतिरुवाच । ततआहूयपुत्रंस्वं जरत्कारुर्भुजङ्गमा । वासुकेर्नागराजस्य वचनादिदमब्रवीत् ॥ १ ॥ अहंतवपितुःपुत्र भ्रात्रादत्ता निमित्ततः । कालःसचायं सम्प्रास्तत्कुरुष्वयथातथम् ॥ २ ॥ आस्तीक उवाच । किंनिमित्तंमम पितुर्दत्तात्वं मातुलेनमे । तन्ममाचक्ष्वतत्त्वेन श्रुत्वाकर्त्तास्मितत्तथा ॥ ३ ॥ सौतिरुवाच । ततआचष्टसातस्मै बान्धवानां हितैषिणी । भगिनीनागराजस्य जरत्कारुरविक्लवा ॥ ४ ॥ जरत्कारुरुवाच । पन्नगानामशेषाणां माताकद्रूरितिश्रुता । तयाशप्तारुपितया सुतायस्मा

कि तेरा पुत्र आस्तीक उस यज्ञको बन्द करेगा यह बात ब्रह्माने मुझ से कही थी ।२५। इस कारण हे बेटी अपने पुत्र और माननीय बालक और वेदके जानने वालों में श्रेष्ठ आस्तीक से मेरे छुटाने के लिये कह । २६ ।

अध्याय । ५४ ।

उग्रश्रवाबोले ! इस के उपरान्त उस कन्याने नागराज वासुकि के वचन से अपने पुत्र जरत्कारु को बुलाकर कहा ।१। हे पुत्र मुझको मेरेभाई ने तेरेपिता को जिसकारण दियाथा उस कामका समय अब प्राप्तहोगया है अब तू यथा योग्य कर ।२। आस्तीक बोला किसकारणसे मेरेमामाने तुझको मेरेपिताको दिया सो अब यथार्थ रीति से कह और मैं उस कार्य का उसीप्रकार करूंगा ।३। उग्रश्रवा बोले । इस के उपरान्त अपने कुटुम्बियों का हित चाहने वाली जरत्कारु ने शान्तिसे अपने पुत्र आस्तीक से कहा ।कि सम्पूर्ण सर्पोंकी माता कद्रुनाम से प्रसिद्ध है उसने क्रोधमें होकर सर्पोंको शाप दिया और जिस

put a stop to the sacrifice by deputing thy son, Astik. Brahma himself foretold this. Be pleased, therefore, to send the learned Astik, thy beloved son."

CHAPTER LIV

At the request of Vasuki, Jaratkaru called her son and said, "The time is come, my son for the accomplishment of the object for which I was married to thy father by my brother. Do what is needful." And Astik asked her the object for which she was married to his father. Jaratkaru, the sister of the king of snakes, unmoved by the general distress and ever desirous of the welfear of her kinsmen, said to him, "My son, you know that Kadru, the mother of

न्निबोधतत् ॥ ५ ॥ उच्चैःश्रवाःसोऽश्वराजो यन्मिथ्यानकृतोमम । विनतार्थायपणितं दासभावाय पुत्रकाः ॥ ६ ॥ जनमेजयस्य वो यज्ञे धक्ष्यत्यनिलसारथिः । तत्र पञ्चत्वमापन्नाः प्रेतलोकं गमिष्यथ ॥७॥ ताञ्च शपतीं देवः साक्षाल्लोकपितामहः । एवमस्त्विति तद्वाक्यं प्रोवाचानुमुमोदच ॥ ८ ॥ वासुकिश्चापि तच्छ्रुत्वा पितामह वचस्तदा । अमृते मथिते तात देवाञ्छरणमीयिवान् ॥ ९ ॥ सिद्धार्थाश्च सुराः सर्वे प्राप्यामृतमनुत्तमम् । भ्रातरं मे पुरस्कृत्य पितामहमुपागमन् ॥ १० ॥ ते तं प्रसादयामासुः सुराः सर्वेऽजसम्भवम् । राज्ञा वासुकिना सार्द्धं शापोऽसौन भवेदिति ॥ ॥ ११ ॥ देवा ऊचुः । वासुकिर्न्नागराजोयं दुःखितो ज्ञातिकारणात् । अभिशापः स मातुस्तु भगवन्न भवेत् कथम् ॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच । जरत्कारुर्जरत्कारुं यां भा-

---

प्रकार शाप दियाथा मुझसे सुन ।५। हे पुत्र उच्चैःश्रवा नाम अश्वों के राजाको विनता से शर्त दासीभाव में जो तुमने मेरेकहने से मिथ्या न किया इसकारण तुमको जन्मेजय के यज्ञ में अग्नि भस्म करेगा और वहाँ मृत्युको प्राप्तहोकर तुम यमलोक को जाओगे ।७। शाप देती हुई उस कद्रु देवी से सम्पूर्ण लोकके पितामह ब्रह्माने ऐसाही होगा कह कर उस वचनका अनुमोदन किया ।८। और वासुकि ने उस वचन को सुनकर अमृतके मथन समय देवताओं की शरण ली ।९। और सिद्ध प्रयोजन वाले सम्पूर्ण देवता सर्वोत्तम अमृत को लेकर मेरेभाई वासुकि को आगे कर ब्रह्मा के समीप गये ।१०। और सम्पूर्ण देवताओं ने वासुकि के साथ ब्रह्माको प्रसन्नकिया कि यह शाप सर्पों को न लगे ॥ देवता बोले हे भगवन् यह सर्पों का राजा वासुकि जाति के कारण अत्यन्त दुःखित है माता का साप किस प्रकार इसको नहो ? ।१२। ब्रह्माबोले जरत्कारु ऋषि इसी नाम वाली

---

the snakes, had cursed her sons that as they had refused to discolour Uchchaisrava, the prince of horses, to win the wager from Vinta they should be thrown by the wind into the blazing fire of Janmejaya's sacrifice and thence proceed to hell. The Grand father, himself, had sanctioned it. Having heard the curse and the consequent words of Brahma, Vasuki sought the protection of gods at the time when nectar was being churned out and when the object of the gods was obtained, they took Vasuki to the Grand father to make the curse abortive. They said, "Vasuki, the king of the snakes is very anxious for the safety of his kinsmen. How may his mother's curse prove abortive ?" And Brahma replied, "Jaratkaru, the rishi shall marry a woman named Jaratkaru. The son born of the

र्य्यां समवाप्स्यति । तत्र जातो द्विजः शापान्मोक्षयिष्यति पन्नगान् ॥१३॥ एतच्छ्रुत्वातु वचनं वासुकिः पन्नगोत्तमः । प्रादान्मामगरप्रख्य तव पित्रे महात्मने ॥१४॥ प्रागेवानागते काले तस्मात्त्वं मय्यजायथाः । अयं स कालः सम्प्राप्तो भयान्नस्त्रातुमर्हसि ॥ १५ ॥ भ्रातरञ्चापि मे तस्मात्त्रातुमर्हसि पावकात् । न मोघन्तु कृतं तत्स्याद्यदहं तवधीमते । पित्रे दत्ता विमोक्षार्थं कथं वा पुत्र मन्यसे ॥ १६ ॥ सौतिरुवाच । एवमुक्तस्तथेत्युक्त्वा सोऽस्तीको मातरं तदा । अब्रवीद्दुःखसन्तप्तं वासुकिं जीवयन्निव ॥ १७ ॥ अहं त्वां मोक्षयिष्यामि वासुके पन्नगोत्तम । तस्माच्छापान्महासत्व सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ १८ ॥ भव स्वस्थमना नाग न हि ते विद्यते भयम् । प्रयतिष्ये तथा राजन् यथाश्रेयो भविष्यति ॥ १९ ॥ न मे वागनृतं प्राह स्वैरेष्वपि

भार्या को ग्रहण करेगा उस से जो पुत्र होगा वह सर्पों को स्राप से छुड़ावेगा ।१३। ब्रह्मा के इस वचन को सुनकर वासुकि ने महात्मा तेरे पिताके लिये मुझको दिया ।१४। और उससमय के आनेसे पहिलेही तू मुझसे उत्पन्न हुआ अब वह समय आगया है तू हमारी भयसे रक्षा करने के योग्य है ।१५। और मेरेभाई को भी उस अग्नि से बचा हे पुत्र जिस कारणतेरे पिता को मैं दी गई थी वह सर्पों के मोक्ष का कारण मिथ्या नहो अब इसमें जो तू अच्छा समझे सो कर ।१६। उग्रश्रवा बोले आस्तीक ऐसा कहने पर मातासे अच्छा ऐसाही करूंगा कहकर वासुकिके प्राणों को जिलाने सदृश दुःखित वासुकि से बोला ।१७। हे श्रेष्ठ वासुके तेरी माताके शाप से तुझको छुटाऊं गा यह तुझ से सत्य कहता हूं । १८ । हे नाग तू सावधान चित्तहो तुझ को कुछ भय नहीं है उसप्रकार यत्न करूंगा जैसे हे राजन् तेरा भलाहो । १९ । मेरी वाणी हास्य मेंभी मिथ्या

union shall relieve the snakes." Vasuki, acting upon this advice, gave me to thy noble father and thou art the fruit of that marriage. The time has come for you to deliver us from the danger—my brother and myself from the fire—of that the object for which I was bestowed on thy father be obtained. What dost thou say, my sont." Thus addressed, Astik said to his mother, "Yes, I shall." He then spoke to the afflicted Vasuki, as if infusing life into him, saying, "O Vasuki, kin, of the snakes, truly do I say, I shall relieve thee from that curse. Have no fear. I shall strive earnestly for thy good. I have never said an untruth even in jest. Uncle, I shall go thither to day and shall greatify the monarch with sweet words so that the sacrifice may be put a stop to. Believe me, king

कुतोऽन्यथा। तं वै नृपवरं गत्वा दीक्षितं जनमेजयम् ॥ २० ॥ वाग्भिर्मंगलयुक्ताभिस्तोषयिष्येऽद्य मातुल। यथासयज्ञोनृपतेर्निवर्त्तिष्यति सत्तम ॥ २१ ॥ ससम्भावयनागेंद्र मयि सर्व्वं महामते। नते मयि सनो जातु मिथ्याभवितुमर्हति ॥ २२ ॥ वासुकिरुवाच ॥ आस्तीकपरिघूर्णामि हृदयंमेविदीर्य्यते। दिशोनभाति जानामि ब्रह्मदण्डनिपीड़ितः ॥ २३ ॥ आस्तीक उवाच। नसन्तापस्त्वयाकार्य्यः कथंचित्पन्नगोत्तम। प्रदीप्ताग्नेःसमुत्पन्नं नाशयिष्यामितेभयम् ॥ २४ ॥ ब्रह्मदण्डं-महाघोरं कालाग्निसमतेजसम्। नाशयिष्यामिमात्रत्वं भयंकार्षीःकथंचन ॥ २५ ॥ सौतिरुवाच। ततःसवासुकेर्घोरमपनीय मनोज्वरम्। आधायचात्मनोऽङ्गेषु जगाम त्वरितोभृशम् ॥ २६ ॥ जनमेजयस्यतंयज्ञं सर्वैःसमुदितंगुणैः। मोक्षायभुजगेन्द्राणा-मास्तीकोद्विजसत्तमः ॥ २७ ॥ सगत्वापश्यदास्तीको यज्ञायतनमुत्तमम्। वृतंसदस्यै-र्बहुभिसूर्य्यवह्निःसमप्रभैः ॥ २८॥ सतत्रवारितोद्वास्थैः प्रविशन्द्विजसत्तमः। अभितुष्टा

नहीं होती और समयतो क्योंकर होगी और उस जन्मेजय के पास जाकर हे मामा इसप्रकारकी मंगलयुक्त वाणियोंसे प्रसन्न करूंगा जिससे उस राजाका यज्ञ निवृत्त होजाय। २१। हेबुद्धिमान सर्प मेरी इन सम्पूर्ण बातों को सत्यजानना और तेरामन मुझको मिथ्या न जाने। २२। वासुकिबोला हेअस्तीक मेरी बुद्धि भ्रमयुक्तहै और मेरा हृदय फटताहै और माताके शाप से पीड़ितहुआ दिशाओं को नहीं जानताहूं। २३। आस्तीकबोला हेसर्पों में श्रेष्ठ तुझे किसीप्रकार ताप न करना चाहिये प्रज्वलित अग्नि से उत्पन्न तेरेभयको मैं नाश करूंगा। २४। और बड़ेघोर और प्रलयके समान तेजस्वी और ब्रह्मदण्ड को नाश करूंगा तू किसीप्रकार भय मत कर ॥ २५ ॥ तिसके उपरान्त उगृश्रवाबोले कि वह आस्तीक उस के मन के बड़ेघोर ज्वरको निकाल और अपनेअंगमें रख शीघ्र वहांसे सम्पूर्ण गुणों से युक्त जन्मेजय के यज्ञ में सर्पोंके छुटाने को गया २७॥ उसने जाकर बड़े उत्तम यज्ञशाला को जोकि सूर्यके समान तेजवाले सदस्यों से भरीहुईथी

of snakes, I shall not return without having accomplished my purpose," And Vasuki said, "Afflicted with my mother's curse, O Astik, my brain is giddy. I cannot see clearly and my heart breaks." Astik said "Fear not, king of snakes, I shall save thee from the great punishment." Then Astik, the best among Brahmans, dispelling all fear from Vasuki's heart and taking his fever as it were, on himself, went, for the relief of the king of snakes with speed, to the place where king Janmejaya was holding his sacrifice and having reached there beheld the excellent platfarm occupied by numerous

वतंयज्ञं प्रवेशार्थीपरन्तपः ॥ २९ ॥ समाप्ययज्ञायतनंवरिष्ठं द्विजोत्तमः पुण्यकृतांवरिष्ठः । तुष्टाव राजानमनन्तकीर्तिमृत्विक् सदस्यांश्चतथैवचाग्निम् ॥ ३० ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके चतुःपंचाशोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

आस्तीक उवाच । सोमस्ययज्ञो वरुणस्ययज्ञः प्रजापतेर्यज्ञ आसीत्प्रयागे । यथा यज्ञोऽयंतव भारताग्र्य पारीक्षितस्वस्तिनोऽस्तुप्रियेभ्यः ॥ १ ॥ शक्रस्ययज्ञःशतसंख्य उक्तस्तथापरं तुल्यसंख्यंशतंवै । तथायज्ञोऽयंतव भारताग्र्यपारीक्षित स्वस्तिनोऽस्तु प्रियेभ्यः ॥ २ ॥ यमस्ययज्ञोहरिमेधसश्च यथायज्ञोरन्तिदेवस्य राज्ञः । तथायज्ञोऽयंतव

देखा ॥ २८ ॥वह उस यज्ञशालामें प्रवेशकरनेकी इच्छावाला तपस्वी आस्तीक यज्ञशाला में प्रवेशकरते समय द्वारपालोंसे निषेध कियाहुआ यज्ञकी स्तुति करने लगा ॥ २९ ॥ पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणोंमें उत्तम आस्तीकने यज्ञशाला के समीप प्राप्तहोकर अनन्त कीर्त्तिवाले राजा और सभासदों और ऋत्विज और अग्निकी स्तुतिकी ३० ॥

अध्याय । ५५ ।

आस्तीकबोला चन्द्रमा, वरुण, प्रजापति का यज्ञ प्रयाग में हुआ है परीक्षित के पुत्र वैसाही यह तेरा यज्ञ है और हमारे और तेरे प्रियोंके लिये कल्याण हो । १ । इन्द्र के यज्ञसौ कहे हैं या उस से भी अधिक सौ यज्ञसौ गुने तथा उसी प्रकार हे जन्मेजय तेरा यज्ञ है हमारे और तेरेप्रियों के अर्थ कल्याण हो यमका यज्ञ हरिमेधस का यज्ञ जिस

Sadasyas, glorious like the sun. But that best of Brahmans was denied admittance by the doorkeepers. Being anxious to gain admittance, he gratified them and having entered the compound, began to enlogise the brave king, the Ritwijas, the Sadasyas and the sacred fire.

CHAPTER LV

Astik said, " Som and Varun and Prajapati had performed sacrifices, of old, in Prayag. But thy sacrifice, O foremost of the Bharat race and son of Parikshit, is in no way inferior to theirs. Let those dear to us be blessed ! Indra had performed hundred sacrifices O foremost of the Bharat race and son of Parikshit, is fully equal to

भारताग्रच पारीक्षितस्वस्तिनोऽस्तु प्रियेभ्यः ॥ ३ ॥ गयस्ययज्ञः शशबिन्दोश्च राज्ञो-
यज्ञस्तथावैश्रवणस्यराज्ञः। तथायज्ञोऽयंतव भारताग्रचपारीक्षित स्वस्तिनोऽस्तुप्रिये
भ्यः ॥ ४ ॥ नृगस्ययज्ञस्त्वजमीढस्य चासीद्यथायज्ञो दाशरथेश्चराज्ञः। तथायज्ञोऽयं-
तव भारताग्रच पारीक्षित स्वस्तिनोऽस्तुप्रियेभ्यः ॥ ५ ॥ यज्ञःश्रुतोदिविदेवस्य सूनो-
र्युधिष्ठिरस्याजमीढस्य राज्ञः। तथायज्ञोऽयंतव भारताग्रय पारीक्षितस्वस्ति नोऽस्तु
प्रियेभ्यः ॥ ६ ॥ कृष्णस्ययज्ञःसत्यवत्याः सुतस्यस्वयंच कर्मप्रचकारयत्र। यथायज्ञो-
ऽयंतव भारताग्रय पारीक्षित स्वस्तिनोऽस्तु प्रियेभ्यः ॥ ७ ॥ इमेचते सूर्यसमानव-
र्चसः समासते वृत्रहणःक्रतुं यथा। नैषांज्ञातुंविद्यतेज्ञानमद्यदत्तं येभ्योनप्रणश्येत् कदा-
चित् ॥ ८ ॥ ऋत्विक्समोनास्ति लोकेषु चैव द्वैपायनेनेति विनिश्चितंमे। एतस्यशिष्या
हिक्षितिंचरन्ति सर्वर्त्विजःकर्मसुस्वेषु दक्षाः ॥ ९ ॥ विभावसुश्चित्रभानुर्महात्मा हि-

---

प्रकार राजा रन्तिदेव का यज्ञ हुआ हे जन्मेजय वैसाही यहयज्ञ है सो तेरे और हमारे प्रियोंका कल्याण हो। यमराजशशुविन्दु राजा वैश्रवण का यज्ञहुआ हे जन्मेजय वैसाही यह यज्ञ है सो हमारे और। ४ । जैसे नृग, अजमीढ़, दसरथ के पुत्र रामचन्द्र का यज्ञ हुआ हे जन्मेजय, । ५ । जैसे धर्म राज के पुत्र युधिष्ठिर राजाका यज्ञ हुआ हे जन्मेजय वैसेही, ६ जैसे सत्यवती के पुत्र व्यासका यज्ञ हुआ जिसमें वह स्वयं कार्य करता था जन्मेजय वैसाही, । ७ । जैसे इन्द्रके पक्षमें विद्वान बैठेथे वैसे इसयज्ञ में सूर्यकी समान तेजस्वी बैठे हैं इनको कुछ ज्ञान जानना बाकी नहीं है जिनको दियाहुआ कभी नष्ट नहीं होता और वह संसार में कोई ऋत्विज व्यास के सदृश नहीं है मुझको यह निश्चय है इसी के शिष्य सम्पूर्ण में फिरते हैं जो कि अपने कर्मों और परलोक के साधन करने वाले कर्मों में चतुर हैं। ९ । महात्मा विचित्र कान्तिवाला यह अग्नि जो कि होम पदार्थ को

---

ten thousand such sacrifices. Let those dear to us be blessed! Thy sacrifice, O foremost of the Bharat race and son of Parikshit, is like the sacrifices of Yama, Harimedh and Ranti Dev. Let those dear to us be blessed! This sacrifice of thine, Janmejaya, is like the sacrifices of Maya, Shasbindu and Vaisravan. Let those dear to us be blessed! This sacrifice of thine, O foremost of the Bharat race and son of Parikshit is like the sacrifices of Nriga, Ajamid, the son of Dasrath, Yudhishthir and Vyas. Let those dear to us be blessed! Those that sitting here make thy sacrifice like that of Indra, are in splendour equal to the Sun. They are all knowing and gifts made to them are of unlimited merit. None in the world is

रण्यरेताहुतभुक् कृष्णवर्त्मा । प्रदक्षिणावर्त्तशिखः प्रदीप्तो हव्यंतवेदं हुतभुग्वष्टिदेवाः
॥ १० ॥ नेहत्वदन्यो विद्यते जीवलोके समोनृपः पालयिताप्रजानाम् । धृत्याचतेप्रीत
मनाःसदाहंत्वंवा वरुणोधर्मराजो यमोवा ॥ ११ ॥ शक्रःसाक्षाद्वज्रपाणिर्यथेह त्रा-
तालोकेऽसिंस्त्वंतथेह प्रजानाम् । मतस्त्वंनःपुरुषेन्द्रेहलोके नचत्वदन्यो भूपतिरस्ति
यज्ञे ॥ १२ ॥ खट्वांगनाभागदिलीपकल्प ययातिमान्धातृसमप्रभाव । आदित्यतेज
प्रतिमानतेजा भीष्मोयथाराजसि सुव्रतस्त्वम् ॥ १३ ॥ वाल्मीकिवत्ते निभृतंस्ववी-
र्यं वसिष्ठवत्तेनियतश्चकोपः । प्रभुत्व मिन्द्रत्वसमंमतंमे द्युतिश्चनारायणवद्विभाति १४॥
यमोयथाधर्म विनिश्चयज्ञः कृष्णोयथासर्वगुणोपपन्नः । श्रियांनिवासोऽसियथा वसू-

ग्रहण करने वाला जिसको हिरण्यरेता और कृष्णवर्त्मा कहते हैं वहजो कि प्रदक्षिणावर्त्त
ज्वाला युक्त और प्रदीप्त होताहुआ हविको तेरी कामना कर रहा है । १० । और तेरे
समान प्रजा पालक कोई राजा नहीं है तेरेधैर्य से मेरा मन सदा प्रसन्न है तू वरुण धर्म
राज यम वा साक्षात् हाथ में वज्र लिये हुए इन्द्र जैसे इस संसार की रक्षा करते हैं
उस प्रकार तू पृथ्वीकी रक्षा करता है और हे श्रेष्ठ इस लोकमें तेरे सिवाय कोई राजा
नहीं हुआ और नहीं है ऐसा मैं मानता हूं १२ हे खट्वांग नाभाग दलीप के सदृश
और ययाति मांधाता के समान राजा जन्मेजय आदित्य के तेज के समान तेजयुक्त और
भीष्म के समान उत्तमव्रतों का धारण करने वाला तू शोभित होता है । १३ । वाल्मीकि
की समान तूने अपने वीर्यकी रक्षाकी है और वशिष्ठ के समान तूने क्रोध को वश में
किया है और इन्द्रकी समान मैं तुझको प्रभु मानता हूं और नारायणकी समान तेरी
कान्ति शोभित होती है । १४ । यमकी समान धर्मका निश्चय करने वाला है कृष्ण

equal to thy Ritwijas. Vyas himself is of this opinion. His desciples, becoming Ritwijas, competent in their duties, travel over the earth. In this world there is no other king equal to thee in protection of his subjects. I praise thy abstinence. Thou art like Varun or Yam. Thou art the protector of all creatures like Indra, the wielder of thunder bolt. Thou art the greatest among men and thy sacrifice is matchless. Thou art like Khatwanga. Nabhaga, Dilip, Yayati and Mandhata in prowess and like the sun and Bhishma in splendour. Like Valmiki, thy energy is latent; like Vasisth, thou hast controlled thy wrath. Thy rule is like that of Indra; thy splendour like that of Narayan and thy justice is like that of Yam. Thou art virtuous like Krishna, fortunate like Vasus, the refuge of the sacrifices, equal to Indra in strength, master of the science of arms

नां निधानभूतोऽसि तथाक्रतूनाम् ॥ १५ ॥ दम्भोद्भवेनासि बलेनरामो यथा शस्त्र विदस्त्रविच्च । और्वत्रिताभ्यामसि तुल्यतेजादुष्प्रेक्षणीयोऽसि भगीरथेन ॥ १६ ॥ सौतिरुवाच । एवंस्तुताःसर्वएवप्रसन्ना राजा सदस्याऋत्विजो हव्यवाहः । तेषां दृष्ट्वाभावितानीङ्गितानि प्रोवाचराजा जनमेजयोऽथ ॥ १७ ॥

इत्यादिपर्वणि आस्तीके पंचपंचाशोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

जनमेजय उवाच । बालोऽप्यं स्थविर इवावभाषते नायं बालः स्थविरोऽयं मतोमे । इच्छाम्यहं वरमस्मै प्रदातुं तन्मेविप्राः संविदध्वं यथावत् ॥ १ ॥ सदस्या ऊचुः । बालोपि विप्रो मान्य एवेहराज्ञां विद्वान्योवै स पुनर्वै यथावत् । सर्वान का-मांस्त्वत्त एवार्हते ऽद्य यथा च नस्तक्षक एति शीघ्रम् ॥ २ ॥ सौतिरुवाच । व्याह-

के समान सम्पूर्ण गुणों से युक्त है जैसे अष्ट सिद्धि तेरे पास निवास करती हैं इस प्रकार यज्ञों काभी तू स्थान है जरासिन्ध के समान बलवान् है परशुरामकी समान शस्त्र और अस्त्र विद्याओं का जानने वाला है और और्व और त्रितकी समान तेजस्वी है, भगीरथकी समान किसी से अपमान करने योग्य नहीं इस प्रकार स्तुति करने पर सम्पूर्ण राजा सभासद् और अग्नि और ऋत्विज प्रसन्न हुए राजाने सभासद् और उनसबों की मनकी चेष्टाओं को देख कर कहा । १७ ।

अध्याय । ५६ ।

जन्मेजय बोले यह बालक भी वृद्धों की समान भाषण करता है और यह बालक नहीं है मैं इसको वृद्ध मानता हूँ और इसको बरदान देना चाहता हूँ इस विषय में सम्पूर्ण लोग मुझसे एक मत करके कहो । १ । सभासद् बोले हे राजन् बालकभी ब्राह्मण राजाओं से सत्कार करने के योग्य होता है और जो विद्वान् हैं वह यथार्थ रीतिसे सत्कार करने के योग्य हैं और यह ब्राह्मण तुझ से सम्पूर्ण मनोरथों को पाने के योग्य है और वह कार्य हो जिस से तक्षक शीघ्र आवे । २ । उग्रश्रवा बोले वरदानके देनेवाले

like Ram and equal in energy to Aurv and Trita, thou inspirest terror by thy looks like Bhagirath. Astik pleased all by the adorations mentioned above. The king, his Sadasyas and Ritwijas and the Sacrificial fire were gratified. Janmejaya, beholding the signs indications manifested all round addressed them as follows:—

CHAPTER LVI

Janmejaya said, " Though he is but boy, he speak like a wise old man. I think him to be wise and old and wish to confer a boon on him and ask your permission, O Brahmans, to do so." The Sadasyas replied, " A Brahman, though a boy is worthy of respect, and a learned one is more so. You may fulfil the desire of this boy, but not before Takshak falls down." The king, intent on granting

सुकामे वरदे नृपे द्विजं वरम्वृणीष्वेति ततोऽभ्युवाच । होतावाक्यं नातिहृष्टान्तरात्मा कर्मण्यस्मिंस्तक्षको नैति तावत् ॥ ३ ॥ जनमेजय उवाच । तथा चेदं कर्म समाप्यते मे यथा च वै तक्षक एति क्षीघ्रम् । तथा भवन्तः प्रयतन्तु सर्वे परं शक्तया सहि ते विद्विषाणः ॥ ४ ॥ ऋत्विज ऊचुः । यथा शास्त्राणि नःप्राहुर्यथाशंसति पावकः । इन्द्रस्य भवने राजंस्तक्षको भयपीडितः ॥ ५ ॥ यथा सूतो लोहिताक्षो महात्मा पौराणिको वेदितवान् पुरस्तात् । स राजानं प्राह पृष्टस्तदानीं यथाहुर्विप्रास्तद्वदेतन्नृदेव ॥ ६ ॥ पुराणमागम्य ततो ब्रवीम्यहं दत्तं तस्मै वरमिन्द्रेण राजन् । वसेहत्वं मत्सकाशे सुगुप्तोन पावकस्त्वां प्रदहिष्यतीति ॥ ७ ॥ एतच्छ्रुत्वा दीक्षितस्तप्यमान आस्ते होतारं चोदयन् कर्मकाले । होता च यत्तोऽस्याजुहावाथ मन्त्रैरथोमरेन्द्रः स्वयमाजगाम ॥८॥

राजाको वर मांग कहने की इच्छा होने पर होताने कहा इस कर्म में जबतक तक्षक नहीं आता तब तक वरदान न देना चाहिये । ३ । राजा जन्मेजय बोला जिस प्रकार तक्षक शीघ्र आवे और यह मेरा यज्ञ समाप्त होवे उस प्रकार तुम सम्पूर्ण ब्राह्मण अपनी परम शक्ति लगाओ तक्षकही मेरा शत्रु है । ४ । ऋत्विज बोले जिस प्रकार मन्त्रों के देवता या कल्प शास्त्र हम से कहते हैं और जिस प्रकार अग्नि हमको जनाता है उस से हमको विदित होता है कि भय से पीड़ित तक्षक इन्द्र लोकको चलागया है । ५ । जैसे पुराण के जानने वाले लोहिताक्ष नाम महात्मा सूत ने पहिलेही राजा से कहाथा वह ठीक है तब राजा ने उससूत को बुलाकर पूछा और उसने कहा कि जो कुछयह ब्राह्मण कह रहे हैं सो ठीक है । ६ । मैं पहिले कल्पकी कथा को जानकर हे राजन् तुझ से कहता हूं कि इन्द्र ने तक्षक को वरदान दिया है कि हे तक्षक तू मेरे पास रह और यहां पर भली प्रकार तेरी रक्षा होगी और अग्नि तुझको न जला सकैगा । ७ । यह सुनकर राजा अत्यन्त दुःखित हुआ और कर्मके समय होताको प्रेरणा करता हुआ बैठारहा और होताभी

the Brahman a boon, said " What is thy desire ?" The Hota eagerly, said, " Takshak is not come yet." Janmejaya replied, " Try thy best to complete my sacrifice. Bring Takshak, my enemy, soon here." The Ritwijas replied, " We know from the knowledge of Shastras and the (signs made by) Fire that Takshak, afflicted with fear, is at this time in Indra's palace. The illustrious Suta Lohitaksh, scholar of the Purans, had predicted as much before. Questioned by the king he again said, " Sir, the Brahmans speak truely. From my knowledge of the Purans I can say that Indra has promised him ' security from fire ' " Having heard this, the king installed in the sacrifice, became very sorry and urged the Hota to do his duty. The Hota continued to pour butter, with hymns, into the fire. Indra himself appeared on the scene, in his car, adored

विमानमारुह्य महानुभावः सर्वैर्देवैः परिसंस्तूयमानः । बलाहकैश्चाप्यनुगम्यमानो
विद्याधरैरप्सरसां गणैश्च ॥ ९ ॥ तस्योत्तरीये निहितः स नागो भयोद्विग्नः शर्म नै-
वाभ्यगच्छत् । ततो राजा मन्त्रविदोऽब्रवीत्पुनः क्रुद्धोवाक्यं तक्षकस्यान्तमिच्छन ॥
॥ १० ॥ जनमेजय उवाच । इन्द्रस्य भवने विप्रा यदि नागः स तक्षकः । तमिन्द्रेणैव
सहितं पातयध्वं विभावसौ ॥ ११ ॥ सौतिरुवाच । जनमेजयेन राज्ञातु चोदितस्त
क्षकंप्रति । होता जुहाव तत्रस्थं तक्षकं पन्नगंतथा ॥ १२ ॥ हूयमाने तथाचैव तक्षकः
सपुरन्दरः । आकाशे ददृशे चैव क्षणेन व्यथितस्तदा ॥ १३ ॥ पुरन्दरस्तु तं यज्ञं
दृष्ट्वोरुभयमाविशत् । हित्वातु तक्षकंत्रस्तः स्वमेव भवनंययौ ॥१४॥ इन्द्रेगतेतु राजेन्द्र
तक्षको भयमोहितः । मन्त्रशक्त्या पावकार्चिः समीपमवशो गतः ॥ १५ ॥ ऋत्विज
ऊचुः । वर्त्तते तव राजेन्द्र कर्मैतद्विधिवत् प्रभो । अस्मैतु विप्रमुख्याय वरंत्वं दातुम

सावधानता से मन्त्रों से होम करने लगा इस के उपरान्त बड़ा प्रतापी सम्पूर्ण देवता जिनकी स्तुति कररहे हैं और बादल अप्सरा, विद्याधर जिसके पीछे २ आते हैं वह इन्द्र स्वयं आया । ९ । उस के उपरीय वस्त्रों में भय से व्याकुल अपने कल्याण को न देखता हुआ तक्षक था तिस के उपरान्त राजा ब्राह्मणों से तक्षक के नाश करनेकी इच्छा से क्रोधित हो बोला । १० । कि हे ब्राह्मणों जो वह तक्षक सर्प इन्द्र के भवन में है तो उसको इन्द्र सहित अग्नि में डालदो उग्रश्रवा बोला जन्मेजय राजा ने तक्षक को आहुति में आज्ञा देने पर होताने सर्प का आव्हान किया होता के आवाहन करने पर क्षणमात्र में व्याकुल तक्षक आकाश में दीखा । १३ । इन्द्र को उस यज्ञ के देखतेही बड़ा भय प्राप्त हुआ और तक्षक को छोड़ कर आप व्याकुल हो आकाश को चला गया हे राजे-न्द्रइन्द्र के चले जाने से तक्षक अत्यन्त भय से व्याकुल मन्त्र के पराधीन होमकी अग्नि के समीप आगया । १५ । ऋत्विज बोले हे राजेन्द्र तेरा यह यज्ञ का कर्म विधि पूर्वक होरहा है और इस ब्राह्मण को वरदान दे कि हे ब्राह्मण बालक और सुन्दर रूपवाले तुझ

by all the gods standing arround, followed by masses of clouds, celestial singers and Apsaras dancing in the air. Takshak had hidden himself in his garments and did not come out. The king in anger again told the Hota these words—" If Takshak be in the abode of Indra, cast him into the fire with Indra himself." Urged by Janmejaya, the Hota poured libations in the name of Takshak then staying there and Takshak with Indra himself, anxious and afflicated, was seen on the air. Indra was much alarmed at seeing the sacrifice and quickly casting Takshak off, went back. Takshak insensible with fear, was by virtue of the Mantras, drawn nearer the fire. The Ritwijas then said, " Maharaja, this sacrifice of thine is drawing to a

र्हसि ॥१६॥ जनमेजय उवाच। बालाभिरूपस्य तवाप्रमेयं वरं प्रयच्छामि यथानुरूपम्
वृणीष्वयत्तेऽभिमतंहृदि स्थितं तत्ते प्रदास्याम्यपि चेददेयम् ॥ १७ ॥ ऋत्विज ऊचुः
अयमायातितूर्णंस तक्षकस्तेवशंनृप। श्रूयतेऽस्यमहान्नादो नदतोभैरवंरवम् ॥ १८ ॥
नूनंमुक्तोवज्रभृतास नागो भ्रष्टो नाकान्मन्त्रविस्रस्तकायः। घूर्णन्नाकाशे नष्टसंज्ञोऽ-
भ्युपैति तीव्रान्निश्वासान्निःश्वसन् पन्नगेन्द्रः ॥१९॥ सौतिरुवाच। पतिष्यमाणेनागेन्द्रे
तक्षकेजातवेदसि। इदमन्तरमित्येवं तदस्तीकोऽभ्यचोदयत् ॥२०॥ आस्तीकउवाच
वरंददासिचेन्मह्यं वृणोमि जनमेजय। सत्रंतेविरमत्वेतन्न पतेयुरिहोरगाः ॥ २१ ॥
एवमुक्तस्तदातेन ब्रह्मन् पारीक्षितस्तुसः। नातिहृष्टमनाश्चेदमास्तीकं वाक्यमब्रवीत् २२
सुवर्णंरजतंगाश्च यच्चान्यन्मन्यसे विभो। तंतेदद्यांवरंविप्रन निवर्त्तेत् क्रतुर्मम ॥ २३ ॥
आस्तीक उवाच। सुवर्णंरजतंगाश्च नत्वांराजन्वृणोम्यहम्। सत्रंतेविरमत्वेतत् स्व-

को तेरे योग्य वरदान देना चाहता हूं और उस वरदान को मांग जिसे तू चाहता है और जो तेरेहृदय में है और वह वर यदि न देने योग्यभी होगा तौभी मैं तुझको दूंगा। १७। ऋत्विजबोले हेराजन् वह तक्षक शीघ्र तेरेवश होकर चला आताहै और इसका भयानक शब्द सुनाई देरहा है। १८। अवश्य इसको इन्द्र ने छोड़दिया और स्वर्गलोकसे भ्रष्टहोकर और मंत्र से जिसकीकायाशिथिलहोगई है और आकाशमें घूमताहुआ औरबेहोश बड़े२ स्वाशोंको छोड़ताहुआ चलाआताहै १९ उग्रश्रवाबोले सर्पोंके स्वामी तक्षक के अग्निमें गिरनेसे पहिले यहसमयहै ऐसाजानकर आस्तीकने राजासे कहा कि हेजनमेजय यदि तूमुझ को वरदेताहै तो मैं यह वरमांगताहूँ कि अब यह तेरायज्ञ समाप्तहो और अबआहुतिमें आग को सर्प न पड़ें २१ इसप्रकार उसके कहनेपर जनमेजय दुःखितहो आस्तीक से यह वचन बोला २२ हेब्राह्मण सुवर्ण चांदी और जोकुछ तू लेनाचाहताहै मैं सबकुछ तुझको दूँ और यह मेरा यज्ञ न निवृतहो २३ आस्तीक बोला, सुवर्ण चांदी गउएं हे राजन् मैं कुछ नहीं

close, you may now grand boon to the Brahman. Janmejaya then said, "I wish to grant thee boon, O Brahman of child like form. Ask any thing that thou hast set thy heart on and I shall give it to thee even if it be not worthy of being given." The Ritwijas said, "Takshak is coming into thy power, O monarch. We hear his loud roar. Indra has forsaken him certainly, and his body disabled by our Mantras, is falling from heaven. Here comes the Prince of snakes breathing heavily." While Takshak was about to fall down into the fire, Astik said "If thou wouldst grant me a boon, O monatch, stop thy sacrifice snd let no more serpents fall into the fire." On hear-

स्तिमातृकुलस्यनः ॥ २४ ॥ सौतिरुवाच । आस्तीकेनैवमुक्तस्तु राजापारीक्षितस्तदा पुनः पुनरुवाचेदमास्तीकं वदताम्बरः ॥ २५ ॥ अन्यंवरयभद्रंते वरंद्विजवरोत्तम । अयाचतनचाप्यन्यं वरंसभृगुनन्दन ॥ २६ ॥ ततोवेदविदस्तात सदस्याः सर्वएवतम् । राजानमूचुः सहिता लभतां ब्राह्मणो वरम् ॥ २७ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके षट् पंचाशोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

लेना चाहता तेरा यह यज्ञ निवृत्तहो और मेरी माताके कुलका कल्याणहो उग्रश्रवा बोला। आस्तीक के ऐसा कहने पर जन्मेजय ने बारम्बार आस्तीक से कहा कि हेब्राह्मण तेरा भला हो और तू और कुछ वरदानमांग और हे शौनक आस्तीकने इसवरके सिवाय और कुछ न मांगा ।२६। इसके उपरान्त वेदके जाननेवाले वह सम्पूर्ण सभासद एकत्रितहो राजासे कहनेलगे कि हेराजन् यह ब्राह्मण अपने इच्छा के वर को पावे और यज्ञ समाप्तहो २७॥

ing this Janmejaya became very sorry and said, "I shall give you gold, silver or kine, as much as you desire, but do not ask to stop my sacrifice." He repeatedly asked him to name some other boon but the Brahman was obdurate. Then all the Sadasyas, learned in this Vedas, begged the king to grant the Brahman's request."

शौनक उवाच । येसर्पाःसर्पसत्रेऽस्मिन् पतिताहव्यवाहने । तेषांनामानिसर्वेषां श्रोतुमिच्छामिसूतज ॥ १ ॥ सौतिरुवाच । सहस्राणिबहून्यस्मिन् प्रयुतान्यर्बुदानिच नशक्यंपरिसंख्यातुं बहुत्वाद्द्विजसत्तम ॥ २ ॥ यथास्मृति तुनामानि पन्नगानां निबोधमे। उच्यमानानिमुख्यानां हुतानांजातवेदसि ॥३॥ वासुकेःकुलजातांस्तु प्राधान्येन निबोधमे । नीलरक्तान् सितान् घोरान्महाकायान् विषोल्वणान् ॥ ४ ॥ अवशान्मातृवाग्दण्डपीडितान् कृपणान् हुतान् । कोटिशोमानसःपूर्णः शलःपालोहलीमकः ॥५॥ पिच्छलःकौणपश्चक्रः कालवेगःप्रकालनः । हिरण्यबाहुः शरणः कक्षकः कालदन्तकः ॥ ६ ॥ एतेवासुकिजानागाः प्रविष्टाहव्यवाहने । अन्येचबहवोविप्र तथावैकुलसम्भवाः ॥ ७ ॥ प्रदीप्ताग्नौहुताःसर्वे घोररूपामहाबलाः । तक्षकस्यकुलेजातान्प्रवक्ष्यामिनिबोधतान् ॥ ८ ॥ पुच्छाण्डकोमण्डलकः पिण्डसेक्तारभेणकः । उच्छिखःशरभोभंगो वि

अध्याय ५७ ॥

शौनकबोले हे सूत पुत्र जो सर्प इस यज्ञ में भस्म हुए उन सबों के नाम सुननेकी मैं इच्छा करता हूं ।१। उग्रश्रवाबोले सहस्रों और बहुत से प्रयुत, अर्बुद, सर्प जो कि बहुत होने से संख्या नहीं किये जाते जितना मुझ को याद है बस अग्नि में जले एह्रु मुख्य२ सर्पों के नामों को तू सुन ।३। वासुकि के कुलमें उत्पन्न जो प्रधान२ और नीले, लाल सफेद बड़ी देहवाले भयानक विषयुक्त जो सर्प हैं उन को सुन ।४। जो कि माताके शाप से दीन परवश होकर करोड़ों अग्नि में भस्महो गये । मानस, पूर्ण शल, पाल, हलीमक, पिच्छल, कौणप, चक्र कालवेग प्रकालन, हिरण्यबाहु, शरण, कक्षक, कालदन्तक, यहसर्प वासुकि के कुलोत्पन्न, अग्नि में भस्म हुए और हे शौनक औरभी बहुत से उत्तम कुल वाले प्रदीप्त अग्निमें भस्महुए ।७ तक्षक के कुलमें उत्पन्नहुए सर्पोंके नामोंको सुन,पुच्छ,आण्डक, मण्डलक,पिण्डसेक्ता,रभेणक८।उच्छिख,शरभ,भङ्ग,विल्वतेजा,विरोहण,शिलीश,लकर,मूक,

CHAPTER LVII

Shaunak said, "I desire to hear, O Sauti, the names of all those snakes that perished in the snake sacrifice." Sauti replied, "Thousands and millions of snakes were killed in the sacrifice. Indeed number is so large that I can not recapitulate their names. I shall however, name the principal ones, as far as I remember. Hear, first, the names of the principal ones of Vasuki's family alone, of colours blue, red and white, terrible in form, huge of body and of dreadful poison. Kotish, Manasa, Purna, Shala, Pala, Halimak, Pichala, Kaunap, Chakra, Kalveg, Prokalan, Hiranyabahu, Sharan, Kakshak, and Kaldantak, were the sons of Basuki. Besides these there were many others, of terrible form and great strength, burnt in the fire. The following are the names of those that belonged to the race of

ल्वतेजाविरोहणः ॥ ९ ॥ शिलीशलकरोमूकः सुकुमारःप्रवेपनः । मुद्गरःशिशुरोमाच सुरोमाचमहाहनुः ॥ १० ॥ एतेतक्षकजानागाः प्रविष्टा हव्यवाहनम् । पारावतःपारियात्रः पाण्डरोहरिणःकृशः ॥ ११ ॥ विहङ्गःशरभोमेदः प्रमोदःसंहतापनः । ऐरावतकुलादेते प्रविष्टाहव्यवाहनम् ॥ १२ ॥ कौरव्यकुलजान्नागान्शृणु मेत्वंद्विजोत्तम । एरकःकुण्डलोवेणी वेणीस्कन्धःकुमारकः ॥ १३ ॥ बाहुकःशृंगवेरश्च धूर्त्तकःप्रातरातकौ कौरव्यकुलजास्त्वेते प्रविष्टाहव्यवाहनम् ॥ १४ ॥ धृतराष्ट्रकुले जातान्शृणुनागान् यथातथम् । कीर्त्यमानान्मयाब्रह्मन् वातवेगान् विषोल्बणान ॥ १५ ॥ शंकुकर्णःपिठरकः कुठारसुखसेचकौ । पूर्णांगदःपूर्णमुखः प्रहासः शकुनिर्दरिः ॥ १६ ॥ अमाहठः कामठकः सुषेणोमानसोव्ययः । भैरवोमुण्डवेदांगः पिशंगश्चोद्रपारकः ॥१७ ॥ ऋषभोवेगवान्नागः पिण्डारकमहाहनू । रक्तांगःसर्वसारंगः समृद्धः पटवासकौ ॥ १८ ॥

सुकमार,प्रवेपन, ।९। मुद्गर,शिशुरोमा,सुरोमा,महाहनु,यह तक्षकके कुलोत्पन्न सर्प अग्निमें भस्म हुए।१०। पारावत, पारियात, पाण्डर,हरिण, कृष,विहंग,शरभ, मेद,प्रमोद, संहतापन ।११। यह ऐरावत के कुल के सर्प अग्नि में नष्ट हुए और हे शौनक कौरव्यनागके कुलके सर्पों को तू सुन एरक, कुण्डल, वेणी, वेणीस्कन्ध,कुमारक, वाहुक, शृङ्गवेर, धूर्तक, प्राता और आतक ।१३। यह कौरव्य कुल के सर्प अग्नि में नष्ट हुए अब धृतराष्ट्र के कुलोत्पन्न जो कि वायुकी समान वेग वाले और बड़े विषयुक्त सर्प हैं उनको मैं यथार्थ रीति से कहता हूँ तू सुन शंकुकरण, पिठरक,कुठार, सुख सेचक ।१५। पूर्णाङ्गद, पूर्णमुख,प्रहास, शकुनिदरि, असाहट, कामठक, सुषेण, मानस, अव्यय । १६ । भैरव, मुण्ड, पिशंग, उद्रपारक, ऋषभ, वेगवान, पिंडारक, महाहनु । १७ । रक्तांग, सर्वसारंग, समृद्ध, पठ-

---

Takshak:— Puchandak, Mandlak, Pindsekt, Revenak, Uchikh, Sharva Vang, Vilwatej, Virohan, Shili, Shali, Karmukh, Sukumar, Pravepana, Mudgar, Shishurom and Mah-hanu. The following offspring of Airawat fell into the fire:— Parvat, Pareyat, Pandra, Harin, Krish, Vihang, Sharva, Meda, Pramod, Sinha tapan. The following belonged to Kauravya race,—Erak, Kundal, Veni, Voniskandh, Kumarak, Vahuk, Sringvar, Dhurtak, Prata, and Atak. The following are the names of the snakes, of swift speed and poisonous, born of Dhritrashtra: Shankukarn, Pitharak, Kuthar, Sukhsechak, Purangad, Purnamukh, Prahas, Shakuni, Dari, Amahath, Kamthak, Sushen, Mansa, Avya, Vairav, Mundvedanga, Pishang, Udraparak, Rishev, Begvan, Pindarak, Mahahanu, Raktang, Sarvasrang, Samridh, Pathvasak, Varahak, Viranak, Suchitra, Chitravegik, Parashar, Tarunak, Maniskand and Aruni. I have told you, O

वराहकोवीरणकः सुचित्रश्चित्रवेगिकः। पराशरस्तरुणको मणिःस्कन्धरतथारुणिः १९
इतिनागामयाब्रह्मन् कीर्त्तिताःकीर्त्तिवर्द्धनाः। प्राधान्येनबहुत्वात्तु नसर्वेपरिकीर्तिताः
॥ २० ॥ एतेषांप्रसवोयश्च प्रसवस्यचसन्ततिः। नशक्यंपरिसंख्यातुं येदीप्तंपावकंग-
ताः ॥ २१ ॥ त्रिशीर्षाः सप्तशीर्षाश्च दशशीर्षास्तथापरे। कालानलविषाघोरा हुताः
शतसहस्रशः ॥ २२ ॥ महाकायामहावेगाः शैलशृङ्गसमुच्छ्रयाः। योजनायामविस्ता
रा द्वियोजनसमायताः ॥ २३ ॥ कामरूपाः कामबला दीप्तानलविषोल्वणाः। द-
ग्धास्तत्रमहासत्रे ब्रह्मदण्डनिपीडिताः ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वण्यास्तीके सप्तपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

वासक, वराहक, वीरणक, सचित्र, चित्रवेगिक। १८। पराशर, तरुणक, मणि, स्कन्ध, अरुणि, हेब्राह्मण कीर्त्तिके बढानेवाले यह सर्प प्रधान २ मैंने तुमसे कहे हैं और बहुत होनेसे सब नहीं कहे इनकी सन्तान और सन्तानकी सन्तान जोकि अग्नि में भस्महोगये हैं वह गिननेमें नहीं आसकतेहैं कोई तीन सिर कोई सातसिर कोई दस सिर के। २१। जो कि प्रलयकी अग्नि के समान विषवाले भयानक हजारों भस्महोगये, बड़ी कायावाले और वेगवाले ऊंचे पहाड़ों के शिखरोंके समान थे और कोई एकयोजन लम्बे कोईदोयोजन थे और इच्छा सदृश रूप बनानेवाले और इच्छा सदृश बलवाले अग्नि के समान तेजस्वी बड़े विषवाले उस बड़े सर्प यज्ञ में माताके शाप से पीड़ित भस्महोगये २६ ॥

Barhman, the names of the principle and famous. I cannot tell all, the number being countless, The sons and grandsons of these snakes were many that fell into the fire. Some of them who had seven or ten heads and were poisonous like the hell fire were burnt by thousands. Other of huge bodies, of great speed, tall as mountain peaks, capable of assuming any form and of mustering any strength, of poison like the blazing fire, afflicted by the curse of their mother, were burnt in the great fire of the sacrifice."

सौतिरुवाच ॥ इदमत्यद्भुतंचान्य दास्तीकस्यानुशुश्रुम । तथावरैश्छन्द्यमाने राज्ञापारीक्षितेनहि ॥ १ ॥ इन्द्रहस्ताच्च्युतोनागः खएवतदतिष्ठत । ततश्चिन्तापरो राजा बभूवजनमेजयः ॥ २ ॥ हूयमाने भृशन्दीप्ते विधिवत्पावकेतदा । नस्मसम्प्रापत द्वह्नौ तक्षकोभयपीडितः ॥ ३ ॥ शौनक उवाच । किंसूततेषां विप्राणां मन्त्रग्रामो मनीषिणाम् । नप्रत्यभात्तदाग्नौयत् सपपातनतक्षकः ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच ॥ तमिन्द्रहस्ताद्विस्रस्तं विसंज्ञंपन्नगोत्तमम् । आस्तीकस्तिष्ठतिष्ठेति वाचस्तिस्रोऽभ्युदीरयत् ॥ ५ ॥ वितस्थेसोऽन्तरिक्षेच हृदयेनविदूयता । तथातिष्ठतिवैकश्चित् खञ्चगांचांतरानरः ॥ ६ ॥ ततोराजाब्रवीद्वाक्यं सदस्यैश्चोदितोभृशम् । काममेतद्भवत्वेवं यथास्तीकस्यभाषितम् ॥ ७ ॥ समाप्यतामिदंकर्म पन्नगाःसन्त्वनामयाः । प्रीयतामयमास्तीकः सत्यंसूतवचोऽस्तुतत् ॥ ८ ॥ ततोहलहलाशब्दः प्रीतिदःसमजायत । आस्ती

अध्याय ५८ ॥

उग्रश्रवा बोले यह औरभी आस्तीक का अद्भुत प्रताप हमने सुना है उस जनमेजय के वरदान देते समय इन्द्र के हाथ से छूटा हुआभी तक्षक आकाश में ही स्थित रहा तब राजा जन्मेजयको बड़ी भारी चिन्ता प्राप्त हुई । २ । विधि पूर्वक प्रदीप्त अग्नि होम होने परभी भयसे व्याकुल अग्नि में तक्षक न गिरा । ३ । शौनक बोले कि हे सूत उन विद्वान् ब्राह्मणों के मन्त्रों का समूह क्या न प्रकाशमानथा जो वह तक्षक अग्नि में न गिरा । ४ । उग्रश्रवा बोला इन्द्र के हाथ से पृथक् और व्याकुल सर्पों में श्रेष्ठ तक्षक से आस्तीक ने तीनबार "तिष्ठ, तिष्ठ," अर्थात् ठहरजाओ कहाथा । ५ । इसकारण वह तक्षक दुःखित हृदय के साथ आकाश में स्थित होगया जैसे कोई आकाश व पृथ्वी के मध्य में खड़ा रहे । ६ । तब राजा जन्मेजय सभासदों की प्रेरणा से यह वचन बोला कि जो कुछ आस्तीक ने कहा है वह उसी प्रकार हो । ७ । यह कर्म समाप्त किया जाय और सर्पों का कल्याण होवे और यह आस्तीक प्रसन्न होवे और सूतका वचन सत्यहो । ८ । तिस

CHAPTER LVIII

Sauti continued, "Hear now another very wonderful anecdote of Astik: When king Janmejaya was about to gratify his desire, Takshak coming down towards the fire, stopped in mid air and in spite of the libations did not fall down into it." Shaunak said, "Was it, O Sut, that the Mantras of the wise Brahmans were not propitious, that Takshak did not fall into fire?" Sauti replied, "When Takshak was falling off from Indra's hands, Astik had thrice said to him the word 'stop' and he actually remained pending in the midst of the sky and the earth. The king repeatedly entreated by his Sadasyas, said, "Do as Astik says. Stop the sacrifice to the gratification of Astik and the safety of Takshak. Thy words,

कस्यचरेद्ते तथैत्रोपरराम च ॥ ९ ॥ सयज्ञःपाण्डवेयस्य राज्ञःपारिक्षितस्यह । प्रीतिमांश्चाभवद्राजा भारतोजनमेजयः ॥१०॥ ऋत्विग्भ्यः ससदस्येभ्यो येतत्रासन् समागताः । तेभ्यश्चप्रददौवित्तं शतशोऽथसहस्रशः ॥११॥ लोहिताक्षाय सूताय तथास्थपतये विभुः । येनोक्तंतस्यतत्राग्रे सर्पसत्रनिवर्त्तने ॥ १२ ॥ निमित्तंब्राह्मणइति तस्मै वित्तंददौबहु । दत्वाद्रव्यंयथान्यायं भोजनाच्छादनान्वितम् ॥ १३ ॥ प्रीतस्तस्मैनरपतिरप्रमेयपराक्रमः । ततश्चकारावभृथं विधिदृष्टेनकर्मणा ॥ १४ ॥ आस्तीकंप्रेषयामास गृहानेवसुसंस्कृतम् । राजाप्रीतमनाःप्रीतं कृतकृत्यंमनीषिणम् ॥ १५ ॥ पुनरागमनंकार्य्य मिति चैनंवचोऽब्रवीत् । भविष्यसिसदस्योमे वाजिमेधे महाक्रतौ ॥१६॥ तथेत्युक्त्वाप्रदुद्राव तदास्तीकोमुदायुतः । कृत्वास्वकार्य्यमतुलं तोषयित्वाचपार्थिवम् ॥ १७ ॥ सगत्वापरमप्रीतो मातुलंमातरञ्चताम् । अभिगम्योपसंगृह्य तथावृत्तंन्यवेद

के उपरान्त एक बड़ा भारी शब्द सबको प्रसन्न करने वाला हुआ और उसको वरदान देते समय यज्ञभी समाप्त होगया पांडवोंकी सन्तान परीक्षित के पुत्र राजा जन्मेजय के यज्ञ समाप्त होने पर राजा जन्मेजय प्रसन्न हुआ ऋत्विक और सभासदों और अन्योंको राजा ने बहुतसा धन दिया, और राजा ने लोहिताक्ष सूतको जो कि कारीगर था जिसने राजा के समीप कहा था कि यह यज्ञ ब्राह्मण के कारण पूर्ण न होगा उसको बहुतसा धन दिया । १२ । भोजन और वस्त्रादि से यथायोग्य धन उसको देकर उसपर प्रसन्न हुआ अतुल पराक्रम वाले जन्मेजय ने शास्त्र विधिसे यज्ञान्त स्नान किया । १४ । और प्रसन्न चितवाले राजा ने इस प्रकार आस्तीक को अपने घरको विदा किया । १५ । और कहा कि तुम फिर आकर मेरे अश्वमेधयज्ञ में बड़े सभासद् बनोगे । १६ । तब प्रसन्नतायुक्त आस्तीक अस्तु कहकर और राजा को प्रसन्न कर चला गया । १७ । और उस प्रसन्न आस्तीक ने घर जाकर अपने मामा वासुकि और माता के समीप जाकर सब

O Sut have proved true." When the king had granted the boon to Astik, the air resounded with the cries of joy and the sacrifice came to an end. King Janmejaya was himself pleased and bestowed large sums of money on the Ritwijas, the Sadasyas and all who had come. The king gave much wealth to the Sut Lohitaksh, well versed in architecture, who had foretold that the sacrifice would be interrupted by a Brahman. He gave various articles of food and dress to the learned Astik also and sent him home exceedingly gratified. Janmejaya invited Astik to come again as Sadasya at the occasion of his great horse-sacrifice. Having achieved his great object and given a promise to the king to come back to him, Astik returned home with a joyful heart. and having touched the feet of his uncle and mother told them all that had happened. The snakes were much delighted

यत् ॥ १८ ॥ सौतिरुवाच । एतच्छ्रुत्वाप्रीयमाणाःसमेता येतत्रासन् पन्नगावीतमोहाः
आस्तीकेवैप्रीतिमन्तो बभूवुरूचुश्चैनं वरमिष्टंवृणीष्व ॥ १९ ॥ भूयोभूयः सर्वशस्तेऽ-
ब्रुवंस्तंकिंते प्रियंकरवामाद्यविद्वन् । प्रीतावयंमोक्षिताश्चैवसर्वे कामंकिंते करवामाद्यव
त्स ॥ २० ॥ आस्तीक उवाच । सायंप्रातर्ये प्रसन्नात्मरूपा लोकेविप्रामानवा येपरे
ऽपि । धर्माख्यानंयेपठेयुर्ममेदं तेषांयुष्मन्नैव किञ्चिद्भयंस्यात् ॥ २१ ॥ तैश्चाप्युक्तो
भागिनेयः प्रसन्नैरेतत्सत्यं काममेवंवरंते । प्रीत्यायुक्ताःकामितंसर्वशस्ते कर्तारः स्म
प्रवणाभागिनेय ॥ २२ ॥ असितं चार्तिमंतंच सुनीथंचापियःस्मरेत् । दिवावायदि-
वारात्रौ नास्यसर्पभयंभवेत् ॥२३॥ योजरत्कारुणाजातो जरत्कारौमहायशाः । आस्ती
कःसर्पसत्रेवः पन्नगान्योऽभ्यरक्षत । तंस्मरन्तंमहाभागान मांहिंसितुमर्हथ ॥२४॥ स

वृत्तान्त विस्तार पूर्वक कहा । १८ । उग्रश्रवा बोले ! सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर जो सर्प वहां एकत्रित थे प्रसन्न होकर आस्तीक से अपनी इच्छानुसार वर मांग कहने लगे । १९। और बारम्बार वह सब सर्प एकत्रितहो उससे कहने लगे कि हे विद्वान् हमतेरे किस प्रिय कार्यको करें हम सब प्रसन्न और हम सबको तूने बड़ी आपत्ति से छुड़ा दिया है हेपुत्र कह अब क्या तेरा कार्य है जिसको हम करें, आस्तीक बोला । २० । जो प्रसन्न चित्त हुएहो तो जो ब्राह्मण या और मनुष्य सायंकाल और प्रातःकाल इस मेरी कथाको पढ़े उनको तुम से कुछभी भय नहो । २१ । उन सर्पों ने कहा कि हे भांजे प्रसन्न होकर हम कहते हैं कि तेरा यह वरदान सत्यहोवे प्रीतियुक्त और नम्र होकर हम तेरी इच्छाको पूर्ण करेंगे । २२ ।जो पुरुष असित और अर्तिमन्त और सुनीथ नामोंको दिन या रात्रि में स्मरणकरेगा उसको सर्पकाभय नहोगा । २३ । जो मनुष्य जरत्कारु पिता और जरत्कारु मातासे उत्पन्न हुए और बड़े यशवाले आस्तीक को ।जिसने सर्पयज्ञमें सर्पोंकीरक्षाकी स्मरण करेगा और यह कहेगा कि हे बड़े भागवाले सर्पो मुझको मत मारो । २४ ।

on hearing this and their fears vanished. They were very kind to Astik and asked him to solicit a boon. They repeatedly said, " What good shall we do thee, learned man ? We have been very much gratified by thee. Thou hast saved us all." Astik replied, " Those Brahmans and others who shall in the morning and the evening, cheerfully and attentively, read this my holy deed, should have no fear from you." The snakes joyfully said, " It shall be, nephew, as you say and those who will remember Astik, Artiman and Sunith, by day or night, shall have no fear from snakes. He also will be free from fear who says, ' I recall to my mind ' the famous Astik, born of the two Jaratkarus, who saved the snakes from the sacrifice. It is not proper for you, O snakes of good fortune, to bite me. Go away blessed snake of deadly poison and remember the words of

र्पापसर्पभद्रंते गच्छसर्पमहाविष । जनमेजयस्ययज्ञांते आस्तीकवचनंस्मर ॥ २५ ॥ आस्तीकस्यवचःश्रुत्वा यःसर्पोननिवर्त्तते । शतधाभिद्यतेमूर्ध्नि शिंशवृक्षफलंयथा २६ सौतिरुवाच । सएवमुक्तस्तुतदा द्विजेन्द्रः समागतैस्तैर्भुजगेन्द्रमुख्यैः । संप्राप्यप्रीतिंविपुलांमहात्मा ततोमनोवै गमनायाथदध्रे ॥ २७ ॥ मोक्षयित्वातुभुजगान् सर्पसत्राद्द्विजोत्तमः । जगामकालेधर्मात्मा दिष्टान्तं पुत्रपौत्रवान् ॥ २८ ॥ इत्याख्यानंमयास्तीकं यथावत्तवकीर्त्तितम् । यत् कीर्त्त यित्वासर्पेभ्यो नभयंविद्यतेक्वचित् ॥ २९ ॥ सौतिरुवाच॥यथाकथितवानत्रह्मन प्रमतिःपूर्वजस्तव । पुत्रायरुरवेप्रीतः पृच्छतेभार्गवोत्तम ॥३०॥ यद्वाक्यंश्रुतवांश्चाहं तथाचकथितंमया । आस्तीकस्यकवेर्विप्र श्रीमच्चरितमादितः ॥ ३१ ॥ श्रुत्वाधर्मिष्ठमाख्यान मास्तीकंपुण्यवर्द्धनम् । यन्मांत्वंपृष्टवान्

और हे बड़े विषवाले सर्प तू यहांसे चलाजा और तेराभलाहो जन्मेजय के यज्ञ के उपरान्त आस्तीक के वचन को यादकर । २५ । आस्तीक के वचनको सुनकर जो सर्प न लौटजाय उस सर्प के शिर के सौ टुकड़ेहोजाते हैं जैसे शिंशवृक्ष के फल के होजातेहैं २६ उग्रश्रवाबोले, इसप्रकार एकत्रितहुए सर्पों में श्रेष्ठ मुख्य सर्पोंसे ऐसा कहनेपर आस्तीक ने बड़ी प्रसन्नताको प्राप्तहो वहांसे जाने का मन में विचार किया । २७ । उसब्राह्मणने सर्पयज्ञसे सर्पोंको छुटाकर और समय के आनेपर पुत्र और पौत्रोंसे युक्तहो परलोकको गमन किया ।२८। इसप्रकार यथार्थ रीति से मैंने आस्तीक का आख्यान तुम से कहदिया जिसका कीर्तनकर सर्पोंसे कभी भय नहीं होता । २९ । उग्रश्रवाबोले, हे शौनक जैसा तेरे पूर्वज प्रमति से पूछते हुए अपने पुत्र रुरु से कहाथा और जैसा मैंने सुनाथा वह सम्पूर्ण आस्तीक विद्वान् का चरित्र आदि से ही मैंने तुझसे कह दिया । ३१ । हेब्रह्मन्

Astik after the snake sacrifice of Janmejaya.' The snake who does not mind this, shall have his hood broken into a hundred fragments like the Shinsha fruit." Astika was much pleased on hearing this from the snakes and then resolved to go away from amongst them. And that best of Brahmans having saved the snakes from the sacrifice, ascended to heaven at his proper time, leaving sons and grandsons behind him. The History of Astik has been exactly described. Its recitation dispells all fear. Sauti continued, "O Brahman, foremost of the Bhrigu race as thy ancestor Pramati had cheerfully narrated it to his enquiring son Ruru and as I had heard it, so I have repeated the history of the learned Astik from the beginning. Having heard this history that increases virtue,

ब्रह्मन श्रुत्वाडुण्डुभभाषितम् । व्येतुतेसुमहद्ब्रह्मन् कौतूहलमरिन्दम ३२ ॥

इत्यादिपर्वणिसर्पसत्रं समाप्तं समाप्तञ्चास्तीकपर्व अष्टपंचाशोऽध्यायः ५८ ॥

अथ वंशावतरण पर्व ॥

शौनक उवाच ॥ भृगुवंशात्प्रभृत्येव त्वया मेकीर्त्तितंमहत् । आख्यानमखिलं तात सौतेप्रीतोऽस्मितेनते ॥ १ ॥ वक्ष्यामिचैवभूयस्त्वां यथावत्सूतनन्दन । याःकथाव्याससम्पन्नास्ताश्चभूयोविचक्ष्वमे ॥२॥ तस्मिन्परमदुष्पारे सर्पसत्रेमहात्मनाम् कर्मान्तरेषुयज्ञस्य सदस्यानांतथाध्वरे ॥३॥ यावभूवुःकथाश्चित्राः येष्वर्थेषुयथातथम् त्वत्तइच्छामहेश्रोतुं सौतेत्वंवप्रचक्ष्वनः ॥ ४ ॥ सौतिरुवाच ॥ कर्मान्तरेष्वकथयन् द्विजा वेदाश्रयाःकथाः । व्यासस्त्वकथयच्चित्र माख्यानंभारतंमहत् ॥ ५ ॥ शौनक उवाच ॥ महाभारतमाख्यानं पाण्डवानांयशस्करम् । जनमेजयेनपृष्टःसन् कृष्णद्वैपा

जो तूने डुण्डुभ के भाषण को सुनकर मुझ से पूछाथा उस पवित्र और पुण्य के बढाने वाले आस्तीकके आख्यानको सुनकर तेरेमनका सम्पूर्ण आश्चर्य दूरहो ३२ ॥

अंशावतरण पर्व ॥

अध्याय ५९ ॥

शौनकबोले हेसूत तूने भृगुवंशका मुझसे बड़ा उत्तम आख्यान कहा मैं तुझसे अति प्रसन्नहूं । १ । फिर हेसूतपुत्र जो कथा व्यास ने कही हैं उनको फिर तू मुझ से यथार्थ रीति से कह । २ । उस बड़े और दुष्पार सर्पयज्ञ में कर्म के मध्यसभासदोंकी जो विचित्र जिन जिन विषयोंमें वार्तालापहुई उनको मैं तुझसे सुननेकी इच्छा करताहूं तू मुझसे कह । ४ । उग्रश्रवाबोले कर्मके मध्य में ब्राह्मणोंकी वेदसम्बन्धी बहुतप्रकारकी बातेंहोतीरहीं और व्यास ने तो कर्मके मध्य में भारत के बड़े बड़े आख्यानोंको कहा ५ शौनकबोले जो कि पाण्डवों के यशका बढानेवाला महाभारतका आख्यान है जिस को

---

and which after hearing the story of Dundubh, thou hadst asked me to relate, let thy curiosity be satisfied,"

CHAPTER LIX

VANSHAVATARAN PARV

Shaunak said "Thou hast told me, child the history of the race of Bhrigu from the beginning and it has gratified me to a large extent. You may be pleased to recite the history composed by Vyas the various and wonderful narrations, recited at the snake sacrifice. among Sadasyas, in the intervals of the duties of that long sacrifice." Sauti replied, "The Brahmans conversed on many subjects relating to the Vedas, in the interval of their duties. But Vyas related the wonderful history of the Mahabharat." Shaunak said, "Please

यनस्तदा ॥ ६ ॥ श्रावयामास विधिवत्तदाकर्मान्तरेतुसः । तामहं विधिवत्पुण्यां श्रोतु मिच्छामि वैकथाम् ॥७॥ मनःसागरसम्भूतां महर्षेर्भावितात्मनः । कथयस्वसतांश्रेष्ठ सर्वरत्नमयीमिमाम् ॥ ८ ॥ सौतिरुवाच ॥ हन्ततेकथयिष्यामि महदाख्यानमुत्तमम् । कृष्ण द्वैपायनमतं महाभारतमादितः ॥ ९ ॥ शृणुसर्वमशेषेण कथ्यमानंमया द्विज । शंसितुंतन्महान्हर्षो ममापीहप्रवर्त्तते १० ॥

इत्यादिपर्वण्यादिवंशावतरणपर्वणि कथानुबन्धेएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

जन्मेजय के पूछनेपर व्यासजीने कर्मके मध्य में विधिपूर्वक श्रवणकराया उस पवित्रकथा को मैं हेसूत तुमसे सुननेकी इच्छा करताहूं । ७ । उसशुद्ध आत्मावाले व्यास के मन रूपी समुद्र से उत्पन्न और सम्पूर्ण रत्नोंसे भरीहुई इसमहाभारतकी कथाको ए सम्पूर्ण सज्जनोंमें श्रेष्ठ सूत तू कह उग्रश्रवाबोले जोकि व्यासका मत महाभारतका बड़ा उत्तम आख्यान है उसको मैं प्रसन्नता से तेरेपास कहूंगा और तू मेरेकहेहुए सम्पूर्ण आख्यान को श्रवण कर और जिसके कहने से मेरा मन अति प्रसन्नहोता है १० ॥

recite the sacred history called the Mahabharat, spreading the fame of the Pandavas, which was recited by Vyas, at the request of king Janmejaya. That history is the produce of the great rishi, of soul purified by Yog. Please tell us that history, Sauti, for my thirst has not been appeased by all that thou hast said." Sauti said, "I shall recite from its very beginning the great and excellent history, called the Mahabharat, composed by Vyas. Please give your fullest attention to what I say? I my self fell much pleasure in repeating it."

सौतिरुवाच ॥ श्रुत्वातुसर्पसत्राय दीक्षितंजनमेजयम् । अभ्यगच्छदृषिर्विद्वान् कृष्ण द्वैपायनस्तदा ॥ १ ॥ जनयामासयंकाली शक्तेःपुत्रात्पराशरात् । कन्यैवयमुना द्वीपे पाण्डवानांपितामहम् ॥ २ ॥ जातमात्रश्चयःसद्य इष्टयादेहमवीवृधत् । वेदांश्चाधिजगेसांगान् सेतिहासान्महायशाः ॥ ३ ॥ यन्नैतितपसाकश्चिन्नवेदाध्ययनेनच । न व्रतैर्नोपवासैश्च नमसूत्यानमन्युना ॥ ४ ॥ विव्यासैकंचतुर्द्धायो वेदंवेदविदाम्वरः । परावरज्ञोब्रह्मर्षिः कविःसत्यव्रतःशुचिः ॥ ५ ॥ यःपाण्डुंधृतराष्ट्रंच विदुरंचाप्यजीजनत् । शान्तनोःसन्ततिंतन्वन पुण्यकीर्त्तिर्महायशाः ॥ ६ ॥ जनमेजयस्यराजर्षेः स महात्मासदस्तथा । विवेशसहितःशिष्यैर्वेदवेदांगपारगैः ॥ ७ ॥ तत्रराजानमासीनं ददर्शजनमेजयम् । वृतंसदस्यैर्बहुभिर्देवैरिवपुरन्दरम् ॥ ८ ॥ तथामूर्द्धाभिषिक्तैश्च

अध्याय ६० ॥

उग्रश्रवा बोला सर्प यज्ञके लिये दीक्षा लिये हुए जन्मेजय को सुनकर विद्वान् व्यास ऋषि वहां गये १ जिस व्यास को कन्याही कालीने शक्ति के पुत्र पराशर के द्वारा यमुना द्वीपमें उत्पन्न किया जिस व्यास ने उत्पन्न होतेही इच्छानुसार अपनी देहको बढा लिया और अंगों सहित वेदों और इतिहासों को उस महायशवाले ने प्राप्त किया जो वस्तु तपस्या वेद के पढ़ने व्रतों उपवासों उत्तम कुलमें जन्महोने यज्ञ करने से नहीं प्राप्त हो सकती उस आत्म विद्याको भी उसने जान लिया ४ निरुपाधि सोपाधि ब्रह्मका जाननेवाला और ब्रह्मर्षि कवि सत्यव्रत शुचि वेद के जानने वालों में श्रेष्ठ व्यास ने एक वेद के चार विभाग किये और जिसने पांडुधृतराष्ट्र और विदुर को पैदा किया और जिस पवित्र कीर्ति बड़े यशवाले ने शान्तनुवंशकी वृद्धिकी ६ और राजर्षि जन्मेजय के सभामंडप में वेद वेदांगों के जानने वाले शिष्यों सहित प्रवेश किया ७ उसमंडपमें सभासदों राजाओं और ब्रह्माके सदृश यज्ञ

CHAPTER LX

Sauti continued:— Hearing that Jenmejaya had commenced the snake sacrifice there came the learned Rishi Vyas the progenitor of the Pandavas, who was born in an island of the Yamna, of Kali and Parashar. He mastered the Vedas with their branches and the histories, as he grew up. By his asceticism, study of the Vedas, vows, progeny and sacrifices, he obtained what no one else could. The foremost of those learned in the Vedas divided them into four parts. The Brahmarshi had knowledge of the Supreme Brahma, knew the past by Intuition, was holy and loved truth. Of sacred deeds and great fame, he became the progenitor of Pandu Dhritrashtra and Vidur for the continuation of the race of Shantanu. Such was the high souled Rishi who with his learned desciples entered the shed erected for the sacrifice of Janmejaya. He saw the the king seated on the sacrifice platform. like Indra, surrounded by

नानाजनपदेश्वरैः । ऋत्विग्भिर्ब्रह्मकल्पैश्च कुशलैर्यज्ञसंस्तरे ॥ ९ ॥ जनमेजयस्तु
राजर्षिर्दृष्ट्वा तमृषिमागतम् । सगणोऽभ्युद्ययौ तूर्णंप्रीत्याभरतसत्तमः ॥ १० ॥ कांच
नंविष्टरंतस्मै सदस्यानुमतः प्रभुः । आसनंकल्पयामास यथाशक्रोबृहस्पतेः ॥ ११ ॥
तत्रोपविष्टंवरदं देवर्षिगणपूजितम् । पूजयामासराजेन्द्रः शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ १२ ॥
पाद्यमाचमनीयंच अर्घ्यंगांचविधानतः । पितामहायकृष्णाय तदर्हायन्यवेदयत् ॥ १३ ॥
प्रतिगृह्यतुतांपूजां पाण्डवाज्जनमेजयात् । गांचैवसमनुज्ञाप्य व्यासःप्रीतोऽभवत्तदा ॥
॥ १४ ॥ तथाचपूजयित्वातं प्रणयात् प्रपितामहम् । उपोपविश्यप्रीतात्मा पर्य्यपृच्छ
दनामयम् ॥ १५ ॥ भगवानपितंदृष्ट्वा कुशलंप्रतिवेद्यच । सदस्यैःपूजितःसर्वैः सदस्या
नभ्यपूजयत् ॥ १६ ॥ ततस्तुसहितःसर्वैः सदस्यैर्जनमेजयः । इदंपश्चाद्द्विजश्रेष्ठं
पर्य्यपृच्छत्कृतांजलिः ॥ १७ ॥ जनमेजय उवाच । कुरूणांपाण्डवानांच भगवान्प्रत्य
क्षदर्शिवान् । तेषांचरितमिच्छामि कथ्यमानं त्वयाद्विज ॥ १८ ॥ कथं समभवद्भेद

कराने में चतुर ऋत्विजोंसे युक्त राजाको देवताओंसे घिरेहुए इन्द्रकीसमान देखा उसऋषि
को आयाहुआ देखकर राजर्षि जन्मेजयने शीघ्र मन्त्रियोंसहित खड़ाहो सुवर्णजटित आसन
दिया जैसे इन्द्र बृहस्पति को आसन देते हैं ११ श्रेष्ठ राजा जन्मेजय ने उस आसन पर
बैठेहुए देवताओं से पूजित व्यासजीका शास्त्रकी विधि से पूजन किया १२ और पाद्य
आचमन अर्घ्य, गौ, पूजाके अधिकारी व्यास पितामह के अर्पणकिया १३ पाण्डव जन्मेजयने
उसपूजाको प्रसन्नता पूर्वक गृहण किया १४ इसप्रकार व्यासकी पूजा करके अपने प्रपितामह
व्यासजी से नम्रता पूर्वक कुशल पूछी १५ भगवान् व्यासजी ने भी राजासे कुशल कहकर
सम्पूर्ण सभासदों से प्रति पूजाकी १६ तत्पश्चात् सम्पूर्ण सभासदों सहित हाथजोड़ कर
व्यासजी से यह प्रश्न किया ॥ १७ ॥ जनमेजयने कहा हे व्यास कौरवों और पाण्डवों
के चरित्रों को आपने प्रत्यक्ष देखा है मैं आप से उसको सुनना चाहता हूँ ॥ १८ ॥

numerous Sadasyas, by the kings of various countries, sitting in reverence head down wards and by competent Ritwijas like Brahma himself. The best of the Bharat race, the royal sage Janmejaya, beholding the Rishi, advanced cheerfully with his kinsmen and with the approval of Sadasyas gave the Rishi a golden seat like Indra to Vrihaspati. And as the Rishi, capable of granting boons and by the god rishis had been seated, the Maharaja worshipped him according to the rites of the holy books and washed his feet and offered him Achman, Argh and cows. The rishi accepted the offerings but ordered that no cows should be slain and was much pleased with the king. After these adorations the king sat near him and cheerfully asked about his welfare. The illustrious Rishi asked about the king's welfare in return and paid his respects to the

स्तेषामक्लिष्टकर्मणाम् । तच्चयुद्धंकथंवृत्तं भूतान्तकरणंमहत् ॥ १९ ॥ पितामहानां सर्वेषां दैवेनानिष्टचेतसाम् । कार्त्स्न्येनैतन्ममाचक्ष्व यथावृत्तंद्विजोत्तम ॥ २० ॥ सौतिरुवाच । तस्यतद्वचनंश्रुत्वा कृष्णद्वैपायनस्तदा । शशासशिष्यमासीनं वैशम्पायनमन्तिके ॥ २१ ॥ व्यास उवाच । कुरूणांपाण्डवानांच यथाभेदोऽभवत्पुरा । तदस्मै सर्वमाचक्ष्व यन्मत्तःश्रुतवानसि ॥ २२ ॥ गुरोर्वचनमाज्ञाय सतु विप्रर्षभस्तदा । आचचक्षेततः सर्वमितिहासं पुरातनम् ॥ २३ ॥ राज्ञेतस्मैसदस्येभ्यः पार्थिवेभ्यश्च सर्वशः । भेदंसर्वविनाशञ्च कुरुपाण्डवयोस्तदा ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वण्यादिवंशावतरणपर्वणि षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

और उन राग द्वेष रहित महात्माओंका आपस में कैसे भेदहुआ तथा सम्पूर्ण प्राणियों का अन्त करनेवाला उनका बड़ा युद्ध क्यों प्रवृत्तहुआ, दैवसे जिनकी बुद्धि नष्टहोगईथी ऐसे पितामहों के सम्पूर्ण युद्धका वृत्तान्त आप से सुनना चाहताहूं २० उग्रश्रवाबोले कि इस प्रकार राजाका वचन सुन व्यासजीने समीपबैठेहुए अपने शिष्य वैशम्पायन से कहा, हे वैशम्पायन कौरवों और पांडवों के भेदकी कथा जैसे पहले तूने मुझसे सुनी है वैसी वर्णन कर २२ गुरुका वचन सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैशम्पायन ने राजा सभासदों और राजाओं के समीप पहला इतिहास और कौरव पाण्डवों का इतिहास कहना प्रारम्भ किया २४ ॥

Sadasyas by whom he had been worshipped. Then the king Janmejaya with his Sadasyas asked the foremost of Brahmans as follows:- "Thou hast been an eye witness of the deeds of the Kauravas and Pandavas. I am desirous of hearing their history from thy lips. What was the cause of disunion amongst those extraordinary beings? Why did the great war which was the cause of the death of thousands of creatures, occur between my grand fathers, their clear sense being over clouded by fate ? Tell me, O excellent Brahman all that took place." Hearing these words of Janmejaya, Krishna Dwaipayan (Vyas) directed his pupil Vaishampayan, seated beside him, to repeat all that he had heard about the disunion between the Kauravas and the Pandavas from him. Then that foremost among Brahmans at the command of his preceptor, recited the whole of that old history to the audience, explaining the hostility and the annihilation of the Kauravas and the Pandavas.

वैशम्पायनउवाच । गुरवेप्राङ्नमस्कृत्य मनोबुद्धिसमाधिभिः । सम्पूज्यच द्विजान् सर्वांस्तथान्यान विदुषोजनान् ॥ १ ॥ महर्षेर्विश्रुतस्येह सर्वलोकेषुधीमतः । प्रवक्ष्यामिमतंकृत्स्नं व्यासस्यास्य महात्मनः ॥२॥ श्रोतुंपात्रंचराजंस्त्वं प्राप्येमांभारतींकथाम् । गुरोर्वक्त्रपरिस्पन्दो मनःप्रोत्साहतीवमे ॥ ३ ॥ शृणुराजन्यथाभेदः कुरुपाण्डवयोरभूत् । राज्यार्थे द्यूतसम्भूतो वनवासस्तथैवच ॥ ४ ॥ यथाचयुद्धमभवत् पृथिवीक्षयकारकम् । तत्तेऽहंकथयिष्यामि पृच्छते भरतर्षभ ॥ ५ ॥ मृतेपितरितेवीरावनादेत्यस्वमन्दिरम् । नचिरादेवविद्वांसो वेदेधनुषिचाभवन् ॥ ६ ॥ तांस्तथा सत्त्ववीर्यौजःसम्पन्नान् पौरसम्मतान । नामृष्यनकुरवोदृष्ट्वा पाण्डवान श्रीयशोभृतः ॥७॥ ततोदुर्योधनःक्रूरः कर्णश्चसहसौबलः । तेषांनिग्रहनिर्वासान विविधांस्तेसमारभन ।

अध्याय ६१ ॥

वैशंपायनने कहा मन बुद्धि की समाधि से प्रथम अपने गुरुव्यास को नमस्कार करके सम्पूर्ण ब्राह्मणों और विद्वानों का सत्कार कर संसार में प्रसिद्ध बुद्धिमान्, महात्मा व्यासजी के सम्पूर्ण मतको और हे राजन् तुझको सुनने का पात्र पाकर भारत सम्बंधिनी कथा कहूंगा, गुरु के मुख से निकला हुआ भारतरूपी प्रवाहमेरे मनको उत्साह दिलाता है । ३ । हेराजन् कौरव और पांडवों का भेद जिस प्रकार हुआ तू सब श्रवण कर राज्य के लिये द्यूत हुआ और द्यूत से बनबास हुआ । ४ । जिस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी का क्षयकारक युद्ध हुआ वह सब तेरेसामने कहूंगा । ५ । पांडु के मरने के उपरान्त पांचोवीर भ्राताघर आये और थोड़ेही काल में वेद और धनुष विद्या में निपुण हुए । ६ । देहबल उत्साह और इन्द्रियों के बलसे युक्त नगरवासियों को प्रिय पांडवों को देखकर उनकी लक्ष्मी आदि कौरव न देखसके ७ तत्पश्चात् कठोर दुर्योधन, करण, शकुनि उनको हराने वा निकालदेने के उपाय करने लगे

CHAPTER LXI

Vaishampayan began, " Bowing down to my preceptor with the eight parts of my body touching the ground, with devotion, respect and concentration of mind and paying respect to the whole assembly of Brahmans and other learned persons, I shall recite in full, the history, as has come down to me from the noble Rishi Vyas, the foremost of intelligent men. Thou art a fit person, O monarch, to hear the Mahabharat. I feel no hesitation in reciting it when my master commands. Hear, O monarch, the cause of disunion between the Kauravas and the Pandavas and that of exile into the woods resulting from the game of dice prompted by the desire (of Kauravas) for rule. I shall tell you all, thou best of the Bharat race. The heroes (Pandavas) came home after the death of their father and soon became expert in the art of war. And the Kauravas

॥ ८ ॥ ततोदुर्य्योधनःक्रूरः कुलिङ्गस्यमते स्थितः । पाण्डवान विविधोपायैराज्यहे-
तोरपीडयत् ॥ ९ ॥ ददावथविषंपापो भीमायधृतराष्ट्रजः । जरयामासतद्वीरः सहा-
न्नेन बृकोदरः ॥ १० ॥ प्रमाणकोट्यां संसुप्तं पुनर्बद्ध्वावृकोदरम् । तोयेषुभीमंगङ्गा
याः प्रक्षिप्यपुरमाव्रजत् ॥ ११ ॥ यदाविबुद्धः कौन्तेयस्तदा सञ्छिद्यबन्धनम् । उद
तिष्ठन्महाबाहुर्भीमसेनो गतव्यथः ॥ १२ ॥ आशीविषैः कृष्णसर्पैः सुप्तंचैनमदंशयत्
सर्वेष्वेवाङ्गदेशेषु न ममारच शत्रुहा ॥ १३ ॥ तेषान्तु विप्रकारेषु तेषु तेषु महामतिः
मोक्षणेप्रतिकारेच विदुरोवहितोऽभवत् ॥१४॥ स्वर्गस्थोजीवलोकस्य यथाशक्रःसुखा
वहः । पाण्डवानां तथा नित्यं विदुरोऽपि सुखावहः ॥ १५ ॥ यदातु विविधोपायैः
संवृतैर्विवृतैरपि । नाशकद्विनिहन्तुं तान्दैवभाव्यर्थरक्षितान् ॥ १६ ॥ ततः सम्मन्त्र्य

। ८ । बड़ा शूर दुर्योधन कुलिंग पक्षिकी मतको बर्तताहुआ पांडवों को अनेक उपायों से राज्यके कारण पीड़ा देनेलगा । ९ । तत्पश्चात दुर्योधन ने भीमसेन को विषदिया परन्तु भीमसेन ने अन्न के साथ विषको पचालिया । १० । फिर गंगाके तटपर सोतेहुए भीमसेन को बांधकर गंगाके जल में फेंकदिया और आप घरको लौटआया जब बड़ी भुजावाला भीमसेन सचेत हुआ तब तुरन्त बंधनों को तोड़ पीड़ा रहित जल से बाहर आया । १२ । बड़े जहरीले काले सर्पों से भीमसेन को सोतेहुए कटवाया तोभी शत्रुओं को नाश करनेवाला भीमसेन न मरा । १३ । उन कौरवों के अपराधों से बड़ी बुद्धिवाला विदुर पांडवों को बचाने और उपाय बतलाने में सहायक हुआ । १४ । जैसे स्वर्ग में रहताहुआ इन्द्र इस संसारकी रक्षा करता है इसी पकार पांडवोंकी सहायता में विदुर नित्य तत्पर रहा । १५ । जब दुर्योधन अनेक गुप्त और प्रकटउपायोंसे दैव रक्षित शत्रुनाशक पाण्डवों के मारने में समर्थ न हुआ । १६ । तब करण और दुःशासनादिक मन्त्रियों के साथ बिचार

finding the Pandavas gifted with physical strength, energy and power of mind as well, as popular with the citizens and blessed with good fortune, became very jealous. Then the crooked minded Duryodhan and Karn with the son of Souval began to persecute them and to devise the means of their exile. The wicked Duryodhan, guided by Shakuni, persecuted the Pandavas in various ways to gain the undisputed sovereignty. He gave poison to Bhim, but he of wolf's stomach, digested it with the food. Then the wretch tied Bhim sleeping on the bank of the Ganges and cast him into the water. But when Bhim of strong arms, the son of Kunti, awoke, he broke easily the cords that bound him and came out unhurt. While asleep he was bitten by venomous snakes but he did not die even then. In all these persecutions of the Pandavas by their cousins, the Kauravas, the mananimous Vidur always rescued them

सचिवैर्वृषदुःशासनादिभिः । धृतराष्ट्रमनुज्ञाप्य जातुषं गृहमादिशत् ॥ १७ ॥ सुत-
प्रियैषी तान्राजा पाण्डवानम्बिकासुतः। ततोविवासयामास राज्य भोगबुभुक्षया १८
ते प्रातिष्ठन्त सहिता नगरान्नागसाह्वयात् । प्रस्थाने चाभवन्मन्त्री क्षत्तातेषां महा-
त्मनाम् ॥१९॥ तेनमुक्ताजतुगृहान् निशीथेप्राद्रवन्वनम् । ततःसम्प्राप्यकौन्तेया नगरं
वारणावतम् ॥ २० ॥ न्यवसन्तमहात्मानो मात्रा सह परन्तपाः । धृतराष्ट्रेण चाज्ञ-
प्ता उषिता जातुषेगृहे ॥ २१ ॥ पुरोचनाद्रक्षमाणाः सम्वत्सरमतन्द्रिताः । सुरङ्गा-
ङ्कारयित्वातु विदुरेण प्रचोदिताः ॥ २२ ॥ आदीप्य जातुषंवेश्म दग्ध्वाचैव पुरो-
चनम् । प्राद्रवन् भयसम्विग्ना मात्रा सह परन्तपाः ॥२३॥ ददृशुर्दारुणंरक्षो हिडिम्बं
बननिर्झरे । हत्वाच तं राक्षसेन्द्रं भीताः समवबोधनात् ॥ २४ ॥ निशि सम्प्राद्रवन्
पार्था धार्त्तराष्ट्रभयार्दिताः । प्राप्ता हिडिम्बा भीमेन यत्र जातो घटोत्कचः ॥ २५ ॥

कर धृतराष्ट्र से कहकर लाखके घर बनाने का दुर्योधनने निश्चयकिया और पुत्रों के प्रेमी और राज्यभोगकी इच्छा करनेवाले अम्बिका पुत्र धृतराष्ट्र ने उनको राज्यसे निकाल दिया । १८ । पांचों पांडवों के हस्तिनापुर से जाने के समय विदुर उनका सहायकारी हुआ । १९ । विदुरकी सलाहसे पांडव आधीरातके समय लाखके घरसे निकलकर बनको गये शत्रुओंके ताप देनेवाले कुन्ती पुत्र माता सहित धृतराष्ट्रकी आज्ञा से वार्णावत में जाकर लाक्षाभवन में रहे । २१ । पुरोचन से अपनी आत्मा की रक्षा करतेहुये आलस्य रहित उस घरमें एक वर्षतकरहकर विदुरकी मतिसे सुरंगके रास्ते बनको चलेगये और जाते समय उस घरमें आग लगा दी पुरोचन उस अग्निमें जलगया । २३ । दुर्योधन के भयसे भागे हुए पांडवों ने बनमें झरनोंके समीप भयानक हिडिंब नाम राक्षसको मारा और भीमसेन ने हिडिम्बा राक्षसीसे घटोत्कच नाम पुत्र उत्पन्न किया । २५ । इसके उपरांत एक

and neutralised their evil designs. As Indra in heaven promotes the happiness of human beings in this world, so did Vidur keep the Pandavas free from all evils. And when Duryodhan by his persecutions, secret and open, could not destroy the Pandavas, protected by fate for great deeds, he, with the council of Karan and Dushasan and with the knowledge of Dhritrashtra, caused a house of lac to be constructed. King Dhritrashtra, being fond of his children and to secure the throne for them, sent the Pandavas into exile. They went away with their mother from the city of Hastinpur and by the advice of Vidur, escaped from the house of lac at mid-night into the forest. The sons of Kunti went with their mother to Varnavat and according to the command of Dhritrashtra lived there in the house of lac. While there they protected themselves carefully from Purochan and after a year burnt the house of lac, making their

एकचक्रांततोगत्वा पाण्डवाःसंशितव्रताः । वेदाध्ययनसम्पन्नास्तेऽभवन् ब्रह्मचारिणः ॥ २६ ॥ तेतत्रनियताःकालं कञ्चिद्‌नुर्नरर्षभाः । मात्रासहैकचक्रायां ब्राह्मणस्यानिवेशने ॥ २७ ॥ तत्रासाद्क्षुधितं पुरुषादंवृकोदरः । भीमसेनोमहावाहुर्वकं नाममहाबलम् ॥ २८ ॥ तंचापिपुरुषव्याघ्रो बाहुवीर्य्येणपाण्डवः । निहत्यतरसावीरो नागरान् पर्यसान्त्वयत् ॥ २९ ॥ ततस्तेशुश्रुवुः कृष्णां पंचालेषुस्वयम्वराम् । श्रुत्वाचैवाभ्यगच्छन्त गत्वाचैवालभन्तताम् ॥ ३० ॥ तेतत्रद्रौपदींलब्ध्वा परिसम्वत्सरोषिताः । विदिताहास्तिनपुरं प्रत्याजग्मुररिन्दमाः ॥३१॥ तेउक्ताधृतराष्ट्रेण राज्ञाशान्तनवेनच । भ्रातृभिर्विग्रहस्तात कथंवोनभवेदिति ॥ ३२ ॥ अस्माभिः खाण्डवप्रस्थे युष्मद्वासोऽनुचिन्तितः । तस्माज्जनपदोपेतं सुविभक्तमहापथम् ॥ ३३ ॥ वासाय खाण्डवप्रस्थं व्रजध्वंगतमत्सराः । तयोस्तेवचनाज्जग्मुः सहसर्वैःसुहृज्जनैः ॥ ३४ ॥

चक्रानगरी में पहुँचकर पुरुषों में श्रेष्ठ पांडव ब्रह्मचर्य पूर्वक वेदाध्ययन करतेहुए माता सहित नियमपूर्वक एक ब्राह्मण के घर में कुछ कालतक रहे । २६ । उस जगह बड़ी भुजावाला भीमसेन मनुष्यों के खानेवाले, भूखे, बलवान बकराक्षस के समीप गया २८ पुरुषों में श्रेष्ठ पांडव भीमसेन ने अपनीभुजाओं के बल से बकराक्षस को मारकर नगरवासियों को प्रसन्न किया । २९ । तत्पश्चात् पंचाल देश में स्वयम्वर करतीहुई द्रौपदीका वृत्तान्त सुनकर वहांगये और द्रौपदीको प्राप्त किया । ३० । द्रौपदी को पाकर पाण्डव एकवर्ष तक पंचाल देश में रहे विदितहोने पर वे शत्रुओं के नाश करनेवाले हस्तिनापुर आये । ३१ । धृतराष्ट्र और भीष्मपितामह ने पाण्डवों से कहा कि हमने तुम्हारे निवास स्थान का विचार खांडव प्रस्थ में किया है इस लिये कि भाइयों से तुम्हारा विगाड़ नहो तुम बड़े देशों और मार्गों से युक्त खांडव में ईर्षा को छोड़कर चलेजाओ उनदोनों के

escape through the subterranean passage built by the advice of Vidur and leaving Purochan there to be burnt to death. And flying with their mother, they saw the Rakshas Hidimb in the wood beside a fountain. They killed the Rakshas and alarmed at the risk of their exposure by such an act, they fled in darkness. It was here that Bhim made Hidimba his wife and Ghatotkach was born of her. They then reached Ekchakra and remain there in the guise of Brahmacharis. Here Bhim had an encounter with the Rakshas Vak and slew him, to the great joy and safety of the citizens. Then they heard of the Swayamvar of Draupadi and having obtained her, they lived there for a year. They were then recalled to Hastinapur and were told by Dhritrashtra and Bhishm to settle at Khandavprasth to avoid future dissentions. So the Pandavas went with all their friends and followers to Khandavprasth, taking with them

नगरंखाण्डवप्रस्थं रत्नान्यादायसर्वशः । तत्रतेन्यवसन् पार्थाः सम्वत्सरगणान् वहून्
॥ ३५ ॥ वशेशस्त्रप्रतापेन कुर्वन्तोऽन्यान्महीभृतः । एवंधर्मप्रधानास्ते सत्यव्रतपराय-
णाः ॥ ३६ ॥ अप्रमत्तोत्थिताःक्षान्ताः प्रतपन्तोऽहितान् वहून् । अजयद्भीमसेनस्तु
दिशंप्राचींमहायशाः ॥ ३७ ॥ उदीचीमर्ज्जुनोवीरः प्रतीचींनकुलस्तथा । दक्षिणांस
हदेवस्तु विजिग्येपरवीरहा ॥ ३८ ॥ एवंचक्रुरिमांसर्वे वशेकृत्स्नांवसुन्धराम् । पंच-
भिःसूर्य्यसङ्काशैः सूर्य्येणचविराजता ॥ ३९ ॥ षट्सूर्य्येवाभवत् पृथ्वी पाण्डवैः स-
त्यविक्रमैः । ततोनिमित्ते कस्मिंश्चिद्धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ४० ॥ वनंप्रस्थापयामास
तेजस्वीसत्यविक्रमः । प्राणेभ्योऽपि प्रियतरं भ्रातरंसव्यसाचिनम् ॥ ४१ ॥ अर्जुनं
पुरुषव्याघ्रं स्थिरात्मानं गुणैर्युतम् । सवैसम्वत्सरंपूर्णं मासंचैकंवनेऽवसत् ॥ ४२ ॥
ततोऽगच्छद्धृषीकेशं द्वारवत्यांकदाचन । लब्धवांस्तत्रवीभत्सुर्भार्य्यां राजीवलोचनाःम्

कहने से सम्पूर्ण मित्रों और रत्नों को ले खांडव प्रस्थ में गये और अपने शस्त्रों के बल से बहुत से राजाओं को वश करके बहुत वर्षोंतक वहां रहे इसप्रकार वे धर्मज्ञ और सत्यव्रत में तत्पर, सावधानता से वृद्धि को प्राप्तहोतेहुए, शान्त चित्तसे शत्रुओं को तापदेतेहुए रहने लगे बड़े यशवाले भीमसेन ने पूर्वदिशा को जय किया । ३७ । अर्जुनने उत्तर दिशा को नकुलने पश्चिमदिशा को और शत्रुओं के नाश करनेवाले सहदेव ने दक्षिणदिशा को जय किया । ३८ । इसप्रकार पांडवों ने सम्पूर्ण देशको वश किया और सत्य पराक्रमवाले सूर्य के समान तेजस्वी उन पांचों पांडवों और छटे सूर्य से पृथ्वी शोभितहुई तत्पश्चात् तेजस्वी धर्मराज युधिष्ठिर ने किसी कारणसे प्राणोंसे अधिक प्रिय भ्राता पुरषों में श्रेष्ठ स्थिर चित्तवाले, गुणयुक्त अर्जुन को बन में भेजा, अर्जुन १ वर्ष और १ महीने के लिये वनको भेजाहुआ, भ्रमण करते २ श्रीकृष्ण के समीप द्वारिका में पहुँचा, और

many jewels and precious stones. They lived there for many years and brought the surrounding princes under their rule by the force of arms, Setting their hearts on virtue, calm in deportment, and putting down numerous evils, the Pandavas rose in power. Bhim of great prowess subjugated the East; the heroic Arjun, the North, Nakul, the West, and Sahadev, the South. Thus their dominion was spread over the greater part of the world. The five Pandavas, in splendour like the sun and the Sun himself, illuminated the Earth as if she had six suns. Then for certain reasons, Yudhisthir the just, gifted with great energy and prowess, sent his brother Arjun, dearer to him than life itself, into exile. The brave and virtuous Arjun lived in the woods for eleven years and ten months. During his exile Arjun went to Shree Krishna in Dwarika and there married Krishn's younger sister Subhadra of sweet speech and eyes like lotus

॥ ४३ ॥ अनुजांवासुदेवस्य सुभद्रांभद्रभाषिणीम् । साशचीवमहेन्द्रेण श्रीःकृष्णेनेव संगता ॥ ४४ ॥ सुभद्रायुयुजेप्रीत्या पाण्डवेनार्ज्जुनेनह । अतर्पयच्चकौन्तेयः खाण्डवे हव्यवाहनम् ॥ ४५ ॥ बीभत्सुर्वासुदेवेन सहितोनृपसत्तम । नातिभारोहि पार्थस्य केशवेनसहाभवत् ॥ ४६ ॥ व्यवसायसहायस्य विष्णोःशत्रुवधेष्विव । पार्थायाग्निर्ददौचापि गाण्डीवंधनुरुत्तमम् ॥ ४७ ॥ इषुधिंचाक्षयैर्वाणै रथंचकपिलक्षणम् । मोक्षयामास बीभत्सुर्मयं यत्रमहासुरम् ॥४८॥ सचकारसभांदिव्यां सर्वरत्नसमाचिताम् । तस्यांदुर्य्योधनो मन्दो लोभंचक्रेसुदुर्मतिः ॥ ४९ ॥ ततोऽक्षैर्वंचयित्वाच सौबलेनयुधिष्ठिरम् । वनंप्रस्थापयामास सप्तवर्षाणि पंचच ॥ ५० ॥ अज्ञातमेकंराष्ट्रेचततोवर्षंत्रयोदशम् । ततश्चतुर्द्दशेवर्षे याचमानाः स्वकंवसु ॥५१॥ नालभन्तमहाराज ततोयुद्धमत्र

कमल सदृश नेत्रवाली, मधुर भाषणी श्रीकृष्णकी छोटी बहिन सुभद्रा को ऐसे प्राप्तकिया जैसे श्रीष्णने लक्ष्मी को और इन्द्र ने इन्द्राणी को प्राप्तकियाथा । ४४ । सुभद्राभी अर्जुन से बड़ी प्रीति रखती थी, तत्पश्चात अर्जुन ने श्रीकृष्णकी सहायता से खांडव में अग्निको तृप्तकिया श्रीकृष्ण के साथहोतेहुए अर्जुनके लिये यह कुछ बड़ा कार्य न था ।४६। उद्योग में सहायक विष्णु के होते शत्रुवधकी सदृश अर्जुन ने इसकार्य को सुगममाना और अग्नि ने अर्जुनको गांडीव धनुष और वाणों से न खालीहोनेवाले दो तर्कश, और कपिध्वज वाला रथदिया अर्जुन ने मय दैत्यको खांडववन में अग्नि से बचाया ।४८। मय ने संपूर्ण रत्नों से भरीहुई एक दिव्यसभा बनाई और उसमें मूर्ख और दुर्बुद्धि दुर्योधन ने लोभ किया । ४९ । तिस के उपरांत शकुनिद्वारा युधिष्ठिर कांसे के खेल में ठगाजाकर १४ वर्ष के लिये वनमें भेजागया । ५० । तिसके उपरांत किसी राज्यमें एक तेरहवें वर्ष छिप कर रहे फिर चौदहवें वर्ष अपने राज्यको मांगतेहुएभी न पाया हे जन्मेजय तत्पश्चात्

She loved Arjun as Shachi and Lakshmi loved Indra and Krishna respectively. Then Arjun with Vasudev gratified Agni, the bearer of sacrifices, in the forest of Khandav, with the asistance of Keshav the task was not difficult for Arjun and Agni gave him the excellent bow Gandiv, an inexhaustible quiver and a chariot having the figure of a monkey on its standard. Arjun saved the great Asur Maya from conflagration and the latter in gratitude built him a court decked with jewels and precious stones of every sort. The wicked Duryodhan coverted that court and cheated Yudhishthir at dice played through Shakuni. The Pandavas were then sent into exile for twelve years and to remain in concealment for one year more, making the period thirteen years in all. In the fourteenth year when the Pandavas returned from exile they claimed their property but did not get it. Hence a war ensued in which the Pandavas,

र्त्तत । ततस्तेक्षत्रमुत्साद्य हत्वादुर्योधनं नृपम् ॥ ५२ ॥ राज्यंविहतभूयिष्ठं प्रत्यपद्य-
न्तपाण्डवाः । एवमेतत्पुरावृत्तं तेषामक्लिष्टकर्मणाम् । भेदो राज्यविनाशाय जयश्च
जयतांवर ॥ ५३ ॥

इत्यादिपर्वण्यादिवंशावतरणपर्वाणि एकषष्टोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

जनमेजय उवाच। कथितंवैसमासेन त्वयासर्वं द्विजोत्तम । महाभारतमाख्यानं
कुरुणांचरितंमहत् ॥ १ ॥ कथांत्वमघचित्रार्थां कथयस्वतपोधन । विस्तरश्रवणेजातं
कौतूहलमतीवमे ॥ २ ॥ सभवान्विस्तरेणेमां पुनराख्यातुमर्हति । नहितृप्यामिपूर्वेषां
शृण्वानश्चरितं महत् ॥ ३ ॥ नतत्कारणमल्पंवै धर्मज्ञायत्रपाण्डवाः । अवध्यान्सर्वशो
जघ्नुः प्रशस्यन्तेचमानवैः ॥ ४ ॥ किमर्थंतेनरव्याघ्राः शक्ताःसन्तोह्यनागसः । प्रयु-

---

युद्ध प्रवृत्तहुआ तिसके उपरांत उन्हों ने बहुत से क्षत्रियों और राजादुर्योधन को मार और बहुत जिस में नष्टहोगये ऐसा राज्य पांडवों को प्राप्तहुआ इसप्रकार उत्तम व्रतकरनेवालों का प्राचीन व्यवहार तुझसे कह दिया और जिसप्रकार उनको राज्य के विनाश के लिये आपस का भेद और पांडवों को जयकी प्राप्तिहुई यह वृत्तांत सब तुझसे कह दिया ५३ ॥

अध्याय ६२ ॥

जन्मेजयबोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैशम्पायन तुम ने महाभारतका आख्यान जिस कौरवों का बड़ाभारी चरित्रहै यह सम्पूर्ण संक्षेपसे मुझसे कहा । १ । और हे पाप रहित विचित अर्थवाली कथाको कहो हे तपोधन मुझको विस्तार से सुनने की बहुतही उत्कण्ठा है । २ । इस से तुम इस कथाको विस्तार से फिर कहो मैं अपने पूर्वज बड़ेभारी कौरव और पांडवों के चारित्रको सुनता हुआ तृप्त नहीं होता । ३ । और यहछोटाकोई कारण नहीं है जो कि धर्मयज्ञ पांडवों ने न मारने योग्योंको मारा और मनुष्योंके स्तुति

---

having slain a large number of Kshatrias, including Duryodhan, took possession of their lost territory. This is the history of the Pandavas who were never influenced by evil passions in their actions and of the disunion which ended in the loss of their kingdom by the Kauravas and the victory of the Pandavas."

CHAPTER LXII

Janmejaya said, "Thou hast told me, O excellent Brahman, an abstract of the great acts of the Kurus. Recite the history, called the Mahabharat, in its full extent. I am very anxious to hear it in full. The abstract does not satisfy me. It could never have been a trifling cause for which they slew those whom they should not have slain and for which they, virtuous ones, are still applauded. Why did the brave Pandavas, perfectly free from sin

उग्रमानान् संक्लेशान् क्षान्तवन्तोदुरात्मनाम् ॥५॥ कथंनागायुतप्राणो बाहुशालीवृकोदरः । परिक्लिश्यन्नपिक्रोधं धृतवान् वै द्विजोत्तम ॥ कथंसाद्रौपदीकृष्णा क्लिश्यमाना दुरात्मभिः शक्तासती धार्त्तराष्ट्रान्नादहत् क्रोधचक्षुषा ॥७॥ कथंव्यसनिनंद्यूते पार्थौ माद्रीसुतौतदा । अन्वयुस्तेनरव्याघ्रा बाध्यमानादुरात्मभिः ॥८॥ कथंधर्मभृतां श्रेष्ठः सुतो धर्मस्य धर्मवित् । अनर्हः परमं क्लेशं सोढ़वान् स युधिष्ठिरः ॥ ९ ॥ कथं च बहुलाः सेनाः पाण्डवः कृष्णसारथिः । अस्यन्नेकोऽनयत्सर्वाः पितृलोकं धनञ्जयः ॥ १० ॥ एतदाचक्ष्व मे सर्वं यथावृत्तं तपोधन । यच्च कृतवन्तस्ते तत्र तत्र महारथाः ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच । क्षणं कुरुमहाराज विपुलोऽयमनुक्रमः । पुण्या

किये गये किसकारण वह पुरुषों में श्रेष्ठ और निरपराध और समर्थहोतेहुएभी दुरात्माओं के दियेहुए क्लेशोंको सहते थे । ५ । और हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ क्यों दसहजार हाथियों के बल से युक्त और बड़ी भुजावाले भीमसेन ने क्लेशपाते हुएभी क्रोध को रोका । ६ । और क्यों दुरात्माओं से क्लेशदीहुई द्रौपदी ने धृतराष्ट्रके पुत्रों को भस्मकरने में समर्थहोती हुईभी क्रोधरूपी चक्षुसे भस्म न किया और किसतरह द्यूत के व्यसन में आसक्त युधिष्ठिर के भीम अर्जुन और माद्री के पुत्र नकुल सहदेव यह पुरुष श्रेष्ठ दुरात्मा दुर्योधनादिकों से पीड़ा देनेपरभी अनुगामी रहे । ८ । और किसप्रकार धर्मात्माओं में श्रेष्ठ और धर्म को जाननेवाले धर्म के पुत्र युधिष्ठिर ने न सहने योग्य क्लेशोंको सहन किया और क्यों कृष्ण जिसके सारथी हैं ऐसे अर्जुनने बहुतसी सेनाओं को बाणवर्षाकर सम्पूर्ण को यमलोकको भेजा और क्लेशभी सहा । १० । यह सबवृत्तान्त जिसप्रकार उन महारथियोंने जहां २ जिस २ प्रकार कियाहै उसप्रकार हेतपोधन वह सब मुझको सुनाओ । ११ । वैशम्पायन ने कहा हे महाराज जन्मेजय इस पुण्यआख्यानका व्यास से कहाहुआ कहने योग्य जो

and capable of avenging themselves upon their enemies, calmly, suffer injury upon injury of the wicked Kauravas? And why also, did the mighty Bhim, having the strength of ten thousand elephants, suffer the wrong meekly? Why did the chaste Draupadi, wronged by those wretches, not burn the sons of Dhritrashtra by her wrathful eyes? Why did the two other sons of Kunti and twins of Madri, wronged by the Kauravas, followed the gambler Yudhishthir, the most virtuous, son of Dharm and fully acquainted with all duties, bear the wrongs submissively? Why also did Arjun, having Krishna for his charioteer, kill the whole army of warriors by his arrows? Tell me all this as it happened, including the achievements of the mighty warriors." Vaishampayan said, "Appoint a

ख्यानस्य वक्तव्यः कृष्णद्वैपायनेरितः ॥ १२ ॥ महर्षेः सर्वलोकेषु पूजितस्य महात्मनः । प्रवक्ष्यामि मतं कृत्स्नं व्यासस्यामिततेजसः ॥ १३ ॥ इदं शतसहस्रंहि श्लोकानां पुण्यकर्मणाम् । सत्यवत्यात्मजेनेह व्याख्यातममितौजसा ॥ १४ ॥ य इदं श्रावयेद्विद्वान् ये चेदं शृणुयुर्नराः । ते ब्राह्मणः स्थानमेत्य प्राप्नुयुर्देवतुल्यताम् ॥ ॥ १५ ॥ इदंहि वेदैः समितं पवित्रमपि चोत्तमम् ॥ श्रव्याणामुत्तमं चेदं पुराणमृषिसंस्तुतम् ॥ १६ ॥ अस्मिन्नर्थश्च कामश्च निखिलेनोप दिश्यते ॥ इतिहासे महापुण्येबुद्धिश्च परिनैष्ठिकी ॥ १७ ॥ अक्षुद्रान दानशीलांश्च सत्यशीलान नास्तिकान् । कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते ॥१८॥ भ्रूणहत्याकृतं चापिपापं जह्यादसंशयम् । इतिहासमिमं श्रुत्वा पुरुषोऽपि सुदारुणः ॥ १९ ॥ मुच्यते

विषय है उसका अनुक्रमण बहुत बड़ाहै इसकारण क्षणमात्र ठहर सावधानीसे कहताहूं सम्पूर्ण लोक में पूजित महात्मा और बड़े तेजस्वी महर्षि व्यास के सम्पूर्ण मतको मैं तुझ से कहूंगा । १३ । जिस में पवित्र कर्मों का वर्णन है ऐसे एकलक्ष श्लोकोंका यहआख्यान बड़े तेजस्वी सत्यवती के पुत्र व्यास ने यहांपर कहा है । १४ । जो विद्वान् इसको सुनाते हैं और जो मनुष्य इसको सुनते हैं वह ब्रह्मलोकको प्राप्तहोकर देवताओंके तुल्यहोजातेहैं यह आख्यान पवित्र और उत्तम वेदोंके समानहै और सुननेके सम्पूर्ण विषयों में उत्तमहै और प्राचीन ऋषियों से प्रशंसा कियागया है इस पवित्र इतिहास में अर्थ, काम औरमोक्ष विषयकी विधि सम्पूर्णतासे कहीगई है । १७ । उत्तम और दानशील और सत्यबोलने वाले और आस्तीक इस आख्यान रूपी सम्पूर्ण वेदको सुनकर विद्वान बड़े अर्थको प्राप्त होगा । १८ । और गर्भ हत्या के पापसे भी इस के सुनने से निस्सन्देह छूटजाता है और इसको सुनकर अति कठोर पुरुषभी राहु से चन्द्रमाकी समान सम्पूर्ण पापों से छूट

---

time, O king to hear this extensive history composed by Vyas and I shall recite it from the beginning. I shall repeat all the book composed by the illustrious Vyas, respected by all. It consists of 100,000 Slokes, composed by the most intelligent Vyas. The readears and the listeners of the Mahabharat attain the higher world and mix among the gods. The Mahabbharat is a Puran respected by all and like the Vedas is holy, excellent and the worthiest to be listened to. It contains much useful instruction on Profit and Pleasure and makes one desirous of salvation. The Pandits earn wealth by reciting this store of knowledge, composed by Vyas, to those who are noble and liberal, truthful and believing. The most heinous sins are expiated by this. Even the most cruel and sinful

सर्वपापेभ्यो राहुणा चन्द्रमा यथा । जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा ॥ २० ॥ महींविजयते राजा शत्रूंश्चापि पराजयेत् । इदं पुंसवनं श्रेष्ठ मिदंस्वस्त्ययनं महत् ॥ २१ ॥ महिषीयुवराजाभ्यां श्रोतव्यं बहुशस्तथा । वीरंजनयतेपुत्रं कन्यां वा राज्यभागिनीम् ॥ २२ ॥ धर्मशास्त्रमिदं पुण्यमर्थ शास्त्रमिदं परम् । मोक्षशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामितबुद्धिना ॥ २३ ॥ सम्प्रत्याचक्ष चेदं तथा श्रोष्यन्तिचापरे ॥ पुत्राःशुश्रूषवः सन्ति प्रेष्याश्च प्रियकारिणः ॥ २४ ॥ शरीरेण कृतं पापं वाचा च मनसैवच । सर्वंस त्यजति क्षिप्रं य इदं शृणुयान्नरः ॥ २५ ॥ भरतानां महज्जन्म शृण्वतामनसूयताम् । नास्ति व्याधिभयं तेषां परलोकभयं कुतः ॥ २६ ॥ धन्यं यश स्यमायुष्यं पुण्यं स्वर्ग्यं तथैव च । कृष्णद्वैपायनेनेदं कृतं पुण्यं चिकीर्षुणा ॥ २७ ॥

जाताहै और यह जयनामक इतिहासहै इसलिये जयकी इच्छा करनेवाले पुरुष को सुनना योग्यहै । २० । और राजा इस को सुनकर पृथ्वी और शत्रुओंको विजय करताहै यह आख्यान पुंसवन अर्थात पुत्र देनेवाला और कल्याणकारी है । २१ । मुख्यपत्नी और युवराजदोनों को इसे सुनना योग्यहै इस के सुननेसे रानी वीर पुत्र और राज्य भागिनी कन्या को उत्पन्न करती हैं, बड़ी बुद्धिवाले व्यासने इसआख्यान को पवित्रधर्मशास्त्र और सर्वोत्तम अर्थ शास्त्र और मोक्षशास्त्र कहाहै । २३ । जो इसआख्यान को कहते हैं और आगेको जो होवेंगे, सुननेवालोंके पुत्र आज्ञाकारी सेवक प्रियकारी होंगे । २४ । औरजो मनुष्य इसको सुनेगा वह शरीर वाणी और मन के सम्पूर्ण पापों को दूरकरेगा । २५ । भरतवंशियों के बड़े जन्मकी कथाओंको श्रद्धा पूर्वक सुननेवालों को व्याधि का भय न होगा और परलोकका भयतो क्योंहोता है पुण्यकी इच्छा करनेवाले व्यास ने यह धन यश और आयुका बढ़ानेवाला पवित्र और स्वर्गका लेजानेवाला आख्यान बनाया है २७

---

man becomes free from his sinful habits like the moon from an eclipse. This history is called Jaya and should be heard by those desirous of Victory. A King by hearing it may conquer the whole world by hearing it. It is a great deed of piety and a mighty sacrifice, performed for the good of the world. A young monarch, desirous of having a heroic son or daughter must hear it with his queen. It contains the holy Dharm-Shastra, the Arth-Shastra and Moksh-Shastra: it is the opinion of the magnanimous Vyas. It will be read in future ages as it is now. Those who read it will have sons and servants obedient to them. All sins committed by body, words or thought, are destroyed by hearing it. Those who hear without fault-finding, the story of the Bharat race, will be free from

कीर्तिं प्रथयता लोके पाण्डवानां महात्मनाम् । अन्येषां क्षत्रियाणाञ्च भूरिद्रविणतेजसाम् ॥२८॥ सर्वविद्यावदातानां लोके प्रथितकर्मणाम् । य इदं मानवो लोके पुण्यर्थे ब्राह्मणान शुचीन ॥ २९ ॥ श्रावयेत् महापुण्यं तस्य धर्मः सनातनः । कुरूणां प्रथितं वन्शं कीर्त्तयन् सततंशुचिः ॥ ३० ॥ वंशमाप्नोति विपुलं लोके पूज्यतमोभवेत् योऽधीते भारतं पुण्यं ब्राह्मणो नियतव्रतः ॥ ३१ ॥ चतुरो वार्षिकान् मासान् सर्वपापैः प्रमुच्यते । विज्ञेयः सच वेदानां पारगो भारतं पठन् ॥ ३२ ॥ देवाराजर्षयो ह्यत्रपुन्या ब्रह्मर्षयस्तथा । कीर्त्यन्ते धूतपाप्मानः कीर्त्यते केशवस्तथा ॥ ३३ ॥ भगवांश्चादिदेवेशो यत्रेदेवीचकीर्त्यते । अनेकजननोयत्र कार्तिकेयस्यसम्भवः ३४॥ ब्राह्मणानां गवांचैव माहात्म्यंतत्रकीर्त्यते । सर्वश्रुतिसमूहोऽयं श्रोतव्योधर्मबुद्धिभिः ३५

संसार में महात्मा पाण्डवोंकी और बड़े तेजस्वी और द्रव्यवान् और सब विद्याओं के जाननेवाले संसारमें प्रसिद्ध कर्मवाले और क्षत्रियोंकिभी कीर्त्तिको प्रसिद्ध करनेवाले व्यास ने इस गून्थको बनाया है और जो मनुष्य संसार में पुण्य के लिये इस बड़े पवित्र गून्थ को पवित्र ब्राह्मणों को सुनावे उसको सनातन धर्महोताहै कौरवों के इस प्रसिद्ध वंश को पवित्रताके साथ निरन्तरकीर्तन करताहुआ मनुष्य बड़े वंश को प्राप्तहोकर लोकमें अत्यंत पूज्यहोताहै और जो नियम पूर्वक व्रतोंका रखनेवाला ब्राह्मण इस पवित्र भारतगून्थ को चारमहीने वर्षाऋतु में पढता है वह सब पापों से छूटजाताहै और भारतको पढताहुआ मनुष्य वेदों का पारगामी जानना चाहिये । ३२ । इस भारत में देवता और राजर्षि और पवित्र ब्रह्मर्षि, जिन्होंने पापों को नष्ट कर दियाहै वहकीर्तन कियेहैं तथा इसीप्रकार केशव भगवान् कीर्तन किये गये हैं । ३३ । और जिस महाभारत में भगवान देवताओंका स्वामी और दिव्य शक्ति कीर्त्तनकी गई हैं जिस महाभारत में अनेकों उत्पत्ति हैं जिस में ऐसे कीर्त्तिका जन्म कहा गयाहै । ३४ । ब्राह्मण और गउओं का माहात्म्य कहागया है और

trouble in this world and the world to come. Vyas has composed this sacred book (which prolongs the life and extends the fame) for the good of the world and for publishing the fame of the noble minded Pandavas and other famous heroes. He who piously reads this history to the Brahmans, acquires great merit and inexhaustible virtue. He who recites this account of the Kaurav race becomes purified, is respected by the world and acquires a large family. The Brahman who regularly reads this sacred book for four months of the rainy season, is cleared of all sins. He who has read the Mahabharat may be regarded as a scholar of the Vedas. The book contains an account of the gods, the Rajarshis and the sinless Keshav. It also gives an account of the god of gods, Mahadev, the goddess

य इदंश्रावयेद्विद्वान् ब्राह्मणानिह पर्वसु । धूतपाप्मा जितस्वर्गो ब्रह्मगच्छतिशाश्वतम् ॥ ३६ ॥ श्रावयेद्ब्राह्मणान् श्राद्धे यश्चेदंपादमन्ततः । अक्षय्यं तस्य तच्छाद्धमुपाव र्तेत् पितृनिह ॥३७॥ अन्हा यदेनः क्रियते इन्द्रियैर्मनसापिवा । ज्ञानादज्ञानतो वापि प्रकरोति नरश्चयत् ॥३८॥ तन्महाभारताख्यानं श्रुत्वैव प्रविलीयते । भारतानां महज्ज न्म महाभारतमुच्यते ॥३९॥ निरुक्तमस्यस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते । भरतानां यतश्चाय मितिहासोमहाद्भुतः ॥ ४० ॥ महतो ह्येनसो मर्त्यान्मोचयेदनुकीर्त्तितः ॥ त्रिभिर्वर्षैर्लब्धकामः कृष्णद्वैपायनोमुनिः ॥ ४१ ॥ नित्योत्थितःशुचिः शक्तो महाभा रतमादितः। तपोनियममास्थाय कृतमेतन्महर्षिणा ॥४२॥ तस्मान्नियमसंयुक्तैःश्रोतव्यं

सम्पूर्ण वेदोंका समूह यह भारतग्रन्थ धर्म बुद्धि पुरुषोंको सुननाचाहिये । ३५ । जो विद्वान् इस भारत ग्रन्थ को पर्व के दिन ब्राह्मणों को सुनावे वह पुरुष सम्पूर्ण पापों से रहितहो स्वर्गको जीतनेवाला सनातनब्रह्म को प्राप्तहोता है । ३६ । जो पुरुष श्राद्धके समय इसमहाभारत के पिछले पादकोभी सुनादे उसका श्राद्ध अक्षयहोताहै और पितरों को यथार्थ रीतिसे प्राप्तहोता है । ३७ । जो कुछ पाप दिन में इन्द्रिय या मन से किया गयाहै और जिस पापको मनुष्य जानकर या अज्ञान से करता है वह पाप महाभारत आख्यानके सुनतेही नष्टहोजाता है इस में भारतवासियोंके बड़े जन्मकी कथा कहीगई है इसकारण यह महाभारत कहाजाताहै । ३९ । जो इस के शब्दार्थ को जानता वह सम्पूर्ण पापोंसे छुटजाता है यह इतिहास भारतवासियों का अद्भुत वर्णन करनेवाला है इसकारण भी यह महाभारत कहलाताहै और इसकाकीर्तन मनुष्यों को बड़े पापसे छुटादेताहै संपूर्ण जिसके कार्य सिद्ध हैं ऐसे व्यासमुनि ने जोकि पवित्र और समर्थ और सर्वदा इसीकार्य में तत्पर था उस महर्षि ने तप और नियमको आश्रय कर इस महाभारतको आदि से अंत तक तीनवर्ष में बनाया । ४१ । इस कारण नियम में रहकर ब्राह्मणों को इस भारत

Parvati, the births of heroes and the greatness of Brahmans and cows. It contains the gist of Shrutis and is fit to be heard by the virtuous. The learned man who recites it to Brahmans on holy days becomes free from his sins, and not caring for the Heaven as it were, unites with Brahma. He who reads even a portion of this book to the Brahmans at a Shradh, makes his offerings at the Shradh very durable in their effect. The sins committed by day by the senses or thought, knowingly or unknowingly, are destroyed by hearing the Mahabharat. This is the history of the great men of the Bharat race and is therefore called the Mahabharat. He who knows this fact is cleansed of all his sins. Because the history of the Bharat race is so wonderful it is sure to purify the liseners of al sins. The great Rishi took three years to compose the poem. He

ब्राह्मणैरिदम् । कृष्णप्रोक्तामिमांपुण्यां भारती मुत्तमांकथाम् ॥ ४३ ॥ श्रावयिष्यन्ति
येविप्रा येच श्रोष्यन्तिमानवाः । सर्वथावर्त्तमानावै नतेशोच्याःकृताकृतैः ।४४। नरेणधर्म
कामेन सर्वःश्रोतव्यइत्यपि । निखिलेनेतिहासेऽयं ततःसिद्धिमवाप्नुयात् ।४५। नतांस्वर्ग
गतिंप्राप्य तुष्टिंप्राप्नोतिमानवः । यांश्रुत्वैवमहापुण्य मितिहासमुपाश्नुते ॥४६॥ शृण्वन्
श्राद्धःपुण्यशीलःश्रावयंश्चेदमद्भुतम् । नरःफलमवाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः ॥ ४७ ॥
यथासमुद्रोभगवान् यथामेरुर्महागिरिः । उभौख्यातौरत्ननिधी तथाभारतमुच्यते ।४८।
इदंहिवेदैःसमितं पवित्रमपिचोत्तमम् । श्रव्यंश्रुतिसुखंचैव पावनंशीलवर्द्धनम् ॥४९॥
यइदंभारतंराजन् वाचकायप्रयच्छति । तेनसर्वामहीदत्ता भवेत्सागरमेखला ॥५०॥

ग्रन्थ को श्रवण करना चाहिये और व्यासकी कही हुई इस पवित्र और उत्तम भारतकी कथाको जो ब्राह्मण सुनावेंगे और मनुष्य सुनेंगे वह सब प्रकार वर्त्तमान पाप पुण्यों से सोच करने योग्य नहीं है । ४४ । धर्म और कामकी इच्छा करने वाले मनुष्यको सम्पूर्ण तासे इस ग्रन्थको सुनना चाहिये जिस से सिद्धिको प्राप्त होगा । ४५ । मनुष्य उस प्रसन्नता को स्वर्गमें जाकरभी नहीं प्राप्त होता है जिस प्रसन्नता और पुण्यको इस इतिहासके सुननेसे प्राप्त होताहै पवित्र स्वभाववाला और श्रद्धावान् इस पवित्र इतिहासको सुनता हुआ राजसूय और अश्वमेध के फलको प्राप्त होता है । ४७ । जैसे समुद्र और सुमेरु पर्वत रत्नोंके कोष कहे गयेहैं इसी प्रकार भारत भी रत्नों का कोष कहा गया है ।४८। यह भारत आख्यान वेदों के समान पवित्र और उत्तमहै मनोहर और कर्णों को आनन्द और शीलको बढानेवाला है । ४९ । हेराजन् जन्मेजय जो मनुष्य इसग्रन्थको कथा कहने वाले ब्राह्मण को देताहै उसने मानो सम्पूर्ण पृथ्वी समुद्र पर्यन्त दानकी । ५० । हेराजन्

used to compose it daily after performing his devotions early in the morning and, therefore, it should be heard regularly. He who reads this composition of Vyas and those who hear it, can never be affected by the fruit of their deeds. A virtuous man should hear it all. It is equal to all the histories put together and the listener gets purity of heart. The gratification of acquiring heaven is inferior to that of hearing this book. The virtuous man who reverentially hears or causes others to hear it, gets the merit of a Rajsuya or horse sacrifice. This book is a mine of gems like the Ocean or mount Meru. This is an excellent and holy History like the Vedas; worthy of being heard, pleasing to the ear, purifying and virtue increasing. To Make a present of a copy of the Mahabharat to one who asks for it, is equal to giving away the whole

पारीक्षितकथांदिव्यां पुण्यायविजयायच । कथ्यमानांमया कृत्स्नांशृणुहर्षकरीमिमाम् ॥ ५१ ॥ त्रिभिर्वर्षैःसदोत्थायी कृष्णद्वैपायनोमुनिः । महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमद्भुतम् ॥ ५२ ॥ धर्मेचार्थेचकामेच मोक्षेचभरतर्षभ । यदिहास्तितदन्यत्र यन्नेहास्तिनतत् क्वचित् ॥ ५३ ॥

इत्यादिपर्वण्यादिवंशावतरणे द्विषष्टोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

जन्मेजय इस दिव्य कथाको पुण्य और विजयकी वृद्धि के लिये मेरेमुखसे निकली हुई सम्पूर्ण को श्रवणकर सदा कार्य में लगेहुए व्यासमुनि ने इस अद्भुत भारत आख्यान को तीनवर्ष में बनाया धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों विषयों में जो कुछ इसमहाभारत में कहागया है वह अन्य पुराणों मेंभी मिलेगा और जो नहीं कहा गयाहै वह अन्यत्रभी कहीं नहीं मिलेगा ५३ ॥

Earth with its seas. I shall recite all this history which gives virtue and victory, O Parikshit. Listen to the history. The Muni Vyas, regularly rising for three years composed the wonderful Mahabharat. O foremost of the Bharat race, whatever about religion, profit, pleasure and salvation is contained in this book, but not more, may be found elsewhere."

वैशम्पायन उवाच । राजोपरिचरोनाम धर्मनित्योमहीपतिः । बभूवमृगयांगन्तुं सदाकिलधृतव्रतः ॥ १ ॥ सचेदिविषयंरम्यं वसुःपौरवनन्दनः । इन्द्रोपदेशाज्जग्राह रमणीयंमहीपतिः ॥ २ ॥ तमाश्रमेन्यस्तशस्त्रं निवसन्तंतपोनिधिम् । देवाःशक्रपुरोगावै राजानमुपतस्थिरे ॥ ३ ॥ इन्द्रत्वमर्हो राजायं तपसेत्यनुचिन्त्यवै । तंसांत्वेननृपं साक्षात्तपसःसंन्यवर्त्तयन् ॥ ४॥ देवाऊचुः । नसङ्कीर्य्येतधर्मोऽयं पृथिव्यांपृथिवीपते त्वयाहिधर्मोविधृतः कृत्स्नंधारयतेजगत् ॥ ५ ॥ इन्द्र उवाच । लोकेधर्मंपालयत्वं नित्ययुक्तःसमाहितः । धर्मयुक्तस्ततोलोकान पुण्यान पश्यसिशाश्वतान् ॥ ६ ॥ दिविष्ठस्यभुविष्ठस्त्वं सखाभूतोममप्रियः । रम्यःपृथिव्यांयो देशस्तमावसनराधिप ७

अध्याय ६० ॥

वैशम्पायन ने कहा नित्य धर्म में तत्पर पृथ्वी का पतिराजाउपरिचर नाम हुआ और वह व्रतोंका धारण करनेवाला सदा शिकार खेलने में तत्परहुआ उस पुरुवंशियों को आनन्द देनेवाले वसु राजाने इन्द्रके उपदेश से मनोहर चेदिदेशको गृहणकिया जिसने कि आश्रम में अपने शस्त्रों को रख दियाहै इसप्रकार तप के खजाने रहते हुए राजाके समीप इन्द्रादि सम्पूर्ण देवता प्राप्तहुए इन्द्रने कहा यह राजा तपस्या से इन्द्रपदवी के योग्य है ऐसा विचार कर उस राजा वसु के समीप आकर शांति के साथ तपस्या से हटादिया । ४ । देवताबोले कि हे राजन् जिस से यह धर्म पृथ्वीमें न नष्टहो इसप्रकार तू उस धर्म को धारण कर जिस से सम्पूर्ण जगत धर्मको धारण करे । ५ । इन्द्रबोला हे राजन् तू सर्वदा सावधानता के साथ धर्म में लगाहुआ धर्म का पालनकर और धर्म से युक्तहोता हुआ सनातन पुण्यलोकों को देखेगा । ६ । स्वर्ग में रहने वाला मैं और पृथ्वी में रहता हुआ तू मेरा प्रिय सखा होगा और पृथ्वी में जो देश मनोहर हो उस में

CHAPTER LXIII

Vaishampayan began: There was a king named Uparichar, devoted to virtue, but very fond of hunting. This monarch, also called Vasu, of the Paurav family, conquered the fertile and charming country of Chedi by Indra's advice. In his advanced age, the king gave up fighting and became a recluse to practice asceticism. In the meantime Indra with other gods came to him with a belief that the king was practicing asceticism to become the king of gods. When the gods saw him they attracted his attention by soft words. The gods said, " Take care, O king, to see that virtue be not diminished over the Earth. Virtue itself, under thy protection, will protect the world." And Indra said, " Protect virtue, O king, on the earth.

पशव्यश्चैवपुण्यश्च प्रभूतधनधान्यवान् । स्वारक्ष्यश्चैवसौम्यश्च भोग्यैर्भूमिगुणैर्युतः ॥ ॥ ८ ॥ अर्थवानेषदेशोहि धनरत्नादिभिर्युतः । वसुपूर्णाचवसुधा वसचेदिषुचेदिप ॥ ९ ॥ धर्मशीलाजनपदाः सुसन्तोषाश्चसाधवः । नचमिथ्याप्रलापोऽत्र स्वैरेष्वपिकुतोऽन्यथा ॥ १० ॥ नचपित्राविभज्यन्ते पुत्रागुरुहितेरताः । युञ्जतेधुरिनोगाश्च कृशानसन्धुक्षयन्तिच ॥ ११ ॥ सर्वेवर्णाःस्वधर्मस्थाः सदाचेदिषुमानद । नतेऽस्त्यविदितंकिञ्चित्त्रिषु लोकेषुयद्भवेत् ॥ १२ ॥ दैवोपभोग्यंदिव्यं त्वामाकाशेस्फाटिकं महत् । आकाशगंत्वांमद्दत्तं विमानमुपपत्स्यते ॥ १३ ॥ त्वमेकःसर्वमर्त्येषु विमानवरमास्थितः । चरिष्यस्युपरिस्थोहि देवोविग्रहवानिव ॥ १४ ॥ ददामितेवैजयन्तीं

हे राजन् तू निवास कर ॥ ७ ॥ पशुओं के लिये हितकारी और पवित्र बहुत धन धान्य से युक्त और स्वर्ग के तुल्य भोग करने योग्य पृथ्वी के गुणों से युक्त और अर्थवान् धर्म से भराहुआ रत्नादिकों से युक्त और अनेक प्रकार के धनों से युक्त जहांकी पृथ्वी है हे राजन् ऐसे चेदिदेश में तू निवास कर । ९ । यह देश सब धर्म युक्त है और साधू लोग सन्तोष युक्त हैं और यहांपर कभी हास्य समयभी मिथ्या भाषण नहीं होतातो और समयों में कैसे होगा । १० । यहां पुत्र अपने बड़ोंके हितकारी होते हुए पिताओं से पृथक् नहीं होते बैलों को हल के अग्रभाग वा गाड़ी में भी युक्त नहीं करते और दुर्बलों को पुष्ट करते हैं । ११ । हे वसो सम्पूर्ण वर्ण चेदिदेश में अपने २ धर्म में हैं और तीनों लोकों में जो कुछ है वह तुझसे गुप्त नहीं है । १२ । दिव्य पदार्थों के भोगने योग्य और दिव्य स्फटिक का बनाहुआ और बड़ा आकाशगामी मेरा दिया हुआ विमान तुझको आकाश में प्राप्तहोगा तू अकेला सम्पूर्ण प्राणियोंके मध्य विमान में चढाहुआ देहधारी देवता की समान आकाश में फिरेगा । १४ । और जिस के कमल कभी न कुम्हलावें ऐसी

By being attentive to virtue, thou shalt always see the sacred regions. Though I live in heaven and thou on earth, yet thou art my dear friend. Dwell, O king, in that part of the earth which is delightful, abounding in animals, sacred, full of wealth and corn, well protected like heaven, of wholesome climate, graced with every object of enjoyment and fertile. Thy dominion, O king of Chedi, is full of wealth, gems, precious stones and mines. Its inhabitants are virtuous, honest, just and truthful. (Sons donot divide their wealth with their fathers and are ever mindful of the welfare of their parents.) Weak cattle are never worked in the plough or carts or in carrying the articles of merchandise; but they are well-fed and fattened. In Chedi, O reverencer of gods and guests, the four

मालाममूलानपङ्कजाम् । धारयिष्यतिसंग्रामे यात्वांशस्त्रैरविक्षतम् ॥ १५ ॥ लक्षणं चैतदेवेह भवितातेनराधिप । इन्द्रमालेतिविख्यातं धन्यमप्रतिमंमहत् ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । यष्टिश्चवैणवींतस्मै ददौवृत्रनिषूदनः । इष्टप्रदानमुद्दिश्य शिष्टानां प्रतिपालनीम् ॥ १७॥ तस्याः शक्रस्यपूजार्थं भूमौभूमिपतिस्तदा । प्रवेशंकारयामास गतेसम्वत्सरेतदा ॥ १८ ॥ ततःप्रभृतिचाद्यापि यष्टेःक्षितिपसत्तमैः । प्रवेशःक्रियतेराजन्यथातेनप्रवर्त्तितः ॥ १९ ॥ अपरेद्युस्ततस्तस्याः क्रियतेऽत्युच्छ्रयोनृपैः । अलंकृतायाःपिटकै र्गन्धमाल्यैश्चभूषणैः ॥ २० ॥ माल्यदामपरिक्षिप्ता विधिवत् क्रियतेऽपिच । भगवान् पूज्यतेचात्र हंसरूपेणचेश्वरः ॥ २१ ॥ स्वयमेवगृहीतेन वसोःप्री-

वैजयन्तीमाला मैं तुझको देताहूं जो संग्राम में तुझको शस्त्रों से भेदित न होनेदेगी १५ और हे राजन् तेरा इस संसार में यही एक चिन्हहोगा जो कि बड़ा धन्य और अनुपम इन्द्रमाल नाम से प्रसिद्ध होगा । १६ । और इन्द्रने श्रेष्ठोंके पालन करने वाली बांसकी एक लकड़ी उस राजा बसुको पारितोषिक में दी । १७ । और राजावसु ने एक वर्ष के उपरान्त इन्द्रकी पूजाके लिये उस लकड़ी को भूमि में प्रवेश कराया । १८ । और उस दिनसे अबतक जैसा कि उस राजा वसुने उस लकड़ीको प्रवेश कियाथा उसी प्रकार और राजाओं से भूमिमें इन्द्रकी पूजाके अर्थलष्ट्रिका प्रवेश कराया जाताहै । १९ । दूसरे दिन राजा लोग फिर उसको उठातेहैं जो कि वह लकड़ी गन्धमाला और गहनों से भूषितकी हुई सुवर्णकी पेटी में रक्खी जातीहै २० मालाओं से मुक्त विधि पूर्वक पूजाकी जाती है और इस रूपसे भगवान ने पूजा । २१ । वसुकी प्रीति से अपने आप हंसरूप इन्द्र ने गृहणकी है इन्द्र

castes are always engaged in their respective duties. I shall give thee a celestial car, such as only the gods possess, to carry thee everywhere in mid air, so that nothing that happens in the three worlds, may remain concealed from thee. Thou shalt then be the only being who, with human body, shall range in mid air. I shall also make thee a present of a triumphal garland of never-fading flowers, wearing which thou shalt get no wound in a battle and which, blessed and incomparable widely known on earth as Iudra's garlands, shall be thy distinctive badge." Indra gave (along with the above-named things), him a bamboo stick to protect the honest and the peaceful and the king, next year, planted it in the ground to worship the giver. From that time it has been a custom among kings, following Vasu's example, to plant a pole for Indra's woship.

त्यामहात्मनः । सतांपूजांमहेन्द्रस्तु दृष्ट्वादेवःकृतांशुभाम् ॥ २२ ॥ वसुनाराजमुख्येन प्रीतिमानब्रवीत् प्रभुः । येपूजयिष्यन्तिनरा राजानश्चमहंमम ।२३। कारयिष्यन्तिचमुदा यथाचेदिपतिर्नृपः । तेषांश्रीर्विजयश्चैव सराष्ट्राणांभविष्यति ॥ २४ ॥ तथास्फीतो-जनपदो मुदितश्चभविष्यति । एवंमहात्मनातेन महेन्द्रेणनराधिप ॥ २५ ॥ वसुःप्री-त्यामघवता महाराजोऽभिसत्कृतः । उत्सवंकारीयष्यन्ति सदाशक्रस्ययेनराः ॥२६॥ भूमिरत्नादिभिर्दानैस्तथा पूज्याभवन्तिते । वरदानमहायज्ञैस्तथा शक्रोत्सवेनच ॥२७॥ सम्पूजितोमघवता वसुश्चेदीश्वरोनृपः । पालयामासधर्मेण चेदिस्थः पृथिवीमिमाम् ॥ ॥ २८ ॥ इन्द्रप्रीत्याचेदिपतिश्चकारेन्द्रमहंवसुः। पुत्राश्चास्यमहावीर्याः पञ्चासन्नमितौजसः ॥ २९ ॥ नानाराज्येषुचसुतान् ससम्राडभ्यसेचयत् । महारथोमागधानां

उस वसुसे कीहुई उस उत्तम पूजाको देखकर प्रसन्न होकर बोला मेरे इस उत्सवको जो मनुष्य और राजा पूजा करेंगे या प्रसन्नता पूर्वक जैसे इस राजा वसु ने की है ऐसेही अन्यों से करावेंगे उनके लक्ष्मी विजय और राज्यकी वृद्धिहोगी । २४ । और उस राजा का देश समृद्धियुक्त होगा इस प्रकार इन्द्रने हे जन्मेजय वसुका प्रीति से सत्कार किया और जो मनुष्य सर्वदा इस उत्सवको करावेंगे वह भूमि और रत्नादि के दानोंसे संसार में पूज्य होवेंगे वरदान और बड़े यज्ञ और इन्द्र का उत्सव इत्यादि शुभकर्मों से इन्द्रने राजा वसुको सत्कार किया और वह राजा चेदिदेशों में रहता हुआ धर्म से सम्पूर्ण पृथ्वीका पालन करने लगा । २८ । और इन्द्रकी प्रीति के लिये राजा वसु इन्द्रके उत्सव को करने लगा और इस राजाके बड़े पराक्रमी और तेजस्वी पांच पुत्र उत्पन्न हुए २९ उस चक्रवर्ती वसुने उन पुत्रों को अपने राज्यमें अभिषेक किया जो कि मगधदेश में महा

The pole is then decked with golden cloth and scented garlands. For the gratification of Vasu, Indra, himself, came in the form of a swan, to accept the offerings and being pleased with the monarch, he said, "Those men and kings who shall worship me and joyously observe this festivity of mine like the king of Chedi, shall have glory and victory for their countries and kingdoms. Their cities also shall be prosperous and happy." Kings Vasu was thus blessed by the gratified Indra, the magnanimous chief of the gods. Those who observe this festivity of Indra with gifts of land and gems, are respected by the world. And king Vasu of Chedi, bestowing alms and performing great secrifices in the festivity of Indra was so respected. From Chedi he ruled the whole world virtuously and for the gratification of Indra ever observed the festivity. Vasu had

विश्रुतोयोवृहद्रथः ॥ ३० ॥ प्रत्यग्रहःकुशाम्बश्च यमाहुर्मणिवाहनम् । मावेल्लश्चयदुश्चैव राजन्यश्चापराजितः ॥३१॥ एतेतस्यसुता राजन्राजर्षेर्भूरितेजसः । न्यवेशयन्नामभिः स्वैस्तेदेशांश्चपुराणिच ॥ ३२ ॥ वासवाःपंचराजानः पृथग्वंशाश्चशाश्वताः । वसन्तमिन्द्रप्रासादे आकाशेस्फाटिकेचतम् ॥ ३३ ॥ उपतस्थुर्महात्मानं गन्धर्वाप्सरसोनृपम् राजोपरिचरेत्येवं नामतस्याथविश्रुतम् ॥ ३४ ॥ पुरोपवाहिनींतस्य नदींशुक्तिमतींगिरिः । अरौत्सीच्चेतनायुक्तः कामात्कोलाहलःकिल ॥ ३५ ॥ गिरिंकोलाहलंतन्तु पदा वसुरताड़यत् । निश्चक्रामपतस्तेन प्रहारविवरेणसा ॥३६॥ तस्यांनद्यामजनयन्मिथुनं पर्वतःस्वयम् । तस्माद्विमोक्षणात्प्रीता नदीराज्ञेन्यवेदयत् ॥३७॥ यःपुमानभवत्तत्रतं

रथ प्रसिद्ध प्रत्यगृह कुशाम्ब (इस कुशाम्बको मणिवाहनभी कहते हैं) मावेल्य यदु और जो किसी से नहीं जीता जाय । ३१ । बड़े तेजस्वी उस राजर्षि के यह पांच पुत्र थे अपने २ नामों से देश और नगरों को बसाया और बसु के पांच वंश के राजे जो कि पांच पुत्रोंसे पृथक् २ उत्पन्नहुए और बहुत दिनतक राज्यकिया इन्द्रके दियेहुए उस विमानपर बैठेहुए उसराजा वसु के समीप गन्धर्व और अप्सरा आई इसप्रकार वह राजा उपरिचर नाम से प्रसिद्धथा उसके नगर के समीप बहनेवाली शक्तिमति नाम नदीको चेतन्नतायुक्त कोलाहलनाम गिरिने काम से अपनेमें रोक लिया और राजावसुने उसपर्वतको अपनीलात से ताड़न किया और उसके ताड़नकरने से पर्वतके टूटनेपर वहनदी निकलगई ३६ और उस पर्वतने उसनदीसे एककन्या और पुत्र उत्पन्नकिया उनदोनोंको प्रसन्नतासे उसनदीने उकपर्वत से छुटकारापानेपर राजाको दिया ३७ और जो लड़का था उसको वसु ने अपनी सेनाका

---

five sons of great energy and prowess and he installed them as governors of various provinces. Vrahadrath, the Maharath, was installed in Magadh. His other sons were Pratyagra, Kusamv, also called Manivahan, Mavellya and Yadu, of great prowess and invincible in war. They were the founders of long dynasties of kings and they named their kingdoms and capitals after their own names. When king Vasu was seated on his crystal car, the gift of Indra, and ranged through the sky, he was visited by Gandharvs and Apsaras, and because he coursed through the upper regions he was called Uperichar. His capital was situated on the Shaktimati. She was once held fast by a living mountain named Kolahal maddened by lust Vasu, beholding this, kicked him and rescued her. But by that rape she begat twin children—a male and a female. Being grateful

सराजर्षिसत्तमः । वसुर्वसुमदश्चक्रे सेनापतिमरिन्दमः ॥ ३८ ॥ चकारपत्नींकन्यान्तु तथातांगिरिकांनृपः । वसोःपत्नीतुगिरिका कामकालंन्यवेदयत् ॥ ३९ ॥ ऋतुकालमनुप्राप्ता स्नातापुंसवनेशुचिः । तदहःपितरश्चैन मूचुर्ज्जहिमृगानिति ॥ ४० ॥ तंराजसत्तमंप्रीतास्तदामतिमताम्बर । सपितृणांनियोगन्त मनतिक्रम्यपार्थिवः ।४१। चचारमृगयांकामी गिरिकामेवसंस्मरन् । अतीवरूपसम्पन्नां साक्षाच्छ्रियमिवापराम् ॥४२॥ अशोकैश्चम्पकैश्चूतैरनेकैरतिमुक्तकैः । पुन्नागैःकर्णिकारैश्च वकुलैर्दिव्यपाटलैः ॥ ४३ ॥ पाटलैर्नारिकेलैश्च चन्दनैश्चार्जुनैस्तथा । एतैरम्यैर्महावृक्षैः पुण्यैःस्वादुफलैर्युतम् ॥ ४४ ॥ कोकिलाकुलसन्नादं मत्तभ्रमरनादितम् । वसन्तकालेतत्तस्य वनंचैत्ररथोपमम् ॥ ४५ ॥ मन्मथाभिपरीतात्मा नापश्यद्गिरिकांतदा । अपश्यन् कामसन्तप्तश्चरमाणोयदृच्छया ॥ ४६ ॥ पुष्पसञ्छन्नशाखाग्रं पल्लवैरुपशोभितम् । अशोकं-

स्वामी किया और कन्या को अपनी स्त्री किया और वसुकी पत्नी जो नदी की कन्याथी उसने । ३९ । ऋतुकाल को प्राप्तहो और स्नान कर पवित्रहो पुंसवन के लिये निवेदन किया और उसी दिन राजा वसु से पितरों ने कहा कि मृगों को मार । ४० । तब वसुने स्वीकार कर. अपनी स्त्री गिरिकाको जो लक्ष्मीकी समान अति रूपवतीथी याद करताहुआ शिकार खेलने को गया ॥ ४२ ॥ अशोक, चम्पक, आम और अतिमुक्तक पुन्नाग, कनेर, वकुल और दिव्यपाटल, पाटल, नारियल, अर्जुन इत्यादि मनोहर स्वादु फलवाले पवित्र वृक्षोंसे युक्त कोकिलाओंके नादसे युक्त और मतवाले भ्रमरों के शब्दों से युक्त जिसका मन बसन्तकालमें चैत्ररथकी समान था वह बनमें गया ४५ कामदेव से जिसका आत्मा भराहुआहै ऐसा वह राजा अपनी इच्छा से उस बन में काम से व्यकुल फिररहा था उसने अपनी स्त्री गिरिका को वहां न देखा ४६ पुष्पों से ढकीहुई शाखाओं

for his having released her from Kolahal's embrace, she gave them both to Vasu. And Vasu, the best of Rajarshis, made the male the general of his army and the girl, named Girika, was made Vasu's wife. And she when her season came, becoming pure after a bath, presented herself to her lord. But that very day his ancestors came to him and asked him for venison. The king, thinking that their command should not be disobeyed, went ahunting; but all the time he was thinking of Girika who was as beautiful as Lakshmi. The season being spring, the woods whthin which the king was roaming, had become delightful like the garden of paradise. There were the trees of, Ashok, Champak, Chuta. Atimukt, Punyada, Kamikar, Vakul, Divyapatal, Patal, Cocoanut, Sandal Arjun, and such beautiful trees with fragrant flowers and delicious fruits. The whole forest

स्तबकैश्छन्नं रमणीयमपश्यत ॥ ४७ ॥ अधस्तात्तस्य छायायां सुखासीनो नराधिपः
मधुगन्धैश्च संयुक्तं पुष्पगन्धमनोहरम् ॥४८॥ वायुना प्रेर्यमाणस्तु धूम्राय मुदमन्वगात्।
तस्य रेतः प्रचस्कन्द चरतो गहने वने ॥ ४९ ॥ स्कन्नमात्रं च तद्रेतो वृक्षपत्रेण भूमिपः ।
प्रतिजग्राह मिथ्या मे न पतेद्रेत इत्युत ॥ ५० ॥ इदं मिथ्या परिस्कन्नं रेतो मे न भवेदिति ।
ऋतुश्च तस्याः पत्न्या मे न मोघः स्यादिति प्रभुः ॥ ५१ ॥ संचिन्त्यैवं तदा राजा विचार्य
च पुनः पुनः । अमोघत्वं च विज्ञाय रेतसो राजसत्तमः ॥ ५२ ॥ शुक्रप्रस्थापने कालं
महिष्याः प्रसमीक्ष्य वै । अभिमन्त्र्याथ तच्छुक्रमारात्तिष्ठन्तमाशुगम् । सूक्ष्मधर्मार्थत-
त्त्वज्ञो गत्वा श्येनं ततोऽब्रवीत् ॥ ५३ ॥ मत्प्रियार्थमिदं सौम्य शुक्रं मम गृहं नय ।
गिरिकायाः प्रयच्छाशु तस्या ह्यार्तवमद्य वै ॥ ५४ ॥ गृहीत्वा तत्तदा श्येनस्तूर्णमुत्पत्य

पत्तोंसे शोभित अति रमणीय और गुच्छों से युक्त अशोकवृक्ष को देखा मनोहर गंधोंसे युक्त और पुष्पोंकी सुगन्धिसे सुन्दर उसवृक्षके नीचे छाया में सुखसे बैठाहुआ राजावसु कामके बढ़ानेवाले वायुसे प्रेरित और विषयकी बासना के लिये प्रसन्नहोकर मन में स्त्री को प्राप्तहोगया और उस बड़े भारी वन में फिरते हुए राजाकावीर्य पतितहुआ ४९ उस वीर्य के गिरतेही मेरावीर्य नष्टहो यह विचारकर राजाने उसको पत्ते में गृहण किया ५० यह मेरावीर्य वृथा नहोजाय और मेरी पत्नी का यह ऋतुकालभी व्यर्थ नहो इसप्रकार उस प्रभु राजा वसु ने बारम्बार विचार कर और अपने वीर्यकी अमोदता को जानकर और अपनी स्त्री को वीर्य भेजने का समय जानकर उस वीर्य को पुंसवन मन्त्रों से युक्त कर समीपमें बैठेहुए और शीघ्रगामी बाज के समीप जाकर उस धर्मके तत्त्व जानने वाले राजा ने कहा कि हे श्येन मेरी प्रसन्नताके कारण तू इसको मेरेघर लेजा ।.५४॥ और मेरी स्त्री गिरिका को शीघ्र देदे क्योंकि उसका यह ऋतुकाल का समय है आर

rang with the sweet notes of Cuckkoo and echoed with the hum of the maddened bee. The king wished to be with his wife but he saw her not there. The king, possessed with desire and roaming hither and thither, saw a beautiful Ashoka, having dence foliage and branches covered with flowers. The king sat under the pleasant shadow of that tree and being affected by the fragrance, the season and the wholesome breeze, could not keep a way from himself the thought of the beautiful Girika and his semen dropped down. He took it on a leaf and was thinking how to send it to his wife when he saw a hawk perching near him. He gave it to him to be carried to her. The hawk was carrying it through the air when he was met by another hawk which pounced upon the former think-

वेगवान् । जवंपरममास्थाय प्रदुद्राव विहंगमः ॥ ५५ ॥ तमपश्यदथायान्तं श्येनंश्येन स्तथापरः । अभ्यद्रवच्चतंसद्यो दृष्ट्वैवामिषशङ्कया ॥ ५६ ॥ तुण्डयुद्धमथाकाशे तावुभौ सम्प्रचक्रतुः । युध्यतोरपतद्रेतस्तच्चापियमुनाम्भसि ॥ ५७ ॥ तत्राद्रिकेति विख्याता ब्रह्मशापाद्वराप्सराः । मीनभावमनुप्राप्ता बभूवयमुनाचरी ॥ ५८ ॥ श्येनपादपरि-भ्रष्टं तद्वीर्यमथवासवम् । जग्राहतरसोपेत्य साद्रिकामत्स्यरूपिणी ॥५९॥ कदाचिद पिमत्सीतां बबन्धुर्मत्स्यजीविनः । मासेचदशमेप्राप्ते तदाभारतसत्तम ॥ ६० ॥ उ-ज्जहुरुदरात्तस्याः स्त्रींपुमांसञ्चमानुषम् । आश्चर्यभूतंतद्गत्वा राज्ञेऽथमत्स्य वेदयन् ॥ ॥ ६१ ॥ कायेमत्स्याइमौराजन् सम्भूतौमानुषाविति । तयोःपुमांसंजग्राह राजोपरि चरस्तदा ॥ ६२ ॥ समत्स्योनामराजासीद्धार्मिकःसत्यसंगरः । अप्सरा मुक्तशा पाचक्षणेनसमपद्यत ॥ ६३ ॥ यापुरोक्ताभगवता तिर्यग्योनिगताशुभा । मानुषौज

वह बड़े वेगवाला उस वीर्य को लेकर आकाश में बड़े वेग से जाने लगा उस बाजको आते हुए दूसरे बाजने देखा । ५६ । और देखतेही मांसकी शंका से उस पर दौड़ा और पुनः दोनों का आकाश में युद्ध होने लगा । ५७ । उन दोनों के लड़ते समय वह वीर्य यमुना में गिरा और यमुना में अद्रिका नाम एक अप्सराथी जो ब्राह्मण के शाप से मछली होकर यमुना में रहतीथी, और बाज के पंजोंमें से गिरेहुए वसु के वीर्यको उस मत्स रूपवाली अप्सरा ने गृहण किया और कभी मछली मारने वालोंने उस मछली को अपने जाल में पकड़ा । ६० । और हे जनमेजय दसवें महीने में उस मछली के उदर से मनुष्य रूप दो बालक उत्पन्न हुए । ६१ । इस आश्चर्यको उन्हों ने राजा के समीप जाकर निवेदन किया हे राजन् इस मछली की काया से दो स्त्री और पुरुष उत्पन्न हुए हैं । ६२ । उन दोनों मेंसे राजा वसु ने पुरुष का ग्रहण किया वह मत्स नाम धर्मात्मा

---

ing it was carrying meat. The two fought in the air by beak and talon and in the struggle which ensued the seed fell into the waters of the Jamna wherein lived an Apsara named Adrika, transformed by a Brahman's curse into a fish. She saw the seed and swallowed it at once. Not long after, the fish was caught by a fisherman. She had swallowed the seed ten months before and two children a male and a female—were taken out of her. The fisherman was amazed at seeing children, like those of human beings come out of the fish's body. He brougt the children to king Uparichar and told all that had happened. The male child was taken by the king and afterwards became the truthful and virtuous monarch Matsya. The Apsara was freed from the curse on the birth of the twins. The

नयित्वात्वं शापमोक्षमवाप्स्यसि ॥ ६४ ॥ ततःसाजनयित्वातौ विशस्तामत्स्यघातिना । सन्त्यज्यमत्स्यरूपं सादिव्यंरूपमवाप्यच ॥ ६५ ॥ सिद्धर्षिचारणपथं जगामाथ वराप्सराः । साकन्यादुहितातस्या मत्स्यामत्स्यसगन्धिनी ॥ ६६ ॥ राज्ञादत्ताचदाशाय कन्येयंतेभवत्विति । रूपसत्त्वसमायुक्तासर्वैःसमुदितागुणैः ॥ ६७ ॥ सातुसत्यवतीनाम मत्स्यघात्यभिसंश्रयात् । आसीत्सामत्स्यगन्धैव कञ्चित्कालं शुचिस्मिता ॥ ६८ ॥ शुश्रूषार्थंपितुर्नावं वाहयन्तींजलेचताम् । तीर्थयात्रांपरिक्रामन्नपश्यद्वै पराशरः ॥ ६९ ॥ अतीवरूपसम्पन्नां सिद्धानामपिकांक्षिताम् । दृष्ट्वैचसतांधीमांश्चकमे चारुहासिनीम् ॥ ७० ॥ दिव्यांतांवासवींकन्यां रम्भोरुं मुनि पुंगवः । संगंममकल्याणि कुरुष्वेत्यभ्यभाषत ॥ ७१ ॥ साब्रवीत्पश्यभगवन् पारावारस्थितानृषीन्।

सत्यवादी राजा हुआ । ६३ । और वह अप्सरा क्षणमात्र में अपने शाप से छूटगई जो कि उस जलचर योनि में प्राप्तथी कि तू मनुष्यों को उत्पन्न करके शाप से छूटजायगी वह मछली चीरीहुई और दो मनुष्यों को उत्पन्न कर और मछली के रूपको त्याग दिव्य देह को पाकर सिद्ध और ऋषियोंसे युक्त आकाश मार्गको गई और वह कन्या जोकि मछली से उत्पन्न और वैसीही गन्धवाली थी वह राजाने उसधीमर को उसकी पुत्री कहकरदी । ६७ । रूप और तेज से युक्त और सम्पूर्ण गुणों से भरीहुई वह कन्या सत्यवती नाम से प्रसिद्ध धीमरों के आश्रय से कुछ कालतक मत्स्यगन्धा रही और जो कि अपने पिताकी आज्ञा को पालन कर जल में नावको चलातीथी । ६९ । तीर्थयात्रा में भ्रमण करते हुए पराशर ऋषि ने अत्यन्त रूपवाली कन्या को देखा । ७० । उस पराशर ने सुन्दर हास्य युक्त दिव्यरूप वाली केले के थम्भ के समान जंघा वाली उस कन्या को देखतेही गृहण करनेकी इच्छकी । ७१ । हे कल्याणी मेरेसाथ समागम कर यह कहा वहबोली हे

Brahman who cursed her had foretold to the same effect and accordingly she reassumed her natural form and went home. The king gave the fisherman the girl produced from the fish and told him to make her his daughter. She smelt of the fish and was known as Satyavati. She was very beautiful and virtuous but had the smell of a fish. She helped her father in his vocation of playing the boat on the waters of the Jamna. While thus employed she was one day seen by the great Rishi Parashar. Gifted with great beauty and coveted by a wandering anchorite she was asked to give herself up to the Rishi's embrace. And Satyavati said that she could not grant his request as there were people looking towards them on both sides of the river. The rishi thereupon created a fog which

आवयोर्दृष्टयोराभिः कथंतु स्यात्समागमः ॥ ७२ ॥ एवंतयोक्तो भगवान्नीहारमसृजत्
प्रभुः । येनदेशःससर्वस्तु तमोभूत इवाभवत् ॥ ७३ ॥ दृष्ट्वासृष्टन्तुनीहारं ततस्तंपरम
र्षिणा । विस्मितासाभवत् कन्या व्रीडिताचतपस्विनी ॥ ७४ ॥ सत्यवत्युवाच । वि
द्धिमांभगवन् कन्यां सदापितृवशानुगाम् । त्वत्संयोगाच्चदुष्येत कन्या भावोममानघ
॥ ७५ ॥ कन्यात्वेदूषितेवापि कथंशक्ष्येद्विजोत्तम । गृहंगन्तुमृषेचाहं धीमन्नस्थातुमु
त्सहे । एतत्संचिन्त्यभगवन् विधत्स्वयदनन्तरम् ॥ ७६ ॥ वैशंपायन उवाच । एव
मुक्तवतींतान्तु प्रीतिमानृषिसत्तमः । उवाचमत्प्रियंकृत्वा कन्यैवत्वं भविष्यसि ॥७७॥
वृणीष्वचवरंभीरु यंत्वमिच्छसिभामिनि । वृथाहिनप्रसादोमे भूतपूर्वःशुचिस्मिते ७८
एवमुक्तावरंवव्रे गात्रसौगन्ध्यमुत्तमम् । सचास्यैभगवान् प्रादान्मनसः कांक्षितंभुवि

भगवन् देखो कि वार और पार ऋषि लोग खड़े हैं—और इन के देखनेपर हमदोनों का संगम किसप्रकार होसक्ता है ऐसा कहने पर भगवान् पराशर ने कोहर उत्पन्न किया ७३ जिससे सम्पूर्ण देश अन्धकार युक्तहोगया और वह तपस्विनी कन्या उस कोहर को देख कर विस्मित और लज्जित हुई सत्यवतीबोली कि हेभगवन् मुझको अपने बाप के वश और कन्या जानो हे पापरहित ऋषि आप के संयोग करने से मेरा कन्याभाव दूषितहो जावेगा और दूषितहोने पर हेब्राह्मण किसप्रकार मैं घर जासकूंगी और किसप्रकार जी सकतीहूं सो आप इन बातों को सोचकर जो चाहें सो करें । ७७ । ऐसा उस कन्याके कहने पर अत्यन्त प्रेमयुक्त पराशरऋषिबोला मुझको प्रसन्नकर फिर तू कन्याहोजावेगी । ७८ । और हेभयभाववाली जो तू चाहे औरभी मुझसे वरदान मांग और पवित्र हास्य

---

enveloped the place on all sides with darkness. She wondered much at the creation of the fog by the rishi and was suffused with blushes of bashfullness. She then said, "O possessor of the six attributes, you know that I am a maiden and under the control of my father. O sinless rishi, by accepting your embraces my virginity shall be destroyed and I shall feel ashamed to return home. The life will become unbearable to me. Bearing all this in your mind do the needful." The rishi, well pleased with her speech replied, "Thou shalt remain a virgin even after granting my request. Ask any other boon that you may desire. My word shall never go in vain." The girl requested that her body might emit a sweet scent, and the rishi at once granted the request. Having obtained her boon she was much gratified and her season immediately came. She accepted the embraces of that wonder working rishi, and was after-

॥७९॥ ततोलब्धवराप्रीता स्त्रीभावगुणभूषिता । जगामसहसंसर्गमृषिणाद्भुतकर्मणा
॥ ८० ॥ तेनगन्धवतीत्येवं नामास्याःप्रथितंभुवि । तस्यास्तु योजनाद्गन्धमाजिघ्रन्त
नराभुवि ॥८१॥ तस्यायोजन गन्धेति ततो नामापरं स्मृतम् । पराशरोऽपि भगवान्
जगामस्वंनिवेशनम् ॥८२॥ इतिसत्यवतीहृष्टा लब्धावरमनुत्तमम् । पराशरेणसंयुक्ता
सद्योगर्भं सुषावसा ॥ ८३ ॥ यज्ञचयमुनाद्वीपे पाराशर्य्यःसवीर्य्यवान् । समातरमनु
ज्ञाप्य तपस्येवमनोदधे ॥ ८४ ॥ स्मृतोऽहंदर्शयिष्यामि कृत्येष्वितिचसोऽब्रवीत् । एवं
द्वैपायनोजज्ञे सत्यवत्यांपराशरात् ॥ ८५ ॥ न्यस्तोद्वीपेस यद्बालस्तस्माद्द्वैपायनःस्मृ
तः । पादापसारिणंधर्मं सतुविद्वान युगेयुगे ॥ ८६ ॥ आयुःशक्तिंचमर्त्यानां युगावस्था

युक्त मेरी प्रसन्नता कभी वृथा न हुई । ७९ । इसप्रकार मुनि के कहने पर अपने शरीर में मच्छ गन्धको त्यागकर उत्तम गन्धहोने का वरदान मांगा और पराशर ने उसके मन वांछितवर को दिया । ८० । तिसके उपरान्त वरपाकर प्रसन्न चित्त वह कन्या रतिधर्म से सोभित होगई और उस अद्भुत कर्म वाले ऋषिके साथ मैथुनको प्राप्तहोगई । ८१ । और उसके वरदानसे इसका नाम गन्धवती प्रसिद्ध हुआ और उसकी गन्धको मनुष्य एक योजन दूरसे गृहण करते थे ८२ तिस से उसका नाम योजन गन्धाभी प्रसिद्ध हुआ इस प्रकार वह सत्यवती उत्तम वरको पाकर प्रसन्न हुई ८३ और पराशर के संयोग से उसने शीघ्रही पुत्र उत्पन्न किया और वह बड़ा तेजस्वी व्यास पराशर का पुत्र यमुनातीर पर हुआ ८४ वह माता से आज्ञा लेकर तपस्या में मनको धारण करने लगा और कहा कि हेमाता जब तुम किसी समय मुझको यादकरोगी मैं शीघ्र उपस्थित हूंगा ८५ इसप्रकार व्यास—पराशर और सत्यवती में उत्पन्न हुआ और जो उसका यमुनाके द्वीप में जन्म हुआ इस कारण उसका नाम द्वैपायन प्रसिद्ध हुआ ८६ और उस विद्वान ने युगयुग में

words known as Gandhwati or the sweet scented one. People could perceive her sweet scent from a great distance and she was given anothar name Yojangandha. The illustrious Prashar, then went home. Satyavati was much pleased with having received the boon from Parashar and became the mother of a child of great energy in that very island. The child with the permission of his mother set his mind on asceticism and told his mother that he would come to her when wanted. Vyas was the child born of Satyavati and Parashar and because he was born in an island (dwip) he was called Dwaipayan. And seeing that man's life and virtue was decreasing each Yug (period of world's age) and moved by the desire of doing good to the people, the learned Rishi Vyas divided the Vedas into four parts and so was named Vyas(a compiler). Vyas taught the Vedas and the Mahabharat to Samantu, Jaimini, Paila, his own son Suk and

मवेक्ष्यच । ब्रह्माणोब्राह्मणानांच तथानुग्रहकांक्षया ॥ ८७ ॥ विव्यासवेदान् यस्मा
त्स तस्माद्व्यास इतिस्मृतः । वेदानध्यापयामास महाभारतपञ्चमान् ॥ ८८ ॥ सु-
मन्तुंजैमिनिं पैलं शुकंचैव स्वमात्मजम् । प्रभुर्वरिष्ठो वरदो वैशम्पायनमेवच ॥ ८९ ॥
संहितास्तैः पृथक्त्वेन भारतस्यप्रकाशिताः । तथाभीष्मःशान्तनवो गंगायाममितद्युतिः
॥ ९० ॥ वसुवीर्य्यात्समभवन्महावीर्यो महायशाः । वेदार्थविच्च भगवानृषिर्विप्रो
महायशाः ॥ ९१ ॥ शूलेप्रोतः पुराणर्षिरचौरश्चौरशङ्कया । अणीमाण्डव्यइत्येवं वि-
ख्यातः समहायशाः ॥९२॥ सधर्ममाहूयपुरा महर्षिरिदमुक्तवान् । इषीकयामया बा
ल्याद्विद्धाह्येका शकुन्तिका ॥ ९३ ॥ तत्किल्विषंस्मरेधर्म नान्यत्पापमहंस्मरे । तन्मे
सहस्रसमितंकस्मान्नेहाजयत्तपः ॥ ९४ ॥ गरीयानब्रह्मणवधः सर्वभूतवधाद्यतः ।

धर्म को एक २ पादसे घटताहुआ और मनुष्यों की शक्ति और आयुको और युगकी
अवस्था को भी देखकर और ब्राह्मणों पर अनुग्रहकी इच्छा से और वेदकी इच्छासे जो
उसने वेदोंको शाखाके भेद से विस्तार किया इस कारण उसका नाम व्यासभी प्रसिद्धहै
८८ भारत सहित पांचों वेदोंको सुमन्तु जैमिनिपैल और अपने पुत्र शुकदेव और वैशम्पायन
को श्रेष्ठ प्रभु व्यासने पढ़ाया और उन सुमन्तु आदिक पांचोंने भारतकी संहिताओं को
प्रकाश किया ९० इसी प्रकार बड़ी कान्तिवाले राजा शन्तनु ने गंगाजी में बड़ा तेजस्वी
भीष्म जोकि बड़ा यशवाला और पराक्रमी था वसुके वीर्य से उत्पन्न किया ९१ वेदोंके
अर्थका जानने वाला बड़े यशवाला विप्रर्षि अणिमाण्डव्य नाम से प्रसिद्ध था वह चोर न
होने परभी चोरकी शंका से शूली में चढाया गया और उसने धर्मको अपने समीप बुला-
कर कहा कि ९३ हे धर्म मैंने बालकपन से एक तीरसे एक पक्षीकी स्त्री को वेधाथा उस
अपने पापको मैं यादकरता हूं और कोई पाप मुझको यादनहीं आता ९४ उस पापको उस

Vaishampayan, and all these introduce the Mahabharat among others. Bhishm of great energy, fame and prowess who had sprung from the component parts of the Vasus, was born in Ganga by Shantanu. And there was a Rishi of the name of Animandavya of great fame, conversant in the meaning of the Vedas, the possessor of six virtues and gifted with great energy and fame. He was impaled on a false accusation of theft and he, thereupon called Dharm and told him these words "In my childhood I had pierced a little fly in a blade of grass. I donot remember to have committed any other sin and have expiated for that one a thousand fold. Let me know Dharm, has not that sin been destroyed by my asceticism? And because the killing of a Brahman is more heinous than that of any other living thing, therefore, O Dharm, thou hast been sinful and therefore shalt be born on the earth by a Sudra woman." For that

तस्मात्त्वं किल्विषीधर्म शूद्रयोनौजनिष्यसि ॥९५॥ तेनशापेनधर्मोऽपि शूद्रयोनावजा
यत । विद्वान् विदुररूपेण धार्मीतनुरकिल्विषी ॥ ९६ ॥ संजयोमुनिकल्पस्तु जज्ञे
सूतोगवल्गणात् । सूर्याच्चकुन्तिकन्यायां यज्ञेकर्णोमहाबलः ॥ ९७ ॥ सहजंकवचं
विभ्रत्कुण्डलोद्योतिताननः । अनुग्रहार्थंलोकानां विष्णुर्लोकनमस्कृतः ॥ ९८ ॥ वसु
देवात्तुदेवक्यां प्रादुर्भूतोमहायशाः । अनादि निधनोदेवः सकर्त्ताजगतःप्रभुः ॥९९॥
अव्यक्तमक्षरंब्रह्म प्रधानं त्रिगुणात्मकम् । आत्मानमव्ययंचैव प्रकृतिंप्रभवंप्रभुम् १००
पुरुषंविश्वकर्माणं सत्त्वयोगंध्रुवाक्षरम् । अनन्तमचलंदेवं हंसंनारायणंप्रभुम् ॥१०१॥
धातारमजमव्यक्तं यमाहुःपरमव्ययम् । कैवल्यंनिर्गुणं विश्व मनादिमजमव्ययम् १०२
पुरुषःसविभुःकर्त्ता सर्वभूतपितामहः । धर्मसंवर्द्धनार्थाय प्रजज्ञेऽन्धकवृष्णिषु १०३ ॥

से हजारों गुणे और परिमाण रहित मेरे तपने क्यों नहीं जीता क्योंकि सम्पूर्ण प्राणियों के वध से ब्रह्मण का वध बड़ा भारीहै ९५ तिससे पापी हे धर्ममेरे शापसे शूद्र योनि में जन्म लेगा उसी पाप से धर्मने शूद्रयोनि में जन्म लिया ९३ उस धर्मने विद्वान विदुर के रूप से धार्मिक पाप रहित देह शूद्रयोनि में धारण किया और संजय मुनियों के तुल्य ने गवल्गण सूतके घर जन्म लिया ९७ कुन्तिभोज राजाकी कन्या कुन्तिमें सूर्य्य से बड़ा बलवान् कर्ण जोकि जन्म सेही कवच और कुण्डलों को पहिरेहुए था और जिसका मुख चमकताथा वह उत्पन्न हुआ ९८ सम्पूर्ण लोकों पर अनुग्रह करने को और नमास्कृत बड़े यशवाले भगवान विष्णुने देवकी में वसुदेवके वीर्य से जन्म लिया ९९ और वह अनादि अनन्त और जगत् का कर्त्ता प्रभूथा जिस को अव्यक्त अक्षर ब्रह्म प्रधान, त्रगुणात्मक आत्मा अव्यय प्रकृति प्रभव प्रभु पुरुष विश्वकर्मा सत्वयोग ध्रुवा अक्षर अनन्त अचल देव नारायण प्रभु धाता अज अव्यक्त परमव्य कैवल्य विश्व अनादि अज अव्यय

course Dharm was born in the form of Vidur, pure of body and free from sin. Suta Sanjaya like a Muni was born of Gavalgan; Karn great strength was born of Kunti in her maidenhood by Surya. He came into the world with a natural armour and bright earrings. Vishnu himself, of world wide fame and worshipped by the world was born of Devki and Vasudev for the benefit of the worlds. He free from birth and death, the creator of the universe and lord of all. In fact, the invisible cause of all without deterioration, the all pervading spirit, the centre round which all things move, the possessor of the three virtues, called Satwa, Raja and Tama, the life of all the immutable, the creator of the universe, the controlling lord, the invisible dweller in every object, the maker of the universe of five elements, the possessor of the six attributes, the Pranav or Om of the Vedas, the infinite, immovable by any force except his own will,

अस्त्रज्ञौतुमहावीर्यौ सर्वशास्त्रविशारदौ । सात्यकिःकृतवर्माच नारायणमनुव्रतौ ॥ ॥ १०४ ॥ सत्यकाद्धृदिकाच्चैव जज्ञातेऽस्त्रविशारदौ । भरद्वाजस्यचस्कन्नंद्रोण्यां शुक्रमवर्द्धत ॥ १०५ ॥ महर्षेरुग्रतपसस्तस्माद्द्रोणोव्यजायत । गौतमान् मिथुनं जज्ञे शरस्तम्बाच्छरद्वतः ॥ १०६ ॥ अश्वत्थाम्नश्चजननी कृपश्चैवमहाबलः । अश्वत्थामा ततो जज्ञे द्रोणादेवमहाबलः ॥ १०७ ॥ तथैवधृष्टद्युम्नोऽपि साक्षादग्निसमद्युतिः । वैताने कर्मणि तत पावकात् समजायत ॥ १०८ ॥ वीरो द्रोण विनाशाय धनुरादायवीर्य्यवान् । तत्रैव वेद्यां कृष्णापि जज्ञे तेजस्विनी शुभा ॥ १०९ ॥ विभ्राजमाना वपुषा बिभ्रतीरूप मुत्तमम् । प्रह्लादशिष्योनग्नजित् सुबलश्चाभवत्ततः ॥ ११० ॥ तस्यप्रजा धर्महन्त्री जज्ञेदेवप्रकोपनात् । गांधारराजपुत्रोऽभूच्छकुनिः

कहते हैं वही पुरुष विभु कर्त्ता और अनादि प्राणियों का पितामह है और उसने धर्मको बढाने के लिये अन्धक और वृष्णिवंशियों में जन्म लिया अस्त्र विद्या के जानने वाले बड़े पराक्रमी सर्वशास्त्र के पण्डित सात्यकि और कृतवर्मा जो कि दोनों श्री कृष्ण के आज्ञाकारी थे दोनों सत्यक और हृदिक से उत्पन्न हुए । ५ । उग्रतप करनेवाले महर्षि भरद्वाज के वीर्य से गिरिकन्दा में गिर कर वृद्धि को प्राप्त हुआ और उस से द्रोणाचार्य उत्पन्न हुआ और गौतम के शरों के समूह में गिरेहुए वीर्य से एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुआ (अश्वत्थामा की माता और कृपाचार्य) तिस के उपरान्त द्रोणाचार्य से बड़ा बलवान पुत्र उस कन्या से उत्पन्न हुआ और इसी प्रकार अग्नि की समान तेजस्वी वैतान नामक यज्ञ में अग्नि से धृष्टद्युम्न उत्पन्नहुआ जोकि धनुषको हाथमें लिये हुए तेजस्वी द्रोणाचार्य के नाशका हेतुथा और उसी यज्ञ में तेजस्विनी शुभलक्षणवाली और देहसे प्रकाशमान उत्तमरूपको धारण करती हुई द्रोपदी वेदीमें उत्पन्नहुई । १० । प्रह्लाद का शिष्यनग्नजित

displayed in splendour, the Sanyas personified, Narayan, the creator of the Earth, the great combiner, the increate, the invisible root of all, the great unchangeable, the One, having no qualities that are subject to the senses, the Universe itself, without beginning, birth and decay, the possessor of infinite wealth and the progenitor of all beings, manifested himself in the race of the Andhak— Vrishnis for the improvement of virtue. Satyaki and Kritvarma, possessing great energy and the science of arms, learned in all the branches of knowledge, obedient to God and competent in the use of arms, were born of Satyaki and Hridika. From the great Rishi Bharadwaj was born Drona. Gautam was the father of the twins, (Kripi) the mother of Ashwathama and Kripa of great strength. The mighty Ashwathama was the son of Drona. Dhrishtdyumn, in splendour like Agni, was the outcome of the sacrificial fire. He was born, bow

सौवलस्तथा ॥ १११ ॥ दुर्योधनस्य जननी जज्ञातेऽर्थविशारदौ । कृष्ण द्वैपायना-
ज्जज्ञे धृतराष्ट्रो जनेश्वरः ॥११२॥ क्षेत्रे विचित्रवीर्यस्य पाण्डुश्चैव महाबलः। धर्मार्थ
कुशलाधीमान् मेधावीधूतकल्मषः ॥ ११३ ॥ विदुरः शूद्रयोनौतु जज्ञे द्वैपायनादपि ।
पाण्डोस्तुजज्ञिरे पञ्च पुत्रा देवसमाः पृथक् ॥ ११४ ॥ द्वयोःस्त्रियोर्गुणज्येष्ठस्तेषा-
मासीद्युधिष्ठिरः । धर्माद्युधिष्ठिरो जज्ञे मारुताच्च वृकोदरः ॥ ११५ ॥ इन्द्राद्धनंजयः
श्रीमान सर्वशस्त्रभृतांवरः । जज्ञातेरूपसम्पन्ना वश्विभ्याञ्चयमावपि ॥ ११६ ॥
नकुलःसहदेवश्च गुरुशुश्रूषणेरतौ । तथापुत्रशतं जज्ञे धृतराष्ट्रस्यधीमतः ॥ ११७ ॥
दुर्योधनप्रभृतयो युयुत्सुःकरणस्तथा । ततोदुःशासनश्चैव दुःसहश्चापिभारतः ११८
दुर्मर्षणो विकर्णश्च चित्रसेनोविविंशतिः । जयःसत्यव्रतश्चैव पुरुमित्रश्चभारत ११९ ॥

और उसका पुत्र सुवल हुआ और सुवलकी सन्तान गांधारी और शकुनि दैवके कोपसे धर्म हन्त्री हुई । ११ । गन्धार देश के राजा सुवलका पुत्र शकुनि हुआ और बेटी दुर्योधन की माता गन्धारी हुई और यह दोनों अर्थ विद्या में बड़े चतुर हुए । १२ । और व्यासजी के वीर्य से विचित्र वीर्य की स्त्रीमें राजा धृतराष्ट्र और बलवान पाण्डु हुए । १३ । और धर्म अर्थ में चतुर बुद्धिमान पाप रहित विदुर व्यास के वीर्य से शूद्रा में उत्पन्न हुआ । १४ । और पाण्डु के देवताओंके तुल्य पांच पुत्रदो स्त्रियोंसे पृथक् २ हुए और उन में ज्येष्ठ युधिष्ठिर हुआ । १५ । धर्म से युधिष्ठिर और वायु से भीमसेन और इन्द्रसे सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन उत्पन्नहुआ । १६ । रूपवान् बडों की सेवा करनेवाले नकुल और सहदेव अश्विनीकुमारोंसे उत्पन्न हुए । १७ । और बुद्धिमान धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि सौ पुत्र उत्पन्नहुए उन में दुर्योधन, युयुत्सु, करण, दुःशासन, दुस्सह, दुर्मर्षण, विकर्ण

in hand, for the destruction of Drona. From the same source was born Krishna (Draupadi) of bright and handsome features and great beauty. The diseiples of Prahrad were Nagnjit and Suval. From Suval was born Shakunti who from the curse of gods was the slayer of creatures and the foe of virtue. He had also a daughter— the mother of Duryodhan. And both were expert in gaining worldly ends. Krishna dwaipayan (Vyas) produced, in the widows of Vichitravirya, Dhritrashtra, the king of men, Pandu of great strength, and in the Sudra woman, the wise and intelligent Vidur conversant with both Dharm and Arth, and free from all sins. Pandu had five sons by his two wives like those of gods. The eldest of them was Yudhishthir who was born of Dharm; Bhim of the wolf's stomach of Marut; Dhananjaya (Arjun) blessed with good fortune

वैश्यापुत्रोयुयुत्सुश्च एकादश महारथाः । अभिमन्युःसुभद्रायामर्जुनादभ्यजायत ॥
॥ १२० ॥ स्वस्रीयोवासुदेवस्य पौत्रःपाण्डोर्महात्मनः । पाण्डवेभ्योहि पाञ्चाल्यां
द्रौपद्यांपञ्चजज्ञिरे ॥ १२१ ॥ कुमारारूपसम्पन्नाः सर्वशास्त्र विशारदाः । प्रातिवि-
न्ध्योयुधिष्ठिरात्सुतसोमोवृकोदरात् ॥ १२२ ॥ अर्जुनाच्छ्रुतकीर्त्तिस्तु शतानीकस्तु
नाकुलिः । तथैवसहदेवाच्च श्रुतसेनःप्रतापवान ॥ १२३ ॥ हिडिम्बायांचभीमेन
वने जज्ञे घटोत्कचः । शिखण्डी द्रुपदाज्जज्ञे कन्या पुत्रत्वमागता ॥ १२४ ॥ यांयक्षः
पुरुषंचक्रे स्थूणःप्रिय चिकीर्षया । कुरूणां विग्रहेतस्मिन समागच्छन्बहून्यथ १२५॥
राज्ञांशतसहस्राणि योत्स्यमानानिसंयुगे । तेषामपरिमेयानां नामधेयानिसर्वशः ॥

चित्रसेन, विविंशति, जय, सत्यव्रत, पुरु मित्र, वैश्यका पुत्र, युयुत्सु यह ११ पुत्र हे जनमेजय महारथी उत्पन्न हुए । २० । श्रीकृष्णकी बहिन सुभद्रा से महात्मा पाण्डुका पौत्र अभिमन्यु अर्जुन के वीर्य से उत्पन्नहुआ । २१ । रूपसे युक्त सम्पूर्ण शास्त्रकेज्ञान नेवाले पांचपुत्र पांचो पाण्डवोंके द्रौपदीसे हुए । २२ । वनमें प्रतिविंद युधिष्ठिरसे और सुतसोम भीमसेन से हुआ और अर्जुनसे श्रुतिकीर्त्तिहुआ और नकुल से शतानीकहुआ । २३ । और सहदेव से प्रतापी श्रुतसेन उत्पन्न हुआ और भीमसेनसे हिडिम्बाराक्षसी में घटोत्कचहुआ । २४ । और जो कि कन्या से पुत्रत्व को प्राप्तहोगया वह शिखण्डी द्रुपदसे उत्पन्न हुआ जिस कन्या को स्थूणनाम यक्षने राजाकी प्रसन्नताके लिये पुरुष बनादिया । २५ । और कौरवों के इस महाभारत युद्ध में अत्यन्त सहस्रों राजे संग्राममें

---

and the foremost of warriors, of Indra; Nakul and Sahadev, of handsome features and ever engaged in the service of their superiors, were born of the twin Ashwinikumars. The wise *Dhritrashtra* had hundred sons, *Duryodhan* and others, and one, *Yuyutsu* by a *Vaishya* woman. Of these, eleven, viz, Dushasan, Dussah, Durmarsha, Vicarn, Chitrasen, Vivingsati, Jaya, Satyavrat, Purumitra and Yuyutsu, by a Vaishya woman, were all Maharaths. Abhimanyu was born of Subhadra, the sister of Vasudev by Arjun and the grandson of Pandu. The five Pandavas had five sons by Draupadi and these were all very handsome and learned. From Yudhishthir was born Pritivindhya, from Bhim, Sutsom; from Arjun Srutkirti; from Nakul, Shatanik; and from Sahadev, Shrutsen of great prowess. Bhim, in the forest, became the father of Ghatotkach, by Hidimva. Drupad had a daughter, Shilkhandi, who was afterwards transformed

॥ १२६ ॥ नशक्यानिसमाख्यातुं वर्षाणामयुतैरपि । एतेतुकीर्त्तितामुख्या यैराख्या नमिदंततम् ॥ १२७ ॥

इत्यादिपर्वणिवंशावतरणे त्रिषष्ठोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

जनमेजय उवाच ॥ यएतेकीर्त्तिताब्रह्मन येचान्येनानुकीर्तिताः । सम्यक्तानश्रोतुमिच्छामि राज्ञश्चान्यान्सहस्रशः ॥ १ ॥ यदर्थमिहसम्भूता देवकल्पामहारथाः । भुवितन्मेमहाभाग सम्यगाख्यातुमर्हति २ वैशम्पायनउवाच । रहस्यंखल्विदंराजन्देवानामितिनःश्रुतम् । तत्तुतेकथयिष्यामि नमस्कृत्वास्वयम्भुवे ३ त्रिःसप्तकृत्वःपृथिवींकृत्वा निःक्षत्रियांपुरा । जामदग्न्यस्तपस्तेपे महेंद्रेपर्वतोत्तम ४ तदानिःक्षत्रियेलोकेभार्गवेण

युद्धकी इच्छा से आये । २६ । उन असंख्य सम्पूर्ण राजाओंके नाम सहस्रों वर्षमें कहने में नहीं आसकते और यह मुख्य मुख्य तुझसे कहे हैं जिन से कि महाभारत रूप आख्यान व्याप्त है २७ ॥

अध्याय ६४ ॥

जन्मेजयबोले, हे वैशम्पायन ! जो राजे तुमने कहे और जिनको नहीं कहा है इन सबको औरभी सहस्रों को मैं भलीप्रकार सुनना चाहताहूं जिस लिये वह देवताओं के तुल्य महारथी राजे पृथ्वी में उत्पन्न हुए वह कथा आप विस्तार पूर्वक कहें । २ । वैशम्पायनबोले हेराजन यह देवताओंकी गुप्त वार्त्ता है जोकि मैंने सुनी वह तुझसे परमात्माको नमस्कार कर कहूंगा । ३ । पहिले २१ वार पृथ्वी को निःक्षत्रीकर परशुराम महेन्द्राचल पर्वत में जाकर तप करनेलगे । ४ । उससमय परशुराम के बलसे क्षत्रिय

into a boy, by a Yaksh, named Sthuna. Hundreds and thousands of monarchs came to fight against each other in the great battle. Their names cannot be told even in a thousand years. I have however, named the principal ones who have been mentioned in this History.

CHAPTER LXIV

Janmejaya said, "I wish to hear, O Brahman, a detailed account of those you have not named and the purpose for which each hero was born on the earth." Vaishampayan replied, "We hear, O monarch, that what you ask is a mystery to even the gods. I shall

कृतेसति। ब्राह्मणान् क्षत्रियाराजन् सुतार्थिन्योऽभिचक्रमुः ।५। ताभिःसहसमापेतुर्ब्राह्मणाःसंशितव्रतः। ऋतावृतौनरव्याघ्र नकामान्नानृतौतथा ॥ ६ ॥ तेभ्यश्चलेभिरेगर्भं क्षत्रियास्ताः सहस्रशः । ततः सुषुविरे राजन् क्षत्रियान् वीर्य्यवत्तरान् ॥ ७ ॥ कुमारांश्च कुमारीश्च पुनः क्षत्राभिवृद्धये । एवं तद्ब्राह्मणैः क्षत्रं क्षत्रियासु तपस्विभिः ॥ ८ ॥ जातं वृद्धञ्च धर्मेण सुदीर्घेणायुषान्वितम् । चत्वारोऽपि ततो वर्णाबभूवुर्ब्राह्मणोत्तराः ॥ ९ ॥ अभ्यगच्छन्नृतौ नारीं न कामन्नानृतौ तथा । तथैवान्यानि भूतानि तिर्य्यग्योनिगतान्यपि ॥ १० ॥ ऋतौ दारांश्च गच्छन्ति तत्तथा भरतर्षभ। ततो वर्द्धत धर्मेण सहस्रशतजीविनः ॥११॥ ताःप्रजाःपृथिवीपाल धर्मव्रतपरायणाः। आधिभिर्व्याधिभिश्चैव विमुक्ताः सर्वशोनराः ॥ १२ ॥ अथेमां सागरापांगीं गांगजे

रहित संसार के होने पर क्षत्रियाणियें पुत्रकी इच्छा से ब्राह्मणों के पासगई उन क्षत्रियाणियों के साथ उत्तम व्रतों के रखनेवाले ब्राह्मण ऋतुकाल में संयम को प्राप्त हुए और हे राजन् कामवश बिना ऋतु में उन ब्राह्मणों ने उन के साथ संयम नहीं किया । ६ । और उन हजारों ने गर्भ धारण किया तिसके उपरान्त उन्होंने बड़े२ प्रतापी पुत्रों को उत्पन्न किया । ७ । क्षत्रियवंश की वृद्धि के लिये उन से बहुत से पुत्र और पुत्री उत्पन्न हुए इसप्रकार तपस्वी ब्राह्मणों से उन में धर्म से क्षत्रियवंश उत्पन्नहो वृद्धि को प्राप्तहुआ और दीर्घ आयु हुआ तिस के उपरान्त ब्राह्मणादि सहित चारोंवर्ण होगये । ९ । और चारों वर्ण ऋतुकाल में स्त्रीके साथ गमन करने लगे और काम से और बिना ऋतुकाल के गमन न करते थे इसी प्रकार और पशु पक्षी आदिभी पुरुषों के सदृश स्त्री सङ्गम करते हैं इस प्रकार ऋतुकाल में धर्म से गमन करने से सन्तान सौ और हजार वर्ष जीती है । ११ । वह प्रजा हे राजन् धर्म और व्रत में तत्पर होतीहै और शोक जरा आधि व्याधि रहित होती

---

however let you know it, after bowing down to the Selfborn. The son of *Jamadagni*, after annihilating the *Kshatrya* race twenty one times, went to Mount Mahendra to practice his penances and the Kshatrya ladies came to Brahmans for the purpose of offspring. Brahmans of rigid vows had connection with them during the proper season and never lustfully out of season. The Kshatrya ladies by thousands got children by Brahmans and many Kshatryas, male and female of greater energy were born and thus a new race which sprang up from Kshatrya ladies and Brahmans was more virtuous and blessed with long life. The four orders, with Brahmans at the head, were reestablished. Every man at that time had an intercourse with his wife at the proper time and

न्द्रगताखिलाम् । अध्यतिष्ठत् पुनःक्षत्रं सशैलवनपत्तनाम् ॥ १३ ॥ प्रशासति पुनः क्षत्रे धर्मेणेमां वसुन्धराम् । ब्राह्मणाद्यास्ततोवर्णा लेभिरेमुदमुत्तमाम् ॥ १४ ॥ कामक्रोधोद्भवान्दोषान्निरस्यच नराधिपाः । धर्मेण दण्डं दण्ड्येषु प्रणयन्तोऽन्वपालयन् ॥ १५ ॥ तथा धर्मपरे क्षत्रे सहस्राक्षः शतक्रतुः । स्वादु देशे च काले च वर्षेणापालयत् प्रजाः ॥ १६ ॥ न बाल एव म्रियते तदा कश्चिज्जनाधिप । न च स्त्रियं प्रजानाति कश्चिदप्राप्तयौवनः ॥ १७ ॥ एवमायुष्मतीभिस्तु प्रजाभिर्भरतर्षभ । इयं सागरपर्य्यन्ता समापूर्यत मेदिनी ॥ १८ ॥ ईजिरे च महायज्ञैः क्षत्रियाबहुदक्षिणैः । साङ्गोपनिषदान् वेदान् विप्राश्चाधीयते तदा ॥ १९ ॥ नच विक्रीणतेब्रह्म ब्राह्मणाश्च

है । १२ । इस के उपरान्त समुद्र पर्यन्त इस सम्पूर्ण पृथ्वी में जोकि शैल बन और नगरों से युक्त है उसमें हे राजेन्द्र जन्मेजय क्षत्रियवंश फिर स्थित हुआ । १३ । फिर क्षत्रियवंश के धर्म से इस पृथ्वी के पालन करने पर ब्राह्मणादि सम्पूर्ण वर्णोंको बड़ी प्रसन्नता हुई । १४ । और क्षत्रियों ने काम क्रोधादि दोषों को दूरकर धर्म से दण्डनीय पुरुषों से पृथ्वी का पालन किया । १५ । इसप्रकार क्षत्रियवंशके धर्ममें तत्पर होने पर सुन्दरता के साथ सब देशों और समय २ पर वर्षा से इन्द्र ने प्रजा का पालन किया । १६ । उस समय कोई बालक नहीं मरता था और हे राजन् बिना तरुण अवस्था के कोई मनुष्य स्त्री को जानता नहींथा । १७ । इसप्रकार आयुष्मती प्रजाओंसे हे जन्मेजय समुद्र पर्यन्त यह पृथ्वी भरी हुई थी । १८ । और क्षत्रिय लोग बड़ी २ दक्षिणा वाले यज्ञों को करते थे और अंगों सहित उपनिषद् और वेदों को ब्राह्मण लोग पढने लगे । १९ । और ब्राह्मण लोग द्रव्य लेकर नहीं पढाते थे और न शूद्रों के समीप वेदों का

---

never lustfully out of it. The same was the case with other creatures. Thus all the creatures multiplied, were virtuous and free from sorrow and disease. The wide earth bounded by the Ocean, with her mountains, woods and towns, was once more governed by the heroic race and being virtuously governed by them, the other orders having Brahmans at their head, were filled with great joy. The kings, forsaking all vices born of lust and anger and justly awarding punishment on those that deserved them, protected the earth. Indra, of a thousand sacrifices and a thousand eyes, seeing that the earth was so virtuously governed, poured showers of rain at proper times and places for the good of the world. No child died at that time and none knew a woman before attaining to age. Thus

तदा नृप । न च शूद्रसमभ्यासे वेदानुच्चारयन्त्युत ॥ २० ॥ कारयन्तुः कृषिं गोभिस्तथा वैश्याः क्षिताविह । युञ्जते धुरि नो गाश्च कृशांगांश्चाप्यजीवयन् ॥ २१ ॥ फेनपांश्च तथा वत्सान्न दुहन्ति स्म मानवाः । नकूटमानैर्वणिजः पण्यंविक्रीणते तदा ॥ २२ ॥ कर्माणिच नरव्याघ्र धर्मोपेतानि मानवाः । धर्ममेवानुपश्यन्तश्चक्रुर्द्धर्मपरायणाः ॥ २३ ॥ स्वकर्मनिरताश्चासन् सर्वे वर्णा नराधिप । एवं तदा नरव्याघ्र धर्मोन ह्रसते कचित् ॥ २४ ॥ काले गावः प्रसूयन्ते नार्य्यश्च भरतर्षभ । भवन्त्यृतुषुवृक्षाणां पुष्पाणिच फलानिच ॥ २४ ॥ एवं कृतयुगे सम्यग्वर्त्तमाने तदा नृप। आपूर्य्यत मही कृत्स्ना प्राणिभिर्बहुभिर्भृशम् ॥ २६ ॥ एवंसमुदिते लोके मानुषे भरतर्षभ । असुरा जज्ञिरे क्षेत्रे राज्ञान्तु मनुजेश्वर ॥ २७ ॥ आदित्यैर्हि तदा दैत्या

उच्चारण करते थे । २० । और वैश्य लोग बैलों से खेती कराते थे पृथ्वी में आप जुएके आगे वा हल के आगे बैलोंको लगाते थे और दुबलोंको पुष्ट करते थे । २१ । और मनुष्य लोग जबतक बछड़े घास न खाते थे तबतक आप दूध नहीं दुहते थे वैश्यलोग बेचनेकीवस्तु को कपटयुक्त तौल से नहीं बेचतेथे । २२ । और जन्मेजय, मनुष्य धर्ममें तत्पर धर्मयुक्त कार्योंको धर्म देखते हुए करते थे । २३ । चारोंवर्ण अपने २ धर्म में तत्पर थे हेराजन् इसप्रकार उससमय धर्म किंचित्मात्रभी हानि को नहीं प्राप्त हुआ और समयपर गउएं व्यातीथीं और समयपर स्त्रियों के पुत्रहोते थे और अपने २ ऋतुमें वृक्षोंमें फल फूललगते थे । २५ । हेराजन् इसप्रकार अच्छीतरह उससमय सतयुग के वर्त्तमानहोनेपर यह सम्पूर्ण पृथ्वी पाणियों से अत्यन्त भरगई । २६ । इसप्रकार मनुष्य लोक के आनन्दितहोनेपर हे जन्मेजय असुर राजाओंके यहां उत्पन्नहोने लगे देवताओं से

---

the whole earth, to the Ocean's shore, was inhabited by people having long life. The heroes performed great sacrifices bestowing much wealth. The Brahmans read all the Vedas with branches and Upnishads. The Brahmans did not sell the Vedas and did not read them before the Shudras. The Vaishyas ploughed the land with the help of bullocks and fed with care all the cattle that were lean. People never milked the cows until their calves were big enough to eat grass. The merchants did not use false scales. All men were virtuous and mindful of their duties. Thus, in those days, virtue did not sustain any diminution. Both cows and women gave birth to their offspring at the proper time and trees brought forth flowers and fruits in due season. The golden age once more

बहुशो निर्जिता युधि । ऐश्वर्य्याद्भ्रंशिताः स्वर्गात्संबभूवुः क्षिताविह ॥२८॥ इह-
देवत्वमिच्छन्तो मानुषेषु मनस्विनः । जज्ञिरे भुवि भूतेषु तेषु तेष्वसुरा विभो ॥२९॥
गोष्वश्वेषु च राजेन्द्र खरोष्ट्रमहिषेषुच ॥ क्रव्यात्सु चैव भूतेषु गजेषु च मृगेषु च
॥ ३० ॥ जातैरिह महीपाल जायमानैश्चतैर्मही । नशशाकात्मनात्मन मियं धारायितुं
धरा ॥ ३१ ॥ अथजाता महीपालाः केचिद्बहुमदान्विताः । दितेःपुत्रा दनोश्चैव तदा
लोकइहाच्युताः ॥ ३२ ॥ वीर्य्यवन्तोऽवलिप्तास्ते नानारूपधरामहीम् । इमां सागर
पर्य्यन्तां परीयुररिमर्दनाः ॥ ३३ ॥ ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् शूद्रांश्चैवाप्यपीड़ि-
यन् । अन्यानि चैव सत्त्वानि पीडयामासुरोजसा ॥ ३४ ॥ त्रासयन्तोऽभिनिघ्नन्तः
सर्वभूतगणांश्च ते । विचेरुः सर्वशो राजन्महीं शतसहस्रशः ॥ ३५ ॥ आश्रमस्था-

उससमय संग्राम में मारेहुए और स्वर्ग के ऐश्वर्य से गिराये हुए दैत्य यहां पृथ्वीमें जन्म लेने लगे । २८ । इस संसार में राज्यकी इच्छा करतेहुए वह बुद्धिमान दैत्य पृथ्वी में प्राणियों में जन्म लेनेलगे । २९ । गऊ, घोड़े, गधे, ऊंट, भैंस, और मांसाहारी प्राणियों में और हेराजेन्द्र हाथियों और मृगोंमें उत्पन्नहुए उन असुरों से पीडित पृथ्वी अपने शरीर को धारण करनेकोभी न समर्थहुई कोईराजे अत्यन्त मदयुक्त उत्पन्न हुए दितिके और दनु के पुत्र जोकि संग्राम में संसार में न हारनेवाले थे वह यहां उत्पन्नहुए बलवान घमण्डी शत्रुओं के नाश करनेवाले यह असुर नानारूप से सम्पूर्ण पृथ्वी में फैलगये ३३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, इन चारोंवर्णोंको पीड़ा देनेलगे औरभी प्राणियों को अपने पराक्रमसे पीड़ा देनेलगे । ३४ । और वह असुर सम्पूर्ण प्राणीमात्र को त्रासदेतेथे और मारते थे हेराजन् ! हजारों इस पृथ्वी में चारोंओर फिरने लगे । ३५ । ब्राह्मण को न

prevailed over the earth and it was filled with numerous creatures. When such was the blessed state of the earth, the Asurs began to be born in kingly lines and being repeatedly defeated by the gods and deprived of the sovereignty of heaven, they began to fill the earth. Possessed of great power and desirous of sovereignty over men, the Asurs began to be born on earth among various creatures, such as cows, horses, asses, camels, buffaloes, elephants and deer. The earth could not bear the tyranny of the sons of Diti and Danu, the oppressors of the people, cast away from heaven, some of whom were born on the earth as powerful kings and possessed of great energy, they covered the earth in various shapes to the Ocean. They began to oppress and kill all creatures. Having no truth and virtue and proud

न्महर्षींश्च धर्षयन्तस्ततस्ततः । अब्रह्मण्यावीर्य्यमदा मत्ता मदबलेनच ॥ ३६ ॥
एवंवीर्य्यबलोत्सिक्तैर्भूरियत्नैर्महासुरैः । पीड्यमाना मही राजन् ब्रह्माणमुपचक्रमे ३७
नह्यमी भूतसत्त्वौघाः पन्नगाः सनगां महीम् । तदा धारयितुं शेकुः संक्रान्तां दानवै-
र्बलात् ॥ ३८ ॥ ततो मही महीपाल भारार्त्ता भयपीडिता । जगाम शरणं देवं स-
र्वभूतपितामहम् ॥ ३९ ॥ सा संवृतं महाभागैर्देवद्विजमहर्षिभिः ददर्श देवं ब्रह्माणं
लोककर्त्तारमव्ययम् ॥ ४० ॥ गन्धर्वैरप्सरोभिश्च देवकर्मसुनिष्ठितैः । वंद्यमानंमुदो-
पेतैर्ववन्दे चैनमेत्यसा ॥ ४१ ॥ अथविज्ञापयामास भूमिस्तंशरणार्थिनी । सन्निधौ
लोकपालानां सर्वेषामेवभारत ॥ ४२ ॥ तत्प्रधानात्मनस्तस्य भूमेःकृत्यंस्वयम्भुवः ।
पूर्वमेवाभवद्राजन् विदितंपरमेष्ठिनः ॥ ४३ ॥ स्रष्टाहिजगतःकस्मान्न संबुध्येतभारत ।

मारनेवाले वीर्य के मद से उन्मत्त आश्रम में बैठेहुए महर्षियोंको जहां तहांपीड़ा देनेलगे । ३६ । इसप्रकार बलसे बढ़ेहुए और बड़े २ यत्नों के जाननेवाले उन महासुरों से पीड़ित यह पृथ्वी हेराजन् ब्रह्माकी शरण गई । ३७ । शेष कूर्म दिग्गज उससमयदानवों से भरीहुई पृथ्वी को धारण करने को न समर्थ हुए । ३८ । तब उन असुररूप राजाओं के भारसे व्याकुल पृथ्वी सम्पूर्ण प्राणियों के पितामह देव ब्रह्मा के शरण गई । ३९ । उसपृथ्वी ने देवता ब्राह्मण महर्षियों से घिरेहुए देव ब्रह्मा सम्पूर्ण लोक के कर्त्ताको प्रकाशमान देखा । ४० । जोकि दिव्य कर्मों में युक्त थे ऐसे गन्धर्व और अप्सराओं से नमस्कार किये जातेहुए ब्रह्माके समीप जाकर नमस्कारकिया । ४१ । और हे जन्मेजय शरणकी इच्छा करने वाली उस भूमिने सम्पूर्ण लोकपालों सहित ब्रह्मा से प्रार्थना की । ४२ । उस सर्वज्ञ स्वयंभू ब्रह्मा को उस पृथ्वी का कार्य पहिले ही विदित होगया था । ४३ । वह जगत् का उत्पन्न करने वाला देवता और असुरों सहित लोगोंके सम्पूर्ण मनके अभि-

---

of their strength, they insulted even the great Rishis in their Asylums. The earth, thus oppressed by the mighty Asurs of great strength and energy, began to think of going to Brahma. Shesh and others could not bear the weight of Asurs. Then the earth, afflicted with fear and oppressed with weight, sought the protection of the grand-father of all. She beheld the divine Brahma, the creator of the world, knowing no deterioration—surrounded by the gods, Brahmans and great rishis, of very good fortune, adored by Gandha rvas and Apsaras and always engaged in the business of the gods. Having approached the Grand father, the earth adored him and represented all her pitiable condition. The Omniscient selfcreate Supreme Lord already knew the object of the earth. For, O Bharat

ससुरासुरलोकानाम शेषेणमनोगतम् ॥ ४४ ॥ तामुवाचमहाराज भूमिंभूमिपतिः प्रभुः । प्रभवःसर्वभूताना मीशःशम्भुःप्रजापतिः ॥ ४५ ॥ ब्रह्मोवाच । यदर्थमभि संप्राप्ता मत्सकाशंवसुन्धरे । तदर्थंसन्नियोक्ष्यामि सर्वानेवदिवौकसः ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वासमहींदेवो ब्रह्माराजन विसृज्यच । आदिदेशतदासर्वान् विबुधान्भूतकृत्स्वयम् ॥ ४७ ॥ अस्याभूमेर्निरसितुंभारं भागैःपृथक् पृथक् । अस्या मेवप्रसूयध्वं विरोधायेतिचाब्रवीत् ॥ ४८ ॥ तथैवचसमानीय गन्धर्वाप्सरसांगणान् । उवाचभगवान्सर्वा निदंवचनमर्थवत् ॥ ४९ ॥ ब्रह्मोवाच । स्वैःस्वैरंशैःप्रसूयध्वं यथेष्टंमानुषेषुच । अथशक्रादयःसर्वे श्रुत्वासुरगुरोर्वचः । तथ्यमर्थ्यंश्चपथ्यञ्च तस्य तेजगृहुस्तदा ॥ ५० ॥ अथतेसर्वशोंऽशैः स्वैर्गन्तुंभूमिंकृतक्षणाः । नारायणम मित्रघ्नं वैकुण्ठमुपचक्रमुः ॥ ५१ ॥ यः सचक्रगदापाणिः पीतवासाः शि-

---

प्रायों को किस प्रकार नहीं जान सके । ४४ । हे महाराज जन्मेजय पृथ्वीपति प्रभू ब्रह्मा सम्पूर्ण प्राणियों का स्वामी और उत्पन्न करने वाला पृथ्वी से बोला कि हे पृथ्वी जिस कारण तू मेरेपास आई है उस कार्यके लिये सम्पूर्ण देवताओं को नियुक्त करताहूँ ४६ वैशम्पायन ने कहा इसप्रकार सम्पूर्ण प्राणियों के उत्पन्न करने वाले ब्रह्माने पृथ्वीसे ऐसा कह कर उसको विदा किया और सम्पूर्ण देवताओं को आज्ञाकी ४७ भूमिके भार को दूरकरने के लिये इस पृथ्वी में अपने २ अंशों से पृथक् २ विरोध के लिये उत्पन्न हो इस प्रकार ब्रह्माने कहा ४८ और इसी प्रकार गन्धर्व और अप्सराओं के समूह को बुलाकर भगवान् ब्रह्माने सब से कहा अपने २ अंशों से मनुष्यों में इच्छानुसार उत्पन्न हो इन्द्रादिक देवताओं ने देवताओं के गुरु ब्रह्मा के सत्य अर्थ युक्त और हितकारी वचन को सुन सबने ग्रहण किया ५० इसके उपरान्त वह सम्पूर्ण देवता पृथ्वी में अपने अंशों का निश्चय किये हुए शत्रुओं के नाश करने वाले नारायण के समीप बैकुंठ में गये ५१

---

being the creator of the universe it is but natural that he should know what passes in the minds of his creatures, Prajapati thus spoke to the earth:—"I shall appoint some gods to accomplish thy desire." And having said so to the earth, the divine Brahma bade her farewell. He then commanded all the gods to go to the earth and take their births there for the annihilation of the Asurs. He gave the same order to the Gandharvas and the Apsaras. All the gods including Indra heard the command that was true, desirable and fraught with benefit and accepted it. They all resolved to come on earth in parts and went to Baikunth, the residence of Narayan, the slayer of foes, the possessor of the discus and the mace, clad in purple, of bright splendour, having lotus on his navel, with his eyes looking

तिप्रभः । पद्मनाभःसुरारिघ्नः पृथुचार्वंचितेक्षणः ॥ ५२ ॥ प्रजापति पतिदेवः सुर नाथो महाबलः । श्रीवत्साङ्कोहृषीकेषः सर्वदैवतपूजितः ॥ ५३ ॥ तंस्तुवः शोधन येन्द्र उवाच पुरुषोत्तमम् । अंशेनावतरेत्येवं तथेत्याहचतंहरिः ॥ ५४ ॥

इत्यादि पर्वण्यादि वंशावतरणपर्वणि चतुः षष्टोऽध्यायः ६४ ॥

समाप्तञ्चेदमादि वंशावतरणपर्व ॥

अथ सम्भवपर्व प्रारम्भः ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ अथ नारायणेनेन्द्रश्चकारसहसम्बिदम् । अवतर्तुंमहींस्वर्गा दंशतः सहितः सुरैः ॥ १ ॥ आदिश्यच स्वयं शक्रः सर्वानेव दिवौकसः । निर्जगाम पुनस्तस्मात् क्षयान्नारायणस्यह ॥२॥ येऽमरारिविनाशाय सर्वलोकहितायच

जोकि चक्र और गदाको हाथमें धारण किये हुए और पीताम्बर पहिरे हुए और नील कांतिवाले पद्मनाभी और दैत्योंका नाश करने वाला बड़े और दयायुक्त नेत्र वाले और प्रजाओं के पति प्रकाशमान देवताओं का स्वामी बड़े बलवान् हृदय में लक्ष्मी के चिन्हसे युक्त इन्द्रियों का स्वामी और सम्पूर्ण देवताओं से पूजित जो परमेश्वर है उस से पुरुषोत्तम पृथ्वीके कन्टकरूप खलों के नाश के लिये इन्द्र बोला कि हे भगवन् अपने अंश से पृथ्वी में अवतार लो और उस वचनको हरिने स्वीकार किया ५४ ॥

अध्याय ६५ ॥

वैशम्पायनने कहा इस के उपरांत भगवान् और इन्द्र ने देवताओंके सहित अंशोंसे स्वर्गलोकसे पृथ्वीलोकमें आने का विचार किया । १ । इन्द्र ने सम्पूर्ण देवताओंको आज्ञा देकर बैकुण्ठ से गमन किया । २ । और वह देवता शत्रुओं के नाश और सम्पूर्ण लोक

down on his wide chest (in meditation), the lord of the Prajapati himself, the king of the gods, of mighty strength, the wearer of Sreevatsa (a jewel) the mover of all powers and, adored by the gods. Indra requested the best of beings to be born on the earth and Hari granted the request.

CHAPTER LXV

SAMBHAV PARV

Vaishampayan said, " Indra held a consultation with Narayan about the latter's coming down on earth with the other gods and having directed all the gods accordingly, Indra retired. The gods then began to be born on the earth for the destruction of the Asuras.

अवतेरुःक्रमेणैव महीं स्वर्गाद्दिवौकसः ॥ ३ ॥ ततोब्रह्मर्षि वंशेषु पार्थिवर्षिकुलेषुच।
जज्ञिरे राजशार्दूल यथाकामं दिवौकसः ॥ ४ ॥ दानवान् राक्षसांश्चैव गन्धर्वान् प-
न्नगांस्तथा। पुरुषादानि चान्यानि जघ्नुः सत्त्वान्यनेकशः ॥ ५ ॥ दानवा राक्षसा
श्चैव गन्धर्वाः पन्नगास्तथा। नतान् बलस्थान बाल्येपि जघ्नुर्भरतसत्तम ॥ ६ ॥
जनमेजय उवाच। देवदानवसंघानां गन्धर्वाप्सरसांस्तथा। मानवानांच सर्वेषांतथा
वै यक्षरक्षसाम् ॥ ७ ॥ श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन सम्भवं कृत्स्नमादितः। प्राणिना-
श्चैव सर्वेषां सम्भवं वक्तुमर्हसि ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच। हन्तते कथयिष्यामि
नमस्कृत्य स्वयम्भुवे। सुरादीनामहं सम्यग् लोकानां प्रभवाप्ययम् ॥ ९ ॥ ब्रह्मणो
मानसाः पुत्रा विदिताः षण्महर्षयः। मरीचिरत्र्यंगिरसौ पुलस्त्यः पुलहःक्रतुः ॥ १०॥
मरीचेःकश्यपःपुत्रः कश्यपात्तुइमाःप्रजाः। प्रजज्ञिरे महाभागा दक्षकन्यास्त्रयोदश ११

के हित के लिये स्वर्ग से पृथ्वी में क्रम से अवतार लेने लगे ॥ ३ ॥ तिसके उपरान्त देवता अपनी इच्छा के सदृश ब्रह्मर्षियों और राजाओंके कुलमें हेनृपोंमें श्रेष्ठ जन्मेजय उत्पन्नहुए। ४। दानव, राक्षस, गन्धर्व, पन्नग और पुरुषोंके आहार करनेवाले अनेक प्राणियों को मारने लगे। ५। दानव, राक्षस, सर्प, गन्धर्व यह सम्पूर्ण उन बलवान् देवताओं को हे राजन् बाल्यावस्था मेंभी न मारसके। ६। जन्मेजयबोले कि देव और दानवों के समूह गन्धर्व और अप्सरा मनुष्य यक्ष और राक्षस इन सब के समूहकीउत्पत्ति को मैं प्रारम्भ से यथार्थ रीति से सुनना चाहताहूं औरभी सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति कोभी आप कहें। ८। वैशम्पायनने कहा जब मैं ब्रह्माको नमस्कार कर देवतादिकों और सम्पूर्ण लोकोंकी उत्पत्ति और लयको तुम्हसे कहूंगा ॥ ९ ॥ ब्रह्माके मनसे उत्पन्न हुए ६ पुत्र महर्षि सब को विदित हैं वह यह हैं—मरीचि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतुनाम वाले ॥ १० ॥ मरीचि का पुत्र कश्यप, और कश्यप से यह प्रजा उत्पन्न

They were born in the lines of *Brahmarshis* and *Rajarshis* and killed many Rakshases, Danavas, Gandharvas, snakes and other creatures doing harm to mankind and the gods incarnate were too strong for them even in infancy. Janmejaya said, " I desire to hear from the beginning, of the births of the gods, the Danavas, the Gandharvas, the Asurs, the Yakshas and men. Let me know all in detail." Vaishampayan said, " Having bowed down to the Self-create, I shall tell thee in detail the origin of the gods and other creatures. It is said that *Brahma* had six spiritual sons, viz, Marichi, Atri, Angira, Pulastya, Pulah and Kratu. Marichi's son was Kashyap and from Kashyap all creatures have sprung up. Daksha had thirteen daughters of good fortune, viz Aditi Danu, Kala, Danayu, Sinhika, Krodha, Pradea, Viswa, Vinata, Kapila,

अदितिर्दितिर्दनुःकाला दनायुःसिंहिकातथा। क्रोधाप्राधाचविश्वाच विनताकपिला मुनिः ॥ १२॥ कद्रुश्चमनुजव्याघ्र दक्षकन्यैव भारत। एतासांवीर्य्यसम्पन्नं पुत्रपौत्र मनन्तकम् ॥१३॥ अदित्यांद्वादशादित्याः सम्भूता भुवनेश्वराः। येराजन्नामतस्तांस्ते कीर्तयिष्यामिभारत १४ धातामित्रोऽर्य्यमशक्रोवरुणंस्त्वंशएवच। भगोविवस्वान्पूषाच सवितादशमस्तथा १५ एकादशस्तथात्वष्टा द्वादशोविष्णुरुच्यते। जघन्यजस्तुसर्वेषा मादित्यानांगुणाधिकः १६ एकएवदितेःपुत्रो हिरण्यकशिपुःस्मृतः। नाम्नाख्यातास्तुत स्येमेपंचपुत्रामहात्मनः ।१७। प्रह्लादःपूर्वजस्तेषां संह्लादस्तदनन्तरम्। अनुह्लादस्तृतीयो भूत्तस्माच्चशिविवाष्कलौ ॥ १८॥ प्रह्लादस्यत्रयःपुत्राः ख्याताःसर्वत्रभारत। विरोच नश्चकुम्भश्च निकुम्भश्चेतिभारत ॥ १९ ॥ विरोचनस्यपुत्रोऽभूद्बलिरेकः प्रतापवान्।

हुई, हे—जनमेजय, अदिति, दनु, दिति, काला, दनायु, सिंहिका, क्रोधा, प्राधा, विश्वा, विनता, कपिला, मुनि, और कद्रू यह बड़े भागवाली तेरह कन्यायें दक्षके उत्पन्न हुईं और इनके बड़े बलवान् पुत्र और पौत्र अनन्त हुए । १३ । और हेराजन् अदिति से लोकों के स्वामी बारह आदित्य उत्पन्न हुए उन के नाम मैं तुझसे कहूँगा। १४ । धाता, मित्र, अर्यमा, शक्र, वरुण, अंश, भग, विवस्वान्, पूषा, सविता, । १५ । त्वष्टा और विष्णु यह बारह कहे हैं और यह विष्णु सब में लघु और गुणों में सबसे दीर्घ है १६ और हिरण्य कशिपुनाम से दिति का एक पुत्र हुआ और उस महात्माके पाँचपुत्रहुए जो निम्नलिखित नामों से प्रसिद्ध थे १७ बड़ापुत्र प्रह्लाद, और दूसरा संह्लाद, तीसरा अनुरोध चौथा शिवि और पांचवां वाष्कल १८ और हे जन्मेजय! प्रह्लादके तीन पुत्र विरोचन कुम्भ, निकुम्भ, यह तीनों थे। १९ । विरोचन का एक पुत्र बड़ा प्रतापी जो कि बल

Muni and Kadru. The progeny of these was infinite. From Aditi have sprung the twelve Adityas, the lords of the universe. Their names are:—Dhata, Mitra, Aryama, Sakra, Varuna, Ansha, Bhaga, Viwaswan, Pusha, Savita, Twashta and Vishnu. The youngest of the twelve is superior to all the others in merit. Diti had one son called Hiranyakashipu who had five sons, famous throughout the world. These were, Prahradh, Sanhradh, Anuradh, Shivi and Vashkala. Prahrad had three sons, viz, Virochan, Kumbh, and Nikumbh, Virochan's son was Bali of great prowess. Bali's son was the great Asur Vana. The fortunate Vana was a follower of Rudra and was also known as *Mahakal*. *Danu* had forty sons, viz, *Viprachitti*, the great famous king, *Shamvar*, *Namuchi*, *Pulom*,

बलेश्चप्रथितःपुत्रो वाणोनाममहासुरः ॥ २० ॥ रुद्रस्यानुचरःश्रीमान् महाकालेतियं विदुः । चत्वारिंशद्दनोःपुत्राः ख्याताःसर्वत्रभारत ॥ २१ ॥ तेषांप्रथमजोराजा विप्रचित्तिर्महायशाः । शम्बरोनमुचिश्चैव पुलोमाचेतिविश्रुतः ॥ २२ ॥ असिलोमाच केशीच दुर्जयश्चैवदानवः । अयःशिरा अश्वशिरा अश्वशंकुश्चवीर्यवान् ॥ २३ ॥ तथागगनमूर्द्धाच वेगवान्केतुमांश्चसः । स्वर्भानुरश्वोऽश्वपतिर्वृषपर्वाजकस्तथा २४॥ अश्वग्रीवश्चसूक्ष्मश्च तुहुण्डश्चमहाबलः । इषुपादेकचक्रश्च विरूपाक्षहराहरौ ॥ २५ ॥ निचन्द्रश्चनिकुम्भश्च कुपटःकपटस्तथा । शरभःशलभश्चैव सूर्याचन्द्रमसौतथा ॥२६॥ एतेख्यातादनोर्वंशे दानवाःपरिकीर्त्तिताः । अन्यौतुखलुदेवानां सूर्याचन्द्रमसौस्मृतौ ॥ २७ ॥ अन्यौदानवमुख्यानां सूर्याचन्द्रमसौतथा । इमेचवंशाःप्रथिताः सत्वव-

---

नाम से प्रसिद्ध हुआ, और बल का वांणनामवाला बड़ा असुर पुत्र हुआ । २० । और वह वांणासुर रुद्रका अनुचर सेवक हुआ जिसको महाकाल नामसे भी कहते थे दनुके चालीस * पुत्रहुए जोकि सर्वत्र प्रसिद्ध थे उनमें पहिला बड़ेयशवालाराजा विप्राचित्त नामवालाहुआ, शम्बर, नमुचि, पुलोमा, असिलोमा, केशी, दुर्जय, अयःशिरा, अश्वशिरा, अश्वशंकु, गगन-मूर्द्धा, वेगवान, केतुमान्, स्वर्भानु, अश्व, अश्वपति, वृषपर्वा, अजक, अश्वग्रीव, सूक्ष्म, तुहुण्ड, इषुपाद, एकचक्र, विरूपाक्ष, हराहर, निचन्द्र, निकुम्भ, कुपट, कपट, शरभ, शलभ, सूर्य्य, चन्द्रमा, यह दनुके वंश में दानव उत्पन्नहुए बड़े बलवाले प्रसिद्ध थे । २६ । देवताओं के सूर्य्य चन्द्रमा और हैं और दानवों के सूर्य चन्द्रमा औरहैं । २७ । यह दस

* श्लोक में मनु के चालीसपुत्र लिखे हैं और गणना में ३३ पाये जाते हैं इस कारण श्लोकानुसार विशेष वार्ता हमको ज्ञात नहीं होसकती—या चत्वारिंशत पाठकीजगह त्रयस्त्रिंशत ऐसा पाठहोने से ठीकहै ॥

Asilom, *Keshi*, *Durjaya*, *Ayashir*, *Ashwashir*, *Ashwahanku*, *Gagan-murdha*, *Vegvan*, *Ketuman*, *Swarbhanu*, *Ashwa*, *Ashwapati*, *Vrish-prava*, *Ajak*, *Ashwagreev*, *Suksham*, the powerful Tuhundu, Ishupad, Ekchakra, Beroopaksh, Harahar, Nichandra, Nikumv, Kupat, Kapat, Sarava, Salava, Surya, and Chandrama. The Surya and Chandrama of the gods are not those that are included in the above list. The following ten are the most powerful and famous of the race of Danu:— Ekaks, Amritap, Pralamba, Narak, Vatapi, Shatru-tapan, Shat-ha Gavishta, Vanayu and Dirghjivha. The sons and grandsons of the above named were countless. Singhik was the father of Rahu, the prosecutor of the Sun and Moon, Suchandra,

न्तोमहावलाः ॥ २८ ॥ दनुपुत्रामहाराज दशदानववन्शजाः । एकाक्षोऽमृतपोवीरः
प्रलम्बनरकावपि ॥ २९ ॥ वातापीशत्रुतपनः शठश्चैवमहासुरः । गविष्ठश्चवनायुश्च
दीर्घजिह्वश्चदानवः ॥ ३० ॥ असंख्येयाःस्मृतास्तेषां पुत्राःपौत्राश्चभारत । सिंहिका-
सुषुवेपुत्रं राहुंचन्द्रार्कमर्द्दनम् ॥ ३१ ॥ सुचन्द्रंचन्द्रहन्तारं तथाचन्द्रप्रमर्द्दनम् । क्रूरस्व
भावं क्रूरायाः पुत्रपौत्रमनन्तकम् ॥ ३२ ॥ गणःक्रोधवशोनाम क्रूरकर्मारिमर्द्दनः ।
दनायुषः पुनः पुत्राश्चत्वारोऽसुरपुङ्गवा ॥ ३३ ॥ विक्षरोबलवीरौच वृत्रश्चैवमहासुरः
कालायाःप्रथिताःपुत्राः कालकल्पाःप्रहारिणः ॥ ३३ ॥ प्रविख्यातामहावीर्य्या दान
वेषुपरन्तपाः । विनाशनश्चक्रोधश्च क्रोधहन्तातथैवच ३५ क्रोधशत्रुस्तथैवान्ये कालकेया
इतिश्रुताः । असुराणामुपाध्यायः शुक्रस्त्वृषिसुतोऽभवत् ॥ ३६ ॥ ख्याताश्चोशनसः

प्रसिद्ध बुद्धिमान और बड़े बलवान् और दनु के पुत्र दानवोंके वंश में उत्पन्नहुए दस वंशहैं । २८ । एकाक्ष, अमृतपा, प्रलम्ब, नरक, वातापी, शत्रुतपन, शठ, गविष्ट, वनायु, दीर्घजिह्व और इन के पुत्र और पौत्र हे जनमेजय असंख्यहैं । ३० । सिंहिका ने चन्द्रमा और सूर्य के मर्दन करनेवाले राहू ; सुचन्द्र, चन्द्रहंतार और चन्द्र प्रमर्दन इन पुत्रोंको उत्पन्न किया । ३१ । और कठोर स्वभाववाली के क्रोधी पुत्र पौत्र अनन्तहुए क्रोधवश नामगण उत्पन्न हुआ और जो कि कूरकर्म और शत्रुओंको मारने वालाथा । ३२ । और दनायु के चार असुरों में श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्नहुए, विक्षर, बल वीर, वृत्र, यह चारपुत्र हुए । ३३ । और काला के प्रसिद्ध कालके समान प्रहार करने वाले बड़े वीर पराक्रमी दानवों में शत्रुओं के नाश करनेवाले पुत्र हुए । ३४ । विनाशन, क्रोध, क्रोधहन्ता, क्रोधशत्रु इनके अतिरिक्त और भी काला के पुत्र प्रासिद्ध हुए असुरों का उपाध्याय ऋषिका पुत्र शुक्रहुआ और ख्याना के पुत्र चारजो कि असुरों के उपाध्याय प्रसिद्ध थे । ३६ । त्वष्टाधर, अत्री

Chandrahantar and Chandrapramardan. The countless progeny of Krur were as wicked as herself. They were wrathful, of crooked deeds and persecutors of their foes. Danayu had four brave Asurs for her sons, viz, Vikshar, Vala, Vir and Vritra. The sons of Kala were all, like Kal (Death), slayers of foes. They were of great fame and energy. They are Vinashan, Krodh-hanta, Krodh-shatru and others. Shukra, the son of a rishi was the priest of Asurs. He had four sons, also priests of Asurs. They were Tashtdha, Atri, Raudra and Karmi. They were like the Sun in glory and devoted to Brahma and the welfare of the world " I have told all that is written in the Purans, of the birth of both the gods and the Asurs of great strength and energy. The descendants of these, O king

पुत्राश्चत्वारोऽसुरयाजकाः । त्वष्टावरस्तथात्रिश्च द्वावन्यौरौद्रकर्म्मिणौ ॥३७॥ तेजसा सूर्यसङ्काशा ब्रह्मलोकपरायणाः । इत्येषवंशप्रभवः कथितस्तेतरस्विनाम् ॥ ३८ ॥ असुराणांसुराणांच पुराणेसंश्रुतो मया । एतेषांयदपत्यन्तु नशक्यंतदशेषतः ॥३९॥ प्रसंख्यातुंमहीपाल गुणभूतमनन्तकम् । तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च तथैवगरुड़ारुणौ ॥४०॥ आरुणिर्वारुणिश्चैव वैनतेयाःप्रकीर्त्तिताः । शेषोऽनन्तोवासुकिश्च तक्षकश्चभुजंगमः ॥ ४१ ॥ कूर्मश्चकुलिकश्चैव काद्रवेयांप्रकीर्त्तिता । भीमसेनोग्रसेनौच सुपर्णोवरुणस्तथा ॥४२॥गोपतिर्धृतराष्ट्रश्च सूर्यवर्चाश्चसप्तमः । सत्यवागर्कपर्णश्च प्रयुतश्चापिविश्रुतः ॥४३॥ भीमश्चित्ररथश्चैव विख्यातःसर्वविद्वशी । तथाशालिशिराराजन् पर्ज्जन्यश्च चतुर्दशः ॥४४॥ कलिःपञ्चदशस्तेषां नारदश्चैवषोड़शः । इत्येतेदेवगन्धर्वा मौनेयाः

और दोऔर भयानक कर्मके करने वाले थे जो कि ब्रह्मलोक में तत्पर और तेज में सूर्यकी समान थे । ३७ । इसप्रकार यह तेजस्वी असुर और देवताओंका जैसा कि मैंने पुराणोंमें सुनाथा वह वंश मैंने तुझ से कह दिया ।३८। इनकी जो सन्तानहै वह सम्पूर्णता से हे राजन् कहने को असंख्यहै क्योंकि अनन्त और अप्रधानहै ३९ तार्क्ष्य, अरिष्टनेमी, गरुड़, अरुड़, अरुणी और वारुणी यह विनता की सन्तान कही गई है । ४० । शेष, अनन्त वासुकि तक्षक, कूर्म, कुलिक, यह कद्रुकी सन्तान है । ४१ । भीमसेन, उग्रसेन, सुपर्ण वरुण, गोपति, धृतराष्ट्र, और सातवां सूर्यवर्चा सत्यवाक अर्कपर्ण, प्रसिद्ध प्रयुत, भीम, चित्ररथ, (जोकि प्रसिद्ध और सबका जानने वालाथा) और शालि शिरा और हेराजन् चौदहवां पर्जन्य था और पन्द्रहवां कालि, सोलहवां नारद यह देवताओं में गन्धर्व मुनि की सन्तान हैं । ४४ । हे जनमेजय इस के उपरान्त बहुत से और भी कहता हूं

are countless and not noteworthy. The sons of Vinata were Tarkhya, Arishtanemi, Garur, Arun, Aruni and Varuni. Among the sons of Kadru, Shes, Vasuki, Takshak, Kurm and Kulik are well known. The sons of Muni were Bhimsen, Ugrasen, Saparn, Varun, Gopati, Dhritrhshtra, Suryavarch, Satyavak, Arkaparn, Prayut, Bhim, Chitrarath of great fame and learning and controller of his passions, Shalishir, Parjanya, Kali, and Varad. I shall name many others, O Bharat. Anavadya, Manu, Vans Asura, Margan-pria, Anupa, Suvag and Vasi were the daughters of Pradha; Sidha, Rerna, Varhi, Purnayu of great fame, Brahmchari, Ratiguna, Viswavasu, Vrun, Shuchandra, were the sons or Pradha; and some of them were gods and others Gandharvas. Pradha also gave birth to the race

परिकीर्त्तिताः ॥४५॥ अथप्रसूतानन्यानि कीर्त्त यिष्यामिभारत । अनवद्यांमनुं वंशा मसुरांमार्गणप्रियाम् ॥ ४६ ॥ अरूपांसुभगांभासी मितिप्राधाव्यजायत । सिद्धः पूर्णश्चवर्हीच पूर्णायुश्चमहायशाः ॥ ४७ ॥ ब्रह्मचारीरतिगुणः सुपर्णश्चैव सप्तमः । विश्वावसुश्चभानुश्च सुचन्द्रोदशमस्तथा ॥ ४८ ॥ इत्येतेदेवगन्धर्वाः प्राधेयाः परिकीर्त्तिताः । इमंत्वप्सरसांवंशं विदितंपुण्यलक्षणम् ॥ ४९ ॥ प्राधासूतमहाभागा देवी देवर्षित पुरा । अलम्बुषामिश्रकेशी विद्युत्पर्णा तिलोत्तमा ॥ ५० ॥ अरुणा रक्षिता चैव रम्भातद्वन्मनोरमा । केशिनी च सुवाहुश्च सुरता सुरजातथा ॥ ५१ ॥ सुप्रियाचातिबाहुश्च विख्यातौ च हाहाहूहूः । तुम्बुरुश्चेतिचत्वारः स्मृतागन्धर्व सत्तमाः ॥५२॥ अमृतंब्राह्मणागावो गन्धर्वाप्सरसस्तथा। अपत्यं कपिलायास्तुपुराणे परिकीर्त्तितम् ॥ ५३ ॥ इतितेसर्वभूतानां सम्भवः कथितो मया । यथावत्सम्परि-

अनवद्या, मनु, वंशा, असुरा, मार्गणप्रिया, अरूपा, सुभगा, भासी, यह प्राधाकी संतान है सिद्ध, पूर्ण, वर्ही, बड़े यशवाला पूर्णायु ब्रह्मचारि, रतिगुण और सातवां सुपर्ण, विश्वावसु, भानु और दशवां सुचन्द्र यह इतने देवताओं के गन्धर्व प्राधाकी सन्तान कही गई है और यह पवित्र लक्षणवाला प्रसिद्ध अप्सराओं का वंश जोकि बड़े भागवाली देवी प्राधाने देवर्षिद्वारा उत्पन्न किया वह यह है—अलम्बुषा, विद्युतपर्णा, तिलोत्तमा, अरुणा रक्षिता, और मनोरमा, रम्भा, केशिनी, सुबाहु, सुरता, सुरजा, सुप्रिया, अतिबाहु और हाहा, हूहू, तुम्बुरु यह चार गन्धर्वों में श्रेष्ठ गन्धर्व कहे गये हैं । ५२ । अमृत, ब्राह्मण गऊ, गन्धर्व, अप्सरा, पुराणों में यह कपिलाके सन्तान कहे हैं । ५३ । यह संपूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति मैंने तुमसे कही है गन्धर्व और अप्सराओंकी उत्पत्तिभी मैंने तुमसे कही है गन्धर्व और अप्सरा सर्प सुपर्ण रुद्र मरुत् गुरु ब्राह्मण जोकि शोभायुक्त और

of Apsaras. Alamvush, Misrakeshi, Vidyutparn, Tilottama, Arun, Rakshita, Rambha, Manorama, Keshini, Suvahu, Surata, Suaraja and Supria were the Apsara daughters and Ativahu, Hapa, Hahu and Tumvaru were the famous Gandharvs sons Pradha. The Purans say that Amrit, the Brahmans, cows, Gandharvas and Apsaras were the offspring of Kapila. I have now recited the birth of all the creatures duly—of Gandharvs, Apsaras, Snakes, Suparnas, Marutts, Cows, Brahmans, blessed with great good fortune and of sacred deeds. This account increases the life, is sacred, worthy of all praise, and gives pleasure to the ear. It should be always read recited to others with steadiness of mind. He who properly reads this account of the birth of high-souled creatures, in the presence of

ख्यातो गन्धर्वाप्सरसांतथा ॥ ५४ ॥ भुजंगानांसुपर्णानां रुद्राणां मरुतां तथा।
गवांच ब्राह्मणानाञ्च श्रीमतांपुण्यकर्मणाम् ॥ ५५ ॥ आयुष्यश्चैव पुण्यश्च धन्यः
श्रुतिसुखावहः। श्रोतव्यश्चैव सततं श्राव्यश्चैवानसूयता ॥ ५६ ॥ इमन्तु वंशंनिय
मेनयःपठेन् महात्मनांब्राह्मणदेवसन्निधौ। अपत्यलाभंलभते स पुष्कलं श्रियंयशः
प्रेत्यचशोभनांगतिम् ५७ ॥

इत्यादि पर्वणि सम्भवपर्वण्यंशावतरणे पञ्चषष्ठोऽध्यायः ६५ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ ब्रह्मणोमानसापुत्रा विदिताःषण्महर्षयः। एकादशः सुताः
स्थाणोः ख्याताःपरम तेजसः १ मृगव्याधश्चसर्पश्च निर्ऋतिश्चमहायशाः। अजैक
पाद हिर्बुध्न्यः पिनाकी च परन्तपः ॥ २ ॥ दहनोऽथेश्वरश्चैव कपालीचमहाद्युतिः

पुण्यवान् हैं उन के वंशकी यह कथा आयु और पुण्य धन के बढानेवाली और कानोंको आनन्दकी देनेवाली है और यह कथा कुतर्क को छोड़कर सदैव सुननी और सुनानी चाहिये। ५५। इस वंशकी कथाको जो पुरुष नियम पूर्वक महात्मा ब्राह्मण और देवताओं के समीप पढ़ता है वह बहुतसी सन्तान लक्ष्मी यश और मरकर उत्तम गति को प्राप्तहोता है ५७ ॥

अध्याय ६६ ॥

वैशम्पायन ने कहा ब्रह्मा के मन से उत्पन्न हुए ६ पुत्र प्रसिद्ध हैं और सातवें स्थाणु के बड़े प्रसिद्ध ११ पुत्र हुए। १। मृग, व्याध, सर्प, निर्ऋति जोकि बड़ायश स्वीथा अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, दहन ईश्वर बड़ी कान्तिवाला कपाली, स्थाणु

the gods and Brahmans, obtains large progeny, good fortune and attains also the excellent worlds hereafter.

CHAPTER LXVI

(SAMBHAV PARV CONTINUED)

Vaishampayan said, " It is known that Brahma had six great Rishis for his spiritual sons. There was another named *Sthanu* who had eleven sons gifted with great energy. They were *Mrigvyadha*, *Sarp*, *Nirite*, *Ajaekapad*, *Ahirvadhan*, Pinaki, Dahan Ishwar,

स्थाणुर्भगश्च भगवान् रुद्रा एकादश स्मृताः ॥ ३ ॥ मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः
पुलहः क्रतुः । षड़ेते ब्रह्मणः पुत्रा वीर्य्यवन्तो महर्षयः ॥ ४॥ त्रयस्त्वंगिरसःपुत्रालोके
सर्वत्रविश्रुताः । बृहस्पतिरुतथ्यश्च सम्बर्त्तश्च धृतव्रताः ॥ ५ ॥ अत्रेस्तु बहवः पुत्राः
श्रूयन्ते मनुजाधिप । सर्वे वेदविदः सिद्धाः शान्तात्मानो महर्षयः ॥ ६ ॥ राक्षसाश्च
पुलस्त्यस्य वानराः किन्नरास्तथा । यक्षाश्चमनुजव्याघ्र पुत्रास्तस्यच धीमतः ॥ ७ ॥
पुलहस्य सुता राजञ्छलभाः परिकीर्त्तिताः । सिंहाः किंपुरुषाव्याघ्रा यक्षा
ईहामृगास्तथा ॥ ८ ॥ क्रतोःक्रतुसमाःपुत्रा पतंगसहचारिणः । विश्रुतास्त्रिषु लोकेषु
सत्यव्रतपरायणाः ॥ ९ ॥ दक्षस्त्वजायतांगुष्ठाद्दक्षिणाद्भगवानृषिः । ब्रह्मणःपृथिवी-
पाल शान्तात्मा सुमहातपाः ॥ १० ॥ वामादजायतांगुष्ठाद्भार्य्या तस्य महात्मनः ॥
तस्यां पञ्चाशतं कन्याः सएवाजनयन्मुनिः ॥ ११ ॥ ताः सर्वास्त्वनवद्याङ्ग्यः कन्याः

भगवान् भग यह ११ रुद्र कहे हैं । ३ । मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, यह ६ बड़े प्रभावयुक्त ब्रह्मा के पुत्रहैं । ४ । और अंगिराके पुत्र उत्तम व्रतों के धारण करनेवाले सब लोक में प्रसिद्ध बृहस्पति, उतथ्य और सम्वर्त नामसे प्रसिद्ध हैं और हे राजन् अत्रि के बहुत से पुत्र सुनने में आते हैं वह सब वेदके जाननेवाले सिद्ध औरशांत चित्तवाले महर्षि हैं । ६ । और हे मनुष्यों में उत्तम जन्मेजय ! बुद्धिमान् पुलस्त्यकी सन्तान राक्षस, वानर, किन्नर, यक्ष, मनुष्य हुए । ७ । और पुलहकी सन्तान हेजन्मे जय, शलभ, सिंह, किम्पुरुष, व्याघ्र, भेड़िये थे । ८ । और क्रतू के पुत्र जोकि क्रतू के समान थे और सूर्यके साथ रहनेवाले तीनों लोकमें प्रसिद्ध सत्यव्रतमें तत्पर बालखिल्य नामक थे । ९ । ब्रह्मा के दाहिने अंगूठेसे शांति चित्तवाला और बड़ा तपस्वी हे जन्मे-जय भगवान् दक्षऋषि हुआ । १० । और ब्रह्मा के बांये अंगूठेसे उस महात्मा दक्षकी स्त्री उत्पन्न हुई उस में ५० कन्या उस महात्मा दक्ष ने उत्पन्नकीं । ११ । वह सब

Kapati, Sthanu and Bhag. These are called the eleven Rudras. The sons of Brahma were Marichi Angira, Atri, Pulastya, Pulah and Kratu. Angira had three famous sons, viz, Vrihaspati, Utathia, Samvart all of rigid vows. Atri had many sons, conversant with the Vedas, great Rishis, crowned with ascetic success and of souls in perfect peace. The sons of Pulastya, O king, were the Rakshases, Monkeys, Kinners, men and Yakshes. The sons of Pulaha were the winged insects, the lions, the Kimpurushas, tha tigers, bears and wolves. The holy sons of Kratu were the companions of the sun and noted for their devotion to truth and virtue. The famous Rishi Daksh, of perfectly peaceful soul and great asceticism, had sprung from the right toe of Brahma. From the left toe of Brahma sprang the wife of Daksh and had fifty daughters of fauftless featur-

कमलळोचनाः । पुत्रिकाः स्थापयामास नष्टपुत्रः प्रजापतिः ॥ १२ ॥ ददौ स दश धर्माय सप्तविंशतिमिन्दवे । दिव्येन विधिना राजन् कश्यपायत्रयोदश ॥ १३ ॥ नामतोधर्मपत्न्यस्ताः कीर्त्यमानानिबोधमे । कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धा क्रियातथा ॥ १४ ॥ बुद्धिर्लज्जा मतिश्चैव पत्न्यो धर्मस्य ता दश । द्वाराण्येतानि धर्मस्य विहितानि स्वयम्भुवा ॥ १५ ॥ सप्तविंशति सोमस्य पत्न्यो लोकेषु विश्रुताः । कालस्य नयनेयुक्ताः सोमपत्न्याः शुचिव्रताः ॥ १६ ॥ सर्वा नक्षत्रयोगिन्यो लोकयात्राविधानतः । पैतामहो मनुर्देवस्तस्य पुत्रःप्रजापतिः ॥ १७ ॥ तस्याष्टौ वसवः पुत्र स्तेषां वक्ष्यामि विस्तरम् । धरोध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः ॥ १८ ॥ प्रत्यूषश्चप्रभासश्च यसवोऽष्टौप्रकीर्त्तिताः । धूम्रायास्तुधरः पुत्रो ब्रह्मविद्यो ध्रुवस्तथा ॥ १९ ॥

कन्याऐं उत्तम अंग और कमल केसे नेत्रवाळीथीं और दक्ष प्रजापति के पुत्र सन्तान न होने से उसने उनको पुत्रिका बनाया । १२ । उस महात्माने दस कन्याएं तो धर्म को व्याहदीं, २७ चन्द्रमा को और हेजन्मेजय दिव्य विधिके साथ १३ कन्याऐं कश्यपको दीं । १३ । और यह जो धर्मकी पत्नियें हैं उन के नामोंको सुन कीर्त्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, मति, यह दसों धर्मकी पत्नीथीं यह ब्रह्मा के बनायेहुए दस धर्म के द्वारहैं । १५ । और लोक में प्रसिद्ध और समय के प्रत्यक्ष करने में सम्मिलित और पवित्र व्रतवाली २७ चन्द्रमाकी स्त्रियें हैं और यह सब सत्ताईस नक्षत्र नामवाली हैं और लोककी यात्राके विधान के लिये उत्पन्न हुई पैतामह मुनि धर्म था और ब्रह्मा का पुत्र दक्षथा उसकी वसु सम्बधिनी कन्या से आठ वसु उत्पन्न हुए और उन के विस्तार को कहूंगा । १७ । धर, ध्रुव, सोम, अहर, अनिल, अनल, प्रत्यूष प्रभास, यह आठ वसु कहे हैं धूम्राका धर पुत्र हुआ और ब्रह्मविद्याका जाननेवाला ध्रुव

---

es and limbs and eyes like lotus leaves. Daksh the Prajapati, having no sons, treated them as Putrikas (so that he might adopt their sons). He married ten of them to Dharm, twenty seven to Chandra and thirteen to Kashyap. The names of Dharm's ten wives are Kirti, Lakshmi, Dhriti, Medha, Pushti, Sradha, Kria, Budhi, Lajja and Mati. The wives of som (Chandra) were twenty seven, all of sacred vows and employed in indicating time. They are called Nakshattras or Yoginis and assist the courses of the world. Brahma had another son, Manu whose son was Prajapati. The latter had eight sons, called the Vasus whose names are Dhara, Dhruv, Som, Aha, Anil, Anal, Pratyus and Prabhas. Of these Vasus Dhar and the truth knowing Dhruv were born of Dhumra; Chandrama and Shasan were born of Shasa; Aha was the son of

चन्द्रमास्तु मनस्विन्याः श्वसायाः श्वसनस्तथा । रतायाश्चाप्यहः पुत्रः शाण्डिल्याश्च हुताशनः ॥ २० ॥ प्रत्यूषश्च प्रभासश्च प्रभातायाः सुतौस्मृतौ । धरस्य पुत्रो द्रविणो हुतहव्यवहस्तथा ॥ २१ ॥ ध्रुवस्य पुत्रो भगवान् कालो लोकप्रकालनः । सोमस्य तु सुतो वर्चा वर्चस्वी येन जायते ॥ २२ ॥ मनोहरायाः शिशिरः प्राणोऽथ रमण स्तथा । अन्हः सुतस्तथा ज्योतिः शमः शान्तस्तथा मुनिः ॥ २३ ॥ अग्नेः पुत्रः कुमारस्तु श्रीमाञ्छरवणालयः । तस्यशाखोविशाखश्च नैगमेयश्च पृष्ठजः ॥ २४ ॥ कृत्तिकाभ्युपपत्तेश्च कार्त्तिकेयइतिस्मृतः । अनिलस्यशिवाभार्य्या तस्याः पुत्रोमनोजवः ॥ २५ ॥ अविज्ञातगतिश्चैव द्वौ पुत्रावनिलस्यतु ॥ प्रत्यूषस्यविदुः पुत्रमृषिंनाम्नाथदेवलम् ॥ २६ ॥ द्वौपुत्रौदेवलस्यापि क्षमावन्तौमनीषिणौ । बृहस्पतेस्तुभगिनीवरस्त्री ब्रह्मवादिनी ॥ २७ ॥ योगसक्ताजगत् कृत्स्नमसक्ताविचचारह ॥ प्रभासस्यतुभार्य्या

हुआ मनुश्विनी का चन्द्रमा पुत्र हुआ और श्वसा का श्वसन और रताका अहन और शाण्डिल्या का हुताशन, प्रत्यूष और प्रभास यह दोपुत्र प्रभाताके हुए । २० । और धर के पुत्र द्रविण और हुतहव्य हुए और ध्रुवका पुत्र सब संसार का प्रलयकरनेवाला भगवान् कालहुआ । २१ । सोमका पुत्र वर्चा हुआ मनोहरा के तीनपुत्र शिशिर प्राण और रमणहुए । २२ । अहन् के ज्योति, शम, शांति, मुनि यह चारपुत्र हुए शोभायुक्त शरों के बन में स्थानवाला कुमार अग्नि का पुत्रहुआ उसके पश्चात् शाख, विशाख और नैगमेयहुए और कृतिकाओं के सम्बन्धसे उस कुमार को कार्त्तिकेयभी कहते हैं । २४ । अनिलकी भार्या शिवाथी और अनिल के उससे मनोजव और अविज्ञात गति यहदोपुत्र हुए । २५ । और प्रत्यूषका पुत्र देवलनाम ऋषि हुआ और देवल के दयावान् और बुद्धिमान दोपुत्र हुए ब्रह्मा को कहनेवाली और स्त्रियों में उत्तम बृहस्पतिकी बहिन योगा में आसक्त और संसार से विरक्त जोकि सम्पूर्ण जगत्में फिरती थी वह आठवें वसु प्रभसकी भार्याथी । २७ । शिल्पविद्या का प्रजापति बड़े भागवाला विश्वकर्मा उससे उत्पन्न

Rata; Hutashan of Sandilya; and Pratyush and Prabhas were the sons of Prabhas. Dhara had two sons, Dravin and Hutahavyah. The son of Dhruva is the illustrious Kal, the destroyer of the worlds. Som's son is the glorious Varcha. Varcha had three sons from his wife Man ohara, viz, Shishir, Pran and Ramanu. The son of Anha were Jyoti, Shama, Shanta and Muni. The son of Agni is the handsome Kumar, born in the forest of reeds, also called Kartikeya, because he was reared by Kritika and others. Kartikeya had three younger brothers, Shakha, Vishakh and Naigmeya. The wife of Anil, was Shiva. Anil's sons were Manojava and Avijnatagati by Shiva his wife. The son of Pratyush was Deval, the Rishi. Deval had two sons of great mental power and exceedingly forgiving. The

सा वसूनामष्टमस्यह ॥ २८ ॥ विश्वकर्मामहाभागो जज्ञेशिल्पप्रजापतिः ॥ कर्त्ताशिल्प-
सहस्राणां त्रिदशानांच वर्द्धकः ॥ २९ ॥ भूषणानाञ्चसर्वेषां कर्त्ताशिल्पवतांवरः ॥
योदिव्यानिविमानानि त्रिदशानांचकारह ॥ ३० ॥ मनुष्याश्चोपजीवन्ति यस्यशिल्पं
महात्मनः । पूजयन्तिचयं नित्यं विश्वकर्माणमव्ययम् ॥ ३१ ॥ स्तनन्तुदक्षिणंभित्वा
ब्राह्मणोनरविग्रहः । निःसृतोभगवान्धर्मः सर्वलोकसुखावहः ॥ ३२ ॥ त्रयस्तस्यवराः
पुत्राः सर्वभूतमनोहराः । शमःकामश्चहर्षश्च तेजसालोकधारिणः ॥ ३३ ॥ कामस्यतु
रतिर्भार्य्या शमस्यप्राप्तिरङ्गना । नन्दातुभार्य्याहर्षस्य यासुलोकाःप्रतिष्ठिताः ॥३४॥
मरीचेःकश्यपःपुत्रः कश्यपस्यसुरासुराः । जज्ञिरेनृपशार्दूल लोकानांप्रभवस्तुसः ३५
त्वाष्ट्रीतुसवितुर्भार्य्या वडवारूपधारिणी । असूयतामहाभागा सान्तरिक्षेऽश्विनावुभौ

हुआ जो हजारोंप्रकारकी शिल्पविद्या को प्रकाश करनेवाला और देवताओं का शिल्पीथा । २८ । और सम्पूर्ण प्रकार के आभूषणों का बनानेवाला और शिल्पविद्या में श्रेष्ठ था और जिसने देवताओंके दिव्य विमानों को बनाया । २९ । और जिस महात्माकी शिल्प विद्या को ग्रहणकर इस संसार में आजीवन करते हैं और जिस विकाररहित विश्वकर्मा को पूजित मानते हैं । ३० । ब्रह्मा के दहिने स्तनको तोड़कर मनुष्याकार सम्पूर्ण लोक को सुखका देनेवाला भगवान् धर्म उत्पन्न हुआ । ३१ । सम्पूर्ण संसार के मनोहर और अपने तेज से लोकोंके धारण करनेवाले शम, काम और हर्ष यह तीन उत्तम पुत्र धर्म के उत्पन्न हुए । ३२ । कामकी भार्या रति, शमकी स्त्री प्राप्ति, हर्षकी भार्या नन्दाथी जिन में यह सम्पूर्ण लोक स्थितहैं । ३३ । मरीचि का पुत्र कश्यप था, और कश्यप के हे— जन्मेजय सुर और असुर यह पुत्र उत्पन्न हुए इस से वह कश्यप लोकोंका उत्पादक था । ३४ । और सूर्यकी स्त्री त्वाष्ट्री थी उस बड़े भागवाली ने घोड़ी रूप धारण कर आकाश में दोअश्विनीकुमारों को उत्पन्न किया । ३५ । और अदिति के बारहपुत्र हुए

sister of Virhaspati, the best of women, uttering sacred truth, engaged in asceticism, wandering throuhout the world, became the wife of Prabhas, the eighth Vasu. She was the mother of Vishwakarma, the founder of all arts, architect of the gods, maker of all sorts of ornaments, the first artist, builder of the god's carriages, worshipped by men on account of the many blessings and inventions he gave them, eternal and immutable. The famous Dharm, the dispenser of all happiness, came out of the right breast of Brahma in the human form. He had three beautiful sons, viz, Sham Kam and Harsh, the supporters of the worlds by their energy. The wife to Kam is Rati, to Sham is Prapti, to Harsh is Nanda. The worlds depend on them. The son of Marichi was Kashyap whose offspring are the gods and Asurs. Kashyap is therefore called the father of

॥ ३६ ॥ द्वादशैवादितेःपुत्राः शक्रमुख्यानराधिप । तेषामवरजोविष्णुर्यत्र लोकाः
प्रतिष्ठिताः ॥ ३७ ॥ त्रयस्त्रिंशतइत्येते देवास्तेषामहंतव । अन्वयंसम्प्रवक्ष्यामि पक्षैश्च
कुलतोगणान् ॥ ३८ ॥ रुद्राणामपरःपक्षः साध्यानां मरुतांतथा । वसूनांभार्गवं विद्या
द्विश्वेदेवांस्तथैवच ॥ ३९ ॥ वैनतेयस्तुगरुडो बलवानरुणस्तथा । बृहस्पतिश्च भगवा
नादित्येष्वेवगण्यते ॥ ४० ॥ अश्विनौगुह्यकान् विद्धि सर्वौषध्यस्तथापशून् । एतेदेवग
णाराजन् कीर्तितास्तेऽनुपूर्वशः ॥ ४१ ॥ यान् कीर्तयित्वामनुजः सर्वपापैः प्रमुच्यते
ब्राह्मणोहृदयंभित्त्वा निःसृतोभगवान्भृगुः ॥४२॥ भृगोःपुत्रःकविर्विद्वांञ्छुक्रः कवि-
सुतोग्रहः । त्रैलोक्यप्राणयात्रार्थं वर्षावर्षेभयाभये ॥ ४३ ॥ स्वयम्भुवानियुक्तः सन
सुवर्णंपरिधावति । योगाचार्यो महाबुद्धिर्दैत्यानामभवद्गुरुः । सुराणांचापिमेधावी ब्र

जिनमें इन्द्र मुख्य हैं और उन में विष्णु सब में लघु है जिसमें तीनों लोक स्थित हैं ३६
तैंतीस देवताहैं उन के वंश को और पक्षोंके साथ कुल और गणों को मैं तुमसे कहूंगा
रुद्रोंका पृथक् पक्ष है साध्यों और मरुतों केभी पृथक् २ पक्षहैं, वसु और विश्वेदवा का
भार्गव पक्ष है । ३८ । विनता का पुत्र गरुड अरुण भगवान् बृहस्पति, यह देवताओं में
गिने जाते हैं । ३९ । अश्विनीकुमारों और सम्पूर्ण औषधियों और पशुओंकी गुह्यक
संख्या है हेराजन् जनमेजय यह देवतागण क्रम से तुमसे कह दिया मनुष्य जन देवताओं
के गणका कीर्त्तन करके सम्पूर्ण पापों से छूटसक्ते हैं और ब्रह्मा के हृदय को भेदनकर
भगवान् भृगु उत्पन्नहुआ । ४१ । उसका पुत्र विद्वान कवि शुक्रहुआ जो कि त्रैलोकोंके
प्राणोंकी रक्षा के लिये वर्षाकाहोना या नहोना भय का होना नहोना इन कार्यों में ब्रह्मा
से नियुक्त कियाहुआ अपने कार्य को करता है । ४२ । और जो योगाचारी होताहुआ
बड़ा बुद्धिमान ब्रह्मचारी और व्रतों में तत्पर दैत्योंका गुरु और बृहस्पति रूप बनाके देव-
ताओंकाभी गुरूरहा ४३ ब्रह्माकी आज्ञा से संसारके कल्याण करनेमें वस शुक्र के नियुक्त

the world. Tashtri, assuming the forms of a mare, brought forth the twins Aswinikumars, Aditi had twelve sons with Indra at their head and Vishnu the youngest upon whom the three worlds depend. The gods are thirty three. I shall now recount their Progeny according to their Pakshas, Kulas and Ganas. The Rudras, the Sadhyas, the Maruts the Vasus, the Bhargavas and the Vishwedevas are called the Paksh. Garur, the son of Vinta; the mighty Arun; and the illustrious Vrihaspati are called the Adityas. The twin Aswins, all the annual plant and inferior animals are the Guhyakas. The recitation of the Gans of the gods removes all sin, O king, Bhrigu came out of the breast of Brahma. The learned Shukra is Bhrig's son Shukra, as a planet, is given the power of pouring and withholding rain, the dispensing and remitting

ह्मचारीयतव्रतः ॥ ४४ ॥ तस्मिन्नियुक्तेविधिना योगक्षेमायभार्गवे । अन्यमुत्पादया-
मासपुत्रं भृगुरनिन्दितम् ॥ ४५ ॥ च्यवनंदीप्ततपसं धर्मात्मानंयशस्विनम् । यःस्वरो
षाच्चयतो गर्भान्मातुर्मोक्षायभारत ॥४६॥ आरुषीतुमनोःकन्या तस्यपत्नीमनीषिणः
और्वस्तस्यांसमभवंगुरुं भित्त्वामहायशाः ॥ ४७ ॥ महातेजामहावीर्यो बालएव-
गुणैर्युतः । ऋचीकस्तस्यपुत्रस्तु जमदग्निस्ततोऽभवत् ॥ ४८ ॥ जमदग्नेस्तुचत्वार
आसन्पुत्रामहात्मनः । रामस्तेषांजघन्योऽभूद जघन्यैर्गुणैर्युतः ॥ ४९ ॥ सर्वशस्त्रेषु
कुशलः क्षत्रियान्तकरोवशी । और्वस्यासीत्पुत्रशतं जमदग्निपुरोगमम् ॥ ५० ॥ ते-
षांपुत्रसहस्राणि बभूवुर्भुवि विस्तरः । द्वौपुत्रौब्रह्मणस्त्वन्यौ ययोस्तिष्ठतिलक्षणम् ५१
लोकेधाताविधाताच यौस्थितौमनुनासह । तयोरेवस्वसादेवी लक्ष्मीःपद्मगृहाशुभा ५२

होने पर भृगु ने निन्दा रहित और प्रकाशवान् तपवाले धर्मात्मा यशयुक्त च्यवननाम दूसरे पुत्रको उत्पन्न किया जो च्यवन क्रोध से गर्भ मेंसे पहिलेही गिरगया ।४५। और उसकी स्त्री आरुषी नामवाली मनुकी कन्याथी और उस आरुषी में च्यवन से उसकी जंघा को भेदनकर और्व नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । ४६ । जो बड़ा तेजस्वी और बलवान और बालकपनही से सम्पूर्ण गुणों से युक्तथा उसका पुत्र ऋचीक हुआ और इसकापुत्र जमदग्नि हुआ । ४७ । और महात्मा जमदग्नि के चारपुत्र हुए और उन चारोंमें परशुराम सबमें छोटा और गुणों में बड़ा हुआ जोकि सम्पूर्ण शास्त्रों में कुशल और क्षत्रियों का नाश करनेवाला और जितेन्द्रिय हुआ । ४८ । और्व के सौपुत्रहुए जमदग्नि आदि उन के हजारों पुत्र हुए जिनका विस्तार पृथ्वी में फैला हुआहै । ४९ । ब्रह्मा के दो पुत्र हुए जिनका लक्षण संसार में स्थित है वह दोनों पुत्र धाता विधाता नाम वाले और मनु के साथ रहते हैं उन दोनों की भगिनी पद्म में रहने वाली देवी लक्ष्मी है उस के मानसिक पुत्र आकाशचारी घोड़े हैं । ५१ । वरुणके वीर्य से वरुणकी ज्येष्ठा भार्या में बलनामपुत्र

of calamities and sustaining the lives of all creatures, traversing through the skies. The learned Shukra, of great intelligence and wisdom, of rigid vows, observing a vow of celibacy, divided himself into two by his power of asceticism and became the adviser of the Daityas and the gods. While Shukra was thus employed by Brahma for the good of his creatures, Bhrigu became the father of another son, Chyavan, who was virtuous, famous and like the Sun in glory. He dropped out of his mother's womb in anger and released her. Arushi, the daughter of Manu was Chyavan's mother. Their son was Aurv of great reputation. He was born of Arushi and was father of Richika. Richika possessed great power, energy and virtue from his boyhood and was the father of Jamadagni. The latter had four sons, the youngest of whom was Ram, superior to

तस्यास्तुगानसाः पुत्रास्तुरगाव्योमचारिणः । वरुणस्यभार्य्यायाज्येष्ठा शुक्राद्देवीव्यजायत ५३ तस्याःपुत्रंवलंविद्धि सुरांचसुरनन्दिनीम् । प्रजानामन्नकामानामन्योऽन्यपरिभक्षणात् ॥ ५४ ॥ अधर्मस्तत्रसञ्जातः सर्वभूतविनाशकः । तस्यापि निर्ऋतिर्भार्य्या नैर्ऋतायेनराक्षसाः ॥ ५५ ॥ घोरास्तस्यास्त्रयःपुत्राः पापकर्मरताःसदा । भयोमहाभयश्चैव मृत्युर्भूतान्तकस्तथा ॥ ५७ ॥ नतस्यभार्य्यापुत्रो वा कश्चिदस्त्यन्तको हिसः काकींश्येनींतथाभासीं धृतराष्ट्रींतथाशुकीम् ५७ ताम्रातुसुषुवेदेवी पञ्चैतालोकविश्रुताः उलूकान्सुषुवेकाकी श्येनीश्येनान्व्यजायत ॥ ५८ ॥ भासीभासानजनयद्गृध्रांश्चैव जनाधिप । धृतराष्ट्रीतुहंसांश्चकलहंसांश्चसर्वशः ॥ ५९ ॥ चक्रवाकांश्चभद्रातु जनयामाससैवतु । शुकीचजनयामास शुकानेवयशस्विनी ॥ ६० ॥ कल्याणगुणसम्पन्ना

और सुरानाम कन्या सुरोंकी आनन्ददेने वाली उत्पन्न हुई । ५२ । प्रजाओं का भक्षण किया तिससे अधर्म उत्पन्न हुआ (जो कि सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश करने वाला है) । ५३ । और अधर्म की निर्ऋति भार्या ने राक्षसों को उत्पन्न किया तीन पुत्र उसके बड़े भयानक और पाप कर्म को करने वाले । ५४ । भय, महाभय और सम्पूर्ण प्राणियों का अन्त करने वाला मृत्यु, और उस मृत्युकी नकोई स्त्रीहै नकोई पुत्रहै जिसकारण वह सबका अन्त करने वालाहै. ५५ ताम्राकी, काकी, श्येनी, भासी, धृतराष्ट्री, शुककी यह पांच लोक में प्रसिद्ध कन्या उत्पन्न हुई । ५६ । काकी के उल्लूक पुत्रहुए और श्येनी ने वाजों को उत्पन्न किया, और जन्मेजय भासी ने भास और गृद्धों को उत्पन्न किया । ५७ । धृतराष्ट्री के हंस और कल हंस हुए, भद्रा ने चक्रवाकों को उत्पन्न किया । ५८ । यश वाली शुकाने तोतों को उत्पन्न किया कल्याण गुणों से युक्त और सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त ने क्रोध वश और क्रोध से उत्पत्ति वाली नौ स्त्रियों को उत्पन्न किया,—मृगी, मृगमन्दा,

all his brothers in good qualities, skilful in arms and the slayer of Kshatrias. He controlled his passions. Jamadagni was the eldest of the hundred sons of Aurva. Their race multiplied and spread all over the world. Brahma had two other sons, Dhata and Bidhata who stayed with Manu. Their sister is the auspicious Lakshmi living amid lotuses. The sons of Lakshmi are the celestial horses. Sukra's wife Divi, was Varun's daughter. She had a son and a daughter, Val and Sura respectively, giving joy to the gods. Adharm was born when creatures began to devour each other. He always destroys creatures. His wife is Niriti and the offspring the *Rakshases* called Nairits. She had three more sons, cruel and engaged in doing sinful deeds. They are Bhaya (fear) Mahabhaya (terror) and Mrityu (death), always engaged in killing the creatures. The destroyer has no wife and no sons. Tamar's five daughters are known throughout

सर्वलक्षणपूजिता । नवक्रोधवशानारीः प्रजज्ञेक्रोधसम्भवाः ॥ ६१ ॥ मृगीचमृगम-
न्दाच हरीभद्रमनाअपि । मातङ्गीत्वथशार्दूली श्वेतासुरभिरेवच ॥ ६२ ॥ सर्वलक्षण
सम्पन्ना सुरसाचैवभामिनी । अपत्यंतुमृगाःसर्वेमृग्यानरवरोत्तम ॥ ६३ ॥ ऋक्षाश्च-
मृगमन्दायाः सृमराश्चपरन्तप । ततस्त्वैरावतंनागं जज्ञेभद्रमनाःसुतम् ॥ ६४ ॥ ऐरा-
वतःसुतस्तस्या देवनागोमहागजः । हर्य्याश्चहरयोऽपत्यं वानराश्चतरस्विनः ॥ ६५ ॥
गोलांगूलांश्चभद्रन्ते हर्य्याःपुत्रान्प्रचक्षते । प्रजज्ञेत्वथशार्दूली सिंहान्व्याघ्रानेनेकशः
॥ ६६ ॥ द्वीपिनश्चमहासत्त्वान सर्वानेवनसंशयः । मातंग्यपिच मातङ्गानपत्यानिन-
राधिप ॥ ६७ ॥ दिशांगजंतु श्वेताख्यं श्वेताजनयदाशुगम् । तथादुहितरौराजन
सुरभिर्वैव्यजायत ॥ ६८ ॥ रोहिणींचैवभद्रंते गन्धर्वींतुयशस्विनी । विमलामपिभ-

हरी, भद्रमना, मातङ्गी, शार्दूली, श्वेता, सूरभि, और सम्पूर्ण लक्षण से युक्त सुरसा
। ६१ । हे राजाओं में श्रेष्ठ जन्मेजय ? मृगी के पुत्र सम्पूर्ण मृग हुए, और हेशत्रुओं
को ताप देनेवाले जन्मेजय रीछ और अमर यह मृगमन्दा से हुए, और भद्रमना ने
ऐरावत हाथीको उत्पन्न किया । ६३ । और हरी के वानर और बड़े वेगवाले लंगूर
पुत्र हुए । ६४ । और शार्दूली के सिंघ, व्याघ्र, द्वीप यह बड़े बलवान् पुत्र हुए । ६५ ।
और मातंगी के सन्तान हाथी हुए और दिशगज जो श्वेतहाथी हैं उसको श्वेताने उत्पन्न
किया ६६ और हेराजन् सुरभि के रोहिणी और गन्धर्वी यहदो यशवाली कन्या हुई
६७ और विमला और अनलाकोभी उत्पन्न किया रोहिणीसे गउऐं पैदाहुईं और गन्धर्वी
से घोड़े पैदाहुए और अनलाकी सन्तान खजूर और ताल, हिन्ताल, ताली, खर्जूरिका,
गवाका, नरियल, यह सात पिंड फल वृक्ष हैं अनलाकी पुत्री शुकी है और सुरसाका पुत्र

the world. They are Kaki, Sheyni, Vashi, Dhritrashtri and Shuk. Kaki brought forth the crows, Sheyni, the hawks; Bhashi, the cocks and vultures; Dhritrashtri, the ducks, swans and Chakravaks; and the fair Shuki of amiable nature and good omens, brought forth the parrots. Krodha brought forth nine daughters of wrathful disposition. Their names were Mrigi, Mrigmanda, Hari, Bhadraman, Matangi, Sharduli, Sheta, Surabhi and the virtuous Surasa. The offspring of Mrigi are all the animals of the deer species. The offspring of Mrigmunda are bears of sorts and swift-footed animals. Bhadramana was the mother of the celestial eleqhant Airavat. The offspring of Hari are the active monkies, the horses and other animals having a tail like the cow. Sharduli brought forth the lions, tigers, leopards and strong animals. Elephants were born of Matangi and Sheta brought forth the swiftest elephant named Shet. Surabhi brought forth two daughters, the amiable Rohini and the famous Gandharvi and two others named Vemala and Anala Rohini brought

द्रन्ते अनलामपिभारत ॥ ६९ ॥ रोहिण्यांजज्ञिरेगावो गन्धर्व्यांवाजिनःसुताः । सप्तपिण्डफलान्वृक्षाननलापि व्यजायत ॥ ७० ॥ अनलायाःशुकीपुत्री कङ्कस्तुसुरसासुतः । अरुणस्य भार्य्याश्येनी तुवीर्य्यवन्तौमहाबलौ ॥ ७१ ॥ सम्पातिंजनयामास वीर्य्यवन्तंजटायुषम् । सुरसाजनयन्नागान् कद्रूःपुत्रांस्तुपन्नगान् ॥ ७२ ॥ द्वौपुत्रौ विनतायास्तु विख्यातौगरुडारुणौ । इत्येषसर्वभूतानां महतांमनुजाधिप । प्रभवः कीर्तितः सम्यङ्मयामतिमतांवरः ॥७३॥ यंश्रुत्वापुरुषः सम्यङ्मुक्तोभवतिपाप्मनः सर्वज्ञतांचलभते गतिमग्र्यांच विन्दति ॥ ७४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यंशावतरणे षट्षष्टोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

कंक हुआ, अरुणकी भार्या से श्येनी है उसके बड़े बलवान् दोपुत्र हुए ६९ सम्पाती और जटायु सुरसा से नागों को उत्पन्न किया और कद्रु ने सर्पों को उत्पन्न किया । ७० । दोपुत्र विनता के हुए जोकि संसार में गरुड़ और अरुणनाम से विख्यात हैं हेराजन् जन्मेजय ! यह सम्पूर्ण बड़े बड़े प्राणियोंकी उत्पत्ति मैंने भलीप्रकार तुझसे कहदी ७१ इसको सुननेसे मनुष्य सम्पूर्ण पापों से छूटजाता है और सर्वज्ञता प्राप्तहोकर उत्तमगति को जाता है ७२ ॥

---

forth the cows and Gandharvi the horses. Anala produced seven kinds of trees yielding pulpy fruits. Sursa's son was Kank and Shyeni, the wife of Arun, gave birth to two sons of great strength and energy named *Sampati* and the mighty *Jatayu*. *Sursa* also brought forth the Nagas and Kadru the Pannagas. Vinata brought forth two famous sons Garur and Arun. O wise king, I have told thee geneology of all the principal creatures. By listening to this, one is fully cleansed from his sins and acquires great knowledge and finally attains to the foremost of states in after life.

जनमेजय उवाच। देवानांदानवानांच गन्धर्वोरगरक्षसाम्। सिंहव्याघ्रमृगाणांच पन्नगानांपतत्रिणाम् ॥ १ ॥ सर्वेषांचैवभूतानां सम्भवंभगवन्नहम्। श्रोतुमिच्छामितत्त्वेन मानुषेषुमहात्मनाम्। जन्मकर्मचभूतानां मेतेषामनुपूर्वशः ॥२॥वैशम्पायन उवाच। मानुषेषुमनुष्येन्द्र सम्भूतायेदिवौकसः। प्रथमंदानवांश्चैव तांस्तेवक्ष्यामिसर्वशः ॥ ३ ॥ विप्रचित्तिरितिख्यातो यआसीद्दानवर्षभः। जरासन्धइतिख्यातः सआसीन्मनुजर्षभः ॥ ४ ॥ दितेपुत्रस्तुयोराजन् हिरण्यकशिपुःस्मृतः। सजज्ञेमानुषेलोके शिशुपालोनरर्षभ ॥ ५ ॥ संह्लादइतिविख्यातः प्रह्लादस्यानुजस्तुयः। सशल्यइतिविख्यातो जज्ञेवाह्लीकपुङ्गवः ॥ ६ ॥ अनुह्लादस्तुतेजस्वी योऽभूत्ख्यातोजघन्यजः। धृष्टकेतुरितिख्यातःसवभूवनरेश्वरः ॥ ७ ॥ यस्तुराजन् शिबिर्नाम दैतेयःपरिकीर्त्तितः। द्रुमइत्यभिविख्यातः सआसीद्भुविपार्थिवः ॥ ८ ॥ वाष्कलोनाम यस्तेषामासीदसुरसत्तमः। भगदत्तइतिख्यातः सजज्ञेपुरुषर्षभः ॥ ९ ॥ अयःशिराअश्वशिरा

अध्याय ६७ ॥

जन्मेजय ने कहा देवता, दानव, गन्धर्व, उरग, राक्षस, सिंह, व्याघ्र,मृग,पन्नग, पक्षी औरभी सम्पूर्ण प्राणियोंकी मनुष्य जाति में उत्पन्नहोने का वृत्तान्त यथार्थ रीतिसे और उनके जन्म और कर्मकी कथा क्रम से सुनना चाहताहूं। २। वैशम्पायन ने कहा हे राजा जन्मेजय मनुष्यों में जो देवता और दानव उत्पन्न हुए उनमें प्रथम दानवोंकी उत्पात्ति कहताहूं। ३। विपचित्ति नामवाला श्रेष्ठ दानव मनुष्यों में श्रेष्ठ जरासंधहुआ। ४। दितिका पुत्र हिरण्य कश्यप शिशुपाल राजाहुआ। प्रह्लादका छोटाभाई संह्लादनामवाला वाह्लिकों में श्रेष्ठ राजा शल्य हुआ। ६। उस से छोटाभाई अनुह्लाद नामवाला धृष्टकेतु राजा हुआ। ७। दिति का पुत्र शिवि द्रुम राजा हुआ। ८। वाष्कल नाम असुर श्रेष्ठ भगदत्त राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ९। अयःशिरा, अश्वशिरा

CHAPTER LXVII

(SAMBHAV PARV CONTINUED)

Janmejaya said, "Reverend Sir, I wish to hear in detail the birth among men of the gods, the Danavas the Gandharvas the Rakshases, the lions, the tigers, the snakes, the birds and all other creatures. Tell me also their acts and achievements, in due order, on their coming down to the earth. Vaishampayan said, "I shall first tell thee, O monarch, about the gods and Asurs that were born among men. The foremost of Asurs, Viprachitti, was born among men as Jarasandh. The Daitya Hiranyakasipu was known on earth as Shishupal. Sanhrad, the younger brother of Prahrad came among

अयःशङ्कुश्चवीर्यवान् । तथागगनमूर्द्धाच वेगवांश्चात्रपंचमः ॥ १० ॥ पञ्चैतेजज्ञिरेरा
जन्वीर्यवन्तोमहासुराः । केकयेषुमहात्मानः पार्थिवर्षभसत्तमाः ॥ ११ ॥ केतुमा-
निनितिविख्यातोयस्ततोऽन्यःप्रतापवान् । अमितौजाइतिख्यातःसोग्रकर्मानराधिपः १२
स्वर्भानुरितिविख्यातःश्रीमान्यस्तुमहासुरः । उग्रसेनइतिख्यात उग्रकर्मानराधिपः १३
यस्त्वश्वइतिविख्यातः श्रीमानासीन्महासुरः । अशोकोनाम राजाभून्महावीर्योऽपरा
जितः ॥ १४ ॥ तस्मादवरजोयस्तु राजन्नश्वपतिःस्मृतः । दैतेयःसोऽभवद्राजा हा-
र्दिक्योमनुजर्षभः ॥ १५ ॥ वृषपर्वेतिविख्यातः श्रीमान्यस्तुमहासुरः । दीर्घप्रज्ञइति
ख्यातः पृथिव्यांसोऽभवन्नृपः ॥ १६ ॥ अजकस्त्ववरोराजन्य आसीद्वृषपर्वणः ।
सशाल्वइतिविख्यातः पृथिव्यामभवन्नृपः ॥ १७ ॥ अश्वग्रीवइतिख्यातःसत्ववान्यो
महासुरः । रोचमानइतिख्यातः पृथिव्यांसोऽभवन्नृपः ॥ १८ ॥ सूक्ष्मस्तुमतिमानरा-
जन कीर्तिमान्यःप्रकीर्तितः । बृहद्रथइतिख्यातः क्षितावासीत् स पार्थिवः ॥ १९ ॥
तुहुण्डइतिविख्यातो यआसीदसुरोत्तमः । सेनाबिंदुरितिख्यातः सबभूवनराधिपः ॥२०॥
इषुपान्नामयस्तेषा मसुराणांबलाधिकः । नग्नजिन्नाम राजासीद्भुवि विख्यात विक्रमः

शिरा, वीर्यवान अश्वशंकु गगनमूर्द्धा, वेगवान यह पांच महा वीर्यवान असुर केकय देश
में बड़े राज हुए और प्रतापी केतुमान असुर उग्रकर्मा नामवाला राजाहुआ और स्वर्भानु
नामवाला बड़ा असुर उग्रसेन नामवाला बहादुर राजाहुआ लक्ष्मीयुक्त अश्वासुर अपरा-
जित अशोकनाम राजाहुआ अश्व दैत्यका छोटाभाई अश्वपति हार्दिक्य नाम राजाहुआ
वृषपर्वा नामवाला महा असुर दीर्घप्रज्ञराजा प्रसिद्ध हुआ वृषपर्वा का छोटाभाई अजक
नामवाला दैत्य शाल्वनाम से पृथ्वीमें प्रसिद्धहुआ बलवान अश्वग्रीव नामवाला महाअसुर
रोचमान नामवाला राजाहुआ बड़ा बुद्धिमान और कीर्तिमान सूक्ष्म असुर बृहद्रथ राजा
हुआ असुरों में उत्तम तुहुड असुर सेनाबिंदु राजाहुआ बड़ा बलवान असुर इषुपात असुर

man as Shalwa, the famous Valhik. The youngest Anuhrad became Dhrishtketu. The Daitya Shivi became the famous monarch Drum. The great Asur Vashkal became on earth the famous Bhagdatta. The five great Asurs Ayashira, Ashwashira, Ayashanku, Gangamurdha and Vegvan were all born in the house of king Kekaya and became great monarchs. The mighty Asur Ketuman became on earth the King Amituya of dreadful deeds. The great Asur Swarvanu became the mighty Ugrasen of terrible deeds. Ashwa, the great Asur became king Asoka of great energy and invincible in war. Ashwapati, the younger brother of Ashwa, the son of Diti, became on earth the mighty monarch Hardikya. The great and fortunate

॥२१॥ एकचक्रइतिख्यात आसीद्यस्तुमहासुरः। प्रतिविन्ध्यइतिख्यातो बभूवप्रथितः
क्षितौ ॥ २२ ॥ विरूपाक्षस्तु दैतेयश्चित्रयोधी महासुरः। चित्रधर्मेतिविख्यातःक्षिता
वासीत्सपार्थिवः ॥ २३ ॥ हरस्त्वरिहरोवीर आसीद्योदानवोत्तमः। सुबाहुरितिवि-
ख्यातः श्रीमानासीत्सपार्थिवः ॥ २४ ॥ अहरस्तुमहातेजाः शत्रुपक्षक्षयङ्करः। बाल्हि
कोनामराजा सबभूवप्रथितःक्षितौ ॥ २५ ॥ निचन्द्रश्चन्द्रवक्रस्तु यआसीदसुरोत्तमः।
मुञ्जकेशइतिख्यातः श्रीमानासीत्सपार्थिवः ॥ २६ ॥ निकुम्भस्त्वजितः संख्येम-
हामतिरजायत। भूमौभूमिपतिश्रेष्ठो देवाधिपइतिस्मृतः ॥ २७ ॥ शरभोनामयस्तेषां
दैतेयानांमहासुरः। पौरवोनामराजर्षिः सबभूवनरोत्तमः ॥२८॥ कुपटस्तु महावीर्यः
श्रीमान् राजन्महासुरः। सुपार्श्वइतिविख्यातः क्षितौजज्ञेमहीपतिः ॥ २९ ॥ क्रथस्तु
राजन्राजर्षिः क्षितौजज्ञेमहासुरः। पार्वतेइतिख्यातः काञ्चनाचलसन्निभः ॥ ३० ॥
द्वितीयः शलभस्तेषामसुराणां बभूवह। प्रह्लादोनामबाल्हीकः सबभूवनराधिपः ३१॥
चन्द्रस्तुदितिजश्रेष्ठो लोकेताराधिपोपमः। चन्द्रवर्मेतिविख्यातः काम्बोजानांनराधिपः

पृथ्वी में प्रसिद्ध बलवान नग्नजित राजाहुआ, एक चक्रनामवाला महा असुर प्रतिविन्ध्य
नामवाला प्रसिद्ध राजाहुआ विचित्र युद्धका करनेवाला महा असुर विरूपाक्ष चित्रधर्मा
नाम से प्रसिद्ध हुआ, शत्रुनाशी हरनाम वाला दानव ऐश्वर्ययुक्त सुबाहुनामसे प्रसिद्धहुआ
शत्रुनाशी अहरनामवाला तेजस्वी असुर पृथ्वी में प्रसिद्ध बाल्हीक राजाहुआ निचन्द्र चन्द्र
वक्र असुरों में उत्तम बड़ा ऐश्वर्यवान मुंजकेश राजाहुआ अजित निकुंभनामवाला प्रसिद्ध
राजाहुआ शरभ नाम महासुर पौरवनाम राजर्षि मनुष्यों में श्रेष्ठहुआ ऐश्वर्यवान वीर
कुपट सुपार्श्व नाम प्रसिद्ध राजाहुआ क्रथ नामवाला महा असुर सुमेरु पर्वतके समान
कान्तिवाला पार्वतेय राजर्षि हुआ और द्वितीय शलभ असुर बाल्हीक देशका राजा प्रह्लाद
नामवाला हुआ । ३१ । चन्द्रमाके तुल्य दितिका पुत्र चन्द्रनाम असुर कम्बोजदेश का

Asur Vrishparva became Dirgh Praja on the Earth. The younger brother of Vrishparva, named Ajak, became the famous king Shalwa. The mighty Asur Ashwagreev was known here as Rochaman. The Asur Sukshm who was very intelligent and of great achievements became on earth the famous king Vrihadrath. The foremost of Asurs, Tuhund, was known on the earth as Senvindu. That Asur of great strength who was named Ishup became the famous Nagnjit of great prowess. The great Asur Ekchakra became the famous Prativindhya. The great Asur Viroopaksh, learned in the arts of war, became king Chitravarma. The foremost of Danavs, the brave Hora who was tha terror of all foes became on earth

॥ ३२ ॥ अर्कइत्याभिविख्यातो यस्तुदानवपुङ्गवः । ऋषिकोनाम राजर्षिर्बभूव नृप
सत्तमः ॥ ३३ ॥ मृतपाइतिविख्यातो यआसीदसुरोत्तमः । पश्चिमानूपकंविद्धि तंनृपं
नृपसत्तम ॥ ३४ ॥ गविष्ठस्तुमहातेजायः प्रख्यातोमहासुरः । द्रुमसेनइतिख्यातःपृथिव्यां
सोऽभवन्नृपः ॥ ३५ ॥ मयूरइतिविख्यातः श्रीमान्यस्तुमहासुरः । सविश्वइतिविख्या
तोबभूवपृथिवीपतिः ॥ ३६ ॥ सुपर्णइति विख्यातस्तस्मादवरजस्तुयः । कालकीर्ति-
रितिख्यातः पृथिव्यांसोऽभवन्नृपः ॥ ३७ ॥ चन्द्रहन्तेतियस्तेषां कीर्तितःप्रवरोऽसुरः ।
शुनकोनामराजर्षिः सबभूवनराधिपः ॥ ३८ ॥ विनाशनस्तुचन्द्रस्य यआख्यातोमहा-
सुरः । जानकिर्नामविख्यातः सोऽभवन्मनुजाधिपः ॥ ३९ ॥ दीर्घजिह्वस्तुकौरव्यय
उक्तोदानवर्षभः । काशिराजःसविख्यातः पृथिव्यांपृथिवीपते ॥ ४० ॥ ग्रहन्तुसुषुवे
यन्तु सिंहिकार्केन्दुमर्दनम् । सक्राथइतिविख्यातो बभूवमनुजाधिपः ॥ ४१ ॥ अना-
युषस्तुपुत्राणां चतुर्णांप्रवरोऽसुरः । विक्षरोनामतेजस्वी वसुमित्रोनृपःस्मृतः ॥ ४२ ॥
द्वितीयोविक्षराद्यस्तु नराधिपःमहासुरः । पाण्ड्यराष्ट्राधिपइति विख्यातःसोऽभवन्नृपः
॥ ४३ ॥ बलीनइतिविख्यातो यस्त्वासीदसुरोत्तमः । पौण्ड्रमत्स्यकइत्येवं बभूवसन-

---

राजा चन्द्रवर्मा हुआ । दानवों में श्रेष्ठ अर्क राजाओं में श्रेष्ठ ऋषिकहुआ । असुरों में श्रेष्ठ मृतपा पश्चिमानूपक राजाहुआ, महासुर तेजस्वी गविष्ट द्रुमसेन राजाहुआ, महासुर मयूर विश्वनामक राजाहुआ, मयूरका छोटाभाई सुपर्ण असुर कालकीर्तिनामक राजाहुआ असुरों में श्रेष्ठ चन्द्रहन्ता मनुष्यों में श्रेष्ठ शुनकनामक राजर्षि हुआ, महाअसुर चन्द्र विनाशक जानकिनामक प्रसिद्धहुआ, दीर्घ जिह्वनामक दानव श्रेष्ठ काशिराजहुआ, सिंह का पुत्र सूर्य चन्द्रका मर्दन करनेवाला किरात नामक राजाहुआ, । ४० । दनायुके चार पुत्रोंमें सब से बड़ा विक्षरनामक तेजस्वी असुर सुमित्र राजाहुआ । ४१ । विक्षरसे छोटा पाण्ड्य देशका राज हुआ । ४२ । असुरों में श्रेष्ठ बलि वीर पौंड्रमत्स्यक राजाहुआ ।४३।

---

the famous and fortunate Suvahu. The Asur Suhar of great energy and destroyer of foes was the famous king Valhik. The best Asur named Nichandra, beautiful like the moon became known as Munjkesh. The great and intelligent Asur called Niikumbh never vanquished in battle was born on the earth as king Devadhip the foremost of monarchs. The great Asur Daitya named Sharva became on earth the Rajarshi named Paurav. The great Asur, the fortunate Kupith became the famous Suparsh. The great Asur Kratha was the Rajarshi Parvatya, shining like a mountain of gold. The famous Asur Shalav the second became on earth Prahrad in the country of Valhiks. The foremost among the sons of Diti named

राधिपः ॥ ४४ ॥ वृत्रइत्याभिविख्यातो यस्तुराजन्महासुरः । मणिमान्नामराजर्षिः सर्वभूतनराधिपः ॥ ४५ ॥ क्रोधहन्तेतियस्तस्य बभूवावरजोऽसुरः । दण्डइत्यभिविख्यातः सआसीन्नृपतिःक्षितौ ॥ ४६ ॥ क्रोधवर्द्धनइत्येव यस्त्वन्यःपरिकीर्तितः । दण्डधारइतिख्यातः सोऽभवन्मनुजर्षभः ॥ ४७ ॥ कालेयानान्तुये पुत्रास्तषामष्टौन-राधिपाः । जज्ञिरेराजशार्दूल शार्दूलसमविक्रमाः ॥ ४८ ॥ मगधेषु जयत्सेनस्तेषाना-सीत्सपार्थिवः । अष्टानाम्प्रवरस्तेषां कालेयानांमहासुरः ॥ ४९ ॥ द्वितीयस्तुनतस्तेषां श्रीमान् हरिहरोपमः । अपराजितइत्येवं सर्वभूवनराधिपः ॥ ५० ॥ तृतीयस्तुमहातेजा महामायोमहासुरः । निषादाधिपतिर्ज्जज्ञे भुविभीमपराक्रमः ॥५१॥ तेषामन्यतमोयस्तु चतुर्थःपरिकीर्तितः । श्रेणिमानितिविख्यातः क्षितौराजर्षिसत्तमः ॥५२॥ पञ्चमस्त्व भवत्तेषां प्रवरोयोमहासुरः । महौजाइतिविख्यातो बभूवेहपरन्तपः ॥ ५३ ॥ षष्ठस्तुप-तिमान्योवै तेषामासीन्महासुरः । अभीरुरितिविख्यातः क्षितौराजर्षिसत्तमः ॥ ५४ ॥ समुद्रसेनस्तु नृपस्तेषामेवाभवद्गुणात् । विश्रुतःसागरान्तायां क्षितौधर्मार्थतत्त्ववित् ।५५।

वृत्रनामक महासुर नामक राजर्षि हुआ । ४४ । वृत्रका छोटाभाई क्रोधहंता असुर दंड नामक राजाहुआ । ४५ । क्रोध वर्धन असुर दंडधारनामक राजाहुआ । ४६ । कालेय नामक दैत्यों के आठ पुत्र शार्दूलके समान विक्रमी राजे हुए । ४७ । उनमें सब से बड़ा मगध देशका जयत्सेन नामक राजाहुआ । ४८ । उससे छोटा इन्द्रके समान अपराजित राजाहुआ । ४९ । तीसरा बड़ी मायाका जाननेवाला बड़ा पराक्रमी निषादों का राजा हुआ । ५० । चौथा श्रेणिमान नामक श्रेष्ठ राजर्षि हुआ । ५१ । पांचवां श्रेष्ठ महासुर महौजा नामक प्रसिद्ध मान छठा महा असुर राजर्षियों में श्रेष्ठ अभीरु नामक राजाहुआ सातवां असुर समुद्र पर्यंत पृथ्वीमें प्रसिद्ध धर्मतत्वका जाननेवाला समुद्रसेन राजाहुआ ५४ आठवां कालेकय धर्मात्मा और सबप्राणियोंका हितचाहनेवाला समुद्र बृहत्नामक राजाहुआ

Chandra, handsome like the moon became Chandravarma the king of Kambojas. The brave Danav Ark became the king Richik. The best of Asurs known as Mutap became on earth the king Paschimanupak. The great asur of energy, Garisht became king Drum sen. The great Asur Mayur became the king Vishwa. The younger brother of Mayur became Kalkirti. The mighty Asur Chandra Kant became king Sunak. The great Asur, Chandravinashan became hero king Janaki. The great Danav, Dirghjivha became the king of Kashi. The grish born of Singhika who persecuted the Sun and the Moon became on the earth the monarch Karth. The eldest of the four sons of Danayu known as Vikshar became Vasumitra. The

बृहन्नामाष्टमस्तेषां कालेयानांनराधिप । बभूवराजाधर्मात्मा सर्वभूतहितेरतः ॥ ५६ ॥ कुक्षिस्तुराजन्विख्यातो दानवानांमहाबलः । पार्वतीयइतिख्यातः काञ्चनाचलसन्निभः ॥ ५७ ॥ क्रथनश्चमहावीर्यः श्रीमान्राजामहासुरः । सूर्याक्षइतिविख्यातःक्षितौजज्ञे महीपतिः ॥५८॥ असुराणान्तुयःसूर्यः श्रीमांश्चैवमहासुरः । दरदोनामवाह्लीको वरः सर्वमहीक्षिताम् ॥ ५९ ॥ गणःक्रोधवशोनाम यस्तेराजनप्रकीर्तितः । ततःसंजज्ञिरेवीराः क्षिताविहनराधिपः ॥ ६० ॥ मद्रकःकर्णवेष्टश्च सिद्धार्थःकीटकस्तथा । सुवीरश्चसुबाहुश्च महावीरोऽथबाह्लिकः ॥ ६१ ॥ क्रथोविचित्रःसुरथ श्रीमान्नीलश्चभूमिपः । चीरवासाश्चकौरव्य भूमिपालश्चनामतः ॥ ६२ ॥ दन्तवक्त्रश्च नामासीद्दुर्जयश्चैव दानवः । रुक्मीचनृपशार्दूलो राजाचजनमेजयः ॥६३॥ आषाढोवायुवेगश्च भूरितेजास्तथैवच । एकलव्यःसुमित्रश्च वाटधानोऽथगोमुखः ॥ ६४ ॥ कारूषकाश्चराजानः क्षेमधूर्तिस्तथैवच । श्रुतायुरुद्धहश्चैव बृहत्सेनस्तथैवच ॥६५॥ क्षेमोग्रतीर्थःकुहरः कलिङ्गेषुनराधि

कुक्षिक नामक प्रसिद्ध दानव सुमेरु पर्वत के समान कान्तिवाला पार्वतीय राजाहुआ ५६ क्रथनु नामक बड़ा पराक्रमी महा असुर पृथ्वी में सूर्याक्ष नामक प्रसिद्ध राजाहुआ ५७॥ सूर्यनामक असुरों में सूर्य सम्पूर्ण राजाओंमें श्रेष्ठ दरदनामक बाल्हीक देशका राजा हुआ । ५८ । हे राजन् मैंने जिस क्रोधवश नामक असुरगण का नाम लियाथा उसगणमें से पृथ्वी में बड़े बड़े वीर राजे उत्पन्न हुए । ५९ । भद्रक, कर्णवेष्ट, सिद्धार्थ, कीटक, सुवीर, सुबाहु, महावीर, बाल्हिक । ६० । क्रथ, विचित्रसुरथ, श्रीमानर्नील राजा, चीरवासा भूमिपाल दुर्जय, दंत्रवक्र, राजाओं में श्रेष्ठ रुक्मि जन्मेजय । ६२ । आषाढ, वायुवेग, भूरितेजा, एकलव्य सुमित्र वाटधान, गोमुख । ६३ । कारुषक राजे, क्षेमधूर्ति, श्रुतायु, उद्धव, बृहत्सेन । ६४ । क्षेमोगूर्तीर्थ कलिंगदेश का राजाकुहर, मतिमान, मनु-

---

second brother of the great Asur Vikshar, was born as the king of Pandya. The best of Asurs, Valin, became king of Paundra Matsyak. The great Asur Vitra. O king, became the Rajarshi Maniman and his younger brother, named Krodhhunts, became king Dand. The Asur Krodh-vardhan became the famous Dandadhar. The eight sons of the Kalkeyas were born on the earth as great kings edued with the strength of lions. The eldest of them became king Jayat Sen of Magadh. The Second, of Indra like prowess, became the famous king Aparajit. The third, of great energy and power of illusion, became the king of Nishadhas of great prowess. The fourth became the famous Shreniman, the best of Rajarshis. The fifth became the famous king Mahouj, the

पः । मतिमांश्चमनुष्येन्द्र ईश्वरश्चेतिविश्रुतः ॥ ६६ ॥ गणात्क्रोधवशादेष राजपूगोऽभ-
वत्क्षितौ । जातःपुरामहाभागो महाकीर्तिर्महाबलः ॥ ६७ ॥ कालनेमिरितिख्यातोदा
नवानांमहाबलः । सकंसइतिविख्यात उग्रसेनसुतोबली ॥ ६८ ॥ यस्त्वासीद्देवकोनाम
देवराजसमद्युतिः । सगन्धर्वपतिर्मुख्यः क्षितौजज्ञेनराधिपः ॥ ६९ ॥ बृहस्पतेर्बृहत्की-
र्त्तेर्देवर्षेर्विद्धिभारत । अंशाद्द्रोणंसमुत्पन्नं भारद्वाजमयोनिजम् ॥ ७० ॥ धन्विनांनृप
शार्दूल यःसर्वास्त्रविदुत्तमः । महाकीर्त्तिर्महातेजाः सजज्ञेमनुजेश्वर ॥ ७१ ॥ धनुर्वे-
देचवेदेच यंतंवेदविदोविदुः । वरिष्ठाचित्रकर्माणं द्रोणंस्वकुलवर्द्धनम् ॥ ७२ ॥ महादे
वान्तकाभ्याञ्चकामात्क्रोधाच्चभारत । एकत्वमुपपन्नानां जज्ञेशूरःपरन्तपः ॥ ७३ ॥
अश्वत्थामामहावीर्यः शत्रुपक्षभयावहः । वीरःकमलपत्राक्षः क्षितावासीन्नराधिप ७४।

प्येन्द्र, ईश्वर । ६५ । क्रोधवश नामगणसे पृथ्वी में वह राजाओंका गण उत्पन्न हुआ जो समूह बड़े बड़े भागवाला कीर्तिमान और बलवान था । ६६ । बड़ा बलवान दानव कालनेमि नामक उग्रसेन का बेटा बलवान कंस राजाहुआ । ६७ । गंधर्वों का राजा इंद्र के समान कान्तिवाला देवकहुआ । ६८ । बड़ी कीर्तिवाले देवर्षि बृहस्पति के अंश से अयेनिज (जो योनिसे उत्पन्न नहीं हुआ) भरद्वाजका जन्म हुआ । ६९ । हे राजाओं में श्रेष्ठ जन्मेजय वह द्रोणाचार्य धनुष विद्या और अस्त्रविद्याके जाननेवालों में श्रेष्ठथा और बड़ा कीर्तिवाला और तेजस्वी था ७० उसद्रोणाचार्य को वेद के जाननेवाले धनुर्वेद और वेद विद्यामें श्रेष्ठ और चित्रकर्म करनेवाला और अपने पक्षका बढ़ानेवाला मानते थे । ७१ । महादेव काम काल क्रोध इन चारों के मेलसे बड़ा पराक्रमी शत्रुके पक्ष को भयका देनेवाला, वीर कमल केसे नेत्रवाला अश्वत्थामा पृथ्वी में उत्पन्न हुआ । ७३ । आठवसु राजाशांतनु से गंगामें बसिष्ठ के शाप और इन्द्रके कहने से उत्पन्न हुए ।७४।

---

oppressor of enemics. The sixth, a great and intelligent Asur, was the most famous and best of kings on the earth, known as Abhiru. The seventh, of world-wide fame became king Samudrasen, well-versed in the religious books. The eighth of the Kaleyas known as Vrihat became on earth a virtuous king ever engaged in the good of his subjects. The mighty Danav known as Kukshi was born on earth as Parvatia, of beautiful face bright as a golden mountain. The mighty Asur Krathana gifted with great energy was the famous king Suryaksh. The great Asur Surya of beautiful form, became Darad, the king of Valhikas, the foremost of kings. Of the group of Asurs, known as Krodhvash whom I have already mentioned, were born many heroic kings on the earth:—Bhadrak, Karnavesta,

जज्ञिरेवसवस्त्वष्टौ गङ्गायांशान्तनोःसुताः । वसिष्ठस्यचशापेन नियोगाद्वासवस्य
च ॥ ७५ ॥ तेषामवरजोभीष्मः कुरूणामभयङ्करः । मतिमान्वेदविद्वाग्मी शत्रुपक्ष-
क्षयङ्करः ॥ ७६ ॥ जामदग्न्येनरामेण सर्वास्त्रविदुषांवरः । योऽयुध्यतमहातेजा भार्ग-
वेणमहात्मना ॥ ७७ ॥ यस्तुराजन्कृपोनाम ब्रह्मर्षिरभवत्क्षितौ । रुद्राणान्तुगणा-
द्विद्धि सम्भूतमतिपौरुषम् ॥ ७८ ॥ शकुनिर्नामयस्त्वासीद्राजालोके महारथः ।
द्वापरं विद्धितंराजन् सम्भूतमरिमर्दनम् ॥ ७९ ॥ सात्यकिः सत्यसन्धश्च योऽसौ
वृष्णिकुलोद्वहः । पक्षात्सजज्ञेमरुतां देवानामरिमर्दनः ॥ ८० ॥ द्रुपदश्चैवराजर्षिस्तत‌एवा-
भवद्गणात् । मानुषेनृपलोकेऽस्मिन् सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ८१ ॥ ॥ ततश्चकृतवर्माणं
विद्धिराजनजनाधिपम् । तमप्रतिमकर्माणं क्षत्रियर्षभसत्तमम् ॥ ८२ ॥ मरुतान्तुगणा
द्विद्धि सञ्जातमरिमर्दनम् । विराटंनामराजानं परराष्ट्रप्रतापनम् ॥ ८३ ॥ अरिष्टाया-

---

उन आठोंमें सबसे छोटा भीष्म कुरु वंशियों के भयका दूर करनेवाला मतिमान वेदज्ञानी बोलने में चतुर शत्रु पक्षका क्षयकारी था उस सम्पूर्ण अस्त्रविद्या जानने वालों में श्रेष्ठ भीष्मने भृगुवंशी महात्मा जमदग्नि के पुत्र परशुराम के साथ युद्ध किया ७६ कृपनाम ब्रह्मर्षि अति पुरुषार्थवाला रुद्रों के गण में से उत्पन्नहुआ ७७ शकुनि नामक महारथ राजा शत्रु पक्षका मर्दन करनेवाला द्वापर जानो ७८ वृष्णियों के कुलका बढ़ाने वाला सत्यवादी सात्यकि शत्रुओं का मर्दन करनेवाला मरुतों के पक्षसे उत्पन्न हुआ । ७९ । उसी मरुत्गण में से मनुष्य लोक में सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजा द्रुपद का जन्म हुआ ८० हे राजन् जन्मेजय ! अजित क्षत्रिय राजाओं में श्रेष्ठ कृतवर्मा भी उसी गण से उत्पन्न हुआ ८१ शत्रुओं के राज्य को ताप देनेवाला, कालसम राजा विराट्भी मरुत् गण से पैदाहुआ ८२ गन्धर्वपति अरिष्टा का पुत्र हंस नामक कौरवों के वंश का बढ़ाने

Sidharth, Kitak, Suvir, Suvahu, Mahavir, Valhik, Kritha, Vichitra Surath, the handsome Nila, Chirvasa, Bhumipal, Dantvakra, Durjaya, the valliant, Rukmi, Asharh, Vayuveg, Bhuriteja, Eklavya, Sumitra, Vatadhan, Gomukh, the Karushak, Kshemdhurti, Srutayu, Udvah, Vrihatsen, Kshema, Ugratirtha, the king of the Kalingas, and Iswar. These first of kings of the group of Krodhvash, were all born on the earth. Another mighty Asur known among the Danavas as Kalanemi, of great strength and achievements and very prosperous, became the mighty son of Ugrasen, the famous Kansa. The famous Asur Devak, in splendour like Indra, became on the earth the powerful king of Gandharvas. Drona, the son of Bharadwaj not born of woman had sprung from a portion of the god-rishi Brahas-

स्तुयः पुत्रो हंसइत्यभिविश्रुतः । सगन्धर्वपतिर्ज्येष्ठे कुरुवंशविवर्धनः ॥ ८४ ॥ धृतराष्ट्रइतिख्यातः कृष्णद्वैपायनात्मजः । दीर्घबाहुर्महाराजा प्रज्ञाचक्षुर्नराधिपः ॥ ८५ ॥ मातुर्दोषादृषेःकोपादन्धएवाभ्यजायत । तस्यैवावरजोभ्राता महासत्त्वोमहाबलः । स पाण्डुरितिविख्यातःसत्यधर्मरतःशुचिः ॥ ८६ ॥ अत्रेस्तुसुमहाभागं पुत्रंपुत्रवतांवरम् । विदुरंविद्धितंलोके जातंबुद्धिमतांवरम् ॥ ८७ ॥ कलेरंशस्तुसञ्जज्ञे भुविदुर्योधनोनृपः । दुर्बुद्धिर्दुर्मतिश्चैव कुरूणामयशस्करः ॥ ८८ ॥ जगतोयस्तुसर्वस्य विद्विष्टः कलिपूरुषः । यःसर्वांघातयामास पृथिवींपृथिवीपते ॥ ८९ ॥ उद्दीपितंयेनवैरं भूतान्तकरणंमहत् । पौलस्त्याभ्रातरश्चास्य जज्ञिरेमनुजेष्विह ॥ ९० ॥ शतंदुःशासनादीनां सर्वेषांक्रूरकर्मणाम् । दुर्मुखादुःसहश्चैव येचान्येनानुकीर्त्तिताः ॥ ९१ ॥ दुर्योधनसहायास्ते पौलस्त्याभरतर्षभ । वैश्यापुत्रोयुयुत्सुश्च धार्त्तराष्ट्रःशताधिकः ॥ ९२ ॥ जनमेजय उवाच । ज्येष्ठानुज्येष्ठतामेषां नामधेयानिवाविभो । धृतराष्ट्रस्य

वाला व्यास जीका पुत्र दीर्घबाहु प्रज्ञाचक्षु राजा धृतराष्ट्र माता के दोष और ऋषि के कोप से अंधा उत्पन्न हुआ उसका छोटा भाई अति बुद्धिमान और बलवान् सत्यधर्म में रत, पवित्र राजा पांडु उत्पन्न हुआ सूर्य के पुत्र धर्म से श्रेष्ठ और बुद्धिमान् पुत्र विदुर का जन्म हुआ ८६ खोटी बुद्धि मतवाला और कुरुकीर्त्ति का नष्ट करनेवाला कलि अंश से उत्पन्न हुआ । ८७ । हे राजन वह दुर्योधन सम्पूर्ण जगत् का द्वेषीः कलि पुरुष सम्पूर्ण पृथ्वी के नाश का हेतु हुआ ८८ उस दुर्योधन से सम्पूर्ण प्राणियों का महान् बैर रूपी अग्नि उद्दीपित हुआ, पुलस्त्यकी संतान क्रूरकर्म करनेवाले दुःशासनादिक १०० भाई दुर्योधन के उत्पन्नहुए उन में दुर्मुख दुःसह आदि दुर्योधन के सहायकारी पुलस्त्यकी संतान थे इन सौसे अधिक युयुत्सु वैश्या से उत्पन्न था ९१ जन्मेजयने कहा, हे वैशम्पायन इन धृतराष्ट्रके पुत्रों के नाम क्रम से मुझे सुनाओ ९२ वैशम्पायन ने कहा कि दुर्योधन

---

pati of mighty deeds. He was the foremost of all bowmen. He knew the use of all weapons, and was of great achievements and energy. He was versed in the Vedas and the science of arms. He worked wonders and was the pride of his race. His son the heroic Ashwathama, of eyes like the lotus petals, gifted with great energy, the terror of foes, the oppressor of enemies, was born on the earth with the united powers of Mahadev, Yam, Kam and Krodh. From the curse of Vasisht and the order of Indra, the great Vasus were born of Ganga by her husband Shantanu. The youngest of them was Bhishm the remover of the fears of the Kauravas, of great intelligence, conversant in the Vedas, the first of speakers and decimater of enemie's ranks. Possessed of great energy, acquainted with

पुत्राणामानुपूर्व्येण कीर्त्तिय ॥ ९३ ॥ वैशम्पायन उवाच । दुर्य्योधनोयुयुत्सुश्च राजन्दुःशासनस्तथा । दुःसहोदुःशलश्चैव दुर्मुखश्चतथापरः ॥ ९४ ॥ विविंशतिर्विकर्णश्च जलसन्धःसुलोचनः । विन्दानुविन्दौदुर्द्धर्षः सुबाहुर्दुष्प्रधर्षणः ॥ ९५ ॥ दुर्मर्षणोदुर्मुखश्च दुष्कर्णःकर्णएवच । चित्रोपचित्रौचित्राक्षश्चारुचित्राङ्गदश्चह ॥ ९६ ॥ दुर्मदोदुष्प्रहर्षश्च विवित्सुर्विकटःसमः । ऊर्णनाभःपद्मनाभस्तथानन्दोपनन्दकौ ॥९७॥ सेनापतिःसुषेणश्च कुण्डोदरमहोदरौ । चित्रबाहुश्चित्रवर्मा सुवर्मादुर्विरोचनः ॥ ९८ ॥ अयोबाहुर्महाबाहुश्चित्रचापसुकुण्डलौ । भीमवेगोभीमबलो बलाकीभीमविक्रमः ।९९। उग्रायुधोभीमशरः कनकायुर्दृढायुधः । दृढवर्मादृढक्षत्रः सोमकीर्त्तिरनूदरः ॥ १००॥ जरासन्धोदृढसन्धः सत्यसन्धःसहस्रवाक् । उग्रश्रवाउग्रसेनः क्षेममूर्त्तिस्तथैवच

युयुत्सु, दुःशासन दुःसह दुःशल दुर्मुख, ९३ विविंशति, विकर्ण, जलसंध, सुलोचन, विंद, अनुविंद, दुर्धर्ष, सुबाहु, दुष्प्रधर्षण ।९४। दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण, कर्ण चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष चारु चित्र, अंगद । ९५ । दुर्मद, दुष्प्रहर्ष, विवित्सु, विकट सम, ऊर्णनाभ, पद्मनाभ, नन्द, उपनन्दक, । ९६ । सेनापति,सुषेण,कुंडोदर,महोदर,चित्रबाहु,चित्रवर्मा, सुवर्मा,दुर्विरोचन । ९७ । अयोबाहु,महाबाहु,चित्रचाप,सुकुंडल,भीमवेग,भीमबल,बलाकी, भीमविक्रम ९८ उग्रायुध,भीमशर,कनकायुध,दृढायुध,दृढवर्मा,दृढक्षत्र,सोमकीर्ति,अनूदर, । ९९ । जरासंध, दृढसंध, सत्यसंध, सहस्रवाक्, उग्रश्रवा, उग्रसेन, क्षेममूर्त्ति, ।१००।

---

the use of the weapons and foremost of men, he encountered the illustrious Ram, the son of Jamadagni of the Bhrigu race. The Brahmarshi known on the earth as Kripa, the embodiment of manliness, was born of the Rudras. The great charioteer king known on the earth as Shakuni, the destroyer of foes was the incarnation of Dwaper. Satyaki, sure of aim, the pride of the Vrishni race, and the oppressor of foes, was born of the portion of Maruttas. The Rajarshi Drupad, the foremost of men bearing arms was formerly a god. Kritvarma, the prince of men, of unsurpassing glory, the foremost of the Kshatria race was also one of the gods. The Rajarshi Virat, the destroyer of the kingdoms of the enemies was also one of them. The son of Arishta, named Hans, born in the Kuru race, was a Gandharv king. Dhritrashtra, born of Krishnadwaipayan, of long arms and great energy, the king prophet, became blind for the fault of his mother and the consequent wrath of the Rishi. His younger brother, of great power, a really great being, named Pandu, was devo-

॥ १०१ ॥ अपराजितःपण्डितो विशालाक्षोदुराधनः । दृढहस्तःसुहस्तश्च वातवेगसु- वर्चसौ ॥ १०२ ॥ आदित्यकेतुर्बह्वाशी नागदत्तानुयायिनौ । निषङ्गीकवचीदण्डी दण्डधारोधनुर्ग्रहः ॥ १०३ ॥ उग्रोभीमरथोवीरो वीरबाहुरलोलुपः । अभयोरौद्रकर्माच तथादृढरथश्चयः ॥ १०४ ॥ अनाधृष्यःकुण्डभेदो विरावीदीर्घलोचनः । दीर्घबाहुर्महा बाहुर्व्यूढोरुःकनकांगदः ॥ १०५ ॥ कुण्डजश्चित्रकश्चैव दुःशलाचशताधिका । वैश्यापुत्रो युयुत्सश्चधार्त्तराष्ट्रःशताधिकः ॥ १०६ ॥ एतदेकेशतंराजन् कन्याचैकाप्रकीर्तिता । नाम धेयानुपूर्व्याच ज्येष्ठानुज्येष्ठतांविदुः ॥ १०७ ॥ सर्वेत्वतिरथाःशूराः सर्वेयुद्धविशा- रदाः । सर्वेवेदविदश्चैव राजशास्त्रेचपारगाः ॥ १०८ ॥ सर्वेसंग्रामविद्यासु विद्याभि-

अपराजित, पंडितक, विशालाक्ष दुराधन । १०१ । दृढहस्त, सुहस्त, वातवेग, सुवर्चस, आदित्यकेतु, बह्वाशी, नागदत्त, अनुयायी, । १०२ । कवची, निषंगी, दंडी, दंडधार, धनुर्ग्रह, उग्र, भीमरथ, वीर, वीरबाहु, अलोलुप, । १०३ । अभय, रौद्रकर्मा, दृढरथ, अनाधृष्य, कुण्डभेद, बिरावी, दीर्घलोचन, । १०४ । दीर्घबाहु, महाबाहु, व्यूढोरु, कनकाङ्गद, कुंडज, चित्रक, इन सौसे अधिक एककन्या दुःशला थी। १०५ । धृतराष्ट्रका पुत्र वेश्यासे युयुत्सुभी था यह १०१ पुत्र और १ कन्या धृतराष्ट्रकी सन्तानथे । १०६ । नामके क्रमसे इन में बड़े छोटेजानो, यह सब अतिरथ, शूर और चतुर थे । १०७ । हे राजन् ! जनमेजय वे सब वेद और शास्त्र के पारगामी थे, और सम्पूर्ण संग्राम विद्या से शोभित थे । १०८ । इन सबकी स्त्रियें इनके योग्यथीं दुःशला का शकुनिकी अनुमति

ted to truth and virtue and was purity's self. Vidur, the foremost of virtuous men, the god of justice in human shape, was the great and fortunate son of the sage Atri. The bad natured and wicked king Duryodhan, the destroyer of the fame of Kauravas, was Kali in a bodily form. He was the cause of so much slaughter and waste. He fanned the fire of hostility that ultimately consumed all. The sons of Pulastya-Asur were born as the brothers of Duryodhan—a hundred evil spirits with Dushasan as their head. Durmukh Dusha-san and others whose names I donot mention, were supporters of Duryodhan and the sons of Pulastya without doubt. Besides these hundred, Dhritrashtra had another from a Vaishya wife." Janme-jaya asked the desciple of Vyas to tell him the names of the sons of Dhritrashtra according to the order of their births beginning with the eldest. Vaishampayan said, "Their names are as follows:—Duryodhan, Dushasan, Yuyutsu, Dussah, Dushal, Durmukh, Vivin-

जनशोभिनः । सर्वेषामनुरूपाश्च कृतादारामहीपते ॥ १०९ ॥ दुःशलांसमयेराजन् सिन्धुराजायकौरवः । जयद्रथायप्रददौ सौबलानुमतेतदा ॥ ११० ॥ धर्मस्यांशन्तु राजानं विद्धिराजन्युधिष्ठिरम् । भीमसेनन्तुवातस्य देवराजस्यचार्ज्जुनम् ॥ १११ ॥ अश्विनोस्तुतथैवांशौ रूपेणाप्रतिमौभुवि । नकुलःसहदेवश्चसर्वभूतमनोहरौ ॥ ११२ ॥ यस्तुवर्चाइतिख्यातः सोमपुत्रःप्रतापवान् । सोऽभिमन्युर्बृहत्कीर्त्ति रर्ज्जुनस्यसुतो ऽभवत् ॥ ११३ ॥ यस्यावतरणेराजन् सुरान्सोमोऽब्रवीदिदम् । नाहंदद्यामिप्रियंपुत्रं ममप्राणैर्गरीयसम् ॥ ११४ ॥ समयःक्रियतामेषा नशक्यमतिवर्त्तितुम् । सुरकार्यं हिनःकार्य मसुराणांक्षितौवधः ॥११५॥ तत्रयास्यत्ययंवर्चा नचस्थास्यति वैचिरम् । ऐन्द्रिर्नरस्तुभविता यस्यनारायणःसखा ॥ ११६ ॥ सोऽर्ज्जुनेत्यभिविख्यातः पाण्डोः

से विवाह समय आनेपर सिन्धुदेशके राजा जयद्रथ से किया गया हेराजन् धर्म के अंश से राजा युधिष्ठिरका जन्महुआ । ११० । वायुके अंशसे भीमसेन, इन्द्र देवराजके अंशसे अर्जुन और अनुपमरूपवाले सम्पूर्ण प्राणियों के मनको हरने वाले नकुल और सहदेव अश्विनी कुमारों के अंशसे उत्पन्न हुए चंद्रमाका पुत्र प्रतापी वर्चा बड़ी कीर्ति वाला अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु हुआ उसके जन्म लेते समय चंद्रमाने देवताओं से कहा था ११३ प्राणों से अधिक अपने प्रिय पुत्रको मैं नहीं दूंगा, इसके पृथ्वी पर रहने के लिये समय का दृढ नियम किया जाय ११४ देवताओं का कार्य हमारा कार्य है और वह कार्य पृथ्वी में असुरों का वध है असुर वधके लिये यह मेरा पुत्रवर्चा जायगा परन्तु देरतक न रहेगा जिसका सखा नारायण है वह नर इन्द्रके अंशसे अर्जुनके नाम से प्रसिद्ध पांडुका प्रतापी

shati, Vikarn, Jalsandh, Sulochan Vind, Anuvinw, Durdharsh, Subahu, Dushpradharsan. Durmarshan, Durmukh, Dushkarn, Karn, Chitra Upchitra, Chitraksh, Gharuchitra, Angad, Durmad, Dushpraharsh, Vivitsu, Vikata, Sama, Urnanabha, Padmanabh, Nand, Upnandak, Senapati, Sushen, Kundodar, Mahodar, Chitravahu Chitravarma, Suvarma *Durvirochan*, Ayovahu, Mahavahu, Chitrachap, Sakundal, Bhimvag, Bhimval, Valaki, Bhimvikram, Ugrayudh, Bhimshar, Kanakayu, *D*rirhayudh, *D*rirhvarma, *D*rirhkshatra, Somkirti, Anudar, Jarasandh, Drirhsand, Satyasandh, Sahasravak, Ugrasrava, Ugrasen, Kshem-murti, Aprajit, Panditak, Vishalaksh, *K*urdhan, Drirhhast, Suhast, Vaiveg, Suvarchasa, Adityaketu, Vahasi, Nagdatt, Anuyain Nishangi, Kavachi, Dandi, Dandadhar, Dhanugrah, Ugra, Bhimrath, Vir, Virvahu, Alolup, Abhaya, Rudrakarm, Drirhrath, Anadhrishya, Kundved, Viravi, Dirghlochan,

पुत्रःप्रतापवान् । तस्यायंभवितापुत्रो बालोभुविमहारथः ॥ ११७ ॥ ततःषोडशवर्षाणि स्थास्यत्यमरसत्तमाः । अस्यषोडशवर्षस्य ससंग्रामोभविष्यति ॥११८॥ यत्रांशाः वःकरिष्यन्ति कर्मवीरनिसूदनम् । नरनारायणाभ्यांतुससंग्रामो विनाकृतः ॥११९॥ चक्रव्यूहंसमास्थाय योधयिष्यन्तिवःसुराः । विमुखाञ्छात्रवान सर्वान् कारयिष्यति मेसुतः ॥१२०॥ बालःप्रविश्यचव्यूह मभेद्यं विचरिष्यति । महारथानांवीराणां कदनञ्चकरिष्यति ॥१२१॥ सर्वेषामेवशत्रूणां चतुर्थांशंनयिष्यति । दिनार्द्धेनमहाबाहुः प्रेतराजपुरंप्रति ॥१२२॥ ततोमहारथैर्वीरैः समेत्यबहुशोरणे । दिनक्षयेमहाबाहुर्मया भूयःसमेष्यति ॥ १२३ ॥ एकं वंशकरंपुत्रं वीरं वैजनयिष्यति । प्रनष्टंभारतं वंशं स

पुत्र होगा ११६ उसका पुत्र यह महारथ पृथ्वी में होगा, हे देवताओं में श्रेष्ठो जन्म के उपरान्त १६ वर्ष तक पृथ्वी में रहेगा यह सोलह वर्ष की अवस्था में ऐसा संगूाम करेगा और तुम्हारे अंशवीरों का नाशकरें गे ११८ उस संगूाम में नर और नारायण नहोंगे चक्रव्यूह रचकर असुरों और देवोंका युद्ध होगा ११९ उसमें शत्रुओं को यह मेरा पुत्र भगावैगा, यह बालक उस अभेद्य व्यूह के भीतर घुमकर फिरेगा । १२० । और बहुतसे महारथी वीरोंको नाश करेगा और सम्पूर्ण शत्रुओं के चतुर्थांशको यमलोक पहुँचावैगा तत्पश्चात् बड़े वीर महारथियों से अनेक बार संगूाम करके सायंकाल के समय यह बड़ी भुजावाला मुझसे आ मिलेगा और १: वीर और वंशके बढानेवाले पुत्र को उत्पन्न करेगा १२३ वह पुत्र नष्ट हुए भरतवंशको उद्धार करेगा चंद्रमा के इस वचन को

Dirghvahu, Mahavahu, Vyudhoru, Kanakanged, Kundaj and Chitrak. There were also a daughter named Dushala, over and above the hundred and Yuyutsu by a Vaishya wife. Thus, O king, have I told you the names of the hnndred sons as well as that of the daughter, according to the order of their birrhs. All of them were heroes and great charioteers skilled in the art of war. All of them were the scholars of the Vedas and Shastras and knew the art of defence and attack. Their wives were suitable to them in grace and accomplishments. In due time the king married his daughter Dushala to Yayadrath, the king of Sindh, agreeably to the counsels of Shakuni. O king, Yudhishthir was a part of Dharm; Bhimsen of Vayu; Arjun of Indra the chief the gods; and Nakul and Sahdev, the most beautiful of human beings were the part of the twin Aswins. The mighty Varcha, the son of Som became Abhimanyu of wonderful deeds, the son of Arjun. Before his sending to the earth, Som had said

भूपोधार यिष्यति ॥१२४॥ एतत्सोमवचःश्रुत्वा तथास्त्विति दिवौकसः । प्रत्यूचुः सहिताःसर्वे ताराधिपमपूजयन् ॥ १२५ ॥ एवंतेकथितंराजंस्तवजन्मपितुःपितुः । अग्नेर्भागन्तुविद्धित्वं धृष्टद्युम्नंमहारथम् ॥ १२६ ॥ शिखण्डिनमथोराजंस्त्रीपूर्वं विद्धि राक्षसम् । द्रौपदेयाश्चयेपञ्च बभूवुर्भरतर्षभ ॥१२७॥ विश्वान्देवगणान् विद्धि सञ्जातान्भरतर्षभ । प्रति विन्ध्यःसुतसोमः श्रुतकीर्त्तिस्तथापरः ॥१२८॥ नाकुलिस्तु शतानीकः श्रुतसेनश्चवीर्यवान । शूरोनामयदुश्रेष्ठो वसुदेवपिताभवत् ॥१२९॥ तस्य कन्यापृथानाम रूपेणासदृशीभुवि । पितुःस्वस्रीयपुत्राय सोऽनपत्यायवीर्यवान्१३०॥ अग्रमग्रेप्रतिज्ञाय स्वस्यापत्यस्यवै तदा । अग्रजातेतितांकन्यां शूरोऽनुग्रहकांक्षया ॥ ३१ ॥ अददत्कुन्तिभोजाय सतांदुहितरंतदा । सानियुक्तापितुर्गेह ब्राह्मणा तिथि

सुनकर सम्पूर्ण देवताओंने तथास्तुकहा और चंद्रमा का पूजन किया हे राजा जन्मेजय इसप्रकार तेरे पितामह का जन्म हुआ १२५ हे राजन् महारथ धृष्टद्युम्न अग्निके अंशसे उत्पन्न हुआ राक्षस के अंससे उत्पन्न शिखंडी पहले स्त्रीथा १२६ द्रौपदी के पांचपुत्र विश्वेदेवा के अंशसे उत्पन्न हुये १२७ प्रतिविंध्य,सुतसोम,श्रुतकीर्ति,शतानीक, नकुलका पुत्र श्रुतसेन १२८ यदुओं में श्रेष्ठ शूर वसुदेव का पिता था उसकी अनुपम रूपवाली कन्या पृथाथी १२९ सूरने अपनी बुआके सन्तान रहित पुत्र को अपनी पहली सन्तान देनेकी प्रतिज्ञानुसार वह कन्या देदी । १३० । शूरने अनुग्रह करने की इच्छासे प्रथम उत्पन्न हुई अपनी कन्या कुन्तिभोजको दी १३१ वह कन्या अपने पिताके घर ब्राह्मण

---

to the gods, "I cannot part with my son. He is dearer to me than life. But on this condition which shall not be transgressed. The gods are wanted on the earth for the destruction of the Asurs and therefore it is our duty to go there. Varcha shall go there. Varcha shall go there but for a short time. Nar, the companion of Narayan, will be born on the earth as Indra's son and will be known there as the mighty Arjun. My son shall be born as his son and a mighty charioteer in his boyhood. He shall remain there for sixteen years and when he attains that age the war shall take place in which all who are born of your portions shall destroy the mighty Asurs. But a battle shall take place without the assistance of both Nar and Narayan and your portion, O gods, shall be fighting in a Chakrvyuh (phalanx) and my son shall compell all the foes to retreat before him, The boy of mighty prowess having forced an entry into the phalanx shall range within it fearlessly and shall send

पूजने ॥ ३२ ॥ उग्रम्पर्यचरद्घोरं ब्राह्मणंशंसितव्रतम् । निगूढनिश्चयंधर्मे यन्तंदुर्वा
ससं विदुः ॥ ३३ ॥ तमुग्रं शंसितात्मानं सर्वयत्नैरतोषयत् । तुष्टोऽभिचारसंयुक्तमाच
चक्षेयथाविधि ॥ ३४ ॥ उवाचचैनांभगवान् प्रीतोऽस्मिसुभगेतव । यंयंदेवंत्वमेतेन
मन्त्रेणावाहयिष्यसि ॥३५॥ तस्यतस्यप्रसादात्त्वं देविपुत्रानूजा निष्यसि । एवमुक्ता
चसाबाला तदाकौतूहलान्विता ॥ ३६ ॥ कन्यासतीदेवमर्क माजुहावयशस्विनी ।
प्रकाशकर्त्ताभगवांस्तस्यांगर्भंदधौ तदा ॥ ३७ ॥ अजीजनत्सुतंचास्यां सर्वशस्त्रभृतां
वरम् । सकुण्डलंसकवचं देवगर्भश्रियान्वितम् ॥ ३८ ॥ दिवाकरसमंदीप्त्या चारु-
सर्वाङ्गभूषितम् । निगूहमानाजातं वैबन्धुपक्षभयात्तदा ॥ ३९ ॥ उत्सर्ज्जजलेकुन्ती

अतिथियोंकी पूजा के लिये नियुक्तथी उसने तीक्ष्ण व्रत और स्वभाववाले क्रोधी ब्राह्मण धर्म में गूढ निश्चय रखनेवाले पवित्रात्मा दुर्वासा को सम्पूर्ण यत्नों से सेवा करके प्रसन्न किया १३३ और दुर्वासाने प्रसन्न होकर उसको आकर्षण मंत्र बतलाकर कहा कि हेसुभगे मैं तुझ पर प्रसन्न हूं १३४ इस मंत्रसे जिस देवताका आवाहन तू करेगी उसी देवताके प्रसादसे तेरेपुत्र उत्पन्नहोगा १३५ यह कहकर उस कन्या ने बड़े अचम्भे में होकर सूर्यका आवाहनकिया १३६ अंधकारके नाश करनेवाले उस भगवान् सूर्य ने उसमें गर्भ धारण किया तत्पश्चात सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कवच कुंडलवाले देवताओं के समान शोभायुक्त सूर्यकीसी कान्तिवाले सुन्दर अंगवाले पुत्रको सूर्य ने उत्पन्न किया १३८ कुन्ती ने बान्धवों के भयसे उस यशस्वी बालक को जलमें छोड़दिया ३९ बड़े यशस्वी

---

a fourth part of the hostile forces, in the course of half a day, to the the region of the dead. After killing numerous foes my boy shall return to me by the evening. He shall be the father of a son who shall continue the almost extinct race of the Pandavas. The gods approved all that Som had proposed and applauded and worshipped the king of stars. Thus, O king, have I told thee the birth of thy grandfather. The mighty Dhritrashtra was a portion of Agni and Shikhandi who was originally a female, was a Rakshas. The five sons of Draupadi, O foremost of the Bharat race were the gods Vishwa. Their names were Prativindhya, Sutsom, Shrutkirti, Shatanik, the son of Nakul, and Shrutsen of great energy. Shur, the foremost of the Yadavas, was the father of Vasudev. He had a beautiful daughter named Pritha. Shur had made a vow before Agni to give his first born child to Kuntibhoj the childless son of his aunt, to be adopted by him and so he gave him the daughter

तंकुमारंयशस्विनम् । तमुत्सृष्टंजलेगर्भं राधाभर्त्तामहायशाः ॥ ४० ॥ राधायाःक
ल्पयामास पुत्रंसोऽधिरथस्तदा । चक्रतुर्नामधेयञ्च तस्यबालस्यतावुभौ ॥ ४१ ॥
म्पतीवसुषेणेति दिक्षुसर्वासुविश्रुतम् । सवर्द्धमानोबलवान सर्वास्त्रेषूत्तमोऽभवत् ।४२।
वेदांगानि च सर्वाणि जजापजयतांवरः । यस्मिन्कालेजपन्नास्ते धीमानसत्यपराक्रमः
॥ ४३ ॥ नादेयं ब्राह्मणेष्वासीत्तस्मिनकाले महात्मनः । तमिन्द्रोब्राह्मणोभूत्वा पुत्रार्थे
भूतभावनः ॥ ४४ ॥ ययाचेकुण्डलेवीरं कवचञ्चसहांगजम् । उत्कृत्यकर्णोह्यददात्
कवचंकुण्डलेतथा ॥ ४५ ॥ शक्तिंशक्रोददौतस्मै विस्मितश्चेदमब्रवीत् । देवासुरमनु
ष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ॥ ४६ ॥ यस्मिन्क्षेप्स्यसि दुर्द्धर्ष स एको न भविष्यति ।
पुरानामच तस्या सीद्वसुषेणइतिक्षितौ ॥४७॥ततोवैकर्त्तनःकर्णःकर्मणातेनसोऽभवत् ।

राधाके पति ने जल से निकालकर पुत्र कल्पनासे अपनी स्त्रीको वह बालक दिया १४० उन दोनों (स्त्री पुरुष) ने उसका नाम वसुषेण प्रसिद्ध किया ४१ वह बलवान बढ़ता हुआ सम्पूर्ण अस्त्रविद्या में निपुणहुआ और सम्पूर्ण वेदांगों को पढ़ा, वह बुद्धिमान, सत्य पराक्रमी और महात्मा जप करते समय ब्राह्मणोंको कोई वस्तु देनेसे न रुकता था ४३ सम्पूर्ण प्राणियोंकी रक्षा करनेवाले इन्द्रने ब्राह्मण बनकर अपने पुत्र के कारण उसके साथ पैदाहुए कवच और कुंडलों को बसुषेणसे मांगा, कर्ण ने अपने कवच और कुंडल उसको देदिये, इन्द्र ने अचम्भे में हो उसको एक शक्ति दी और कहा ४५ देवता, असुर, मनुष्य गंधर्व, सर्प, राक्षस, इन में जिस एक के ऊपर यह शक्ति छोड़ेगा वह मृत्युको प्राप्तहोगा ४६ पहले उसका नाम पृथ्वी में बसुषेण प्रसिद्धथा, इस कर्म के उपरान्त उसकानाम

She was deputed by her father (by adoption) to attend upon Brahmans and guests. One day she had to attend upon the wrathful Durvasa Rishi of rigid vows, fully acquainted with the Mysteries of religion. She succeeded in pleasing the rishi who bestowed on her the knowledge of a method for invoking any god she liked. Some days after, out of curiosity she invoked the god Snn while she was yet a maiden and the god of day gave her a child who was the foremost of the wielders of weapons. The child came out with earrings and coat of mail and she brought it up in secrecy out of the fear of her kinsmen. The child was of heveanly beauty of splender like the Sun and the limbs of his body were symmetrical and well embellished. She cast the beautiful child into water. It was taken up by the good husband of Radha and he gave it to her to be brought up as their child. They gave him the name of Vasusen. As the child grew up he became very strong and well skilled in the use of arms. He mastered all the Vedangas and while he was reading the Vedas

आमुक्तकवचोवीरो यस्तुजज्ञे महायशाः ॥ ४८ ॥ सकर्णइतिविख्यातः पृथायाःप्रथमः सुतः । सतुसूतकुलेवीरो ववृधेराजसत्तम ॥ ४९ ॥ कर्णंनरवरश्रेष्ठं सर्वशस्त्रभृतांवरम् । दुर्योधनस्यसचिवं मित्रंशत्रुविनाशनम् ॥ ५० ॥ दिवाकरस्यतंविद्धि राजन्नंशमनुत्तमम् । यस्तुनारायणोनाम देवदेवःसनातनः ॥ ५१ ॥ तस्यांशोमानुषेष्वासीद्वासुदेवः प्रतापवान् । शेषस्यांशश्चनागस्य बलदेवोमहाबलः ॥ ५२ ॥ सनत्कुमारंप्रद्युम्नंविद्धि राजन्महौजसम् । एवमन्येमनुष्येन्द्रा बहवोंऽशादिवौकसाम् ॥ ५३ ॥ जज्ञिरेवसुदेवस्य कुलेकुलविवर्द्धनाः । गणस्त्वप्सरसांयो वैमयाराजन्प्रकीर्त्तितः ॥५४॥ तस्यभागःक्षितौजज्ञे नियोगाद्वासवस्यह तानिषोड़शदेवीनां सहस्राणिनराधिप ॥ ५५ ॥ बभूवुर्मानुषेलोके वासुदेवपरिग्रहः । श्रियस्तुभागःसञ्जज्ञे रत्यर्थंपृथिवीतले ॥ ५६ ॥ भी-

वैकर्तन और करणहुआ ४७ जो वीर यशस्वी कवचधारी उत्पन्न हुआथा वह पृथाकापुत्र कर्ण नाम से प्रसिद्ध हुआ ४८ हे राजाओं में श्रेष्ठ जन्मेजय वह कर्ण सूतके कुलमें बृद्धि को प्राप्तहुआ राजाओं में श्रेष्ठ सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में उत्तम दुर्योधनका मन्त्री और मित्र शत्रुनाशी कर्ण सूर्यके अंश से उत्पन्न हुआ १५० जो सनातनदेव नारायण नामसे प्रसिद्ध है उस के अंशसे वसुदेवका पुत्र प्रतापी कृष्ण पृथ्वी में उत्पन्नहुआ ५१ बड़े बलवान बलदेव शेषनागके अंश से उत्पन्नहुआ, बड़ा पराक्रमी प्रद्युम्न सनत्कुमारके अंश से उत्पन्नहुआ ५२ इसीप्रकार और बहुतसे मनुष्यों में श्रेष्ठ देवताओं के अंशों से बसुदेव के कुलके बढानेवाले उत्पन्नहुए ५३ हेराजन् जन्मेजय जो मैंने अप्सराओंका गण पहले तुझ से कहाथा उसका अंश इन्द्रकी आज्ञा से पृथ्वी में उत्पन्नहुआ, हेराजन् जनमेजय उस अंश से श्रीकृष्णकी १६ हजार स्त्रियें उत्पन्न हुईं ५५ कृष्णकी प्राप्तिके लिये पृथ्वी

he would give any thing that Brahman asked to him. In the meantime Indra, desiring to do good to his son Arjun, came to him in the guise of a Brahman and begged of the hero his natural armour and earrings and he a once complied with his request. Surprised at this, Indra gave him a missile saying, " This missile will kill him against whom it is hurled-be he a god, Asur, man, Gandharv, Nag or Rakshas. By such deeds of generosity Vasusen came to be called Karn. He was brought up in the family of a Sut. Karn the for. most of exalted beings and wielders of weapons, the slayer of foes the best portion of the Sun, was the friend of Duryodhan. Vasudev of great valour was among men a portion of Narayan, the god of gods ! Baldev of great strength was a portion, of Sheshnag. Pradyumn of great energy wss Sanat kumar. Thus the portions of various gods became great men increasing the glory of the house of Vasudev. Apsaras also were born on the earth by Indra's command sixteen thousands of them became in this world the wives of Vasudev.

ष्मकस्यकुलेसाध्वी रुक्मिणीनामनामतः । द्रौपदीत्वथसञ्जज्ञे शचीभागादनिन्दिता ॥ ५७ ॥ द्रुपदस्यकुलेकन्या वेदिमध्यादनिन्दिता । नातिह्रस्वानमहती नीलोत्पलसुगन्धिनी ॥५८॥ पद्मायताक्षीसुश्रोणी स्वसिताञ्चितमूर्द्धजा । सर्वलक्षणसम्पूर्णावैदूर्यमणिसन्निभा ॥ ५९ ॥ पंचानांपुरुषेन्द्रणां चित्तप्रमथनीरहः । सिद्धिर्धृतिश्च ये देव्यौ पञ्चानांमातरौतुते ॥ ६० ॥ कुन्तीमाद्रीचजायते मतिस्तुसुबलात्मजा । इति देवासुराणां तेगन्धर्वाप्सरसांतथा ॥ ६१ ॥ अंशावतरणंराज न्राक्षसानाञ्चकीर्त्तितम् । येपृथिव्यांसमुद्भूता राजानोयुद्धदुर्मदाः ॥ ६२ ॥ महात्मानोयदूनाञ्च येजाता विपुलेकुले । ब्राह्मणाःक्षत्रिया वैश्यामयातेपरिकीर्त्तिताः ॥ ६३ ॥ धन्यंयशस्यंपुत्री

में लक्ष्मीके अंशसे भीष्मक राजाके कुल में रुक्मिणी नाम पतिव्रता स्त्री उत्पन्न हुई ५६ इन्द्राणि के अंशसे सर्वोत्तम द्रौपदी वेदी के मध्य से उत्पन्नहुई ५७ जो न बहुत छोटी न लम्बी, नीले कमलों के समान सुगंधयुक्त अंगवाली, कमल केसे नेत्रवाली, सुन्दर कमरवाली काले शोभित बालवाली ५८ स्त्रियोंके सम्पूर्ण उत्तम लक्षणोंसे युक्त, वैदूर्यमणि के सदृश कान्ति वाली, पुरुषोंमें श्रेष्ठ पांचों पांडवोंके चित्तको एकान्तमें बशकरनेवालीथी । ५९ । सिद्धि और धृति देवियें इन पांचों पांडवोंकी मातायें कुन्ती और माद्री नामसे उत्पन्न हुईं मति देवी गांधारी हुई । १६० । यह देवता, असुर, गंधर्व, अप्सरा और राक्षसों के अंशावतारकी कथा मैंने तुझ से कही। ६१ । युद्ध में बड़े कठोर महात्मा राजा जो पृथ्वी में बड़े यादवकुल में और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुलों उत्पन्न हुए उनकी कथा मैंने तुझ से कही, यह अंशावतरण कथा धन, यश, पुत्र, आयु और विजयकी बढानेवाली है

A portion of shree herself was born in the house of Bhishmak for the gratification of Narayan. She was known as the chast Rukmani. The faultless Draupadi slender-waisted like the wasp, was born in the line of Draupad of the portion of Shachi the queen of gods. She was neither short nor tall. Her body had the fragrance of the blue lotus, her thighs fair and round, and she had dence messes of curly black hair. Of auspicious features and emerald like conpliecous he was the charmer of the five most valliant hearts. The two goddesses Siddhi aud Dhriti were Kunti and Madri, the mother of those five. Mati became the daughter (Gandhari) of Suval. Thus, O king, have I told thee all about the incarnations of the portions of gods, the Asurs, the Gandharvas, the Apsaras and the Rakshases, The bravest monarchs of the Yadav race and they who were born as Brahmans, Kshattrias and Vaishyas, have all been

यमायुष्यं विजयावहम् । इदमंशावतरणं श्रोतव्यमनसूयता ॥ ६४ ॥ अंशावतरणं श्रुत्वा देवगन्धर्वरक्षसाम् । प्रभवाप्ययवित्प्राज्ञो नकृच्छ्रेष्ववसीदति ॥ ६५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यंशावतरणं समाप्तं सप्तषष्टोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

जनमेजय उवाच । त्वत्तःश्रुतमिदंब्रह्मन् देवदानवरक्षसाम्।अंशावतारणंसम्यग्गन्धर्वाप्सरसांतथा ॥ १ ॥ इमंतुभूयइच्छामि कुरूणांवंशमादितः । कथ्यमानंत्वयाविप्र विप्रर्षिगणसन्निधौ ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच। पौरवाणां वंशकरोदुष्मन्तोनामवीर्यवान् । पृथिव्याश्चतुरन्ताया गोप्ताभरतसत्तम ॥३॥ चतुर्भागंभुवःकृत्स्नं योभुंक्तेमनुजेश्वरः । समुद्रावरणांश्चापि देशान्ससमितिञ्जयः ॥ ४ ॥ आम्लेच्छावधिकानसर्वान् सभुंक्ते

इस कथाको मनुष्य शंका रहित श्रवण करें ६४ देवता, गंधर्व और राक्षसों के अंशावतरणकी कथा सुनकर बुद्धिमान पुरुष ईश्वर के ज्ञान से युक्त होकर आपत्ति में नष्ट नहीं होता ॥६५ ॥

अध्याय ६८ ॥

जन्मेजयने कहा हे ब्रह्मन् ! देव, दानव, राक्षस, अप्सरा और गन्धर्वोंके अंशावतरणकी कथा भलीप्रकार मैंने आप से श्रवणकी । १ । अब कुरुवंशकी कथा महर्षिगण सहित आपके मुखसे फिर सुनना चाहता हूं । २ । वैशम्पायन ने कहा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जन्मेजय पुरुवंश का बढ़ानेवाला चारों ओर समुद्र पर्यंत पृथ्वीका रक्षक पराक्रमी दुष्यन्त राजाथा । ३ । वह अजित सम्पूर्ण पृथ्वीके चारों भाग और समुद्र वर्ती देशों

mentioned by me. This account of the incarnations gives wealth, fame, offspring, long life and success. It should always be heard attentively. Having heard this account of incarnations of the portions of gods Gandharvas and Rakshas, the hearer becomes acquainted with creation, preservation and destruction of the uuiverse and acquiring wisdom, is never depressed even under the most engrossing sorrows.

CHAPTER LXVIII

(SHMBHAV PARVA CONTINUED)

Janmejaya said, I have heard from thee, O Brahman, the account of births of the gods, Danavas, Rakshases, Gandharvas and Apsaras. Now I wish to hear of the Kaurav dynasty from the very beginning. Speak of this in the presence of all, O Brahman." Vaishampayan said that the founder of the Bharat race was Dush-

रिपुमर्दनः । रत्नाकरसमुद्रान्तांश्चातुर्वर्ण्यजनावृतान् ॥५॥ नवर्णसंकरकरो नकृष्या करकृज्जनः । नपापकृत्कश्चिदासीत्तस्मिन्राजनिशासति ॥ ६ ॥ धर्मेरतिंसेवमाना धर्मार्थावभिपेदिरे । तदानरानरव्याघ्र तस्मिन्जनपदेश्वरे ॥ ७ ॥ नासीच्चौरभयंतात न क्षुधाभयमण्वपि । नासीद्व्याधिभयंचापि तस्मिन्जनपदेश्वरे ॥ ८ ॥ स्वधर्मैरेमिरे वर्णा दैवेकर्मणि निस्पृहाः । तमाश्रित्यमहीपाल मासंश्चैवाकुतोभयाः ॥९॥ कालवर्षी चपर्जन्यः शस्यानिरसवान्तिच । सर्वरत्नसमृद्धाच महीपशुमतीतथा ॥१०॥ स्वकर्म निरताविप्रा नानृतन्तेषुविद्यते । सचाद्भुतमहावीर्यो वज्रसंहननोयुवा ॥११॥ उद्यम्य मन्दरंदोर्भ्यां वहेत्सवनकाननम् । चतुष्पथगदायुद्धे सर्वप्रहरणेषुच ॥१२॥ नागपृष्ठेऽश्व

को भोगताथा । ४ । वह शत्रुनाशी चारों वर्णोंसे आबादरत्नाकर समुद्र और म्लेच्छदेश पर्यंत सम्पूर्ण देशों को पालन करता था । ५ । उसराजा के शासन में कोई मनुष्य वर्ण संकरका उत्पन्न करनेवाला, कृषि में परिश्रम करनेवाला, खानोंका खोदनेवाला और पाप करनेवाला नथा । ६ । हे जन्मेजय ! राजादुष्यंत के शासन समय में धर्म में प्रीति रखने वाले मनुष्य धर्म और अर्थ को पाते थे । ७ । उस के समय में चोर व्याधि और क्षुधा का भय कुछभी नथा । ८ । अपने धर्ममें चारों वर्ण स्थित थे और दैवकर्म कामना की इच्छा से नहीं करते थे और राजा के आश्रय से भय रहित थे । ९ । वृष्टि समय पर होती थी, धान्य स्वादु होताथा पृथ्वी सम्पूर्ण रत्न और पशुओं से भरी रहती थी १० ब्राह्मण अपने कर्म में तत्पर मिथ्या रहितथे और वह तरुण राजा दुष्यन्त अद्भुत पराक्रम और पुष्ट देह वाला था । ११ । जल और वनोंसहित मंदराचल पर्वतको उठाने का

---

mat gifted with great energy. He protected the earth to the verge of the Ocean as well as the islands amidst the Ocean. That oppressor of foes had his sway even over the country of Mlechas. During his time there were no mixed castes, no tillers of the soil, no workers of mines and no sinful men. All men acted virtuously. There was no fear of thieves, famine or disease. The four casts did their duties joyfully and did not perform religious acts for obtaining fruition of desires. His subjects depending upon him never had any fear. Indra poured showers of rain at the proper time and the produce of the fields was always pulpy and juicy. The earth was full of all kinds of wealth and cattle. The Brahmans were always engaged in their duties and were always truthful. The youthful monarch possessed of wonderful prowess and physical fame, hard as the thunder bolt worthy of lifting the mountain Mahendra and supporting it

पृष्टेच बभूवपरिनिष्ठितः । बलेविष्णुसमश्चासीत्तेजसाभास्करोपमः ॥ १३ ॥ अक्षोभ्यत्वेऽर्णवसमः सहिष्णुत्वेधरासमः । सम्मतःसमहीपालः प्रसन्नपुरराष्ट्रवान् । भूयोधर्मपरैर्भावैर्मुदितंजनमादिशत् १४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शाकुन्तलोपाख्याने अष्टषष्ठोऽध्यायः ६८ ॥

जनमेजय उवाच ॥ सम्भवंभरतस्याहं चरितञ्चमहामतेः । शकुन्तलायाश्चोत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः ॥ १ ॥ दुष्मन्तेनचवीरेण यथाप्राप्ताशकुन्तला । तं वैपुरुष सिंहस्य भगवन्विस्तरंत्वहम् । श्रोतुमिच्छामि तत्त्वज्ञ सर्वमति मताम्बर ॥ २ ॥

साहस रखता था चार प्रकार के गदायुद्ध और सम्पूर्ण शस्त्रों के चलाने, हाथी और घोड़ेकी सवारी में बड़ा चतुरथा, बल में विष्णु और तेज सूर्य्य के समानथा १३ गंभीरता में समुद्र और क्षमा में पृथ्वीके समान था, सबका माननीय था और प्रजा और राजधानी आनन्दमय थी १४ धर्म भाव से प्रसन्नचित प्रजापालन करताथा १५ ॥

अध्याय ६९ ॥

जन्मेजय ने कहा मैं भरतकी उत्पत्ति और उस के चरित्र और शकुन्तला की उत्पत्ति सुनना चाहता हूं १ वीर दुष्यन्त को जैसे शकुन्तला प्राप्त हुई पुरुष सिंहकी उस कथाको

---

with its forests in his arms. He was skilled in four kinds of encounters with the mace. He knew the use of arms well and was a good rider of horses and elephants. In strength he was like Vishnu, in splendour like the Sun, in gravity like the Ocean and in patience like the earth. His subjects loved him dearly and he ruled them virtuously."

CHAPTER LXIX

(Sambhav Parva continued)

Janmejay said, " I wish to hear from you about the birth and life of the highsouled Bharat and the origion of Shakuntala and Dushmant, the lion among men, and how the hero obtained Shakun-

वैशम्पायन । सकदाचिन्महाबाहुः प्रभूतबलवाहनः । वनंजगामगहनं हयनागशतैर्वृतः ॥ ३ ॥ बलेनचतुरङ्गेणवृतःपरमवल्गुना । खड्गशक्तिधरैर्वीरैर्गदामुसलपाणिभिः ॥ ४ ॥ प्रासतोमरहस्तैश्च ययौयोधशतैर्वृतः । सिंहनादैश्चयोधानां शंखदुन्दुभिनिःस्वनैः ॥ ५ ॥ रथनेमिस्वनैश्चैव सनागवरबृंहितैः । नानायुधधरैश्चापि नानावेशधरैस्तथा ॥ ६ ॥ हेषितस्वनमिश्रैश्च क्ष्वेडितास्फोटितस्वनैः । आसीत्किलकिलाशब्दस्तस्मिन गच्छतिपार्थिवे ॥ ७ ॥ प्रासादवरशृङ्गस्थाःपरया नृपशोभया । ददृशुस्तं स्त्रियस्तत्र शूरमात्मयशस्करम् ॥ ८ ॥ शक्रोपमममित्रघ्नं परवारणवारणम् । पश्यन्तः स्त्रीगणास्तत्र वज्रपाणिंस्ममेनिरे ॥ ९ ॥ अयंसपुरुषव्याघ्रो रणेवसुपराक्रमः । यस्य

विस्तार से सुनना चाहता हूं २ वैशम्पायन ने कहा, वह बड़ी भुजावाला एक समय सैकड़ों घोड़े हाथीकी चतुरङ्गिणी मनोहर सेना सहित वनको गया ४ तलवार, शक्ति, गदा, मूशल, प्रास तोमर धारण किये हुए सैकड़ों वीर उस के साथ थे ५ उस राजा के वनको जाने के समय वीरोंकी गर्जना, शंख और नगाणों की ध्वनि रथों के पहियों के खड़खड़ाहट और हाथियों की चिंघाड़, नानाप्रकार के आयुधों को धारण किये और नाना प्रकार के वेष बनाये हुए वीरोंकी खमठोकने और गर्जना के शब्द घोड़की आवाज से मिले हुए बड़ेभारी किलकिला शब्द हुए बड़े २ महलों के ऊपर चढ़ी हुई स्त्रियों ने उत्तम राजशोभा से युक्त अपने यश के बढ़ानेवाले इन्द्र के सदृश शत्रुनाशी संग्राम से शत्रुके हाथियों को हटानेवाले उस शूर दुष्यन्त को देखा ९ स्त्रियों ने दुष्यन्तको देख इन्द्र माना

---

tala. It behoves thee to tell me everything, O first of intelligent men having knowledge of truth." Vaishampayan said, "Once upon a time the king of mighty arms and accompanied by a large force went into the forest. He took with him numerous horses and elephants and four sorts of forces consisting of heroes armed with swords, darts, maces and stout clubs. The heroic monarch was surrounded by hundreds of warriors bearing missiles of sorts and by the lion-like roar of the warriors the notes of conchs, the sound of the drum and the rumbling of the chariot wheels and sounds of huge elephants, mingled with the neighing of horses and the clashing of weapons of the attendants variously armed and dressed. Beautiful ladies saw the famous heroic monarch from the terraces. They saw that he was like Indra the slayer of his enemies, capable of repulsing the elephants of foes, and believed him to be Indra himself. They remarked, "This lion among men is like Vasus at the time of

बाहुबलंप्राप्य नभवंत्यसुहृद्गणाः ॥ १० ॥ इतिवाचोब्रुवन्त्यस्ताः स्त्रियःप्रेम्णा
नराधिपम् । तुष्टुवुःपुष्पवृष्टीश्च ससृजुस्तस्य मूर्द्धनि ॥ ११ ॥ तत्रतत्रचविप्रेन्द्रैः
स्तूयमानःसमन्ततः । निर्ययौपरमप्रीत्या वनंमृगजिघांसया ॥ १२ ॥ तंदेवराजप्रतिमं
मत्तवारणधूर्गतम् । द्विजक्षत्रियविट्शूद्रा निर्यान्तमनुजग्मिरे ॥ १३ ॥ ददृशुर्वर्द्धमा
नास्ते आशीर्भिश्चजयेनच । सुदूरमनुजग्मुस्तं पौरजानपदास्तथा ॥ १४ ॥ न्यवर्त्तन्ततत:
पश्चादनुज्ञातानृपेणह । सुपर्णप्रतिमेनाथ रथेनवसुधाधिपः ॥ १५ ॥ महीमापूरयामास
घोषेणत्रिदिवंतथा । सगच्छन्ददृशेधीमान नन्दनप्रतिमंवनम् ॥ १६ ॥ बिल्वार्क
खदिराकीर्णं कपित्थधवसंकुलम् । विषमं पर्वतप्रस्तैरश्माभिश्च समावृतम् ॥ १७ ॥
निर्जलंनिर्मनुष्यञ्च बहुयोजनमायतम् । मृगसिंहैर्वृतंघोरैरन्यैश्चापि वनेचरैः ॥१८॥

और स्त्रिओंने आपसमें प्रेमसे कहा कि वह दुष्यन्त वसुओं के समान पराक्रम वाला है
जिसकी भुजाबल से शत्रुनाश होते हैं १० राजा के ऊपर फूलोंकी वर्षाकी और उसकी
स्तुतिकी जिधरको राजा निकलता था चारों तरफ से ब्राह्मण उसकी स्तुति करते थे, इस
प्रकार प्रेमसे जाता हुआ मृगया के लिये बनको गया, उस इन्द्र के समान मत्तहाथी पर
बैठे हुए राजाके पीछे चारों वर्णकी प्रजा चली आशीर्वाद और जय शब्द से राजाको
बढ़ाने लगे १४ नगर वाले बहुत दूरतक राजा के पीछे गये, और राजाकी आज्ञा पाकर
लौटे १५ राजाके गरुड़ के वेग सदृश रथ के शब्द से पृथ्वी और आकाश पूरित होगया
१६ बुद्धिमान राजा दुष्यंत ने जातहुए नन्दनबन के सदृश बिल्व, अर्क, खदिर, कैथ,
धव से परिपूर्ण टूटकर गिरेहुए पर्वतों से कठिन पथरीले जल रहित निर्जन, बहुत योजन

war and has left no foes alive." They showered flowers over the monarch's head. Brahmans were uttering blessings throughout the way and the king in great joy went out to hunt deer. The people of the four castes followed the king who sat on the back of a huge elephant. The citizens and other classes followed the monarch for some distance and were at last allowed to return by the king. The king then drove in his chariot the sound of whose wheel reached the sky. On his way he saw a forest like Aden, full of various sorts of trees. He found the soil uneven and scattered over with unhewn blocks of stones detached from the neighbouring hills. It was destitute of water and extended for many a mile all round. It was full of deer and lions and other beasts of prey. The brave king Dushyant with the help of his followers and soldiers agitated the forest, killing numerous beasts. He shot down many tigers and wounded

तद्वनंमनुजव्याघ्रः सभृत्यबलवाहनः । लोडयामासदुष्मन्तः सूदयनविविधान्मृगान्
॥ १९ ॥ बाणगोचरसम्प्राप्तांस्तत्र व्याघ्रगणानबहून । पातयामासदुष्यन्तोनिर्विभेद
च सायकैः ॥ २० ॥ दूरस्थानसायकैः कांश्चिदभिनत्सनराधिपः । अभ्याशमागतां-
श्चान्यान खड्गेननिरकृन्तत ॥ २१ ॥ कांश्चिदेणानसमाजघ्न शक्त्याशक्तिमतांवरः ।
गदामण्डलतत्त्वज्ञश्चचारामितविक्रमः ॥२२॥ तोमरैरसिभिश्चापि गदामुसलकम्पनैः ।
चचारसविनिघ्नन्वै वन्यांस्तत्रमृगद्विजान् ॥ २३ ॥ राज्ञाचाद्भुतवीर्य्येण योधैश्च
समरप्रियैः । लोड्यमानंमहारण्यं तत्यजुः स्ममृगाधिपाः ॥ २४ ॥ तत्रविद्रुतयूथानि
हतयूथपतीनिच । मृगयूथान्यथौत्सुक्याच्छब्दञ्चक्रुस्ततस्ततः ॥ २५ ॥शुष्काश्चापि
नदीर्गत्वा जलनैराश्यकर्शिताः । व्यायामक्लान्तहृदयाः पतन्तिस्मविचेतसः ॥२६॥
क्षुत्पिपासापरीताश्च श्रान्ताश्चपतिताभुवि । केचित्तत्रनरव्याघ्रै रभक्ष्यन्तबुभुक्षितैः

तक फैलेहुए, मृगसिंहादि घोर वनचरों से भरेहुए वनको देखा नौकर, सेना और वाहन से युक्त पुरुषों में व्याघ्र राजा दुष्यंत ने अनेक प्रकार के मृगोंको मारकर वनको व्याकुल करदिया और वाण के सम्मुख आये हुए व्याघ्रों के समूहको छेदकर गिरा दिया, और दूरवर्ती मृगोंको वाणों से मारा २१ समीपवर्ती मृगोंको तलवार से काटा, बलवानों में श्रेष्ठ राजा दुष्यंत ने किसी २ को शक्ति से मारा । २२ । गदा मंडल के तत्व जानने वाले अनुपम पराक्रम वाले राजा ने वन में इसप्रकार गमन किया तोमर, तलवार, गदा और मूशलोंके घुमानेसे उस वनमें अनेक प्रकार के मृग और पक्षियोंको फिर कर किया किया, अद्भुत पराक्रमवाले राजा और संग्राम में प्रेमीयोद्धाओंसे व्याकुल हुए वनको शेरों ने छोड़ दिया, स्वामी रहित मृगोंके झुंड उत्कंठासे इधर उधर शब्द करनेलगे, और जल रहित नदियों में जाकर जल से निराशहोकर परिश्रम से घबराये हुए मृग अचेत

---

others that were farther of. He cut some with his sword and killed others with his darts. An expert in the art of hurling the mace and of immense prowess, the king, fearlessly roamed throughout the forest killing many wild beasts by sword, club or mace. When the forest was so agitated by the energetic monarch and his followers who delighted in warlike sports, the lions began to desert it in large numbers. The herds deprived of the'r leaders began to utter cries of terrior as they dispersed in all directions and fatigued with exertion began to fall down hither and thither. The river beds being dry the animals could not quench their thirst. Many of them were eaten up by the hungry soldiers. Some ate the fresh

॥२७॥ केचिदग्निमथोत्पाद्य संसाध्यचवनेचराः । भक्षयन्तिस्ममांसानि प्रकुव्य विधिवत्तदा ॥२८॥ तत्रकेचिद्गजामत्ता बलिनःशस्त्रविक्षताः । संकोच्याग्रकरान्भीताः माद्रवन्तिस्मवेगिताः ॥२९॥ शकृन्मूत्रसृजन्तश्च क्षरन्तःशोणितंबहु । वन्यागजवरास्तत्र मसृदुर्मनुजान्बहून् ॥ ३० ॥ तद्वनंबलमेघेन शरधारेणसम्वतम् । व्यरोचतमृगाकीर्णं राज्ञाहतमृगाधिपम् ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्व्वणि शकुन्तलोपाख्याने
एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ ततोमृगसहस्त्राणि हत्वासबलवाहनः । राजामृगप्रसंगेन वनमन्यद्विवेशह ॥१॥ एकएवोत्तमबलः क्षुत्पिपासासमान्वितः । सवनस्यांतमासाद्य महच्छून्यंसमासदत् ॥२॥ तच्चाप्यतीत्यनृपति रुत्तमाश्रमसंयुतम् । मनःप्रल्हादजननं

होकर गिरने लगे, भूख और प्यास से व्याकुल मृग पृथ्वीपर गिरगये २७ कोई कोई मृग भूखे बलवान पुरुषों ने खालिये और किसी २ ने मांसको अग्निपर पकाकर खाया और कोई जंगली हाथी शस्त्रों से घायल सूंडको सकोड़कर भयसे मूत्र विष्टा और रुधिर गिरातेहुए भागे ३० जंगली हाथियों ने बहुत लोगोंको पाओं से कुचलडाला, वह बन सेनारूपी मेघकी बाणरूपी जलधारासे युक्त राजाके मारेहुए मृग और सिंहोंसे शोभितहुआ ३१

अध्याय ७० ॥

वैशम्पायनने कहा, सेना और बाहन सहित राजाने सहस्रों मृगोंको मारा और उत्तम बलयुक्त भूक प्यास और परिश्रमयुक्त अकेला राजा मृग के पीछे चलागया, वनके अन्त में राजा एक बड़ शून्यस्थान में गया । २ । आगे चढ़कर राजाने उत्तम आश्रमों

raw while others cooked it. Many a strong elephant maddened with wounds and alarmed to excess, fled with trunks upraised. The wild elephants maddened by wounds. trampled many warriors to death. The forest, full of animals, was by the king and his followers made bereft of the lions, tigers and other beasts of prey.

CHAPTER LXX

Vaishampayan continued, "The king with his attendants having killed thousands of animals entered another forest for hunting. Attended by a single follower and oppressed with hunger and

हष्टिकांतमतीवच ॥ ३ ॥ शीतमारुतसंयुक्तंजगामान्यन्महद्वनम् । पुष्पितैःपादपैःकीर्ण
मतीवसुखशाद्वलम् ॥ ४ ॥ विपुलं मधुरारावैर्न्नादितं विहगैस्तथा । पुंस्कोकिलनिना
दैश्च झिल्लीकगणनादितम् ॥ ५ ॥ प्रवृद्धविटपैर्वृक्षैः सुखच्छायैःसमावृतम् । षट्पदाघू
र्णिततलं लक्ष्म्यापरमयायुतम् ॥ ६ ॥ नापुष्पःपादपःकश्चि न्नाफलोनापिकण्ठकी ।
षट्पदैर्न्नाप्यनाकीर्णस्तस्मिन् वैकाननऽभवत् ॥ ७ ॥ बिहगैर्न्नादितंपुष्पै रलंकृतमतीव
च । सर्वर्त्तुकुसुमैर्वृक्षैः सुखच्छायैःसमावृतम् ॥ ८ ॥ मनोरमंमहेष्वासो विवेशवनमुत्त
मम् । मारुताकुलितास्तत्र द्रुमाःकुसुमशाखिनः ॥ ९ ॥ पुष्पवृष्टिंविचित्रांतु व्यसृजंस्ते
पुनःपुनः । दिवस्पृशोऽथसंघुष्टाः पक्षिभिर्मधुरस्वनैः ॥ १० ॥ विरेजुःपादपास्तत्रवि-
चित्रकुसुमाम्बराः । तेषांतत्रप्रवालेषु पुष्पभारावनामिषु ॥ ११ ॥ रुवन्तिरावान्मधुरान्

से युक्त आनन्दित नेत्रों को सुख देनेवाले और ठंडी वायुसे युक्त, फूलवाले वृक्षोंसे भरेहुए हरी घासवाले, बड़े और मधुर शब्दवाले कोकिलों से गूंजताहुआ झींगरोंके शब्द से पूरित छायावाले बड़े वृक्षोंसे भराहुआ, भौरों के शब्दों और शोभासे मनोहर दूसरे बन में पहुँचा । ६ । उस बन में बिना फूल फलवाला और काटोंवाला कोई बृक्ष न था ऐसाभी कोई बृक्ष न था जिसपर भौंरे नहीं । ७ । पक्षियों के शब्द से युक्त, पुष्पों से अत्यन्त शोभित, सब ऋतुओं में पुष्पवाले अच्छी छायावाले, वृक्षोंसे भरेहुए, मनोहर बन में उस बड़े धनुषवाले राजादुष्यन्त ने प्रवेश किया, उस वनमें वायु से हिलकर पुष्पयुक्त शाखावाले वृक्ष पुष्पोंकी विचित्र वर्षा करने लगे आकाशसे मिलेहुए, मधुर शब्दवाले पक्षियों से गुंजारते हुए विचित्र पुष्परूपी वस्त्रोंको धारण कियेहुए वृक्ष शोभितथे, बन

thirst he entered a large desert bordering the forest. Having crossed the herdless plain he entered another forest inhabited by ascetics. Beautiful to look at, charming and of wholesome climate. It was full of flower trees; its soil covered with grass, extending for many miles and echoing with the notes of singing birds and cuckoos. It was full of large trees with outstrethed branches forming a canopy of evergreen shadow. The bees hovered over the flowery creepers and there were beautiful flowers everywhere. There were no trees there which did not bear flowers or fruits. There were no thorny trees in that forest and all the trees were swarming with bees. The forest resounded with the melody of birds. The trees were decked with flowers and gave a cooling shade. Such was the charming forest wherein the great archer entered. Trees bearing beautiful flowers on their branches

षट्पदामधुलिट्स्वनः । तत्रप्रदेशांश्चबहून् कुसुमोत्करमंडितान् ॥ १२ ॥ लतागृहपरि
क्षिप्तान्मनसः प्रीतिवर्द्धनान् । सम्पश्यन्सुमहातेजा बभूवमुदितस्तदा ॥ १३॥ परस्प-
राश्लिष्टशाखैः पादपैःकुसुमान्वितैः । अशोभतवनंतत्तु महेन्द्रध्वजसन्निभैः॥ १४॥सिद्ध
चारणसंघैश्च गन्धर्वाप्सरसाङ्गणैः । सेवितंवनमत्यर्थं मत्तवानरकिन्नरम् ॥१५॥ सुखः
शीतःसुगन्धीच पुष्परेणुवहोऽनिलः । परिक्रामन्वनेवृक्षा नुपैतीवरिरंसया ॥ १६ ॥
एवंगुणसमायुक्तं ददर्शसवनंनृपः । नदीकच्छोद्भवंकांतमुच्छ्रितध्वजसन्निभम् ॥१७॥
प्रेक्षमाणोवनंतत्तु सुप्रहृष्टविहङ्गमम् । आश्रमप्रवरंरम्यं ददर्शचमनोरमम् ॥१८॥ नाना
वृक्षसमाकीर्णं सम्प्रज्वलितपावकम् । तंतदाप्रतिमं श्रीमानाश्रमंप्रत्यपूजयत् ॥ १९ ॥

वृक्षों के पत्तों में जो पुष्पों के बोझ से झुके हुए थे पुष्परस के लेनेकी इच्छा से भौंरे मधुर शब्द कर रहे थे, उस बन में पुष्पों के समूह से शोभित लतागृहसे युक्त मनोहर बहुत से स्थानों को देखकर राजादुष्यन्त का मन अति प्रसन्नहुआ १३ इंद्रकी ध्वजा के समान परस्पर शाखाओं से मिले हुए पुष्पयुक्त वृक्षोंसे वह बन शोभित था १४ सिद्ध, चारण, गंधर्व अप्सराओं के समूह से मतवाले वानर और किन्नरों से वह वन अत्यन्त सेवितथा । १५ । सुखदाई, ठंडी, सुगन्धियुक्त, फूलोंकी पराग का लेजाने वाला वायु उस वन में रमणकी इच्छा से घूमताहुआ वृक्षों से मिलताहै १६ राजा ने इन गुणों से युक्त नदियोंसे जलयुक्त देश में उत्पन्न मनोहर, ध्वजा के समान ऊंचे, प्रसन्न पक्षियों से शोभित वन में राजाने एक मनोहर नाना प्रकार के वृक्षों से शोभित, प्रदीप्त अग्नि से युक्त आश्रम को देखा, श्रीमान् राजाने उस अनुपम आश्रम को देखकर बड़ी स्तुतिकी १९

---

waving gently by the soft breeze, began to shower their flowers over the monarch's head. Trees dressed in their flowery attire of various colours, with sweet throated warblers perching on them, stood there in rows with heads touching the sky. The bees tempted by honey hummed in sweet chorus around their branches hanging down by the weight of flowers. The king was much pleased on seeing many bowers covered with creepers bearing thick clusters of flowers. The forest was made very charming by flowery trees looking like rain bows. Numerous ascetics lived in that forest, the resort of Gandharvas, Apsaras and Kinnars. Delicious, cool and fragrant breezes, laden with the sweet scent of flowers, blew from every quarter as if to sport with the trees. The king saw that beautiful and charming forest, situated on the bank of a river with clusters of high trees it looked very charming, The king saw there a neat

यतिभिर्वालखिल्यैश्च वृतंमुनिगणान्वितम् । अग्न्यागारैश्चवहुभिः पुष्पसंस्तरसंस्तृप् ॥ २० ॥ महाकच्छैर्बृहद्भिश्च विभ्राजितमतीवच । मालिनीमभितोराजन् नदींपुण्यां सुखोदकाम् ॥ २१ ॥ नैकपक्षिगणाकीर्णां तपोवनमनोरमाम् । तत्रव्यालमृगान्सौम्यान्पश्यन्प्रीतिमवापसः ॥ २२ ॥ तंचाप्रतिरथः श्रीमानाश्रमंप्रत्यपद्यत । देवलोकप्रतीकाशं सर्वतःसुमनोहरम् ॥ २३ ॥ नदीञ्चाश्रमसंश्लिष्टां पुण्यतोयांददर्शसः। सर्वप्राणभृतांतत्र, जननीमिवधिष्ठिताम् ॥ २४ सचक्रवाकपुलिनां पुष्पफेनप्रवाहिनीम् । साकिन्नरगणावासां वानरर्क्षनिषेविताम् ॥ २५ ॥ पुण्यस्वाध्यायसंघुष्टां पुलिनैरुपशोभिताम् । मत्तवारणशार्दूलभुजगेन्द्रनिषेविताम् ॥ २६ ॥ तस्यास्तीरेभगवतः काश्यपस्यमहात्मनः । आश्रमप्रवरंरम्यं महर्षिगणसेवितम् ॥ २७ ॥ नदीमाश्रमसम्बद्धां

यति बालखिल्य ऋषि और बहुत से मुनियों से युक्त अग्निहोत्र के स्थान पुष्पों से विस्तृत । २० । बड़े तुन वृक्षोंसे अत्यन्त शोभित अनेक पक्षियों के गणसे भरी हुई तपोवनसे मनोहर मालिनि नदी के किनारे आश्रम में अनेक प्रकार के सिंह, मृगादि को देखकर प्रसन्नहुआ । २२ । देवलोकके समान चारों ओर से बड़े मनोहर आश्रम में वह अनुपम बलवान राजा गया । २३ । आश्रम से मिली हुई पवित्र जलवाली, वनबासियों की माताके समान; जिसके किनारों पर चकवा के समूह हैं और पुष्परूपी फेनकी बहाने वाली किन्नर, बानर, और रीछोंकी निवासस्थानहै । २५ । पवित्र वेद ध्ययन शब्द से युक्त, किनारों से अत्यन्त शोभित, मस्त हाथी, शार्दूल और बड़े सांपों के रहनेकी जगह मालिनीनदी को राजाने देखा । २६ । तब राजा दुष्यंत ने उस नदी के किनारे महात्मा

---

retreat of ascetics having many trees around it and the sacred fire burning within it. The king worshipped the unrivalled retreat and he saw sitting in it many sages and ascetics. It was adorned with many chambers containing the sacrificial fire. The flowers dropping from the trees had formed a thick carpet below and the place looked very grand for those majestic trees with large trunks. And by it flowed the limpid waters of the Malini with every sort of waterfowl playing on its banks. The stream was pleasing to the hearts of the ascetics going there for ablutions. The king saw there many an innocent deer with great delight. The king of matchless prowess, then entered the asylum, beautiful like the abode of gods. He saw that the sacred stream was like a mother to the creatures living in the vicinity. On its beach sported water fowl with its waver of milk white foam. There were also the habitations of kinn-

दृष्ट्वाश्रमपदंतथा चकाराभिप्रवेशाय मतिंसनृपतिस्तदा ॥ २८ ॥ अलङ्कृतंद्वीपवत्या मालिन्यारम्यतीरया। नरनारायणस्थानं गङ्गयेवोपशोभितम् ॥ २९ ॥ मत्तबर्हिणसंघुष्टं प्रविवेशमहद्वनम् । तत्रचैत्ररथप्रख्यं समुपेत्यनरर्षभः ॥ ३० ॥ अतीवगुणसम्पन्नमनिर्देश्यञ्चवर्चसा । महर्षिकाश्यपंद्रष्टु मथकण्वंतपोधनम् ॥ ३१ ॥ ध्वजिनीमश्वसम्बाधांपदातिगजसंकुलम् । अवस्थाप्यवनद्वारि सेनामिदमुवाच सः ॥ ३२ ॥ मुनिं विरजसंद्रष्टु गमिष्यामितपोधनम् । काश्यपंस्थीयतामत्र यावदागमनं मम ॥ ३३ ॥ तद्वनंनन्दन प्रख्यमासाद्य मनुजेश्वरः । क्षुत्पिपासेजहौ राजा मुदंचावापपुष्कलाम् ॥ ३४ ॥ सामात्योराजलिंगानि सोऽपनीयनराधिपः । पुरोहितसहायश्च जगामाश्रम

भगवान् काश्यपऋषिके श्रेष्ठ मनोहर, महर्षियोंसे सेवित आश्रम और निकटवर्ती नदी को देखकर आश्रम में जाने का निश्चय किया, उस कुवेर मनोहर किनारे वाली द्वीपवाली नदी से शोभित गंगा से शोभित नर नारायण के आश्रम के समान, मत्तमोरों के शब्दवाले उसबड़े वन में राजाने प्रवेश किया, उस कुवेर के चैत्ररथ सदृश वनमें जाकर अनुपम तेज और गुणवान काश्यप तपोधन महर्षिकण्व के देखने को घोड़े हाथी आदि से भरी हुई सेना को वनके दरवाजे पर ठहराकर राजाने कहा। ३२। रजोगुण रहित तपोधन काश्यप मुनि कण्व को देखने के लिये जाता हूँ मेरे आनेतक तुमलोग यहीं ठहरो ३३ उस मनुष्यों के स्वामी राजा दुष्यन्तने नंदनवनके समान उस बन में जाकर क्षुधा और प्यासको छोड़ा और अत्यंत हर्षको प्राप्त किया। ३४। मंत्रियों और पुरोहित सहित राज

ars, monkeys and bears. There lived also the holy ascetics engaged in study and meditation. Elephants, tigers and snakes could be seen there. On the bank of the streaam stood the excellent asylum of the illustrious Kashyap offering a home to numerous Rishis of great ascetic merit. Beholding the river and the asylum washed by its waters, like the abode of Nara and Narayan laved by the water of the Ganges, the king resolved to enter that sacred abode. Desirous of beholding the great ascetic Kanwa, of the race of Kashyap, virtuous, of dazzling splendour and living in that beautiful forest, the king approached his hermitage, Halting his army, consisting of cavalry, infantry and elephants, at the end of the forest, the king said to them, "I am going to see the great ascetic of Kashyap race you may stay here till my return. The king having entered the forest which was like Indra's gardens, soon forgot his hunger ad

मुत्तमम् ॥ ३५ ॥ दिदृक्षुस्तत्रतमृषिं तपोराशिमथाव्ययम् । ब्रह्मलोकप्रतीकाशमा-
श्रमं सोऽभिवीक्ष्यह ॥ ३६ ॥ षट्पदोद्गीतसंघुष्टं नादाद्विजगणायुतम् । ऋचोबह्वचमु-
ख्यैश्च प्रेर्यमाणाःपदक्रमैः । शुश्रावतनुजव्याघ्रो विततेष्विहकर्मसु ॥ ३७ ॥ यज्ञविद्याङ्ग
विद्भिश्च यजुर्विद्भिश्चशोभितम् । मधुरैःसामगीतैश्च ऋषिभिर्नियतव्रतैः ॥ ३८ ॥
भारुण्डसामगीताभिरथर्वशिरसोद्गतैः । यतात्माभिः सुनियतैःशुशुभेसतदाश्रमः । ३९ ।
अथर्ववेदप्रवराः पूगयज्ञीसामगाः । संहितामीरयन्तिस्म पदक्रमयुतांतुते ॥ ४० ॥
शब्दसंस्कारसंयुक्तं ब्रुवद्भिश्चापरैर्द्विजैः । नादितःसबभौश्रीमान्ब्रह्मलोकइवापरः । ४१ ।

चिन्होंको उतारकर उसवन में गया। । ३५ । उस आश्रम में तपोधन, विकार रहित उस कण्वऋषि के देखने की इच्छा से राजा ने ब्रह्मलोक के समान, भौंरों के शब्दों और अनेक प्रकार के पक्षियों के समूहों से युक्त आश्रम को देखकर चतुर्वेदियों में मुख्य ब्राह्मणों से पद क्रमके साथ यज्ञादि में उच्चारणकी ऋचाओंको सुना । ३७ । यज्ञ विद्याओंको सांग जाननेवाले यजुर्वेद पढेहुए ब्राह्मणों के मधुर सामगायनों से और अखंडित व्रतवाले ऋषियोंसे वह आश्रम शोभित था ३८ भारुण्ढ नाम वाले सामवेद के अंगों और अथर्व वेद के उपनिषद् के गायनों से अच्छे नियम वाले जितेन्द्रिय ऋषियों से वह आश्रम शोभित था । ३९ । अथर्व वेद के ज्ञान में श्रेष्ठ और पूग यज्ञीय वेद भागों के जानने वाले ऋषिपद और क्रमसे संहिता को पढरहे थे ४० : शब्दके संस्कारयुक्त शब्दोंको बोलते हुए अन्य ब्राह्मणों से शोभायुक्त आश्रम द्वितीय ब्रह्मलोकके सदृश जान पड़ताथा । ४१ ।

---

thirst and was much pleased. Laying aside the signs of royalty the monarch entered the asylum in the company of his minister and priest, to see the great ascetic. He found the asylum like Indra's abode with the humming of bees and the melody of singing birds, the chanting of Rig Ved hymns by Brahmans according to the rules, or decked with Brahmans acquainted with the ordinances of sacrifices, of Angas and the hymns of Yajurved or the harmonious strains of the Samved pronounced by vow observing rishi. At other places the asylum was decked with Brahmans knowing the Atharv Ved At other place Brahmans learned in the Atharva Ved and chanting the hymns of the Sam Ved were reciting the *Samhitas* regularly. Brahmans learned in Othoepy were reciting other sorts of hymns. Resounding with such notes the place was like the abode of Brahma. There were other Brahmans skilled in the art of making sacri-

यज्ञसंस्तरज्ञैश्च क्रमशिक्षाविशारदैः न्यायतत्त्वात्मविज्ञानसम्पन्नैर्वेदपारगैः ॥ ४२ ॥ नानावाक्यसमाहार समवायविशारदैः । विशेषकार्य्यविद्भिश्च मोक्षधर्मपरायणैः ॥४३॥ स्थापनाक्षेपसिद्धांत परमार्थज्ञतांगतैः । शब्दैश्छन्दोनिरुक्तज्ञैः कालज्ञानविशारदैः ॥४४॥ द्रव्यकर्मगुणज्ञैश्च कार्य्यकारणवादिभिः कपिपक्षिरुतज्ञैश्च व्यासग्रन्थसमाश्रितैः ॥४५॥ नानाशास्त्रमुख्यैश्च शुश्रावस्वनमीरितम् । लोकायतिकमुख्यैश्च समन्तादनुनादितम् ॥ ४६ ॥ तत्रतत्रच विप्रेन्द्रान्नियतान् संशितव्रतान । जपहोमपरान् विप्रान ददर्शपरवीरहा ॥ ४७ ॥ आसनानिविचित्राणि रुचिराणिमहीपतिः । प्रयत्नोपहितानि स दृष्ट्वाविस्मयमागमत् ॥४८॥ देवतायतनानाञ्च प्रेक्ष्यपूजाकृतांद्विजैः । ब्रह्मलोकस्थमा

यज्ञ स्थान बनाने के जानने वाले और क्रमसे और शिक्षाके जाननेवाले और न्याय तत्व और आत्मज्ञानके जानने वाले वेद के पारगामी ४२ नाना प्रकारके संहिता वाक्यों की विधि और निषेध और उपासना के जानने वाले मोक्ष धर्म में तत्पर पूर्वपक्ष और शंका से सिद्धान्तका मुख्य अर्थ जाननेवाले व्याकरण छंद निरुक्त ज्योतिष में चतुर ४३ द्रव्य कर्म गुण कार्य और कारण के जानने वाले पक्षी और वानरों के शब्दों के जानने वाले व्यास ग्रंथों का यज्ञों में आश्रय करने वाले ४५ नाना प्रकार के शास्त्र जानने वालों में मुख्य इन के शब्दोच्चारणको राजाने सुना संसारके प्रसन्न करनेकी विद्या जानने वालों में मुख्य पुरुषों के शब्दो से युक्त और आश्रम में जगह २ उत्तम व्रत वाले दृढ़ निश्चय वाले जप होम में तत्पर ब्राह्मणों को राजाने देखा ४७ राजादुष्यंत विचित्र मनोहर युक्ति से बिछाये हुए आसनोंको देखकर आश्चर्य को प्राप्तहुआ ४८ ब्राह्मणों से देवताओं की पूजाको देख

---

ficial platforms, in the duties of sacrifices, in Logic and Mental Philosophy and a perfect knowledge of the Vedas. Others were fully acquainted with the meanings of all sorts of expressions, with special rites and Moksh Dharm, well skilled in establishing propositions, rejecting superfluous causes and drawing right conclusions. Others were scholars of Grammer, prosody, Nirukt, Astrology, the properties of matter and the fruits of sacrificial rites; possesing a knowledge of the causes and effects, capable of understanding the cries of birds and monkeys, well read in all treatises and skilled in various sciences. The king, as he proceeded, heard their voices. The place also resounded with the voices capable of charming the human hearts. The hero also saw arround him learned Brahmans of rigid vows engaged in Jap and Hom. The king wondered at the beautiful carpet seats offered him by the Brahmans. The good

त्मानं मेनेसनृपसत्तमः ॥ ४९ ॥ सकाश्यपतपोगुप्तमाश्रमप्रवरंशुभम् । नातृप्यत्प्रेक्षमा णो वैतपोवनगुणैर्युतम् ॥५०॥ सकाश्यपस्यायतनं महाव्रतैर्वृतं समन्ताद्दृषिभिस्तपो धनैः । विवेशसामात्य पुरोहितोऽरिहाविविक्त मत्यर्थमनोहरंशुभम् ॥ ५१ ॥

इत्यादिपर्वणिं सम्भवपर्वणि शकुन्तलोपाख्याने सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

कर राजाने अपने को ब्रह्मलोक में वर्तमान माना ४९ कश्यप गोत्र में उत्पन्न कण्व ऋषि के तपसे रक्षित और तपोवन के गुणोंसे युक्त उस आश्रम को देख कर राजाकी तृप्ति न हुई मंत्री और पुरोहित सहित शत्रु नाशी राजा दुष्यन्त ने बड़े व्रत धारण करने वाले तपोधन ऋषियों से भरेहुए एकान्तस्थान अत्यन्त मनोहर शुभ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश किया ॥

---

monarch seeing the sacrificial thought himself to be in the region of gods. The more that the king saw the sacred asylum of Kashyap the more he desired to see it. Accompanied by his minister and priest, he at last entered the asylum of Kashyap peopled all round with great rishis of rigid vows.

वैशम्पायन उवाच ॥ ततोगच्छन्महाबाहु रेकोऽमात्यान्विसृज्यतान् नापश्यच्चाश्रमे
तस्मिंस्तमृषिंसंशितव्रतम् ॥ १ ॥ सोऽपश्यमानस्तमृषिं शून्यंदृष्ट्वातथाश्रमम् । उवाचक
इहेत्युच्चैर्वनसन्नादयन्निव ॥ २ ॥ श्रुत्वाथतस्यतंशब्दं कन्याश्रीरिवरूपिणी । निश्चक्रा-
माश्रमात्तस्मात्तापसीवेषधारिणी ॥ ३ ॥ सातंदृष्ट्वैवराजानं दुष्यन्तमसितेक्षणा । स्वा
गतन्तइतिक्षिप्र मुवाचप्रतिपूज्यच ॥ ४ ॥ आसनेनार्चयित्वाच पाद्येनार्घ्येणचैवहि ।
पप्रच्छानामयंराजन्कुशलञ्चनराधिपम् ॥ ५ ॥ यथावदर्चयित्वाथपृष्ट्वाचानामयंतदा
उवाचस्मयमानेव किंकार्यंक्रियतामिति ॥ ६ ॥ तामब्रवीत्ततो राजा कन्यांमधुरभा-
षिणीम् । दृष्ट्वाचैवानवद्यांगीं यथावत्प्रतिपूजितः ॥ ७ ॥ आगतोऽहंमहाभाग मृषिं
कण्वमुपासितुम् । क्वगतोभगवानभद्रे तन्ममाचक्ष्वशोभने ॥ ८ ॥ शकुन्तलोवाच ।
गतःपिताभगवान फलान्याहर्तुमाश्रमात् । मुहूर्तंसंप्रतीक्षस्व द्रष्टास्येनमुपागतम् ॥ ९ ॥

अध्याय ७१ ॥

वैशम्पायन ने कहा तत्पश्चात् उस बड़ी भुजावाले राजा दुष्यन्तने आश्रम में जाकर उस उत्तम व्रतवाले ऋषि को न देखा । १ । उस राजाने ऋषि से आश्रमको शून्य देख कर ऊंचे गुंजारनेवाले शब्द से कहा यहां कौनहै । २ । इस शब्दको सुनकर लक्ष्मी के समान रूपवाली तपस्विनियों के वेषमें एक कन्या निकली । ३ । वह उत्तम नेत्रवाली कन्या राजा दुष्यन्त को देखतेही सत्कार करके स्वागत शब्दबोली । आसन पाद्य और अर्घ्य से राजाका पूजन कर राजा दुष्यन्त के राज्यकी कुशल पूछी, यथार्थ रीतिसे राजा का पूजनकर और कुशल प्रश्न कर हँसते हुए पूछा कि आपका, क्या कार्य कियाजाय, कन्या से यथार्थ रीति से सत्कार पायेहुए राजा ने उस मधुरभाषिणी कन्या से कहा हे शोभने मैं बड़े भागवाले कण्व ऋषिकी सेवामें आयाहूं हे भद्रे वह ऋषि कहां है । ८ । शकुन्तला ने कहा मेरा पिता भगवान ऋषि फल लेने को आश्रम से गयाहै थोड़ी देर

CHAPTER LXXI

Vaishampayan said, " The king as he proceeded left even his few attendants at the entrance of the asylum. But he did not find the Rishi (Kanwa) there. He then hailed loudly, saying, " Is there any one in the house ? " The sound of his voice ochoed back as loudly as it was uttered. Hearing his voice, there came out a maiden as beautiful as Shree herself dressed as an ascetic's daughter. The black-eyed fairy, seeing king Dushyant, bade him welcome and worshipped him a seat, Padya and Arghya, and enquired after the king's health and peace. The maiden then asked the king, " What should I dc, O king, I await your commands." The king said to

वैशम्पायनउवाच। अपश्यमानस्तमृषिंतथाचोक्तस्तयाचसः।तांदृष्ट्वाचवरारोहांश्रीमतीं
चारुहासिनीम् १० विभ्राजमानांवपुषा तपसाचदमेनच। रूपयौवनसम्पन्नामित्युवाच
महीपतिः ११ कात्वंकस्यासिसुश्रोणि किमर्थंचागतावनम्। एवंरूपगुणोपेता कुतस्त्व
मसिशोभने १२ दर्शनादेवहिशुभे त्वयामेऽपहृतंमनः। इच्छामित्वामहंज्ञातुं तन्ममा-
चक्ष्वशोभन ॥ १३॥ एवमुक्तातुसाकन्या तेनराज्ञातमाश्रमे। उवाचहसतीवाक्यमिदं
सुमधुराक्षरम् ॥ १४ ॥ कण्वस्याहंभगवतो दुष्यन्तदुहितामता। तपस्विनोधृतिमतो
धर्मज्ञस्यमहात्मनः ॥ १५ ॥ दुष्मन्तउवाच। ऊर्द्ध्वरेतामहाभागो भगवान्लोकपूजितः।
चलेद्धिवृत्ताद्धर्मोऽपि नचलेच्छंसितव्रतः॥१६॥ कथंत्वंतस्यदुहिता सम्भूतावरवर्णिनी
संशयोमेमहानत्र तन्मेछेत्तुमिहार्हसि ॥ १७॥ शकुन्तलोवाच। यथायमागमोमह्यं य-

---

ठहरने से उस ऋषिका दर्शनहोगा ऋषि को न देखकर और कन्या से यह सुनकर राजा
ने सुन्दर जंघावाली, हास्ययुक्त, दृढ़तप और जितेन्द्रियतासे प्रकाशमान, रूप और तरुण
अवस्था युक्त कन्या से कहा हे सुन्दर कमरवाली तू कौन है और तेरा पिता कौनहै और
इस बन में क्यों आई है हे शोभने ऐसे रूप गुण सम्पन्न तू कैसे हुई । १२ । हे शुभे
देखने सेही तूने मेरेमनको हरलिया है हे शोभने मैं तेरावृत्तान्त जानना चाहताहूं । १३।
उस आश्रम में इसप्रकार राजाकी बातसुन कर मधुरशब्दों में यह वचन कहा । १४ ।
हे दुष्यन्त भगवान, तपस्वी, धैर्यवान, धर्मज्ञ कण्व ऋषि मेरे पिता हैं । १५ । दुष्यन्त
ने कहा हे महाभाग संसार से पूजित भगवान कण्व ऋषि नित्यब्रह्मचारी है, चाहे धर्म
अपनी मर्यादासे पृथक्होजाय परन्तु वह उत्तम व्रत रखनेवाला ब्रह्मचर्य से पृथक् नहीं
होसकता । १६ । मधुरभाषिणी तू किसप्रकार उसकी कन्या हुई मेरे इस सन्देह को दूर

---

the maiden of faultless features and sweet speech, "I have come to pay my respects to the great Rishi Kanwa. Tell me, beautiful maiden where is the Rishi gone. Shakuntala replied, "My illustrious father has gone out to fetch fruits. Wait a while and you will see him." Vaishampayan continued, "Not seeing the Rishi and hearing her sweet words, the king saw that the maiden was very beautiful and endued with perfect symmetry of shape and sweet smiles. She was a perfection of beauty for her faultless features ascetic penances, and humility and youthfullness. He therefore asked her, "Who and what you are, O beautiful one? Why are you here in this wilderness? Gifted with such beauty and virtue whence hast thou come? Thou hast stolen my heart at the first glance, O charming one! I desire to learn all about thee." Hear-

थाचेदमभूत्पुरा । शृणुराजन् यथातत्त्वं यथास्मिदुहितामुनेः ॥१८॥ ऋषिःकश्चिदिहागम्य ममजन्माभ्यचादयत् । तस्मैप्रोवाचभगवान् यथातच्छृणुपार्थिव ॥ १९॥ कण्व उवाच । तप्यमानःकिलपुरा विश्वामित्रोमहत्तपः । सुभृशंतापयामास शक्रंसुरगणेश्वरम् ॥ २० ॥ तपसादीप्तवीर्य्योऽयं स्थानान्मांच्यावयेदिति । भीतःपुरन्दरस्तस्मानमेनकामिदमब्रवीत् ॥ २१ ॥ गुणैरप्सरसांदिव्यै मेनकेत्वंविशिष्यसे । श्रेयोमेकुरुकल्याणियत्त्वांवक्ष्यामितच्छृणु ॥ २२ ॥ असावादित्यसङ्काशो विश्वामित्रोमहातपाः । तप्यमानस्तपोघोरं मपकम्पयतेमनः ॥ २३ ॥ मेनकेतवभारोऽयं विश्वामित्रःसुमध्यमे । शंसितात्मासुदुर्द्धर्षं उग्रतपसिवर्त्तते ॥ २४ समांनच्यावयेत् स्थानात्तंवैगत्वाप्रलोभय । चरतस्यतपोविघ्नं कुरुमेऽप्रियमुत्तमम् ॥२५॥ रूपयौवनमाधुर्य्य चेष्टितस्मितभाषणैः ।

कर सकती है । १७ । शकुन्तला ने कहा जिसप्रकार यह कथा है और जैसा मेरा जन्म पहले हुआ है और जैसे कण्व मुनिकी मैं बेटी हूं उसको हे राजन् तुम यथार्थ रीति से श्रवण करो १८ एक ऋषिने यहां आकर मेरे जन्मकी कथा पूछी और उस ऋषि से जैसा भगवान कण्व ऋषिने कहा वह सुन १९ कण्व ऋषि ने कहा, पहले विश्वामित्र ने बड़ा तप करके देवताओं के स्वामी इन्द्रको अतिताप युक्त किया कि तपसे तेजयुक्त यह ऋषि मुझको स्वर्ग से गिरा देगा इस प्रकार उस डरेहुए इन्द्र ने मेनिका से कहा २१ हे मेनिका दिव्यगुणों में और अप्सराओं से तू श्रेष्ठ है हेकल्याणि मेरा भलाकर और जो मैं कहता हूं उसको सुन यह सूर्य के समान प्रकाशमान बड़ा तपस्वी विश्वामित्र घोर तप करता हुआ मेरेमनको कँपाता है २३ हे मेनिका यह विश्वामित्र तेरेवशका है और पवित्रात्मा किसी से न तिरस्कार किये जानेवाला उग्रतप कररहाहै २४ वह मुझको स्वर्ग से न भ्रष्ट करे इसकारण उसको लोभदे और उसके तप में विघ्न डालकर मुझको निश्चिंत कर २५ रूप

---

ing these words of the monarch, the maiden smilingly replied, "I am the daughter of the virtuous, magnanimous and illustrious ascetic Kanwa, O Dushyant." Hearing this Dushyant said, "Worshipped by all, the great rishi has ever been single. He will never deviate from his vow though Dharm himself may fall off. How, then, camest thou to be his daughter? Remove my doubt. Shakuntala replied, "Hear my history, O king, from the beginning. A certain Rishi had asked the same question before and I shall tell you what I heard from Kanwa in reply. Kanwa said, Viswamitra having been engaged in most austere of penances alarmed Indra, the chief of gods, who thought that the mighty ascetic of great energy would, by his penances, deprive him of his heavenly seat. So he summon-

लोभायित्वावरारोहे तपसस्तंनिवर्त्तय ॥ २६ ॥ मेनकोवाच । महातेजाः स
भगवांस्तथैव च महातपाः । कोपनश्चतथाह्येनं जानाति भगवानपि ॥ २७ ॥
तेजसस्तपसश्चैव कोपस्यचमहात्मनः । त्वमप्युद्विजसेयस्य मो द्विजेयमहंकथम् ।
॥ २८ ॥ महाभागंवसिष्ठंयः पुत्रैरिष्टैर्व्ययोजयत् । क्षत्रजातश्चयःपूर्वं मभवद्ब्राह्मणो
बलात् ॥ २९ ॥ शौचार्थंयोनदींचक्रे दुर्गमांबहुभिर्ज्जलैः । यांतांपुण्यतमांलोके
कौशिकीतिविदुर्ज्जनाः ॥ ३० ॥ बभारयत्रास्यपुराकाले दुर्गेमहात्मनः । दारान्
मतङ्गोधर्मात्मा राजर्षिर्व्याधतांगतः ॥ ३१ ॥ अतीतकालेदुर्भिक्षे अभ्येत्यपुनराश्रमम् ।
मुनिःपारेतिनद्यास्वै नामचक्रेतदाप्रभुः ॥ ३२ ॥ मतङ्गंयाजयाञ्चक्रे यत्रप्रीतमनाः

तरुण अवस्था, मधुरता, चेष्टा, हास्य, भाषणादि से हे उत्तम जंघावाली उस मुनिको लोभ देकर तप खंडितकर, मेनिका ने कहा, वह भगवान विश्वामित्र ऋषि बड़ा तपस्वी, क्रोधी और तेजस्वी है इसको तूभी जानताहै उस महात्मा के तेज तप और कोपसे तुझको भय है उस से मुझे क्यों डर न होगा २८ उसने बड़े भागवाले वसिष्ट ऋषिसे पुत्रोंका वियोग करादिया और पहले क्षत्रिय जातिमें उत्पन्नहो तपोबलसे ब्राह्मण हुआ । २९ । जिसने अपने शौच के कारण बहुत जलवाली दुर्गम नदी को उत्पन्न किया जिस पवित्र नदीका सांसरिक मनुष्य कौशिकी नाम लेते हैं । ३० । जिसके किनारे पर दुर्भिक्ष में इस महात्मा विश्वामित्रकी स्त्रियों को महात्मा त्रिशंकु ने पोषण किया जो कि व्याध होगया था । ३१ । दुर्भिक्षके व्यतीत होनेपर फिर आश्रममें कौशिकी नदीके पारआकर इसमहात्माने उन्होंका नाम कौशिकी किया । ३२ । उसी स्थानपर प्रसन्नचित्त होकर त्रिशंकुको यज्ञकराया हे

---

ed Menika and told her, the first among apsaras, that he was in great danger of Viswamitra, like the Sun himself in splendour and engaged in most severe penances. That she should see him, of soul rapt in contemplation, engaged in the most austere penances and capable of depriving him of his office, and to frustrate his labour by tempting him i- e., winning him away from his penances by her beauty, art youth and speech, Menika replied that Vishwamitr was a great ascetic as was apparent from the apprenhensions of Indra himself and therefore her anxiety for her own safty was greater. He had killed all the children of Vasisth in his wrath and though born a Kshattria he had became a Brahman by his penances. He had created a deep river, the Kaushiki, for his ablutions. Vishwamitra's wife had once been given refuge by Trishanku living in banishment by his father's displeasure, and after the famine was

स्वयम् । त्वञ्च सोऽपि भयाद्यस्य गतः पातुं सुरेश्वर ॥ ३३ ॥ चकारान्यञ्च लोकं वै क्रुद्धो
नक्षत्रसम्पदा । प्रतिश्रवणपूर्वाणि नक्षत्राणि चकार यः ॥ गुरुशापहतस्यापि त्रिशङ्कोः
शरणं ददौ ॥ ३४ ॥ एतानि यस्य कर्माणि तस्याहं भृशमुद्विजे । यथा मां न दहेत् क्रुद्ध-
स्तथाज्ञापय मां विभो ॥ ३५ ॥ तेजसा निर्दहेल्लोकान् कम्पयेद्धरणीं पदा । सङ्क्षि-
पेच्च महामेरुं तूर्णमावर्त्तयेद्दिशः ॥ ३६ ॥ तादृशं तपसा युक्तं प्रदीप्तमिव पावकम् । कथ-
मस्मद्विधा नारी जितेन्द्रियमभिस्पृशेत् ॥ ३७ ॥ हुताशनमुखं दीप्तं सूर्य्यचन्द्राक्षितार
कम् । कालजिह्वं सुरश्रेष्ठ कथमस्मद्विधा स्पृशेत् ॥ ३८ ॥ यमश्च सोमश्च महर्षयश्च साध्या
विश्वे वालखिल्याश्च सर्वे । एतेऽपि यस्योद्विजन्ते प्रभावात्तस्मात् कस्मान्मादृशी नोद्विजेत्
॥ ३९ ॥ त्वयैवमुक्ता च कथं समीपमृषेर्न गच्छेयमहं सुरेन्द्र । रक्षां तु मे चिन्तय देवराज

इन्द्र तू उस विश्वामित्र के भय से सोम पीनेको गया । ३३ । जिसने क्रोधितहोकर नक्षत्र सहित दूसरा लोक बनालिया और गुरु के शापसे नष्टहुए त्रिशंकुको शरणदी । ३४ । ऐसे कर्मवाले विश्वामित्र से मुझे बड़ा भय है, हे इन्द्र ऐसा उपाय कर कि क्रुद्धहोकर वहऋषि मुझको भस्म न करे । ३५ । वह अपने तेजसे लोकोंको भस्म करसक्ता है पृथ्वी को पाओं से हिला, सुमेरु को फेंक सकता और दिशाओंको शीघ्रही एक कर करसक्त है:ऐसे तपस्वी, जितेन्द्रिय, अग्निके समान प्रज्वलित को मुझसी स्त्री कैसे स्पर्श कर सकेगी ३७ प्रदीप्त अग्नि जिसका मुख सूर्य्य चन्द्र जिसकी पुतली और काल जिसकी जिह्वा है ऐसे ऋषि को मुझसी स्त्री कैसे स्पर्श कर सकेगी । ३८ । यम, चन्द्रमा, महर्षि, साध्य विश्वेदेवा बालखिल्य ऋषि यह सब जिससे डरते हैं उससे मेरी स्त्री किसप्रकार न डरे । ३९ । तुझ से आज्ञा पाकर उस ऋषि के समीप कैसे न जाऊं परन्तु हे देवराज मेरी रक्षा का

---

over, Vishwamitra, on his return had changed the name of the stream that flowed by his hermittage from Kausbiki to Para Vishwamitra helped in the sacrifice of king Trishanku and Indra himself had gone out of fear to that sacrifice for drinking Som juice. He had created in anger a new world with stars. He had granted protection to Trishanku from the great curse and that she feared to approach him. She requested Indra to guide her course so as she might not be burnt by the wrath of the Rishi who could burn the three worlds by his wrath, could shake the earth by the stamp of his foot, could sever mount Meru from its base and hurl it away and could go everywhere at his pleasure in a moment. Being a timid woman she dared not approach the mighty ascetic whose mouth was like the burning fire, the pupils of his eye like the Sun

यथात्वदर्थं रक्षिताहंचरेयम् ॥४०॥ कामन्तुमेमारुतस्तत्र वासःप्रक्रीडितायाविवृणोतु देव । भवेच्चमेमन्मथस्तत्र कार्ये सहाय भूतस्तुतवप्रसादात् ॥ ४१ ॥ वनाच्चवायुः सुरभिःप्रवायात्तस्मिन् कालेतमृषिंलोभयन्त्याः । तथेत्युक्त्वाविहितेचैवतस्मिंस्ततो ययौ साश्रमंकौशिकस्य ४२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शाकुन्तलोपाख्याने एकसप्ततोऽध्यायः ७१ ॥

कण्वउवाच ॥ एवमुक्तस्तयाशक्रः सन्दिदेशसदागतिम् । प्रातिष्ठततदाकाले मेनकावायुनासह ॥१॥ अथापश्यद्वरारोहा तपसादग्धकिल्बिषम् । विश्वामित्रंतप्यमानं मेनकाभीरुराश्रमे ॥ २ ॥ अभिवाद्यततःसातं प्राक्रीडदृषिसन्निधौ । अपोवाहचवासो

उपाय करो जिससे मैं तुम्हारे कार्यको सिद्ध करूं । ४० । हे देव वहां जाकर क्रीड़ाकरते हुई मेरेवस्त्रको वायु उड़ावे और हे देव तुम्हारे प्रसाद से कामदेव मेरा सहायकहो ४१ और उस ऋषि को लुभाते समय वनमें सुगन्धित वायु चले इन्द्र ने तथास्तु कहा और किया तत्पश्चात् वह विश्वामित्रके आश्रम को गई ४२ ॥

अध्याय ७२ ॥

कण्व ऋषि ने कहा इसप्रकार मेनिका के कहने पर इन्द्रने वायु को आज्ञादी और वायुके साथ मेनिका गई । १ । उस उत्तम जंघावाली डरतीहुई मेनिका ने आश्रम में उस ऋषि को जिसके पाप तपस्या बल से भस्महोगये थे, तप करतेहुए देखा । २ । तत्पश्चात वह अप्सरा ऋषि को नमस्कार कर उसके समीप क्रीड़ा करनेलगी, वायुने

---

and the Moon and his tongue like Yam himself. She said she was afraid even to touch him at whose thought Yam, Som, the great Rishis, the Sadhyas, the Vishwas and the Valkhilyas trembled. Being a woman ,she said, she was apt to be alarmed at the more sight of him. But she was bound to approach the rishi at the command of Indra if he (Indra) would but give her the means where by she could move near the great Rishi. She then asked Indra to order the wind to snatch her dress away from her boly and to bear fragrance from the woods to tempt the Rishi. Indra granted her request and she proceeded to where the Rishi was.

CHAPTER LXXII

Kanwa continued that thus addressed by her, Indra commanded the wind to be present at the time of Menika's meeting with Vishwamitra. The timid and beautiful Menika then, saw Vishwamitra who had destroyed all his sins by continuous asceticism and

ऽस्यामारुतःशशिसन्निभम् ॥ ३ ॥ सागच्छत्त्वरिताभूमिं वासस्तदभिलिप्सती । उत्स्मयन्तीवसव्रीडं मारुतंवरवर्णिनी ॥४॥ पश्यतस्तत्रतत्रर्षेर्वह्निसमतेजसः । विश्वामित्रस्ततस्तांतु विषमस्थामनिन्दिताम् ॥ ५ ॥ गृद्धांवाससिसंभ्रान्तां मेनकांमुनिसत्तमः । अनिर्देश्यवयोरूपामपश्यद्विवृतांतदा ॥६॥ तस्यारूपगुणान्दृष्ट्वा सतुविप्रर्षभस्तदा । चकारभावंसंसर्गात्कामस्यवशंगतः ॥ ७ ॥ न्यमन्त्रयतचाप्येनां साचाप्यैच्छदनिन्दिता । तौतत्रसुचिरंकालं सुभौव्याहरतांतदा ॥८॥ रममाणौयथाकामं यथैकदिवसंतथा । जनयामाससमुनिर्मेनकायांशकुन्तलाम् ॥९॥ प्रस्थेहिमवतोरम्ये मालिनीमभितोनदीम् । जातमुत्सृज्यतंगर्भं मेनकामालिनीमनु ॥१०॥ कृतकार्याततस्तूर्णमगच्छच्छक्रसंसदम् । तंवने विजनेगर्भं सिंहव्याघ्रसमाकुले ॥ ११ ॥ दृष्ट्वाशयानंशकुनाः

उसके चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले वस्त्रको उड़ाया । ३ । वस्त्र के उड़तेही वस्त्रके पकड़नेके लिये लज्जा से वायुपर हँसतीहुई वह मधुरभाषिणी पृथ्वीपर अग्नि के समान तेजस्वी विश्वामित्र के देखते हुए बैठगई और विश्वामित्र ने उस विषम अवस्था में उत्तम वस्त्रलेने की इच्छा करतीहुई, चकित, जिसका रूप और वय कहना शक्ति से बाहरहै, नग्नमेनिका को देखा । ६ । द्विज श्रेष्ठ विश्वामित्रने उसके रूप गुणको देखकर कामवशहोकर उस के साथ संसर्गकी इच्छाकी । ७ । और उसको अपनेसमीप बुलाया, और वह उत्तम स्वरूपवालीभी इच्छा प्रकट करनेलगी और दोनों ने बहुतकाल तक विहार किया । ८ । बहुतकालभी उनको एक दिन व्यतीतहोने के समान जानपड़ा उस ऋषि ने मालिनीनदी के किनारे हिमाचल के मनोहर स्थान में शकुन्तला नाम कन्याको उत्पन्न किया अपना कार्य साधन करके और गर्भ को मालिनीके किनारे छोड़कर मेनिका इन्द्रकी सभाको गई उस बालक को सिंह और व्याघ्र से भरे निर्जनवनमें सोयेहुए देखकर पक्षियों ने उस

and penances. Saluting the Rishi she began to sport before him. Just then the wind deprived her of her apparel white like the moon-beam. She thereupon ran as if in bashfulness, to catch it, pretending to be much annoyed. Vishwamitra saw all her movements and attitude. Seeing her naked he found that her features were faultless and handsome and her body had no marks of age upon it. Seeing her beauty and accomplishments, the great Rishi was possessed with desire, and expressed by signs that he desired her companionship. So he invited the woman of faultless features and she also accepted the invitation. They then passed a long time in each other's company and enjoyment of it as if it were only a day. The Rishi begot in Menika a daughter named Shakuntala. Menaka went to the banks of the river Malini cursing along a valley of the charming snow-covered mountains and there

समन्तात् पर्यवारयन । नेमांहिंस्युर्वनेवलां क्रव्यादामांसगृद्धिनः ॥ १२ ॥ पर्य्यांक्ष न्ततांतत्र शकुन्तापिनकात्मजाम् । उपस्पष्टुंगतश्चाह मपश्यं शयितामिताम् ॥ १३ ॥ निर्जनेविपिनेरम्ये शकुन्तैःपरिवारिताम् । आनयित्वाततश्चैनां दुहितृत्वेन्यवेशयम् ॥ १४ ॥ शरीरकृत्प्राणदाता यस्यचान्नानिभुञ्जते । क्रमेणैतेत्रयोऽप्युक्ताः पितरोधर्मशासने ॥ १५ ॥ निर्जनेतुवनेयस्माच्छकुन्तैःपरिवारिता । शकुन्तलेतिनामास्याः कृतंचापितत्तोमया ॥ १६ ॥ एवंदुहितरंविद्धि ममविप्रशकुन्तलाम् । शकुन्तलाच पितरं मन्यतेमाम निंदिता ॥ १७ ॥ शकुन्तलोवाच ॥ एतदाचष्टपृष्टःसन् ममजन्ममहर्षये । सुतांकण्वस्यमामेवं विद्धित्वंमनुजाधिप ॥ १८ ॥ कण्वंहि पितरंमन्ये पितरंस्वमजानती । इतितेकथितंराजन् यथावृत्तंश्रुतंमया १९ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शकुन्तलोपाख्याने
द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

चारों ओरसे घेरलिया और मांसाहारी जीवों से उसकी रक्षाकी । १२ । मेनिकाकी बेटी शकुन्तलाकी उसजगह पक्षियोंने रक्षाकी मैं (कण्व) ने स्नानको जातेहुए निर्जनवन में पक्षियों से घिरीहुई इस कन्या को देखा तत्पश्चात् उसको आश्रम में लाकर अपनी पुत्री बनाया । १४ । शरीरका उत्पन्न करनेवाला प्राणोंका रक्षक और अन्न देनेवाला यह तीन पिता धर्मशास्त्र में कहे हैं । १५ । निर्जनवन में पक्षियों से रक्षितहोने से इसकानाम शकुन्तला रक्खा । १६ । इसीप्रकार वह मेरी बेटीहुई और शकुन्तलाभी मुझको अपना पिता मानती है । १७ । शकुन्तला ने कहा उस ऋषि से पूछे जाकर कण्वऋषि ने मेरे जन्मका वृत्तान्त कहा, हे राजन् इसीप्रकार मैं कण्वकी बेटीहूं । १८ । मैं अपने पिताको न जानकर कण्वकोही पिता मानती हूं, हे राजन् ! जैसा वृत्तांत मैंने सुनाथा बस सब तुझसे कह दिया १९ ॥

she gave birth to her daughter. She cast the new born babe on the river bank and went away. Seeing it lying in that deserted forest, abounding in lions and tigers, a number of vultures surrounded the infant to protect it from Rakshases and carnivorous animals. The rishi had gone there to bathe and beheld the infant in the solitude of wilderness surrounded by vultures and bringing home the infant he made her his daughter. (There are three fathers according to the Dharmshastras, viz, the maker of body, the protector of life, and the giver of food.) And because he found her surrounded by Shakuntas (birds) he named her Shakuntala. Thus Shakuntala was the daughter of Kanwa. Such was the account of Kanwa Rishi with regard to Shakuntala and thus Shakuntala was called Kanwa's daughter who never knew her real father.

दुष्मन्तउवाच । सुव्यक्तंराजपुत्री त्वंयथाकल्याणिभाषसे । भार्यामेभवसुश्रोणि ब्रूहि किंकरवाणिते ॥ १ ॥ सुवर्णमालांवासांसि कुण्डलपरिहाटके । नानापत्तनजेशुभ्रे मणिरत्नचशोभन ॥ २ ॥ आहरामितवाद्याहं निष्कादीन्यजिनानिच । सर्वंराज्यंतवाद्यास्तु भार्यामेभवशोभने ॥ ३ ॥ गांधर्वेणचमांभीरु विवाहेनैहिसुन्दरि । विवाहानांहिरम्भोरु गांधर्वःश्रेष्ठउच्यते ॥ ४ ॥ शकुन्तलोवाच । फलाहारोगतोराजन् पितामेइत आश्रमात् । मुहूर्तंसम्प्रतीक्षस्व समांतुभ्यंप्रदास्यति ॥ ५ ॥ दुष्मन्तउवाच इच्छामि त्वांवरारोहे भजमानामनिन्दिते । त्वदर्थंमांस्थितंविद्धि त्वद्गतंहिमनोमम ॥६॥ आत्मनोबन्धुरात्मैव गतिरात्मैवचात्मनः । आत्मनैवात्मनोदानं कर्तुमर्हसिधर्मतः ॥७॥ अष्टावेवसमासेन विवाहाधर्मतःस्मृताः । ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः ८॥

अध्याय ७३ ॥

हे कल्याणि तेरे कहने से विदितहुआ कि तू राजपुत्री है हे उत्तम कमरवाली तू मेरी स्त्री बन और बतला मैं तेरा क्या प्रिय कार्य करूं । १ । सोनेकी माला, वस्त्र, सोने के कुंडल, अनेक देशोंमें उत्पन्न शोभायमान मणि और रत्न, गले के भूषण, उत्तम चर्म तेरे हेतु लाताहूं सब राज मेरा तेराहो, हे शोभने तू मेरी स्त्रीहो । ३ । हे भीरु सुन्दरि तू गांधर्व विवाह से मुझको प्राप्तहो, हे केलेकी खंभकीसी जंघावाली सम्पूर्ण बिवाहों में गांधर्व बिवाह श्रेष्ठ कहाहै । ४ । शकुन्तला ने कहा हे राजन् ! इस आश्रम से मेरापिता फल लेने गया है थोड़ी देर ठहर मेरा पिता मुझको तुझे देदेगा । ५ । दुष्यन्त ने कहा हे उत्तम जंघावाली अनिन्दित तू अभी मेरी इच्छा पूर्ण कर मैं तेरे हेतु यहां ठहरा हूं और मेरा मन तुझमें लगाहै । ६ । अपना बन्धु और अपनी गति अपना आत्मा है अपने शरीर का दान धर्मानुसार तू आप कर सकता है । ७ । संक्षेपसे धर्मानुसार । ८ ।

CHAPTER LXXIII

Vaishampayan continued, King Dushyant having heard all this said, "It is well said, princess! Be my wife, beautiful one! What shall I do for thee? Golden garlands, robes, ear-rings of gold, the whitest and handsomest pearls, fine carpets, I shall present thee this very day. Accept the offer of my kingdom, O beautiful one. Come to me and become my wife according to the Gandharv form. O thou of tapering thighs, of all modes of marriages, the Gandharv is best." Shakuntala replied, "My father has gone from this asylum to fetch fruit. Wait O king, but a moment, he will bestow me on thee." And Dushyant replied, "O thou beautifnl and faultless

गांधर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमःस्मृतः । तेषांधर्म्यान्यथापूर्वं मनुःस्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥ ९ ॥ प्रशस्तांश्चतुरःपूर्वान् ब्राह्मणस्योपधारय । षडानुपूर्व्याक्षत्रस्य विद्धिधर्म्यान न्दिते ॥ १० ॥ राज्ञान्तुराक्षसोप्युक्तो विट्शूद्रेष्वासुरःस्मृतः । पञ्चानांतुत्रयोधर्म्या अधर्म्यौद्वौस्मृताविह॥११॥ पैशाचश्चासुरश्चैव नकर्त्तव्यौकदाचन । अनेनविधिनाकार्यो धर्मस्यैषागतिःस्मृता ॥ १२ ॥ गान्धर्वराक्षसौक्षत्रे धर्म्यौतौमाविशङ्किथाः । पृथग्वा यदिवामिश्रौकर्त्तव्यौनात्रसंशयः ॥ १३ ॥ सात्वंममसकामस्य सकामावरवर्णिनी । गांधर्वेणविवाहेन भार्याभवितुमर्हसि ॥१४॥ शकुन्तलोवाच । यदिधर्मपथस्त्वेषयदि चात्माप्रभुर्मम । प्रदानेपौरवश्रेष्ठ शृणुमेसमयंप्रभो ॥ १५ ॥ सत्यंमेप्रतिजानीहियथा

प्रकार के विवाह हैं, ब्राह्म दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच इन आठों में हर एक पिछलेसे पहला विशेष धर्मयुक्त स्वायम्भू मनु ने कहाहै। ९। पहले चार विवाह ब्राह्मणके लिये उत्तमहैं हे अनन्दित पहले छै क्षत्रिय के लिये हैं। १०। राजाओं को राक्षस विवाहभी कहा है, वैश्य और शूद्र के लिये आसुरभी कहा है, पहले पांचों में तीन धर्मयुक्त और अन्त के दोअधर्महैं, पैशाच और आसुर बिवाह कदापि न करे इस विधि से बिवाह करना धर्मकी परमगति है । १२ । क्षत्रिय के लिये गांधर्व और राक्षस बिवाह चाहे पृथक्हों चाहे मिली हुई रीति से धर्मयुक्त हैं इस में संदेह मतकर । १३ । हे उत्तम वचनवाली तू मेरी और अपनी कामना पूर्ण कर और गांधर्व रीति से तू मेरी भार्या हो सकती है १४ शकुन्तला ने कहा यदि तेरी बात धर्मयुक्त है और मैं तुझ को अपनादान करसक्ती हूँ तो हे पुरुवंशियों में श्रेष्ठ मैं इस नियम से अपना दान

---

one, I desire to make thee my companion. Know thou that I exist for thee and my heart is in thee. (One is certainly one's own friend and certainly may depend upon one's own self.) Therefore according to law thou canst certainly bestow thyself. (There are in all eight kinds of marriages, viz., Brahm, Daivya, Arsh, Prajapatya, Asur, Gandharv, Rakshas and Paishach.) The self created Manu has fixed the appropriate forms for several orders, Know then, O thou of faultless features that the first four of these are fit for Brahmans and the first six for Kshatrias for whom even the Rakshas form is permissible. The Asur form is permitted to the Vaishyas and the Shudras. Of the first five, three are preferable. The other two, the Paishach and the Asura forms being improper should never be practised. One may act according to these institutes of religion. The Gandharva and the Rakshas forms are allowed to Kshatrias.

वक्ष्याम्यहं रहः। मयिजायेतयःपुत्रः सभवेत्त्वदनन्तरः ॥ १६ ॥ युवराजो महाराज
सत्यमेतद्ब्रवीमिते। यद्येतदेवंदुष्यन्त अस्तुमेसङ्गमस्त्वया ॥ १७॥ वैशम्पायनउवाच
एवमस्त्वितितांराजा प्रत्युवाचाविचारयन्। अपिचत्वांहिनेष्यामि नगरंस्वंशुचिस्मिते
॥ १८ ॥ यथात्वमर्हासुश्रोणि सत्यमेतद्ब्रवीमिते। एवमुक्त्वासराजर्षि स्तामनिन्दित
गामिनीम् ॥ १९ ॥ जग्राहविधिवत्पाणा वुवासचतयासह। विश्वास्यचैनांसप्रायाद-
ब्रवीच्चपुनःपुनः ।२०। प्रेषयिष्येतवार्थाय वाहिनींचतुरंगिणीम्। तयात्वानाययिष्यामि
निवासंस्वंशुचिस्मिते ॥२१॥ वैशम्पायनउवाच। इतितस्याःप्रतिश्रुत्यसनृपोजनमेजय।
मनसाचिन्तयनप्रायात् काश्यपंप्रतिपार्थिवः ॥ २२ ॥ भगवांस्तपसायुक्तःश्रुत्वाकिन्नु
करिष्यति। एवंसञ्चिन्तयन्नेव प्रविवेशस्वकंपुरम् ॥ २३ ॥ मुहूर्त्तयातेतस्मिंस्तु क-

---

करती हूँ और इस प्रतिज्ञा को जो एकान्त में तुझ से कहूँगी पालन करने का दृढ़ निश्चय कर कि तेरे उपरान्त मुझ से उत्पन्न पुत्र राजा होगा, यदि यह तुझको स्वीकारहो तो मेरे साथ समागम कर १७ वैशम्पायन ने कहा, बिना विचारे राजा ने शकुन्तला से एवमस्तु कहा हे सुन्दर हास्ययुक्त मैं तुझसे सत्य कहताहूँ कि तेरासम्मान तेरी योग्यतानुसार करके नगर में रक्खूंगा यह कह उस राजर्षि ने विधि पूर्वक शकुन्तला का पाणिग्रहण किया और उस से युक्तहुआ और उसके बारंबार ऐसा विश्वास दिलाकर चलागया २० कि तेरे लिये चतुरंगिणी सेनाको भेजूंगा और उस सेना के साथ तुझ को अपने स्थान में बुलाऊंगा २१ वैशम्पायन ने कहा हे जन्मेजय इसप्रकार शकुन्तलासे प्रतिज्ञाकर मन में कण्व ऋषिको विचारताहुआ राजा दुष्यन्त चलागया २२ भगवान कण्व ऋषि तपस्या से युक्त हैं इसमेरे वृत्तान्त को सुन न जाने क्या करें इसप्रकार से चेतेहुये राजा ने अपने

Thou needst not entertain the least apprehension. Our wedding may take place according to any of the above mentioned forms. Being both of us full of desire, thou canst be my wife according to the Gandharv form." Having heard this Shakuntala replied, "If I am free to dispose myself and this course be one sanctioned by religion, hear my proposal, O thou formost of the Paurav race. Promise me one thing—though we are alone, the son born in me shall become thy heir. On this term and this alone, shall our union take place" The king at ance promised this without hesitation, saying, "I shall take thee, my dear, to my capital. I say truly that thou deservest all that I have promised thee." So saying Dushyant wedded Shakuntala of graceful tread and she knew him as her husband. He then bade her farewell, saying, "I shall send

ण्वोप्याश्रममागमत् । शकुन्तलाचापितरंह्रियानोपजगामतम् ॥ २४ ॥ विज्ञायाथचतां कण्वो दिव्यज्ञानोमहातपाः । उवाचभगवान्प्रीतःपश्यन्दिव्येनचक्षुषा॥२५॥त्वयाऽद्य भद्रेरहसि मामनादृत्ययःकृतः । पुंसासहसमायोगो नसधर्मोपघातकः ॥ २६ ॥ क्षत्रियस्यहिगांधर्वो विवाहःश्रेष्ठउच्यते । सकामायाःसकामेन निर्मन्त्रोरहसिस्मृतः ॥२७॥ धर्मात्माचमहात्माच दुष्यन्तःपुरुषोत्तमः । अभ्यगच्छःपतियत्वं भजमानं शकुन्तले ॥ २८ ॥ महात्माजनितालोके पुत्रस्तवमहाबलः । यइमांसागरापांगीं कृत्स्नांभोक्ष्यति मेदिनीम् ॥ २९ ॥ परञ्चाभिप्रयातस्य चक्रंतस्यमहात्मनः । भविष्यत्यप्रतिहतं सततंचक्रवर्तिनः ॥ ३० ॥ ततःप्रक्षाल्यपादौसा विश्रांतंमुनिमब्रवीत् । विनिधायततो

नगर में प्रवेश किया । २३ । राजाके जानेपर कण्वऋषि अपने आश्रम में आये और शकुन्तला लज्जा से पिताके समीप न गई २४ बड़े तपस्वी कण्व ऋषि ने दिव्यदृष्टि से इस विषय को जान लिया और प्रसन्नता पूर्वक कहा २५ हे भद्रे आज तूने मेरेबिना जिस पुरुष के साथ संयोग कियाहै वह धर्मनाशक नहीं है २६ सकाम क्षत्रिय स्त्रीपुरुषों का गांधर्व विवाह एकान्त में बिना मन्त्रोच्चारण के श्रेष्ठ कहाहै २७ धर्मात्मा औरमहात्मा पुरुष श्रेष्ठ राजा दुष्यन्तने इच्छा से तुझको प्राप्त किया इसकारण लोक में महाबल और महात्मा पुत्र उत्पन्नहोगा और समुद्र पर्यंत पृथ्वीपर राज्यकरेगा २९ उसकी सेना चढ कर शत्रुको सदा जयकरेगी इसकारण वह चक्रवर्ती कहलावेगा ३० तत्पश्चात् शकुन्तला

---

my troops to escort thee to my capital, O thou of fair smiles." Vaishampayan continued, "O Janmejaya, having so promised to her the king went away. And as he went home he began to think of Kanwa and his thoughts began to run like this, "What will the noble ascetic say when he comes to know all?" Among such thoughts he entered his capital. The moment the king had left, Kanwa arrived at his abode. But Shakuntala, from a sense of shame, did not go out to receive her father and the great Rishi knew all by his spiritual knowledge. He was much pleased in his mind and said to her, "Amiable one, thy act of today, done in secret and without waiting for me, was not destructive of thy virtue. Indeed, union according to the Gandharv form with the desire of both parties, without Mantras of any kind, is the best mode for the kshatrias. Dushyant is a great and virtuous man. Thou hast accepted him for thy husband. The son born of thee shall be of world wide fame and shall sway the earth bounded by the Ocean. And his forces shall be irresistible." Shakuntala then approached hisfati-

भारं सन्निधाय फलानिच ॥ ३१ ॥ शकुन्तलोवाच । मयापतिवृतोराजा दुष्मन्तःपुरुषोत्तमः। तस्मैससचिवायत्वं प्रसादंकर्त्तुमर्हसि ॥३२॥ कण्वउवाच । प्रसन्नएवतस्याहं त्वत्कृतेवरवर्णिनि। गृहाणचवरंमत्तस्त्वंशुभेयदभीप्सितम् ॥३३॥ वैशम्पायनउवाच ततोधर्मिष्ठतांवव्रेराज्याच्चास्खलनंतथा। शकुन्तलापौरवाणांदुष्मन्ताहितकाम्यया ।३४।

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शकुन्तलोपाख्याने

त्रिसप्तोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

वैशम्पायन उवाच । प्रतिज्ञायतु दुष्मते प्रतियातेशकुन्तला । गर्भंसुषाववामोरुः कुमारममितौजसम् ॥ १ ॥ त्रिषुवर्षेषुपूर्णेषु दीप्तानलसमद्युतिम् । रूपौदार्य्यगुणोपेतं दौष्मन्तिंजनमेजय ॥ २ ॥ जातकर्मादिसंस्कारं कण्वःपुण्यकृतांवरः। विधिवत्

ने मुनि के चरण धोये, और फलादिकाबोझ रखकर मुनि के विश्राम लेनेके पश्चात् शकुन्तला ने कहा कि पुरुष श्रेष्ठ राजा दुष्यन्त को मैंने अपना पति बनाया, मन्त्रियों सहित राजापर आप कृपाकीजिये ३२ कण्वऋषि ने कहा हे मधुरभाषिणी तेरेकारण राजा दुष्यन्तसे मैं प्रसन्नही हूं हे शुभे जो तेरी इच्छाहो मुझसे मांग ३३ वैशम्पायनने कहा—तत्पश्चात् दुष्यन्त के हितकी इच्छा से शकुन्तला ने पुरुवंशियों के राज्य और धर्मकीस्थिति का वर मांगा ३४ ॥

अध्याय ७४ ॥

वैशम्पायनने कहा दुष्यन्तके शकुन्तला से प्रतिज्ञा करके चलेजाने पश्चात् सुन्दरी शकुन्तला ने तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किया। १ । तीन वर्ष पूर्णहोने पर प्रदीप्त अग्नि के समान तेजस्वी रूप और उदारतादि गुण युक्त दुष्यन्तके वीर्य से शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न

---

gued father, washed his feet, took down the weight he had on and placing the fruits in proper order she said to him, "It behoves thee to impart thy grace to Dushyant, my husband." Kanwa replied, "For thy sake, O beautiful creature, shall I bless him; ask from me any other boon that thou desires." Vaishampayan said, "Shakuntala thereupon moved by the desire to do Dushyant good, asked the boon that the Paurav monarchs might ever be virtuous and never be deprived of their throne."

CHAPTER LXXIV

Vaishampaya said, "After Dushyant had left the asylum giving those promises to Shakuntala she became the mother of a boy of great energy. At three years of age he was in splendour like

कारयामास वर्द्धमानस्यधीमतः ॥ ३ ॥ दन्तैःशुक्लैःशिखरिभिः सिंहसंहननोमहान् ।
चक्रांकितकरःश्रीमान्महामूर्द्धामहाबलः ॥ ४ ॥ कुमारोदेवगर्भाभः सतत्राशुव्यवर्द्धत ।
षड्वर्षएवबालः सकण्वाश्रमपदंप्रति ॥५॥ सिंहव्याघ्रान्वराहांश्च महिषांश्चगजांस्तथा ।
बबन्धवृक्षे बलवानाश्रमस्यसमीपतः ॥ ६ ॥ आरोहन्दमयंश्चैव क्रीडंश्चपरिधावति ।
ततोऽस्यनामचक्रुस्ते कण्वाश्रमनिवासिनः ।७। अस्त्वयंसर्वदमनः सर्वंहिदमयत्यसौ ।
ससर्वदमनोनाम कुमारःसमपद्यत ॥ ८ ॥ विक्रमेणौजसाचैव बलेनचसमन्वितः । तं
कुमारमृषिर्दृष्ट्वा कर्मचास्यातिमानुषम् ॥९॥ समयोयौवराज्यायेत्यब्रवीच्च शकुन्तलाम् ।
तस्यतद्बलमाज्ञाय कण्वःशिष्यानुवाचह १० शकुन्तलामिमांशीघ्रं सहपुत्रामितोगृहात् ।

और छिन २ बढ़तेहुए बुद्धिमान कुमारके जातकर्मादि संस्कार विधि पूर्वक पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ कण्व ऋषि ने कराये । ३ । उसबालक के दांत सफेद शिखराकार थे, गतिसिंह के समान, हाथमें चक्रकी रेखावाला श्रीमान, शोभायुक्त शोभावाला, बलवान, देवताओं के गर्भकी समान कान्तिवाला वह आश्रम में शीघ्र बढ़नेलगा । ६ । बर्षकेही बालकने कण्वऋषि के आश्रम में सिंह, व्याघ्र, बराह, भैंसे और हाथियों को वृक्षोंसे बांधा । ६ । किसी पर चढता, किसी को दण्ड देता, किसी के साथ खेलताहुआ वह बालक आश्रम में फिरताथा और आश्रम बासियों ने उसका नाम सर्वदमन किया क्योंकि वह सबको बल से दमनकरता था । ८ । विक्रम, तेज और बलयुक्त शक्ति से बाहर काम करते हुए देखकर कण्व ऋषि ने शकुन्तलासे कहा कि इसकी अवस्था अब युवराज पदपर आरूढ होनेकी है और उसके बल को देखकर ऋषि ने अपने शिष्योंसे कहा । १० । पुत्रसहित

---

the fire and possessed of beauty, magnanimity and every accomplishment. The virtuous Kanwa caused all the religious rites to be performed as the boy grew up. The boy gifted with pearly teeth and curly locks, capable of slaying lions even at that age, having all auspicious signs and proud forehead, drew up in beauty and strength like the child of a god. At six he would seize lions, tigers, bears, buffaloes and elephants. He rode, seized and pursued animals in a sportive mood and was named Sarvdaman (the restrainer of all) by the ascetics living there. He was endued with great strength, energy and prowess and so was called Sarvadaman. The rishi seeing the boy and marking his extraordinary prowess told Shakuntala that time had come for his installation as hair-apparent. He then said to his disciples, " Escort Shakuntala with her son without delay to her husband. Women, should not live long with their

भर्त्तुःप्रापयतागारं सर्वलक्षणपूजिताम् ॥११॥ नारीणांचिरवासोहि बान्धवेषुनरोचते।
कीर्तिचारित्रधर्मघ्नस्तस्मान्नयतमा चिरम् ॥ १२ ॥ तथेत्युक्त्वातुतेसर्वे प्रातिष्ठन्तमहौ-
जसः। शकुन्तलांपुरस्कृत्य सपुत्रांगजसाह्वयम् ॥ १३ ॥ गृहीत्वामरगर्भाभं पुत्रंकम
ललोचनम्। आजगामततःशुभ्रंदुष्यन्तं विदितादुनात् ॥ १४ ॥ अभिसृत्यचराजानं
विदिताचप्रवेशिता। सहतेनैवपुत्रेण बालार्कसमतेजसा ॥ १५ ॥ निवेदयित्वातेसर्वे
आश्रमंपुनरागताः। पूजयित्वा यथान्यायमब्रवीच्चशकुन्तला ॥१६॥ अयंपुत्रस्त्वया
राजन् यौवराज्येऽभिषिच्यताम् । त्वयाह्ययंसुतो राजन्मय्युत्पन्नःसुरोपमः यथास-
मयमेतस्मिन् वर्त्तस्वपुरुषोत्तम ॥ १७ ॥ यथासत्सङ्गमेपूर्वं यःकृतःसमयस्तथा। तंस्मर
स्वमहाभाग कण्वाश्रमपदंप्रति ॥ १८ ॥ सोऽथश्रुत्वैवतद्वाक्यं तस्याराजास्मरन्नपि।

सम्पूर्ण लक्षणयुक्त शकुन्तला को मेरेआश्रम से लेजाकर शीघ्र इस के पतिके पास पहुँ-
चाओ । ११ । स्त्रियोंका बान्धवों में बहुत दिन रहना अच्छा नहीं होता और कीर्त्ति,
स्वभाव और पतिव्रता धर्मका नाश करनेवाला होताहै इसकारण इसे शीघ्र लेजाओ।१२।
शिष्य तथास्तु कहकर पुत्र सहित शकुन्तला को हस्तिनापुर लेगये । १३ । देवताओंके
सदृश कांतिवाले कवल नेत्रवाले पुत्र सहित बन में मिलेहुए राजा दुष्यन्त के पास शकु-
न्तला गई । १४ । खबर कराके ग्रहमें प्रवेश कराई हुई उदयहोते हुए सूर्य के समान
पुत्रवाली शकुन्तला राजा के समीपगई और ऋषि के शिष्य राजासे कहकर आश्रम को
चले गये, शकुन्तलाने पतिका यथा योग्य सत्कार करके कहा । १६ । हे राजन् ! इसपुत्र
को युवराज बनाओ, तेरेवीर्य से देवताओंके समान यह मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ है, हेपुरुष
श्रेष्ठ अपनी प्रतिज्ञानुसार इस पुत्रसे बर्तावकर । १७ । कण्वऋषि के आश्रम में हेमहा-
भाग जो प्रतिज्ञा मुझ से संगम के समयकीथी उसको यादकर । १८ । राजाने प्रतिज्ञा

---

paternal kinsmen. Such residence is destructive of their reputation, good conduct and virtue. Therefore you must not delay in taking her hence. The disciples of the Rishi, obeyed his orders and went to Hasthinapur. Shakuntala left the woods of her first acquaintance with Dushyant in company of her son. On reaching the king's palace, she and her son of splendour like the rising Sun, were introduced to the king. The disciples of the rishi left them there and went home. Shakuntala after paying her respect to the king, said, "This is thy son, king. Install him as heir apparent. This child of a god, is begot by thee in me. Therefore fulfil the promise thou gavest me. Recall to thy mind the agreement you made at the time of thy union with me in the asylum of Kanwa."

अब्रवीन्नस्मरामीति कस्यत्वंदुष्टतापसि ॥ १९ ॥ धर्मकामार्थसम्बन्धं नस्मराभित्वया सह। गच्छवातिष्ठवाकामं यद्वापीच्छासितत्कुरु ॥ २० ॥ सैवमुक्तावरारोहा व्रीडितेवतपस्विनी। निःसंज्ञेवचदुःखेन तस्थौस्थूणेवनिश्चला ॥ २१ ॥ संरम्भामर्षताम्राक्षी स्फुरमाणौष्ठसंपुटा। कटाक्षैर्निर्दहन्तीव निर्य्यग्राजानमैक्षत ॥ २२ ॥ आकारंगूहमानाच मन्युनाचसमीरिता। तपसासम्भृतंतेजो धारयामासवैतदा ॥ २३ ॥ सामुहूर्त्तमिवध्यात्वा दुःखामर्षसमन्विता। भर्त्तारमभिसम्प्रेक्ष्य क्रुद्धावचनमब्रवीत् ॥ २४ ॥ जानन्नपिमहाराज कस्मादेवंप्रभाषसे। नजानामीति निःशंकयथान्यःप्राकृतोजनः २५। अत्रतेहृदयंवेद सत्यस्यैवानृतस्यच। कल्याणंवदसाक्ष्येण मात्मानमवमन्यथाः ॥२६॥ योऽन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते। किंतेननकृतंपापं चौरेणात्मापहारिणा।

याद दिलाने परभी कहा कि मुझको कुछ याद नहीं है दुष्ट तपस्विनी तू किसकी है १९ मुझे तेरेसाथ कोई धर्म अर्थ या कामका सम्बन्ध नहीं है तू अपनी इच्छानुसार यहांरह या चली जा या जो चाहे सो कर । २० । वह उत्तम जंघावाली तपस्विनी इसप्रकार कहने पर लज्जा से अचेतहो खंभे के समान निश्चल खड़ी रहगई । २१ । क्रोध के वेग से आंखें लालहोगईं, होठ फड़कने लगे, कटाक्षों से मानो उसको भस्म करदेगी इसप्रकार तिरछी दृष्टि से राजा को देखनेलगी । २२ । क्रोध से प्रदीप्त आकार को छिपातीहुई तपस्या से संचित तेजका उसने प्रकाश किया । २३ । दुःख और क्रोधयुक्त शकुन्तला ने कुछ देर सोचकर क्रोधसे पतिकी ओर देखकर यह कहा २४ हे महाराज, जानताहुआभी साधारण मनुष्यकी समान यह कैसे कहा " मैं नहीं जानता,, २५ इस विषय के सत्य और असत्य को तेरा हृदय जानता है, साक्षी धर्म से सत्यबोलकर अपनी आत्मा का अपमान मत कर २६ जो पुरुष असत्य व्यवहार करता है वह अपनी आत्मा का नाश

The king hearing this and remembering all, said, "I donot remember anything. Who art thou, wicked woman, in ascetic guise? I donot remember having contracted any connection with you of Dharm, Kam or Arth. You may go or stay at thy pleasure." Hearing this the fair complexioned fair one became abashed. Grief deprived her of consciousness and she remained standing there like a wooden post. Soon after her eyes became red like copper and her lips began to quiver. She seemed to burn the king by her occasional glances. By an extraordinary effort she subdued her rising wrath. Pondering for a moment and possessed with sorrow and rage she thus addressed her lord in anger, "Knowing every thing, O monarch, how canst thou like a degraded being

॥ २७ ॥ एकोऽहमस्मीतिचमन्यसे त्वंनहृच्छयं वेत्सिमुनिंपुराणम् । योवेदिताकर्मणः पापकस्य तस्यान्तिकेत्वंवृजिनंकरोषि ॥ २८ ॥ मन्यतेपापकंकृत्वा नकश्चिद्वेत्तिमामिति । विदन्तिचैनंदेवाश्च यश्चैवांतरपूरुषः ॥ २९ ॥ आदित्यचन्द्रावनिलानलौच द्यौर्भूमिरापोहृदयंयमश्च । अहश्चरात्रिश्चउभेचसन्ध्ये धर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥ ३० ॥ यमो वैवस्वतस्तस्य निर्यातयतिदुष्कृतम् । हृदिस्थितःकर्मसाक्षी क्षेत्रज्ञोयस्यतुष्यति ॥ ३१ ॥ नतुतुष्यतियस्यैषपुरुषस्यदुरात्मनः । तंयमःपापकर्माणं विघातयतिदुष्कृतम् ॥ ३२ ॥ योऽवमन्यात्मनात्मान मन्यथा प्रतिपद्यते । नतस्यदेवाःश्रेयांसो यस्यात्मापिनकारणम् ॥ ३२ ॥ स्वयंप्राप्तेतिमामेवं माऽवमंस्थाःपतिव्रताम् । अर्च्यार्हांनार्चयसिमां स्वयंभार्यामुपस्थिताम् ॥ ३३ ॥ किमर्थंमांप्राकृत वदुपप्रेक्षसिसंसदि । नखल्वहमिदं शून्ये रौमिकिंनशृणोषिमे ॥ ३४ ॥ यदिमेयाचमानाया वचनंनकरिसि । दुष्मन्त

करनेवाला क्या पाप नहीं करता २७ हे राजन् ! तू समझता है कि मैंही सब कर्मों का प्रधान हूं और प्राचीन मुनि अन्तर्यामी परमात्माको नहीं जानते थे जो अन्तर्यामी पापकर्मों का जानने वाला है उस के समीप रहकर तू पापकरता है २८ तू समझता है कि तेरा पाप प्रकट न होगा परन्तु अन्तर्यामी परमात्मा और देवता इस पापको जानते हैं । २९ । सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल, हृदय, यम, दिन, रात्रि, दोनों संध्या और धर्म मनुष्यों के कृत्यको जानते हैं ३० जिसका हृदय में स्थित, कर्मोंका साक्षी आत्मा संतुष्ट होता है उसके पापको वैवस्वत (यम) दूरकरता है ३१ जिस दुरात्माका आत्मा असंतुष्ट होताहै उस पापकारी के कर्मों का दंड यमराज देता है ३२ जो अपने आत्मा का अपमान कर विपरीत कार्य करता है उसका देवता भला नहीं करते क्योंकि उसका आत्मा श्रेष्ठ कारक नहीं ३३ हे राजन् मुझ पतिव्रता का स्वयं आई हुई समझकर अपमान मतकर, स्वयं आई हुई सत्कार योग्य मुझ भार्या का अपमान क्यों करता है

say that thou knowest not. Thy heart is a witness as regards the truth or falsehood of this matter. Speak the truth without debasing thyself. He who shows himself in false colours is a thief of his own self. Of what sin is he not capable? Thou thinkest that thou alone hast the knowledge of thy deed, but knowest thou not the Omniscient lies in thy heart? He knows all thy sins and thou dost sin in His presence. A sinner thinks he has no witness of his sins. But the gods and he who occupies every heart see him. The Sun, Moon, Air, Fire, Earth, Sky, Water, the heart, Yam, the day, the night, the morning, the evening and Dharm, are all witnesses. Yam the son of Surya, tortures those for their sins whose acts are not pleasing to the eyes of Narayan (God). He who misrepresents his self is never blessed by the gods or even by his own soul. I am devoted

शतधामूर्द्धा ततस्तेऽद्यस्फुटिष्यति ॥३५॥ भार्य्यांपतिःसंप्रविश्य सयस्माज्जायतेपुनः ।
जायायास्तद्धिजायात्वं पौराणाःकवयोविदुः ॥३६॥ यदागमवतः पुंसस्तदपत्यंप्रजा
यते । तत्तारयतिसन्तत्यात् पूर्वप्रेतान पितामहान ।३७। पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात् पितरं
त्रायतेसुतः । तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तः स्वयमेवस्वयम्भुवा ॥ ३८ ॥ पुत्रेणलोकान्जयति
पौत्रेणानन्त्यमश्नुते । अथपौत्रस्यपुत्रेण मोदन्तेप्रपितामहाः ॥ ३९ ॥ साभार्य्याया
गृहेदक्षा साभार्य्यायाप्रजावती । साभार्य्यायापतिप्राणा साभार्य्यायापतिव्रता ॥ ४० ॥
अर्द्धंभार्य्यामनुष्यस्य भार्य्याश्रेष्ठतमःसखा । भार्य्यामूलंत्रिवर्गस्य भार्य्यामूलंतरिष्यतः
॥ ४१ ॥ भार्य्यावन्तः क्रियावंतः सभार्य्यागृहमेधिनः । भार्य्यावंतःप्रमोदन्ते भार्य्यावंतः
श्रियान्विताः ॥४२॥ सखायःप्रविविक्तेषु भवन्त्येताःप्रियम्वदाः । पितरोधर्मकार्येषु

---

३४ क्यों साधारण पुरुष के समान इस सभा में मेरी ओर नहीं देखता, मैं एकान्त में नहीं रोरही हूं क्यों मेरेरोने को नहीं सुनता ३५ हे दुष्यंत मेरी प्रार्थना को यदि न सुनेगा तोतेरे सिरके अभी सौ टुकड़े होजायँगे ३६ पतिभार्या से संयुक्त होकर स्वयं जन्मलेता है इस कारण पुराण और वेदके जानने वाले विद्वान उसको जाया कहते हैं ३७ जो वेदोक्त मंथनादि कर्मों से संतान उत्पन्न होती है वह पूर्व पितृ पितामहोंको तारती है ३८ पुत्र पुन्नाम नर्क से पिताकी रक्षा करता है इस कारण ब्रह्माने स्वयं उस को पुत्र कहा है ३९ स्त्री वही है जो घरके कामों में चतुर सन्तानवाली, पतिको प्राण के तुल्य समझनेवाली, और पतिव्रताहो ४० भार्या मनुष्य का आधा अंग श्रेष्ठ तप सखा, अर्थ, काम का मूल और संसार से तरने का कारण है ४१ भार्या युक्त और क्रिया युक्त मनुष्य स्त्री के होने सेही गृहस्थी कहलाते हैं भार्यायुक्त पुरुषही आनन्दित और लक्ष्मीयुक्तहोते हैं ४२ प्रिय बोलने

---

to my husband. It is true I have come to you of my own accord. But for all that I am not to be treated with disrespect. A wife should always be treated with respect. Do you treat me like an ordinary woman because I come here of my own accord? You donot hear me. I am not crying in the wilderness. If thou refusest justice to me, O Dushyant, thy head this moment shall break in to hundred pieces. The husband entering the wife's womb comes out in the form of a son. Therefore a wife is called Jaya (she in whom one is born) in the Vedas. The son thus born to persons knowing the Vedas rescues the deceased ancestors and because a son rescues his ancestors from the hell called Put, therefore he is called Putra. One can win the three worlds and enjoy eternity by a son. By a grand son's son great grand fathers enjoy everlasting happiness. A

यथाऽस्ति तथा तेषु भवन्त्या:तस्य मातरः ॥ ४३ ॥ कांतारेष्वपि विश्रामो जनस्याध्वनिकस्य वै । यःसदारः सविश्वास्यस्तस्माद्दाराःपरागतिः ॥ ४४ ॥ संसरन्तमपि प्रेतं विषमेष्वेकपातिनम् । भार्यैवान्वेति भर्त्तारं सततंयापतिव्रता ॥ ४५ ॥ प्रथमंसंस्थिताभार्यापतिंप्रेत्यप्रतीक्षते । पूर्वंमृतञ्चभर्त्तारं पश्चात्साध्व्यनुगच्छति ॥४६॥ एतस्मात्कारणाद्राजन् पाणिग्रहण मिष्यते । यदाप्नोतिपतिर्भार्यां मिहलोकेपरत्रच ॥ ४७ ॥ आत्मात्मनैवजनितः पुत्र इत्युच्यतेबुधैः । तस्माद्भार्यांनरः पश्येन्मातृवत्पुत्रमातरम् ॥ ४८ ॥ भार्यायांजनितं पुत्रमादर्शेष्विवचाननम् । ह्लादतेजनिताप्रेक्ष्य स्वर्गंप्राप्येवपुण्यकृत् ॥४९॥ दह्यमाना मनो दुःखैर्व्याधिभिश्चातुरानराः । ह्लादन्तेस्वेषुदारेषु घर्मार्त्ताःसलिलेष्विव ॥ ५० ॥

वाली स्त्री एकान्त में मित्र, धर्म कार्य में पितर और दुःख में माताहोती है ४३ जङ्गल में स्त्री सहित पथिकका विश्राम विश्वासयोग्य है इसकारण स्त्रीही परमगति है ४४ इस देहको छोड़कर नरक में अकेले जातेहुए पुरुषको पतिव्रता भार्याही उद्धार करतीहै ४५ प्रथम परलोकको गई हुई स्त्री पतिकी प्रतीक्षा करती है और पहले मरेहुए पतिके पीछे पतिव्रता जाती है । ४६ । हे राजन् ! पतिको भार्या इस लोक और परलोक में प्राप्तहोती है इसी कारण विवाहकी इच्छा कीजाती है । ४७ । अपने आत्माको स्वयं उत्पन्न किया हुआ पुत्र कहलाता है इसकारण मनुष्य पुत्रकी माता, भार्या को अपनी जन्मभूमि समझे । ४८ । स्त्रीमें उत्पन्नहुए पुत्र को देखकर दर्पण में अपना मुख देखने और स्वर्ग पाने की समान पिता हर्षितहोताहै । ४९ । मानसिक दुःखोंसे जलतेहुए रोग पीडित अपनी स्त्रियों में ऐसे प्रसन्नहोते हैं जैसे धूप से घबराये हुए जल मिलने से । ५० । सुख,

true wife is skilful in household affairs, bears a son and is devoted to her husband and to no one else. (The wife is man's half, the first of friends, the root of Dharm, Arth, Kam, and salvation.) They who have wives can perform religious acts, can lead domestic lives, have the means of happiness and can achieve good fortune. Sweet speeched wives are friends on the occasions of joy, fathers at the time of religious acts, mothers in sickness and woe, and solace to the travellers even in the woods. He that has a wife is trusted by all. A wife therefore is the most valuable possession. A wife is devoted to her husband even after his death. A wife gone before waits for the husband. But if the husband goes before, the chaste wife follows close. For these reasons, O king, marriages are contracted. The husband enjoys the companionship of his wife in this world as well as in the other. Learned men say that the self is

सुसंरब्धोऽपिरामाणां नकुर्यादप्रियंनरः। रतिंप्रीतिञ्चधर्मञ्च तास्वायत्तमवेक्ष्यहि ॥५१॥
आत्मनोजन्मन क्षेत्रं पुण्यंरामाःसनातनम्। ऋषीणामपिकाशक्तिः स्रष्टुंरामामृतेप्रजाम्
॥ ५२ ॥ प्रतिपद्यपदासूनु धरणीरेणुगुण्ठितः। पितुराश्लिष्यतेऽङ्गानि किमस्त्यभ्य-
धिकंततः ॥ ५३ ॥ सत्वंस्वयमभिप्राप्तं साभिलाषमिमंसुतम्। प्रेक्षमाणंकटाक्षेण कि-
मर्थमवमन्यसे ॥ ५४ ॥ अण्डानिबिभ्रतिस्वानि नभिन्दन्तिपिपीलिकाः। नभरेथाः
कथन्नुत्वंधर्मज्ञःसन्स्वमात्मजम् ॥ ५५ ॥ नवाससांनरामाणां नापांस्पर्शस्तथाविधः।
शिशोरालिङ्ग्यमानस्य स्पर्शःसूनोर्यथासुखः ॥ ५६ ॥ ब्राह्मणोद्विपदांश्रेष्ठो गौर्वरिष्ठ
श्चतुष्पदाम्। गुरुर्गरीयसांश्रेष्ठः पुत्रःस्पर्शवतांवरः ॥ ५७ ॥ स्पृशतुत्वांसमाश्लिष्य
पुत्रोऽयंप्रियदर्शनः। पुत्रस्पर्शात्सुखतरः स्पर्शोलोकेनविद्यते ॥५८॥ त्रिषुवर्षेषुपूर्णेषु

प्रसन्नता और धर्मको स्त्रियोंके आधीन देखकर क्रोधवश होकरभी पुरुष स्त्रियों का अप्रिय न करे। ५१। अपनी पवित्र जन्मभूमि सदैव स्त्रियेंहैं ऋषिभी स्त्रीबिना प्रजा की उत्पत्ति नहीं करसकते। ५२। पृथ्वीकी धूलसे सना पुत्र समीप आकर यदि पिता से मिलताहै उस से अधिक और क्या सुख है। ५३। सो तू स्वयं आयेहुए, तेरी अभिलाषा कर के कटाक्ष से देखते हुए इस पुत्रका क्यों अपमान करता है। ५४। चैंटियें अपने अण्डोंकी रक्षा करती हैं और कुसमय नहीं तोड़तीं तू धर्मज्ञ होकर स्वयं आये हुए इस पुत्र का पालन क्यों नहीं करता। ५५। वस्त्रों, स्त्रियों और जल के स्पर्श से वह सुख नहीं प्राप्त होता है। ५६। दोपाओं में ब्राह्मण श्रेष्ठ है, चौपायोंमें गऊ श्रेष्ठहै, बड़ोंमें गुरू, छूने की वस्तुओं में पुत्र श्रेष्ठ है। ५७। यह तेरा प्यारापुत्र तुझको स्पर्शकरे पुत्रस्पर्श से अधिक कोई स्पर्श सुखदाई नहीं है। ५८। हे शत्रुनाशी तीनवर्ष पूर्णहोनेपर मैंने तेरेशोकदूर

born in the shape of a son. Seeing the face of a son, like his own in the mirror, one feels the happiness of attaining to heaven. Men troubled by grief and bodily pain feel as much pleasure in the company of their wives as those oppressed by heat in a cool bath. No one should displease his wife by his acts for happiness, joy, virtue, and every thing depend on the wife. A wife is the sacred field in which the husband is himself born. Even Rishis cannot create without women. No happiness is greater than the touch of a son even though his body be smeared with dust. Why dost thou treat with indifference a son who has come to thee himself and is casting wishful glances towards thee for climbing thy knees? Ants protect their eggs from breaking. Why should not thou, a virtuous being, support thy child? The touch of soft sandal paste, of women and

प्रजाताहमरिन्दम । इमंकुमारंराजेन्द्र तवशोकाविनाशनम् ॥ ५९ ॥ आहर्त्तावाजि मे-
धस्य शतसंख्यस्यपौरव । इतिवागंतरिक्षेमां सूतकेऽभ्यवदत्पुरा ॥ ६० ॥ ननुनामाङ्क
मारोप्य स्नेहाद्ग्रामांतरंगताः । मूर्ध्निपुत्रानुपाघ्राय प्रतिनंदन्तिमानवाः ॥ ६१ ॥
देवेष्वपिवदंतीमं मंत्रग्रामंद्विजातयः । जातकर्मणिपुत्राणां तत्रापिविदितंतथा ॥६२॥
अङ्गादङ्गात्सम्भवासि हृदयादधिजायसे। आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतम् ।६३।
जीवितंत्वदधीनंमे संतानमपिचाक्षयम् । तस्मात्त्वंजीवमेपुत्र सुसुखीशरदांशतम् ।६४।
त्वदङ्गेभ्यःप्रसूतोऽयं पुरुषात्पुरुषोऽपरः सरसीवामलेऽत्मानं द्वितीयंपश्यवैसुतम् ।६५।
यथाह्याहवनीयोऽग्निर्गार्हपत्यात्प्रणीयते । तथात्वत्तःप्रसूतोऽयं त्वमेकःसन्द्विधाकृतः
॥ ६६ ॥ मृगावकृष्टेनपुरा मृगयांपरिधावता । अहमासादिताराजन् कुमारीपितुराश्रमे
॥ ६७ ॥ उर्वशीपूर्वचित्तिश्च सहजन्याचमेनका । विश्वाचीचघृताचीच षडेवाप्सरसां

करने वाले इस पुत्रको उत्पन्न किया । ५९ । हे पुरुवंशी इसके प्रसव होनेपर आकाश
वाणी हुईथी कि यहलड़का सौ अश्वमेधयज्ञ करेगा । ६० । परदेशजाते हुए पुरुष पुत्रको
गोदमें बिठाते और उसका सिरसूंघ कर आनंदितहोते हैं । ६१ । ब्राह्मण पुत्रों के जातकर्म
संस्कार मे वेदके निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हैं यह तू जानता है । ६२ । हेपुत्र तू
मेरेअंग और हृदय से उत्पन्न हुआ और तू मेराही आत्मा पुत्रनाम से प्रसिद्ध है तू सौ
वर्षतकजी । ६३ । मेरा जीवन और वंशका अक्षय होना तेरे आधीन है इसकारण हेपुत्र
तू सुखपूर्वक १०० वर्षोतकजी । ६४ । हे राजन् अपने अंगोंसे उत्पन्न उस पुत्र में निर्मल
जल में अपने प्रति बिम्बकी नाईं देख । ६५ । जैसे हवनकी अग्नि गार्हपत्य अग्निसे ली
जाती है इसी प्रकार तू और तेरापुत्र वास्तव में एक है । ६६ । हे राजन् पहले शिकार
मृगके पीछे दौड़ते हुए मेरेपिताके आश्रम में मुझकुमारीको तूने वराथा । ६७ । उर्वशी

of water, is not so agreeable as that of a son locked in one's embrace. As the Brahman is the foremost of all bipeds, the cow of quadrupeds and the preceptor of superiors, so is the son the foremost of all objects agreeable to the touch. Clasp this child in thy embrace. There is nothing more agreeable in the world than the embrace of a son. I have brought forth this child, O chastiser of foes, capable of dispelling all the sorrow and have borne him in my womb for three years. At the time of his birth the words 'he shall perform a hundred horse-sacrifices' came from the sky. People going away from their homes take up the children on their laps and smell their foreheads. Thou knowest that Brahmans repeat the following Vedic hymns on the occasion of celebrating the rites of infancy;

वराः ॥ ६८ ॥ तासांसामेनकानाम ब्रह्मयोनिर्वराप्सराः । दिवःसम्प्राप्यजगतीं विश्वामित्रादजीजनत् ।६९। सामांहिमवतःप्रस्थे सुषुवेमेनकाप्सराः । अवकीर्यचमांयाता परात्मजमिवासती ॥७०॥ किन्नुकर्माशुभंपूर्वं कृतवत्यस्मि जन्मानि । यदहंबांधवैस्त्यक्ता बाल्येसम्प्रतिचत्वया ॥७१॥ कामंत्वयापारित्यक्ता गमिष्यामिस्वमाश्रमम् । इमन्तुबालं सन्त्यक्तुं नार्हस्यात्मजमात्मनः ॥७२॥ दुष्यन्तउवाच । नपुत्रमभिजानामि त्वयिजातं शकुंतले । असत्यवचनानार्यः कस्तेश्रद्धास्यतेवचः ॥ ७३ ॥ मेनकानिरनुक्रोशा बन्धकीजननीतव । ययाहिमवतःपृष्ठे निर्माल्यमिवचोज्झिता ॥ ७४ ॥ सचापिनिरनुक्रोशः क्षत्रयोनिःपितातव । विश्वामित्रोब्राह्मणत्वे लुब्धःकामवशंगतः ॥ ७५ ॥ मेनकाप्सरसांश्रेष्ठा महर्षीणांपिताचते । तयोरपत्यंकस्मात्त्वं पुंश्चलीवप्रभाषसे ॥७६॥

पूर्वचित्ति,सहजन्न्या, मेनका, विश्वाचि, घृताचि, यह छै अप्सराओंमें श्रेष्ठहैं ६८ उन छै में ब्रह्मयोनि मेनिका ने स्वर्ग से आकर विश्वामित्रके वीर्य से हिमाचल के शिखर में मुझ को उत्पन्न किया और मुझको वह स्नेह रहित दूसरेकी सन्तानकी सदृश छोड़कर गई ७० मैंने पहले जन्ममें क्या अशुभकर्म किया कि मैं बालकपनमें बांधवोंसे और अब तुझ से त्यागकी गई ७१ तुझ से त्याग कीहुई मैं अपने आश्रमको यथेष्ट चलीजाऊंगी परन्तु इस पुत्र बालक को छोड़ना तुझे योग्य नहीं है ७१ दुष्यन्तने कहा हे शकुन्तला तुझ में उत्पन्नहुए इस पुत्रको मैं नहीं जानता स्त्रियें असत्य वचन होती हैं तेरेइसवचनपर कौन विश्वास करेगा ७३ तेरी माता मेनिका दया रहित वेश्या है जिसने तुझको निर्माल्यके समान हिमालयकी शिखरमें छोड़ दिया और क्षत्रियजाति में उत्पन्न तेरा पिता विश्वामित्रभी दयारहितथा जो ब्राह्मणहोनेका लोभी कामवशहोगया ७५ अप्सराओंमें श्रेष्ठ मेनिका और महर्षियों में श्रेष्ठ तेरा पिता विश्वामित्र था उनकी संतान तू किस तरह व्यभिचारिणी के

"Thou art born, O son, of my body; sprung from my heart and art myself in the form of a son. Live for hundred years. My life and the continuation of my race depend on thee. Therefore, O son, live in happiness for a hundred years." He has sprung from thy body as a second self. Behold thy image in thy son as in a clear lake. As the sacrificial fire is kindled from the domestic one, so is this son born from thee. Though one, thou hast divided thyself. While chasing the deer, O king, you met me, a virgin in the asylum of my father. Urvasi, Purvachitti, Sahajanya, Menaka, Viswachi and Ghritachi are the six foremost Apsaras and chief among them is Menaka born of Brahma. She descended from heaven and after intercourse with Vaishwamitra gave birth to me in a valley of the

अश्रद्धेयमिदंवाक्यं कथयन्तीनलज्जसे। विशेषतोमत्सकाशे दुष्टतापसिगम्यताम् ।७७। क्वमहर्षिःसचैवाग्र्यः साप्सराक्वचमेनका । क्वचत्वमेवंकृपणा तापसीवेशधारिणी ॥ ७८ ॥ अतिकायश्चतेपुत्रो बालोऽतिबलवानयम् । कथमल्पेनकालेन शालस्तम्भ इवोद्गतः ॥ ७९ ॥ सुनिकृष्टाचतेयोनिः पुंश्चलीवप्रभाषसे। यदृच्छयाकामरागाज्जाता मेनकयाह्यसि ॥ ८० ॥ सर्वमेतत्परोक्षंमे यत्त्वंवदसितापसि । नाहंत्वामभिजानामि यथेष्टंगम्यतांत्वया ॥८१॥शकुन्तलोवाच॥ राजन्सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणिपश्यसि आत्मनोबिल्वमात्राणि पश्यन्नपिनपश्यसि ॥ ८२ ॥ मेनकात्रिदशेष्वेव त्रिदशाश्चानु मेनकाम् । ममैवोद्रिच्यतेजन्म दुष्यन्ततवजन्मनः ॥८३॥ क्षितावटसिराजेंद्र अंतरिक्षे चराम्यहम् । आवयोरन्तरंपश्य मेरुसर्षपयोरिव ॥ ८४ ॥ महेन्द्रस्यकुवेरस्य यमस्य

समान भाषणकरती है ७६ तुझ को इस न विश्वास करने योग्य वचन को कहते विशेष कर मेरेसामने लज्जा नहीं आती इस से हे दुष्ट तपस्विनी तू चलीजा ७७ कहां मेनिका और कहां तपस्विनी का रूप बनाये हुए इस प्रकारकी दुःखी तू ७८ तेरा यह पूत्र बड़ी देहवाला बलवान् बालक है कैसे थोड़े से कालमें शाल के खंभे के समान इतना बड़ा होगया ७९ तू नीचजाति और व्यभिचारिणी के समान भाषण करनेवाली है और अकस्मात् कामराग से तू मेनिका से उत्पन्न हुई है ८० हेतपस्विनी जो कुछ तू कहती है यह सब मुझको मालूम नहीं है मैं तुझको नहीं जानता तू अपनी इच्छानुसार चलीजा । ८१ । शकुन्तलाने कहा हेराजन् राई के दाने के बराबर पराये छिद्रोंको देखता है और बिल्वकी बराबर अपने दोषों को जानता हुआभी नहीं देखता ८२ मेनिका देवताओं से पृथक् नहीं है हेराजन तेरेजन्म से मेरा श्रेष्ठ है हे राजेन्द्र तू पृथ्वी में फिरता है और मैं आकाश में जासकतीहूं मेरे और अपने अन्तरको तू सुमेरु और सरसोंके समान समझ ८४ इन्द्र, कुबेर

Himalayas. She was cruel enough to leave me there as if I were another's child. What sin I was guilty of in my former life that I was cast off in childhood by my parents and now am being desert, by thee ? I am ready to go back to my father's asylum; but you should not cast off this child who is thine own. Hearing this, Dushyant said, " O Shakuntala, I do not remember that I ever begot this son in thee. Women are liars. Who will believe thee? The cruel and lewd Menaka is thy mother who cast thee away in the Himalayan valley like a cast off garland. Thy father too, the lustful Vishwamitr, a Kshtrya who was tempted to became a Brahman, is destitute of all affection. Yet Menaka is the first among

वरुणस्यच । भवनान्यनुसंयामि प्रभावंपश्यमेनृप ॥८५॥ सत्यश्चापिप्रवादोयं यंप्रवक्ष्यामि तेऽनघ । निदर्शनार्थंनद्वेषाच्छ्रुत्वातंक्षन्तुमर्हसि ॥ ८६ ॥ विरूपोयावदादर्शे नात्मनःपश्यतेमुखम् । मन्यतेतावदात्मान मन्येभ्योरूपवत्तरम् ॥ ८७ ॥ यदास्वमुखमादर्शे विकृतंसोऽभिवीक्षते । तदांतरं विजानीते आत्मानं चेतरंजनम् ॥ ८८ ॥ अतीवरूपसम्पन्नो नकंचिदवमन्यते । अतीवजल्पनदुर्वाचो भवतीह विहेठकः ॥८९॥ मूर्खोहिजल्पतांपुंसां श्रुत्वावाचःशुभाशुभाः । अशुभंवाक्यमादत्ते पुरीषमिवसूकरः ॥ ९० ॥ प्राज्ञस्तुजल्पतांपुंसा श्रुत्वावाचःशुभाशुभाः । गुणवद्वाक्यमादत्ते हंसःक्षीरमिवाम्भसः ॥ ९१ ॥ अन्यान्परिवदनसाधुर्यथाहिपरितप्यते । तथापरिवदन्नन्यां स्तुष्टोभवतिदुर्जनः ॥९२॥ अभिवाद्ययथावृद्धान् संतोगच्छन्तिनिर्वृतिम् । एवंसज्जन

यम और वरुणके स्थान को मैं जासकती हूं हे राजन् तू मेरेप्रभाव को देख । ८५ । यह बात सत्य है जो मैं तुझसे दृष्टान्तके लिये कहतीहूं कुछ द्वेष से नहीं तू उसको सुनकर क्षमाकर । ८६ । कुरूप जबतक दर्पण में अपना मुँह नहीं देखता तबतक अपनेको औरों से अधिक स्वरूपवान मानताहै । ८७ । जब अपने विकृत मुखको दर्पण में देखताहै तब अपने और दूसरे में अन्तर जानता है । ८७ । अत्यन्त रूपवान पुरुष किसी का अपमान नहीं करता और अत्यन्त दुर्वचनों को बोलताहुआ पुरुष इस संसार में निन्दक कहलाता है । ८८ । मूर्ख शुभ और अशुभ वचनबोलते हुए पुरुषोंके वचनों को सुनकर अशुभको ऐसे गृहणकरता है जैसे सूअर विष्टाको ।९०। बुद्धिमान पुरुष शुभ और अशुभ वचन सुनकर शुभको ऐसे गृहण करताहै जैसे पानी मेंसे हंस दूधको ।९१। जैसे सज्जन दुर्वचनबोलकर पश्चात्ताप करता है वैसेही दुर्जन दुर्वचनबोलकर हर्षितहोता है ।९२।

Apsaras and thy father also is the first of rishis. Being their daughter why dost thou speak like a lewd woman? Thy words art not worthy of credit. Art thou not ashamed to utter them, especially before me? Go hence, wicked woman in ascetic guise. Where is the great Rishi and the Apsara Menaka? And where art thou, a low woman in the guise of an ascetic? The son, too, whom you call a boy has so soon grown up like a Sal tree. Thy birth is low and thou speakest like a lewd woman. Menaka begot thee lustfully. I donot know aught of what thou art saying, nor, I know thee. Go whither-so-ever thou choosest." Shakuntala replied, "Thou seest, O king, even the smallest faults of others, but dost not notice even the greatest faults of thine own. Menaka is no doubt reckoned first among celestials. My birth is higher than thine, Dushyant. Thou

माक्रुश्य मूर्खोभवतिनिर्वृतः ॥ ९३ ॥ सुखजीवन्त्यदोषज्ञा मूर्खादोषानुदर्शिनः । यत्र वाच्याःपरैःसंतः परानाहुस्तथाविधान् ॥ ९४ ॥ अतोहास्यतरंलोके किञ्चिदन्यन्न विद्यत । यत्रदुर्जनमित्याह दुर्ज्जनःसज्जनंस्वयम् ॥ ९५ ॥ सत्यधर्मच्युतात् पुंसः क्रुद्धादाशीविषादिव । अनास्तिकोऽप्युद्विजते जनःकिंपुनरास्तिकः ॥ ८६ ॥ स्वयमुत्पाद्यवैपुत्रं सदृशंयोनमन्यते । तस्यदेवाःश्रियंघ्नन्ति नचलोकानुपाश्नुते ॥९७॥ कुलवंशप्रतिष्ठांहि पितरःपुत्रमब्रुवन् । उत्तमंसर्वधर्माणां तस्मात्पुत्रं नसन्त्यजेत् ॥ ९८ ॥ स्वपत्नीप्रभवान्पञ्च लब्धान्क्रीतानविवर्द्धितान । कृतानन्यासुचोत्पन्नान पुत्रान्वैमनुरब्रवीत् ॥ ९९ ॥ धर्मकीर्त्त्यावहानृणां मनसःप्रीतिवर्द्धनाः । त्रायन्तेनरकाज्जाताः पुत्राधर्मप्लवाःपितॄन् ॥१००॥ सत्वंनृपतिशार्दूल पुत्रंनत्यक्तुमर्हसि । आत्मानंसत्यधर्मौ

जैसे सज्जनपुरुष वृद्धोंको नमस्कार करके हर्षितहोता है वैसेही दुर्जन गाली देकर खुश होताहै । ९३ । दोष न जाननेवाले सुखसे जीते हैं और मूर्ख लोग दोष देखनेवालेहोते हैं सज्जनोंसे निन्दा योग्य दुर्जन सज्जनोंको निन्दित बताते हैं इससे अधिक हास्यकीबात होगी सत्य धर्म से भृष्टहुए पुरुषसे क्रोधी सर्पकी नाईं अनास्तिकभी वचताहै आस्तिकका क्या कहनाहै ९६ जो स्वयं पुत्रको उत्पन्न कर उसको अपने योग्य नहीं समझता उसकी लक्ष्मी को देवता नाश करदेते हैं और वह उत्तम लोकको नहीं जाता ९७ पितरोंने कुल और वंशकी वृद्धि और सम्पूर्ण धर्मों में उत्तम पुत्रको कहाहै इस लिये पुत्रको कदाचित् त्याग न करे ९८ मनु ने पांचप्रकार के पुत्र कहे हैं एक अपनी स्त्री से उत्पन्न २ लब्ध (मिलाहुआ) ३ क्रीत (मोललियाहुआ) ४ विवर्धित (पालाहुआ) ५ कृत (संस्कार किया हुआ) । ९९ । यह पुत्र मनुष्यों के धर्म और कीर्त्ति के बढ़ानेवाले मनको प्रसन्न करनेवाले और पितरों को नरक से रक्षा करने के हेतु धर्मकी नावहोते हैं १०० हे नृप

walkest on the earth, O king, but I roam in the skies. The difference between me and you is like that between Meru and a mustard seed. Behold my power. I can go to the abodes of Indra, Kuver, Yam, and Varun. (The saying, that, an ugly person considers himself handsome so long as he has not seen his face in the mirror,) is true. I cite it only for example's sake and not from evil motives and hope you will pardon me. (A really handsome person never taunts any body.) (He who talks evil of others becomes a reviler.) (As the swins always select dirt even when in the flower garden's, so the wicked always choose the evil.) (The wise select good from a mixture of good and evil as geese draw milk from a mixture of water and milk.) (The good feel pain in saying evil of others, but the wicked rejoice in speaking ill of honest persons who never injure the former even if injured themselves.) What can be more

च पालयनपृथिवीपते ॥ १०१ ॥ नरेन्द्रसिंहकपटं नवोढुंत्वमिहार्हसि । वरंकूपशता
द्वापी वरंवापीशतात्क्रतुः । वरंक्रतुशतात्पुत्रः सत्यंपुत्रशताद्वरम् ॥ १०२ ॥ अश्वमेध
सहस्रञ्च सत्यञ्चतुलयाधृतम् । अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेवविशिष्यते ॥१०३॥ स-
र्ववेदाधिगमनं सर्वतीर्थावगाहनम् । सत्यञ्चवचनंराजन् समंवास्यान्नवासमम् ।१०४।
नास्तिसत्यसमोधर्मो नसत्याद्विद्यतेपरम् । नहितीव्रतरंकिञ्चिदनृतादिहविद्यते ।१०५।
राजन्सत्यंपरंब्रह्म सत्यञ्चसमयःपरः । मात्याक्षीःसमयंराजन्सत्यंसङ्गतमस्तुते ।१०६।
अनृतेचेत्प्रसङ्गस्ते श्रद्दधासिनचेत्स्वयम् । आत्मनाहंतगच्छामि त्वादृशेनास्तिसंगतम्
॥१०७॥ त्वामृतेऽपिहिचदुष्यंत शैलराजावतंसकाम् । चतुरंतामिमाहर्वीं पुत्रोगेपाळ

श्रेष्ठ तू पुत्रको छोड़ने के योग्य नहीं है अपनी आत्माकी रक्षा के कारण सत्य और धर्म का पालन करते हुए तुझे कपट करना न चाहिये । १०१ । सौ कुएंबनाने से एक बाउड़ी श्रेष्ठ है और सौ बाउड़ियों से एक यज्ञ सौ यज्ञों से एकपुत्र सौ पुत्रों से एक सत्य श्रेष्ठ है हजार अश्वमेध और सत्य को तराजू में रक्खा तो हजार अश्वमेध से सत्य अधिक हुआ । १०३ । हे राजन् सम्पूर्ण वेदोंका पढ़ना, और तीर्थ स्नान सत्यकी बराबर नहीं है । १०४ । सत्य के समान कोई धर्म नहीं सत्य से कोई वस्तु अधिक नहीं, असत्य से अधिक कठिन भी कोई वस्तु नहीं है । १०५ । हे राजन् सत्य ही परब्रह्म है सत्यही सर्वोत्तमव्रत है इस कारण हेराजन् सत्यको मत छोड़ सत्यको मित्रबना १०६ यदि असत्य में तेरी श्रद्धा है तो तुझको खेद है तुझ से मनुष्यों में प्रेम कहां ! मैं जाती हूं । १०७ । हे दुष्यंत तेरेपश्चात् हिमाचल से समुद्रपर्यंत यह पुत्र पृथ्वीका पालन करेगा

---

ridiculous in the world than the wicked representing honest folk as wicked ? Even athiests are annoyed with those that have fallen from truth and virtue like poisonous snakes, what to say of myself who am nurtured in faith ? He who discards the son, an image of himself, never attains the worlds he covets and the gods destroy his good fortune and possessions. (The Pitris have said that the son continues the line and the acquiring of him is the best of religious acts.) None should abandon a son. ¶ According to Manu there are five kind of sons, viz., begotten by self in the wife; obtained as gift; purchased; stranger's sons and reared for affection. Sons support the religion and the achievements of men; enhance their joys and rescue deceased ancestors from hell.¶ Donot discard such a son, O king ! By cherishing a son thou wilt cherish self, truth and virtue. Donot support this deceit any longer, O king. (The opening of a

यिष्यति ॥ १०८ ॥ वैशम्पायनउवाच । एतावदुक्त्वा राजानं प्रातिष्ठतशकुन्तला । अथांतरिक्षात्दुष्यंतं वागुवाचाशरीरिणी । ऋत्विक्पुरोहिताचार्य्यैर्मंत्रिभिश्चावृतंतदा ॥ १०९ ॥ भस्त्रामातापितुःपुत्रोयेनजातःसएवसः । भरस्वपुत्रंदुष्यन्तमावमंस्थाःशकुन्तलाम् ॥ ११० ॥ रेतोधाःपुत्रउन्नयति नरदेवयमक्षयात् । त्वञ्चास्यधातागर्भस्य सत्यमाहशकुन्तला ॥ १११ ॥ जायाजनयतेपुत्रमात्मनोऽङ्गंद्विधाकृतम् । तस्माद्भरस्व दुष्यन्त पुत्रंशाकुन्तलंनृप ॥ ११२ ॥ अभूतिरेषायस्त्यक्त्वा जीवेज्जीवंतमात्मजम् । शाकुन्तलंमहात्मानं दौष्यन्तिंभरपौरव ॥ ११३ ॥ भर्त्तव्योऽयंत्वयायस्माद स्माकं वचनादपि । तस्माद्भवत्वयंनाम्ना भरतोनामतेसुतः ॥ ११४ ॥ तच्छ्रुत्वापौरवोराजा

। १०८ । वैशम्पायन ने कहा, राजासे यह कहकर शकुन्तला चली इसके उपरान्त देव वाणिने ऋत्विक आचार्य मन्त्री और पुरोहित सहित राजा दुष्यंत से कहा कि माता चर्मका पात्र है और पुत्र उस पिताका है जिसके वीर्य से वह उत्पन्न हुआ है ११० हे दुष्यन्त इस पुत्र को पालन कर और शकुन्तला का अपमान मतकर हे राजन् वीर्य का स्थापन करनेवाला पुत्रही है और पितरोंको यमलोक से ऊर्ध्व गतिको लेजाता है । १११ । तू इस गर्भ का धारण करनेवाला है शकुन्तला ने सत्य कहा है आत्मा के दूसरे रूप पुत्रको स्त्री उत्पन्न करती है । ११२ । हे राजन् शकुन्तला से उत्पन्न इस पुत्र का पालन कर जीतेहुए पुत्र को छोड़कर जीना अभाग्य है । ११३ । शकुन्तला से उत्पन्न अपने पुत्र का पालन कर हमारे बचन से भी तुझे इस का पालन करना उचित है हमने तुझ से जो

tank is more meritorious than that of a hundred wells. A sacrifice is better than the opening of a tank; a son is more so than a sacrifice. Truth is more meritorious than a hundred sons. A thousand sacrifices were once compared with truth; but the latter proved the heavier of the two. Truth is better than the study of the Vedas and ablutions in all the holy places. There is no virtue equal to truth and none superior. Truth is the highest vow. Truth is God. Therefore violate not thy pledge. Always speak the truth. I shall go hence if you donot believe me and shall avoid thy companionship. But believe me, Dushyant, that after your death, this son of mine shall rule the earth bounded by the Ocean and adorned by grand mountains." Vaishampayan continued that Shakuntala having thus spoken to the king went away from his presence. But as soon as she had left, a voice from heaven-from no visible persen, thus spoke to Dushyant surrounded by his Ritwijas, Purohit,

व्याहृतंत्रिदिवौकसाम् । पुरोहितममात्यांश्च सम्प्रहृष्टोऽब्रवीदिदम् ॥ ११५॥ शृण्वन्त्वे
तद्भवन्तोऽस्य देवदूतस्यभाषितम् । अहंचाप्येवमेवैनं जानामिस्वयमात्मजम्॥११६॥
यद्यहंवचनादेव गृह्णीयामिस्वमात्मजम् । भवेद्धिशंकयोलोकस्य नैवशुद्धोभवेदयम् ११७
वैशम्पायनउवाच । तंविशोध्यतदाराजा देवदूतेनभारत । हृष्टःप्रमुदितश्चापि प्रतिज-
ग्राहतंसुतम् ॥ ११८ ॥ ततस्तस्यतदाराजा पितृकर्माणिसर्वशः । कारयामासमुदितः
प्रीतिमानात्मजस्यह ॥ ११९ ॥ मूर्ध्निचैनमुपाघ्राय सस्नेहंपरिषस्वजे । सभाज्यमानो
विप्रैश्च स्तूयमानश्चवन्दिभिः ॥ १२० ॥ समुदंपरमांलेभे पुत्रसंस्पर्शजांनृपः तांचैव
भार्यांदुष्यन्तः पूजयामासधर्मतः । अब्रवीच्चैवतांराजा सान्त्वपूर्वमिदंवचः ॥१२१॥
कृतोलोकपरोक्षोऽयं सम्बन्धोऽयंत्वयासह । तस्मादेतन्मयादेवि तच्छुद्ध्यर्थं विचारितम्

भर (पालन कर) कहा इस कारण इसका नाम भरत होगा पुरुवंशी राजा दुष्यंत ने देवताओं का वचन सुनकर अपने पुरोहित और मन्त्रियों से प्रसन्न होकर कहा तुम इस देवदूतके वचनको सुनो ११६ मैंभी इस सुतको जानताहूं यदि मैं इस स्त्री के कहने से सुतका ग्रहण करलेता तो लोकमें संदेह होता और ठीक नहोता ।११७। वैशम्पायनने कहा हे जन्मेजय इस प्रकार राजा दुष्यन्त ने देववाणि से सुतको शुद्ध कर प्रसन्न चित्तसे उसको ग्रहण किया ।११८। तत्पश्चात् राजाने प्रसन्न चित्त से पिता के करने योग्य कर्म सब कराये । ११९ । राजाने सुतका मस्तक सूंघकर उसको हृदय से लगाया ब्राह्मणों से सत्कार कियेहुए और बंदियों से स्तुति किये हुए राजा ने पुत्रके स्पर्श से उत्पन्न प्रसन्नताको प्राप्तकिया । १२० । राजा दुष्यन्त ने अपनी भार्या शकुन्तला का धर्मपूर्वक सत्कार किया और बहुत शान्तिके साथ यह वचन कहा । १२१ । हे देवि तेरेसाथ मेरा सम्बन्ध लोक को विदित नहीं था

Adhwaryus and ministers. The voice said, "The mother is but the sheath of flesh; the son sprung from the father is the father himself. Therefore, O Dushyant cherish thy son and insult not Shakuntala. The son, an inmage of self. rescues from Yam. Thou art the progenitor of the boy. Shakuntala has spoken the truth. The husband divinding his body, comes out as the son. Therefore, O king Dushyant, cherish thy son born of Shakuntala. The life after forsaking a son must be a great misfortune. Therefore, O thou of Puru race, cherish thy high-souled son born of Shakuntala. And because this child is to be cherished at our word he shall be known by the name of Bharat (cherished." Hearing these words from heaven, the king was overjoyed and thus spoke to his Purohit and ministers, " Do yot hear these heavenly words ? I know him to be

॥ १२२ ॥ मन्यतेचैवलोकस्ते स्त्रीभावान्मयिसंगतम् । पुत्रश्चायंवृतोराज्ये मयातस्मा
द्विचारितम् ॥ १२३ ॥ यच्चकोपितयात्यर्थं त्वयोक्तोऽस्म्यप्रियं प्रिये । प्रण यिन्या
विशालाक्षि तत्क्षान्तंतेमयाशुभे ॥ १२४ ॥ तामेवमुक्त्वाराजर्षि दुष्यन्तो महिषीं
प्रियाम् । वासोभिरन्नपानैश्च पूजयामासभारत ॥ १२५ ॥ दुष्यन्तस्तुततो राजा
पुत्रंशाकुन्तलंतदा।भरतंनामतःकृत्वा यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ॥ १२६ ॥ तस्यतत्प्रथितं
चक्रं प्रावर्त्ततमहात्मनः । भास्वरं दिव्यमजितं लोकसन्नादनंमहत् ॥ १२७ ॥ सवि-
जित्यमहीपालांश्चकारवशवर्त्तिनः । चचारचसतांधर्मं प्रापचानुत्तमंयशः ॥ १२८ ॥
सराजाचक्रवर्त्यासीत् सार्वभौमःप्रतापवान । ईजेचबहुभिर्यज्ञैर्यथाशक्रोमरुत्पतिः

इस कारण तेरी शुद्धि के लिये मैंने विचार किया। १२२। संसार में विदित होता कि अच्छी स्त्री समझकर मैंने तुझको रखलिया और तेरेपुत्रको राज्याधिकार दिया इस कारण मैंने यह विचार किया १२३ हे प्रिये ! अत्यन्त क्रोध वश होकर जो तूने मुझसे अप्रिय वचन कहे वह मैं क्षमा करता हूं। १२४। हे जन्मेजय ! इसप्रकार राजा दुष्यंतने अपनी प्रिय और मुख्य स्त्री का वस्त्र अन्नादि से सत्कार किया १२५ तब राजा दुष्यंतने अपने सुत भरत का जो शकुन्तला से उत्पन्नहुआथा राज्याभिषेक किया १२६ भरतका शासन लोक में प्रकाशमान, दिव्य अजित और भयदायकहुआ १२७ भरत ने राजाओंको जीत कर अपने वश किया सज्जनों के धर्मका आचरण करके उत्तम यश लाभकिया। १२८। और राजाभरत सम्पूर्ण पृथ्वीका स्वामी चक्रवर्ती और प्रतापी हुआ और इन्द्रके समान

---

my son. If I had accepted him on Shakuntala's words alone, my people would have been suspicious, and my son would not have been regarded as pure. Vaishampayan continued that the monarch, seeing the purity of his son established by the celestial messenger became very glad and accepted him with joy. He then performed all rites that a father should perfom. He smelt the head and embraced him with affection. The Brahmans began to utter blessings upon him and the bards began to applaud him. The king felt the delight that one feels at the touch of one's son. Dushyant also received his wife with affection and said to her, " O goddess my union with thee was private. Therefore, I was thinking of how to establish thy purity. My people might think that our union was out of lust and not as husband and wife and hence our son, the heir apparent, as one of impure birth. I have forgiven every harsh word that thou hast uttered in thy anger and hold thee dear. The Rajarshi Dush-

॥ १२९ ॥ याजयामासतंकण्वो विधिवद्भूरिदक्षिणम् । श्रीमान्गोविततंनाम वाजि-
मेधमवापसः ॥ १३० ॥ यस्मिन्सहस्रंपद्मानां कण्वायभरतोददौ । भरताद्भा
रतीकीर्त्तिर्येनेदंभारतंकुलम् ॥ १३१ ॥ अपरेयेचपूर्वेवै भारताइति विश्रुताः । भरत
स्यान्ववायेहि देवकल्पामहौजसः ॥ १३२ ॥ बभूवुर्ब्रह्मकल्पाश्च बहवोराजसत्तमाः ।
येषामपरिमेयानिनामधेयानि सर्वशः ॥ १३३ ॥ तेषान्तुतेयथामुख्यं कीर्त्तयिष्यामि
भारत । महाभागान्देवकल्पान् सत्यार्जवपरायणान् ॥ १३४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शाकुन्तलं समाप्तमिति चतुःसप्तोऽध्यायः ७४ ॥

बहुत से यज्ञ किये । १२९ । कण्वऋषि ने राजा भरत को बड़ी दक्षिणावाले यज्ञ करये
और राजा भरत ने गोवितत नाम अश्वमेध यज्ञ करके कण्वऋषि को सहस्र पद्म धन
दिया । १३० भरत से वंशकी कीर्ति हुई और भारतकुल प्रसिद्धहुआ पहले जो भारत
नामसे प्रसिद्ध हुएहैं वे भारतवंश में देवताओं और ब्रह्मा के सदृश राजोंमें श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी
बहुत से राजा हुए । १३२ । जिनके सम्पूर्ण नाम गिनती से बाहर हैं उन में मुख्य २
के नाम जो बड़े भागवाले देवताओंके सदृश सत्य और सरल स्वभाव वाले थे तेरेसामने
कहूंगा १३३ ॥

yant having said this to his dear wife received her with offerings of food, drink and perfume. And king Dushyant, then bestowing the name of Bharat upon his child, formally installed him as heir apparent. The famous bright wheels of Bharat's chariot like those of the gods' cars were heard throughout the world and he subjected all the world ruled virtuously and gained great fame as Chakravarti and Sarvabhaum. He performed many sacrifices like that of Indra and Marut. Kanwa was the chief priest in those sacrifices of great offerings. He performed many horse sacrifices. He gave Kanwa a thousand gold pieces as fee for performing the sacrifice. He made many achievements and was the founder of the Bharat race containing many god-like kings of great energy, like Brahma himself. They are countless, but, I shall name the principal ones that were blessed with great good fortune, god-like and devoted to truth and honesty.

वैशम्पायन उवाच ॥ प्रजापतेस्तुदक्षस्य मनोर्वैवस्वतस्यच। भरतस्यकुरोःपुरो राजमीढस्यचानघ ॥ १ ॥ यादवानामिमंवंशं कौरवाणांचसर्वशः। तथैवभरतानांच पुण्यंस्वस्त्ययनंमहत् ॥२॥ धन्यंयशस्यमायुष्यं कीर्त यिष्यामितेऽनघ। तेजोभिरुदिताः सर्वे:महर्षिसमतेजसः ॥ ३ ॥ दशप्राचेतसःपुत्राः सन्तःपुण्यजनाःस्मृताः। मुखजेना ग्निनायैस्तै पूर्वंदग्धामहौजसः ॥ ४ ॥ तेभ्यःप्राचेतसोजज्ञे दक्षोदक्षादिमाःप्रजाः। सम्भूताःपुरुषव्याघ्र सहिलोक पितामहः ॥ ५ ॥ वीरिण्यासहसंगम्य दक्षःप्राचेतसो मुनिः। आत्मतुल्यानजनयत् सहस्रं संशितव्रतान ॥ ६ ॥ सहस्रसंख्यान्सम्भूतान् दक्षपुत्रांश्चनारदः। मोक्षमध्यापयामास सांख्यज्ञानमनुत्तमम् ॥ ७ ॥ ततःपञ्चाशतं कन्याः पुत्रिकाअभिसन्दधे। प्रजापतिःप्रजादक्षः सिसृक्षुर्जनमेजय ॥ ८ ॥ ददौदश

अध्याय ७५ ॥

वैशम्पायन ने कहा, पुण्य, कल्याण, धन, यश आयु के बढ़ाने वाले प्रजापति दक्ष के वैवस्वत मनु, भरत, कुरु, पुरु, आजमीढ, यादव, सम्पूर्ण कौरवों और भरतों के वंशका वृत्तान्त मैं तुझे सुनाताहूं वे सब महर्षियों के समान तेजस्वीहुए। ३। प्राचेतसके महात्मा तपस्वी पुण्यकरने वाले दसपुत्र थे जिन्हों ने मुखसे उत्पन्न हुई अग्निसे वृक्ष और औषधियों को भस्म किया। उनसे दक्ष उत्पन्न हुआ दक्ष से सब प्रजा उत्पन्न हुई वहीदक्ष लोक का पितामह है। ५। दक्ष मुनिने वीरिणी नाम स्त्री से उत्तम व्रतवाले १००० पुत्र उत्पन्न किये। ६। नारदने उन हजार दक्षपुत्रों को मोक्ष का हेतु सर्वोत्तम सांख्यशास्त्र पढाया। ७। प्रजा के उत्पन्न करनेकी इच्छा से दक्षप्रजापतिने ५० पुत्रिका कन्यायें उत्पन्नकीं दक्षने उनमें १० धर्म को १३ कश्यपको और कालगत लानेवाली २७ चंद्रतायां दीं मरीचि

CHAPTER LXXV

Vaishampayan said, "Hear the geneclogy that is sacred and subservient to religion, profit and pleasure, of Rajarshi; Daksh Parjapati, Manu the son of Surya, Bharat, Kuru, Puru and Ajmir. These geneologies are sacred and their recitation is an act of piety and gives wealth, fame and long life. The personages named above were of great splendour and energy equal to those of great Rishis. Pracheta had ten sons devoted to asceticism and possessing great virtue. They burnt by the fire of their mouths several poisonous plants and large trees covering the earth which were the source of inconvenince to man. After these was born Daksh from whom all creatures having sprung up and therefore he is called the grandfather (Prajapati). Born of Prachota and united with Virini, the

सधर्माय कश्यपायत्रयोदश । कालस्य नयनेयुक्ताः सप्तविंशति मिन्दवे ॥९॥ त्रयोदशा नांपत्नीनां यातुदाक्षायणीवरा । मारीचःकश्यपस्त्वस्या मादित्यानसमजीजनत् ॥ १० ॥ इन्द्रादीन्वीर्यसम्पन्नान विवस्वन्तमथापिच । विवस्वतःसुतोजज्ञे यमोवैव स्वतःप्रभुः ॥ ११ ॥ मार्त्तण्डस्यमनुर्धीमान जायतःसुतःप्रभुः । यमश्चापिसुतोजज्ञे ख्यातस्तस्यानुजःप्रभुः ॥ १२ ॥ धर्मात्मासमनुर्धीमान् यत्रवंशःप्रतिष्ठितः । मनोर्वंशो मानवानांततोऽयंप्रथितोऽभवत् ॥ १३ ॥ ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोर्जातास्तुमानवाः । ततोऽभवन्महाराज ब्रह्मक्षत्रेणसंगतम् ॥ १४ ॥ ब्राह्मणामानवास्तेषां सांगवेदमधा रयन् । वेनंधृष्णुंनरिष्यन्तं नाभागेक्ष्वाकुमेवच ॥ १५ ॥ कारूषमथशर्यातिं तथा चैवाष्टमीमिलाम् । पृषध्रंनवमंप्राहुः क्षत्रधर्मपरायणम् ॥ १६ ॥ नाभागारिष्टदशमान् मनोःपुत्रानप्रचक्षते । पञ्चाशत्तमनोःपुत्रास्तथैवान्येऽभवन क्षितौ ॥ १७ ॥ अन्यो न्यभेदात्तेसर्वे विनेशुरितिनःश्रुतम् । पुरूरवास्ततो विद्वा निलायांसमपद्यत ॥ १८ ॥ सावैतस्याभवन्माता पिताचैवेतिनःश्रुतम् । त्रयोदशसमुद्रस्य द्वीपानश्नन् पुरूरवाः ।

के पुत्र कश्यप ने उन तेरह में श्रेष्ठ अदिति से पराक्रमी इन्द्रादिक आदित्यों (देवताओं) और सूर्य को उत्पन्न किया, विवस्वत (सूर्य) के पुत्र वैवस्वत (यम) और बुद्धिमान मनु उत्पन्न हुए इनदोनों में यमछोटाथा । १२ । धर्मात्मा बुद्धिमान मनु से वंश प्रति- ष्ठितहुआ और मानव वंश संसार में प्रसिद्धहुआ । १३ । मनु से उत्पन्नहुए ब्रह्मण क्षत्रियादिक मानव कहलाते हैं इसीकारण ब्राह्मण क्षत्रियोंमें सम्बन्ध हुआ । १४ । ब्राह्म- णोंने जो मनुकी सन्तान थे सांग वेदों को पढ़ा, वेन, धृष्णु, नरिष्यन्त, नाभाग, इक्ष्वाकु कारूष, शर्याति और आठवीं पुत्री इला और नवां पृषध्र जिसको क्षत्रिय धर्म में तत्पर कहते हैं । १६ । दसवां नाभाग था इनके सिवाय मनु के ५० पुत्र और हुए । १७ । वे सब आपस में लड़कर नष्टहोगये पुरूरवाकी उत्पत्ति इलासे हुई सुनाहै कि इलाही

---

muni Daksh produced a thousand sons of rigid vows, all, like himself. Narad taught these thousand sons Sankhya Philosophy as a means of salvation. Daksh, then, produced fifty daughters whom he made his Putrikas. He bestowed ten of them on Dharm thirteen on Kashyap and twentyseven on Chandra, who are engaged in indicating time. Kashyap, the son of Marichi, begat in his eldest wife the Adityas, the gods including Indra and Vivaswan of great energy Vivaswan was the father of *Yam* and the intelligent Manu. Manu was very wise and virtuous and was the progenitor of mankinds, (Manushya Manav, and man are all derivatives of the word Manu). including Brahmans, Khshatryas and others. These are all called

अमानुषैर्वृतःसत्वैर्मानुषःसन्महायशाः ॥ १९ ॥ विप्रैःसविग्रहंचक्रे वीर्योन्मत्तः पुरूरवाः । जहारचसविप्राणां रत्नान्युत्क्रोशतामपि ॥ २० ॥ सनत्कुमाररस्तंराजन् ब्रह्मलोकादुपेत्यह । अनुदर्शंततश्चक्रे प्रत्यगृह्णान्न चाप्यसौ ॥ २१ ॥ ततोमहर्षिभिः क्रुद्धैः सद्यःशप्तोव्यनश्यत । लोभान्वितोबलमदान्नष्टसंज्ञोनराधिपः ॥ २२ ॥ सहि गन्धर्वलोकस्थानुर्वश्या सहितोविराट । आनिनायक्रियार्थेऽग्नीन् यथा वद्विहितां स्त्रिधा ॥२३॥ षट्सुताजज्ञिरे चैला दायुर्धीमानमावसुः । दृढायुश्चवनायुश्च शतायुश्चो र्वशीसुताः ॥ २४ ॥ नहुषंवृद्धशर्माणं रजिंगयमनेनसम् । स्वर्भानवीसुतानेता नायोः पुत्रान्प्रचक्षते ॥ २५ ॥ आयुषोनहुषःपुत्रो धीमानसत्यपराक्रमः । राज्यंशशास सुमहद्धर्मेण पृथिवीपते ॥ २६ ॥ पितॄन्देवानृषीन्विप्रान् गन्धर्वोरगराक्षसान् । नहुषः पालयामास ब्रह्मक्षत्रमथोविशः ॥ २७ ॥ सहत्वादस्युसंघाता नृषीन्करमदापयत् पशुवच्चैवतानपृष्ठे वाहयामासवीर्यवान् ॥२८॥ कारयामासचेंद्रत्व मभिभूयदिवौकसः।

उसकी माता और पिताभी समुद्रके १३ द्वीपों को पुरूरवा भोगताहुआ वह बड़े यशवाला मनुष्य होकर अमानुष गुणों से युक्त था वीर्य से उन्मत्त पुरूरवा ने ब्राह्मणों से विरोध किया । २० । और चिल्लाते हुए ब्राह्मणों के रत्न हरण किये ब्रह्मलोक से आयेहुए सनत् कुमार के उपदेश को उस राजाने स्वीकार न किया तत्पश्चात् महर्षियों ने क्रोधितहोकर उसको शापदिया और वह नष्ट होगया । २२ । वह लोभयुक्त बल से मदांध था और उर्वशी के साथ रहकर वह राजा गंधर्व लोक में वर्त्तमान तीनों अग्नियों को यथार्थ रीतिसे क्रिया के लिये लाया आयु, धीमान, अमावसु, दृढ़ायु, वनायु, शतायु यह छः पुत्र पुरूरवा के उर्वशी से हुए नहुष, वृद्धशर्मा, रजि, गय, अनेनश, यह पुत्र आयु के स्वर्भानवीसे उत्पन्न हुए आयु के पुत्र बुद्धिमान, सत्य पराक्रमी नहुष ने धर्मपूर्वक राज्यानुशासन किया, और पितर, देवता, ऋषि, विद्वान गन्धर्व, सर्प, राक्षस, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों का पालन किया और चोर लुटेरोंको मारकर ऋषियों से करलिया । २८ । और उस वीर्यवान ने पशुवत उनको

Manavas. Brahmans united with Kshatrias and devoted themselves to the study of the Vedas. Manu had ten children viz. Ven, Dhrishnu, Narishyan, Nabhag, Ikshaku, Karush, Sharyati, Prishadhru, Nabhagarishta, the sons, and a daughter, Ila. They all adopted Kshatrya mode of life. Manu had fifty other sons who all perished quarrelling with one another. The learned Pururava was the son of Ila. It is said that Ila was both his mother and father. The great Pururava ruled over thirteen islands of the sea and though a human being he was endued with superhuman qualities. Intoxicated with power, he quarrelled with Brahmans and robbed them of

तेजसातपसाचैव विक्रमेणौजसातथा ॥ २९ ॥ यतिंययातिं संयातिमायातिमयतिंध्रु-
वम् । नहुषोजनयामास षट्सुतान् प्रियवादिनः ॥ ३० ॥ यतिस्तुयोगमास्थाय ब्रह्म
भूतोऽभवन्मुनिः । ययातिर्नाहुषःसम्राडासीत्सत्यपराक्रमः॥३१॥ सपालयामासमही
मीजेचबहुभिर्मखैः । अतिभक्त्यापितॄनर्चन्देवांश्चप्रयतःसदा ॥ ३२ ॥ अन्वगृह्णात्
प्रजाः सर्वा ययातिरपराजितः । तस्यपुत्रामहेष्वासाः सर्वैःसमुदितागुणैः ॥ ३३ ॥
देवयान्यांमहाराज शर्मिष्ठायाञ्चजज्ञिरे । देवयान्यामजायेतां यदुस्तुर्वसुरेवच ॥३४॥
द्रुह्युश्चानुश्चपूरुश्च शर्मिष्ठायांप्रजज्ञिरे । सशाश्वतीःसमाराजन् प्रजाधर्मेणपालयन्
॥ ३५ ॥ जरामार्छन्महाघोरां नाहुषोरूपनाशिनीम् । जराभिभूतःपुत्रान् सराजावच
नमब्रवीत् ॥ ३६ ॥ यदुंपुरुंतुर्वसुञ्च द्रुह्युंचानुञ्चभारत । यौवनेनचरन्कामा न्युवा

चलाया देवताओं का तिरस्कार कर तेज, विक्रम, बुद्धि और इन्द्रियों के बल से करके इन्द्र पदवी को लिया यति, ययाति, संयाति, आयाति, अयति, ध्रुव यह छै प्रियवादी पुत्र नहुष ने उत्पन्न किये यतियोग धारण कर ब्रह्मज्ञानी हुआ नहुष का पुत्र सत्य पराक्रमी ययाति चक्रवर्ती हुआ उसने पृथ्वी पालन और बहुत से यज्ञों से ईश्वराराधन किया ३२ अत्यंत भक्ति और नियम से पितर और देवताओंको पूजते हुए अजित् ययातिने प्रजाका पालन किया । ३३ । बड़े धनुष वाले सब गुणयुक्त उसके पुत्र देवयानि और शर्मिष्ठा से उत्पन्न हुए । ३४ । यदु और तुर्वसु देवयानि से, द्रुह्यु, अनु, पूरु शर्मिष्ठासेहुए ३५ हे जन्मेजय नहुषका पुत्र ययाति बहुतवर्ष तक प्रजा को धर्मसे पालनकर रूपसे नाश करने वाली वृद्धावस्थाको प्राप्त हुआ । ३६ । बुढ़ापे से दुःखित राजाने यदु पूरु तुर्वसु द्रुह्यु

---

their wealth. Beholding this, Sanatkumar came from heaven and gave him advice which he rejected. This excited the anger of the great Rishis and he perished by their curse. Paurav had brought from the region of Gandharvas the three kinds of fire and the Apsara Urvasi. Paurav begat in Urvasi six sons, namely, Aya, Dhiman, Amavasu, Drihayu, Vanayu, and Satayu. Ayu had four sons—Nahush, Vridh Sharma, Rajingaya and Annena—in the daughter of Sharvanu. Of all the sons of Ayu Nahush was of great intelligence and prowess and he ruled virtuously his broad domains. He supported equally the Pitris, the gods, the Rishis, the Brahmans, the Gandharvas, the Nagas, the Rakshases the Kshatryas and the Vaishyas and suppressed the robbers with a high hand. But he made the Rishis pay tribute and carry him on their backs like beasts of burden. Excelling the gods in the beauty of his person, asceticism

युवतिभिःसह ॥ ३७॥ विहर्त्तुमहमिच्छामि साह्यंकुरुतपुत्रकाः । तंपुत्रोदैवयानेयः पूर्वजोवाक्यमब्रवीत् ॥३८॥ किंकार्यंभवतःकार्य मस्माकंयौवनेनते। ययातिरब्रवीत्तंवै जरामेप्रतिगृह्यताम् ॥ ३९ ॥ यौवनेनत्वदीयेन चरेयंविषयानहम् । यजतोदीर्घसत्रैर्मे शापाच्चोशनसोमुनेः । कामार्थःपरिहीणोऽयं तप्येयंतेनपुत्रकाः ॥ ४० ॥ मामकेन शरीरेण राज्यमेकःप्रशास्तुवः । अहंतन्वाभिनवया युवाकाममवाप्नुयाम् ॥४१॥ तेन तस्यप्रत्यगृह्णन् यदुप्रभृतयोजराम् । तमब्रवीत्ततःपूरुः कनीयान्सत्यविक्रमः ॥४२॥ राजंश्चराभिनवया तन्वायौवनगोचरः । अहंजरांसमादाय राज्येस्थास्यामितेऽज्ञया ॥ ४३ ॥ एवमुक्तःसराजर्षिस्तपोवीर्यसमाश्रयात् । सञ्चारयामासजरां तदापुत्रेमहा-

अनु अपने पुत्रों से कहा । ३७ । यौवन अवस्था में यौवनसे कामों को भोगता हुआ युवतियोंके साथविहार करना चाहताहूं हे पुत्रो सहायकरो । ३८ । देवयानिके बड़े पुत्र ने राजासे कहा तुमको हमारी यौवनावस्था से क्या प्रयोजन सिद्ध करना है ३९ ययाति ने उस पुत्रसे कहा तू मेरी बृद्धावस्था ग्रहणकरेतो मैं तेरा यौवन पाकर विषय भोगकरूंगा । ४० । बहुतकाल में पूर्णहोनेवाले यज्ञों को करते और शुक्रमुनि के स्रापसे मेरा विषय भोगनेका समय जाता रहा इसकारण हे बेटो मैं दुःखी हूं मेरेशरीरकी बृद्धावस्था लेकर तुम में से एक राज्यकी रक्षाकरे और मैं तुम से एककी तरुण अवस्थासे विषय भोगकरूँगा । ४२ । उन यदु आदिक पुत्रोंने उसका कहना स्वीकार न किया तब सत्य पराक्रम वाले छोटे पुत्र पूरु ने राजासे कहा । ४३ । हे राजन् तरुण अवस्था पाकर विषय भोगकर

and prowess, he ruled like an Indra. He had six sons, namely, Yati, Yayati, Samyati, Ayati, Ayati, Ayati and Dhruv. Yati became a muni like Brahma himself. Yayati was a virtuous monarch of great prowess. He ruled the whole earth, performed numberless sacrifices , worshippod the Pitris with great piety and always respected the gods. He conquered the whole world and was never conquered by any foe. The sons of Yayati were great archers and very virtuous They were born of two wives, Sharmishta and Devyani. The sons of Devyani were Yadu and Turvasu and those of Sharmishta were Drahayu, Anu and Puru. And having virtuously ruled his subjects for a long time, Yayati lost his beauty and became hideous. He then called his sons, Yadu, Puru,.Turvasu, Drihayu and Anu round him and said, " My dear sons, I wish to become a young man to enjoy the company of young women and you may help me." At this the eldest son born of Devyani remarked, " What needest thou.

त्मानि ॥ ४४ ॥ पौरवेणाथवयसा राजायौवनमास्थितः । यायातेनापिवयसा राज्यं पूरुरकारयत् ॥ ४५ ॥ ततोवर्षसहस्रान्ते ययातिरपराजितः । स्थितःसनृपशार्दूलः शार्दूलसमविक्रमः ॥ ४६ ॥ ययातिरपिपत्नीभ्यां दीर्घकालंविहृत्यच । विश्वाच्यासहतोरेमे पुनश्चैत्ररथेवने ॥ ४७ ॥ नाध्यगच्छत्तदातृप्तिं कामनांसमहायशाः । अवेत्य मनसाराजन् निमांगाथांतदाजगौ ॥४८॥ नजातुकामःकामा नामुपभोगेनशाम्यति । हविषाकृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्द्धते ॥४९॥ पृथिवीरत्नसम्पूर्णा हिरण्यंपशवःस्त्रियः नालमेकस्यतत्सर्व मितिमत्वाशमंव्रजेत् ॥५०॥ यदानकुरुतेपापं सर्वभूतेषुकर्हिचित् ।

और मैं तेरी वृद्धअवस्था पाकर तेरी आज्ञासे राज्य करूंगा। ४४। यह सुनकर ययाति ने अपने तपोबल से पुत्रको वृद्धबना दिया। ४५। और उसकी तरुण अवस्था से स्वयं तरुण होगया और पूरु होकर राज्य करने लगा। ४६। तत्पश्चात् अजित शार्दूलके समान पराक्रमी राजाओं में श्रेष्ठ ययाति सहस्र वर्ष पर्यंत तरुणरहा। ४७। ययाति दोनों स्त्रियों के साथ विहारकर चैत्ररथ वनमें जाकर विश्वाचिनाम अप्सराके साथ विहार करने लगा। ४८। बड़ा यशस्वी ययाति जबकाम से तृप्त न हुआ तब वह मन से विचार कर इस कथाको सुन गानेलगा। ४९। भोगसे कामकी इच्छा पूर्ण कभी नहीं होती, घीडालने से अग्नि और बढ़तीहै। ५०। रत्नोंसे भरी पृथ्वी सुवर्ण पशु स्त्रियें यह सब पदार्थ अकेला

---

king? Wilt thou have our youth? Yayati replied, "Accept my decrepitude, O son. With thy youth I shall enjoy myself. At the great sacrifice I was cursed by the Muni Usar. I would enjoy myself with your youth, O sons. Any one of you may take my decrepitude and with that rule my kingdom. I would enjoy myself with the renewed vigour." But none of his sons would take his hideousness. Then, the youngest son, Puru said, "Enjoy once more with renovated body and returned youth, O king. I shall take thy decrepitude and with thy leave shall rule thy kingdom." Thus addressed the Rajarshi, by virtue of his ascetic power, transferred his own hideousness to the magnanimous son and with his youth became a young man while with the monarch's age Puru ruled the kingdom. Thousand years had passed away and the great king Yayati was as strong as a lion and enjoyed the company of his two wives. He also enjoyed the company of the Apsara Viswachi in the garden of Chitrarath but found his desires unsatiated. He then remembered the following truth written in the Puran:—Desires are not satisfied by enjoyment. On the other hand they inflamed with indulgence like fire with the sacrificial butter. Even if one enjoys the world with its wealth of dimonds, gold, animals and women, one is not

कर्मणामनसावाचा ब्रह्मसम्पद्यतेतदा ॥ ५१ ॥ यदाचायंनबिभेति यदाचास्मान्नबिभ्यति । यदानेच्छतिनद्वेष्टि ब्रह्मसम्पद्यतेतदा ॥ ५२ ॥ इत्यवेक्ष्यमहाप्रज्ञः कामानांफल्गुतांनृप । समाधायमनोबुध्या प्रत्यगृह्णाज्जरांसुतात् ॥५३॥ दत्त्वाचयौवनंराजा पूरुंराज्येऽभिषिच्यच । अतृप्तएवकामानां पूरुंपुत्रमुवाचह॥५४॥त्वयादायादवानस्मि त्वंमेवंशकरःसुतः।पौरवोवंशइतिते ख्यातिंलोकेगमिष्यति ॥५५॥ वैशम्पायनउवाच॥ ततःसनृपशार्दूल पूरुंराज्येभिषिच्यच । ततःसुचरितंकृत्वा भृगुतुंगेमहातपाः ॥५६॥ कालेनमहतापश्चात् कालधर्ममुपेयिवान्।कारयित्वात्वनशनं सदारःस्वर्गमाप्तवान्॥५७॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने पञ्चसप्ततोऽध्यायः ७५ ॥

नहीं भोगसकता ऐसा समझ कर शान्ति को प्राप्तहो । ५१। जब कर्म मन वाणीसे कभी भी किसी प्राणीको दुःख नहीं देता तब ब्रह्मको प्राप्तहोता है । ५२ । जब वह भयनहीं करता और उससे भी किसीको भय नहीं रहता और जब इच्छा विद्वेश नहीं रहता तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै ५३ हे जन्मेजय, उस बड़े बुद्धिमान ययाति ने इस प्रकार कामोंकी तुच्छता देखकर बुद्धि से मनको स्थिरकर पुत्रसे अपनी बृद्धावस्था फिर लेली ५४ राजा ययाति काम से तृप्त नहोकर अपने पुत्रको तरुण अवस्था देदी और उसका राज्याभिषेक करके बोला ५५ हे पुत्र तूही मेरा वंश चलानेवाला पुत्र है आगे तेरावंश पौरवनाम से प्रसिद्ध होगा ५६ वैशम्पायन ने कहा तत्पश्चात् बड़े तपस्वी राजाओं में श्रेष्ठ ययाति ने पुरुको राज्य देकर भृगुतुंग में अच्छे कर्म कर बहुत काल पीछे स्त्री सहित अन्नादिक त्यागकर स्वर्गको गया ५८ ॥

satiated. It is only when one does not commit a sin in respect of living being, in heart, deed, or word, that one attains to purity like that of Brahma. When one is not afraid of anything is afraid of one; when one does not wish for anything and does not injury, any one, it is then that one attains to the purity of Brahma." The wise monarch seeing that desires are never satisfied, sought rest of mind in meditation and took back from his son his own decrepitude. Though his desires remained unsatisfied he gave him back his youth and installing him on the throne he said to Puru, "Thou art my true heir and son in whom my race will continue. My race shall be known in the world by thy name." Having installed his son Puru on the throne, the great king went away to the Mount of Bhrigu to practice asceticism and having acquired great ascetic merit, after long years he succumbed to the inevitable influence of time. He left the world observing a vow of fasting and ascended to heavens with his wives.

जनमेजय उवाच ॥ ययातिःपूर्वजोस्माकं दशमोयःप्रजापतेः । कथंसशुक्रतनयां लेभे परमदुर्लभाम् ॥ १ ॥ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुं विस्तरेणतपोधन । आनुपूर्व्याचमेशंस राज्ञोवंशकरान्पृथक् ॥२॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ययातिरासीन्नृपतिर्देवराजसमद्युतिः तंशुक्रवृषपर्वाणौ वव्रातेवैयथापुरा ॥ ३ ॥ तत्तेऽहंसम्प्रवक्ष्यामि पृच्छतेजनमेजय । देवयान्याश्चसंयोगं ययातेर्नाहुषस्यच ॥४॥ सुराणामसुराणाञ्च समजायतवै मिथः । ऐश्वर्यप्रतिसंघर्ष स्त्रैलोक्येसचराचरे ॥ ५ ॥ जिगीषयाततोदेवा वव्रिरेऽङ्गिरसंमुनिम् । पौरोहित्येनयाज्यार्थे काव्यंतूशनसंपरे ॥ ६ ॥ ब्राह्मणौताबुभौ नित्य मन्योऽन्यस्पर्द्धिनौभृशम् । तत्रदेवानिजघ्नुर्यान्दानवान्युधिसंगतान ॥ ७ ॥ तानपुनर्जीवयामास काव्यो विद्याबलाश्रयात् । ततस्तेपुनरुत्थाय योधयांचक्रिरेसुरान् ॥ ८ ॥ असुरास्तु

अध्याय ७६ ॥

जनमेजयने कहा प्रजापति से दसवें हमारे पूर्वज ययाति ने परम दुर्लभ शुक्रकी कन्या कैसे पाई । १ । हे तपोधन इस कथाको मैं विस्तार पूर्वक सुनना चाहताहूं । राजाके पुत्रों का वृत्तात क्रमसे पृथक् २ कहो । २ । वैशम्पायनने कहा इन्द्रके समान कान्तिवाले राजा ययातिको शुक्र और दैत्यराज वृषपर्वाने कन्याओं के विवाहार्थ जिस प्रकार पहले वरा उस देवयानि और नहुष के पुत्र ययाति के संयोगका वृत्तान्ततेरे प्रश्नके उत्तर में कहताहूँ । ४ । देवता और असुरों का आपस में चराचर सहित त्रैलोक्यके राजपर विरोध हुआ । ५ । तब देवताओंने जीतने की इच्छा से बृहस्पति मुनिको और दैत्यों ने शुक्रको यज्ञादिक करने के लिये पुरोहित बनाया । ६ । वे दोनों ब्राह्मण आपस में नित्य अत्यंत विरोध करते थे और संग्राम में जिन दानवों को देवता मारते थे उनको शुक्र अपनी विद्याके बलसे फिर जीवितकरता था और वे फिर उठकर देवताओं से युद्ध करने लगते थे । ८ ।

CHAPTER LXXVI

Janmejaya asked Vaishampayan to relate how his ancestor Yayati, the tenth from Prajapati, was able to obtain for wife the daughter of Sukra. He also desired him to tell, seriatim, the monarchs who had been the founders of dynasties. Vaishampayan replied that the monarch Yayati, glorious like Indra had married the daughters of both Shukra and Vrishparva under the circumstances given below:—Between the gods and the Asurs there was an enmity of long standing for sovereignty of the three worlds. The gods from a desire of victory, made the son of Angira their priest to officiate at their sacrifices; while the opposite party had *Usan* for their priest. The two Brahman priests were rivals. The

निजघ्नुर्यान सुरानसमरमूर्द्धनि । नतान्सञ्जीवयामास बृहस्पतिरुदारधीः ॥ ९ ॥
नहिवेदसतांविद्यां यांकाव्योवेत्तिवीर्यवान । सञ्जीवनींततोदेवा विषादमगमन्परम्
॥ १० ॥ तेतुदेवाभयोद्विग्नाः काव्यादुशनसस्तदा । ऊचुःकचमुपागम्य ज्येष्ठंपुत्रंबृ-
हस्पतेः ॥ ११ ॥भजमानान्भजस्वास्मान कुरुनःसाह्यमुत्तमम् । यासाविद्यानिवसति
ब्राह्मणेऽमिततेजसि ॥ १२ ॥ शुक्रेतामाहरक्षिप्रं भागभांगोभविष्यसि । बृषपर्वास-
मीपेहि शक्योद्रष्टुंत्वया द्विजः ॥ १३ ॥ रक्षतेदानवांस्तत्र नसरक्षत्यदानवान् । तमा
राधयितुं शक्तो भवान्पूर्ववयाःकविम्॥१४॥देवयानीञ्चदयितां सुतांतस्यमहात्मनः।
त्वामाराधयितुंशक्तो नान्यःकश्चनविद्यते ॥ १५ ॥ शीलदाक्षिण्यमाधुर्यै राचारेण
दमेनच । देवयान्यांहितुष्टायां विद्यातांप्राप्स्यसिध्रुवम् ॥१६॥ तथेत्युक्त्वाततःप्रायात्

संग्राम में जिन देवताओं को असुर मारते थे उनको उत्तम बुद्धिवाला बृहस्पति नहीं जीवित करसका था । ९ । जिस संजीविनी विद्या को शुक्र जानताथा उसको बृहस्पति नहीं जानताथा इसकारण देवता बड़े दुःखित हुए । १० । देवता शुक्रके भय से घबराये हुए बृहस्पति के ज्येष्ठ पुत्र कचके पास जाकर बोले । ११ । हेकच हमने तेरा आश्रय लियाहै हमारी सहायकर जो विद्या बड़े तेजस्वी ब्राह्मण शुक्रके पास है उसको शीघ्र ला और हमारे भागका भागी हो वह ब्राह्मण वृषपर्वा के समीप मिलेगा । १३ । वह वहां दानवोंकी रक्षा करताहै देवताओंकी नहीं करता तू तरुणहै और शुक्रकी सेवा करसक्ता है १४ महात्मा शुक्रकी प्रिय पुत्री देवयानि को तेरेसिवाय कोई सेवन नहीं करसक्ता १५ शील, चतुराई, मधुरता, आचार और जितेन्द्रियता से देवयानिको प्रसन्न करके अवश्य उस विद्या को पावेगा १६ तब देवताओं से सत्कार किया हुआ बृहस्पति का पुत्र कच

Danavas slain in battles were always revived by Shukra who knew how to restore them to life. But the gods slain in battle by the Asurs could not be revived as Vrihaspati, their, priest, did not know the art of reviving which Shukra psssessed. The gods therefore cut a sorry figure and in great anxiety entertaining a fear of the learned shukr, they went to *Kach* the eldest son of *Vrihaspati* and said, "We bow to thee, *Kach*, be kind to do us a service which we regard as very great. Bring as soon as thou canst, the knowledge possessed by the Brahman Shukra of great prowess and thou shalt share with us in all our sacrificial offerings. Thou shalt find him in the court of Vrishparva. He is ever the protector of Danavas, our opponents. Thou art junior to him in age and can, therfore, adore, him reverentially. Thou canst also please Devyani, his favourite

बृहस्पतिसुतःकचः। तदाभिपूजितोदेवैः समीपेवृषपर्वणः ॥ १७ ॥ सगत्वात्वरितो राजन् देवैःसम्प्रेषितःकचः। असुरेन्द्रपुरेशुक्रं दृष्ट्वावाक्यमुवाचह ॥१८॥ ऋषेराङ्गिरसःपौत्रं पुत्रंसाक्षाद्बृहस्पतेः। नाम्नाकचमितिख्यातं शिष्यंगृह्णातुमांभवान् ॥१९॥ ब्रह्मचर्यंचरिष्यामि त्वय्यहंपरमंगुरौ। अनुमन्यस्वमांब्रह्मन् सहस्रं परिवत्सरान् २० शुक्रउवाच ॥ कचसुस्वागतंतेऽस्तु प्रतिगृह्णामितेवचः। अर्चयिष्येऽहमर्च्यं त्वामर्चितोस्तुबृहस्पतिः ॥ २१ ॥ वैशम्पायनउवाच। कचस्तुतंतथेत्युक्त्वा प्रतिजग्राहतद्व्रतम्। आदिष्टंकविपुत्रेण शुक्रेणोशनसास्वयम् ॥ २२ ॥ व्रतस्यप्राप्तकालंसयथोक्तं प्रत्यगृह्णत। आराधयन्नुपाध्यायं देवयानीञ्चभारत ॥२३॥ नित्यमाराधयिष्यंस्तौ युवायौवनगोचरे। गायन्नृत्यन्वादयंश्च देवयानीमतोषयत् ॥ २४ ॥ संशीलयन्देवयानीं कन्यांसम्प्राप्तयौवनाम्। पुष्पैःफलैःप्रेषणैश्च तोषयामासभारत ॥ २५ ॥ देवया

तथास्तुकहकर वृषपर्वा के समीपगया १७ हे जन्मेजय, देवताओंका भेजाहुआ कच शीघ्र असुरोंके स्वामी वृषपर्वाके नगरमें पहुँचकर शुक्रको देखकरबोला १८ अंगिरस ऋषिकेपौत्र बृहस्पतिकेपुत्र कच नाम मुझ शिष्य को आपग्रहण कीजिये १९ तुमको परमगुरू बनाकर सहस्र वर्ष ब्रह्मचर्य करूंगा आप मुझको स्वीकारकरें २० शुक्र ने कहा हेकच तेरा शुभागमन हो तेरा वचन स्वीकार करताहूँ मैं तेरेपूजन करने से बृहस्पति का सत्कारहोगा २१ वैशम्पायन ने कहा कचने तथास्तु कहकर कविके पुत्र शुक्र के बताये हुए व्रतको गृहण किया २२ हेभारत ! कचने गुरू और गुरुपुत्री देवयानिका आराधन करते हुए यथोक्तव्रतको धारण किया २३ उसतरुण कचने नित्य उन दोनोंका आराधन करतेहुए देवयानि को गा, बजा और नाचकर प्रसन्न किया २४ हे जनमेजय ! तरुण अवस्था वाली देवयानि कन्या को पुष्प, फल, और सेवा आदि से प्रसन्न किया २५ देवयानि ने

---

daughter. Indeed, thou art the only one who can please them both by worship. Thou canst obtain that knowledge by gratifying Devyani with thy condnct, liberality, sweetness and control over organs." The son of Vrihaspati consented to comply with their request and went to the court of Vrishparva where he saw Shukra. On reaching there he thus addressed *Shukra*:- Accept me as thy disciple, I am the grandson of Rishi Angira and son of Vrihaspati. My name is Kach. If thou become my preceptor, I shall observe the vow of celibacy for a thousand years. Command me then, O Brahman." Shukra replied, "Thou art welcome, O Kach, I accept thy proposal. I shall treat thee with respect for Vrihaspati's sake. Vaishampayan continued that Katch commanded by Shukra, took the vow of

न्यपितं विप्रं नियतव्रतधारिणम् । गायन्तीचललन्तीच रहःपर्यचरत्तथा ॥ २६ ॥
पञ्चवर्षशतान्येवं कचस्यचरतोव्रतम् । तत्रातीयुरथोबुद्धा दानवास्तंततःकचम् २७॥
गारक्षन्तंवनेदृष्ट्वारहस्येकममर्षिताः।जघ्नुर्बृहस्पतेर्द्वेषाद्विद्यारक्षार्थमेवच ॥२८॥ हत्वा
शालावृकेभ्यश्च प्रायच्छँल्लवशःकृतम् । ततोगावो निवृत्तास्ता अगोपाःस्वंनिवेशनम्
॥२९॥सादृष्ट्वारहितागाश्चकचेनाभ्यागतावनात् । उवाचवचनंकाले देवयान्यथभारत
॥३०॥ देवयान्युवाच॥ आहुतंचाग्निहोत्रंते सूर्यश्चास्तंगतःप्रभो । अगोपाश्चगतागावः
कचस्तातनदृश्यते ॥ ३१ ॥ व्यक्तंहतोमृतोवापि कचस्तातभविष्यति । तं विनानच
जीवेय पितिसत्यंब्रवीमिते ॥ ३२ ॥ शुक्रउवाच ॥ अयमेहीतिसंशब्द्यमृतंसञ्जीव
याम्यहम् । ततःसञ्जीवनीं विद्यां प्रयुज्यकचमाह्वयत् ॥ ३३ ॥ भित्वाभित्त्वाशरी
राणि वृकाणांसविनिर्गतः । आहूतःप्रादुरभवत् कचोहृष्टोऽथविद्यया ॥३४॥ कस्मा-

भी नियम और व्रतधारी ब्राह्मणको उसी प्रकार प्रसन्न किया २६ इस प्रकार व्रतधारी कचके पांचसौ वर्ष वहां व्यतीत हुए तब दानवों ने कचको पहचान कर और वन में गौओं की अकेले रक्षा करते देख क्रोध से विद्या की रक्षा के लिये और बृहस्पति के द्वेषसे उसको मारडाला २८ और उसके टुकड़े कर भेड़ियोंको खिला दिया तब बिना रक्षक वह गायें अपने स्थान को लौट आईं २९ हेभारत ! गायोंको बिना कचके वनसे आई देखकर देवयानि ने यह कहा हे पिता आपका अग्निहोत्र होचुका सूर्य अस्तहुआ गौएं बिना रक्षक आईं और कच नहीं दीखता ३१ हे पिता निश्चय है कि कच को किसीने मारा या मरगया होगा और यह मैं सत्य कहती हूं कि उसके बिना मेरा जीवन नहीं होसकता । ३२ । शुक्र ने कहा इस शब्द को कहकर मरेहुए को मैं जिलाता हूं तब संजीविनी विद्या का प्रयोग कर कच को पुकारा । ३३ । विद्या प्रयोग से पुकारा हुआ कच भेड़ियों के शरीर को तोड़ कर प्रसन्न चित्त बाहर आया । ३४ । देवयानि

celibacy and began to conciliate both Shukra and Devyani. Young as he was, by singing, dancing and playing on different kinds of instruments he soon pleased young Devyani. He made her presents of flowers and fruits and rendered services with alacrity to please her. Devyani also in her turn, pleased the young Brahmchari by her songs and sweetness of manner when they were alone. When Kach had been there five hundred years, the Danavas knew his intention. And having no hesitation to kill a Brahman they grew very angry with him. One day they saw *Kach* tending kine in a solitary part of the woods and killed him from their hatred of Vrihashati and a desire to protect the knowledge of reviving the dead. They cut his

चिरायितोऽसीति पृष्टस्तामाहभार्गवीम् । समिधश्चकुशादीनि काष्ठभारञ्चभाविनि ॥ ३५ ॥ गृहित्वाश्रममारात्तं वटवृक्षंसमाश्रितः । गावश्चसहिताःसर्वा वृक्षच्छायामुपाश्रिताः ॥ ३६ ॥ असुरास्तत्रमांदृष्ट्वा कस्त्वमित्यभ्यचोदयन् । बृहस्पतिसुतश्चाहंकच इत्यभिविश्रुतः ॥ ३७॥ इत्युक्तमात्रेमांहत्वा पेषीकृत्वातुदानवाः । दत्वाशालावृकेभ्यस्तु सुखंजग्मुःस्वमालयम् । ३८। आहूतोविद्ययाभद्रेभार्गवेणमहात्मना त्वत्सकाशमिहायातः कथञ्चित्सञ्जीवितः । ३९। हतोहमितिचाचख्यौ पृष्टोब्राह्मणकन्यया।सपुनर्देवयान्योक्तःपुष्पाहारोयदृच्छया । ४०। वनंययौकचोविप्रो ददृशुर्दानवाश्चतम् पुनस्तंपेषयित्वातु समुद्राम्भस्यमिश्रयन् ॥४१॥ चिरङ्गतंपुनःकन्या पित्रेतंसंन्यवेदयत् । विप्रेणपुनराहूतो विद्यायागुरुदेहजः । पुनरावृत्यतद्वृत्तंन्यवेदयत्तद्यथा ॥४२॥ततस्तृतीयंहत्वातंदग्ध्वा

के देर से आनेका कारण पूछनेपर कच ने कहा हे शुद्ध भाववाली, समिधा, कुशादिक और काष्ट के भारको लेकर आश्रम के समीप बड़की छायामें गायोंसहित बैठाथा । ३६ । असुरोंने मुझे देखकर पूछा तू कौनहै मेरे यह कहनेपर कि बृहस्पति का पुत्र कचहूं दानवों ने मेरेटुकड़े २ कर भेड़ियों को खिला दिया और सुख से अपने स्थानों को चलेगये ३८ हे भद्रे ! महात्मा शुक्र ने अपनी विद्या से मुझे बुलाया और मैं किसी प्रकार पूर्ण आयु वाला तेरेसमीप आया । ३९ । ब्राह्मण कन्या देवयानि से फिर पूछेहुए कच ने कहा कि मैं मारागया था फिर एक समय देवयानि ने उसे पुष्प लेने भेजा । ४० । और दानवों ने उसे देखा और फिर उसे पीसकर समुद्र के जल में मिला दिया । ४१ । जब उसको गये बहुत काल होगया तब देवयानि ने अपने पिता से उसका वृत्तांत कहा शुक्र ने उसे फिर जीवित किया और आकर अपना वृत्तांत कहा । ४२ । तत्पश्चात्

body into pieces and threw it before jackals and wolves. At evening cows returned without him. Devyani, seeing them return without Kach, said to her father, " Thy evening fire has been kindled. The sun has set. The cows have returned without Kach. He is either slain or dead. Truly I cannot live without him. (32). Shukra said, " I revive the dead." Then he summoned Kach by the virtue of his science. Thus summoned, Kach ripped open the bodies of the wolves and came to his preceptor. Being asked by Devyani about the cause of his delay in coming. Kach said, " Having laid down my load of firewood and grass, I was sitting near the cows under the shade of the banian tree close by the asylun when the Asurs saw me and said, " Who are you. " And as I said I am Kach, the son of Brihaspati " the Asurs cut me to pieces

कृत्वाचचूर्णशः। प्रायच्छनब्राह्मणायैवसुरायामसुरास्तथा ॥४३॥ देवयान्यथभूयोऽपि पितरंवाक्यमब्रवीत्। पुष्पाहारःप्रेषणकृत्कचस्तातनदृश्यते ॥ ४४ ॥ व्यक्तंहतोमृतोवापि कचस्तातभविष्यति। तंविनानचजीवेयं कचंसत्यंब्रवीमिते ॥ ४५ ॥ शुक्रउवाच। बृहस्पतेःसुतःपुत्रि कचःप्रेतगतिंगतः। विद्ययाजीवितोऽप्येवं हन्यतेकरवामकिम् ।४६। मैवंशुचोमारुददेवयानि नत्वादृशीमर्त्य मनुप्रशोचते। यस्यास्तवब्रह्मच ब्राह्मणाश्च सेन्द्रादेवावसवोऽथाश्विनौच ॥ ४७ ॥ सुरद्विषश्चैवजगच्च सर्वमुपस्थाने सन्नमन्ति प्रभावात्। अशक्योऽसौजीवयितुंद्विजातिः सञ्जीवितोबध्यतेचैवभूयः ॥ ४८ ॥ देवयान्युवाच यस्याङ्गिरावृद्धतमः पितामहोबृहस्पतिश्चापिपितातपोनिधिः। ऋषेः पुत्रं तमथोवापि पौत्रंकथंनशोचेयमहंनरुद्याम् ॥४९॥ सब्रह्मचारीचतपोधनश्च सदोत्थितः

तीसरी बार असुरोंने उसे मार और जलाकर उसकी राख मदिरा में मिलाकर अपने गुरु (शुक्र) को पिलादी तब देवयानि ने फिर अपने पिता से कहा हे पिता वह आप का सब पुष्पों का लानेवाला नहीं दीखता । ४४ । हे पिता निश्चय कच मारागया वा मरा हे पिता सत्यही बिना कचके मेरा जीव न बचेगा । ४५ । शुक्रने कहा हे पुत्रि बृहस्पति का पुत्र कच मरगया विद्या से जिलाने परभी माराजाताहै हम क्याकरें । ४६ । हे देवयानि मत सोचकर तेरी सदृश को मरनेवाले का सोच नहीं करना चाहिये तेरेप्रभाव को मेरे प्रताप से बेद ब्राह्मण इन्द्र सहित देवता, अश्विनीकुमार, दैत्य और सब जगत् सन्ध्या समय नमस्कार करतेहैं और अब यह ब्राह्मण नहीं जीसकता क्योंकि फिर माराजाताहै देवयानि ने कहा जिसका पितामह अत्यंत बृद्ध अङ्गिरा और तपोनिधि बृहस्पति जिसका पिताहै । उस ऋषि पुत्र और पौत्रका कैसे सोच न करूं और न रोऊं । ४९ । उस

---

and fed the wolves with them. Shukra revived me and here I am with thee.'' On another occasion, Devyani sent him to fetch flowers. The Danavas saw him and having pounded his body mixed the paste with the sea water, (44). When he had been long absent, Devyani again brought the matter to her father's notice. Shukra again revived him and he gave out his account. The Asurs killed him a third time and mixed the ashes of his body in the wine which they gave Shukar to drink. Devyani then said to her father, " I donot see Kach who used to bring flowers for you. He is either dead or slain and surely I shall not live without him." Shukra said, " Kach, the son of Brahaspati is dead I shall not revive him any more. One like thee should not grieve for a mortal. On account of my prowess, the people of the world and the gods bow to thee at the

कर्मसुचैवदक्षः । कचस्यमार्गंप्रतिपत्स्येनभोक्ष्ये प्रियांहिमेतातकचोऽभिरूपः ॥ ५० ॥ वैशम्पायनउवाच । सपीड़ितोदेवयान्यामहर्षिः समाह्वयत्संरम्भाच्चैवकाव्यः । असंशयंमामसुराद्विषंति येमेशिष्यानागतान सूदयन्ति ॥ ५१ ॥ अब्राह्मणंकर्त्तुमिच्छन्ति रौद्रास्तेमांयथा व्यभिचरन्तिनित्यम् । अप्यस्यपापस्यभवेदिहान्तः कंब्रह्महत्यानदहे दपीन्द्रम् ॥ ५२ ॥ गुरोर्हिभीतोविद्ययाचोपहूतः शनैर्वाक्यंजठरेव्याजहार वैशंपायन उवाच । तमब्रवीत्केनपथोपनीतस्त्वं चोदरेतिष्ठसिब्रूहिविप्र ५३ कचउवाच । तवप्रसादान्नजहातिमांस्मृतिः स्मरामिसर्वंयच्चयथाचवृत्तम्।नत्वेवंस्यात्तपसःसङ्क्षयोमे ततः क्लेशंघोरमिमंसहामि ॥ ५४ ॥ असुरैःसुरायांभवतोऽस्मि दत्तोहत्वादग्ध्वाचूर्णयित्वा चकाव्य । ब्राह्मींमायांचासुरीं विप्रमायांत्वयिस्थिते कथमेवातिवर्तेत् ॥ ५५ ॥

ब्रह्मचारी तपोधन, सर्वदा आज्ञाकारी, चतुर कचके मार्गको अन्नत्यागकर के जाऊंगी वह रूपवान कच मुझको अतिप्रिय है । ५० । वैशम्पायन ने कहा देवयानि से पीड़ित महर्षि शुक्र ने क्रोध से पुकारकर कहा अवश्य असुर मेरे साथ द्वेष करके मेरेबुलाये हुए शिष्यों को मारडालते हैं ५१ और यह दुष्ट मुझको अब्राह्मण करना चाहते हैं और मेरेसाथ विरुद्ध आचरण करते हैं इसपापका परिणाम अवश्य होगा ब्रह्महत्या इन्द्र तकको जला सकती है ५२ गुरूसे डरेहुए और विद्या से जिलायेहुए कचने धीरेधीरे पेटमें बातकी गुरू ने उस से पूछा हे ब्राह्मण वतला तू कैसेमेरे पेटमें पहुँचा ५३ कचने उत्तरदिया आपके प्रसाद से मुझको सब घटना स्मरण है और तपका नाश होने के भयसे इसघोर क्लेश को सहता हूं । हेशुक्र मुझेजला कर मेरी राख मदिरा में मिलाकर आपको पिलादी ब्राह्मी दैवी और आसुरी मायाको तू जानताहै तुझ से विशेष कौन है । ५५ । शुक्रने कहा मैं 55

---

time of prayer every day." Devyani said, "Why should I not grieve and weep for the grandson of old Angira and the son of Vrihaspati. He himself as well as his father and grandfather are great rishis. Besides the Brahmchari was a great ascetic, always obedient, wise and so beautiful. I loved him much and I shall die fasting for him. (50). Afflicted by the grief of Devayani, the Maharshi Shukra said in a loud aud angry tone, "Certainly these Asurs are my enemies that slay my disciples. They want to degrade me from Brahmanism by making me participate in their crime. (The punishment of killing a Brahman is very great.) Revive again, the terror stricken Kach spoke from within the belly of Shukra. And on being asked as to how he went within it, Kach replied, "By thy grace my memory has not failed me. I bear this insufferable pain for the fear of los-

शुक्रउवाच । किन्तेप्रियंकरवाण्यद्य वत्सेवधेनमेजीवितंस्यात् कचस्य । नान्यत्रकुक्षेर्मम भेदनेनदृश्येत्कचो मद्गतोदेवयानि ॥ ५६ ॥ देवयान्युवाच । द्वौमांशोकावग्निकल्पौ दहेतांकचस्यनाशस्तव चैवोपघातः । कचस्यनाशेममशर्मनास्ति तवोपघातेजीवितुं नास्मिशक्ता ॥ ५७ ॥ शुक्र उवाच । संसिद्धरूपोऽसिबृहस्पतेः सुत यत्त्वांभक्तंभजते देवयानि । विद्यामिमांप्राप्नुहिजीवनीं त्वंनचेदिन्द्रःकचरूपीत्वमद्य ॥ ५८ ॥ ननिवर्त्तेत पुनर्ज्जीवन् कश्चिदन्योममोदरात् । ब्राह्मणंवर्ज्जयित्वैकं तस्माद्विद्यामवाप्नुहि ॥ ५९ ॥ पुत्रोभूत्वाभवयमावितो मामस्मद्देहादुपनिष्क्रम्यतात । समीक्षेथाधर्मवतीमवेक्षांगुरोः सकाशात्प्राप्यविद्यांसविद्यः ॥ ६० ॥ वैशम्पायन उवाच । गुरोःसकाशात्समवाप्य विद्यां भित्त्वाकुक्षिंनिर्विचक्रामविप्रः । कचोऽभिरूपस्तत्क्षणाद्ब्राह्मणस्यशुक्लात्यये पौर्णमास्यामिवेन्दुः ॥ ६१ ॥ दृष्ट्वाचतंपतितंब्रह्म राशिमुत्थापयामासमृतं कचोऽपि ।

तेरा क्या प्रिय करूं मेरेमरनेसे कचका जीवन होसकता है हे देवयानि मेरेपेटको तोड़ेबिना कच बाहर नहीं आसकता । ५६ । देवयानिने कहा दोनों शोक अग्नि सदृश मुझे जलाते हैं कचका नाश और तुम्हारी मृत्यु कचकी मृत्यु से मेरेसुखका नाश और तुम्हारे मरने से मेरेप्राणोंका नाश होगा हे बृहस्पतिके पुत्र कच तेरा अभिप्राय सिद्धहुआ देवयानि तुझ से प्रेमकरती है यदि कचरूप बनाये हुए तू इन्द्र है तो इस संजीवनी विद्याको ले । ५८ । ब्राह्मण को छोड़ और कोई मेरेपेट में जीता नहीं रहसक्ता इस लिये तू विद्या को ले ५९ हे तात मुझसे जिलाया हुआ तू मेरा पुत्र होकर मुझेजिला मुझगुरूसे विद्या प्राप्तकर धर्मानुसार वर्तावकर । ६० । वैशम्पायन ने कहा वह उत्तम ब्राह्मण कचगुरूसे विद्या पाकर उसके पेटसे पूर्णमासी के चन्द्रमाकी नाईं बाहर निकला ६१ कचनेभी उस वेदनिधिको

---

ing my asceticism. They burnt me and then mixed the ashes with the wine which they gave thee to drink. Thou knowest all. Who is more learned than thee ?" Shukra addressed Devayani and said, "What good can I do to thee. Kach cannot come out without ripping open my stomach and in that case I shall die." Devyani replied, "Both griefs burn me. The death of Kach will destroy my happiness and thy death will destroy my life. Shukra said, "O son of Vrihaspati, thou hast gained thy object. Devyani loves thee. If thou art not Indra in the form of Kach, receive this science. None but a Brahman could remain alive in my stomach. Revived by me you will be able to revive me in return." (60). Vaishampayan said that having learnt the science, Kach came out of the stomach of Sukra like the full moon. And finding his

विद्यांसिद्धांतामवाप्याभिवाद्य ततःकचस्तंगुरुमित्युवाच ॥ ६२ ॥ यःश्रोत्रयोरमृतंसं निषिञ्चेद्योगेनविद्यस्य यथाममायम् । तंमन्येऽहंपितरंमातरञ्च तस्मैनद्रुह्येत्कृतमस्य जानन् ॥ ६३ ॥ ऋतस्यदातारमनुत्तमस्य निधिंनिधीनामपिलब्धविद्याः । येनाद्रियन्तेगुरुमर्च्चनीयं पन्पाँल्लोकांस्तेव्रजन्त्यप्रतिष्ठाः ॥ ६४ ॥ वैशम्पायन उवाच । सुरापानाद्वंचनांप्राप्य विद्वान्संज्ञानाशंचैवमहातिघोरम् । दृष्ट्वाकचंचापितथाभिरूपं पीतं. तदा सुरयामोहितेन ॥ ६५ ॥ समन्युरुत्थायमहानुभावस्तदोशनाविप्रहितं चिकीर्षुः । सुरापानंप्रतिसंजातमन्युः काव्यःस्वयंवाक्यमिदंजगाद ॥ ६६ ॥ योब्राह्मणोऽद्यप्रभृतीहकश्चिन्मोहात्सुरांपास्यतिमन्दबुद्धिः । अपेतधर्माब्रह्महाचैवससस्या दस्मिन्लोके गर्हितःस्यात्परेच ॥ ६७ ॥ मयाचैतांविप्रधर्मोक्तिसीमां मर्य्यादांवैस्था पितांसर्वलोके

माराहुआ देखकर उसको जीवित किया तब कच सिद्ध विद्या प्राप्तकर गुरू से बोला जैसे मेरेविद्यारहित कानोंमें शुक्रने अमृत संजीविनी विद्याका उपदेश कियाहै वैसेही जो मुझे मोक्षविद्या उपदेश करेगा उसकोभी मैं अपना माता पिता मानताहूं और उसके उपकार को जानताहूं और कभी द्रोह न करूंगा । ६३ । सर्वोत्तम वेदविद्या के देनेवाले और विद्या निधि ऐसे पूजनीय गुरूको जो विद्या पढकर आदर नहीं करते हैं वे प्रतिष्ठारहित नरकको जाते हैं । ६४ । वैशम्पायनने कहा बड़ा प्रतापी ब्राह्मणों का हितेच्छुक क्रोधित विद्वान, मदिरा पानकर क्रोधित शुक्र सुरापानसे ठगायाहुआ और अज्ञानताको प्राप्तहुआ मदिराके साथ पियेहुए उस उत्तम रूप कचको देखकर उसने कहा । ६६ । जो कोई मन्दबुद्धि ब्राह्मण मोहसे मदिरा पिये वह धर्मरहित ब्रह्महत्याका भागी इसलोक और परलोक में निन्दितहोगा । ६७ । मैंने ब्राह्मणों के धर्मकी यह मर्यादा इसलोक में स्थापनकी

---

preceptor dead, Kach revived him with the help of his knowledge and said to him. "He who imparts knowledge to an ignorent being, as thou hast done to me, I hold as father and mother and shall never be ungrateful. They who injury their preceptors are hated on the earth and finally go to hell. The learned Shukra having been deceived by wine remembering his unconsciousness and seeing before him the beautiful Kach whom he had drunk with his wine thought of reforming the manners of Brahmans. He then stood upright and said, "The wretched Brahman who from this day will be tempted to drink wine, shall lose his virtue and shall be reckoned to have committed the sin of slaying a Brahman and shall be hated both in this and the world to come. I set this limit to the conduct of Brahmans." Having said these words, Shukra summoned

सन्तोविप्राःशुश्रुवांसो गुरूणां देवालोकाश्चोपशृण्वन्तुसर्वे ॥ ६८ ॥ इतीदमुक्त्वा समहानुभावस्तपोनिधीनांनिधिरप्रमेयः । तान्दानवान्दैवविमूढबुद्धी निदंसमाहूयवचोऽभ्युवाच ॥ ६९ ॥ आचक्षेवोदानवाबालिशाः स्थसिद्धःकचोवत्स्यतिमत्सकाशे सञ्जीविनींप्राप्तविद्यांमहात्मा तुल्यप्रभावोब्राह्मणोब्रह्मभूतः ॥ ७० ॥ एतावदुक्त्वा वचनं विररामसभार्गवः । दानवाविस्मयाविष्टाः प्रययुःस्वं निवेशनम् ॥ ७१ ॥ गुरोरस्य सकाशेतु दशवर्षशतानिसः । अनुज्ञातःकचोगन्तु मियेषत्रिदशालयम् ७२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्यान षट्सप्ततोऽध्यायः ७६ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ समावृतव्रतंतन्तु विसृष्टंगुरुणातदा । प्रस्थितंत्रिदशावासं देवयान्यात्रवीदिदम् ॥ १ ॥ ऋषेरङ्गिरसःपौत्र वृत्तेनाभिजनेनच । भ्राजसेविद्यया

है इसको महात्मा और गुरुओंकी सेवा करनेवाले ब्राह्मण देवता और सबलोग सुनें ६८ तपोनिधियों के निधि, प्रतापी, महानुभाव शुक्रने यह कहकर प्रारब्ध से नष्ट बुद्धिवाले दानवों को बुलाया । ६९ । और उनसे कहा हे दानवो तुम मूर्खहा और सिद्धहुआ महात्मा कच संजीविनी विद्या पाकर मेरेसदृश वेदस्वरूप हुआ और मेरेपास रहेगा ७० यह कहकर शुक्र चुपहुआ और दानव आश्चर्य करतेहुए अपने स्थानों को गये । ७१ । और कच ने एक सहस्र वर्ष तक गुरूके पास जाकर गुरुकी आज्ञा से स्वर्गको जानकी इच्छाकी ७२ ॥

अध्याय ७७ ॥

वैशम्पायन ने कहा समाप्त व्रत वाले, गुरुसे आज्ञा पायेहुए, स्वर्ग को जाते हुए कचसे देवयानि ने कहा । १ । हे अंगिरा पौत्र कच, चाल चलन, कुलीनता, विद्या,

---

the Danavs whom fate had deprived of good sense and said, "You foolish Danavas, knew, that Kach has gained his object! He has learned the knowledge of reviving the dead and has become in prowess equal to Brahma." Having said this he kept his peace and the Danavas went home surprised. Kach completed the period of a thousaud years in the house of his preceptor and then obtained his permission to return to the abode of the gods.

CHAPTER LXXVII.

Vaishampayan said, that after expiration of the period of his vow, Kach obtained his preceptor's permission to go home. At the time of his departure Devyani said, "Thou shinest most brightly

चैव तपसाचदमेनच ॥ २ ॥ ऋषिर्यथांगिरामान्यः पितुर्ममहायशाः । तथामान्यश्च
पूज्यश्च ममभूयोबृहस्पतिः ॥ ३ ॥ एवंज्ञात्वा विजानीहि यद्ब्रवीमितपोधन । व्रतस्थ
नियमोपेते यथावर्त्ताम्यहंत्वयि ॥ ४ ॥ ससमाप्तविद्यो मां भक्तांभजितुमर्हसि गृहा
णपाणिं विधिवन्ममन्त्रपुरस्कृतम् ॥ ५ ॥ कचउवाच ॥ पूज्योमान्यश्चभगवान् यथा
तव पितामम । तथात्वमनवद्यांगि पूजनीयतरामम ॥ ६ ॥ प्राणेभ्योऽपि प्रियतरा भा
र्गवस्यमहात्मनः । त्वंभद्रेधर्मतःपूज्या गुरुपुत्रीसदामम ॥ ७ ॥ यथाममगुरुर्नित्यं मा
न्यःशुक्रःपितातव।देवयानितथैवत्वं नैवंमांवक्तुमर्हसि ॥८॥ देवयान्युवाच ॥ गुरुपुत्रस्य
पुत्रोवै नत्वंपुत्रश्च मेपितुः। तस्मात्पूज्यश्चमान्यश्च ममापित्वंद्विजोत्तम ॥९॥ असुरैर्हन्य
मानेच कचत्वयिपुनःपुनः । तदाप्रभृतियाप्रीतिस्तांत्वमद्यस्मरस्वमे ॥ १० ॥ सौहार्दे
चानुरागेच वेत्थमेभक्तिमुत्तमाम् । नमामर्हसिधर्मज्ञ त्यक्तुंभक्तामनागसम् ॥ ११ ॥

तप और जितेन्द्रियता से तू प्रकाशमान है । २ । जैसे यशस्वी अंगिरा ऋषि मेरे पिता का माननीय है वैसेही सत्कार और पूजा के योग बृहस्पति भी है । ३ । हे तपोधन ऐसा जान कर जो मैं तुझ से कहती हूं उस को सुन, जैसे व्रत और नियम में स्थित तेरेसाथ मैंने बर्ताव किया वैसाही विद्या प्राप्त करके मेरी भक्ति कर और मंत्र सहित मेरा पाणिगृहण कर कच ने कहा जैसे तेरा पिता मेरा पूज्य और मान्य है वैसे ही तूभी मेरा अत्यंत पूजनीय है । ६ । हे भद्रे ! महात्मा शुक्र को तू प्राणों से अधिक प्रिय है इस कारण तू गुरु पुत्री होनेसे मेरी पूज्य है । ७ । जैसे मेरा गुरू तेरा पिता शुक्र मुझको नित्य माननीय है हे देवयानि वैसे तू है मुझसे ऐसा वचन कहना योग्य नहीं है । ८ । देवयानि ने कहा तू अङ्गिरा का पौत्र है मेरेपिता का पुत्र नहीं इस कारण हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तू मेराभी पूज्य और माननीय है । ९ । हे कच असुरोंसे तेरे बार २ मारेजाने पर जो प्रीति मेरी तेरेसाथ रही उसको यादकर । १० । मित्रता और प्रेम में मेरी उत्तर

in conduct, birth, learning, asceticism and humility. I worship thy father Vrihaspati as devotedly as my father honours the Rishi Angira. Give ear to what I say. Recollect my behavior to thee during thy vow. Thy vow is now over. Fix thy affections on me and accept my hand with due rites. Kach replied, "I worship thee like thy father. I hold thee even greater as thou art dearer than life to Shukr, O beautiful one. I shall ever hold thee worthy of worship as the daughter of my preceptor who is deserving of my regards. Thy speech is therefore improper." Hearing this Devyani replied, "Thou too art the grandson of my father's preceptor and as such worthy of respect to me. Recollect affection I showed for thee at the time of your being killed by Asurs. Remembering friendship and devotion to thee it is not worthy of thee to abandon

कचउवाच ॥ अनियोज्येनियोगेमां नियुनंक्षिशुभव्रते । प्रसीदसुभ्रुत्वंमह्यं गुरोर्गुरुतरा
शुभे ॥ १२ ॥ यत्रोषितंविशालाक्षि त्वयाचन्द्रनिभानने । तत्राहमुषितोभद्रे कुक्षौका
व्यस्यभामिनि ॥ १३ ॥ भगिनीधर्मतोमेत्वं मैवंवोचःसुमध्यमे । सुखमस्म्युषितोभद्रे
नमन्युर्विद्यतेमम ॥ १४ ॥ आपृच्छेत्वांगमिष्यामि शिवमाशंसमेपथि । अविरोधेन
धर्मस्य स्मर्तव्योऽस्मिकथान्तरे । अप्रमत्तोत्थितानित्य माराधयगुरुंमम ॥ १५ ॥
देवयान्युवाच ॥ यदिमांधर्मकामार्थे प्रत्याख्यास्यसियाचितः । ततःकचनतेविद्यासि
द्धिमेषागमिष्यति ॥ १६ ॥ कचउवाच ॥ गुरुपुत्रीतिकृत्वाहं प्रत्याचक्षेनदोषतः । गुरु
णाचाननुज्ञातः काममेवंशपस्वमाम् ॥ १७ ॥ आर्षधर्मंब्रुवाणोऽहं देवयानियथात्वया
शप्तोनार्होऽस्मि शापस्यकामतोऽद्यनधर्मतः ॥ १८ ॥ तस्माद्भवत्यायःकामो नतथास

भक्ति को तू जानता है हे धर्मज्ञ ! अपराध रहित मुझ भक्त को छोड़ना तेरेयोग्य नहीं
। १० । कचने कहा हे उत्तम व्रतवाली न करने योग्य कार्यमें तू मुझ को नियुक्त करती
है हेशुभे तू मेरेगुरुसे भी मान्य है । १२ । हे बड़े नेत्रवाली चन्द्रमुखी जिस शुक्र की
कोख में तूने निवास किया है उसी में मैंने भी किया है । १३ । हे सुमध्यमे तू धर्म
से मेरी बहिन है ऐसा मत बोल मैं सुख से यहां रहाहूं और मुझे किसी प्रकार का क्रोध
नहीं है । १४ । मैं तुझ से जानेकी आज्ञा मांगताहूं मार्ग में तेरेकल्याणकी इच्छा कर
धर्म से मेरी यादकरिये और सावधानी से मेरेगुरुकी सेवा कर । १५ । देवयानि ने
कहा जो तू धर्मसे कामकी याचना करने पर मेरावचन न मानेगा तो यह विद्या तुझको
सिद्ध नहोगी । १६ । कचने कहा तुझ को गुरुपुत्री समझकर मैंने तेरा कहना नहीं
माना तुझमें और कोई दोष नहीं बतलाता हूँ और गुरुने मुझको यह आज्ञा नहीं दी, तू
मुझे जो शाप चाहे दे यह देवयानि आर्ष धर्मको कहते हुए मुझे तूने काम से शापदिया
है धर्मसे नहीं मैं शापके योग्य नहीं हूँ । १८ । इस कारण तेरा काम पूरा नहोगा और कोई

me without any fault," Kach replied, "Donot lead me, virtuous one, to such a course of sin, when I hold thee in greater esteem than my preceptor. Besides, O virtuous one of large eyes and face like the Moon, I have resided in the same place i. e., the body of Shukra, as thou as such thou art my sister. Therefore, O slender-waisted one, donot say so. We have happily passed the time togther and been friends. I ask thy leave to go home. Wish me a safe journey." Remember me sometimes as one who has not transgressed virtue. Always attend upon my preceptor with readiness and attention. To all this Devyani answered, "If thou hast made up thy mind and would still refuse to make me thy wife, then, O Kach, this knowledge of thine shall not bear fruit." Hearing this Kach said, "I have refused thy request because thou art my preceptor's

भविष्यति । ऋषिपुत्रोनतेकश्चित्ज्जातुपाणिंग्रहीष्यति ॥ १९ ॥ फलिष्यतिनतेविद्या यत्त्वंमामात्थतत्तथा । अध्यापयिष्यामितुयं तस्यविद्याफलिष्यति ॥२०॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्त्वा द्विजश्रेष्ठो देवयानींकचस्तदा । त्रिदशेशालयंशीघ्रं जगाम द्विज सत्तमः ॥२१॥ तमागतमभि प्रेक्ष्य देवाइन्द्रपुरोगमाः । बृहस्पतिंसभाज्येदं कचंवचन मब्रुवन् ॥ २२ ॥ देवाऊचुः ॥ यत्त्वयास्मद्धितंकर्म कृतंवैपरमाद्भुतम् । नतेयशःप्रण-शिता भागभाक्त्वंभविष्यति २३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
सप्तसप्ततोऽध्यायः ७७ ॥

ऋषि तेरा पाणिगृहण न करेगा १९ तेरा शाप सचाहोगा मुझको विद्या सफल नहोगी परन्तु मैं जिसको विद्या दानकरूंगा उसको सफलहोगी २० वैशम्पायन ने कहा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कच देवयानि से यह कहकर शीघ्र देवलोक को गया २१ इन्द्रादि देवताओं ने कचको आया हुआ देखकर बृहस्पति का सत्कार किया और कच से बोले । २२ । हे कच तूने हमारा अद्भुत हितकर्म किया है तेरा यश कभी नष्ट नहोगा और यज्ञ में तू हमारा भागी होगा २३ ॥

---

daughter and not because of any fault in thee. Nor has my preceptor in this respect issued any command. Curse me if it please thee. My behavior is that of a Rishi and not deserving of thy curse. Thou hast cursed me under the influence of thy passion and not from a sence of duty. Thy desire shall never be fulfilled. No rishi's son shall ever accept thy hand in marriage. If I myself cannot use my knowledge by thy curse, it shall yet bear fruit in him whom I shall teach it." Having said so to Devyani, that foremost of Brahmans, Kach, speedily went to the abode of gods. And Indra with other gods, paid respect to him and said, "Thou hast indeed performed a good act. Thy achievement has been wonderful. Thy fame shall never die and thou shalt share with us the sacrificial offering.

वैशंपायनउवाच । कृतविद्येकचेमाप्ते हृष्टरूपादिवौकसः । कचादधीत्यतांविद्यांकृतार्था भरतर्षभ ॥ १ ॥ सर्वएवसमागम्य शतक्रतुमथाब्रुवन् । कालस्ते विक्रमस्याद्य जहि शत्रून्पुरन्दर ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तुसहितै स्त्रिदशैर्मघवांस्तदा । तथेत्युक्त्वाप्रचक्राम सोऽपश्यतवनेस्त्रियः ॥ ३ ॥ क्रीड़न्तीनान्तुकन्यानां वने चैत्ररथोपमे । वायुभूतः स वस्त्राणि सर्वाण्येवव्यमिश्रयत् ॥ ४ ॥ ततोजलात् समुत्तीर्य्य कन्यास्ताःसहितास्तदा । वस्त्राणिजगृहुस्तानि यथासन्नान्यनेकशः ॥ ५ ॥ तत्रवासोदेवयान्याः शर्मिष्ठाजगृहे तदा । व्यतिमिश्रमजानन्ती दुहितावृषपर्वणः ॥ ६ ॥ ततस्तयोर्मिथस्तत्र विरोधः समजायत । देवयान्याश्चराजेन्द्र शर्मिष्ठायाश्च तत्कृते ॥ ७ ॥ देवयान्युवाच ॥ कस्माद्गृह्णासिमेवस्त्रं शिष्याभूत्वाममासुरि । समुदाचारहीनाया न ते साधुभविष्य ति ॥ ८ ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ आसीनञ्चशयानञ्च पिताने पितरं मम । स्तौतिवन्दीव

अध्याय ७८ ॥

वैशम्पायन ने कहा हे जन्मेजय विद्या पढ़कर कचके आनेपर देवताओं ने प्रसन्न होकर कचसे वह विद्या पढ़ी और कृतार्थ हुए। १ । तत्पश्चात् सम्पूर्ण देवता एकत्रितहो इन्द्र से बोले हे इन्द्र यह समय तेरेपराक्रम करनेका है दैत्यों का नाश कर। २ । यह सुनकर इन्द्रने तथास्तु कहा और देवताओं सहित युद्धको गया वन में जाकर स्त्रियों को देखा कुबेरके बनके समान वनमें क्रीड़ा करती हुई कन्याओं के वस्त्र वायुरूपहोकर इन्द्र ने मिला दिये । ४ । तत्पश्चात् उन कन्यायों ने जल में से निकलकर एकसाथ मिलेहुए कपड़ोंको उठा लिया।५। और देवयानिके कपड़ों को वृषपर्वा की बेटी शर्मिष्ठाने मिलेहुए कपड़ों मेंसे विनाजाने उठालिया । ६ । हे जन्मेजय तत्पश्चात् ऐसा करनेसे उन दोनों का आपसमें विरोध हुआ । ७ । देवयानि ने कहा हे असुरकी वेटी शिष्यहोकर तूने कैसे मेरा वस्त्र लिया सदाचार हीनहोने से यह तेरा कार्य शुभ नहीं होगा । ८ । शर्मिष्ठा ने कहा

CHAPTER LXXVIII

Vaishampayan said that the gods very gladly welcomed Kach who had brought the wonderful science. They learned it from Kach and considered themselves already victorious. They assembled before Indra and said, "Now is the time for showing thy prowess. Slay thy enemies, O Purander." Indra assented and set out with the gods. On their way they saw a bevy of damsels sported in a lake in the garden of Chitrath, the Gandharv. And changing himself into wind, Indra soon mixed up their garments which they had kept on the bank. A little while after the maidens approached the mixed garments and Sharmishta, the daughter of Vrishparva, appropriated the attire of Devyani by mistake. A dispute arose between the two. Devyani said, "O daughter of Asur, why dost thou take my attire,

चाभीक्ष्णं नीचैःस्थित्वा विनीतवत् ॥९॥ याचतस्त्वंहिदुहिता स्तुवतःप्रतिगृह्णतः । सुताहंस्तूयमानस्य ददतोऽप्रतिगृह्णतः ॥ १० ॥ आदुन्वस्वविदुन्वस्वद्रुह्य कुप्यस्व याचकि अनायुधासायुधायाँ रिक्ताक्षुभ्यसिभिक्षुकि ॥ ११ ॥ लप्स्यसेप्रतियोद्धारं नहित्वांगणयाम्यहम् । वैशम्पायन उवाच । समुच्छ्रयंदेवयानीं गतांसक्तांचवाससि ॥ १२ ॥ शर्मिष्ठाप्राक्षिपत्कूपे ततःस्वपुरमागमत् । हतेयमितिविज्ञाय शर्मिष्ठापापनिश्चया ॥ १३ ॥ अनवेक्ष्ययययौवेश्म क्रोधवेगपरायणा । अथतंदेशमभ्यागाद्ययातिर्नहुषात्मजः ॥१४॥ श्रान्तयुग्यःश्रान्तहयो मृगलिप्सुःपिपासितः । सनाहुषःप्रेक्षमाण उदपानं गतोदकम् ॥ १५ ॥ ददर्शराजातांतत्र कन्यामग्निशिखामिव । तामपृच्छत्सदृष्ट्वैव कन्याममरवर्णिनीम् ॥ १६ ॥ सान्त्वयित्वानृपश्रेष्ठः साम्नापरमवल्गुना । कात्वं-

बैठेहुए और सोते हुए मेरे पिताकी तेरा पिता सदानीचे स्थान में स्थितहो नम्रता के साथ भाटोंके समान स्तुति करता है । ९ । मांगनेवाले स्तुति करनेवाले और दानलेने वालेकी तू पुत्री है और मैं स्तुति किये जानेवाले दान देनेवाले और स्वयं न लेने वालेकी पुत्रीहूँ । १० । तू छाती पीटकर रो और चाहे जितना क्रोध कर वा भूमि में लोटकर दूसरे का बुराकरनेकी इच्छाकर हे भिखारि तू आयुध रहित और दरिद्र होकर सायुधपर क्रोधकरती है और मुझसे जो शत्रुता करतीहै मैं तुझको कुछ नहीं समझती ! महत्व को प्राप्तहुई वस्त्र में आसक्त देवयानि को पापिन शर्मिष्ठा कुए में गिरा और मरीहुई समझकर अपने नगरको गई । १३ । उसको बिना देखे क्रोधितहो घरको चलीगई । अकस्मात् उसी देश में नहुषका पुत्र ययाति गया । १४ । ययाति जिसके रथोंके घोड़े आदि थक गये थे मृगोंका पीछाकरताहुआ, प्यासा, जलके खोजमें कुए में पड़ीहुई अग्नि तुल्य तेजस्विनी देवयानि को देखा और उस देवकन्या के समान रूपवाली से पूछा । १६ । राजाओं में

being, as thou art, my disciple ? Destitute of good behaviour no good can came to thee. Sharmishta replied, "Thy father occupies a lower rank than my father and adores him like a bard. Thou art the daughter of a beggar and bard while I am the daughter of one who is adored and who bestows alms. Thou art at liberty to strike thy breast, abuse, be angry or to vow enmity to me. Thy tears of anger are vain, beggar woman. Thou canst do me no harm whilest I can if I like. I do not think thee my equal and so donot wish to quarrel with thee." Vaishampayan continued that hearing these words Devyani was very angry and began to pull at her clothes. Sharmishtha then threw her into a well and believing her to be dead, went home. After Sharmishtha's departure Yayati the son

ताम्रनखीश्यामा सुमृष्टमणिकुण्डला ॥ १७ ॥ दीर्घंध्यायसिचात्यर्थं कस्माच्छोचसि चातुरा । कथंचपतितास्यस्मिन् कूपेवीरुत्तृणावृते ॥ १८ ॥ दुहिताचैवकस्यत्वं वदस त्वंसुमध्यमे । देवयान्युवाच ॥ योऽसौ देवैर्हतान्दैत्यानुत्थपयति विद्यया । तस्यशुक्र स्यकन्याहंसमांनूनंनवुध्यते ॥ १९ ॥ एषमेदक्षिणोराजन् पाणिस्ताम्रनखांगुलिः । समुद्धरगृहीत्वामां कुलीनस्त्वंहिमेमतः ॥ २० ॥ जानामित्वामहंशान्तं वीर्यवन्तंयश स्विनम् । तस्मान्मांपतितामस्मात् कूपादुद्धर्त्तुमहर्सि ॥ २१ ॥ वैशम्पायन उवाच । तामथोब्राह्मणींराजा विज्ञायनहुषात्मजः । गृहीत्वादक्षिणे पाणावुज्जहार ततोऽवटात् ॥ २२ ॥ उद्धृत्यचैनांतरसा तस्मात्कूपान्नराधिपः । आमन्त्रयित्वासुश्रोणींययातिः स्वपुरंययौ ॥ २३ ॥ गतेतुनाहुषेतस्मिन् देवयान्याप्यनिन्दिता । उवाचशोकसन्तप्ता

श्रेष्ठ ययाति ने मनोहर वचनों से उसको शान्ति देकर पूछा, हे लालनखवाली, दिव्य कुण्डलवाली श्यामा तू कौनहै ! गहरे विचारमें पड़ीहुई घबराकर क्या सोच कररही है ? लता और घास से ढके हुए कुए में कैसे गिरपड़ी है । १८ । हेसुमध्यमे ! तू किसकी बेटी है सत्य कह, देवयानि ने कहा जो देवताओं से मारेहुए दैत्योंको अपनी मृतसंजीविनी विद्यासे जिलाता है उस शुक्रकी मैं कन्याहूं सो तू क्या मुझको नहीं जानता ? लालनख और उंगलीवाले इस मेरेदाहने हाथको पकडकर कुए मेंसे निकाल ले मुझको यह निश्चय है कि तू कुलीन, शान्तियुक्त, पराक्रमी, यशस्वी है इसकारण मुझको इसकुएंसे निकालने योग्यहै वैशम्पायनने कहा, इसके उपरांत राजा ययाति ने उसे ब्राह्मणी जानकर दहिने हाथसे कुए के खड्डमेंसे निकाल लिया । और उसको कुए से निकालकर उस उत्तम कमर वालीसे आज्ञा ले अपने नगर को गया राजाके चलेजानेपर अनिन्दित देवयानि ने सामने

---

of Nahush came thither. He had been out hunting and his horses were fatigued. Being thirsty he went to a well and found it dry; but within it he saw a maiden bright like the blazing fire. The king addressed her in sweet words, saying, "Who art thou, fair one of nails like bright copper and earrings decked with celestial gems. Why dost thou weep in affliction and how didst thou fall in this well choked with creepers and long grass ? Whose daughter thou art ?" Devyani said, "I am the daughter of Shukr who revives the Asurs that are slain by the gods. He does not know what has befallen me. Here is my right hand with nails like burnished copper. Raise me up by it. I believe thou art well descended, of good behaviour, great prowess and wide fame." King Yatati learning that she was a Brahman's daughter raised her by her right hand from the well,

घूर्णिकामागतांपुर २४देवयान्युवाच त्वरितंघूर्णिकेगच्छ शीघ्रमाचक्ष्वमेपितुः। नेदानीं-म्प्रवेक्ष्यामि नगरंवृषपर्वणः ॥ २५ ॥ वैशम्पायन उवाच। सातत्रत्वरितंगत्वा घूर्णिका सुरमन्दिरम्। दृष्ट्वाकाव्यमुवाचेदं सम्भ्रमाविष्टचेतना ॥ २६ ॥ आचचक्षे महाप्राज्ञं देवयानींवनेहताम्। शर्मिष्ठयामहाभाग दुहित्रावृषपर्वणः ॥ २७ ॥ श्रुत्वादुहितरं काव्य स्तत्रशर्मिष्ठयाहताम्। त्वरयानिर्ययौ दुःखान्मार्गमाणःसुतांवने ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा दुहितरंकाव्यो देवयानींततोवने बाहुभ्यांसम्परिष्वज्य दुःखितोवाक्यमब्रवीत् ।२९। आत्मदोषैर्नियच्छन्ति सर्वेदुःखसुखेजनाः। मन्येदुश्चरितंतेऽस्ति यस्येयंनिष्कृतिःकृता ॥ ३० ॥ देवयान्युवाच। निष्कृतिर्मेस्तुवामास्तु शृणुष्वावहितोमम। शर्मिष्ठयायदुक्ता स्मि दुहित्रावृषपर्वणः ॥ ३१ ॥ सत्यंकिलैतत्साप्राह दैत्यानामसिगायनः। एवंहिमे

से आतीहुई अपनी दासीसे शोकसे कहा, देवयानि ने कहा हे दासी ! शीघ्र जाकर मेरे पितासे कह। २८। अब मैं वृषपर्वाके नगर में प्रवेश नहीं करूंगी, वैशम्पायन ने कहा घबराई हुई दासी शीघ्र असुर के मन्दिरमें गई और शुक्रको देखकर वृषपर्वाकी बेटी शर्मिष्ठासे ताडनकीहुई देवयानिका वृत्तांत कहा शुक्र यह वृत्तान्त सुनकर शीघ्रही अपनीपुत्री को खोजताहुआ दुःखितहो बनको गया और अपनी पुत्री देवयानि को बनमें देखकर दोनों हाथों से अपने हृदय से लगाया और दुःखितहोकर यह कहा सम्पूर्ण मनुष्य अपने दोषों से दुःख और सुख पाते हैं। ३०। मैं समझता हूं कितेरे किसी पापका यह फल है देवयानि ने कहा मेरेपापोंका इसफल भोगने से नाशहो वा नहो परन्तु सावधानीसे मेरावचन सुनो। ३१। क्या वृषपर्वाकी बेटी शर्मिष्ठा ने मुझसे सत्यही कहाथा कि तू दैत्योंका

---

and having bade her a courteous farewel went, home. When the son of Nahush had gone away, the beautiful Devyani, afflicted with grief spoke to her maid who met her at the time. She said, "O maid go soon to my father and tell him every thing that has happened, I shall not now enter the city of Vrishparva." She went at once to the palace of the Asur king where Shukra was, and told him all in anger. She said, "Devyani has been ill-treated in the wood by Sharmishtha the daughter of Vrishparava." Hearing that his daughters was ill-treated by Sharmishtha he went hastily to the wood with a heavy heart. When he found her in the woods he clasped her with affection and spoke to her with voice choked with grief, "Weal or woe befalls people by their own faults. Thou hast been punished for some fault." Devyani replied, "Whether it be for my fault or not, listen to what I say, but, first hear what Sharmishta

कथयति शर्मिष्ठावार्षपर्वणी ॥ ३२ ॥ वचनंतीक्ष्णपरुषं क्रोधरक्तेक्षणाभृशम् । स्तुवतो
दुहितानित्यं याचतःप्रतिगृह्णतः ॥ ३३ ॥ अहन्तुस्तूयमानस्य ददतोऽप्रतिगृह्णतः । इदं
मामाहशर्मिष्ठा दुहितावृषपर्वणः । क्रोधसंरक्तनयना दर्पपूर्णापुनःपुनः ॥ ३४ ॥ यद्यहं
स्तुवतस्तातदुहिता प्रतिगृह्णतः । प्रसादयिष्येशर्मिष्ठा मित्युक्तातुसखीमया ॥ ३५ ॥
शुक्रउवाच । स्तुवतोदुहितानत्वं याचतः प्रतिगृह्णतः । अस्तोतुःस्तूयमानस्य दुहिता
देवयान्यसि ॥ ३६ ॥ वृषपर्वैवतद्वेद शक्रोराजाचनाहुषः । अचिन्त्यंब्रह्मनिर्द्वन्द्वमैश्वरं
हिवलंमम ॥ ३७ ॥ यच्चकिंचित्सर्वगतं भूमौवायदिवादिवि । तस्याहमीश्वरोनित्यं
तुष्टेनोक्तःस्वयम्भुवा ॥ ३८ ॥ अहंजलंविमुञ्चामि प्रजानांहितकाम्यया । पुष्णाम्यो
षधयःसर्वा इतिसत्यंब्रवीमिते ॥ ३९ ॥ वैशंपायनउवाच । एवंविषादमापन्नां मन्युना

गवैयाहै ३२ अत्यन्त क्रोध से लाल नेत्रकरके वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा ने मुझसे यह कठोर वचन कहा ३३ स्तुति करनेवाले, सदा भिखारी दानलेनेवालेकी तू बेटी है और मैं स्तुति करानेवाले, दानदेनेवाले और स्वयं दान न लेनेवालेकी बेटी हूं ३४ घमण्ड और क्रोध से लाल नेत्र कियेहुए शर्मिष्ठा ने मुझसे यह वचन बार २ कहा ८३ हे तात जो मैं स्तुति करनेवाले और दानलेनेवालेकी बेटीहूं तो मैं शर्मिष्ठा को प्रसन्न करलूंगी और ऐसाही मैंने अपनी सखीसे कहाहै ३६ शुक्रने कहा हे देवयानी स्तुति करनेवाले, दान देनेवाले और भिक्षुककी बेटी तू नहीं है किंतु दान न लेनेवाले और स्तुति करानेवालेकी तू बेटी है ३७ विचार में न आने योग्य शत्रु रहित ईश्वर के दियेहुए मेरे ब्रह्मबलको वृषपर्वा इन्द्र और नहुषका बेटा ययाति जानता है ३८ भूमि और आकाशकी सर्वत्रवस्तुओं का ईश्वर मुझको प्रसन्नहोकर स्वयं ब्रह्मा ने कहा है ३९ मैं प्रजाओं के हितकीइच्छा

---

has said to me. She said that thou art the hired bard of the Asur king. Sharmishta said these cruel words to me:—" Thou art the daughter of one that chaunts for hire the praises of others, of one that begs charity and receives alms; where as I am the daughter of one that is adored and gives alms." These were really the words spoken by Sharmishta with eyes red in anger. If, father, I am really the daughter of a hired bard and a beggar, I must adore her to win her grace. Of this I have already told her." Shukra replied, " Thou art not the daughter of a hired adorer, nor of one that asks for alms and receives charity. Thou art the daughter of one that adores none, of one that is adored by all. Vrishparva knows it, and Indra and king Yayati too, know that my strength lies in the all powerful and inconceivable Brahm. The self create himself gratified by me,

सम्मपीडिताम् । वचनैर्मधुरैः श्लक्ष्णैः सांत्वयामासतांपिता ॥ ४० ॥
इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
अष्टसप्ततोऽध्यायः ७८ ॥

शुक्रउवाच ॥ यःपरेषांनरोनित्य मतिवादांस्तितिक्षते देवयानि विजानीहि तेनसर्व मि ं जितम् ॥ १ ॥ य समुत्पतितंक्रो ध निगृह्णातिहयंयथा । स न्तेत्युच्यतेसद्भिर्नया रश्मिषुलम्बते ॥२॥ यःसमुत्पतितंक्रोध मक्रोधेननिरस्यति । देवयानि विजानीहि तेन

से जलकी वर्षा करताहूं और सम्पूर्ण अन्नादिक औषधियों को पुष्ट करता हूं यह मैं तुझ से सत्य कहताहूं ४० वैशम्पायन ने कहा, इसप्रकार खेद करतीहुई क्रोधित देवयानि को मधुर और शान्तिदायक वचनों से शुक्र ने समझाया ४१ ॥

अध्याय ७९ ॥

शुक्रने कहा, हेदेवयानि जो पुरुष दूसरे के दुर्वचनको सदा क्षमाकरताहै उसने सम्पूर्ण संसार को जीत लिया जो मनुष्य क्रोध को घोड़के समान वशकरता है वह सज्जनों में सार्थी है और सब लगाम थामने वालेहैं । २ । जोपुरुष क्रोधको त्याग करताहै हेदेवयानि

said that I am to be the lord of whatever is on earth or in heaven. It is really I who pours rain for the good of creatures and who nourishes plants and all living beings." Vaishampayan continued that by such sweet words the father tried to pacify his afflicted and angry daughter.

CHAPTER LXXIX

Shukra said that he who does not mind the ill treatment of others conquers everything. The wise say that he who holds tightly the reins of his horses is a true charioteer. He who subdues his rising

सर्वमिदंजितम ॥ ३ ॥ यःसमुत्पतितंक्रोधं क्षमयेहनिरस्यति । यथोरगस्त्वचंजीर्णां
सवैपुरुषउच्यते ॥ ४ ॥ यःसन्धारयतेमन्युं योऽतिवादांस्तितिक्षते । यश्चतप्तोनतपति
दृढंसोऽर्थस्यभाजनम् ॥ ५ ॥ योयजेदपरिश्रान्तो मासिमासिशतंसमाः । नक्रुद्ध्येद्यश्च
सर्वस्य तयोरक्रोधनोऽधिकः ॥ ६ ॥ यत्कुमाराः कुमार्यश्च वैरंकुर्युरचेतसः । नतत्
प्राज्ञोऽनुकुर्वीत न विदुस्तेबलाबलम् ॥ ७ ॥ देवयान्युवाच । वेदाहंतातबालापि
धर्माणांयदिहान्तरम् । अक्रोधेचातिवादेच वेदचापिबलाबलम् ॥ ८ ॥ शिष्यस्याशि
ष्यवृत्तेस्तु नक्षन्तव्यंबुभूषता । तस्मात्संकीर्णवृत्तेषु वासोममनरोचते ॥ ९ ॥ पुमांसो
येहिनिन्दन्ति वृत्तेनाभिजनेनच । नतेषुनिवसेत्प्राज्ञः श्रेयोऽर्थीपापबुद्धिषु ॥ १० ॥
येत्वेनमभिजानन्ति वृत्तेनाभिजनेनवा । तेषुसाधुषुवस्तव्यं सवासःश्रेष्ठउच्यते ॥ ११ ॥

वह निश्चय सब संसार को जीतता है । ३ । जो उत्पन्नहुए क्रोधको शान्तिसे सर्पकी केंचुली के समान दूरकर देताहै वही संसार में पुरुषहै । ४ । जो क्रोधको रोककर दूसरे के कहे दुर्वचन सहलेता है जो क्रोधकी पीडाको पीडा नहीं मानता वह धर्मार्थ काम मोक्ष चारों का पात्रहै ।५। जो सौवर्षतक हरमहीने आनंदपूर्वक श्राद्धकरता और क्रोधी नहीं है इन दोनों में पिछला अधिक पुण्यवान्है । ६ । जो पुत्र वा कन्या बुद्धिरहितहोकर विरोधकरते हैं वे बल और दीनता का ज्ञान नहीं रखते बुद्धिमान् ऐसा कार्य नहीं करते । ७ । देवयानि ने कहा हेतात मैं बालकभी धर्मों के अन्तर को जानतीहूं और क्रोध झगड़ेकी बुराई भी मुझे विदित है । ८ परन्तु संसार में प्रतिष्ठाकी इच्छा करनेवाले पुरुषको अन्यथा बर्ताव करने वाले शिष्यको क्षमा करना योग्य नहीं इस कारण इन अस्थिर बुद्धिवालों में मुझे रहना प्रिय नहीं ।९। जो पुरुष अपने चाल चलन और कुटुम्ब के अभिमान से दूसरों की निन्दा करतेहैं उनके पास बुद्धिवालों में कल्याण का चाहने वाला न रहे जो अपनेसे दूसरोंको अच्छा समझते

---

anger is a true man and conquers everything. He who casts off his anger as the serpent does his outer skin, is a true man. He who forgives and suppresses his anger gains the four objects (religion, profit, desire and salvation) for which we live. He who subdues his anger is certainly higher than him who performs sacrifices every month for a hundread years. Boys and girls having no sense of right and wrong quarrel with one another. The wise donot imitate them. Having heard all this Devyani said, " O father, I know my duties although I am a girl. I know the difference between anger and forgiveness. But when a disciple behaves disrespectfuly, he should never be forgiven by the preceptor if the latter be a well-wisher of the former I donot desire to livein a place where misbehaviour

वाग्दुरुक्तंमहाघोरं दुहितुर्वृषपर्वणः । मथ्नात्यनानि हृदयमग्निकामइवारणिम् ॥ १२ ॥ नह्यतोदुष्करतरं मन्येलोकेष्वपित्रिषु । यःसपत्नश्रियंदीप्तां हीनश्रीःपर्युपासते । मरणंशोभनंतस्य इतिविद्वज्जनाविदुः ॥ १३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने एकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःकाव्योभृगुश्रेष्ठः समन्युरुपगम्यह । वृषपर्वाणमासीनमित्युवाचाविचारयन् ॥ १ ॥ नाधर्मश्चरितोराजन सद्यःफलतिगौरिव । शनैरावर्त्यमानोहि कर्त्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ २ ॥ पुत्रेषुवानप्तृषुवा नचेदात्मनिपश्यति । फलत्येवध्रुवंपापं गुरुभुक्तमिवोदरे ॥ ३ ॥ यदघातयथाविप्रं कचमाङ्गिरसंतदा । अपापशी-

हैं ऐसे महात्माओं में बासकरना श्रेष्ठ कहलताहै । ११ । वृषपर्वा की बेटीका बड़ा भयानक दुर्वचन मेरेहृदयको ऐसा मथता है जैसे अग्नि निकालने वाला आरणी को १२ तीनों लोकों में इससे अधिक पाप नहीं है कि आप निर्धनहोकर शत्रुकी बढ़ीहुई लक्ष्मीका सेवन करे विद्वानों ने कहाहै कि ऐसे पुरुषका मरजानाही उत्तम है १३ ॥

अध्याय ८० ॥

वैशम्पायनने कहा । भृगुवंशियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त शुक्रने वृषपर्वा से बिना विचारे यह कहा । १ । हे राजन् अधर्म शीघ्र गौके समान नहीं फलता शनैः २ जड़को काटता है । २ । यदि अधर्म का फल स्वयं न भोगे तो बेटों पोतों में अवश्य गुरु अन्नकी समान दुःखदाई होता है । ३ । जो तूने धर्मशील धर्मज्ञ गुरुकी सेवा करनेवाले मेरेघरमें रहते

is the rule. The wise do not expect good from dwelling among sinful men who are enemies of good behaviour and high birth. To dwell in places where good behaviour and purity of birth are known and respected, is the best. The cruel words of Vrishparva's daughter burn my heart as fire burns dry fuel. None is more miserable than him who possessing no fortune adores his enemies blessed with good fortune. The learned say that death is preferable to leading such a life.

CHAPTER LXXX

Vaishampayan said that this speech excited the anger of Shukr and approaching Vrishparva, began to speak to him without weighing his words. "O king," he said, "sinful acts donot, like the cow,

वृषपर्वन्निबो

लंधर्मज्ञं शुश्रूषमद्गृहेरतम् ॥ ४ ॥ वधादनर्हतस्तस्य वधाच्चदुहितुर्मम । अहो
धेदं त्यक्ष्यामित्वांसबान्धवम् ॥ ५ ॥ स्थातुंत्वद्विषये राजन्नशक्ष्यामित्वयासह ॥६॥
मामभिजानासि दैत्यमिथ्याप्रलापिनम् । यथेममात्मनोदोषं ननियच्छस्युपेक्षसे । तत्प्रसीद
वृषपर्वोवाच । नाधर्मंनमृषावादं त्वयिजानामिभार्गव । त्वयिधर्मश्चसत्यञ्च
तुनोभवान् ॥ ७ ॥ यद्यस्मानपहायत्व मितोगच्छसिभार्गव । समुद्रंसम्प्रवेक्ष्यामो
नान्यदस्तिपरायणम् ॥ ८ ॥ शुक्र उवाच । समुद्रंप्रविशध्वंवा दिशोवाद्रवतासुराः ।
दुहितुर्नाप्रियंसोढुं शक्तोऽहंदयितांहिमे ॥ ९ ॥ प्रसाद्यतांदेवयानी जीवितंयत्रमेस्थितम्
योगक्षेमकरस्तेऽहमिन्द्रस्येवबृहस्पतिः ॥ १० ॥ वृषपर्वोवाच । यत् किञ्चिदसु

हुए अंगिरा के पोते ब्राह्मण कचको हिंसाकराई । ४ । उस अवध्य के मारने और मेरी
कन्या के पीड़ा देने से हे वृषपर्वा मैं तुझको सकुटुम्ब त्याग करूंगा हे राजन् मैं तेरेसाथ
नहीं रहूँगा । ५ । हे दैत्य तू मुझे झूठा जानता है इसी कारण तू अपने दोषको छिपाता है
और मुझको झूठसे प्रसन्न करना चाहताहै । ६ । वृषपर्वा ने कहा हे भार्गव मैं तुमको
अधर्मी और मिथ्यावादी नहीं जानता तुम में धर्म और सत्य दोनों निवास करते हैं आप
मुझ से प्रसन्न रहें । ७ । हे भार्गव जो तुम यहां हमको छोड़कर चलेजाओगे तो मैं
समुद्र में प्रवेश करूंगा और कोई मेरा रक्षक नहीं । ८ । शुक्र ने कहा हे असुरों चाहे तुम
समुद्र में प्रवेशकरो या कहीं और जाओ मैं अपनी प्रिय कन्या के अप्रिय कार्य को नहीं
सहसक्ता ९ देवयानि को प्रसन्न करो जिससे मेरा जीवनहै इन्द्र का निर्वाह जैसे
बृहस्पति करते हैं इसी प्रकार मैं तेरा करताहूं १० वृषपर्वाने कहा हे भार्गव जो कुछ

---

bear fruit immediately. But gradually and secretly they out away the roots of the doer. Such fruit is seen either in one's self or in one's descendants. Sins must bear their fruit and can never be digested like rich food. I shall leave thee and thy relations, Vrishparva, because you slew without fault the Brahman Kach, the grandson of Angira, who was virtuous, learned, dutiful and not worthy of this treatment and for the ill-treatment of my daughter, I cannot stay with thee. Dost thou, O Asur chief, think that I am a raving liar that thou makest light of my complaints without redressing the wrongs done to me?" Vrishparva replied, "I have never attributed falsehood or want of virtue to thee, Bhargav. Indeed thou art the treasure of truth and virtue. Be merciful to us. If thou wilt really leave us we shall have to seek the depth of the Ocean." Shukr replied, I care not whether

रेन्द्रणां विद्यतेवसुभार्गव । सुविहस्तिगवाश्वञ्च तस्यत्वंममचेश्वरः ॥ ११ ॥
शुक्र उवाच । यत्किञ्चिदस्तिद्रविणं दैत्येन्द्राणां महासुर । तस्येश्वरोऽस्मियद्येषादेव
यानीमसाद्यताम् ॥ १२ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ एवमुक्तस्तथेत्याह वृषपर्वामहा
कविः । देवयान्यन्तिकंगत्वा तमर्थमाहभार्गवः ॥ १३ ॥ देवयान्युवाच । यदित्व-
मीश्वरस्तातराज्ञो वित्तस्यभार्गव । नाभिजानामितत्तेऽहं राजातुवदतुस्वयम् ॥ १४ ॥
वृषपर्वोवाच । यंकाममभिकामासि देवयानिशुचिस्मिते । तंतेऽहंसम्प्रदास्यामि यदि
वापिहिदुर्लभम् ॥ १५ ॥ देवयान्युवाच । दासींकन्यासहस्रेण शर्मिष्ठामभिकामये ।
अनुमांतत्रगच्छेत्सा यत्रदद्याच्चमेपिता ॥ १६ ॥ वृषपर्वोवाच । उत्तिष्ठत्वंगच्छधा
त्रि शर्मिष्ठांशीघ्रमानय । यञ्चकामयतेकामं देवयानीकरोतुतम् ॥ १७ ॥ वैशम्पायन

पृथ्वीपर असुरोंका धन, हाथी, घोडे, गायहैं उनका और मेरा तू मालिक है शुक्रने कहा हे महासुर जो कुछ असुर राजाओंका धनहै यदि उसका मैं ईश्वरहूँ तो देवयानि को प्रसन्न करो वैशम्पायन ने कहा, यह सुनकर बड़े विद्वान वृषपर्वा ने तथास्तु कहा और देवयानि के पास जाकर उसी वृत्तान्तको कहा १३ देवयानि ने कहा हे तात भार्गव ! जो राजा के धनके तुम स्वामीहो यह तुम्हारा कहना मुझे स्वीकार नहीं राजा स्वयं अपने मुँह से यह बात कहे १४ वृषपर्वा ने कहा हेमनोहर हास्ययुक्त देवयानि ! जो तू चाहतीहै यदि वह दुर्लभभी हो मैं तुझे दूंगा १५ देवयानिने कहा सहस्र कन्यायों सहित शर्मिष्ठा मेरी दासी हो और जिसको मेरा पिता मुझे दे उसके घर साथ मेरेजावे वृषपर्वाने कहा हे दाई तू जाकर शर्मिष्ठा को शीघ्र बुलाला और देवयानि की इच्छानुसार वह काम करे

---

you go to the depths of the Ocean or disperse in all directions. I cannot bear my daughter's grief. She is dear to me above all. I live for her. Try to please her. As Vrihaspati seeks the good of Indra so do I always seek thine by my ascetic merits." Vrishparva said, "Thou, O Bhargav, art the master of all that the Asur chiefs possess in this world, of their elephants, cows and horses and of my own self." Shukra then said, "If it be indeed true that I am master of all the wealth of the Asurs, then go and gratify Devyani." Vaishampayan continued that on hearing this from Vrishparva Shukra went to Devyani and told her all. Devyani replied, "O Bhargav if thou art truly the lord of the Asur king and his wealth, then let the king himself come to me and say so in my presence." Vrishparva then approached Devyani and said, "O Devyani of sweet smiles I am willing to fulfil thy desire however difficult it may be

उवाच । ततोधात्रीतत्रगत्वा शर्मिष्ठांवाक्यमब्रवीत् । उत्तिष्ठभद्रेशर्मिष्ठे ज्ञातीनांसुखमा
वह ॥ १८ ॥ त्यजतिब्राह्मणःशिष्यान् देवयान्याप्रचोदितः । सायंकामयतेकामं स
कार्योद्यत्वयानघे ॥ १९ ॥ शर्मिष्ठोवाच । यंसाकामयतेकामं करवाण्यहमद्यतम् ।
यद्येवमाह्वयेच्छुक्रो देवयानीकृतेहिमाम् । मद्दोषान्मागमच्छुक्रो देवयानीचमत्कृते २०
वैशम्पायन उवाच । ततःकन्यासहस्रेण वृताशिबिकयातदा । पितुर्नियोगात्त्वरिता
निश्चक्रामपुरोत्तमात् ॥ २१ ॥ शर्मिष्ठोवाच । अहंदासीसहस्रेण दासीतेपरिचारिका ।
अनुत्वांतत्रयास्यामि यत्रदास्यतितेपिता ॥ २२ ॥ देवयान्युवाच । स्तुवतोदुहि
ताहंते याचतःप्रतिगृह्णतः । स्तूयमानस्यदुहिता कथंदासीभविष्यसि ॥ २३ ॥

---

१७ वैशम्पायन ने कहा दाई ने शर्मिष्ठा के पास जाकर कहा हे भद्रे शर्मिष्ठे ! उठ और
अपने बांधवों को सुख दे १८ देवयानि के कहने से ब्राह्मण शुक्र अपने शिष्यों को छोड़ता
है, इस कारण हे पापरहित देवयानि की इच्छानुसार अब तुझे करना होगा १९ शर्मिष्ठा ने
कहा जिस काम को देवयानि चाहे वही करूंगी यदि देवयानि के कारण शुक्र मुझसे ऐसा
चाहता है मेरे दोष से शुक्र और देवयानि न जावें २० वैशम्पायन ने कहा तत्पश्चात
सहस्र कन्याओं सहित देवयानि पालकी में बैठकर नगर से बाहर गई २१ शर्मिष्ठा ने कहा मैं
सहस्र दासियों सहित तेरा काम करनेवाली दासी हूं और जहां तेरा पिता तुझे देगा वहीं
जाऊंगी देवयानि ने कहा मैं तेरे स्तुति करनेवाले, याचक और दान लेनेवाले की बेटी हूं, तू स्तुति

---

to grant it." Devyani said, "I desire Sharmishta with a thousand maids to wait on me. She must follow me to where my father may bestow me." Vrishparva commanded a female attendant to bring Sharmishta quickly to accomplish the desire of Devyani. The main servant went to Sharmishta and told her to rise at once and follow her for the good of her kinsfolk as she said that the great Brahman Shukra was for leaving the Asurs. Sharmishta consented cheerfully to do what Devyani and Shukr wanted her to do. "Devayani and Shukr," said she, "Must not leave the Asurs through my fault." Vaishampayan continued, that commanded by her father Sharmishta, accompanied by a thousand maidens, soon came out her father's palace in a palanquin and approaching Devyani said, "With my thousand maidens I am thy waiting woman and shall follow thee." Devyani replied, "I am the daughter of one who chaunts the praises of thy father and who begs and accepts alms. Thou art the daughter of one adored. How canst thou be my waiting woman?" Sharmishta answered. "One must always try to do good to one's kins-

शर्मिष्ठोवाच । येनकेनचिदार्त्तानां ज्ञातीनांसुखमावहेत् । अतस्त्वामनुयास्यामि यत्र दास्यतितेपिता ॥ २४ ॥ वैशम्पायन उवाच । प्रतिश्रुतेदासभावे दुहित्रावृषपर्वणः । देवयानीनृपश्रेष्ठ पितरंवाक्यमब्रवीत् ॥ २५ ॥ देवयान्युवाच । प्रविशामिपुरंतात तुष्टास्मिद्विजसत्तम । अमोघंतवविज्ञानमस्तिविद्याबलञ्चते ॥ २६ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ एवमुक्तोदुहित्रासद्विजश्रेष्ठोमहायशाः । प्रविवेशपुरंहृष्टः पूजितः सर्वदानवैः २७ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्यानेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

किये जानेवालेकी बेटी कैसे दासी बनेगी २३ शर्मिष्ठाने कहा मेरेदुःखित बांधवोंको सुखहो इसकारण जहां तेरा पिता तुझे देगा वहां मैं दासी होकर जाऊंगी २४ वैशम्पायन ने कहा वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा के दासी होनेपर देवयानि ने अपने बापसे कहा २५ देवयानि ने कहा हे तात मैं नगर में चलती हूं और हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मैं प्रसन्नहूं तुम्हारा ज्ञान और विद्या बल सफल है ॥ २६ ॥ वैशम्पायनने कहा इस प्रकार बेटीकी बात सुनकर बड़े यशवाला सम्पूर्ण दानवोंसे पूजित शुक्र प्रसन्नहोकर नगर में गया २७ ॥

men. I shall, therefore, follow thee wherever thy father may bestow thee." Vaishampayan continued that when Sharmishta had thus promised to be the waiting woman of Devyani, the latter told her father, "I am gratified, O best of Brahmans. I shall now enter the Asur capital. I now know that thy science and power of knowledge are not in vain." Vaishampayan continued, "Hearing this from her daughter, Shukr entered the capital of the Asur king with a light heart and the Danavas worshipped him with great reverence.

वैशम्पायन उवाच ॥ अथदीर्घस्यकालस्य देवयानीनृपोत्तम । वनन्तदेव निर्याता क्रीडार्थंवरवर्णिनी ॥ १ ॥ तेनदासीसहस्रेण सार्द्धं शर्मिष्ठयातदा । तमेवदेशं सम्प्राप्ता यथाकामंचचारसा ॥ २ ॥ ताभिःसखीभिःसहिता सर्वाभिर्मुदिताभृशम् । क्रीडन्त्योऽभिरताःसर्वाः पिबन्त्योमधुमाधवीम् ॥ ३ ॥ खादन्त्यो विविधान्भक्ष्यान् विदशन्त्यःफलानिच । पुनश्चनाहुषोराजा मृगलिप्सुर्यदृच्छया ॥ ४ ॥ तमेव देशं सम्प्राप्तो जलार्थीश्रमकर्षितः । ददृशेदेवयानींस शर्मिष्ठांताश्चयोषितः ॥ ५ ॥ पिबन्तीर्ललमानाश्च दिव्याभरणभूषिताः । उपविष्टांचददृशे देवयानींशुचिस्मिताम् ॥ ६ ॥ रूपेणाप्रतिमांतासां स्त्रीणांमध्येवराङ्गनाम् । शर्मिष्ठयासेव्यमानां पादसंवाहनादिभिः ॥ ७ ॥ ययातिरुवाच ॥ द्वाभ्यांकन्यासहस्राभ्यां द्वेकन्येपरिवारिते । गोत्रेचनामनीचैव द्वयोःपृच्छाम्यहं शुभे ॥ ८ ॥ देवयान्युवाच ॥ आख्यास्याम्यहमादत्स्व वचनंमेनरा

अध्याय ८१ ॥

वैशम्पायनने कहा हे राजाओं में श्रेष्ठ जनमेजय ! बहुतकाल व्यतीत होनेपर देवयानि क्रीड़ा के लिये उसीवन को गई । १ । उन सहसूदासियों और शर्मिष्ठा सहित उसी देश में जाकर क्रीड़ा करने लगी । २ । उन सम्पूर्ण सखियों सहित प्रेम युक्त मधुमदिरा पीती हुई फिरती थी नहुषका बेटा राजा ययाति मृगके पीछे परिश्रम से घबराया हुआ जलकी इच्छासे फिर उसी देश में आया और उसने देवयानि और शर्मिष्ठा को सम्पूर्ण दासियों सहित । ५ । पीने के पदार्थ पीती हुई, दिव्य आभूषणों से भूषित देखा और सुन्दर हास्य युक्त, बैठी हुई, रूप में अनुपम सब से उत्तम, शर्मिष्ठा से पाउँ दबवाती हुई देवयानि को देखा । ७ । ययातिने कहा दोसहसू कन्याओं से घिरी हुई तुमदोनों कन्याओं के नाम और गोत्र को सुनना चाहताहूँ । ८ । देवयानि ने कहा हे नराधिप मैं तुझे बतलातीहूं

CHAPTER LXXXI

Vaishampayan said that after some time the beautiful Devyani went into the same woods for purposes of pleasure. And accompanied by Sharmishtha and her thousand maids she reached the same place and began to wander in freedom and attended by them she felt herself supremely happy. Sporting joyfully they began to suck honey from various kinds of flowers and to eat of the various kinds of fruits. At this time, king Yayati, the son of Nahush, tired and thirsty, again visited the same locality in search of der. He saw Sharmishta and Devyani with other maids decked with heavenly ornaments full of voluptuous languor in consequence of the wild honey they had drunk. Devyani of sweet smiles, unrivalled i

धिप। शुक्रोनामासुरगुरुः सुतांजानीहितस्यमाम् ॥ ९ ॥ इयंचमेसखीदासीयत्राहंतत्र गामिनी। दुहितादानवेन्द्रस्य शर्मिष्ठावृषपर्वणः ॥ १० ॥ ययातिरुवाच ॥ कथंतुते सखीदासी कन्येयंवरवर्णिनी। असुरेन्द्रसुतासुभ्रू परंकौतूहलं हिमे ॥ ११ ॥ देव- यान्युवाच ॥ सर्वएवनरश्रेष्ठ विधानमनुवर्त्तते विधानविहितंमत्वा माविचित्राःकथाः कृथा ॥ १२ ॥ राजवद्रूपवेशौते ब्राह्मींवाचंबिभर्षिच। कोनामत्वंकुतश्चासि कस्य पुत्रश्चशंसमे ॥ १३ ॥ ययातिरुवाच। ब्रह्मचर्य्येणवेदोमे कृत्स्नःश्रुतिपथंगताः। रा- जाहंराजपुत्रश्च ययातिरितिविश्रुतः ॥ १४ ॥ देवयान्युवाच। केनास्यर्थेननृपते इमंदे- शमुपागतः। जिघृक्षुर्वारिजंकिञ्चिदथ वामृगलिप्सया ॥ १५ ॥ ययातिरुवाच। मृ- गलिप्सुरहंभद्रे पानीयार्थमुपागतः। बहुधाप्यनुयुक्तोऽस्मि तदनुज्ञातुमर्हसि ॥ १६ ॥ देवयान्युवाच। द्वाभ्यांकन्यासहस्राभ्यां दास्याशर्मिष्ठयासह। त्वदधीनास्मिभद्रंते

सुन असुरों के गुरुशुक्रकी मैं कन्याहूँ। ९। यह दूसरी मेरी सखी और दासीमेरे साथ रहने वाली, दानवों के राजाकी बेटी शर्मिष्ठा है। १०। ययाति ने कहा असुरों में राजाकी बेटी उत्तमभौं वाली प्रियवचन बोलनेवाली तेरीसखी और दासी कैसे हुई इसका मुझे बड़ा आश्चर्य है। ११। देवयानि ने कहा हे मनुष्यों में श्रेष्ठ सब मनुष्य प्रारब्धके अनुकूल वर्तते हैं ऐसा समझ कर विशेष कथा सुननेकी इच्छा मतकर। १२। तेरारूप और वेषराजाओं कासा है और तू देववाणी बोलता है, तू कहांसे आया, क्या नाम और किसका बेटा है। १३। ययाति ने कहा ब्रह्मचर्य से सम्पूर्ण वेद पढ़ा है मैं राजा और राज पुत्रहूं ययाति मेरानाम है। १४। देवयानि ने कहा हे राजन् किस बड़े प्रयोजन से तू इस देशमें आया है क्या कोई जलकी वस्तुको लेने आया है या मृगकी इच्छा से। १५। ययातिने कहा हे भद्रे मैं मृग का पीछा करता जलकी खोज में आयाहूं और मृग का पीछा करने से बहुत थकगया हूं मुझको आज्ञादे। १६। देवयानिने कहा इनदो

---

beauty and fairness of complexion, was reclining at her ease, while Sharmistha was gently pressing her feet. Seeing the beautiful maids. Yayati asked their names and parentage and said, "It seems that these two thousand maids wait on you both." Devyani replied, "I am the daughter of Skukr, the spiritual guide of the Asurs. This my companion is my waiting woman and shall follow me wherever I go. She is Sharmishtha the daughter of Vrishparva, the king of Asurs." Yayati said, "I wish to know how thy beautiful companion, the daughter of the Asur chief, came to be thy waiting woman." Devyani replied, "Everything has its root in fate O best of kings, and her case follows the general rule; therefore, cease to wonder at it.

सखा भर्त्ता च मे भव ॥ १७ ॥ ययातिरुवाच ॥ विद्ध्यौशनसि भद्रन्ते न त्वामर्होस्मि भामिनि । अविवाह्या हि राजानो देवयानि पितुस्तव ॥ १८ ॥ देवयान्युवाच । संसृष्टं ब्रह्मणा क्षत्रं क्षत्रेण ब्रह्म संहितम् । ऋषिश्चाप्यृषिपुत्रश्च नाहुषाङ्ग वहस्व माम् ॥ १९ ॥ ययातिरुवाच । एकदेहोद्भवा वर्णाश्चत्वारोऽपि वराङ्गने । पृथग्धर्माः पृथक्शौचास्तेषान्तु ब्राह्मणो वरः ॥ २० ॥ देवयान्युवाच । पाणिधर्मो नाहुषायं न पुंभिः सेवितः पुरा । तं मे त्वमग्रहीरग्रे वृणोमि त्वामहं ततः ॥ २१ ॥ कथन्तु मे मनस्विन्याः पाणिमन्यः पुमान्स्पृशेत् गृहीतमृषिपुत्रेण स्वयं वाप्यृषिणा त्वया ॥ २२ ॥ ययातिरुवाच । क्रुद्धादाशीविषात्सर्पाज्ज्वलनात्सर्वतोमुखात् । दुराधर्षतरो विप्रो ज्ञेयः पुंसा विजानता ॥ २३ ॥ देवयान्युवाच । कथमाशीविषात्सर्पाज्ज्वलनात्सर्वतोमुखात् । दुराधर्षतरो विप्र इत्यात्थ पुरुषर्षभ ॥ २४ ॥ ययातिरुवाच । एकमाशीविषो हन्ति शस्त्रेणैकश्च वध्यते । हन्ति

सहस्र कन्या और दासी शर्मिष्ठा सहित मैं तेरे आधीन हूं तेरा कल्याणहो तू मेरा सखा और पति बना । १७ । ययातिने कहा हे शुक्रपुत्री तेरा कल्याणहो हे भामिनी मैं तेरेयोग्य नहीं हूं हे देवयानि तेरेपिता के यहां राजालोग विवाह नहीं कर सकते । १८ । देवयानिने कहा ब्राह्मणसे क्षत्रिय और क्षत्रिय से ब्राह्मण जाती मिलीहुई है तू ऋषि और ऋषि पुत्र है हे मित्र नहुषपुत्र, मुझको ग्रहण कर । १९ । ययाति ने कहा हे उत्तम स्त्री, चारों वर्ण एकही देहसे उत्पन्न हैं उनके धर्म और शौच पृथक हैं और ब्राह्मण उन में श्रेष्ठ हैं । २० । देवयानि ने कहा हे नहुष पुत्र ययाति मेरा पाणिग्रहण तुझसे पहले किसी ने नहीं किया इस कारण मैं तुझको वरती हूं । २१ । मुझ पतिव्रताके हाथको जिसे तुझ ऋषि पुत्र ऋषिने ग्रहण किया और कोई कैसे छू सकेगा । २२ । ययाति ने कहा क्रोधित सर्प और चारोंतरफ मुँहवाले अग्निसेभी ब्राह्मण कठिनहै ज्ञानवान पुरुष ऐसाकहते हैं २३ देवयानिने कहा सर्प और अग्नि से ब्राह्मण कैसे बलवान हैं । २४ । ययाति ने कहा सर्प

Thy features and attire are both like a king's. Thou speakest the language of the gods. Tell me thy name and parentage." Yayati replied, "During my Brahmcharya I have gone through all the Vedas. I am Yayati, a king,s son and a king." Devyani then enquired the reason for which he had come there. Was it the search of some aquatic substance," said she, "or the chase of deer, that had brought him there ? Yayati said that being thirsty in the pursuit of deer he had come thither in search of water, He was much fatigued and asked the maiden's permission to depart. Devayani answered that she was waiting his cammands with her two thousand damsels and her waiting woman, Sharmishta. She asked him with a blessing to be her friend and lord. Yayati replied that he was

विनःसराष्ट्राणि पुराण्यपिहिकोपितः ॥ २५ ॥ दुराधर्षतरो विप्रस्तस्माद्भीरुमतोमम । अतोऽदत्ताञ्चपित्रात्वां भद्रेनविवहाम्यहम् ॥ २६ ॥ देवयान्युवाच ॥ दत्तांवहस्वतन्मांत्वं पित्राराजन्वृतो मया । अयाचतोभयंनास्ति दत्तांचप्रतिगृह्णतः ॥ २७ ॥ वैशम्पायन उवाच । त्वरितंदेवयान्याथ संदिष्टंपितुरात्मनः । सर्वं निवेदयामास धात्रीतस्मैयथातथम् ॥ २८ ॥ श्रुत्वैवचसराजानं दर्शयामास भार्गवः । दृष्ट्वैवचागतंशुक्रं ययातिःपृथिवीपतिः । ववन्देब्राह्मणंकाव्यं प्राञ्जलिः प्रणतःस्थितः ॥ २९ ॥ देवयान्युवाच ॥ राजायंनाहुषस्तात दुर्गमेपाणिमग्रहीत् । नमस्तेदेहिमामस्मै लोकेनान्यंपतिंवृणे ॥ ३० ॥ शुक्रउवाच । वृतोऽनयापतिर्वीर

जिसको काटता है, वही मरताहै, शस्त्रसे भी एकही माराजाता है, परन्तु क्रोधित ब्राह्मण सम्पूर्ण राज्यको नष्ट करदेता है हे भीरु इसकारण ब्राह्मणको अधिक बलवानजानताहूं तेरेपिताके दिये विना मैं तेरेसाथ बिवाह न करूंगा । २६ । देवयानि ने कहा मैंने तेरेलिये पितासे आज्ञा लेली है तू मुझको वर न मांगनेवाले को और दीहुई वस्तुके लेनेवाले को भय नहीं है । २७ । वैशम्पायन ने कहा शीघ्रही देवयानि ने अपने सब वृत्तान्त दाई भेजकर कहलाया । २८ । इस वृत्तान्तको सुन शुक्र राजा के समीप आये और शुक्रको आया देख राजा हाथजोड़कर खड़ाहुआ । २९ । देवयानि ने कहा हे तात यह नहुषका पुत्र राजाययाति है जिसने संकट के समय मेराहाथ पकड़ा था तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै, इस को मुझे दीजिये इस के सिवाय दूसरे पति को संसार में ग्रहण न करूंगी । ३० । शुक्र

---

not her equal, as she being the daughter of Shukr was superior to him, and he feared her father would not bestow her even on great kings. But Devyani said that Brahmans and Kshatrias had intermarried before and that he was the son of a Rishi and himself a Rishi and, therefore the marriage between them was not improper. Yayati replied that though the four orders had sprung up from the same stock, their duties and purity differed, the Brahman being superior to all. Devyani said that he was the first and the only person that had touched her hand and therefore she accepted him as her lord. No person should ever marry a woman touched by him, a rishi. Yayati said that Brahmans were more to be feared than an angry snake full of poison or the flaming fire, and on being asked the reason as to why they were to be so feared, the monarch replied that the snake and the sharpedged weapon killed only one person at a time, wheras a Brahman, if angry, could destroy the whole king-

सुतयात्वंगमेष्टया । गृहाणेमांमयादत्तां माहिषींनहुषात्मज ॥ ३१ ॥ ययातिरुवाच।
अधर्मोनस्पृशेदेषमहान्मामिहभार्गव । वर्णसङ्करजोब्रह्मन्निति त्वांप्रवृणोम्यहम् ॥ ३२॥
शुक्रउवाच । अधर्मात्त्वांविमुंचामि वृणुत्वंवरमीप्सितम्। अस्मिन्विवाहेमाम्लासी रहं
पापंनुदामिते ॥ ३३ ॥ वहस्वभार्य्यांधर्मेण देवयानींसुमध्यमाम्। अनयासहसम्प्रीति
मतुलांसमवाप्नुहि ॥ ३४ ॥ इयंचापिकुमारीते शर्मिष्ठावार्षपर्वणी । सम्पूज्यासततं
राजन् माचैनांशयनेह्वये ॥ ३५ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवमुक्तोययातिस्तु शुक्रंकृत्वा
प्रदक्षिणम् । शास्त्रोक्तविधिनाराजा विवाहमकरोच्छुभम् ॥ ३६ ॥ लब्ध्वाशुक्रान्म-

---

ने कहा वीर राजा इस मेरी प्रिय पुत्रीने तुझको वराहै हे नहुषपुत्र मेरी दीहुई इसपटरानी
को गृहणकर । ३१ । ययाति ने कहा हे भार्गव वर्णसंकर का दोष मुझको स्पर्श न करे
यह मैं आप से कहताहूं । ३२ । शुक्र ने कहा मैं तुझको अधर्म से छुटाताहूं इस विवाह
से भय मत कर मैं तुझको पाप से छुटादूंगा । ३३ । धर्मानुसार इस श्रेष्ठ भार्या देवयानि
को गृहणकर और इस से अनुपम प्रीतिकर । ३४ । हे राजन् यह उत्तम वचन बोलने
वाली वृषपर्वाकी बेटी शर्मिष्ठा सत्कार योग्यहै परन्तु इसको शय्यापर न बुलाना । ३५ ।
वैशम्पायन ने कहा यह सुनकर राजा ययातिने शुक्रकी प्रदक्षिणाकर शुभविवाहकिया ३६

---

doms and cities. He said that he could not marry her without her father's consent. Devyani said that her father, would willingly bestow her on him and then he need not fear to accept her as he himself was not the proposer. Devyani then sent a maid servent to her father. The maid told Sukra all that had happened and he came at once to the place where Yayati was. Seeing Shukra come, the king Yayati bowed down and adored the worshipful Brahman and with joined hands awaited his command. Devyani then said, "This, O father, is the son of Nahush. He took hold of my hand when I was in distress. I bow to thee. I shall not wed any other person in this world." Shukr said, "O valliant king, my daughter has accepted thee for her husband and I bestow her on thee. Accept her as thy wife, O son of Nahush." Yayati then said, "I beseech thee O Brahman, to grant me the boon that my children may not be of mixed caste." Shukra assured him by saying that he would absolve him from the sin and that he should not fear to wed her. Shukra then said, "I grant the absolution. Maintain virtuously thy beautiful wife, Devyani. Mayst thou be happy in her company. Behave well with Vrishparva's daughter, Sharmishtha; but never

हद्विसं देवयानींतदोत्तमाम् । द्विसहस्रेणकन्यानां तथाशर्मिष्ठयासह ॥३७॥ संपूजितश्च शुक्रेण दैदैश्चनृपसत्तम । जगामस्वपुरंहृष्टोऽनुज्ञातोऽथमहात्मना ॥ ३८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
एकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

ययाति शुक्र से बहुत धन और दोसहस्र कन्या और शर्मिष्टा सहित उत्तम देवयानि को लेकर शुक्र और दैत्यों से सत्कार किये हुआ शुक्रकी आज्ञा से अपने नगरको गया ३८॥

---

make her thy bed-fellow." Hearing this from Shukra Yayati perambulated the Brahman. The marriage rites were then performed according to the Shastras and having received from Shukra a rich treasure in the excellent Devyani with Sharmishta and the two thousand maidens, and duly honoured also by Shukra and the Asurs the king took leave of Shukra and returned to his capital with a joyful heart.



वैशम्पायन उवाच ॥ ययातिःस्वपुरंप्राप्य महेन्द्रपुरसन्निभम्। प्रविश्यांतःपुरंतत्र देवयानींन्यवेशयत् ॥१॥ देवयान्याश्चानुमते सुतांतांवृषपर्वणः। अशोकवनिकाभ्यासे गृहंकृत्वान्यवेशयत् ॥ २ ॥ वृतांदासीसहस्रेण शर्मिष्ठांवार्षपर्वणीम्। वासोभिरन्नपानैश्च संविभज्यसुसत्कृताम् ॥ ३ ॥ देवयान्यातुसहितः सनृपोनहुषात्मजः। विजहारबहूनब्दान् देववन्मुदितःसुखी ॥४॥ ऋतुकालेतुसंप्राप्ते देवयानीवरांगना। लेभे गर्भंप्रथमतः कुमारंचव्यजायत ॥५॥ गतेवर्षसहस्रेतु शर्मिष्ठावार्षपर्वणी। ददर्शयौवनं प्राप्ता ऋतुंसाचान्वचिन्तयत् ॥ ६ ॥ ऋतुकालश्चसंप्राप्तो नचमेऽस्तिपतिर्वृतः। किं प्राप्तंकिन्नुकर्त्तव्यं किंवाकृत्वाकृतंभवेत् ॥ ७ ॥ देवयानीप्रजातासौ वृथाहंप्राप्तयौवना। यथातयावृतोभर्त्ता तथैवाहंवृणोमितम् ॥८॥ राज्ञापुत्रफलंदेय मितिमे निश्चिता

अध्याय ८२ ॥

वैशम्पायन ने कहा ययाति ने इन्द्रपुरी के समान अपने नगर में पहुँचकर देवयानि को रणवास में पहुँचाया। १। देवयानि की अनुमति वृषपर्वाकी बेटी शर्मिष्ठा को सहस्र दासियों सहित वस्त्र पानादि सत्कारकर अशोक वनिका के समीप घर दे दिया नहुष पुत्र ययाति देवयानि के साथ देवताओं के समान प्रसन्नता से विहार करनेलगा। ४। स्त्रियों में श्रेष्ठ देवयानि ने ऋतुकाल में गर्भ धारणकर पुत्र उत्पन्न किया।५। सहस्र वर्ष पश्चात् तरुण शर्मिष्ठा ने ऋतुकाल होनेपर विचार किया। ६। ऋतुकाल मुझ को प्राप्त हुआ और मैंने पति को नहीं बरा मैंने क्या किया और मेरा क्या कर्त्तव्य है जिससे मेरा कार्यसिद्ध होय। ७। यह देवयानि संताप से लताकी समान बढ़रही है और मेरी तरुण अवस्था वृथा हुई जाती है जिसप्रकार देवने राजा ययाति को बरा है इसी प्रकार मैंभी

CHAPTER LXXXII.

Vaishampayan said that Yayati having returned to his capital which was like the city of Indra, entered his palace where he settled Devyani. He established Sharmishta in another place built for her in his garden, amidst Ashok trees, and made suitable arrangements for her and her thousand maids. But the king himself sported like a god with Devyeni in joy and bliss for many years. The fair Devyani conceived in her due season and became the mother of a fine boy. When thousand years had passed away, Vrishparva's daughter, Sharmishtha attained to puberty and her season having come she became thoughtful. She said to herself, My season is come ! I have chosen a husband, What am I to do ! How shall my wishes be fulfilled ? Devyani has became a mother

मतिः । अपीदानींसधर्मात्मा इयान्मेदर्शनंरहः ॥ ९ ॥ अथनिष्क्रम्यराजासौ तस्मिन्काले यदृच्छया । अशोकवनिकाभ्याशे शर्मिष्ठांप्रेक्ष्यविष्ठितः ॥ १० ॥ तमेकंरहितेदृष्ट्वा शर्मिष्ठाचारुहासिनी । प्रत्युद्गम्याञ्जलिंकृत्वा राजानंवाक्यमब्रवीत् ॥ ११ ॥ शर्मिष्ठोवाच । सोमस्येन्द्रस्यविष्णोर्वा यमस्यवरुणस्यच । तववानाहुषगृहेकः स्त्रियंद्रष्टुमर्हति ॥ १२ ॥ रूपाभिजनशीलैर्हि त्वंराजन् वेत्थमांसदा । सात्वांयाचेप्रसाद्याहमृतुंदेहि नराधिप ॥ १३ ॥ ययातिरुवाच । वेद्मित्वांशीलसम्पन्नां दैत्यकन्यामनिन्दिताम् । रूपञ्चतेनपश्यामि सूच्यग्रमपिनिन्दितम् ॥ १४ ॥ अब्रवीदुशना काव्यो देवयानीं यदावहम् । नेयमाह्वयितव्यातेशयनेवार्षपर्वणी ॥ १५ ॥ शर्मिष्ठोवाच । ननर्मयुक्तं

करूँ । ८ । राजा को उचित है कि मुझको पुत्र फल दे यह मैंने निश्चय किया है वह धर्मात्माराजा कब एकान्तमें मुझे मिलेगा । ९ । तत्पश्चात् अकस्मात् राजा घर से निकल अशोक वनिका के समीप देख खड़ा होगया । १० । उस उत्तम हास्यवाली शर्मिष्ठा ने राजा को अकेला देख समीप जाकर कहा । ११ । चंद्रमा, इन्द्र, विष्णु, यम, वरुण, और हे नहुषपुत्र तेरेघर में स्त्री कौन देख सकता है । १२ । हेराजन् ! मेरारूप कुटुम्ब और स्वभाव सदा से तू जानता है हे नराधिप सो मैं तुम को प्रसन्न कर याचना करती हूं कि मुझ को ऋतु दान दो । १३ । ययाति ने कहा मैं तुझ को शीलयुक्त वृषपर्वा दैत्य की कन्या अनिन्दित जानता हूं और तेरेरूप में सुई की नोक के बराबर भी बुराई नहीं पाता । १४ । देवयानिके विवाह के समय शुक्र ने मुझ से कहा था कि शर्मिष्ठा को शयनमें न बुलाना । १५ । शर्मिष्ठा ने कहा हे राजन् हास्य में, स्त्री विषय में, विवाह

---

and I shall have to pass away my youth in vain. Should I also choose him for my husband whom Devyani has chosen ? I have resolved to ask a son from the king. Will he grant me an interview in private ? While Sharmishtha was thus occupied in her thoughts, the king's rambles brought him to the group of Ashok trees. Seeing Sharmishtha he stood there in silence. The beautiful Sharmishtha, seeing the king alone, approached him with joined hands and said, " No one can behold. O king, the ladies in the Zenanah of *Som*, *Indra*, *Vishnu*, *Yam*, *Varun*, and thine. Thou knowest, king, that I am both handsome and well-born. I solicit thee, O king, to see that my season does not go in vain." Yayati replied, " I know well thy honourable birth among the proud race of the Danavas. Thou art beautiful too. Thy features are faultless. But at the time of my wedding with Devyani, *Sukur* prohibited me to make thee

वचनंहिनस्ति नस्त्रीषुराजन्नविवाहकाले । प्राणात्ययेसर्वधनापहारे पञ्चानृतान्याहुर
पातकानि ॥ १६ ॥ पृष्टन्तुसाक्ष्येप्रवदन्तमन्यथा वदन्तिमिथ्यापतितंनरेन्द्र । एकार्थ-
तायान्तुसमाहितायां मिथ्यावदन्तंरत्वनृतंहिनस्ति ॥ १७ ॥ ययातिरुवाच । राजाप्रमा-
णंभूतानां सनश्येतमृषावदन् । अर्थकृच्छ्रमपिप्राप्य नमिथ्याकर्त्तुमुत्सहे ॥ १८ ॥
शर्मिष्ठोवाच । समावेतौमतौराजन् पतिःसख्याश्चयःपतिः । समंविवाहमित्याहुः
सख्यामेऽसिवृतःपतिः ॥१९॥ ययातिरुवाच । दातव्यंयाचमानेभ्य इतिमेव्रतमाहितम् ।
त्वञ्चयाचसिमांकामं ब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ २० ॥ शर्मिष्ठोवाच । अधर्मात्पाहिमां
राजन् धर्मञ्चप्रतिपादय । त्वत्तोऽपत्यवतीलोके चरेयंधर्ममुत्तमम् ॥२१॥ त्रयएवा

काल में, प्राण के संकट में, और सम्पूर्ण धन के नाश होते समय, झूठ बोलने वाला पातकी नहीं होता । १६ । हेराजन्, साक्षीमें, प्रश्नोत्तरमें, गऊ, स्त्री, ब्राह्मणादिके लिये मिथ्या बोलने वाले को पतित कहना मिथ्या है देवयानि और मेरेआनेका एकही प्रयोजन है इस लिये यदि तू उसको अपनी स्त्री माने और मुझे न माने तो यह मिथ्या तुझे नष्टकरेगा । १७ । ययातिने कहा सम्पूर्ण प्राणियों को राजा प्रमाणहै झूंठबोलनेवाला राजा अवश्य नाशको प्राप्तहोगा इस कारण कठिनताको भी प्राप्त होकर मैं झूँठ न बोलूंगा । १८ । शर्मिष्ठाने कहा हे राजन् अपना और सखीका पति एक समान है और सम विवाह कहलाता है जब मेरी सखी देवयानि ने तुझको पति मानाथा उसी समय मैंने भी मन में पति बनाया था । १९ । ययातिने कहा । मांगनेवालों को देना मेरा व्रत है और तू मुझसे अपना मनोरथ मांगती है कह मैं तेरा क्या कार्य करूं । २० । शर्मिष्ठाने कहा हे राजन् ! अधर्म से मेरी रक्षाकर और धर्म का दानकर तुझ से सन्तान पाकर संसार

my bedfellow. *Sharmishtha* said, "It is said, O king, that it is not a sin to lie in joke, to please a woman, in marriage, in prospect of immediate death and when the whole of one's fortune is at stake. To speak not the truth, when asked, is certainly derogatory. Both Devyani and myself have come here for the same purpose. When thou saidst that thou woudst confine thyself to one only of us, it was a lie." Yayati replied that a king should ever be an example to his people. The king who tells lies is soon destroyed. I dare not tell a lie even if the greatest loss threatens me." Sharmishtha said, "One may look O king, upon her friend's husband as her own. Thou art my friend's husband. Therfore thou art mine also." Yayati said, "It is a vow of mine to grant what one asks. Thou askest of me something. What it is ?" Sharmishtha said, "Absolve me, O king, from sin and

धनाराजन् भार्य्यादासस्तथासुतः । यत्तेसमधिगच्छन्ति यस्यैतेतस्यतद्धनम् ॥ २२ ॥ देवयान्याभुजिष्यास्मि वश्याचतवभार्गवी । साचाहञ्चतवयाराजन् भजनीयेभजस्व माम् ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्तुराजा सतथ्यमित्यभिजाज्ञिवान् । पूजयामासशर्मिष्ठां धर्मंचप्रत्यपादयत् ॥२४॥ ससमागम्यशर्मिष्ठां यथाकाममवाप्यच अन्योन्यंचाभिसम्पूज्य जग्मतुस्तौयथागतम् ॥ २५ ॥ तस्मिन्समागमेसुभ्रूः शर्मिष्ठा-चारुहासिनी । लेभेगर्भंप्रथमतस्तस्मान्नृपतिसत्तमात् ॥ २६ ॥ प्रजज्ञेचततःकाले राजनराजीवलोचना । कुमारंदेवगर्भाभं राजीवनिभलोचनम् २७ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
द्व्याशीतोऽध्यायः ८२ ॥

में उत्तम धर्म को करूं हे राजन् तीन पुरुष (भार्यादास और पुत्र) संसार में अधन है जो पदार्थ मिले वह उसी का होता है जिसके वहहों २२ मैं देवयानिकी दासी हूँ और वह तेरेआधीन है हेराजन ! देवयानि और मैं दोनों तेरेआधीन हैं इस कारण मेरा मनोरथ पूर्णकर । २३ । वैशम्पायन ने कहा ऐसा कहने पर राजाने उसके वचन को सत्यमाना और शर्मिष्ठा का आदर करके धर्म का प्रतिपादन किया । २४ । वह इस प्रकार शर्मिष्ठासे मिलकर और उसका मनोरथ पूर्ण कर एक दूसरे से सत्कार पायेहुए अपने २ स्थानको गये । २५ । सुन्दर हास्ययुक्त अच्छी भौंवाली शर्मिष्ठा ने राजाओं में श्रेष्ठ ययाति से गर्भ धारण किया । २६ । तत्पश्चात् उचित समयपर उस कमललोचन शर्मिष्ठाने देवताओं के सदृश पुत्र उत्पन्न किया २७ ॥

protect my virtue! Begetting a son from thee I shall attain the highest virtue. It is said that a wife, a son, or a slave can never earn wealth for himself. What they earn always belongs to their owner I am Devyani's slave and thou art her master. Thou art my master as much as Devyani's. I solicit thee to fulfil my wish." Vaishampayan continued that hearing this from Devyani, the king was persuaded to believe what she had told him. He therefore, complied with her request to protect her virtue. They passed sometime happily together, then, taking each other's farewell, each of them returned home. The beautiful Sharmishtha conceived from that connection and in due time brought forth a son in splendour like that of a god and eyes like the lotus petals.

वैशम्पायन उवाच ॥ श्रुत्वाकुमारंजातन्तु देवयानीशुचिस्मिता । चिन्तयामास दुःखार्ता शर्मिष्ठांप्रतिभारत । अभिगम्यचशर्मिष्ठां देवयान्याब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ देवयान्युवाच ॥ किमिदंवृजिनंसुभ्रु कृतंवैकामलुब्धया ॥२॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ ऋषिरभ्यागतःकश्चिद्धर्मात्मावेदपारगः । समयावरदःकामं याचितोधर्मसंहितम् ॥ ३ ॥ नाहमन्यायतःकाम माचरामिशुचिस्मिते । तस्मादृषेर्ममापत्य मितिसत्यंब्रवीमिते ॥ ४ ॥ देवयान्युवाच । शोभनंभीरुयद्येव मथसज्ञायतेद्विजः । गोत्रनामाभिजननं वेत्तुमिच्छामितं द्विजम् ॥ ५ ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ तपसातेजसाचैव दीप्यमानंयथारविम् । तंदृष्ट्वाममसम्प्रष्टुं शक्तिर्नासीच्छुचिस्मिते ॥६॥ देवयान्युवाच॥यद्येतदेवंशर्मिष्ठे नमन्युर्विद्यतेमम । अपत्यंयदिते लब्धं ज्येष्ठाच्छ्रेष्ठाच्चवैद्विजात् ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ अन्योन्यमेवमुक्त्वातु सम्प्रहस्यचतेमिथः । जगामभार्गवीवेश्म तथ्यमित्यवजग्मुषी ॥ ८ ॥

अध्याय ८३ ॥

वैशम्पायन ने कहा हे भारत ! शर्मिष्ठा के पुत्र जन्माहुआ सुनकर देवयानि दुःखित हुई और शर्मिष्ठा के पास जाकर बोली अरी अच्छी भौं वाली तूने कामवश होकर यह कैसा पापकिया । २ । शर्मिष्ठा ने कहा हे सुन्दरि ? मेरेपास धर्मात्मा वेदज्ञानी एक ऋषि आये थे उन्होंने मुझे वरदेना चाहा तब मैंने धर्मानुसार ऋतु रक्षाकी प्रार्थनाकी हे सुन्दरि ? मैं अन्यायसे काम चारणी नहीं हुई मैं सच कहती हूं कि मेरेगर्भ उत्पन्न इस पुत्र ने उस ऋषिके औरस से जन्म लिया है देवयानि ने कहा यदि यहहोतो अच्छा है पर मैं उस ब्राह्मण का नाम कुल और गोत्र जानना चाहतीहूं मुझे बताओ । ५ । शर्मिष्ठाने कहा उसब्राह्मण का तप और तेजसे सूर्यकी समान प्रकाशथा उसको देखकर मैं कोई बात नहीं पूछसकी देवयानि ने कहा हे शर्मिष्ठा यदि तुमने श्रेष्ठ ब्राह्मण से पुत्रलाभ किया तोमुझे क्रोध नहीं करना चाहिये ७ वैशम्पायनने कहा कि वे दोनों अकेलेमें यह बातकरके हँसते

CHAPTER LXXXIII

Vaishampayan continued, that when Devyani of sweet smiles heard of the birth of (Sharmishtha's) child she became jealous of her and going to Sharmishtha she said to her, " What sin hast thou committed by the influence of lust, beautiful woman ? Sharmishtha replied, " A virtuous Rishi learned in the Vedas came to me. I solicited him to fulfil my virtuous desires. I did not seek to fulfil them sinfully. I speak truly that this my child is from that Rishi." Devyani replied, " There is no harm if such is the case, O timid one. I wish to know the name and parentage of the Rishi if you can tell me. Sharmishtha replied, " O thou of sweet smiles, the Rishi in asceticism and energy was glorious like the sun and I dared not make these enquiries on beholding him." Devyani then said, " If this

ययातिर्देवयान्यान्तु पुत्रावजनयन्नृपः । यदुंचतुर्वसुंचैव शक्रविष्णूइवापरौ ॥९॥ त-
स्मादेवतुराजर्षेः शरमिष्ठावार्षपर्वणि । द्रुह्युंचानुंचपूरुंच त्रीन्कुमारानजीजनत्॥१०॥
ततःकालेतुकस्मिंश्चिद्देवयानीशुचिस्मिता । ययातिसहिताराजन् जगामरहितंवनम् ।
११ ॥ ददर्शचतदातत्र कुमारान्देवरूपिणः । क्रीडमानान्सुविश्रब्धान् विस्मिता
चेदमब्रवीत् ॥ १२ ॥ देवयान्युवाच ॥ कस्यैतेदारकाराजन् देवपुत्रोपमाःशुभाः । वर्च
सारूपतश्चैव सदृशामेमतास्तव ॥ १३ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवंपृष्ट्वातुराजानंकुमा-
रान्पर्यपृच्छत ॥ १४ ॥ देवयान्युवाच ॥ किंनामधेयंवंशोवः पुत्रकाःकश्चवःपिता ।
प्रब्रूतमेयथातथ्यं श्रोतुमिच्छामितंह्यहम् ॥ १५ ॥ तेऽदर्शयन्प्रदेशिन्या तमेवनृपसत्त-
मम् । शर्मिष्ठांमातरंचैव तथाचख्युश्चदारकाः ॥ १६ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ इत्युक्त्वा

लगीं और देवयानि अपने घरको चली गई अनन्तर राजर्षि ययाति के वीर्य और देवयानि के गर्भ से इन्द्र और उपेन्द्र की समान दो पुत्र यदु और तुर्वसु जन्मे और उस राजर्षि ने वृषपर्वा की बेटी शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अनु, और पुरु तीन पुत्र पैदाकिये कुछ काल बीतने पर सुन्दरि देवयानि ययातिके साथ निर्जनवन को गई । १० । वहां देवताओं के समान रूपवान तीनकुमार खेलतेदेखे देवयानि ने अचरज मानकर राजासे पूछा यह तीनोंकुमार किसके हैं जो रूप और तेजमें तुम्हारेही समान दिखाईदेते हैं १३ वैशम्पायनने कहा कि देवयानि ने राजा से यह कहकर बालकों से पूछा कि तुम्हारे नाम क्याहैं और तुम किसके वंश में उत्पन्नहुएहो सच बताओ तुम्हारे पिता कौनहैं बालकोंने उंगली से राजा

---

is the case and you have got the child from such a Rishi, then I have no cause to be angry. Vaishampayan continued that having thus talked and laughed with each other, they separated and Devyani having ascertained all this from Sharmishtha returned to the palace. Yayati begat two sons, Yadu and Turvasu in Devyani. They were like Indra and Vishnu. He had also three sons, Drarhayu, Anu and Puru, from Sharmishtha. One day Yayati and Devyani went into a solitary part of the wood and there they saw three children, like those of gods in beauty, playing trustfully. Devyani asked in surprise, "Whose children are these. O king, beautiful like the children of gods? In splendour and beauty they resemble thee I think." Vaishampayan continued that Devyani without waiting for a reply from the king, asked the children about their parentage. The children pointed to the king with their forefingers and said, Sharmishtha is our mother." Having said so the children approch-

सहितास्तेतु राजानमुपचक्रमुः । नाभ्यनन्दततानराजा देवयान्यास्तदान्तिके ॥१७॥
रुदन्तस्तेऽथशर्मिष्ठा मभ्ययुर्बालकास्ततः । श्रुत्वातुतेषांबालानां सव्रीडइवपार्थिवः ।
॥ १८ ॥ दृष्ट्वातुतेषांबालानां प्रणयंपार्थिवंप्रति । बुद्धाचतत्त्वंसादेवी शर्मिष्ठामिदमब्र
वीत् ॥ १९ ॥ देवयान्युवाच ॥ मदधीनासतीकस्माद कार्षीर्विप्रियंमम । तमेवासुरधर्मं
त्व मास्थितानबिभेषमे ॥ २० ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ यदुक्तमृषिरित्येव तत्सत्यंचारुहा
सिनी । न्यायतोधर्मतश्चैव चरन्तीनाबिभेमिते ॥ २१ ॥ यदात्वयावृतोभर्त्ता वृतएव
तदामया । सखीभर्त्ताहिधर्मेण भर्त्ताभवतिशोभने ॥२२॥ पूज्यासिममपान्याच ज्येष्ठा
चब्राह्मणीह्यसि । त्वत्तोऽपिमे पूज्यतमो राजर्षिः किं न वेत्थ तत् ॥ २३ ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ श्रुत्वातस्यास्ततोवाक्यं देवयान्यब्रवीदिदम् ।राजन्नाद्येहवत्स्यामि

को दिखाया और कहा कि शर्मिष्ठा हमारी माता है । वैशम्पायनने कहा कि लड़के यह बात कहकर राजा के पास गये और राजाने देवयानि के सामने कुछ आनन्द प्रकाश नहीं किया न उनका आदर किया लड़के रोतेहुए शर्मिष्ठा के पास गये राजा यह देखकर लज्जितहुआ देवयानि राजापर लड़कोंकी प्रीति देखकर सब बात समझगई और शर्मिष्ठा से कहा कि तूने मेरेआधीनहोकर मेरा अप्रिय क्यों किया और असुरधर्म को आश्रयकरके मुझसे नहीं डरी २० शर्मिष्ठा ने कहा हेमधुरहासिनी मैंने जो आपने प्रेमीको ऋषि बतलाया यह झूंठ नहीं है मैंने न्याय और धर्म के अनुसारही व्यवहार किया है मैं क्यों डरूं जब तुम ने इस राजा को बराथा उसीसमय मैंनेभी बराथा क्योंकि धर्मानुसार सहेली का भर्त्ताभी अपना भर्त्ताहोता है २२ तुम ब्राह्मणी और बड़ीहो इसलिये मेरी पूजनीय और माननीयहो पर यह राजर्षि तुमसेभी अधिक पूजनीयहैं देवयानि शर्मिष्ठाकी यहबात सुन

ed the king to fall down on his knees. But the king dared not caress them in the presence of Devyani. The boys then went sorrowfully to their mother and the king was very much abashed at this conduct of the boys. Devyani marked the affection of the children for the king and understood the secret. She then said to Sharmishtha, "Being my dependant, how hast thou dared to do me this injury? Didst thou not fear to use again thy Asur artfulness? Sharmishtha said, "O beautiful one, all that I told thee of a Rishi was perfectly true. I have acted rightly on virtuous principles and therefore donot fear thee. When thou chosest the king for thy husband I also chose him for mine. A friend's husband, O beautiful one is one's own husband. Being a Brahman's daughter thou art deserving of my respect. But, know, that the king is worthy of greater

विप्रियंमेकृतंत्वया ॥२४॥ सहसोत्पतितांश्यामांदृष्ट्वातांसाश्रुलोचनाम् । तूर्णंसकाशंकाव्यस्य मस्थितांव्यथितस्तदा ॥२५॥ अनुवव्राजसम्भ्रांतः पृष्ठतःसन्त्वयन्नृपः । न्यवर्त्ततनचैवस्म क्रोधसंरक्तलोचना ॥ २६ ॥ अविब्रुवंती किंचित्सा राजानंसाश्रुलोचना । अचिरादेवसंप्राप्ता काव्यस्योशनसोऽन्तिकम् ॥ २७ ॥ सातुदृष्ट्वैवपितरमभिवाद्याग्रतःस्थिता । अनंतरंययातिस्तु पूजयामासभार्गवम् ॥ २८ ॥ देवयान्युवाच ॥ अधर्मेणजितोधर्मः प्रवृत्तमधरोत्तरम् । धरमिष्ठयातिवृत्तास्मि दुहित्रावृषपर्वणः ॥२९॥ त्रयोऽस्यांजनिताःपुत्रा राज्ञानेनययातिना।दुर्भगायाममद्वौतु पुत्रौतातब्रवीमिते । ३० । धर्मज्ञइति विख्यातः एषराजाभृगूद्वह । अतिक्रान्तश्चमर्यादां काव्यैतत्कथयामिते ३१॥ शुक्रउवाच । धर्मज्ञःसन्महाराजः योऽधर्ममकृथाःप्रियम् । तस्माज्जरात्वामचिराद्धर्षयिष्यतिदुर्जया ॥३२॥ ययातिरुवाच ॥ ऋतुंवैयाचमानायाभगवन्नान्यचेतसा ।

कर राजासे बोली कि मैं अब यहां नहीं रहूंगी तुमने मेरा अप्रिय किया है २४ राजा यह देखकर कि सुन्दरि देवयानि आंसू बहातीहुई शुक्र के पास जाती है भारी हृदयसे सन्मान सहित समझाते हुए उसके पीछे चले और देवयानिकी आंखें क्रोध से लालहोगई और किसीप्रकार न लौटी और राजाको कुछ उत्तर न देकर शुक्र के पास चलीगई पिता को प्रणामकर सामने खड़ीहुई । ययातिनेभी शुक्रकी पूजाकी २८ देवयानिने कहा हेपिता अधर्म से धर्म हारगया वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा मुझको लांघगई इस ययाति से शर्मिष्ठा के तीनपुत्र हुए हैं मुझ दुर्भागिनीके दोही पुत्रहैं हे पिता मैं आपको समाचार देतीहूं यह राजा धर्मज्ञ कहलाताहै पर इसने मर्यादा तोड़दी शुक्रने कहा कि महाराज तुमने धर्मज्ञ होकर अधर्म को प्रियजाना इसलिये तुरन्तही घोरबुढापा तुमको व्याप्तहोगा ३२ ययाति

---

respect than you." Hearing these words Devyani, said, "Thou hast wronged me, king, I shall not live here any longer! Saying this she quickly rose with tears, to go to her father. The king was much alarmed and followed her to appease her wrath. But Devyani with eyes red in anger would not desist and soon reached her father. Beholding her father, she stood before him after due salutation. Yayati also, immediately after, saluted and worshipped him. Devyani said, "Virtue has been vanquished by vice. The low has risen and the high has fallen. I have been overstepped by Sharmishtha the daughter of Vrishparva. King Yayati has produced three sons in her. But luckless as I am, I have got only two sons. This king is famous for his knowledge of the precepts of religion. But O Shukra, I tell thee that he has deviated from the path of virtue." Shukra

दुहितुर्दानवेन्द्रस्य धर्म्ममेतत्कृतंमया ॥ ३३ ॥ ऋतुंवैयाचमानाया नददातिपुमानृतुम्।
भ्रूणहेत्युच्यतेब्रह्मन सइहब्रह्मवादिभिः ॥ ३४ ॥ अभिकामांस्त्रियंयश्च गम्यांरहसि
याचितः। नोपैतिसचधर्मेषु भ्रूणहेत्युच्यतेबुधैः ॥ ३५ ॥ इत्येतानिसमीक्ष्याहं कार
णानिभृगूद्वह । अधर्मभयसम्विग्नः शर्मिष्ठामुपजग्मिवान् ॥ ३६ ॥ शुक्रउवाच ॥ नन्वहं
प्रत्यवेक्षस्ते मदधीनोऽसिपार्थिव । मिथ्याचारस्यधर्मेषुचौर्यंभवतिनाहुष ॥ ३७ ॥
वैशम्पायनउवाच । क्रुद्धेनोशनसाशप्तो ययातिर्नाहुषस्तदा । पूर्ववयःपरित्यज्य जरां
सद्योऽन्वपद्यत ॥ ३८ ॥ ययातिरुवाच। अतृप्तोयौवनस्याहं देवयान्यांभृगूद्वह। प्रसादं
कुरुमेब्रह्मन् जरेयंनविशेच्चमाम् ॥ ३९ ॥ शुक्रउवाच । नाहंमृषाब्रवीम्येतज्जरांप्राप्तो

ने कहा हे भगवन् ! दानवराजकी पुत्री ने मुझसे ऋतु रक्षाकी प्रार्थनाकी और मैंने धर्म कार्य जानकर ऐसा किया काम वश कुछ नहीं किया है ब्रह्मन किसी कामिनीके ऋतुरक्षा की प्रार्थना करने पर जो पुरुष ऋतुरक्षा नहीं करता उसको विद्वान् ब्राह्मण भ्रूणहत्याका पापी कहते हैं हेभार्गव मैं अधर्म से डरकर इन सब विषयों को सोचकर शर्मिष्ठा से मिला शुक्र ने कहा हे राजा नाहुष तुम मेरेआधीनहो तुमको मुझसे आज्ञा लेनी चाहियेथी धर्म विषय में मिथ्या व्यवहार करने से चोरी के दोष के भागीबनना पड़ता है वैशम्पायन ने कहा कि शुक्र के क्रोधयुक्तहोकर शाप देनेपर नहुष पुत्र ययाति उसीक्षण वूढाहोगया तब उसने कहा हेभार्गव मैं यौवन दशा में देवयानि से तृप्त नहीं हुआहूं आप प्रसन्नहोवें यह

---

hearing all this, said, "Since thou hast chosen vice, though fully acquainted with the precepts of religion, therefore, O king, shall, the powerful ugliness paralyse thee." Yayati replied, "Reverend sir, I was solicited by the daughter of the Danav king to fructify her season. I did it from a sense of virtue and not from other motives. The man, who being solicited by a woman in season, does not grant her wishes, is called by the scholars of the Vedas, a slayer of the embryo. He who solicited in secret by a woman full of desire and in season, goes not to her, loses virtue and is called by the learned a killer of the embryo. For these reasons and to avoid sin, O Bhargav, I went to Sharmishtha." Shukr said, "Thou art dependent on me and shouldst have asked my permission. Having acted falsely in the matter of thy duty, O son of Nahush, thou hast been guilty of theft." Vaishampayan continued that Yayati, the son of Nahush, thus cursed by the angry Shukr was at once divested of his youth and overcome by decrepitude. Yayati said, "I am not yet satisfied with

सिभूमिपय । जरांत्वेतांत्वमन्येस्मिन् संक्रामययदीच्छसि ॥ ४० ॥ ययातिरुवाच ॥ राज्यभाक्सभवेद्ब्रह्मन् पुण्यभाक्कीर्तिभाक्तथा । योमेदद्याद्वयः पुत्रस्तद्भवाननुमान्यताम् ॥ ४१ ॥ शुक्रउवाच । संक्रामयिष्यसिजरां यथेष्टंनहुषात्मज । मामनुध्यायभावेन नचपापमवाप्स्यसि ॥ ४२ ॥ वयोदास्यतितेपुत्रो यःसराजाभविष्यति । आयुष्मान कीर्त्तिमांश्चैव बह्वपत्यस्तथैवच ४३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि ययात्युपाख्यानेत्र्यशीतोऽध्यायः ८३ ॥

बुढापा मुझमें प्रविष्ट नहो शुक्रने कहा हे राजा मेरीबात झूंठी नहीं होती तुमको बुढापा आगया पर यदि तुम चाहोतो इस बुढापे को दूसरे पर चलासकोगे ययाति ने कहा हेब्रह्मन् आप आज्ञादीजिये कि मेरापुत्र मुझको अपनी यौवनावस्थादे वह मेरेराज्य पुण्य और कीर्तिका भागीहो शुक्रने कहा हे नहुष पुत्र ! तुम एक चित्त से मेरा ध्यानकर इच्छानुसार बुढापेको चलासकोगे इस से तुमको कुछ पाप नहोगा और जो पुत्र तुमको अपनीअवस्था देगा वह आयुवान कीर्त्तिवान राज्याधिकारी और अनेक सन्तानयुक्तहोगा ४३ ॥

---

youth or with Devyani. Therefore, O Brahman, grant me the favour that decrepitude may not touch me." Shukra replied, "I never tell a lie. Thou art already overcome by decrepitude. Thou shalt, however, have power to transfer it to another." Yayati said, "Allow me, O Brahman, that whoever of my sons gives me his youth, shall enjoy my kingdom and shall achieve virtue and fame." Shukra replied, "O son of Nahush, thinking of me, thou shalt be able to transfer thy decrepitude to whomsoever thou likest. The son, who shall give thee his youth shall be successor to thy throne and have long life, wide fame and a large progeny.

वैशम्पायनउवाच ॥ जरांप्राप्ययया तिस्तु स्वपुरंप्राप्यचैवहि। पुत्रंज्येष्ठंवरिष्ठञ्च
यदुमित्यब्रवीद्वचः ॥१॥ ययातिरुवाच ॥ जरावलीचमांतात पलितानिचपर्यगुः। का
व्यस्योशनसःशापान्नचतृप्तोऽस्मियौवने ॥२॥ त्वंयदोप्रतिपद्यस्व पाप्मानंजरयासह।
यौवनेनत्वदीयेन चरेयंविषयानहम् ॥ ३ ॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतु पुनस्तेयौवनंत्वहम् दत्त्वा
स्वंप्रतिपत्स्यामि पाप्मानंजरयासह ॥ ४ ॥ यदुरुवाच ॥ जरायांबहवोदोषाः पानभो
जनकारिताः। तस्माज्जरांनतेराजन् ग्रहीष्यइतिमेमतिः ॥ ५ ॥ सितश्मश्रुर्निरानन्दो
जरया शिथिलीकृतः। वलीसङ्गतगात्रस्तु दुर्दर्शोदुर्बलःकृशः ॥६॥ अशक्तःकार्यकरणे
परिभूतःसयौवनैः। सहोपजीविभिश्चैव तांजरांनाभिकामये ॥७॥ सन्तितेबहवःपुत्रा
मत्तःप्रियतरानृप। जरांग्रहीतुंधर्मज्ञ तस्मादन्यंवृणीष्ववै ॥८॥ ययातिरुवाच। यत्त्वं
मेहृदयाज्जातः वयःस्वंनप्रयच्छसि। तस्माद्राज्यभाक्तात प्रजातवभविष्यति ॥ ९ ॥

अध्याय ८४ ॥

वैशम्पायन ने कहा राजा ययाति बुढ़ापे से ग्रसित अपने नगर में जाकर अपने बड़े और श्रेष्ठ पुत्र यदु से बोला हे पुत्र शुक्र के शाप से बुढ़ापेने मांस ढीला करदिया बाल सुफेद होगये और दुर्बलता आगई पर मैं यौवनावस्था से तृप्त नहीं हुआ हूं इस लिये तुममेरे इस बुढ़ापे के साथ पापको लेलो तुम्हारे यौवन से मैं विषय भोगूंगा और सहस्र वर्ष पूर्ण होने पर तुम्हारा यौवन तुमको लौटादूंगा और स्वयं बूढ़ा होजाऊंगा यदुने कहा हे महाराज बुढ़ापे में अन्न पानादिके अनेक दोष होजाते हैं मैं बुढ़ापा नहीं लेना चाहता क्योंकि बुढ़ापे से बाल पक जाते हैं आनन्द जाता रहता है मांसढीला पड़जाता है शरीर दुर्बल और असमर्थ होजाता है और साथियों में आदर नहीं रहता ऐसे बुढ़ापे को मैं नहीं लेना चाहता हे धर्मज्ञ राजा मुझ से अधिक प्यारे आपके बहुतसे पुत्र हैं उनमें से किसीको बुढ़ापा दीजिये ययाति ने कहा तुमने मुझसे जन्म लेकर अपनी अवस्था नहीं

CHAPTER LXXXIV

Vaishampayan said that Yayati having been overcome with ugliness returned to his capital and summoning his eldest son Yadu addressed him thus:—"Dear child, from the curse of Shukr, decrepitude, wrinkles and whiteness of hair have come over me. But I have not been gratified yet with the enjoyment of youth. Take my weakness along with my decrepitude. I shall enjoy with thy youth and after a thousand years shall return thy youth and shall take back my weakness and decrepitude." Yadu replied, "There are numerous faults in old age in respect of eating and drinking. Therefore I shall not take it. This is indeed my determination. White hair, cheerlessness, relaxation of the nerves, wrinkles over the body, deformity, emaclatian incapacity to work, and desertion by friends

तुर्वसाप्रतिपद्यस्व पाप्मानंजरयासह । यौवनेनचरेयंवै विषयांस्तवपुत्रक: ॥१०॥ पूर्णे वर्षसहस्रेतु पुनर्दास्यामियौवनम् । स्वञ्चैवप्रतिपत्स्यामि पाप्मानंजरयासह ॥ ११ ॥ तुर्वसुरुवाच । नकामयेजरांतात कामभोगप्रणाशिनीम् । बलरूपांतकरणीं बुद्धिप्राण प्रणाशिनीम् ॥ १२ ॥ ययातिरुवाच ॥ यत्त्वंमेहृदयाज्जातो वयःस्वंनप्रयच्छसि । तस्मात्प्रजासमुच्छेदं तुर्वसोतवयास्यति ॥१३॥ संकीर्णाचारधर्मेषु प्रतिलोमचरेषुच । पिशिताशिषुचान्त्येषु मूढराजाभविष्यसि ॥ १४ ॥ गुरुदारप्रसक्तेषु तिर्यग्योनि गतेषुच । पशुधर्मेषुपापेषु म्लेच्छेषुत्वंभविष्यसि ॥ १५ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवंस तुर्वसुंशप्त्वा ययातिसुतमात्मनः । शर्मिष्ठायाःसुतंद्रुह्यु मिदंवचनमब्रवीत् ॥ १६ ॥ ययातिरुवाच ॥ द्रुह्योत्वंप्रतिपद्यस्व वर्णरूपविनाशिनीम् । जरांवर्षसहस्रंमेयौवनंस्वन्द दस्वच ॥१७॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतु पुनर्दास्यामियौवनम् । स्वंचादास्यामिभूयोऽहं पाप्मानं

दी इस लिये तुम्हारे वंशमें कोई राज्याधिकारी नहोगा फिर तुर्वसु से कहा हे पुत्र तुम मेरे बुढ़ापे का पाप लेलो मैं तुम्हारे यौवन से विषय भोगूं सहस्रवर्ष पूर्णहोने पर तुम्हारा यौवन तुमको देकर अपने बुढ़ापे का पाप लेलूंगा तुर्वसुने उत्तर दिया कि बुढ़ापे में मनमाने भोग से हाथ धोना पड़ताहै बल और रूप नहीं रहता बुद्धि जाती रहती है प्राण नष्ट होने का भय होताहै इस लिये मैं बुढ़ापा लेना नहीं चाहता । १२ । ययाति ने कहा हे तुर्वसु तुमने मुझ से जन्म लेकर मुझको अपनी अवस्था नहीं दी इस लिये तुम्हारी प्रजा नष्ट होजायगी और उनके आचार और धर्म बिगड़ जायँगे लोभी, मांसाहारी, नीच और गुरुपत्नी से आसक्त पक्षियोंकी भाँति आचार वाले पापी म्लेच्छ तुम्हारी प्रजा होंगे। १५ । वैशम्पायन ने कहा । कि ययातिने अपने पुत्र तुर्वसु को ऐसा शापदेकर शर्मिष्ठा के पुत्र द्रुह्यु से कहा । हेद्रुह्यु हजारवर्ष के लिये रंग रूपका नाश करने वाले इस बुढ़ापेको ले और अपना

are the consequences of decrepitude. I will not take it. O king thou hast other sons dearer than me and may better ask them to accept it." Yayati said, "Having been sprung from my heart thou dost not give me thy youth. Therefore thy children shall not be kings." Yayati then summoned the other son and said, "O Turvasu, take my weakness and ugliness. With thy youth I shall enjoy the pleasure of life and at the end of a thousand years I shall return it to thee and shall take back my weakness and decrepitude. Turvasu replied, "I do not like decrepitude. It destroys all appetites and enjoyments, strength and beauty of person, intellect and even life." Yayati said, "Being born of me thou hast not given me thy youth. Therefore, O Turvasu thy race shall be extinct and thou

जरयासह ॥ १८ ॥ द्रुह्युरुवाच ॥ नगजंनरथंनाश्वं जीर्णोभुंक्तेनचस्त्रियम् । वाक्
भङ्गश्चास्यभवति तांजरांनाभिकामये ॥ १९ ॥ ययातिरुवाच ॥ यत्त्वंमेहृदयाज्जातो
वयःस्वंनप्रयच्छसि । तस्माद्द्रुह्योप्रियःकामो नतेसम्पत्स्यतेक्वचित् ॥ २० ॥ यत्रा
श्वरथमुख्याना मश्वानांस्याद्गतंनच । हस्तिनांपीठकानांच गर्दभानान्तथैवच । वस्तः
नाञ्चगवांचैव शिबिकायास्तथैवच ॥ २१ ॥ उडुपप्लवसन्तारो यत्रनित्यंभविष्यति ।
अराजाभोजशब्दंतं तत्रप्राप्स्यसिसान्वयः ॥ २२ ॥ ययातिरुवाच ॥ अनोत्वंप्रति
पद्यस्व पाप्मानंजरयासह । एकंवर्षसहस्रन्तु चरेयंयौवनेनते ॥ २३ ॥ अनुरुवाच ॥
जीर्णःशिशुवदादत्ते कालेऽन्नमशुचिर्यथा । नजुहोतिचकालेऽग्निं तांजरांनाभिकामये
॥ २४ ॥ ययातिरुवाच ॥ यत्त्वंमेहृदयाज्जातो वयःस्वंनप्रयच्छसि । जरादोषस्त्वया

यौवन मुझको दे सहस्र वर्ष पूरे होने पर तुम्हारा यौवन तुमको देकर फिर अपना बुढापा लेलूंगा द्रुह्यु ने कहा बूढे मनुष्य दुर्वल शरीर वाले होकर घोड़े, रथ, हाथी, स्त्री आदि को नहीं भोग सकते इस लिये मैं बुढापे को नहीं लूंगा । १९। ययातिने कहा हे द्रुह्यु तुमने मेरे पुत्र होकर मुझको अपनी अवस्था नहीं दी इस लिये तुम्हारी अति प्रिय इच्छा कभी पूरी नहीं होगी जहाँ घोड़े, रथ, हाथी राजाओं के योग्य सवारी, गौ, गधे बकरी आदि पर नहीं जा सक्ते हैं जहां बेड़े पर और कूदकर जाना आना पड़ताहै, और जहां राजा शब्दको कोई नहीं जानता तुम बंशसहित उसदेश में रहोगे फिर अनुनामक पुत्र से कहा हे अनु तुम पापसहित मेरा बुढापा लो और मैं एक सहस्र वर्ष पर्यन्त तुम्हारे यौवन से विषय भोगूं अनु ने कहा कि बूढे आदमी दुर्वल अंगवाले अकाल के सताये हुए बच्चों के समान अपवित्र शरीर में अन्न ग्रहणकरते हैं उचितसमय पर अग्निहोत्र नहीं करसक्के इसलिये मैं बुढापेको नहीं लूंगा ।२४। ययातिने कहा कि तुमने मुझसे जन्म लेकर

shalt be king of impure men who have illicit connection with the wives of their superiors who live on meat and are like birds and beasts, the sinful non-aryans. Vaishampayan said that Yayatl having thus cursed his son Turvasu, then addressed Sharmishtha's son Druhyu thus:—" Take for a thousand years my descrepitude destructive of complexion and personal beauty and give me thy youth. After thousand years I shall returu thy youth and take back my weakness. But Druhyu replied, " O king, a decrepit man can never enjoy elephants, eats horses and women. His voice becomes hoarse. Therefore I donot want thy decrepitude." Yayati said, " Being sprung up from my heart, thou dost not give me thy youth. Therefore thy most cherished desire shall never be fulfilled. Thou shalt be

प्रोक्तस्तस्मात्त्वंप्रतिपत्स्यसे ॥ २५ ॥ प्रजाश्चयौवनप्राप्ता विनशिष्यन्त्यनोतव । अग्नि प्रस्कन्दनपरस्त्वंचाप्येवंभविष्यसि ॥ २६ ॥ ययातिरुवाच ॥ पूरोत्वंमेप्रियः पुत्र स्त्वंवरीयान्भविष्यसि । जरावलीचमांतात पलितानिचपर्य्यगुः ॥ २७ ॥ काव्यस्योशनसःशापान्नच तृप्तोऽस्मियौवने । पूरोत्वंप्रतिपद्यस्व पाप्मानंजरयासह । कञ्चित् कालंचरेयंवै विषयान्वयसातव ॥ २८ ॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतु पुनर्दास्यामियौवनम् । स्वञ्चैवप्रतिपत्स्यामि पाप्मानंजरयासह ॥२९॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवमुक्तःप्रत्युवाच पूरुःपितरमञ्जसा । यथात्थमांमहाराज तत्करिष्यामितेवचः ॥ ३० ॥ प्रतिपत्स्यामि तेराजन पाप्मानंजरयासह । गृहाणयौवनंमत्तश्चरकामान्यथेप्सितान् ॥ ३१ ॥ जर

अपनी अवस्था नहीं दी इस लिये जिस बुढापेका तुमने दोष कहा उसीको प्राप्तहोगे । हे अनु ! तुम्हारी प्रजा यौवनावस्थाही में मरजायगी और तुम श्रुति और स्मृति के अनुसार अग्नि कार्य से वर्जितहोगे । फिर पुरु से कहा हे पुरु तुम मेरेप्यारे पुत्रहो तुम्हींसभों से श्रेष्ठहोगे शुक्रके शाप से बुढापा मुझको आगया है और यौवनसे अच्छीप्रकार तृप्त नहीं हुआहूं हे पुरु ! तुम मेरेपाप के साथ इस बुढापेको लो और मैं तुम्हारे यौवन से कुछ दिनतक विषय भोग करूं सहस्रवर्ष पूर्णहोनेपर तुम्हारा यौवन तुमको देदूंगा और अपना बुढापा लेलूंगा वैशम्पायन ने कहा कि पिताकी यहबात सुनकर पुरु ने उत्तर दिया कि महाराज मैं आपकी आज्ञा पालनकरूंगा और पापसहित आपका बुढापा लूंगा आप

---

king over a country where there are no good roads for the passage of horses, cars, elephants, good vehicles, asses, goats, bullocks and palanquins—where there is swimming only by rafts and floats." Yayati next told Anu to take the decrepitude for a thousand years and let him enjoy the pleasures of life. But Anu replied, "Those who are decrepit, eat like children and always remain impure. They can not pour libations on Agni at the proper times. Therefore I do not like it." Yayati told him that as being sprung from his heart he refused to give his youth and found so many faults in decrepitude, he should be overcome by that very decrepitude, that his progeny should die in youth and that he should not be able to perform sacrifices before Agni. Yayati at last turned to his youngest son Puru, and said, "Thou art my youngest son, Puru; but thou shalt be first of all. I have been attacked by decrepitude, wrinkles and whiteness of hair, by the curse of Shukr; but have not been satiated with youth. O Puru, take my weakness and decrepitude, and with thy youth I shall enjoy the pleasures of life. I shall give thee back thy youth

याहंमतिच्छन्नो वयोरूपधरस्तव । यौवनंभवतेदत्त्वा चरिष्यामियथात्थमाम् ॥३२॥
ययातिरुवाच ॥ पूरोप्रीतोऽस्मितेवत्सप्रीतश्चेदंददामिते । सर्वकामसमृद्धाते प्रजाराज्ये
भविष्यति ॥ ३३ ॥ एवमुक्त्वाययातिस्तु स्मृत्वाकाव्यंमहातपाः । संक्रामयामासजरां
तदापूरौमहात्मनि ३४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
चतुरशीतोऽध्यायः ८४ ॥

मेरा यौवन लेकर मनमाना विषय भोगकरें और मैं आपका बुढापा अपने यौवनके बदले लेकर आपकी आज्ञानुसार काम करूंगा ययाति ने कहा बेटा पूरू मैं तुझपर प्रसन्नहूं और प्रीति पूर्वक यह वर देताहूं कि तुम्हारे राज्य में प्रजा अति प्रसन्न रहेगी राजर्षि ययाति ने यह कहकर शुक्रका स्मरण किया और अपना बुढापा पुरु को देदिया ३४ ॥

---

after a thousand years and shall take back my own decrepitude. Vaishampayan said that thus addressed by the king, Puru answered with humility, " I shall do, O king, as thou biddest me to do I shall take thy weakness and decrepitude Take my youth and enjoy with it the pleasures of life. With thy decrepitude and old age, I shall pass the time." Yayati then said, " O Puru, I am pleased with thee and being gratified I tell thee that the people of thy kingdom shall have their desires accomplished." Having said this, the great ascetic Yayati, thought of Kavya and transferred his decrepitude to the body of the high souled Puru.

वैशम्पायनउवाच ॥ पौरवेणाथवयसा ययातिर्नहुषात्मजः । प्रीतियुक्तोनृपश्रेष्ठश्चचार विषयानभियान् ॥१॥ यथाकामंयथोत्साहं यथाकालंयथासुखम् । धर्मा विरुद्धं राजेन्द्र यथार्हतिसएवहि ॥२॥ देवानतर्पयद्यज्ञैः श्राद्धैस्तद्वत्पितॄनपि दीनाननुग्रहैरिष्टैः कामैश्चद्विजसत्तमान् ॥ ३ ॥ अतिथीनन्नपानैश्च विशश्चपरिपालनैः । आनृशंस्येन शूद्रांश्च दस्यून्संनिग्रहेणच ॥४॥ धर्मेणचप्रजाःसर्वा यथावदनुरञ्जयन् । ययातिःपालयामास साक्षादिन्द्रइवापरः ॥५॥ सराजासिंहविक्रान्तो युवाविषयगोचरः । अविरोधेनधर्मस्य चचारसुखमुत्तमम् ॥६॥ ससंप्राप्यशुभान्कामांस्तृप्तःखिन्नश्चपार्थिवः । कालंवर्षसहस्रांतं सस्मारमनुजाधिपः ७ परिसंख्यायकालज्ञः कलाःकाष्ठाश्चवीर्यवान्। यौवनंप्राप्यराजर्षिः सहस्रपरिवत्सरान् ॥८॥ विश्वाच्यासहितोरेमे व्यभ्राजन्नन्दने वने । अलकायांसकालन्तु मेरुशृङ्गेतथोत्तरे ॥ ९ ॥ तदासपश्यतेकालं धर्मात्मातुंमही

अध्याय ८५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि नहुषपुत्र राजर्षि ययाति पुरू के यौवन से मनमाना विषय भोगनेलगा । १ । अपनीकामना और उत्साह के अनुकूल यथायोग्य धर्मपूर्वक सुखभोगने लगा वह यज्ञों से देवों को, श्राद्धसे पितरों को, उदारता से दीनों को, कामना पूरी करने से ब्राह्मणों को, अन्न पानादि से अतिथियों को, प्रजापालनसे वैश्यों को और दयासे शूद्रों को, अच्छीप्रकार तृप्तकरता था, लुटेरों को दण्ड देता, और धर्मपूर्वक दूसरे इन्द्रकीसमान प्रजा पालनकरताथा, सिंह के समान विक्रमवाला वह राजा विषय में आसक्तहोकरभी धर्मानुसार भलेप्रकार भोग करनेलगा वह अच्छी कामनाकी सामग्री पाकर हर्षितहुआ परन्तु यह स्मरण करके कि यौवनावस्था सहस्र वर्षही रहेगी दुःखितभी हुआ वीर्यवान कालज्ञ राजर्षि यौवन पाकर सहस्र वर्षतक । ८ । विश्वाची के साथ कभी शोभायमान नन्दनबनमें, कभी अलका में, कभी पहाड़की चोटीपर, कभी उत्तर प्रदेश में खेलता फिरा

CHAPTER LXXXV

Vaishampayan said that the good king, Yayati, the son of Nahush, having received Puru's youth, became very happy and with it he began to enjoy his favourite pursuits to the full extent of his desires as far as he could, reasonably, so as to derive the greatest pleasure therefrom. But he did never act against the precepts of religion. He gratified the gods by sacrifices; the Pitris by shradhas; the poor by gifts, the excellent Brahmans by fulfilling their desires, the guests by food and drink; the Vaishyas by protection and the Shudras by kindness. The king suppressed crime by proper punishments. Yayti gratified all his subjects and protected them virtuously like another Indra. The monarch possessing the power of a lion and having youth and every object of enjoyment under his

पतिः। पूर्णमत्वाततःकालं पूरुंपुत्रमुवाचह ॥ १० ॥ यथाकामंयथोत्साहं यथाकाल
मरिन्दम। सेविता विषयाःपुत्र यौवनेनमयातव ॥११॥ नजातुकामःकामानामुपभोगेन
शाम्यति। हविषाकृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्द्धते ॥ १२ ॥ यत्पृथिव्यांव्रीहियवं हिर-
ण्यंपशवःस्त्रियः। एकस्यापिनपर्याप्तं तस्मात्तृष्णांपरित्यजेत् ॥१३॥ यादुस्त्यजादुर्मति
भिर्यानजीर्यतिजीर्यतः। योऽसौप्राणान्तिकोरोगस्तांतृष्णांत्यजतः सुखम् ॥ १४ ॥
पूर्णंवर्षसहस्रंमे विषयासक्तचेतसः। तथाप्यनुदिनंतृष्णा ममैतेष्वभिजायते ॥ १५ ॥
तस्मादेनामहंत्यक्त्वा ब्रह्मण्याधायमानसम्। निर्द्वन्द्वोनिर्ममोभूत्वा चरिष्यामिमृगैःसह
॥ १६ ॥ पूरोप्रीतोऽस्मिभद्रन्तेगृहाणेदंस्वयौवनम्। राज्यंचेदंगृहाणत्वं त्वंहिमेप्रियकृत्

अनन्तर जब उस धर्मात्मा ने देखा कि सहस्र वर्ष पूरेहोगये तब अपने प्रियपुत्र पुरूको बुलाकर कहा हे पुत्र ! मैं तेरेयौवनसे अभिलाषा और उत्साह पूर्वक विषय भोग चुका परन्तु जैसे आग में घृत छोड़ने से औरभी भड़क उठती है इसप्रकार विषय भोग से कामकी निवृत्ति कभी नहींहोती पृथ्वी में धन, धान्य, स्त्री, यह सब एक पुरुष से भोगे जाने परभी तृप्ति नहीं होती इस लिये भोगकी इच्छा त्यागना उचितहै इस इच्छा को दुर्मति पुरुष नहीं त्यागसक्ते बुढ़ापा आजाने सेभी इच्छाका क्षय नहीं होता इस रोगका छोड़ने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है विषयभोग में मेरे सहस्रवर्ष व्यतीतहोगये तिसपरभी इच्छा प्रबलहोती जाती है इस लिये मैं इस को छोड़कर परब्रह्म में चित्त लगाकर निर्द्वन्द्व बन में मृगों के साथ बसूंगा। हे पुरु तुम मेरे परम प्रियपुत्रहो मैं

control, enjoyed unlimited happiness lawfully. He enjoyed happily all the excellent objects of his desire. He was sorry only at the prospect of the thousand years coming to an end. Acquainted with the mysteries of time and watching its parts carefully, the king sported with Vishwachi in the gardens of Indra and in the city of Kuver and sometimes on the summit of mount in the North. When the virtuous monarch found that he had completed the thousand years, he summoned his son Puru and said, "With thy youth, O oppressor of foes, I have enjoyed the pleasures of life in proper seasons to the full extent of my desires and power. Our desires are never gratified by indulgence, but are inflamed more and more like fire by libations of butter. If a single person be the owner of everything on earth, of food grains, gold, silver and gems, its animals and women, he would not yet be content. Thirst of enjoyment, therefore, should be abandoned. They get true happiness who have no desire which is

सुतः ॥ १७ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ प्रतिपेदेजरांराजा ययातिर्नाहुषस्तदा॥यौवनंप्रति पेदेच पूरुःस्वंपुनरात्मनः ॥ १८ ॥ अभिषेक्तुकामंनृपतिं पूरुंपुत्रंकनीयसम् । ब्राह्मण प्रमुखावर्णा इदंवचनमब्रुवन् ॥ १९ ॥ कथंशुक्रस्यनप्तारं देवयान्याःसुतंप्रभो । ज्येष्ठं यदुमतिक्रम्य राज्यंपूरोःप्रयच्छसि ॥ २० ॥ यदुर्ज्येष्ठस्तवसुतो जातस्तमनुतुर्वसुः । शर्मिष्ठायासुतोद्रुह्युस्ततोनुःपूरुरेवच ॥ २१ ॥ कथंज्येष्ठानतिक्रम्य कनीयान्राज्य मर्हति । एतत्सम्बोधयामस्त्वां धर्मंत्वंप्रतिपालय ॥ २२ ॥ ययातिरुवाच ॥ ब्राह्मण प्रमुखावर्णाः सर्वेश्रृण्वन्तुमेवचः । ज्येष्ठंप्रतियथाराज्यं नदेयंमेकथञ्चन ॥ २३ ॥ मम ज्येष्ठेनयदुना नियोगोनानुपालितः । प्रतिकूलःपितुर्यश्च नसपुत्रःसतांमतः ॥ २४ ॥

तुम पर प्रसन्नहूं तुम्हारा मंगलहो तुम अपना यौवन लेकर मंगलकरो वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर नहुषपुत्र ययाति ने अपना बुढापा लेलिया और पूरुने अपना यौवन पाया राजा ययाति ने जब सब से छोटेपुत्र को राज्यदेना चाहा तब सबलोगों ने राजासे कहा हे प्रभु शुक्र के नाती देवयानि के ज्येष्ठपुत्र यदु को राज्य क्यों नहीं देते यदु आप के सब पुत्रों में ज्येष्ठ और दूसरा तुर्वसु है शर्मिष्ठा से उत्पन्न द्रुह्यु तीसरा, अनु चौथा और पूरु सब से छोटा है बड़ेको छोड़कर छोटा कैसे राज्याधि-कारीहोसक्ताहै आप धर्मानुसार कामकीजिये । २३ । ययाति ने कहा हे ब्राह्मणादिवर्णों तुम सब मेरीबात सुनों मैं बड़े पुत्र यदुको राज्य नहीं दूंगा उसने मेरी आज्ञा पालन नहीं

---

difficult to be cast off by wicked and sinful men, is the destroyer of life and a fatal disease in men. My heart has been fully set on the objects of desire for a thousand years; but my thirst after these has not abated. I shall therefore cast it off and filling my mind with Brahma I shall pass the rest of my life with the innocent deer of the forest without thinking of worldly enjoyments. I am much pleased with thee, O Puru! May thou be prosperous! Receive back thy youth. Receive also my Kingdom. Thou art my only son who has done me great service. Vaishampayan continued that Yayati, the son of Nahush, then received back his decrepitude and gave his son Puru his youth. He then wished to install him on the throne; but his subjects said, "O king, how shalt thou pass over Yadu, the eldest son, born of Devyani, and the grandson of great Shukr? *Yadu* is thy eldest son and the next is Turvasu; and of Sharmishtha's sons, the first is Druhyu, then *Anu*, and then Puru. How can the youngest be made king before his elder brothers? Act in conformity to

वर्त्ततेपितृमातृषु ॥ २५ ॥
मातापित्रोर्वचनकृद्धितःपथ्यश्चयःसुतः । सपुत्रःपुत्रवद्यश्च वर्त्ततेपितृमातृषु ॥ २६ ॥
यदुनाहमवज्ञातस्तथातुर्वसुनापिच । द्रुह्युनाचानुनाचैव मय्यवज्ञाकृताभृशम् ॥ २७॥
पूरुणातुकृतंवाक्यं मानितञ्चविशेषतः । कनीयान्ममदायादो धृतायेनजरामम ॥२८॥
ममकामःसचकृतः पूरुणामित्ररूपिणा।शुक्रेणचवरोदत्तो काव्येनोशनसास्वयम् ॥२८॥
पुत्रोयस्त्वानुवर्त्तेत सराजापृथिवीपतिः।भवतोऽनुनयाम्येवं पूरूराज्येऽभिषिच्यताम्२९
प्रकृतयऊचुः ॥ यःपुत्रोगुणसम्पन्नो मातापित्रोर्हितःसदा । सर्वमर्हतिकल्याणंकनीया
नपिसत्तमः ॥ ३० ॥ अर्हःपूरुरिदंराज्यं यःसुतःप्रियकृत्तव । वरदानेनशुक्रस्यनशक्यं

की जोपुत्र पिता के अनुकूल आचरण नहीं करता है साधुलोग उसकी गिनती पुत्रों में नहीं करते हैं जोपुत्र पिताकी आज्ञापर चलनेवाला हितकारी और नम्रहोता है माता पिता पर पुत्रकीसमान स्नेह करता है वही पुत्रहै । २८ । यदु, तुर्वसु, अनु, द्रुह्यु इन सबने मेरा अनादर किया पूरु ने मेरी आज्ञाको पालन करके मेरेबुढापे को लेलिया इस लिये पूरु छोटाहोकरभी मेरा उत्तराधिकारी, दायादहोगा उसने मेरी अभिलाषा पूरीकी है शुक्र नेभी मुझको यह वर दिया है कि जो पुत्र तुम्हारा आज्ञाकारी होगा वही राज्याधिकारी होगा इसलिये तुम से विनय करताहूं कि तुम पूरुको राज्यपर बैठाओ तब सब प्रजा ने कहा कि जो पुत्र गुणयुक्त, साधु, श्रेष्ठ और सदा माता पिताका हितकारीहोता है वह छोटाहोनेपरभी सम्पूर्ण कल्याणका पात्रहोसक्ता है इसलिये आपका प्रियकारी पुत्र राज्य

the virtuous principles." Yayati replied, " You four orders, Brahmans and others, hear the reason why the kingdom should not be given to the eldest son! Yadu disobeyed my orders. The wise say that he is no son who disobeys his father. The son who obeys his parents, seeks their good and is agreable to them is, indeed, the best. Yadu and Turvasu disregarded me, so did Druhyu and Anu. Puru alone has obeyed and regarded me; therefore, he the youngest shall be my heir. He took my decrepitude and is my friend. He did what was agreeble to me. Shukra the son of Kavi, has himself said, that of my sons he who would obey me should become king after me and bring the whole earth under his sway. I therefore request you to make Puru your king." The people said, " It is true, O king, that the son who is accomplished and seeks the good of his parents, deserves prosperity even if he be the youngest. Puru who has done thee good deserves the crown. We have nothing to say against it when Shukr himself has sanctioned it. Vaishampayan continued that

वक्तुमुत्तरम् ॥ ३१ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पौरजानपदैस्तुष्टै रित्युक्तोनाहुषस्तदा ।
अभ्यषिञ्चत्ततःपूरुं राज्येस्वेसुतमात्मनः ॥ ३२ ॥ दत्त्वाचपूरवेराज्यं वनवासायदी
क्षितः । पुरात्सनिर्ययौराजा ब्राह्मणैस्तापसैःसह ॥ ३३ ॥ यदोस्तुयादवाजातास्तुर्व
सोर्यवनाःस्मृताः । द्रुह्योःसुतास्तुवैभोजा अनोस्तुम्लेच्छजातयः ॥ ३४ ॥ पूरोस्तु
पौरवोवंशो यत्रजातोऽसिपार्थिव । इदंवर्ष सहस्राणि राज्यंकारयितुंवशी ॥ ३५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्याने
पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

को प्राप्तकरने योग्यहै इस विषयमें शुक्रनेभी वर दिया है उसके विरुद्ध नहीं होसक्ता ३१
वैशम्पायन ने कहा कि पुरवासी और जनपति वासियोंके सन्तुष्टहोनेपर ययातिने पूरु को
राज्याभिषिक्त किया और स्वयं बनवास का संकल्प ठहराकर ब्राह्मण और तपस्वियों के
साथ राज्यसे निकला । ३३ । ययातिके वंश में यदुसे यादव, तुर्वसुसे यवन, द्रुह्यु से
भोज, अनुसे म्लेच्छजाति उत्पन्न हुई हे पृथ्वीनाथ जिसवंशमें आपने जितेन्द्रियहोकर
सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य करने के लिये जन्म लियाहै वहपौरववंश पूरु से उत्पन्नहुआ ३५

the son of Nahush, thus addressed by his contented people, installed Puru on the throne and made preparations to return into the woods. He soon after left his capital followed by Brahmans and ascetics. The descendants of Yadu are known as Yadavas; those of Turvasu are the Yavanas; of Druhyu the Bhojas, and those of Anu the Mlechhas. The descendants of Puru are the Pauravas amongst whom, O monarch, thou art born to rule for a thousand years with thy passions under complete control.

वैशम्पायनउवाच ॥ एवंसनाहुषोराजा ययातिःपुत्रमीप्सितम् । राज्येऽभिषि
च्यमुदितो वानप्रस्थोऽभवन्मुनिः ॥ १ ॥ उषित्वाचवनेवासं ब्राह्मणैःसंशितव्रतः ।
फलमूलाशनोदान्तस्ततःस्वर्गमितोगतः॥२॥सगतःस्वर्निवासन्तं निवसन्मुदितःसुखी ।
कालेननातिमहता पुनःशक्रेणपातितः ॥३॥ निपतन्प्रच्युतःस्वर्गादप्राप्तोमेदिनीतलम्
स्थितआसीदन्तरिक्षे सतदेतिश्रुतंमया ॥ ४ ॥ ततएवपुनश्चापि गतःस्वर्गमितिश्रुतम् ।
राज्ञावसुमतासार्द्धमष्टकेनचवीर्यवान । प्रतर्दनेनशिबिना समेत्यकिलसंसदि ॥ ५ ॥
जनमेजयउवाच ॥ कर्मणाकेनसदिवं पुनःप्राप्तोमहीपतिः। सर्वमेतदशेषेणश्रोतुमिच्छामि
तत्त्वतः ॥ ६ ॥ कथ्यमानंत्वयाविप्र विप्रर्षिगणसन्निधौ । देवराजसमोह्यासीद्यया-
तिःपृथिवीपतिः ॥ ७ ॥ वर्द्धनःकुरुवंशस्य विभावसुसमद्युतिः । तस्यविस्तीर्णयशसः
सत्यकीर्तेर्महात्मनः । चरितंश्रोतुमिच्छामि दिविचेहचसर्वशः॥८॥वैशम्पायनउवाच॥

अध्याय ८६ ॥

वैशम्पायनने कहा कि नहुषपुत्र राजा ययाति इसप्रकार प्यारे पुत्रको राज्य देकर
प्रसन्न चित्तसे वाणप्रस्थ आश्रम धारणकर मुनिहोगया वह जितेंद्रिय व्रतशील और फल
मूलका भक्षीहोकर ब्राह्मणों के साथ कुछकाल बन में बसकर स्वर्ग को गया कुछकाल
सुखपूर्वक स्वर्ग में रहने के पश्चात्‌ही देवराज ने फिर उसको स्वर्गसे नीचे गिरादिया स्वर्ग
से गिरकर वह पृथ्वी पर नहीं पहुँचा परन्तु आकाशही में ठहररहा फिर उस वीर्यवान
राजाने वसुमान, अष्टक, प्रतर्दन और शिवि के साथ स्वर्गारोहणकिया । ६ । जनमेजयने
कहा कि यह आद्योपान्त अच्छीतरह सुनना चाहताहूं कि राजा ययाति किसप्रकार फिर
देवलोकमें गया आप इन ऋषियों और ब्राह्मणों के सामनेकहिये ।७। वह कुरुवंशका बढ़ाने
वाला सत्य कीर्तियुक्त सूर्यके समान तेजस्वी राजाययाति देवराजकी सदृशथा उसकायश

CHAPTER LXXXVI

Vaishampayan said that king Yayati the son of Nahush having thus installed his dear son on the throne became very happy and entered the woods to lead the life of a hermit. Having lived for some time in the forest in the company of Brahmans, observing many rigid vows, eating the fruits and roots and patiently bearing privations of all sorts, the monarch at last ascended to heaven and lived there in bliss. But soon he was hurled down by Indra. And it is said that though Yayati was hurled from heaven yet he stayed in the middle without reaching the earth and after a short time again entered heaven with Vasuman, Ashtak, Pratardan and Shivi. Janmejay said, "I desire to know why Yayati, having been once admitted to heaven, was over thrown and how readmitted.

मतन्द्रितः । तथापञ्चाग्निमध्येच तपस्तेपेसवत्सरम् ॥ १५ ॥ एकपादःस्थितश्चासीत्
षण्मासाननिलाशनः । पुण्यकीर्तिस्ततःस्वर्गे जगामावृत्यरोदसी ॥ १६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ययात्युपाख्यानेषडशीतोऽध्यायः ८६ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ स्वर्गतःसतुराजेन्द्रो निवसन्देववेश्मनि । पूजितस्त्रिदशैः
साध्यैर्मरुद्भिर्वसुभिस्तथा ॥१॥ देवलोकंब्रह्मलोकं सञ्चरन् पुण्यकृद्वशी।अवसत्पृथिवी
पालो दीर्घकालमितिश्रुतिः ॥२॥ सकदाचिन्नृपश्रेष्ठो ययातिःशक्रमागमत्। कथान्तेतत्र
शक्रेण सपृष्टःपृथिवीपतिः ॥ ३ ॥ शक्रउवाच ॥ यदासपूरुस्तवरूपेणराजन् जरांगृही-

---

अन्त में एक वर्ष पंचअग्नि के मध्यमें तपस्याकी और छःमहीने वायु भक्षणकर । १५ ।
एक पांवसे खड़ा रहा तत्पश्चात् पुण्य कीर्ति नहुष पुत्रने आकाश मंडलको चमका कर
स्वर्ग आरोहण किया ॥

अध्याय ८७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि राजाययाति स्वर्ग में जाकर देव, साध्य, मरुत्, और
बसुओंमें मिलकर । १ । देवलोक और ब्रह्मलोकमें फिरनेलगे सुनते हैं कि उसजितेन्द्रिय
राजा ने बहुत कालतक स्वर्गवास किया एक समय राजा ययाति इन्द्र के पास जाकर
उनसे बात चीत करने लगा इन्द्रने उससे पूछा हे राजन् जब पूरुने तुम्हारा बुढ़ापा

---

another year in severest penances surrounded by fire and without shelter from the sun. Living upon air he stood erect for six months on one leg. Having performed such sacred deeds the king ascended to heaven.

CHAPTER LXXXVII

Vaishampayan said that while the king lived in heaven he was respected by the gods, the Sadhyas, the Marutas and the Vasus. The illustrious monarch sometimes went to the region of Brahm and it is said that he lived for a long time in heaven. One day thee good king Yayati went to Indra and there in the course of conversation he was asked by Indra, "What didst thou say when thy son Puru took thy decrepitude on earth and thou gavest him thy kingdom? Yayati replied, "I said, the whole country between the river Ganges and the Yamuna is thine. Thine is the central region of the earth and the outlying regions will be ruled by thy brothers. I also said

हन्ततेकथयिष्यामि ययातेरुत्तमांकथाम् । दिविचेहचपुण्यार्थां सर्वपापप्रणाशिनी
म् ॥ ९ ॥ ययातिर्नाहुषोराजा पूरुंपुत्रंकनीयसम् । राज्येऽभिषिच्यमुदितः प्रवव्राज
वनंतदा ॥ १० ॥ अन्त्येषुसविनिक्षिप्य पुत्रान्यदुपुरोगमान् । फलमूलाशनोराजा
वनेसन्यवसच्चिरम् ॥ ११ ॥ संशितात्माजितक्रोधस्तर्पयन्पितृदेवताः । अग्नींश्चवि
धिवज्जुह्वन् वानप्रस्थ विधानतः ॥ १२ ॥ अतिथीन्पूजयामास वन्येनहविषाविभुः ।
शिलोञ्छवृत्तिमास्थाय शेषान्नकृतभोजनः ॥१३॥ पूर्णवर्षसहस्रञ्च एवंवृत्तिरभून्नृपः
अब्भक्षःशरदस्त्रिंश दासीन्नियतवाङ्मनाः ॥ १४ ॥ ततश्चवायुभक्षोऽभूत् सम्वत्सर

सर्वत्र हुआ है उस महात्माकी इसलोक और परलोककी सम्पूर्ण कथा सुनना चाहता हूं वैशम्पायन ने कहा हे राजन् स्वर्ग में और इस लोक में पुण्य बढ़ाने वाली और सबपाप को नाशकरने वाली राजा यायाति की सब कथा कहताहूँ सुनिये । ८ । नहुष पुत्र ययाति अपने. छोटे पुत्रको राज्य देकर और यदु आदि पुत्रों को नीचदेश में भेजकर सन्तुष्ट चित्तसे वाणप्रस्थ आश्रम धारणकर फल फूल भक्षीहो बहुत कालतक बनमें रहा उस समय उसने आत्मा और क्रोधको जीतकर देवता और पितरों का तर्पण वाणप्रस्थकी विधि से अग्निहोत्र और वन के फल मूल और घृतसे अतिथियोंकी पूजाकी उंछ वृत्ति अवलंबन कर शस्यको चुन २ कर शेष अन्न के भोजन से पूरे सहस्र वर्ष व्यतीत किये फिर एकाग्र चित्त हो जलमात्र पीकर एक बर्ष काटा फिर तन्द्रा रहितहोकर वर्षभर वायुभक्षी रहा

Yayati was indeed like Indra. He was the progenitor of the race of Kuru and in splendour like the Sun. I wish to hear the story of his life both in heaven and on earth, illustrious as he was, of world-wide fame and wonderful achievements." Vaishampayan said, "I shall recite to thee the excellent story of Yayati's adventures on earth and in heaven. The story is sacred and destroys the sins of the hearers:— King Yayati the son of Nahush, having installed his youngest son Puru on the throne and sending away his other sons amongst the Mlechhas, entered the woods to practice asceticism. He ate the fruits and roots of the forest and having kept his mind and passions under control, he gratified by sacrifices both the pitris and the gods. He poured libations of butter into fire after the manner of Vanprasth. He entertained his guests and strangers with fruits and butter and lived on gleanings of corn seeds for a thousand years. Observing the vow of silence with his mind under complete control he passed a year without sleep, living upon air alone. He passed

त्वामचचारभूमौ । तदाचराज्यंसम्प्रदायैवतस्मै त्वयाकिमुक्तःकथयेहसत्यम् ॥ ४ ॥
ययातिरुवाच ॥ गङ्गायमुनयोर्मध्ये कृत्स्नोऽयं विषयस्तव । मध्येपृथिव्यास्त्वं राजा
भ्रातरोऽन्त्याधिपास्तव ॥ ५ ॥ अक्रोधनःक्रोधनेभ्योविशिष्टस्तथातितिक्षुरतितिक्षो
र्विशिष्टः । अमानुषेभ्योमानुषाश्चप्रधाना विद्वांस्तथैवाविदुषःप्रधानः ॥ ६ ॥ आक्रुश्य
मानोनाक्रोशेन् मन्युरेवतितिक्षितः । अक्रोष्टारंनिर्दहति सुकृतंचास्यविंदति ॥ ७ ॥
नारुन्तुदःस्यान्ननृशंसवादीनहीनतःपरमभ्याददीत । ययास्यवाचापरउद्विजेतनतां
वदेदुषतींपापलोक्याम् ॥८॥ अरुन्तुदंपरुषंतीक्ष्णवाचंवाक्कण्टकैर्वितुदन्तंमनुष्यान् ।
विद्यादलक्ष्मीकतमंजनानां मुखेनिबद्धांनिर्ऋतिंवहन्तम् ॥ ९ ॥ सद्भिःपुरस्तादभि
पूजितःस्यात्सद्भिस्तथापृष्ठतोरक्षितःस्यात् । सदासतामतिवादांस्तितिक्षेत्सतांवृत्तं

लिया था और तुम भूमंडल में घूमने गये तब सच कहो कि तुमने उसको राज्यदेकर क्या कहा था ययाति ने कहा कि मैंने पुरुसे यह कहा था । ४ । कि गंगा और यमुनाके बीचमें जितने देशहैं वह सब तुम्हारे हैं इस भूमि में तुम्हीं राजाहो और यह उपदेशभी कियाथा । ५ कि क्रोधी श्रेष्ठ होताहै किसी के बुराकहने पर तुमबुरा मत कहो क्योंकि सहन शक्ति दूसरे के क्रोध को जला देती है और क्षमा से पुण्यभी होताहै किसी को निष्ठुर वाक्य मत कहो न किसीको पीड़ा दो नीच उपायों से शत्रुको वशमें न लाना ऐसी बात किसी को न कहना कि जिस से दूसरे को पीड़ा हो जो मनुष्य वाक्यरूपी कांटो से दूसरेको बींधता है उस के देखने सेभी लक्ष्मी भाग जाती है अच्छे आदमीको यदि बुरे आदमी बुराभी कहैं तबभी उनकी पूजा और रक्षा होती है ऐसे मनुष्य निंदाकी बातें

---

that those without anger are ever superior to those under its sway: the forgiving. Man is superior to the lower animals. Amongst men the learned are superior to the illiterate. If wronged thou shouldst not wrong in return. Wrath, uncontrolled, burns one's own self while he who does not regard it takes away all the virtues of him who shows it. Never pain others by cruel speeches. Never subdue thy foes by despicable means and never utter cruel words. He who pricks the thorns of cruel words has a Rakshas in his mouth. Prosperity and luck fly away at his very sight. Thou shouldst make the virtuous thy model and must ever compare thy acts with those of the wise, disregarding hard words of the wicked. Thou must act on the model of the wise. He who is hurt by the arrows of the cruel speech emitted from one's lips weeps day and night. They strike at the heart; therefore the wise

चाददीतार्घ्यवृत्तः ॥१०॥ वाक्सायकावदनान्निष्पतान्तियैराहतःशोचातिरात्र्यहानि परस्यनामर्मसुतेपतन्तितान्पण्डितोनावसृजेत्परेषु ॥ ११ ॥ नहीदृशंसम्वदनं त्रिषु लोकेषुविद्यते । दयामैत्रीचभूतेषु दानञ्चमधुराचवाक् ॥१२॥ तस्मात्सांत्वंसदावाच्यं नवाच्यंपरुषंक्वचित् । पूज्यान्सम्पूजयेद्दद्यान्नचयाचेत्कदाचन ॥ १३ ॥

इत्यादिपर्वाणि सम्भवपर्वण्युत्तरययातयुपाख्याने
सप्ताशीतोऽध्यायः ८७ ॥

सुनकर क्षमा करते हैं मुख से वाक्यरूपी तेजवाण निकलकर जिस के मर्म स्थान में लगता है वह घायल होकर मन के दुःखसे दुःखी रहता है इस लिये पंडित लोग किसी पर वाक्यवाण नहीं मारते सब जीवों पर दया मित्रता, दान, और मीठीबात इनचारों की बराबर कोई दूसरा धन नहीं है इस लिये सदैव शान्त वचन कहना कभी निष्ठुरबात न कहना पूजनीयकी पूजा करना, दान, देना और भीख न मांगना चाहिये ॥ १३ ॥

---

never fling them at others. There is nothing in the world by which thou canst worship and adore the gods better than by kindness, friendship, charity and sweet speeches to all. You should always utter soothing words and never those that scorch. Thou shouldst have regard for the deserving. Thou shouldst always give but never beg.

इन्द्रउवाच । सर्वाणिकर्माणि समाप्यराजन्गृहंपरित्यज्य वनंगतोसि । तत्त्वांपृच्छामि नहुषस्यपुत्रकेनासि तुल्यस्तपसाययाते ॥ १ ॥ ययातिरुवाच। नाहंदेवमनुष्येषु गंधर्वेषुमहर्षिषु । आत्मनस्तपसातुल्यं कञ्चित्पश्यामिवासव ॥ २ ॥ इन्द्रउवाच । यदावमंस्थाःसदृशःश्रेयसश्च अल्पीयसश्चाविदितप्रभावः। तस्मांल्लोकास्त्वन्तवन्तस्तवेमेक्षीणे पुण्येपतितास्यद्यराजन् ॥ ३ ॥ ययातिरुवाच । सुरर्षिगन्धर्वनरावमानात् क्षयंगतामे यदिशक्रलोकाः। इच्छाम्यहंवैसुरलोकाद्विहीनः सतांमध्येपतितुंदेवराज । ४ । इन्द्रउवाच सतांसकाशेपतितासि राजंश्च्युतःप्रतिष्ठांयत्रलब्धासिभूयः । एतद्विदित्वाचपुनर्ययाते त्वंमावमंस्थाःसदृशःश्रेयसश्च ॥ ५ ॥ वैशम्पायनउवाच । ततःप्रहायामरराजजुष्टान्

अध्याय ॥ ८८ ॥

इन्द्रनेकहा हे राजन् ! नहुष पुत्र ययाति जबतुम सम्पूर्ण कर्म पूरे कर गृहस्थाश्रमको छोड़ कर बन में गये तब कहो कि तपस्यामें किसकी बराबर हुये ॥ १ ॥ ययातिने कहा हे इन्द्र ! देवता, मनुष्य, गन्धर्व, और महर्षियोंमें मेरी बराबर तपस्वी कोई नहीं है इन्द्रने कहा । हे राजन् ! तुम ने औरों का प्रभाव बिना जाने अपने से श्रेष्ट, तुल्य और अधम सब का अपमान किया इस लिये तुम्हारा पुण्य क्षय होगया और स्वर्गभोगका भी अंत होगया आज तुम स्वर्ग से नीचे गिरोगे ययाति ने कहा हे देवराज ! देवता, ऋषि, गंधर्व, और मनुष्यों का अपमान करने से यदि मेरा स्वर्ग भोग अंतहुआ तो मैं देवलोक से गिर कर साधू समाज में पहुँचना चाहता हूँ इन्द्र ने कहा हे राजन् तुम स्वर्ग से गिर कर साधुओं के पास रहोगे और वहां फिर प्रतिष्ठा पाओगे हे ययाति तुमको अब धर्म का मर्म विदितहुआ फिर कभी श्रेष्ठ और तुल्य जनोंका अपमान न करना ॥५॥ वैशम्पायन

CHAPTER LXXXVI



Vaishampayan said that after this Indra again asked Yayati as to whom he thought to be his equal in ascetic merit. Yayati replied that he did not think any one his equal in asceticism among men, gods, Gandharvas and the great rishis. *Indra* thereupon said, "O monarch, because thou hast disregarded thy superiors, equals and inferiors, without knowing their real merits, therefore thy virtues are lost and thou must fall from heaven." *Yayati* said, "If indeed my good deeds have lost their virtue and I must fall from heaven, let me, O *Indra*, the chief of gods, fall amongst hermits." *Indra* replied, "Yes, O king, thou shalt fall among good men and shalt also acquire much renown. But herafter, thou must never disregard thy superiors or thy equals." Vaishanpayan continued that Yayati

पुन्यांल्लोकान् पतमानंययातिम् । संप्रेक्ष्यराजर्षि वरोऽष्टकस्तमुवाचसद्धर्मविधानगोप्ता ॥ ६ ॥ अष्टकउवाच । कस्त्वंयुवावासवतुल्यरूपः स्वतेजसादीप्यमानोयथाग्निः । पतस्यदीर्णाम्बुधरान्धकारात् खात्खेचराणांप्रवरोयथार्कः ॥ ७ ॥ दृष्ट्वाचत्वांसूर्यपथात् पतन्तंवैश्वानरार्कद्युतिम प्रमेयम् । किन्नुस्विदेतत्पततीतिसर्वे वितर्कयन्तः परमोहिताःस्मः ॥ ८ ॥ दृष्ट्वाचत्वांधिष्ठितंदेवमार्गे शक्रार्कविष्णुप्रतिमप्रभावम् । अभ्युद्गतास्त्वांवयमद्यसर्वे तत्त्वञ्चपातेतवजिज्ञासमानाः ॥ ९ ॥ नचापित्वांधृष्णुमःप्रष्टुमग्रेनच तमस्मान्पृच्छसियेवयंःस्मः । तत्त्वांपृच्छामिस्पृहणीयरूपकस्यत्वंवाकिंनिमित्तंत्वमागाः ॥ १० ॥ भयन्तुतेव्येतुविषादमोहौ त्यजाशुचैवेन्द्रसमप्रभाव । त्वांवर्त्तमानंहिसतां सकाशेनालंप्रसोढुंबलहापिशक्रः ॥ ११ ॥ सन्तःप्रतिष्ठाहिसुखच्युतानांसतांसदैवामरराज

ने कहा कि राजा ययाति देवराज से शोभित पुण्यलोकको छोड़ गिर रहेथे कि ऐसे समयमें साधु और धर्मात्मा राजर्षि ॥६॥ अष्टकने उनको देखकर कहा कि अपने तेज से अग्निकी समान प्रज्वलित इन्द्रकी सदृश रूप यौवनवाला और आकाश में फिरने वालों में श्रेष्ठ सूर्यकी समान मेघरूपी अँधियारे को हटाते हुए तुम कौन आकाश से गिर रहेहो अग्नि और सूर्यके समान तेजस्वी तुम को सूर्य के रास्ते से गिरतेदेख सब लोग मोहितहो यह कह रहे हैं कि यह कौन गिर रहा है हम सब तुमको उपेन्द्र, इन्द्र और सूर्यकी समान तेजवाला और देवमार्ग में ठहरे हुए देखकर तुम्हारे गिरने का कारण जानना चाहते हैं । हेरूपवान् पहले तुमसे पूछकर हम असभ्यता प्रकट न करते पर आपने हमसे यह नहीं पूछा कितुम कौनहो इस लिये हमहीं तुमसे पूछते हैं कि तुम किस के पुत्रहो और क्यों आरहे हो । हेइन्द्र के शदृश प्रभाव वाले तुम्हारा भय दूरहो तुम खेद और मोहको दूर करो साधुओं के पास ठहरने से वलका नाशकरने वाला इन्द्र भी तुम

was then hurled from the region of gods and during his fall he was seen by the *Rajarshi Ashtak*, the protector of religion. On seeing him *Ashtak* enquired, " Who art thou, O youth beautiful like *Indra* and like fire in splendour, thus falling from high ? Art thou the best of lumanaries, the sun emerging from the dark clouds? Seeing thee falling through the course of the sun, possessing great energy and in splendour like the fire or the sun, every one remarks as to who is falling thus unconsciously. Seeing thee in the path of the gods possessed of great energy like *Indra*, *Surya* or *Vishnu*, we have come to thee to ascertain the truth. If thou hadst first asked us about ourselves we would never have been guilty of the incivility of questioning thee first. We now ask who thou art and why hast thou come hither. Dispel thy fears and cease thy affliction and woes. Thou art now amongst the virtuous and the

रूप । तेसङ्गताःस्थावरजङ्गमेशाः प्रतिष्ठितस्त्वं सदृशेषुसत्सु ॥ १२ ॥ प्रभुरग्निःप्रतपनेभूमिरावपनेप्रभुः प्रभुःसूर्य्यःप्रकाशित्वेसतांचाभ्यागतःप्रभुः ॥ १३ ॥

इत्यादिपर्वाणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्याने
अष्टाशीतोऽध्यायः ॥ ८८ ॥

ययातिरुवाच । अहंययातिर्नहुषस्यपुत्रः पुरोःपितासर्वभूतावमानात् । प्रभ्रंशितःसुरसिद्धर्षिलोकात् परिच्युतःप्रपताम्यल्पपुण्यः ॥१॥ अहंहिपूर्वोवयसाभवद्भ्यस्तेना भिवादंभवतांनप्रयुञ्ज्ये । योविद्ययातपसाजन्मना वावृद्धःसपूज्योभवतिद्विजानाम् ॥ २ ॥ अष्टकउवाच । अवादीस्त्वंवयसायः प्रवृद्धःसवैराजन् नाभ्यधिकःकथ्यतेच । योविद्यया तपसा संप्रवृद्धःसएवंपूज्यो भवतिद्विजानाम् ॥ ३ ॥ ययातिरुवाच । प्रतिकूलंकर्मणां

को नहीं सता सकेगा, हेदेव साधुलोग जबसुख से गिरते हैं तब साधुही उनकी रक्षाकरते हैं इस स्थान में चराचर के प्रभु वहुतसे साधु एकत्रितहैं और तुम अपनी समान सज्जनों के निकट आपहुँचे हो जिसप्रकार अग्नि तापदेता है और सूर्य अंधेरे को दूर करताहै इसी प्रकार साधुओं के पास नये आये हुये जनभी प्रभुहोते हैं ॥ १३ ॥

अध्याय ८९ ॥

ययातिने कहा मैं नहुष का पुत्र और पूरू का पिता ययाति हूं मैंने सब जीवोंका अपमान किया इस लिये पुण्य घटने से सुर, सिद्ध, और ऋषि लोक से गिर रहा हूं मैं तुम सब से अवस्था में बड़ा हूं इस लिये तुम को नमस्कार नहीं किया क्योंकि जो कोई विद्या या तपस्याया जन्म में वृद्ध होते हैं वही द्विजातियोंमें पूजनीयहोते हैं ॥२॥ अष्टकने कहा कि तुम कहते हो कि जो जन अवस्था में वृद्ध हैं वे पूजनीय हैंपरन्तु ऐसा कहा है कि जो विद्या और तपस्यामें वृद्ध हैं वह द्विजोंमें पूजनीय होतेहैं ययातिनेकहा कि विद्या और

wise. Even *Indra* himself, the slayer of Val, cannot here do thee any harm. O thou of *Indra* like prowess, the virtuous and the wise help brethren at the time of need. Here thou wilt see all men virtuous and wise like thyself. Stay here in peace. Fire alone has power to give heat. The earth alone has power to infuse life into the seed. The sun alone has power to illuminate everything. So the guest alone has power to command the virtuous and the wise."

CHAPTER LXXXIX

Yayati said, "I am Yayati the son of Nahush and the father of Puru. Having disregarded all beings, I am cast off from heaven. My virtues being lost I have fallen down. In years I am older than you; therefore I did not salute you first. (Brahmans pay regard to him who is older in years or superior in learning." *Ashtak*

पापमाहुस्तद्वर्त्तते प्रवणेपापलोक्यम्। सन्तोऽसतांनानुवर्त्तन्ति चैतद्यथा चैपामनुकूला स्तथासन् ॥ ४ ॥ अभूद्धनंमेविपुलंगतंताद्धि चेष्टमानोनाधिगन्तातदस्मि। एवंप्रधार्यात्म हितेनिविष्टोयो वर्त्ततेसविजानातिधीरः ॥ ५ ॥ महाधनोयोयजतेसुयज्ञैर्यः सर्वावेद्यासु विनीतबुद्धिः। वेदानधीत्यतपसायोज्यदेहं दिवंसमायात्पुरुषोवीतमोहः॥ ६ ॥ नजातु हृष्येन्महताधनेनवेदान धीयीतानहंकृतःस्यात्।नानाभावाबहवोजीवलोके दैवाधीनानष्ट चेष्टाधिकाराः। तत्तत्प्राप्यनविहन्येतधीरोदिष्टं बलीयइतिमत्वात्मबुद्ध्या ॥ ७ ॥ सुखं हिजन्तुर्यदिवापिदुःखं दैवाधीनंविंदतेनात्मशक्त्या। तस्माद्दिष्टंबलवन्मन्यमानो नसं-ज्वरेन्नापिहृष्येत्कथञ्चित् ॥८॥ दुःखैर्नतप्येन्नसुखैःप्रहृष्येत् समेनवर्त्तेत्सदैवधीरःदिष्टं

तपस्या आदि कर्म के अहंकार को पंडितों ने नरक उपजाने वाला पाप कहा है वह अहंकार स्वतंत्र जन मेंही रहता है साधु लोग उन स्वतंत्र असाधुओं के समान अहंकार के वश में नहीं होते पूर्वकाल के सज्जन भी ऐसे थे और मैं ऐसा करने से ही स्वर्ग से गिरा हूँ मैंने पुण्यरूपी धन संचित किया था वह अहंकार से नष्ट हुआ और इस समय बहुत श्रमकरनेसेभी मैं उसको फिर नहीं पासक्ता जो मेरी ऐसी गति देखकर अपना हित साधनेमें प्रस्तुतहोंगे वही बुद्धिमान् और धीरहैं॥५॥ जोमनुष्य धनवानहोकर अच्छे यज्ञ करते हैं और सब विद्याओं को जानकर विनयशील होते हैं और सम्पूर्ण वेदोंकोपाठ करके तपस्या में देह छोडते हैं वोह पुरुषही मोह छोड़कर स्वर्ग गामीहोते हैं परन्तु बहुत पुण्य संचय करकेभी संतुष्ट चित्त न होना, वेदपढ के भी अहंकार न करना इस जीवलोक में कोई धर्मात्मा और कोई अधर्मी होते हैं क्योंकि सभी दैव आधीन् हैं और उनकी चेष्टा और योग्यता नष्टहोजातीहै।८। इसलिये धीर्यवान अपनी बुद्धि से अदृष्टको बलवान समझकर सुखदुःखहोनेपर क्रोध और दोष से अपना विघ्न नहीं करते केबल जीवही सुख व दुःख

replied, "Thou sayst, O monarch, that one older in years is worthy of regard; but they say that the one superior in learning and ascetcism is truly worthy of regard." To this Yayati replied, "It is said that sin destroys the merits of our virtues and vanity leads to hell. The virtuous never follow in the wake of the vicious, but act in such a way as to increase their ascetic merit. I myself had great religious merit which is all gone and is difficult to regain even with great exertion.. Beholding my fate he who is bent upon achieving his own good, will certainly suppress vanity. A wealthy man who performs meritorious sacrifices, who having acquired learning remains humble, and who having studied the Vedas devotes himself to asceticism with his heart withdrawn from all mundane enjoyments, goes to heaven. None should exult for having acquired great wealth or for studying the whole Vedas.

वलीयइतिमन्यमानो नसंज्वरेन्नापिहृष्येत् कथञ्चित् ॥९॥ भयेनमुह्याम्यष्टकाहं कदा चित्सन्तापोमे मानसोनास्तिकश्चित् । धातायथामांविदधीतलोके ध्रुवंतथाहंभवतेति मत्वा ॥ १० ॥ संस्वेदजाअण्डजा उद्भिदश्चसरीसृपाः कृमयोऽथाप्सुमत्स्याः । यथा श्मानस्तृणकाष्ठञ्चसर्वेदिष्टक्षये स्वांप्रकृतिंभजन्ति ।११। अनित्यतांसुखदुःखस्यबुद्ध्वाक- स्मात्सन्तापमष्टकाहंभजेयम् किंकुर्यांवैकिंचकृत्वानतप्येतस्मात्सन्तापंवर्ज्जयाम्यप्रमत्तः ॥ १२ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवंब्रुवाणंनृपतिं ययातिमथाष्टकः पुनरेवान्वपृच्छत् । मातामहंसर्वगुणोपपन्नं तत्रस्थितंस्वर्गलोके यथावत् ॥ १३ ॥ अष्टकउवाच । येयेलोकाः पार्थिवेंद्र प्रधानास्त्वयाभुक्ता यञ्चकालंयथावत् । तान्मेराजन् ब्रूहिसर्वान् यथावत्क्षे-

शक्तिके अनुसार नहींभोगता दैवआधीन भोगताहै इस लिये दैवको अधिक वली जानकर सुखदुःखमे प्रसन्न वा दुःखी होना उचित्त नहीं धीरपुरुष दुःख भोगने में दुःखी यासुख भोगने में प्रसन्न नहीं होते सदैव एक भाव से रहते हैं और यह जानकर कि भाग्यही सबकी जड़ है सन्तोष और असंतोष में लिप्त नहीं होते हे अष्टक यह जानकर कि वि धातानेजो नियत किया है वह अवश्यही होगा मैं कभी भयसे मोहित नहीं हुआ अब मेरे मनमें कुछभी सन्तापनहीं है देखो सर्प, विच्छू, सूर्य, मछली आदि जल अस्थल के कीड़े पत्थर तृण काष्ठादि जितने स्वेदज अंडज उद्भिज्ज पदार्थ हैं सभी अंतमें अपनी २ प्रकृति में लीन होते हैं हे अष्टक सुख और दुःख अनित्य हैं इसलिये मैं उनसे क्यों तापितहूंगा यह विचार कर कि क्या करूं और क्या करने से सन्ताप जातारहेगा प्रवृत्त नहोकर । सन्ताप छोडदिया । वैशम्पायन ने कहा कि वहां ठहर हुए सर्वगुण युक्त राजाययाति के ऐसा कहने पर अष्टक ने फिर स्वर्ग वासकी कथा पूछी कि हे राजन् तुमक्षेत्रज्ञ नारदादि केसमान धर्मकी कथा कह रहे हो इसलिये तुमने जितने काल तक और जिस प्रकार

In the world men are of different dispositions. Fate is supreme. Strength and exertion are fruitless. Knowing destiny to be all powerful, the wise should neither exult nor grieve on their lot. Knowing that both weal and woe depend on destiny and not on their own exertions or power, they should neither grieve not exult. The wise should ever live contented, neither grieving at woe nor exulting at weal. When destiny is supreme, both grief and exultation are vain. I am never overcome by fear or grief, knowing that I shall be in the world what the disposer of all has ordained. Insects and worms, vegetables and crawling insects, fish, stone, grass, wood, and all created beings are united with the supreme soul afer having been freed from the effects of their acts. Happiness and misery are both transient. Therefore, O Ashtak, why should I grieve? We can never know how are we to act in order to avoid misery. Therefore none should grieve at misery."

त्रज्ञवत् भाषसेत्वंहिधर्मान् ॥ १४ ॥ ययातिरुवाच । राजाहमासमिह सार्वभौमस्ततो लोकान्महतश्चाजयंवै । तत्रावसंवर्षसहस्रमात्रं ततोल्लोकंपरमस्म्यभ्युपेतः ॥ १५ ॥ ततः पुरींपुरुहूतस्यरम्यांसहस्रद्वारां शतयोजनायताम् । अध्यावसंवर्षसहस्रमात्रं ततो लोकं परमस्म्यभ्युपेतः ॥ १६ ॥ ततोदिव्यमजरंप्राप्य लोकंप्रजापतेर्लोकपतेर्दुरापम् । तत्रावसंवर्षसहस्रमात्रं ततोलोकंपरमस्म्यभ्युपेतः ॥ १७ ॥ सदेवदेवस्यनिवेशनेच विहृत्य लोकानवसंयथेष्टम् । सम्पूज्यमानास्त्रिदशैः समस्तैस्तुल्यप्रभावद्युतिरीश्वराणाम् । १८ । तथावसन्नन्दनेकामरूपी संवत्सराणामयुतं शतानाम् । सहाप्सरोभिर्विहरन् पुण्यगंधान्पश्यन्नगान् पुष्पितांश्चारुरूपान् ॥ १९ ॥ तत्रस्थितंमांदेवसुखेषु सक्तंकालेतीऽते

जिन२ प्रधानलोकों को भोग कियाहै वह सब मुझसे कहो॥१४॥ ययातिने कहा कि मैं इस लोक में सार्वभौम राजा था और सबको जयकर के सहस्र वर्ष पर्यंत वहां रहा तत्पश्चात् परम लोक प्राप्त कर सहस्रद्वार वाली सौ योजन फैली हुई सुन्दर इन्द्रपुरी में वासकिया तत्पश्चात् उससे भी श्रेष्ठ, दिव्य, अजर लोकपति प्रजापति लोकको प्राप्तकर वहांभी सहस्रवर्ष बास किया फिर उससेभी परमलोक को पाकर देव देवके स्थान में विहारकर देवोंसे पूजाहुआ देवताओं के समान प्रभाव और द्युतिवालाहोकर मनमाने लोक में बास किया॥१८॥अन्त में कामरूपी होकर दशलक्षवर्ष नन्दनबनमें बासकर सुगन्धित फूलवाले मनोहर बृक्षोंको देखताहुआ अप्सराओंके साथ विहार करनेलगा इसप्रकार सुखसे बहुत

The virtuous *Yayati*, the maternal grand father of Ashtak was again questioned by Ashtak:—"O king. tell me fully all the regions thou hast visited and enjoyed as well as the periods of sojourn in each. Thou speakest of the precepts of religion like those knowing the acts and sayings of great beings." Yayati replied. "I was a great king possessing the whole earth. Leaving it I acquired by force of religious merit many high regions. There I dwelt for a thousand years and attained to a very high region, the adode of great beauty, having a thousand gates and extending four hundred miles all round. There too I lived a thousand years and ascended higher still to the region of perfect holiness and no decay, the region of Brahm, difficult of attainment. There, too, I remained a thousand years and ascended higher to the region of the god of gods where also I lived happily. Indeed I have dwelt in various regions, adored by all the gods, and possessed prowess and splendour equal to those of the gods. Capable of assuming any form at will I lived fo a million years in the gardens of Nandan, sporting with the Apsaras and beholding numberless beautiful trees clad in flowery vestments and shedding

महतिततोऽतिमात्रम् । दूतोदेवानामब्रवीदुग्ररूपो ध्वंसेत्युच्चैस्त्रिःप्लुतेन स्वरेण ॥ २० ॥ एतावन्मेविदितं राजसिंहततोभ्रष्टोहं नन्दनात्क्षीणपुण्यः । वाचोऽश्रौषंचान्तरिक्षे सुराणांसानुक्रोशाः शोचतांमांनरेंद्र ॥ २१ ॥ अहोकष्टंक्षीणपुण्योययातिःपतत्यसौपुण्यकृत् पुण्यकीर्त्तिः । तानब्रुवंपतमानस्ततोऽहं सतांमध्येनिपतेयं कथन्नु । २२ । तैराख्याता भवतांयज्ञभूमिः समीक्ष्यचेमांत्वरित मुपागतोऽस्मि । हविर्गंधंदेशिकं यज्ञभूमेर्धूमापाङ्गं प्रतिगृह्यप्रतीतः ॥ २३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्याने एकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

काल स्वर्ग में व्यतीत हुआ तत्पश्चात् उग्ररूपी देव दूत ने मुझ से तीनवार च्युतहो यह शब्द कहा हे राजासिंह मैं इतनाही जानताहूं फिर उसीक्षण मैं थोड़ा पुण्यवान्हो नन्दन बनसे गिरा तब शोककरनेवाला देवताओंका यह खेदयुक्त शब्द आकाशमार्ग में सुना२१ हा ! कैसे शोककी बातहै यह देखो पुण्यवान, कीर्तिवान् ययाति पुण्यक्षीणहोकर गिररहा है मैंने गिरतेहुए उनसे पूछा कि मैं क्योंकर साधुसमाज में गिरसक्ता हूं उन्होंने मुझको तुम्हारी यह यज्ञभूमि दिखलाई इसके धुएं से सूचित उपदेश करनेवालेकी भाँति हविकी गन्ध सूंघकर प्रसन्नचित्त इस यज्ञभूमि में शीघ्र चलाआया ॥ २३ ॥

delicious perfumes all around. After many years of enjoyment of perfect beatitude there, the celestial messenger of grim visage one day, in a loud and deep voice, shouted to me, Fallen ! Fallen !! Fallen !!! I remember this much only. I fell down from Nandan, my religious merits gone ! I heard in the sky the voices of the gods exclaiming in grief, " Alas, What ill-luck ! Yayati with his religious merits destroyed, is falling down ! " As I was falling I asked them loudly, " Where, O gods, are the wise amongst whom I am to fall. They then pointed out to me your sacred region. And seeing the curl of smoke, darkening the atmosphere and smelling the perfume of clarified butter poured continuously into the fire, I am approaching your region with a pleasant heart."



अष्टकउवाच । यदा सोनन्दने कामरूपीसम्वत्सराणामयुतं शतानाम् । किंकारणं कार्त्तयुगप्रधानहित्वाच त्वंवसुधामन्वपद्यः ॥ १ ॥ ययातिरुवाच । ज्ञातिः सुहृत्स्वजनोवा यथेहक्षीणेवित्तेत्यज्यते मानवैर्हि । तथातत्रक्षीणपुण्यं मनुष्यंत्यजन्तिसद्यः सेश्वरादेवसंघाः ॥ २ ॥ अष्टकउवाच । तस्मिनकथंक्षीणपुण्या भवन्तिसंमुह्यते मेऽत्र मनोतिमात्रम् । किंवाविशिष्टाःकस्यधामोपयांतितद्वै ब्रूहिक्षेत्रवित्त्वंमतोमे ॥ ३ ॥ ययातिरुवाच । इमंभौमंनरकंते पतन्तिलालप्यमाना नरदेवसर्वे । येकंकगोमायुबलाशनार्थे क्षीणाविवृद्धिंवहुधा व्रजन्ति ॥ ४ ॥ तस्मादेतद्वर्ज्जनीयं नरेन्द्रदुष्टंलोके गर्हणीयच्चकर्म । आख्यातंतेपार्थिवसर्वमेवभूयश्चे दानींवदकिंतेवदामि ॥५॥ अष्टकउवाच ॥

अध्याय ९० ॥

अष्टकनेकहा । हे तपशील तुम काम रूपी होकर एक लक्ष वर्षतक नन्दन वन में रहे फिर किसलिये भूमिपर आये ॥१॥ ययाति ने कहा कि जिस प्रकार इसलोक में स्वल्प आयु होने पर अपने जाति, मित्र, और स्वजनों को छोडना पडता है उसी प्रकार वहां मनुष्यों के क्षीण पुण्य होने पर ऐश्वर्य वन्त देवता उन को त्याग देते हैं अष्टक ने कहा कि देव लोक के रहने वाले क्षीण पुण्य कैसे होजाते हैं इस विषय में मुझे वडी शंका है और यह भी बतलाओ कि कौन पुण्य करने से कौन सा प्रजापति धाम मिलता है तुम सब जानते हो ययाति ने कहा हे नरदेव ! जो लोग अपनी प्रशंसा अपने मुँह से करते हैं वे क्षीण पुण्यहोकर पृथ्वी रूपी नर्कमें गिरकर भोगकी अभिलाषा से थकजाते हैं । और पक्षी सियार आदि नानाप्रकार के कष्टदाई शरीर प्राप्तकरतेहैं हे नरेन्द्र ! इसकारण दोषयुक्त, और लोकनिंदित कर्मत्याग देना चाहिऐ । हेपृथ्वीनाथ तुम से सवकुछ कह दिया अबकहो

CHAPTER XC

Ashtak said, " Thou hast roamed at will in the Nandan gardens for a million years. For what cause. O thou foremost of those living in Krita age, hast thou been compelled to leave that region and come hither? Yayati answered, "As kinsmen, friends and relations forsake in this world the people whom wealth has forsaken, so in the other world, the gods—Indra and others, forsake those who have lost their merits." Ashtak again said, " I am extremely anxious to know how in the other world men can lose their virtue. Tell me. O king, what regions are attainable by several courses of actions. Thou knowest the acts and sayings of great men." Yayati replied, "They who boast of their own merits are doomed to be cast in the hell named Bhaum. They are born on the earth to become jackals, dogs and vultures. Therefore O king vice should be suppressed. I have now told thee all. What more do you wish to hear?"

यदातुतान्वितुदन्ते वयांसितथागृध्राः शितिकण्ठाःपतङ्गाः । कथंभवन्तिकथमाभवन्ति नभौममन्यंनरकंशृणोमि ॥ ६ ॥ ययातिरुवाच । ऊर्द्धंदेहात्कर्मणा जृम्भमाणादव्यक्तं पृथिव्यामनुसञ्चरन्ति । इमंभौमंनरकंते पतन्तिनावेक्षन्ते वर्षपूगाननेकान् ॥ ७ ॥ षष्टिं सहस्राणिपतन्ति व्योम्नितथाअशीतिं परिवत्सराणि । तान्वैतुदन्तिपततः प्रपातंभीमा भौमा राक्षसास्तीक्ष्णदंष्ट्राः ॥ ८ ॥ अष्टकउवाच । यदेनसस्तेपततस्तुदन्ति भीमाभौमा राक्षसास्तीक्ष्णदंष्ट्राः । कथंभवंतिकथमाभवंति कथंभूतागर्भभूताभवंति ॥ ९ ॥ यया-

क्या कहना होगा अष्टकने कहा कि जब गृद्धआदि पक्षी मनुष्यों को खा लेते हैं तबकिस प्रकार जीव वर्त्तमान होता है और फिर क्योंकर प्रकट होता है और रौरव वैतरणी आदि जोनरक प्रसिद्ध हैं उनके अतिरिक्त भौमनरक क्याहै यह सब सुननाचाहताहूं॥६॥ययातिने कहा कि सम्पूर्ण जीव कर्मानुसार देह छोड़ने के पीछे माताकी कोखसे जन्मलेकर और उस स्थान में सम्पूर्ण अंगयुक्त देहकी उत्पत्ति होनेपर पैदाहोते हैं और पृथ्वी में चलते फिरते हैं जीवके लियेयही भौमनरकहै क्योंकि इस प्रकार वहां गिरनेसे उस की अवस्थाकी बृद्धिनहीं होती और अज्ञान वश केवल विषय भोगमें वर्ष व्यतीत होजाते हैं कोई जीव अपने कर्मानुसार स्वर्ग से गिरने के बाद साठ या अस्सी सहस्र वर्ष तक आकाश में रह करकष्ट भोगते हैं उन गिरने वाले जीवोंको बडे २ दांत वाले भयंकर हस्ती भैंसे और पुरुष शरीरधारी भौमराक्षसलोग हिंसा करते हैं॥८॥अष्टकने कहा जो लोग पाप के हेतु स्वर्ग से गिराये जाते हैं वह भौम राक्षसों से हिंसा किये जाकर कैसेबने रहते हैं और

Ashtak said, "When life is destroyed with age birds and worms eat up the human body. Where does man then reside? How does he come again to life? I donot know of any hell called Bhaum on earth." Yayati replied, "After the dissolution of the body man, according to his acts, re-enters the womb and stays there in an indistinct form and soon after assuming a distinct and visible form reappears on the earth to walk on its surface. This is the hell called Bhaum where he falls; for he does not see the end of his existence, nor does he act for his emancipation. Some stay for sixty or even eighty thousand years in heaven before they fall down. And as they fall they are attacked by Rakshases of the world in the form of their sons, grandsons and other kinsmen who withdraw their hearts from acting for their own emancipaction." Ashtak again asked, "For what sin are beings when they fall from heaven attacked by these fierce and sharp-toothed Rakshases? Why do they not die? How do they again enter the womb, furnish-

तिरुवाच । असंरेतःपुष्पफलानु पृक्तमन्वेतितद्वै पुरुषेणसृष्टम् । सवैतस्यारजआपद्यते वैसगर्भभूतः समुपैतितत्र ॥ १० ॥ वनस्पतिनोषधींश्चाविशंति आपोवायुंपृथिवींचांतरिक्षम् । चतुष्पदंद्विपदंचातिसर्व मेवंभूतागर्भ भूताभवन्ति ॥ ११ ॥ अष्टकउवाच । अन्यद्वपुर्विदधातीह गर्भमुताहोस्वित् स्वेनकायेनयाति । आपद्यमानोनरयो निमेतामाचक्ष्वमे संशयात्प्रब्रवीमि ॥ १२ ॥ शरीरभेदादिसमुच्छ्रयश्च चक्षुश्रोत्रे लभतेकेनसंज्ञाम् । एतत्तत्त्वंसर्वमाचक्ष्व पृष्टःक्षेत्रज्ञंत्वांतात मन्यामसर्वे ॥ १३ ॥ ययातिरुवाच । वायुःसमुत्कर्षति गर्भयोनिमृतौरेतः पुष्परसानुपृक्तम् । सतत्रतन्मात्रकृताधिकारः

उनकी इन्द्रिय आदि कैसेरहती हैं और गर्भ में जाकर कैसे जन्म लेते हैं ययाति ने कहा कि सूक्ष्म भूतसे घिराहुआ जीव जलयुक्त शरीर धरकर वीर्यरूप होजाता है और पुरुषसे गिराये जाकर स्त्रीके श्रोणितसे मिलने पर फूल फल के समान रजबन जाता है ऐसाजिस स्त्रीके पेट में गर्भस्वरूप उत्पन्न होता है जीवपहले जल, वायु, आकाश और तेज पाँच महाभूतों से मिलताहै फिर वनस्पति और औषधि बनजाता है फिर शुक्र और श्रोणितका स्वरूप पाकर गर्भसे दो पाये चार पाये आदिका शरीर धारणकरताहै ॥११॥अष्टकेनपूछा किजब जीवनरयोनि को प्राप्त करता है तव अपने शरीरही को लेकर माताकी कोख में घुसता है या कोई दूसरा भौतिक शरीर धरकर । मेरी इस शंका का समाधान कीजिये और जीवों में शरीर भेद क्यों होते हैं और उन को कैसे आँख कान आदि सम्पूर्ण इन्द्रियों और रूप शब्द आदि का ज्ञान कैसे होता है हे पिता ! हम तुम को जानने वाला समझ कर पूछते हैं तुम यह सवठीकर वताओ॥१३॥ययातिनेकहा कि पांचप्राण मन बुद्धि और दस इन्द्रिय युक्त सूक्ष्म शरीर में वीर्यरूप धारण कर स्त्रियोंकी ऋतु में पुष्प रस से मिला

ed with their senses." *Yayati* replied that after falling from heaven the being becomes a watery substance which changes into semen or the vital seed. Then entering the mother's womb it developes into the embryo and then into visible life like the fruit from the flower. And entering vegetables, water, earth, air and space the semen assumes the form of a quardruped or biped. This is the case with all the visible creatures.

Ashtak said, "Tell me, I ask thee because I have my doubts, does a being that has received a human form, enter the womb in its own shape or in some other? How does it acquire its visible shape, eyes, ears, and consciousness? Explain it all to me. Thou art, O father, acquainted with the acts and sayings of great men. *Yayati* replied, According to the merits of one's acts, the being contained in the semen dropped into the womb, is attracted by air for the purpose of regeneration. It is developed in course of time,

क्रमेणसम्वर्द्धयतीहगर्भम् ॥ १४ ॥ सजायमानोविगृहीतमात्रः संज्ञामधिष्ठायततोमनुष्यः। सश्रोत्राभ्यांवेदयतीहशब्दं सर्वैरूपंपश्यति चक्षुषाच ॥ १५ ॥ घ्राणेनगन्धंजिह्वयाथो रसञ्चत्वचास्पर्शं मनसावेदभावम् । इत्यष्टकेहोपहितंहि विद्धिमहात्मनः प्राणभृतांशरीरे ॥ १६ ॥ अष्टकउवाच । यःसंस्थितःपुरुषो दह्यतेवानिखन्यतेवापि निघृष्यतेवा। अभावभूतःसविनाशमेत्य केनात्मनाचेतयते परस्तात् ॥ १७ ॥ ययातिरुवाच । हित्वा सोऽसूनसुप्तवन्निष्ठ नित्वापुरोधायसुकृतं दुष्कृतंवा। अन्यांयोनिंपवना ग्रानुसारीहित्वा देहंभजते राजसिंह ॥ १८ ॥ पुण्यांयोनिंपुण्यकृतोव्रजन्ति पापांयोनिंपापकृतोव्रजन्ति ।

हुआ गर्भ आश्रित वहजीव तन्मात्र का अधिकार युक्त किसी विशेष वायु से उठाहुआ वृद्धि को प्राप्त होता है और जव सम्पूर्ण आकार पाकर मनुष्य योनि में जन्म लेता है तव कान से शब्द, चक्षुसे रूप।१५।नाकसे गन्ध, जिव्हासे रस, और त्वचा से अनुभव और मन से पदार्थों का ज्ञान होजाताहै । हे अष्टक ! जीवात्माका सूक्ष्म रूपी यह शरीर स्थूल शरीर में आ पहुंचाताहै।।१६।।अष्टक ने कहा कि मरेहुए पुरुषके देहको लोग जलातेहै । या गाढते या और प्रकार नष्ट करडालते हैं इस लिये स्थूल शरीर के साथ लिंग शरीर भनिष्ट होजाता है फिर वोह लिंग शरीर नाश होकर कैसे मांस पिंडरूपी स्थूल देह को चेतनायुक्त करता है ययाति नें कहा हे राजसिंह ! मृत्यु के काल में पवन के आगे चलनेवाले पंचप्राणादि लिंग शरीर को धारण कर सोतेहुएकी तरह स्थूल शरीर को छोडकर अपने अच्छे और वुरे कर्मोको साथ लियेहुए एक प्रकार का शब्द करता हुआ दूसरी योनिमें जन्मलेता है पुण्यात्मा पुरुष श्रेष्ठ योनि में, और और पापी निकृष्ट योनि अर्थात्

first becomming the embryo and then furnished with visible limbs. Coming out of the womb in course of time it becomes conscious of its existence as man and hears sounds by means of ears, sees colours with eyes, smells scents by nose, tastes by tongue, feels by his whole body and thinks by his mind. Thus, O Ashtak, the visible body developes from the subtile essence.") Ashtak said, "The body is burnt or otherwise destroyed after death, how is it again made?" Yayati said, "O lion among kings, (the dead assume a subtile form and retaining conciousness of all their acts as if in a dream enters another body quicker than air.) The virtuous attain to a superior form of existence, and the wicked to an inferior one as lower animals.) I have told thee all, O thou of great soul. I have told thee how the embryonic form of beings is developed into quadrupeds, bipeds etc. What more wilt thou ask me?" *Ashtak* said, "How, O father do men attain to these higher regions whence

कीटाःपतङ्गाश्चभवन्ति पापानमेविवक्षास्ति महानुभाव ॥ १९ ॥ चतुष्पदाद्विपदा षट् पदाश्चतथाभूता गर्भभूताभवंति । आख्यातमेतन्निखिलेनसर्वंभूयस्तुकिंपृच्छसि राज सिंह ॥ २० ॥ अष्टकउवाच । किंस्वित्कृत्वालभते तातलोकान्मर्त्यः श्रेष्ठांस्तपसा विद्ययावा । तन्मेपृष्टःशंससर्वं यथावच्छुभांल्लोकान् येनगच्छेत्क्रमेण ॥ २१ ॥ ययाति रुवाच । तपश्चदानञ्चशमोदमश्च ह्रीरार्जवंसर्वभूतानुकम्पा । स्वर्गस्यलोकस्यवदन्ति सन्तो द्वाराणिसप्तैवमहांतिपुंसाम् । नश्यन्तिमानेनतमोऽभिभूताः पुंसःसदैवेति वदंति संतः ॥ २२ ॥ अधीयमानःपण्डितंमन्यमानो योविद्यया हन्तियशःपरेषाम् । तस्यांत वन्तश्चभवन्ति लोकानचास्य तद्ब्रह्मफलंददाति ॥ २३ ॥ चत्वारिकर्माण्यभयंकराणि भयंप्रयच्छन्त्ययथाकृतानि । मानाग्निहोत्रमुतमानमौनं मानेनाधीतमुतमानयज्ञः ॥ २४ ॥ नमानमान्योमुदमा ददीतनसन्तापं प्राप्नुयाच्चावमानात् । सन्तःसतःपूजयन्तीहलोके

कीडे मकोडे आदि में जन्मलेता है । हेराजेन्द्र ! छः पाये चौपाये दोपाये आदि जीवगण इसप्रकार पैदा होते हैं मैंने यह सब बृत्तान्त तुमसे कहदिया अब और क्यापूछतेहो।२०। अष्टक ने कहा हेतात ! तपस्या और ज्ञान दोनों में किसके करने के श्रेष्ठ लोकमिलता है जिसके करनेसे श्रेष्ठलोक मिलताहो वह सब सत्यबतलाइये।२१। ययातिनेकहा । कि साधु-लोग कहते हैं तपस्या, दान, शम, दम, लज्जा, ऋजुता, और सबजीवों पर कृपा यह स्वर्ग लोक के सातप्रधान द्वारहैं परन्तु साधु लोग कहते हैं किजो पुरुष तमयुक्त अहंकार करते हैं वे मंगल पाने के योग्य नहीं हैं जोमनुष्य पढकर यह अभिमान करताहै कि मैंही पंडितहूँ वोह औरों की विद्याके यशको लोप करता है उसको स्वर्ग प्राप्त नहीं होगा और उसका पढना कुछभी फलदाई नहीं होगा अग्नि होत्र मौनव्रत पढना, और यज्ञ चार प्रकारके कर्म शुभ हैं।।२४।।परन्तु अहंकारके साथ वे सबकर्म अनुचित रूपसे किये जाकर भयदाई होते हैं मनुष्य अति सम्मान का पात्र होने पर भी हर्ष युक्त और अभिमानित

there is no return to earthly life? Is it by asceticism or knowledge?" *Yayati* replied, "The wise say that men may gain admission to heaven by seven gates, namely Asceticism, Gift, Peace of mind, Self-control, Modesty, Simplicity and Kindness to all. And a person is apt to lose all these by vanity. A learned man who boasts of his learning and destroys the reputation of others, never attains to regions of perpetual felicity. His knowledge does not help him to attain to Brahm. Study, the vow of silence, libations in fire and sacrifices, these four remove all fear. When however these are mixed with vanity instead of lessening they increase fear. The wise should never exult on receiving honours; nor should they

नासाधवः साधुबुद्धिंलभन्ते॥२५॥इतिदद्यामितियजइत्यधीयइतिव्रतम् । इत्येतानिभया न्याहुस्तानिवर्ज्यानिसर्वशः ॥ २६ ॥ येचाश्रयंवेदयन्तेपुराणं मनीषिणोमानसमार्ग रुद्धम् । तद्वःश्रेयस्तेन संयोगमेत्य परांशांतिं प्राप्नुयुःप्रेत्यचेह ॥ २७ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्याने-
नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

अष्टकउवाच । चरन्गृहस्थःकथमेतिधर्मात् कथंभिक्षुःकथमाचार्य्यकर्मा । वानप्रस्थः सत्पथे सन्निविष्टो बहून्यस्मिन संप्रतिवेदयन्ती ॥ १ ॥ ययातिरुवाच । आहूताध्यायी गुरुकर्मस्वचोद्यः पूर्वोत्थायीचरमंचोपशायी । मृदुर्दान्तोधृतिमानप्रमत्तःस्वाध्यायशीलः

न हो वे और अपमानित होने से खेद न करे क्यों कि इस लोक में साधू ही साधू लोगों की पूजा करते हैं असाधूलोग साधुओं के समान आचरण नहीं करते पंडितों ने कहा है अहंकार युक्त दान, पाठ, व्रत, यज्ञ करने से सुगतिनहीं होती इस लिये अहंकार को छोडना उचित है जो विद्वान लोग अचिंत्य, अदृश्य, साधुओं के मंगलकारी सनातन ब्रह्म को संयत चित्त से अपना आश्रय करके जानते हैं वेसमाधि से उस ब्रह्म के साथ एक्यता पैदा करके शांति और मुक्ति पाते हैं ॥ २७ ॥

अध्याय ९१ ॥

अष्टकने पूंछा किवेदज्ञ इस विषयमें तरह २ कीवातें करते हैं किगृहस्थ, भिक्षुः, ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ कैसा२ धर्मका वर्ताव कर सक्ते हैं ॥१॥ ययातिने कहा कि ब्रह्मचारी गुरु के घर में रह कर गुरू के बुलाने पर पढ़ें, गुरु के काम में सदा तत्पर रहें सुबे को गुरु

grieve at insults. For the wise alone honour the wise; the wicked never act like the virtuous. I have given away so much performed so many sacrifices, studied so much, observed such and such vows—such vanity is the root of fear. Donot indulge such feelings. The learned who rely on the unchangeable and inconceivable Brahma alone that ever shows blessings on persons virtuous like thee, enjoy perfect peace here and hereafter.

CHAPTER XCI

Ashtak said, " Scholars of the Vedas differ in opinion as to how the followers of each of the four modes of life, viz, Grihasts, Bhikshus, Brahmcharis, aud Vanprasths, are to conduct themselves in order to acquire religious merits." Yayati replied that a Brahmchary while dwelling in the abode of his preceptor must receive lssons when his preceptor summons him; he must attend

सिध्यतिब्रह्मचारी ॥ २ ॥ धर्मागतंप्राप्यधनंयजेत दद्यात्सदैवातिथीन् भोजयेच्च । अनाददानश्चपरैरदत्तं सैषागृहस्थोपनिषत् पुराणी ॥ ३ ॥ स्ववीर्यजीवीवृजिनान्निवृत्तो दातापरेभ्योनपरोपतापी । तादृङ्मुनिःसिद्धिमुपैति मुख्यांवसन्नरण्ये नियताहारचेष्टः ॥ ४ ॥ अशिल्पजीवीगुणवांश्चैव नित्यंजितेन्द्रियः सर्वतोविप्रयुक्तः । अनोकशायी लघुरल्पप्रचारश्चरन्देशानेकचरः सभिक्षुः ॥ ५ ॥ रात्र्यायया वाभि जिताश्चलोका भवंति कामाभिजिताःसुखाश्च । तामेवरात्रिंप्रयतेत विद्वानरण्यसंस्थो भवितुंयतात्मा ॥ ६ ॥ दशैवपूर्वानदश चापरांश्च ज्ञातीनथात्मानमथैकविंशम् । अरण्यवासीसुकृते

के उठने से पहिले उठें, और रात को गुरू के सोनेसे पीछे सोवें, और धीर, जितेन्द्रिय धैर्ययुक्त, वहुत न बोलनेवाले, वहुत पढने वाले होंतो उनका ब्रह्मचर्य सिद्ध होता है ॥२॥ प्राचीन उपनिषदोंमें लिखाहै कि गृहस्थी विधिनुसार धर्मार्जन करके नित्य और नैमित्तिक, यजन, दान, अतिथियों को भोजन कराना, विना दिये हुए किसी की वस्तु न ले, वन में रहने वाले, अपने आप लाये हुए फल मूल पर जीते हुए पाप कार्य से पृथक नियम से खाने वाले, हिंसा रहित। मुनि के स्वरूप में अच्छी सिद्धि प्राप्त करते हैं वे नाना गुण युक्त, जितेन्द्रिय, थोडे वस्त्र पहिन ने वाले, शिल्प से जीविकान करने वाले, गृहस्थ के घर न सोने वाले, विषय में आसक्त न होने वाले, और थोडे चलने वाले होते हैं परन्तु नाना देशोंमें घूमते हैं और भिक्षु कहलाते हैं ॥५॥ जिससमय सब विषय तुच्छ होजाताहै और सुख देने वाली वस्तु मनमानी छोड दीजा सक्ती है विद्वान जन उसी समय ब्रह्म निष्ठा के लिये वन में जानेकी चेष्टा करें वानप्रस्थ अपने शरीर और इन्द्रियों को बनमें त्याग

to his preceptor's service without waiting for the latter's command; he must rise earlier than his preceptor and must sleep later. He must be humble, with his passions under complete control, vigilant, and devoted to study. Thus only he can achieve success. The old Upnishads say that a *Grihast* acquiring wealth honestly should perform sacrifices; give charity, be hospitable to his guests, and should never use a thing without making others partakers in it. A *Muni* without search for food should live in the woods depending on his own vigour; abstaining from vices living charitably and never inflicting pain on any creature. This is the only way of success. The true *Bhikshu* does not live upon his manual lobour, possessing many accomplishments, has his passions under complete control; having no concern with wordly affairs, sleeps not under the roof of a house holder. He has no wife, and going a small distance everyday travels over a large extent of country. A learned man should adopt the Vanprasth mode of life with due

दधातिविमुच्यारण्ये स्वशरीरधातून् ॥ ७ ॥ अष्टकउवाच । कतिस्विदेवमुनयः कति मौनानिचाप्युत । भवन्तीतितदाचक्ष्व श्रोतुमिच्छामहेवयम् ॥ ८ ॥ ययातिरुवाच । अरण्येवसतोयस्य ग्रामोभवतिपृष्ठतः । ग्रामेवावसतोऽरण्यं समुनिस्याज्जनाधिप ॥ ९ ॥ अष्टकउवाच । कथंस्विद्वसतोऽरण्ये ग्रामोभवतिपृष्ठतः । ग्रामेवावसतोऽरण्यं कथंभवतिपृष्ठतः ॥ १० ॥ ययातिरुवाच । नग्राम्यमुपयुञ्जीत यआरण्योमुनिर्भवेत् । तथास्य वसतोरण्ये ग्रामोभवतिपृष्ठतः ॥ ११ ॥ अनग्निरनिकेतश्चाप्य गोत्रचरणोमुनिः । कौपीनाच्छादनं यावत्तावदिच्छेच्चचीवरम् ॥ १२ ॥ यावत्प्राणाभिःसन्धानं तावदिच्छेच्चभोजनम् । तथास्यवसतोग्रामेऽरण्यं भवतिपृष्ठतः ॥ १३ ॥ यस्तुकामान् परित्यज्यत्यक्तकर्मा जितेन्द्रियः । आतिष्ठेच्चमुनिर्मौनं सलोकेसिद्धिमाप्नुयात् । १४ । धौत

करें तो अपने पितृ पिता महादि दश पुरूषों को और पुत्र पौत्रादि दश पीढियों को ब्रह्म में लीन करते हैं अष्टक ने कहा हम सुना चाहते हैं कि मुनि कितने प्रकार के होते हैं और मौन व्रत कितने प्रकरा के होते हैं ॥ ८ ॥ ययाति ने कहा । हे राजन् ! वन में वसने से सम्पूर्णग्राम की वस्तु जिन के समीप रहती है अबग्राम में टिकने से सम्पूर्ण वन के पदार्थ जिन के सामने आते हैं उनका नाममुनि है । अष्टक ने पूँछा कि बन में बसने से ग्रामकी वस्तु और ग्राममें होनेसे वनकी वस्तु कैसे सामने आसक्तीहै ॥१०॥ ययातिने कहा कि–मुनि के बन में बसने से ग्रामकी बस्तु इकट्ठी नहीं करना पड़ती योगवल से सम्पूर्ण पदार्थ स्वयं निकट आजाते हैं वह विवेक से सन्यासी गृहस्थ वर्जित और परमहंस होते हैं और थोडावस्त्र अपने पास रखते हैं और केवल प्राण रक्षा के लिये भोजन करते हैं इसी प्रकार ग्राम में रहने से बनके सब पदार्थ उन के वशमें होजाते हैं जोमुनि सम्पूर्ण कर्म और

rites, having control over his desires for worldly enjoyments and valuable possessions. When one dies in the woods leading the life of a Vanprasth, he makes kis ancestors and successors upto ten generations including himself, fuse with the Divine essence." Ashtak asked " How many kinds of *Munis* and vows of silence are there ? *Yayati* replied. " He is a true *Muni* who though dwelling in the woods has all things found in the villages, supplied to him and *vice versa*." Ashtak enquired, " What is meant by a *Muni* being supplied with the village produce in a desert and *vice versa*?" *Yayati* replied that he canget all the things by virtue of his asceticism. He should never exhibit the pride of family, birth or learning. Clad in the scantiest robes he may yet regard himself as dressed in the richest clothes. He will be content with food just enough to support his life. Such a person, though dwelling

दंतंकृत्तनखं सदास्नातमलङ्कृतम्। असितंसितकर्माणं कस्तमर्हतिनार्चितुम् । १५ ।
तपसाकर्षितःक्षामः क्षीणमांसास्थिशोणितः। सचलोकमिमंजित्वा लोकंविजयतेपरम्
॥ १६ ॥ यदाभवति निर्द्वन्द्वो मुनिर्मौनंसमास्थितः। अथलोकमिमंजित्वा लोकंविज
हयेपरम् ॥ १७ ॥ आस्येनतुयदाहारं गोवन्मृगयतेमुनिः । अथास्यलोकः सर्वोऽयं
सोऽमृतत्वायकल्पते ॥ १८ ॥

इत्यादिपर्वाणि सम्भवपर्वण्युत्तर ययत्युपाख्याने
एकनवतोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

कामना त्यागकर जितेन्द्रिय हो मौनव्रत आश्रय किये रहते हैं वह सिद्धि को प्राप्त करते हैं जोनित्य शुद्धचित्त और आकांक्षा वर्जित होकर हिंसा त्याग देते हैं शुद्ध भोजन करते हैं अहिंसा करनेवाले नखों को काट डालते हैं ऐसे मुनि सब के पूजनीय हैं जो क्षमा, शील तपस्या से दुबले और जिनका मांस, हड्डी, और रक्त पतला होगया है वह इस लोक और परलोक को जीतते हैं जब मौन को आश्रय कियेहुए मुनि अद्वैतभाव के अवलंबन से द्वन्द वर्जित होते हैं तब इसलोक परलोक को जीतते हैं जिस पकार गौआदि पशु हाथ पांव के श्रम से भोजन नहीं लेते केवल मुखसे करते हैं इसीप्रकार जब मुनि एकाग्रचित्तहोकर बिना मिलीहुई भोजन की सामग्री को प्राणरक्षा के हेतु मुख में उठाते हैं हाथ पांव से कुछ श्रम नहीं करते ऐसी अवस्था होनेसे उनके सामने सम्पूर्ण लोक अमृत स्वरूपहोते हैं ॥ १८ ॥

in an inhabited place, lives yet in the woods. He who has his passions under complete control and adopts the vow of silence, refraining from action and entertaining no desire, achieves success. Why shouldst thou not reverence the man who lives on pure food, refrains from injuring others, pure of heart, who has great ascetic merits, is free from the weight of desire and abstains even from lawfully injuring others! Emaciated and reduced in flesh, bone and blood, such a one conquers not only this but also the higher world. When the *Muni* sits in *Yog* meditation becoming indifferent to happiness and misery, honour and insult he then enjoys communion with Brahm on leaving this world. When the *Muni* takes food like cows and other animals: without taking trouble to provide for it, then the all pervading spirit, becomes identified with the whole universe and attains to salvation."

अष्टकउवाच। कतरस्त्वनयोःपूर्वं देवानामेति सात्मताम् । उभयोर्द्धावतोराजन् सूर्याचन्द्रमसोरिव ॥ १ ॥ ययातिरुवाच । अनिकेतोगृहस्थेषु कामवृत्तेषुसंयतः । ग्रामएव वसन् भिक्षुस्तयोःपूर्वतरंगतः ॥ २ ॥ अप्राप्यदीर्घमायुस्तु यःप्राप्तोविकृतिंचरेत्। तप्यते यदितत्कृत्वाचरेत् सोऽन्यत्तपस्ततः ॥ ३ ॥ पापानांकर्मणांनित्यं विभ्रयाद्यस्तुमानवः। सुखमप्याचरन्नित्यं सोऽत्यन्तंसुखमेधते ॥४ ॥ तद्वैनृशंसं तदसत्यमाहुर्यः सेवतेधर्ममनर्थबुद्धिः। अर्थोप्यनीशस्यतथैव राजंस्तदार्ज्जवंस समाधिस्तदार्यम् ॥ ५ ॥ अष्टकउवाच । केनासिहूतःप्रहितोसिराजन् युवास्रग्वीदर्शनीयःसुवर्च्चाः । कुतआयातःकत

अध्याय ९२ ॥

अष्टक ने कहा कि सूर्य और चन्द्रके समान दौड़नेवाले यति और वाणप्रस्थ दोनों में कौन देवताओंकी समान होसक्ताहै । १ । ययाति ने कहा कि इन दोनोंमेंसे यतिलोग संयत रहकर इच्छानुसार गृहस्थों में रहकरभी पहले देवताओंका स्वरूप पासक्ते हैं परन्तु यति जनों से क्रोध द्वेष आदि देहके धर्म से यदि तपस्या के विपरीत पापहोजावे तो वह थोडे कालमें पूरीहोनेवाली तपस्या करें इससे वह उस पापसे छूटकर सफल मनोरथ होसक्ते हैं और जो ज्ञानीपुरुष अविनाशी ब्रह्मका ध्यान करताहै वह सदा इच्छानुसार पापकरनेसेभी अति सुखरूप मुक्तिको पाता है । हे राजन् ! मोक्षकी खोज न करके अनित्य स्वर्ग भोगनेके लिये जो धर्म कियाजाताहै उसको पण्डितलोग अजितेन्द्रिय मनुष्यके धन की सदृश कष्टदाई और असत्य कहते हैं परन्तु जिस निष्काम कर्म से मोक्षकी प्राप्तिहोती है उसीको उचितपथ और समाधि कहते हैं और जिसपर चलना योग्यहै । ५ । अष्टकने कहा हे राजन् ! तुमको मालाधारी, तेजस्वी और सुन्दर पुरुष देखता हूँ तुम कहां से आयेहो

CHAPTER XCII



Ashtak asked, "Which of the two—ascetic or man of knowledge, exerting constantly like the sun and the moon, first unites with *Brahm* ? Yayati replied, "The wise by the help of the Vedas and knowledge, having ascertaied the visible universe to be an illusion, instantly realise the Supreme spirit as the sole independent essence. While the *Yogis* take time to acquire such knowledge. Hence the wise attain to salvation first. And if a *Yogi* has not sufficient time for success in one life on account of the attractions of the world, he profits by the progress in the other, for regretfully he devotes himself to the pursuit of success. On the other hand, the man of knowledge sees the eternal unity and is never affected with the

रस्यां दिशित्वमुताहोस्वित् पार्थिवंस्थानमस्ति ॥ ६ ॥ ययातिरुवाच । इमंभौमंनरकं क्षीणपुण्यःप्रवेष्टमुर्वीं गगनाद्विप्रहीणः । उक्त्वाहंवः प्रपतिष्याम्यनन्तरं त्वरन्तिमां लोकपाब्रह्मणोये ॥ ७ ॥ सतांसकाशेतुव्रतः प्रपातस्तेसङ्गता गुणवन्तस्तुसर्वे । शक्राच्च लब्धोहिवरो मयैषपतिष्यता भूमितलंनरेन्द्र ॥ ८ ॥ अष्टकउवाच । पृच्छामित्वांमा प्रपत प्रपातंयदिलोकाः पार्थिवसन्तिमेऽत्र । यद्यन्तरीक्षेयदिवा दिविस्थिताःक्षेत्रज्ञं त्वां तस्यधर्मस्यमन्ये ॥ ९ ॥ ययातिरुवाच । यावत्पृथिव्यांविहितं गवाश्वंमहारण्यैःपशुभिःपार्वतैश्च । तावल्लोकादिवितेसंस्थितावै तथाविजानीहनरेंद्रसिंह ॥ १० ॥ अष्टक उवाच । तांस्तेददामिमाप्रपत प्रपातंयेमेलोका दिविराजेन्द्रसंति । यद्यन्तरिक्षेयादिवा दिविश्रितास्तानाक्रम क्षिप्रमपेतमोहः ॥ ११ ॥ ययातिरुवाच । नास्मद्विधोब्राह्मणो

और किसने तुम्हें भेजाहै क्या तुम पृथ्वीपर जाओगे ।६। ययातिने कहा मैं क्षिण पुण्यहोने से स्वर्ग से गिरकर भौम नरक में जाने के लिये पृथ्वीपर जारहा हूँ तुम्हारे साथ बात चीत करके गिरूंगा इसलिये लोकपाल मुझको शीघ्र तैयारहोने को कहते हैं । हे नरेंद्र ! गिरनेसे पहले इन्द्रसे प्रार्थना करने पर उन्हों ने मुझको वर दिया है कि तुम गुणवान साधुलोगोंके समीप गिरोगे।८। अष्टकने कहा हेपृथ्वीनाथ ! मुझको बिदितहोताहै कि तुम धर्मफल के सब स्थानोंको जानतेहो इसलिये मैं पूंछताहूँ कि स्वर्गलोक व नक्षत्रलोक में मेरेपुण्य से भोगने योग्य कोई स्थानहै वा नहीं यदिहो तो तुम गिरनेपरभी न गिरोगे ९ ययाति ने कहा । हे नरेंद्र ! पृथ्वी में गौ, घोड़े आदि बन और पर्वतके जितने पशु हैं उतनेही देवलोक में तुम्हारे पुण्य से पायेहुए स्थानहैं अष्टक ने कहा । हे राजेन्द्र यदि मेरुकी पीठपर वा नक्षत्रलोकमें मेरेपुण्यसे उपार्जन किये स्थानहों तो वह सब तुमको देता हूँ मत गिरो मोहरहित होकर उनके अधिकारी बनो ययाति ने कहा कि हे राजेन्द्र ! मुझ

worldly enjoyments. Nothing can impede his salvation. He who fails in obtaining knowledge may yet devote himself to asceticism. He who practices piety, moved to it by desire can never achieve success. His sacrifices instead of being good in themselves are acts of cruelty. Piety without the desire of gain, is perfect asceticism." Ashtak said. Handsome and decked with celestial garlands, thou lookest like a youth, O king of great splendour ! Whence dost thou come and where dost thou go ? Whose messenger art thou ? Art thou going to the earth ?" *Yayati* said, " Fallen from heaven by the loss of merits, I am destined to fall into the earth-hell and shall go there after finishing my discourse with thee. Indra has granted me the boon that I should fall among the virtuous and the wise. Here is an assembly of such beings." Ashtak said, " Thou knowest everything. Dost thou know of any regions which

ब्रह्मविच्चप्रतिग्रहे वर्त्तेराजमुख्य। यथाप्रदेयंसततंद्विजेभ्य स्तथाददंपूर्वमहं नरेंद्र ॥ १२ ॥ नाब्राह्मणःकृपणोजातु जीवेद्याञ्चापिस्याद्ब्राह्मणीवीरपत्नी। सोऽहंनैवा कृतपूर्वं चरेयंविधित्समानः किमुतत्रसाधु ॥ १३ ॥ प्रतर्दनउवाच। पृच्छामित्वांस्पृहणीय रूपप्रतर्दनोऽहं यदिमेसंतिलोकाः। यद्यन्तरिक्षेयदिवा दिविश्रिताःक्षेत्रज्ञं त्वां तस्यधर्मस्यमन्ये ॥ १४ ॥ ययातिरुवाच। सन्तिलोकाबहवस्ते नरेंद्रअप्येकैकःसप्तसप्ताप्य हानि। मधुच्युतोघृतपृक्ता विशोकास्तेनांतवन्तः प्रतिपालयंति ॥ १५ ॥ प्रतर्दनउवाच। तांस्तेददानिमाप्रपत प्रपातंयेमेलोकास्तववतेवैभवन्तु। यद्यन्तारिक्षेयदिवा दिविश्रितास्ता नाक्रम क्षिप्रमपेतमोहः ॥ १६ ॥ ययातिरुवाच। नतुल्यतेजाःसुकृतं कामयेतयोगक्षेमं

से वेदज्ञ और वेदाचारी लोग कभी दान नहीं लेते हे नरेन्द्र ! ब्राह्मणको सदा दान देना चाहिये मैंने पहिले दानदियाहै क्षत्रिय आदि पुरुष देशोंको जय करनेवाले कभी दान नहीं लेते मैं शुभकर्म करनेका अभिलाषी होकर ऐसा काम नहीं करूंगा जो पहले नहीं कियाहै ।१३। तत्पश्चात् प्रतर्दन राजानेकहा कि मैं तुमसे पूंछता हूँ कि यदि नक्षत्रलोक वा देवलोक में मेरेपुण्यसे कोई स्थान प्राप्तहुएहों तो बतलाओ मैं जानताहूं कि धर्म से उपार्जन कियेहुए सब स्थानों को तुम जानते हो ययाति ने कहा हे नरेंद्र तुम्हारे प्राप्त कियेहुए सुख देनेवाले इतने स्थान हैं कि हर स्थानमें सात २ दिन रहने से वह कभी पूरे नहीं होंगे ।१५। प्रतर्दननेकहा यदि नक्षत्रलोक वा स्वर्गलोकमें मेरेपुण्यसे उपार्जन किये स्थानहों तो वह सब तुमको देताहूँ तुम न गिरो मोहरहित होकर शीघ्र वहाँ चढजाओ

I can enjoy in the heaven or the firmament? If there be, then thou shalt not fall." *Yayati* replied, "There are as many places for thee in heaven as there are cows and horses on the earth in its forests and on the mountains." Ashtak then said, "If there are worlds for me to enjoy the fruits of my good deeds, in heaven, I give thee all that thou mayst not fall down. Take thou all and cease thy sorrow." *Yayati* replied, "The wise Brahmans alone can accept donations and not persons of our sort. I myself have given to Brahmans as one should. The Kshatrias or men of the conquering class should not debase themselves by accepting alms. I have ever desired to do virtuous acts on earth. Having never accepted alms, how shall I do so now? Another among them, named Pratardan, then said "O beautiful being, my name is Pratardan. Tell me if there are any places, in heaven or firmament, for me to enjoy the fruit of my good deeds? Answer me as thou art acquainted with every thing." Yayati said, "O king

पार्थिवपार्थिवःसन् । देवादेशादापदंप्राप्य विद्वांश्चरे न्नृशंसंनहिजातुराजा ॥ १७ ॥ धर्म्यंमार्गंयतमानोयशस्यं कुर्यान्नृपोधर्ममवेक्षमाणः । नमद्विधोधर्मबुद्धिःप्रजानन्कुर्यादेवं कृपणंमांयथात्थ ॥ १८ ॥ कुर्यादपूर्वंनकृतं यदन्यैर्विधित्समानः किमुतत्रसाधु । ब्रुवाण मेवंनृपतिं ययातिंनृपोत्तमोवसुमानब्रवीत्तम् । १९ ।

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्यानेद्विनवतोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

वसुमानुवाच । पृच्छामित्वां वसुमानौषदश्विर्यद्यस्ति लोकोदिविमेनरेंद्र । यद्यन्तरिक्षे प्रथितो महात्मन्क्षेत्रज्ञंत्वां तस्यधर्मस्यमन्ये ॥ १ ॥ ययातिरुवाच । यदन्तरिक्षांपृथिवी

ययाति ने कहा । हे राजन् ! बराबर तेजवालाहोकर कोई दूसरे राजा से पुण्यकी प्रार्थना नहीं करता ज्ञानी राजा दैववश विपत में पडकर भी विपरीत व्यवहार नहीं करते मैं क्यों यह स्वीकार करूं राजाको धर्मकी ओर दृष्टि रखकर धर्मयुक्त और यशदाई काम करना चाहिये तुम जो कहते हो वह नीच कर्म है इसलिये मुझसा धर्मज्ञजन जान बूझ कर यह कैसे स्वीकार करेगा । राजा दान कभी नहीं लेते इसलिये मैं सुकर्म करने का अभिलाषी होकर यह कैसे करूंगा राजा ययाति यह कह रहाथा इतने में वसुमाननामक एक नृपोत्तम बोला ॥ १९ ॥

अध्याय ९३ ॥

वसुमान ने कहा हेनरेन्द्र ! मैं तुमसे पूँछताहूँ यदि नक्षत्रलोक वास्वर्ग लोकमें मेरे पुण्य से उपार्जन किये हुए कोई स्थानहों तो मुझको बतलाओ क्योंकि तुम सब पुण्य स्थानोंको जानतेहो ॥१॥ ययातिने कहा कि सूर्यदेव आकाश मंडल पृथ्वी और दिशाओंमें

numberless worlds full of felictiy, bright with sunshine, and where woe cannot enter, await thee. If thou stay but for seven days in each, they will have no end. Pratardan then said, "I give them all to thee. You must not fall. Take them at once, and cease thy woes.' Yayati replied, "No king, equal in rank, should ever desire to receive in gift the ascetic merits of another, even though the former be affliced with calamity by fate. A virtuous king should walk in the path of virtue to increase his fame. A man possessing virtue like myself, who knows his duty will not act so meanly. When others desirous of acquiring religious merits do not accept gifts, how can I do so ? On the conclusion of this speech, Yayati, the best among kings, was thus addressed by *Vasuman*.

CHAPTER XCIII

Vasuman said, "I am Vasuman, the son of *Osadaswa*, let me know whether there are any places for me to enjoy my religious merits in heaven or in the firmament. Thou art acquainted with holy places." Yayati replied, "Yes there are many such regions

दिशश्च यत्तेजसातपतेभानुमांश्च। लोकास्तावन्तोदिवि संस्थितावैतेनांतवंतः प्रतिपालयं ति॥ २ ॥ वसुमानुवाच। तांस्तेददानिमापपत प्रपातंयेमेलोकास्तवतेवैभवन्तु। क्रीणी ष्वैतांस्तृणकेनापि राजन् प्रतिग्रहस्ते यदिधीमन्प्रदुष्टः ॥ ३ ॥ ययातिरुवाच। न मिथ्याहंविक्रयंवै स्मरामिवृथागृहीतं शिशुकच्छङ्कमानः। कुर्यांनचैवाकृतपूर्वमन्यै र्विधित्समानः किमुतत्रसाधु ॥ ४ ॥ वसुमानुवाच। तांस्त्वंलोकान्प्रतिपद्यस्व राजन्म यादत्तान्यदि नेष्टःक्रयस्ते। अहंनतान्वैप्रतिगन्ता नरेंद्रसर्वेलोकास्तव तेवैभवन्तु ॥५॥ शिविरुवाच। पृच्छामित्वां शिविरौशीनरोऽहं ममापिलोकायदिसन्तीहतात। यद्यन्त- रिक्षेयदिवा दिविश्रिताःक्षेत्रज्ञंत्वां तस्यधर्मस्यमन्ये ॥ ६ ॥ ययातिरुवाच। यत्त्वंवाचा हृदयेनापि साधून्परीप्समानान्नाव मंस्थानरेन्द्र। तेनानन्तादिविलोकाः श्रितास्तेविद्यु

जिसर स्थानको प्रकाश करते हैं देवलोकमें उतना अनन्त पुण्य लोक तुम्हारेलिये है ॥२॥ वसुमानने कहा हेराजन्! वहसव पुण्यलोक तुमको देताहूँ तुम न गिरो यदि तुमको प्रति ग्रहलेना स्वीकार नहोतो तुम सवलोक तिनके के बदलेमें लेलो॥३॥ययातिनेकहा मुझे याद पडताहै कि मैंने कालचक्रसे भयखाकर कभी व्यर्थ मोल नहीं लिया और किसी राजाने भी कभी नहीं किया तव मैं सुकर्मका अभिलाषीहोकर ऐसा क्योंकर करूं ४ वसुमानने कहा हेराजन्! यदि तुमको मोललेना स्वीकार नहो तो भी मेरे दिये हुए वोह सव पुण्यलोक लेलो मैं जिन लोकों में नजाऊंगा वह सब तुम्हारे होंगे॥५॥तत्पश्चात् शिवि राजा ने कहा मैं उषीनर का पुत्र शिविहूँ और तुमसे पूंछताहूँ कि नक्षत्र लोक वा देवलोक में यदि मेरे पुण्य से उपार्जन किये हुए कोई स्थानहों तो वतलाओ मुझको विदित होताहै कि तुम सव पुण्य स्थानोंको जानतेहो ॥ ६ ॥ ययातिने कहा। हे नरेंद्र। तुमने कभी वाक्य और मन से साधु मांगनेवालेका अनादर नहीं किया इसलिये देवलोकमें बिजलीके समान

for thee in heaven, the firmament and other places under the sun." Vasuman then said, I give them to thee whichever regions belong to me. Thou wilt not fall. If it be not desirable to take them as gift you may purchase them with a straw." Yayati replied. I donot remember to have ever purchased anything unfairly. How shall I do it now ?" Vasuman said, "If it be improper to buy them with such price then you may accept them as gift. I shall not go to the regions reserved for me. You may enjoy them." Shivi then addressed the king thus:—" I am Shivi the son of Ushinar. Are there, O father, any worlds for me to enjoy. Thou knowest every region and the fruits of several religious merits." Yayati replied, "Thou hast never disappointed any applicant by thy word or mind. There are innumerable worlds for thee to enjoy." Shivi

द्रूपाः स्त्वनन्तामहान्तः ॥ ७ ॥ शिविरुवाच । तांस्त्वंलोकान्प्रतिपद्यस्व राजन्मया दत्तान्यदिनेष्टःक्रयस्ते। नचाहंतानप्रतिपत्स्येह दत्वायत्रगत्वानानुशोचन्तिधीराः॥८॥ ययातिरुवाच । तथात्वमिन्द्रप्रतिमप्रभावस्ते चाप्यनन्तानरदेवलोकाः । तथाद्यलोकेन रमेऽन्यदत्ते तस्माच्छिवे नाभिनन्दाभिदेयम् ॥ ९ ॥ अष्टकउवाच । नचेदेकैकशोरा-जंल्लोकान्नः प्रतिनन्दसि । सर्वेप्रदायभवते गन्तारोनरकंवयम् ॥१०॥ ययातिरुवाच । यदर्होऽहंतद्यतध्वंसन्तःसत्याभिनन्दिनः। अहंतन्नाभिजानामियत्कृतंनमयापुरा॥११॥ अष्टकउवाच । कस्यैतेप्रतिदृश्यन्ते रथाःपञ्चहिरण्मयाः । यानारुह्यनरोलोकान् भि-वाञ्छन्तिशाश्वतान् ॥ १२ ॥ ययातिरुवाच । युष्मानेतेवहिष्यन्ति रथाःपञ्चहिरण्म याः । उच्चैःसन्तःप्रकाशन्ते ज्वलन्तोऽग्निशिखाइव ॥ १३ ॥ अष्टकउवाच । आतिष्ठस्व

प्रख्यात् अनन्त बड़ेस्थान तुम्हारेलिये हैं ॥७॥ शिवि ने कहा । हेराजन् ! तुमको मोललेना स्वीकार न हो तो वह सब पुण्यस्थान दानदेताहूं तुम लेलो मैं उन्हें देकर फिर न लौटाऊं गा उन स्थानों में जानेसे पंडितलोग शोक नहीं पाते ययाति ने कहा । हे नरेन्द्र ! तुम इन्द्रकी समान प्रभावीहो और तुम्हारे सब पुण्यलोकभी अनन्त हैं परन्तु हे शिवि दूसरेके दियेहुए पुण्यलोक में मैं नहीं जाऊंगा और तुम्हारा दियाहुआ दान मुझे स्वीकार नहीं है ॥९॥ अष्टक ने कहा। हे राजन् ! हम सबने अपने २ पुण्यलोक तुमको दान कर दिये उन का लेना यदि तुम्हें स्वीकार न हो तो हम सब एकत्रहोकर अपने सम्पूर्ण लोक तुमको तुम को देकर भौम नर्क में जाते हैं ययाति ने कहा हे सत्य प्रिय साधुओ मैंने जो पहिले कभी नहीं कियाहै वह स्वीकार नहीं करूंगा मैं जिस विषय के योग्य हूं वोह पूराकरनेका तुम यत्न करो अष्टकने कहा कि आकाश मंडल में सुवर्ण मय पांच रथ देखताहूं उनपर चढ़पर मनुष्यगण स्वर्गधामको जासक्ते हैं यह कहो कि वे किसके हैं ययातिने कहा कि वह जो अग्नि शिखर के सदृश प्रज्वलित ऊंचे पांचरथ आकाश मंडलमें दीखते हैं वे तुम को देवताओंके यहां लेजांयगे॥१३॥अष्टकनेकहा तुम रथपर बैठकर आकाशमार्गसे जाओ

---

replied, " I give them all to thee without ever desiring for a return the regions where the wise never feel any disquiet." Yayati replied," O Shivi, thou has indeed earned infinite worlds with thy Indra like prowess. But I shall not enjoy the gift of others and shall not accept thine." Ashtak then said, " Each of us has offered thee the worlds acquired by religious merits. Thou dost not accept them. But leaving them for thee we shall descend to to the earth-hell. Yayati replied, " You are all truth-loving and wise, give me that which I deserve. I am unable to do what I have never done." Ashtak then said, " Whose are those five golden cars that we see ? Do men going to heaven ride on them ? Yayati

रथान्राजन् विक्रमस्वविहायसम् । वयमप्यनुयास्यामो यदाकालोभविष्यति ॥ १४ ॥ ययातिरुवाच । सर्वैरिदानींगन्तव्यं सहस्वर्गजितोवयम् । एषनोविरजापन्था दृश्यते देवसद्मनः ॥ १५ ॥ वैशम्पायनउवाच । तेऽधिरुह्यरथान्सर्वे प्रयातानृपसत्तमाः । आक्रामन्तो दिवम्भाभिर्द्धर्मेणावृत्य रोदसी ॥ १६ ॥ अष्टकउवाच । अहंमन्येपूर्वमेकोऽस्मि गन्तासखाचेन्द्रः सर्वथामेमहात्मा । कस्मादेवंशिविरौशीनरोऽयमेकोऽत्यगान् सर्ववेगनवाहान् ॥ १७ ॥ ययातिरुवाच । अददद्देवयानाय यावद्वित्तमविन्दत । उशीनरस्यपुत्रोऽयं तस्माच्छ्रेष्ठोहिवःशिविः ॥ १८ ॥ दानंतपःसत्यमथापि धर्मोह्रीःश्रीःक्षमा सौम्यमथोविधित्सा । राजन्नेतान्यप्रमेयाणि राज्ञःशिवेःस्थितान्यप्रातिमस्यबुद्ध्या १९ ॥ एवं वृत्तोह्रीनिषेवश्च यस्मात्तस्माच्छिविरत्यगाद्वै रथेन । वैशम्पायनउवाच । अथाष्टकः पुनरेवान्व पृच्छन्मातामहं कौतुकेनेन्द्रकल्पम् ॥ २० ॥ पृच्छामित्वांनृपते ब्रूहिसत्यंकुतश्च

और अपने समय पर हमभी तुम्हारे पास आवेंगे ॥ १४ ॥ ययातिने कहा कि इसीक्षण हम सब निष्पाप और स्वर्गके जीतनेवाले हुएहैं इसलिये हमको एकत्र होकर चलना पडेगा वोह देखो देवलोकका पथ दीखपडता है वैशंपायन ने कहा कि अनन्तर वे सब नरेश धर्म के पभाव से आकाश मंडल में रथों पर चढकर गये अष्टक ने कहा कि मैंने सोचा था कि महात्मा देवराज सब प्रकार से मेरे मित्र हैं इसलिये मैंही पहिले अकेला जाऊंगा पर यह उशीनर का पुत्र शिवि हम सबको अकेला छोडकर क्यों जाताहै ॥ १७ ॥ ययातिने कहा कि इस उशीनर के पुत्र शिवि ने ब्रह्म लोक को पाने के लिये सर्वस्वदान किया था इस लिये यह तुम सेभी श्रेष्ठहै हे राजन् ! दान, तपस्या, सत्य, धर्म, लज्जा, श्री, क्षमा, अकुटिलता और पालने की इच्छा इतने सब गुणराजा शिवि में हैं बुद्धि से उन के नाम नहीं लिये जासक्ते शिवि इतना गुणशाली और लज्जा के भार से नम्र है इस लिये उसका रथहम सबको छोड चला वैशंपायन ने कहा कि अनंतर अष्टक ने कौतूहल युक्त इन्द्र सदृश

replied, "Those five golden cars, bright as fire, will carry us to heaven." Ashtak then said, "O king ride those cars and repair to heaven. We shall follow thee in time." Yayati then said, "We can all go together, having won heaven simultaneously. Behold, the path to heaven is opened for us." Vaishampayan continued that all the five then rode on cars to heaven, illumining the firmament by the glory of their virtue. Ashtak again broke the silence saying, "I had always thought Indra to be my special friend who should admit me to heaven first of all. But I see that Ushinar's son Shivi has left us behind." Yayati replied, "This Ushinar's son had given away all his worldly possessions to attain the region of Brahma. Therefore is he foremost among you.

कश्चासिसुतश्चकस्य । कृतन्त्वथायद्धिनतस्यकर्त्ता लोकेत्वदन्यः क्षत्रियोब्राह्मणोवा ॥ २१ ॥ ययातिरुवाच । ययातिरस्मिनहुषस्य पुत्रःपुरोःपिता सार्वभौमस्त्विहासम्। सुद्यंचार्थमामकेभ्यो ब्रवीमिमातामहोऽहम् भवतांप्रकाशम् ॥ २२ ॥ सर्वामिमांपृथिवीं निर्जिगायप्रादामहंछादनं ब्राह्मणेभ्यः । मेध्यानश्वानेकशतान् सुरूपांस्तदादेवाः पुण्यभाजोभवंति ॥ २३ ॥ अदामहंपृथिवीं ब्राह्मणेभ्यःपूर्णामि मामखिलांवाहनेन । गोभिःसुवर्णेनधनैश्च मुख्यैस्तदाददंगाः शतमर्बुदानि ॥२४॥ सत्येनमेद्यौश्चवसुन्धराच तथैवाग्निर्ज्वलतेमानुषेषु । नमेवृथाव्याहृतमेव वाक्यं सत्यंहिसन्तः प्रतिपूजियन्ति२५ यदष्टकप्रब्रवीमीहसत्यं प्रतर्दनंचौषदश्विन्तथैव।सर्वेचलोकामुनयश्चदेवाः। सत्येनपूज्या इतिमेमनोगतम्॥२६॥योनःस्वर्गजितःसर्वान् यथावृत्तंनिवेदयेत् । अनसूयुर्द्विजाग्रेभ्यः

मातामह से फिर पूंछा हे राजन् सचकहो कि तुम कहां से आये हो किसकी सन्तान और स्वयम कौन हो तुमने जो कार्य कियाहै वोह जगत् भरमें तुम्हारे सिवाय कोई ब्राह्मण क्षत्रिय नहीं करसक्ता॥२१॥ययातिने कहा मैं नहुषका पुत्र और पूरुका पिताहूं मेरा नाम ययाति है मैं पृथ्वी में सर्व भौम राजाथा तुम मेरेपरम आत्म जनहो तुमसे ठीक कहताहूं कि मैं तुम्हारा मातामह हूं मैंने सम्पूर्ण भूमंडल को जीतकर ब्राह्मणों को वहदान करके पवित्र और सुन्दर सौ घोड़े देवताओं के नामसे छोड़े थे जो ऐसा करते हैं देवतालोग उन पुण्य वान लोगों की उपासना करते हैं सवारी, गौ, सोना, और सब धनों से भरी हुई यह पृथ्वी और सौ अरब गाय ब्राह्मणों को दान कीथीं और मेरी कही हुई बात कभी निष्फल नहीं हुई मेरेसत्यसे आकाश मंडल और पृथ्वी बनी है और भूलोक में अग्नि प्रज्वलितहै इस हेतु साधु लोग सत्यही की पूजाकरते हैं॥२५॥हे अष्टक तुम से प्रतर्दन से और औषदश्वी से जो कहता हूं वह सचहै यह मुझको निश्चयहै कि मुनिगण

Besides, his liberality asceticism, truth, modesty, good fortune, forgiveness, amiability and desire to do good have been greater." Vaishampayan continued that after this Ashtak, out of curiosity again asked his Indra like grand father saying, "O king tell me truely, whence thou art, who thou art, and whose son ? No other Brahman or Kshatria was thy equal on earth in glory." Yayati replied, "I am Yayati the son of Nahush and the father of Puru. I owned all the earth. You are my kinsmen I tell thee truly, I am the maternal grand father of you all. Having won the whole earth, I gave clothes to Brahmans and dedicated a hundred good horses to the gods who are very much pleased by such acts. I also gave the Brahmans all the earth with her horses and elephants and numberless cows. Both the earth and

सलभेम: सलोकताम् ॥ २७ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवंराजासमहात्मा ह्यतीव स्वैर्दौहित्रैस्तारितो मित्रसाह्ः । त्यक्त्वामहींपरमोदारकर्मास्वर्गं गतःकर्मभिर्व्याप्य पृथ्वीम् ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्यानं समाप्तमिति त्रिनवतोऽध्याय:९३॥

जनमेजयउवाच॥भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि पूरोर्वंशकरान्नृपान् । यद्वीर्यान्यादृशांश्चापि यावतोयत्पराक्रमान्॥१॥नह्यस्मिन्शीलहीनोवा निर्वीर्योवानराधिपः। प्रजाविरहितो वापि भूतपूर्वःकथंचन ॥ २ ॥ तेषांप्रथितवृत्तानां राज्ञांविज्ञानशालिनाम् । चरितं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेणतपोधन ॥ ३ ॥ वैशंपायनउवाच । हन्ततेकथयिष्यामि यन्मां

और देवगण सत्यही से पूजित होते हैं जो मनुष्य द्वेष रहित होकर हमारी स्वर्ग प्राप्ति का वृत्तान्त ब्राह्मणोंको सुनावेंगे वो हमारे पुण्यसे पायेहुए स्थानोंको पावेंगे॥२७॥ वैशंपायनने कहा कि महात्मा दानी राजा ययाति नातियोंसे त्राणप्राप्तकर मित्रोंसहित स्वर्ग को गया२८॥

अध्याय ९४ ॥

जन्मेजय ने कहा हेभगवन ! पुरूवंशी राजाओं में जो जैसे विक्रमी और वीर्यवान् थे वोह सुना चाहताहूँ इस वंशमें कोई राजा कुचरित्र वीर्य वर्जित और प्रजा रहित नहीं हुए॥२॥ हे तपोधन ! उनराजाओंके जगत्विख्यात् चरित्र सुननाचाहताहूँ॥३॥वैशंपायनने

the firmament are supported by virtue and truth; fire burns in the world of men by truth and virtue. I never spoke an untrue word. The wise adore the truth. O Ashtak, as I have already told thee, Pratardan and Vasuman are truth personified. I believe that the gods, the rishis and the heavens are adorable because of truth that characterises them. He that shall, without malice read to Brahmans this account of our ascension to heaven shall himself attain the world of bliss." Vaishampayan continued that it was thus that the illustrious king Yayati of high achievements, rescued by all his kinsmen, ascended to heaven leaving the earth and spreading the fame of his deeds in the three worlds.

CHAPTER XCIV



Janmejaya said, "I desire to hear, O adorable one the histories of the descendants of Puru. Tell me about the prowess and achievements of each. I hear that no descedant of king Puru was wanting in good manners, prowess, and children. O ascetic, I desire to hear a detailed account of the famous monarchs of great learning and accomplish-

कश्चासिसुतश्चकस्य । कृतन्त्वथायद्धिनतस्यकर्त्ता लोकेत्वदन्यः क्षत्रियोब्राह्मणोवा ॥ २१ ॥ ययातिरुवाच । ययातिरस्मिनहुषस्य पुत्रःपुरोःपिता सार्वभौमस्त्विहासम्। सुधंचार्थमामकेभ्यो ब्रवीमिमातामहोऽहम् भवनांप्रकाशम् ॥ २२ ॥ सर्वामिमांपृथिवीं निर्जिगायप्रादामहंछादनं ब्राह्मणेभ्यः । मेध्यानश्वानेकशतान् सुरूपांस्तदादेवाः पुण्यभाजोभवंति ॥ २३ ॥ अदामहंपृथिवीं ब्राह्मणेभ्यःपूर्णामिमामखिलांवाहनेन । गोभिःसुवर्णेनधनैश्च मुख्यैस्तदाददंगाः शतमर्बुदानि ॥२४॥ सत्येनमेद्यौश्चवसुन्धराच तथैवाग्निर्ज्वलतेमानुषेषु । नमेवृथाव्याहृतमेव वाक्यं सत्यंहिसन्तः प्रतिपूजियन्ति२५ यदष्टकप्रब्रवीमीहसत्यं प्रतर्दनंचौषदश्विन्तथैव।सर्वेचलोकामुनयश्चदेवाः। सत्येनपूज्या इतिमेमनोगतम्॥२६॥योनःस्वर्गजितःसर्वान् यथावृत्तंनिवेदयेत् । अनसूयुर्द्विजाग्रेभ्यः

मातामह से फिर पूंछा हे राजन् सचकहो कि तुम कहां से आये हो किसकी सन्तान और स्वयम कौन हो तुमने जो कार्य कियाहै वोह जगत् भरमें तुम्हारे सिवाय कोई ब्राह्मण क्षत्रिय नहीं करसक्ता॥२१॥ययातिने कहा मैं नहुषका पुत्र और पूरूका पिताहूं मेरा नाम ययाति है मैं पृथ्वी में सर्व भौम राजाथा तुम मेरेपरम आत्म जनहो तुमसे ठीक कहताहूं कि मैं तुम्हारा मातामह हूं मैंने सम्पूर्ण भूमंडल को जितकर ब्राह्मणों को वस्त्रदान करके पवित्र और सुन्दर सौ घोडे देवताओं के नामसे छोडे थे जो ऐसा करते हैं देवतालोग उन पुण्य वान लोगों की उपासना करते हैं सवारी, गौ, सोना, और सब धनों से भरी हुई यह पृथ्वी और सौ अरब गाय ब्राह्मणों को दान कीथीं और मेरी कही हुई वात कभी निष्फल नहीं हुई मेरेसत्यसे आकाश मंडल और पृथ्वी वनी है और भूलोक में अग्नि प्रज्वलितहै इस हेतु साधु लोग सत्यही की पूजाकरते हैं॥२५॥हे अष्टक तुम से प्रतर्दन से और औषदश्वी से जो कहता हूं वह सचहै यह मुझको निश्चयहै कि मुनिगण

Besides, his liberality asceticism, truth, modesty, good fortune, forgiveness, amiability and desire to do good have been greater." Vaishampayan continued that after this Ashtak, out of curiosity again asked his Indra like grand father saying, "O king tell me truely, whence thou art, who thou art, and whose son ? No other Brahman or Kshatria was thy equal on earth in glory." Yayati replied, "I am Yayati the son of Nahush and the father of Puru. I owned all the earth. You are my kinsmen I tell thee truly, I am the maternal grand father of you all. Having won the whole earth, I gave clothes to Brahmans and dedicated a hundred good horses to the gods who are very much pleased by such acts. I also gave the Brahmans all the earth with her horses and elephants and numberless cows. Both the earth and

सलभेश्वः सलोकताम् ॥ २७ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवंराजासमहात्मा ह्यतीव स्वैर्दौहित्रैस्तारितो मित्रसाहः । त्यक्त्वामहींपरमोदारकर्मास्वर्ग गतःकर्मभिर्व्याप्य पृथ्वीम् ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्युत्तरययात्युपाख्यानं समाप्तमिति त्रिनवतोऽध्यायः९३॥

जनमेजयउवाच॥भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि पूरोर्वंशकरान्नृपान् । यद्वीर्यान्यादृशांश्चापि यावतोयत्पराक्रमान्॥१॥नह्यस्मिन्शीलहीनोवा निर्वीर्योवानराधिपः। प्रजाविरहितो वापि भूतपूर्वः कथंचन ॥ २ ॥ तेषांप्रथितवृत्तानां राज्ञांविज्ञानशालिनाम् । चरितं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेणतपोधन ॥ ३ ॥ वैशंपायनउवाच । हन्ततेकथयिष्यामि यन्मां

और देवगण सत्यही से पूजित होते हैं जो मनुष्य द्वेष रहित होकर हमारी स्वर्ग प्राप्ति का वृत्तान्त ब्राह्मणोंको सुनावेंगे वो हमारे पुण्यसे पायेहुए स्थानोंको पावेंगे॥२७॥ वैशंपायनने कहा कि महात्मा दानी राजा ययाति नातियोंसे त्राणप्राप्तकर मित्रोंसहित स्वर्ग को गया॥२८॥

अध्याय ९४ ॥

जन्मेजय ने कहा हेभगवन ! पुरुवंशी राजाओं में जो जैसे विक्रमी और वीर्यवान् थे वोह सुना चाहताहूँ इस वंशमें कोई राजा कुचरित्र वीर्य वर्जित और प्रजा रहित नहीं हुए॥२॥ हे तपोधन ! उनराजाओंके जगत्विख्यात् चरित्र सुननाचाहताहूँ॥३॥वैशंपायनने

the firmament are supported by virtue and truth; fire burns in the world of men by truth and virtue. I never spoke an untrue word. The wise adore the truth. O Ashtak, as I have already told thee, Pratardan and Vasuman are truth personified. I believe that the gods, the rishis and the heavens are adorable because of truth that characterises them. He that shall, without malice read to Brahmans this account of our ascension to heaven shall himself attain the world of bliss." Vaishampayan continued that it was thus that the illustrious king Yayati of high achievements, rescued by all his kinsmen, ascended to heaven leaving the earth and spreading the fame of his deeds in the three worlds.

CHAPTER XCIV



Janmejaya said, "I desire to hear, O adorable one the histories of the descendants of Puru. Tell me about the prowess and achievements of each. I hear that no descedant of king Puru was wanting in good manners, prowess, and children. O ascetic, I desire to hear a detailed account of the famous monarchs of great learning and accomplish-

त्वंपरिपृच्छसि । पूरोर्वंशधरान्वीरान् शक्रप्रतिमतेजसः । भूरिद्रविणविक्रान्तान् सर्व लक्षणपूजितान् ॥ ४ ॥ प्रवीरेश्वररौद्राश्वास्त्रयः पुत्रामहारथाः । पूरोःपौष्ट्यामजायन्त प्रवीरोवंशकृत्ततः ॥ ५ ॥ मनस्युरभवत्तस्माच्छूरसेनीसुतःप्रभुः । पृथिव्याश्च तुरन्ताया गोप्ताराजीवलोचनः ॥ ६ ॥ शक्तःसंहननोवाग्मी सौवीरीतनयास्त्रयः । मनस्योरभवन्पुत्राः शूराःसर्वेमहारथाः ॥ ७ ॥ अन्वग्भानुप्रभृतयो मिश्रकेश्यांमनस्विनः । रौद्राश्वस्यमहेष्वासा दशाप्सरसिसूनवः ॥ ८ ॥ यज्वानोजज्ञिरेशूराः प्रजावन्तोवहुश्रुताः । सर्वेसर्वास्त्रविद्वांसः सर्वेधर्म्मपरायणाः॥९॥ऋचेयुरथकक्षेयुः कृकणेयुश्चवीर्य्यवान् । स्थण्डिलेयुर्वनेयुश्च जलेयुश्चमहायशाः ॥ १० ॥ तेजेयुर्वलवान् धीमान् सत्येयुश्चेन्द्रविक्रमः । धर्मेयुःसन्नतेयुश्च दशमोदेवविक्रमः ॥ ११ ॥ अनाधृ.

कहा हेराजन्! पुरुवंशका वृत्तान्त जो आपने मुझसे पूछा उस वंश के इन्द्र के समान तेजस्वी वीर विक्रमी सर्व लक्षण युक्त अगणित राजाहुए उनका वृत्तान्त आप से कहता हूँ सुनिये पूरुकी पौष्टीनाम्नी स्त्री से प्रवीर, ईश्वर और रौद्राश्व तीन महारथी पुत्र उत्पन्नहुए उन मेंसे प्रवीर के यश में शूरसेनी के गर्भ से मनस्युनामक पुत्र उत्पन्नहुआ और उसने समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का शासन किया॥६॥मनस्यु के वीर्य और शौवीरीके गर्भ से शक्त, सहनन और वाग्मी तीनपुत्र उत्पन्नहुए वे सब शूर और महारथी थे रौद्राश्व के वीर्य से मिश्र केशी अप्सराके गर्भ में अन्वग भानु आदि दशपुत्र उत्पन्नहुए वे सब शास्त्रों में निपुण धर्मशील बड़े चापधारी योगशील प्रजावाले और सब शास्त्रके जाननेवाले हुए उन से ऋचेयु,कक्षेयु,कृकणेयु,स्थिंडिलेयु,वनेयु और यशवान् जलेयु,॥१०॥तेजेयु, सत्येयु इन्द्र के समान विक्रमशाला धर्मेयु और देवताके समान पराक्रमवाला सन्नतेयु यह दशपुत्र उत्पन्न हुए देवताओंमें इन्द्र जैसा विक्रमी और विद्वान् है ऐसाही भूमण्डल में अद्वितीय राजा

ments." Vaishampayan said, "I shall tell thee all about the heroic kings descended from Puru, like Indra in prowess, exceedingly rich and commanding the respect of all:—Puru had by his wife Paushti three sons, all mighty charioteers. Among them Pravir was the perpetuator of the dynasty. Pravir had a son named *Manusryu* by his wife Shursheni. Manusyu ruled over the whole earth bounded on all sides by the Ocean. His wife was Souviri and he had three sons from her, named *Shakla*, *Sanhanun* and *Vagmi*. They were heroes of fame. The intelligent and virtuous Raudraswa had from the *Apsara Misra-Keshi* ten sons who were mighty archers. The heroes performed numerous sacrifices. They all had sons, were learned in all branchas of knowledge and were devoted to virtue. Their names are *Richeyu*, *Kaksheyu*, *Vrikeyu*, *Sthandileyu*, *Vaneyu*

ष्टिरभूत्तेषां विद्वान्भुवितैकराट् । ऋचेयुरथविक्रान्तो देवानामिववासवः ॥ १२ ॥
अनाधृष्टिसुतस्त्वासीद्राजसूयाश्वमेधकृत् । मतिनारइतिख्यातो राजापरमधार्मिकः १३
मतिनारसुताराजंश्चत्वारोऽमितविक्रमाः । तंसुर्महानतिरथो द्रुह्युश्चाप्रतिमद्युतिः ॥ १४॥
तेषांतंसुर्महावीर्यः पौरवंवंशमुद्वहन् । आजहारयशोदीप्तं जिगायचवसुन्धराम् १५ ॥
इलिनन्तुसुतंतंसुर्जनयामासवीर्य्यवान् । सोऽपिकृत्स्नामिमांभूमिं विजित्येजयतांवरः
॥ १६ रथन्तर्यांसुतान्पञ्च पञ्चभूतोपमांस्ततः ।इलिनोजनयामास दुष्यन्तप्रभृतीन्नृपा
न ॥ १७ ॥ दुष्यन्तंशूरभीमौच प्रवसुंवसुमेवच । तेषांश्रेष्ठोऽभवद्राजा दुष्यन्तोजन
मेजय ॥ १८ ॥ दुष्यन्ताद्भरतोजज्ञे विद्वान्शाकुन्तलोनृपः । तस्माद्भरतवंशस्यविप्र
तस्थेमहद्यशः ॥ १९ ॥ भरतस्तिसृपुस्त्रीषु नवपुत्रानजीजनत् । नाभ्यनन्दततान्राजा
नानुरूपामगेत्युत ॥२०॥ ततस्तान्मातरःक्रुद्धाः पुत्रान्निन्युर्य्यमक्षयम् । ततस्तस्यनरे

होकर अनाधृष्टि नाम से प्रसिद्धहुआ राजसूय और अश्वमेध यज्ञकरनेवाला परमधार्मिक प्रख्यात राजा अनाधृष्टि से उत्पन्नहुआ और मतिनार से तंसु, महान, अतिरथ और द्युतिवान द्रुह्यु यह चार पुत्र उत्पन्नहुए।१३। यह सब बड़े विक्रमी थे उनमें तंसु सब से अधिक वीर्यवान् और वंशधर हुआ उसने भूमंडल को जीतकर बडा यश पाया वीर्यवन्त तंसुका पुत्र ईलिनहुआ उसतंसुके पुत्रनेभी सम्पूर्ण धरती तलको जीत लिया था फिर रथन्तरी के गर्भ और ईलिन के वीर्य से पंच भूतों के समान पांच पुत्र उत्पन्न हुए उनके नाम दुश्यंत शूर, भीम, प्रवसु, और वसुथे हेजन्मेजय ! उन में श्रेष्ठ दुष्यन्त राजाहुआ।१८।दुश्यंत से शकुंतलाके गर्भ में विद्वान् भरतने जन्मलिया और उससे भरतवंश का महान् यश फैलगया राजा भरतके तीनरानियोंसे नौपुत्र हुए वे योग्य पुत्रनहीं थे इसलिये राजा असंतुष्ट था।२०। यह देखकर पुत्रोंकी माताओंने क्रोधवश अपने२ पुत्रोंको मारडाला इससे राजा

Jaleyu, *Tejeyu*, *Satyeyu*, *Dharmeyu* and *Sannateyu*. Richeyu ruled over the whole Earth and was known by the name of Anadhrishti He was like the god *Vasav* in prowess. *Anadhrishti* had a son named Matinar who became a famous and virtuous king and performed Rajsuya and horse-sacrifices. Matinar had four sons of immense prowess, *viz*, *Tansu*, *Mahan Atirath* and *Drahyu*. *Tansu* of great prowess was the perpetuator of Puru's line. He conquered the whole world and acquired great fame and splendour. Tansu's son was *Ilina* who conquered the whole earth. By his wife *Rathantary* he had five sons—Dushyant and others–all mighty ones like the five elements. They were *Dushyant*, *Shur*, *Bhim*, *Pravasu* and *Vasu*. The eldest of them Dushyant became king. Shakuntala the wife of Dushyant, gave birth to Bharat

न्द्रस्य वितथंपुत्रजन्मतत् ॥ २१ ॥ ततोमहद्भिःक्रतुभिरीजानोभरतस्तदा । लेभेपुत्रं
भरद्वाजाद्भुमन्युंनामभारत ॥ २२ ॥ ततःपुत्रिणमात्मानं ज्ञात्वापौरवनन्दनः । भुमन्युं
भरतश्रेष्ठ यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ॥ २३ ॥ ततोदिविरथोनाम भुमन्योरभवत्सुतः ।
सुहोत्रश्चसुहोताच सुहविःसुयजुस्तथा ॥ २४ ॥ पुष्करिण्यामृचीकश्च भुमन्योरभवन्
सुताः । तेषांज्येष्ठःसुहोत्रस्तु राज्यमापमहीक्षिताम् ॥ २५ ॥ राजसूयाश्वमेधाद्यैः सो
यजद्बहुभिःसवैः । सुहोत्रःपृथिवींकृत्स्नां बुभुजेसागराम्बराम् ॥ २६ ॥ पूर्णांहस्ति
गजाश्वैश्च बहुरत्नसमाकुलाम् । ममज्जेवमहीतस्य भूरिभारावपीडिता ॥ २७ ॥
हस्त्यश्वरथसम्पूर्णा मनुष्यकलिलाभृशम् । सुहोत्रेराजनितदा धर्मतःशासतिप्रजाः
॥ २८ ॥ चैत्ययूपांकिताचासीद् भूमिःशतसहस्रशः । प्रवृद्धजनशस्याच सदैवस्य

भरत के पुत्रोंकी उत्पत्ति व्यर्थ हुई अनन्तर राजा भरत ने महायज्ञका अनुष्ठान करके भरद्वाजसे भुमन्यु नाम पुत्रपाया हे भरत श्रेष्ठ उस पौरवनन्दन भरत ने अपनेको पुत्र-वान जानकर उसभुमन्यु नामकपुत्रको यौव राज्यपर अभिषिक्त किया।२३।फिर भुमन्युके वीर्य से और पुष्करणी के गर्भ से सुहोत्र, सुहोता, सोहवि, सुयजु, ऋचीक और दिवि-रथ यह सब पुत्र उत्पन्नहुए इन में सुहोत्र सबसे बडाथा उस ने राज्यपाया ।२५। और राजसूय अश्वमेध आदि यज्ञ करके हाथी और घोडों से भरी सम्पूर्ण पृथ्वी समुद्र पर्यन्त अपने अधिकारसें लाया तब भूमण्डल हाथी, घोडे, रथों से पूरित और अगणित मनुष्योंसे विकलहोकर भारसे पीडित होनेके कारण डूबनेलगा।२७।राजा सुहोत्रके धर्मानुसार प्रजा शासन करनेसे सम्पूर्ण पृथ्वी सहस्रों स्थानों में देवालय और यज्ञके यूपोंसे चिन्हितहुई। हे भारत! राजा सुहोत्र के ऐकशा स्त्री से अजमीढ, सुमीढ और पुरुमीढ यह तीनपुत्र

who became king. Bharat was the founder of the race named after him. Bharat had nine sons by his three wives. They were not worthy and not liked by Bharat. Their mothers in anger slew them all. Bharat being childless performed a great sacrifice and by the grace of Bharadwaj got a son named Bhumanyu. Bharat was very happy and installed him as his heir apparent. By his wife Pushkarni Bhumanyu had six sons named *Suhotra*, *Suhota*, *Suhavi*, *Suyaju* and *Divirath*. The eldest was Suhotra. He became king and performed many a Rajsuya and horse sacrife. He brought under his sway the whole earth surroundded by the Ocean, full of living beings and all her wealth in gold and gems. And the earth afflicted with the weight of numberless human beings and elephants, horses and cars was about to sink down. During the virtuous reign of Suhotra the surface of the whole earth

रोचत ॥ २९ ॥ ऐक्ष्वाकीजनयामास सुहोत्रात्पृथिवीपते । अजमीढंसुमीढञ्च पुरु मीढञ्चभारत ॥ ३० ॥ अजमीढोवरस्तेषां तस्मिन् वंशःप्रतिष्ठितः । षट्पुत्रानसो प्यजनयत् तिसृपुस्त्रीषुभारत ॥ ३१ ॥ ऋक्षंधूमिन्यथानीली दुष्यन्तपरमेष्ठिनौ । केशिन्यजनयज्जह्नुं सुतौचजलरूपिणौ ॥ ३२ ॥ तथेमेसर्वपांचाला दुष्यन्तपरमे ष्ठिनोः । अन्वयाःकुशिकाराजञ्जह्नोरमिततेजसः ॥ ३३ ॥ व्रजनरूपिणयोर्ज्येष्ठ मृक्ष माहुर्जनाधिपम् । ऋक्षात्सम्वरणोजज्ञे राजन्वंशकरःसुतः ॥ ३४ ॥ आर्क्षेसम्वरणे राजन् प्रशासतिवसुन्धराम् । संक्षयःसुमहानासीत् प्रजानामितिनःश्रुतम् ॥ ३५ ॥ व्यशीर्यततोराष्ट्रं क्षयैर्नानाविधैस्तदा । क्षुन्मृत्युभ्यामनावृष्ट्या व्याधिभिश्चसमा- हतम् ॥ ३६ अभ्यघ्नन्भारतांश्चैव सपत्नानांबलानिच । चालयनवसुधांचैव बलेन चतुरङ्गिणा ॥ ३७ ॥ अभ्ययात्तञ्चपाञ्चाल्य विजित्यतरसामहीम् । अक्षौहिणीभि

उत्पन्न हुए उनमें से अजमीढ सब से बडाथा उस से ही वंश प्रतिष्ठित हुआ । हेभारत ! अजमीढ के तीनरानियों से छःपुत्र उत्पन्नहुए॥३१॥धूमिनिके गर्भ से ऋक्ष, नीलीके गर्भसे दुष्यन्त और परमेष्ठी और केशिनी के गर्भ से जन्हु, व्रजन और रूपिण यह तीन पुत्र उत्पन्न हुए तेजस्वी जन्हु के वंश में कुशिक उत्पन्न हुए और राजा ऋक्ष वृजन और रूपिणसे बडाथा ऋक्ष से राजवंश बढानेवाला संवर्णनामकपुत्र उत्पन्नहुआ।३४। हे राजन् सुनते हैं कि जब ऋक्षपुत्र संबर्ण ने पृथ्वी पर राज्य किया तब बहुत प्रजा नष्टहोनेलगी क्षुधा मृत्यु अनावृष्टि और ब्याधि आदि नाना कारणों से प्रजालोप होने पर राज्य एकवारही नष्टहोगया।३६। शत्रुओंकी सेना भारतके ओर वाले योद्धाओंको मारने और घायलकरनेलगी पंचाल के राजा विक्रमसे पृथ्वी को जीतकर चतुरंगिणी सेनासे पृथ्वी को हिलाते हुए राजा संवर्ण के समीप आपहुँचे और युद्धस्थल में दश अक्षोहिणी सेनासे संवर्ण को पराजय किया

was dotted all over with hundreds and thousands of sacrificial stakes. The earth became full of corn and human beings By his wife Aikshwaki king Suhotra had three sons named Ajmidh Sumidh and Purumidh. The eldest Ajmidh was the perpetuator of the royal line. He had six sons by his three wives. Of these Riksha was born of Dhumini, Dushmant and Parmeshti of Nili and Jahnu, Jala and Rupina, were born of Keshini. The Panchalas are descended from Dushyant and Parmeshti, Kushiks from Jahnu, Riksha who was elder than both Jala and Rupin became king. His son was Samvarn the perpetutor of the line. We hear that in the reign of Samvarn the son of Riksha people died in large numbers of famine, pestilence, drought and disease and the king suffered defeats from enemies. The Panchals brought the whole

ईशाभिः सएनंसमरेऽजयत् ॥ ३८ ॥ ततःसदारःसामात्यः सपुत्रःससुहृज्जनः । राजा
सम्वरणस्तस्मात् पलायतमहाभयात् ॥ ३९ ॥ सिन्धोर्नदस्यमहतो निकुञ्जेन्यवसत्तदा ।
नदीविषयपर्यन्ते पर्वतस्यसमीपतः ॥ ४० ॥ तत्रावसन्बहूनकालान् भारतादुर्गमा-
श्रिताः । तेषांनिवसतांतत्र सहस्रंपरिवत्सरान् ॥ ४१ ॥ अथाभ्यगच्छद्भरतान्
वशिष्ठोभगवानृषिः । तमागतंप्रयत्नेन प्रत्युद्गम्याभिवाद्यच ॥ ४२ ॥ अर्घ्यमभ्याहरंतस्मै
तेसर्वेभारतास्तदा । निवेद्यसर्वमृषये सत्कारेणसुवर्चसे ॥ ४३ ॥ तमासनेचोपविष्टं
राजावव्रेस्वयंतदा । पुरोहितोभवान्नोऽस्तु राज्यायप्रयतेमहि ॥ ४४ ॥ ओमित्येवं
वशिष्ठोऽपि भारतानन्वपद्यत । अथाभ्यषिञ्चत्साम्राज्ये सर्वक्षत्रस्यपौरवम् ॥ ४५ ॥
विषाणभूतंसर्वस्यां पृथिव्यामितिनः श्रुतम् । भरताध्युषितंपूर्वं सोऽध्यतिष्ठत्पुरोत्तमम्
॥ ४६ ॥ पुनर्बलिभृतश्चैवचक्रे सर्वमहीक्षितः । ततःसपृथिवींप्राप्य पुनरीजेमहाबलः

तब वह बहुत भयखाकर स्त्री पुत्र मन्त्री और मित्रों सहित भागकर सिंधुनदी के किनारे से पर्वत तक फैलीहुई एक फुलवाणी में टिकरहा ॥४०॥ और भारतगण उस जाने के अयोग्य वन में बहुतदिन तक बसतेरहे धीरे२ उनको सौवर्ष व्यतीत हुए । भगवान् ऋषि वशिष्ठ एक समय उनके यहाँ आ पहुँचे भारत लोगों ने उन को आयाहुआ देखकर विधि पूर्वक नमस्कार किया और अर्घ्य दिया उस बडे तेजस्वी ऋषि के आसनपर बैठने पर राजाने स्वयम् उसका सत्कारकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया और प्रार्थना की कि आप हमारे प्रोहित होवें तो हम फिर राज्यपानेका यत्न करसक्तेहैं ॥४४॥ वशिष्ठने स्वीकार किया और सम्पूर्ण भूमंडल की चोटी की समान श्रेष्ठ पौरव संवर्ण को क्षत्रियों के अधिपति रूपी राज्यपर स्थापित किया राजा संवर्ण भरत के पहले बसाये हुए सुन्दर नगर में आकर सम्पूर्ण राजा ओं से कर लेने लगा अजमीढ का पुत्र महाबली संवर्ण फिर पृथ्वीको पाकर बहुत दाक्षिणा

---

earth under subjection and defeated the Bharat prince at the head of ten Akshauhinis of army. Samvart with his ministers and family fled in fear and took refuge in a forest on the bank of the Indus. There they lived for a thousand years. One day the illustrious Rishi Vashisht came to the exiled prince who offered him libation with due respect. And having entertained him they told him all that had happened. The king then requested him to become his priest and help him to regain the kingdom. Vashisht consented. By the advice of Vashisht the Bharat prince was able to rule over all the Kshatryas. He performed many sacrifices. Tapani the daughter of Surya and the wife of Sambarn gave birth to *Kuru* who was installed on the throne by his people and was very virtuous. The forest in which he practised asceticism was the

॥ ४७ ॥ आजमीढ़ोमहायज्ञैर्बहुभिर्भूरिदाक्षिणैः । ततःसम्वरणात्सौरी तपतीसुषुवे
कुरुम् ॥ ४८ ॥ राजत्वेतंप्रजाःसर्वा धर्मज्ञइतिवव्रिरे । तस्यनाम्नाभिविख्यातं पृथि-
व्यांकुरुजाङ्गलम् ॥ ४९ ॥ कुरुक्षेत्रंसतपसापुण्यं चक्रेमहातपाः । अश्ववंतमभिष्यंतं
तथाचैत्ररथंमुनिम् ॥ ५० ॥ जनमेजयञ्च विख्यातं पुत्रांश्चास्यानुशुश्रुम । पञ्चैतान
वाहनीपुत्रान् व्यजायतमनस्विनी ॥ ५१ ॥ अविक्षितःपरिक्षित् शवलाश्वस्तुवीर्य्य-
वान् । आदिराजोविराजश्च शाल्मलिश्चमहाबलः । उच्चैश्रवाभङ्गकारो जितारिश्चाष्टमः
स्मृतः ॥ ५२ ॥ एतेषामन्ववायेतु ख्यातास्तेकर्मजैर्गुणैः । जनमेजयादयःसप्ततथैवान्ये
महारथाः ॥ ५३ ॥ परीक्षितोऽभवन्पुत्राः सर्वेधर्मार्थकोविदाः । कक्षसेनोग्रसेनौतु
चित्रसेनश्चवीर्य्यवान् ॥ ५४ ॥ इन्द्रसेनःसुषेणश्च भीमसेनश्चनामतः । जनमेजयस्य
तनया भुविख्यातामहाबलः ॥ ५५ ॥ धृतराष्ट्रःप्रथमजः पाण्डुर्बाह्लीकएव च । निषधश्च

युक्त यज्ञ करने लगा फिर सूर्य पुत्री तपती ने राजाओं में श्रेष्ठ संवर्ण से कुरू नामक पुत्र उत्पन्न किया।४८। हे राजन् ! सम्पूर्ण प्रजाने कुरू को धर्मज्ञ देखकर अपना राजा बनाया महात्मा कुरूकी तपस्यासे कुरू जांगल नामक स्थान पवित्र और उनके नामसे कुरुक्षेत्रनाम से प्रसिद्धहुआ वाहिनी नामवाली रानीसे विक्षित, भविष्यत, अविष्यत चैत्ररथ, मुनि और जन्मेजय यह पाँचपुत्र उत्पन्नहुए।५१।अविक्षितसे शवनास्व आदि राज, विराज, महावली शाल्मवली, उच्चैःश्रवा, भंगकार, और जितारि यह आठपुत्र उत्पन्नहुए।५२। इसवंश में कर्म और गुण प्रधान जन्मेजय आदि सात महारथी और अन्य महारथी पैदा हुए कक्षसेन, उग्रसेन, वीर्यवन्त चित्रसेन सुसेन, इन्द्रसेन और भीमसेन यह सब पुत्र परीक्षितसे उत्पन्न हुए।५५। यह सब धर्मार्थका तत्व जानते थे जन्मेजय से महाबलवान पृथ्वी में प्रख्यात धर्मार्थयुक्त सबोंके हितैषी आठपुत्र उत्पन्नहुए उनमें सबसेबडा धृतराष्ट्र फिर पांडु, वाल्हीक,

holy place named after him Kuru Kshetr. By his wife Bahini he begat five sons, viz, *Avikshit*, *Bhavishyat*. *Abhishyat*, *Chaitra-rath* and *Janamejaya*. Avikshit had eight sons named *Shavalashwa*, *Biryavant*, *Adiraj*. *Biraj*, *Mahakali*, *Shalmali*, *Uchchaishrava*, *Bhayankar* and *Jitari*. Their descendants were the seven mighty charioteers– Janmejaya and others. The sons of Parikshit were all acquainted with the meaning of the Vedas. They were Kakshsen, Ugra Sen, Ghitrsen of great energy, Indrasen, Susen and Bhimsen. The sons of Janmejay were the heroes of world-wide fame. They were Dhritrashtra, Pandu, Valhik, Nishadh of great energy, Jambunad, Kundodar, Padati and Vashati–- all skilful in the interpretation of the Shastras and kind to all creatures. Dhritrashtr became king. He had eight sons, viz, Kundika, Hasti,

महातेजास्तथा जाम्बूनदोबली ॥ ५६ ॥ कुण्डोदरःपदातिश्च बसातिश्चाष्टमःस्मृतः । सर्वेधर्मार्थकुशलाः सर्वभूतहितेरताः ॥ ५७ ॥ धृतराष्ट्रोऽथराजा : सीत्तस्यपुत्रोऽथ कुण्डिकाः । हस्तीवितर्कःक्राथश्च कुण्डिनश्चापिपञ्चमः ॥५८ ॥ हविश्रवास्तथेन्द्राभो भुमन्युश्चापराजितः । धृतराष्ट्रसुतानांतुत्रीनेतान् प्रथितानभुवि ॥ ५९ ॥ प्रतीपंधर्म नेत्रञ्च सुनेत्रंचापिभारत । प्रतीपःप्रथितस्तेषां बभूवाप्रतिमोभुवि ॥ ६० ॥ प्रतीपस्य त्रयःपुत्रा जज्ञिरेभरतर्षभ । देवापिःशान्तनुश्चैव बाह्लीकश्चमहारथः ॥ ६१ ॥ देवापिश्च प्रवव्राज तेषांधर्महितेप्सया । शान्तनुश्चमहीलेभे बाह्लीकश्चमहारथः ॥ ६२ ॥ भरतस्या न्वयेजाताः सत्त्ववन्तोनराधिपाः । देवर्षिकल्पान्नृपते बहवोराजसत्तमाः ॥ ६३ ॥ एवंविधाश्चाप्यपरेदेवकल्पामहारथाः । जातामनोरन्ववाये ऐलवंशविवर्द्धनाः ॥ ६४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पूरुवंशानुकीर्त्तने

चतुर्नवतोऽध्यायः ॥ ९४ ॥

निषध, बलवान जांबुनद, ।५६।कुंडोदर, पदाति और बसाति यह आठहुए इनमें धृतराष्ट्र राजाहुआ कुंडिक, हस्ती, वितर्क, क्राथ, कुंडिन, हविःश्रवा, इन्द्राभ और तेजस्वी भूमन्यु यह धृतराष्ट्रके पुत्रहैं ।५९। हे भारत ! प्रतीप, धर्मनेत्र और सुनेत्र, यह तीन प्रसिद्ध राज-कुमार धृतराष्ट्र के पौत्र हैं इन में प्रतीप प्रख्यात और अद्वितीय हैं हे भरत श्रेष्ठ देवापि शांतनु और वाल्हीक यह तीनपुत्र प्रतीपसे उत्पन्नहुए।६१।देवापिने धर्मलाभके लिये प्रव्रज्या अवलंबनकी और महारथी शांतनु और वाल्हीक पृथ्वी के राजा हुए हे राजन् देवर्षि सदृश सत्ययुक्त बहुतसे राजाओं ने भारतवंश में जन्म लिया ऐसे देवर्षि सब ऋषि सत्यवान बहुत से महारथियों ने ऐलवंशको वृद्धि करके मनु वंश में जन्म लिया ६४ ॥

Vitark, Kratha, Kundika, Vahishrava, Indrav and Bhumanyu the invincible. Dhrishtra had many grand sons of whom only three were famous. They were Pratip, Dharmnetra, and Sunetra. Out of these three Pratip became unrivalled on the earth. He had three sons, named, Devapi, Shantanu and Valhik. The eldest Devapi became a recluse leaving his other brothers to enjoy the the worldly possessions. Shantanu and the mighty Valhik shared the kingdom between themselves. Besides these there were numerous other good kings like rishis in virtue and asceticism. Also in the race of Manu were born many mighty charioteers like the gods, who by their number swelled the Aila dynasty into gigantic proportions.

जनमेजय उवाच । श्रुतस्त्वत्तोमयाब्रह्मन् पूर्वेषांसम्भवोमहान् । उदाराश्चापि वंशेऽस्मिन्राजानोमेपरिश्रुताः ॥ १ ॥ किन्तुलघ्वर्थसंयुक्तं प्रियाख्यानंनमामति । प्रीणात्यतोभवान् भूयोविस्तरेणब्रवीतुमे॥ २॥ एतामेव कथां दिव्यामाप्रजापतितोमनोः । तेषामाजननंपुण्यं कस्यनप्रीतिमावहेत् ॥ ३ ॥ सद्धर्मगुणमाहात्म्यैरभिवर्द्धितमुत्तमम् । विष्टभ्यलोकांस्त्रीनेषां यशःस्फीतमवस्थितम् ॥ ४ ॥ गुणप्रभाववीर्यौजः सत्त्वोत्साहवतामहम् । न तृप्यामिकथां शृण्वन्नमृतास्वादसंमिताम् ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । शृणुराजन्पुरासम्यङ्मया द्वैपायनाच्छ्रुतम । प्रोच्यमानंमयाकृत्स्नं स्ववंशजननंशुभम् ॥ ६ ॥ दक्षाददितिरदितेर्विवस्वान विवस्वतो मनुर्मनोरिलाइलायाःपुरूरवाः । पुरू-

अध्याय ९५ ॥

जनमेजय ने कहा । हेब्रह्मन् ! आपने पहले पुरुषोंकी महत उत्पत्तिकी कथा सुनाई और इस वंश के उदार चरित्र राजाओं के वृत्तान्त विदित हुए परन्तु यह परम प्रिय उपाख्यान संक्षेप से कहा गया है इस से अभी तृप्ति नहीं होती आप फिर विस्तृतरूप से कहिये प्रजापति मनु से लेकर सम्पूर्ण पवित्र राजाओंके जन्म वृत्तान्तकी पवित्र दिव्यकथा सुनने में किस मनुष्यकी प्रीति नहीं होती ॥३॥ वे दान शीलता आदि गुण असाधारण शक्ति शारीरिक बल सामर्थ्य और आधीनता वाले थे उनके अच्छे कर्म गुण और माहात्म्य से बढाहुआ यश तीनों लोकोंमें आजतक फैला हुआहै उनकी अमृत सदृश कथा संक्षेपसे सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती वैशम्पायनने कहा । हे राजन् ! मैंने पहले आपके शुभ वंशकी कथा व्यास जीसे जिसप्रकार सुनी है वह सब कहताहूँ॥६॥ दक्ष से अदिति, अदिति से विवस्वान, विवस्वान से मनु, मनु से इला, इला से पुरूरवा, पुरूरवासे आयु,

CHAPTER XCV

Janmejaya said, "I have heard from you, O Brahman, the history of the birth of my ancestors and of their achievements. But it was told in brief which did not satisfy me. Please narrate it again in detail. Who will not like to hear the great history of great kings, Manu and others ? (3) They were generous, very brave, powerful in body and mind, and full of courage. The praise of their good deeds, virtues and greatness, has spread throughout the world. Their heart enchanting history was told very briefly and therefore, could not satisfy my curiosity." Vaishampayan said, "I shall tell you O king the history of the great deeds of your family as I heard it from Vyas: (6) *Daksh* begot *Aditi*, *Aditi* begot *Vivaswan*, *Vivaswan* begot *Manu*, *Manu* begot *Ila*, *Ila* begot *Pururava*, *Pururava* begot *Ayu*, *Ayu* begot *Nahush* and *Nahush* begot *Yayati*.

रवसआयुरायुषोनहुपो नहुषाद्ययातिर्ययातेर्द्वेभार्य्येबभूवतु ॥ ७ ॥ उशनसोदुहिता
देवयानीवृषपर्वणश्च दुहिताशर्मिष्ठानाम । अत्रानुवंशश्लोकोभवति ॥ ८ ॥ यदुश्चतुर्व
सुश्चैव देवयानीव्यजायत । द्रुह्युंचानुश्चपूरुश्च शर्मिष्ठावार्षपर्वणी । तत्रयदोर्यादवाः
पूरोःपौरवाः ॥ ९ ॥ पूरोस्तुभार्य्याकौसल्यानाम तस्यामस्यजज्ञेजनमेजयोनाम ।
यस्त्रीनश्वमेधानाजहार विश्वजिताचेष्ट्वावनंविवेश ॥ १० ॥ जनमेजयःखल्वनन्तां
नामोपयेमेमाधवीं तस्यामस्यजज्ञेप्राचिन्वान्। यःप्राचींदिशंजिगाययावत् सूर्य्योदयात्
ततस्तस्यप्राचिन्वत्त्वम् ॥ ११ ॥ प्राचिन्वान् खल्वश्मकीमुपयेमेयादवीं तस्यामस्य
जज्ञेसंयातिः ॥ १२ ॥ संयातिःखलुदृषद्वतोदुहितरंवराङ्गीं नामोपयेमेतस्यामस्यजज्ञे
अहंयातिः ॥ १३ ॥ अहंयातिःखलुकृतवीर्य्यदुहितरमुपयेमे भानुमतींनामतस्यामस्य
जज्ञेसार्वभौमः ॥ १४ ॥ सार्वभौमःखलुजित्वाजहारकैकेयींसुनन्दांनाम तामुपयेमे

और आयु से नहुष और नहुषसे ययाति ने जन्म लिया ययातिकी दो रानी थीं एक
शुक्र पुत्री देवयानि दूसरी वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा देवयानिके यदु तुर्वसु दो पुत्र हुए
और वृषपर्वाकी कन्या शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अनु और पूरु यह तीनपुत्र हुए यदु से यादव
वंश और पूरु से पौरववंश उत्पन्नहुआ।।९।।पूरुकी स्त्री कौशल्यासे जन्मेजयका जन्महुआ
उस ने तीन अश्वमेध और एक विश्वजित् यज्ञ करके बन में प्रवेश किया उस ने माधव
की अनन्ता नाम्नी कन्या से बिवाह किया था और प्राचिन्वाननामक पुत्र उत्पन्न किया
सूर्योदय तक प्राचीदिशा जीतनेपर उसका नाम प्राचिन्वान हुआथा, प्राचिम् वानने
अश्मकी नामवाली माधवकी कन्या से बिवाह किया उस से संयातिकी उत्पत्ति हुई।।१२।।
संयाति ने दृशवतकी कन्या वरांगीसे बिवाहकिया उसका पुत्र अहंजाति हुआ अहंजातिने
कृतवर्मा की कन्या भानुमतीसे बिवाह किया उसकापुत्र सार्वभौमहुआ।।१४।।सार्वभौम ने

Yayati had two wives—*Devayani*, the daughter of *Shukr* and *Sharmistha* the daughter of *Vrishparva*. Devayani had two sons *Yadu* and *Turvasu* and Vrishparva's daughter *Sharmistha* had three–*Druhyu*, *Anu*, and *Puru*. Yadu was the founder of the Yadav dynasty and Puru that of Pauravas. 9) Puru's son was Janmejaya by his wife Kausalya. Janmejaya performed three Ashwamedhs and one Vishwajit sacrifice before he became a hermit. He married Madhav's daughter Ananta and their son was Prachimvan. The latter was so named because he conquered the whole country from East to West (Prachi) He married Madhav's daughter *Ashmaki* and their son was samyati. 12. The latter married Drashadwat's daughter Barangi and their son was Ahanjati. The latter married Kritvirya's daughter Bhanumati and their son was Sarvbhaum. 14. The latter conquered the country

तस्यामस्यजज्ञेजयत्सेनोनाम ॥ १५ ॥जयत्सेनःखलुवैदर्भीमुपयेमे सुश्रवांनाम तस्या मस्यजज्ञेअवाचीनः ॥ १६ ॥ अवाचीनोऽपि वैदर्भीमपरामेवोपयेमेमर्य्यादांनाम तस्यामस्यजज्ञेअरिहः ॥ १७ ॥ अरिहःखल्वाङ्गीमुपयेमे तस्यामस्यजज्ञेमहाभौमः ॥ १८ ॥ महाभौमःखलुप्रासेनजितीमुपयेमे सुयज्ञांनामतस्यामस्यजज्ञेअयुतनायीयः पुरुषमेधानामयुतमानयत् तेनास्यायुतनायित्वम् ॥ १९ ॥ अयुतनायीखलुपृथुश्रवसो दुहितरमुपयेमेकामां नामतस्यामस्य जज्ञअक्रोधनः ॥ २० ॥ सखलुकालिङ्गींकरम्भां नामोपयेमेतस्यामस्यजज्ञेदेवातिथिः ॥ २१ ॥ देवातिथिःखलुवैदेहीमुपयेमे मर्य्यादां नामतस्यामस्य जज्ञेऽरिहोनाम ॥२२ ॥ अरिहःखल्वाङ्गेयीमुपयेमेसुदेवां नामतस्यांपुत्र मजीजनदृक्षम् ॥ २३ ॥ ऋक्षःखलुतक्षकदुहितरमुपयेमे ज्वालांनामतस्यांपुत्रंमतिनारं नामोत्पादयामास ॥ २४ ॥ मतिनारःखलुसरस्वत्यां गुणसमन्वितंद्वादशवार्षिकंसत्र-

कैकेय राजको जीतकर उसकी पुत्री सुनंदाको हर लिया और उस के साथ बिवाह करने पर जयतसेन उत्पन्नहुआ जयतसेन ने विदर्भ राजाकी पुत्री सुश्रवा से विवाह किया उस से अवाचीन पुत्र उत्पन्नहुआ अवाचीन ने दूसरी वैदर्भी मर्यादा नामवाली कन्या से बिवाह किया उसका पुत्र अरहि हुआ राजा अरहि ने आंगिनाम्नी कन्या से बिवाह किया और उसका पुत्र महाभौम हुआ।१८। महाभौम ने प्रासेनजितकी कन्या सुयज्ञासे बिवाह किया उससे अयुतनायी उत्पन्नहुआ उसने अयुत अश्वमेध यज्ञकिये इसलिये उसकानाम अयुत- नायीहुआ अयुतनायीने पृथुश्रवाकी कन्या कामासे बिवाह किया उस से अक्रोधन उत्पन्न हुआ।२०।अक्रोधन ने कलिंगराजाकी कन्या करंभा से बिवाहकिया उससे देवातिथि उत्पन्न हुआ देवातिथि ने बिदेहराजकी पुत्री मर्यादासे बिवाह किया उसका पुत्र अरिहहुआ अरिह ने अंगराजकी पुत्री सुदेवा से बिवाह किया उस के पुत्रका नाम ऋक्ष है ऋक्ष ने तक्षक की पुत्री ज्वालाके साथ बिवाह किया उसका पुत्र मतिनार नामक राजाहुआ मतिनारने

of Kakay and married the king's daughter, Sunanda. Jayatsen was the issue of the marriage. He married Sushrawa the daughter of the king of Bidarbh and his son was Avachin. The latter married another daughter, Maryada, of the king of Bidarbh and Arahi was their son. (17) The king Arahi married one Anga and her son was Mahabhaum. The latter married Suyagya the daughter of Prasenjit and her son was Ayutnai, so named from this having performed Ayut (10000) Ajmedh sacrifices. Ayutnai married Prathushrava's daughter Kama and her son was Akrodhan. 20 The latter married Karmbha, the daughter of the king of Kaling and her son was *Devatithi.* The latter married Maryada, the daughter of the king of *Videh* and her son was *Arhi.* Arhi married Angraj's Daughter Sudeva whose son was Riksh. Riksh married Takshak's

माहरत् । समाप्तेचसत्रे सरस्वत्यभिगम्यतं भर्त्तारंवरयामास तस्यांपुत्रमजीजनत्तं सुंनाम ॥ २५ ॥ अत्रानुवंशश्लोकोभवति । तंसुंसरस्वतीपुत्रं मतिनारादजीजनत् । ईलिनंजनयामास कालिङ्ग्यांतंसुरात्मजम् ॥ २६ ॥ ईलिनस्तुरथन्तर्य्यां दुष्यन्ताद्यान् पञ्चपुत्रानजीजनत् २७॥दुष्यन्तःखलुविश्वामित्रदुहितरं शकुन्तलांनामोपयेमेतस्यामस्य जज्ञेभरतः ॥ २८ ॥ अत्रानुवंशश्लोकौभवतः । भस्त्रामाता पितुःपुत्रो येनजातःसएवसः। भरस्वपुत्रंदुष्यन्त मावमंस्थाःशकुन्तलाम्॥२९॥रेतोधाःपुत्रउन्नयति नरदेवयमक्षयात् । त्वञ्चास्यधातागर्भस्य सत्यमाहशकुन्तला ॥ ३० ॥ ततोऽस्यभरतत्वं । भरतःखलु काशेयीमुपयेमेसार्वसेनीं सुनन्दांनामतस्यामस्यजज्ञेभुमन्युः ॥ ३१ ॥ भुमन्युःखलु

सरस्वती नदीके किनारे पर बारहवर्ष में पूर्ण होनेवाले अनन्त गुणयुक्त यज्ञका अनुष्ठान किया उस महायज्ञके समाप्तहोने पर सरस्वती ने उसको अपना पति बनाया सरस्वती के गर्भ से तंसु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ तंसुने कालिंगीसे ईलिन नामक पुत्र उत्पन्न किया राजा ईलिनके रथन्तरीसे दुष्यंत आदि पांचपुत्र उत्पन्नहुए।।२७।।दुष्यन्तने विश्वामित्रकी कन्या शकुंतला से बिवाह किया जिससे भरतका जन्महुआ (हे दुष्यन्त माता चमडेकी कोपके समान है उस में पिता आपही पुत्र के स्वरूप में जन्म लेताहै इसलिये पुत्रको पालो शकुंतलाका अनादर मत करो हे राजन् अपने वीर्य से उत्पन्नहुई सन्तान यमराज से उद्धारकरती है तुम्हीं ने यह गर्भ धारण किया है शकुंतला जो कहती है सब सच है इसलिये हे पौरव शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न इस महात्मा पुत्रको पालनकरो हमारे कहनेसे इस पुत्रका पालन तुम्हें करनाहोगा)॥३०॥इसहेतु दुष्यन्तके पुत्रका नाम भरतहुआ भरत ने काशिराज सर्वसेनकी पुत्री सुनंदासे बिवाह किया सुनंदाके गर्भ से भुमन्यु उत्पन्नहुआ भुमन्यु ने दशार्ह की कन्या विजया से बिवाह किया उसका पुत्र

daughter, Jwala whose son was Matinar. Natinar performed a twelve year-sacrifice, of great merit, on the bank of the Saraswati. At the end of the sacrifice Saraswati came out of the river and accepted him as her lord. Tansu was the offspring of Saraswati. Tansu was the father of *Ilin* by his wife Kalingi, By his wife Rathantari, Ilin became the father of five sons—Dushyant and others. 27 Dushyant married Biswamitra's daughter Shakuntala whose son was Bharat. (At this point the following staza of a former sence is repeated): (A mother, O Dushyant, is like a leather vessel. The father himself is reproduced in the form of the son. Bring forth the child and donot discard Shakuntala. A child produced by self releases the self from the tortures of hell. You *are* the *progenitor* of the child.) Shakuntala has spoken the truth. Rear, O Paurav, thy son by Shakuntala. You must do as we say. 30

दाशार्हीमुपयेमे विजयांनाम तस्यामस्यजज्ञेसुहोत्रः ॥ ३२ ॥ सुहोत्रः खल्विक्ष्वाकुकन्या मुपयेमे सुवर्णांनामतस्यामस्यजज्ञे हस्ती॥ यइदंहास्तिनपुरंस्थापयामासएतदस्य हास्तिन पुरत्वम् ॥ ३३ ॥ हस्तीखलु त्रैगर्त्तीमुपयेमेयशोधरां नामतस्यामस्यजज्ञेविकुण्ठनोनाम ॥ ३४ ॥ विकुण्ठनःखलुदाशार्हीमुपयेमे सुदेवांनामतस्यामस्यजज्ञेअजमीढोनाम ॥ ३५ ॥ अजमीढस्य चतुर्विंशंपुत्रशतंबभूव कैकेय्यांगान्धार्य्यां विशालाया मृक्षायांचेति । पृथक्पृथग्वंशधरानृपतयः तत्रवंशकरःसंवरणः ॥३६॥ सम्वरणःखलु वैवस्वतीं तपतीं नामोपयेमे तस्यामस्यजज्ञेकुरुः ॥ ३७ ॥ कुरुःखलुदाशार्हीमुपयेमे शुभांगींनामतस्यामस्यजज्ञेविदूरथः ॥ ३८ ॥ विदूरथस्तु माधवीमुपयेमे संप्रियांनाम तस्यामस्यजज्ञेअनश्वानाम ॥ ३९ ॥ अनश्वाखलुमागधीमुपयेमे अमृतांनामतस्यामस्य जज्ञे परीक्षित् ॥ ४० ॥ परीक्षित् खल्वबाहुदामुपयेमे सुयशांनाम तस्यामस्यजज्ञे भीम

सुहोत्र हुआ सुहोत्र ने इक्ष्वाकु की कन्यासे विवाह किया उस से हस्तीनामक पुत्र का जन्महुआ जिसने अपने नाम से हस्तिनापुर बसाया हस्ती ने त्रिगर्त राजाकी कन्या यशोधरा से विवाह किया उसका पुत्र विकुंठनहुआ।३४।विकुंठनने दशार्ह की पुत्री सुदेवा से विवाह किया जिसके गर्भ से उत्पन्न अजमीढने कैकेयी,गांधारी,विशाला, और ऋक्षा इन चार पत्नियों मे चौबीस सौ पुत्र उत्पन्न किये वे सबराजा और अलग२ वंशवाले हुए उन सब में से संवर्ण के पुत्रसे ही वंशप्रतिष्ठितहुआ।।३६।।संवर्णने सूर्यकी पुत्री तपतीसे विवाह किया तपतीसे कुरू का जन्महुआ कुरूने दशार्हकी पुत्री शुभांगीसे विवाह किया शुभांगी के गर्भ से विदुरथ का जन्महुआ विदुरथने माधवकी पुत्री संप्रियाके विवाह किया उसके गर्भसे अनश्वा उत्पन्नहुआ अनश्वाने मगधराजकी पुत्री अमृतासे विवाह किया अमृतासे परिक्षित हुआ उस ने बहुधकी कन्या सुयशासे विवाह किया सुयशा के गर्भसे भीमसेन नामक पुत्र

So the son of Dushyant was called Bharat (reared). Bharat married the daughter of *Sarbsen,* the king of Benaras,. named Sunanda who was the mother of Bhumanyu. Bhumanyu married Dasharha's daughter Bijaya and was the father of *Suhotra.* 32 *Suhotra* married Ikshwaku's daughter Subarna. Hasti was the offspring who laid the foundation of the city of Hastinapur. Hasti married Raja of Trigart's daughter Yashodhara whose son was Bikunthan. Bikunthan marriod Dasharha's daughter Sudeva whose offspring was Ajmirh. 35. By Kaikayi, Gandhari, Bishala and Riksha, the four wives of Ajmirh, 2400 children were born. They were kings and founders of several dynasties. Of them Sambarn was the perpetuator of the line. He married Tapati, the daughter Surya and was the father of Kuru. Kuru married Dasharha's daughter

सेनः ॥ ४१ ॥ भीमसेनः खलु कैकेयीमुपयेमे कुमारीं नाम तस्यामस्य जज्ञे प्रतिश्रवा नाम ॥ ४२ ॥ प्रतिश्रवसः प्रतीपः । प्रतीपःखलुशैब्यामुपयेमे सुनन्दांनाम तस्यां पुत्रानुत्पादयामास देवापिंशान्तनुं वाह्लीकं चेति ॥ ४३ ॥ देवापिः खलुवाल एवा रण्यं विवेशशान्तनुस्तु महीपालोबभूव ॥ ४४ ॥ अत्रानुवंशश्लोकोभवति । यंयं क- राभ्यां स्पृशति जीर्णं ससुखमश्नुते । पुनर्युवाच भवति तस्मात्तं शान्तनुं विदुः इति तदस्य शान्तनुत्वम् ॥ ४५ ॥ शान्तनुः खलु गंगांभागीरथीमुपयेमे तस्यामस्य जज्ञे देवव्रतोनाम यमाहुर्भीष्ममिति ॥ ४६ ॥ भीष्मः खलु पितुः प्रियचिकीर्षया सत्य- वतीं मातरमुदवाहयत् यामाहुर्गन्धकालीमिति ॥ ४७ ॥ तस्यांपूर्वकानीनो गर्भः पराशरद्वैपायनोऽभवत् । तस्यामेव शान्तनोरन्यौ द्वौपुत्रौ बभूवतुः ॥ ४८ ॥ विचित्र वीर्य्यश्चित्रांगदश्च तयोरप्राप्तयौवन एव चित्रांगदो गन्धर्वेण हतः विचित्रवीर्य्यस्तु

उत्पन्नहुआ भीमसेनने कैकेय राजकी पुत्री कुमारीके गर्भसे प्रतिश्रवाको उत्पन्न किया प्रति श्रवा के पुत्रप्रतीप ने शैवराजकी पुत्री से विवाह किया उसके गर्भसे देवापि, शान्तनु, और वाल्हीक तीनपुत्र उत्पन्नहुए ।४३। देवापि ने वालकपन सेही वानप्रस्थ धारणकिया शान्तनु राजा हुआ (यह राजा अपनी भुजासे जिस बूढेको स्पर्शकरता था वहफिर युवा होकर सुख भोगताथा इसलिये उसकानाम शांतनुहुआ।४५।शांतनु ने गंगासे विवाह किया गंगा के गर्भसे देवव्रत्त उत्पन्न हुआ जिसको सब भीष्म कहते हैं पिता का प्रियकार्य करने की इच्छासे सत्यवतीका विवाह उसके साथ करदिया सत्यवतीका दूसरानाम गंधकाली था सत्यवती की कन्या दशा में पराशर से गर्भ होनेपर द्वैपायनका जन्महुआ शांतनु के वीर्य से उस के दो पुत्र विचित्रवीर्य और चित्रांगद हुए। चित्रांगद यौवना वस्थाप्राप्त कर नेसे पहलेही गंधर्वसे मारागया विचित्रवीर्यने काशिराज की पुत्री आम्बिका और अम्बालिका

Shubhangi who gave birth to Bidoorath. The latter married Madhava's daughter Samprya whose son was Anashwa. Anashwa married Magdhraj's daughter whose son was Parikshit. Parikshit married Bahud's daughter Suyasha whose son was Bhimsen.41.The latter married Kumari the daughter of Kakay.Her offspring was Prati shrava. Pratishrava's son Pratip, married Sunanda the daughter of king Shaivya. Three sons, Devapi, Balhik and Shantanu were the offspring of the union.42. Of these, Devapi, became a recluse in his youth and the kingdom devolved on Shantanu. Every old man that Shantanu touched with his hand became young again. So he was called Shantanu. He married Ganga, the Bhagirathi, and became by her the father of Dev Brat, called by the people, Bhishma.To please his father, Bhishm married him with Satyavati,

राजासीत् ॥ ४९ ॥ विचित्रवीर्यःखलु कौसल्यात्मजेऽम्बिकाम्बालिके काशिराज दुहितरावुपयेमे ॥ ५० ॥ विचित्रवीर्य्यस्त्वनपत्यएव विदेहत्वंप्राप्तस्ततः सत्यवत्यचिन्तयन्मादौष्यन्तो वंशउच्छेदंव्रजेदिति ॥ ५१ ॥ साद्वैपायनमृषिं मनसा चिन्तयामास । स तस्याः पुरतः स्थितः किङ्करवाणीति ॥ ५२ ॥ सा तमुवाच भ्राता तवानपत्यएवस्वर्यातो विचित्रवीर्यः साध्वपत्यं तस्योत्पादयेति ॥ ५३ ॥ सतथेत्युक्त्वात्रीन् पुत्रानुत्पादयामास । धृतराष्ट्रं पाण्डुंविदुरञ्चेति ॥ ५४ ॥ तत्रधृतराष्ट्रस्य राज्ञः पुत्रशतंबभूवगान्धार्यां वरदानाद्द्वैपायनस्य ॥ ५५ ॥ तेषांधृतराष्ट्रस्यपुत्राणां चत्वारःप्रधानाबभूवुः । दुर्य्योधनो दुःशासनोविकर्णश्चित्रसेनश्चेति ॥ ५६ ॥ पाण्डोस्तु द्वेभार्य्ये वभूवतुः कुन्ती पृथानाममाद्री चेत्युभेस्त्रीरत्ने ॥ ५७ ॥ अथ पाण्डुर्मृगयांचरन्मैथुनगतमृषिमपश्यन्मृग्यांवर्त्तमानं तथैवाश्रुतमनासादितकामरसमतृप्तञ्च वाणेनाजघान ॥ ५८ ॥ सबाणाविद्धउवाचपाण्डुं चरताधर्ममिमं येन त्वयाभिज्ञेन काम

से विवाह किया परन्तु सन्तान उत्पन्न होने से पहलेही परलोक को सिधारा इस लिये कि दुष्यन्त का वंश नष्ट न होजाय सत्यवतीने अपने पुत्र वैशम्पायन ऋषिको याद किया और द्वैपायन ने उस के सम्मुख आकर पूछा कि क्या आज्ञा ।५२। है सत्यवतीने कहा कि तुम्हारा भाई विचित्रवीर्य विना सन्तान पर लोकको गया उसका पुत्रोत्पादनकरो द्वैपायन ने स्वीकार किया और उचित काल में धृतराष्ट्र, पांडु, और विदुर त्तीन पुत्र उत्पन्न किये फिर द्वैपायन के वरदान से गांधरी के गर्भमें सौ पुत्र उत्पन्न हुए धृतराष्ट्र के पुत्रों में दुर्योधन, दुःशासन विकर्ण और चित्रसेन यह चारपुत्र प्रधानथे।५६।पांडुकी दोस्त्रियें कुंती और माद्रीथीं कुंती का दूसरा नाम पृथा था फिर एक समय पांडु आखेट के लिये वन में गया वहां देखाकि एक ऋषि मृगीसे मैथुन कर कहा है तब तक काम रस के पूर्णन होनेसे भले प्रकार तृप्त नहीं हुआथा उस अद्भुत मृगरूपी ऋषिपर राजाने वाण मारा ।५८। ऋषिने

alias Gandhkali. Before her marriage she had become the mother of Dwaipayan (Vays) by her union with Parashar. By her union with Shantanu she had two sons, *viz*, Vichitravirya and Chitrangad. The latter was killed by a Gandharb in his youth and the former became king. Vichitra-virya married the two daughters of the king of *Benares*, named, Ambika and Ambalika. But he died without issue. To continue the line of Dushyant Satyavati called her son, the Rishi Dwaipayan, who respectfully stood before her to await her orders. 52 Satyvati said, "Your(half) brother Vichitravirya has died childless. Produce sons for him." Dwaipayan agreed and produced in time three sons, *viz*, Dhritrashra, Pandu, and Vidur. By the blessing of Vyas Dhritrashtra's wife Gandhari brought forth hundred sons. Chief among them

रसस्याहमनवाप्तकामरसा निहतस्तस्मात्त्वमप्येतामवस्थामासाद्यानवाप्तकामरसः पंचत्वमाप्स्यसि क्षिप्रमेवेति स विवर्णरूपस्तथा पाण्डुः शापं परिहरमाणो नोपासर्पत भार्येवाक्यंचोवाच ॥ ५९ ॥ स्वचापल्यादिदंप्राप्तवाहनंशृणोमि च नानपत्यस्यलोकाः सन्तीति सात्वं मदर्थेपुत्रानुत्पादयेति कुन्तीमुवाचसा तथोक्ता पुत्रानुत्पादयामास धर्माद्युधिष्ठिरं मारुताद्भीमसेनं शक्रादर्ज्जुनमिति ॥ ६० ॥ तांसंहृष्टःपाण्डुरुवाच इयंतेसपत्न्यनपत्या साध्वस्या अपत्यमुत्पाद्यतामिति ॥ ६१ ॥ एवमस्त्वितिकुन्तीतां विद्यांमाद्र्याः प्रायच्छत । माद्र्यामश्विभ्यां नकुलसहदेवावुत्पादितौ ॥ ६२ ॥

वाण से विद्ध होकर पांडु से कहा कि तुमने धर्म और काम रसको जानते हुए मुझको अपूर्ण मनोरथ देखकरभी मार डाला इस लिये तुमभी कामरस मैं अतृप्त रहकर उस दशा में ही शीघ्र परलोक को जाओगे यह शाप सुनतेही पांडु का रंग बदल गया और शाप से बचने के लिये स्त्री से मिलना त्यागदिया फिर उन्होंने कुंती और मादरी से कहा कि मैंने अपनी चपलता से कुदशा प्राप्तकी है सुना है कि पुत्र के विना स्वर्ग प्राप्ति नहीं होती फिर कुंतीसे कहा कि तू मेरेलिये पुत्र उत्पादन कर कुंतीने पतिकी आज्ञा नुसार धर्म से युधिष्ठिर पवनसे भीम और इन्द्रसे अर्जुन यह तीनपुत्र पैदाकिये।६०।पांडुने उस से प्रसन्न होकर कहा यह माद्री निःसन्तान है सो यत्न से इस से अच्छा पुत्र उत्पन्न कराओ कुंतीने यह स्वीकार कर वह विद्यामाद्री को देदी जिससे वह धर्म आदिको बुलाकर पुत्रोत्पादन करतीथी और माद्रीने दोनों अश्विनीकुमारों से नकुल और सहदेव दो यमजपुत्र उत्पन्नकिये

were four, namely, Duryodhan, Dushasan, Bikarn, and Chitra sen. Pandu had two wives, Kunti and Madri. Kunti was also called Pratha. Once, Pandu went to forest to kill deer. There he saw a rishi conpling with a doe and shot him with an arrow before he had finished it. 58 The wounded rishi addressed Pandu, saying, "Being acquained with Dharm and laws of desire you have killed me when my desire was not satisfied. You will also die in the same state." Pandu's colour changed on hearing the curse and he left altogether the enjoyment of women to shun his sad fate by the curse of the Rishi. One day he said to his wives, Kunti and Madri, "I have, by my folly, fallen into this deplorable condition. I hear no childless being can attain heaven." He then asked Kunti to bring forth a son for him. Kunti by the order of her husband brought forth Yudhishthir by Dharm, Bhim by Pavan, and Arjun by Indra. Well pleased with her, Pandu said, "Your co-wife Madri is still childless. Try to get her good offspring." Kunti assented and taught Madri the secret of

माद्रीं स्वलंकृतांदृष्ट्वा पाण्डुर्भावं चक्रे सतां स्पृष्ट्वैव विदेहत्वं प्राप्तः ॥ ६३ ॥ तत्रैनं चिताग्निस्थंमाद्रीसमन्वारुरोह।।उवाचकुन्तींयमयोरप्रमत्तया त्वयाभवितव्यमिति। ६४। ततस्तेपाण्डवाःकुन्त्या सहिताहास्तिनपुरमानीय तापसैर्भीष्मस्य विदुरस्यचनिवेदिताः सर्ववर्णानाञ्च निवेद्यांतर्हितास्तापसा बभूवुःप्रेक्षमाणानां तेषाम् ॥ ६५ ॥ तच्च वाक्यमुपश्रुत्य भगवतामन्तरीक्षात् पुष्पवृष्टिः पपातदेवदुन्दुभयश्च प्रणेदुः ॥ ६६ ॥ प्रतिगृहीताश्चपाण्डवाः पितुर्निधनमावेद्यंतस्तस्यौर्ध्वदेहिकं न्यायतश्चकृतवन्तस्तांस्तत्र निवसतःपाण्डवान् बाल्यात्प्रभृतिदुर्य्योधनो नामर्षयत् ॥ ६७ ॥ पापाचारोराक्षसीं बुद्धिमाश्रितोऽनेकैरुपायैरुद्धर्तुञ्च व्यवसितोभावित्वाच्चार्थस्य नशकितास्तेसमुद्धर्तुम् ॥ ६८ ॥ ततश्चधृतराष्ट्रेणव्याजेन वारणावतमनुप्रेषिता गमनमरोचयन्॥६९॥ तत्रापि

एक समय पांडुने माद्री को गहनों से सजी हुई देख कर काम वशहो माद्री के स्पर्श मात्र से शरीर छोड़ा पांडुकी देहमें आग लगने पर माद्रीभी उस के साथ सती हुई और कुंती से यह कह मरी कि तू सावधान होकर मेरे इन दो पुत्रोंको पालन करना ॥६४॥ फिर तपस्वीलोग कुंती सहित पांडवों को हास्तिना पुर में लिवालाये और उन्हें भीष्म और विदुरको दिया और ब्राह्मण क्षत्रिय आदि सब वर्णों के सामने पांडवों की जन्मकथा सुनाकर चलेगये इस के उपरान्त आकाश से फूलोंकी वर्षा हुई और देवताओं के नगाड़े बजने लगे॥६६॥पांडवोंने भीष्म आदि से एकाकी पिताकी मृत्यु कथा कहकर विधिपूर्वक पिताका और्ध्वदेहिक कर्म किया फिर वे उस स्थानमें बसने लगे दुर्योधन उनसे लड़कपन में ही झगड़ने लगा उस पापात्माने अपनी राक्षसी बुद्धि से नाना उपाय कर पांडवों को वहां से उखाड़ने की चेष्टाकी परन्तु जो कार्य होनहार है वह अवश्य होता है इस लिये उसका मनोर्थ सफल नहीं हुआ फिर धृतराष्ट्रने उनको धोखा देकर वारणा वत में भेजा

invoking the gods. Madri invoked the Ashwini Kumars and by them she became the mother of the twins, Nakul and Sahadev. One day, Pandu saw the beautiful Madri decked with ornaments and could not control his desire and as soon as he touched her he was no more. Madri burnt herself on the funeral pile of Pandu and entrusted her twin sons to the care of Kunti. 64. The hermits conducted Kunti with the sons of Pandu to Hastinapur and committed them to the care of Bhishm and Vidur. And having given them an account of the birth of the Pandavas, before an assembly of the Brahmans, Kshatryas and others, they went away. When the hermits had finished their speech a shower of flowers fell from the sky and there were sounds of the musical instruments of the gods. 66. The Pandavas gave an account of the death of their father to Bhishm and Bidur and performed the after-death ceremonies.

जतुगृहेदग्धुंसमारब्धान शङ्किताविदुरमंत्रीतेनेति ॥ ७० ॥ तस्माश्चहिडिम्बमन्तरा हत्वाएकचक्रांगताः ॥ ७१ ॥ तस्यामप्येकचक्रायां बकंनामराक्षसंहत्वा पाञ्चाल नगरमधिगताः ॥ ७२ ॥ तत्रद्रौपदींभार्य्यामविन्दन् स्वविषयंचाभिजग्मुः ॥ ७३ ॥ कुशलिनःपुत्रांश्चोत्पादयामासुः प्रतिविंध्यंयुधिष्ठिरः सुतसोमंवृकोदरः । श्रुतकीर्त्तिम- र्ज्जुनः शतानीकंनकुलः श्रुतकर्माणं सहदेवइति ॥ ७४ ॥ युधिष्ठिरस्तुगोवासनस्य शैव्यस्यदेविकांनाम कन्यांस्वयम्वराल्लेभे तस्यांपुत्रंजनयामास यौधेयंनाम ॥ ७५ ॥ भीमसेनोऽपिकाश्यां बलन्धरांनामोपयेमे वीर्य्यशुल्कांतस्यां पुत्रंसर्वगं नामोत्पादया मास ॥ ७६ ॥ अर्ज्जुनःखल्वुद्वारवतींगत्वा भगिनींवासुदेवस्य सुभद्रांभद्रभाषिणीं भार्य्यामुदावहत् । स्वविषयंचाभ्याजगाम कुशलीतस्यांपुत्रमभिमन्युं अतीवगुणसम्पन्नं दयितंवासुदेवस्याजनयत् ॥ ७७ ॥ नकुलस्तुचैद्यांकरेणुमतींनाम भार्यामुदावहत्तस्यां

पांडुलोग वहाँ गये वारणा वतमें दुर्योधन के बनाये हुए जतुग्रहमें जलने से बिदुरकी सलाह से बचे फिर वारणा वतसे एक चक्रा नगरी में गये रास्ते में हिडिम्बको मारा और एचक्रा नगरी में पंहुंच कर बक राक्षसको मारा फिर द्रौपदी से बिवाह कर अपने राज्यमें लौटकर कुछ दिन कुशलसे रहे उस समय द्रौपदीके गर्भ से पांच पुत्र उत्पन्न हुए उनमें युधिष्ठिरसे प्रतिविंध्य भीमसे सुतसोम, अर्जुनसे श्रुतकीर्ति, नकुलसे शतानीक और सहदेवसे श्रुतकर्मा उत्पन्नहुआ॥७४॥युधिष्ठिरने शैव्यराजकी कन्या देविकाको स्वयंवरमें प्राप्त किया देविका के गर्भ से यौधेय नामकं पुत्र उत्पन्न हुआ भीमसेन ने काशिराजकी पुत्री बलंधरा से बियाह करके सर्ग नामक पुत्र उत्पन्न किया अर्जुन ने द्वारका में जाकर बासुदेवकी बहन मधुर भाषिणी सुभद्राको हरकर उस से बिवाह किया और बिना विघ्न अपने नगर में लौटकर अतिगुणवान बासुदेवके प्यारे अभिमन्यु नामक पुत्रको उत्पन्न किया नकुलने

They began to live there. Duryodhan used to quarrel with them from his childhood. The bad natured man tried his best to oust them but could not succeed in his wicked designs against them. Dhritrashtra, then, deceitfully sent the Pandavas to Barnavat where they were to be burnt down in the house of lac specially prepared for their reception by Duryodhan. However, they made their escape by the advice of Vidur. From Barnavat they went to Ekchakra. On their way they killed Hidimb and at Ekchara they slew Vak. Then, they proceeded to Panchal where they obtained Draupadi for wife. From Panchal they came back to their capital and lived peacefully there for some time. Draupadi gave birth to five sons—Prativindya by Yudhishthir, Sutsom by Bhim Shrutkirti by Arjun, Shatanik by Nakul and Shrutkarma by Sahdev. 74.

पुत्रंनिरमित्रंनामाजनयत् ॥ ७८ ॥ सहदेवोऽपिमाद्रीमेव स्वयम्वरेविजयां नामोपयेमे मद्रराजस्यद्युतिमतो दुहितरंतस्यांपुत्र मजनयत्सुहोत्रंनाम ॥ ७९ ॥ भीमसेनस्तुपूर्व मेव हिडिम्बायांराक्षसं घटोत्कचं पुत्रमुत्पादयामास ॥ ८० ॥ इत्येतेएकादश पाण्ड वानां पुत्रास्तेषांवंशकरोऽभिमन्युः ॥ ८१ ॥ सविराटस्यदुहितर मुपयेमेउत्तरांनाम। तस्यामस्य परासुर्गर्भोऽभवत्तमुत्सङ्गेन प्रतिजग्राहपृथानियोगात् । पुरुषोत्तमस्य वासु देवस्य पाण्मासिकंगर्भमहमेनं जीवयिष्यामिति ॥ ८२ ॥ सभगवतावासुदेवेनास- ञ्जातवलवीर्य पराक्रमोऽकालजातोऽस्त्राग्निना दग्धस्तेजसास्वेनसजीवितः जीवयित्वा चैनमुवाचपरिक्षीणे कुलेजातोभवत्वयं परीक्षिन्नामेति ॥ ८३ ॥ परीक्षित्खलुमाद्रवतीं नामोपयेमेत्वन्मातरंतस्यां भवान्जनमेजयः ॥ ८४ ॥ भवतोवपुष्टमायांद्वौ पुत्रौ जज्ञातेशतानीकः शंकुकर्णश्चशतानीकस्य वैदेह्यांपुत्र उत्पन्नोऽश्वमेधदत्तइति ॥ ८५ ॥

चेदिराज की पुत्री करेणुमती से बिवाह करके उस से निरमित्र नाम पुत्र उत्पन्न किया सह देव ने स्वयम्बर में द्युतिमान मद्रराज की कन्या विजया से विवाह किया उस से सुहोत्र नामक पुत्रका जन्म हुआभीमसेनने पहले ही हिडिंवासे घटोत्कच राक्षस उत्पन्न कियाथा पांडवोंके यह ग्यारह पुत्रथे परन्तु अभिमन्युसेही वंशकी रक्षाहुई॥८१॥अभिमन्युने बिराट राजकी पुत्री उत्तरा से बिवाह किया उस से उत्तरा के गर्भ में छः महीने का अस्त्राग्नि से जला हुआ पुत्र पृथ्वी पर गिरा परन्तु पुरुषोत्तम बासुदेव ने कुंतीसे यह कहा मैं इस संतान को जिलाऊंगा उन के कहने से कुंतीने उस मरेहुए बालकको गोद में लिया और भगवान बासुदेवने उसअकाल उत्पन्न बल वीर्य पराक्रमयुक्त अस्त्राग्निसे जलेहुए बालकको अपने तेजसे जिलाया और कहा कि कुलके परीक्षित होनेपर यह बालक उत्पन्नहुआ है इसलिये इसका नाम परीक्षित होगा ॥८३॥ हे महाराज परीक्षित ने माद्रवती नामवाली आपकी मातासे विवाहकिया उस माद्रवती से आप, जन्मेजय नामसे उत्पन्न हुए आपने बपुष्टमा नामवाली रानी से शतानिक और शंकुकर्ण दोपुत्र उत्पन्न किये हैं शतानीक के

Yudhishthir won Shaivya Raj's daughter Devika at Swayamvar. Youdheya was born of her. Bhim married Kashiraj's daughter Balandhara and had by her a son named Sarwak. Arjun in Dwarka eloped with Vasudev's sister Subhadra and returned safely to his capital. There a son named Abhimanyu was born of her. Nakul married Chediraj's daughter Karendumati and had by her a son named Nirmav. Sahdev won at Swayamvar Madraraj's daughter, Bijaya and had by this marriage a son named Suhotra. Bhimsen had already a son, Ghatotkach by his Rakshasi wife Hidimba. The Pandavas had eleven sons in all. Of them Abhimanyu was the perpetuator of the line. 81. Abhimanyu married Biratraj's daughter, Uttara. Her embryo of six month's standing fell on earth by the hurt caused by a fire arm. The best of men Vasudev brought it back to life. By his order Kunti took the

एषपूरोर्वंशःपाण्डवानाञ्च कीर्त्तितोधन्यःपुण्यः परमपवित्रःसततंश्रोतव्यो ब्राह्मणैर्नियमवद्भिरनन्तरं क्षत्रियैःस्वधर्मनिरतैः प्रजापालनतत्परैर्वैश्यैरपिच श्रोतव्योऽधिगम्यश्च । तथाशूद्रैरपि त्रिवर्णशुश्रूषुभिः श्रद्दधानैरिति ॥ ८६ ॥ इतिहासमिमं पुण्यमशेषतः श्रावयिष्यन्तियेनराः । श्रोष्यन्तित्वानियतात्मानो विमत्सरामैत्रा वेदपरास्तेऽपिस्वर्गजितः पुण्यलोकाभवन्ति सततंदेवब्राह्मण मनुष्याणांमान्याः सम्पूज्याश्च ॥८७॥ परंहीदंभारतंभगवताव्यासेनप्रोक्तंपावनं येब्राह्मणादयोवर्णाःश्रद्दधानाअमत्सरमैत्रावेदसम्पन्नाः श्रोष्यन्तितेऽपिस्वर्गजितः सुकृतिनोऽशोच्याःकृताकृतेभवन्ति ॥ ८८ ॥ भवतिचात्रश्लोकः । इदंहिवेदैःसमितं पवित्रमपिचोत्तमम् । धन्यंयशस्यमायुष्यं श्रोतव्यंनियतात्मभिः ॥ ८९ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पूरुवंशानुकीर्त्तने पञ्चनवतोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

वीर्य और वैदेही के गर्भ से अश्वमेध दत्त नामक एक पुत्र उत्पन्नहुआ है हे जन्. पूरु और पांडवोंकी यह वंश कथा कहचुका धन्य,पुण्यभरी और परम पवित्रयह कथा नियमसे ब्राह्मण लोग अपने धर्म में तत्पर व प्रजापालने में लगेहुए क्षत्रियगण वैश्यगण और इन तीनों वर्णोंके सेवक शूद्रगण अवश्यसुनें॥८६॥और इसका अर्थ जानें जो सब देवपरायण ब्राह्मण और दूसरे मनुष्य अहंकार रहित और संयतहोकर इस पवित्र इतिहासको सम्पूर्ण सुनें या सुनावेंगे वह स्वर्गको जीतकर पुण्यलोकमें बसेंगे और देवता और ब्राह्मण और दूसरे मनुष्यों के पूजनीयहोंगे।८७।यह परम पवित्र महाभारत भगवान् वेदव्यास ने बनाया है जो वेदज्ञानी ब्राह्मणादि चारोंवर्ण अहंकार रहित और श्रद्धायुक्त द्वेषरहित होकर इसको सुनेंगे वे सुकृतशाली और जपकारी होंगे और पापाचरण करने परभी शोकदशाको नहीं प्राप्तहोंगे देवताओंकी तरह पवित्र उत्तम धन और यशका बढाने वाला यह महाभारत नियत आत्मा ओं के सुनने योग्य है ॥ ८९ ॥

dead child in her lap and Bhagwan Vasudev revived the untimely born, mighty child, burnt by the fire of the missile. He then said, "This child was born when the line was nearly extinct, therefore, his name shall be Parikshit. Parikshit married Madravati, your mother, who brought forth *you*, Janamejaya. You have two sons–Shatanik and Shankukarn, by our wife Bapushtama. Shatanik's wife Baidehi has given birth to a son–Ashwamedhdatta. I have told, O king, the history of the Paurav dynasty. This holy history should be heard by Kshatrias, Vaishyas and Shudras from the holy Brahmans. All who hear or read this history shall win heaven and shall be respected by men and gods. 87. Vyas made this holy Bharat. Those who hear this history shall be freed from sins and shall acquire heaven. Holy like the Vedas, good, increasing wealth, fame and life, this Mahabharat is worthy of being heard by good men. 89.

वैशम्पायनउवाच । इक्ष्वाकुवंशप्रभवो राजासीत्पृथिवीपतिः । महाभिषइतिख्यातः सत्यवाक्सत्यविक्रमः ॥ १ ॥ सोऽश्वमेधसहस्रेण राजसूयशतेनच । तोषयामासदेवेशं स्वर्गंलेभेततःप्रभुः ॥ २ ॥ ततःकदाचिद्ब्रह्माणमुपासाञ्चक्रिरेसुराः तत्रराजर्षयोह्यासन् सचराजामहाभिषः ॥ ३ ॥ अथगङ्गासरिच्छ्रेष्ठा समुपायात्पितामहम् । तस्यावासःसमुद्धूतं मारुतेनशशिप्रभम् ॥४॥ ततोऽभवन्सुरगणाः सहसावाङ्मुखास्तदा । महाभिषस्तुराजर्षिर शङ्कोदृष्टवान्नदीम् ॥५॥ सोपध्यान्तो भगवता ब्रह्मणातुमहाभिषः । उक्तश्चजातोमर्त्येषु पुनर्लोकानवाप्स्यसि ॥ ६ ॥ सचिन्तयित्वानृपति न्नृपानन्यांस्तपोधनान् । प्रतीपंरोचयामास पितरंभूरितेजसम् ॥ ७ ॥ महाभिषन्तुतंदृष्ट्वा नदीधैर्य्याच्च्युतंनृपम् । तमेवमनसाध्यायन्त्यु पावर्त्तत्सरिद्वरा ॥ ८ ॥ सातुविध्वस्त वपुषः कश्मलाभिहतान्नृप । ददर्शपथिगच्छन्ती वसून्देवान् दिवौकसः ॥ ९ ॥ तथारूपांश्च

अध्याय ९६ ॥

वैशम्पायनने कहा कि इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न महाभिष नामवाला सत्यवादी और सत्य पराक्रमी राजाथा उसने सहस्र अश्वमेध और सौ राजसूर्य यज्ञ करके देवराज को पसन्न किया इस से वह अंतकाल में स्वर्ग को गया एक समय देवतालोग ब्रह्माजीकी उपासनाकर रहेथे उससमय बहुतसे राजर्षि महाभिष सहित उस स्थानमें उपस्थितथे।३। फिर नदियों में प्रधान गंगा पितामह के सामने उपस्थित हुई उसका चन्द्र प्रकाश सदृश वस्त्र पवन से उड़ता देखकर देवताओं ने मुँहनीचे करलिये परन्तु राजर्षि महाभिष निःशंकचित्त से उसीतरह देखतारहा।५।इसलिये भगवान ब्रह्माने महाभिष को शापदेकर कहा तुम मर्त्य लोक में जन्मलोगे और कुछ काल पीछे फिर पुण्यलोकमें आसकोगे।६। राजा महाभिषने राजाओं और तपोधनों का कुछ काल ध्यान करके तेजस्वी राजा प्रतीप के वीर्य से जन्मले

CHAPTER XCVI

Vaishampayan said, "There was in the family of Ikshwaku, a truthful and valiant king, named Mahabhish, who had gratified the king of gods by performing a thousand Ashwamedh and hundred Rajsuya sacrifices and consequently entered heaven. Once upon a time, when the gods were worshipping Brahma in the presence of many Rajarshis including Mahabhish, 3. Ganga entered the audience hall and her moon-white dress was uplifted by the wind. All the gods cast down their heads but the Rajarshi Mahablish gazed on at her attentively. For this he was cursed by Brahma who said, "You will be born on the earth and shall return here after some time. 6. The king recounted the names of kings and ascetics and at length expressed a desire to be born in the house of Pratip. Ganga looked at the discomfiture of Mahabhish with

तानृदृष्ट्वा पप्रच्छसरितांवरा । किमिदंनष्टरूपाःस्थ कच्चित्क्षेमंदिवौकसाम् ॥ १० ॥
तामूचुर्वसवोदेवाःशप्ताःस्मोवैमहानदि। अल्पेऽपराधेसंरम्भाद्वशिष्ठेनमहात्मना । ११ ।
विमूढाहिवयंसर्वे प्रच्छन्नमृषिसत्तमम् । सन्ध्यांवशिष्ठमासीनं तमत्यभिसृताःपुरा। तेन
कोपाद्वयंशप्ता योनौसम्भवतेतिह ॥ १२ ॥ नतच्छक्यंनिवर्त्तयितुं यदुक्तंब्रह्मवादिना।
त्वमस्मान्मानुषी भूत्वा सृजपुत्रान्वसून्भुवि ॥ १३ ॥ नमानुषीणांजठरं प्रविशेमवयं
शुभे। इत्युक्तातैश्च वसुभिस्तथेत्युक्त्वाब्रवीदिदम् ॥ १४ ॥ गङ्गोवाच। मर्त्त्येषुपुरुषश्रेष्ठः
कोवःकर्त्ताभविष्यति ॥१५॥ वसवऊचुः। प्रतीपस्यसुतोराजा शान्तनुर्लोकविश्रुतः ।
भवितामानुषेलोके सनःकर्त्ताभविष्यति ॥ १६ ॥ गङ्गोवाच । ममाप्येवंमतंदेवा यथ
मांवदतानघाः । प्रियंतस्यकरिष्यामि युष्माकञ्चैतदीप्सितम् ॥ १७ ॥ वसवऊचुः ।

नेकी अभिलाषा की गंगा राजा महाभिष को अधैर्य्य देखकर मनही मनमें उसका विचार करती चलीगई जातेहुए उसने स्वर्ग से गिरायेहुए वसु देवताओंको मनकी पीड़ा से दुःखी देखा ।१०। हेराजन् भागीरथीने उनको इसदशा में देखकर पूछा कि तुम क्यों गिराये जाते हो देवताओं का कोई अमंगलतो नहीं हुआ वसुओं ने कहा हे महानदी वसिष्ठने थोड़े से पसे क्रोधित होकर, हमको शाप दिया है ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ट छिपकर सन्ध्योपासन कर रहेथे हम उनको लाँघके चले गये इससे क्रोधित होकर उन्होने हमको शाप दिया कितुम नरयोनिमें जन्मलो॥१२॥ब्रह्मज्ञानी महर्षिने जो कहाहै वह टलनहीं सकेगा इसलिये तुम पृथ्वी में मानवीबन कर हमको पुत्रबनाओ । हे शुभे हम मानवी के पेट में नहीं आयँगे गंगाने वसुओं की बातस्वीकार की और पूछा कि मर्त्य लोक में कौन से श्रेष्ठ पुरुष से तुम्हारा जन्महोगा॥१५॥वसुओंनेकहा कि पृथ्वीमें प्रतीपराजाके पुत्र शांतनु नाम तीनोंलोकमें प्रशंसनीय राजा होंगे हम चाहते हैं कि वोह हमारे जन्म दाताहों गंगाने कहा हे निष्पाप देवताओं तुम जैसा कहते हो वह मुझे स्वीकार है मैंने उस राजा शांतनु का

compassion and went away thinking about him. In the way she saw the heavenly Basus falling down and asked the reason. They replied, " Bashisht has cursed us for a trivial offence and by his curse we shall have to be born on the earth. 12. His word cannot be false. We therefore pray that you may be pleased to assume human shape to give us birth. Thus we will be saved the disgrace of entering the womb of a woman." She consented and said, " Who will be your father on earth ?" 15. The Vasus said, " We wish to become the sons of Shantanu, the son of king Pratip." Ganga agreed with them. The Vasus further requested her to throw them into water as soon as they should be born so that, they might not remain long on earth." Ganga said, " I shall do as you desire. But in order that my union with Shantanu, desirous of offspring, may

जातान्कुमारान् स्वानपसुमक्षेप्तुंत्वमर्हसि । यथानचिरकालंनो निष्कृतिःस्यात्रिलोकगे ॥ १८ ॥ गंगोवाच । एवमेतत्करिष्यामि पुत्रस्तस्याविधीयताम् । नास्यमोघः सङ्गमःस्यात् पुत्रहेतोर्मयासह ॥ १९ ॥ बसवऊचुः । तुरीयार्द्धंप्रदास्यामो वीर्यस्यैकैकशोवयम् । तेनवीर्य्येणपुत्रस्ते भवितातस्यचेप्सितः ॥ २० ॥ नसम्पत्स्यतिमर्त्त्येषु पुनस्तस्यतुसन्ततिः । दस्मादपुत्रःपुत्रस्ते भविष्यतिसवीर्यवान् ॥ २१ ॥ एवंतेसमयंकृत्वा गङ्गयावसवःसह । जग्मुःसंहृष्टमनसो यथासङ्कल्पमञ्जसा॥ २२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि महाभिषोपाख्याने-
षणवतोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

वैशम्पायनउवाच । ततःप्रतीपोराजासीत् सर्वभूतहितःसदा । निषसादसमावह्वीगङ्गाद्वारगतोजपन् ॥ १ ॥ तस्यरूपगुणोपेता गङ्गास्त्रीरूपधारिणी । उत्तीर्यसलिला-

अनुष्ठान करने की प्रतिज्ञाकी है उसी को तुम भी चाहतेहो वसुओं ने कहा । हे तीनों लोक में जानेवाली जब हम तुम्हारेपुत्र होकर जन्मलें तब तुम हमको जल में फेंक देना कि सदा हमको मर्त्यलोक में रहना न पडे॥१८॥गंगाने कहाकि तुम जैसा कहतेहो वही होगा परन्तु पुत्रार्थी शान्तुका मुझसे मिलना व्यर्थ नहो इसलिये ऐसा विधान करो कि मेरा एक पुत्र जीवित रहे वसुओं ने कहा कि हम में से हरएक अपने तेजका आठवां भाग देकर तुम्हारी और उसकी अभिलाषा पूर्ण करेंगे और एक पुत्र होकर जीतारहेगा परंतु मर्त्यलोक में उसका वंशनहीं रहेगा वह वीर्यवान् निःसंतान होगा वसु गंगा से ऐसा नियम करके उसी क्षण प्रसन्न चित्त हो मनमाने स्थान को गये ॥ २२ ॥

अध्याय ९७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि सब भूतों के हितकारी राजा प्रतीप बहुत वर्षतक गंगाके किनारे बसकर जप करते रहे॥१॥रूप गुणयुक्त अति लुभाने वाली स्त्री रूपिणी दिव्यरूपा मनस्विनी, गंगाजल से निकल कर राजर्षि के शालवृक्ष के समान दहनी जंघा पर जावैठी

not become futile, you must so arrange as to leave a son." 19. The Vasus said, " Each of us shall impart an eighth part of his glory to produce a son who will live long on the earth but shall leave no issue." Having so arranged with Ganga, the Vasus left her with a light heart." 22.

CHAPTER XCVII

Vaishampayan said, " King Pratip stayed very long at the bank of the Ganges to perform his worship. 1. The beautiful and enchanting goddess Ganga came out as a woman and sat on the right knee of the Raja who asked her to express her desire. The

त्तस्माल्लोभनीयतमाकृतिः ॥ २ ॥ अधीयानस्यराजर्षेर्दिव्यरूपामनस्विनी । दक्षिणं
शालस्कंधाश मूरुंभेजेशुभानना ॥ ३ ॥ प्रतीपस्तुमहीपालस्ता मुवाचयशस्विनीम् ।
करोमिकिंतेकल्याणि प्रियंयत्तेऽभिकांक्षितम् ॥ ४ ॥ स्त्र्युवाच । त्वामहंकामयेराजन्
भजमानांभजस्वमाम् । त्यागःकामवतीनांहि स्त्रीणांसद्भिर्विगर्हितः ॥ ५ ॥ प्रतीप
उवाच।नाहंपरस्त्रियंकामाद् गच्छेयंवरवर्णिनि।नचासवर्णांकल्याणि धर्म्यमेतद्धिमेव्रतम्
॥ ६ ॥ स्त्र्युवाच । नाश्रेयस्यस्मिनागम्या नवक्तव्याचकर्हिचित् । भजन्तींभजमां
राजन् दिव्यांकन्यांवरस्त्रियम् ॥७॥प्रतीपउवाच । त्वयानिवृत्तमेतत्तु यन्मांचोदयसि
प्रियम् । अन्यथाप्रतिपन्नं मांनाशयेद्धर्मविप्लवः ॥ ८ ॥ प्राप्यदक्षिणमूरुंमे त्वमाश्लिष्टा
वराङ्गने । अपत्यानांस्नुषाणांच भीरुविद्ध्येतदासनम् ॥ ९ ॥ सव्योरुःकामिनी भो-
ग्यस्त्वयासाचविवर्जितः । तस्मादहंनाचरिष्ये त्वयिकामंवराङ्गने ॥ १० ॥ स्नुषामे
भवसुश्रोणि पुत्रार्थंत्वांवृणोम्यहम् । स्नुषापक्षंहिवामोरु त्वमागम्यसमाश्रिता ॥ ११ ॥

राजा प्रतीप ने उस स्त्री से कहा हे कल्याणी ! तुम्हारा क्या प्रियकार्य करूं ॥ ४ ॥ स्त्रीने कहा हे महाराज मैं तुम्हारी कामना करके आईहूँ तुमभेरी कामना पूरी करो साधु लोग इच्छावती स्त्री को त्यागदेना दूषित समझते हैं प्रतीप ने कहा । हेसुन्दरी ! मेरा धर्मयुक्त मत यहहै कि मैं कामवश पराई स्त्री या दूसरे वर्णकी स्त्रीसे नहीं मिलता उस स्त्रीनेकहा हे महाराज मैं कुलक्षणा न मिलनेके योग्य और निंदित स्त्री नहींहूँ मैं प्रार्थनाकर रहीहूँ तुमभी मेरी कामना पूरीकरो॥७॥प्रतीपनेकहा कि तुम जिस प्रिय कार्यके लिये मुझे लालच देती हो उससे मैं निवृत्तहूं यदि इस समय उसके विरुद्ध आचरण करूंतो यह अधर्म मुजको नष्ट करेगा विशेष कर तुम मेरी दाहिनी जंघा पर बैठीहो । हे सुन्दरि ! पुरुषकी दहनी जंघा पुत्र,कन्या, और पुत्रवधुके बैठनेकी जगहहै तुम बायीं जंघापर नहीं बैठी इस लिये मैं तुमसे कामयुक्त आचरण नहीं करसक्ता तुम आकर मेरी उस जंघापर बैठीं जो पुत्रवधू की बैठनेकी जगहहै इसलिये तुम मेरीपुत्रवधूहो मैंने अपने पुत्रके लिये तुमको लेलिया ११

woman said, "I love you. You must love me. The good donot discard a woman full of desire." Pratip said, "Beautiful woman, I do not wish to possess a woman who belongs to another or, to a different caste." The woman replied, "O king, I am not a woman unworthy of you. I am a beautiful woman, the object of desire, a heavenly maid, and wishing to make you my lord." 7. Pratip said, "I am above the temptation. Dharm will destroy me if I act unlawfully. Besides you have occupied my right knee, the seat of a son, daughter, or, son's wife; while the seat of one's own wife is the left knee. I can not therefore, make you my wife. You may marry my son and I accept you as my son's wife." 11. The woman said, "I agree to become your son's wife for, you are the

गङ्ग्युवाच ॥ एवमप्यस्तुधर्मज्ञ संयुज्येयंसुतेनते । त्वद्भक्त्यातुभजिष्यामि प्रख्यातंभारतं
कुलम् ॥ १२ ॥ पृथिव्यांपार्थिवायेच तेषांयूयंपरायणम् । गुणानहिमयाशक्या वक्तुं
वर्षशतैरपि ॥ १३ ॥ कुलस्ययेत्वःप्रथितास्तत् साधुत्वमथोत्तमम् । समयेनेहधर्मज्ञ आ-
चरेयंचयद्विभो । तत्सर्वमेवपुत्रस्तेन मीमांसेतकर्हिचित् ॥ १४ ॥ एवंवसन्तीपुत्रेते
वर्द्धयिष्याम्यहंरतिम् । पुत्रैःपुण्यैःप्रियैश्चैव स्वर्गंप्राप्स्यतितेसुतः ॥१५॥ वैशम्पायन
उवाच । तथेत्युक्त्वातुसाराजंस्तत्रैवान्तरधीयत । पुत्रजन्मप्रतीक्षन्वै सराजातद्धार
यत् ॥ १६ ॥ एतस्मिन्नेवकालेतु प्रतीपःक्षत्रियर्षभः । तपस्तेपेसुतस्यार्थे सभार्य्यःकुरु
नन्दन ॥ १७ ॥ तयोःसमभवत्पुत्रो वृद्धयोःसमहाभिषः । शान्तस्यजज्ञेसन्तान स्त-
स्मादासीत्सशान्तनुः ॥ १८ ॥ संस्मरंश्चाक्षयाँल्लोकान् विजातान्स्वेनकर्मणा । पुण्य
कर्मकृदेवासीच्छान्तनुः कुरुसत्तमः ॥१९॥ प्रतीपःशान्तनुंपुत्रं यौवनस्थंततोऽन्वशात् ।

स्त्री ने कहा । हे धर्मज्ञ तुम अपने पुत्रसे मेरा विवाह करना चाहते हो यह मुझ
को स्वीकार है तुमपर भक्ति करके मैं इसवंश को बढाऊंगी पृथ्वीपर जितने राजा हैं
तुम उनकी गतिहो तुम्हारे वंशमें जितने गुणहैं वह मैं सैकडों वर्षमेंभी पूरेनहीं करसक्ती
।१३। ऋषिवंश में जो प्रख्यातथे उनकी साधुता और श्रेष्टता कही नहीं जासकती हेधर्मज्ञ !
मेरी एक विनय स्वीकार करनीहोगी कि मैं जो कुछकरूं उसको कभी तुम्हारा पुत्र न रोके
इसी नियम से मैं तुम्हारे पुत्रसे प्रेम बढाऊंगी तुम्हारा पुत्र प्रियकार्य और पुत्र से स्वर्ग
कीप्राप्ति करेगा ।१५। वैशम्पायनने कहा हे राजन् ! गंगा यह कहकर उसीस्थानमें लोपहुई
राजानेपुत्र की इच्छा करके वही निश्चय किया और उसीसमय से क्षत्रियों में श्रेष्ठ कुरू
कुलदीपक प्रतीप स्त्री सहित पुत्र के लिये तपकरने लगे बुढापें में दम्पति से महात्मा म-
हाभिषने जन्म लिया बूढेराजा के शांत चित्तहोने पर उस सन्तानका जन्महुआ ॥१८॥
इसलिये उसकानाम शांतनु रक्खागया कुरूकुल श्रेष्ट शांतनु अपने कर्मसे अक्षयलोक जी
तनेके लिये पुण्य कर्मोंका अनुष्ठान करने लगा फिरराजा प्रतीप अपने पुत्र शांतनु को तरुण

greatest monarch on earth and I cannot give the praise of your family its due even in a thousand years. There have been many virtuous kings in your family. 13. However, I make one condition. Your son shall not question my doings. On this condition I shall study to love your son who will get offspring and heaven, the result of good deeds. 15. *Vaishampayan* said, " Having so said, Ganga disappeared and the king became desirous of producing a son. He with his wife, practised asceticism to get a son. In her old age, Dampati, the wife of the king, gave birth to Mahabhish. The king had got the son in his old age. 18. When the child became young, the king said to him, " Formerly a woman had come to me desirng to do you good. Donot ask any questions about her name and

पुरास्त्रीमांसमभ्यागा च्छान्तनोभूतयेतव ॥ २० ॥ त्वामाव्रजेद्यदिरहः सापुत्रवरव-
र्णिनी । कामयानाभिरूपाढ्या दिव्यस्त्रीपुत्रकाम्यया । २१ ॥ सात्वयानानुयोक्तव्या
कासिकस्यासिचांगने । यच्चकुर्यान्नतत्कर्म सामष्टव्यात्वयानघ । मन्नियोगाद्भजन्तीं
तांभजेथाइत्युवाचतम् ॥ २२ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवंसन्दिश्यतनयं प्रतीपःशान्तनुं
तदा । स्वेचराज्येऽभिषिच्यैनं वनंराजाविवेशह ॥ २३ ॥ सराजाशान्तनुर्धीमान् देव
राजसमद्युतिः । बभूवमृगयाशीलः सततंवनगोचरः ॥ २४ ॥ समृगान्महिषांश्चैव वि-
निघ्नन्राजसत्तमः । गंगामनुचचारैकः सिद्धचारणसेविताम् ॥ २५ ॥ सकदाचिन्महा
राज ददर्शपरमांस्त्रियम् । जाज्वल्यमानांवपुषा साक्षाच्छ्रियमिवापराम् ॥ २६ ॥ सर्वा
नवद्यांसुदतीं दिव्याभरणभूषिताम् । सूक्ष्माम्बरधरामेकां पद्मोदरसमप्रभाम् ॥२७॥
तांदृष्ट्वाहृष्टरोमाभूद्विस्मितोरूपसम्पदा । पिबन्निवचनेत्राभ्यां नातृप्यतनराधिपः

देखकर बोला हे शांतनु तुम्हारे मंगल के लिये पहले एक सुन्दरी नारी मेरेपास आईथी हे पुत्र । वह अनुपम रूपवाली कामिनी यदि पुत्रकी कामना से तुम्हारे पास एकान्त में आवे तौ तुम उससे यह न पूंछना कि तू कौन और किसकी बेटी है और जो कुछ कर्म वह करै वहभी उससे न पूंछना हे अनघ तुम मेरी इसआज्ञाका पालनकरना।२२।वैशम्पा-यनने कहा कि राजा प्रतीप शांतनु को यह आज्ञा देकर अपने राज्य पर अभिषिक्त कर के वनको गया इन्द्रके समान द्युतिमान श्रीमान राजाशांतनु वनमें जाकर सदा मृगया कियाकरताथा।।२४।। एकसमय वह राजाओंमें श्रेष्ठ मृगको वधकर के शुद्ध आचरणवाला गंगाके सामने अकेला घूमरहाथा उससमय साक्षात् लक्ष्मीकेसमान कान्तिवाली अनिंदिता दिव्य आभूषणों से सजी शोभा देनेवाले दांतोंसे शोभित एक परम सुंदरी नारीको देखा ॥२७॥राजा शांतनुने पद्मोदर सदृश सुंदरी रमणीको पतला वस्त्रपहने हुये देखकर उस के रूपसे आश्चर्य माना और उसको रोमांच होगया उसके नेत्ररूपी दो चकवे रूप चन्द्र

parentage, when she again seeks you in private with the desire of offspring, neither you shall question her doings. It is my command and desire and you shall deal with her accordingly 22. *Vaishampayan* says that the king, having told this to his son, decame a recluse. The wise king Shantanu, like Indra in glory, used to hunt the deer of the forest.24. One day as he was roaming along the bank of the Ganges after chase, he saw a woman, splendid as Lakshmi, faultless, decked with celestial ornaments, and of beautiful teeth.27. The king was much astonished at the beauty of her lotus like body shining through the fine clothes and could not restrain his desire to look at her as long as he could, The beautiful woman, too, struck by the arrow of love, could not turn her eyes from looking at the beautiful and manly features of the king. The king said to her in sweet

॥२८॥साचदृष्ट्वैवराजानं विचरन्तंमहाद्युतिम्। स्नेहादागतसौहार्दा नातृप्यतविलासिनी ॥ २९ ॥तामुवाचततोराजा सान्त्वयन्श्लक्ष्णयागिरा। देवीवादानवीवात्वं गन्धर्वीचाथवाप्सराः ॥ ३० ॥ यक्षीवापन्नगीवापि मानुषीवासुमध्यमे। याचेत्वांसुरगर्भाभे भार्यामेभवशोभने ॥ ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि शान्तनूपाख्याने सप्तनवतोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

वैशम्पायनउवाच। एतच्छ्रुत्वावचोराज्ञः सस्मितंमृदुवल्गुच। वसूनांसमयंस्मृत्वाथाभ्यगच्छदनिन्दिता ॥ १ ॥ उवाचचैवराज्ञःसा ह्लादयन्तीमनोगिरा। भविष्यामिमहीपाल महिषीतेवशानुगा ॥२॥ यत्तुकुर्यामहंराजन् शुभंवायदिवाशुभम्। नतद्वारयितव्यास्मिन् वक्तव्यातथाप्रियम् ॥ ३ ॥ एवंहिवर्तमानेऽहं त्वयिवत्स्यामिपार्थिव। वारिताविप्रियंचोक्ता त्यजेयंत्वामसंशयम् ॥ ४॥ तथेतिराज्ञासातूक्ता तदाभरतसत्तम।

माके अमृतको पीकर तृप्त नहीं हुआ और बिलसिनी नारी भी राजाको अति उज्वलरूप से चमकते और घूमते देखकर स्नेह और प्रेममें फँसकर अपनी देखने की लालसा पूर्ण न करसकी राजाने उसको मीठी बातों से समझा कर कहा हे सुन्दरी। देवीकी समान कांतिवाली मैं तुमसे यह प्रार्थनाकरताहूँ कि तुम चाहे देवी या दानवी, गंधर्वी या अप्सरा पन्नगी या यक्षी मानवी या जो कुछहो मेरी भार्या बनो ॥ ३१ ॥

अध्याय ॥ ९८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनिंदिता गंगा राजाकी मीठी और मनोहर वाणी मन्द २ हँसी के साथ सुनकर और वसुओं के नियम को स्मरण करके राजा के सामने गई और बातों से उस के चित्तको प्रसन्न करती हुई बोली हे राजन्। मैं तुम्हारी रानी और वशीभूता हूंगी पर मेरा कार्य यदि अशुभभी हो तो तुम रोकने या अप्रिय बात कहने नहीं पावोगे ॥३॥हेराजन् यदि तुम ऐसे नियमसे मेरेसाथ रहसको तो मैं तुम्हारेसाथ रहूंगी

tones, " O beautiful woman, a goddess in splendour' I request you, whether yoube goddess or Domoness, Gandharvi or Apsara, Pannagi or Yakshi or human being, to become my wife.31.

CHAPTER XCVIII

Vaishampayan continued that having heard the Raja's sweet words the faultless *Ganga* remembered her promise to Vasus and coming forward cheered the heart of the king with the following speech:- " I become your queen, O king, on condition that you will never question my deeds whether right or wrong and never speak harshly with me ! 3. I shall live with you on this condition only and on your acting against it I shall leave you. The king consented and the pair began to live happily to gether. The king was very happy and ever tried to please her. He did not think

महर्षभमतुलं के मे प्राप्यतं पार्थिवोत्तमम् ॥५॥ आसाद्य शांतनुस्तां च बुबुधे कामतो वशी । नप्रष्टव्येति मन्वानो नसतां किंचिदूचिवान् ॥ ६ ॥ सतस्याः शीलवृत्तेन रूपौदार्यगुणेन च । उपचारेण च रहस्तुतोष जगतीपतिः ॥ ७ ॥ दिव्यरूपा हि सा देवी गङ्गा त्रिपथगामिनी । मानुषं विग्रहं कृत्वा श्रीमन्तं वरवर्णिनी ॥ ८ ॥ भाग्योपनतकामस्य भार्य्या चोपनताभवत् । शांतनोर्नृपसिंहस्य देवराजसमद्युतेः ॥ ९ ॥ सम्भोगस्नेहचातुर्य्यैर्हावलास्यमनोहरैः । राजानं रमयामास यथा रेमे तथैव सः ॥ १० ॥ सराजा रतिसक्तत्वादुत्तमस्त्रीगुणैर्हृतः । सम्वत्सरानृतून्मासान् बुबुधेन बहून्गतान् ॥ ११ ॥ रममाणस्तया सार्द्धं यथाकामं नरेश्वरः । अष्टावजनयत् पुत्रांस्तस्याममरसन्निभान् ॥ १२ ॥ जातं जातं च सा पुत्रं क्षिपत्यम्भसि भारत । प्रीणाम्यहं त्वामित्युक्त्वा गङ्गास्रोतस्यमज्जयत्

यदि तुमने रोका या अप्रिय वाणी कही तो निश्चय तुमको त्याग दूंगी राजाके यह मानने पर गंगाने उस श्रेष्ठ राजा को प्राप्त कर अपार आनन्द पाया राजा शांतनुभी उसको पाकर और उसके वशमें होकर बहुत सुखसे रहने लगा पूछना उचित न समझकर उस से कुछ पूछता नहीं था परन्तु उसकी शीलता इच्छा व्योहार सुन्दरता, उदारता, और एकांत सेवासे संतुष्ट रहनेलगा॥७॥ सुन्दरी दिव्यरूप त्रिपथगामिनी देवी गंगा शोभनीय मानवी शरीर धारण करके इन्द्रके समान द्युतिमान राजा शांतनुके सौभाग्य से उसका मनोर्थ सफल करने वाली प्यारीपत्नी हुई और सम्भोग स्नेह, चतुराई, अच्छे नाच और मनोहर हाव भाव से राजा का मन बहलाने लगी राजाभी उस से प्रेम करता था वह अच्छी स्त्रीका वशीभूत होकर क्रीड़ा में आसक्त रहने लगा और उस को महीने वर्ष और ऋतुबीतते नहीं मालूमहोतेथे॥११॥राजाने उसके साथ क्रीड़ा करतेहुए समयर पर देवताओंकी समान आठपुत्र उत्पन्नकिये परन्तु जो पुत्र उत्पन्न होताथा उसको वह तुरन्त जलमें डालदेतीथी और यह कहकर उसको डुबादेतीथी कि तुमको प्रसन्न करतीहूं इस

it proper to ask questions about her previous life, but was content with her general good conduct, beauty, magnanimity and attendance on him in private. 7. The beautiful goddess Ganga, assuming the form of a woman, became the dear wife of the lion-hearted king *Shantanu* glorious like Indra. By her society, love, wisdom, elegant dancing, and heart-enchanting demeanour she captivated the heart of the king who loved her tenderly. The king did not notice the passing of months and years in the company of that beautiful woman. 11. She brought him forth eight god-like sons. But as soon as they were born she threw them, one by one, into water, saying, that she was doing this for their good. The king was much dissatisfied at this conduct of her, yet, feared to complain for the

॥ १३ ॥ तस्यतन्नप्रियंराज्ञः शान्तनोरभवत्तदा । नचतांकिञ्चनोवाच त्यागाद्भीतो महीपतिः ॥ १४ ॥ सथैनामष्टमेपुत्रे जातेप्रहसतीमिव । उवाचराजादुःखार्त्तः परीप्सन्पुत्रमात्मनः ॥ १५ ॥ माबधीःकस्यकासीति किंहिनत्सिसुतानिति । पुत्रघ्निसुमहत्पापं सम्प्राप्तंतेसुगर्हितम् ॥ १६ ॥ स्त्र्युवाच । पुत्रकामनतेहन्मि पुत्रंपुत्रवतांवर । जीर्णऽस्तुममवासोयं यथासमयःकृतः ॥ १७ ॥ अहंगङ्गाजन्हुसुता महर्षिगणसेविता देवकार्य्यार्थसिद्ध्यर्थं मुषिताहंत्वयासह ॥ १८ ॥ इमेऽष्टौवसवोदेवा महाभागामहौजसः । वशिष्ठशापदोषेण मानुषत्वमुपागताः ॥ १९ ॥ तेषांजनयितानान्यस्त्वदृते भुविविद्यते । मद्विधामानुषीधात्री लोकेनास्तीहकाचन ॥ २० ॥ तस्मात्तज्जननीहेतोर्मानुषत्वमुपागता । जनयित्वात्वमष्टौ जितालोकास्त्वयाक्षयाः ॥ २१ ॥ देवानांसमय

प्रकार क्रमशः सात पुत्रों के जलमें डालदेने पर गंगाका यह निर्दई वर्ताव राजाके लिये बड़ा असंतोषदायी हुआ परन्तु इस भय से कि कहीं छोड़कर चली न जाय उस से कुछ नहीं कहताथा आठवें पुत्र के जन्म होनेपर जब गंगा हँस रहीथी राजाने अतिदुःखीहोकर अपने पुत्रकी रक्षाके लिये उससे कहा कि पुत्रको न मारना तू कौन और किसकी बेटी है और क्यों पुत्रोंको मारडालती है और अनुचित और महत्पाप करतीहै ॥१६॥ स्त्रीने कहा हे पुत्र कामी तुम पुत्रवानों में श्रेष्ठ हुए तुम्हारे इस पुत्रको न मारूंगी पर मैंने जो नियम कियाथा उस के अनुसार तुम्हारे पास मेरे रहनेका समय वीतगया मैं महर्षियों से सेवित जाह्नवी गंगाहूं देवताओंके कार्य साधनेके लिये तुम्हारेपास रहीथी तुम्हारे पुत्र महातेजस्वी, महाभाग आठों वसु वसिष्ठजीके शाप से मनुष्य होकर जन्मेथे।१९। मर्त्यलोक में तुम्हारे सिवाय उनका जन्म दाता कोई नहीं था और मेरे विना कोई उनकी माताहोने योग्य भी नहीं थी इसलिये उनकी माता होने के लिये मैंने मानवी शरीर धारण किया था तुमने आठ वसुओं को जन्म देकर अक्षय लोक पाया मैंने वसुओं से यह नियम किया था कि

reason she would leave him. When Ganga was smiling at the birth of the eighth son, the king anxious for the safety of his son said, " Donot kill this son. Who art thou and whose daughter ? Why do you kill the sons. Why do you commit this sin ? "16. The waman said, " You have hereby become the formost among those having sons. I shall not kill this son of yours, but shall live no longer with you as was our contract. I am Janhu's daughter Ganga. I lived with you to perform the work of the gods. Your sons were the eight Basus of great glory and fortune, born among human beings by the curse of Basisht. 19. There was none in the world worthy of becoming their progenitor. I became a woman to give them birth. You have earned great merit by giving birth to the Basus. I had promised the Basus to throw them into the water

स्त्वेष वसूनांसंश्रुतोमया । जातंजातंमोक्षयिष्ये जन्मतोमानुषादिति ॥ २२ ॥ तत्ते शापाद्विनिर्मुक्ता आपवस्यमहात्मनः । स्वस्तितेऽस्तुगमिष्यामि पुत्रंपाहि महाव्रतम् ॥ २३ ॥ एषपर्यायवासोमे वसूनांसन्निधौकृतः । मत्प्रसूतिंविजानीहि गङ्गादत्तमिमं सुतम् ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि भीष्मोत्पत्तावष्टनवतोऽध्यायः ॥ ९८ ॥

शान्तनुरुवाच । आपवोनामकोन्वेष वसूनांकिञ्चदुष्कृतम् । यस्याभिशापात्तेसर्वे मानुषींयोनिमागताः ॥ १ ॥ अनेनचकुमारेण त्वयादत्तेनकिंकृतम् । यस्यचैवकृतेनायं मानुषेषुनिवत्स्यति ॥ २ ॥ ईशावैसर्वलोकस्य वसवस्तेचवैकथम् । मानुषेषूदपद्यन्त तन्ममाचक्ष्वजान्हवि ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तातदागङ्गा राजानमिदम ब्रवीत् । भर्तारंजाह्नवीदेवी शान्तनुंपुरुषर्षभ ॥ ४ ॥ गङ्गोवाच । यंलेभेवरुणःपुत्रं

जन्मलेतेही मैं उनको मानवी शरीर से मुक्त करूंगी इस लिये उनको जल में डालदिया और यह ऋषिके शाप से मुक्तहुए तुम इस महाव्रतको पालो मैंने तुम्हारेलिये वसुओं से एक पुत्र मांगाथा इससे हर एक वसुने आठवें भाग से इस पुत्रको उत्पन्न किया है तुम्हारा मंगलहो मैं जाती हूँ मेरेउत्पन्न कियेहुए इस पुत्रको गंगादत्त अर्थात् गंगा का दियाहुआ जानना ॥ २४ ॥

अध्याय ९९ ॥

शांतनुने कहा कि आपवनाम के कौनसे ऋषि हैं ? वसुओंने उनका क्या दोषकिया था कि उन सब ने ऋषिके शाप से मनुष्य शरीर धारणकिया और तुम्हारेदियेहुए इसपुत्र ने क्या दोष कियाथा जिसके फल से वह इस लोकमें रहेगा ? हे जान्हवी ! वसु सब लोकोंके ईश्वरहोकर क्यों मर्त्यलोकमें उत्पन्नहुए यह मुझसे कहो।३। वैशम्पायन जीने कहा कि देवी जान्हवी गंगाने पुरुष श्रेष्ठपति राजा शांतनुसे यह कहा कि हे भारत पूर्वकाल में

---

to set them free from the confinement of human body and they have by this time become free from the curse of the Rishi. Take care of this son. May you be happy. I am going away. I begged for you a son from the Basus and they have, each of them, given an eighth part of their being to produce a son. Call this son by the name of Gangadatta. 24

Chapter YCIX

Shantanu said, " Who was the Rishi and what fault of his did the Basus commit for which they were forced to be born on the earth ? Also, what sin was this son of yours guilty of, for which he will have to live here ? The Vasus are the lords of the worlds. Tell me the reason of their being born here." 3 Vaishampayan says that the goddess Ganga told that best of men, her husband,

पुराभरतसत्तम । वशिष्ठनामासमुनिः ख्यातआपवइत्युत ॥ ५ ॥ तस्याश्रमपदंपुण्यं मृगपक्षिसमन्वितम् । मेरोःपार्श्वेनगेन्द्रस्य सर्वर्त्तुकुसुमावृतम् ॥ ६ ॥ सवारुणिस्तप स्तेपे तस्मिन्भरतसत्तम । वनेपुण्यकृतांश्रेष्ठः स्वादुमूलफलोदके ॥ ७ ॥ दक्षस्यदु- हितायातु सुरभीत्यभिशब्दिता । गांप्रजातातुसादेवी कश्यपाद्भरतर्षभ॥ ८ ॥ अनुग्र हार्थंजगतःसर्वकामदुहांवरा । तांलेभेगांतुधर्मात्मा होमधेनुंसवारुणिः ॥ ९ ॥ सा तस्मिंस्तापसारण्ये वसन्तीमुनिसेविते । चचारपुण्येरम्येच गौरपेतभयातदा ॥ १० ॥ अथतद्वनमाजग्मुः कदाचिद्भरतर्षभ । पृथ्वाद्यावसवःसर्वे देवादेवर्षिसेवितम् ॥ ११ ॥ तेसदारावनंतच्च व्यचरन्तसमन्ततः । रेमिरेरमणीयेषुपर्वतेषुवनेषुच ॥ १२ ॥ तत्रैक- स्याथभार्य्यातु वसोर्वासवविक्रम । सञ्चरन्तीवनेतस्मिन् गांददर्शसुमध्यमा ॥ १३ ॥ नन्दिनींनामराजेन्द्र सर्वकामधुगुत्तमाम्।सविस्मयसमाविष्टा शीलद्रविणसम्पदा॥ १४॥

वरुणदेवके पुत्र वसिष्ठ मुनि आपव नाम से प्रसिद्धथे पर्वतोंमें श्रेष्ठ सुमेरु के समीप उन का पवित्र आश्रमथा जो मृग पक्षियों से गूँजताहुआ सब ऋतुओं में फलोंसे भराहता था हे भारत श्रेष्ठ.! वही पुण्यवान वरुणपुत्र मीठेफल मूल जलयुक्त उस वन के आश्रम में तपस्या कियाकरते थे॥७॥एक समय सुरभि नामवाली देवी दक्षपुत्रीने जगत् पर कृपाकरने के लिये कश्यप से एक कन्या उत्पन्नकी धर्मात्मा वरुणपुत्र ने उस कन्याको लेकर हवन धेनु बनाया सुरभिकी कन्या गौ उन मुनियों से सेवित रमणीय उपवन में रहती हुई नि- र्भय चरने लगी॥१०॥हे भरत श्रेष्ठ ! एक समय पृथु आदि वसुगण देवर्षि से सेवित उस वनमें आकर अपनी स्त्रियोंके साथ फिरनेलगे और रमणीय पर्वत और निकुंजमें इधर उधर क्रीडा करने लगे । हे इन्द्रके समान विक्रमवाले उन मेंसे एक वसुकी सुन्दरी स्त्रीने उस वन में फिरती हुई सुरभि की कन्या नन्दिनी को देखा। हे राजेन्द्र ! शील सम्पत से भरी

king Shantanu that the Rishi was Basisht, the son of Varun, also called Apav. His hermittage at Mount Sumeru resounded with the sounds of many a bird and quadruped. It was situated amidst flower and fruit bearing trees and the Rishi used to practice his asceticism there.7. Surbhi, the daughter of Daksh gave birth to a daughter for the good of the world. The righteous son of Barun made her his *havan dhenu* (cow to give butter etc for libations on fire). Surbhi's daughter, the cow roamed about freely in that forest.10. Once upon a time the Vasus with their wives came to the forest and rambled over the beautiful mountain and the vallies. One of Vasu's wives saw, Surbhi's daughter Nandini, roaming in the forest. She wondered at the mild looking, best of miltch cows, having goodly teets of good milk, of pretty tale and voice, good

पयेवैदर्शयामास तांगांगोवृषभेक्षण । आपीनाश्चसुदोग्ध्रीञ्च सुबालधिखुरां शुभाम् । उपपन्नांगुणैःसर्वैः शीलेनानुत्तमेनच ॥ १५ ॥ एवंगुणसमायुक्तां वसवेवसुनन्दिनी । दर्शयामासराजेन्द्र पुरापौरवनन्दन ॥ १६ ॥ द्यौस्तदातांतुदृष्ट्वैव गांगजेन्द्रेन्द्रविक्रम । उवाच राजंस्तांदेवीं तस्यारूपगुणानवदन् ॥ १७ ॥ एषागौरुत्तमादेवी वारुणेरसितेक्षणा । ऋषेस्तस्यवरारोहे यस्येदंवनमुत्तमम् ॥ १८ ॥ अस्याःक्षीरं पिबेन्मर्त्त्यः स्वादुयोवैसुमध्यमे । दशवर्षसहस्राणिसजीवेत् स्थिरयौवनः ॥ १९ ॥ एतच्छ्रुत्वातुसादेवी नृपोत्तमसुमध्यमा । तमुवाचानवद्याङ्गी भर्त्तारंदीप्ततेजसम् ॥ २० ॥ अस्तिमेमानुषेलोके नरदेवात्मजासखी । नाम्नाजितवतीनाम रूपयौवनशालिनी ॥ २१ ॥ उशीनरस्यराजर्षेः सत्यसन्धस्यधीमतः । दुहिताप्रथितालोके मानुषरूपसम्पदा ॥ २२ ॥ तस्याहेतोर्महाभाग सवत्सांगांममेप्सिताम् । आनयस्वामरश्रेष्ठ

हुई स्त्री नन्दनी ने गौ बल के समान आंखवाली सव काम धेनुओं में श्रेष्ठ वडे थनवाली, अच्छा दूधवाली सुन्दर पूँछ और स्वरवाली शुभ लक्षण, सुशीला, और गुणवती देखकर आश्चर्य युक्त अपने पति द्यु नामवाले बसुको दिखायाहो वसुने सुरभिकी पुत्रीको देखकर अपनी प्रियदेवी से उसका रूप और गुणबतलाकर कहा हे सुन्दरी जिस ऋषिका यह उत्तम तपोवन है उसीवरुण पुत्र ऋषि के हवनकी गौ यह कालेनेत्र वाली देवी सुरभीकी पुत्री है । हे सुन्दरी जो मनुष्य इस नन्दनी का मीठा दूध पियेगा वह अटल यौबन पाकर दस सहस्र वर्ष तक जीता रहेगा । हे नृपोत्तम उस सुन्दरी की वसु पत्नीने यह सुनकर अपने तेजस्वी पतिसे कहा॥२०॥कि मर्त्यलोक में रूप यौवनवाली भूदेवकी पुत्री मेरी सहेली है वह बुद्धिमान सत्य प्रेमी राजर्षि उशीनरकी बेटी है इसलोकमें उसकारूप संपद प्रसिद्ध है हे महाभाग उसके लिये मुझे बछड़े सहित इस गौके लेनेकी अभिलाषा

natured and having all the qualities and showed her to her husband the Vasu, named Dew. He praised the beauty and the good qualities of the cow and said, "O beautiful one, "This black eyed daughter of Surbhi belongs to the Rishi who owns this hermitage in the forest. He who will drink the milk of this cow, will enjoy his youth for ten thousand years. The wife hearing this, said to her lord of great glory, "I have a playmate, a princess of great beauty, named *Jitwati*, the daughter of the righteous monarch *Usinar*. She is unrivalled there in the wealth of beauty. I wish to possess this cow with her calf to make a present of to my playmate. O best among gods, bring me the cow soon. My playmate will have perpetual youth and health by drinking her milk. O faultness fortunate one fulfil this desire of my heart.' To please his love, the beautiful

त्वरितंपुण्यवर्द्धन ॥ २३ ॥ यावदस्याःपयःपीत्वा सासखीममयानद । मानुषेषुभवत्वे का जरारोगाविवर्ज्जिता ॥ २४ ॥ एतन्ममहाभाग कर्तुमर्हस्यनिन्दित । प्रियंप्रियतरं ह्यस्मान्नास्तिमेऽन्यत्कथञ्चन ॥२५॥ एतच्छ्रुत्वावचस्तस्याद्देव्याः प्रियाचिकीर्षया । पृथ्वाद्यैर्भ्रातृभिःसार्द्धं द्यौस्तदातांजहारगाम् ॥ २६ ॥ तयाकमलपत्राक्ष्यानियुक्तो द्यौस्तदानृप । ऋषेस्तस्यतपस्तीव्रं नशशाकनिरीक्षितुम् । हृतागौःसातदातेन प्रपातस्तु नतर्कितः॥२७॥अथाश्रमपदंप्राप्तः फलान्यादायवारुणिः । नचापश्यत्सगांतत्र सवत्सां काननोत्तमे॥२८॥ततःसम्मृगयामासवने तस्मिंस्तपोधनः । नाध्यागमच्चमृगयंस्तां गांमु-निरुदारधीः ॥ २९ ॥ ज्ञात्वातथापनीतां:तांवसुभिर्दिव्यदर्शनः । ययौक्रोधवशंसद्यः शशापचवसूंस्तदा ॥ ३० ॥ यस्मान्मेवसवोजह्रुर्गां वैदोग्ध्रीसुवालाधिम् । तस्मात्सर्वे जनिष्यन्ति मानुषेषुनसंशयः ॥ ३१ ॥ एवंशशापभगवान् वसूंस्तान्भरतर्षभ । वशं

है हे देवताओं में श्रेष्ठ शीघ्र उसगौ को लेआओ मेरी सहेली इस गौका दूध पीकर मर्त्यलोक में सदा युवा और रोग वर्जित रहेगी मेरा यह प्रिय कार्य आपके करने योग्य है इससे अधिक प्रिय मेरा कुछ और नहीं है॥२५॥ द्युनामवाले वसुने यह बात सुनकर अपनी प्रिय देवी का कार्य करने के लिये अपने भाइयों सहित कामधेनु को हरलिया हे राजन् ! वह उस समय अपनी कमल नेत्र वाली स्त्री के कहने में आकर उस ऋषि की कठोर तपस्या को अच्छी प्रकार न देखसका यह ध्यान विलकुल उसके मन में न आया कि इस गौके हरनेसे वे गिराये जायँगे॥२७॥ फिर वरुण पुत्र ऋषि फल लेकर आश्रम में आये परन्तु बछड़ासहित उस गौको न देखा तव वह बुद्धिमान् तपोधन उस गौको बन में इधर उधर ढूँढने लगा देर तक ढूढने से भी उसका पता न लगा तव उसके दिव्य चक्षुसे जाना कि वसु उसको हर लेगये हैं और क्रोधयुक्त होकर उसीक्षण बसुओं को यह शाप दिया कि जिन बसुओं ने मेरी सुलक्षणा अच्छी पूँछवाली दुधारी काम धेनु हरलीहै वह निश्चय सबके सब मर्त्यलोकमें जन्म लेंगे॥३१॥ हे भरतकुल प्रदीप मुनियों में श्रेष्ठ

goddess, he took away the cow with the assistance of his brothers. He was so enchanted with the speech of his wife as not to think of the great ascetic power of the rishi. He did not, for a moment, consider of the fall they should have by stealing away the cow.27. At length the rishi came back to his hermittage with the fruit of the forest, but did not see the cow and her calf in the vicinity. The magnanimous rishi then searched for her in the wood but to no purpose. Then with the power of his *Yog* he knew that the Vasus had carried her away. The incensed rishi, thereupon, cursed the Vasus that they should be born on earth for having stolen his miltch cow of beautiful tail and good qualities.31. The rishi thus

क्रोधस्यसम्प्राप्त आपवोमुनिसत्तमः ।। ३२ ।। शशाच तान्महाभागस्तपसेव्रमनोदधे।
एवंसशप्तवान्राजन् वसूनष्टौतपोधनः ॥ ३३ ॥ महाप्रभावोब्रह्मर्षिर्देवान् क्रोधसम
न्वितः । अथाश्रमपदंप्राप्तास्ते वैभूयोमहात्मनः ॥३४॥ शप्ताःस्मइतिजानन्त ऋषिंतमुप
चक्रमुः । प्रसादयन्तस्तमृषिंवसवः पार्थिवर्षभः॥३५॥ लेभिरेनचतस्मात्ते प्रसादमृषिस
त्तमात् । आपवात्पुरुषव्याघ्र सर्वधर्मविशारदात् ॥ ३६ ॥ उवाच च सधर्मात्माशप्ता
यूयंधरादयः । अनुसम्वत्सरात्सर्वे शापमोक्षमवाप्स्यथ ।। ३७ ।। अयन्तुयत्कृतेयूयं
मयाशप्ताःसप्रत्स्यति । द्यौस्तदामानुषेलोके दीर्घकालंस्वकर्मणा ॥ ३८ ॥ नानृतं
तच्चिकीर्षामि क्रुद्धोयुस्मान्यदब्रुवम् । नप्रजास्यतिचाप्येष मानुषेषुमहामनाः ॥ ३९ ॥
भविष्यति च धर्मात्मासर्वशास्त्रविशारदः । पितुःप्रियहितेयुक्तः स्त्रीभोगानवर्ज्जयिष्यति
॥ ४० ॥ एवमुक्त्वावसून्सर्वान् सजगाममहानृषिः । ततोमामुपजग्मुस्ते समेतावसव-

भगवान आपव वसुओं को यह शाप देकर तपस्यामें दत्त चित्त हुए हे राजन् क्रोधयुक्त महा प्रभावी ब्रह्मर्षि से आगें वसु देवता इस प्रकार शाप दिया जाना जानकर उन महात्मा के आश्रम में आकर उनकी उपासना करने लगे हे पृथ्वीनाथ वसुओं ने उस धर्मात्मा ऋषि आपवको प्रसन्नकरनेके लिये वहुत चेष्टाकी परन्तु सफल मनोरथ नहीं होसके ३५ इस के उपरान्त धर्मात्मा ऋषि ने कहा कि मैने पृथु आदि तुम सबको शाप दिया है वर्ष भर में तुम उसशापसे मुक्त होसकोगे परन्तु तुमको जिसके हेतु से शाप दिया गया है वह द्यु नामवाला वसुही अपने कर्म के दोषसे दीर्घ काल तक मनुष्य लोक में वसेगा मैंने जो क्रोध से शाप दिया है वह विरुद्धनहीं होसक्ता यह महात्मा द्यु नामक वसु मर्त्य लोक में सन्तानोत्पादन नहीं करेगा स्त्रीसे मिलना त्याग देगा और धर्मात्मा और शास्त्रों में पंडित होकर पिताके प्रियकार्य में सदा नियुक्त रहेगा ॥४०॥ महर्षि वसुओंसे यह वात कहकर चले गये और वसुओं ने मुझसे प्रार्थना पूर्वक कहा हे गंगे हमारे जन्म लेतेही

cursed them in anger and again engaged in his asceticism. The Vasus hearing of this curse went to the rishi's hermittage and prayed for forgiveness. They tried to please him in vain. 35. At last the righteous man said, " I have cursed you all. You will all be released from its effect within a year but *Dew* who has been the cause of all this trouble to you, will remain there long. I can not recall what I have said in anger. *Dew* will not produce any off-spring on earth. He will renounce the society of women and becoming a learned man will always obey his father. 40. The rishi went away after speaking this. Then all the Vasus requested *me* (Ganga) to throw them into water as soon as they should be born

स्तदा ॥ ४१ ॥ अयाचन्त चमांराजन् वरंतच्चमयाकृतम्। जातान्जातान्प्रक्षिपास्मान् स्वयंगंगेत्वमम्भसि ॥ ४२ ॥ एवंतेषामहंसम्यक् शप्तानांराजसत्तम । मोक्षार्थं मानुषाल्लोकाद्यथावत् कृतवत्यहम् ॥ ४३ ॥ अयं शापादृषेस्तस्य एकएवनृपोत्तम । द्यौराजन्मानुषेलोके चिरंवत्स्यतिभारत ॥ ४४ ॥ वैशम्पायनउवाच । एतदाख्याय सादेवी तत्रैवान्तरधीयत । आदायचकुमारंतं जगामाथयथेप्सितम् ॥ ४५ ॥ सतुदेवव्रतोनाम गाङ्गेयइतिचाभवत् । द्युनामाशान्तनोःपुत्रः शान्तनोरधिकोगुणैः ॥ ४६ ॥ शान्तनुश्चापिशोकार्त्तो जगामस्वपुरंततः । तस्याहंकीर्त्तयिष्यामि शान्तनोरधिकान् गुणान् ॥ ४७ ॥ महाभाग्यञ्च नृपतेर्भारतस्य महात्मनः । यस्येतिहासोद्युतिमान् महाभारतमुच्यते ॥ ४८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यापवोपाख्याने नवनवतोऽध्याय ॥ ९९ ॥

तुम हमें जल में डाल देना हे राजन् शाप से ग्रसित वसुओं को शाप से छोडाने के लिये मैंने यह कार्य किया था हे नृपोत्तम भारत उस ऋषि के शाप से यह द्यु नामक वसुही देरतक मनुष्य लोकमें रहेगा।४४।वैशम्पायननेकहा कि देवी गंगा यह कहकर लोप होगई और उस कुमार को लेकर मनमाने स्थान को गई वह द्यु नामक वसु शांतनुकी संतान होकर देवव्रत और गंगेयनामसे प्रसिद्ध हुआ और शांतनु सेभी अधिक गुणवान था फिरशांतनु ने शोक युक्त होकर अपने नगर में प्रवेश किया । हेमहाराज अब मैं उस महात्मा भारत शांतनु राजा के अनुपमगुण और महाभाग्य की कथा कहूँगा जिसका यह इतिहास महाभारत नाम से प्रसिद्ध हुआ है ॥ ४८ ॥

and I did so to release them from the effect of the curse. This, Vasu, alone, shall remain long on earth by the curse of the rishi." Vaishampayan said that having said so to the king, Ganga went away with the babe. The Vasu named *Dew* was born as Shantanu's son and was known as *Devabrat* and *Gangeya*. He was more virtuous than Shantanu. Shantanu then entered his city with a heavy heart. The history of the son of Shantanu is told in the following pages and is known as the Mahabharat. 48.



वैशम्पायनउवाच । सराजाशान्तनुर्द्धीमान्देवराजर्षिसत्कृतः । धर्मात्मासर्वलोकेषु सत्यवागितिविश्रुतः॥१॥दमोदानंक्षमाबुद्धिर्ह्रीर्धृतिस्तेज उत्तमम् । नित्यान्यासन्महासत्वे शान्तनौपुरुषर्षभे॥२॥एवंसगुणसम्पन्नो धर्मार्थकुशलोनृपः । आसीद्भरतवंशस्य गोप्तासर्वजनस्यच ॥३॥ कम्बुग्रीवःपृथुव्यंसो मत्तवारणविक्रमः । अन्वितः परिपूर्णार्थैः सर्वैर्नृपतिलक्षणैः ॥४॥ तस्यकीर्त्तिमतो वृत्तमवेक्ष्यसततंनराः । धर्मएवपरः कामादर्थाच्चेतिव्यवस्थिताः ॥५॥एतान्यासन्महासत्वे शान्तनौपुरुषर्षभे । नचास्यसदृशः कश्चिद्धर्मतःपार्थिवोऽभवत् ॥ ७ ॥ वर्त्तमानंहिधर्मेषु सर्वधर्मभृताम्वरम् । तंमहीपामहीपालं राजराज्येऽभ्यषेचयन् ॥ ६ ॥ वीतशोकभयाबाधाः सुखस्वप्नविबोधनाः । पतिंभारतगोप्तारं समपद्यन्तभूमिपाः ॥ ८ ॥ तेनकीर्त्तिमताशिष्टाः शक्रप्रतिमतेजसा । यज्ञदान

अध्याय १०० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि बुद्धिमान् शांतनु लोक में सत्यवादी प्रसिद्धथे और देवता और राजर्षि उनका सत्कार करतेथे शांतनुमें दम, दान, दया, बुद्धि, लज्जा, धैर्य्य और प्रभाव यह सब गुणथे ऐसे गुणशाली धर्मार्थ जानने वाले वह राजा भारत वंश और प्रजा के रक्षक थे वह शंखकीसी गर्दन वाला बड़े कंधोवाला मत्त हाथी कैसे विक्रम वाला और सम्पूर्ण अर्थ और राज लक्षण से भूषित था मनुष्य उस कीर्तिमान् पुरुषके चरित्र को देखकर यह कहतेथे कि काम और अर्थ से धर्म ही श्रेष्ठहै ।५। राजा शांतनु में यह सब गुणथे कोई राजा धर्म में उसकी बराबर नहीं था राजाओं ने उसको धार्मिकों में प्रधान देखकर महाराजा की पदवीदी वे शोक, भय और बाधाओं से बचकर सुखसे सोते और जागते थे इसलिये राजा शांतनु को उन्होंने प्रधान माना इन्द्रके समान तेजस्वी और कीर्ति

CHAPTER C



Vaishampayan said that the wise Shantanu, known as righteous thoughout the world, was respected by gods and Rajarshis. He was gifted with all the virtues. The virtuous and religious king was the protector of the descendents of Bharat and other people. He possessed conch like neck, broad shoulders, the prowess of a mad elephant, and all the good qualities of a king. Having seen the deeds of the famous monarch, people came to the conclusion that *Dharm* is superior to *Kam* and *Arth*. The righteous Shantanu was so virtuous. There was no king equal to him in *Dharm*. Having seen him firm in the path of virtue and chief among rightous men, the kings made him their overlord. Being free from care and anxiety they began to live in peace and harmony. The people became virtuous under the rule of that king glorious like Indra. virtue,

क्रियाशीलाः समपद्यन्तभूमिपाः ॥ ९ ॥ शांतनुप्रमुखैर्गुप्ते लोकेनृपतिभिस्तदा । निय
मात्सर्ववर्णानां धर्मोत्तरमवर्त्तत ॥ १० ॥ ब्रह्मपर्य्यचरत्क्षत्रं विशःक्षत्रमनुव्रताः । ब्रह्म
क्षत्रानुरक्ताश्च शूद्राःपर्य्यचरन्विशः ॥ ११ ॥ सहास्तिनपुरेरम्ये कुरूणांपुटभेदने ।
वसन्सागरपर्य्यंता मन्वशासद्वसुन्धराम् ॥ १२ ॥ सदेवराजसदृशो धर्मज्ञःसत्यवागृजुः ।
दानधर्मतपोयोगात् श्रियापरमयायुतः ॥ १३ ॥ अरागद्वेषसंयुक्तः सोऽभवत्प्रियदर्शनः ।
तेजसासूर्य्यकल्पोऽभूद्वायुवेगसमोजवे । अन्तकप्रतिमःकोपे क्षमयापृथिवीसमः ॥ १४ ॥
वधःपशुवराहाणां तथैवमृगपक्षिणाम् । शान्तनौपृथिवीपाले नावर्त्ततथानृप ॥ १५ ॥
ब्रह्मधर्मोत्तरेराज्ये शान्तनुर्विनयात्मवान् । समंशशासभूतानि कामरागविवर्जितः
॥ १६ ॥ देवर्षिपितृयज्ञार्थमारभ्यन्ततदाक्रियाः । नचाधर्मेणकेषाञ्चित् प्राणिनाम

मान् उस राजा के शासन में राजा लोग योग्यशील और सुकर्म वालेथे और शांतनु आदिक भूपालों से प्रजा रक्षित और भलीभाँति सुनियम स्थापित होनेपर सबवरणों का धर्म वढने लगा क्षत्रियलोग ब्राह्मणोंकी सेवा में, वैश्यलोग क्षत्रियोंकी सेवामें, और शूद्रलोग ब्राह्मण और क्षत्रियोंके प्रेमी रहकर वैश्योंकी सेवामें तत्पर रहते थे । ११ । राजाशांतनु कुरुवंशियोंकी रमणीय राजधानी हास्तिनपुरमें बसकर सागरसहित धरतीको शासनकरते थे धर्मशील, सत्यवादी और सीधे स्वभाववाला राजा शांतनु दान, धर्म और तपस्या के बलसे इन्द्रके समान श्रीमानथा क्रोध और द्वेषरहित चन्द्रमाकी समान सुशोभित सूर्य की सदृश तेजस्वी, पवनकी समान वेगवान, क्रोधमें यमराजकी समान, क्षमा में पृथ्वी की समानथा । १४ । हेराजन् ! उसके राज्य में पशु,सुअर,मृग,पक्षी आदि जीव नहीं मारे जाते थे वह राजको अहिंसारूपी ब्राह्म धर्म से अलंकृत करके स्वयं काम क्रोध से रहित नम्र और यत्न शीलहोकर बिना पक्षपात प्राणियों का शासनकरताथा । १६ । उन दिनों देवयज्ञ, ऋषियज्ञ और पितृयज्ञकी क्रियाहोतीथी कोई अधर्म से किसी जीवको नहीं मारता

in all its aspects, advanced throughout the world. The kshetrias served the Brahmans, the Vaishyas served the kshetrias and the Shudras served the Vaishias.11. From Hastinapure, the ancient capital of the Kurus, Shantanu ruled the earth to the Ocean. The righteous and humane king Shantanu by his charity, asceticism and *Dharm* became another Indra. Destitute af anger and malice beautiful like the moon, glorious like the sun, like the wind in swiftness, Death in anger, he was like the earth in forgiveness. Birds and quardrupeds were not killed in his reign. He forbade the slaughter of animals and being himself destitute of anger, he ruled with tact and without bias.16.Deva, Rishi and Pitri Yagyas were perfonmed on all sides. No one gave trouble to another

भवद्गुधः ॥ १७ ॥ असुखानामनाथानां तिर्य्यग्योनिषुवर्त्तताम् । सएवराजासर्वेषां भूतानामभवत्पिता ॥ १८ ॥ तस्मिन्कुरुपतिश्रेष्ठे राजराजेश्वरेसति । श्रितावागभवत्सत्यंदानधर्माश्रितंमनः ॥ १९ ॥ स समाःषोड़शाष्टौच चतस्रोष्टौतथापराः । रतिमप्राप्नवन्स्त्रीषु बभूववनगोचरः ॥ २० ॥ तथारूपस्तथाचारस्तथावृत्तस्तथाश्रुतः । गाङ्गेयस्तस्यपुत्रोऽभून्नाम्ना देवव्रतोवसुः ॥ २१ ॥ सर्वास्त्रेषुसनिष्णातः पार्थिवेष्वितरेषुच । महाबलोमहासत्त्वो महावीर्य्योमहारथः ॥ २२ ॥ सकदाचिन्मृगंविद्ध्वा गङ्गामनुसरन्नदीम् । भागीरथीमल्पजलां शान्तनुर्दृष्टवान्नृपः ॥ २३ ॥ तांदृष्ट्वाचिन्तयामास शान्तनुःपुरुषर्षभः । स्यन्दतेकिंत्वियंनाद्य सरिच्छ्रेष्ठायथापुरा ॥ २४ ॥ ततोनिमित्तमन्विच्छन्ददर्शसमहामनाः । कुमारंरूपसम्पन्नं बृहन्तंचारुदर्शनम् ॥ २५ ॥ दिव्यमस्त्रंविकुर्वाणं यथादेवंपुरन्दरम् । कृत्स्नांगङ्गांसमावृत्य शरैस्तीक्ष्णैरवस्थितम् ॥ २६ ॥ तांशरैराचितां दृष्ट्वानदींगंगांतदन्तिके । अभवद्विस्मितोराजा दृष्ट्वाकर्मातिमानु

था वह राजा दीन, दुःखी, अनाथ और पक्षियों के लिये पिता के समानथा उसके राज्य में सब सत्य बोलते थे और दान, धर्मका वर्ताव करते थे वह छत्तीस वर्षतक विषय भोग कर अन्त में बनको चलागया गंगा के गर्भ से उत्पन्न वसु उनकापुत्र देवव्रत सुन्दरता, आचार, चरित्र और विद्या आदि में उनके सदृशथा।२०। वडे बल और वीर्यवाला महा सत्यवान,महारथी और गदा आदि सब अस्त्रों के चलानेमें निपुण राजा शांतनु ने एकसमय मृगको वींधकर उस के पीछे जातेहुए निकटवर्ती भागीरथी गंगाको थोडे जलवाला देखा यह देखकर राजाशांतनु सोचनेलगा कि इसजलभरी गंगामें पहिलेकी समान पानी क्यों नहीं है ।२४।फिर उसका कारण ढूंडते हुए देखा कि बड़ाभारी देखने में सुन्दररूपवाला देवराजकी समान सुन्दर एक कुमार तेजवांणके जाल से गंगाजीके सोतोंको रोककर दिव्य अस्त्र चला रहा है राजाने गंगाके पानीको वाणों से ढकाहुआ देखकर उस बालक

unlawfully. The king was like a father to the poor, the wretched, orphans and animals. People spoke the truth and practiced Dharm and charity. He reigned for 36 years and at last went to the forest. Devbrat, his son by Ganga, was like him in beauty, manners, deeds, knowledge and other respects. The brave and virtuous Maharathi well skilled in the use of club and other weapons, king Shantanu chased a deer to the bank of the Ganges and saw that the water was low. He began to wonder at the unusual ebb of the stream and pushed forward to know the cause. In the way he saw a beautiful boy like the child of a god, who had made the water captive by the network of his arrow. He was amazed at the dexterity of the boy in the use of weapons. He had seen his son Shantanu

षम् ॥ २७ ॥ जातमात्रंगुराद्दृष्ट्वातंपुत्रंशान्तनुस्तदा । नोपलेभेस्मृतिंधीमानभिज्ञातुं तमात्मजम् ॥ २८ ॥ सतुतंपितरंदृष्ट्वा मोहयामासमायया । संमोह्यतुततःक्षिप्रंतत्रै बान्तरधीयत ॥ २९ ॥ तदद्भुतंततोदृष्ट्वातत्र राजासशान्तनुः । शङ्कमानःसुतंगंगामब्रवीद्दर्शयेतिह ॥ ३० ॥ दर्शयामासतंगंगा बिभ्रतीरूपमुत्तमम् । गृहीत्वादक्षिणेपाणौतं कुमारमलंकृतम् ॥ ३१ ॥ अलङ्कृतामाभरणैर्विरजोऽम्बरसंवृताम् । दृष्टपूर्वामपिसतीं नाभ्यजानात्सशान्तनुः ॥ ३२ ॥ गंगोवाच । यंपुत्रमष्टमंराजंस्त्वंपुरा मय्यविन्दथाः । सचायंपुरुषव्याघ्र सर्वास्त्रविदुत्तमः ॥ ३३ ॥ गृहाणेमंमहाराज मयासंवर्द्धितंसुतम् । आदायपुरुषव्याघ्र नयस्वैनं गृहंविभो ॥ ३४ ॥ वेदानधिजगेसांगान् वसिष्ठादेषवीर्य्यवान् । कृतास्त्रःपरमेष्वासो देवराजसमोयुधि ॥ ३५ ॥ सुराणांसम्मतोनित्य मसुराणाञ्चभारत । उशनावेदयच्छास्त्रमयं तद्वेदसर्वशः ॥ ३६ ॥ तथैवाङ्गिरसःपुत्रः सुरासुर

के अलौकिक कार्य से आश्चर्य माना ॥२७॥ बुद्धिमान शांतनुने जन्म लेतेही उस पुत्रको देखाथा इसलिये यह नहीं जानसका कि वह उसीका पुत्र है कुमार पिताको देखकर उसी स्थान में उनको अचम्भे में छोडकर छिपगया राजा शांतनु यह आश्चर्य लीला देख कर गंगासे बोले कि छिपेहुए कुमारको मुझेदिखलाओ गंगा ने उत्तमरूप रखकर दहने हाथे में उस अलंकृत कुमारकोलेकर राजाको दिखाया निर्मल वस्त्र पहिनेहुए नानाप्रकार के आभूषणों से सजी हुई गंगाको पहले देखचुकने पर भी उसने नहीं पहिंचाना तब गंगाने कहा हे पुरुष व्याघ्र नृपति पहिले तुम ने मेरेगर्भ से जो आठवां पुत्र पायाथा वह यही है यह सम्पूर्ण अस्त्रविद्यामें निपुणहुआहै ।३३। हे महाराज ! इस पुत्रको मैंनेपालाहै इसको घर लेजाओ यह कुमार युद्ध में इन्द्रके समान बडा चापधारी अस्त्रविद्या में चतुर और वीर्यवान है तुम्हारे इस पुत्र ने वसिष्ठ ऋषिसे छै अंग सहित वेदको पढा है हे भारत यह सुर और असुर दोनोंको प्यारा है असुरों के गुरू ऊषना जिन २ शास्त्रोंको

only at the time of his birth. He therefore, could not know him then. Having amazed the father, the son disappeared. Having seen this wonderful sight, the king asked Ganga to show him the boy who had disappeared. Ganga then appeared in a superb form leading the son by her right arm. Dressed in pure white garments and decked with ornaments, Ganga looked like an unknown person, although, the Raja had so often seen her before. She said, " This is the eighth son begot by you in me. He is now skilled in all the warlike arts. I have reared this son, O king ! Take him home. He is as great an archer as Indra; skilful in the use of weapons and valliant. This son of yours has read from *Basisht* the Vadas with their branches. He is dear to the gods and Asurs alike. He knows all the sciences knows to Shukra, the precepter of Asurs and

नमस्कृतः । यद्वेदशास्त्रंतच्चापि कृत्स्नमस्मिन प्रतिष्ठितम् ॥ ३७ ॥ तवपुत्रेमहाबाहो
सांगोपांगमहात्मनि । ऋषिःपरैरनाधृष्योजामदग्न्यः प्रतापवान ॥ ३८ ॥ यदस्त्रंवेद
रामश्च तदेतास्मिन्प्रतिष्ठितम् । महेष्वासमिमंराजन् राजधर्मार्थकोविदम् । मयादत्तं-
निजंपुत्रंवीरं वीरगृहंनय ॥ ३९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तयैवंसमनुज्ञातः पुत्रमादाय
शान्तनुः । भ्राजमानं यथादित्यमाययौ स्वपुरंप्रति ॥ ४० ॥ पौरवस्तुपुरींगत्वा
पुरन्दरपुरोपमाम् । सर्वकामसमृद्धार्थं मेनेसात्मानमात्मना ॥ ४१ ॥ पौरवेपुततःपुत्रं
राज्यार्थमभयप्रदम् । गुणवन्तंमहात्मानं यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ॥ ४२ ॥ पौरवाञ्छा-
न्तनोःपुत्र पितरञ्चमहायशाः । राष्ट्रञ्चरञ्जयामास वृत्तेनभरतर्षभ ॥ ४३ ॥ सतथा-
सहपुत्रेण रममाणोमहीपतिः । वर्त्तयामासवर्षाणि चत्वार्य्यमितविक्रमः ॥ ४४ ॥
सकदाचिद्वनंयातो यमुनामभितोनदीम् । महीपतिरनिर्दिश्य माजिघ्रद्गन्धमुत्तमम् ॥ ४ ॥

मानते हैं यहभी उनको जानता है और अंगिराके पुत्र सुर और असुर से प्रतिष्ठित बृहस्पतिजी जो शास्त्र जानते हैं इसने वह सब सीखलिये हैं ॥ ३७॥ प्रतापी कठोर ऋषि जमदग्नि के पुत्र राम जिस अस्त्रविद्याको जानतेथे यह महाबाहु महात्मा उस सब विद्या को सांगोपांग जानता है हे वीर राजन् ! धर्मार्थ का जाननेवाला महा धनुर्धारी तुम्हारा यह पुत्र तुमको देती हूं इसको घर लेजाओ । वैशम्पायनने कहा कि राजाशांतनुगंगाकी आज्ञासे सूर्य सदृश पुत्रको लेकर अपने नगरमें आया ॥ ४० ॥ पुरन्दर पुर नामवाली पुरीमें आकर अपने को अति सम्पति युक्त और सिद्धकाम समझा फिर पौरव वंश के राज्यकी रक्षा करने के लिये अभय देने वाले गुणशील महात्मा पुत्रको युवराज बनाया ! हे भरत श्रेष्ठ महायशस्वी शंतनु के पुत्रने अपने कामसे अपने पिता पौरव गण और प्रजाको प्रेमी बनाया बडे विक्रम वाले राजा शांतनु ने बडे सुखके साथ चार वर्षव्यतीत किये एक समय राजा शांतनु ने यमुना के किनारे वनमें जाकर एक प्रकार की अनजानी सुगंध पाई यह पतालगा

Brahapati. He is as learned in the science of weapons as the great Rishi Ram, the son of Jamadagni. I give you now this son, the scholar of *Dharm* and *Arth* and the greatest archer. Take him home." *Vaishampayan* said that having heard this from Ganga, he brought to his capital the son glorious like the Sun and having entered the city of Indra, regarded himself happy. To keep well the country of his fore fathers, he installed his virtuous son in the post of Youvraj. The glorious son of Shantanu made himself beloved of his father, the Pauravas and the people, by his good deeds. Shantanu passed in great happiness four years in the company of his son. Once upon a time as the king Shantanu was roaming through the forest at the bank of the Jamna, he smelled an unknown scent and went forward in search of it At length he saw a

तस्यप्रभवमन्विच्छन् विचचारस्समन्ततः । सददर्शतदाकन्यां दाशानांदेवरूपिणीम्
॥ ४६ ॥ तामपृच्छत्सदृष्ट्वैव कन्यामसितलोचनाम् । कस्यत्वमसिकाचासि किञ्चभीरु
चिकीर्षसि ॥ ४७ ॥ साब्रवीदाशकन्यास्मि धर्मार्थंवाहयेतरिम् । पितुर्नियोगाद्भद्रंते
दाशराज्ञोमहात्मनः ॥ ४८ ॥ रूपमाधुर्य्यगन्धैस्तां संयुक्तांदेवरूपिणीम् । समीक्ष्य
राजादाशेयीं कामयामासशान्तनुः ॥ ४९ ॥ सगत्वापितरंतस्या वरयामासतांतदा ।
पर्य्यपृच्छत्ततस्तस्याः पितरंसोत्मकारणात् ॥ ५० ॥ सचतंप्रत्युवाचेदं दाशराजो
महीपतिम् । जातमात्रैवमेदेया वरायवरवर्णिनी । हृदिकामस्तुमेकश्चित्तं निबोधजनेश्वर
॥ ५१ ॥ यदीमांधर्म्मपत्नींत्वं मत्तःप्रार्थयसेऽनघ । सत्यवागसिसत्येन समयंकुरुमेततः
॥ ५२ ॥ समयेनप्रदद्यांते कन्यामहमिमांनृप । नहिमेत्वत्समःकश्चिद्वरो जातुभविष्यति
॥ ५३ ॥ शान्तनुरुवाच । श्रुत्वातवबरंदाश व्यवस्येयमहंतव।दातव्यंचेत्प्रदास्यामि

ने के लिये कहांसे वह सुगंध आरही थी चारों ओर घूमकर देवरूपिणी एक कन्या को देखा उसकाली आँखवाली कन्या को देखकर उससे पूछा कि तू कौन और किसकी बेटी है और इस बन में कैसे आईहै कन्या ने कहा तुम्हारा मंगल हो मैं दासीहूँ पिता की आज्ञा से धर्म के लिये नाव चलाती हूँ राजा शांतनु ने उस दास कन्या को रूपबती, सुगंधवती, मधुर मोहिनी और देवरूपिणी देखकर मन में उसकी कामना की और उसके पिता के पास जाकर वह कन्या माँगी और यहभी पूछा कि मुझ से बिवाह कर देनेको सम्मत हो या नहीं ।५०। दासराजनेकहा । हे नरेश इस सुन्दरीने जब जन्म लिया था तभी निश्चयथा कि यह कन्या किसी वरको दी जायगी परन्तु मेरी एक कल्पना है उसे सुनिये । हे राजन् आप सत्यबादी हैं इस लिये यदि इस कन्या को धर्मपत्नी बनाना है तो आप को मेरी एक वात स्वीकार करनी होगी । हे नरेश । उसबात के स्वीकार करने पर मैं उस कन्याको देदूंगा मुझे आपके समान सुपात्र कोई नहीं मिलेगा।।५१।।शांतनुनेकहा कहो

girl like a goddess in beauty. He asked the blackeyed girl whose daughter she was and why she had come to the forest.

The girl said, " May you be happy ! I am a *Shudra*. I row the charity boat. Raja Shantanu finding the girl beautiful, sweet-scented, heart-enchanting and goddess like, coveted to possess her and went to her father to ask her in marriage. Her father said that from her birth the girl was intended to be married to some one. I shall give her on one condition for the fulfilment of which you will solemnly promise as you are a true man. I shall not find another such husband for her." Shantanu desired him to name his condition and promised to fulfil it if he could. The chief of serving men replied, " The son born of her shall be king after

नत्वदेयंकथञ्चन ॥५४॥ दाशउवाच । अस्यांजायेतयःपुत्रःसराजापृथिवीपते। त्वदूर्ध्व
मभिषेक्तव्योनान्यःकश्चनपार्थिव ॥ ५५ ॥ वैशम्पायन उवाच । नाकामयततंदातुंवरं
दाशायशान्तनुः । शरीरजेनतीव्रेण दह्यमानोऽपिभारत ॥ ५६ ॥ सचिन्तयन्नेवतदा
दाशकन्यां महीपतिः । प्रत्ययाद्धास्तिनपुरं कामोपहतचेतनः ॥ ५७ ॥ ततःकदाचि-
च्छोचन्तं शान्तनुं ध्यानमास्थितम् । पुत्रोदेवव्रतोऽभ्येत्य पितरंवाक्यमब्रवीत् ॥ ५८ ॥
सर्वतोभवतःक्षेमंविधेयाः सर्वपार्थिवाः । तत्किमर्थमिहाभीक्ष्णं परिशोचासिदुःखितः
॥ ५९ ॥ ध्यायन्निवचमां राजन्नाभिभाषसिकिञ्चन । नचाश्वेनविनिर्यासि विवर्णो
हरिणःकृशः ॥ ६० ॥ व्याधिमिच्छामितेज्ञातुं प्रतिकुर्य्यांहितत्रवै । एवमुक्तःसपुत्रेण
शान्तनुःप्रत्यभाषत ॥ ६१ ॥ असंशयंध्यानपरोयथावत्सतथाशृणु । अपत्यं नस्त्वमे

दासकन्या वर मांगते हो उसको सुनकर विचार करूँगा यदि देने योग्य वस्तु होगी तो देदूंगा न देनेकी होगी तो न दूंगा दासराज ने कहा हे पृथ्वीनाथ इस के गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न होगा वह आपके पीछे राजाहोगा दूसरापुत्र अभिषिक्त नहीं करसकोगे।५५। वैशम्पायनने कहा । हेभारत । राजा शांतनुने कठिन काम पीड़ासे जलते हुएभी दासकी वह बात स्वीकार न की और दास कन्या की चिंता करता हुआ कामातुर हास्तिनपुर को लौट आया फिर शांतनु शोक से विह्वल होकर सोच रहाथा कि उस समय उसके पुत्र देवव्रत ने आकर कहा कि आपका सब प्रकार से कुशल देखता हूँ सबराजा लोग आपकी आज्ञा में हैं फिर भी आपदुःखित होकर क्यों शोक कररहे हैं विदित होता है कि आप मेरेही विषयमें कुछ सोचरहे हैं ।५९। हेराजन् मुझसे आप कुछ नहीं कहते हैं परन्तु मैं देखताहूँ कि आप पीले और दुबले होरहे हैं अब घोड़ेपर चढ़कर घूमते नहीं इसलिये यह जानना चाहता हूं कि आपको क्या पीड़ा है मैं उसके दूर करने का उपाय करूंगा पुत्र कीयह बात सुनकर शांतनुनेकहा ६१ हे बेटा इसमें संदेह नहीं कि मुझ को सोचहोरहा

you and you shall not instal any other." *Vaishampayan* says that Shantanu in spite of his burning desire would not give the promise, but returned to Hastinapur thinking of her. Once Shantanu was brooding over the matter gloomily when his son Devbrat coming there said, "I see you in the enjoyment of health. All the kings are under your sway. What for are you sorry? I guess you are thinking about me. You do not speak to me, O king, but I see that you are growing pale, ghastly and thin. You donot ride the horse. I wish to know about your grief and shall try to remove it. Having heard this from his son, Shantanu said, "My son, no doubt, I am moody. Hear the reason. O light of the Bharat dynasty, you are the only son in our great family. But

वैकः कुलमहातिभारत ॥ ६२ ॥ शस्त्रनित्यश्चसततंपौरुषे पर्य्यवस्थितः । अनित्यता
श्चलोकानामनुशोचामिपुत्रक ॥ ६३ ॥ कथञ्चित्तवगाङ्गेय विपत्तौनास्तिनःकुलम् ।
असंशयंत्वमेवैकः शतादपिवरःसुतः ॥ ६४ ॥ न चाप्यहंवृथाभूयोदारान्कर्त्तुमिहोत्सहे ।
सन्तानस्याविनाशाय कामयेभद्रमस्तुते ॥ ६५ ॥ अनपत्यतैकपुत्रत्वमित्याहुर्धर्मवादिनः
अग्निहोत्रंत्रयीविद्या सन्तानमपिचाक्षयम् ॥ ६६ ॥ सर्वाण्येतान्यपत्यस्य कलांनार्ह
न्तिषोडशीम् । एवमेतन्मनुष्येषु तच्चसर्वप्रजास्वित ॥ ६७ ॥ यदपत्यंमहाप्राज्ञ तत्र
मेनास्तिसंशयः । एषात्रयीपुराणानां देवतानांचशाश्वती ॥ ६८ ॥ त्वञ्चशूरःसदा
मर्षीशस्त्रनित्यश्चभारत । नान्यत्रयुद्धात्तस्मात्ते निधनंविद्यतेक्वचित् ॥ ६९ ॥ सोऽस्मि
संशयमापन्नस्त्वयि शान्तेकथंभवेत् । इतितेकारणंतात दुःखस्योक्तमशेषतः ॥ ७० ॥

है उसका कारण सुनो । हे बेटा भारत कुल प्रदीप हमारे इस बड़े वंश में एकही संतान है परन्तु तुम सदा शस्त्र चलाने में नियुक्त और पौरुष की इच्छा रखते हो सोमनुष्य की अनित्यतासमझकर मैं शोकयुक्तहुआहूँ ।६३। हे गांगेय ! यदि किसीप्रकार तुमपर विपत पड़े तो हमारावंश नहीं रहेगा और इसमेंभी संदेह नहीं कि तुम एकही पुत्र मेरे सौ पुत्रों से श्रेष्ठहो इस लिये मैं फिर विवाहकरनेकी इच्छाभी नहीं करता केवल वंशकी रक्षाके लिये यही चाहता हूं कि तुम कुशल से रहो धर्मज्ञ लोग कहतेहैं कि जिसका एक पुत्रहै वह निःसन्तानहै अग्निहोत्र वेदाध्ययन और शिष्यों में विद्याका प्रचार यह सब अक्षयफल देनेवाले होते हैं परन्तु पुत्रके स्नेहकी बराबर कोई नहीं होते और पुत्र जिस प्रकार मनुष्य के लिये हर्ष देनेवालाहै ऐसाही पशु पक्षियोंके लियेभीहै ।६७। हे बुद्धिमान् इस में मुझे संशय नहीं है कि पुत्र से स्वर्ग मिलता है सब पुराणोंकी जड़ और देवताओं के प्रमाण जो वेदहैं उनसेभी इनका प्रमाण मिलता है । हे भारत ! तुम शूर और शस्त्र चलानेमें सदा नियुक्त रहतेहो इस से युद्धस्थल मेंही तुम्हारे नष्टहोनेकी सम्भावनाहै ऐसा होने से वंशकी कैसी गतिहोगी इसीलिये मैं संशययुक्तहुआहूं ।७०। हे बेटा ! तुमको दुःख

you are always engaged in warfare and manly deeds. knowing that human beings are not immortal, I am thoughtful, O Gangeya, if perchance you fall in trouble our line shall be extinct. No doubt I prefer you to a hundred sons, I, therefore do not wish to marry again. I am anxious only for your safety. (Learned men say that the father of one son only is childless.) Libations in fire, study of the Vedas and teaching of knowledge to the pupils are not equal to one sixteenth part of the merit of begetting a son. A son is the source of pleasure to the human beings as well as to the lower animals. I believe that the son leads to heaven. The souree of all the *Purans* and acceptable to the gods, the Vedas give proof of what I say. You are brave, O Bharat, and are always engag-

वैशम्पायनउवाच। ततस्तत्कारणंराज्ञोज्ञात्वासर्व्वमशेषतः। देवव्रतोमहाबुद्धिःप्राज्ञया
चान्वचिन्तयत् ॥७१॥ अभ्यगच्छत्तदैवाशु वृद्धामात्यंपितुर्हितम्। तमपृच्छत्तदाभ्ये
त्यपितुस्तच्छोककारणम् ॥ ७२ ॥ तस्मैसकुरुमुख्यायथथावत् परिपृच्छते। वरंशशंस
कन्यांतामुद्दिश्यभरतर्षभ ॥ ७३ ॥ ततोदेवव्रतोवृद्धैः क्षत्रियैःसहितस्तदा । अभि
गम्यदाशराजं कन्यांवव्रेपितुःस्वयम् ॥ ७४ ॥ तंदाशःप्रतिजग्राह विधिवत्प्रतिपू
ज्यच। अब्रवीच्चैनमासीनं राजसंसदिभारत ॥ ७५ ॥ त्वमेवनाथःपर्य्याप्तः शान्त-
नोर्भरतर्षभ। पुत्रःशस्त्रभृतांश्रेष्ठः किन्तुवक्ष्यामितेवचः ॥ ७६ ॥ कोहिसम्बन्धकंश्ला
घ्यमीप्सितं यौनमीदृशम्। अतिक्रामन्नतप्येत साक्षादपिशतक्रतुः ॥ ७७ ॥ अपत्यं
चैतदार्य्यस्य योयुष्माकंसमोगुणैः। यस्यशुक्रात्सत्यवती सम्भूतावरवर्णिनी ॥७८॥
तेनमेबहुशस्तात पितातेपरिकीर्त्तितः। अर्हःसत्यवतींवोढुं धर्म्मज्ञःसनराधिपः ॥७९॥

के सम्पूर्ण कारणों से ज्ञात किया वैशम्पायन ने कहा कि महाबुद्धि देवव्रतने राजा से यह सब सुनकर बुद्धिसे कुछ काल शोचकर उसीक्षण परम हितैषी बूढे मन्त्री के पास जाकर पिताके शोकका कारण पूंछा हे भारत श्रेष्ठ उस के पूंछने पर उस गंधवती कन्या के लिये दास राजने जो वर मांगा था वह सब मंत्रीने कहसुनाय फिर देवव्रतने वृद्धक्ष त्रियोंको लेकर स्वयं दासराजके पासजाकर पिताके लिये वह कन्यामांगी ७४ दासराजने उसका विधि पूर्वक सत्कार किया और कहा कि हे भरतर्षभ आपशस्त्र धारियों में श्रेष्ठ और शांतनु के एक मात्र पुत्र हैं आप सब विषयों के कर्ता हैं परन्तु आपसे एक बात कहताहूँ।७६।कन्याका पिता यदि साक्षात् इन्द्रभी हो परन्तु ऐसे मानयुक्त और प्रार्थनीय संबन्ध के छोड़ने से उसको अवश्य संताप होगा जो ऋषियों में श्रेष्ठ तुम से विद्वान हैं उन्हींके वीर्यसे इस सत्यवती सुन्दरी कन्याका जन्महुआ है।७८।उन्होंने बहुतबार मुझसे आप के पिता का नाम लेकर कहा था कि वह धर्मज्ञ राजा सत्यवती से विवाह करने

ed in warfare. It is therefore, probable that you may die on the field of battle. What will become of the dynasty then? I am therefore thoughtful. I have now told you the cause of my grief." Vaishampayan said that the wise Devabrat, having heard all this from the king, thought for a moment and then going to the faithful minister enquired of him the reason of his father's grief. The minister then informed him of all that had passed between the king and the chief of Shudras on the king's request for Gandhvati's hand. Then taking old Kshetrias with him, the prince went to the girl's father and requested him to marry her to the king. The chief of the serving class received him with due respect and said, "You are the best of warriors and the only son of king Shantanu. You know all yet I say that although a girl's father be Indra himself

असितह्यसिदेवर्षिः प्रत्याख्यातःपुरामया । सत्यवत्याभृशंचार्थी सआसीदृषिसत्तमः ॥ ८० ॥ कन्यापितृत्वात् किञ्चित् तुवक्ष्यामित्वांनराधिप । बलवत्सपत्नतामत्र दोषंपश्यामि केवलम् ॥ ८१ ॥ यस्यहित्वंसपत्नःस्या गन्धर्वस्यासुरस्यवा । नसजातुचिरंजीवे त्वयिक्रुद्धेपरन्तप ॥ ८२ ॥ एतावानत्रदोषोहि नान्यःकश्चनपार्थिव । एतज्जानीहिभद्रन्ते दानादानेपरन्तप ॥ ८३ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ एवमुक्तस्तुगाङ्गेयस्तद्युक्तं प्रत्यभाषत । शृण्वतांभूमिपालानां पितुरर्थायभारत ॥ ८४ ॥ इदं मे व्रतमादत्स्व सत्यंसत्यवतांवर । नैवजातोनवाजातःईदृशंवक्तुमुत्सहेत् ॥ ८५ ॥ एवमेतत्करिष्यामि यथात्त्वमनुभाषसे । योऽस्यांजनिष्यतेपुत्रः सनोराजाभविष्यति ॥ ॥ ८६ ॥ इत्युक्तःपुनरेवाथतंदाशःप्रत्यभाषत । चिकीर्षुर्दुष्करंकर्म राज्यार्थेभरतर्षभ

योग्य है और देवर्षि असित ने पहले इस सत्यवती के लिये बार२ प्रार्थना की थी मैंने उसपर कुछ ध्यान नहीं दिया हे नृपोत्तम मैं इस कन्या का पिता हूँ इस लिये एक बात कहता हूं कि इस में केवल एक बलवत स्वप्न दोषहै।८१। आप जिसके सपत्नहैं यदि वह गंधर्व व असुर भी होवे तोभी आप के क्रोधित होने पर वह कभी दीर्घकाल तक न जीसकेगा इस विषय में इतनाही दोष है और कोई नहीं हे परन्तप आप का मंगलहोवे देने और न देनेके विषय में यही जानना।।८३।।वैशम्पायननेकहा कि भरतकुल तिलक गंगा पुत्र देवव्रत दासराज की यह बात सुनकर पिता के उपकार के लिये सब वृद्ध क्षत्रियों के सामने बोले कि हे सत्यवादी मेरा यह सत्यव्रत है और मैं सत्य कहताहूँ कि ऐसा कोई पुरुष नहीं जन्मा है जिस को यह कहने का उत्साह हो और यह भी नहीं जान पड़ता कि पीछे जन्मलेगा तुम जो अभिप्राय प्रकट करतेहो मैं वैसाही करूंगा तुम्हारी इसकन्याके गर्भ से जो संतान उत्पन्न होगी वही हमारे राज्य की अधिकारीहोगी।।८६।।उस

yet he would be sorry to lose the chance of contracting relationship with such virtuous people as you are. The beautiful girl comes out of a respectable family and they have mentioned your father as worthy of marrying her. The best of rishis, Asit dewal, more than once wanted to marry the girl, but I did not encourage him. O best of kings, as the father of the girl I say that there is but one fault in this union that of co heir. He, whose co-heir be one like you, can not live long, whether he be a *Gandharb* or *Asur*. I I see no other drawback." *Vaishampayan* said that having heard his speech, Devabrat spoke out before the assembly of Kshetrias and said, " O righteous one you may know that I have made a vow to speak the truth and I say truly that there is no man living at this time neither shall there be in future who should dare to do so. I shall act according to your desire. The offspring of your daughter shall

॥ ८७ ॥ त्वमेवनाथःसम्प्राप्तः शान्तनोरमितद्युतेः । कन्यायाश्चैवधर्मात्मन् प्रभुर्दानाय चेश्वरः ॥ ८८ ॥ इदंतुवचनंसौम्य कार्य्यं चैव निबोधमे । कौमारिकाणांशीलेन वक्ष्याम्यहमरिन्दम ॥ ८९ ॥ यत्त्वयासत्यवत्यर्थे सत्यधर्मपरायण । राजमध्येप्रतिज्ञात मनुरूपंतवैवतत् ॥ ९० ॥ नान्यथातन्महाबाहो संशयोऽत्रनकश्चन । तवापत्यंभवेद्यत्तु तत्रनःसंशयोमहान् ॥ ९१ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तस्यैतन्मतमाज्ञाय सत्यधर्मपरायणः । प्रत्यजानात्तदाराजन् पितुःप्रिय चिकीर्षया ॥ ९२ ॥ गांगेयउवाच । दाशराजनिबोधेदं वचनं मे नृपोत्तम । शृण्वतांभूमिपालानां यद्ब्रवीमि पितुःकृते ॥ ॥ ९३ ॥ राज्यंतावत् पूर्वमेव मयात्यक्तंनराधिपाः । अपत्यहेतोरपिच करिष्येऽद्य विनिश्चयम् ॥ ९३ ॥ अद्यप्रभृति मे दाश ब्रह्मचर्य्यंभविष्यति । अपुत्रस्यापि मे

कीयह बात सुनकर दासराज ने राज्यके लिये पूराकाम करने के लिये फिर यह कहा कि हे धर्मात्मा अति प्रकाशमान आप शांतनु के कुलको बढ़ाने के लिये आये हैं पर इस कन्या दानके भी आप कर्ता होवें । हे शांतशील इस समय एक और बात कहनी है उसकाभी आप विचार करैं जिनको कन्या पर स्नेह है उनको यह अवश्यही कहना पड़ता है इस लिये मैं कन्या के प्रेमसेही कहताहूं कि हे सत्य धर्म शील राज्य के लिये आपने सत्यवती के लिये जो प्रतिज्ञा की यह आप जैसे महानुभावों सेही होसक्ती है॥९०॥हे महाबाहु । इस में मुझे कुछ भी शंका नहीं है कि उसके विपरीत न होगा पर आपकी जो संतान होगी उसकी ओर से मुझे बड़ा संशय है । वैशम्पायन ने कहा हे सत्य धर्म वाले गंगा नन्दन दास राजका अभिप्राय जानकर पिता की प्रीति के लिये प्रतिज्ञा करके बोले कि हे दासराज मैं पिता के लिये इन लोगों के सन्मुख यह कहता हूँ सुनो हे राजवृन्द मैं ने पहलेही राज छोड दिया है अब मेरे पुत्र के राज्य पाने में जो शंकाकी गई है उसके लियेभी प्रतिज्ञा करताहूँ॥९३॥हे दास मैं जबतक जीताहूँ आज से तबतक के लिये ब्रह्म

inherit the throne." Having heard this the father further desiring to secure well the throne said, "O righteous prince you have the destiny of the family under your control. You will now have the power to give away the girl in marriage. I have now but one word more to say and hope you will consider it duly. A loving father can not restrain himself from saying it. You have made a vow worthy of yourself. I have not the slightest doubt about the truth of your word. But I fear your children. Vaishampayan said that the righteous and truthful son of Ganga, knowing the purpose of the serving men, spoke these words for the love of his father:- "I say before these kings that I have already renounced the kingdom. The doubt that my children may contest the throne, may be removed by my making another vow. I hereby make a vow of

लोका भविष्यन्त्यक्षयादिवि ॥ ९५ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वा सम्प्र
हृष्टतनूरुहः । ददानीत्येवतंदाशो धर्मात्माप्रत्यभाषत ॥ ९६ ॥ ततोऽन्तरिक्षेऽप्सर-
सो देवाःसर्षिगणास्तदा । अभ्यवर्षन्तकुसुमैर्भीष्मोऽयमितिचाब्रुवन् ॥ ९७ ॥ ततः
सपितुरर्थाय तामुवाचयशस्विनीम् । अधिरोहरथंमातर्गच्छावःस्वगृहानिति ॥ ९८ ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ एवमुक्त्वातुभीष्मस्तां रथमारोप्यभाविनीम् । आगम्यहास्तिन
पुरं शान्तनोःसंन्यवेदयत् ॥ ९९ ॥ तस्यतद्दुष्करंकर्म प्रशशंसुर्नराधिपाः । समेता
श्चपृथक्चैव भीष्मोऽयमितिचाब्रुवन् ॥१००॥ तच्छ्रुत्वादुष्करंकर्म कृतंभीष्मेणशान्त
नुः । स्वच्छन्दमरणंतुष्टो ददौतस्मैमहात्मने ॥ १०१ ॥ नतेमृत्युःप्रभविता यावज्जी
वितुमिच्छसि । त्वत्तोह्यनुज्ञांसंप्राप्य मृत्युःप्रभवितानघ ॥ १०२ ॥
इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणिसत्यवतीलाभोपाख्याने शततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥

चारी रहूँगा इस से मेर निःसंतान होनेपरभी मुझे अक्षयस्वर्ग मिलेगा वैशम्पायन ने कहा कि धर्मात्मा दास राज उनकी यह बात सुनकर परमानन्द से गदगद होकर कन्या दान के लिये सम्मत हुआ फिर आकाश से अप्सरागण, देवगण, और ऋषिगण गंगानन्दन देव व्रत के इस भयानक संकल्प को सुनकर कहने लगे कि यह भीष्म है और उसपर फूलों कीवर्षा की॥९७॥फिर भीष्म पिता के लिये उस यशस्विनी योजनगंधा कन्या से बोले हे माता रथपर चढकर अपने घरको चलो वैशम्पायन ने कहा कि भीष्म यह कहकर गंध वतीको रथपर चढ़ाकर हास्तिनपुरमें लाये और शांतनुसे सब कहसुनाया९९राजागणभी आकर सब मिलकर और हर एक मनुष्य पृथक रूप से उनके दुष्कर कार्य की प्रशंसा करने लगे और बोले कि इनके भयंकर कार्य करने से इनका नाम भीष्म हुआ है महा राज शांतनु ने भीष्म के इस दुष्कर कार्य को सुनकर और संतुष्ट होकर उस महात्मा को इच्छा मृत्यु का बरदिया ॥ १०२ ॥

remaining single throughout my life. I doubt not that I shall gain heaven without producing children. Having heard this vow the man was exceedingly gratified and agreed to give away his daughter. The Apsaras, the gods and the rishis threw flowers on Devabrat and on account of his dreadful vow called out '*This is Bhishm!* Bhishim then requested the girl, Yojangandha, addressing her as mother, to ride on the chariot. The girl was then brought to Hastinapur and Shantanu was told all that had happened. The Rajas and the people unanimously praised his dreadful vows and he was from that time named Bhishm (the dreadful). King Shantanu having heared of his son's glorious enterprise, was very happy and blessed him saying 'he will die when he wishes and not till them.'

वैशम्पायन उवाच ॥ ततो विवाहे निर्वृत्ते सराजा शान्तनुर्नृपः । तांकन्यांरूपसम्पन्नां स्वगृहेसंन्यवेशयत् ॥ १ ततःशान्तनवोधीमान् सत्यवत्यामजायत । वीरश्चित्रांगदो नाम वीर्य्यवानपुरुषेश्वरः ॥ २ ॥ अथापरंमहेष्वासं सत्यवत्यांसुतंप्रभुः । विचित्र वीर्य्यंराजानं जनयामासवीर्य्यवान् ॥ ३ ॥ अप्राप्तवतितस्मिंस्तु यौवनंपुरुषर्षभे । सराजाशान्तनुर्धीमान् कालधर्ममुपेयिवान् ॥ ४ ॥ स्वर्गतेशान्तनौभीष्मश्चित्रांगद मरिन्दमम् । स्थापयामासवैराज्ये सत्यवत्यामतेस्थितः ॥ ५ ॥ सतुचित्रांगदःशौर्य्या त्सर्वांश्चिक्षेपपार्थिवान् । मनुष्यंनहिमेनेस कञ्चित्सदृशमात्मनः ॥ ६ ॥ तंक्षिपन्तं सुरांश्चैव मनुष्यानसुरांस्तथा । गन्धर्वराजोबलवांस्तुल्य नामाभ्ययात्तदा ॥ ७ ॥ तेनास्यसुमहद्युद्धं कुरुक्षेत्रेबभूवह । तयोर्बलवतोस्तत्र गन्धर्वकुरुमुख्ययोः । नद्यास्तीरे सरस्वत्याः समाहितस्रोऽभवद्रणः ॥ ८ ॥ तस्मिन् विमर्दैतुमुले शस्त्रवर्षसमाकुले ।

अध्याय १०१ ॥

वैशम्पायनने कहा हे राजन् विवाह होजाने पर शांतनु ने रूपवती सत्यवती को अपने घर में स्थापित किया सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद नामक धीमान वीर्यवान् पुरुष श्रेष्ठ एक पुत्र पैदा हुआ फिर वीर्यवान् प्रभु शांतनु ने सत्यवती से विचित्रवीर्य नामक बडा चापधारी दूसरापुत्र उत्पन्नकिया॥३॥पुरुष श्रेष्ठ विचित्र वीर्य यौवन प्राप्तहोनेसे पहलेहीकाल बश हुआ शांतनु के मरने के पश्चात् भीष्म ने सत्यवती की सलाह से चित्रांगद को राज्यपर अभिषिक्तकिया॥५॥ चित्रांगदने सम्पूर्ण राजाओं को पराजय किया वोह किसी मनुष्यको अपनी बराबर नहीं समझताथा यह देखकर कि वोह सुर असुर और मनुष्यों को पराजय करसक्ता है चित्रांगद नामक एक बलवन्त गंधर्व उसके पास आया और शांतनु पुत्र चित्रांगद से गंधर्वराज चित्रांगद का कुरुक्षेत्र में बडा युद्धहुआ गंधर्वराज और कुरूराज दोनों महाबली थे तीन वर्षतक सरस्वती के किनारे युद्ध होतारहा॥८॥

CHAPTER CI

Vaishampayan said that the king Shantanu admitted after marriage the beautiful Satyavati to his Zenanah. Two brave sons were born of Satyavati by her union with Shantanu. The one was named Chitrangad and the other Vichitravirya. Prince Vichitravirya died in the prime of his youth. After the death of Shantanu, Bhishm with the advice of Satyavati installed Chitrangad on the throne. The latter by his bravery conquered all the (neighbouring) kings. He did not regard any one his equal. Seeing that he could conquer the gods, Asurs and men, Chitrangad, a brave king of the *Gandharvas* came to him. The two Chitrangads, the son of Shantanu and the king of Gandharves, were both brave. They

मायाधिकोऽवधीद्वीरं गन्धर्वः कुरुसत्तमम् ॥ ९ ॥ सहत्वातु नरश्रेष्ठं चित्रांगदमरिंदमम् । अन्तायकृत्वागन्धर्वो दिवमाचक्रमेततः ॥ १० ॥ तस्मिन्पुरुषशार्दूले निहते भूरितेजसि । भीष्मःशान्तनवोराजाप्रेतकार्याण्यकारयत् ॥ ११ ॥ विचित्रवीर्यंच तदा बालमप्राप्तयौवनम् । कुरुराज्येमहाबाहु रभ्यषिंचदनन्तरम् ॥ १२ ॥ विचित्रवीर्यःसतदा भीष्मस्यवचनेस्थितः । अन्वशासन्महाराज पितृपैतामहंपदम् ॥ १३ ॥ सधर्मशास्त्रकुशलं भीष्मंशान्तनवंनृपः । पूजयामासधर्मेण सचैनंप्रत्यपालयत् ॥ १४ ॥

इतिश्री महाभारते आदिपर्वणिसम्भवपर्वणि चित्रांगदो पाख्याने एकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

वैशम्पायनउवाच॥हतेचित्राङ्गदेभीष्मौ बालेभ्रातरिकौरव । पालयामासतद्राज्यं सत्यवत्यामतेस्थितः ॥ १ ॥ संप्राप्तयौवनंदृष्ट्वा भ्रातरंधीमतांवरः । भीष्मोविचित्र

अन्त में बड़ी मायावाले गंधर्वराजने वीर कुरुनंदनको रणमें गिराया और नर श्रेष्ठ चित्रांगदको मारकर गंधर्वराज तुरन्तही स्वर्गको चलागया।१०।अतितेजस्वी चित्रांगद के मारेजाने पर शांतनुनंदन भीष्मने उसकी सम्पूर्ण अंतिम क्रिया की तत्पश्चात् महाबाहु सत्यव्रतवाले भीष्म ने अप्राप्तयौवन बालक विचित्रवीर्यको कुरुराजमें अभिषिक्त किया।१२। विचित्रवीर्य भीष्मकी आज्ञानुसार पिताके राज्यका शासन करनेलगा वह धर्मशास्त्रज्ञ जिसप्रकार भीष्म की प्रतिष्ठा करताथा भीष्मनेभी धर्मानुसार वैसाही उसका पालनकिया ॥ १४ ॥

अध्याय १०२ ॥

वैशम्पायन ने कहा । हे कौरव ! चित्रांगदके मारेजानेपर उसके बाल भ्राता विचित्रवीर्यके नाम से और सत्यवतीकी सलाहसे भीष्म, राजका शाशनकरताथा हेबुद्धिमानभी-

fought a duel on the bank of the Saraswati for three years. In the end the king of Gandharvas killed prince Chitrangad and returned to heaven. At the death of the glorious Chitra, Bhishm performed his funeral ceremonies and then installed the young prince Vichitravirya on the throne of the Kurus. Under the guardianship of Bhishm, Vichitravirya ruled the kingdom of his father. The wise prince had a great respect for Bhishm who, in his turn, helped him righteously. 14.

CHAPTER CII

Vaishampayan said that after the death of Chitrangad Bhishm with the advice of Satyvati, ruled the kingdom in the name of the young prince, Vichitravirya. After some time, when the prince

वीर्यस्य विवाहायाकरोन्मतिम् ॥ २ ॥ अथकाशिपतेर्भीष्मः कन्यास्तिस्त्रोऽप्सरोपमाः
शुश्रावसहिताराजन् वृण्वानावैस्वयम्वरम् ॥ ३ ॥ ततःसरथिनांश्रेष्ठो रथेनैकेनशत्रु
जित्। जगामानुमतेमातुः पुरींवाराणसींप्रभुः ॥ ४ ॥ तत्रराज्ञःसमुदितान् सर्वतःस
मुपागतान्। ददर्शकन्यास्ताश्चैव भीष्मःशान्तनुनन्दनः ॥ ५ ॥ कीर्त्यमानेषुराज्ञान्तु
तदानामसुसर्वशः। भीष्मस्तदास्वयंकन्या वरयामासताःप्रभुः ॥ ६ ॥ उवाचचमही
पालान् राजन्जलदनिःस्वनः। रथमारोप्यताःकन्या भीष्मःप्रहरतांवरः ॥ ७ ॥ आहू
यदानंकन्यानां गुणवद्भ्यःस्मृतंवुधैः। अलंकृत्ययथाशक्ति प्रदायचधनान्यपि ॥ ८॥
प्रयच्छन्त्यपरेकन्या मिथुनेनगवामपि। वित्तेनकथितेनान्ये वलेनान्येऽनुमान्यच ॥ ९
॥ प्रमत्तामुपयान्त्यन्ये स्वयमन्येचविन्दते। आर्षविधिंपुरस्कृत्य दारान्विन्दन्तिचापरे
॥ १० ॥ अष्टमंतमथोवित्त विवाहंकविभिर्वृतम्। स्वयम्वरन्तुराजन्याः प्रशंसन्त्युप

ष्म अपने भ्राता विचित्रवीर्य के यौवनावस्थाके प्राप्तहोनेपर उसके बिवाहके लिये सोचने लगा इन्हों ने सुना कि काशिराजकी अप्सरासमान तीन कन्याओंका एक साथ स्वयम्बर होगा।३।महारथी सत्रजित् प्रभु भीष्म माताकी आज्ञालेकर रथपरचढ बनारसको गये और वहाँ पहुँचकर देखा कि सबजगह के राजा एकत्रितहैं और उनके मध्य में स्वयम्बरकी अभिलाषिणी दोतीन कन्याभी विद्यमानहैं जब सब राजाओं के नाम कहेजाने लगे तवप्रभु भीष्मने स्वयम् तीनों कन्याओंको हरलिया।६।और उनको अपनेरथपर चढाकर कहनेलगे कि बुद्धिमानोंका बचन है कि गुणवान वरको बुलाकर यथाशक्ति कन्याको अलंकृत कर के और धन देकर कन्याको देना चाहिये कोई लोग दोगायें लेकर कन्यादान करते हैं कोई धन लेकर कन्यादान करते हैं, कोईवलपूर्वक कन्याको लेजाते हैं, कोई कन्याकी सम्मति से बिवाहकरते हैं, कोई प्रमत्ता कन्यासे मिलते हैं और कोई लोग दानकरने वाले को बुलाकर वा स्वयम् जाकर कन्याको प्राप्तकरते हैं कोई उचितविधान के अनुसार कन्याको दक्षिणामें लेते हैं १० आठसंख्याओं में गिनेजातेहुए यह शेषोप्त बिवाह कवियोंका प्रशंसनीय

became adult, Bhism thought of his marriage. In the meantime the date of the simultaneous Swayamvar (Choosing the husband) of the three beautiful daughters of the king of Kashi was proclaimed. 3. The Maharathi, destroyer of enemies, lord Bhishm went to Kashi with the permission of the mother. On reaching there he saw that kings from all parts had come together and in the midst were the three girls desirous of selecting husbands for themselves. When the names of all the kings were being called out, lord Bhishma took possession of the three girls. 6. And having placed them on his chariot he said, "The wise say that one should give as charity one's daughter decked with ornaments, to a person of good qualities; others give their daughters in return for a couple of cows;

यान्निच । प्रमथ्यतुहृतामाहुर्ज्यायसींधर्मवादिनः ॥ ११ ॥ ताइमाःपृथिवीपाला जिहीर्षामिबलादितः । तेयतध्वंपरंशक्त्या विजयायेतरायवा ॥ १२ स्थितोऽहंपृथिवीपाला युद्धायकृतनिश्चयः । एवमुक्त्वामहीपालान् काशिराजंचवीर्य्यवान् ॥ १३ ॥ सर्वाः कन्याःसकौरव्यो रथमारोप्यचस्वकम् । आमन्त्र्यचसतान्प्रायाच्छीघ्रंकन्याःप्रगृह्यताः ॥ १४ ॥ ततस्तेपार्थिवाःसर्वे समुत्पेतुरमर्षिताः । संस्पृशन्तःस्वकान्बाहून्दशन्तोदशनच्छदान् ॥ १५ ॥ तेषामाभरणान्याशु त्वरितानांविमुञ्चताम् । आमुञ्चताञ्चवर्माणि सम्भ्रमःसुमहानभूत् ॥ १६ ॥ ताराणामिवसम्पातो बभूवजनमेजय । भूषणाञ्चसर्वेषां कवचानाञ्चसर्वशः ॥ १७ ॥ सवर्मभिर्भूषणैश्च प्रकीर्य्यद्भिरितस्ततः । सक्रोधामर्षजिह्मभ्रू कषायीकृतलोचनाः ॥ १८ ॥ सूतोपक्लृप्तानुरुचिरान् सदश्वैरुपकल्पितान् ।

है परन्तु राजालोग स्वयम्वरहीकी प्रशंसा करते हैं और धर्मबादी जन कहते हैं कि स्वयम्वरकी जगह दूसरी तरफवालेको हराकर बलपूर्वक जो कन्यालीजाती है वही पत्नी श्रेष्ठहै इस लिये बलपूर्वक मैं इसस्थान से कन्याको हरताहूं हेराजाओ तुम में जिसकी जितनी शक्तिहै उसके अनुसार इसको छीनने के लिये यत्न करो व हार मानो ।१२। हे राजाओ मैं युद्धके लिये तय्यार हूँ बीर्यवान कौरवनन्दन काशिराज और दूसरेराजाओंसे यह कहकर कन्याओंको अपने रथपर चढाकर और राजाओंको युद्धके लिये बोलाकर शीघ्र चलेगये।१४। फिर सब राजा क्रोधितहोकर अपनी २ बड़ाई प्रकटकरते और दांतोंसे होठ काटतेहुए उठ खडेहुए उनमें से किसी २ ने ऐसी शीघ्रताकी कि क्रोधवश उन के पहिनेहुए आभूषण और कवच आदि शरीरसे गिरनेलगे।१६।उनके गिरेहुए आभूषण और कवच तारोंके गिरनेके समान दीख पडतेथे वह सबराजा इधर उधर कवच और अलंकारोंके गिरने से क्रोधवश भौहैं चढातेहुए और आंखैं चमकातेहुए अस्त्र शस्त्र लेकर।१८।

some carry away the girl by force, others marry by consent; some gain their purpose by intoxicating the girl, others get her by sending for the donor or going there, while others receive the girl as charity with due rites. 10. Of the eight sorts of marriges poets eulogise the last named. But kings prefer the Swamvara form. Those who know the Dharm, say that a girl carried away by force, after defeating the other parties at Swayamvar, is the best wife. I therefore. carry the girls by force. You Rajas, may try your best to conquer me or, you will be taken as vanquished. I am ready to fight. The brave Bhishm having thus addressed the assembled kings and challenged them to fight, rode away with the girls on his chariot. The kings were angry at this insult and rose to fight. Some of them were so overpowered with anger as

रथानास्थायतेवीराः सर्वप्रहरणान्विताः ॥ १९ ॥ प्रयान्तमथकौरव्यमनुसस्रुरुदायुधाः
ततःसमभवद्युद्धं तेषांतस्यचभारत ॥ २० ॥ एकस्यचबहूनांच तुमुलंलोमहर्षणम् । ते
त्विषून्दशसाहास्रांस्तस्मिन् युगपदाक्षिपन् । अप्राप्तांश्चैवतानाशु भीष्मःसर्वांस्तदा.
न्तरा ॥ २१ ॥ अच्छिनच्छरवर्षेण महतालोमवाहिना ॥ २२ ॥ ततस्तेपार्थिवाःसर्वे
सर्वतःपरिवार्य्यतम् । ववृषुःशरवर्षेण वर्षेणेवाद्रिमम्बुदाः ॥ २३ ॥ सतंवाणमयंवर्षं
शरैरावार्य्यसर्वतः । ततःसर्वान्महीपालान् पर्य्यविध्यत्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ २४ ॥ एकैकस्तु
ततोभीष्मं राजन्विव्याधपञ्चभिः । सचतान्प्रतिविव्याध द्वाभ्यांद्वाभ्यांपराक्रमन्
॥ २५ ॥ तद्युद्धमासीत्तुमुलं घोरंदेवासुरोपमम् । पश्यतांलोकवीराणां शरशक्तिसमा
कुलम् ॥ २६ ॥ सधनूंषिध्वजाग्राणि वर्माणिचशिरांसिच । चिच्छेदसमरेभीष्मः श-
तशोऽथसहस्रशः ॥ २७ ॥ तस्यातिपुरुषानन्याल्लाघवं रथचारिणः । रक्षणंचात्मनः

सार्थियोंसे अच्छे घोड़े जुतवाकर सुन्दर रथोंपर चढकर भीष्मके पीछे चले और अकेले भीष्मसे उन सब राजाओंका कठोर युद्धहोनेलगा।२०।राजाओं ने एकहीकाल में भीष्मपर दशसहस्र वाण मारे भीष्मने उसीक्षण वाणों के आने के पहिले बीचही में रोयोंको बीनने वाले घोरवाणोंकी वृष्टि से टुकडे २ करडाला।२२। फिर सब राजे चारों ओरसे उनको घेरकर जिसप्रकार बादल चारों तरफसे जलधारा वर्षाते हैं उसप्रकार उनपर वाण बर्षाने लगे तब भीष्मने वाणजालसे उन सब वाणोंकी वर्षाको रोककर तीन २ वाणों से हर एक राजाको बींधा।२४।और हरएक राजानेभी भीष्मके पांच २ वाणमारे फिर भीष्म ने प्रभाव प्रकटकर दो २ बाण हर राजा के मारे वह युद्ध इतना कठोरहोनेलगा कि जो सब वीर देवासुर के युद्धके समान और शर सक्तियोंसे समाकुल उसघोर युद्धको देख रहे थे उनकोभी उस युद्धसे भय मालूम होनेलगा भीष्मने युद्धमें हजारों शरासन, ध्वजा

to drop in haste the ornaments of their body. Their falling jewels and coats-of-mail looked like falling stars. Being more and more angry at the falling of their ornaments, they lost their self control and having taken up their arms they rode on their well equipped chariots to follow Bhishm. Then followed a dreadful encounter between Bhishm and the rajas. The kings shot ten thousand arrows towards Bhishm who cut them all down in the way. Then all the rajas surrounded him and began to pour on him a shower of arrows as a mass of clouds pours rain over a mountain. Bhishm obstructed the downpour by a network of his arrows and wounded each of them with three arrows of his own. Every king shot five arrows at Bhishm and he again showed his bravery by shooting

संख्ये शत्रवोऽप्यभ्यपूजयन् ॥ २८ ॥ तान्विनिर्ज्जित्यतुरणे सर्वशस्त्रभृतां वरः। कन्या
भिःसहितःप्रायाद्भारतोभारतान्प्रति ॥ २९ ॥ ततस्तंपृष्ठतो राजञ्छाल्वराजोमहारथः
अभ्यगच्छदमेयात्मा भीष्मंशान्तनवंरणे ॥ ३० ॥ वारणंजघने भिन्दन्दन्ताभ्यामप-
रोयथा । वासितामनुसम्प्राप्तो यूथपोबलिनांवरः ॥ ३१ ॥ स्त्रीकामस्तिष्ठतिष्ठेति
भीष्ममाहसपार्थिवः । शाल्वराजोमहाबाहुरमर्षेण प्रचोदितः ॥ ३२ ॥ ततःसपुरुष-
व्याघ्रोभीष्मःपरबलार्द्दनः । तद्वाक्याकुलितःक्रोधाद्विधूमोऽग्निरिवज्वलन् ॥ ३३ ॥
विततेषुधनुष्पाणि र्विकुञ्चितललाटभृत् । क्षत्रधर्मंसमास्थाय व्यपेतभयसम्भ्रमः ३४
निवर्तयामासरथं शाल्वंप्रतिमहारथः । निवर्त्तमानंतंदृष्ट्वा राजानःसर्वएवते । प्रेक्षकाः
सम्पद्यन्तभीष्म शाल्वसमागमे ॥ ३५ ॥ तौवृषाविवनर्द्दन्तौ बलिनौवासितान्तरे ।

कवच और शिर काटे तब रथपर चढेहुए राजा लोगोंने शत्रुहोने परभी उनके अलौ-
किक आश्चर्य कार्य शीघ्र हाथचलानेका कौशल और आत्मरक्षाको देखकर प्रशंसा पूर्वक
उनका सन्मान किया।२८। फिर शत्रुचार्रियों में श्रेष्ठ भरतवंश तिलक भीष्मने राजाओंको
युद्धमें परास्तकर कन्याओं सहित अपने नगरकी यात्राकी । ३० । हे राजन्! जिसप्रकार
महाबली हस्तिराज किसी हस्थिनीके प्राप्तकियेहुए दूसरे हाथीके दोनों जंघाको फाड़कर
हस्थिनीकी ओर दौड़ताहै उसीप्रकार महारथी शाल्वराज स्त्री कामीहोकर युद्धके लिये
भीष्म के पीछे दौड़ा और भीष्मको ठहरनेके लिये कहा॥३२॥शत्रु बलके मथनेवाले पुरुष
व्याघ्र भीष्म उसके वाक्य से क्रोधितहो अग्निकी समान चलउठे क्षत्रिय धर्म मे सच्चे
निष्ठावान उस महारथीने शिरको सकोडकर शरासनको फैलाकर शाल्वराज के लिये
निडर और स्थिर चितसे रोकलिया सम्पूर्ण राजालोग उनको निवृत्तहोते देखकर भीष्म
और शाल्वका समागम देखनेके लिये खडेहोगये॥३५॥ऋतुमती गौकेलिये दोबलवान् बैल

two more arrows at every Raja. The contest was very keen to look at, like that between the gods and the Asurs, causing great fear to the lookers on. Bhishma cut down hundreds and thousands of banners, armours and heads. The kings, though enimical, praised his great prowess, wonderful dexterity of hand, and self protection. Having vanquished the rajas, Bhishm proceeded with the girls towards the capital. The brave Shalwaraja, then, came forward toward Bhishm as the brave leader of a herd of elephants flies towards a female elephant after having wounded her paramour. He challenged Bhishm to stay. Bhishma, the destroyer of enemies, was much enraged at the challenge. He stopped his chariot and was ready for the encounter. The kings stopped to see the encounter between Shalwa and Bhishm. The two brave monarchs

अन्योन्यमभिवर्त्तेतां बलविक्रमशालिनौ ॥ ३६ ॥ ततोभीष्मंशान्तनवं शरैःशतसहस्रशः । शाल्वराजोनरश्रेष्ठः समवाकिरदाशुगैः ॥ ३७ ॥ पूर्वमभ्यर्दितंदृष्ट्वा भीष्मंशाल्वेनतेनृपाः । विस्मिताःसमपद्यन्त साधुसाध्वितिचाब्रुवन् ॥ ३८ ॥ लाघवंतस्यतेदृष्ट्वा समरेसर्वपार्थिवाः । अपूजयन्तसंहृष्टा वाग्भिःशाल्वंनराधिपम् ॥ ३९ ॥ क्षत्रियाणां ततोवाचःश्रुत्वापरपुरञ्जयः । क्रुद्धःशान्तनवो भीष्मस्तिष्ठतिष्ठेत्यभाषत ॥ ४० ॥ सारथिंचाब्रवीत् क्रुद्धोयाहियत्रैषपार्थिवः । यावदेनंनिहन्म्यद्य भुजङ्गमिवपक्षिराट् ॥ ४१ ॥ ततोऽस्त्रंवारुणं सम्यग्योजयामासकौरवः । तेनाश्वांश्चतुरोऽमृद्नाच्छाल्वराजस्यभूपतेः ॥ ४२ ॥ अस्त्रैरस्त्राणिसंवार्य शाल्वराजस्यकौरवः भीष्मोनृपतिशार्दूलन्यवधीत्तस्य सारथिम् ॥ ४३ ॥ अस्त्रेण चास्याथैन्द्रेणन्यवधीत्तुरगोत्तमान् । कन्याहेतोर्नरश्रेष्ठ भीष्मःशान्तनवस्तदा ॥ ४४ ॥ जित्वाविसर्ज्जयामास जीवन्तंनृपसत्तमम् । ततःशाल्वः स्वनगरंप्रययौ भरतर्षभ । ४५ ॥ स्वराज्यमन्वशाच्चैव धर्मेणनृपतिस्तदा ।

जैसेगरजतेहैं वैसेहीमहाबली पराक्रमी दोनोंराजा आपसमें बिक्रमप्रकटकरनेलगेनरश्रेष्ठशाल्वराजने एकलक्ष शीघ्रगामी तीरोंसे भीष्मको ढक दिया राजालोग पहले शाल्वराजको मथे जातेदेखकर आश्चर्य से शाल्वराजकी वारम्बार बडाई करनेलगे।३८।और शाल्वराजकी हाथकी चालाकी और युद्धकी कुशलता देखकर प्रसन्न चित्तसे बडी प्रशंसा करने लगे फिरशत्रुपुर विजयी शांतनु पुत्रने क्षत्रियोंकी वोह प्रशंसा सुनाकर क्रोधयुक्तहोकर तिष्ठरकहा४० और क्रोध पूर्वक सार्थी को आज्ञा दी कि शिलपराज के पास रथको ले चलो जिस प्रकार गरुड सर्पको नष्टकरता है उसी प्रकार मैं आज उसका प्राण नष्ट करुंगा फिर कुरुनन्दन भीष्मने वारुणास्त्र छोडकर शाल्वराज के चारों घोडेनष्ट किये और अस्त्र से शाल्व राजके सम्पूर्ण अस्त्र दूर कर उसके सारथी को यमराज का पाहुना बनाया । हे राजन् ! शांतनु नन्दन भीष्मने कन्याओं के लिये ऐन्द्र अस्त्रसे उसके अच्छे घोडोंको मारा।४४।इसप्रकार नृप श्रेष्ठ शाल्वराज को जीवित मात्रही छोडादिया फिर शल्वराज अपने नगर में जाकर धर्म

began to show their prowess as two mad bulls bellow and fight for a heifer. The prince Shalwaraj covered Bhishm with a hundred thousands of swift arrows. The bystanders wondered at the over powering of Bhishm by Shalwaraj at the outset and began to applaud and praise the dexterity of Shalwaraj. Having heard the praises of Shalwaraj, the son of Shantanu was much enranged. He ordered his charioteer to take his chariot near that of Shalwaraj saying that he would kill him as the Garur does a serpent. He then killed the four horses of Shalwaraj's chariot with a stroke of his missile and having cut all the weapons of Shalwaraj by his own he killed his charioteer. He had already killed the horses by his missile for the sake of the girls. He now conquered the prince

राजानोयेचतत्रासन् स्वयम्वरादिदृक्षवः । स्वान्येवतेऽपिराष्ट्राणि जग्मुःपरपुरञ्जयाः ॥४६॥ एवंविजित्यताःकन्याभीष्मःप्रहरतांवरः । प्रययौहास्तिनपुरं यत्रराजासकौरवः विचित्रवीर्यो धर्मात्माप्रशास्तिवसुधामिमाम्। यथापितास्यकौरव्यः शान्तनुर्नृपसत्तमः ॥४८॥ सोऽचिरेणैवकालेन अत्यक्रामन्नराधिप । वनानिसरितश्चैवशैलांश्चविविधान् द्रुमान् ॥४९॥ अक्षतःक्षपयित्वारीन् संख्येऽसंख्येय विक्रमः । आनयामासकाश्यस्य सुताः सागरगासुतः ॥ ५० ॥ स्नुषाइवसधर्मात्मा भगिनीरिव चानुजाः । यथादुहितरश्चैव परिगृह्ययया कुरून् ॥ ५१ ॥ आनिन्येसमहाबाहुर्भ्रातुः प्रियचिकीर्षया । ताःसर्वगुणसम्पन्ना भ्राताभ्रात्रेयवीयसे ॥ ५२ ॥ भीष्मो विचित्रवीर्यायप्रददौ विक्रमाहृताः । एवंधर्मेण धर्मज्ञःकृत्वाकर्मातिमानुषम् ॥ ५३ ॥ भ्रातुर्विचित्र वीर्य्यस्यविवाहायोपचक्रमे । सत्यवत्यासहमिथः कृत्वानिश्चयमात्मवान् ॥ ५४ ॥ विवाहं कारयिष्यन्तं भीष्मंकाशिपतेः सुता । ज्येष्ठातासामिदं वाक्यमब्रवीद्धसतीतदा ॥५५॥

नुसार अपने राज्यका शासन करने लगा शत्रु पुर विजयी जो सब राजा स्वयम्वर देखने आये थे वे भी अपने २ नगरको गये महा योद्धा कुरु पुरु भीष्म इसप्रकार तीनों कन्याओं को जीतकर हास्तिनपुर में कौरव राज विचित्र वीर्य के पासगये जिसप्रकार कुरु वंशी नृप श्रेष्ठ शांतनु राज्यका शासन करता था वैसेही धर्मात्मा विचित्र वीर्य भी पृथ्वी का पालन करता था।४८। हेराजन्! थोडेकाल मेही भीष्म बन, जल, पर्वत और भांतिरके बृक्षयुक्त उपवन अति क्रम करने लगे फिर शत्रु कुलनष्ट कर रण स्थल से अक्षत शरीर से काशिराजकी कन्याओं को ले आया ।५१। धर्म शील महाभुज भीष्मने भाई की भलाईके लिये लडाई से लाई हुई सब गुणयुक्त कन्याओं को पुत्रवधू, छोटी वहिन और वेटी की समान कौरवों के पास लाकर छोटे भाई विचित्र वीर्यको दे दिया वह धर्मानुसार अलौकिक कार्य को पूराकर भ्राता विचित्र वीर्य के विवाहके लिये प्रबंध करने लगा जितेन्द्रिय भीष्म ने सत्यवती की सलाहसे काशिराज की कन्याओं से विचित्र वीर्यका विवाह कर

leaving him nearly dead. Shalwaraj went back to his own country to rule it righteously and so did the other princes who had come to witness the Swayamvar. The greatest of warriors Bhishm having won the three girls returned to his own country where Vichitravirya was. Vichitravirya ruled his subjects righteously like his father Shantanu. Such was the prince for whom Bhism the destroyer of enemies, had brought the daughters of Kashiraj by showing so much prowess. The brave Bhishma for the good of his younger brother brought the girls like his younger sister or daughters and made a present of them to Vichitravirya and began to make preparations for his marriage. He, with the consultation of Satyavati fixed the date of marriage. In the meantime the

मयासौभपतिः पूर्व्वंमनसाभिवृतःपतिः । तेनचास्मिवृता पूर्व्वमेषकामश्चमेपितुः ॥ ५६ ॥ मयावरयितव्योऽभूच्छाल्वस्तस्मिन् स्वयम्बरे । एतद्विज्ञायधर्मज्ञधर्म्मं तत्त्वंसमाचर ॥ ५७ ॥ एवमुक्तस्तया भीष्मःकन्यया विप्रसंसदि । चिन्तामभ्यगमद्वीरो युक्तांतस्यैवकर्म्मणः ॥५८॥ विनिश्चित्य सधर्मज्ञोब्राह्मणैर्वेदपारगैः अनुजज्ञेतदाज्येष्ठामम्बांकाशीपतेःसुताम् ॥ ५९ ॥ अम्बिकाम्बालिके भार्य्येप्रादाद्भ्रात्रे यवीयसे । भीष्मोविचित्रवीर्य्यायविधिदृष्टेनकर्म्मणा ॥ ६० ॥ तयोःपाणींगृहीत्वातु रूपयौवनदर्पितः । विचित्रवीर्य्योधर्मात्माकामात्मासमपद्यत ॥ ६१ ॥ तेचापिबृहतीश्यामेनीलकुञ्चितमूर्द्धजे । रक्ततुङ्गनखोपेते पीनश्रोणिपयोधरे ॥ ६२ ॥ आत्मनःप्रतिरूपोऽसौ लब्धःपतिरितिस्थिते । विचित्रवीर्य्यं कल्याण्यौ पूजयामासतुःशुभे ॥ ६३ ॥ सचाश्विरूपसदृशो देवतुल्यपराक्रमः । सर्व्वासामेवनारीणां चित्तप्रमथनोरहः ॥ ६४ ॥ ताभ्यां

देना निश्चय किया॥५४॥ उससमय उनकन्याओं मेंसे बडीहँसकर कहनेलगी कि मैं पहले सौभराज्यके नरेश शाल्वको मनहीं में अपना पति बनाचुकी थी उसने भी मनहीं में अपनी भार्या बनायाथा इसमें मेरे पिताकी भी इच्छाथी मैं स्वयम्बर भूमि में शाल्वको ही वरमाल देती आप धर्मशीलहैं यह विचारकर धर्मानुसार कामकीजिये।५७।उस कन्याके सभामें यह बात कहने पर धर्मज्ञ वीर्य भीष्म यह सोचने लगें कि क्याकरना चाहिये फिर उन्हों ने वेदज्ञानी ब्राह्मण से निश्चय कर काशिराजकी कन्या अम्बाको अपना अभीष्ट पूर्ण करनेकी आज्ञादी और यथा विधि अम्बिका और अम्बालिका उसकी दो बहिनों से विचित्र वीर्य का बिवाह करदिया।६०।रूपयौवन युक्त धर्मात्मा विचित्रवीर्य ने अम्बिका और अम्बालिका का पाणिग्रहण किया सुन्दर केश, नख और आंखों वाली अम्बिका और अम्बालिका दोनों अपने पतिको प्रियथी और दोनों विचित्र वीर्यको प्रसन्न करनेलगीं अश्विनीकुमारके समान

eldest of the girls said to Bhishm smilingly "I had in my mind selected Shalwaraj for husband and he in his mind had taken me for wife. My father too had consented to the match. I should have selected him at the Swayamvar. You are righteous. Act righteously." On hearing this in the midst of Brahmans Bhishm reflected in his mind what to do and in consultation with the *Brahmans* allowed the girl, Amba, to have her will. He then married the two younger daughters named Ambika and Ambalika to Vichitravirya who was very happy at finding so beautiful wives. Of curly blue hair, red nails, black eyes and good manners, Ambika and Ambalika were both dear to their husband. Having found in Vichitravirya a husband to their taste they began to worship him with satisfaction. Beautiful like the Ashwinikumars and glorious like a god, Vichitravirya was fondly loved by the two

सहसमाःसप्त विहरन्पृथिवीपतिः । विचित्रवीर्य्यस्तरुणो यक्ष्मणासमगृह्यत ॥ ६५॥ सुहृदांयतमानाना माप्तैःसहचिकित्सकैः । जगामास्तमिवादित्यः कौरव्योयमसादनम् ॥ ६६ ॥ धर्मात्मासतुगांगेयश्चिन्ताशोकपरायणः । प्रेतकार्य्याणिसर्वाणि तस्य सम्यगकारयत् ॥ ६७ ॥ राज्ञो विचित्रवीर्य्यस्य सत्यवत्यामतेस्थितः । ऋत्विग्भिः सहितो भीष्मः सर्वैश्चकुरुपुंगवैः ॥ ६८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि विचित्रवीर्यो परमेद्व्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १०२ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ ततः सत्यवतीदीना कृपणापुत्रगृद्धिनी । पुत्रस्यकृत्वा कार्य्याणि स्नुषाभ्यांसहभारत ॥ १ ॥ समाश्वास्यस्नुषेतेच भीष्मंशस्त्रभृतांवरम् । धर्मंचपितृवंशञ्च मातृवंशञ्चभाविनी । प्रसमीक्ष्यमहाभागा गांगेयं वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥ शान्तनोर्धर्मनित्यस्य कौरवस्ययशस्विनः । त्वयि पिण्डश्चकीर्तिश्च सन्तानंच

रूपवान् और देवतुल्य पराक्रमी विचित्र वीर्य दोनों स्त्रियों को प्रीति से रखनेलगा ॥६४॥ वह उन दोनों स्त्रियों के साथ सातवर्ष विहारकर यौवन कालहीमें भयानक क्षयरोग से ग्रसितहुआ विश्वासी चिकित्सकोंसे यत्नकरने परभी कुरूकुल प्रदीप विचित्रवीर्य काल वश अस्ताचलको गयेहुए सूर्यके समान अदृश्यहुआ धर्मात्मा भीष्मने चिन्तायुक्त और शोकवशहो ऋत्विक् और सम्पूर्ण कौरवों के साथ सत्यवती के मतानुसार विचित्रवीर्यक सब प्रेतकर्म किये ॥ ६८ ॥

अध्याय १०३ ॥

वैशम्पायन ने कहा । हे भारत ! फिर महाभागा सत्यवती पुत्र शोक से विह्वल, दीनहोकर पुत्रवधुओं के साथ पुत्रकी और्ध्वदेहिक क्रिया पूरीकर भीष्मको और दोनों पुत्रवधुओंको समझा बुझाकर मातृवंश और पितृवंशकी दशापर ध्यानकरके धर्मानुसार भीष्मसे कहनेलगी ।२। कि धर्मशील,यशस्वी,कुरुवंशी,नरेश शांतनुका वंश कीर्तिऔर पिंड

women. Having enjoyed their society for seven years he was overtaken by severe pthisis in the prime of his youth. And in spite of his friends having taken the advice of the most reliable physicians the prince passed out of the world like the setting sun. The virtuous Bhishm with grief and anxiety, in consultation with Satyavati, caused his funeral rites to be performed by the priests and the Kaurvas. 68.

CHAPTER CIII.

Vaishampayan said that being plunged in grief for the death of her son, the unfortunate Satyavati having performed with her daughters-in-law the obsequies of her son consoled Bhishma and them. And having considered well the state of the paternal and maternal lines and the religious duties she said to Bhishm, 2. " On

प्रतिष्ठितम् ॥ ३ ॥ यथाकर्मशुभंकृत्वा स्वर्गोपगमनंध्रुवम् । यथाचायुर्ध्रुवंसत्ये त्वयि धर्मस्तथाध्रुवः ॥ ४ ॥ वेत्थधर्मांश्चधर्मज्ञ समासेनेतरेणच । विविधास्त्वं श्रुतीर्वेत्थ वेदांगानिचसर्वशः ॥ ५ ॥ व्यवस्थानञ्चतेधर्मे कुलाचारञ्चलक्षये । प्रतिपत्तिञ्च कृच्छ्रेषु शुक्रांगिरसयोरिव ॥ ६ ॥ तस्मात्सुभृशमाश्वस्य त्वयिधर्मभृतांवर । कार्य्ये त्वांविनियोक्ष्यामि तच्छ्रुत्वाकर्तुमर्हसि ॥ ७ ॥ ममपुत्रस्तवभ्राताचवीर्य्यवान्सुप्रियश्च ते । बालएवगतःस्वर्गं मपुत्रःपुरुषर्षभ ॥ ८ ॥ इमेमहिष्यौभ्रातुस्ते काशिराजसुते शुभे । रूपयौवनसम्पन्ने पुत्रकामेचभारत ॥ ९ ॥ तयोरुत्पादयापत्यं सन्तानाय कुलस्यनः । मन्नियोगान्महाबाहो धर्मंकर्तुमिहार्हसि ॥ १० ॥ राज्येचैवाभिषिच्यस्व भारताननुशाधिच । दारांश्चकुरुधर्मेण मानिमज्जीःपितामहान् ॥ ११ ॥ वैशम्पायन

तुम्हीं पर निर्भरहै और जैसे शुभकर्म से स्वर्ग मिलता है और सत्यशीलतासे आयुबढती है ऐसेही तुम से धर्म प्रतिष्ठितहै हेधर्मज्ञ तुम धैर्य और नानाप्रकारकी श्रुति और सम्पूर्ण वेदांगों को संक्षेप और विस्तृतरूपसे जानतेहो शुक्र और अंगिराकी समान तुम में धर्म शीलता और कुलाचार और बिपतिकालमें विचारकरनेकी शक्ति है।६।यह सब मैं जानतीहूं इसलिये तुमपर बड़ा भरोसा रखकर तुमको एक कार्य पर नियुक्त करती हूं तुम्हारा प्याराभाई मेरापुत्र बीर्यवान विचित्रवीर्य निःसंतान युवावस्थामेंही स्वर्गबासी हुआ हेभारत तुम्हारे भ्राताकी रानी रूप यौवन युक्त शुभ लक्षणा यहँ काशिराजकी कन्यायें पुत्रकी कामना रखती हैं।९। हेमहाभुज हमारे वंशकी रक्षाके लिये मेरे कहनेसे इनके पुत्र उत्पन्न करके धर्मकी रक्षाकरो और भारत राज्यका शासन करके धर्मानुसार विवाहकरलो पितरों को

you only depends the well.being of the family of the virtuous and celebrated Shantanu of the Kuru dynasty. As a righteous deed is sure to lead to heaven and truth always prolongs life so is virtue honoured in you. You are acquainted, O virtuous one, with the principles of virtue and with the various *Shruties* and branches of the Vedas. Like Shukra and Brahaspati you are virtuous, learned in the customs of the family, and able to advise at the time of trouble.6. I know all this, and have reliance upon you. I shall, therefore, entrust a weighty matter to you. Having heard it, you shall have to perform it. Your dear brother, my son, the valliant Vichitravirya died childless in the prime of his youth. The young and beautiful queens of your brother the daughters of the king of Kashi, are desirous of offspring. 9. To perpetuate the line and by my orders, you shall have to bring forth sons in both my daughters-in-law, to marry them and to rule the kingdom of Bharat. You

Pandit Prasad 180

उवाच ॥ तथोच्यमानोमात्रास सुहृद्भिश्चपरन्तपः । इत्युवाचाथधर्मात्मा धर्म्यमेवो-
त्तरंवचः ॥ १२ ॥ असंशयंपरोधर्म्मस्त्वयामातरुदाहृतः । त्वमपत्यंप्रतिचमे प्रतिज्ञां
वेत्थवैपराम् ॥ १३ ॥ जानासिचयथावृत्तं शुल्कहेतोस्त्वदन्तरे । ससत्यवतिसत्यं ते
प्रतिजानाम्यहंपुनः ॥ १४ ॥ परित्यजेयं त्रैलोक्यं राज्यंदेवेषुवापुनः । यद्वाप्यधिक
मेताभ्यां नतुसत्यंकथञ्चन ॥ १५ ॥ त्यजेच्चपृथिवीगन्ध मापश्चरसमात्मनः ।
ज्योतिस्तथात्यजेद्रूपं वायुःस्पर्शगुणंत्यजेत् ॥ १६ ॥ प्रभांसमुत्सृजेदर्को धूमकेतु-
स्तथोष्णताम् । त्यजेच्छब्दंतथाकाशं सोमःशीतांशुतांत्यजेत् ॥ १७ ॥ विक्रमंवृत्रहा
जह्याद्धर्मंजह्याच्चधर्मराट् । नत्वहंसत्यमुत्स्रष्टुं व्यवस्येयंकथञ्चन ॥ १८ ॥ एवमुक्ता
तुपुत्रेण भूरिद्रविणतेजसा । मातासत्यवतीभीष्म मुवाचतदनन्तरम् ॥ १९ ॥ जाना
मित स्थितिंसत्ये परांसत्यपराक्रम । इच्छन्सृजेथास्त्रीँल्लोकानन्यांस्त्वंस्वेनतेजसा ॥

गत हुआ ओ वैशम्पायनने कहा कि प्रिय माताके ऐसा कहनेपर धर्मात्मा परन्तप भीष्म ने धर्मानुसार यह उत्तर दिया कि हे माता इसमें संदेह नहीं कि आपने जो कहा धर्म युक्तहै परन्तु सन्तानके लिये जो सत्यव्रण कियागयाथा वह तुम्हें यादहोगा उस सत्यकी रक्षा के लिये फिर प्रतिज्ञाकरताहूं।१४।कि देवलोकका राज्य और उससेभी अधिक छोड सक्ताहूं परन्तु सत्यको किसीप्रकार न छोडूंगा यदि पृथ्वी गंधको छोडदे, जल अपनेरस को छोडदे, अग्नि रूपको, पवन अनुभव गुणको, सूर्य अपने प्रकाशको, पुच्छल तारा अपनी गरमी को, आकाश शब्दको, चन्द्रमा ठंडी किरणों को इन्द्र अपने विक्रमके और धर्मराज अपने धर्मको छोडदें तौभी मैं सत्यको नहीं छोडसकूंगा।१८। अतिबलवान भीष्मके ऐसा कहनेपर माता सत्यवतीने कहा कि हे सत्य पराक्रमी सत्य मैं जो तुम्हारी निष्ठाहै वह मुझे मालूमहै तुम अपनी इच्छा और तेजसे त्रिलोक रचसक्ते हो और तुमने

shall not make the line extinct." Vaishampayan said that having heard this from the *friendly* mother, the wise Bhishm replied, "Your words mother, are no doubt according to law. But do you know my former vow about raising offspring? I again renew my vow: 14. I would renounce heaven, or, more than that; but, not the Truth. The Earth may renounce its scent, water may renounce its moisture, light may renounce its visibility, the air its *attribute* of touch, the sun its light, the comet its heat, the space its capacity of generating sound, the moon her cool rays, Indra his prowess the god of justice his impartiality, but I shall in no way renounce the truth. 18. Hearing these words of the heroic *Bhishma*, Satyvati said, "I know, righteous man, your firmness in the path of virtue; you can, at will create three new worlds; I know also, the vow

॥ २० ॥ जानामिचैवंसत्यं तन्मदर्थेयच्चभाषितम् । आपद्धर्मंत्वमावेक्ष्य वहपैतामहीं धुरम् ॥ २१ ॥ यथातेकुलतन्तुश्च धर्मश्चनपराभवेत् । सुहृदश्चप्रहृष्येरंस्तथाकुरुपरन्तप ॥ २२ ॥ लालप्यमानांतामेवं कृपणांपुत्रगृद्धिनीम् । धर्मादपेतंब्रुवतीं भीष्मो भूयोऽब्रवीदिदम् ॥ २३ ॥ राज्ञिधर्मानवेक्षस्व मानःसर्वान्व्यनीनशः । सत्याच्च्युतिः क्षत्रियस्य नधर्मेषुप्रशस्यते ॥ २४ ॥ शान्तनोरपिसन्तानं यथास्यादक्षयंभुवि । तत्तेधर्मं प्रवक्ष्यामि क्षात्रंराज्ञिसनातनम् ॥ २५ ॥ श्रुत्वातंप्रतिपद्यस्व प्राज्ञैःसहपुरोहितैः । आपद्धर्मार्थकुशलैर्लोकतन्त्रमवेक्ष्यच ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि भीष्मसत्यवतीसंवादे त्र्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

जो मेरेनिमित्तभी सत्य कहाहै वहभी मुझे यादहै परन्तु हे परन्तप इस बिपतिकी दशा पर ध्यान देकर पिता के वंशका भारलो ऐसा करो कि जिससे कुल नष्ट न हो और धर्म की रक्षाहो और मित्रवर्ग आनन्दित रहैं।२२।यहसुनकर कि सन्तान चाहनेवाली सत्यवती कातरहोकर यह अधर्मबात बार २ कहरही है भीष्म ने कहा कि हेरानी तुम धर्मपर दृष्टि करो हम सबको नष्ट मतकरो क्षत्रियका असत्य व्यवहार धर्मशास्त्रों में प्रशंसनीय नहीं है हेरानी आप से यह सनातन क्षत्रिय धर्म कहताहूं जिससे भूमंडलमें शांतनुका वंश अक्षय बना रहे आप ऐसा सुनकर लोकाचारपर दृष्टि रखकर पुरोहित और धर्मार्थविषय में जो पण्डितहैं उनके साथ विचार करें ॥ २६ ॥

---

that you made on my behalf but you will take on yourself the burden of your father's family at this time of trouble. You must do something to perpetuate the line, to protect virtue and to make your friends happy.22. Hearidg these words against his principles from the lips of the unhappy Satyavati, desirous of having offspring, Bhishm said, " Be firm on the path of virtue, O queen! Will you destroy us? The religious books denounce untruthful behaviour in Kshtryas. I shall point you out old Kshatrya custom which will help to perpetuate the line of Shantanu. Having heard it you will have an opportunity of considering over the matter in consultation with learned priests and those acquainted with the ways of the world. 26.



भीष्म उवाच ॥ जामदग्न्येनरामेण पितुर्वधममृष्यता । राजापरशुनापूर्वं हैह-
याधिपतिर्हतः ॥ १ ॥ शतानिदशबाहूनां निकृत्तान्यर्जुनस्यवै । लोकस्याचरितोधर्म
स्तेनातिकिलदुश्चरः ॥ २ ॥ पुनश्चधनुरादाय महास्त्राणिप्रमुञ्चता । निर्दग्धंक्षत्रमस
कृद्रथेनजयतामहीम् ॥ ३ ॥ एवमुच्चावचैरस्त्रैर्भार्गवेणमहात्मना । त्रिःसप्तकृत्वःपृथि
वीकृतानिःक्षत्रियापुरा ॥ ४ ॥ एवं निःक्षात्रियंलोके कृतेतेनमहर्षिणा । उत्पादिता
न्यपत्यानि ब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥ ५ ॥ पाणिग्राहस्यतनय इतिवेदेषुनिश्चितम् । धर्मं
मनसिसंस्थाप्य ब्राह्मणांस्ताःसमभ्ययुः ॥ ६ ॥ लोकेऽप्याचरितोदृष्टः क्षत्रियाणां
पुनर्भवः । ततःपुनःसमुदितं क्षत्रंसमभवत्तदा । इमञ्चैवात्रवक्ष्येऽहमितिहासंपुरा
तनम् ॥ ७ ॥ अथोतथ्यइतिख्यात आसीद्धीमानृषिःपुरा । ममतानामतस्यासीद्भा

अध्याय १०४ ॥

भीष्मने कहा कि पहले जमदग्निके पुत्र रामने पिता के वध से दुःखी होकर हैहय देश के राजा कार्तवीर्यार्जुनको परश से मारा हैहयराजने प्रजासे अति कठोर धर्म का अनुष्ठान कराया था परशुराम ने उसके सहस्रभुजा काटने परभी शांत न होकर भूमंडल को जीतने के लिये रथपर चढकर चाप और महास्त्रों के प्रयोगोंसे बारंबार क्षत्रियकुलको नष्ट किया।३। इस महात्माने अस्त्रोंसे इक्कीसवार भूमिको निःक्षत्रिय किया उस महर्षि के इसप्रकार भूमंडलको निःक्षत्रिय करने पर सब क्षत्रियोंकी स्त्रियें ब्राह्मणों के पास संतान के लिये गईं वेदमें यह निश्चित है कि जो मनुष्य विवाह करता है उसके क्षेत्र में संतान होनेसे उसकीही होती है इसलिये धर्म जानकरही क्षत्रियानियों ने ब्राह्मणों से संसर्ग कियाथा इस से क्षत्रियोंकी फिर उत्पत्ति हुई इस विषय में एक और प्राचीन इतिहास सुनाताहूं।७। पूर्वकाल में उतथ्य नामक एक बुद्धिमान् ऋषिथा उसकी परमप्यारी ममता

CHAPTER CIV.

Bhishma said in former times Ram, the son of Jamdagni, distressed at the death of his father, killed Kartviryarjun, the king of Hayhay, who had compelled his subjects to follow strictly the path of virtue. Parshuram was not satisfied by cutting the king's thousand arms. He set out on his chariot to conquer the world and repeatedly destroyed the Kashatrya families by his mighty bow and other weapons.3. He made twenty one expeditions to extirpate the Kshatrya race. On the annihilation of the Kshatrya race by that Maharshi, the women of those heroes produced children by the Brahmans learned in the Vedas. It is a fixed principle of the Vedas that a married woman can produce offspring for the sake of the perpetuation of her husband's line. So the Kshatrya women were right in mixing with the Brahmans and Kshatryas were

र्यापरमसम्मता ॥ ८ ॥ उतथ्यस्ययवीयांस्तु पुरोधास्त्रिदिवौकसाम् । बृहस्पतिर्बृह
त्तेजा ममतामन्वपद्यत ॥ ९ ॥ उवाचममतातन्तु देवरंवदतांवरम् । अन्तर्वत्नीत्वहं
भ्राता ज्येष्ठेनारम्यतामिति ॥ १० ॥ अयञ्चमेमहाभाग कुक्षावेवबृहस्पते । औतथ्यो
वेदमत्रापि षडंगं प्रत्यधीयत ॥ ११ ॥ अमोघरेतास्त्वञ्चापि द्वयोर्नास्त्यत्रसम्भवः ।
तस्मादेवंगतेऽप्यद्य उपारमितुमर्हसि ॥ १२ ॥ एवमुक्तस्तदासम्यग् बृहस्पतिरुदा
रधीः । कामात्मानंतदात्मानं नशशाक नियच्छितुम् ॥ १३ ॥ सबभूवततःकामी
तयासार्द्धमकामया । उत्सृजन्तन्तुतंरेतः सगर्भस्थोऽभ्यभाषत ॥ १४ ॥ भोस्तात
मागमःकामं द्वयोर्नास्तीहसम्भवः । अल्पावकाशोभगवन् पूर्वंचाहमिहागतः ॥१५॥
अमोघरेताश्चभवान्न पीडांकर्त्तुमर्हसि । अश्रुत्वैवतुतद्वाक्यं गर्भस्थस्यबृहस्पतिः ॥१६
जगाम मैथुनायैव ममतांचारुलोचनाम् । शुक्रोत्सर्गंततोबुध्वा तस्यागर्भगतोमुनिः ॥

नाम्नी भार्या थी एक समय उतथ्यके छोटे भाई देवताओंके पुरोहित और परम तेजस्वी बृहस्पति ममताके पास गये उस ने बृहस्पति देवर से कहा कि मैं तुम्हारे बड़े भाई उतथ्यसे गर्भवतीहूं तुम लौटजाओ हेमहात्मा बृहस्पति मेरेगर्भ में स्थित उतथ्य मुनिका बालक वेदज्ञानीहै तुमभी बड़े वीर्यवानहो एक गर्भ में दो सन्तान कैसे रहसक्ती हैं इस लिये तुम लौटजाओ १२ ममताके ऐसाकहनेपर बृहस्पति बडेतेजस्वी होनेपरभी काम वश अपने चित्तको न रोकसका अनन्तर बृहस्पति से गर्भ में स्थित बालकने कहा। हे तात ! आप शांतहों इस गर्भ में दोकी जगह नहीं है। हे भगवन् ! यह स्थानछोटाहै मैं पहले यहां आयाहूं आप बडे वीर्यवान हैं मुझको पीड़ा न पहुँचावें बृहस्पति ने गर्भ में स्थित उसमुनिकी बातको न माना १६ और मैथुनके लिये मनोहर नेत्रवालीममताके पास

---

born of them. There is another tradition on the same subject. In former times there was a wise Rishi, named Utathya. His dear wife was one named Mamta. The Rishi's younger brother, Brahaspati, the priest of the gods once came to his wife. Mamta told her brother-in-law that she was pregnant by his elder brother and had within her a son learned in the Vedas and that she could not bear two children at a time. 12. Brahaspati was unable to check his desire and would not listen to the entreaties of the woman. At this the child in the womb spoke out! "Be pacified, father. There is not sufficient room for two children in the womb. There is only a small space here. I have come here first. Your semen connot be fruitless. So I hope you will spare me the trouble."16. But Brahaspati was deaf to all this and approached Mamta of beautiful eyes, for cohabitation. The Muni in the womb obstructed the path of the semen by both his feet and it fell on the ground. Seeing this

पद्भ्यामरोधयन्मार्गं शुक्रस्यचबृहस्पतेः ॥ १७ ॥ स्थानमप्राप्तमथतच्छुक्रं प्रतिहतंतदा । पपातसहसाभूमौ ततःक्रुद्धोबृहस्पतिः ॥ १८ ॥ तंदृष्ट्वापतितंशुक्रं शशापसरुषान्वितः । उतथ्यपुत्रंगर्भस्थं निर्भर्त्स्यभगवानृषिः ॥ १९ ॥ यन्मांत्वमीदृशेकाले सर्वभूतेप्सितेसति । एवमात्थवचस्तस्मात्तमोदीर्घंप्रवेक्ष्यसि ॥ २० ॥ सवैदीर्घतमानाम शापादृषिरजायत । बृहस्पतेर्बृहत्कीर्त्तेर्बृहस्पतिरिवौजसा ॥ २१ ॥ जात्यन्धोवेदवित्प्राज्ञः पत्नींलेभेसविद्यया । तरुणींरूपसम्पन्नां प्रद्वेषींनामब्राह्मणीम् ॥ २२ ॥ सपुत्राञ्जनयामास गौतमादीन्महायशाः । ऋषेरुतथ्यस्यतदा सन्तानकुलवृद्धये । लोभमोहाभिभूतास्तु पुत्रास्तेगौतमादयः ॥ २३ ॥ धर्मात्माचमहात्माच वेदवेदांगपारगः । गोधर्मंसौरभेयाच्च सोऽधीत्यनिखिलंमुनिः । प्रावर्त्ततदाकर्त्तुं श्रद्धावांस्तमशंकया ॥ २४ ॥ ततोवितथमर्य्यादं तंदृष्ट्वामुनिसत्तमाः । क्रुद्धामोहाभिभूतास्ते सर्वेतत्राश्रमौकसः ॥ २५ ॥ अहोऽयंभिन्नमर्य्यादो नाश्रमेवस्तुमर्हति । तस्मादेनंवयं

गये फिर गर्भ में स्थित उस मुनि ने बृहस्पति के वीर्य गिरनेके समयको जानकर वीर्य घुसने के रास्ते को दोनोंपाओं से रोक लिया तब वोह वीर्य रास्ता न पाकर उसी क्षण भूमिपर गिरगया यह देखकर भगवान ऋषि क्रोधितहोकर गर्भ में स्थित उतथ्य पुत्रको शाप दिया ।१९। कि तुम ऐसेकाल में मेरेबाधकहुए इस लिये तुम दीर्घ अँधेरे में गिरोगे अर्थात् अंधेहोगे कीर्त्तिवान् बृहस्पतिके इस शापसे बृहस्पतिकी समान तेजस्वी वोह ऋषि दीर्घतमानामसे प्रसिद्धहुआ वेदज्ञ, प्राज्ञ, जन्मान्धदीर्घतमा ने विद्या बल से प्रद्वेषी नाम्नी भार्या ब्राह्मणी को प्राप्त किया इस से महायशने कुलको बढानेके लिये गौतमादि पुत्र उत्पन्न किये वे सबपुत्र लोभ और मोहग्रसित थे।२३। धर्मात्मा वेद वेदांगका जाननेवाला महात्मा, दीर्घतमा, सुरभी की सन्तान कामधेनु से गोधर्म शिक्षा करके उससे श्रद्धायुक्त निःशंक चित्तसे मैथुन करने को प्रवृत्तहुआ आश्रम निवासी मुनिगण दीर्घतमाको मर्यादा छोडते देख क्रोधितहो आपस में कहनेलगे कि इस ने मर्यादा और लज्जा त्यागदीहै यह

Brahaspati was very angry and cursed the child of Utathya saying, 19. "You will remain always in the dark, viz, shall be born blind for what you have said and done to me." So the child, glorious like the Brahaspati himself was born blind and was named Dirghtama. The learned Dirghtama married a young and beautiful Brahmani named Pradweshi and produced by her Gautam and other children. They were all avaricious and foolish.23. The learned Dirghtama learned all the practices of the bovine order from Surbhi's offspring, Kamdhenu, and fearlessly took to them. The neighbouring rishis seeing him behave unlike human beings became enraged and resolved to excommunicate him. His wife too, was not satisfied with him and on asking the reason she said that it

सर्वे पापात्मानंत्यजामहे ॥ २६ ॥ इत्यन्योन्यंसमाभाष्यतेदीर्घतमसंमुनिम् । पुत्रला
भाचसापत्नी नतुतोषपतिंतदा । प्रद्विषन्तीं पतिर्भार्य्यां किंमांद्वेक्षीतिचाब्रवीत् ॥ २७॥
प्रद्वेष्युवाच ॥ भार्य्यायाभरणाद्भर्त्ता पालनाच्चपतिःस्मृतः । अहंत्वांभरणंकृत्वा जा-
त्यन्धंससुतंतदा । नित्यकालंश्रमेणार्त्ता नभरेयंमहातपा ॥ २८ ॥ भीष्मउवाच ॥
तस्यास्तद्वचनंश्रुत्वा ऋषिःकोपसमन्वितः । प्रत्युवाचततःपत्नीं प्रद्वेषींससुतांतदा ।
नीयतांक्षत्रियकुले धनार्थश्चभाविष्यसि ॥ २९ ॥ प्रद्वेष्युवाच ॥ त्वयादत्तंधनंविप्र
नेच्छेयंदुःखकारणम् । यथेष्टंकुरुविप्रेन्द्र नभरेयंपुरायथा ॥ ३० ॥ दीर्घतमाउवाच ॥
अद्यप्रभृतिमर्य्यादा मयालोकेप्रतिष्ठिता।एकएवपतिर्नार्य्या यावज्जीवंपरायणम् ३१॥
३१ ॥ मृतेजीवतिवातस्मिन् नापरंप्राप्नुयान्नरम् । अभिगम्यपरंनारी पतिष्यति न
संशयः । अपतीनान्तुनारीणा मद्यप्रभृतिपातकम् । यद्यस्तिचेद्धनंसर्वं वृथाभोगाभव
न्तुताः ॥ ३२ ॥ अकीर्त्तिःपरिवादाश्च नित्यंतासांभवन्तु वै । इतितद्वचनंश्रुत्वा

पापात्मा आश्रम में रहने योग्य नहीं है हम इसको आश्रम से निकाल देंगें और दीर्घ-तमाकी पत्नी भी पुत्रलाभ के हेतु उस अंधे पतिसे संतुष्ट नहीं होतीथी एक समय दीर्घतमा ने भार्याको असंतुष्ट देख कहा कि तुम क्यों मुझपर विद्वेषका व्यवहार करतीहो।२७। प्रद्वेषी ने कहा कि पति स्त्रीका भरण पोषण करते हैं इसलिये वोह भर्ता और पति कहलाते हैं । हेमहातपस्वी ! मैं सदा से तुम्हारी जन्मान्धता के हेतु तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रोंका भरण पोषण करते २ थक गई हूं अब नहीं करूंगी ऋषि ने पत्नीकी यह बात सुनकर पुत्रवती पत्नी प्रद्वेषी से कहा कि मुझको क्षत्रियकुल में ले चल तो तू धनबान होजायगी प्रद्वेषी ने कहा । हे विप्र ! तुम्हारे दियेहुए दुःखदाई धनकी मुझे इच्छा नहीं है तुम जो चाहो करो मैं पहलेकी नाईं भरण पोषण फिर नहीं करसकूंगी।३०। दीर्घतमाने कहा कि मैं आज से ऐसी लोक मर्यादा स्थापित करता हूं कि स्त्री एक पतिपर जीवन भर निर्भर रहेगी वह एक पति जीता रहे व मरजाय कोई स्त्री दूसरे पतिकी शरण नहीं लेसकेगी यदि कोई नारी दूसरापति कर ले तो वह पतित होगी इस में संदेह नहीं जिस स्त्रीका पति नहीं है उसे बात २ में पापहोगा और उसका इकट्ठा कियाहुआ धनभी

was the duty of a husband to provide for the necessities of a wife while she took care of a blind husband which she said she would do no more. The rishi was very angry on hearing this and told her to take him to the families of rich Kshatryas if she wanted wealth. But the woman said that she did not care for his wealth and wanted estrangement.30. Dirghtama said that he would, from that day establish a rule for women to be content on one husband only whether he might live or die. No woman would be allowed to take another husband and in case of her doing so she would be degraded from her caste. A woman without a husband would lead

ब्राह्मणीभृशक्रोपिता । गंगायांनीयतामेष:पुत्राइत्येवमब्रवीत् ॥ ३३ ॥ लोभमोहाभिभूतास्ते पुत्रास्तं गौतमादय: । बद्धोडुपेपरिक्षिप्य गंगायांसमवासृजन् ॥ ३४ ॥ कस्मादन्धश्चवृद्धश्च भर्त्तव्योऽयमितिस्मते । चिन्तयित्वाततः क्रूराःप्रतिजग्मुरथोगृहान् ॥ ३५ ॥ सोऽनुस्रोतस्तदाविप्रः प्लवमानोयदृच्छया । जगाम सुबहून्देशानन्धस्तेनोडुपेनह ॥ ३६ ॥ तन्तुराजाबलिर्नाम सर्वधर्मविदांवरः । अपश्यन्मज्जनगतः स्रोतसाभ्याशमागतम् ॥ ३७ ॥ जग्राहचैनंधर्मात्मा बलिःसत्यपराक्रमः । ज्ञात्वैवंसचवव्रेऽथ पुत्रार्थेभरतर्षभ ॥ ३८ ॥ सन्तानार्थंमहाभाग भार्य्यासुममानद । पुत्रान्धर्मार्थकुशलानुत्पादयितुमर्हसि ॥ ३९ ॥ एवमुक्तःसतेजस्वी तंतथेत्युक्तवानृषिः । तस्मैसराजा स्वां भार्य्यांसुदेष्णांप्राहिणोत्तदा ॥ ४० ॥ अन्धंवृद्धञ्चतंमत्वा नसादेवीजगामह । स्वान्तुधात्रेयिकांतस्मै वृद्धायप्राहिणोत्तदा ॥ ४१ ॥ तस्यांकाक्षीवदादीन् सशूद्रयोनावृषिस्तदा । जनयामासधर्मात्मा पुत्रानेकादशैवतु ॥ ४२ ॥ काक्षीवदादीन् पुत्रांस्तान्

व्यर्थहोगा ऐसी स्त्रियें नित्य अकीर्ति और निंदाकी पात्रहोंगी ब्राह्मणी यह सुनकर क्रोधसे बोली कि हे पुत्रो इसको गंगामें डालआओ गौतमादि पुत्रोंने अंधे बापको बांधकर बेडेपर रखकर गंगामें बहादिया।३४।और वे कुटिलपुत्र यह शोचतेहुए घरको लौटेकि अब इस अंधे और बूढे का भरण पोषण नकरना नपडेगा वोह अंधा ब्राह्मण गंगाकी धार में बहताहुआ अनेक देशों में होताहुआ चलाजाताथा कि धार्मिक बली राजाने गंगा स्नान करतेहुए निकट बहतेहुए उस ऋषि को देखा बली उस सत्य पराक्रमी को अपने घरमें लेआया और पुत्र के लिये उससे प्रार्थना करके कहा कि हे महाभाग मेरेवंश की रक्षा के लिए मेरी स्त्री से संतान उत्पन्न करो जो धर्म और अर्थ में कुशलहो तेजस्वी ऋषि ने राजाकी वह बात मानली और राजाने उसके पास अपनी सुदेष्णा नाम्नी स्त्री को भेजदिया परंतु उसने उसको अंधा और बूढा जानकर अपनी जगह अपनी दासी को भेजदिया धर्मात्मा ऋषिने उस शूद्रामें काक्षिवदादि ग्यारह पुत्र उत्पन्न किए।४२। राजा ने उन पुत्रों को पठन

---

a life of sin; she would not be able to use the wealth collected by her. She would be subject to infamy. The woman thereupon ordered her sons to throw the aged father into the Ganges.34. They did accordingly and returned well-pleased with the thought of becoming free from taking care of the old father in future. The blind rishi floating along over the stream passed many a city. He was seen at last by a good king named Bali who had come to bathe there. Seeing him righteous Bali took him home and desirous of offspring he asked the rishi to bring forth sons in his wife. On the Rishi's consenting to fulfil the king's desire the queen named Sudeshni was sent to him. Seeing him blind and old the queen did not go to him herself but sent her slave girl instead. The good Rishi produced in her eleven sons Kakshivud and others.42. Finding them

दृष्ट्वासर्वानधीयतः। उवाचतमृषिंराजा ममेमइतिभारत ॥ ४३ ॥ नेत्युवाचमहर्षिस्तं ममेमइतिचाब्रवीत्। शूद्रयोनौमयाहीमे जाताःकाक्षीवदादयः ॥ ४४ ॥ अन्धंवृद्धश्च मांदृष्ट्वा सुदेष्णामहिषीतव। अवमन्यददौमूढ़ा शूद्रांधात्रेयिकांमम ॥ ४५ ॥ ततःप्रसादयामास पुनस्तमृषिसत्तमम्। बलिःसुदेष्णांस्वांभार्य्यां तस्मैसम्प्राहिणोत्पुनः ॥ ४६ ॥ तांसदीर्घतमाङ्गेषु स्पृष्ट्वादेवीमथाब्रवीत्। भविष्यान्तिकुमारास्ते तेजसादित्यवर्चसः ॥ ४७ ॥ अङ्गोवङ्गःकलिङ्गश्चपुण्ड्रःसुह्मश्चतेसुताः। तेषांदेशाःसमाख्याताः स्वनामकथिताभुवि ॥ ४८ ॥ अङ्गस्याङ्गोऽभवद्देशो वङ्गोवङ्गस्यचस्मृतः। कलिङ्गविषयश्चैव कलिङ्गस्यचसस्मृतः ॥ ४९ ॥ पुण्ड्रस्यपुण्ड्राःप्रख्याताःसुह्माःसुह्मस्यचस्मृताः। एवंबलेःपुरावंशः प्रख्यातोवैमहर्षिजः ॥ ५० ॥ एवमन्येमहेष्वासा ब्राह्मणैःक्षत्रियाभुवि। जाताःपरमधर्मज्ञा वीर्य्यवन्तोमहाबलाः।एतच्छ्रुत्वात्वमप्यत्र मातःकुरुयथेप्सितम् ॥५१॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि भीष्मसत्यवतीसंवादे चतुरधिकशतोऽध्यायः ॥१०४॥

शील देखकर उस अंधे ऋषि से कहा कि यह मेरेपुत्रहैं परन्तु महर्षि ने कहा कि यह तुम्हारे पुत्र नहीं हैं मेरे हैं इन्होंने मुझ से शूद्र योनिमें जन्म लियाहै तुम्हारीरानी सुदेष्णा ने मूर्खतासे मुझको अंधा और बूढा देखकर अनादर से शूद्रा, धात्रेयाको भेजदिया॥४५॥ फिर बली ने उस ऋषि को प्रसन्न करके अपनी स्त्री सुदेष्णा को उसके पास भेजा ऋषि दीर्घतमा ने देवी सुदेष्णा के अंगों को स्पर्श करके कहा कि तुम्हारे आदित्य समान तेजस्वी पुत्र उत्पन्नहोंगे उन के नाम अंग, वंग, कालिंग, पुंड्र, और सुह्महोंगे इस भूमंडल में उनके नाम से एक २ देश प्रख्यातहोगा।४८। अंग के नाम से अंगदेश, बंग के नाम से बंगदेश, कलिंगके नाम से कलिंग देश, पुंड्र के नाम से पुंड्रदेश, और सुह्मके नाम से सुह्मदेश होगा पूर्वकाल में इसप्रकार महर्षि से जन्म लियाहुआ राजाबलि का वंश प्रसिद्ध हुआ और भी अनेक महाबली पराक्रमी धर्मज्ञ और चापधारी बहुत से क्षत्रियोंने ब्राह्मणों के वीर्य से जन्म लिया। हे माता आप यह सुनकर जो चाहें सो करें ५१॥

of studious habits the king told the blind Rishi that the sons were his. But the rishi replied that the sons did not belong to the king but to himself as they were begot by him in a Shudra woman. The Rishi said, "The queen finding me blind and old, did not come to me but sent her slave girl instead." 45. The king again gratified the Rishi and sent his wife to him. The Rishi Dirghtama touched the parts of her body and said "Your sons will be glorious like the sun. Their names shall be *Ang*, *Bang*, *Kaling*, *Punt*, and *Suhm* and the various parts of the country will be named after them." Bali's line was thus continued formerly by the grace of the Rishi. 48. Besides these many a brave archer of the Kshatrya race has sprung up from Brahmans. Hearing this, mother, do the needful." 51.

भीष्मउवाच । पुनर्भरतवंशस्यहेतुं सन्तानवृद्धये वक्ष्यामिनियतं मातस्तन्मेनिगदतःशृणु ॥ १ ॥ ब्राह्मणोगुणवान् कश्चिद्धनेनोपनिमन्त्र्यताम् । विचित्रवीर्यक्षेत्रेषु यः समुत्पादयेत् प्रजाः ॥ २ ॥ वैशम्पायनउवाच । ततःसत्यवतीभीष्मं वाचासंसज्जमानया । विहसन्तीवसव्रीड़मिदं वचनमब्रवीत् ॥ ३ ॥ सत्यमेतन्महाबाहो यथावदसि भारत । विश्वासात्तेप्रवक्ष्यामि सन्तानायकुलस्यनः ॥ ४ ॥ नतेशक्यमनाख्यातु माप द्धर्तथाविधम् । तमेवनःकुलेधर्मस्त्वं सत्यंत्वंपरागतिः ॥ ५ ॥ तस्मान्निशम्यसत्यंमे कुरुष्वयदनन्तरम् । धर्मयुक्तस्यधर्मार्थं पितुरासीत्तरीमम ॥ ६ ॥ साकदाचिदहंतत्र गताप्रथमयौवनम् । अथधर्मविदांश्रेष्ठः परमर्षिःपराशरः । आजगामतरींधीमां स्तरिष्यन्यमुनांनदीम् ॥ ७ ॥ सतार्य्यमाणोयमुनां मामुपेत्याब्रवीत्तदा । सान्त्वपूर्वंमुनिश्रेष्ठः कामार्त्तोमधुरंवचः ॥ ८ ॥ तमहंशापभीताच पितुर्भीताचभारत । वरैरसुलभै

अध्याय १०५ ॥

भीष्मनेकहा । हेमाता ! भारतवंश के वढ़ाने के लिये योग्य उपाय वतलाता हूं किसी गुणवान ब्राह्मण को धनदेकर बुलाओ और उससे विचित्रवीर्य के क्षेत्र में पुत्र उत्पादन कराओ ।२। यह सुनकर सत्यवती मुँह नीचाकर लज्जा के साथ भीष्म से कहनेलगी कि हे महाभुज भारत तुम जो कहते होठीक है परन्तु तुमपर विश्वास करके अपने वंशकी वृद्धि के लिये जो कुछ कहती हूं वोह आपत् धर्म के विपरीत नहीं है हमारे वंश में तुम्हीं धर्म सत्य और परमगतिहो इसलिये मेरी सत्य वात को सुनकर जो कर्तव्यहो करो मेरा पिता धार्मिक था उसकी एकनाव धर्मार्थथी ।६। एकसमय यौवनावस्थामें मैं उसनाव को चला रहीथी धीमान धार्मिक परमर्षि पराशर यमुना नदी के पार उतरने के लिये मेरी नावपर वैठे मैं उनमुनि श्रेष्ठको यमुनापार कर रहीथी उससमय वोह कामवश होकर मीठी बातों

CHAPTER CV.

Bhishma said, I point out, mother, the proper course to be followed for the perpetuation of the Kuru dynasty. Invite a virtuous Brahman and give him wealth to produce offspring for Vichitravirya."2. Vaishampayan said that Satyavati then hung her face with shame and spoke these words to Bhishm in broken sentences. "It is right what you say, brave Bharat, I put great reliance on you. I say this for the perpetuation of our line. You are dutiful truthful and virtuous in our family. Hearing the truth from me you will do what is proper. My father was righteous. He had a charity boat.6. I was once rowing that boat in the prime of my life. The wise, righteous and best of Rishis, Parashar, got into the boat to cross the Jamna. When I was taking him across the Jamna he

रुक्तान प्रत्याख्यातुमुत्सहे ॥ ९ ॥ अभिभूयसमांबालां तेजसावशमानयत् । तमसा
लोकमावृत्य नौगतामेवभारत ॥ १० ॥ मत्स्यगन्धोमहानासीत् पुराममजुगुप्सितः
तमपास्यशुभंगंध मिमंप्रादात्समेमुनिः ॥ ११ ॥ ततोमामाहसमुनिर्गर्भ मुत्सृज्यमाम
कम् । द्वीपेऽस्याएवसरितः कन्यैवत्वंभविष्यसि ॥ १२ ॥ पराशर्योमहायोगी सबभूव
महानृषिः । कन्यापुत्रोममपुरा द्वैपायनइतिश्रुतः ॥ १३ ॥ योऽव्यस्यवेदांश्चतुर स्तपसा
भगवानृषिः । लोकेव्यासत्वमापेदे कार्ष्ण्यात्कृष्णत्वमेवच ॥ १४ ॥ सत्यवादीशम
परस्तपस्वी दग्धकिल्बिषः । समुत्पन्नःसतुमहान् सहपित्राततोगतः ॥ १५ ॥ स-
नियुक्तोमयाव्यक्तं त्वयाचाप्रतिमद्युतिः । भ्रातुःक्षेत्रेषु कल्याणमपत्यं जनयिष्यति
॥ १६ ॥ सहिमामुक्तवांस्तत्र स्मरेःकृच्छ्रेषुमामिति । तंस्मरिष्येमहाबाहो यदिभीष्मत्व

सेमुझ को लुभाने लगे । हे भारत । मैं पिताके भय और ऋषि के शाप के भय से उत्तम वरपाकर उनके कहनेको न टाल सकी उस ऋषिने मुझको नावपर स्थित और बालिका पाकर तेज से अपने वशमें करलिया और भूमंडल को छादिया ।१०। पहिले मेरेशरीर में मछली की दुर्गन्ध थी उन्हों ने उसको दूर कर मुझे सुगंधित बनादिया और कहा कि तुम इस यमुनाद्वीप मेंही मेरेवीर्य से उत्पन्न गर्भ को छोड़ फिर कन्याही रहोगी उस से यमुनाद्वीप में मेरेकन्यावस्थाके गर्भ से पराशर का पुत्र महर्षि महायोगी जन्म लेकर द्वैपायन नामसे प्रसिद्धहुआ ।१३। वोह भगवान् ऋषि तप के प्रभाव से चारों वेदों का व्यास अर्थात् विभाग करके प्रसिद्ध है और कृष्णवर्ण होने से उनको कृष्णभी कहते हैं सत्यवादी शांतशील और पापरहित वोह महात्मा जन्म लेतेही पिता के साथ चलागया अब वोह अप्रतिम द्युतिमान व्यास मेरे कहनेसे तुम्हारे भ्राता के क्षेत्र में पुत्रोत्पादन करसकेगा ।१६। हे महाभुज ! उसने पहले मुझसे कहाथा कि आवश्यकता होनेपर पहले

felt a desire and began to flatter me by sweet words. I was afraid of my father's wrath and the curse of the Rishi and could not refuse the request. 10. The rishi finding me on that boat a girl of immature age overpowered me by his glory and overcast a fog over the firmament. I had formerly a strong odour of fish in my body but he changed it into this sweet smell. He then said that I should again be a maiden after giving birth to a child in the island of the Jamna. Thus, in my maidenhood, a son was born in the island who is known as *Dwaipayan*. 13. He has gone through all the Vedas and is hence known by the name of Vyas. By his having black complexion he is also called Krishna. The truthful, good natured and sinless saint soon after his birth accompanied his father. The exceedingly glorious Vyas will, at my desire, produce offspring in the field of your brother. He had formerly told me to remember

मिच्छसि । तवह्यनुमते भीष्म नियतंसमहातपाः । विचित्रवीर्यक्षेत्रेषु पुत्रानुत्पाद यिष्यति ॥१७॥ वैशम्पायन उवाच । महर्षेःकीर्त्तनेतस्य भीष्मःप्राञ्जलिरब्रवीत् । धर्ममर्थञ्चकामञ्च त्रनितानयोऽनुपश्यति । अर्थमर्थानुबंधञ्च धर्मंधर्मानुबन्धनम् ॥१८॥ कामंकामानुबन्धञ्च विपरीतान्पृथक् पृथक् । योविचिन्त्यधियाधीरो व्यवस्यतिसबुद्धिमान् ॥१९॥ तदिदंधर्मयुक्तञ्च हितंचैवकुलस्यनः । उक्तम्भवत्यांयच्छ्रेयस्तन्महांरोचतेभृशम् ॥२०॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तस्मिन्प्रतिज्ञाते भीष्मेणकुरुनन्दन । कृष्णद्वैपायनंकाली चिन्तयामासवैमुनिम् ॥२१॥ सवेदान्विब्रुवन्धीमा मातुर्विज्ञाय चिन्तितम् प्रादुर्बभूवाविदितः क्षणेनकुरुदुन्दन ॥२२॥ तस्मैपूजांततःकृत्वा सुतायविधिपूर्वकम् । परिष्वज्यबाहुभ्यां प्रस्नवैरभ्यषिंचत ॥२३॥ मुमोचबाष्पंदाशेयी पुत्रंदृष्ट्वाचिरस्यतु

मुझे स्मरण करना है भीष्म यदि तुम्हारी सम्मतिहो तो मैं उसको बुलाऊं वोह महात्मा द्वैपायन अवश्यही विचित्रवीर्य के क्षेत्रमें संतान उत्पन्नकरेगा ।१७। वैशम्पायननेकहा कि महर्षि कृष्ण द्वैपायनका नाम लेतेही भीष्म ने दोनों हाथ जोड़कर कहा कि जो धर्म अर्थ और काम को अच्छी प्रकार समझते हैं और इसप्रकार उनका बर्ताव करते हैं कि धर्म के साथ धर्मका अर्थ के साथ अर्थका और काम के साथ कामका सम्बन्ध रहे और संभावना बनी रहे और एक में दूसरे विषयका मेल न हो वही बुद्धिमान कहे जाते हैं आपने मेरे कुलका हितकारी धर्मयुक्त और मंगलकारी जो वचन कहा है उस से मैं पूर्ण रूप से सम्मत हूं ।२०। वैशम्पायननेकहा । हे कुरुनन्दन ! भीष्मके उस विषयमें सम्मत होनेपर काली ने मुनि कृष्ण द्वैपायन को याद किया बुद्धिमान वेदव्यास वेदकी व्याख्या कररहे थे उससमय माता की चिन्ता जानकर क्षणभर में माताके पास आगये और किसी दूसरे को उनका आना विदित न हुआ उस धीवरकी बेटी ने पुत्र का विधि पूर्वक

him at the time of need. Now if you desire his presence I shall call him. The great ascetic Vyas shall produce offspring in the field of Vichitravirya if you agree to my proposal." 17. Vaishampayan says that on Krishna Dwaipayan's name being uttered Bhishm with joined palms said, "Those who have a knowledge of Dharm Arth and Kam and practice them in such a way as to retain a connection between one Dharm and another and so forth, are called wise. I fully agree with your proposal for the continuation of our line. 20. Vaishampayan said that on Bhishma's having consented to the proposal Kali recalled Krishna dwaipayan who was then engaged in making a commentary on the Vedas. He at once presented himself before his mother unseen by any other person. The fisherman's daughter embraced her son. Milk of her breast oozed out on his body. She herself shed tears of joy on seeing her son after

तामद्भिःपरिषिच्यार्त्ता महर्षिरभिवाद्यच मातरंपूर्वजःपुत्रो व्यासोवचनमब्रवीत् ॥२४॥
भवत्यायदभिप्रेतं तदहंकर्तुमागतः । शाधिमांधर्मतत्त्वज्ञे करवाणिप्रियंतव ॥ २५ ॥ तस्मै
पूजांततोऽकार्षीत् पुरोधाःपरमर्षये । सचतांप्रतिजग्राह विधिवन्मन्त्रपूर्वकम् ॥ २६ ॥
पूजितोमन्त्रपूर्वंतु विधिवत्प्रीतिमापन्नः । तमासनगतंमाता पृष्ट्वाकुशलमव्ययम् ॥२७॥
सत्यवत्यथवीक्ष्यैन मुवाचेदमनन्तरम् । मातापित्रोःप्रजायन्ते पुत्राःसाधारणाः कवे
॥ २८ ॥ तेषांपितायथास्वामी तथामातानसंशयः । विधानविहितःसत्यं यथामेप्रथमः
सुतः ॥ २९ ॥ विचित्रवीर्योब्रह्मर्षे तथामेऽवरजःसुतः । यथाचपितृतोभीष्म स्तथा
त्वमपिमातृतः ॥ ३० ॥ भ्राताविचित्रवीर्यस्य यथावापुत्रमन्यसे । अयंशान्तनवःसत्यं
पालयन्सत्यविक्रमः । बुद्धिंनकुरुतेऽपत्ये तथाराज्यानुशासने ॥ ३१ ॥ सत्वंव्यपे-

आदरकर गले लगाकर स्तनों के दूध से न्हिलाया और बहुत काल पीछे अपने पुत्रको देखकर आंसू गिराये पूर्व पैदाहुए पुत्र व्यास दुःखित मातापर जल छोडकर प्रणाम पूर्वक बोले कि ।२४।हेधर्मतत्वजाननेवाली मैं आपकी इच्छा पूर्ण करनेको आयाहूं जो आज्ञा हो उसको पूराकरूं फिर पुरोहितने आकर उस परमर्षिकी यथाविधि पूजाकी उन्होंनेभी मन्त्र सहित वोह पूजा ग्रहणकी और प्रसन्न हुए माता सत्यवती ने उनको आसन पर बैठेहुवे देख कर कुशल पूंछ कर कहा किहे कवि । पितासे जो पुत्र उत्पन्न होते हैं वे पिता माता दोनों को एक से होते हैं पुत्रपर जो पिताका अधिकार हैं इसमें संदेह नहीं माताकाभी वैसाही अधिकारहै ।२९। हे विप्रर्षि ! दैवगति से पैदाहुए जिसप्रकार तुम मेरे प्रथम पुत्रहो वैसेही विचित्र वीर्यभी मेरा छोटा पुत्रथा और विचित्र वीर्य और भीष्म एक पिताके पुत्र होनेसे जैसे भीष्म विचित्र वीर्यके भाई हैं उसी प्रकार तुम और विचित्रवीर्य एक माता के गर्भ से उत्पन्न होनेके कारण भाईहो मेरी समझ में यही आता है आगे

so long a time. Her first-born son Vyas said respectfully to his mother, "Mother I am here to do your bidding." 24. The priest then worshipped him according to custom and he accepted it accompanied with Mantras and was overjoyed. The mother, Satyavati, seeing him seated on a proper seat asked about his welfare and said, "Sons have like affection for both their parents. There is no doubt that a mother has as much authority over a son as a father 29. You are my first born child and Vichitravirya was younger than you. Vichitravirya and Bhishma being the sons of the sams father were brothers. Likewise you and Vichitravirya being the sons of the same mother are brothers. This is my opinion. I donot know how do you take it. This son of Shantanu, Bhishm, will not produce offspring on account of the vow he has made. Therefore having heard me you must do what I say for

क्षयाभ्रातुः सन्तानायकुलस्यच । भीष्मस्यचास्यवचना न्नियोगाच्चममानघ ॥ ३२ ॥ अनुक्रोषाच्चभूतानां सर्वेषांरक्षणायच । आनृशंस्याच्चयद्ब्रूयां तच्छ्रुत्वाकर्तुमर्हसि । यवीयसस्तवभ्रातुर्भार्ये सुरसुतोपमे ॥ ३३ ॥ रूपयौवनसम्पन्ने पुत्रकामेचधर्मतः । तयोरुत्पादयापत्यं समर्थोह्यसिपुत्रक । अनुरूपंकुलस्यास्य सन्तत्याःप्रसवस्य च ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच । वेत्थधर्मंसत्यवति परंचापरमेवच । तथातवमहाप्राज्ञे धर्मे प्रणिहितामतिः ॥ ३५ ॥ तस्मादहंत्वन्नियोगाद्धर्ममुद्दिश्यकारणम् । ईप्सितंतेकरिष्यामि दृष्टंह्येतत्सनातनम् ॥ ३६ ॥ भ्रातुःपुत्रान्प्रदास्यामि मित्रावरुणयोःसमान् ॥ व्रतंचरेतांतेदेव्यौ निर्दिष्टमिहयन्मया ॥ ३७ ॥ सम्वत्सरंयथान्यायं ततःशुद्धेभविष्यतः नहिमामव्रतोपेता उपेयात्काचिदङ्गना ॥ ३८ ॥ सत्यवत्युवाच । सद्योयथाप्रपद्येते

जैसी तुम्हारी समझहो यह शांतनु पुत्र सत्य विक्रमी भीष्म सत्यपालनके लिये राज्य शासन और पुत्रोत्पादन करने के लिये सम्मत नहीं होते इस लिये मैं जो कहतीहूं उसको सुनकर अपने भ्राता विचित्र वीर्य पर स्नेह करके कुरुवंशकी रक्षा प्रजाका पालन भीष्म का व्रत मेरा कहना और सब जीवों पर दया और कृपा इन सब बातोंपर ध्यान करके तुमको यह कार्य करना योग्य है तुम्हारे छोटे भाई की देव कन्या समान रूप यौवन वालीदो भार्या हैं वे धर्मानुसार पुत्र कामा हुई हैं । हे वेटा ! तुम योग्य पात्र हो इसलिये उन दोनों रानियों से इस कुलको बढ़ानेके लिये पुत्रोत्पादनकरो ।३४। व्यासजीने कहा । हे अति बुद्धिमंति, सत्यवति तुम इस लोक और परलोक दोनों प्रकार के धर्म को जैसे जानतीहो वैसेही तुम्हारा चित्त भी प्राणियो के हितमें लगा है इस लिये मैं तुम्हारे कहने से धर्मानुसार तुम्हारी इच्छा पूरी करूगा क्यों कि मै सनातन धर्म को जानताहूं मै भ्राताको मित्र वरुण की समान पुत्र दान करूंगा परन्तु मेरा एक नियम स्वीकार करना योग्य है कि रानिये धर्मानुसार वर्षभर व्रतरक्खें तब वे शुद्ध होगी विना व्रत कोईस्त्री

the love of your brother Vichitravirya, perpetuation of the Kuru family, protection of the subjects, keeping the vow of Bhishm, my bidding and kindness to the living beings. Your younger brother has left two wives like goddesses in beauty. They are now desirous of getting offspring' You are a worthy man, my son. Produce in the two queens sons worthy of ruling over the empire. 34. Vyas said, "O wise Satyavati, your mind is fixed on the good of mankind as you are acquainted with the duties of this world and those of the next. I shall therefore feel it a duty to do your bidding. I know the old practice I shall give a son for the benefit of my brother. But I will lay one condition that the wives do observe a vow for one year. Thus they will be purified. Without that vow no woman shall approach me." Satyavati then

देवीगर्भंतथाकुरु। अराजकेषुराष्ट्रेषु प्रजानाथाविनश्यति। नश्यन्तिचक्रियाःसर्वा नास्तिवृष्टिर्नदेवता ॥ ३९ ॥ कथंचाराजकंराष्ट्रं शक्यंधारायितुंप्रभो। तस्माद्गर्भंसमाधत्स्व भीष्मःसंवर्द्धयिष्यति ॥ ४० ॥ व्यासउवाच। यदिपुत्रःप्रदातव्यो मयाभ्रातुरकालिकः। विरूपतांमेसहतां तयोरेततपरंव्रतम् ॥ ४१ ॥ यदिमेसहतेगन्धं रूपंवेशंतथावपुः अद्यैवगर्भंकौशल्या विशिष्टंप्रतिपद्यताम् ॥ ४२ ॥ वैशम्पायनउवाच। एवमुक्त्वामहातेजा व्यासःसत्यवतींतदा। शयनेसाचकौशल्या शुचिवस्त्राह्यलंकृता॥ ४३ ॥ समागमनमाकांक्षे दितिसोऽन्तर्हितोमुनिः। ततोऽभिगम्यसादेवी स्नुषांरहसिसङ्गताम् ॥ ४४ ॥ धर्म्यमर्थसमायुक्त मुवाचवचनंहितम्। कौशल्येधर्ममन्त्रंत्वां यद्ब्रवीमिनिबोधतत् ॥ ४५ ॥ भरतानांसमुच्छेदो व्यक्तंमद्भाग्यसंक्षयात्। व्यथितांमाञ्चसंप्रेक्ष्य

मेरे पास नहीं आसक्ती सत्यवती ने कहा कि ऐसा करो जिससे देवी राजरानियें आजही गर्भवती होजाय विना राजा प्रजा अनाथ होकर नष्ट होजाती है क्रियायें लोप होजाती हैं वृष्टि नहीं होती और देवगण चले जाते है विनाराजाके राज्य की कैसे रक्षा होसकती है तुम आजही गर्भाधानकरो भीष्म उस गर्भ से उत्पन्नहुए बालकको पालैंगे।४०।व्यासजीने कहा कि यदि विलम्ब नकरके अकाल मेही पुत्र देनाहो तोरानिये मेरकुरूप को सहैं यही उनका परम व्रत होगा यदि कौशल्या मेरी गंधरूप वेष और शरीर को सहसकेंतो वह आजही गर्भवती होगी।४२।वैशंम्पायनने कहा कि महा तेजस्वी व्यास जीने सत्यवतीसे फिर कहा कि रानी कौशल्या उत्तम शुद्ध वस्त्र पहिन कर अच्छे आभूषणों से सजकर मेरेमिलनेकी कामनाको सत्यवती ने पुत्रबधू को अलग लेजाकर धर्म, अर्थ और हितयुक्त यह वात कही कि।४५।हे कौशल्या! तुमसे जो धर्मयुक्त वात कहतीहूं उसे सुनोमेरे दुर्भाग्यसे

said, "You must so arrange as that the queens may conceive to day. The subjects are apt to perish without protection of the king. Sacrifices will be suspended. There will be no rains and the gods will turn their faces away from them. How can a kingdom be protected without a king? Let them conceive to-day. Bhishm will bring up the child."40. Vyas said, "If you wish me to give a son without delay, then let the queens bear my ugliness. This will be the observance of the vow for them. If Kausalya will bear my odour, Visage, attire and body she may conceive to day.42. Vaishampayan said that Vyas having said so to Satyavati, continued, "The Princess of Kashi should adorn herself with clean dress and ornaments and be ready to see me in her sleeping room." Satyavati went to her daughter-in-law and told her mildly to hear attentively what she was about to say for her good. She, then, said, "By my ill luck the line of Bharat has become extinct

पितृवंशञ्च पीडितम् ॥ ४६ ॥ भीष्मोबुद्धिमदान्मह्यं कुलस्यास्य विवृद्धये । साचबुद्धिस्त्वय्यधीना पुत्रिप्रापयमांतथा । नष्टञ्चभारतंवंशं पुनरेवसमुद्धर ॥४७॥ पुत्रंजनयसुश्रोणि देवराजसमप्रभम् । सहिराज्यधुरं गुर्वीमुद्वक्ष्यति कुलस्यनः ॥४८॥ साधर्मतोऽनुनीयैनां कथञ्चिद्धर्मचारिणीम् । भोजयामास विप्रांश्च देवर्षीनतिथींस्तथा४९॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि सत्यवत्युपदेशे पञ्चाधिकशततोऽध्यायः ॥१०५॥

वैशम्पायन उवाच । ततः सत्यवतीकाले वधूंस्नातामृतौतदा । संवेशयन्तीशयने शनैर्वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ कौशल्येदेवरस्तेऽस्ति सोऽद्यत्वानुप्रवेक्ष्यति । अप्रमत्ताप्रतीक्षैनं निशीथे ह्यागमिष्यति ॥२॥ श्वश्र्वास्तद्वचनं श्रुत्वाशयाना शयनेशुभे । साचिन्तयत्तदा भीष्ममन्यांश्च कुरुपुंगवान् ॥ ३ ॥ ततोऽम्बिकायां प्रथमं नियुक्तः सत्यवागृषिः ।

भारतवंश उजण गयाहै और भीष्मने मुझको दुःखित देखकर और पिताके वंश उजडने पर विचार करके कुलकी वृद्धि के लिये युक्ति बतलाई है । हे बेटी ! वोह युक्ति तुम्हारे आधीन है इसलिये तुम मेरा अभीष्ट सिद्धकर उस युक्ति को सफल करो और विनष्ट भारतवंशका फिर उद्धारकरो ।४७। हे सुन्दरि देवराज समान कुमार उत्पन्न करो वोह कुमार हमारे इस भारी राज्य के भारको सँभाललेगा सत्यवती ने उस धर्मचारिणी को धर्मानुसार विनय करके किसी प्रकार सम्मत किया और देवऋषि और अतिथियों को भोजन कराया ॥ ४९ ॥ अध्याय १०६ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि तत्पश्चात कौशल्या के योग समय में ऋतु स्नान करने पर सत्यवती उस को अच्छे सजे हुए बिस्तर पर बिठाकर अच्छे स्वर से बोली कि हे कौशल्या तुम्हारादेवर आज रात्रिको तुम्हारेपास आवेगा।२। तुम एक चित्त होकर उसका ध्यान करती रहो अम्बिका सासकी यह बात सुनकर भीष्म और दूसरे कुरु श्रेष्ठों का

Seeing me afflicted and the paternal line extinct, Bhishm has advised me to do the needful for the perpetuation of the line. The completion of the plan depends on you, my daughter. Fulfil, therefore, my desire by acting according to the advice and revive the extinct line of Bharat by producing a prince beautiful like Indra. The prince will be able to bear the heavy burden of the kingdom. Satyavati having succeeded with great difficulty in procuring the assent of the daughter-in-law to her proposals, fed the Brahmans, rishis, and guests. 46.

CHAPTER CVI

Vaishampayan said that when, at the proper time, the princess of Kaushal was purified after her monthly course, Satyavati seated her on a well-decorated bed and spoke to her in a mild tone saying, " A brother-in-law of yours will come to you at night 2. You must

दीप्यमानेषु दीपेषु शरणंप्रविवेशह ॥ ४ ॥ तस्यकृष्णस्य कपिलां जटांदीप्तेचलोचने।
बभ्रूणिचैवश्मश्रूणिदृष्ट्वा देवीन्यमीलयत् ॥ ५ ॥ संबभूवतयासार्द्धं मातुःप्रियचिकीर्ष
या। भयात्काशिसुतातन्तु नाशक्नोदभिवीक्षितुम् ॥ ६ ॥ ततो निष्क्रान्तमागम्य माता
पुत्रमुवाचह। अप्यस्यां गुणवान्पुत्र राजपुत्रोभविष्यति ॥७॥ निशम्यतद्वचो मातुर्व्या
सःसत्यवतीसुतः। प्रोवाचातीन्द्रियज्ञानो विधिना संप्रचोदितः ॥ ८ ॥ नागायुतसमप्रा
णोविद्वान् राजर्षिसत्तमः। महाभागो महावीर्यो महाबुद्धिर्भविष्यति ॥ ९ ॥ तस्य
चापिशतंपुत्रा भविष्यन्तिमहात्मनः। किन्तुमातुःस वैगुण्यादन्ध एवभविष्यति ॥ १० ॥
तस्यतद्वचनंश्रुत्वा मातापुत्रमथाब्रवीत्। नान्धः कुरूणां नृपतिरनुरूपस्तपोधन ॥ ११ ॥
ज्ञातिवंशस्य गोप्तारं पितॄणांवंशवर्द्धनम्। द्वितीयंकुरुवंशस्य राजानंदातुमर्हसि ॥ १२ ॥
सतथेतिप्रतिज्ञाय निश्चक्राम महायशाः। सापिकालेन कौशल्या सुषुवेऽन्धं तमात्मजम्

ध्यान करने लगी फिर सत्यवती के पुत्र सत्य वक्ता ऋषिने पहिले अम्बिकाके लिये नियुक्त होकर दीपक जलते घर में पवेश किया अम्बिकाने उस काले रूपवाले पुरुषकी वडी जटा और डाढ़ी और जलते हुए नेत्र देखकर आँखें वन्द करलीं द्वैपायन ने माता का प्रियसाधने के लिये उसके साथ संगम किया परन्तु काशिराज की कन्याने भय से उन की ओर न देखा अनन्तर व्यास जीके घरसे निकलने पर उनकी माताने उन से पूंछा कि हे बेटा क्या इस बधू से गुणवान पुत्र उत्पन्न होगा ।७। इन्द्रियोंसे अतीत, ज्ञानी, सत्यवती के पुत्र व्यास ने माता की यह वात सुनकर कहा कि विधि पूर्वक जन्म लिया हुआ गर्भ में स्थित यह बालक सहस्र हाथियों के समान बलवान, विद्वान, राजर्षियों में श्रेष्ठ महाभाग, महा वीर्यमान, अति बुद्धिमान होगा और वोह महात्मा सौ सन्तान उत्पन्न करेगा परन्तु माताके दोषसे अंधाहोगा।१०।पुत्रकी यह बात सुनकर मातानेकहा कि हे तपोधन ! अंधा पुरुष कुरुवंश के योग्य भूपति नहीं होसकता इस लिये जाति

think of him in the meantime. Having heard this from her mother-in-law Ambika began to think of Bhishm and other nobles of the Kuru family. At last, Satyavati's son the truthful Rishi entered the lighted room. Ambica seeing the yellow locks, enormous beard and burning eyes of the black coloured man, shut her eyes with fear. Dwaipayan bent on obeying his mother, united with her. During all that time the princess did not open her eyes for fear. At last when Vyas came out of the room his mother asked him if her daughter-in-law would bring forth a virtuous son.7. Having heard this from his mother the wise Vyas, having his senses under control, replied, "The child in the womb will be as strong as ten thousand elephants, wise, the best among Rajarshis, fortunate, brave, and exceedingly intelligent. He shall

॥ १३ ॥ पुनरेवतुसादेवी परिभाष्यस्नुषांततः । ऋषिमावाहयत्सत्या यथापूर्वमरिन्दम
॥ १४ ॥ ततस्तेनैवविधिना महर्षिस्तामपद्यत। अम्बालिकामथाभ्यागादृषिं दृष्ट्वाचसा-
पितम् ॥ १५ ॥ विवर्णापाण्डुसङ्काशा समपद्यतभारत। तांभीतांपाण्डुसङ्काशां विषण्णां
प्रेक्ष्यभारत ॥ १६ ॥ व्यासःसत्यवतीपुत्र इदंवचनमब्रवीत् । यस्मात्पाण्डुत्वमापन्ना
विरूपंप्रेक्ष्यमामिह ॥ १७ ॥ तस्मादेषसुतस्तेवै पाण्डुरेव भविष्यति । नाम चास्यैतदेवेह
भविष्यति शुभानने ॥ १८ ॥ इत्युक्त्वा स निराक्रामद्भगवानृषिसत्तमः । ततोनिष्क्रान्त
मालोक्य सत्यापुत्रमथाब्रवीत् ॥ १९ ॥ शशंस स पुनर्मात्रे तस्यबालस्य पाण्डुताम् ।
तंमाता पुनरेवान्यमेकं पुत्रमयाचत ॥ २० ॥ तथेतिच महर्षिस्तां मातरं प्रत्यभाषत ।
ततःकुमारंसादेवी प्राप्तकालमजीजनत् ॥ २१ ॥ पाण्डुंलक्षणसम्पन्नं दीप्यमानमिव

कुलका रक्षक पितरों का वंश रखनेवाला और कुरुवंश का राजा होनेयोग्य एक पुत्र उत्पन्न करो महायशस्वी व्यास इसको स्वीकार करके चलेगये समय आनेपर कौशल्या से ऋषि के वचनानुसार एक अंधा पुत्र उत्पन्न हुआ देवी सत्यवती ने पहलेकी तरह पुत्रवधूको आज्ञा देकर फिर उस ऋषि को बुलाया महर्षि बिधि के अनुसार अम्बालिका के पास आये । हे भारत ! अम्बालिका उस ऋषिको देखकर पीलीहोगई ।१५। सत्यवती के पुत्र व्यास ने उसको डरी हुई दुःखित और पीली देखकर कहा कि तुम मुझको कुरूप देखकर पीली होगई इसलिये तुम्हारा पुत्रभी पीला होगा और वोह पीला अर्थात् पांडुनाम से प्रसिद्ध होगा भगवान् ऋषि श्रेष्ठ के यहबात कहकर घरसे निकलनेपर सत्यवती ने उन से सन्तानकी बात पूंछी और व्यास ने मातासे कहा कि पुत्र पीला होगा सत्यवती ने यह सुनकर फिर उन से एक पुत्रकी और प्रार्थनाकी ।२०। महर्षि ने वहभी स्वीकारकिया अनन्तर समय आने पर देवी अम्बालिका ने सुन्दर श्रीमान् पांडुवर्ण एक कुमार उत्पन्न

be the father of a hundred sons; but by the fault of his mother he shall be born blind." 10. Having heard this from her son the mother replied, " O ascetic, a blind man cannot be a fit king for the Kuru family. Be pleased to produce a prince worthy of protecting the subjects and filling the throne of Kurus." The glorious Vyas consented to this and went away. At the proper time the princess brought forth a blind son as the Rishi had foretold. Satyavati again called the Rishi for her second daughter-in-law and he, as formerly, came to Am alika who turned pale on seeing him. 15. Satyavati's son Vyas, seeing her pale and terror-striken said, "Your child will be born pale as you have turned pale on seeing me and will be named Pandu or pale. The Rishi after saying this came out of the room. Satyavati questioned him about the offspring and Vyas told her all about the paleness of the child. Satyavati

श्रिया । यस्यपुत्रामहेष्वासा जज्ञिरेपञ्चपाण्डवाः ॥२२॥ ऋतुकालेततोज्येष्ठां बधूंतस्मै न्ययोजयत् । सातुरूपंच गन्धञ्चमहर्षेः प्रविचिन्त्यतम् ॥ २३ ॥ नाकरोद्वचनंदेव्या भयात् सुरसुतोपमा । ततः स्वैर्भूषणैर्दासीं भूषयित्वाप्सरोपमाम् ॥ २४ ॥ प्रेषयामास कृष्णायततःकाशिपतेःसुता । सातंऋषिमनुप्राप्तं प्रत्युद्गम्याभिवाद्यच ॥ २५ ॥ संविवेशाभ्यनुज्ञाता सत्कृत्योपचचारह । कामोपभोगेन रहस्तस्यां तुष्टिमगादृषिः । तयासहोषितो राजन्महर्षिः शंसितव्रतः ॥ २६ ॥ उत्तिष्ठन्नब्रवीच्चैनामभुजिष्या भविष्यासि । अयञ्चतेशुभेगर्भः श्रेयानुदरमागतः । धर्मात्माभवितालोके सर्वबुद्धिमतांवरः ॥ २७ ॥ सजज्ञेविदुरोनाम कृष्णद्वैपायनात्मजः । धृतराष्ट्रस्यवैभ्राता पाण्डोश्चैव महात्मनः ॥ २८ ॥ धर्मोविदुररूपेण शापात्तस्य महात्मनः । माण्डव्यस्यार्थतत्त्वज्ञः कामक्रोधविवर्जितः । कृष्णद्वैपायनोऽप्येतत् सत्यवत्यैन्यवेदयत् ॥ २९ ॥ प्रलम्भमात्मन

किया जिसके पांचपुत्र बडे चापधारी पांडव थे फिर बड़ीबधू का ऋतुकाल आनेपर सत्यवतीने उसको राजर्षि के लिये नियुक्त किया परन्तु उसने ऋषिके शरीर की दुर्गंध स्मरण कर उसका कहना नहीं माना और देवकन्या रूपी उस काशिराज पुत्री ने अप्सरा समान एक दासी को अपने आभूषणों से अलंकृतकर कृष्ण द्वैपायन के पास भेज दिया ऋषि के आने पर दासी ने उठकर उनको नमस्कार किया और ऋषि की आज्ञानुसार काम किया व्रतशील महर्षि उस के पास रहकर उससे अति प्रसन्नहुए ।२६। और जातेहुए कहा कि तुम्हारा दासीपन जाता रहेगा । हे शुभे ! तुम्हारे गर्भ में स्थित सन्तान धर्मात्मा और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ होगी कृष्ण द्वैपायनके वीर्य और उस के गर्भ से धृतराष्ट्र और पांडुके भाई विदुर ने जन्म लिया ।२८। अर्थ तत्व के जाननेवाले जितेन्द्रिय कृष्ण द्वैपायनने माता से आकर महात्मा मांडव्य के शाप से धर्म का विदुर के स्वरूपमें जन्म और अपने पास

---

again begged him a son 20. and the Maharshi consented. At the proper time Ambalika brought forth a beautiful pale child whose sons, the five Pandavas, were great archers. When the elder daughter-in-law was again in her season Satyavati enjoined her to see the Rishi. But she, remembering the odour of the Rishi's body did not act upon it. The beautiful princess sent to the Rishi a maid servant of hers decked in her own attire and ornaments. The maid paid proper respect to the Rishi and sat with his permission on the bed. The rishi was much pleased with her 26. and at the time of his departure said, "You will become free from slavery. The child in your womb will be the most virtuous and wisest." Vidur, the half brother to Dhritrashtra and Pandu, was born of this union. 28. Vyas on coming out told his mother all about the curse of *Ani mandavya* to Dharm, the latter's being born in the

श्चैव शूद्रायाःपुत्रजन्मच । सधर्मस्यानृणोभूत्वा पुनर्मात्रा समेत्यच । तस्यैगर्भं समावेद्य तत्रैवान्तरधीयत ॥ ३० ॥ एतेविचित्रवीर्य्यस्य क्षेत्रेद्वैपायनादपि । जज्ञिरेदेवगर्भाभाःकुरुवंशविवर्द्धनाः ॥ ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि विचित्रवीर्य्यसुतोत्पत्तौ षड़धिकशतोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

जनमेजय उवाच । किंकृतंकर्मधर्मेण येनशापमुपेयिवान् । कस्यशापाच्चब्रह्मर्षेः शूद्रयोनावजायत ॥ १ ॥ वैशम्पायनउवाच । बभूवब्राह्मणः कश्चिन्माण्डव्य इतिविश्रुतः। धृतिमान् सर्वधर्मज्ञः सत्येतपसिचस्थितः ॥ २ ॥ सआश्रमपदद्वारि वृक्षमूलेमहातपाः। ऊर्ध्ववाहुर्महायोगी तस्थौमौनव्रतान्वितः ॥ ३ ॥ तस्यकालेनमहता तस्मिंस्तपसिवर्त्तंतः । तमाश्रममनुप्राप्ता दस्यवोलोप्त्रहारिणः ॥ ४ ॥ अनुसार्य्यमाणा वहुभीरक्षिभिर्भरतर्षभ । तेतस्यावसथेलोप्त्रंदस्यवः कुरुसत्तम ॥ ५ निधायच भयाल्लीनास्तत्रैवा

में दासीका आना और उस से धर्मस्वरूपमें पुत्रका जन्म यह सब कह सुनाया अनन्तर वोह उस गर्भ की कथा मातासे कहकर और धर्मानुसार ऋण से छुटकारा पाकर उस स्थान से अन्तर हित हुए । हे राजन् ! द्वैपायन के वीर्य और विचित्रवीर्य के क्षेत्र में कुरुकुल के बढानेवाले देवकुमार समान पुत्रों का इसप्रकार जन्महुआ ॥ ३१ ॥

अध्याय १०७ ॥

जन्मेजय ने पूछाकि धर्म ने ऐसा क्या काम कियाथा कि जिससे शाप ग्रसित हुआ और किस महर्षिके शाप से शूद्र योनिमें जन्म लिया । वैशम्पायन ने कहा कि माडव्य नामक प्रसिद्ध धर्मज्ञ धृतिमान, सत्यवादी और तप में नियुक्त एक वड तपस्वी ब्राह्मण एक समय आश्रम के द्वारपर स्थित बृक्ष की जड में ऊर्द्धवाहु और मौनी होकर वहुत दिनोंसे तप कररहे थे।३।कि ऐसे समयमें एक दिन लुटेरे लूटीहुई वस्तुओंको लेकर उनके आश्रम में आए । हे भरत वंश श्रेष्ठ उनके पीछे सिपाही आरहेथे इसलिए वे भय र ाकर

shape of Vidur, and the sending of the slave girl to him. Having said all this and bidden farewell to her mother, the Rishi went away. Thus Vyas produced in the field of Vichitravirya the princes who were like the children of gods. 31.

CHAPTER CVII.

Janmejaya said, " What sin had Dharm committed for which he was cursed and by whose curse he was obliged to be born by a low class woman?" Vaishampayan replied, " There was a Brahman ascetic named Mandavya who had long been practising asceticism and a vow of silence under the tree which stood at the door

नागतेवले । तेषुलीनेष्वथोशीघ्रं ततस्तद्रक्षिणांबलम् ॥ ६ ॥ आजगामततोऽपश्यंस्त-
मृषिं तस्करानुगाः । तमपृच्छंस्ततो राजंस्तथावृत्तं तपोधनम् ॥ ७ ॥ कतमेनपथायाता
दस्यवोद्विजसत्तम । तेनगच्छामहेब्रह्मन् यथाशीघ्रतरंवयम् ॥ ८ ॥ तथातुरक्षिणांतेषां
ब्रुवतांसतपोधनः । नकिञ्चिद्वचनं राजन्नब्रवीत् साध्वसाधुवा ॥ ९ ॥ ततस्तेराजपुरु-
षाविचिन्वानास्तमाश्रमम् । ददृशुस्तत्र लीनांस्तांश्चौरांस्तद्द्रव्यमेवच ॥ १० ॥ ततः
शङ्कासमभवद्रक्षिणां तंमुनिंप्रति । संयम्यैनंततोराज्ञे दस्यूंश्चैवन्यवेदयन् ॥ ११ ॥ तं
राजासह तैश्चौरैरन्वशाद्वध्यतामिति । सरक्षिभिस्तैरज्ञातः शूलेप्रोतोमहातपाः ॥ १२ ॥
ततस्तेशूलमारोप्य तंमुनिंरक्षिणस्तदा । प्रतिजग्मुर्महीपालं धनान्यादायतान्यथा ॥
॥ १३ ॥ शूलस्थःसतुधर्मात्मा कालेनमहताततः । निराहारोऽपि विप्रर्षिर्मरणं नाभ्य-
पद्यत ॥ १४ ॥ धारयामासच प्राणानृषींश्च समुपानयत् । शूलाग्रेतप्यमानेन तपस्तेन

उनके पहुँचनेसे पहले उस आश्रम में लूट का माल छिपाकर आपभी वहींरहे चोरोंकेपीछे
आएहुए पैदल रखवाले उसी क्षण उस स्थान में आपहुँचे । हे राजन ! उन्होंने उस दशा
में उस तपस्वी ऋषिको देखकर पूछा कि हे द्विजवर ! लुटेरेकिस तरफ गए हे ब्राह्मण
बतलाओ हम शीघ्र उसीतरफ आयंगे । ८ । हेराजन् ! रखवालों के इस प्रकार पूंछनेपर
तपोधन माण्डव्यने भली बुरी कुछ नहींकही अनन्तर राजपुरुषोंने उस आश्रममें ढूंढतेहुए
चुरायेहुए पदार्थों के साथ चोरोंको पाया और उन मुनिपर संदेह होनेसे रखवालों ने मुनि
सहित चोरोंको बांधके राजाके पास भेजदिया। ११ ।राजाने लुटेरोंके साथ मुनि कोभी मार
नेकीआज्ञादी कर्मचारियोंने तपस्वी माण्डव्य को न पहिचान कर शूलीपर चढादिया और
चुराईहुई वस्तुओं को लेकर राजा के पास गए धर्मात्मा विप्रर्षिबहुत काल शूलीपर चढेहुए
विना भोजन रहनेपरभी नहीं मरे। १४ ।वह तपके बल से जीतेरहे और ऋषियोंको अपने पास

of his hermitage.3. One day, some robbers with their booty came to the hermitage. The guards were coming after them. So the robbers hid themselves there with their booty, The guards came to the same spot and asked of the rishi the where-abouts of the robbers so that they might overtake them.8. The Rishi made no reply to their queries. At last the soldiers in their search found within the hermitage the robbers with the booty. They suspected the muni and took him to the king along with the thiefs.11. The king ordered that the ascetic also be put to death along with the robbers. The guards unknowingly impaled Mandavya, the ascetic, and brought the stolen property to the king. The virtuous rishi did not die although he remained impaled without food for several days.14. He remained alive with the power of his asceticism. He then summoned other rishis who came to him at night in the

महात्मना ॥ १५ ॥ सन्तापंपरमं जग्मुर्मुनयस्तपसान्विताः । तेरात्रौशकुनाभूत्वा सन्निवत्यतुभारत ॥ १६ ॥ दर्शयन्तोयथाशक्ति तमपृच्छन् द्विजोत्तमम् । श्रोतुमिच्छामहेब्रह्मन् किंपापंकृतवानसि । येनेहसमनुप्राप्तं शूलेदुःखभयंमहत् ॥ १७ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि अणीमाण्डव्योपाख्याने

सप्ताधिकशततोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ ततःसमुनिशार्दूलस्तानुवाच तपोधनान् । दोषतःकंगमिष्यामि नहिमेऽन्योऽपराध्यति ॥ १ ॥ तंदृष्ट्वारक्षिणस्तत्र तथाबहुतिथेऽहनि । न्यवेदयंस्तथा राज्ञेयथावृत्तंनराधिप ॥ २ ॥ श्रुत्वाचवचनंतेषां निश्चित्यसहमन्त्रिभिः । प्रसादयामासतदा शूलस्थमृषिसत्तमम् ॥ ३ ॥ राजोवाच । यन्मयापकृतं मोहादज्ञानाद्दृषिसत्तम । प्रसादयेत्वांतत्राहं ममेत्वंक्रोद्धुमर्हसि ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्ततोराज्ञा प्रसा

बुलवाया । हे भारत ! तपोबल युक्त मुनि लोग रात्रि को पक्षियों के स्वरूप में उन के पास आये और उस महात्मा को शूली के ऊपर तपमें मग्न देखकर अति दुःखी हुए और उन्हों ने निज २ रूप लेकर द्विजोत्तम से पूंछा कि हे ब्रह्मन् हम सुना चाहतेहैं कि तुम ने कौनसा पाप कियाहै जिससे इसशूलीका भारीदुःख और भय सहनापड़ताहै १७॥

अध्याय १०८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि मुनि मांडव्य ने उन तपस्वियों से कहा कि मैं किस को दोष लगाऊं कोई और मनुष्य इस बिषय में दोषी नहीं है। कुछ दिन पीछे रखवालोंने उन को इस दशा में देखकर राजा से सब हाल कह सुनाया यह सुनकर राजा मंत्रियों सहित उस शूली पर चढे ऋषि को प्रसन्न करनेके लिये विनय पूर्वक कहनेलगा।३। कि मैंने अज्ञानता से आपको दुःख दिया अब प्रार्थना करताहूँ कि आप मुझ पर प्रसन्नहों और आपका क्रोध

shape of birds and were much grieved at the sight. They then assumed their proper forms and asked the rishi what crime he had committed for which he was impaled. 17.

CHAPTER CVIII.

Vaishampayan said that Mandavya told the Rishi that he did not hold any one else responsible for his trouble. After several days guards seeing the Rishi in that state told the king all abont him. The king, in consultation with his ministers began to pacify the Rishi saying, 3. " I have given you this trouble unknowingly and pray for your forgiveness. Be not angry with me." At these words of the king the Muni was pacified. Seeing him well.pleased the king brought him down and began to extricate the point of

दमकरोन्मुनिः । कृतप्रसादं राजानं ततःसमवतारयत् ॥ ५ ॥ अवतार्य्यच शूलाग्रात्त-च्छूलंनिश्चकर्षह । अशक्नुवंश्चनिष्क्रष्टुंशूलंमूले स चिच्छिदे ॥६॥ सतथान्तर्गतेनैव शूले-नव्यचरन्मुनिः । तेनातितपसा लोकान्विजिग्ये दुर्लभान्परैः ॥ ७ ॥ आणीमाण्डव्य इतिच ततोलोकेषुगीयते । सगत्वासदनंविप्रो धर्मस्यपरमात्मवित् ॥ ८ ॥ आसनस्थं ततोधर्मंदृष्ट्वोपालभतप्रभुः । किन्नुतद्दुष्कृतंकर्म मयाकृतमजानता ॥ ९ ॥ यस्येयंफल निर्वृत्तिरीदृश्यासादितामया । शीघ्रमाचक्ष्वमेतत्त्वंपश्यमे तपसोबलम् ॥ १० ॥ धर्म उवाच । पतङ्गिकानांपुच्छेषु त्वयेषीकाप्रवेशिता । कर्मणस्तस्यतेप्राप्तं फलमेतत्तपोधन ॥ ११ ॥ अणीमाण्डव्य उवाच । अल्पेऽपराधेऽपि महान्ममदण्डस्त्वयाधृतः । शूद्रयो नावतोधर्म मानुषःसम्भविष्यासि ॥१२॥ मर्य्यादांस्थापयाम्यद्य लोकेधर्मफलोदयाम्।

शांत हो राजा की यह बात सुनकर मुनि प्रसन्न हुए और राजा उनको प्रसन्न देखकर शूलीके खंभे से उतारकर उसे निकालनेलगे पर वोह निकल नहींसका तव देह के भीतर घुसी हुई शूली की जड काट दीगई और मुनि उसी दशा में कठिन तपस्या करने लगा और इससे औरोंके लिये दुर्लभ पुण्य लोक को जीत लिया वह शूली का अग्रभाग लगा रहनेके कारण अणि माडव्य नाम से प्रसिद्धहुए वह ऋषि एक समय धर्म के पासगए।८। और लांछन पूर्वक धर्म से कहने लगे कि मैंने अज्ञानता से कौनसा कुकर्म कियाहै जिस-का मुझे यह फल मिला इसका कारण मुझे शीघ्र बतलाओ और मेरी तपस्या का प्रभाव देखो धर्म ने कहा कि तुमने एकदिन पतंगेकी पूंछमें सींक घुसाईथी उसी कर्मका यहफल तुमको मिलाहै अणिमाण्डव्य ने कहा कि हे धर्म मेरेबाल्यावस्था में कियेहुए छोटेसे दोष का तुमने ऐसा कठोर दण्ड दिया इस हेतु तुम मनुष्य होकर शूद्र योनि में जन्म भोगो ।१२।आज से मै कर्म के फल भोगने के विषय में लोको में यह नियम स्थापित करता हूं

the stake from his body but could not do so. The stake was therefore cut asunder. The point of the stake remained within his body but in spite of that the Muni was again engaged in severe asceticism and at last was able to win the heaven. From that time he was named *Ani-Mandavya* as the *Ani* or the point of stake had remained within his body. He once went to Dharm 8. and on seeing him he tauntingly spoke to him saying, "What sin was I guilty of for which I have suffered the punishment? Let me have your reply at once and see the power of my asceticism." Dharm replied, "You had once thrust a broom straw in the body of a butterfly and for this you were punished." *Ani Mandavya* then said, "For a small fault of mine done in the childhood you have given me so severe a punishment. For this you will be born as a man in a low class woman. 12. And from this day I fix this

आचतुर्दशकाद्वर्षान्न भविष्यतिपातकम् । परतःकुर्वतामेव दोषएवभविष्यति ॥ १३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतेनत्वपराधेन शापात्तस्यमहात्मनः । धर्मोविदुररूपेण शूद्रयोनावजायत ॥ १४ ॥ धर्मेचार्थेचकुशलो लोभक्रोधविवर्जितः । दीर्घदर्शीशमपरः कुरूणांचहितेरतः ॥ १५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि अणीमाण्डव्योपाख्याने
अष्टाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

वैशम्पायन उवाच । तेषुत्रिषुकुमारेषु जातेषुकुरुजांगलम् । कुरवोऽथकुरुक्षेत्रं त्रयमेतदवर्द्धत ॥ १ ॥ ऊर्द्धशस्याभवद्भूमिः शस्यानिरसवन्तिच । यथर्तुवर्षीपर्ज्जन्यो बहुपुष्पफलाद्रुमाः ॥ २ ॥ वाहनानिप्रहृष्टानि मुदितामृगपक्षिणः । गन्धवन्तिचमाल्यानि रसवन्तिफलानिच ॥ ३ ॥ वणिग्भिश्चान्वकीर्य्यन्त नगराण्यथशिल्पिभिः । शूराश्च

कि जब तक चौदह वर्ष की आयु पूरी नहो तबतक पाप करने से भी पापनहीं होगा चौदह वर्ष के पीछे पाप करने से उसके फलकी प्राप्ति होगी । वैशम्पायन ने कहा कि इस दोषके हेतु महात्मा अणिमांडव्य के शाप से धर्मने विदुरके स्वरुप में शूद्रसे जन्म लिया परन्तु वोह धर्म और अर्थ के विषय में पंडित क्रोध और लोभ रहित शांत और परिणाम दर्शी होकर कुरुवंश के हितसाधने में सदा उत्साही था ॥ १५ ॥

अध्याय १०९ ॥

वैशम्पायनने कहा कि उन तीन कुमारोंके उत्पन्न होनेपर कौरवगण कुरु जांगल और कुरुक्षेत्र इन तीनों की पूरी उन्नति हुई पृथ्वी में बहुत नाज उत्पन्न होने लगा नाज स्वादिष्ट होता था उचित समय में वृष्टिहोने से वृक्षोंमें बहुत फल फूल लगते थे और सब पशु, पक्षी प्रसन्न और मालायें गंधयुक्त और फल रसयुक्त होतेथे ।३। तब नगर वणिज्य

limit for the punishment of offences that no one who has not completed the age of fourteen years will be punishable for a sin committed by him. After the age of fourteen years one will be punishable for his sins." Vaishampayan said that Dharm was thus cursed by *Ani Mandavya* and was born in the shape of Vidur. He knew his duties, was destitute of anger and avarice and was always engaged in doing good to the Kuru family. 15.

CHAPTER CIX.

Vaishampayan said that after the birth of the three princes the Kauravas and their country were at the zenith of their glory. Food grains were produced in larger quantities and were tasteful. Clouds poured rain in due season, causing an abundant produce of fruits. The cattle and the animals of the forest were well cared

कृताविद्याश्च सन्तश्चसुखिनोभवन् ॥ ४ ॥ नाभवन्दस्यवः केचिन्नाधर्मरुचयोजनाः । प्रदेशेष्वपिराष्ट्राणां कृतंयुगमवर्त्तत ॥५॥ धर्मक्रियायज्ञशीलाः सत्यव्रतपरायणाः । अन्योन्यप्रीतिसंयुक्ता व्यवर्द्धन्तप्रजास्तदा ॥ ६ ॥ मानक्रोधविहीनाश्च नरालोभविवर्जिताः । अन्योन्यमभ्यनन्दन्त धर्मोत्तरमवर्त्तत ॥ ७ ॥ तन्महोदधिवत्पूर्णं नगरंवैव्यरोचत । द्वारतोरणनिर्यूहैर्युक्तमभ्रचयोपमैः ॥८॥ प्रासादशतसम्बाधं महेन्द्रपुरसन्निभम् । नदीषुवनखण्डेषु वापीपल्वलसानुषु । काननेषुचरम्येषु विजह्रुर्मुदिताजनाः ॥ ९ ॥ उत्तरैःकुरुभिःसार्द्धं दक्षिणाःकुरवस्तथा । विस्पर्द्धमाना व्यचरंस्तथा देवर्षिचारणैः ॥ ॥ १० ॥ नाभवत्कृपणः कश्चिन्नाभवन्विधवाःस्त्रियः । तस्मिञ्जनपदेरम्ये कुरुभिर्बहुलीकृते ॥ ११ ॥ कूपारामसभावाप्यो ब्राह्मणावसथास्तथा । बभूवुः सर्वर्द्धियुता-

और शिल्पियों से भरा हुआथा शूर विद्वान् और साधुलोग सुख से रहने लगे उस समय में कोई लुटेरा वा अधर्म शील नथा राज्यके सब प्रदेशोंमें मानों सत्ययुग प्रवेशहुआ प्रजा धर्मशील यागशील सत्यशील और आपस में प्रेमशील होने से बढने लगीं ।६। सबलोग क्रोध लोभ और अभिमान रहित होकर धर्मानुसार परस्पर आनन्द करने लगे उस समय वोह नगर बडे भारी समुद्र के समान भरा सैकडों बड़े २ भवनों से पूरा और बादल दळ के समान द्वार और तोरणों से संयुक्त होकर अमरावती कीसी अपूर्व शोभा पाने लगा मनुष्य, नदी, बन, पहाड, तालाव, रमणीय फुलवाडी और पर्वतों पर प्रसन्नचित्त से बिहार करने लगे दक्षिण के कुरु लोग उत्तर के कुरुओंसे एक दूसरे को अहंकार देखाकर सिद्ध ऋषि और चारणों के साथ विचरनेलगे।१०।कुरुओंसे बढेहुए उस सुन्दर जनपद में कोई कृपण नहीं था और कोई नारी बिधवा नहीं होतीथी कूप, उपवन, तडागे, सभा और ब्राह्मणोंकी वस्ती सर्व सम्पत्ति युक्तहुई और सब स्थानों में सदा

for. Garlands were sweet scented and the fruits tasteful.3. The country was full of artisans and traders and the heroes, the learned and the virtuous were happy. There were no robbers and sinful men. The country enjoyed the golden fruit of peace. The subjects were righteous, truthful and virtuous. The population increased wonderfully and the people lived in harmony and were free from anger, avarice and pride.6. The city was like the ocean. Hundreds of palaces and mansions with large gates were built in the city which looked like the city of gods. The people began to roam happily by the side of rivers and lakes, in forests orchards and on the level portions of the mountains. The Kurus of South and North showing their pomp to each other began to roam with Rishis and other high class beings.10 There were no misers in the

स्तस्मिन्राष्ट्रेसदोत्सवाः ॥ १२ ॥ भीष्मेणधर्मतोराजन् सर्वतःपरिरक्षिते । बभूवरमणी यश्चैत्ययूपशतांकितः ॥ १३ ॥ सदेशःपरराष्ट्राणि विसृज्याभिप्रवर्द्धतः । भीष्मेणावि- हितराष्ट्रे धर्मचक्रमवर्त्तत ॥ १४ ॥ क्रियमाणेषुकृत्येषु कुमाराणांमहात्मनाम् । पौरजा नपदाःसर्वे बभूवुःपरमोत्सुकाः ॥ १५ ॥ गृहेषुकुरुमुख्यानां पौराणांचनराधिप । दी यतांभुज्यतां चेति वाचोऽश्रूयन्तसर्वशः ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रश्चपाण्डुश्च विदुरश्चमहामतिः जन्मप्रभृतिभीष्मेण पुत्रवत्परिपालिताः ॥ १७ ॥ संस्कारैःसंस्कृतास्तेतु व्रताऽध्याये- नसंयुताः । श्रमव्यायामकुशलाः समपद्यन्तयौवनम् ॥ १८ ॥ धनुर्वेदेचवेदेच गदा- युद्धेऽसिचर्मणि । तथैवगजशिक्षायां नीतिशास्त्रेषुपारगाः ॥ ॥ १९ ॥ इतिहासपुराणेषु नानाशिक्षासुबोधिताः । वेदवेदांगतत्त्वज्ञाः सर्वत्रकृतनिश्चयाः ॥ २० ॥ पाण्डुर्धनुषि विक्रान्तो नरेष्वभ्यधिकोऽभवत् । अन्येभ्योबलवानासीद्धृतराष्ट्रो महीपतिः ॥ २१ ॥

उत्सव होने लगे वोह राज्य भीष्म से धर्मानुसार इसप्रकार रक्षितहुआ कि अनेक देशों के यज्ञ के खंभों से चित्रितहोकर अति रमणीय बन गया भीष्मके विधान से उसराज्यमें धर्मचक्र ऐसा प्रवर्तित हुआ कि बहुत लोग दूसरे राज्यों को छोडकर इस राज्यमें बसने लगे।१४। महात्मा कुरु कुँवरोंके कामोंको देखकर नगर और ग्रामके लोग अति उत्साहयुक्त हुए हे राजन् प्रधान और पुरु वासियों के घरों में खाओ पिओ यह बात सदा सुनाई देने लगी धृतराष्ट्र, पांडु, और बुद्धिमान विदुर को भीष्म बचपनहीसे पुत्रोंकी भाँति पालता और जाति के योग्य संस्कारों से संस्कृत कर व्रत और पढनेमें लगाताथा वोह उचितसमय में यौवन दशा को प्राप्तहुए।१८।और धनुर्वेद, वेद, गदायुद्ध और खड्ग चलाने गज शिक्षा और नीतिशास्त्र में पंडित हुए वे वेद वेदांगोंके तत्त्वज्ञ होकर इतिहास, पुराण और नाना विषयोंकी शिक्षा आदि में पण्डित हुए थे विक्रमी पांडु धनुर्विद्या और राजा धृतराष्ट्र

city of Kurus and there were no widows. Wells, gardens, tanks societies and the habitations of Brahmans were prosperous. There were rejoicings in all places. The kingdom thus protected virtuously by Bhishm and ornamented by stakes of sacrifices became like a large garden. Virtue increased under the able management of Bhishm and the people from other countries began to migrate to live there.14.The citizens and the villagers were well pleased at the sight of the brave deeds of the Kuru princes. The sound of 'eat and drink' was continually heard in the houses of the Kaurav chiefs. Dhritrashtra, Pandu and the wise Bidur were brought up by Bhishm like his own children and being well trained in all sorts of virtues, gained their youth at the proper time.18. They were well skilled in the knowledge of arms, the Vedas, use of clubs and swords. They knew the Vedas with their branches, history and

त्रिषुलोकेषुनत्वासीत् कश्चिद्विदुरसम्मितः । धर्मनित्यस्तथाराजन् धर्मेचपरमंगतः ॥ ॥ २२ ॥ प्रनष्टंशांतनोर्वंशं समीक्ष्यपुनरुद्धतम् । ततोनिर्वचनंलोके सर्वराष्ट्रेष्ववर्त्तत ॥ ॥ २३ ॥ वीरसूनांकाशिसुते देशानांकुरुजांगलम् । सर्वधर्मविदांभीष्मः पुराणांगजसाह्वयम् ॥ २४ ॥ धृतराष्ट्रस्त्वचक्षुष्ट्वा द्राज्यं नप्रत्यपद्यत । पारशवत्वाद्विदुरो राजापांडुर्बभूवह ॥ २५ ॥ कदाचिदथगांगेयः सर्वनीतिमतांवरः । विदुरंधर्मतत्त्वज्ञं वाक्यमाहयथोचितम् ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि पाण्डुराज्याभिषेके
नवाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०९ ॥

भीष्म उवाच । गुणैःसमुदितंसम्यगिदं नः प्रथितंकुलम् । अप्यन्यान् पृथिवीपालान् पृथिव्यामधि राज्यभाक् ॥ १ ॥ रक्षितंराजभिःपूर्वै धर्मविद्भिर्महात्माभिः ।

पराक्रम में सबसे बढकर था ऐ राजा तीनों लोकमें विदुर के समान धर्मशील और धर्म विषय में तत्त्वज्ञ कोई नहीं उसकाल में राजा शांतनु के नष्ट होतेहुए बंशको फिर जागते देखकर सब राज्यों में ऐसी प्रशंसा हुई कि ।२३। बीर पैदा करनेवाली स्त्रियोंमें काशिराज की बेटियें देशों में कुरु जांगल धर्मज्ञ जनों में भीष्म और नगरोंमें हास्तिनपुर श्रेष्ठ प्रसिद्ध हुआ धृतराष्ट्रको जन्मांध होने और विदुर को शूद्रा के गर्भ में जन्म लेने के हेतु राज्यकी प्राप्ति नहीं हुई पांडुही राजाहुआ अनन्तर एक समय नीतिशास्त्र में निपुण गंगा नंदन धर्मात्मा विदुर से यह बोले ॥ २६ ॥

अध्याय ११० ॥

भीष्मने कहा कि हमारा यह सर्व गुणयुक्त और सर्वत्र प्रख्यात कुरुकुल पृथ्वी भर में दूसरे सब पृथ्वीपालों पर अधिकार फैलाता आया है इस विषय में कि धर्मशील

other branches of knowledge. The brave Pandu excelled all in the use of bow, and king Dhritrashtra in bravery. There was no living man more virtuous than Vidur. Seeing the revival of the nearly extinct line of Bharat all the country resounded with their praises.23. The names of the two daughters of the king of Kashi were famous throughout as the mothers of heroes, the country of the Kurus as best among the countries; Bhishm, the best of the virtuous men and Hastinapur the best of cities. Pandu was crowned king as Dhritrastra was blind and Vidur was born of a Shudra woman. One day Bhishm told the virtuous Vidur the following:—26.

CHAPTER CX.

Bhishm said, " This virtuous and famous Kuru family of ours has ever established its supremacy over the kings of the earth. In

नोत्सादमगमच्चेदं कदाचिदिहनःकुलम् ॥ २ ॥ मयाचसत्यवत्याच कृष्णेनचमहात्मना। समवस्थापितंभूयो युष्मासु कुलतन्तुषु ॥ ३ ॥ तच्चैतद्वर्द्धतेभूयः कुलंसागरवद्यथा। तथामयाविधातव्यं त्वयाचैवनसंशयः ॥ ४ ॥ श्रूयतेयादवीकन्या स्वनुरूपाकुलस्य नः। सुवलस्यात्मजाचैव तथामद्रेश्वरस्यच ॥ ५ ॥ कुलीनारूपवत्यश्च ताःकन्याःपुत्र सर्वशः। उचिताश्चैवसम्बन्धे तेऽस्माकं क्षत्रियर्षभाः ॥६॥ मन्येवरयितव्यास्ता इत्यहं धीमतांवर। सन्तानार्थं कुलस्यास्य यद्वाविदुरमन्यसे ॥ ७ ॥ विदुर उवाच। भवान् पिताभवान् माताभवान्नःपरमोगुरुः। तस्मात्स्वयंकुलस्यास्य विचार्य्यकुरुयद्धितम् ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच। अथशुश्राव विप्रेभ्यो गान्धारींसुवलात्मजाम्। आराध्य वरदंदेवं भगनेत्रहरं हरम् ॥ ९ ॥ गान्धारीकिलपुत्राणां शतंलेभेवरंशुभा। इतिशु-

महात्मा राजाओं के द्वारा पहिले से रक्षित यह कुल अधोगति को प्राप्त न हो मेरे सत्यवती के और महात्मा कृष्ण द्वैपायन के प्रयत्नसे तुम तीनकुल तंतु उत्पन्न हुएहो तुम्हीं तीनों से कुल स्थापित है इस लिये तुम्हारी और मेरी ऐसी चेष्टा होनी चाहिये कि यह कुल सागर के समान बढ़े।४। मैंने सुनाहै कि यदुबंशी शूरसेनकी कन्या और सुवल राज पुत्री और मद्रराजकी पुत्री यह तीनों कन्यायें हमारे बंश के योग्यहैं हे बेटा क्षत्राणियों में श्रेष्ठ वे कन्यायें सब कुलीन रूपवती और हर तरह हमारे साथ सम्वन्ध के योग्यहैं हे बुद्धिमान बिदुर मैं समझता हूं कि इस बंशकी सन्तानके निमित्त उन्हीं से बिवाह करना उचित है तुम्हारी समझमें जो अच्छाहो वोह कहो।७। बिदुरने कहा कि आपही हमारे पिता माता और परम गुरु हैं इस लिये स्वयं विचार कर जो इस बंश के लिये मंगलदाई हो कीजिये। वैशम्पायनने कहा कि कुरु पितामह भीष्मने ब्राह्मणों के मुख से सुना कि शुभलक्षणा सुवल पुत्री गांधारी ने वरदाई महादेव की आराधना कर सौ पुत्र

order that this family, protected by virtuous and glorious kings from early ages, may not become extinct, you three were born by the united exertions of the great Krishnadwaipayan, Satyavati, and myself. The family now depends on you. You and I should now work together to raise it up like the Ocean.4. I hear that the daughters of Shoorsen, of the Yadu family, of Subalraj, and of the king of Madra are worthy of our family. Best among the Kshatrya women, the girls are all well born, beautiful and worthy of relationship with our family. I think, O wise Vidur, that for the good of the family it will be proper to marry them. What do you think of the proposal?"7. Vidur replied, "You are a father, mother, and *Guru* to us, therefore, do what you think proper for the good of the family." Vaishampayan said that the grand-father of the Kurus, Bhishm, having heard from the Brahmans that the

श्रावतत्त्वेन भीष्मःकुरुपितामहः ॥ १० ॥ ततो गान्धारराजस्य प्रेषयामास भारत ।
अचक्षुरितितत्रासीत् सुबलस्य विचारणा ॥ ११ ॥ कुलंख्यातिञ्चवृत्तञ्च बुद्धयातु
प्रसमीक्ष्यसः। ददौतां धृतराष्ट्राय गान्धारींधर्मचारिणीम् ॥ १२ ॥ गान्धारीत्वथशुश्रा
व धृतराष्ट्रमचक्षुषम् । आत्मानंदित्सितं चास्मै पित्रामात्राचभारत ॥ १३ ॥ ततःसा
पट्टमादाय कृत्वाबहुगुणंतदा । ववन्धनेत्रेस्वेराजन् पतिव्रतपरायणा ॥ १४ ॥
नाभ्यसूयांपतिमहामित्येवं कृतनिश्चया । ततो गान्धारराजस्य पुत्रः शकुनि
रभ्ययात् ॥ १५ ॥ स्वसारंवयसालक्ष्म्या युक्तामादाय कौरवान् । तां तदा
धृतराष्ट्राय ददौपरमसत्कृताम् ॥ १६ ॥ भीष्मस्यानुमतेचैव विवाहंसमकारयत् ।
दत्वासभगिनींवीरो यथार्हञ्चपरिच्छदम् । पुनरायात्स्वनगरं भीष्मेणप्रतिपूजितः
॥ १७ ॥ गान्धार्य्यपिवरारोहा शीलाचारविचेष्टितैः। तुष्टिंकुरूणांसर्वेषां जनयामास

पाने का वरलाभ किया है यह सुनकर भीष्मने गांधार राज के पास दूत भेजा धृतराष्ट्र के अंधे होने का गांधार राजने बहुत विचार किया परन्तु कौरवों के कुलप्रसिद्धि और चरित्रको जानकर धृतराष्ट्रको गांधारी नाम्नी कन्याका देना स्वीकारकिया।१२। हेभारत ! जब गांधारी ने सुना कि अंध धृतराष्ट्र से उसका विवाह होगा तब उसने पातिव्रता होने के हेतु वस्त्र लेकर कई फेर लगाकर अपने नेत्रों को बांधा किन्तु उसने यह विचार किया कि मैं पतिसे डाह नहीं करूँगी अनन्तर गांधार राजकुमार शकुनि ने रूप यौवनवती अपनी वहिन को लेकर कौरवों के पास आ धृतराष्ट्र को दान किया तबभीष्म के मतानुसार उनका विवाह करदिया गया वीर शकुनि धृतराष्ट्र को यथोचित वस्त्रादि देकर वहिनका दान करके भीष्मसे भलेप्रकार सत्कारपाकर अपने नगरको गया।१७।हेभारत ! वंशतिलक सुंदरी गांधारी शील, सदाचार, और यत्न से सम्पूर्ण कौरवों को संतोष देने

fortunate Gandhari, daughter ot Subal, had obtained from the god of gods *Mahadev* the gift of a hundred sons, sent an ambassador to the king of Kandhar. The king reflected upon the blindness of Dhritrashtra and at last consented to give him his daughter in marriage. 12. When Gandhari heard that she was to be married to the blind Dhritrashtra, the chaste woman folded her eyes several times with a piece of cloth so that she might have no advantage over her husband. The prince of Kandhar, Shakuni, brought his virtuous sister to the country of Kauravas and gave her to Dhritrashtra, and the two were married by the advice of Bhishma. The brave Shakuni having given suitable clothing etc, with her sister to Dhritrashtra and been honoured by Bhishm, returned to his country. 17. The beautiful Gandhari pleased the Kauravas with her virtues and good behaviour.

भारत ॥ १८ ॥ वृत्तेनाराध्यतान्सर्वान् गुरून् पतिपरायणा । वाचापि पुरुषानन्यान् सुव्रता नान्वकीर्त्तयत् ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि धृतराष्ट्रविवाहे
दशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११० ॥

वैशम्पायन उवाच । शूरोनामयदुश्रेष्ठो वसुदेवपिताभवत् । तस्यकन्यापृथानाम रूपेणाप्रतिमाभुवि ॥ १ ॥ पितृस्वस्रीयाय सुतामनपत्यायभारत । अग्रयमग्रेप्रतिज्ञाय स्वस्यापत्यं स सत्यवाक् ॥ २ ॥ अग्रजामथतांकन्यां शूरोऽनुग्रहकांक्षिणे । प्रददौ कुन्तिभोजाय सखासख्ये महात्मने ॥ ३ ॥ नियुक्तासापितुर्गेहे ब्राह्मणातिथिपूजने । उग्रंपर्य्यचरत्तत्र ब्राह्मणंशंसितव्रतम् ॥ ४ ॥ निगूढनिश्चयंधर्मे यन्तंदुर्वाससंविदुः । तमुग्रंशंसितात्मानं सर्वयत्नैरतोषयत् ॥ ५ ॥ तस्यैसप्रददौ मन्त्रमापद्धर्मान्ववेक्षया ।

लगी और सुंदर व्यवहार से गुरुओं की सेवा किया करती थी और कभी दूसरे पुरुष का नाम नहीं लेती थी ॥ १९ ॥

॥ अध्याय १११ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि शूरनामक यदुकुलमें श्रेष्ठ वसुदेव के पिताथे उनकी कन्या पृथा नाम्नी थी वोह ऐसी रूपवती थी कि भूमंडल में कोई नारी उसके रूपकी बराबरी नहीं करसक्ती थी । हे भारत ! सत्यवादी शूरने कृपाकांक्षी निःसंतान पितृस्वस्रीय, प्रिय मित्र, महात्मा कुंती भोजराज से पहले कहाथा कि अपनी पहली संतान उसको देगा तदनुसार प्रथम गर्भ से जन्मी हुई उस कन्याको देदिया ।३। पृथा उस पिताके घर में ब्राह्मणों की सेवा और अतिथियों का सत्कार किया करती थी एक दिन उसने जितेंद्रिय, व्रतशील, उग्रस्वभावी, और धर्म के गूढ तत्वों को जाननेवाले ब्राह्मण दुर्वासाको

She attended upon her superiors with care and never uttered the name of any other man. 19.

CHAPTER CXI.

Vaishampayan said that in the family of Yadus there was a virtuous man named Shur, the father of Vasudev. His daughter was named Pratha. She had not her equal in the world in beauty. The truthful Shur had promised to give his childless maternal uncle and dear friend Kuntibhoj, his first born child. And in fulfilment of that promise he gave him the daughter, Pratha. 3. She, in her new father's house, was appointed to attend upon Brahmans and guests. Once upon a time she gratified Durbasa, a virtuous Brahman, vow observing, charitable and having control over his senses. 5. The Muni, knowing her future difficulty about offspring

अभिचाराभिसंयुक्तमब्रवीच्चैव तांमुनिः ६। यंयंदेवंत्वमेतेन मन्त्रेणावाहायिष्यासि। तस्य तस्य प्रभावेणतव पुत्रोभविष्यति ॥ ७ ॥ तथोक्तासातुविप्रेण कुन्तीकौतूहलान्विता। कन्यासती देवमर्कमाजुहावयशास्विनी ॥ ८ ॥ साददर्शतमायान्तं भास्करं लोकभावनम्। विस्मिताचानवद्याङ्गी दृष्ट्वातन्महदद्भुतम् ॥ ९ ॥ तांसमासाद्य देवस्तु विवस्वानिदमब्रवीत् अयमस्म्यसितापाङ्गि ब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ १० ॥ कुन्त्युवाच। कश्चिन्मे ब्राह्मणःप्रादाद्वरं विद्याञ्चशत्रुहन्। तद्विजिज्ञासयाह्वानं कृतवत्यस्मितेविभो ॥ ११ ॥ एतस्मिन्नपराधेत्वां शिरसाहंप्रसादये। योषितोहिसदारक्ष्याः स्वापराद्धापिनित्यशः ॥ १२ ॥ सूर्य्य उवाच। वेदाहंसर्वमेवैतद्यद्दुर्वासा वरंददौ। सन्त्यज्य भयमंवेह क्रियतांसङ्गमोमम ॥ १३ ॥ अमोघंदर्शनं मह्यमाहूतश्चास्मितेशुभे। वृथाह्वानेऽपितेभीरुदोषस्यान्नात्रसंशयः ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच। एवमुक्ता बहुविधं

सर्व प्रयत्नसे सेवाकर प्रसन्न किया उस मुनि ने भविष्यत् में सन्तान आपद्धर्म की बात शोचकर उसको मंत्र वतलाकर कहा कि तू इस मंत्र से जिन २ देवताओं को बुलावेगी उन २ देवताओं के प्रभावसे तेरेपुत्र होगा यशस्विनी बाला पृथाने दुर्बासाकी यह बात सुनकर अचरज माना और कन्यावस्था मेंही सूर्यदेवको बुलाया और उस अनन्दित अंगवालीने लोकभावन आदित्यको आते देखकर अति आश्चर्ययुक्तहो विस्मय माना॥१२॥ सूर्यदेव उस के पास आकर बोले कि अरी कृष्णापांगी मैं आया हूं तेरा क्या प्रिय कार्य करूं प्रथाने कहा हे शत्रुनाशी विभो एक ब्राह्मण ने मुझको विद्या और वर दिया था उसकी परीक्षा के लिये आपको बुलाया है मैं इस अपराध के हेतु शिर झुकाकर आप को प्रसन्न करती हूं नारी यदि बहुत अपराधभी करै तौभी उसकी रक्षा करना चाहिये सूर्य ने कहा कि मैं यह सब जानता हूं कि मुनि दुर्बासाने तुमको यह वर दिया है अब तुम भय त्यागकर मुझसे संगम करो हे शुभे! मेरा दर्शन अव्यर्थ है। हे भीरु? तुमने जिसकारण मुझको बुलाया वोह यदि व्यर्थहो तो अवश्य हानि होगी।१४।वैशम्पायन नेकहा

taught her the method of invoking whatever god she pleased and said that she would get an offspring from every god that she would invoke. The girl did not believe Durbasa and invoked the god of sun while she was unmarried. The beautiful maiden was much afraid when she saw Aditya coming to her. The god of sun approached her and asked her to name her desire. 10. Pratha said that a Brahman had given her the knowledge of the method of invoking gods and she had invoked him to make an experiment. She then begged the god's pardon saying. "A woman may seek pardon even after committing a great fault." The god said, "I know that the rishi Durvasa has given you a boon. Now leave your fears and have an intercourse with me. My coming cannot be fruitless. You will come to harm if the purpose for which you

सान्त्वपूर्वं विवस्वता । सातुनैच्छद्वरारोहा कन्याहामिति भारत ॥ १५ ॥ बन्धुपक्ष-
भयाद्भीता लज्जयाचयशस्विनी। तामर्कःपुनरेवेदमब्रवीद्भरतर्षभ ॥१६॥ मत्प्रसादान्न
तेराज्ञि भविता दोषइत्युत । एवमुक्त्वा स भगवान् कुन्तिराजसुतां तदा ॥ १७ ॥
प्रकाशकर्त्तातपनः सम्बभूव तयासह । तत्रवीरःसमभवत् सर्वशस्त्रभृतांवरः। आमुक्त
कवचःश्रीमान् देवगर्भःश्रियान्वितः ॥ १८ ॥ सहजं कवचं बिभ्रत् कुण्डलोद्योति
ताननः । अजायतसुतःकर्णः सर्वलोकेषु विश्रुतः ॥ १९ ॥ प्रादाच्च तस्यै कन्यात्वं
पुनःसपरमद्युतिः । दत्त्वाचतपतांश्रेष्ठो दिवमाचक्रमेततः ॥ २० ॥ दृष्ट्वाकुमारंजातंसा
वार्ष्णेयीदीनमानसा । एकाग्रंचिन्तयामास:किंकृत्वासुकृतंभवेत् ॥ २१ ॥ गूहमाना
पचारंसा बन्धुपक्षभयात्तदा । उत्ससर्जकुमारंतं जलेकुन्तीमहाबलम् ॥ २२ ॥ त
मुत्सृष्टंजलेगर्भं राधाभर्त्तामहायशाः । पुत्रत्वेकल्पयामास सभार्य्यःसूतनन्दनः ॥२३॥
नामधेयञ्चचक्राते तस्यबालस्यतावुभौ । वसुनासहजातोऽयं वसुषेणोभवत्विति २४॥

कि हे भारत ! सूर्य इस प्रकार अनेक बातों से समजाने बुझाने लगे परन्तु सुन्दरी यशस्विनी कुंती ने कन्यावस्था होने के कारण बन्धुओं के भय और लज्जासे अपनी सम्मति नहीं दी है भरतर्षभ सूर्यने फिर उससे कहा कि हे रानी ! मेरी कृपा से तुमको कोई दोष नहीं लगेगा।१८।प्रकाशनाथ भगवान् आदित्य कुंतिराजकीकन्या से यह कहकर उससे जा मिले इससे सर्व शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ देवव्रत, श्रीमान् जन्म के साथ कवच कुंडलों से सर्वलोकमें प्रशंसावान कर्ण उत्पन्नहुआ।१९। और परमद्युतिमान् आदित्य फिर उसको कन्या वस्था देकर आकाश को गये यादव कन्या जन्मे हुए कुमार को देखकर दीनाचित्तसे शोचनेलगी कि अब कौन उपाय करना चाहिये क्याकरने से मंगलहोगा२१ अनंतर उसने उस बुरेकामको छिपाने के लिये महाबली कुमार को जलमें बहादिया अति यशस्वी सूत पुत्र राधापति ने जलमें डाले हुए बालकको उठाकर स्त्री सहित अपना पुत्र बनाया उस बालकने कवच कुंडल रूपी धनके साथ जन्मालिया था इसलिये राधा और उसके पतिने उस बालक का बसुसेन नामरक्खा बली और प्रभावी वोह बालक ज्यों २

have called me be not accomplished." Vaishampayan said that Aditya remonstrated with her in various ways but the maiden Kunti for shame and the fear of her kinsfolk did not give herself up. At last he promised her that she would not lose her virginity and had an intercourse with her. From this union was born Karn, the best of warriors, with a natural armour and earrings.19. The glorious god of sun reascended heaven after giving her back her virginity. The poor girl on seeing the new born babe began to reflect upon her condition and thought what was best to do.21. At length, to hide her black deed, she threw the child into the river. The good husband of Radha picked up the child and gave it to his

सवर्द्धमानोबलवान् सर्वास्त्रेषूद्यतोऽभवत् । आपृष्ठतापादादित्य मुपातिष्ठत वीर्य्य
वान् ॥ २५ ॥ तस्मिन् कालेतुजपतस्तस्यवीरस्यधीमतः । नादेयंब्राह्मणेष्वासीत्
किञ्चिद्वसुमहातिले ॥ २६ ॥ तमिंद्रोब्राह्मणोभूत्वा भिक्षार्थीसमुपागमत् । कवचंप्रा-
र्थयामास फाल्गुनस्यहितेरतः ॥ २७ ॥ स्वशरीरात्समुत्कृत्य कवचस्वंनिसर्गजम् ।
विप्ररूपायशक्राय ददौकर्णःकृताञ्जलिः ॥ २८ ॥ प्रतिगृह्यतुदेवेशस्तुष्टस्तेनास्यकर्म
णा । ददौशक्तिंसुरपतिर्वाक्यंचेदमुवाचह ॥ २९ ॥ देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्ष
साम् । यमेकंजेतुमिच्छेथाः सोऽनयानभविष्यति ॥ ३० ॥ प्राङ्नामतस्यकथितं वसु-
षेणइतिक्षितौ । कर्णो वैकर्त्तनश्चैव कर्मणातेनसोऽभवत् ॥ ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि ऐन्द्रशक्तिलाभे एकादशा-
धिकशतोऽध्यायः ॥ १११ ॥

बढता गया त्यों२ अस्त्रविद्याओं में भी दक्षहोने लगा जबतक पीठपर्यंत तापयुक्त नहीं होता था तबतक सूर्य की उपासना करताथा उपासना करने के कालमें धीमान् वसुषेणके पासजो वस्तुहोतीथी वोह ब्राह्मणोंको देताथा।२६।एक समय देवराज इन्द्रने अर्जुनका हित साधने के लिये ब्राह्मण के रूपमें भिक्षार्थी होकर कवचकी प्रार्थनाकी करणने हाथजोड़कर अपने शरीर से स्वाभाविक मिलीहुई कवचको काटकर ब्राह्मणरूपी इन्द्रको दिया देवराज इन्द्रने कवच पाकर कर्णके इस कामसे प्रसन्नहोकर उसको एक पुरुष नष्टकर ने वाली शक्तिअस्त्र दिया और कहाकि ।२९। देव,असुर,मनुष्य, गंधर्व इनमें से चाहे जिस एकको तुम जय करना चाहोगे वोह इस शक्तिसे नष्टहोगा सूर्य पुत्र पहले वसुषेण नामसे धरती में प्रसिद्ध था कवच काटदेने से कर्ण नामसे प्रसिद्ध हुआ ।। ३१ ।।

---

wife to be brought up. The child was born with Vasu (wealth), viz, the coat of mail and earring so they named him Vasusen. Strong and glorious, he became expert in the science of arms as he grew up. He used to worship the sun till mid-day. At that time there was nothing in the world that he would not give the Brahmans.26. Once Indra, the king of gods, bent upon doing his son good, played the beggar and begged of Karan his Coat of mail. Karan, at once, respectfully offered him his natural armour. Indra was much pleased at this deed of Karan and gave him a missile saying.29. This will kill one at whom it is hurled down-be he a god, Asur, man, gandharb, Urag or Rakshas. He was known as Vasusen before. From his cutting away the coat of mail be became Karan.31.

वैशम्पायन उवाच । सत्त्वरूपगुणोपेता धर्मारामामहाव्रता । दुहिताकुन्तिभोज-स्य पृथापृथुललोचना ॥ १ ॥ तांतुतेजस्विनींकन्यां रूपयौवनशालिनीम् । व्यावृण्वन् पार्थिवाः केचिदतीवस्त्रीगुणैर्युताम् ॥ २ ॥ ततःसाकुन्तिभोजेन राज्ञाहूयनराधिपान् । पित्रास्वयम्वरेदत्ता दुहितराजसत्तम ॥३॥ ततःसारंगमध्यस्थं तेषांराज्ञांमनस्विनी ॥ ददर्शराजशार्दूलं पाण्डुंभरतसत्तमम् ॥ ४ ॥ सिंहदर्पमहोरस्कं वृषभाक्षंमहाबलम् । आदित्यमिवसर्वेषां राज्ञांप्रच्छाद्यवैप्रभाः ॥ ५ ॥ तिष्ठन्तंराजसमितौ पुरन्दरमिवापर म् । तंदृष्ट्वासानवद्याङ्गी कुन्तिभोजसुताशुभा।पाण्डुंनरवरंरङ्गे हृदयेनाकुलाभवत् ॥६॥ ततःकामपरीतांगी सकृत्प्रचलमानसा । व्रीडमानास्त्रजंकुन्ती राज्ञःस्कन्धेसमासजत् । ॥ ७ ॥ तंनिशम्यवृतंपाण्डुं कुन्त्यासर्वेनराधिपाः । यथागतं समाजग्मुर्गजैरश्वैरथैस्तथा ॥८॥ ततस्तस्याःपिताराजन् विवाहमकरोत्प्रभुः । सतयाकुन्तिभोजस्य दुहित्राकुरुन

॥ अध्याय ११२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि कुंतिभोजकी कन्या अच्छे नेत्रवाली पृथा सत्व गुणवाली व्रतशील और धर्म प्रेमी थी परन्तु ऐसी रूप यौवनवाली तेजस्विनी अच्छे स्त्री गुणों से भरी हुई कन्याकी किसी राजाने इच्छा न की इस लिये उसके पिता राजा कुंतिभोजने राजाओंको बुलाकर कन्याको स्वयम्बर में नियुक्तकिया ।३। पृथाने उन सब भूपालों के मध्य में भरत वंश श्रेष्ठ राज सिंह पांडुको देखा राज सभामें स्थित दूसरे देवराज के समान सिंह सदृश विक्रमी बैलकीसी आँख वाले महामति, महाबली. आदित्यकी तरह सब राजाओं की प्रभा ढकने वाले नरश्रेष्ठ पांडुको देख कर अनन्दित अंगवाली शुभ लक्षण कुंती बड़ी विकल हुई।६। और काम से विह्वल चंचल चित्तहोकर लज्जाके साथ राजापांडुके गलेमें मालाडाल दी कुंतीको पांडुके गलेमें माला डालते देखकर राजालोग हाथी,घोड़े और रथोंपर चढ़कर जैसे आयेथे वैसेही निज२ स्थानको चलेगये।८। कन्या के पिताने यथा विधि उनका विवाह

CHAPTER CXII

Vaishampayan said that Pratha, the beautiful daughter of Kunti Bhoj, was virtuous, vow observing and dutiful. But in spite of her beauty and youth, no king wooed her. Her father, king Kunti Bhoj, therefore, invited the kings to celebrate her Swayamvar.3. Pratha saw the brave king Pandu in the hall of assembly, amidst the kings. Seated in the hall of assembly, like another Indra, brave like a lion, with the eyes of a bull, wise, exceedingly strong, and like the sun hiding the glory of the other kings, Pandu was seen by the beautiful and virtuous Kunti with great agitation of heart.6. Full of desire and with palpitating heart, she modesty threw the garland round the neck of Pandu. Seeing her give the garland to Pandu, the other kings mounted their elephants,

न्दनः ॥ ९ ॥ युयुजेऽमितसौभाग्यः पौलोम्यामघवानिव । कुन्त्यापाण्डोश्वराजेन्द्र कु-
न्तिभोजोमहीपतिः ॥ १० ॥ कृतोद्वाहंतदातन्तु नानावसुभिरर्चितम् । स्वपुरंप्रेषयामा
स सराजाकुरुसत्तम ॥ ११ ॥ ततोवलेनमहता नानाध्वजपताकिना । स्तूयमानःसचा-
शीर्भिर्ब्राह्मणैश्च महर्षिभिः ॥ १२ ॥ संप्राप्यनगरंराजा पाण्डुःकौरवनन्दनः । न्यवेश-
यततांभार्य्यां कुन्तींस्वभवनेप्रभुः ॥ १३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि कुन्तीविवाहे द्वादशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

वैशम्पायनउवाच।ततःशान्तनवोभीष्मोराज्ञः पाण्डोर्य्यशस्विनः । विवाहस्यापरस्या
र्थे चकारमतिमान्मतिम् ॥ १ ॥ सोऽमात्यैःस्थविरैःसार्द्धं ब्राह्मणैश्चमहर्षिभिः । बलेनच
तुरङ्गेण ययौमद्रपतेःपुरम् ॥ २ ॥ तमागतमभिश्रुत्य भीष्मंवाह्लीकपुङ्गवः । प्रत्युद्गम्यार्च
यित्वाच पुरंप्रावेशयन्नृपः ॥ ३ ॥ दत्त्वातस्यासनंशुभ्रं पाद्यमर्घ्यंतथैवच । मधुपर्कंच

करदिया देवराज जिस प्रकार शचीको मिले उसी प्रकार सौभाग्ययुक्त कुरुनंदन कुंतीको मिले रे राजेन्द्र कुरुश्रेष्ठ राजा कुंति भोजने कुंतीका विवाह कर अनेक धन से दामाद पूजकर बेटी को उन के नगर में भेजदिया राजा कौरव नंदन पांडु महर्षि और ब्राह्मणों के अशीस से स्तुतिकिये हुए नाना प्रकारकी ध्वजाओं वाली सेना सहित अपने नगरको आया और प्रभु पांडुने कुंती को अपने घरमें रक्खा ॥ १३ ॥

अध्याय ॥ ११३ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि शांतनु पुत्र बुद्धिमान भीष्मने यशस्वी राजा पांडुका एक और विवाह करना निश्चय किया वृद्ध मंत्रियों, ब्राह्मणों, महर्षियों और चतुरंगिणी सेना के साथ मद्रदेशको गये ।२। बाह्लीकोंमें श्रेष्ठ मद्रपति भीष्म के आनेकी बातसुनकर आगे बढ़कर यथा विधि उनकी पूजा कर अपने नगरमें लिवा लाये और पाद्य अर्घ, मधुपर्क

horses and Chariots (respectively) and went their ways home. 8. The father of the girl, then, performed their marriage rites. The daughter of Kunti bhoj was as much pleased at securing Pandu for her husband, as Shachi was on being married to Indra. The father of Kunti gave a large amount of wealth to his son-in-law and sent the daughter to his country. King Pandu of the Kaurav family, eulogised and blessed by the rishis and Brahmans, entered his capital, followed by his armies bearing various banners, and admitted Kunti, her wife, into his house. 13

CHAPTER CXIII.

Vaishampayan said that Bhishm, the wise son of Shantanu, resolved to marry Pandu to a second wife. Accompanied by ministers, Brahmans, Maharshis and a large army, he went to the country of Madra. 2. The king of Madra, the best of Balhikas,

मद्रेशः पप्रच्छागमनेऽर्थिताम् ॥ ४ ॥ तंभीष्मःप्रत्युवाचेदं मद्रराजंकुरूद्वहः । आगतंमां विजानीहि कन्यार्थिनमरिन्दम ॥ ५ ॥ श्रूयतेभवतःसाध्वी स्वसामाद्रीयशस्विनी । तामहंवरयिष्यामि पाण्डोरर्थे यशस्विनीम् ॥ ६ ॥ युक्तरूपोहिसम्बन्धे त्वंनोराजन्वयं तव । एतत्सञ्चिन्त्यमद्रेश गृहाणास्मान्यथाविधि ॥ ७ ॥ तमेवंवादिनंभीष्मं प्रत्यभाषतमद्रपः । नहिमेऽन्योवरस्त्वत्तः श्रेयानितिमतिर्मम ॥ ८ ॥ पूर्वैःप्रवर्त्तितंकिञ्चित् कुलेऽस्मिन्नृपसत्तमैः । साधुवायदिवासाधु तन्नातिक्रान्तुमुत्सहे ॥ ९ ॥ व्यक्तंतद्भवतश्चापि विदितंनात्रसंशयः । नचयुक्तंतथावक्तुं भवान्देहीतिसत्तम ॥ १० ॥ कुलधर्मःसनोवीर प्रमाणंपरमंचतत् । तेनत्वांन ब्रवीम्येतदसंदिग्धंवचोऽरिहन् ॥ ११ ॥ तं भीष्मःप्रत्युवाचेदं मद्रराजंजनाधिपः । धर्मएषपरोराजन् स्वयमुक्तःस्वयम्भुवा ॥ १२ ॥

और शुद्ध आसन देकर आनेका कारण पूछा कुरुवंश के प्रधान भीष्मने कहा कि मैं कन्या के लिये आया हूं मैंने सुना है कि साध्वी, यशस्विनी, माद्री नामवाली अपकी वहिन है मैं पांडु के लिये उसको मांगता हूं हे राजन् ! बिवाह के संम्बंध में आप हमारे योग्य पात्र हैं हे मद्रेश्वर इस विषय में शोच विचार कर आप हमको यथा विधि संबंधी की भांति समझिये।७। भीष्म की यह बात सुन मद्रपतिने कहा कि हे कौरव मैं समझताहूं कि हमको आप से अच्छा पात्र दूसरा नहीं मिलसक्ता परन्तु हमारे वंशमें पहले के राजाओंने शुल्कलेनेका नियम किया है वो भलाहो वा बुरा मैं उस के विरुद्ध नहीं करसक्ता वह नियम आप जानते हैं इस लिये हे वीर यह बात कहना कि दान करो आपके योग्य नहीं हैं।१०।हेशत्रुनाशी शुल्कलेना हमाराकुल धर्म है और वही परम प्रमाणहै इस लिये मैं विना संकोच आप से यह नहीं कह सक्ताहूं भीष्मने तब मद्रराजसे कहा कि हे राजन् ब्रह्माजीने स्वयम् इसको परम धर्म कहा है पूर्व के पुरुष इस विधि के अनुसार चलते

hearing of the arrival of Bhishm came forward to receive him and brought him with respect to his own capital. After offering him water to wash his feet and for drink he gave him a clean seat and asked the reason of his arrival there. Bhishm, the chief of Kurus said, " I have come for the girl. I hear that you have a virtuous sister and I have come to beg her for Pandu. You are our equal and worthy to become our kinsman by marriage. I hope you will give due consideration to my request and will not hesitate to accept the relationship."7. Hearing this from Bhishm, the king of Madra replied, " I think we cannot get better men for relations. But our forefathers have established the custom of taking the price of the girls. Whether the custom be good or bad I cannot deviate from it. I think you are already aware of this custom. It is not, therefore, proper to talk to me of giving away.10.It is our

नात्रकश्चनदोषोऽस्ति पूर्वैर्विधिरयंकृतः । विदितेयंचतेशल्य मर्य्यादासाधुसम्मता ॥
॥ १३ ॥ एत्युक्त्वासमहातेजाः शातकुम्भंकृताकृतम् । रत्नानिचविचित्राणि शल्या-
यादात्सहस्रशः ॥ १४ ॥ गजानश्वान्रथांश्चैव वासांस्याभरणानिच । मणिमुक्ताप्रवा
लंश्च गांगेयोव्यसृजच्छुभम् ॥ १५ ॥ तत् प्रगृह्यधनंसर्वं शल्यःसम्प्रीतमानसः । ददौ
तांसमलंकृत्य स्वसारंकौरवर्षभे ॥ १६ ॥ सतांमाद्रीमुपादाय भीष्मःसागरगासुतः ।
आजगामपुरींधीमान् प्रविष्टगजसाह्वयम् ॥ १७ ॥ ततइष्टेऽहनिप्राप्ते मुहूर्तेसाधुसम्मते ।
जग्राहविधिवत्पाणिं माद्र्याःपाण्डुर्नराधिपः ॥ १८ ॥ ततोविवाहेनिर्वृत्तेस राजाकुरु-
नन्दन । स्थापयामासतांभार्य्यां शुभेवेश्मनिभाविनीम् ॥ १९ ॥ सताभ्यांव्यचरत्
सार्द्धं भार्य्याभ्यांराजसत्तमः । कुन्त्यामाद्र्याचराजेन्द्रो यथाकामंयथासुखम् ॥२०॥
ततःसकौरवोराजा विहृत्यत्रिदशानिशाः । जिगीषयामहीं पाण्डुर्निरक्रामत् पुरात्प्रभो

थे इस लिये यह दोषयुक्त नहीं है शल्य यहभी जानलो कि यहमर्यादा साधुओंकी सम्मति युक्तहै महातेजस्वी गंगानंदनने यह कहकर सहस्रों बना और वे बना अपरिमित सुवर्ण, विचित्र रत्न, हाथी, रथ, घोड़े वस्त्र, आभूषण, अच्छीमाणि, मोती लाल शल्यकोदिये ।१५। शल्य ने वह सब धन लेकर प्रसन्न चित्त से कौरव श्रेष्ठ भीष्म को नाना अलंकारोंसे सजी हुई कन्यादान की बुद्धिमान गंगा पुत्र भीष्म माद्रिको लेकर अपने नगरको लौट आये । फिर राजा पांडुने साधुओंकी सम्मति से शुभ लग्न में विधि पूर्वक माद्रिसे विवाहकिया।१८। विवाहके पश्चात् कुरुनंदनने नई व्याही स्त्रीके रहनेके लिये एकसुन्दर घरदिया राजा श्रेष्ठ पांडु, कुंती और माद्रिके साथ मनमाना सुखसे रहनेलगा ।२०।हे प्रभु राजा पांडुने स्त्री के साथ तीस रात्रि विहार करके धरतीके जय करने के लिये यात्रा की पृथ्वी के जयेच्छुक राजापांडु भीष्म आदि बृद्धोंको और धृतराष्ट्र और दूसरे कुरु

family custom to take the price. It is binding on us and I say so without hesitation." To this the prince Bhishm replied, "It is allowed by Brahma himself. People have done so in former times. Therefore it is not unlawful. It has been the practice of good men." Having said this the glorious son of Ganga produced an immence quantity of gold, coined and uncoined, rare jewels, elephants, chariots, horses, clothing, ornaments pearls and rubies and offered them to Shalwa (15.) who accepted them cheerfully and gave the girl well decorated. Bhishm brought Madri to Hasthinpur. King Pandu, then, with the advice of wise men married Madri on an auspicious day and gave her a separate house to live in. Pandu passed a pleasant time in the society of Madri and Kunti.20. Having enjoyed their society for thirty days, Pandu made an excursion to conquer the earth. Having bowed down to

॥ २१ ॥ सभीष्मप्रमुखान् वृद्धानभिवाद्यप्रणम्यच । धृतराष्ट्रंचकौरव्यं तथान्यान कुरुसत्तमान् ॥ २२ ॥ आमन्त्र्यामययौराजा तैश्चैवाप्यनुमोदितः । मंगलाचारयुक्ताभिराशीर्भिरभिनन्दितः ॥ २३ ॥ गजवाजिरथौघेन बलेनमहतागमत् । सराजा देवगर्भाभो विजिगीषुर्वसुन्धराम् ॥ २४ ॥ हृष्टपुष्टबलैःप्रायात् पाण्डुःशत्रूननेकशः । पूर्वमागस्कृतो गत्वा दशार्णाःसमरेजिताः । पाण्डुनानरसिंहेन कौरवाणांयशोभृता ॥२५॥ ततःसेनामुपादाय पाण्डुर्नानाविधध्वजाम् । प्रभूतहस्त्यश्वयुतां पदातिरथसंकुलाम् ॥ ॥ २६ ॥ आगस्कारीमहीपानां बहूनाम्बलदर्पितः । गोप्तामगधराष्ट्रस्य दीर्घोराजगृहे हतः ॥ २७ ॥ ततःकोषंसमादाय वाहनानिचभूरिशः । पाण्डुनामिथिलांगत्वा विदेहाःसमरेजिताः ॥ २८ ॥ तथाकाशिषुसुह्मेषु पुंड्रेषुचनरर्षभ । स्वबाहुबलवीर्य्येण कुरूणामकरोद्यशः ॥ २९ ॥ तंशरौघमहाज्वालं शस्त्रार्च्चिषमरिन्दमम् । पाण्डुपावकमासाद्य व्यदह्यन्तनराधिपाः ॥ ३० ॥ तेससेनाःससेनेन विध्वंसितबलानृपाः । पाण्डु-

---

ओंमें श्रेष्ठ लोगोंको प्रणाम नमस्कार और निमंत्रण करके उन की आज्ञा से मंगलाचरणयुक्त आशीस सुनता हुआ हाथी घोडों और रथों से भरीहुई भारी सेनाके साथ चला वोह प्रसन्न और पुष्ट सेनाओंकेसाथ शत्रुकी खोजमें निकला कौरवोंका यशबढानेवाले नरोंमें सिंह पांडुने पहले दोषी दशार्ण देशके राजाको लडाईमें परास्तकिया फिर रंग विरंगे झंडों के साथ अगणित हाथी, घोडे, रथ और पैदलों से बनीहुई सेनाको लेकर अनेक राजाओं को हानि पहुँचाने वाले बल और अहंकार से गर्बित मगधदेश के दीर्घ नामक राजाको राजमंदिर में बधकिया वहाँ से कोष और बाहनादि लूटकर मिथिला में जाकर विदेह राजको परास्त किया।२८।हे भरत श्रेष्ठ फिर उसने काशि,सुह्म,और पुंड्र देशमें जाकर निज वीर्य से कौरव वंशका यश फैलाया तब बाणरूपी समूह शिखा से सुशोभित और शस्त्ररूपी तेजसे प्रज्वलित शत्रुनाशी पांडुरूपी अग्नि से भूपाल लोग जलकर मरने लगे सेना सहित नरेशों

Bhishm Dhritrashtra and other elder Kauravas Pandu went out, with their blessings, accompanied by a large army. He went out with a strong and well pleased army in the quest of foes. The pride of the Kuru family in glory, prince Pandu, first conquered the king of Dasharu his enemies. Then, with an army, having flags of various colors, numerous elephants, horses, chariots and foot soldiers, he killed in his very palace the king of Magadh, the destroyer of kingdoms, proud of his power, named Dirgh. Having obtained great wealth in money and animals from Magadh he next conquered Videh, the capital of Mithila. Then he established the Kaurav supremacy over the kingdoms of Kashi, Suhm, and Pundra. Other kingdoms, in large numbers, fell an easy prey

नावशगाःकृत्वा कुरुकर्मसुयोजिताः ॥ ३१ ॥ तनतेनिर्ज्जिताःसर्वे पृथिव्यांसर्वपार्थि-
व.: । तमेकं मेनिरेशूरं देवेष्विवपुरन्दरम् ॥ ३२ ॥ तंकृतांजलयःसर्वे प्रणतावसुधा-
धिपाः । उपाजग्मुर्धनंगृह्य रत्नानिविविधानिच ॥ ३३ ॥ मणिमुक्ताप्रवालंच सुवर्ण
रजतंवहु । गोरत्नान्यश्वरत्नानि रथरत्नानिकुञ्जरान् ॥ ३४ ॥ खरोष्ट्रमहिषांश्चैव
यच्चकिंचिदजाविकम् । कम्वलाजिनरत्नानि रांकवास्तरणानिच । तत्सर्वंप्रतिजग्राह
राजा नागपुराधिपः ॥ ३५ ॥ तदादाययर्यौपाण्डुः पुनर्मुदितवाहनः । हर्षयिष्यन्स्व
राष्ट्राणि पुरंचगजसाह्वयम् ॥ ३६ ॥ शांतनोराजसिंहस्य भरतस्यचधीमतः । प्रन-
ष्टःकीर्तिजःशब्दः प्राण्डुनापुनराहृतः ॥ ६७ ॥ येपुराकुरुराष्ट्राणि जहु कुरुधनानिच ।
तेनागपुरसिंहेन पाण्डुनाकरदीकृताः ॥ ३८ ॥ इत्यभाषन्तराजानो राजामात्याश्चस-
ङ्गताः । प्रतीतमनसोहृष्टाः पौरजानपदैःसह ॥ ३९ ॥ प्रत्युद्ययुश्चतंप्राप्तं सर्वे भीष्म

के वलको तोडकर और बशमें लाकर अपने काम में नियुक्त किया धरती के सव भूपों ने पांडुसे परास्त होकर उसको मनुष्यों में इन्द्रकी समान वीरसमझा और सब हाथजोड उसको प्रणामकर नाना अस्त्र, माणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण, चांदी, गौ, घोडे, गधे, ऊंट भैंसे, वकरे, भेड, कंवल, मृगचर्य, और मृगके वालों से बनेहुए कपडे आदि नाना धन भेंट देकर उसके सामने खडेहुए। ३५। नागपुरके राजापांडुने उन सबको लेलिया फिर वोह अति प्रसन्न सेनाओं के साथ अपने राज्यकी प्रजा और पुरवासियों को आनन्द देने के लिये हास्तिनपुर में लौटगया फिर राजा और मंत्री गण पुरवासी और ग्रामवासियों से मिलकर प्रसन्न चित्तसे यह कहने लगे कि धीमान् भरत और राजसिंह शांतनु की कीर्ति विगड ने को थी परन्तु अव पांडुने फिर उसका उद्धार किया जिन्हों ने राजाओं का धन और राज्य हर लियाथा अव नागपुरनाथ पांडुने उनको करदाताबनाया। ३८। फिर पांडुके निकट आने पर भीष्म आदि कौरव हर्षसे उनको लिवाने गये वे नागपुर से कुछ दूर जा

to the prowess of Pandu. His army conquered the armies of many a king and prince. Having been vanquished by Pandu, the kings regarded him another Indra. All submitted to his authority and gave him presents of arms, jewels, pearl, gold, silver, cows, horses, elephants, asses, camels, buffaloes, sheep, goats, and wooden and leather cloths. He accepted all presents. He then returned to make the people of his own country happy. Then the kings, the ministers, the citizens and the villagers began to talk with one another that Pandu had established the almost extinct glory of Shantanu. Pandu has made many a king tributary to his kingdom. Bhishm and other Kauravas came forward to bring Pandu into his capital. They were well pleased at seeing the followers of Pandu laden with wealth. They saw no end of

पुरोगमाः । तेनदूरमवाध्वानं गत्वानागपुरालयात् ॥ ४० ॥ आवृतंददृशुर्हृष्टां लोकं बहुविधैर्धनैः । नानायानसमानीतै रत्नैरुच्चावचैस्तदा ॥ ४१ ॥ हस्त्यश्वरथरत्नैश्च गोभिरुष्ट्रैस्तथाविभिः । नान्तंददृशुरासाद्य भीष्मेणसहकौरवाः ॥ ४२ ॥ सोऽभिवाद्य पितुःपादौ कौशल्यानन्दवर्द्धनः । यथार्हमानयामास पौरजानपदानपि ॥ ४३ ॥ प्रमृद्यपरराष्ट्राणि कृतार्थंपुनरागतम् । पुत्रमाश्लिष्य भीष्मस्तु हर्षादश्रूण्यवर्त्तयत् ॥ ४४ ॥ सतूर्य्यशतशंखानां भेरीणांचमहास्वनैः। हर्षयन्सर्वशःपौरान् विवेशगजसाह्वयम् ४५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डु दिग्विजये

त्रयोदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञातः स्वबाहुविजितंधनम् । भीष्मायसत्यवत्यैच मात्रेचोपजहारसः ॥ १ ॥ विदुरायचवैपांडुः प्रेषयामासतद्धनम् । सुहृदश्चापिधर्मात्मा धनेनसमतर्पयत् ॥ २ ॥ ततःसत्यवतीभीष्मं कौशल्यांचयशस्विनीम् ।

राजा के साथियों को धन से भरा देखकर प्रसन्न हुए नाना यानों पर लाये हुए बड़े २ हाथी, घोड़े रथ, ऊंट, भेड़ आदि नाना धन रत्न इतने आरहे थे कि उनका अंत नहीं दीखताथा।४२।कौशल्या के आनन्द बढ़ाने वाले पांडुने चचा भीष्म के पांव छूकर नगर और ग्राम वासियों का यथोचित सम्मान किया भीष्म, शत्रुपुर जयकारी सफल मनोरथ घरको लौटे हुय भतीजे पांडुको गलेसे लगाकर आनन्द से आंसू बरसाने लगे पांडुने अनेक बाजोंके घोरशब्द से सम्पूर्ण पुरबासियोंको प्रसन्नकर हास्तिनपुरमें प्रवेश किया।४५।

अध्याय ॥ ११४ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि फिर धर्मात्मा पांडुने धृतराष्ट्रकी आज्ञा लेकर अपने भुजबल से लाये हुय धनकी भीष्म, सत्यवती और माता कौशल्या को भेटदी और कुछ विदुर के पास भेजा उन्हों ने आत्मजनों को धनसे संतुष्ट किया।२। हे भारत ! भीष्म ने पांडु

animals and conveyances laden with wealth. Kausalya's joy touched the feet of his uncle Bhishm and interchanged proper greetings with other Kauravas. Bhishm, the destroyer of enemies, shed tears of joy at seeing his nephew return after so long and embraced him cheerfully. Pandu cheered the hearts of the people of Hasthinpur by ordering a display of various sorts of musical instruments. 45.

CHAPTER CXIV

Vaishampayan said that with the permission of Dhritrashtra, Pandu made a present of the wealth won by him to Bhishm, Satyavati, and his mother Kaushalya. He sent a part of it to Vidur and other kinsmen. 2. Bhishm presented the wealth sent by

शुभैःपाण्डुजितैरथैस्तोषयामास भारत ॥ ३ ॥ ननन्दमाताकौशल्या तमप्रतिमतेजसम् । जयन्तमिवपौलोमी परिष्वज्यनरर्षभम् ॥ ४ ॥ तस्यवीरस्यविक्रान्तैः सहस्रशतदक्षिणैः । अश्वमेधशतैरीजे धृतराष्ट्रोमहामखैः ॥५॥ संप्रयुक्तस्तुकुन्त्याच माद्रयाचभरतर्षभ । जिततन्द्रीस्तदापाण्डुर्बभूववनगोचरः ॥ ६ ॥ हित्वाप्रासादः निलयं शुभानिशयनानिच । अरण्यनित्यःसततं बभूवमृगयापरः ॥ ७ ॥ सचरन्दक्षिणंपार्श्वं रम्यंहिमवतोगिरेः । उवासगिरिपृष्ठेषु महाशालवनेषुच ॥ ८ ॥ रराजकुन्त्यामाद्रयाच पाण्डुःसहवनेचरन् । करेण्वोरिवमध्यस्थः श्रीमान्पौरन्दरोगजः ॥ ९ ॥ भारतंसह भार्य्याभ्यां खड्गवाणधनुर्द्धरम् । विचित्रकवचंवीरं परमास्त्रविदंनृपम् ॥ १० ॥ देवोऽयमित्यमन्यन्त चरन्तंवनवासिनः । तस्यकामांश्च भोगांश्च नरानित्यमतन्द्रिताः ।

के जीत कर लाये हुए नाना रत्नों से सत्यवती और यशस्विनी कौशल्या को प्रसन्न किया शची जिस प्रकार जयंत को गलेसे लगा कर सुख प्राप्त करती है वैसाही कौशल्या ने अतुल्य तेजस्वी नर श्रेष्ठ पांडु को गलेसे लगाकर आनन्द पाया।४। धृतराष्ट्र बीर पांडु के बल से लाये हुए इतने अधिक धन से पंच महायज्ञ किया करते थे कि जिस से सैकड़ों सहस्रों गुण दाक्षिणा युक्त सैकड़ों अश्वमेध यज्ञ होसक्ते थे हे भरतकुल प्रदीप पांडु कुंती और माद्री के साथ एकत्र हो बनमें जाबसे।६। वोह सुखदाई भवन और कोमल विस्तर देख कर बन में सदा बसते हुय आखेट करने लगे और हिमालय पहाड़ के मनमोहन दाहनें छोर में घूमकर वड़े २ शाल वृक्ष के वनों में सोहने पहाड़ो की पीठपर बसने लगे।८। श्रीमान् पांडु कुंती और माद्रीके साथ बन में बसतेहुए दो हाथियों के बीच ऐरावत की समान शोभा पाने लगे दो स्त्रियें साथ लिये खड्ग वाण और चाप धरेहुए अस्त्र चलाने में दक्ष विचित्र कवच से सुशोभित विचरते हुए पांडु को देख कर बनबासी उन

Pandu, to Satyavati and Kaushalya. Kaushalya was as much pleased by embracing the great Pandu, as Shachi by embracing Jayant.4. Dhritrashtra used to spend so much wealth out of what Pandu had brought him, on his daily sacrifices as to enable one to perform hundreds and thousands of Ashwamedhas of large donations. The energetic Pandu then began to live in forests with Kunti and Madri.6. Leaving comfortable mansions and soft beds he would always live in the forest chasing the deer. He lived in the pleasant sal forests situated on the right hand side of the Himalayas.8. The great Pandu living with Kunti and Madri in the forest resembled Airavat between two female elephants. Accompanied by two women, armed with sword, bow and arrows, accomplished in the use of weapons, clad in wonderful coat of mail, Pandu was looked upon as a god by the inhabitants of the forest.

उपजह्रुर्वनान्तेषु धृतराष्ट्रेणचोदिताः ॥ ११ ॥ अथपारसवींकन्यां देवकस्यमहीपतेः । रूपयौवनसम्पन्नां सशुश्रावापगासुतः ॥ १२ ॥ ततस्तुवरयित्वा तामानीयभरतर्षभः । विवाहंकारयामास विदुरस्यमहामतेः ॥ १३ ॥ तस्यांचोत्पादयामास विदुरः कुरुनन्दनः । पुत्रान् विनयसम्पन्ना नात्मनःसदृशान्गुणैः ॥ १४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि विदुरपरिणये चतुर्दशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःपुत्रशतंजज्ञे गान्धार्य्यांजनमेजय । धृतराष्ट्रस्य वैश्यायामेकश्चापिसतात्परः ॥ १ ॥ पाण्डोःकुन्त्यांचमाद्र्यांच पुत्राःपंचमहारथाः । देवेभ्यः समपद्यन्त सन्तानायकुलस्यवै ॥ २ ॥ जनमेजय उवाच । कथंपुत्रशतंजज्ञे गान्धार्य्यां द्विजसत्तम । कियताचैवकालेन तेषामायुश्चकिंपरम् ॥ ३ ॥ कथंचैकःसवैश्यायां धृत-

को देवता समझ ने लगे धृतराष्ट्र की आज्ञा से मनुष्य गण सदा आलस रहित होकर वन में उनको लिये कामना और भोजन की सामग्री पहुँचानेलगे । ११ । इस गंगापुत्र भीष्म ने सुना कि महीपाल देवक के शूद्राणी के गर्भ से जन्मी हुई रूप और यौवन युक्त एक कन्या है उन्हों ने राजा देवक से वह कन्या मांगकर बुद्धिमान विदुर से उसका विवाह करदिया कुरुनंदन विदुर ने उस क्षत्रिय के वीर्य और शूद्राणी के गर्भ से जन्मी हुई कन्या से अपने समान गुण और नम्रता युक्त कई पुत्र उत्पन्न किये ॥ १४ ॥

अध्याय ॥ ११५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे जनमेजय धृतराष्ट्र के वीर्य से गांधारी के गर्भ में सौ पुत्र और वेश्याके गर्भमें एक पुत्रने जन्मलिया और पांडुके वंशकी रक्षाके लिये देवताओंने कुंती और माद्री के गर्भसे महारथी पाँचपुत्र उत्पन्नकिये जन्मेजयने पूछा कि हे द्विजश्रेष्ठ गांधारी के गर्भ से क्योंकर और कितने दिनों में सौपुत्र उत्पन्नहुये और उनकी आयु कितनीथी ।३।

The servants of Dhritrashtra, came to him incessantly with supplies of food.11. Bhishm heard that king Devak had a very beautiful daughter by a Shudra woman. He brought the girl and married her with Vidur. Vidur of the family of Kuru produced several children, like himself in virtue and humility, in the daughter of Kshatrya king born by a Shudra woman. 14.

CHAPTER CXV.

Vaishampayan said that Dhritrashtra had a hundred children by Gandhari and one by a Vaishya woman. And for the perpetuation of the line of Pandu, five sons were given to Kunti and Madri by gods. Janmejaya enquired how 100 sons were born to Gandhari and the time she took to give them birth.3. Also how Dhritrashtra had one son by the Vaishya woman and his behaviour with his

राष्ट्रसुतोऽभवत् । कथंचसदृशींभार्य्यां गान्धारींधर्मचारिणीम् । आनुकूल्येवर्त्तमानां
धृतराष्ट्रोऽभ्यवर्त्तत ॥ ४ ॥ कथंचशप्तस्यसतः पाण्डोस्तेनमहात्मना । समुत्पन्नादैवते-
भ्यः पुत्राःपञ्चमहारथाः ॥ ५ ॥ एतद्विद्वन्यथान्यायं विस्तरेणतपोधन । कथयस्तन
मेतृप्तिः कथ्यमानेषुबन्धुषु ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । क्षुच्छ्रमाभिपरिग्लानं द्वैपायन-
मुपस्थितम् । तोषयामासगान्धारी व्यासस्तस्यैवरंददौ ॥ ७ ॥ सावव्रेसदृशंभर्त्तुःपुत्रा
णांशतमात्मनः । ततःकालेनसागर्भं धृतराष्ट्रादथाग्रहीत् ॥ ८ ॥ सम्वत्सरद्वयंतन्तु
गान्धारीगर्भमाहितम् । अप्रजाधारयामास ततस्तांदुःखमाविशत् ॥ ९ ॥ श्रुत्वाकुन्ती-
सुतंजातं बालार्कसमतेजसम् । उदरस्यात्मनः स्थैर्य्यमुपलभ्यान्वचिन्तयत् ॥ १० ॥
अज्ञातंधृतराष्ट्रस्य यत्नेनमहताततः । सोदरंघातयामास गान्धारीदुःखमूर्च्छिता ११ ॥
ततोजज्ञेमांसपेशी लोहाष्ठीलेवसंहता । द्विवर्षसम्भृतांकुक्षौ तामुत्स्रष्टुंप्रचक्रमे ॥ १२ ॥

धृतराष्ट्रने वैश्याके गर्भ से क्योंकर एकपुत्र उत्पन्न किया धृतराष्ट्र अपनी प्यारी स्त्री गांधारी से कैसा व्यवहार किया करते थे महात्मा मृगरूपी मुनि के शापदेनेके पश्चात पांडुके पाँच महारथी पुत्र कैसे उत्पन्नहुये हे विद्वान् पंडित तपोधन यह सबकथा विस्तृतरूपसे यथारीति कहिये कुलका चरित्र सुनकर मैं तृप्तनहीं हुआ हूँ ।६। वैशम्पायन ने कहा कि एक समय भगवान् द्वैपायन भूखे और थके हुए गांधारी के पासआये और गांधारी ने उनको संतुष्ट किया उससे व्यासने गांधारी की प्रार्थना के अनुसार यह वर दिया कि उसके पति के समान वीर्यवान सौ पुत्र पैदाहोंगे गांधारी योग्य कालमें धृतराष्ट्रसे गर्भवतीहुई ।८। परन्तु दोवर्ष तक सन्तान नहीं हुई इससे वोह बडी दुःखी होनेलगी फिर यह सुनकर कि कुंती के सूर्य के समान पुत्रहुए हैं अपने गर्भको स्थिर देख चिन्ता युक्तहो अति मनः पीडा से धृतराष्ट्र के नजानते यत्नपूर्वक अपने पेटका आघात किया उससे वोह दोवर्ष का गर्भ

dear wife Gandhari. Also how five brave sons were born to Pandu when he himself was cursed by the Rishi in the guise of the deer. He asked Vaishampayan to inform him with all these things as he was very curious to know all about his forefathers.6. Vaisham-payan said that the Rishi Vyas, tired and hungry once came to Gandhari and was gratified by the welcome she gave him. He gave her a boon of a hundred sons, powerful like her husband. At the proper time Gandhari became pregnant.8. But no child came, forth for two years. She was therefore very anxious. Having heard of the birth of Kunti's son, beautiful like the sun, she was much disturbed at the delay and without the knowledge of Dhrit-rashtra, she managed to miscarry. A piece of flesh like an iron ball came out of her womb. The Rishi Vyas knew this and at once came there and saw the mass of flesh. He then addressed

अथद्वैपायनोज्ञात्वा त्वरितःसमुपागमत् । तांसमांसमयींपेशीं ददर्शजयतांवरः ॥१३॥
ततोऽब्रवीत् सौबलेयीं किमिदंते चिकीर्षितम् । साचात्मनोमतंसत्यं शशंसपरमर्षये ॥
॥ १४ ॥ गान्धार्युवाच । ज्येष्ठंकुन्तीसुतंजातं श्रुत्वारविसमप्रभम् । दुःखेनपरमेणेदमु
दरंघातितंमया ॥ १५ ॥ शतंचकिलपुत्राणां वितीर्णमेत्वयापुरा । इयंचमेमांसपेशी
जातापुत्रशतायवै ॥ १६ ॥ व्यास उवाच । एतमेतत्सौबलेयि नैतज्जात्वन्यथाभवेत्
वितथंनोक्तपूर्वंमे स्वैरेष्वपिकुतोऽन्यथा ॥ १७ ॥ घृतपूर्णंकुण्डशतं क्षिप्रमेवविधीयता
म् । सुगुप्तेषुचदेशेषु रक्षाचैवविधीयताम् । शीताभिरद्भिरष्ठीलामिमांचपरिषिंचय ।१८
वैशम्पायन उवाच । सासिच्यमानात्वष्ठीला बभूवशतधातदा । अंगुष्ठपर्वमात्राणांगर्भा
णां पृथगेवतु ॥ १९ ॥ एकाधिकशतंपूर्णं यथायोगंविशाम्पते । मांसपेश्यास्तदाराजन्
क्रमशःकालपर्ययात् ॥ २० ॥ ततस्तांस्तेषुकुण्डेषुगर्भानवदधेतदा । स्वनुगुप्तेषुदेशेषु

कटी हुई लोहे के गेंदकी समान मांसके टुकडे के रूपमें भूमिपर गिरा गांधारी के उसे त्याग तेही जापकों में श्रेष्ठ द्वैपायन यह बात जानकर तुरन्त वहाँ पहुँचे और उस मांस के टुकडे को देखा गांधारी ने महर्षि से सब सचर कहदिया कि कुंती के सूर्य के समान प्रकाशमान पुत्रका उत्पन्न होना सुनकर अति दुःखसे मैंने पेटमे चोटमारीहै आपने पहले मुझको बरदिया था कि सौ पुत्र उत्पन्न होंगे अब सौ पुत्रों के बदले यह मांसकी पोटली पैदा हुई है ।१६। व्यासजीने कहा हे सुबल पुत्रीजो मैंने कहाथा वही होगा उस के अतिरिक्त न होगा हँसी मैंभी मैनें कभी झूंठ नहीं बोला है फिर यह बात कैसे झूंठी हो सक्ती है अब घृत से सौ घडे भर कर यत्न से एकान्त मे रक्खो और ठंड जलसे इस मांस को धोओ ।१८। वैशम्पायनने कहा कि हे नरेश धोतेर वोह मांस बहुत भागोमें बटगया और उसकी संख्या सौ हुई हर एक टुकड़ा अँगुठे की पोरेकी बराबर था फिर वोह सब टुकडे घृत भरे घड़ो में डाल कर अच्छी तरह गुप्त स्थान में रखवाये गये भगवान व्यास से तब सुवलकन्या से कहा कि दो वर्ष पीछे यह सब घडे खोलना बुद्धि

Gandhari saying, "What have you done." Gandhari told the Rishi all that had passed in her mind at hearing the news of the birth of Kunti's son. She then said, "You had given me the boon that I shall bring forth a hunderd sons. But this mass of flesh has come out insted.16. Vyas replied, "My word shall never prove untrue. I never tell a lie even in jest. Now prepare 100 jars of ghee and put them in a secluded place. Wash this mass of flesh with cold water."18. When undergoing the process of washing it was divided in many small pieces until one hunared parts of it, as small as a thumb joint were detached. They were carefully preserved in the jars. Vyas then directed Ghandhari to open them after two years and went away to practice asceticism on the Hima-

रक्षांत्वद्यधात्तत: ॥ २१ ॥ शशंसचैवभगवान् कालेनैतावतापुन: । उद्घाटनीयान्येतानि कुण्डानीतिच सौबलीम् ॥२२॥ इत्युक्त्वाभगवान् व्यासस्तथाप्रति विधायच । जगामतपसेधीमान् हिमवन्तंशिलोच्चयम् ॥२३॥ जज्ञेक्रमेणचैतेन तेषांदुर्य्योधनोनृप: जन्मतस्तुप्रमाणेन ज्येष्ठोराजायुधिष्ठिर: ॥ २४ ॥ तदाख्यातन्तुभीष्माय विदुरायच धीमते । यस्मिन्नहनिदुर्द्धर्षो जज्ञेदुर्य्योधनस्तदा । तस्मिन्नेवमहाबाहुर्जज्ञेभीमोऽपि वीर्य्यवान्॥ २५ ॥ सजातमात्रएवाथ धृतराष्ट्रसुतोनृप । रासभारावसदृशं रुरावच ननादच ॥ २६ ॥ तंखरा:मत्यभाषन्त गृध्रगोमायुवायसा: । वाताश्चप्रववुश्चापि दिग्दाहश्चाभवत्तदा ॥२७॥ ततस्तुभीतवद्राजा धृतराष्ट्रोऽब्रवीदिदम् । समानीयवहून्विप्रान् भीष्मंविदुरमेवच ॥ २८ ॥ अन्यांश्चसुहृदोराजन् कुरून्सर्वांस्तथैवच । युधिष्ठिरोराजपुत्रो ज्येष्ठोन:कुलवर्द्धन: । प्राप्त:स्वगुणतोराज्यं नतस्मिन्वाच्यमस्तिन: ॥ २९ ॥

मान भगवान द्वैपायन! यह कहकर वोह सब गर्भ स्थापनकर फिर तप के लिये हिमाचल को चलेगये अनन्तर योग्य काल में उन टुकड़ो से पहले राजा दुर्योधन का जन्म हुआ परन्तु राजा युधिष्ठिर पहले जन्मलेने से श्रेष्ठथे।२४।यह बात बुद्धिमान बिदुर और धृतराष्ट्रने सुनी जिसदिन दुर्योधनका जन्म हुआ उसीदिन महाभुज भीमनेभी जन्म लियाथा। दुर्योधन जन्म लेतेही गधे के समान रेहकने और चिल्लाने लगा उसे सुनकर गृद्ध, गधे, सियार और कौवे कोलाहल मचानेलगे हवावेगसे चलनेलगी और दिशायें जलनेलगीं।२७।हे महाराज राजा धृतराष्ट्रसे भयखाकर भीष्म,विदुर,ब्राह्मण,मित्र और कौरवोंको बुलाकरबोले कि हमारे वंश बढाने वाले राजपुत्र युधिष्ठिर बड़े हैं वोह अपने ही गुण से राज्य को पासक्ते हैं इस विषय में मुझे कुछ कहना नहीं है।२९। परन्तु मेरेइस पुत्रने युधिष्ठिरसे पहले जन्म लिया है क्या इस से यह राजकुमार राजा होसकेगा इस विषय में जो निश्चयहो वह आप ठीक २ कहिये इस बात के कहने पर सियार और मांस खानेवाले कुटिलजंतु अमंगलकारी शब्द करने लगे हे महाराज चारों ओर यह शब्द अमंगल चिह्न

layas Duryodhan was the first to come out of his jar but Yudhishthir was born before and was older than him.24. Dhritrashtra and Vidur knew this. Duryodhan and Bhim were born on the same day. Duryodhan, as soon as he came on earth, began to bray like an ass. On hearing the cry vultures. asses. jackals and crows began to make a noise. The wind blew with force and the directions began to burn.27.King Dhrishtra, being afraid at this, called Bhishm, Vidur, the Brahmans, the friends, and the Kauravas together and said, "The glory of our family, prince Yudhishthir, is the eldest and will get the throne by virtue of his age. I have nothing more to say on this subject.29.This

अयंत्वनन्तरस्तस्मादपि राजाभविष्यति । एतद्ब्रूतमेतथ्यं यदत्रभविताध्रुवम् ॥ ३० ॥
वाक्यस्यैतस्यनिधने दिक्षुसर्वासुभारत । क्रव्यादाःप्राणदन्घोराः शिवाश्चाशिवशंसि-
नः ॥ ३१ ॥ लक्षयित्वानिमित्तानितानि घोराणिसर्वशः । तेऽब्रुवन् ब्राह्मणा राजन्
विदुरश्चमहामतिः ॥ ३२ ॥ यथेमानिनिमित्तानि घोराणिमनुजाधिप । उत्थितानिसुतेज्येष्ठे
तानितेपुरुषर्षभ ॥ ३३ ॥ व्यक्तंकुलान्तकरणो भवितैषसुतस्तव । तस्यशान्तिःपरि-
त्यागे गुप्तावपनयोमहान ॥ ३४ ॥ शतमेकोनमप्यस्तु पुत्राणांतेमहीपते । त्यजैनमेकं
शान्तिंचेत् कुलस्येच्छसिभारत । एकेनकुरुवैक्षेमं कुलस्यजगतस्तथा ॥ ३५ ॥ त्यजे-
देकंकुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थेकुलंत्यजेत् । ग्रामंजनपदस्यार्थे आत्मार्थेपृथिवींत्यजेत् ॥ ३६
सतथाविदुरेणोक्तस्तैश्च सर्वैर्द्विजोत्तमैः । नचकारतथाराजा पुत्रस्नेहसमन्वितः ॥ ३७ ॥
ततःपुत्रशतंपूर्णं धृतराष्ट्रस्यपार्थिव । मासमात्रेणसंजज्ञे कन्याचैकाशताधिका ॥ ३८ ॥

देखकर ब्राह्मणों और महामति विदुरने धृतराष्ट्र से कहा कि ।३१। हेपुरुष श्रेष्ठ महाराज आपके श्रेष्ठ पुत्र के जन्म लेतेही यह सब भयानक मंगल चिन्ह दीख पड़ते हैं इससे यह विदित होताहै कि आपका यह पुत्र कुलकी हानि करने वाला होगा इसको त्याग देनेसे ही कुलकी शांति होसक्ती है नहीं तो बड़ी हानि होगी हे महीपाल भारत यदि आप अपने कुलकी शांति चाहते हैं तो यही अच्छा होगा कि आप इस एक पुत्रको त्याग दीजिये तब आप के निन्नानवे पुत्र वचैंगे आप एकको त्याग कर इस वंश और जगत् का हित कीजिये ।३५। हे महाराज कहाहै कि कुलरक्षाके लिये एकको त्यागना, ग्रामकी भलाई के लिये कुल को त्यागना, देश की भलाई के लिये ग्राम को त्यागना, और अपनी भलाई के लिये संसार को त्यागना उचित है उन सब द्विजों और विदुर की वात राजा धृतराष्ट्र ने पुत्र के स्नेह से न मानी ।३७। हे पृथ्वी नाथ

son of mine is born after Yudhishthir. Now I ask you all if he can become king." At this the jackals and other flesh eating animals raised a cry.31. Seeing these ominous signs the Brahmans with the wise Vidur, said to Dhritrashtra, "On seeing such bad omens at the birth of your eldest son, it is clear that he will be the destroyer of his family. The family can be saved by discarding him. If you care for the safety of your family you had bettar discard one son. You will still have ninety nine sons left. Discard one son for the good of the family and the country.35. It is said that it is better to discard one for the sake of a family, to discard a family for the sake of a village, a village for the country and all things for self." For the love of his son Dhritrashtra did not mind the advice of Vidur and the Brahmans.37. Within a month Dhrishtra had 100 sons and one daughter. When Gandhari was distressed in

गान्धार्य्यां क्लिश्यमानायामुदरेण विवर्द्धता । धृतराष्ट्रंमहाराजं वैश्यापर्य्यचरत् कि-
ल ॥ ३९ ॥ तस्मिनसम्वत्सरेराजन् धृतराष्ट्रान्महायशाः । जज्ञेधीमांस्ततस्तस्यां युयु-
त्सुःकरणोनृप ॥ ४० ॥ एवंपुत्रशतंजज्ञे धृतराष्ट्रस्यधीमतः । महारथानां वीराणां
कन्याचैकाशताधिका । युयुत्सुश्चमहातेजा वैश्यांपुत्रःप्रतापवान् ॥ ४१ ॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि गान्धारीपुत्रोत्पत्तौ
पञ्चदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

अनन्तर महीने भरमें धृतराष्ट्र के सौ पुत्र और एक कन्या ने जन्म लिया गांधारी जब बढ़ते हुए गर्भकी पीड़ा से कातरथी उसी वर्ष उस वैश्याके गर्भ से धृतराष्ट्र के अतियश युक्त बुद्धिमान युयुत्सु नामक एक पुत्र ने लिया वैश्या के क्षत्रिय के वीर्य्य से जन्म लेने के हेतु वोह पुत्र करनां कहाजाताहै इसप्रकार बुद्धिमान धृतराष्ट्रसे महारथी वीर सौपुत्र और एक कन्या और महातेजस्वी युयुत्सु ने जन्म लिया था ॥ ४१ ॥

---

her mind by the continuation of her pregnancy another son, the glorious Yuyutsu was born to Dhrishtra by a Vaishya woman. He was called Karan by his being born of a Vaishya mother and Kshatrya father. Thus Dhritrashtra had hundred brave sons and one daughter besides the glorious Yuyutsu. 41.



जनमेजय उवाच ॥ धृतराष्ट्रस्यपुत्राणा मादितःकथितंत्वया । ऋषेःप्रसादात्तु शतं नचकन्याप्रकीर्त्तिता ॥ १ ॥ वैश्यापुत्रोयुयुत्सुश्च कन्याचैकाशताधिका । गांधारराजदुहिता शतपुत्रेतिचानघ ॥ २ ॥ उक्तामहर्षिणा तेन व्यासेनामित तेजसा । कथंत्विदानींभगवन् कन्यांत्वंतुब्रवीषिमे ॥ ३ ॥ यदिभागशतं पेशी कृतातेनमहर्षिणा । नप्रजास्यतिचेद्भूयः सौबलेयीकथञ्चन ॥ ४॥ कथन्तुसम्भवस्तस्या दुःशलायावदस्वमे । यथावदिहविप्रर्षे परंमेऽत्रकुतूहलम् ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । साध्वयंप्रश्नउद्दिष्टः पाण्डवेयब्रवीमिते । तांमांसपेशींभगवान् स्वयमेवमहातपाः ॥ ६ ॥ शीताभिरद्भिरासिच्य भागंभागमकल्पयत् । योयथाकल्पितो भागस्तं तंधात्र्यातथानृप । घृतपूर्णेषु

अध्याय ॥ ११६ ॥

जन्मेजय ने कहा कि हे अनघ ऋषि की कृपा से धृतराष्ट्रके सौ पुत्रों काजन्म लेना आपने कहा परन्तु ऋषि की प्रसन्नता से कन्या के उत्पन्न होने की कोई कथा आपने नहीं कही आप धृतराष्ट्रके सौ पुत्रों से अधिक एक वैश्या के गर्भ से जन्म लियेहुए पुत्र युयुत्सु और गांधारी के गर्भ से जन्म ली हुई एक कन्या के जन्म की कथा कह चुके परन्तु अति तेजस्वी महर्षिव्यास ने कहा था कि गांधारी के सौपुत्र उत्पन्न होंगे अब आपने क्यों कर गांधारीके गर्भ से सौ पुत्र और एक कन्याकी बात कही।३। यदि महर्षिने उस मांसको सौटुकडों में वांटा और सबल पुत्री फिर गर्भवती नहीं हुई तो क्योंकर दुःशला की उत्पत्ति हुई है विप्र वर इस विषय को सुनने के लिये मेरी बडी इच्छा है आप यथावत् कहें ।५। वैशम्पायन ने कहा कि हे पांडव आपने अच्छा प्रश्न किया है मैं आपको इसका उत्तर देता हूं भगवान व्यास ने स्वयं ठंडे जल से उन मांस के टुकड़ोंको धुलवा कर अलग २ करने की कल्पना की। हे महाराज ! वोह ज्यों २ वांटनेलगे वैसेही धात्री

CAAPTER CXVI

Janmejaya said, " You described the birth of the hundred sons of Dhritrashtra by the grace of the Rishi but of no daughter. You now say that besides the hundred sons one Yuyutsu was born of a Vaishya woman and a girl by Gandhari. The great glorious Rishi Vyas had said that a hundred sons would be born of Gandhari, but now you speak of a hundred sons and one daughter.3. If the Rishi divided the flesh into hundred parts and the daughter of Subal did not conceive again, then, how *Dushāla* could be born of her ? I have a great desire to know this. Please tell me of it in detail."5. Vaishampayan replied, " You have put a good question, O Pandav. I shall explain it to you. "Vyas was himself dividing it into parts which were beings put, one by one, into the jars containing butter.

कुण्डेषु एकैकंमाक्षिपत्तदा ॥ ७ ॥ एतस्मिन्नन्तरेसाध्वी गान्धारीसुदृढव्रता । दुहितुः स्नेहसंयोगमनुध्याय वराङ्गना ॥ ८ ॥ मनसाचिंतयद्देवी एतत्पुत्रशतंमम । भविष्यतिनसन्देहो नब्रवीत्यन्यथामुनिः ॥ ९ ॥ ममेयंपरमातुष्टिर्दुहिता मेभवेद्यदि । एकाशताधिकाबाला भविष्यतिकनीयसी ॥ १० ॥ ततोदौहित्रजाल्लोकादबाह्योऽसौपतिर्मम । अधिकाकिलनारीणां प्रीतिर्ज्जामातृजा भवेत् ॥ ११ ॥ यदिनाम ममापिस्याद्दुहितैका शताधिका । कृतकृत्याभवेयंवै पुत्रदौहित्रसंवृता ॥ १२ ॥ यदिसत्यंतपस्तप्तं दत्तंवाप्यथवाहुतम् । गुरवस्तोषितावापि तथास्तुदुहितामम ॥ १३ ॥ एतस्मिन्नेवकालेतु कृष्णद्वैपायनःस्वयम् । व्यभजत्सतदापेशीं भगवानृषिसत्तमः । गणयित्वाशतं पूर्णमंशानामाह सौबलीम् ॥ १४ ॥ व्यास उवाच । पूर्णपुत्रशतंत्वेतन्न मिथ्यावागुदाहृता ॥

उन्हें घृत के घड़ों में छोडने लगी उस समय कठोर व्रत करने वाली सती सुन्दरी गांधारी देवी कन्या स्नेहकी आलोचना कर मन से यह सोचने लगी कि इस में सन्देह नहीं इन मांस के टुकडों से सौ पुत्र पैदाहों गे क्यों कि मुनिकी बात कभी झूंठी नहीं होती परन्तु यदि सौपुत्रोंसे अधिक एक छोटी कन्याभी होतो मेरे हृदयको बड़ा संतोष मिले।१०। और उस में मेरे पति दौहित्र से मिलने वाले पुण्य लोक कोभी पावें विशेष कर नारी मात्रको दामाद से बडी प्रीति होती है यदि सौ पुत्रों से अधिक मेरी एक पुत्रीभी होवे तो मैं पुत्र और नातियों से घेरी जाकर कृतार्थ होऊं यदि मैंने सच्ची रीति से तप, दान या हवन कियाहो अथवा गुरुओंको प्रसन्न कियाहो तो मुझे एक कन्याभी मिले।१३। उस समय ऋषिश्रेष्ठ भगवान द्वैपायन स्वयं उन मांस के टुकड़ों को बांटरहेथे वह पूर्ण सौभाग्य गिनकर गांधारी से बोले कि लो तुम्हारे सौ बेटेहुए मैंने तुमसे झूंठ नहीं कहा

by the midwife. At this occasion Gandhari felt a desire to have a daughter. She said within herself, "There is no doubt that hundred sons will be born out of these pieces for, the Muni never tells a lie. How good it would be if I had a daughter besides them.10. My husband would not then be deprived of the place in heaven which is obtainable to those who have daughter's children. Besides, women in general have a great love for a son-in-law. So if I could get one daughter over and above the hundred sons I would be perfectfully happy, being surrounded by sons and daughter's children, If I have ever been charitable, practised asceticism, performed sacrifices or attended upon the elders then may I get a daughter. 13. The good Rishi, Dwaipayan, as he was himself dividing the pieces of flesh, after having counted hundred parts, adressed Gandhari saying. "You have got now hundred sons. I did not

दौहित्रयोगायभाग एकःशिष्टःशतात्परः ॥ १५ ॥ एषातेसुभगाकन्या भविष्यतियथेप्सिता । ततोऽन्यंघृतकुम्भञ्च समानाय्यमहातपाः ॥ १६ ॥ तंचापिप्राक्षिपत्तत्र कन्याभागंतपोधनः ॥ १७ ॥ एतत्तेकथितंराजन् दुःशलाजन्मभारत । ब्रूहिराजेन्द्रकिम्भूयो वर्त्तयिष्यामितेऽनघ ॥ १८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि दुःशलोत्पत्तौ षोडशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

जनमेजय उवाच । ज्येष्ठानुज्येष्ठतांतेषां नामानिचपृथक्पृथक् । धृतराष्ट्रस्यपुत्राणामानुपूर्व्यात्प्रकीर्त्तय ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । दुर्य्योधनोयुयुत्सुश्च राजन्दुःशासनस्तथा । दुःसहोदुःशलश्चैव जलसन्धःसमःसह ॥ २ ॥ विन्दानुविन्दौदुर्द्धर्षः सुवाहुर्दुष्प्रधर्षणः । दुर्मर्षणोदुर्मुखश्च दुष्कर्णःकर्णएवच ॥ ३ ॥ विविंशतिर्विकर्णश्च शलः

था दैव संयोग से सौभागोंसे अधिक एक भाग बचरहा है तुम्हारी इच्छानुसार इस भाग से एक सुन्दरी कन्या होगी अनन्तर महातपोधन ने दूसरे एक घृत के घड़े को मँगाकर उस में कन्या के भाग को छोड दिया है अनघ भारत वंश श्रेष्ठ दुःशलाकी जन्म कथा आप से कह चुका । हे राजेन्द्र कहिये अब क्या कहना होगा ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ ११७ ॥

जनमेजयनेकहा कि धृतराष्ट्रके बडे छोटेके क्रमसे सब लड़कों के अलग२नाम आद्योपान्त कहिये वैशम्पायन ने कहा कि हे महाराज दुर्योधन, युयुत्सु, दुःशासन दुःसह, दुःशल, जलसंध, सम, सह, विंद, अनुविंद, दुर्धर्ष, सुवाहु, दुष्प्रदर्षण, दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण,

tell a lie. You have also, over and above, one piece left. According to your wish a beautiful daughter will be born to you. The rishi then ordered for another jar of butter to be brought and therein put the piece of flesh. 17. I have now told you the story of Dushala's birth. Let me know what more am I to say to you. 18.

CHAPTER CXVII

Janmejaya requested Vaishampayan to tell him the names of the sons of Dhritrashtra in the order of their birth. Vaishampayan recounted their names as follows:—Duryodhan, Yuyutsu, Dashsan Dussah, Dushal, Jalsandh, Sam, Sah, Bind, Anubind, Durdharsh Subahu, Dushpradharshan, Durmsarahn, Durmukh, Dushkarn, Karn, 3.

सत्त्वः सुलोचनः । चित्रोपचित्रौ चित्राक्षश्चारुचित्रः शरासनः ॥ ४ ॥ दुर्मदोदुर्विगाहश्च विवित्सुर्विकटाननः । ऊर्णनाभःसुनाभश्च तथानन्दोपनन्दकौ ॥ ५ ॥ चित्रवाणश्चित्रवर्मा सुवर्मादुर्विमोचनः । अयोबाहुर्महाबाहुश्चित्राङ्गश्चित्रकुण्डलः ॥ ६ ॥ भीमवेगोभीमबलो बलाकीबलवर्द्धनः । उग्रायुधःसुषेणश्च कुंडधार महोदरः ॥ ७ ॥ चित्रायुधोनिषंगीच पाशीवृन्दारकस्तथा । दृढवर्मादृढक्षत्रः सोमकीर्त्तिरनूदरः ॥ ८ ॥ दृढसन्धोजरासन्धः सत्यसन्धःसदःसुवाक् । उग्रश्रवाउग्रसेनः सेनानीर्दुष्पराजयः ॥ ॥ ९ ॥ अपराजितःकुण्डशायी विशालाक्षोदुराधरः । दृढहस्तःसुहस्तश्च वातवेगसुवर्चसौ ॥ १० ॥ आदित्यकेतुर्बह्वाशी नागदत्तोग्रयाय्यपि । कवचीक्रथनःकुण्डी कुण्डधारोधनुर्द्धरः ॥ ११ ॥ उग्रभीमरथौवीरौ वीरबाहुरलोलुपः । अभयोरौद्रकर्माच तथा दृढरथाश्रयः ॥ १२ ॥ अनाधृष्यःकुण्डभेदी विरावीचित्रकुण्डलः । प्रमथश्चप्रमाथीच दीर्घरोमश्चवीर्य्यवान् ॥ १३ ॥ दीर्घबाहुर्महाबाहुर्व्यूढोरः कनकध्वजः । कुण्डाशीवि-

कर्ण, ।३। विविंशति,विकर्ण,शल,सत्व,सुलोचन,चित्र,उपचित्र, चित्राक्ष,चारुचित्र,शरासन, दुर्मद,दुर्विगाह,विवित्सु,विकटानन,ऊर्णनाभ,सुनाभ, नन्द, उपनंद, चित्रवाण, चित्रवर्मा सुवर्मा,दुर्विमोचन,अयोवाहु,महावाहु,चित्रांग, चित्रकुंडल ।६। भीमवेग, भीमबल, बलाकी बलवर्धन,उग्रायुध,सुषेण,कुंडधार,महोदर,चित्रायुध,निषंगी,पाशी, वृन्दारक, दृढ़वर्मा, दृढ़ क्षेत्र,सोमकीर्ति,अनूदर,।८।दृढ़संध,जरासंध,सत्यसंध,सद सुवाक,उग्रश्रवा,उग्रसेन,सेनानि दुष्पराजय, । ९ । अपराजित,कुंडशाई,विशालाक्ष, दुराधर, दृढहस्त,सुहस्त,बातवेग,सुवर्चा, आदित्यकेतु, बह्वाशी, नागदत्त, अग्रयायी, कवची, क्रथन, कुंडी, कुंडधार, धनुर्द्धर, उग्र, भीमरथ वीर,वीरवाहु,अलोलुप,अभय,रौद्रकर्मा,दृढरथ, ।१२। अनाधृश्य,कुंडभेदी,विरावी, चित्रकुंडल, प्रमथ, प्रमाथी, दीर्घरोम, वीर्यवान, दीर्घबाहु, महावाहु, व्यूढोर, कनकध्वज,

Bibinshati, Bikarn, Shal, Satwa, Sulochan, Chtira, Upchitra Chitraksh,Charuchitra,Sharasan,Durmad,Durbigah,Vivitsu,Vikatanan, Urnnabh, Sunabh, Nand, Upnand, Chitravan, Chitravarma, Suvarma, Durvimochan, Ayobahn, Mahabahu, Chitrang, Chitrakundal,6. Bhimveg, Bhimbal, Balaki, Balbardhan, Ugrayudh, Sushen, Kundadhar Mahodar, Chitrayudh, Nishangi, Pashi, Brindarak, Drirhvarma, Drirhkshetra, SomKirti, Anudar,8. Drirhsandh, Jarasandh, Satyasandh, Sadasuvak, Ugrashrava, Ugrasen, Senani, Dushparajaya.9. Aparajit, Kundshayi, Bishalaksh, Duradhar, Drirhahast, Sahasta, Vatveg, Suvarcha, Adityaketu, Bahuashi, Nagdatt, Agrayayi, Kabachi, Krathan, Kundi, Kundadhar, Dhanurdhar, Ugra, Bhimrath, Vir, Virvahu, Alolup, Abhaya. Roudrakarma, Drirharath, (12) Anadhrishya, Kundbhedi, Biravi, Chitrakundal, Pramath, Pramathi, Viryavan, Dirghrom

रजाश्चैव दुःशलाचशताधिका ॥ १४ ॥ इतिपुत्रशतंराजन् कन्याचैव शताधिका । ना
मधेयानुपूर्व्येण विद्धिजन्मक्रमंनृप ॥ १५ ॥ सर्वेत्वतिरथाःशूराः सर्वेयुद्धविशारदाः ।
सर्वेवेदविदश्चैव सर्वेसर्वास्त्रकोविदः ॥ १६ ॥ सर्वेषामनुरूपाश्च कृतादारामहीपते ।
धृतराष्ट्रेणसमये परीक्ष्यविधिवन्नृप ॥ १७ ॥ दुःशलांचापिसमये धृतराष्ट्रोनराधिपः ।
जयद्रथायप्रददौ विधिनाभरतर्षभ ॥ १८ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि धृतराष्ट्रपुत्रनाम कथने
सप्तदशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

जनमेजय उवाच । कथितो धार्त्तराष्ट्राणामार्षः सम्भवउत्तमः । अमनुष्योमनु
ष्याणां भवताब्रह्मवादिना ॥ १ ॥ नामधेयानिचाप्येषां कथ्यमानानिभागशः । त्वत्तः
श्रुतानिमेब्रह्मन् पाण्डवानांचकीर्त्तय ॥ २ ॥ तेहिसर्वे महात्मानो देवराजपराक्रमाः ।

कुंडाशी, विरजा, यह सौ पुत्र और कन्या दुःशला है हे महाराज धृतराष्ट्र के सौपुत्रों के और कन्या दुःशलाका नाम कहचुका ।१५। हे महाराज इन नामोंके क्रम के अनुसार इन के जन्म का क्रमभी जानना वे सब महारथी शूर युद्ध में दक्ष वेद में पंडित, और अस्त्र चलाने में निपुणथे । हे महीपाल धृतराष्ट्र ने परीक्षाद्वारा योग्य कन्यायों का निश्चय कर उचित समय में यथा रीति उन सबों का विवाह करदिया हे भरत कुल प्रदीप अनन्तर महाराजा धृतराष्ट्र ने योग्य काल में जयद्रथ को दुःशला नाम्नी कन्या सम्प्रदान करदी ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ ११८ ॥

जन्मेजय ने कहा कि हे ब्रह्मवादी आप मनुष्य धृतराष्ट्र के पुत्रों के श्रेष्ठ अलौकिक आर्ष जन्म की कथा और उनके अलग२ नाम भी कह चुके हे ब्राह्मण वोह आपसे सुन लिया अब पांडवों के चरित्रकी कथा कहिये ।२। आपने अंशावतरणमें कहाहै कि पांडवगण

Dirghvahu, Mahabahu, Vyudhor, Kanakdhwaj, Kundashi, Viraja and a daughter, named Dushala. 15. The above names are given in the order of their birth. They were all warriors of renown, learned in the Vedas and well-skilled in the use of arms. Dhritrashtra selected worthy girls to be married to them. He gave his daughter Dushala to king jayadrath. 18.

CHAPTER CXVIII.

Janmejaya said, " You have told me the story of the extraordinary birth of the sons of Dhritrashtra and their names. Now tell me of the deeds of the Pandavas. 2. You have already said they were all glorious like Indra and were born of the portions of gods.

त्वयेवांशावतरणे देवभागाःप्रकीर्त्तिताः ॥ ३ ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुमतिमानुषकर्मणाम् । तेषामाजननं सर्वं वैशम्पायनकीर्त्तय ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । राजापाण्डुर्महारण्ये मृगव्यालनिषेविते । चरन्मैथुनधर्मस्थं ददर्शमृगयूथपम् ॥ ५ ॥ ततस्तांच मृगींतंच रुक्मपुंखैःसुपात्रिभिः । निर्बिभेदशरैस्तीक्ष्णैः पाण्डुःपंचभिराशुगैः ॥ ६ ॥ सचराजन्महातेजा ऋषिपुत्रस्तपोधनः । भार्य्ययासहतेजस्वी मृगरूपेणसङ्गत ७॥ ॥ संसक्तश्चतयामृग्या मानुषीमीरयन्गिरम् । क्षणेनपतितोभूमौ विललापाकुलेन्द्रियः ॥ ८ ॥ मृग उवाच । कामपन्युपरीताहि बुद्ध्याविरहिताअपि । वर्जयन्तिनृशंसानि पापेष्वपिरतानराः ॥ ९ ॥ नविधिंग्रसतेप्रज्ञा प्रज्ञान्तुग्रसतोविधिः । विधिपर्य्यागतानर्थान् प्राज्ञोनप्रतिपद्यते॥१०॥ शश्वद्धर्मात्मनांमुख्ये कुलेजातस्यभारत । काललोभाभिभूतस्य कथंतेचलितामतिः ॥ ११ ॥ पाण्डुरुवाच ॥ शत्रूणांयावधेवृत्तिः सामृगाणांवधेस्मृ

सबमहात्मा और इन्द्र के समान पराक्रमी थे और देवताओं के अंशों से उत्पन्न हुये थे मैं उन अलौकिक कर्म करने वाले पाण्डवों की जन्म से लेकर आद्योपान्त सम्पूर्ण कथा सुना चाहता हूं हे वैशम्पायन आप उसे कहिये ।४। वैशम्पायनने कहा हे महाराज राजा पांडुने मृगों से भरे एक बडे वन में घूमते हुए मैथुन करते हुए एक दल पति मृग को देखा और सोने की पूंछवाले शोभित सुन्दर पर वाले नोकदार और तेज चलने वाले पाँच वाणों से उस मृग और मृगीको मारा ।६। हेमहाराज कोई बडे तेजस्वी तपोधन ऋषि कुमार मृगका स्वरूप लेकर स्त्रीके साथ उस प्रकार मिले थे वोह उस मृगी से लिपटे हुए ही वाण लगने से क्षण भरमें धरती पर गिरकर मनुष्यों की वोली में विकल चित्त से पांडु से वोले ।८। कि काम क्रोध युक्त बुद्धि हीन जन भी ऐसा निष्ठुर कार्य नहीं करता परन्तु मानवी बुद्धि देवका पारनहीं पासक्ती देवही मानवीबुद्धि से बढकर होता है सो देव विषय को बुद्धिमान जनभी नहीं समझ सक्ते हे भारत तुम सदासे धर्मयुक्त प्रधान वंश में जन्म लेकर क्यों काम के लोभ में आये और क्योंकर तुम्हारा चित्त ऐसा डग

I wish to hear all about them."4. Vaishampayan said that king Pandu roaming in a forest full of deer saw a master stag coupling with its mate He shot the pair with five gold tailed, beautiful feathered and sharp pointed arrows.6. Now a certain Rishi's son had assumed the form of a deer to meet with his wife. He fell down at once by the wound and with a distressed heart spoke to Pandu like human beings saying 8. " No personwill do such a cruel deed even under the influence of anger or lust however senseless he may be. But a man's wisdom cannot penetrate God's works which is above human understanding. You have always been just and are born of a noble family. How did you become so

ता । राज्ञांमृगनमांमोहात्त्वंगर्हयितुमर्हसि ॥ १२ ॥ अच्छद्मनामायगाच मृगाणांवध इष्यते । सएवधर्मोराज्ञान्तु तद्विद्वत्वं किंनुगर्हसे ॥ १३ ॥ अगस्त्यःसत्रमासीनश्चका रमृगयामृषिः । आरण्यान्सर्वदैवत्यान् मृगानप्रोक्ष्यमहावने ॥ १४ ॥ प्रमाणदृष्टध र्मेण कथमस्मान् विगर्हसे । अगस्त्यस्याभिचारेण युष्माकञ्चवपाहुता ॥ १५ ॥ मृगउवाच ॥ नरिपून्वैसमुद्दिश्य विमुञ्चंतिनराःशरान् । रन्ध्रएषांविशेषेण वध कालःप्रशस्यते ॥ १६ ॥ पाण्डु रुवाच ॥ प्रमत्तमप्रमत्तंवा विवृतंघ्नन्तिचौजसा । उपायैर्विविधैस्तीक्ष्णैः कस्मान्मृग विगर्हसे ॥ १७ ॥ मृगउवाच ॥ नाहंघ्नन्तंमृगान राजन् विगर्हेचात्मकारणात् । मैथुनन्तुप्रतीक्ष्यंमे त्वयेहाद्यानृशंस्यतः ॥ १८ ॥ सर्व

मगाया पांडुने कहा कि हे मृग राजा लोग शत्रुके नाश करने में जैसा किया करते हैं मृगके मारने मैंभी वैसा करते हैं इससे तुम्हें मोहसे मुझको ऐसा लाँछन नहीं करना चाहिये छिपकर और कौशल से मृग वध करना राजाओं का धर्म है तुम क्यों फिर इस विषय में निंदाकररहेहो।१३।ऋषि अगस्त्यने यज्ञकर सम्पूर्ण बनमें सब देवोंके उद्देश्य में सम्पूर्ण मृगों को मथनकर मृगयाकीथी उन्हों ने अभिचार कर्म के लिये तुम्हारी बसा से हवनाकियाथा प्रमाणिक धर्मके अनुसार तुम मुझ से मारे गये हो फिर क्यों मेरी निंदा करते हो मृग ने कहा कि मनुष्य लोग शत्रुको भली भांति न देखकर बांण नहीं चलाते विशेषकर जिससमय शत्रु से दोषहोता है वही समय शत्रु के वध करने का सुंदर अवसर कहाहै ।१६। पांडुने कहा कि हे मृग चाहे मृग प्रमत्तहों वा अप्रमत्तहों लोग नाना कठोर उपायों से खुलाखुली उन को मारते हैं इस लिये तुम क्यों निंदा करते हो मृग ने कहा कि हे महाराज तुम ने मृग माराहै इस लिये मैं अपने लिये तुम्हारी निंदा नहीं करता परन्तु तुमको इससमय निष्ठुर व्यवहार न करके मेरे मैथुनकाल तक ठहरारहना

blind by avarice?" Pandu replied, "Kings behave in the chase of the deer in the same way as they do when destroying an enemy. You should not therefore taunt me in this way. It is the duty of a king to kill the deer artfully from a hiding place. Why do you raise such objections ?13. Rishi Agastya when performing his sacrifice to please the gods killed all the deer in the forest and made libations in the fire by their blood. You are killed by me according to the prevailing practice. Why do you decry my deed?" The deer replied, "People donot kill an enemy without examining him well. The best time for killing an enemy is that when he is doing evil."16. Pandu said, "Whether the deer be mad or otherwise, people kill them in various ways. Why do you think so badly of my work?" The deer replied, "You have killed a deer, O king. I donot, therefore, say anything against it on my own

भूतहितेकाले सर्वभूतेप्सितेतथा । कोहिविद्वान्मृगंहन्याच्चरन्तंमैथुनंवने ॥ १९ ॥ अ-
स्यांमृग्याञ्चराजेन्द्र हर्षान्मैथुनमाचरन् । पुरुषार्थफलंकर्त्तुं तत्त्वयाविफलीकृतम् ॥
॥ २० ॥ पौरवाणांमहाराज तेषामक्लिष्टकर्मणाम् । वंशेजातस्यकौरव्य नानुरूपमिदं
तव ॥ २१ ॥ नृशंसंकर्मसुमहत् सर्वलोकविगर्हितम् । अस्वर्ग्यमयशस्यं चाप्यधर्मिष्ठंच
भारत ॥ २२ ॥ स्त्रीभोगानांविशेषज्ञः शास्त्रधर्मार्थतत्त्ववित् । नार्हस्त्वंसुरसंकाश
कर्तुमस्वर्ग्य मीदृशम् ॥ २३ ॥ त्वयानृशंसकर्त्तारः पापाचाराश्च मानवाः । निग्राह्याः
पार्थिवश्रेष्ठ त्रिवर्गपरिवर्जिताः ॥ २४ ॥ किंकृतंतेनरश्रेष्ठ मामिहानागसंघ्नता ।
मुनिंमूलफलाहारं मृगवेशधरंनृप ॥ २५ ॥ वसमानमरण्येषु नित्यंशमपरायणम् ।
त्वयाहंहिंसितो यस्मात्तस्मात्त्वामप्यहंशये ॥ २६ ॥ द्वयोर्नृशंसकर्त्तारमवशं काममोहि

चाहिये था सब लोगोंके प्रिय और सब के हितयुक्त ऐसे समय में क्या कोई विद्वान
जनभी वन में मैथुन करते हुए मृगको मारसक्ता है हे राजेन्द्र मैं आनंदसे इस मृगी से
संतान पैदाकरने के लिये लिपटाहुआ था तुम ने वोह व्यर्थ कर दिया महाराज तुमने शुद्ध
कर्म करने वाले कुरु वंशियों में जन्म लियाहै सो यह कार्य तुम्हारे योग्य नहीं हुआहै।२१।
हे भारत यह बडा निठुर कर्म स्वर्गनाशी यश नासी, धर्म नाशी, और सब लोकों के लिये
अनुचित हुआहै हे देवोपम तुमने शास्त्र जाननेवाले धर्मार्थ तत्वों के जाननेवाले और स्त्री
से मिलने के सुखको अनुभव करनेवाले होकरभी जोयह स्वर्गनाशी कार्य कियाहै वह तुम्हारे
योग्य नहींथा हे नरेशोंमेंश्रेष्ठ जो लोभ निठुर कार्य करनेवाले पापाचारी और धर्मार्थ काम
से रहित होते हैं तुम्हीं उनको दण्डदेतेहो।२४।हे महाप्राज्ञ मैं मृग के स्वरूप में फल मूल
पर जीनेवाला मुनिहूं मुझको विना अपराध मारकर तुमको क्या लाभहुआ मैं शमशीलहोकर
नित्य वनमें रहता हूं तिसपरभी तुमने विना दोष मारा इस लिये तुमको शाप देताहूं कि

---

account. The thing is, you have been cruel. You should have waited
a little. Will any one kill a deer in such state which is dear
and beneficial to all the living beings. You have rendered useless,
O king, all my labour for producing an offspring. You are born,
O king, in the family of virtuous Kauravas. You have not done
this deed worthy of yourself;21. This cruel deed of yours will des-
troy your glory and your hope for heaven. Being a learned man
you ought to know what a pleasure there is in a woman's embrace.
This act of yours was not worthy of you. You punish those, O
king, who are sinners and do cruel deeds.24. I am a Muni living on
fruits and roots in the disguise of a deer. What profit did you
earn in killing me without fault. I lived peacefully in the forest
and you have killed me without any fault. I therefore curse you that
as you have done a cruel act to man and wife you will die in a like

तम् । जीबितान्तकराभात्र एवमेदागमिष्यति ॥ २७ ॥ अहंहिकिन्दमोनाम तपसा भावितोमुनिः व्यपत्रपन्मनुष्याणां मृग्यां मैथुनमाचरम् ॥ २८ ॥ मृगोभूत्वामृगैःसार्द्धं चरामिगहनेवने । नतुतेब्रह्महत्येयं भविष्यत्यविजानतः ॥ २९ ॥ मृगरूपधरंहत्वा मामेवंकाममोहितम् । अस्यतुत्वंफलंमूढ प्राप्स्यसीदृशमेवहि ॥ ३० ॥ प्रिययासहसंवासं प्राप्यकामविमोहितः । त्वमप्यस्यामवस्थायां प्रेतलोकंगमिष्यसि ॥ ३१ ॥ अन्तकालेहिसंवासं ययागन्तासिकांतया । प्रेतराजपुरंप्राप्तं सर्वभूतदुरत्ययम् । भक्त्यामतिमतांश्रेष्ठ सैवत्वानुगमिष्यति ॥ ३२ ॥ वर्त्तमानःसुखेदुःखं यथाहंप्रापितस्त्वया । तथात्वांचसुखंप्राप्तं दुःखमभ्यागमिष्यति ॥ ३३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वासुदुःखार्त्तो जीवितात्सव्यमुच्यत । मृगःपाण्डुश्चदुःखार्त्तः क्षणेनसमपद्यत ॥ ३४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डुमृगशापेऽष्टादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

तुमने जिस प्रकार स्त्री पुरुष से कठिन व्यवहार कियाहै ऐसेही तुमभी जब काम युक्त होकर विवशहोगे जीवनाशी दशा प्राप्तकरोगे।२७।मैं किन्दमनाम तपस्वी मुनि हूं मनुष्योंकी लज्जा से बचने के लिये मृगीसे मिलरहाथा तुम्हारे यह न जानने से कि मैं मृगका स्वरूप लेकर घने वनमें चराकरता हूँ मुझको मारडालने के कारण तुमको ब्रह्महत्या का पापनहोगा अरे मूर्ख जैसा तूने मृगके स्वरूपमें मुझको इसप्रकार मारडाला ऐसाही फल तुझको भीहोगा ।३०। तू कामसे मोहित होकर प्यारी से मिलते ही इसी दशामें प्रेतलोक को सिधारेगा हे बुद्धिमान तुम अन्तकाल में जिस स्त्री से मिलोगे वोहभी सब लोगों के लंघन न करने योग्य प्रेत लोक में भक्ति पूर्वक तुम्हारे साथ जायगी मुझको जिस प्रकार सुखपाने के समय तुमसे दुःख मिला वैसेही तुमभी दुःख पाओ गे वैशंपायनने कहा कि मृगने यहबात कहकर अतिदुःखसे प्राणछोडा राजा पांडुभी क्षणभर में दुःख के समुद्रमें डूबे ॥ ३४ ॥

state.27. I am an ascetic named Kindam. I had assumed the form of a deer to hide myself from the shame of being seen by men. You did not know me in this guise and therefore you shall not be chargeable with the sin of killing a Brahman. But you will be punished for this deed all the same.30. You will die the moment you will embrace your dear one. The woman too will go with you to the other world. As you have given me trouble at the time when I was happy, so you will meet your death in a state of bliss." Vaishampayan says that the deer died of the wounds after saying this, leaving Pandu in a great distress.34.

वैशम्पायन उवाच । तंव्यतीतमतिक्रम्य राजास्वमिवबान्धवम् । सभार्य्यःशो कदुःखार्त्तःपर्य्यदेवयदातुरः ॥ १ ॥ पाण्डुरुवाच । सतामपिकुलेजाताः कर्मणाबत दुर्गतिम् । प्राप्नुवन्त्यकृतात्मानः कामजालविमोहिताः ॥ २ ॥ शश्वद्धर्मात्मनाजातो बालएव पितामम । जीवितान्तमनुप्राप्तः कामात्मैवेति नःश्रुतम् ॥ ३ ॥ तस्यकामा त्मनक्षेत्रेराज्ञः संयतवागृषिः । कृष्णद्वैपायनः साक्षाद्भगवान्मामजीजनत् ॥ ४ ॥ तस्या घव्यसनेबुद्धिः सञ्जातेयंममाधमा । त्यक्तस्यदेवैरनयान् मृगयांपरिधावतः ॥ ५ ॥ मोक्षमेवव्यवस्यामिबन्धोहि व्यसनंमहत् । स्ववृत्तिमनुवर्त्तिष्ये तामहंपितुरव्ययाम् ॥ ६ ॥ अतीवतपसात्मानं योजयिष्याम्य संशयम् । तस्मादेकोऽहमेकाकी एकैकस्मि न्वनस्पतौ । चरन्भैक्ष्यं मुनिर्मुण्डश्चरिष्याम्याश्रमानिमान् ॥ ७ ॥पांशुना समवच्छन्नः

अध्याय ॥ ११९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि राजा पांडु अपने मित्रसमान उस ऋषि को छोड़ कर स्त्रियों सहित शोक और दुख से पीडित विकल होकर विलाप करने लगा उसने कहा हाय बुरी आत्मा वाले जन अच्छे वंशमें उत्पन्न होकर भी कामके फंदे में फँसकर अपने कर्म के दोष से कुगति प्राप्त करते हैं मैंने सुनाहै कि मेरे पिता विचित्र वीर्य धर्मात्मा शांतनु से उत्पन्न होकर कामवशहोने से ही बाले पनमें परलोकको सिधारेथे।३। उस कामयुक्त राजाके क्षेत्र में साक्षात् भगवान ऋषि सत्यवादी कृष्ण द्वैपायन ने मुझे जन्म दिया ऐसे मनुष्य का पुत्र होने पर भी मैं बुरी नीति से केवल वनही में घूमरहाहूँ, आज मेरी बुरी बुद्धि व्यसन में लिप्त हुई सो देवों ने मुझे त्यागदिया क्योंकि पुत्रके विना देखे मैं स्वर्ग नहींपासक्ता।६। अब मैं मोक्षमार्ग का पथ लूंगा पुत्रोत्पादनादि सांसारिक बंधन अति दुःखका कारण हैं सो मैं ब्रह्मचारी बनकर अपने जन्मदाता व्यास जीके से कर्म करूंगा निःसंदेह मैं अपने चित्तको कठोर तपमें नियुक्त करूंगा और भार्या आदि त्यागकर अकेला शिर मुँडा-

CHAPTER CXIX.

Vaishampayan said, that king Pandu leaving the Rishi like a dead friend, making his wives also the partners of his distress, fell into an agony of grief. He said, " Alas ! a bad natured man, even if born in a good family, brings ruin upon himself by his evil deeds. I hear that my father Vichitravirya, the son of the virtuous Shantanu, died in the prime of life by his over-indulgence in luxuries.3. The virtuous and truthful Rishi Dwaipayan gave me birth. Being the son of such an illustrious father I have been thus wasting my time in the wilderness. My evil genius has led me into this trouble. The gods, too, have abandoned me, for, without an offspring my way to paradise will be obstructed.6. I shall now tread on the way to salvation. The worldly ties have been the cause of

शून्यागारकृतालयः। वृक्षमूलनिकेतोवा त्यक्तसर्वप्रियाप्रियः ॥ ८ ॥ नशोचन्नप्रहृष्यं
श्चतुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । निराशीर्निर्नमस्कारो निर्द्वन्द्वोनिष्परिग्रहः ॥ ९ ॥ नचाप्य
पहसन्कांश्चिन्न कुर्वन्भ्रकुटीकंचित् । प्रसन्नवदनोनित्यं सर्वभूतहितेरतः ॥ १० ॥
जङ्गमाजङ्गमंसर्वं मविहिंसंश्चतुर्विधम् स्वासुप्रजास्विव सदासमःप्राणभृतःप्रति ॥ ११ ॥
एककालञ्चरन्भैक्ष्यं कुलानिदशपञ्चवा । असम्भवेवाभैक्ष्यस्य चरन्ननशनान्यपि ।
अल्पमल्पञ्चभुञ्जानः पूर्वालाभे नजातुचित् ॥ १२ ॥ अन्यानविचरन् लोभादलाभे
सप्तपूरयन् । अलाभेयदिवालाभे समदर्शीमहातपाः ॥ १३ ॥ वास्यैकंतक्षतोवाहुं
चन्दनेनैकमुक्षतः । नाकल्याणंनकल्याणं चिन्तयन्नुभयोस्तयोः ॥ १४ ॥ न जिजी·

कर मुनि हो आश्रमोंमें रहकर किसी वृक्ष से भीख मांगकर जीवन बचाऊंगा सब प्रिय और अप्रिय को छोड़कर देहमें धूल लगाकर खाली घर में वा पेडकी छायामें बसूंगा हर्ष और शोक को त्याग दूंगा और अपनी निंदा और प्रशंसा को समान समझूंगा अशीस व प्रणामकी इच्छा न करूंगा और बिना बखेड़ा किसी से कुछ दान न लेकर दिन बिताऊंगा किसी पर न तो हँसूंगा न भौं चढाऊंगा सदा प्रसन्नमुख होकर सब भूतों के हित में लगा रहूंगा।१०। अंडज, स्वेदज, जरायुज, उद्भिज्य चारप्रकार के स्थावर जंगम प्राणियों पर हिंसा प्रकट नहीं करूंगा अपनी प्रजाकी समान सब भूतों पर तुल्य दृष्टि रक्खूंगा नित्य पांच वा दश घरों में एकहीबार भीख मांगूगा उन से भीख न मिले तो विना भोजनही दिन बिताऊंगा स्वल्प भोजन किया करूंगा यदि एकबार में न मिले तो फिर कभी भीख न मागूंगा सात वा दश घरमें मांगने पर यदि भीख न मिले तो लोभ से दूसरे घर में नहीं जाऊंगा चाहै लाभहो या नहीं मैं सबको समान समझूंगा और कठोर तपकरूंगा।१३। बसूलीसे यदि मेरा कोई एक हाथकाटे और दूसरा चंदनसे मेरेहाथ

trouble to me. I shall become a Brahmachari to follow the example of my progenitor Vyas. I shall leave wives and all and shall shave my head to live in a hermitage. I shall live on fruits entirely. Keeping myself aloof from all worldly love and hatred, I shall besmear my body with dust and shall live in an empty cottage or under the shadow of a tree. I shall neither feel pleasure nor pain. I shall not be pleased by praise nor be displeased by the contrary. I shall not wish for respect. I shall not accept gifts from the people. I shall neither laugh at any one nor frown. I shall always do good to other beings with a good face. 10. I shalldo no harm to the four kinds of creation, viz, those born of eggs, sweat and jarayu (membrne) and the vegetables. I shall have an equal regard for all beings. I shall beg daily at five or ten doors and shall pass the day without food if I donot get anything from them. I shall

विषुवत् किञ्चिन्नमुमूर्षुवदाचरन् । जीवितंमरणञ्चैव नाभिनन्दन्नचाद्विषन् ॥ १५ ॥
याःकाश्चिज्जीवताशक्याः कर्त्तुमभ्युदयक्रियाः । ताःसर्वाःसमतिक्रम्य निमेषादिष्व
वस्थिताः ॥ १६ ॥ तासुचाप्यनवस्थासु त्यक्तसर्वेन्द्रियक्रियः । सम्परित्यक्तधर्मार्थः
सुनिर्णिक्तात्मकल्मषः ॥ १७ ॥ निर्मुक्तःसर्वपापेभ्यो व्यतीतःसर्ववागुराः ॥ नवशेक-
स्यचित्तिष्ठन् सधर्मामातरिश्वनः ॥ १८ ॥ एतयासततंवृत्त्याचरन्नेवं प्रकारया ।
देहंसंस्थापयिष्यामि निर्भयंमार्गमास्थितः ॥ १९ ॥ नाहंसुकृपणेमार्गे स्ववीर्यक्षय
शोचिते । स्वधर्मात् सततापेतेचरेयं वीर्य्यवर्जितः ॥ २० ॥ सत्कृतोऽसत्कृतोवापि
योऽन्यंकृपणचक्षुषा । उपैतिवृत्तिंकामात्मा सशुनांवर्त्ततेपथि ॥ २१ ॥ वैशम्पायन
उवाच । एवमुक्त्वासदुःखार्त्तो निश्वासपरमोनृपः । अवेक्ष्यमाणःकुन्तीञ्च माद्रीञ्च

को सुगंधियुक्त करै तो दोनोंमेसे किसी को न तो हित और न अहितकी इच्छा करूंगा जीवन और मृत्यु से सुखी और दुःखी न हूंगा चेतनयुक्त जन निमेष आदि काल के नियम से जो सर्व फलदाई मंगलयुक्त कार्य कर सक्ते हैं मैं सम्पूर्ण रूपसे चित्तके पाप को धोकर उन सब क्रियाओं को कर धर्मार्थ त्याग और अनित्य फल देनेवाली सब इ-न्द्रियों की क्रियाओं को त्यागदूंगा और अविद्या आदि सबप्रकारके जालको छोड़कर सब पापोंसे बचकर वायुका गुण धारणकरूंगा किसी के वश नहीं हूंगा।१८। सदा ऐसी रीति से चलकर निर्भयपथको आश्रयकरके देह छोडूंगा वीर्य वर्जित होकर आत्मतत्वरूपी धर्म से सदा अलग रहकर अपने वीर्यनाशी कुमार्ग पर कभी पांव न रक्खूंगा काम रहित होने परभी जो कोई कामयुक्त होकर दीन के समान फिर काम में फँसताहै वोह चाहै सुकार्य करै वा कुकार्य अवश्यही कुत्ते कासा कार्य करताहै अर्थात् जूंठा चाटने वाला है।२१। वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर राजा अतिदुःखी होकर यह सबबातें कहकर लम्बीसांस

not eat much and if I donot receive anything at all shall never beg again. I shall not go abegging at other doors if I donot get from the seven or ten houses. I shall pay equal regard to all either any benefit accrues to me from them or not. I shall observe severe penances.13. If one cut one hand of mine with an axe and another perfume the other with sandal, I shall neither take the one for my enemy,nor, the other for my friend. Whether I live or die, I shall express neither pleasur nor pain. I shall do with a pure mind all the good acts leading to heaven, done by living beings. I shall tear the net of ignorance, and being free from sins I shall take the properties of the air—will not be subject to any one.18. Always living in this way I shall die fearlessly. I shall never place my foot in the wrong way which is detrimental to mental faculties. He who having no desire falls in the net of desires acts like a dog

समभाषत ॥ २२ ॥ कौशल्याविदुरःक्षत्ता राजाचसहबन्धुभिः । आर्य्यासत्यवती भीष्मस्तेच राजपुरोहिताः ॥ २३ ॥ ब्राह्मणाश्चमहात्मानः सोमपाःशंसितव्रताः । पौर वृद्धाश्चयेतत्र निवसन्त्यस्मदाश्रयाः । प्रसाद्यसर्वेवक्तव्याः पाण्डुःप्रव्रजितोवनम् ॥ २४ निशम्यवचनं भर्त्तुर्वनवासेधृतात्मनः । तत्समंवचनंकुन्ती माद्रीचसमभाषताम् । २५ अन्येपिह्याश्रमाःसन्ति येशक्याभरतर्षभ । आवाभ्यांधर्मपत्नीभ्यां सहतप्तुंतपोमहत् ॥ २६ ॥ शरीरस्यापिमोक्षाय स्वर्ग्यंप्राप्यमहाफलम् । त्वमेवभविताभर्त्ता स्वर्गस्यापि नसंशयः ॥ २७ ॥ प्रणिधायेन्द्रियग्रामं भर्त्तृलोकपरायणे । त्यक्त्वाकामसुखेह्यावां तप्स्यावोविपुलंतपः ॥ २८ ॥ यदिचावांमहाप्राज्ञ त्यक्ष्यसित्वंविशाम्पते । अद्यैवावांप्रहास्यावो जीवितंनात्रसंशयः ॥ २९ ॥ पाण्डुरुवाच ॥ यदिव्यवसितं ह्येतद्युवयोर्धर्मसंहितम् । स्ववृत्तिमनुवर्त्तिष्ये तामहंपितुरव्ययाम् ॥ ३० ॥

ले कुंती और माद्रीकी ओर देखकर बोला कि कौशल्या, विदुर बन्धु सहित राजा धृतराष्ट्र आर्या सत्यवती, भीष्म, राजपुरोहित, व्रतशील, सोमपीनेवाले महात्मा ब्राह्मणलोग और जितने नगरके बृद्धजन मेरेआश्रयहैं उन सबको प्रसन्न करके कहना कि पांडु संन्यासी होकर बनको गया।२४। कुंती और माद्री बनबासका संकल्प ठानेहुए पतिकावचन सुनकर यथायोग्य वाक्य बोली हे भारत श्रेष्ठ और बहुत आश्रम हैं जिनको आश्रयकर आप दोनों धर्म पत्नियों के साथ कठोर तपस्या करसकेंगे और इस में संदेह नहीं कि देह छोड़ने के लिये महाफलको पाकर स्वर्ग प्राप्त करेंगे हम दोनों भी पति के साथ सब इन्द्रियोंको रोककर कामना औरसुखको त्यागकर कड़ी तपस्या करैंगी।२८। हे महाप्राज्ञ पृथ्वीनाथ आप हमको छोड़देंगेतो निःसंदेह हम आजही प्राण छोड़ेंगी पांडुने कहा कि यदि तुम्हारा यह निश्चय धर्मानुसार होतो मैं अपने पिताकी अव्यय वृत्तिको आश्रय कर

whether he be doing good or evil.21.Vaishampayan said that the king, with a heavy heart and heaving long sighs was revolving upon such topics when turning towards Kunti and Madri he said, "Kaushalya, Vidur, King Dhritrashtra with other relations the virtuous Satyavati, Bhishm, royal priests, good Brahmans and the old citizens having regard for me must be informed by you that I have become a Sanyasi to roam, in the wood."24.Kunti and Madri, resolved on living in the forest, having heard this from the king, said, "There are many other ways in which you can practice severe penances along with both your wives, and be sure to gain heaven. Both of us, having checked our senses and desires and leaving worldly enjoyments, shall practice asceticism in your company 28. We shall certainly die, O king, to day, if you will leave us." Pandu said, "If your purpose be really true, I shall still

त्यक्त्वाग्राम्यसुखाहारं तप्यमानोमहत्तपः । बल्कलीफलमूलाशी चरिष्यामिमहावने ।
॥ ३१ ॥ अग्नीजुह्वन्नुभौ कालावुभौ कालावुपस्पृशन् । कृशः परिमिताहारश्चीरचर्मजटा-
धरः ॥ ३२ ॥ शीतवातातपसहः क्षुत्पिपासानवेक्षकः । तपसादुश्चरेणेदं शरीरमुपशोष
यन् ॥ ३३ ॥ एकान्तशीलोविमृशन् पक्कापक्केनवर्त्तयन् । पितॄन्देवांश्चवन्येन वाग्भिरद्भि-
श्च तर्पयन् ॥ ३४ ॥ वानप्रस्थजनस्यापि दर्शनंकुलवासिनाम् । नाप्रियाण्याचरिष्यामि
किम्पुनर्ग्रामवासिनाम् ॥ ३५ ॥ एवमारण्यशास्त्राणा मुग्रमुग्रतरंविधिम् । कांक्षमाणोऽ
हमास्थास्ये देहस्यास्य समापनात् ॥ ३६ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्येवमुक्त्वाभार्य्येते
राजाकौरवनन्दनः । ततश्चूडामणिंनिष्कमङ्गदे कुण्डलानिच ॥ ३७ ॥ वासांसिचम-
हार्हाणि स्त्रीणामाभरणानिच । प्रदायसर्व्वंविप्रेभ्यः पाण्डुःपुनरभाषत ॥ ३८ ॥ गत्वा

लूंगा ग्राम के भोजन और सुख छोड़ कर बल्कल पहिन कर फल और मूल खाता हुआ भारी तप करके घने वनमें घूमूंगा चीर, चर्म, और जटा धारण कर नियमित भोजन कर भूख प्यास पर ध्यान न रखकर सर्दी गर्मी सहकर अंगको दुबला बना कर दोनों समय नहाकर अग्निहोत्र करता हुआ कठोर तपस्यासे इस शरीर को सुखादूंगा । ३३ । अकेला रहकर कच्चा पक्का कंदमूल आदि खाकर वाण प्रस्थके योग्य शास्त्रकी चर्चा करता हुआ वन के फल जल और वाणी से पितर और देवोंका तर्पण करूंगा ग्राम वासियोंकी बाततो दूरगही एकही जगह रहते हुए वाण प्रस्थोंकाभी अप्रिय कार्य न करूंगा जबतक यह देह न छूटेगी तब तक योंही सब नियमों को कठोर विधियों से पालन करताहुआ जीवितरहूंगा ।३६। वैशम्पायननेकहा कि कौरव नंदन राजा पांडुदोनो स्त्रियों से यह बात कहकर मणि, कुंडल, मूल्यवान वस्त्र और स्त्रियोंके आभूषण आदि सब वस्तु ब्राह्मणों को देकर साथियों से बोलेकि तुम हास्तिनपुर में जाकर कहना कि कुरुनंदन पांडु अर्थ, काम

follow the practice of my father. Leaving the food and luxuries of the villages I shall wear the barks of trees and shall practice severe penances eating fruits and roots of the forests. Having equipped myself with a piece of cloth, leather and long hair I shall eat the food prescribed. I shall not care for hunger and thirst; bearing heat and cold, I shall make my body lean. Twice a day I shall bathe and offer libations to fire. I shall wither my body by severe penances.33.Living alone, eating ripe and uncooked fruits and meditating upon the books proper to the life of a Banaprasth, I shall please the gods and *pitris* by offerings of the fruits of the forest, water and words. I shall do nothing displeasing even to the neighbouring ascetics, nothing to say of the villagers. As long as I live, I shall follow the hard rules of the people living in forests."36. Vaishampayan said that king Pandu of the Kaurav family having

नागपुरंवाच्यं पाण्डुःप्रव्रजितोवनम् । अर्थकामंसुखंचैव रतिंचपरमात्मिकाम् ॥ ३९ ॥ प्रतस्थेसर्वमुत्सृज्य सभार्य्यःकुरुनन्दनः । ततस्तस्यानुयातारस्ते चैवपरिचारकाः ॥ ॥ ४० ॥ श्रुत्वाभरतसिंहस्य विविधाःकरुणागिरः । भीममार्तस्वरंकृत्वा हाहेतिपरिचुक्रुशुः ॥४१ ॥ उष्णमश्रुविमुंचन्तस्तं विहायमहीपतिम् । ययुर्नागपुरंतूर्णं सर्वमादायतद्वचः ॥ ४२ ॥ तेगत्वानगरंराज्ञो यथावृत्तंमहात्मनः । कथयांचक्रिरेराज्ञस्तद्धनं विविधंददुः ॥ ४३ ॥ श्रुत्वातेभ्यस्ततःसर्वं यथावृत्तंमहावने । धृतराष्ट्रोनरश्रेष्ठः पाण्डुमेवान्वशोचत ॥ ४४ ॥ नशय्यासनभोगेषु रतिंविन्दतिकर्हिचित् । भ्रातृशोकसमाविष्टस्तमेवार्थं विचिन्तयन् ॥ ४५ ॥ राजपुत्रस्तुकौरव्य पाण्डुर्मूलफलाशनः । जगाम सहपत्नीभ्यां ततोनागशतंगिरिम् ॥ ४६ ॥ सचैत्ररथमासाद्य कालकूटमतीत्यच । हिमवन्तमतिक्रम्य प्रययौगन्धमादनम् ॥ ४७ ॥ रक्ष्यमाणोमहाभूतैः सिद्धैश्चपरमर्षि

सुख, और परम प्रियस्त्रियोंके मिलने के सुख सबको त्यागकर प्रव्रज्या आश्रय लेकर स्त्रियों के संग बनको गया है अन्तर उन के साथी नौकर उस भरत वंशके सिंहरूपी नरेशकी करुणा युक्त बातें सुनकर अति दुःखितहो कोलाहल से हाहाकार करते हुए रोने लगे ॥ ४१ ॥ और राजाको छोड़ कर शोक से आंसू गिराते हुए विना विलम्ब हास्तिनपुर में जा पहुँचे धृतराष्ट्र उनके मुखसेवन की सब घटनाओं को सुनकर पांडके लिये बडाशोक करने लगे वोह भाई के शोकसे विकल होकर उन्हीं बातों को शोचर सेज आसन और भोग आदि किसीसे सुखनहीं पाते थे कौरवबंशी ।४५। इधर राजकुमार पांडुफल मूलखाते हुए दोनों स्त्रियों के साथ नागशत पर्वत को गये और उस चैत्र रथपर चढकर कालकूट वर्वत को पीछे छोडकर हिमाचलके रास्ते गंधमादन में जा पहुँचे हेमहाराज वोह महाभूत सिद्ध और परम ऋषियोंसे रक्षित होकर सम भूमि औररूखे स्थानों में

said this to the two wives divested of all the jewellery and precious clothing of himself and women and gave all to the Brahmans. He then said to his companions, " You may go to Hasthinpur and there report that Pandu, the pride of the Kuru dynasty, leaving all the worldly enjoyments has become a *Sanyasi* and the women have followed him to the woods. His followers and servants hearing such heart-rending words of the lion-hearted prince of the Bharat dynasty, raised a great cry of grief41.and shedding tears of sorrow returned to Hastinpur with the message. King Dhritrashtra was very sorry for Pandu when he heard this. He reflected upon the words of his brother and could not feel any pleasure in the worldly affairs.45 On the other hand prince Pandu, eating fruits and roots, followed by the two women, reached mount *Nagshat*. Ascending *Chaitrarath* and leaving behind mount *Kalkut*, he reached Gandamadan through the Himalayas. The

भिः । उवासस महाराज समेषु विषमेषु च ॥ ४८ ॥ इन्द्रद्युम्नसरः प्राप्य हंसकूटमतीत्य-
च । शतशृङ्गे महाराज तापसः समतप्यत ॥ ४९ ॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि पाण्डुचरिते ऊनविंशत्य-
धिकशतोऽध्यायः ॥ ११९ ॥

वैशम्पायन उवाच । तत्रापितपसि श्रेष्ठे वर्त्तमानः सवीर्य्यवान् । सिद्धचारणसंघानां बभूवप्रियदर्शनः ॥ १ ॥ शुश्रूषुरनहंवादी संयतात्माजितेन्द्रियः । स्वर्गंगन्तुं पराक्रांतः स्वेनवीर्य्येण भारत ॥ २ ॥ केषाञ्चिदभवद्भ्राता केषांचिदभवत्सखा । ऋषयस्त्वपरेचैनं पुत्रवत् परिपालयन् ॥ ३ ॥ सतुकालेनमहताप्राप्य निष्कल्मषंतपः । ब्रह्मर्षिसदृशः पाण्डुर्बभूवभरतर्षभ ॥ ४ ॥ अमावास्यान्तु सहिताऋषयः शंसितव्रताः । ब्रह्माणंद्रष्टुकामास्ते सम्प्रतस्थुर्महर्षयः ॥५॥ सम्प्रयातानृषीन् दृष्ट्वा पाण्डुर्वचनमब्रवीत् ।

जाकर बसे अंतमें इन्द्रद्युम्न तालपर पहुँचकर हँसकूट को पीछे छोडकर शतशृंग नामक पहाडपर कठोर तपकरने लगे ॥ ४९ ॥

अध्याय १२० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे भारत ! वीर्यवान पांडु उस स्थानमें बडी अच्छी तपस्यामें सदा नियुक्त रहकर सिद्ध चारणों के अति प्रियवने वोह गुरु सेवक अहंकार वर्जित संयत आत्मा जितेन्द्रिय होकर अपने वीर्य से स्वर्गको प्राप्तकरने योग्य पराक्रमी वने कोई२ऋषि उनको भाई और दूसरे मित्र समझने लगे और दूसरे ऋषि उनको पुत्रवत् पालने लगे हे भरत श्रेष्ठ अनन्तर पांडु बहुत दिनों तक विनाकलंक तपोवल संचित कर ब्रह्मर्षि समान बने।४। एकसमय अमावस्या तिथिमें ब्रह्मर्षि लोग भगवान स्वयम्भू के दर्शनके लिये एकत्र होकर ब्रह्मलोक में जारहे थे उस समय पांडु उन ऋषियों को जाते हुए देखकर वोले कि

great man being protected by ascetics and Rishis began to live on the level surface. Leaving behind Hanskoot, he then practiced severe penances on mount Shatshrang in the vicinity of lake *Indradyumn*. 49.

CBAPTER CXX.

Vaishampayan said that the brave Pandu, engaged in penances was dear to the Rishis and great beings there. Attending on great men, without pride and having control over his senses, he was, by his exertions, able to make himself worthy of gaining heaven. Some rishis regarded him as a brother, others as friend while the rest protected him like a son. For a long time Pandu practiced asceticism and had become like a Brahmarshi. One Amavasya (night of total darkness) day, the Rishi were preparing to go together to the residence of Brahma to see him. Pandu asked the

भवन्तःक्वगमिष्यन्ति ब्रूतमेवदतांवराः ॥ ६ ॥ ऋषयऊचुः ॥ समवायोमहानद्य ब्रह्मलोकेमहात्मनाम् । देवानांच ऋषीणांच पितॄणांचमहात्मनाम् । वयंतत्रगमिष्यामो द्रष्टुकामाःस्वयम्भुवम् ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच । पाण्डुरुत्थायसहसा गन्तुकामो-महर्षिभिः । स्वर्गपारंतितीर्षुःस शतशृंगादुदंमुखः । प्रतस्थेसह पत्नीभ्यामब्रुवंस्तंचता-पसाः ॥ ८ ॥ उपर्युपरिगच्छन्तः शैलराजमुदंमुखाः । दृष्टवन्तोगिरौरम्ये दुर्गान्दे-शानवहूनवयम् ॥ ९ ॥ विमानशतसम्बाधां गीतस्वरनिनादिताम् । आक्रीडभूमिंदे-वानां गन्धर्वाप्सरसांतथा ॥ १० ॥ उद्यानानिकुवेरस्य समानिविषमाणिच । महान दीनितम्बांश्च गहनान् गिरिगह्वरान् । सन्ति नित्यहिमादेशा निर्वृक्षमृगपक्षिणः । स-न्तिक्वचिन्महाद्र्यो दुर्गाःकेचिद्दुरासदाः ॥ १२ ॥ नातिक्रमेतपक्षीयान् कुतएवेतरे

हे वाक् निपुण महर्षियो कहिये आप कहां जायँगे ऋषियों ने कहा आजब्रह्म लोक में महात्मा, देवता और ऋषि और पितर लोग एकत्रित होंगे हम स्वायम्भुवके दर्शनके लिये उस ब्रह्मलोक में जाते हैं ।७। वैशम्पायनने कहा कि पांडु महर्षियोंके साथ जाने की इच्छा से स्वर्गको पारकर ने के लिये एका एक उठकर दोनों स्त्रियों के साथ शतशृंग के ओर से उत्तरकी ओर चलेतब तपस्वियों ने कहा कि हमने उत्तरकी ओर शैलराज से क्रमशः ऊपर को चलते हुए इस सुन्दर पर्वतपर अगणित अगम्य देश देखे हैं बीच२ में देव गंन्धर्व और अप्सराओंके सैकडों यानों से भरे और गीतों से गूंजतेहुए स्थान दीख पडतेहैं ।१०। कहीं २ कुवेर की सम भूमि और फुलवाडी वडी २ नदी और दुर्गम कंदरा हैं कोई २ स्थान सदा हिमसे ढके रहते हैं वहां नतो वृक्ष, मृग, पक्षी हैं न और कुछ है कहीं२ ऐसी भारी वर्षा होतीहै कि वोहस्थान दुर्गम वा फिसलने होजाते हैं पशुकी वाततो दूर रही पखेरू

Rishis where they were going. The rishis replied that there was a great gathering of the gods, rishis and Pitars that day and they were going to Brahma's residence. 7. Vaishampayan said that Pandu, wishing to follow the Rishis to the paradise, began to go towards Shatshrang with his two wives. The rishis thereupon said, " We have seen numerous cities in our Northward ascent of the mountain. At intervals are seen numerous habitations of gods and Apsaras full of various cars ringing with their songs. 10. At some places there are the level ground of Kuber; the orchards, large rivers and beautiful vallies. Some places are always covered with snow with no trace of deer, birds and other things on them. Some places become slippery and impregnable by the excess of rain. Birds cannot go there nothing to say of quadrupeds. Only air, and great rishis can go there 12. These princesses have never borne trouble and will be unable to proceed over the moun-

मृगाः । वायुरेकोहियात्यत्र सिद्धाश्चपरमर्षयः ॥ १२ ॥ गच्छन्त्यौशैलराजेऽस्मिन राजत्र्यौकथंत्विमे । नसीदेतामदुःखार्हे मागमोभरतर्षभ ॥ १३ ॥ पाण्डुरुवाच । अप्रजस्यमहाभागान द्वारंपरिचक्षते । स्वर्गे तेनाभितप्तोऽहमप्रजस्तु ब्रवीमिवः ॥ १४ ॥ पित्र्यादृणादनिर्मुक्तस्तेन तप्येतपोधनाः । देहनाशेध्रुवोनाशः पितॄणामेषानिश्चयः ॥ ॥ १५ ॥ ऋणैश्चतुर्भिःसंयुक्ता जायन्तेमानवाभुवि । पितृदेवर्षिमनुजैर्देयं तेभ्यश्चधर्मतः ॥ १६ ॥ एतानितुयथाकालं योनवुध्यतिमानवः । नतस्यलोकाःसन्तीति धर्मविद्भिः प्रतिष्ठितम् ॥ १७ ॥ यज्ञैस्तुदेवान्प्रीणाति स्वाध्यायतपसामुनीन् । पुत्रैःश्राद्धैः पितॄँश्चापि आनृशंस्येन मानवान् ॥ १८ ॥ ऋषिदेवमनुष्याणां परिमुक्तोऽस्मि धर्मतः।

भी वहाँ नहीं जासक्त हैं केवल वायु सिद्ध तथा परम ऋषिलोग वहाँ जासक्ते हैं ।१२। इन राजकन्याओं ने कभी दुःख सहन नहीं कियाहै इसलिये दुर्गम शैलराजपर चलने में क्यों नहीं मुरझावेंगी अतएव हे भरत श्रेष्ठ तुम मतआओ पांडुनेकहा हेमहाभाग बृन्द कहते हैं कि जिस के सन्तान नहीं है उस के लिये स्वर्ग में घूमने के द्वार नहीं है मेरी संतान नहीं है इस लिये अति दुःख से जलकर आप से ऐसा कहता हूं ।१४। हे तपोधन बृन्द मैं पितरों के ऋण से मुक्त न होने ही के कारण बडा दुःखी बना हूं मुझको निश्चय होगया है कि मेरे इस शरीर के नष्ट होने पर पितर लोग भी नष्ट होंगे मनुष्य लोग पितर देवता, ऋषि और मनुष्य इन चारों के ऋण को लेकर इस धरती में जन्म लेते हैं और धर्मानुसार उनको यह ऋण भरनाही चाहिये धर्मज्ञ लोग कहते हैं कि जोमनुष्य इन सौभाविक ऋणों के भरनेके लिये उचित समय में मन नहीं लगाते हैं उनकी सुगति नहीं होती।१७। मनुष्यलोग यज्ञसे देवोंको पढ़ने और तपसे मुनियोंको, पुत्रोत्पादन और पिंडदानसे पितरोंको और निष्ठुरता रहितहोकर मनुष्योंको संतु कर उनके ऋणोंसे मुक्त

tain. It is better for you not to go there." Pandu said, "They say that a childless being is debarred from going into the paradise. I have no child, therefore, I tell you with sorrow (14) that I am much grieved at my not being able to pay off the debt of my forefathers. I well believe that the manes will become extinct on the destruction of my body. People are born on the earth with four debts; viz. of gods, Rishis Pitars and mankind. It is their duty to pay off these debts. Learned men say that one who does not exert himself to pay off these debts at the proper time cannot attain heaven. 17. People can pay the debt of gods by sacrifices, that of Munis by study and asceticism, that of pitris by begetting a son and offering *pinds* (cakes), and that of men by humanity. I have properly paid the debts gods, rishis and men but at my death the pitris shall become extinct. The good are born on the earth to pay off the

त्रयाणामितरेषान्तु नाशआत्मनिनश्यति ॥ १९ ॥ पित्र्यादृणादनिर्मुक्त इदानीमस्मि तापसाः । इहतस्मात् प्रजाहेतोः प्रजायन्तेनरोत्तमाः ॥ २० ॥ यथैवाहंपितुःक्षेत्रे जातस्तेनमहर्षिणा । तथैवास्मिन्ममक्षेत्रे कथंवैसम्भवेत्प्रजा ॥ २१ ॥ ऋषय ऊचुः । अ- स्तिवैतवधर्मात्मन विद्मदेवोपमंशुभम् । अपत्यमनघंराजन्वयं दिव्येनचक्षुषा ॥२२॥ दैवोदिष्टंनरव्याघ्र कर्मणेहोपपादय । अक्लिष्टफलमव्यग्रो विन्दतेबुद्धिमान्नरः ॥ २३ ॥ तस्मिन्दृष्टेफलेराजन् प्रयत्नंकर्त्तुमर्हसि । अपत्यंगुणसम्पन्नं लब्ध्वाप्रीतिकरंह्यसि ॥ ॥ २४ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वातापसवचः पाण्डुश्चिन्तापरोऽभवत् । आत्मनोमृगशापेन जानन्नुपहतां क्रियाम् ॥ २५ ॥ सोऽब्रवीद्विजनेकुन्तीं धर्मपत्नींयशस्विं

होते हैं मैं देव ऋषि और मनुष्य इनके ऋणसे धर्मानुसार मुक्तहुआ हूं पर मेरेशरीर के नष्ट होने पर पितरों को नष्ट होना पडेगा हे तपस्वीगण जो लोग नरों में श्रेष्ठ हैं वे पितरों के ऋण से मुक्तहोनेके लिये सन्तान पैदाकरने को पृथ्वी में जन्मलेतेहैं ।२०। पर मैं अभी उक्त ऋण से मुक्त नहीं हुआ हूं इस लिये पूछता हूं नि मैंने जिस प्रकार पिता विचित्र वीर्य के क्षेत्र में महार्षि व्यास से जन्म लिया है क्या वैसे ही मेरे इस क्षेत्र में सन्तान उत्पन्न होसके गी। ऋषि लोग वोले कि हे धार्मिक नरेश हम दिव्य नेत्रों से देखते हैं कि तुम्हारे पापरहित देववत शुभ पुत्र उत्पन्न होंगे सो हे नरव्याघ्र तुम कर्म से देवों का अभिप्राय पूरा करो क्योंकि वुद्धिमान जन न घवराकर सुन्दर फल प्राप्त करते हैं हे महाराज तुम्हारा फल दीख पडताहै तुम संतान उत्पन्न करनेका प्रयत्न करो उससे अवश्य ही आनन्द देनेवाला सर्वगुण भूषित पुत्र पा सकोगे ।२४। वैशम्पायन ने कहा कि राजा पांडु तपस्वियों की यह बात सुनकर और यह स्मरण कर कि मृग के शाप से उसकी पुत्र पैदा करने की शक्ति नष्ट होगई है चिंतायुक्तहुआ और यशस्विनी धर्मपत्नी कुंती

debt of pitris by begetting a son. 20. I have not yet been able to do so. I, therefore, request you to let me know, if I can get offspring in the way the great rishi Vyas gave me birth." The rishis replied, "We see with our godly eyes, O virtuous king, that you will have sons god-like, sinless, and good. You should, therefore, please the gods by your deeds, for, wise men attain good result by their unflinching energy. The result of your deeds is manifest. Try to beget offspring and you are sure to get virtuous sons. 24. Vaishampayan said that having heard this from the ascetics king Pandu was very sorry to know that by the curse of the deer he was unable to produce offspring. At length taking aside his wife Kunti he said, "Exert yourself to produce a son. Learned men say that offspring is the sourse of respect in the three worlds. Sacrifices, charity, asceticism and the proper observance of vows

नीम् । अपत्योत्पादने यत्नमापदित्वंसमर्थय ॥ २६ ॥ अपत्यंनामलोकेषु प्रतिष्ठाध-
र्मसंहिता । इतिकुन्तिविदुर्धीराः शाश्वतंधर्मवादिनः ॥ २७ ॥ इष्टंदत्तंतपस्तप्तं नियम
श्च स्वनुष्ठितः । सर्वमेवानपत्यस्य नपावनमहोच्यते ॥ २८ ॥ सोऽहमेवंविदित्वैतत्
प्रपश्यामिशुचिस्मिते । अनपत्यःशुभांल्लोकान्न प्राप्स्यामीतिचिन्तयन् ॥ २९ ॥ मृगा
भिशापान्नष्टं मेजननंह्यकृतात्मनः । नृशंसकारिणोभीरु यथैवोपहतंपुरा ॥ ३० ॥ इमेवै
बन्धुदायादाः षट्पुत्राधर्मदर्शने । षडेवाबन्धुदायादाः पुत्रास्तान् शृणुमेपृथे ॥ ३१ ॥
स्वयंजातःप्रणीतश्च परिक्रीतश्चयःसुतः । पौनर्भवश्चकानीनः स्वैरिण्यांयश्चजायते ॥

से एकान्त में कहा कि हे कुंती तुम इस विपत्ति काल में पुत्र उत्पन्न करने का प्रयत्न करो देखो धर्म कहने वाले लोग सदा कहतेहैं कि संतान तीनों लोकोंमें धर्म पूर्वक प्रतिष्ठा की देने वाली है यज्ञ, दान, तपस्या, और अच्छे प्रकार अनुष्ठान किये हुए नियम यह सब उनको पवित्र नहीं करतेहैं जिनके संतान नहीं होती।२८।हे सुन्दरी यह जानकर ही मैं शोचता हूं कि मेरे पुत्र पैदा न होने से मैं शुभ लोक को नहीं जासकूंगा पहले मैं बुरी आत्मा युक्त और निष्ठुर कार्य में दत्त चित्त था इस लिये मृग के शाप से मेरी संतान पैदा करनेकी शक्ति जाती रही धर्म शास्त्रों में कहा है कि छः प्रकार के पुत्र बन्धु के धन के हितकारी होते हैं और छः प्रकार के पुत्र उस के अधिकारी नहीं होते हे पृथामैं उन बारहप्रकार के पुत्रोंकी कथा कहताहूं सुनो।३१।औरस जो विवाहित स्त्रीसे अपने द्वारा उत्पन्न हो, प्रणीत जो अच्छे पुरुष के द्वारा अपने क्षेत्रमें पैदा हो परिक्रीत जो मोल लिये हुए वीर्य के द्वारा अपने क्षेत्रमें पैदाहो । पौनर्भव जो विधवा के गर्भ से दूसरे के द्वारा पैदाहो । कानीन जो कन्यावस्थामें पैदाहो । गूढ़ या कुंड जो स्वैरिणी के गर्भ से पैदाहो । दत्त जो पहिले पिता माता से दिया जाय क्रीत जो धन देकर

is of no use to them who have no children.28.Knowing this, O beautiful one, I believe that I can not attain heaven without children. From my being bad-natured and cruel in former times, I have been deprived of the power of producing offspring by the curse of the deer. Our scriptures say that there are six sorts of sons who may inherit the property and six others who cannot. I shall recount to you all the twelve sorts.31.*Auras*, a son by one's married wife. *Pranit*, produced in one's wife by a virtuous man. *Parikrit*, begotten by a man hired for the purpose. *Paunarbhav*, begotton in a window by another man. *Kanin*, born in maiden hood. Gurh or *Kund*, begotten in a hired woman. *Datta*, given by the parents. *Krit*, purchased for money. *Upkrit*, adopted. *Swayam Upagat* or self come, one offereing self as a son. *Gyatireta Suhor*, one born after marriage with the pregnant wife of a

॥ ३२ ॥ दत्तःक्रीतःकृत्रिमश्च उपगच्छेत् स्वयञ्चयः । सहोढोज्ञातिरेताश्च हीनयोनि-
धृतश्चयः ॥ ३३ ॥ पूर्वपूर्वतमाभावे मत्वालिप्सेतवैसुतम् । उत्तमादेवरात् पुंसः कां-
क्षन्तेपुत्रमापदि ॥ ३४ ॥ अपत्यंधर्मफलदं श्रेष्ठं विन्दन्तिमानवाः । आत्मशुक्रादपि
पृथे मनुःस्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥३५॥ तस्मात् प्रहेष्याम्यद्यत्वा हीनःप्रजननात्स्वयम् ।
सदृशाच्छ्रेयसोवात्वं विद्ध्यपत्यंयशस्विनि ॥ ३६ ॥ शृणुकुन्तियथामेतां शारदण्डा
यनींप्रति । सावीरपत्नीगुरुणा नियुक्तापुत्रजन्मनि ॥ ३७ ॥ पुष्पेणप्रयतास्नाता नि
शिकुन्ति चतुष्पथे । वरयित्वाद्विजंसिद्धं हुत्वापुंसवनेऽनलम् ॥ ३८ ॥ कर्मण्यवसि-
तेतस्मिन् सातेनैवसहावसत् । तत्रत्रीन्जनयामास दुर्जयादीन्महारथान् ॥३९॥

लियागयाहो । उपक्रीत जो कृत्रिमहो । स्वयम् उपागत अर्थात् मैं तुम्हारा पुत्रबना यह कहकर जो स्वयम आवे । ज्ञातिरेता सहोढ़ जो भाई आदिकी गर्भवती स्त्री के विवाह करने पर पैदाहो । हीनयोनिधृत जो हीन जाति की स्त्री से पैदा हो । इन बारह प्रकार के पुत्रों में पहला न बन पडे तो उससे पिछला, फिर उससे पिछला इसी प्रकार माता को पुत्रकी इच्छा करनी चाहिये ।३४। लोग आपत्कालमें उत्तम छोटे सगेभाई से पुत्र की कामना किया करते हैं । स्वायम्भुव मनु ने कहाहै कि मनुष्यगण अपने वीर्य के बिना दूसरे से भी धर्म फल देनेवाले श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करसक्ते हैं हे कुंती मैं इससमय संतान पैदा करने की शक्ति से रहित हूं इस लिये तुमको नियोग करता हूं कि तुम अच्छे पुरुष से यशस्वी पुत्र उत्पन्नकरो ।३६। हे पृथा शरदण्डायनकी कन्याकी कथा कहताहूं सुनो वोह वीर स्त्री पति से पुत्र पैदा करने को नियुक्त होकर ऋतु स्नान करके रात्रि को चौराहे पर खडी हुई और एक सिद्ध ब्राह्मण को वर्ण कर पुंसवन यज्ञमें अग्नि की आहुति चढाकर उस कर्म को पूरा करने के पश्चात् उनसे मिली और दुर्जय आदि तीन महारथियों का

---

brother etc. *Hin yoni dhrit*, born of low caste woman. Of the twelve sorts mentioned the first is the best. But in the absence of the first the subsequent one, and so on, should be the object of desire for a mother.34.In the time of difficulty, people look to a virtuous younger brother for offspring. *Manu* says that people may beget offspring by others if they cannot do so themselves. finding myself unable to produce a son, O Kunti, I give you permission to beget a son by a virtuous man.36.I tell you the story of Shardandayan's daughter who being ordered by her brave husband to beget a son, stood at night-fall at the place were the four roads met and engaging a good Brahman poured libation into the fire for the purpose of begetting a son. By her union with the Brahman she became the mother of three valliant sons, Dur-

तथात्वमपिकल्याणि ब्राह्मणात्तपसाधिकात् । मन्नियोगाद्यतक्षिप्र मपत्यो-
त्पादनंप्रति ॥ ४० ॥

इत्यादिपर्वाणि सम्भवपर्वाणि पाण्डुपृथासंवादे विंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥१२०॥

वैशम्पायन उवाच ॥ एवमुक्तामहाराज कुन्तीपाण्डुमभाषत । कुरूणामृषभं वीरं तदाभूमिपतिंपतिम् ॥ १ ॥ नमामर्हसिधर्मज्ञ वक्तुमेवंकथञ्चन । धर्मपत्नीमभिरतां त्वयिराजीवलोचने ॥ २ त्वमेवतुमहाबाहो मय्यपत्यानिभारत । वीरवीर्योपपन्नानि धर्मतोजनयिष्यसि ॥ ३ ॥ स्वर्गमनुजशार्दूल गच्छेयं सहितात्वया । अपत्यायचमांगच्छ त्वमेवकुरुनन्दन ॥ ४ ॥ नह्यहंमनसाप्यन्यं गच्छेयंत्वदृतेनरम् । त्वत्तःप्रतिविशिष्टश्च कोऽन्योऽस्तिभुविमानवः ॥ ५ ॥ इमांचतावद्धर्म्यात्मन् पौराणींशृणु

जन्म हुआ है कल्याणि इस प्रकार तुमभी मेरेनियोग से ऐसे किसी ब्राह्मण से जो मुझ से तपमें श्रेष्ठ हो शीघ्र संतान पैदा करने की चेष्टा करो ॥ ४० ॥

अध्याय १२१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे महाराज कुंती यह सुनकर गुरुवंशियों में श्रेष्ठ पति राजा पांडु से बोली कि हे धर्मज्ञ ! मैं आपकी धर्म पत्नी और प्रेम करने वालीहूँ इसलिये आप को मुझसे ऐसा कहना उचित नहीं है । हेवीर महाभुज ! धर्मानुसार आप ही मुझसे अपने वीर्य के द्वारा संतान उत्पन्नकरें । हे मनुष्यों में व्याघ्र ऐसाही होने से मैं आप के साथ स्वर्ग को जासकूंगी हे कुरुनंदन ! आप ही संतान के लिये मुझसे मिलें क्यों कि मैं मनसे भी दूसरे पुरुष से मिलना नहीं चाहती विशेषकर इस भूमंडल में ऐसा कौन है जो तुमसे ज्यादा श्रेष्ठहो॥५॥हेधार्मिक विशालाक्ष पहिले मैंने एक पौराणिक कथा सुनीथी उस

jaya and others. I therefore give you permission to secure offspring through a Brahman who should be superior to me in asceticism." 40.

CHAPTER CXXI.

Vaishampayan said that Kunti made the following reply to prince Pandu, "I am your loving wife. You should not expect this from me. You yourself should produce offspring in me, brave prince! This is the only way in which I can go with you to heaven. Therefore, O Prince of the Kuru dynasty, you are the only person that can prodace offspring in me I cannot think of having intercourse with another. Besides, where will I get a better one in the universe.5. I have heared a history of the Purans. It is as follows:—There was formerly, a virtuous prince in Kuru dynasty, named Vyushitashwa. At the commencement of the sacrifice by that virtuous brave king, Indra and other gods with

मेकथाम् । परिश्रुतां विशालाक्ष कीर्त्तयिष्यामिवामहस् ॥ ६ ॥ व्युषिताश्वइतिख्यातो
बभूव किल पार्थिवः । पुरापरमधर्मिष्ठः पूरोर्वंशविवर्द्धनः ॥ ७ ॥ तस्मिंश्चयजमाने
वै धर्मात्मनिमहाभुजे । उपागमंस्ततो देवाः सेन्द्रादेवर्षिभिःसह ॥ ८ ॥ अमाद्यदि
न्द्रःसोमेन दक्षिणाभिर्द्विजातयः । व्युषिताश्वस्यराजर्षेस्ततोयज्ञेमहात्मनः । देवा
ब्रह्मर्षयश्चैव चक्रुःकर्म्मस्वयंतदा ॥ ९ ॥ व्युषिताश्वस्ततोराजन् नतिमर्त्यान् व्यरो-
चत । सर्वभूतान्प्रतियथा तपनः शिशिरात्यये ॥ १० ॥ सविजित्यगृहीत्वाच नृप
तीन् राज सत्तमः । प्राच्यानुदीच्यान्पाश्चात्यान् दाक्षिणात्यानकालयत् ॥ ११ ॥
अश्वमेधेमहायज्ञे व्युषिताश्वःप्रतापवान् । बभूवसहिराजेन्द्रो दशनागबलान्वितः ॥
॥ १२ ॥ अप्यत्रगाथांगायन्ति येपुराणविदोजनाः । व्युषिताश्वेयशोवृद्धे मनुष्ये

को कहती हूँ सुनिये पूर्व कालमें कुरुवंश बढाने वाले परमधार्मिक व्युषिताश्व नामक एक प्रसिद्ध राजा थे उनधर्मात्मा महा भुज नरेश के यज्ञ आरंभ करने पर इन्द्रादि देवता और देवर्षि वहाँ आये ।८। उन महात्माराजर्षि व्युषिताश्वके यज्ञ में देवराज सोमरस पीकर और ब्राह्मण लोग दक्षिणा पाकर उन्मत्त के समान होगये वे देवगण और ब्रह्मर्षि गण स्वयम् कर्म पूरा करने लगे । हे राजन् ! जिसप्रकार हिम अंत होंने पर भगवान् आदित्य सब भूतों को पीछे छोडकर स्वयम् आगे बढकर प्रकाशमान् होते है वैसेही व्युषिताश्व सबको पीछे रखकर प्रकाशमानहुए । हे श्रेष्ठभूप वोहप्रतापीराजेन्द्र दशहाथीकी बराबर बल रखते थे इस अश्वमेध यज्ञ में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण इन चारों ओर के राजाओं को हराकर पकडलाये और अपने वशमें किया ।१२। हेकुरुकुल श्रेष्ठ पुराणकी कथा कहने वाले लोग कहते हैं कि राजा व्युषिताश्व ने समुद्रतक इस धरती को जीतकर सब लोकों का इस प्रकार पालन किया जैसे पिता औरस पुत्र को पालते हैं फिर उन्होंने बहुत से

devarshis came there.8. During the sacrifice Indra took so much of the *Som* juice and the Brahmans so large donations as to become like those intoxicated. The gods and Brahmarshis, themselves, gave a helping hand. As after the fall of snow the sun looks bright above all beings so, Vyushitashwa excelled all men in glory. The brave king had the strength of ten elephants. He conquered the princes of East, West, North and South and brought them as prisoners.12.Those learned in the Purans say that the glorious king Vyushitashwa brought the whole earth, to the Oceans verge, under sway and had a fatherly affection for his subjects. He performed various sacrifices distributing large quantities of som juice and wealth. King Kakshiwan's daughter, Bhadra, was his dear wife. She was of matchless beauty.16.The husband and wife loved each other dearly. The dear husband of Bhadra was attack-

न्द्रकुरूत्तम ॥ १३ ॥ व्युषिताश्वःसमुद्रान्तां विजित्येमांवसुन्धराम् । अपालयत्सर्व वर्णान् पितापुत्रानिवौरसान् ॥ १४ ॥ यजमानोमहायज्ञैर्ब्राह्मणेभ्यो धनंददौ । अन न्तरत्नान्यादाय सजहारमहाक्रतून् ॥ १५ ॥ सुषावचबहून्सोमान् सोमसंस्थास्ततान च । आसीत्काक्षीवतीचास्य भार्य्यापरमसम्मता । भद्रानाममनुष्येन्द्र रूपेणासदृशी भुवि ॥ १६ ॥ कामयामासतुस्तौच परस्परमितिश्रुतम् । सतस्यांकामसम्पन्नो यक्ष्म णासमपद्यत ॥ १७ ॥ तेनाचिरेणकालेन जगामास्तमिवांशुमान् । तस्मिन् प्रेते मनु- ष्येन्द्रे भार्य्यास्यभृशदुःखिता ॥ १८ ॥ अपुत्रापुरुषव्याघ्र विललापेतिनःश्रुतम् । भद्रापरमदुःखार्त्ता तन्निबोधजनाधिप ॥ १९ ॥ भद्रोवाच ॥ नारीपरमधर्मज्ञ सर्व्वा भर्तृविनाकृता । पतिंविनाजीवतिया नसाजीवतिदुःखिता ॥२०॥ पतिंविनामृतं श्रेयो नार्य्याःक्षत्रियपुंगव । त्वद्गतिंगन्तुमिच्छामि प्रसीदस्वनयस्वमाम् ॥ २१ ॥ त्वयाहीना क्षणमपि नाहंजीवितुमुत्सहे । प्रसादंकुरुमेराजन् नितस्तूर्णंनयस्वमाम् ॥ २२ ॥

ज्योतिष्टोमादि महायज्ञ कर के अगणित सोमलता निचोड़ी और ब्राह्मणों को बहुत धन दिया राजा काक्षिवान की कन्या भद्रा इनकी परम प्यारी स्त्रीथी हे मनुष्यों में इन्द्र भू मंडल में उस भद्राके समान अनुपम रूपवाली नारी कोई दूसरी नहीं थी।१६।नारी जिस प्रकार पतिकी कामना करती थी उस प्रकार पतिभी उस नारी के प्रेमी थे अनन्तर भद्रा के बड़े प्रेमी व्युषिताश्व को क्षयरोगने घेरा इस से वोह सूर्यकी समान् थोड़ेही काल में अस्त होगया उस भूपाल के परलोक सिधारने पर उनकी स्त्री शोक से बड़ी विकल हुई हे पुरुषोंमें व्याघ्ररूपी नरेश ! भद्रा ने अति दुःखी होकर जैसा शोक किया था वोह कहती हूँ सुनिये ।१९। भद्रा भर्ताको लक्षकर कहने लगी कि हेपरमधर्मज्ञ पति के बिना नारी निष्फल है जो नारी पतिके विना जीवन धारण करती है वह सदा दुःखी होकर मरीसी बनीरहती है । हेक्षत्रिय श्रेष्ठ पति के विना अबलाओं को मृत्युही मंगला दाई होती है इस लिये मैं तुम्हारे साथही जाना चाहती हूं प्रसन्न होकर मुझको साथ लेचलो

---

ed by pthisis which caused him to disappear within a short time, like the setting sun. After the death of the king his wife was much distressed by grief. I shall tell you how great was her sorrow at his death. 19. Addressing her (deceased) husband Bhadra said, " O virtuous being, a woman is useless without the husband. A woman, living after the death of her husband, passes her days in sorrow, like one dead ! O best among heroes, to die is far better for a woman after the death of husband ! I wish to follow you. Be pleased to take me along with you. ! I donot wish to live without you even for a moment ! Take me hence without delay. O lion among kings, I shall follow you unflinchingly over mountainous and level countries ! I shall become the prey of heart's

पृष्ठतोऽनुगमिष्यामि समेषुविषमेषुच । त्वामहंनरशार्दूल गच्छन्तमनिवार्त्तितुम् ॥२३॥
छायेवानुगताराजन् सततंवशवर्तिनी । भविष्यामिनरव्याघ्रनित्यंप्रियहितेरता ॥२४॥
अद्यप्रभृतिमांराजन् कष्टाहृदयशोषणाः । आधयोऽभिभविष्यन्ति त्वामृतेपुष्करेक्षण ।
॥ २५ ॥ अभाग्ययामयानूनं वियुक्ताःसहचारिणः । तेनमे विप्रयोगोऽयमुपपन्नस्त्व-
यासह ॥ २६ ॥ विप्रयुक्तातुयापत्या मुहूर्त्तमपिजीवति । दुःखंजीवतिसापापा नरक-
स्थेवपार्थिव ॥ २७ ॥ संयुक्ताविप्रयुक्ताश्च पूर्वदेहेकृतामया । तदिदं कर्मभिः पापैः
पूर्वदेहेषुसञ्चितम् ॥ २८ ॥ दुःखंमामनुसम्प्राप्तं राजंस्त्वद्विप्रयोगजम् । अद्यप्रभृत्यहंरा
जन् कुशसंस्तरशायिनी ॥ २९ ॥ भविष्याम्यसुखाविष्टा त्वद्दर्शनपरायणा । दर्शयस्व
नरव्याघ्र शाधिमामसुखान्विताम् । कृपणांनाथकरुणां विलपन्तींनरेश्वर ॥ ३० ॥

हे महाराज तुम्हारे विना मुझे क्षणभर भी जीनेकी इच्छा नहीं है अतएव प्रसन्न हो और विना बिलम्ब मुझको यहांसे लेजाओ हे राजों मैं व्याघ्र रूपी पुरुष चाहे सम भूमिहो चाहै रूखाहो हरस्थान में मैं तुम्हारे साथ पीछे २ जाऊंगी फिर न लौटूंगी हे नर व्याघ्र ! मैं तुम्हारी प्रिय और हित करने में सन्नद्ध और छाई समान पीछे जाती हुई सदा आज्ञा कारी रहूंगी तुम्हारे विना आज से कष्टदायी हृदयको सुखाने वाली चित्त पीड़ा मुझ को जकड़ लेगी।२५। मुझको निश्चयजान पड़ताहै कि जो एकत्र रहते हैं बुरे भाग्य वश मैंने उनको अलग कर दिया था उस पापही से मुझे यह भारी विपत आपड़ी है। हे पृथ्वीनाथ ! जो नारी पति से अलग होकर क्षणभर भी जीती रहती है वोह मानो नरक में पडी हुई कष्ट से दिन काटती है मैंने पूर्व जन्म में एक जगह मिली हुई दम्पतियों को एक दूसरे से अलग किया उस पापकर्म के कारण दुःख ने इस समय विरह का स्वरूप लेकर चढाई की है। हे भूपाल ! मैं आज से तुमको आँखो के सामने रख कर कुशाके विस्तरपर लेटी रहूंगी।२९। किसी सुखसे सुख न मानूंगी हेनाथ ! नर

desease from this day.25. I believe that unfortunately I separated two loving beings from each other and for that sin I am separated from you. A woman separated from her lord passes the life of hell torture. I separated lovingbeings from one another in my former life and for that I am attacked by the punishment in the form of separation. From this day I shall lie down on the bed of Kusha (grass scatterd on death bed)keeping you always before my eyes.29. I shall not sleep a sound sleep. O lord of men, command your weeping, unhappy, poor and obedient one !" Kunti said that the wife of Vyushitashwa was thus lamenting at the death bed of her husband, when a heavenly voice was heard to say, " Rise, O Bhadra, go, I grant you a boon. I shall produce an offspring in

कुन्त्युवाच । एवंबहुविधंतस्यां विलपन्त्यांपुनः पुनः । तंशवंसम्परिष्वज्य वाक्किलान्तर्हिताब्रवीत् ॥ ३१ ॥ उत्तिष्ठभद्रेगच्छत्वं ददानीहवरंतव । जनयिष्याम्यपत्यानि त्वय्यहंचारुहासिनी ॥ ३२ ॥ आत्मकीये वरारोहे शयनीयेचतुर्दशीम् । अष्टमींवाऋतुस्नाता संविशेथामयासह ॥ ३३ ॥ एवमुक्तातुसादेवी तथाचक्रेपतिव्रता । यथोक्तमेवतद्वाक्यं भद्रापुत्रार्थिनीतदा ॥ ३४ ॥ सातेनसुषुवेदेवी शवेनभरतर्षभ । त्रीन्शाल्वां श्चतुरो मद्रान सुतान भरतसत्तम ॥ ३५ ॥ तथात्वमपिमय्येवं मनसाभरतर्षभ । शक्तो जनयितुंपुत्रांस्तपोयोगबलान्वितः ॥ ३६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि व्युषिताश्वोपाख्याने

एकविंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२१ ॥

वैशम्पायनं उवाच । एवमुक्तस्तयाराजा तांदेवींपुनरब्रवीत् । धर्मविद्धर्मसंयुक्तमिदंवचनमुत्तमम् ॥ १ ॥ पाण्डुरुवाच । एवमेतत् पुराकुन्ति व्युषिताश्वश्चकारह । यथा

नाथ कातर होकर रोतीहुई इस दुःखी दीना अधीना को आज्ञा दो कुंती ने कहा कि इस प्रकार से व्युषिताश्व की स्त्री उस मुर्देसे लिपट कर बार २ भांति २ के विलाप कर रहीथी उस समय यह आकाश वाणी हुई कि हे भद्रे ! उठो, जाओ हे मधुर हासिनी, तुझको वर देताहूं कि मैं तुझ से संतान पैदा करूंगा हे सुन्दरि अष्टमी, चतुर्दशी में तू ऋतुस्नान कर अपने बिस्तर पर लेटना। ३३। यह आकाश वाणी सुनकर पुत्रचाहने वाली देवी पतिव्रता भद्रा उस के अनुसार लेटी रही हे भरतवंश में श्रेष्ठ उस देवीके तीन शाल्व और चार मद्र सब सात सन्तानें उत्पन्न हुईं हे भरत श्रेष्ठ। इस प्रकार आपभी तप और योग के बल से मुझ से संतान पैदा कर सक्ते हैं ॥ ३६ ॥

अध्याय १२२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि धर्मज्ञ राजा पांडु देवीसे यह बात सुनकर उस से यह धर्म युक्त वाक्य बोला कि हे कुंती तूने जोकहा ठीक है व्युषिताश्व ने ऐसाही किया था परन्तु

you. Be ready to meet me on your bed, after your monthly course, on the nighth of the eighth and fourteenth.'33. Hearing this heavenly voice, Bhadra, desirous of a son, laid herself down on her bed accordingly. She then became the mother of seven sons, three *Shalwas* and four *Madras*. O prince of the Bharat dynasty, you can, in a like manner, produce offspring in me by the power of your asceticism.36.

CHAPTER CXXII.

Vaishampayan said that the virtuous king Pandu having heard this from his wife gave the following reply suitable to the occ

त्वयोक्तंकल्याणि सह्यासीद्मरोपमः ॥ २ ॥ अथत्विदंप्रवक्ष्यामि धर्मतत्त्वंनिबोधमे ।
पुराणमृषिभिर्दृष्टं धर्मविद्भिर्महात्मभिः ॥ ३ ॥ अनावृताःकिलपुरा स्त्रियआसन्वरा-
नने । कामचारविहारिण्यः स्वतन्त्राश्चारुहासिनि ॥ ४ ॥ तासांव्युच्चरमाणानां कौ-
मारात्सुभगेपतीन् । नाधर्मोऽभूद्वरारोहे सहिधर्मःपुराभवत् ॥ ५ ॥ तंचैवधर्मंपौराणं
तिर्य्यग्योनिगताप्रजा । अद्याप्यनुविधीयन्ते कामक्रोधविवर्ज्जिताः ॥ ६ ॥ प्रमाणदृष्टो
धर्मोऽयं पूज्यतेचमहर्षिभिः । उत्तरेषुचरम्भोरु कुरुष्वद्यापिपूज्यते ॥ ७ ॥ स्त्रीणामनुग्र
हकरः सहिधर्म्मःसनातनः । अस्मिंस्तुलोकेन चिरान्मर्य्यादेयं शुचिस्मिते । स्थापिता
येनयस्माच्चतन्मेविस्तरतः शृणु ॥ ८ ॥ बभूवोद्दालकोनाम महर्षिरितिनःश्रुतम् । श्वे-
तकेतुरितिख्यातः पुत्रस्तस्याभवन्मुनिः ॥ ९ ॥ मर्य्यादेयंकृतातेन धर्म्यावैश्वेतकेतुना ।
कोपात्कमलपत्राक्षि यदर्थंतंनिबोधमे ॥१०॥ श्वेतकेतोःकिलपुरा समक्षंमातरंपितुः ।

धर्मज्ञ महात्मा महर्षियों ने पुराणों में धर्मका जोतत्त्व दिखाया है वोह तुमसे कहताहूँ सुनो हे सुन्दरि पूर्वकाल में स्त्रियों की कुछ रोक टोक न थी वे उनदिनों स्वतंत्र रहकर भोगकी आशा में घूमा करती थीं वे कुमारी दशा से व्यभिचार किया करती थीं इससे उनको अधर्म नहीं होता था क्योंकि वही पूर्व काल का धर्मथा । । हेसुन्दरी आजतक तिर्य्यग् योनि की प्रजा काम द्वेष से रहित उस पुराने धर्म से चलती है महर्षि लोगभी प्रमाण से दर्शाये हुए इस धर्मकी प्रशंसा किया करते थे हे सुन्दरि उत्तर कुरुओं में आज तक इसधर्मकी पूजा हो रही है क्योंकि वोह सनातन धर्म स्त्रियों पर कृपायुक्त है परन्तु थोडे कालसे इस विषय में वर्तमान नियमहो रहा है जिस हेतु और जिससे यह स्थापित हुआहै वोह विस्तार पूर्वक कहताहूँ सुनों हमने सुना है कि उद्दालक नाम एक महर्षि थे श्वेत केतु नामसे प्रसिद्ध उन का एकपुत्र था उस श्वेतकेतु ने ही क्रोधित होकर यह मर्यादा धर्मानुसार ठहराई है । हे पद्मनेत्रा उसका कारण यहहै।१०। कि एकसमय एकब्राह्मण श्वेतकेतुके पिताके सामने उस

sion. It is true what you say Kunti. Vyushitashwa was able to do so as he was god like. But I will tell you the opinion of great Rishis, embodied in the Purans, 'There was formerly no restraint for women. They roamed here and there, without restraint, in search of enjoyments They were spoilt from their maidenhood. And as it was a practice of those days it was not regarded a sinful act in them. 5. Lower animals act in the same manner up to this day without any sin attaching to them. The practice was then approved by Maharshis. The Kurus of the North act according to it even to this day as the old practice was pleasing to women. The ways are now altered. I shall tell you the history of this change. We hear that there was a Maharshi, named Uddalak. His son was known as Shwetketu. Being angry he has fixed this

जग्राहब्राह्मणःपाणौ गच्छावइतिचाब्रवीत् ॥ ११ ॥ ऋषिपुत्रस्ततःकोपं चकारामर्ष-चोदितः । मातरंतांतथादृष्ट्वा नीयमानांबलादिव ॥ १२ ॥ क्रुद्धंतन्तुपितादृष्ट्वा श्वेतकेतुमुवाचह । मातातकोपं कार्षीस्त्वमेषधर्मः सनातनः ॥ १३ ॥ अनावृताहिसर्वेषां वर्णानामङ्गनाभुवि । यथागावःस्थितास्तात स्वेस्वेवर्णेतथाप्रजाः ॥१४॥ ऋषिपुत्रोऽथ तंधर्मं श्वेतकेतुर्नचक्षमे । चकारचैव मर्य्यादामिमां स्त्रीपुंसयोर्भुवि ॥ १५ ॥ मानुषेषु महाभागे नत्वेवान्येषुजन्तुषु । तदाप्रभृतिमर्य्यादा स्थितेयमितिनःश्रुतम् ॥ १६ ॥ व्युच्चरन्त्याःपतिंनार्य्या अद्यप्रभृतिपातकम् । भ्रूणहत्यासमंघोरं भविष्यत्यसुखावहम् ॥ १७ ॥ भार्य्यांतथाव्युच्चरतः कौमारब्रह्मचारिणीम् । पतिव्रतामेतदेव भवितापातकंभुवि ॥ १८ ॥ पत्यानियुक्तायाचैव पत्नीपुत्रार्थमेवच । नकरिष्यतितस्याश्च भवि-

की माता का हाथ पकड़कर बोला कि आवो हम चलें अनन्तर ऋषि कुमार श्वेत केतु अन्य पुरुष के साथ माता को जाते देखकर दुःखी और क्रोधी हुए उसके पिता उद्दालक ने उसे क्रोध से कांपते हुए देखकर कहा ऐबेटा तुम क्रोधित मतहो सनातन धर्म ऐसाही है इस भू-मंडल में सब वर्णों की स्त्रियां विना रोक टोक सब से मिलती है ऐ बेटा गौके समान सब वर्णों की प्रजाभी अपने२ वर्णोंसे व्यवहारकरती हैं ।१४। ऋषिकुमार इसको न सह सका और भूमंडल में स्त्री पुरुषों की यह मर्यादा ठहराई । हे महाभाग हमने सुना है कि उस ने मनुष्य समाज में यह नियम ठहराया है और यह दूसरे प्राणियों पर नहीं चलता श्वेतकेतु ने यह नियम बनाया कि आजसे जो नारी पति को छोडकर व्यभि-चार करेगी उसको घोर दुःखदाई भ्रूणहत्याका पाप लगेगा और इस भूमंडल में जो पुरुष कौमारावस्थासे ब्रह्मचारिणी पतिव्रता प्यारी स्त्री को छोडकर दूसरे की स्त्री से मिलेगा उसकोभी वैसाही पापहोगा।१८।जोस्त्री पुत्र पैदा करनेके लिये पतिसे न मिलकर उसकी बात

limit. It happened thus:—(10. One day, a brahman, holding the hand of his mother before his father, asked her to go with him. The Rishi's son was very angry at his mother being taken by a stranger. His father, Uddalak, seeing him shake with anger, said, "Donot be angry. It is the stablished rule. The women of all classes of people meet others without any restraint. Like cows, people of all classes mix with their kind." 14. The rishi's son could not tolerate this freedom. He put a restraint to it. But other beings are not affected by the restraint. (Shwetketu stablished a rule from that time that a woman cohabiting with anyone, other than her husband, would commit the sin of slaying the embryo.) Men too would become guilty of the same if they met another's wife, leaving their own dear and chaste ones. 18. Shwetketu, the son of Uddalak stablished this custom which has become a law. We

ष्यतितदेवहि ॥ १९ ॥ इतितेनपुराभीरु मर्य्यादास्थापिताबलात् । उद्दालकस्यपुत्रेण धर्म्मांवैश्वेतकेतुना ॥ २० ॥ सौदासेनचरम्भोरु नियुक्तापुत्रजन्मनि। मदयन्तीजगामर्षिं वसिष्ठमितिनःश्रुतम् ॥ २१ ॥ तस्माल्लेभेच सापुत्रमश्मकं नामभाविनी । भार्य्या कल्माषपादस्यभर्त्तुः प्रियचिकीर्षया ॥ २२ ॥ अस्माकमपितेजन्म विदितंकमलेक्षणे। कृष्णद्वैपायनाद्भीरु कुरूणांवंशवृद्धये ॥ २३ ॥ अतएतानिसर्वाणि कारणानिसमीक्ष्य वै । ममैतद्वचनंधर्म्यं कर्त्तुमर्हस्यनिन्दिते ॥ २४ ॥ ऋतावृतौराजपुत्रि स्त्रियाभर्त्तापतिव्रते । नातिवर्त्तव्यइत्येवं धर्मं धर्मविदोविदुः ॥ २५ ॥ शेषेष्वन्येपुकालेषु स्वातन्त्र्यं स्त्रीकिलार्हति । धर्ममेवंजनाःसन्तः पुराणंपरिचक्षते ॥ २६ ॥ भर्त्ताभार्य्यांराजपुत्रि धर्म्यंवाधर्म्यमेववा । यद्ब्रूयात्तत्तथाकार्य्य मितिवेदविदोविदुः ॥ २७ ॥ विशेषतः पुत्रगृद्धी हीनःप्रजननात्स्वयम् । यथाहमनवद्याङ्गि पुत्र दर्शनलालसः ॥ २८ ॥ तथा

न मानेगी उसको भी वही पापलगा उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतुने बल पूर्वक धर्मानुसार यह मर्य्यादा ठहराई थी हे सुन्दरि ! हमने सुना है कि सौदासकी स्त्री मदयंती पति की आज्ञा से पुत्रके लिये महर्षि वसिष्ठ के पास गई और उन से अश्मक नामकपुत्र उत्पन्न किया उस भामिनी ने भर्ता का प्रिय कार्य करने के लियेही ऐसा कियाथा।२२।हेपद्मनेत्रे तुम यह भी जानतीहो कि कुरुओं का वंश बढ़ाने के लिये भगवान् कृष्णद्वैपायन से हम लोगों का जन्म हुआ इस लिये हे सुन्दरी ! इन सब विषयों पर अच्छी प्रकार विचार करके मेरी इस धर्मानुसार बात को मानना उचित है हे पतिव्रता राज पुत्री ! धर्मजानने वाले पुरातन धर्मकी यही व्याख्यातो करते हैं कि भार्या हर ऋतु में पतिको छोड़ अन्यत्र न जाय शेष अन्य समय मे वह स्वतंत्र होसक्ती है।२६।परन्तु हेराजपुत्री वेद जानने वाले यहभी कहते हैं कि चाहें धर्महो वा अधर्म पति भार्या से जो कहे भार्याको वोह अवश्य मानना

have also heard that Madyanti, the wife of Saudas, by her husband's order went to Bashisth for the purpose of getting children and became the mother of a son, named Ashmak. She did so to please her husband. 22. You also know that the virtuous Krishna-dwaipayan, to perpetuate the line of Kurus, gave us birth. Therefore, O beautiful one, you must consider well the circumstances related to you and do as I tell you. O virtuous princess, those learned in the religious law say no more than that a woman in her season should go to none else besides her husband. She is therefore free at other times. 26. But, O princess, the scholars of the Vedas also say that a wife should obey her husband in all things whether lawful or not. Besides. I have no power of production left and do still desire the birth of a son. O virtuous one, with the desire of seeing a son I raise this hand of mine, with beautiful red fingers, to my

शिरस्यभ्युद्यतोऽञ्जलिः ॥ २९
रक्तांगुलियुतः पद्मपत्रनिभः शुभे । प्रसादार्थं मयाते ऽयं शिरस्यभ्युद्यतोऽञ्जलिः । पुत्रान् गुणसमायुक्तानुत्पादयितुमर्हसि
मन्नियोगात् सुकेशान्ते द्विजातेस्तपसाधिकात् । पुत्रान् गुणसमायुक्तानुत्पादयितुमर्हसि । एवमुक्ता
त्वत्कृतेऽहंपृथुश्रोणि गच्छेयंपुत्रिणांगतिम् ॥ ३० ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्ता
ततः कुन्ती पाण्डुंपरपुरंजयम् । प्रत्युवाचवरारोहा भर्त्तुःप्रियहितेरता ॥ ३१ ॥ पितृवे
श्मन्यहंबाला नियुक्ता तिथिपूजने । उग्रंपर्य्यचरंतत्र ब्राह्मणंशंसितव्रतम् ॥ ३२ ॥
निगूढनिश्चयंधर्मे यन्तंदुर्वाससंविदुः । तमहंसंशितात्मानं सर्वयत्नैरतोषयम् ॥ ३३ ॥
सयेऽभिचारसंयुक्तमाचष्ट भगवान्वरम् । मन्त्रंत्विमंचमे प्रादादब्रवीच्चैवमामिदम् ॥
॥३४॥ यंयंदेवंत्वमेतेन मन्त्रेणावाहयिष्यसि । अकामोवासकामोवा वशंतेसमुपैष्यति
॥ ३५ ॥ तस्यतस्य प्रसादात्ते राज्ञिपुत्रोभविष्यति । इत्युक्ताहंतदातेन पितृवेश्मनि
भारत ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणस्यवचस्तथ्यं तस्यकालोऽयमागतः । अनुज्ञातात्वया देव

चाहिये । हे सुन्दरि ! मेरी पैदा करने की शक्ति जाती रही परन्तु पुत्र पानेकी इच्छा है इस लिये हे शुभे ! मैं पुत्र देखने की इच्छा से तुमको प्रसन्न करने के लिये लाल उँगलियों से सुशोभित इस पद्मपत्र समान हथेली को सिरपर उठाताहूं हे सुकेशिनी तुम मेरी आज्ञा अनुसार अच्छी तपस्या वाले ब्राह्मण से गुणवंत पुत्र उत्पन्न करो तुम से मैं पुत्रवान जनोंकी गति लाभ करूंगा ।३०। पतिके प्रिय कार्य और हित चाहने वाली सुन्दरी कुंती शत्रुपुर नाशी पति पांडुकी यह बात सुनकर बोली कि बालेपन में मैं पिता के घर में अतिथियोंकी सेवा किया करती थी उन दिनों प्रशंसित व्रतवाले ब्राह्मणों की भलेप्रकार सेवा किया करती थी एक समय धर्म के गूढ़ तत्व जानने वाले प्रसिद्ध जितेन्द्रिय महर्षि दुर्वासा वहाँ आये मैंने उनको सबप्रकारके प्रयत्न से संतुष्ट किया उन भगवानने मुझको अभिचारयुक्त मंत्रदेकर कहा।३४।कि तुम इसमंत्रसे जिनर देवताओंको बुलाओगी वोह चाहैं किसी काम में लगेहों वा न हों उसीक्षण तुम्हारे वश

forehead (i. e., salute you) to please you. I request you to produce a son by a virtuous ascetic. I shall gain the bliss peculiar to fathers through you. 30. Wishing to please her husband, Kunti, having heard the words of the brave Pandu, said, " In my childhood I used to attend upon the guests. I pleased the virtuous Brahmans by my good services. One day the great Rishi Durvasa, famous for his self control and great learning came there. I pleased him with every possible effort. The Rishi gave me the boon of invoking gods at pleasure and getting offspring from them.34.The Rishi said that the gods invoked would come to me at once. A Brahman never tells lies. The time has now come to bring it into practice. I shall, with your permission

नाह्वयेयमहंनृप ॥ ३७ ॥ तेनमन्त्रेणराजर्षे यथास्यान्नौप्रजाहिता । आवाहयामिकं देवंब्रूहिसत्यवतांवर । त्वत्तोऽनुज्ञाप्रतीक्षांमां विद्ध्यस्मिन्कर्मणिस्थिताम् ॥ ३८ ॥ पाण्डुरुवाच । अद्यैवत्वंवरारोहेप्रयतस्व यथाविधि । धर्ममावाहयशुभे सहिलोकेषु पुण्यभाक् ॥ ३९ ॥ अधर्मेणननोधर्मः संयुज्यातिकथंचन लोकश्चापिवरारोहे धर्मोऽय मितिमन्यते ॥ ४० ॥ धार्मिकश्चकुरूणांस भविष्यतिनसंशयः । धर्मेणचापिदत्तस्यना- धर्मेरंस्यतेमनः ॥ ४१ ॥ तस्माद्धर्मंपुरस्कृत्य नियतात्वंशुचिस्मिते । उपचाराभिचारा भ्यां धर्ममावाहयस्ववै ॥ ४२ ॥ वैशम्पायन उवाच । सातथोक्तातथेत्युक्त्वा तेनभ- र्त्रावरांगना । अभिवाद्याभ्यनुज्ञाता प्रदक्षिणमवर्त्तत ॥ ४३ ॥

इत्यादिपर्वाणि सम्भवपर्वणि कुन्तीपुत्रोत्पत्त्यनुज्ञाने
द्वाविंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२२ ॥

में आजायँगे और उन देवताओं की कृपा से तुम्हारे पुत्र होंगे । हे भारत ! पिता के घर में दुर्वासा ने मुझ से ऐसा कहाथा । हे भूपाल ! ब्राह्मणकी बात झूंठी नहीं होती अब उसका समय आगया है इस लिये हे राजर्षि ! आपकी आज्ञाहो तो उस मंत्र से किसी देवताको बुला सक्ती हूं इस से हमें हित करनेवाला पुत्र प्राप्तहोगा हे सत्य कहने वाले बतलाओ इससमय किस देवताको बुलाऊं आपही की आज्ञा से मैं इस कार्य में दत्तचित्तहोती हूं ।३८।पांडुने कहा । हे सुन्दरि ! तुम आजही इसबातका यथाविधि प्रयत्न करो हे शुभे धर्मको बुलाओ क्योंकि वोह देवताओं में पुण्यात्मा है । हे सुन्दरि ! धर्म हमको किसी प्रकार अधर्म में न डालेगा और लोगभी समझेंगे कि यह कार्य धर्मयुक्त हुआ है इस में संदेह नहीं कि धर्मका दियाहुआ पुत्र कुरुओंमें धार्मिकहोगा और उसका मन कभी अधर्मकी ओर न झुकेगा इस लिये हे सुन्दरि तुम संय्यतहोकर और धर्मको आश्रयकर अभिचार और उपचारसे धर्महीको बुलाओ । वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर उस श्रेष्ठ नारी कुंतीने पतिकी यह बातसुन और पांवछूकर उसकीआज्ञा मानली ।।४३।।

invoke some god by that method and he will give us a son. Let me know which of the gods I shall invoke as I am induced by you to perform it."38. Pandu replied, "Manage to do the thing to day. Invoke Dharm who is the most virtuous of the gods. Dharm will not do anything against his principles. People will not say that we have acted against the principles of virtue. There is no doubt that a son given by Dharm will make a virtuous Kaurav and his mind cannot go astray. Therefore, O beautiful one, make up your mind to invoke him." Vaishampayan said that the good woman Kunti having heard the word of her husband accepted it with due respect.

वैशम्पायन उवाच । सम्वत्सरधृतेगर्भे गान्धार्य्याजनमेजय । आह्वयामासवै कुन्ती गर्भार्थंधर्ममच्युतम् ॥ १ ॥ सावलिंत्वरितादेवी धर्मायोपजहारह । जजापवि-धिवज्जप्यं दत्तंदुर्वाससापुरा ॥ २ ॥ आजगामततोदेवो धर्मोमन्त्रवलात्ततः । विमा-नेसूर्य्यसंकासे कुन्तीयत्रजपस्थिता ॥ ३ ॥ विहस्यतांततोव्रूयाः कुन्तिकिन्तेददाम्यहम्। सातंविहस्यमानापि पुत्रंदेह्यव्रवीदिदम् ॥ ४ ॥ संयुक्तासाहिधर्मेण योगमूर्तिधरेणह। लेभेपुत्रंवरारोहा सर्वप्राणभृतांहितम् ॥ ५ ॥ ऐन्द्रेचन्द्रसमायुक्ते मुहूर्तेऽभिजितेऽष्टमे। दिवामध्यगतेसूर्य्ये तिथौपूर्णेऽतिपूजिते ॥ ६ ॥ समृद्धयशसंकुन्ती सुषावप्रवरंसुतम्। जातमात्रेसुतेतस्मिन् वागुवाचाशरीरिणी ॥ ७ ॥ एषधर्मभृतांश्रेष्ठो भविष्यतिनरोत्तमः । विक्रान्तःसत्यवाक्चैव राजापृथ्व्यांभविष्यति ॥ ८ ॥ युधिष्ठिरइतिख्यातः पाण्डोः

अध्याय १२३ ॥

वैशम्पायन ने कहा हेजनमेजय ! जब गांधारी ने वर्षभर गर्भ धारण किया था तब कुंती ने गर्भ के लिये अक्षय धर्म को बुलाकर शीघ्र उनकी पूजाकी और दुर्वासा ने जो मंत्र दिया था उसको यथा विधि जपने लगी मंत्रके प्रभाव से धर्मराज सूर्य सदृश यान में चढकर उस स्थानमें जहाँ कुंतीजपकररही थी ।३। आये और हँसतेहुए कुंतीसे कहा कि हे कुंती कहो तुमको क्या देनाहोगा कुंती ने कुछ हँसकर कहा किमुझको पुत्रदीजिये फिर सुंदरी कुंती ने योगी का स्वरूप धारण किये हुए धर्म से मिलकर सब जीवों का हितकर ने वाला पुत्र प्राप्त किया इसके पश्चात् कार्तिक महीने की अति प्रशंसित पूर्ण तिथि अर्थात् शुक्लापंचमी को चन्द्र युक्त ज्येष्ठा नक्षत्र में अभिजित मुहूर्त में दुपहर के समय कुंती ने अति यशवंत एक श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्नकिया उस पुत्रके जन्म लेतेही आकाशवाणी हुई ।७। कि पांडुका यह पहला पुत्र धर्मशील जनों में श्रेष्ठ विक्रमी, नरों में उत्तम, सत्य कहने वाला, भूमंडल का एकही

CHAPTER CXXIII.

Vaishampayan said to Janmejaya that during the pregnancy of Gandhari Kunti invoked Dharm for the purpose of securing an offspring. She invoked and worshipped Dharm in the manner prescribed by Durvasa. At length Dharm seated in a caariage like that of the sun came to the place where Kunti was and said to her simling, "What will you have, Kunti ?" Kunti asked him the born of a son.4 By the grace of Dharm in the habit of a *Yogee* (ascetic), Kunti obtained a virtuous son. She then brought forth a glorious son at noon of the fifth day of Kartik in the moonlit fortnight. At the birth of the child a voice from heaven was heard saying, 'This first son of Pandu will be virtuous, best of men, brave, truthfull, the sole monarch of the earth, praised in the three worlds, glorious, famous and vow observing

प्रथमजःसुतः । भवितापथितोराजा त्रिषुलोकेषुविश्रुतः ॥ ९ ॥ यशसातेजसाचैव व्रतेनच समन्वितः । धार्मिकंतंसुतं लब्ध्वा पाण्डुस्तांपुनरब्रवीत् ॥ १० ॥ प्राहुःक्षत्रं बलज्येष्ठं बलज्येष्ठंसुतंवृणु । ततस्तथोक्ताभर्त्रा तु वायुमेवाजुहावसा ॥ ११ ॥ ततस्ता मागतो वायुर्मृगारूढोमहाबलः । किन्तेकुन्तिददाम्यद्य ब्रूहियत्तेहृदिस्थितम् ॥ १२ ॥ सासलज्जाविहस्याह पुत्रंदेहिसुरोत्तम । बलवन्तंमहाकायं सर्वदर्पप्रभञ्जनम् ॥ १३ ॥ तस्माज्जज्ञेमहाबाहुर्भीमो भीमपराक्रमः । तमप्यतिबलंजातं वागुवाचाशरीरिणी ॥ ॥ १४ ॥ सर्वेषांबलिनांश्रेष्ठो जातोऽहमितिभारत । इदमत्यद्भुतं चासीज्जातमात्रेवृकोदरे ॥ १५ ॥ यदंकात् पतितोमातुः शिलांगात्रैर्व्यचूर्णयत् । कुन्तीव्याघ्रभयोद्विग्ना सहसोत्पतिताकिल ॥ १६ ॥ नान्वबुध्यतसंसुप्तमुत्संगेस्वे वृकोदरम् । ततःसवज्रसंघातः कुमारोन्यपतद्गिरौ ॥ १७ ॥ पपाततेनशतधा शिलागात्रैर्विचूर्णिता । तां शिलां

अधिकारी, तीनों लोकोंमें प्रशंसित, यशवन्त, तेजवान, व्रतशील, युधिष्ठिर नाम से प्रसिद्धहोगा पांडुने वोह् धार्मिक पुत्र पाकर कुंतीसे कहा कि पंडितलोग क्षत्रियको बल में श्रेष्ठ कहते हैं इसलिये तुम ऐसे पुत्रकी प्रार्थना करो जो बल में प्रधानहो कुंतीने पतिकी आज्ञासे पवनदेव को बुलाया।११। और महाबली पवनदेव मृग पर चढकर उसके पास आये और कहा कि हे कुंती तुम्हें क्या दूं तुम्हारी जो इच्छाहो सो कहो कुंती लज्जासे मुँह नीचाकर छ हँसकर बोली कि हे देवोत्तम मुझको बडा शरीरधारी, महाबली, सबको हरानेवाला एक पुत्र दीजिये पवनदेवकी कृपासे पराक्रमी भीमका जन्महुआ। हेभारत ! उसमहाबली पुत्र के जन्म लेतेही आकाशवाणी हुई कि यह जन्म लियाहुआ बालक सम्पूर्ण बलियोंमें श्रेष्ठहोगा।१४। वृकोदरके जन्मलेतेही एक आश्चर्य घटनाहुई कि उसने माताकी गोदसे गिरकर देहसे पत्थरको तोड़डाला कुंती बाघ के भयसे एकाएक गिरपड़ी उसको याद नहीं रहा कि उसकी गोदमें वृकोदर सोता है इस लिये वोह वज्रसमान शरीरधारी पहाडपर गिरपडा उसकी देहकी चोटसे पत्थर सैकडों भागों में चूर्णहोगया उस

and will be named Yudhishthir. Having got that son, Pandu again said to Kunti that learned men regard Kshatryas noted for their strength. You should, therefore, ask a son who should be first among those possessing strength." Having heard this from her husband, Kunti invoked Pavan. 11. The mighty *Pavan* came to her on the back of a deer and said, "What should I give you, Kunti ? Let me know your desire," With downcast head and with a smile Kunti said, "O best among gods, give me a son large sized, strong and brave." By the grace of Pavan, Bhim was born. At his birth a heavenly voice said, "This child will be the foremost in strength."14. A wonderful event occured soon after. The child fell down from the lap of the mother and broke a stone with its

चूर्णितांदृष्ट्वा पाण्डुर्विस्मयमागतः ॥ १८ ॥ यस्मिन्नहनिभीमस्तु जज्ञेभरतसत्तम। दुर्य्योधनोऽपितत्रैव प्रजज्ञेवसुधाधिप ॥ १९ ॥ जातेवृकोदरेपाण्डुरिदं भूयोऽन्वचिन्तयत्। कथंनुमेवरःपुत्रो लोकश्रेष्ठोभवेदिति ॥ २० ॥ दैवेपुरुषकारेच लोकोऽयं संप्रतिष्ठितः। तत्रदैवन्तुविधिना कालयुक्तेनलभ्यते ॥ २१ ॥ इन्द्रोहिराजादेवानां प्रधानइतिनःश्रुतम्। अप्रमेयबलोत्साहो वीर्य्यवानमितद्युतिः ॥ २२ ॥ तंतोषयित्वातपसा पुत्रंलप्स्येमहाबलम्। यंदास्यतिसमेपुत्रं सवरीयान् भविष्यति॥ २३ ॥ अमानुषान्मानुषांश्च संग्रामेसहनिष्यति। कर्मणामनसावाचा तस्मात्तप्स्येमहत्तपः ॥ २४ ॥ ततः पाण्डुर्महाराजो मन्त्रयित्वामहर्षिभिः। दिदेशकुन्त्याःकौरव्यो व्रतंसाम्वत्सरंशुभम् ॥ २५ ॥ आत्मनाच महाबाहुरेकपादस्थितोऽभवत्। उग्रंसतपआस्थाय परमेणसमाधिना ॥ २६ ॥ आरिराधयिषुर्देवं त्रिदशानांतमीश्वरम्। सूर्य्येणसहधर्मात्मा पर्य्यत

आश्चर्य लीला को देखकर पांडुने अचरज माना हे भरतश्रेष्ठ जिस दिन भीम ने जन्म लिया उसी दिन पृथ्वीनाथ दुर्योधनका जन्महुआ वृकोदर के जन्महोने पर पांडु फिर शोचनेलगा कि क्योंकर मेरे एकप्रधान लोक श्रेष्ठ पुत्र पैदाहो यह भूमंडल दैव और पुरुषोंसे प्रतिष्ठित है उनमें से दैवकालके अनुसार विधिवश आताहै सुनाजाताहै।२१। कि इन्द्र देवताओं का राजा और प्रधानहै वोह अपरिमित और उत्साहयुक्त है और उसका वीर्य और पुरुषार्थ भी अपरिमित है यदि तपस्या से उसको प्रसन्न करूं तो महाबली पुत्र पासकूंगा और उसका दियाहुआ पुत्र अवश्यही सब से श्रेष्ठहोगा और रणस्थल में मर्त्यलोक और आमर्त्यलोक वालों को हरा सकेगा सो मैं कर्म और मन वाणीसे कठोर तप करूंगा फिर कौरवनन्दन महाराज पांडुने महर्षियोंसे परामर्ष करके कुंती को यह आज्ञादी कि बर्षभर में पूर्णहोनेवाला व्रतकरै।२५। और आपभी स्वर्गनाथकी उपासनाकी इच्छा से परमसमाधि से कठोर तपस्या को आश्रय कर एक पांवसे खडेहो सूर्यकी धूप में उदयकाल से अस्तकालतक तपने लगे बहुतकाल बीतने पर देवराज ने उनके पास

body. Kunti fell down by the fear of a lion. She did not remember that the child slept in her lap. So the child with its body hard like the adament, fell down on the mountain and by the blow of his body the stone was broken into a hundred fragments. Pandu was much amazed at this strange sight. Bhim and prince Duryodhan were born the same day. After the birth of Bhim, Pandu again reflected in his mind how to secure a son of world wide fame, "This earth" he said within himself, "is honored by brave men. A god is in time produced among the heroes.21. I hear that Indra is the chief of gods. He has an immense strength and energy,. His bravery, as well, is unlimited. I shall be able to get a very powerful son if I can please him by ascetecism

प्यतभारत । तत्वकालेनमहता वासवःप्रत्यपद्यत ॥ २७ ॥ शक्र उवाच । पुत्रंतवप्रदा स्यामि त्रिषुलोकेषुविश्रुतम् । ब्राह्मणानांगवांचैव सुहृदांचार्थसाधकम् ॥ २८ ॥ दुर्हृदांशोकजननं सर्वबान्धवनन्दनम् । सुतंतेऽग्र्यंप्रदास्यामि सर्वामित्रविनाशनम् ॥ ॥ २९ ॥ इत्युक्तःकौरवोराजा वासवेनमहात्मना । उवाचकुन्तींधर्मात्मा देवराजवचः स्मरन् ॥ ३० ॥ उदर्कस्तवकल्याणि तुष्टोदेवगणेश्वरः । दातुमिच्छतितेपुत्रं यथासङ्कल्पितंत्वया ॥ ३१ ॥ अतिमानुषकर्माणं यशस्विनमरिन्दमम् । नीतिमन्तं महात्मानमादित्यसमतेजसम् ॥ ३२ ॥ दुराधर्षं क्रियावन्तमतीवाद्भुतदर्शनम् । पुत्रंजनयसुश्रोणिधाम क्षत्रियतेजसाम् । लब्धःप्रसादो देवेन्द्रात्तमाह्वय शुचिस्मिते ॥ ३३ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवमुक्तातत: शक्रमाजुहाव यशस्विनी । अथाजगामदेवेन्द्रो जनयामासचार्जुनम् ॥ ३४ ॥ जातमात्रेकुमारेतु वागुवाचाशरीरिणी । महागम्भीरनिर्घोषा

आकर कहा कि मैं तुमको तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध एक श्रेष्ठ पुत्र दूंगा वोह पुत्र गौ, ब्राह्मण और पित्रों का हित करनेवाला शत्रओं को शोक पहुँचानेवाला सब बान्धवों को आनन्द देनेवाला और सम्पूर्ण ।२८। शत्रुकुलका नाश करनेवाला होगा महात्मा इन्द्र के यहबात कहनेपर धर्मात्मा कौरव देवराजकी उस बातको स्मरणकर कुंती से बोले कि हे कल्याणि तुम्हारा कर्म सफलहुआ देवराज प्रसन्नहोकर तुम्हें संकल्पित पुत्र देना चाहते हैं । हेसुन्दरि ! अब एक और यशस्वी शत्रुको मारनेवाला, नीतियुक्त महात्मा सूर्यसमान तेज पूर्ण न हारनेवाला, क्रियावान, देखनेमें अद्भुत, क्षत्रिय तेज से पूरित अद्वितीय कीर्त्ति वाला पुत्र उत्पन्न करो हे सुन्दरि मैंने देवराजको प्रसन्न कर लियाहै तुम उनको बुलाओ ।३३। वैशम्पायन ने कहा कि यशस्विनी कुंती ने यह सुनकर इन्द्रको बुलाया देवराज ने आकर अर्जुन को जन्म दिया कुमारके जन्मलेते ही बड़े गंभीर शब्दसे आकाश गूंजकर

The son given by him will no doubt be the best and will be able to vanquish men and gods in battle. I shall therefore practice severe asceticism by my deeds, mind and world." At length, in consultation with the great rishis, Pandu ordered Kunti to engage in observing a vow for one year. As for himself he practiced severe asceticism standing, every day, from morning till evening in the sun shine, on one leg. After a long time Indra came to him and promised to give him a son that would be famous in the three worlds, doing good to cows, Brahmans and friends, destroyer of enemies, and the joy his kinsmen. 28. When Indra had departed after saying these words, Pandu told Kunti that she had won her desire in as much as Indra had promised to give her the wished for son. Pandu said, " You will now bring forth a son that will be glorious, the dertroyes of his enemies, learned, good.

नभोनादयतीतदा ॥ ३५ ॥ शृण्वतांसर्वभूतानां तेषांचाश्रमवासिनाम् । कुन्तीमाभा
ष्यविष्पष्टमुवाचेदं शुचिस्मिताम् ॥ ३६ ॥ कार्त्तवीर्य्यसमःकुन्ति शिवतुल्यपराक्रमः ।
एषशक्रइवाजय्यो यशस्तेप्रथयिष्यति ॥ ३७ ॥ अदित्याविष्णुनाप्रीतिर्यथाभू-
दभिवर्द्धिता । तथाविष्णुसमःप्रीतिं वर्द्धयिष्यतितेऽर्जुनः ॥ ३८ ॥ एषमद्रान्वशेकृत्वा
कुरूंश्चसहसोमकैः । चेदिकाशिकुरूषांश्च कुरुलक्ष्मीं वहिष्यति ॥ ३९ ॥ एतस्य
भुजवीर्य्येण खाण्डवेहव्यवाहनः । मेदसासर्वभूतानां तृप्तिंयास्यतिवैपराम् ॥ ४० ॥
ग्रामणीश्च महीपालानेष जित्वामहाबलः । भ्रातृभिःसहितोवीर त्रीन्मेधानाहरिष्य
ति ॥ ४१ ॥ जामदग्न्यसमःकुन्ति विष्णुतुल्य पराक्रमः । एषवीर्य्यवतांश्रेष्ठो भवि
ष्यतिमहायशाः ॥ ४२ ॥ एषयुद्धे महादेवं तोषयिष्यतिशङ्करम् । अस्त्रंपाशुपतंनाम
तस्मात्तुष्टादवाप्स्यति ॥ ४३ ॥ निवातकवचानाम दैत्याविबुधविद्विषः । शक्राज्ञया

आकाशवाणी हुई उससे सम्पूर्ण आश्रमके रहनेवालों के कान में सुन्दरी कुंती की पुकार सहित यह सुनपडा कि हेकुंती कार्त वीर्य सदृश वीर्यवान, शिविसमान पराक्रमी, इन्द्र समान पराजित तह कुमार सर्वत्र तुम्हारा यश फैलावेगा।३७। उपेन्द्रसे जिसप्रकार अदिति की प्रीति वढ़ीथी वैसेही इससे तुम्हारी प्रीतिवढेगी यह कुमार भद्र, कुरु, सोमक, चेदिकाशि, करुष आदि देशों को वशमें लाकर कुरुवंशकी राजलक्ष्मी को धारण करेगा इस पुत्रके भुजवीर्य से अग्नि देव खांडवप्रस्थ में सब भूतों के मेधसे बडा संतोष प्राप्तकरेगा ! यह महावली वीर्य पुरुष भाइयों सहित सम्पूर्ण महीपालों को जीतकर तीनबार अश्वमेध यज्ञ करैगा हे कुंतीयह अति यशवंत पुत्र जामदग्न्य और विष्णु समान् पराक्रमी और वीर्यवान जनों में श्रेष्ठ होगा यह युद्धमें महादेव शंकरको प्रसन्नकर उनसे पाशुपत अस्त्र प्राप्तकरैगा४३यह पुरुषश्रेष्ठ सम्पूर्ण दिव्यास्त्र सीखकर विगडी हुई लक्ष्मीको फिर सुधारेगा कुंतीने पुत्रके विषयमें यह आश्चर्य

glorious like the sun, unconquerable, energetic, wonderful to look at, full of Kshatrya mettle, and matchless. I have gratified Indra. You may invoke him." Vaishampayan said that having heared this Kunti invoked Indra who became the progenitor of Arjun. At the prince's birth a loud heavenly voice was heard to say throughout the hermitage, "O Kunti, this son of yours will be as powerful as Kartvirya, energetic as Shivi, famous, and unconquerable as Indra.37. As Upendra was the pride of his mother Aditi so, like Upendra, this son will be the object of your great affection. This prince will conquer and add to the dominions of Kurus, the countries of Bhadra, Kuru, Somak, Chedi Kashi, Karush and others. By the powerful arms of this son Agni in Khandav-prasth will be gratified by eating up the animals of the forest. This brave man, with his brothers, having conquered all the great

महाबाहुस्तान् वधिष्यति ते सुतः ॥ ४४ ॥ तथादिव्यानि चास्त्राणि निखिलेनाहरिष्यति । विप्रनिष्टांश्रियं चायमाहर्त्ता पुरुषर्षभः "४५" एतामत्यद्भुतांवाचं कुन्तीशुश्रावसूतके । वाचमुच्चरितामुच्चैस्तां निशम्यतपस्विनाम् ॥ ४६ " बभूवपरमोहर्षः शतशृङ्गनिवासिनाम् । तथा देवनिकायानां सेन्द्राणाञ्च दिवौकसाम् " ४७ " आकाशेदुन्दुभीनाञ्च बभूवतुमुलःस्वनः । उदातिष्ठन्महाघोषः पुष्पवृष्टिभिरावृतः "४८" समवेत्यचदेवानां गणाः पार्थमपूजयन् । काद्रवेयावैनतेया गन्धर्वाप्सरसस्तथा " ४९ " प्रजानांपतयःसर्वे सप्तचैवमहर्षयः । भरद्वाजः कश्यपो गौतमश्च विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः । यश्चोदितोभास्करेऽभूत् प्रनष्टे सोऽप्यत्रात्रिर्भगवानाजगाम ॥५०॥ मरीचिरङ्गिराश्चैव पुलस्त्यःपुलहःक्रतुः । दक्षःप्रजापतिश्चैव गन्धर्वाप्सरसस्तथा " ५१ " दिव्यमाल्याम्बरधराः सर्वालङ्कारभूषिताः । उपगायन्तिबीभत्सुं नृत्यंतेप्सरसांग

युक्तवाणी सुनी बड़े वेगसे उच्चारी हुई उस वाणी को सुनकर शतशृङ्गपर विराजते हुए, तपस्वियोंको बड़ा आनन्दहुआ और विमानपर अरूढ़ देवगणभी बड़े प्रसन्नहुये । आकाश में घोर कोलाहल से नगाड़े बजने लगे, घोर शब्द होने लगा, बिना रोक टोक फूल वर्षने लगे और सब देव मिलकर पार्थकी पूजा करनेलगे ।४८। कद्रू और विनता के पुत्रगण, गन्धर्व्वगण, अप्सरागण, और प्रजापति गण, तथा भरद्वाज कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि, वाशिष्ठ और (सूर्य्यके नष्ट होने पर जो उदित हुए थे, वह भगवान) आत्रि यह सात महर्षि वहां आये ।५०। मरीचि,अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रजापति दक्ष, गन्धर्व्व और अप्सरागण यह भी सब आये अप्सरागण दिव्य माला और दिव्य वस्त्र पहिनकर सर्व आभूषणों से बन ठनकर अर्जुनकी प्रशंसा के गीत गाने और नाचने

monarchs of the land will perform three Ashwamedh sacrifices. This glorious son of Kunti will be as glorious as Vishnu or the son of Jamadagni and will be famous among brave men. He will gratify Mahadev in a duel and will obtain from him the gift of a missile known as Pashupat.43.By the order of Indra he will kill Nibat Kabachas, the enemies of gods. Having learnt the use of heavenly weapons this best of men will raise the fallen kingdom of the Kurus." Kunti heard this strange prophesy about her son. The rishis living in the neighbourhood and the gods mounted on the celestial cars were very much pleased on hearing the heavenly voice utterd so loudly. The sounds of musical instruments and noises were heard coming from the firmament. The gods let fall a shower of flowers freely in honour of the child of Kunti.48.The sons of *Kadru* and *Vinata*, the *Gandharvas*, the *apsaras*, the

णाः ॥ ५२ ॥ तथामहर्षयश्चापि जेपुस्तत्रसमन्ततः । गन्धर्वैःसहितःश्रीमान् प्रागायत
चतुम्बुरुः ॥ ५३ ॥ भीमसेनोग्रसेनौच ऊर्णायुरनघस्तथा । गोपतिर्धृतराष्ट्रश्च सूर्य्य-
वर्चास्तथाष्टमः ॥ ५४ ॥ युगपस्तृणपः कार्ष्णिर्नन्दिश्चित्ररथस्तथा । त्रयोदशःशालि
शिराः पर्ज्जन्यश्चचतुर्दशः ॥ ५५ ॥ कलिःपंचदशश्चैव नारदश्चात्रषोडशः । ऋत्वाबृह
त्वाबृहकः करालश्चमहामनाः ॥ ५६ ॥ ब्रह्मचारीबहुगुणः सुवर्णश्चेतिविश्रुतः । विश्वा
वसुर्भुमन्युश्च सुचन्द्रश्चशरुस्तथा ॥ ५७ ॥ गीतमाधुर्य्यसम्पन्नौ विख्यातौचहहाहुहू ।
इत्येतेदेवगन्धर्वा जग्मुस्तत्रनराधिप ॥ ५८ ॥ तथैवाप्सरसोहृष्टाः सर्वालङ्कारभूषि
ताः । ननृतुर्वैमहाभागा जगुश्चायतलोचनाः ॥ ५९ ॥ अनूचानानवद्याच गुणमुख्या
गुणावरा । अद्रिकाचतथासोमा मिश्रकेशीत्वलम्बुषा ॥ ६० ॥ मरीचिःशुचिकाचैव
विद्युत्पर्णातिलोत्तमा । अम्बिकालक्षणाक्षेमा देवीरम्भामनोरमा ॥ ६१ ॥ असिता-
चसुबाहुश्च सुप्रियाचवपुस्तथा । पुण्डरीकासुगन्धाच सुरसाचप्रमाथिनी ॥ ६२ ॥

लगीं, चारों और महर्षि लोग स्वस्तययन के मन्त्र जपने लगे, श्रीमान् तुम्बरुने गन्धर्वोंके साथ गीत आरंभ किया। हे नरेश! भीमसेन, उग्रसेन, ऊर्णायु, अनघ, गोपति, धृतराष्ट्र सूर्य्यवर्च्च, युगप, तृणप, कार्ष्णी नन्दि, चित्ररथ, शालिशिरा, पर्ज्जन्य, कलि, नारद, सद्धा, बृहद्धा, महामना, कराल, ब्रह्मचारी, बहुगुण, विख्यात सुवर्ण, विश्वावसु भुमन्यु, सुचन्द्र, शरु और ललित गीत गानेवाले प्रख्यात हाहा और हुहु यह देव और गन्धर्व्व गीत गानेलगे।५८। प्रशस्त लोचना, महाभागा अप्सरायें सर्व्व आभूषणोंसे सज धजकर प्रसन्न चित्तसे नाचने और गाने लगीं। अनूचाना, अनवद्या, गुणमुख्या, गुणवरा अद्रिका, सोमा, मिश्रकेशी, अलम्बुषा, मरीचि, शुचिका, विद्युतपर्णा, तिलोत्तमा, लक्षणा क्षेमा, देवी, रम्भा, मनोरमा, असिता, सुबाहु, सुप्रिया, सुवपु, पुण्डरीका, सुगन्धा,

---

Prajapatis, Bharddwaj, Kashyap, Goutam, Vashisht, Vishwamitra, Jamadagni, Atri, Marichi, Angira, Pulastya, Pulah, Karatu, Prajapati Daksh, the *Gandharbs* and *Apsaras* all came there. The Apsaras, decked in heavenly garlands, dresses, and various ornaments, sang songs in Arjun's praise and began to dance. The Maharshis all round pronounced the hymns of blessing. The glorious Tamburu joined the Gandharvas in singing. *Bhimsen, Ugrasen, Urnayu, Anagh, Gopati, Dhritrashtra, Sooryavarcha, Yugap, Trinap, Karshni, Nandi, Chitrarath, Shalishira, Parjanya, Kali, Narad, Sadha, Pradha, Brahak, Mahamana,* Caral, *Brahmchari, Bahugun,* the famous *Subaru, Vishwavasu, Bhumanyu, Suchandra, Sharu* and the singers of sweet songs, *Haha* and *Hoohoo* were the gods and gandharbs who sang at the occasion. 58. Beautiful apsaras, decked in ornament, began to dance

काम्याशारद्वतीचैव ननृतुस्तत्रसंघशः । मेनकासहजन्याच कर्णिकापुञ्जिकस्थला ॥ ॥ ६३ ॥ ऋतुस्थलाघृताचीच विश्वाचीपूर्वचित्यपि । उम्लोचेतिचविख्याता प्रम्लोचेतिचतादश ॥ ६४ ॥ उर्वश्येकादशीतासां जगुश्चायतलोचनाः । धातार्य्यमाच मित्रश्च वरुणोंऽशोभगस्तथा ॥ ६५ ॥ इन्द्रोविवस्वान्पूषाच त्वष्टाचसवितातथा । पर्ज्जन्यश्चैवविष्णुश्च आदित्याद्वादशस्मृताः ॥ ६६ ॥ महिमानंपाण्डवस्य वर्द्धयन्तोऽम्बरे स्थिताः । मृगव्याधश्चसर्पश्च निर्ऋतिश्चमहायशाः ॥ ६७ ॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यः पिनाकी चपरन्तप । दहनोऽथेश्वरश्चैव कपालीचविशाम्पते । स्थाणुर्भगश्चभगवान् रुद्रास्तत्रावतस्थिरे ॥ ६८ ॥ अश्विनौवसवश्चाष्टौ मरुतश्चमहाबलाः । विश्वेदेवास्तथा साध्यास्तत्रासन् परितःस्थिताः ॥ ६९ ॥ कर्कोटकोऽथसर्पश्च वासुकिश्चभुजंगमः । कच्छपश्चाथकुण्डश्च तक्षकश्चमहोरगः ॥ ७० ॥ आययुस्तपसायुक्ता महाक्रोधामहाबलाः । एते

सुरसा, प्रमाथिनी, काम्या और शारद्वती यह सब अप्सरायें जुटबांध नाचने लगीं । ६३ । और मेनका सहजन्या कर्णिका, पुञ्जिकस्थला, ऋतुस्थला, घृताची, विश्वाची, पूर्वचिती, उम्लोचा और प्रम्लोचा, उर्व्वशी, विशालनेत्रा यह ग्यारह स्वर्गकी वेश्या एकत्रहोकर गीत गानेलगीं । धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, त्वष्टा, सविता और विष्णु यह बारह आदित्य और पर्जन्य तथा पावकगण आकाश में बिराजते हुए पाण्डुपुत्रकी महिमा बढ़ाने लगे ।६६। हे शत्रु नाशी पृथ्वीनाथ ! मृग,व्याघ्र,सर्प,अति यशवंत निर्ऋति, अजैकपात, अहिर्बुध्न, पिनाकी, दहन, ईश्वर, कपाली, स्थाणु और भगवान् भग यह ग्यारह रुद्र वहां आये । दोनों आश्विनी कुमार, आठों वसु, महाबली मरुद्गण विश्वेदेव गण और साध्यगण आनकर वहां विराजने लगे । कर्कोटक, वासुकी, कच्छप, कुण्ड और महोरज, तक्षक, यह सब तपयुक्त बड़ क्रोधी महाबली सर्प और

and sing joyfully. *Anuchana*, *Anavadya*, *Gunmukhya*, *Gunavara*, *Adrika*, *Soma*, *Misrakeshi*, *Alambusha*, Marichi, *Shuchika*, *Vidyutparna*, *Tilottama*, *Ambica*, *Lakshaoa*, *Kohama*, *Devi Rambha*, Manorama, *Aseta*, *Savahu*, *Supriya*, *Suvahu*, *Pundarika*, *Sugandha*, *Surama*, *Pramathini*, *Kamya* and *sharadivati*, all these apsaras had formed a band to dance together. And *Menika*, *Sahjanya*, *Karnika*, *Punchikasthala*, *Ritusthala*, *Ghratachi*, *Vishwachi*, *Poorbchitti*, *Umlocha*, *Pramlocha*, *Uravasi*, *Vishacnetra*, these elven dancing girls of heaven, sang together. *Dhata*, *Aryama*, *Mitra*, *Barun*, *Ansh*, *Bhag*, *Indra*, *Vivaswan*, *Poosha*, *Twashta*, *Savita*, and *Vishnu*, these twelve *Adityas*, the *Parjanyas* and he *Pawaks* were seen in the firmament to the great glory of the son of *Pandu*.66.O king, dertroyer of enemies, deer, lions, serpents the glorious *Nir-riti*, *Ajaikpat*, *Ahirbudhna*, *Pinaki*, *Dahan*,

चान्येचबहवस्तत्र नागाव्यवस्थिताः ॥७१॥ तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च गरुड़श्चासितध्वजः । अरुणश्चारुणिश्चैव वैनतेयाव्यवस्थिताः ॥ ७२ ॥ तांश्चदेवगणान् सर्वांस्तपःसिद्धा महर्षयः । विमानगिर्य्यग्रगतान्ददृशुर्नेतरे जनाः ॥ ७३ ॥ तद्दृष्ट्वामहदाश्चर्य्यं विस्मिता मुनिसत्तमाः । अधिकांस्मततो वृत्तिमवर्त्तन् पाण्डवान्प्रति ॥ ७४ ॥ पाण्डुस्तुपुनरेवैनां पुत्रलोभान्महायशाः । वक्तुमैच्छद्धर्मपत्नीं कुन्तीत्वेनगर्थांब्रवीत् ॥ ७५ ॥ नातश्चतुर्थंप्रसवमापत्स्वपि वदन्त्युत । अतःपरंस्वैरिणी स्याद्बन्धकी पंचमेभवेत् ॥ ७६ ॥ सत्वंविद्वन्धर्ममिममधिगम्यकथंनुमाम् । अपत्यार्थंसमुत्क्रम्य प्रमादादिवभाषसे॥७७॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डवोत्पत्तौ त्रयोविंश
त्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२३ ॥

दूसरे बहुत नाग वहां आपंहुचे ।७१। ताक्ष्र्य, अरिष्टनेमि, गरुड़, असितध्वज, अरुण और आरुणि यह सब विनता के पुत्रभी वहां आ गये । विमानों पर चढ़े और पर्व्वत की चोटीपर टिके देवों को तपमें सिद्ध महार्षि लोग देखने लगे, किसी दूसरे ने नहीं देखा। मुनियों ने वह सब अति आश्चर्य लीला देखकर अचरज माना और तबसे पाण्डवोंकी औरभी श्रद्धा करनेलगे।७४। अतियशवन्त पाण्डुने पुत्रके लोभसे फिर धर्म्मपत्नी कुन्ती को कहना चाहा । उसपर कुन्ती उनसे बोली, कि धर्म्म जानने वालेलोग आपत्काल में भी चौथे प्रसवकी प्रशंसा नहीं करते, क्योंकि चौथे पुरुष से मिलने से नारि स्वैरिणी होती है और पाचवें पुरुषसे मिलनेसे वेश्याहोती है । हेविद्वान् । आप यह धर्म्म जानने पर भी क्यों बावले के समान उसको नांघ कर फिर सन्तान के लिये मुझसे कहते हैं ॥७७॥

Ishwar, *Sthanu* and *Bhag*, the eleven *Rudras*, came there. The twin *Aswins*, the eight *Vasus*, the powerful *Maruttas* and *Vishwedevas* and the *Sadhyas* came there. *Karkot*, *Vasuki*, *Kachhap*, *Kund*, *Maharaj* and *Takshak*, all these large and powerful snakes and other *Nagas* came there. *Tarakshya*, *Arishtnemi* *Garur*, *Asitdhwaj*, *Arun*, all these sons of *Vinta* also came there. mounted on the celestial cars, standing on mountain tops, the gods were seen by the ascetics alone. The *Munis* wondered at this strange sight and were, from that time, more than ever, attached to Pandu.74. The glorious Pandu, desirous of offspring, again tried to induce Kunti. But she said, "The wise, even in the time of trouble, donot praise the birth of a fourth son. For on meeting with a fourth man, a woman becomes degraded and by the fifth person she becomes a prostitute. Knowing these facts why do you, like, a foolish person, instigate me to do so?77.

वैशम्पायन उवाच । कुन्तीपुत्रेषुजातेषु धृतराष्ट्रात्मजेषुच । मद्रराजसुतापाण्डुं रहोवचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ नमेऽस्तित्वयिसन्तापो विगुणोऽपिपरन्तप । नावरत्वेवराहां याः स्थित्वाचानघनित्यदा ॥ २ ॥ गान्धार्य्याश्चैवनृपते जातंपुत्रशतंतथा । श्रुत्वान-मेतथा दुःखमभवत् कुरुनन्दन ॥ ३ ॥ इदन्तुमेमहद्दुःखं तुल्यतायामपुत्रता । दिष्ट्यात्वि दानींभर्त्तुर्मे कुन्त्यामप्यस्तिसन्ततिः ४ ॥ यदित्वपत्यसन्तानं कुन्तिराजसुतामयि कुर्य्यादनुग्रहोमे स्यात्तवचापिहितंभवेत् ॥ ५ ॥ संरम्भोहिसपत्नीत्वाद्वक्तुं कुन्तिसुतां प्रति । यदितुत्वंप्रसन्नोमे स्वयमेनांप्रचोदय ॥ ६ ॥ पाण्डुरुवाच' ममाप्येषसदामाद्रि हृद्यर्थःपरिवर्त्तते । नतुत्वांप्रसहेवक्तु मिष्टानिष्टाविवक्षया ॥ ७ ॥ तवत्विदंमतंमत्वा प्रय तिष्याम्यतः परम् । मन्येध्रुवंमयोक्तासा बचनंप्रतिपत्स्यते ॥८॥ वैशम्पायनउवाच॥

अध्याय १२४ ॥

श्रीवैशम्पायनजी बोले कि अनन्तर कुन्ती और गान्धारी के पुत्रोंके पैदा होने पर माद्री निराले में पाण्डु से बोली, कि हे शत्रुनाशिन ! आपके मुझपर कृपायुक्त न रहने के कारण मुझे कोई बिशेष दुःख नहीं है, हे अनघ ! कुन्तीसे श्रेष्ठ होकर सदा अश्रेष्ठ मुझे बनी रहने परभी दुःख नहीं है, हे नरनाथ कुरुनन्दन ! गान्धारी के सौ पुत्रहुए सुन करभी मुझे कुछ क्लेश नहीं हुआ ।३। पर इसका मुझे बड़ा दुःखहै कि हम दोनों सौत समान हैं परतौभी मेरे संतान नहीं हुई भाग्यवश कुंती से आप के संतान हुई है इस समय यदि कुंती मेरे संतान होने का उपाय करदेतो मुझपर बड़ी दया हो और उस से आपकाभी हित होसक्ता है कुंती मेरी सौत है इस लिये स्वयम् उस से कहने में लज्जा आती है यदि आप मुझपर प्रसन्न होंतो आप ही उसको आज्ञा दीजिये।६। पांडुने कहा हे माद्रि इस विषय में मैं सदा मनही मनमें शोचा करता हूं पर यह तुम्हारा इष्ट है या नहीं यह न जान कर तुम से कहनेका साहस नहीं हुआ था अब तुम्हारा मत जान लिया इस

CHAPTER CXXIV.

Vaishampayan said that on the birth of the sons of Kunti and Gandhari, Madari spoke to Pandu in private saying, "Of your want of kindness, O destroyer of enemies, I have no complaint, Being superior to Kunti I have become inferior. I donot complain even for this; neither have I felt any great shock at hearing the birth of a hundred sons to Gandhari.3. But I say this much that being co-wives and equal to each other, the one has got sons and the other is yet childless. It would be benificial to me as well as to you if Kunti, by her kindness were to manage for my offspring. Kunti is my co-wife. Therefore, I feel it derogatory to myself to carry my request directly to her. If you are kind to me you may speak to her." 6. Pandu replied, "I have already been reflecting on this subject, but, could not know whether you would like it

ततःकुन्तीपुनः पाण्डुर्विविक्त इदमब्रवीत् । कुलस्यममसन्तानं लोकस्यचकुरु प्रियम् ॥ ९ ॥ ममचापिण्डनाशाय पूर्वेषामपि चात्मनः । मत्प्रियार्थञ्च कल्याणि कुरुकल्याणमुत्तमम् ॥ १० ॥ यशसोऽर्थायचैवत्वं कुरुकर्मसुदुष्करम् । प्राप्याधिपत्य मिन्द्रेण यज्ञैरिष्टंयशोऽर्थिना ॥ ११ ॥ तथामन्त्रविदो विप्रास्तपस्तप्त्वा सुदुष्करम् । गुरूनभ्युपगच्छन्ति यशसोऽर्थायभाविनि ॥ १२ ॥ तथाराजर्षयःसर्वे ब्राह्मणाश्च तपोधनाः । चक्रुरुच्चावचंकर्म यशसोऽर्थाय दुष्करम् ॥ १३ ॥ सात्वंमाद्रींप्लवेनैव तारयैनामानिन्दिते । अपत्यसंविभागेन पराङ्कीर्त्तिमवाप्नुहि ॥ १४ ॥ एवमुक्त्वाब्रवीन्माद्रीं सकृच्चिन्तयदैवतम् । तस्मात्तेभवितापत्य मनुरूपमसंशयम् ॥ १५ ॥ ततो माद्रीविचार्य्यैवं जगाममनसाश्विनौ । तावागम्यसुतौतस्यां जनयामासतुर्यमौ ॥ १६ ॥ नकुलंसहदेवञ्च रूपेणाप्रतिमौभुवि । तथैवतावपियमौ वागुवाचाशरीरिणी ॥ १७ ॥

लिये इस विषय में तेरे लिये प्रयत्नभी करूंगा विदित होताहै कि मेरे कहने से कुंती मान लेगी। वैशम्पायन के कहा कि फिर पांडुने निराले में कुंती से कहा कि हे कल्याणि ! मेरी प्रीति और लोकों के कल्याण के लिये ऐसा काम करोकि जिस से मेरावंश नष्टनहो और मेरे और तुम्हारे पितरों के पिंड नष्ट नहीं ।१०।ऐ भामिनी ! तुम यशके लिये इस कार्य में हाथ डालो देखो देवों के अधिकारी होने परभी केवल यश के लिये देवराज ने यज्ञ किया था मंत्र जानने वाले ब्राह्मण लोग यशही के लिये कठोर तपकर गुरु की उपासना किया करते हैं राजर्षि और तपोधन ब्राह्मण यशही के लिये तरह२ के कठिन कर्म करते हैं।१३। अतएव हे निंदा वर्जित प्यारी तुम संतानरूप बेड़े से माद्री का उद्धारकरो और उसको पुत्रवती बनाकर परम कीर्तिलो यह सुनकर कुंती ने माद्री से कहा कि तुम एकवार किसी देवताका स्मरणकरो निःसंदेह उससे तुम्हारे पुत्रहोगा माद्री ने मनहीमन में अश्विनीकुमारोंका विचारकिया दोनों अश्विनीकुमारोंने वहां आकर नकुल और सहदेव

or not. Now I have come to know your opinion I shall broach the subject to Kunti and hope I shall find her agreeable. Vaishampayan said that Pandu spoke aside to Kunti, saying, "For my love and the good of the world, act in such a way as would lead to perpetuate my family and the manes of mine and your forefathers may not become extinct.10.You must do this work for the sake of glory. See, Indra performed the sacrifices for his own glory, although he ruled over the gods. Learned Brahmans, for glory's sake, perform severe asceticism and praise their preceptors. The Rajarshis and Brahmans have performed difficult tasks for the sake of glory.13. "Therefore O sinless one, release Madri by means of the float of offspring. Accept gratitude in return of causing her to be a mother." Having heard this, Kunti directed Madri to think of some god, for, by so doing she would be sure to get an

सत्त्वरूपगुणोपेतौ भवतोऽत्यश्विनाविति । भासतस्तेजसात्यर्थं रूपद्रविणसम्पदा
॥ १८ ॥ नामानि चाक्रिरेतेषां शतशृङ्गनिवासिनः । भक्त्याचकर्मणाचैव तथाशीर्भि-
र्विशाम्पते ॥ १९ ॥ ज्येष्ठंयुधिष्ठिरेत्येवं भीमसेनेतिमध्यमम् । अर्जुनेनितृतीयंच कुन्ती
पुत्रानकल्पयन ॥ २० ॥ पूर्वजंनकुलेत्येवं सहदेवेतिचापरम् । माद्रीपुत्रावकथयंस्ते-
विप्राः प्रीतमानसाः ॥ २१ ॥ अनुसम्वत्सरंजाता अपितकुरुसत्तमाः । पाण्डुपुत्रा
व्यराजन्त पंचसम्वत्सराइव ॥ २२ ॥ महासत्त्वामहावीर्य्या महाबलपराक्रमाः । पाण्डु
र्दृष्ट्वासुतांस्तांस्तु देवरूपान्महौजसः ॥ २३ ॥ मुदंपरमिकांलेभे ननन्दचनराधिपः ।
ऋषीणामपिसर्वेषां शतशृङ्गनिवासिनाम् ॥२४॥ प्रियावभूवुस्तासांच तथैवमुनियोषि
ताम् । कुन्तीमथपुनः पाण्डुर्माद्र्यर्थे समचोदयत् ॥ २५ ॥ तमुवाचपृथा राजन्रहस्यु-

---

नामक अनुपम रूपवान दो यमज पुत्रोंको जन्म दिया।१६।तब आकाशवाणीहुई कि सत्व
रूपी गुणयुक्त यह दो कुमार रूप सम्पद में अश्विनी कुमारों से भी अधिक प्रकाशित होंगे
हे पृथ्वीनाथ ! अनंतर शतशृंग पर रहने वाले ब्राह्मणों ने कुमारों के आश्चर्य कर्म और
भक्ति देखकर प्रसन्न चित्त से आशीस देकर नाम रख दिये उन्हों ने कुँती के पुत्रों में
बड़ेका नाम युधिष्ठिर, मझलेका नाम भीमसेन, तीसरेका नाम अर्जुन।२०। और माद्रीके
दो पुत्रोंमें से पहिले जन्म लिये हुये का नाम नकुल और दूसरे का नाम सहदेव रक्खा
कुरुवंश में श्रेष्ठ पांडु पुत्रगण बालक पनही से महाबली, पराक्रमी, महासत्वयुक्त और
वीर्यवन्त हुए इनकी आयु जब बर्ष भरकी हुई तब वे पाँच बर्षकी अवस्था वाले जान
पड़ते थे राजा पांडु उन पुत्रों को देव समान देखकर बड़े आनंदितहुए ।२३। पांडवगण
शतशृंगपर रहने वाले मुनियों के और उनकी स्त्रियों के भी प्यारे बने अनन्तर पांडुने
फिर निरालेमें माद्री के लिये कुंती से विनय की तब कुंतीने उत्तरदिया कि मेरे एकबार

---

offspring like him. Mrdri, thereupon, thought of the twin Aswins who at once came to Madri and produced a couple of beautiful children.16. Then a voice from heaven was heard to say, These children, will in the wealth of beauty, be better than the two Aswins." The Brahmans residing at mount Shatshrang, seeing the wonderful deeds of the princes, blessed them joyfully and gave each of them a name. The eldest child of Kunti was named by them Yudhisthir, the middle one Bhimsen, the third Arjun(20)and the two sons of Madri were named Nakul and Sahadev in the order of their birth. The pride of the Kuru dynasty, the sons of Pandu, were very strong, energetic, virtuous and brave from their childhood. At the age of one year they looked like those at five. King Pandu was very happy at finding them glorious like gods.23.The Pandavas were dear to the Munis living on mount Shatshrang and their wives. At length Pandu again requested

क्तातदासती। उक्तासकृद्द्वन्द्वमेषालेभे तेनास्मिवंचिता ॥ २६ ॥ बिभेम्यस्याः परिभवात् कुस्त्रीणांगतिरीदृशी । नाज्ञासिषमहंमूढा द्वन्द्वाह्वानेफलद्वयम् ॥ २७ ॥ तस्मान्नाहंनियोक्तव्या त्वयैषोऽस्तुवरोमम । एवंपाण्डोःसुताः पंच देवदत्तामहाबलाः ॥२८॥ सम्भूताःकीर्त्तिमन्तश्च कुरुवंशविवर्द्धनाः। शुभलक्षणसम्पन्नाः सोमवत्प्रियदर्शनाः ॥ २९ ॥ सिंहदर्पामहेष्वासाः सिंहविक्रान्तगामिनः । सिंहग्रीवामनुष्येन्द्रा ववृधुर्देवविक्रमाः ॥ ३० ॥ विवर्द्धमानास्तेतत्र पुण्येहैमवतेगिरौ। विस्मयं जनयामासुर्महर्षीणां समेयुषाम् ॥ ३१ ॥ तेचपंचशतंचैव कुरुवंशविवर्द्धनाः । सर्वेववृधुरल्पेन कालेनाऽप्स्विवनीरजाः ॥ ३२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डवोत्पत्तौ चतुर्विंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥१२४॥

कहने से माद्रीने दो पुत्र पाये और मैं इस में ठगी गईहूं सो उस से हारने का भय खाती हूं क्योंकि बुरी नारियों का स्वभाव ऐसाही होता है मैं मूर्ख हूँ पहिले नहीं जानतीथी कि एकही बार दोदेवताओं को बुलाने से दोपुत्र पैदा होते हैं इस लिये आप से यह वर मांगती हूं कि आप इस विषय में मुझे आज्ञा न कीजिये। हे महाराज इस प्रकार देवताओं के दिते हुए महाबली, कीर्तिशाली कुरुवंश बढ़ाने वाले पांडु के पाँच पुत्र हुए वे मनुष्यों में श्रेष्ठ पांडव लोग शुभ लक्षण युक्त चन्द्रमा के समान देखने में प्रिय बड़े चापधारी सिंह समान छाती वाले, सिंहकी समान शक्तिवाले, सिंहकी समान आँख वाले, सिंह सदृश विक्रमी, सिंहकी भांति गर्दन वाले, सिंहके विक्रम पूरित स्थान में जानेवाले।३०। देवताओं के समान विक्रमी होकर दिन२ बढ़नेलगे। पवित्र हिमालय पर रहने वाले महर्षियों ने उनको इस प्रकार बढ़ते देख कर अचरज माना जिस प्रकार जल में थोड़े काल में पद्मवन खिलउठता है वैसेही वे १०५ कौरव व थोड़ेकालमें बढ़उठे ३२।

Kunti for Madri's offspring. Kunti replied "Madri has secured two children at a time and I was deceived in the transaction. I am now in fear of defeat from her. Bad women are apt to deceive. I was a fool not to know before that two sons could be secured at once by invoking two gods at a time. I therefore request you never to have a talk with me on this subject again." Thus the five sons given by the gods, strong, glorious and the pride of the Kuru dynasty were born to Pandu. Those best among men, the Pandavs, virtuous, beautiful like the moon, great archers, having breasts like lions, brave and of eyes, energy, and necks like lions and glorious like the gods, grew day by day. 30. Maharshis living on the holy Himalayas wondered at seeing them grow in such manner. As a group of lilies in water opens in a short time so the one hundred and five Kauravas grew up in a small period. 32.

वैशम्पायन उवाच । दर्शनीयांस्ततःपुत्रान् पाण्डुःपंचमहावने । तान्पश्यन्
पर्वतेरम्ये स्वबाहुबलमाश्रितः ॥ १ ॥ सुपुष्पितवनेकाले कदाचिन्मधुमाधवे । भूतस-
म्मोहनेराजा सभार्य्योव्यचरद्वनम् ॥ २ ॥ पलाशैस्तिलकैश्चूतैश्चम्पकैः पारिभद्रकैः ।
कर्णिकारैरशोकैश्च केशरैरतिमुक्तकैः ॥ ३ ॥ तथाकुरवकैश्चैव मत्तभ्रमरनादितैः ।
वृतैर्मञ्जरितैश्चैव पारिजातवनैःशुभैः ॥ ४ ॥ कलकण्ठकलोदघुष्टं षट्पदैःप्रतिकूजित-
म् । अन्यैश्चबहुभिर्वृक्षैः फलपुष्पसमृद्धिभिः ॥ ५ ॥ जलस्थानैश्चविविधैः पद्मिनीभि
श्चशोभितम् । पाण्डोर्वनंतत् संप्रेक्ष्यप्रजज्ञे हृदिमन्मथः ॥ ६ ॥ प्रहृष्टमनसंतत्र विचर-
न्तंयथामरम् । तंमाद्र्यनुजगामैका वसनंविभ्रतीशुभम् ॥ ७ ॥ समीक्षमाणःसतुतां
वयस्थांतनुवाससम् । तस्यकामःप्रववृते गहनेऽग्निरिवोद्गतः ॥ ८ ॥ रहस्येकान्तुतांदृष्ट्वा
राजाराजीवलोचनाम् । नशशाकनियन्तुंतं कामंकामवशीकृतः ॥ ९ ॥ ततएनांबलाद्रा

अध्याय ॥ १२५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर पांडु देखनेके योग्य उन पांचपुत्रोंको देखकर केवल अपने भुजबल के आश्रय से उस पहाडपर सुखसे काल व्यतीत करने लगे एक समय प्राणियोंके मोहित करनेवाले बसंत के आने पर नानाफूलोंसे सजेहुए वनमें राजा पांडु स्त्रीके साथ घूमने लगे देखा कि चारों ओर गूँजनेवाले भौंरों से ढकेहुए पलाश, तिल आंब, चंपा, पारिभद्रक, कर्णिकार, केशर, अतिमुक्त, अशोक, कुरुवक, मदार और दूसरे पौदे नाना फलफूलोंसे सजे हैं कोयल कूकरही है मधुमक्खी भिनभिनाती हुई गीत गारही हैं ।५। ताल खिलेहुए पद्मके बनोंसे शोभित हैं चित्तको मत्तकरनेवाले उन वनोंको देखतेहुए राजा पांडु के हृदयपर कामदेवका अधिकार प्रकटहुआ अच्छा वस्त्र पहिने हुए माद्री अकेली प्रफुल्लित चित्त देवता समान घूमतेहुए उस राजाके पीछे चलने लगी तब पतलावस्त्र पहिनेहुए युवती माद्रीको देखकर राजा के हृदय में इसप्रकार मदनकी आग सुलग उठी कि जैसे बनमें आग लगजाती है । ८। वोह निगलेमें उस पद्मनेत्रा बालाको

CHAPTER CXXV.

Vaishampayan said that Pandu having got those five matchless sons began to live in the thick forest over the mountain, relying up on the strength of his own arms. One day, in the heart enchanting season of spring, Pandu was roaming with his wife in the forest full of various kinds of flowers. Having seen the trees covered with flowers and bees(5)and the lakes decked with lilies and hearing the cooing of cuckoo and the humming of bees, Pandu was oppressed with desire. Clothed in neat dress, alone and joyful, Madri was following the king who was roaming like an elephant Having seen the youthful Madri clothed in thin garments the king's heart burnt with the fire of desire like a burn-

जा निजग्राहरहोगताम् । वीर्य्यमाणस्तयादेव्या विस्फुरन्त्यायथाबलम ॥ १० ॥ स तुकामपरीतात्मा तंशापंनान्वबुध्यत । माद्रींमैथुनधर्मेण सोऽन्वगच्छद्बलादिव ॥११॥ जीवितान्ताय कौरव्य मन्मथस्यवशङ्गतः । शापजंभयमुत्सृज्य विधिनासंप्रचोदितः । ॥ १२ ॥ तस्यकामात्मनोबुद्धिः साक्षात् कालेनमोहितां । संप्रमथ्येन्द्रियग्रामं प्रनष्टास हचेतसा ॥ १३ ॥ सतयासहसंगम्य भार्य्ययाकुरुनन्दनः । पाण्डुःपरमधर्मात्मा युयुजेकालधर्मणा ॥ १४ ॥ ततोमाद्रीसमालिंग्य राजानंगतचेतसम् । मुमोचदुःखजंशब्दं पुनःपुनरतीवहि ॥ १५ ॥ सहपुत्रैस्ततःकुन्ती माद्रीपुत्रौचपाण्डवौ । आजग्मुःसहितास्तत्र यत्रराजातथागतः ॥ १६ ॥ ततोमाद्र्यब्रवीद्राजन्नार्त्ता कुन्तीमिदंवचः । एकैव त्वमिहागच्छ तिष्ठन्त्वत्रैवदारकाः ॥ १७ ॥ तच्छ्रुत्वावचनं तस्यास्तत्रैवाधाय दारकान् । हताहमितिविक्रुश्य सहसैवाजगामसा ॥ १८ ॥ दृष्ट्वापाण्डुंचमाद्रींच शयानौधरणी

देखतेही एकबारगी कामवश होगये किसीप्रकार कामको रोक न सके । सो असहायता धर्मपत्नीको बल से पकडलिया तब देवी माद्री अपने पूरे बल और शक्तिसे रोकने लगी पर राजा तब काम से एकबारही बावले बने थे, सो प्राणनाशी पूर्व कथित शाप के भय को उन के चित्तमन्दिरमें स्थान नहीं मिला । हे कौरव ! उस कालमें मदनकी आज्ञा में चलते हुए पाण्डु विधिवश शापके भयको भूलकर मानो जीवन छोडनेही के लिये बलसे माद्रीको पकडकर मैथुनधर्म के पथिकबने।१२। उस कामयुक्त पुरुषकी बुद्धि साक्षातकाल से मोहितहोकर इन्द्रियों को मथनकर चेतना सहित जाती रहीथी, सो वह परमधार्मिक कुरुनन्दन पाण्डु स्त्री से मिलकर काल के धर्म्म में नियुक्त हुए । अनन्तर माद्री चेतना रहित भूपाल से लिपटी रह करकेही बार२ दुःख से चिल्लाकर गला फाडने लगी ।१५। आगे पुत्रों के साथ कुंती और माद्रीके दोनोंपुत्र उस शोकयुक्त शब्दको सुनकर एकत्र हो करके वहां जानेलगे जहां राजाकी वह दशा हुईथी । हे महाराज ! तब माद्री कातर स्वरसे कुंती से बोली, कि तुम अकेलीही यहां आओ, लडके वहींरहें।१७।कुंती यह सुनकर

ing forest.8.Seeing the youthful lotus-eyed woman alone he became at once enamoured of her and could not check himself. He caught his wife by force. She resisted with all her might but the king was senseless and could not recall to his mind the fear of the fatal curse. He forgot all fear of the curse and embraced Madri as if he was bent on dying.12. His senses were all gone and the virtuous prince of the kuru family met Time in meeting with his wife. Madri cried again and again in anguish when the senseless king was taking hold of her. 15.Hearing the cry of distress, Kunti accompanied by her own children and those of Madri sped to the place where the king was. Madri called out to Kunti, in a distressed voice to come alone without the children.17 Having heard this Kunti left the children there and came up to her crying 'I am

तले । कुन्तीशोकपरीतांगी विललापसुदुःखिता ॥ १९ ॥ रक्ष्यमाणोमयानित्यंवीरः सततमात्मवान् । कथंत्वामत्यतिक्रान्तः शापंजानन्वनौकसः ॥ २० ॥ ननुनामत्वया माद्रि रक्षितव्योनराधिपः । साकथंलोभितवती विजनेत्वंनराधिपम् ॥ २१ ॥ कथं दीनस्यसततं त्वामासाद्यरहोगताम् । तंविचिन्तयतःशापं महर्षःसमजायत ॥ २२ ॥ धन्यात्वमसिवाह्लीकि मत्तोभाग्यतरातथा । दृष्टवत्यसियद्वक्रं प्रहृष्टस्यमहीपतेः ॥ २३ ॥ माद्र्युवाच । विलपन्त्यामयादेवि वीर्यमाणेनचासकृत् । आत्मानवारितोऽनेन सत्यं दिष्टंचिकीर्षुणा ॥ २४ ॥ कुन्त्युवाच । अहंज्येष्ठाधर्मपत्नी ज्येष्ठंधर्मफलंमम । अवश्य म्भाविनोभावान्मामांमाद्रिनिवर्त्तय ॥ २५ ॥ अन्विष्यामीह भर्त्तारमहंप्रेतवशंगतम् । उत्तिष्ठत्वंविसृज्यैनमिमान् पालयदारकान् ॥ २६ ॥ माद्र्युवाच । अहमेवानुयास्या

लडकों को वहीं छोडकर यह कहके रोतीहुई कि मैं मारीगयी उसीक्षण वहां आपहुँची। और माद्रीके साथ पाण्डुको धरतीपर लेटेहुए देखकर शोकसे विह्वलहुई और अति दुःख से विलपती हुई बोली कि इस जितेन्द्रिय वीरको मैं सदा बचाती फिरतीथी, इन्हों ने ऋषिके शाप से ज्ञात रह करकेभी क्योंकर तुझपर आक्रमण किया ? री माद्रि ! इस भूपालको तुझे बचाना उचितथा वह न करके तूने क्यों इनको निराले में लुभाया।२१। यह शाप से ग्रसित होनेके काल से सदा दुःखी चित्त से उस शाप के सोचमें रहते थे। फिर निराले में तुझे पाकर क्योंकर इन के चित्त में हर्ष आन खड़ा हुआ ! री वाह्लीकि तू मुझ से धन्य और भाग्यवती है, क्योंकि तूने काम युक्त भूपाल का प्रफुल्ल मुख देखा। माद्री बोली, कि ऐ देवि ! मैं विलपती हुई, बार बार रोकने लगी, पर राजा शाप हेतु दुर्भाग्यता सफल करने ही के लिये अपने को नहीं रोक सके।२४। अनन्तर कुन्ती बोली, कि मैं बड़ी धर्म्म पत्नी हूं, प्रधान धर्म फल मुझको ही मिलता है, सो माद्री ! अवश्यमेव होने वाले विषय से मुझे मत रोक, मैं परलोकको सिधारे हुए पतिके साथ हो जाऊं तू इनको छोड़कर इन लड़कोंको पालना।२६। माद्री बोली, कि मैंने पति

undone! ' She was overwhelmed with grief at seeing Pandu lying with Madri and cried out "I always took good care of the brave prince. Being acquainted with the curse of the Rishi how did he overcome thee? You ought to have provented the prince but instead of so doing you induced him in a lonely place.21.From the time, of curse he was always brooding over his distress. How was it that he was overcome with desire on finding thee alone? Thou are more fortunate than me that you saw the joyful countenance of the desirous monarch." Madri replied "O goddess, with a distressed mind I checked him again and again but being fated to die by the curse the king could not restrain himself."24. Kunti then said "Being the elder wife the religious duty devolves on me. Donot keep me back, Madri, from the event that must

मि भर्त्तारमपलायिनम् । नहितृप्तास्मिकामानां ज्येष्ठामामनुमन्यताम् ॥ २७ ॥ मांचा
भिगम्य क्षीणोऽयं कामाद्भरतसत्तमः । तमुच्छिन्द्यामस्य कामं कथंनुयमसादने ॥२८॥
नचाप्यहंवर्त्तयन्ती निर्विशेषंसुतेषुते । वृत्तिमार्य्येचरिष्यामि स्पृशेदेनस्तथा चमाम् २९॥
तस्मान्मेसुतयोःकुन्ती वर्त्तितव्यंस्वपुत्रवत् । मांचकामयमानोऽयं राजाप्रेतवशंगतः ॥
॥ ३० ॥ राज्ञःशरीरेण सहममापीदं कलेवरम । दग्धव्यंसुप्रतिच्छन्नमेतदार्य्ये प्रियं
कुरु ॥ ३१ ॥ दारकेष्वप्रमत्ताच भवेथाश्च हितामम । अतोऽन्यंनप्रपश्यामि सन्देष्टव्यं
हिकिंचन ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वातंचिताग्निस्थं धर्मपत्नीनरर्षभम् ।
मद्रराजसुतातूर्ण मन्वारोहद्यशस्विनी ॥ ३३ ॥
इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि पाण्डूपरमे पंचविंश त्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२५ ॥

को पकड़ रखा है भागने नहीं दिया है, मैंही इनके साथ जाऊंगी, क्योंकि मैं कामरस से भलीप्रकार तृप्त नहीं हुईहूं, तुम बड़ीहो, सो मुझे आज्ञा दो । यह भरतकुलके प्रदीप मुझसे मिलकर के ही कामसे च्युत हुए हैं, सो मैं यमराज के घरमें क्योंकर इन के उस कामको उखाड़ डालूंगी? ऐ आर्य्ये ! ऐसा जान नहीं पड़ताहै, कि मैं जीती रहकर तुम्हारे पुत्रों को अपने पुत्रोंकी भांति पाल सकुंगी, सो उस हेतु मुझको पापकी आंच लग सकती है; अतएव ऐ कुन्ति ! तुम मेरे इन दोनों पुत्रों से अपने पुत्रकी भांति वर्त्ताव करना, यह राजा मेरी ही कामना करके परलोक को सिधारे हैं, सो इनके शरीर से मेरे इस शरीर को ढँपकर फूंकना । ऐआर्य्ये ! मेरे इस प्रियकार्य्य के करने में बाधक मत होना फिर भी तुममेरे हित चाहनेवाली होकर लड़कों पर ध्यानरखना इसके अतिरिक्त मैं नहीं समझतीहूँ कि मुझे और कुछ कहनेको है । वैशम्पायन बोले कि धर्मपत्नी यशयुक्ता मद्रराज कन्या यह कहकर बिना बिलम्ब चिताकी आग में स्थित पांडुके संगमें गयी ॥ ३३ ॥

come to pass. I shall go to heaven with my husband. Thou must leave him to bring up the children."24. Madri replied "I have caught hold of him and did not let him flee away. I alone shall go with him, for, I am not yet satisfied. You are older. Give me permission. This light of the Bharat dynasty was extinguished when meeting me. How can I leave him to go alone to the other world? I do not think, good woman, that I shall be able to bring up your children like mine own, if I live, and may sin in this respect. Therefore, O Kunti behave with my two children like thine own. This king has departed from this world thinking of me. Cremate my body keeping it beneath that of the king's. You will do nothing against my last wish. Be kind to the boys for my sake. I think I have no more to say." Vaishampayan said that having said so Madri, the dutiful wife, burnt herself with Pandu.33.

वैशम्पायन उवाच । पाण्डोरुपरमंदृष्ट्वा देवकल्पामहर्षयः । ततोमन्त्रविदःसर्वे मन्त्रयांचक्रिरेमिथः ॥ १ ॥ तापसा ऊचुः । हित्वाराज्यंचराष्ट्रंच समहात्मामहायशाः। अस्मिन्स्थानेतपस्तप्त्वा तापसान् शरणंगतः ॥ २ ॥ सजातमात्रान् पुत्रांश्च दारांश्चभवतामिह । प्रादायोपनिधिंराजा पाण्डुःस्वर्गमितोगतः ॥ ३ ॥ तस्येमानात्मजान्देहं भार्य्याचसुमहात्मनः । स्वराष्ट्रंगृह्यगच्छामो धर्मएषहिनःस्मृतः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । तेपरस्परमामन्त्र्य देवकल्पामहर्षयः । पाण्डोःपुत्रान् पुरस्कृत्य नगरंनागसाह्वयम् ॥ ५ ॥ उदारमनसःसिद्धा गमनेचक्रिरेमनः । भीष्मायपाण्डवान्दातुं धृतराष्ट्रायचैवहि ॥ ६ ॥ तस्मिन्नेवक्षणेसर्वे तानादायप्रतस्थिरे । पाण्डोर्दारांश्चपुत्रांश्च शरीरे तेचतापसाः ॥ ७ ॥ सुखिनीसापुराभूत्वा सततंपुत्रवत्सला । प्रपन्नादीर्घमध्वानं सङ्क्षिप्तंतदमन्यत ॥ ८ ॥ सात्वदीर्घेणकालेन सम्प्राप्ताकुरुजाङ्गलम् । वर्द्धमानपुरद्वार

अध्याय ॥ १२६ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि देवोंकी समान युक्ति दाता महर्षि तपस्वी गण पांडु की मृत्यु को देखकर आपस में कहने लगे कि अति यशस्वी महात्मा पांडुने राज्यको छोड़ कर इस स्थान में तप करते हुए तपस्वियों की शरण लीथी वह स्त्री और बालक पुत्रों को इस स्थान में तुम्हारे पास छोडकर स्वर्ग को चलागया है चलो हम उस महात्माकी स्त्री पुत्र और देहको लेकर उसके राज्यमें जावें तभी हमारे धर्मकी रक्षाहोगी।४। वैशम्पायन ने कहा कि उदार चित्त सिद्ध और देवसदृश महर्षियों ने आपस में ऐसी युक्ति कर भीष्म और धृतराष्ट्र को सौंप देनेके लिये पांडवोंको लेकर हस्तिनपुर जाना चाहा और उसी क्षण पांडु की स्त्री पुत्र और दोनों मुर्दोंको लेकर गये । पुत्र प्रेमयुक्त कुंतीने पहले सदा सुखी रहने परभी इस दूरपथसे चलनेपर उसको थोड़ाजाना उस यशस्विनी ने थोडे कालमें ही कुरु जांगल में पहुँच कर नगरका प्रधानद्वार देखा। ९। तब

CHAPTER CXXVI.

Vaishampayan said, that the great Rishis wise in council like gods, having witnessed the death of Pandu said to one another, "The glorious king Pandu having resigned the kingdom, had come under the protection of the ascetics to practice asceticism. He has died leaving children and wife with us. It devolves on us to take his wife and children to Hastinapure."4. Vaishampayan said that the kindhearted ascetics resolved upon going to Hastinapur to commit the Pandavas to the care of Dhritrashtra and Bhishm. They started at once with the wife, children and the two dead bodies. The affectionate Kunti, not given to hardship, bore the hardships of that long journey with a light heart and reached the capital in a short time.9. The ascetics told the doorkeepers to

मासमादयशस्विनी ॥ ९ ॥ द्वारिणंतापसाऊचू राजानंचप्रकाशय । तेतुगत्वाक्षणेनैव सभायां विनिवेदिताः ॥ १० ॥ तंचारणसहस्राणां मुनीनामागमंतदा । श्रुत्वानागपुरेनृणां विस्मयःसमपद्यत ॥ ११ ॥ मुहूर्तोदितआदित्ये सर्वेबालपुरस्कृताः । सदारास्तापसान्द्रष्टुं निर्ययुःपुरवासिनः ॥ १२ ॥ स्त्रीसंघाःक्षत्रसंघाश्च यानसंगसमास्थिताः । ब्राह्मणैःसहनिर्ज्जग्मु र्ब्राह्मणानांचयोषितः ॥ १३ ॥ तथाविट्शूद्रसंघानां महान्व्यतिकरोऽभवत् । नकश्चिदकरोदीर्ष्यामभवन् धर्मबुद्धयः ॥ १४ ॥ तथाभीष्मः शान्तनवः सोमदत्तोऽथवाह्लिकः । प्रज्ञाचक्षुश्चराजर्षिः क्षत्ताचविदुरःस्वयम् ॥ १५ ॥ साचसत्यवतीदेवी कौशल्याचयशस्विनी । राजदारैःपरिवृता गान्धारीचापिनिर्ययौ ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रस्यदायादा दुर्योधनपुरोगमाः । भूषिताभूषणैश्चित्रैः शतसंख्याविनिर्ययुः ॥ १७ ॥ तान्महर्षिगणान् दृष्ट्वा शिरोभिरभिवाद्यच । उपोपविविशुःसर्वे कौरव्याःसपुरोहिताः ॥ १८ ॥ तथैवशिरसा भूमावभिवाद्य प्रणम्यच । उपोपविवि-

तपस्वी लोग द्वारपालों से कहनेलगेकि राजा से हमारे आनेकी खबरकरो द्वारपाल ने उसी क्षण राजसभामें जाकर वोहसमाचार सुनाया हास्तिनपुरमें अनेक गुह्यक मुनियोंके अनेक समाचार सुनकर पुरवासियों को अचरज हुआ फिर सूर्य्योदय के पश्चात् पुरवासी लोग तपस्वियों के दर्शन के लिये स्त्री पुत्रादि सहित पहुँचने लगे ।१२। यानोंपर चढ़ेहुए स्त्रियों सहित वोह क्षत्रियगण और ब्राह्मणों के साथ ब्राह्मणियां चलीं और वैश्य शूद्रोंकी भी बड़ी भीड़ लगी उस समय किसीने किसी पर द्वेष प्रकाश नहीं किया सबकी बुद्धि धर्म मार्ग में बनी रही शांतनु पुत्र भीष्म, बाह्लीक, सोमदत्त प्रज्ञाचक्षु, राजर्षि धृतराष्ट्र, विदुर, देवीसत्यवती, यशस्विनी काशिराज कन्या और राजरानियों के साथ गांधारीभी निकली ।१६। दुर्योधनादिक धृतराष्ट्रके सौ पुत्र भी नाना सुन्दर गहनोंसे सजकर आये पुरोहित सहित कौरव लोग उन सब महर्षियों को देख कर शिर झुकाकर और प्रणाम

inform the king of their arrival. The door keepers did accordingly. The citizens wondered at the arrival of so many ascetics and started, at the break of day, with wives and children to see them. 12. The Kshatrias mounted on their chariots with women, the Brahmans followed by their wives, the Vaishyas and the Shudras came there in large numbers. All the classes came there without quarrelling. Shantanu's son Bhishm, Valhik, Somdatta, the blind king Dhritrashtra, Vidur, Devi, Satyavati the glorious daughters of the king of Kashi and Gandhari accompanied with the royal princesses came there. 16. The hundred sons of Dhritrashtra, Duryodhana and others, decked in various ornaments, were also there. The Kauravas with their priests came there and having bowed down to the ascetics sat before them. 18. The citizens and the villa-

शुःसर्वे पौरजानपदाअपि ॥ १९ ॥ तमकूजमभिज्ञाय जनौघंसर्वशस्तदा। पूजयित्वा यथान्यायं पाद्येनार्घ्येणचप्रभो ॥ २० ॥ भीष्मोराज्यञ्चराष्ट्रंच महर्षिभ्योन्यवेदयत्। तेषामथोवृद्धतमः प्रत्युत्थायजटाजिनी ॥ २१ ॥ ऋषीणांमतमाज्ञाय महर्षिरिदमब्रवीत । यःसकौरव्यदायादः पाण्डुर्नामनराधिपः । कामभोगान परित्यज्यशतशृङ्गमितो गतः ॥ २२ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतस्थस्य तस्यदिव्येनहेतुना। साक्षाद्धर्मादयंपुत्रस्तत्र जातो युधिष्ठिरः ॥ २३ ॥ तथैनंबलिनांश्रेष्ठं तस्यराज्ञोमहात्मनः। मातरिश्वाददौपुत्रं भीमं नाममहाबलम ॥ २४ ॥ पुरुहूतादयंजज्ञे कुन्त्यामेवधनंजयः । यस्यकीर्तिर्महेष्वासान सर्वानभिभविष्यति ॥ २५ ॥ यौतुमाद्रीमहेष्वासावसूत पुरुषोत्तमौ। अश्विभ्यांपुरुष व्याघ्राविमौतामपि पश्यत ॥ २६ ॥ चरताधर्मनित्येन वनवासंयशस्विना । नष्टःपैता महोवंशः पाण्डुनापुनरुद्धृतः ॥ २७ ॥ पुत्राणांजन्मवृद्धिंच वैदिकाध्ययनानिच। पश्य

कर सामने आये।१८। उसप्रकार नागरिक और ग्रामवासी सब शिरझुकाकर प्रणामपूर्वक उन के सामने जा बैठे। हे प्रभु अनन्तर भीष्मने चारों ओर सब लोगों को चुपचाप देख कर पाद्य और अर्घ्य से न्यायानुसार उन महर्षियों की पूजाकर राज्य और राजा का हाल सुनाया इस के पश्चात् उनमें सबों से बूढ़े बड़ी जटा वाले एक महर्षि उठे और साथी ऋषियों की सम्मति लेकर कहने लगे कि कौरव राज्य के आधीश पांडु नामक जो भूपाल काम के भोगको छोड़ कर यहां से शतशृंग पर गयेथे उन के ब्रह्मचर्य ब्रत के लेने पर किसी दिव्य कारणसे शतशृंग पर साक्षात् धर्म से इस पुत्र का जन्म हुआ है इसका नाम युधिष्ठिर है और उस महात्मा राजा ने पवन से बलवानों में श्रेष्ठ भीम नामक यह पुत्र पायाहै सत्य पराक्रमी यह बालक देवराज से कुंती के गर्भ में पैदा हुआ है यह अपनी कीर्तिसे सम्पूर्ण चापधारियों को पराजय करैगा।२५। दोनों अश्विनिकुमारों से माद्री ने जो दो महाचापधारी पुरुष श्रेष्ठ उत्पन्न किये हैं उन पुरुष

gers also took their seats respectfully. At length Bhishm seeing the people sitting silently, all round offered *Arghya* (libation of water) and Padya (water for feet) to the ascetics. Then the oldest of the rishis rose up and with the consent of his companions said, " Pandu, a prince of the Kaurav dynasty, who had left the comforts to practice asceticism on mount Shatshrang, had, on his taking a vow of celibacy, got in an extraordinary manner, this son, named Yudhisthir by Dharm. himself. Then he got by Pavan this Bhim, the foremost of those possessing strength. A true warrior, this child, was given by Indra. He will defeat all the archers.25. The two *Aswini kumars* gave birth to these two great archers, the sons of Madri. The glorious Pandu, living a life of

न्तःसततंपाण्डोः परांप्रीतिमवाप्स्यथ ॥ २८ ॥ वर्त्तमानःसतांवृत्ते पुत्रलाभमवाप्यच पितृलोकंगतः पाण्डुरितः सप्तदशेऽहनि ॥ २८ ॥ तंचितागतमाज्ञाय वैश्वानरमुखेहुतम् । प्रविष्टापावकंमाद्री हित्वाजीवितमात्मनः ॥ ३० ॥ सागतासहतेनैव पतिलोकमनुव्रता । तस्यास्तस्यचयत्कार्य्यं क्रियतांतदनन्तरम् ॥ ३१ ॥ इमेतयोःशरीरेद्वे पुत्राश्चेमेतयोर्वराः । क्रियाभिरनुगृह्यन्तां सहमात्रापरन्तपाः ॥ ३२ ॥ प्रेतकार्य्येनिवृत्ते तु पितृमेधंमहायशाः । लभतांसर्वधर्मज्ञः पाण्डुःकुरुकुलोद्वहः ॥ ३३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा कुरून् सर्वान् कुरूणामेव पश्यताम् । क्षणेनान्तरहिताःसर्वे तापसा गुह्यकैःसह ॥ ३४ ॥ गन्धर्वनगराकारं तथैवान्तर्हितंपुनः । ऋषिसिद्धगणन् दृष्ट्वा विस्मयंतेपरंययु ॥ ३५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि ऋषिसंवादे षडविंश त्यधिकशततोऽध्यायः॥१२६॥

व्याघ्रों को भी देखो यस्वशी पांडुने धार्मिक और बनचारी होकर नष्ट होने वाले पिताके इस वंश का फिर उद्धार किया है तुम पांडु के पुत्रों का जन्म बृद्धि और वेद पढ़नेकी भले प्रकार आलोचना करके सदा परम प्रीति प्राप्तकरोगे ।२८। पांडु साधुओंकी पदवी पाकर और पुत्र प्राप्त कर आज सात दिनहुए पितृलोक को सिधारे हैं पतिव्रता माद्री उनको चितापर स्थित और अग्नि के मुख में आहुति चढ़ते देख कर और अग्नि में प्रवेश करने से अपना जीवन त्यागकर पति के साथ पतिलोक को गई अब उन के परलोककी जो क्रिया करनी हो करो यह उन दोनों के शरीर और माता के साथ श्रेष्ठ पुत्रगण क्रियासे शुद्ध होवें इस के पश्चात् अति यशस्वी सर्व धर्म जानने वाले कुरुवंशियों में श्रेष्ठ पुरुष पांडु पितृयज्ञ को प्राप्त करैं । वैशम्पायन ने कहा कि तपस्वी लोग यह कहकर गुह्यकों सहित उन के सामने से उसी क्षण चले गये इन ऋषि और सिद्धों को गंधर्वों के नगरकी भाँति उपस्थित होते और फिर अन्तर्हित होते देख कर सबने आश्चर्य किया ॥ ३५ ॥

virtue and celibacy, saved his paternal line from becoming extinct. Take good care to bring up the sons of Pandu and to give them education in the Vedas.28.The ascetic Pandu having brought forth these sons went, seven days ago to the region of Pitris. The chaste Madri seeing him placed on the funeral pile, to be devoured by fire, entered into the flame and went with her husband to the other world. You may now perform their obsequies. Here are the two dead bodies and the sons with mother to be purified. The virtuons Pandu will receive the *Pitri-yagya* after the obsequies." Vaishampayana said that having finished this speech, the ascetics with the Guhyaks went away out of sight. Seeing them disappear, like the Chimera, the andience was amazed.35.

धृतराष्ट्र उवाच । पाण्डोर्विदुरसर्वाणि प्रेतकार्य्याणिकारय। राजवद्राजसिंहस्य माद्र्याश्चैवविशेषतः ॥ १ ॥ पशून्वासांसिरत्नानि धनानिविविधानिच । पाण्डोःप्रयच्छमाद्र्याश्च येभ्योयावच्चवांछितम् ॥ २ ॥ यथाचकुन्तीसत्कारं कुर्य्यान्मद्र्यास्तथा कुरु । यथानवायुर्न्नादित्यः पश्येतां तां सुसंवृताम् ॥ ३ ॥ नशोच्यःपाण्डुरनघः प्रशस्यःसनराधिपः । यस्यपंचसुतावीरा जाताःसुरसुतोपमाः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ विदुरस्तंतथेत्युक्त्वा भीष्मेणसहभारत । पाण्डुंसंस्कारयामास देशेपरमपूजिते ॥ ५ ॥ ततस्तुनगरात्तूर्णमाज्यगन्धपुरस्कृताः निर्हृताःपावकादीप्ताः पाण्डोराजन् पुरोहितैः ॥ ६ ॥ अथैनमार्त्तवैः पुष्पैर्गन्धैश्च विविधैर्वरैः । शिविकांतामलंकृत्य वाससाच्छाद्य सर्वशः ॥ ७ ॥ तांतथाशोभितां माल्यैर्वासोभिश्च महाधनैः । अमात्याज्ञातयश्चैनं सुहृदश्चोपतस्थिरे ॥ ८ ॥ नृसिंहंनरयुक्तेन परमालंकृतेनतम् । अवहन्यानमुख्येन सह

अध्याय ॥ १२७ ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हे विदुर ! राज विधि के अनुसार राजसिंह पांडु और माद्रीकी सम्पूर्ण प्रेत क्रिया अच्छे प्रकार करो पांडु और माद्री के नाम से पशु, वस्त्र, रत्न, और नाना धन जिनको जितनी इच्छा हो वह उनको दान करदो ऐसा करोकि कुंती माद्री का सत्कारकरै और माद्री को इस प्रकार दाबदो कि वोह पवन सूर्यको भी न दीखपड़े ।३। निष्पाप पांडुकी दशा बुरी नहीं है क्यों कि देवकुमार समान शूरता से भरेहुए पांच पुत्र उत्पन्न हुए हैं । वैशम्पायन ने कहा कि हे भारत ! विदुर उन से जो आज्ञाहो यह कहकर भीष्म के साथ परम पवित्र स्थान में पांडुके सत्कार में प्रवृत्त हुए राज पुरोहित लोग शीघ्र राजा पांडु के दाह करने के लिये नगर से सुगन्ध युक्त प्रज्वलित जाताग्नि को लाये अनन्तर मंत्री जातवाले और मित्रवर्ग वस्त्रसे पांडुके शरीर को ढककर भाँति २ के फूल सुगन्ध युक्त पदार्थ मूल्यवान वस्त्र और माला आदि से पालकी सुशोभित कर उन के निकट जा पहुँचे ।८। फिर उस सजीहुई सवारी में आदमियों को

CHAPTER CXZVII.

Dhritrashtra ordered Vidur to arrange for the obsequies of the brave Pandu and Madri in a proper manner. He said, "Give, to the needy, in the name of Pandu and Madri, cattle, clothing, jewels and other kinds of wealth. Put Madri in Kunti's care and cover her so well as not to be seen by the sun and the air.3. The sinless Pandu's state is not bad as he has left five brave and god like sons." Vaishampayan said that Vidur hastened to obey the order and made preparations for the obsequies, conjoinly with Bhishm, in a holy place. The royol priest soon brought the preserved fire with perfumes for cremation. The ministers caste fellows and

माद्र्यासुसंवृतम् ॥ ९ ॥ पाण्डुरेणातपत्रेण चामरव्यजनेनच । सर्ववादित्रनादैश्च स-मलंचक्रिरेततः ॥ १० ॥ रत्नानिचाप्युपादाय बहूनिशतशोनराः । प्रददुःकांक्षमाणे-भ्यः पाण्डोस्तस्यौर्द्धदेहिके ॥ ११ ॥ अथच्छत्राणिशुभ्राणि चामराणिबृहन्तिच । आजह्रुःकौरवस्यार्थे वासांसिरुचिराणिच ॥ १२ ॥ याजकैःशुक्लवासोभिर्हूयमाना हुताशनाः । अगच्छन्नग्रतस्तस्य दीप्यमानास्वलंकृताः ॥ १३ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैवसहस्रशः । रुदन्तः शोकसन्तप्ता अनुजग्मुर्नराधिपम् ॥ १४ ॥ अयमस्मानपाहाय दुःखेचाधायशाश्वते । कृत्वाचास्माननाथांश्च क्वयास्यतिनराधिप ॥ १५ ॥ क्रोशन्तः पाण्डवाःसर्वे भीष्मोविदुरएवच । रमणीयेवनोद्देशे गङ्गातीरेसमे शुभे ॥ १६ ॥ न्यासयामासुरथतां शिविकांसत्यवादिनः । सभार्य्यस्यनृसिंहस्य पाण्डोरक्लिष्टकर्मणः ॥ १७ ॥ ततस्तस्य शरीरन्तु सर्वगन्धाधिवासितम् । शुचिकालीयकादिग्धं दिव्यचन्दनरूषितम् ॥ १८ ॥ पर्य्यसिंचन्जलेनाशु शातकुंभ

जोतकर उस पर माद्री से लिपटे हुए भलीभांति ढके हुए नरश्रेष्ठ पांडुको लेगये और सफेद छत्र धरकर चँवर हिलाकर और अनेक बाजे बजाकर उनकी बड़ी शोभा करदी पांडुकी और्ध्व दैहिक क्रिया के लिये सैकड़ों मनुष्य बहुत रत्न लेकर मांगने वालोंको बांटनेलगे और पांडुके लिये शुक्ल छत्र बड़ा चँवर और मनोहर वस्त्र लाये ।१२।पुरोहित लोग शुक्ल वस्त्र पहिन कर जलते हुए अलंकृत अग्नि में आहुति चढ़ाते हुए उनके आगे चलने लगे और सहस्रों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र शोकयुक्त होकर और रो २ कर यह कहते हुए राजाके पीछे चलनेलगे कि हे नराधिप आप हमको कठोर दुःख में त्याग अनाथ कर कहां चलेगये । अनन्तर पांडव गण भीष्म, और विदुर रोते हुए चलकर गंगातटपर सुन्दर वनयुक्त खंडमें सम भूमिपर सत्यवादी सुकर्मी स्त्रीसहित नर सिंह पांडुकी पालकी धरी ।१७। फिर उन्हों ने कृष्ण अगर से लिप्त और चन्दन और सुगन्धियों से सुगंधित सोने के घडे में लायेहुए जलसे पांडुकी देहको नहलाकर चारों

friends covered the body well with cloth and placing it in a palanquin decorated it with flowers perfumes and ornaments.8. The body of Madri was placed in the same palaquin. It was then borne on men's shoulders accompanied by white umbrella chanwar and musical instruments Hundreds of people distributed wealth in the name of Pandu.12. The priests clothed in white dress went before the procession, pouring libations over the blazing fire. The people of all classes followed weeping and saying, "O king, where are you going leaving us unptotected and in a miserable condition?" The Pandavas, Bhishm and Vidur followed weeping till the palanquin was put on a level piece of ground on

मयैर्घटैः । चन्दनेनचशुक्लेन सर्वतःसमलेपयन् ॥ १९ ॥ कालागुरुविमिश्रेण तथातुंग रसेनच । अथैनंदेशजैःशुक्लैर्वासोभिःसमयोजयन् ॥ २० ॥ संच्छन्नःसतुवासोभि- र्जीवन्निवनराधिपः । शुशुभेचनरव्याघ्रो महार्हशयनोचितः ॥ २१ ॥ याजकैरभ्यनु ज्ञाते प्रेतकर्मण्यनुष्ठिते । घृतावसिक्तंराजानं सहमद्र्यास्वलंकृतम् ॥ २२ ॥ तुङ्गपद्म कमिश्रेण चन्दनेनसुगन्धिना । अन्यैश्च विविधैर्गन्धैर्विधिना समदाहयन् ॥ २३ ॥ ततस्तयो शरीरे द्वे दृष्ट्वामोहवशंगता । हाहापुत्रेतिकौशल्या पपातसहसाभुवि ॥२४॥ तांप्रेक्ष्यपतितामार्त्ता पौरजानपदोजनः । रुरोददुःखसन्तप्तो राजभक्त्याकृपान्वितः ॥ २५ ॥ कुन्त्याश्चैवार्त्तनादेन सर्वाणिचविचुक्रुशुः मानुषैःसहभूतानि तिर्यग्योनि गतान्यपि ॥ २६ ॥ तथाभीष्मःशांतनवो विदुरश्चमहामतिः सर्वशः कौरवाश्चैव प्राणदन्भृशदुःखिताः ॥ २७ ॥ ततोभीष्मोऽथविदुरोराजाच सहपाण्डवैः । उदकं चक्रिरेतस्य सर्वाश्चकुरुयोषितः २८ ॥ चुक्रुशुःपाण्डवाःसर्वे भीष्मःशान्तनवस्तथा । विदुरोज्ञातयश्चैव चक्रुश्चाप्युदकक्रिया: ॥ २९ ॥ कृतोदकांस्तानादाय पाण्डवांछोक-

और सफेद चंदन लगा दिया फिर कृष्ण अगरसे मिलेहुए तुंगरसनामक सुगंधि पदार्थ से लपेटकर उन को शुक्लवस्त्रसे ढक दिया मूल्यवान विस्तरपर महाराज पांडु वस्त्रसे ढके जाकर जीवितकी समान शोभा पानेलगे।२१।अनन्तर ऋत्विकोंकी आज्ञानुसार प्रेतक्रिया होजानेपर उन्हों ने घृतसे नहाये और अलंकृत माद्रीसहित राजाको तुग और पद्म नामक सुगन्धित पदार्थोंसे मिलीहुई चन्दनकी लकडी और दूसरे भाँति २ के गन्धयुक्त पदार्थो से विधि पूर्वक दाहकिया तब काशिराजकी पुत्री कौशल्या मोहसे हा पुत्र ! हा पुत्र ! कहतीहुई एकाएक धरती पर लोटगई । २४ । नगरवाले और ज .पद बासी उस को शोकयुक्त और गिरतेहुए देखकर राजभक्तिसे दया पूरित और दुःखी होकर रोनेलगे वहाँ के त्रियगयोनि से उत्पन्न हुए प्राणीभी उन के रोने से कातर होकर मनुष्यों के साथ रोने लगे अनन्तर दाहक्रिया अन्तहोने पर पांडवों सहित भीष्म, विदुर, धृतराष्ट्र और

the bank of the Ganges. 17. The body of Pandu was then washed with perfumed water poured from a gold receptacle and was then covered with white cloth perfumed with agar and sandal. Being placed on a precious bedding and covered with cloth, Pandu looked like one living. 21. Having performed the obsequies according to the directions of Ritwiks sweet scented wood was piled round the body and the pile set on fire. At that time Kaushalya, the daughter of the king of Kashi fell down into a swoon with grief for her son.24.The citizens and the villagers were much distressed at seeing her in that condition and began to weep. The whole forest rang with the cry of weeping and wailing. At the end of cremation Bhishm, Vidur, Dhritrashtra and

कर्षितान् । सर्वाःप्रकृतयो राजन्शोचमाना न्यवारयन् ॥ ३० ॥ यथैवपाण्डवाभूमौ सुषुपुःसहबान्धवैः । तथैवनागराराजन् शिश्यिरेब्राह्मणादयः ॥ ३१ ॥ तद्धतानन्दम स्वस्थमाकुमारमहृष्टवत् । बभूवपाण्डवैःसार्द्धं नगरंद्वादशक्षपाः ॥ ३२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डुदाहे सप्तविंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२७ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ ततःकुन्तीचराजाच भीष्मश्चसहबन्धुभिः । ददुःश्राद्धन् तदापाण्डोः स्वधामृतमयंतदा ॥ १ ॥ कुरूंश्चविप्रमुख्यांश्च भोजयित्वासहस्रशः । रत्नौघान्विप्रमुख्येभ्यो दत्वाग्रामवरांस्तथा ॥ २ ॥ कृतशौचांस्ततस्तांस्तु पाण्डवान् भरतर्षभान् । आदायविविशुःसर्वे पुरंवारणसाह्वयम् ॥ ३ ॥ सततंस्मानुशोचन्तस्तमे वभरतर्षभम् । पौरजानपदाःसर्वे मृतंस्वमिवबांधवम् ॥ ४ ॥ श्राद्धावसानेतुतदा दृष्ट्वातंदुःखितंजनम् । सम्मूढांदुःखशोकार्त्तां व्यासोगातरमब्रवीत् ॥ ५ ॥ अतिक्रांत

सम्पूर्ण कौरवोंकी स्त्रियों ने पांडुकी जलक्रियाकी ।२९। हे महाराज सम्पूर्ण मंत्रीगण उन जलक्रिया कियेहुए शोकसे व्याकुल पांडवों को लेकर शोककरते हुए घरको लौटआये पांडवों ने जिसप्रकार बान्धवों सहित सिट्टीपर सोकर बारहरात काटी वैसेही ब्राह्मणादि नगरवासीभी धरतीपर सोये और नगर के लडके तक सम्पूर्ण प्रजा पांडवों के साथ बिना हर्ष बिना आनन्द बारह राततक रहे ॥ ३२ ॥

अध्याय ॥ १२८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर कुंती, धृतराष्ट्र और भीष्मने बन्धुओं सहित सम्पूर्ण कौरवों और सहस्रों अच्छे २ विप्रों को भोजन कराके और उनको रत्न, और सुन्दर ग्राम देकर पांडुकी स्वधा और अमृत मय श्राद्धदान किया फिर भरत वंशियों में श्रेष्ठ शौच किये हुए पांडवों को लेकर हास्तिन पुर में गये नगर और जनपद बासी अपने मृतमित्र की भाँति उन कुरू श्रेष्ठ पांडु के लिये सदा शोक करने लगे, अनंतर महर्षि व्यास ने आकर श्राद्ध क्रियाके अन्त में सब जनों को दुःखी देखकर मोहयुक्त और दुःख शोक से विह्वल

all the women of the family performed ceremonies with water.29. The ministers then brought the Pandavas back. The Pandavas with kinsmen and city boys passed twelve nights sleeping over the ground without any show of joy.32.

CHAPTER CXXVIII

Vaishampayan said that Kunti Dhritrashtra and Bhishm fed their kinsmen with thousands of good Brahmans and gave the latter donations af lands. Then the best of Kauravas took the purified Pandaves to Hasthinpur. The citizens and villagers wept for Pandu as for a dear friend. At last Vyas came and saw them distressed. He spoke to the exceedingly distressed Satyavati, saying.

सुखाःकालाः पर्य्युपस्थितदारुणाः । श्वः श्वः पापिष्ठ दिवसाः पृथिवीगतयौवना ६॥ बहुमायासमाकीर्णो नानादोषसमाकुलः । लुप्तधर्मक्रियाचारो घोरःकालोभविष्यति ॥ ७ ॥ कुरूणामनयाच्चापि पृथिवी न भविष्यति । गच्छत्वं योगमास्थाय युक्तावस तपोवने ॥ ८ ॥ मात्राक्षीस्त्वं कुलस्यास्य घोरंसंक्षयमात्मनः । तथेतिसमनुज्ञायसा प्रविश्याब्रवीत्स्नुषाम् ॥ ९ ॥ अम्बिकेतवपौत्रस्य दुर्नयात् किलभारताः । सानुबन्धा विनंक्ष्यन्ति पौराश्चैवेतिनःश्रुतम् ॥ १० ॥ तत्कौशल्यामिमामार्त्तां पुत्रशोकाभिपीडिताम् । वनमादायभद्रंतेगच्छामियदिमन्यसे ॥ ११ ॥ तथेत्युक्त्वात्वम्बिकया भीष्ममामन्त्र्यसुव्रता वनंययौसत्यवती स्नुषाभ्यांसहभारत ॥ १२ ॥ ताःसुघोरंतपस्तप्त्वा देव्योभरतसत्तम । देहंत्यक्त्वामहाराज गतिमिष्टां ययुस्तदा ॥ १३ ॥ वैशम्पायन उवाच । अथाम्बवन्तो

माता सत्यवती से कहा कि सुख का समय जातारहा अब कठोर काल आगया दिन धीरे२ पापपूर्ण होरहे हैं पृथ्वी की यौवनदशा जाती रही अब पूर्ववत्‌शस्यकी उत्पत्ति नहीं होगी इससे पीछे भारी मायासे पूरित धर्म क्रिया और आचार नाशी नानादोषयुक्त कठोर काल आवेगा ।७। कुरुओंकी बुरी नीतिसे धरती उजड जायगी । इसलिये तुम तपोवनमें जाकर चित्त की बृत्तियों को रोककर योग में बैठो अपने वंश का घोर सर्व नाशमत देखो सत्यवती तथास्तु कहके महल में जाकर पुत्र बधू से बोली कि हे अम्बिके मैंने सुना है कि तुम्हारे पुत्र की कुरीतियों से बंधुओं सहित भरत वंशी और नगरवाले नष्ट होंगे सो यदि तुम चाहो तो तुम्हारा मंगल होवे चलो हमइस पुत्र शोक से विह्वल अम्बालिका को ले कर वन में जावें यह कहकर सुव्रत युक्त सत्यवती अम्बिका के साथ भीष्म को उस प्रकार से संबोधनकर दोनोंपुत्र बधुओंके साथ वनको पधारी।१२। हेभारत श्रेष्ठ महाराज उन देवियों ने वहाँ कठोर तपकर देह छोडकर मनमानी सुगतिप्राप्त की । वैशम्पायन ने

"Mother the happy times are gone. A hard time is coming. Sin is on the increase. The youthfulness of the world is gone. The produce of corn will not be like that of the former days. A very bad period of sin is coming. 7. The great destruction of the people by the bad rule of the Kauravas is in store for the world. You should therefore go to the forest where aecetics dwell and restrain your mind for meditation. Thus you will not have to look at the destruction of your family. "Satyavati consented to this and entering the interior of the palace said to her daughter-in-law, " I have heard, Ambica, that by the bad rule of your grand son the Bharats with their kinsmen and the citizens will be destroyed. So if you have a mind to your welfare we will go to the forests with Ambalica who is so distressed for the death of her son. Agreeably to this proposal

वेदोक्तान् संस्कारान् पाण्डवास्तदा । संव्यवर्द्धन्त भोगांस्ते भुञ्जानाः पितृवेश्मनि ॥
॥ १४ ॥ धार्त्तराष्ट्रैश्च सहिताः क्रीडन्तोमुदिताःसुखम् । बालक्रीडासुसर्वासु विशिष्टा-
स्तेजसाभवन ॥ १५ ॥ जलेलक्ष्याभिहरणे भोज्येपांशुविकर्षणे । धार्त्तराष्ट्रान् भीम-
सेनः सर्वान्सपरिमर्द्दति ॥ १६ ॥ हर्षात् प्रक्रीडमानांस्तान् गृह्यराजन्निलीयते । शि
रःसुविनिगृह्यैतान् योधयामासपाण्डवैः ॥ १७ ॥ शतमेकोत्तरंतेषां कुमाराणांमहौज-
साम् । एकएवनिगृह्णाति नातिकृच्छ्राद्वृकोदरः ॥ १८ ॥ कचेपुच निगृह्यैनान् विनि
हत्यबलाद्बली । चकर्षक्रोशतोभूमौ धृष्टजानुशिरोंऽशकान् ॥ १९ ॥ दशबालान्जले
क्रीडन् भुजाभ्यांपरिगृह्यसः । आस्तेस्मसलिलेमग्नो मृतकल्पान् विमुंचति ॥ २० ॥
फलानिवृक्षमारुह्य विचिन्वन्तिचयेतदा । तदापादप्रहारेण भीमःकम्पयतेद्रुमान् २१।

कहा कि अनन्तर पांडव वेदानुसार संस्कारों को पाकर नाना भोगों के पदार्थ भोगते हुए पिताके घर में बढ़ने लगे वे प्रसन्न चित्त होकर धृतराष्ट्रके पुत्रोंके साथ परमसुखसे खेलते कूदते थे और सब लड़कपन के खेलों में अपने तेज से उन से बढे हुए थे वेग के विषय में निशाने में सबों से पहिले भोजन की सामग्री लेने में और धूल फेंकने आदि लड़कपन के खेलोंमें भीमसेन सम्पूर्ण धृतराष्ट्र कुमारोंको हराकर सताया करते थे ।१६। जब धृतराष्ट्र के लड़के खेलते थे तब पांडव उनको पकड़कर एक दूसरे से अलग कर देते थे और उनके शिरोंको पकड़कर एक दूसरेसे लड़ादेते थे उन बडे तेजवंत १०१ कुमारोंको अकेला भीम दिक्क किया करताथा महाबली भीम बलसे उनके केशपकडकर मारता पीटताथा मट्टीपर घसीटता और शिर गर्दन आदि रगड़ताथा वे चोटसे चिल्लाकर रोते थे वोह दो.ोंहाथों से जलमें खेलतेहुए दस लड़कों को पकड़कर डुबाये रखताथा मरने के निकट पहुँचने पर छोड़देताथा।२०।जब धृतराष्ट्रके पुत्र पेड़ोंपर चढ़कर फलतोडते थे तब भीम उन पेड़ों

Satyvati,having informed Bhishm, went with her two daughters-in-law to the forest.12.The goddessess practiced severe asceticism there and departed from the world by the desirable path.. *Vaishampayan* said that all the ceremonies enjoined by the Vedas were performed for the Pandavas and they grew luxuriantly in the house of their father. They played jocuntly with the children of Dhritrashtra and excelled them in all the youthful games. In swiftness, hitting the mark, snatching the articles of food, throwing the dust etc, and youthful sports Bhimsen teased and defeated all the sons of Dhritrashtra.16. When the sons of Dhritrashtra were playing joyfully the Pandavas separated them by force and would strike their heads together. Bhim alone used to tease all the hundred and one sons of Dhritrashtra. The brave Bhim used to drag them by the

प्रहारवेगाभिहताद्रुमा व्याघूर्णितास्ततः । सफला प्रपतन्तिस्म द्रुतंत्रस्ताःकुमारकाः ॥
॥ २२ नतेनियुद्धेनजवेन योग्यासुकदाचन । कुमाराउत्तरंचक्रुः स्पर्द्धमानावृकोद
रम् ॥ २३ ॥ एवंसधार्त्तराष्ट्रांश्च स्पर्द्धमानोवृकोदरः । अप्रियेऽतिष्ठदत्यन्तं बाल्यान्न
द्रोहचेतसा ॥ २४ ॥ ततोबलमतिख्यातं धार्त्तराष्ट्रःप्रतापवान् । भीमसेनस्यतज्ज्ञात्वा
दुष्टभावमदर्शयत् ॥ २५ ॥ तस्यधर्मादपेतस्य पापानिपरिपश्यतः । मोहादैश्वर्य्य-
लोभाच्च पापामतिरजायत ॥ २६ ॥ अयंबलवतांश्रेष्ठः कुन्तीपुत्रोवृकोदरः । मध्यमः
पाण्डुपुत्राणां निकृत्यासंनिगृह्यताम् ॥ २७ ॥ प्राणवान्विक्रमीचैव शौर्य्येणमहता-
न्वितः । स्पर्द्धतेचापि सहितानस्मानेको वृकोदरः ॥ २८ ॥ तन्तुसुप्तंपुरोद्याने गङ्गायां
प्रक्षिपामहे । अथतस्मादवरजंश्रेष्ठं चैवयुधिष्ठिरम् ॥ २९ ॥ प्रसह्यबन्धनेबद्ध्वा प्रशा

को लात मारकर हिलादेता था और लडके उसीक्षण पेडोंसे छूटकर फलके साथ गिर जाते थे वे लडके बाहुयुद्ध वेग और शिक्षामें किसी प्रकार अहंकार पूर्वक वृकोदर से बढ़ नहीं सक्ते थे वृकोदर धृतराष्ट्र के पुत्रों को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता था केवल लडकपनही से वोह उसप्रकार अहंकार प्रकटकर उन के बडे अप्रिय कामों में हाथडालता था।२४।अनन्तर प्रतापी धृतराष्ट्रकुमार दुर्योधन भीमसेनका ऐसा अतिप्रख्यात बल देखकर बुराभाव दिखलाने लगा धर्महीन पापी दुर्योधनका चित्त अज्ञानता और ऐश्वर्य के लोभ से पापपर दौड़ा उसने यह समझा कि पांडवों में मझला यह कुंतीपुत्र वृकोदर बलियों में श्रेष्ठहै इस को कौशल से मारडालना चाहिये अत्यन्त बल बिक्रमयुक्त महावीर वृकोदर अकेलाही हम सबको हराताहै।२८।जब वोह नगरकी फुलवाड़ीमें सोताहोगा तब उसे गंगा में डाल दूंगा फिर उसके छोटेभाइयों और बडे युधिष्ठिर को बल से बांधकर अकेला राजा हूंगा पापात्मा दुर्योधन यह निश्चयकर महात्मा भीमसेनको सदा ढूंढने लगा । हे भारत ! अनन्तर उस पापात्मा ने जलक्रीडाके लिये गंगातटपर प्रमाण कोटि नामक

hair and beat them head and neck leaving them weeping and crying. Sometimes he would hold ten of them under water and leave them only when they were at the point of death. 20. When the sons of Dhritrashtra climbed fruit trees to pluck the fruits Bhim would shake them down by his kick. They could not excel Bhim in feats of arms, swiftness and training. It was youthful mischief and not any intention to do them harm, that led Bhim to engage himself in such quarrels. 24. But Duryodhan, seeing Bhim so excellent in strength, began to show signs of enmity. Bad natured Duryodhan, by his folly and avarice, turned his mind on committing sin. He thought, "The foremost of strong men, Bhim the middle one of the Pandavas, should be dertroyed by cunning.

सिष्येवसुन्धराम् । एवंसनिश्चयंपापः कृत्वादुर्य्योधनस्तदा । नित्यमेवान्तरप्रेक्षी भीम
स्यासीन्महात्मनः ॥ ३० ॥ ततोजलविहारार्थं कारयामासभारत । चैलकम्बलवे
श्मानि विचित्राणिमहान्तिच ॥ ३१ ॥ सर्वकामैःसुपूर्णानि पताकोच्छ्रायवन्तिच ।
तत्रसञ्जनयामास नानागाराण्यनेकशः ॥ ३२ ॥ उदककीड़नंनाम कारयामास
भारत । प्रमाणकोटय्यंतं देशंस्थलंकिञ्चिदुपेत्यह ॥ ३३ ॥ भक्ष्यंभोज्यञ्चपेयञ्च
चोष्यंलेह्यमथापिच । उपादितंनरैस्तत्र कुशलैःसूदकर्माणि ॥ ३४ ॥ न्यवेदयंस्तत्पुरुषा
धार्त्तराष्ट्रायवैतदा । ततोदुर्योधनस्तत्र पाण्डवानाहदुर्मतिः ॥ ३५ ॥ गङ्गांचैवानुया
स्याम उद्यानवनशोभिताम् । सहिताभ्रातरःसर्वे जलक्रीड़ामवाप्नुमः ॥ ३६ ॥ एवम
स्त्वितितंचापि प्रत्युवाचयुधिष्ठिरः । तेरथैर्नगराकारैर्देशजैश्च गजोत्तमैः ॥ ३७ ॥ नि-
र्ययुर्नगराच्छूराः कौरवाःपाण्डवैःसह । उद्यानवनमासाद्य विसृज्यचमहाजनम् ॥ ३८ ॥
विशन्तिस्मतदावीराः सिंहाइवगिरेर्गुहाम् । उद्यानमभिपश्यन्तो भ्रातरःसर्वएवते

स्थान में जल और स्थलपर वस्त्र और कम्बलका एक बड़ाभवन बनवाकर उस में सम्पूर्ण काम के पदार्थ भरे और फहराती हुई ध्वजासे सुशोभित कई घरबनवाये ।३२। हेभारत नन्दन ! उस भवनका नाम उदकक्रीणन हुआ रसोई बनाने में दक्ष, रसोईवालों ने उस में चबाने, चूसने, चाटने, पीने आदि की नाना भोजनकी वस्तुएं बनवाकर रक्खीं फिर सब ठीकहोने पर नौकरों ने दुर्योधन को यह समाचार सुनाया और दुर्मति दुर्योधन ने पांडवोंसे कहा कि चलो हम सब भाई मिलकर वन बगीचे से सुशोभित गंगाके किनारे जाकर जल में खेलैं युधिष्ठिर के सम्मत होनेपर शूर कौरव लोग पांडवों के साथ नगर के समान बड़े रथ और बडे २ शरीरवाले हाथियों पर नगर से निकले फिर वे वीर भाई बगीचे में पहुँचकर साथियों को विदाकर उपबन की शोभा देखतेहुए ।३८। सिंह के पर्वत कन्दरा में घुसनेकी समान उस के भीतरगये देखा कि राज लोगोंसे साफ कियेहुए

The most valliant Bhim alone defeats all of us.28. I shall throw him into the Ganges when he will be sleeping in the city garden. I shall then imprison his younger brothers including Yudhishthir and become the sole monarch of the earth. Having resolved upon this the sinful Duryodhan was always in search of Bhimsen. The bad-natured man then ordered a house to be made of cloth walls on the bank of the Ganges. Several appartments of the house were set apart for different commodities.32. The building was named Udak-Kriran. Clever cooks stored articles of food and drink in it and when all was in readiness they informed Duryodhan of the fact. Duryodhan then proposed to the Pandavas to go with him and the brothers to dwell in orchards at the bank of the Ganges to

॥ ३९ ॥ उपस्थानगृहैःशुभ्रैर्वलभीभिश्च शोभितम् । गवाक्षकैस्तथा जालैर्यन्त्रैः
साश्चारिकैरपि ॥ ४० ॥ संमार्जितं सौधकारैश्चित्रकारैश्च चित्रितम् । दीर्घकाभिश्च
पूर्णाभिस्तथा पुष्करिणीभिर्हि ॥ ४१ ॥ जलंतच्छुशुभेछन्नं फुल्लैर्जलरुहैस्तथा ।
उपच्छन्ना वसुमतीतथा पुष्पैर्यथर्त्तुकैः ॥ ४२ ॥ तत्रो पविष्टास्तेसर्वे पाण्डवाः
कौरवाश्चह । उपच्छन्नान बहून् कामांस्त भुंजन्तिततस्ततः ॥ ४३ ॥
अथोद्यानवरे तस्मिंस्तथाक्रीडागताश्चते । परस्परस्यवक्त्रेभ्यो ददुर्भक्ष्यांस्त
तस्ततः ॥ ४४ ॥ ततोदुर्य्योधनः पापस्तद्भक्ष्येकालकूटकम् । विषंप्रक्षेपयामास भीम
सेनजिघांसया ॥ ४५ ॥ स्वयमुत्थायचैवाथ हृदयेनक्षुरोपमः । सवाचामृतकल्पश्च
भ्रातृवच्चसुहृद्यथा ॥ ४६ ॥ स्वयंप्रक्षिपतेभक्ष्यं बहुभीमस्यपापकृत् । प्रतीक्षितंस्मभी-
मेनतंवै दोषमजानता ॥ ४७ ॥ ततोदुर्य्योधनस्तत्र हृदयेनहसन्निव । कृतकृत्यमिवा-
त्मानं मन्यतेपुरुषाधमः ॥ ४८ ॥ ततस्तेसहिताःसर्वे जलक्रीडामकुर्वत । पाण्डवाधा-

चित्रकारों से चित्रित सुफेद बैठकें और घरोंकी छतें सुहागही हैं वहां जंगले, फुहार,जिन से सैकडों धारों से जल निकलकर ओसकी भांति घरके भितर के भागको भर देता है ऐसी २ कलोंकी अपूर्व शोभा देख पडती है खिले पद्म के बन से ढके जलभरे तालोंकी बड़ी शोभाहोरही है और ऋतुके फूलोंसे वहांकी भूमि घिरी है।४२। अनन्तर कौरव और पांडव वहां जाकर बैठे और नाना स्थानोंसे मँगायेहुए काम के पदार्थोंका स्वादलेने लगे वे सुन्दर फुलवाडी में खेलते हुए एक दूसरे के मुख में खानेकी वस्तु देनेलगे उससमय पापात्मा दुर्योधन ने भीमसेनके मारडालने की इच्छा से भोजनकी वस्तु में विष मिलाया तब उस पापात्मा ने जिसके हृदयमें धार और बातमें अमृतथा स्वयम् उठकर भाई और मित्रवत भीमसेन के मुँह में उस विषैली वस्तुका एक भाग डालदिया भीमसेनने भी कोई दोष न जानकर उसे भोजनके पदार्थके समान खालिया ।४७। तब पुरुषोंने बडा अधम

play in water. Yudhishthir consenting the brave Kauravas and Pandavas mounted on large chariots and huge elephants to go there. On reaching the place they dismissed the attendants and walking through the orchard made on entry into the house as a lion enters a mountain cave.38. There they saw houses built neatly by architects, pictured by painters with beautiful ceilings. There were railings and fountains from which water trickled from thousands of opening filling the inner surface of the house as with dew. There were many wonderful mechanisms there. Tanks covered with a forest of opening lilies were very beautiful to look at. Flowers of the season were also there.42. Playing in the beautiful garden they put articles of food in one another's

स्तराष्ट्राश्च तदामुदितमानसाः ॥ ४९ ॥ क्रीडावसानेतेसर्वे शुचिवस्त्राःस्वलंकृताः। दि
वसान्तेपरिश्रान्ता विहृत्यचकुरुद्वहाः ॥ ५० ॥ विहारावसथेष्वेव वीरावासमरोचयन्।
खिन्नस्तुबलवान्भीमो व्यायम्याभ्यधिकंतदा ॥ ५१ ॥ वाहयित्वाकुमारांस्तान् जल-
क्रीडागतांस्तदा । प्रमाणकोट्यांवासार्थी सुष्वापावाप्यतत् स्थलम् ॥ ५२ ॥ शीतंवातं
समासाद्य श्रान्तोमदविमोहितः । विषेणचपरीतांगो निश्चेष्टःपाण्डुनन्दनः ॥ ५३ ॥
ततोबद्ध्वालतापाशैर्भीमं दुर्योधनःस्वयम् । मृतकल्पंतदावीरं स्थलाज्जलमपातयत् ।
॥ ५४ ॥ सनिःसंज्ञोजलस्यान्तमथवै पाण्डवोऽविशत् । आक्रामन्नागभवने तदानाग-
कुमारकान् ॥ ५५ ॥ ततःसमेत्यबहुभिस्तदा नागैर्महाविषैः । अदश्यतभृशंभीमो
महादंष्ट्रैर्विषोल्वणैः ॥ ५६ ॥ ततोऽस्यदश्यमानस्य तद्विषंकालकूटकम् । हतंसर्पविषे
णैव स्थावरंजङ्गमेनतु ॥ ५७ ॥ दंष्ट्राश्चदंष्ट्रिणांतेषां मर्मस्वपिनिपातिताः त्वचंनैवा-

दुर्योधन अपनी इच्छा पूरीहुई जानकर मानो मनही मन में हँसनेलगा फिर धृतराष्ट्रके लडके और पांडवलोग प्रसन्न चित्तसे एकत्रहोकर जलमें खेलनेलगे जलमें खेलने के पश्चात् कुरु वंशियोंमें श्रेष्ठ वीरगण पवित्रवस्त्र पहिनकर अलंकृतहुए और खेलसे थककर शामके समय उस विहार के घरही में रहनाचाहा महाबली भीम जलमें खेलतेहुए कुमारोंको बहुत लडानेसे थककर आराम करनेकी इच्छासे उसप्रमाण कोटिके स्थलमें आकर सोगये ।५२ पांडुपुत्र भीम एक तो थकन दूसरे विषके नशे में अचेतनथा फिर ठंढीहवालगनेसे सबशरीर में विषफैलने के कारण एक बारही अचेत हो गया तब दुर्योधन ने भीमको मरा समझकर लता जाल से बांधकर स्थलसे जलमें गिरादिया चेतन रहित पांडव जल में डूबकर नागोंके घरमें उन के बच्चोंपर जागिरा।५५।तब अगणित तेज काटनेवाले विषैले सर्प मिलकर भीम को काटनेलगे उन के काटनेसे भीमसेन के शरीरका स्थायी विष चलते हुए सर्प विष से

mouths. At this time the bad natured Duryodhan prepared some poisonous food to kill Bhimsen. Then the wolf in sheep's clothing put a large morsel into the mouth of Bhim. Not suspecting any foul play he swallowed it. 47. Duryodhan, the worst type of humanity, was well pleased in his mind. Then the sons of Dhritrashtra with the Pandavas, began to play in water. Then the brave Kauravas clothing themselves in good clothes, and being tired at the close of the day resolved to put up there for the night. The brave Bhim being tired by the exertions of the day went to sleep in an inner appartment. 52. Tired and intoxicated by poison he laid himself down. The cool breeze circulated the poison ints his whole system and he became senseless. *Duryodhn* himself bound Bhim with dried up creepers and threw him down into the river. The senseless Pan

स्य विभिदुः सारत्वात्पृथुवक्षसः ॥ ५८॥ ततःप्रबुद्धःकौन्तेयः सर्वसञ्छिद्यबन्धनम्ः पोथयामासतान्सर्वान् केचिद्भीताःप्रदुद्रुवुः ॥ ५९ ॥ हतावशेषाभीमेन सर्वेवासुकि-मभ्ययुः । ऊचुश्चसर्पराजानं वासुकिंवासवोपमम् ॥ ६० ॥ अयंनरोवैनागेन्द्र ह्यप्सु बद्धाप्रवेशितः । यथाचनोमतिर्वीर विषपीतोभविष्यति ॥ ६१ ॥ निश्चेष्टोऽस्माननुप्राप्तः सचदष्टोऽन्वबुध्यत । ससंज्ञश्चापिसंवृत्तश्छित्वा बन्धनमाशुनः ॥ ६२ ॥ पोथयन्तं महाबाहुं त्वंवैतंज्ञातुमर्हसि । ततोवासुकिरभ्येत्य नागैरनुगतस्तदा ॥ ६३ ॥ पश्यति स्ममहाबाहुं भीमंभीमपराक्रमम् । आर्य्यकेणचदृष्टः सपृथायाआर्य्यकेणच ॥ ६४ ॥ तदादौहित्रदौहित्रः परिष्वक्तःसुपीडितम् । सुप्रीतश्चाभवत्तस्य वासुकिःसुमहायशाः ॥ ६५ ॥ अब्रवीत्तंचनागेन्द्रः किमस्यक्रियतांप्रियम् । धनौघोरत्ननिचयो वसुचास्य

दूर होगया उन सर्पों के दांतों से भीमसेन के मर्मस्थान पर चोट लगने से भी उनकी बड़ी भारी छातीकी कठिनाई के कारण चमड़ा तक भी नहीं कटा अनन्तर कुंती पुत्र सचेत होकर बंधनों को काटकर उन सर्पोंको गाडने लगे उनमें से कुछ सर्प भय खाकर वेग से भाग गये और देवराज समान सर्प वासुकि के पास जाकर कहा ।६०। कि हे वीर नागेन्द्र एक मनुष्य किसीसे बांधाहुआ जल में गिराया गया था हमको विदित होताहै कि उस ने विष खायाथा क्योंकि जब हमारे आगे गिरा तब वोह अचेतथा परन्तु जब हमने उसे काटना आरम्भ किया तब वोह सचेत होकर जागा और अपने शरीर के बंधन काटकर हमको मारनेलगा आपको जानना चाहिये कि वोह महाभुज कौनहै तब वासुकि ने साथी नागों के साथ वहाँ आकर बड़े पराक्रमी महाभुज भीम को देखा तब कुंती के पिता के मातामह आर्यक नामक नागराज ने नातीके नाती भीमको देखकर गलेसे लगाया इस से अति यशस्वी नागेंद्र वासुकिने उनपर प्रसन्नहोकर ।६५। नागराज आर्यक से कहा कि इन का क्या प्रिय कार्य करना चाहिये इनको धन आदि अनेक

dav went down and fell upon the children of the serpents. 55. And many poisonous snakes bit him. The stagnant poison within Bhim's body was counteracted by the venom. His hard breast could not be pierced beyond the skin. Coming to his senses Bhim broke open his bonds and began to chastise the snakes. Some of them ran away with fear and informed the serpent king Vasuki(60)that a man bound by some body had been thrown amongst them and had perhaps took poison for,on being bitten by them he had awakened and breaking open his bonds was beating them. On hearing this, Vasuki with his companions came there and saw him. The father-in-law of Kunti's father saw his great-grandson Bhim and embraced him. The king, also, finding him a kinsman of prince Aryak(65) enquired what good he

प्रदीयताम् ॥ ६६ ॥ एवमुक्तस्तदानागो वासुकिंप्रत्यभाषत । यदिनागेन्द्रतुष्टोऽसि किमस्यधनसंचयैः ॥ ६७ ॥ रसम्पिबेत् कुमारोऽयं त्वयिप्रीतमहाबलः । बलंनागसहस्रस्य यस्मिन् कुण्डेप्रतिष्ठितम् ॥ ६८ ॥ यावत्पिबतिबालोऽयं तावदस्मैप्रदीयताम् । एवमस्त्वितितंनागं वासुकिःप्रत्यभाषत ॥ ६९ ॥ ततोभीमस्तदानागैः कृतस्वस्त्ययनः शुचिः । प्राङ्मुखश्चोपविष्टश्चरसंपिबतिपाण्डवः ॥७०॥ एकोच्छ्वासात्ततःकुण्डं पिबति स्ममहाबलः । एवमष्टौसकुण्डानि ह्यपिबत्पाण्डुनन्दनः ॥ ७१ ॥ ततस्तुशयनेदिव्ये नागदत्तमहाभुजः । अशेतभीमसेनस्तु यथासुखमरिन्दमः ॥ ७२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि भीमसेनरसपाने अष्टाविंश
त्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२८ ॥

रत्न दो वासुकि की यह वात सुनकर आर्यकने कहा कि हे नागेन्द्र यदि आप प्रसन्न हुए हैं तो इसको धन रत्नकी आवश्यकताही क्या है जब आप प्रसन्न हैं तो यह कुमार रस पीकर बली होगा उस कुंड में सहस्र हाथियों का वल है सो यह बालक उस कुंड का जितना रस पीसके उतना पीनेदीजिये नागराज वासुकि के सम्मत होने पर भीमसेन पवित्र होकर और नागों से मंगला चरण किये जाकर पूर्व की ओर मुख करके वैठकर रस पीने लगे । महाबली भीम ने एकही दममें एक कुंडा भर रस पीलिया और इस प्रकार आठ कुंडे खाली कर दिये अनन्तर शत्रुनाशी महाभुज भीमसेन नागों की दीहुई सेज पर परम सुख से सो रहे ॥ ७२ ॥

---

cauld do him. He desired to give him jewels. Having heard this Aryak said, "If you are gratified, O king of serpents, he will not remain in want of wealth. Yonder tank has in its juice the strength of a thousand elephants. Let him drink of it as much as he can." By permission of the king Bhimsen being purified and bleased by the serpents sat with his face towards the East and began to drink of the juice. He emptied the whole tank in one draught and continued till he had emptied eight of the tanks. Then the destroyer of enemies, the brave Bhim, laid himself down on the soft bed furnished by the snakes. 72.



वैशम्पायन उवाच । ततस्तेकौरवाःसर्वे विनाभीमञ्चपाण्डवाः । वृत्तक्रीडाविहारास्तु प्रतस्थुर्गजसाह्वयम् ॥ १ ॥ रथैर्गजैस्तथा चाश्वैर्यानैश्चान्यैरनेकशः। ब्रुवन्तो भीमसेनस्तु यातोह्यग्रतएवनः ॥ २ ॥ ततोदुर्य्योधनः पापस्तत्रापश्यन् वृकोदरम् । भ्रातृभिःसहितोहृष्टो नगरंप्रविवेशह ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरस्तुधर्मात्मा ह्यविदन्पापमात्मनि । स्वेनानुमानेनपरंसाधुं समनुपश्यति ॥ ४ ॥ सोऽभ्युपेत्यतदापार्थो मातरंभ्रातृवत्सलः । अभिवाद्याब्रवीत्कुन्ती मम्बभीमइहागतः ॥ ५ ॥ क्वगतोभवितामातर्नेह पश्यामितंशुभे । उद्यानानिवनंचैव विचितानिसमन्ततः ॥ ६ ॥ तदर्थेनचतंवीरं दृष्टवन्तोवृकोदरम् । मन्यमानास्ततःसर्वे यातोनःपूर्वमेवसः ॥ ७ ॥ आगताःस्म महाभागे व्याकुलेनान्तरात्मना । इहागम्यक्वनुगतस्त्वया वाप्रेषितःक्वनु ॥ ८ ॥ कथयस्वमहाबाहुं भीमसेनंयशस्विनि । नहिमेशुध्यतेभावस्तं वीरंप्रतिशोभने ॥ ९ ॥ यतःप्रसुप्तंस-

अध्याय ॥ १२९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर सम्पूर्ण कौरव और भीम के विना पांडव गण खेल और विहारकर रथ, हाथी, घोड़े और दूसरे यानोंपर हास्तिनपुर लौट जातेसमय कहने लगे कि भीम हम से पहिले गया होगा पापात्मा दुर्योधन ने उन में भीमको न देख कर प्रसन्न चित्त से नगर में प्रवेश किया धर्मात्मा युधिष्ठिर अपने में कोई पाप बुद्धि नहीं रखते थे और अपनी समान शत्रुओंकोभी साधु समझते थे।४।वोह मातृ प्रेमी कुंती पुत्र माता कुंतीके पास जाकर पांव छूकर वोले कि क्यों मां भीम यहां आया है ऐ शुभ चाहनेवाली वोह अभी तक क्यों नहीं दीखपड़ता वोह कहाँ गयाहोगा हम वनकी फुलवाड़ी में चारों ओर उसे ढूंढ चुके पर कहीं उस वीर वृकोदर को नहीं देखा अंत में सबने यह समझा कि भीम हम से पहिले आयाहोगा। ७ । यशस्विनी ! हम व्याकुल

CHAPTER CXXIX.

Vaishampayan said that all the Kauravas and the Pandavas excepting Bhim returned home after play on chariots, elephants, horses and other carriages. They thought Bhim might have started earlier. The ill-natured Duryodhan, not seeing Bhim among them, entered the city joyfully. The good. Yudhishthir did not suspect foul play even in an enemy. 4. The filial Pandava, touching the feet of Kunti. asked her whether Bhim had been there. "Why is he not seen" said he "where should he be? We have searched for him all round in the orchard but could find him nowhere. At last it was suggested that he might have gone on before. 7. We are therefore coming with a heavy heart. Please let me know where he has gone. Have you sent him somewhere?

॥ १० ॥ हाहेति
न्येऽहं भीमंनेतिहतस्त्वुसः । इत्युक्ताचततःकुन्ती धर्मराजेनधीमता ॥ १० ॥ हाहेति कृत्वासंभ्रान्ता प्रत्युवाचयुधिष्ठिरम् । नपुत्रभीमंपश्यामिन मामभ्येत्यसावितिः ॥ ११ ॥ शीघ्रमन्वेषणेयत्नं कुरुतस्यानुजैःसह । इत्युक्त्वातनयंज्येष्ठं हृदयेनविदूयता ॥ १२ ॥ क्षत्तारमानाय्यतदाकुन्ती वचनमब्रवीत् । क्वगतोभगवन् क्षत्तर्भीमसेनो नदृश्यते ॥ १३ ॥ उद्यानान्निर्गताःसर्वे भ्रातरोभ्रातृभिःसह । तत्रैकस्तु महाबाहुर्भीमो नाभ्येतिमामिह ॥ १४ ॥ नचप्रीणयतेचक्षुः सदादुर्य्योधनस्यसः । क्रूरोऽसौदुर्मतिःक्षुद्रो राज्यलुब्धोऽनपत्रपः ॥ १५ ॥ निहन्यादपितंवीरं जातमन्युःसुयोधनः । तेनमेव्याकुलंचित्तं हृदयं दह्यतीवच ॥ १६ ॥ विदुर उवाच । मैवंवदस्वकल्याणि शेषसंरक्षणंकुरु । प्रत्यादिष्टोहिदुष्टात्मा शेषेऽपिप्रहरेत्तव ॥ १७ ॥ दीर्घायुषस्तवसुता यथोवाचमहामुनिः । आ

हृदय से आरहे हैं सो बतलाओ महाभुज भीम यहां आकर कहां गया तुम ने उस को कहीं भेजातो नहीं उस वीर के लिये मेरा चित्त घबडा रहा है क्योंकि स्मर्ण होता है कि भीम सोताथा उस से पीछे फिर नहीं आया सो मारागया होगा बुद्धिमान धर्म पुत्र की यहबात सुनकर।१०।कुंती हा हा करतीहुई दुःखसे बोली कि बेटा मैंने भीमको कहीं नहीं देखा भीम मेरे पास नहीं आया तुम छोटे भाइयों को लेकर तुरन्त उसको ढूंढो सँतापित चित्त से ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर से कहकर विदुर को बुलवा कर उन से बोली कि भगवान क्षत्र भीमसेन कहां गया है वोह नहीं दीख पड़ता सब भाई फुलवाडी से लौट आये केवल महाभुज अकेला भीम मेरे पास नहीं आया उसको देख कर दुर्योधन की आंख प्रसन्न नहीं होती वोह बड़ा चालाक दुर्मति, नीच और लज्जा रहित है ऐसा न हो कि क्रोध वश उसने उस वीर को मार डालाहो इस भय से मेरा चित्त विकल और हृदय जलरहाहै।१६।विदुरने कहा कि ऐ कल्याणी तुम यह बात प्रकट न करो और पुत्रों की रक्षा करो क्योंकि दुरात्मा दुर्योधन लांछित होने से तुम्हारे शेष पुत्रों को मार

I am very anxious for him, for, I remember I saw him sleeping. He did not return, may be he was slain.' Hearing this from the wise Yudhishthir,(10)Kunti began to cry and said in dismay, "I have not seen Bhim. He did not come to me. Go in search of him at once with the younger brothers." Having said this to Yudhishthir she sent for *Vidur* and said, "Where is Bhim, my lord, he is not seen? The other brothers have come back from the orchard. Bhim alone has not returned to me. Duryodhan does not like his look. He is very cunning, bad-natured, ambitious and shameless. I fear he might have killed Bhim in anger. I am very anxious for the safety of my son." 16. Vidur replied, "Donot say so to any one else. Take care of the remaining sons. for, the ill-natured Duryodhan, knowing himself to be suspected, may kill

गमिष्यतितेपुत्रः प्रीतिंचोत्पादयिष्यति ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा ययौविद्वान् विदुरःस्वंनिवेशनम् । कुन्तीचिन्तापराभूत्वा सहासीनासुतैर्गृहे ॥ १९ ॥ ततोऽष्टमेतुदिवसे प्रत्युबुध्यतपाण्डवः । तस्मिंस्तदारसेजीर्णे सोऽप्रमेयबलोबली ॥ ॥ २० ॥ तंदृष्ट्वाप्रतिबुध्यन्तं पाण्डवंतेभुजङ्गमाः । सान्त्वयामासुरव्यग्रा वचनंचेदमब्रुवन् ॥ २१ ॥ यत्तेपीतोमहाबाहो रसोऽयंवीर्य्यसम्भृतः । तस्मान्नागायुतबलो रणेऽधृष्योभविष्यसि ॥ २२ ॥ गच्छाद्यत्वंचस्वगृहं स्नातोदिव्यैरिमैर्जलैः । भ्रातरस्तेऽनुतप्यन्ति त्वांविनाकुरुपुङ्गव ॥ २३ ॥ ततःस्नातोमहाबाहुः शुचिःशुक्लाम्बरस्रजः । ततोनागस्यभवने कृतकौतुकमङ्गलः ॥ २४ ॥ ओषधीभिर्विषघ्नीभिः सुरभीभिर्विशेषतः । भुक्तवान्परमान्नंच नागैर्दत्तंमहाबलः ॥ २५ ॥ पूजितोभुजगैर्वीर आशीर्भिश्चाभिनन्दितः । दिव्याभरणसंच्छन्नो नागानामन्त्र्यपाण्डवः ॥ २६ ॥ उदतिष्ठत्प्रहृ

सक्ता है महामुनि ने कहाथा कि तुम्हारे पुत्र दीर्घआयु होंगे सो तुम्हारा पुत्र लौट कर अवश्यही तुम्हारी प्रीति बढ़ावेगा ।१८। वैशम्पायनने कहा कि विद्वान् यहकहकर अपने घरको गये कुंती शोचती हुई पुत्रों के साथ घरमें रहने लगी अनन्तर आठवें दिन महा बली पांडु पुत्र भीम जागा और उस समय रसके पचजानेसे बड़ा बलवान होगया था सर्प उस पांडव को जागते देख कर शीघ्रता पूर्वक उसे समझाने लगे कि हे महाभुज तुमने जो वीर्य देनेवाला रस पिया है उस से तुम दस सहस्र हाथी के समान बली और रणभूमि में अजित हुएहो हेकुरुश्रेष्ठ ! आज तुम इस दिव्य और शुभजल से स्नान कर अपने घरको लौट जाओ तुमको न देखकर तुम्हारे भाई बड़े दुःखी हैं।२३। अनन्तर महाभुज महाबली भीमने स्नान कर और शुचिहो शुक्लवस्त्र और श्वेत माला पहन के नागों का दियाँ हुआ परमान्न भोजन किया फिर इच्छाशी पांडव सांपो से आदर और आशीस पाकर दिव्य आभूषण पहिन कर नागों से सम्भाषण कर प्रसन्न

---

your other sons. The great Muni has said that your sons will live long. Your son will, therefore, return to love you again." 18. Vaishampayan said that the wise Vidur, having said this, returned to his house. Kunti remained with her sons in suspense. At length, on the eighth day the brave Bhim awoke. By that time the juice was digested and he had gained immense strength by virtue of it. The serpents seeing him awake said, "By drinking the powerful juice you have become as strong as ten thousand elephants and unconquerable in the field of battle. You must, after bathing in this holy water, return home to day. Your brothers are very anxious to see you.' 23. Then the brave and powerful Bhim having bathed and purified himself, dressed himself in white clothes and

॥ २७ ॥ त-
ष्टात्मा नागलोकाद‍रिन्दमः । उत्क्षिप्तःसतुनागेन जलात्जलरुहेक्षणः
स्मिन्नेववनोद्देशे स्थापितःकुरुनन्दनः। तेचान्तर्दधिरेनागाः पाण्डवस्यैवपश्यतः॥२८॥
ततउत्थायकौन्तेयो भीमसेनोमहाबलः। आजगाम महाबाहुर्मातुरन्तिकमञ्जसा ।२९।
ततोऽभिवाद्यजननींज्येष्ठं भ्रातरमेवच । कनीयसःसमाघ्राय शिरःस्वरिविमर्दनः ।३०
तैश्चापिसम्परिष्वक्तः सहमात्रानरर्षभैः । अन्योऽन्यगतसौहार्दाद्दिष्ट्यादिष्ट्येतिचाब्रुवन्
॥ ३१ ॥ ततस्तत्सर्वमाचष्ट दुर्य्योधनविचेष्टितम् । भ्रातॄणांभीमसेनश्च महाबलपराक्र
मः ॥ ३२ ॥ नागलोकेचयद्वृत्तं गुणदोषमशेषतः । तच्चसर्वमशेषेण कथयामास
पाण्डवः ॥ ३३ ॥ ततोयुधिष्ठिरोराजा भीममाहवचोऽर्थवत् । तूष्णींभवननतेजल्प्यमि-
दं कार्य्यंकथंचन ॥ ३४ ॥ इतःप्रभृतिकौन्तेया रक्षतान्योऽन्यमादृतः । एवमुक्त्वाम-
हाबाहुर्धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ३५ ॥ भ्रातृभिःसहितः सर्वैरप्रमत्तोऽभवत्तदा । धर्मा
त्माविदुरस्तेषां पार्थानांप्रददौमतिम् ॥ ३६ ॥ ततोदुर्य्योधनस्तस्य पुनःप्राक्षेपयद्विष-

चित्तसे नाग लोक से निकला नागों ने उस कमल नेत्रवाले कुरुनंदन को जल से उठा कर उसी वन खंडमें छोड़ दिया और स्वयम् चलेगये।२८। फिर वोह महाभुज महाबली कुंतीपुत्र भीमसेन वहां से उठकर वेग पूर्वक चलकर माता के पास आगया शत्रुनाशी वृकोदर ने माता और बड़े भाई के पांवछूकर छोटेभाइयों के शिरचूमकर माता और भाइयों को गले लगाया और वे आपस में मित्रता दिखाकर आपस में बारं २ कहने लगे कि कैसा आनन्दहै फिर महाबल पराक्रमी भीमसेनने भाइयों को दुर्योधनका व्यौरा कह सुनाया और नाग लोकमें भला बुरा कुछ हुआ था वोह भी सब कहदिया फिर राजा युधिष्ठिर ने उनसे यह कहा कि तुम चुप रहो यह सब हाल किसी से न कहना। ।३४। हे कुंती पुत्रो तुम अब से आपस में अपनी यत्न पूर्वक रक्षा करना धर्म राज युधिष्ठिर यह कह कर भाइयों के साथ सावधान रहे धर्मात्मा विदुर उन को ऐसा परामर्श देते थे कि जिससे उन पृथा पुत्रों की चूक न हो फिर दुर्योधन ने भीमसेन

ornaments, and ate the food supplied by the snakes. Then, the destroyer of enemies, the Pandav, blessed and welcomed by snakes, having decked himself in ornaments and talked with the serpents came out of the country of the Nagas. They took him out of water, left him in the same part of the forest and went home 28. The valliant *Bhim* made haste to reach his mother. The destroyer of enemies having touched the feet of his mother and elder brother and smelt the foreheads of the younger ones, embraced them all. It was a joyful meeting. He then informed them of all that had happened to him at the hands of Duryodhan and also what had occurred to him, of good or evil, in the country of the Nagas. Yudhishthir advised him to keep his peace and not to disclose it

म् । कालकूटंनवंतीक्ष्णं सम्भृतंलोमहर्षणम् ॥ ३७ ॥ वैश्यापुत्रस्तदाचष्ट पार्थानांहि तकाम्यया । तच्चापिभुक्त्वाजरयदविकारं वृकोदरः ॥ ३८ ॥ विकारंनह्यजनयत्सु तीक्ष्णमपितद्विषम् । भीमसंहननंभीमं तदप्यजरयत्ततः ॥ ३९ ॥ एवंदुर्य्योधनःकर्णः शकुनिश्चापिसौबलः । अनेकैरभ्युपायैस्तान् जिघांसन्तिस्मपाण्डवान् ॥ ४० ॥ पाण्डवाश्चापि तत् सर्वं प्रत्यजानन्नमर्षिताः । उद्भावनमकुर्वन्तो विदुरस्यमतेस्थिताः ॥४१॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि भीमप्रत्यागमने ऊन-
त्रिंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२९ ॥

जनमेजय उवाच । कृपस्यापिममब्रह्मन् सम्भवंवक्तुमर्हसि । शरस्तम्बात्कथंजज्ञे कथं वास्त्राण्यवाप्तवान् ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । महर्षेर्गौतमस्यासीच्छरद्वान्नाम गौतमः । पुत्रःकिलमहाराजः जातःसहशरैर्विभो ॥ २ ॥ नतस्यवेदाध्ययने तथाबुद्धि-

के भोजन पदार्थ में नयातेज विष मिलाया वैश्याकुमार युयुत्सु ने पांडवों के हितके लिये वोह प्रकाश कर दिया तौभी बिना विकार वृकोदर ने उसे खाकर पचालिया वोह विष तेज नाश करने योग्यभी भीममें कोई विकार न करसका और भीम ने उसको पचा लिया इसप्रकार दुर्योधन, कर्ण और सुवल पुत्र शकुनि ने नाना उपायों से पांडवों को नष्ट करनेकी चेष्टा की थी । हे शत्रुनाशी पांडव लोग वोह जानतेहुएभी बिदुर के मतानुसार उसपर क्रोध नहीं प्रकट करते थे ॥ ४१ ॥

अध्याय १३० ॥

जनमेजय ने कहा कि हेब्रह्मन् कृप के जन्मकीभी कथा कहिये वोह क्योंकर सर-कंडेकी लकड़ी में पैदाहुए और कैसे अस्त्र लाभ किये । वैशम्पायनने कहा कि महाराज महर्षि गौतम के भरद्वाज नामक एक पुत्र थे गौतम ने शरकंडे से जन्म लियाथा । हे

to any one else.34.He advised all his brothers to protect themselves. The brothers were on their guard from that time. The virtuous Vidur gave them such advice as to make them unfailing for ever. Duryodhan again mixed a new strong poison in *Bhim's* food. The Vaishya's son Yuyutsu, for the good of the Pandavas, disclosed it. But *Bhim* was proof against the poison and digested it all though it was very strong and sufficient to kill him. Thus, Duryodhan, Karn and Shakuni, the son of Subal, contrived many plans to do away with the Pandavas. The Pandavas did not show anger in return with the advice of Vidur.41.

GHAPTER CXXX.

Janmejaya said, "Tell me, O Brahman, The history of *Kripa*. How was he born on the *Sarkanda* sticks and how mastered the use of arms ?" *Vaishampayan* said that the great Rishi Gautam had a son

न्जायत । यथास्य बुद्धिरभवद्धनुर्वेदे परन्तप ॥ ३ ॥ अधिजग्मुर्यथा वेदांस्तपसा ब्रह्मचारिणः । तथासतपसोपेतः सर्वाण्यस्त्राण्यवापह ॥ ४ ॥ धनुर्वेदपरत्वाच्च तपसा विपुलेनच । भृशंसन्तापयामास देवराजंसगौतमः ॥ ५ ॥ ततोजानपदींनाय देवकन्यांसुरेश्वरः । प्राहिणोत्तपसोविघ्नं कुरुतस्येतिकौरव ॥ ६ ॥ साहिगत्वाश्रमं तस्य रमणीयंशरद्वतः । धनुर्वाणधरंबाला लोभयामासगौतमम् ॥ ७ ॥ तामेकवसनांदृष्ट्वा गौतमोऽप्सरसंवने । लोकेऽप्रतिमसंस्थानां प्रोत्फुल्लनयनोऽभवत् ॥ ८ ॥ धनुश्चहि शरास्तस्य कराभ्यामपतन्भुवि । वेपथुश्चापितांदृष्ट्वा शरीरेसमजायत ॥ ९ ॥ सतुज्ञान गरीयस्त्वात्तपसश्च समर्थनात् । अवतस्थेमहाप्राज्ञो धैर्य्येणपरमेणह ॥ १० ॥ यस्तस्यसहसाराजन् विकारःसमदृश्यत । तेनशुस्रावरेतोऽस्य सचतंनान्वबुध्यत ॥ ११ ॥ धनुश्चसशरंत्यक्त्वा तथाकृष्णाजिनानिच । सविहायाश्रमंतंच तांचैवाप्सरसंमुनिः ।

शत्रुनाशी धनुर्वेद में उनकी जैसी बुद्धिथी वेद पढ़ने में वैसी न थी जैसे ब्रह्मचारी लोग तप से वेद को प्राप्त करते हैं वैसे ही उन्हों ने तप से सब अस्त्रों को पाया गौतम के धनुर्वेद में अपरिमित ज्ञान और तपस्यासे देवराज बहुत डरे । ५ । हे कौरव ! अनन्तर देवेन्द्र ने जानपदी नाम्नी देवबालाको यह समझाकर उन के सामने भेजा कि वोह उनकी तपस्या में विघ्न डाले बाला जानपदी गौतम के सुन्दर आश्रम में जाकर धनुषबाण धारी उन शरद्वानको लुभाने लगी उस बनमें अनुपम सुन्दरी एक वस्त्र पहिने सुन्दर अप्सराको देखकर गौतम के नेत्रोंमें प्रफुल्लता छागई उनके हाथोंसे धनुषबाण धरतीपर गिरपडे और देह कांपनेलगी पर महाप्राज्ञ ऋषिकुमार के उत्तम ज्ञान और तपस्या में दृढ प्रतिज्ञा होनेसे वोह परमधीरज धेर रहे । १० । हेमहाराज उन में एकाएक जो विकार आ पहुँचाथा उससे उनका वीर्य गिरपड़ा और उन्हों ने न जाना अनन्तर वोह धनुषबाण कृष्णसार मृगका चर्म और उस आश्रम और अप्सराको छोडकर दूसरे स्थान में

named Bharadwaj. He was born among *Sarkandas.* He was not a Scholar of the Vedas but, he was master of the art of war. He learned the use of all weapons by asceticism as *Brahmchrys* learn the Vedas. *Gautam,* by his unlimited knowledge of weapons and severe asceticism was the source of fear to *Indra.* 4. At length *Indra* sent the youthful goddess Janpadi with directions to hinder *Gautam* in his godly work. She went to the hermitage of the great ascetic archer and began to entice him by her coquettry. Gautam was much pleased at seeing the matchlessly beautiful apsara, clothed in a single garment in that forest. The bow and arrow fell from his hands and his body began to shake. The wise Rishi being very austere in asceticism kept patient but his Semen dropped down

जगामरेतस्तत्तस्य शरस्तम्बेपपातच ॥ १२ ॥ शरस्तम्बेचपतितं द्विधा तदभवन्नृप ।
तस्याथमिथुनंजज्ञे गौतमस्यशरद्वतः ॥ १३ ॥ मृगयांच तोराज्ञः शान्तनोस्तुयदृच्छ-
या । कश्चित्सेनाचरोऽरण्ये मिथुनंतदपश्यत ॥ १४ ॥ धनुश्चसशरंदृष्ट्वा तथाकृष्णा-
जिनानिच । ज्ञात्वाद्विजस्यचापत्ये धनुर्वेदान्तगस्यह ॥ १५ ॥ सराज्ञेदर्शयामास
मिथुनंसशरंधनुः सतदादायमिथुनंराजाच कृपयान्वितः ॥ १६ ॥ आजगामगृहा-
नेव ममपुत्रावितिब्रुवन् । ततःसंवर्द्धयामास संस्कारैश्चाप्ययोजयत् ॥ १७ ॥ प्रातीपे-
योनरश्रेष्ठो मिथुनंगौतमस्यतत् । गौतमोऽपिततोऽभ्येत्य धनुर्वेदपरोऽभवत् ॥ १८ ॥
कृपयायन्मया बालाविमौ संवर्द्धिताविति । तस्मात्तयोर्नामचक्रे तदेवसमहीपतिः ॥ १९ ॥
गोपितौगौतमस्तत्र तपसासमविन्दत । आगत्यतस्मैगोत्रादि सर्वमाख्यातवांस्तदा ॥

चले गये उनका वीर्य शरकंडेकी लकडी पर गिराथा इस लिये वोह दोभाग होगया उस से एक कन्या और पुत्रका जन्महुआ अनन्तर मृगया के लिये मनमाने घूमनेवाले नर-नाथ शांतनुके एक सैनिकने बन में उसपुत्र और कन्याको देखा।१४।और वहां धनुषबाण और मृगचर्म देखकर समझा कि यह दोनों किसी धनुर्वेदमें दक्ष ब्राह्मणकी संतानहैं उस सैनिकने धनुषबाण और दोनों बच्चों को लेकर नरनाथ को दिखाया राजा ने कृपा पूर्वक उन बच्चों को लेलिया और यह कहकर कि मेरी सन्तान हुई अपने स्थान को गये अनन्तर प्रतीप के पुत्र नर श्रेष्ठ शांतनु ने उस कन्या और पुत्र के सम्पूर्ण संस्कारको सुधार और पाल पोषकर बढाया और और गौतमभी उस स्थान में आकर धनुर्वेद में दत्तचित्त रहे राजा शांतनु ने यह समझकर कि मैंने कृपापूर्वक इन बच्चोंको जिलायाहै उनके नाम कृप और कृपी रखदिये।१९।गौतम को तपके प्रभावसे यह विदितहोगयाथा कि उसस्थान में दोनों संतान रक्खी हुई हैं इसलिये वोह वहां आकर अपनागोत्र आदि सब कहगये

without his knowledge.10.At last, leaving his bow and arrws black deer skin, the hermitage and the apsara, he went somewhere else.The semen falling on a Sarkanda stick was divided into two parts and a girl and a boy were born of it. The children were seen by a soldier of king Shantanu who was roaming for the chase of deer.14.Then seeing the bow and arrow with the deer skin thought the children to be of some Brahman, dexterous in the use of weapons. He took up the children with the bow and arrow and presented them to the king. The king accepted them to be brought up as his own offspring. The children were brought up with proper ceremonies, Gautam again returned to live in the same hemitage and was engaged in the exercise of arms. [Shantanu had kindly given life to the children and they were therefore named Kripa(kindness)and Kripi.19. Gautam knew them to be his own children and informed them

॥ २० ॥ चतुर्विधंधनुर्वेदं शास्त्राणिविविधानिच । निखिलेनास्यतत्सर्वं गुह्यमाख्या-
तवांस्तदा ॥ २१ ॥ सोऽचिरेणैवकालेन परमाचार्य्यतांगतः । ततोऽधिजग्मु सर्वे ते
धनुर्वेदंमहारथाः ॥ २२ ॥ धृतराष्ट्रात्मजाश्चैव पाण्डवाःसहयादवैः । वृष्णयश्चनृपा-
श्चान्ये नानादेशसमागताः ॥ २३ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि कृपोत्पत्तौ त्रिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १३० ॥

वैशम्पायन उवाच । विशेषार्थीततोभीष्मः पौत्राणांविनयेप्सया । इष्वस्त्रज्ञान
पर्य्यपृच्छदाचार्य्यान् वीर्य्यसंमतान् ॥ १ ॥ नाल्पधीर्नामहाभागस्तथानानास्त्रकोविदः ।
नादेवसत्त्वोविनयेत्कुरूनस्त्रेमहाबलान ॥ २ ॥ इतिसंचिन्त्य गाङ्गेयःसदाभरतसत्तमः ।
द्रोणायवेदविदुषे भारद्वाजायधीमते ॥ ३ ॥ पाण्डवान्कौरवांश्चैव ददौशिष्यान्नरर्ष-
भ । शास्त्रतःपूजितश्चैव सम्यक्तेनमहात्मना ॥ ४ ॥ सभीष्मेण महाभागस्तुष्टोऽस्त्र

उन्हों ने कृपको चारप्रकारके धनुर्वेद नाना शास्त्रविद्या और दूसरे गुप्तविषयोंकी शिक्षादी
कृप थोड़ेही काल में परम आचार्य बने महारथी धृतराष्ट्र पुत्र महाबली पांडवगण, वृष्णि
गण और नाना देशोंसे आयेहुए दूसरे भूपाल उन से धनुर्वेद सीखनेलगे ॥ २३ ॥

अध्याय ॥ १३१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर भीष्म पौत्रों को विशेष रूप से विद्या पढ़ाने और
विनय सिखाने के लिये वाण चलाने में दक्ष, अस्त्र विद्यामें पंडित, वीर्यवान आचार्य
को ढूंढ़ने लगे यह समझ कर कि जो अच्छे वुद्धिमान, महाभाग, नाना शस्त्रों के चला
ने में पँडित, और देव समान महात्मा न हों उन से कौरवों को अस्त्र विद्या न सीखना
चाहिये।२। भरत वंशियों में श्रेष्ठ भीष्म ने पांडवों और कौरवों को भारद्वाजके पुत्र वेद
में पंडित वुद्धिमान द्रोण का शिष्य वना अस्त्र चलाने वालों में श्रेष्ठ महाभाग, और अति

with their parentage. He gave Kripa education in the science of arms and other mysterious knowledge. In a short time Kripa became a perfect teacher of the science. The sons of Dhritrashtra, Pandu, Vrishnis and other foreign kings came to Kripa to learn the science of arms.23.

CHAPTER CXXXI

Vaishampayan said that *Bhishm* was in search of an instructor for his grandchildren. He thought that none but a wise, fortunate, dexterous in the use of various weapons and virtuous like a god was a fit person to teach the Kauravas the art of war. The best of the *Bharats*, *Bhishm*, entrusted the education of the Kauravas and Pandavas to Drona, the learned son of *Bharadwaj*. *Drona* gave them special lessons in the Science of war. The *Kauravas* and the *Pandavas* became expert in a very short time. Janmejaya

विदुषांवरः । प्रतिजग्राहतान सर्वांशिष्यत्वेनमहायशाः ॥ ५ ॥ शिक्षयामासचद्रोणो धनुर्वेदमशेषतः । तेऽचिरेणैवकालेन सर्वशास्त्रविशारदाः । बभूवुःकौरवाराजन् पांडवाश्चामितौजसः ॥ ६ ॥ जनमेजय उवाच । कथंसमभवद्द्रोणः कथंचास्त्राण्यवाप्तवान् । कथंचागात् कुरून्ब्रह्मन् कस्यपुत्रःसवीर्य्यवान् ॥ ७ ॥ कथंचास्यसुतोजातः सोऽश्वत्थामास्त्रवित्तमः । एतदिच्छाम्यहंश्रोतुं विस्तरेणप्रकीर्त्तय ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच । गङ्गाद्वारंप्रतिमहान बभूवभगवानृषिः । भरद्वाजइतिख्यातः सततंशंसितव्रतः ॥ ९ ॥ सोऽभिषेकुंततोगङ्गां पूर्वमेवागमन्नदीम् । महर्षिभिर्भरद्वाजो हविर्द्धानेचरन् पुरा ॥१०॥ ददर्शाप्सरसं साक्षाद्घृताचीमाप्लुतामृषिः । रूपयौवनसम्पन्नां मददृप्तां मदालसाम् ॥ ११ ॥ तस्याःपुनर्नदीतीरे वसनंपर्य्यवर्त्तत । व्यपकृष्टाम्बरांदृष्ट्वा तामृ

यशवंत द्रोणाचार्य ने महात्मा भीष्म से शास्त्रानुसार भले प्रकार पूजे जाकर संतोष पूर्वक उन सबको शिष्य बनाया और उनको विशेष प्रकार से धनुर्वेद सिखाया है महाराज वे अनन्त तेजयुक्त थोड़ेही काल में सब शास्त्रोंमें पंडित होगये ।६। जनमेजयने पूछा कि हे ब्रह्मन् वोह वीर्यवन्त द्रोण किस का पुत्रथा किस प्रकार उसका जन्म हुआ कैसे उसने शास्त्रों को प्राप्त किया और कौरवों से कैसे मिला और अश्वत्थामा नामक सर्व शास्त्रों में दक्ष प्रधान उस के पुत्र ने क्योंकर जन्म लिया यह सब भले प्रकार सुनना चाहता हूं आप कहिये ।८। वैशम्पायन ने कहा कि गंगाद्वार के निकट भारद्वाज नाम से प्रख्यात सदा प्रशंसित व्रतयुक्त भगवान महर्षि रहते थे एक समय वोह अग्निहोत्र करने के अभिप्राय से महर्षियों के साथ गंगा स्नान को गये वहां देखा कि रूप यौवनवती मद गर्विता और मद से झूमती हुई घृताची नाम्नी अप्सरा नहाकर उठी और उस समय उस का वस्त्रभी गिर गया बुद्धिमान महर्षि उस विवस्त्र अप्सरा को देख कर काम वश होगये और उनका चित्त घृताची पर चलने से वीर्य गिर गया ऋषिने तब

said, "O Brahman, whose son was the brave Drona? How was he born? How did he get the science of arms? How did he meet the Kauravas? And how Ashwathama, the scholar of Shastras, was born as his son? I wish to know all this. Please tell me of it."8. Vaishampayan replied that near the bank of the Ganges there lived a virtuous, vow observing and great rishi named Bharadwaj. One day, with the purpose of pouring libation into the fire, he had gone with other ascetics to bathe in the Ganges. There he saw the youthful beauty of a proud apsara, named Ghritachi with her dress fallen off. Having seen her unclothed the Maharshi became full of desire and with that his semen dropped down. The rishi took it upon a *drona*, a vessel for holding sarificial things, and Drona was born of it. He was a

षिश्चक्रमेततः ॥ १२ ॥ तत्रसंसक्तमनसो भरद्वाजस्यधीमतः । ततोस्यरेतश्चस्कन्द त-
दृषिर्द्रोणआदधे ॥ १३ ॥ ततःसमभवद्द्रोणः कलशेतस्यधीमतः। अध्यगीष्टसवेदांश्च
वेदांगानिचसर्वशः ॥ १४ ॥ अग्निवेशंमहाभागं भरद्वाजःप्रतापवान् । प्रत्यपादयदाग्ने
यमस्त्रमस्त्रविदांवरः ॥ १५ ॥ अग्नेस्तुजातः समुनिस्ततो भरतसत्तम । भारद्वाजंतदाग्नेयं
महास्त्रंप्रत्यपादयत् ॥ १६ ॥ भरद्वाजसखाचासीत् पृषतोनामपार्थिवः । तस्यापि
द्रुपदोनाम तदासमभवत्सुतः ॥ १७ ॥ सनित्यताश्रमंगत्वा द्रोणेनसहपार्थिवः । चि
क्रीडाध्ययनंचैव चकारक्षत्रियर्षभः ॥ १८ ॥ ततोव्यतीतेपृषते सराजाद्रुपदोऽभवत् ।
पांचालेषु महाबाहुरुत्तरेषु नरेश्वरः ॥ १९ ॥ भरद्वाजोऽपिभगवानारुरोह दिवंतदा ।
तत्रैवचवसन् द्रोणस्तपस्तेपेमहातपाः ॥ २० ॥ वेदवेदांगविद्वान् स तपसादग्धकिल्बि
षः । ततःपितृनियुक्तात्मा पुत्रलोभान्महायशाः ॥ २१ ॥ शारद्वतींततोभार्य्यां कृपीं

द्रोणा नामक यज्ञपात्र में उस वीर्य को रक्खा बुद्धिमान् भरद्वाज के द्रोण में रक्खे हुए उस वीर्य से द्रोण का जन्म हुआ उन्हों ने वेद और वेदांग सब पढ़े थे।१४। अस्त्र विद्या जानने वालों में प्रधान प्रतापी भरद्वाज ने पहिले अग्निवेश नामक महाभाग महर्षि को अग्न्यास्त्र दिया था। हे भरतश्रेष्ठ अग्नि से जन्म लिये हुए उस ऋषि अग्निवेश ने अपने गुरु पुत्र द्रोणको वोह अग्न्यास्त्रदिया।१६। पृषतनामक एक राजा ऋषि भारद्वाज के मित्र थे भारद्वाज के पुत्र होने के काल में उन कें भी एक द्रुपद नामक पुत्र हुआ वोह पृषत् पुत्र भरद्वाज के आश्रम में जाकर नित्य द्रोण के साथ खेलता और पढ़ता था। हे नरनाथ राजा पृषत के परलोक सिधारने पर महाभुज द्रुपद उत्तर पांचाल देशका राजा उससमय भगवान ऋषि भरद्वाजका स्वर्गबास हुआ और अति तपयुक्त द्रोणभी उसी स्थानपर रहकर तप करने लगा ॥ २० ॥ अनन्तर वेद वेदांगों में पण्डित और तपस्या के बल से निष्पापी उस अति यशवन्त द्रोणने पिताकी

scholar of the Vedas and their branches. 14. Bharadwaj, the chief among those learned in the science of arms, had formerly given the missile hurled by the agency of fire, to Agnivesh a great rishi. The latter gave it to his preceptor's son. 16. Prishad a king was friend to *Bharadwaj*. His son Drupad was born simultaneously with that of Bharadwaj. The king's son used to come to the hermitage of Bharadwaj to play and study with his son. On the death of king *Prishad* Drupad became the king of the North Panchal. Rishi Bharadwaj also died in those days and Drona practiced his asceticism in the same place. 20. The scholar of the Vedas and their branches, and sinless by his asceticism, the glorious Drona by the previous wish of his father and with a desire to beget offspring, married Kripi, the daughter of Shardwat. The

द्रोणोऽन्वविन्दत । अग्निहोत्रेचधर्मेच दमेचसततंरताम् ॥ २२ ॥ अलभद्गौतमी पुत्रम श्वत्थामानमेवच । सजातमात्रो व्यनदद्यथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ २३ ॥ तच्छ्रुत्वान्तर्हितं भूतमन्तरिक्षस्थमब्रवीत् । अश्वस्येवास्ययत्स्थाम नदतःप्रदिशोगतम् ॥ २४ ॥ अश्व त्थामैवबालोऽयं तस्मान्नाम्नाभविष्यति।सुतेनतेनसुप्रीतो भरद्वाजस्ततोऽभवत् ॥२५॥ तत्रैवचवसन् धीमान्धनुर्वेदपरोऽभवत् । सशुश्रावमहात्मानं जामदग्न्यंपरन्तपम् ॥ ॥ २६ ॥ सर्वज्ञानविदंविप्रं सर्वशस्त्रभृतांवरम् । ब्राह्मणेभ्यस्तदा राजन्दित्सन्तंवसु सर्वशः ॥ २७ ॥ सरामस्यधनुर्वेदं दिव्यान्यस्त्राणिचैवह । श्रुत्वातेषुमनश्चक्रे नीति-शास्त्रेतथैवच ॥ २८ ॥ ततःसव्रतिभिः शिष्यैस्तपोयुक्तैर्महातपाः । वृतःप्रायान्महाबा हुर्महेन्द्रं पर्वतोत्तमम् ॥ २९ ॥ ततोमहेन्द्रमासाद्य भारद्वाजोमहातपाः । क्षान्तं दान्त-ममित्रघ्नमपश्यद्भृगुनन्दनम् ॥ ३० ॥ ततोद्रोणोवृतः शिष्यैरुपगम्यभृगूद्वहम् । आ-

पहिले दीहुई आज्ञानुसार पुत्र के लोभ से शरद्वतकी कन्या कृपी से विवाह किया अनन्तर अग्निहोत्र में वाणी आदि इन्द्रियों को रोकने में और धर्म कर्मों में प्रेमी उस गौतम पुत्री कृपीने अश्वत्थामा नामक पुत्र प्रसवकिया उस पुत्रने जन्म लेतेही उच्चैःश्रवा अश्वकी भाँति शब्द किया वोह सुनकर आकाश से किसी विन देखे प्राणीने कहा कि घोड़े की नाईं शब्द करनेवाले इसबालक का स्थाम (शब्द) नानादिशाओं में पहुँचा है इसलिये इसका नाम अश्वत्थामा होगा इससे भरद्वाज पुत्र धीमान् द्रोण ने उस पुत्र से बड़ी प्रीतिकी।२५।और स्थानमेंही रहकर धनुर्वेदमें दत्तचित्तरहे हे महाराज उन्हों ने उस समय सुना कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, सर्वज्ञ, शत्रुनाशी,ब्राह्मण, महात्मा, जामदग्न्य, रामने ब्राह्मणों को सब धन बांटदेने की इच्छाकी है ।२७। रामकेधनुर्वेद और दिव्यास्त्रों का समाचार सुनकर उन से वोह सब और नीतिशास्त्र सिखना चाहा तदनुसार वोह अति तपोयुक्त महाभुज भारद्वाज तपस्वी और व्रतयुक्त शिष्यों से घिरेहुए महेंद्र पर्वत पर गये वहाँ पहुँचकर शत्रुकुल नाशी क्षांत और दान्त भृगुपुत्रको देखा अनन्तर उन्हों

restrainer of tongue and other senses and lover of good deeds, the daughter of Gautam, brought forth *Ashwathama*. The son on coming forth, uttered a cry like the neighing of the horse Uchchai-srava. On hearing this, an unknown voice from heaven said, The neighing of this child has been heard in various directions, therefore, his name shall be Ashawathama (having the voice of a horse). The wise Drona, therefore, loved the child dearly(25) and remained there practicing with his weapons. At that time he heard that the chief of those bearing arms, all knowing, destroyer of enemies, Brahman, glorious son of Jamadagni, Ram was about to give away all his wealth.27.Hearing the fame of Ram's heavenly weapons and the knowledge of bow, he desired to obtain from

चख्याचात्मनोनाम जन्मचाङ्गिरसःकुले ॥ ३१ ॥ निवेद्यशिरसाभूमौ पादौचैवाभ्यवा
दयत् । ततस्तंसर्वमुत्सृज्य वनंजिगमिषुंतदा ॥ ३२ ॥ जामदग्न्यंमहात्मानं भारद्वा-
जोऽब्रवीदिदम् । भरद्वाजात्समुत्पन्नं तथात्वंमामयोनिजम् ॥ ३३ ॥ आगतंवित्तका
मंमां बिद्धिद्रोणंद्विजोत्तमम् । तमब्रवीन्महात्मास सर्वक्षत्रियमर्दनः ॥ ३४ ॥ स्वागतं
तेद्विजश्रेष्ठ यदिच्छसिवदस्वमे । एवमुक्तस्तुरामेण भारद्वाजोऽब्रवीद्वचः ॥ ३५ ॥
रामंप्रहरतांश्रेष्ठं दित्सन्तंविविधंवसु । अहंधनमनन्तंहि प्रार्थयेविपुलव्रत ॥ ३६ ॥
राम उवाच ॥ हिरण्यंममयच्चान्यद्वसु किंचिदिहस्थितम् । ब्राह्मणेभ्योमयादत्तं सर्व-
मेतत्तपोधन ॥ ३७ ॥ तथैवेयंधरादेवी सागरान्तासपत्तना । कश्यपायमयादत्ता कृत
स्नानगरमालिनी ॥ ३८ ॥ शरीरमात्रमेवाद्य ममेदमवशेषितम् । अस्त्राणिचमहार्हाणि
शस्त्राणिविविधानिच ॥ ३९ ॥ अस्त्राणिवाशरीरंवा वरयैतन्मयोद्यतम् । वृणीष्वकिं

ने शिष्यों के पास जाकर अपना नाम और अंगिरा के कुल में उत्पन्न होना कहकर और
भूमि पर शिर रगड़कर उनके दोनों पाओंको प्रणामकर सब छोड छाडकर बन में जानेकी
इच्छा कियेहुए महात्मा जामदग्निसे कहा कि हे महामते मैं बिन योनि से जाया हुआहूं
भरद्वाज से द्रोण में उत्पन्न हुआहूं । ३३ । और धनकी लालसा से यहां आया हूं क्षत्रिय
कुलनाशी महात्मा परशुराम ने उन से कहा कि हे द्विज श्रेष्ठ ! तुम्हारा आना शुभहो जो
चाहते हो कहो रामसे यह सुनकर भरद्वाज के पुत्र ने उस धनदान करनेवाले योधाओं
में प्रधान जामदग्न्य से कहा कि हे महाव्रत शील मैं अपरिमित धन मांगता हूं राम ने
उत्तर दिया कि हे तपोधन ! मेरा सुवर्ण और जो कुछ दूसरा धनथा वोह मैंने सब
ब्राह्मणों को देदिया और ग्राम और नगरोंकी माला से सजी हुई समुद्र पर्यंत यह पृथ्वी
भी कश्यप को दान करदी । ३८ । अब मेरेपास केवल मेरे बड़ेमूल्यवान अस्त्र, शस्त्र और
शरीरही है । हे द्रोण ! अब अस्त्र और शरीर देने को उद्यत हूं शीघ्र कहो कि इन दोनों
मेंसे क्या चाहते हो वोह तुमको देदूंगा द्रोण ने कहा कि हेभार्गव ! प्रयोग, उपसंहार

him the above named things with a knowledge of Politics. Accordingly he went to mount Mahendra accompanied by his many ascetic and vow observing disciples. There he saw the great son of Bhrigu. Going to him with his disciples he informed him of his name and his birth in the line of Angira. He then prostrated before the recluse son of Jamadagni and said, "Sir, I was born of no woman. Bharadwaj gave me birth in a *drona*. 33. I have come to yau for wealth." The destroyer of Kshatrya race the great Parashuram then said, "You are welcome, O best of Brahmans, tell me your desire." On hearing this, Drona said to the generous son of Jamadagni in reply, "O greatest of vow observers, I am in need of inexhaustible wealth." Ram said, "I have given

प्रयच्छामि तुभ्यंद्रोणवदाशुतत् ॥ ४० ॥ द्रोण उवाच । अस्त्राणिमेसमग्राणि ससंहाराणिभार्गव । सप्रयोगरहस्यानि दातुमर्हस्यशेषतः ॥ ४१ ॥ तथेत्युक्त्वा ततस्तस्मै प्रादादस्त्राणिभार्गवः । सरहस्यव्रतंचैव धनुर्वेदमशेषतः ॥ ४२ ॥ प्रतिगृह्यतुतत् सर्वं कृतास्त्रोद्विजसत्तमः । प्रियंसखायंसुप्रीतो जगामद्रुपदंप्रति ॥ ४३ ॥

इत्यादिपर्वणिसंभवपर्वणिद्रोणभार्गवसंवादेस्त्रप्राप्तौएकत्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३१

वैशम्पायनउवाच । ततोद्रुपदमासाद्य भारद्वाजःप्रतापवान् । अब्रवीत्पार्थिवं राजन सखायंविद्धिमामिह ॥ १ ॥ इत्येवमुक्तःसख्यास प्रीतिपूर्वंजनेश्वरः । भारद्वाजेनपांचाल्योनामृष्यत वचोऽस्यतत् । २ ॥ सक्रोधामर्षजिह्मभ्रूः कषायीकृतलोचनः । ऐश्वर्यमदसम्पन्नो द्रोणंराजाब्रवीदिदम् ॥ ३ ॥ द्रुपद उवाच । अकृतेयंतवप्रज्ञा ब्रह्मन्नातिसमञ्जसी । यन्मांब्रवीषिप्रसभंसखा तेऽहमितिद्विज ॥ ४ ॥ नहिराज्ञामुदीर्णाना

और रहस्योंके सहित सम्पूर्ण अस्त्रोंको भले प्रकार मुझ दीजिये भार्गव ने तथास्तु कहकर उनको सम्पूर्ण अस्त्र रहस्य और नियमों के साथ धनुर्वेदको विशेष रूप से दिया द्विजों में श्रेष्ठ द्रोण सब अस्त्र शस्त्रों को लेकर कृतार्थ होकर प्रसन्न चित्त से प्रिय मित्र द्रुपद के पास गया ॥ ४३ ॥

अध्याय १३२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि प्रतापी भरद्वाजके पुत्रने राजा द्रुपदके पास जाकर कहा कि हे महाराज मुझको मित्र करके जानो मित्र भरद्वाज के प्रेम से समान कहने पर पांचाल राज यह सह नहीं सके वोह ऐश्वर्य के अहंकार से उन्मत्तथे इस लिये क्रोध और अमर्ष से भौं विगाड़ और आंखे लालकर द्रोण से कहा । ३ । कि हे विप्र ! तुम्हारी बुद्धि नहीं सुधरी और पक्की नहीं हुईहै क्योंकि तुमने एकाएक मुझ से कहा कि मैं तुम्हारा मित्र हूं

all my wealth consisting of gold and other things to Brahmans. I have given to Kashyap the whole earth bounded by the Ocean, with its necklace of villages and cities. 38. I have only my precions weapons and my body left. I am ready to give you either. Speak soon which of the two I shall give you. Drona replied, "Let me have your weapons with the manner of using them." The Bhargava readily gave him what he wanted and gave him special lessons in the art of war. Having got all these things Drona returned with a light heart to his dear friend Drona. 43.

CHAPTER CXXXII

Vaishampayan said that the son of Bharadwaj went to King Drupad and said, "Recognize me as your friend." The king of Panchal could not bear the assertion of equality which Bharadwaj had made out of love. He was intoxicated by the wine of wealth. There fore, with his brows contracted and eyes red with anger he remark-

मेवंभूतैर्नरैःक्वचित् । सख्यंभवतिमन्दात्मन् श्रियाहीनैर्द्धनच्युतैः ॥ ५ ॥ सौहृदान्यपि जीर्य्यन्ते कालेनपरिजीर्य्यता । सौहृदंमेत्वयाह्यासीत् पूर्वंसामर्थ्यबन्धनम् ॥ ६ ॥ नसख्यमजरंलोके हृदितिष्ठतिकस्यचित् । कालोह्येनंविहरतिक्रोधो वैनंहरत्युत ॥ ७ ॥ मैवंजीर्णमुपास्स्वत्वं सख्यंभवत्वपाकृधि । आसीत्सख्यंद्विजश्रेष्ठत्वयामेऽर्थनिबन्धनम् ॥ ८ ॥ नदरिद्रोवसुमतो नाविद्वान्विदुषःसखा । नशूरस्यसखाक्लीवः सखिपूर्वंकिमिष्यते ॥ ९ ॥ ययोरेवसमंवित्तं ययोरेवसमंश्रुतम् । तयोर्विवाहःसख्यञ्च नतुपुष्टविपुष्टयोः ॥ १० ॥ नाश्रोत्रियःश्रोत्रियस्य नारथीरथिनःसखा । नाराजापार्थिवस्यापि सखिपूर्वं किमिष्यते ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच । द्रुपदेनैवमुक्तस्तु भारद्वाजः

हे स्वल्प बुद्धि ! भूपालों की कभी ऐसी श्री वर्जित और निर्धन से मित्रता नहीं होती। काल सब वस्तुओं को तोड देता है उस से मित्रता भी टूट जाती है पहिले समान होनेके कारण तुम से मेरी मित्रता तो हुई थी परन्तु भूमंडल में मित्रता कभी किसी के हृदय में बनी नहीं रहती वोह काल से दूर होजाती है और क्रोधसे जड सहित उखड़ जाती है।७। सो तुम उस पुरानी मित्रताकी पूजा मतकरो ऐसा न समझो कि वोह अभी बनी है । हे द्विज श्रेष्ठ ! अवश्यही किसी प्रयोजनसे मेरी मित्रता तुम से हुईथी देखो दरिद्र कभी धनीका मित्र नहीं होता, मूर्ख कभी पंडितसे मित्रता नहीं करसक्ता, वीर्य वर्जितजन कभी वीरका मित्र नहीं होसक्ता फिर तुम क्यों पहिलेकी मित्रता चाहतेहो ।९। जिनका धन और बल समान है उन्हीं में परस्पर मित्रता हो सक्ती है पुष्ट और अपुष्ट जनोंसे कभी मित्रता व शत्रुता नहीं होसक्ती जो श्रोत्रिय नहीं है वोह कभी श्रोत्रिय का मित्र नहीं हो सक्ता रथवाले से विना रथवाला कभी मित्रता नहीं करसक्ता जो राजा नहीं है वोह राजा के साथ कभी मित्रता नहीं करसक्ता सो तुम क्यों पहिले की मित्रता चाहतेहो । ११ । वैशम्पायनने कहा कि प्रतापी भारद्वाज ने द्रुपदकी

ed. "3. Your wisdom, O Brahman, is not ripe, else you had not urged friendship with me. Exceedingly wealthy kings, O fool, cannot contract friendship with such poverty striken fellows. Time destroys all things including friendship. I made you my friend before when we were equal. But friendship does not for ever remain in one's heart. It is removed by Time and becomes altogether extinct by anger 7. You should not, therefore, worship old friendship. Donot think that it now exists. There is no doubt. O best of Brahmans, we were for certain reasons friends once. But a wealthy man cannot be the friend of a poor man. An illiterate man cannot be the friend of a learned man. A powerful man is never the friend of a weakling. Why do you wish to renew the old friendship. Friendship cannot exist between the strong and the weak. A scholar of the Vedas cannot make friends of the one not so. One possessing chariot can not be

प्रतापवान् । मुहूर्त्तंचिन्तयित्वातु मन्युनाभिपरिप्लुतः ॥ १२ ॥ सविनिश्चित्यमनसा पाञ्चाल्यंप्रति बुद्धिमान् । जगामकुरुमुख्यानां नगरंनागसाह्वयम् ॥ १३ ॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि द्रोणद्रुपदसंवादे द्वात्रिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥१३२॥

वैशम्पायन उवाच । सनागपुरमागम्य गौतमस्यनिवेशने । भारद्वाजोऽवसत्तत्र प्रच्छन्नंद्विजसत्तमः ॥ १ ॥ ततोऽस्यतनुजः पार्थान् कृपस्यानन्तरंप्रभुः । अस्त्राणि शिक्षयामास नाबुध्यन्तचतंजनाः ॥ २ ॥ एवंसतत्रगूढात्मा कञ्चित्कालमुवासह । कुमारास्त्वथनिष्क्रम्य समेतागजसाह्वयात् ॥ ३ ॥ क्रीडन्तोवीटयातत्र वीराःपर्य्य- चरन्मुदा । पपातकूपेसावीटा तेषांवैक्रीडतांतदा ॥ ४ ॥ ततस्तेयत्नमातिष्ठन् वीटामु द्धर्त्तुमादृताः । नचतेप्रत्यपद्यन्त कर्मवीटोपलब्धये ॥५॥ ततोऽन्योन्यमवैक्षन्त व्रीड यावनताननाः । तस्यायोगमविन्दन्तो भृशंचोत्कण्ठिताभवन् ॥ ६ ॥ तेऽपश्यन् ब्रा

यह बात सुनकर क्रोधसे जलकर क्षणभर शोचा और वोह बुद्धिमान मनही मनमें पांचाल राज के पराजयका उपाय निश्चय कर हास्तिनपुर नामक कौरवों के नगरको गया ॥ १३ ॥

अध्याय ॥ १३३ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि द्विज श्रेष्ठ भारद्वाज ने हास्तिनपुर में पहुँच कर कृपाचार्य के घर में छिपकर रहने लगे ।१। वहां प्रभावी द्रोणाचार्य कृपाचार्य को शिक्षा देने के पश्चात् कुंती के पुत्रों को अस्त्र की शिक्षा देतेथे परन्तु उन को कोई जान नहीं सक्ताथा इस प्रकार भारद्वाज द्रोण कृपाचार्य के घर में कुछ काल छिपकर रहे अनन्तर एक समय युधिष्ठिर आदि वीर लड़के मिलकर हास्तिनपुर से निकल कर गेंद खेलते हुए प्रसन्न चित्त से घूमने लगे खेलते समय उनकी वोह गेंद कुएंमें जागिरी ।४। लड़कों ने उस गेंदको उठानेका बहुत प्रयत्नकिया पर सफल मनोरथ न होसके इस से वोह लज्जा से मुँह

the friend of one who is destitute of chariot. Why do you then, resume the old friendship?" Vaishampayan said that the glorious son of Baradwaj, having heard this from Drupad, reflected for a moment with anger. The wise man contrived in his mind the plan of his defeat and went to Hastinpur the country of the Kauravas. 13.

CHAPTER CXXXIII

Vaishampayan said that Bharadwaj, the best of Brahmans, having reached Hastinapur, remained concealed at the house of Kirpacharya. There, the glorious *Dronacharya*, gave the sons of Kunti lessons in the science of arms when they got leisure after receiving instructions from Krip. No one else knew him. Thus Drona the Bharadwaj lived for some time in concealment at the house of Kripacharya. Once upon a time, Yudhishthir and other brave boys were playing cricket outside the city of Hastinpur. Their ball fell down

॥ ७ ॥ तंतंदृष्ट्वा कृष्णंश्याममापन्नं पलितंकृशम् । कृत्यवन्तमदूरस्थमग्निहोत्रपुरस्कृतम् ॥ ८ ॥ महात्मानमुपगम्य कुमारकाः । भग्नोत्साहक्रियात्मानो ब्राह्मणंपर्यवारयन् ॥ अथद्रोणःकुमारांस्तान् दृष्ट्वाकृत्यवतस्तदा । प्रहस्यमन्दं पैशल्यादभ्यभाषत वीर्यवान् ॥ ९ ॥ अहोवोधिग्बलंक्षात्रं धिगेतांवःकृतास्त्रताम् । भरतस्यान्वयेजाताये वीटांनाधिगच्छत ॥ १० ॥ वीटांचमुद्रिकाचैव ह्यहमेतदपिद्वयम् । उद्धरेयमिषीकाभिर्भोजनं मे प्रदीयताम् ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वाकुमारांस्तान् द्रोणःस्वांगुलिवेष्टनम् । कूपेनिरुदके तस्मिन्नपातयदरिन्दमः । ततोऽब्रवीत्तदाद्रोणं कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । कृपस्यानुमतेब्रह्मन् भिक्षामाप्नुहिशाश्वतीम् । एवमुक्तःप्रत्युवाच प्रहस्यभरतानिदम् ॥ १३ ॥ द्रोण उवाच । एषामुष्टिरिषीकाणां मयास्त्रेणाभिमन्त्रिता । अस्या

नीचा कर एक दूसरेकी ओर ताकने लगे और उस के उठानेका उपाय न देखकर बड़े शोच में पड़े ऐसेसमय में उन्हों ने देखा कि श्याम, बूढ़े, दुबले, अग्निहोत्र से पुरस्कृत आन्हिक कियेहुए एक ब्राह्मण पास खड़े हैं ।७।तत्र उपस्थित कार्य में विफल मनोरथ और उत्साह भ्रष्ट वे लड़के उन महात्मा ब्राह्मण को देखकर उनके पास जाकर चारोंओर से घेरकर खड़ेहुए वीर्यवन्त द्रोण लड़कोंको विफल मनोरथ देखकर दक्षता से कुछ हँसकर बोले कि तुम्हारे क्षत्रिय बल और अस्त्र शिक्षापर धिक्कार है क्योंकि तुम भरतकुल में जन्म लेकर भी इस गेंद को नहीं उठासके अब यदि तुम मुझे खानेको दो तो मैं गेंद और अंगूठी तिनके से उठासक्ता हूं शत्रुनाशी द्रोण ने कुमारोंसे यह कहकर उस जल से खाली कूप में अपनी अँगूठी डालदी तब कुंतीपुत्र युधिष्ठिरने उन से कहा।१२। कि हेब्रह्मन कृपाचार्यकी आज्ञा से हमारेपास सदारहनेकी भिक्षा लीजिये यहसुनकर द्रोण ने हंसकर भरत कुमारों से कहा कि इस मुट्ठीभर सींक अर्थात शरकंडे पर मैं अस्त्र का मंत्र फूंक देताहूं दूसरे

into a well. 4. The boys tried with all their power to take it out but could not succeed. They, therefore, began to look at one another with downcast heads. At that time they saw that a swarthy old Brahman, lean by engaging much in Agnihotra, was standing near. 7. The boys, unsuccessful in their enterprise and sorry for their failure seeing the good Brahman, surrounded him on all sides. The brave Drona, seeing the boys unsuccesful in their attempt, cunningly smiled at them and said, "Fie on your heroic strength and on your imperfect instruction in arms! Being born in the family of Bharat you could not fish up this ball! If you promise to give me food I shall take out the ball and the finger ring with a straw." Drona, the destroyer of enemies having said this to the princes dropped his ring in the empty well. Yudhishthir then said (12) "Subject to the approval of Kripacharya

वीर्य्यंनिरीक्षध्वं यदन्यस्यनविद्यते॥१४॥मेत्स्यामीषीकयावीटां तामिषीकांतथान्यया।
तामन्ययासमायोगेवीटायाग्रहणंमम॥१५॥ वैशम्पायनउवाच। ततोयथोक्तंद्रोणेन तत्सर्वं
कृतमञ्जसा। तदवेक्ष्य कुमारास्ते विस्मयोत्फुल्ललोचनाः। आश्चर्य्यमिदमत्यन्तमिति
मत्वावचोऽब्रुवन् ॥१६॥ कुमारा ऊचुः। मुद्रिकामपिविप्रर्षे शीघ्रमेतां समुद्धर ॥१७॥
वैशम्पायनउवाच। ततःशरंसमादाय धनुर्द्रोणोमहायशाः।शरेणविद्धामुद्रां तामूर्ध्वमावा
हयत्प्रभुः ॥१८॥ सशरंसमुपादाय कूपादङ्गुलिवेष्टनम्। ददौततःकुमाराणां विस्मिता
नाम विस्मितः। मुद्रिकामुद्धृतां दृष्ट्वातमाहुस्ते कुमारकाः॥१९॥ कुमाराऊचुः। अभि
वादयामहे ब्रह्मन्नैतदन्येषुविद्यते। कोऽसिकस्यासिजानीमो वयंकिंकरवामहे ॥ २० ॥
वैशम्पायन उवाच। एवमुक्तस्ततोद्रोणः प्रत्युवाचकुमारकान् ॥ २१ ॥ द्रोण उवाच।
आचक्ष्ध्वञ्च भीष्मायरूपेणच गुणैश्चमाम्। सएवसुमहातेजाः साम्प्रतंप्रतिपत्स्यते

वीर्य नहीं है वोह इसमें देखोगे इस सींकसे वोह गेंद भेदकर दूसरी सींकसे इस सींक को भेदूंगा फिर और सींकसे इस दूसरी कोभी छेदूंगा इसप्रकार क्रमशः सीकों के योग से इस गेंदको थांमलूंगा।१५। अनन्तर द्रोणने जैसा कहाथा वैसाहीकर दिखाया लडकोंने अचरज से आंखें चढाकर वोह लीला देखी और यह मानकर कि यह बहुत आश्चर्य है कहा कि हे विप्रर्षे! यह मुँदरीभी निकालो अनन्तर अति यशस्वी प्रभु द्रोणने शरासन से बाण लेकर उस मुँदरीको बींधकर ऊपर उठालिया फिर बांणसहित उस मुँदरीकोलेकर विस्मययुक्त कुमारोंको देदिया कुमारों ने बाणसे उस मुंदरीको उठायाहुआ देखकर कहा कि हेब्रह्मन् यह विद्या दूसरोंमें नहीं दीख पडती सो आपको प्रणामकर जाननाचाहते हैं कि आप कौन और किसके पुत्रहैं और यहभी कहिये कि हम आपका क्या उपकारकरैं कुमारों की यह बातसुनकर द्रोणने उत्तरदिया कि तुम भीष्म के पास जाकर मेराआकारऔरगुण की बात ठीक २ कहो। इससे वह बडे तेजस्वी भीष्म मुझको पहिचानलेंगे ॥ २२ ॥

you will remain with us for ever. Having heard this Drona said to the princes, "I pronounce the *Mantra* on this handful of straw. You will see that it gains such virtue as no other weapons have. With this straw I shall pierce the ball. This other will pierce the former and so on till I can draw the whole by my hand." Drona did as he had said. The children gazed at the feat with wonder. And knowiug it to be an astonishing deed said, "Briug out the ring, too." Drona pierced the ring with his arrow and picked it up and handed both ring and arrow to the astonished princes. The princes then said, "We donot see this knowledge among others. We, therefore, bow to you. We wish to know your name and parentage. Also, please let us know what good can we do you." Drona said, "Mention my stature and this feat before Bhishma

ब्राह्मणस्य
॥ २२ ॥ वैशम्पायन उवाच। तथेत्युक्त्वाचगत्वाच भीष्ममूचुःकुमारकाः। ब्राह्मणस्य
वचस्तथ्यं तच्चकर्मतथाविधम् ॥ २३ ॥ भीष्मःश्रुत्वाकुमाराणां द्रोणंतंप्रत्यजानत।
युक्तरूपःसहिगुरुः रित्येवमनुचिन्त्यच ॥२४॥ अथैनमानीयतद्वा स्वयमेवसुसत्कृतम्।
परिपप्रच्छनिपुणंभीष्मः शस्त्रभृतांवरः। हेतुमागमनेतच्च द्रोणःसर्वन्यवेदयत् ॥ २५ ॥
द्रोण उवाच। महर्षेरग्निवेशस्य सकाशमहमच्युत। अस्त्रार्थमगमंपूर्वं धनुर्वेदचिकीर्षया
॥२६॥ ब्रह्मचारीविनीतात्मा जटिलोबहुलाःसमाः। अवसंसुचिरंतत्र गुरुशुश्रूषणेरतः
॥२७॥ पाञ्चाल्यो राजपुत्रश्च यज्ञसेनोमहाबलः। इष्वस्त्रहेतोर्न्यवसत्तस्मिन्नेवगुरौप्रभुः
२८॥समेतत्रसखाचासीदुपकारी प्रियश्चमे। तेनाहंसहसङ्गम्य वर्त्तयन्सुचिरंप्रभो॥२९॥
बाल्यात् प्रभृतिकौरव्य सहाध्ययनमेवच। समेसखासदातत्र प्रियवादीप्रियङ्करः॥३०॥
अब्रवीदितिमांभीष्म वचनंप्रीतिवर्द्धनम्। अहंप्रियतमःपुत्रः पितुर्द्रोणमहात्मनः ३१॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर लडकोंने वह मानकर भीष्मके पास जाकर उन ब्राह्मणका ठीक ठीक हाल और उनके आश्चर्य्य कार्य्यकी बात कह सुनायी। भीष्म ने कुमारोंके मुख से सब सुनकर उन ब्राह्मणको द्रोण करके जाना। और यह सोचा, कि यही आचर्य्य कार्य्य के योग्य हैं। अनन्तर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ भीष्म ने स्वयं उसी क्षण वहांजाकर उनको आदर पूर्व्वक लिवा लाकर आनेका कारण योग्य रूप से पूछा; द्रोण आद्योपान्त सब सुनाकर बोले कि हे आयुष्मन्।२९।मैं पहिले धनुर्व्वेद और अस्त्र शिक्षाके लिये महर्षि अग्निवेशके यहां गया था वहां ब्रह्मचारी, नम्र जटाधारी और गुरूकी सेवामें उत्साहितहोकर अनेक वर्ष गँवाये, उन दिनों पांचाल राजकुमार महाबली प्रभावी यज्ञसेन उन गुरु के निकट अस्त्र विद्या और धनुर्विद्या सीखनेके लिये रहते थे। हे प्रभो! यहां वह मेरे उपकारी, मित्र और प्यारेथे उन के साथ एकत्र रहकर मैं बहुतदिन सुखसे था हे कौरव! बालेपनसे उन के साथ एकत्र मैंने पढ़ाथा, इस लिये वह सदा मेरेप्रियकरने वाले और प्रिय कहनेवाले मित्रथे।३०।हे भीष्म! वह मेरी प्रीतिके लिये सदा मुझसे यह

and he will know me." Vaishampayan said that the children described the Brahman precisely and also told him what he had done. By the description of the boys *Bhishm* knew him to be Drona and thought him the proper man to become the preceptor of the boys. *Bhishm*, the best among warriors, himself came to the spot and brought him home with great honour. On being asked Drona gave a full account of his own previous life saying, "My first instructor in arms was Agnivesh. I was with him several years. In those days, Yagyasen the prince of the Panchals used to come there to learn the art of war and was a dear friend of mine. I passed many a happy year in his company. We read

अभिषेक्ष्यतिमांराज्ये सपांचाल्योयदातदा । त्वद्भोग्यंभवितातात सखेसत्येनतेशपे ।
॥ ३२ ॥ ममभोगाश्चवित्तंच त्वदधीनंसुखानिच । एवमुक्त्वाथवव्राज कृतास्त्रःपूजि-
तोमया ॥ ३३ ॥ तच्चवाक्यमहंनित्यं मनसाधारयंस्तदा । सोऽहंपितृनियोगेन पुत्र-
लोभाद्यशस्विनीम् ॥ ३४ ॥ नातिकेशींमहाप्रज्ञामुपयेमे महाव्रताम् । अग्निहोत्रेचसत्रे
च दमेचसततंरताम् ॥ ३५ ॥ अलभद्गौतमी पुत्रमश्वत्थामानमौरसम् । भीमविक्रमक
र्माणमादित्यसमतेजसम् ॥ ३६ ॥ पुत्रेणतेनप्रीतोऽहं भरद्वाजोमयायथा। गोक्षीरंपिब
तोदृष्ट्वा धनिनस्तत्रपुत्रकान् ॥ ३७ ॥ अश्वत्थामारुदद्बालस्तन्मे सन्देहयद्दिशः । नस्ना
तकोऽवसीदेव वर्त्तमानःस्वकर्मसु ॥ ३८ ॥ इतिसंचिन्त्यमनसा तंदेशंबहुशोभ्रमन् ।

कहा करते थे कि हे द्रोण ! मैं महानुभव पिताका बडा प्यारा पुत्रहूं, सो मैं तुमसे यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि जब पांचालराज मुझको राज्यपर बैठावेंगे, तब वह राज्य तुम भोग करोगे, ऐ मित्र ! मेरा भोग, ऐश्वर्य्य और सुख सब तुम्हारे हाथ रहेंगे। आगे जब उनकी अस्त्र शिक्षा अन्तहुई, तब वह मुझ से सम्मान पाकर वहां से चले गये । मैंने तभी से सदा उनकी यह बात मन में रखली । अनन्तर मैंने पिता के नियोग से पुत्रपाने के लोभ से स्वल्प केशी अति बुद्धिमती व्रतशीला और अग्निहोत्र यथा यज्ञ करने और इन्द्रियों के रोकने में सदा नियुक्त कृपीसे विवाहकिया।३५।कृपीने मेरेवीर्यसे अश्वत्थामा नामक भीम विक्रमी सूर्यसमान तेजस्वी एक पुत्र प्राप्तकिया । भरद्वाज मुझको पाकर जिसप्रकार प्रसन्न हुए थे मैंभी उस सन्तानको प्राप्तकर उसीप्रकार कृतार्थहुआ।अश्वत्थामा बालपन में एक दिन धनीके पुत्रों को दूध पीते देखकर ऐसा रोने लगा, कि उससे मेरी सुध बुध जाती रही।३८।यह सोचकर अपने यागादि कर्म करनेवाले स्नातकजन अप्रसन्न न होवें, अर्थात् यदि यागशील जनके थोड़ीगाय रहें, तो उस से गायका प्रतिग्रह करने से उसका धर्म लोपहोसकता है मैंने धर्मयुक्त विशुद्ध प्रतिग्रह करने के लिये बहुत बार

together in our early age and were therefore fast friends. For my love he used always to say, "My father loves me dearly and I tell you sincerely that whenever I become king of Panchal you will be my partner in the enjoyment. I shall enjoy it subject to your directions. At the close of his instructions in arms he went away much honoured by me. I always remembered his words. With my father's permission and a desire to beget offspring I married Kripi, the wise vow observing and always engaged in performing sacrifices. Kripi got a son, Ashwathama, brave like *Bhim* and glorious like the sun. I was as pleased at the birth of the son as my father *Bharadwaj* was at my birth. One day, seeing some rich men's children drink milk, Ashwathama cried so bitterly as to make me feel very much. I went throughout the neigh-

नाभ्यगच्छंपय
त्रिशुद्धमिच्छन् गाङ्गेयधर्मोपेतं प्रतिग्रहम् ॥ ३९ ॥ अन्तादन्तंपरिक्रम्य नाभ्यगच्छंपय
स्विनीम् । अथपिष्टोदकेनैनं लोभयन्तिकुमारकाः ॥ ४० ॥ पीत्वापिष्टरसंबालः क्षीरं
पीतंमयापिच । ननर्त्तोत्थायकौरव्य हृष्टोबाल्याद्विमोहितः ॥४१॥ तंदृष्ट्वानृत्यमानन्तु
बालैःपरिवृत्तंसुतम् । हास्यतामुपसम्प्राप्तं कश्मलंतत्रमेऽभवत् ॥ ४२ ॥ द्रोणंधिगस्त्व
धनिनं योधनंनाधिगच्छति । पिष्टोदकंसुतोयस्य पीत्वाक्षीरस्यतृष्णया ॥ ४३ ॥ नृ-
त्यतिसमुदाविष्टः क्षीरंपीतंमयाप्युत । इतिसम्भाषतांवाचं श्रुत्वामेबुद्धिरच्यवत् ।४४
आत्मानंचात्मना गर्हन्मनसेदंव्यचिन्तयम् । अपिचाहंपुरा विप्रैर्वर्जितोगर्हितोवसे ॥
॥ ४५ ॥ परोपसेवांपापिष्ठां नचकुर्य्यांधनेप्सया । इतिमत्वाप्रियंपुत्रं भीष्मादायततो
ह्यहम् ॥ ४६ ॥ पूर्वस्नेहानुरागित्वात् सादरःसोमकिंगतः । अभिषिक्तन्तुश्रुत्वैव कृ-

उस देशमें भ्रमण किया । हे गंगानन्दन ! देशके एक छोरसे दूसरे छोरतक घूमने परभी दूध देनेवाली एकभी गाय नहीं मिली आगे दूसरे लडकों ने पिसेहुए चावल के साथ मिलेहुए जल से उस लडकेको लुभाया ।४०। हे कुरुनन्दन ! बालक अश्वत्थामा उस पिष्टोदकको पीकर बालेपनके कारण मुग्धहोकर यह कहकरके कि मैंने दूध पीलिया है उठकर आनन्द से नाचने लगा उस पुत्रको लडकों से घेरेजाकर और उनकी हँसीका विषयहोकर नाचते देखकर मेरे हृदय में अति दुःख छागया विशेष चिढाने वालों से यह सुनकर कि दरिद्र द्रोणपर धिक्कार है जो धन के विना दूध पीनेको ठिकाना नहीं करसकता जिसका पुत्र दूधकी प्यास से पिष्टोदक पीकर प्रसन्न चित्तसे मैंने दूध पिया कहके नाचाथा मेरी बुद्धि विगडगयी आगे आपही अपनीं निन्दाकर सोचने लगा कि मैं ब्राह्मणों से त्यागदिये जाने और निन्दापाने परभी बसा रहूंगा तौभी धन के लोभसे पाप कर्म परायी सेवा नहीं करूंगा । हे भीष्म ! पहिले ऐसा विचार करने परभी मैं प्यारे पुत्र और स्त्री को लेकर।४६। पहिलेके स्नेह के हेतु राजा द्रुपदके यहां गया यह सुनकर

bouring country to see if I could find one who should give me a cow out of the large number that he might possess but, from one part of the country to the other I could find no mitch cow. Then the other boys coaxed him with a mixture of rice paste and water. The boy Ashwathama after drinking it boasted of having drunk milk and danced for glee. Seeing him surrounded and laughed at by boys I was much distressed. I heard the mockers say, "Fie, on the poverty stricken Drona who for want of wealth can not get milk for his son to drink, and whose son has danced on drinking the mixture of rice and water, saying 'I have drunk milk'." My senses were gone at hearing this. I began to reflect on my sad state and said to myself, "I shall dwell among Brahmans although I be forsaken and jeered at by them. I prefer this life to that

तार्थोऽस्मीतिचिन्तयन् ॥४७ ॥ प्रियंसखायंसुप्रीतो राज्यस्थंसमुपागमम् । संस्मरन् सङ्गमंचैव वचनंचैवतस्यतत् ॥ ४८ ॥ ततोद्रुपदमागम्य सखिपूर्वमहंप्रभो । अब्रवंपु रुषव्याघ्रसखायं विद्धिमामिति ॥ ४९ ॥ उपस्थितस्तुद्रुपदं सखिवच्चास्मिसंगतः । समांनिराकारमिव प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ ५० ॥ अकृतेयंतवप्रज्ञा ब्रह्मन्नातिसमञ्जसा । यदात्थमांत्वंप्रसभं सखातेऽहमितिद्विज ॥५१॥ सङ्गतानीहजीर्य्यन्ति कालेनपरिजी- र्य्यतः । सौहृदंमेत्वयाह्यासीत् पूर्वंसामर्थ्यबन्धनम् ॥ ५२ ॥ नाश्रोत्रियःश्रोत्रियस्य नारथीरथिनःसखा । साम्याद्धिसख्यंभवति वैषम्यान्नोपपद्यते ॥ ५३ ॥ नसख्यम मजरंलोके विद्यतेजातुकस्यचित् । कालोवैनंविहरतिक्रोधो वैनंरहत्युत ॥ ५४ ॥ मैवं

कि मेरे वोह प्रिय मित्र राज्यपर बैठे हैं, अपनेको कृतार्थ जानकर प्रसन्न चित्तसे उनके पास गया । हेप्रभो ! उन से एकत्र बास और उनकी प्रतिज्ञा को स्मरण करते हुए, मैंने उनके पास जाकर मित्रतासे कहा, किहे पुरुष व्याघ्र ! मैं तुम्हारा मित्र हूं ; यह कहकर मित्रवत् निकटजाकर उनसे मिला । इससे नीच मनुष्यकी भांति मुझपर हंसकर उन्होंने कहा, । ५० । कि हे ब्रह्मन् ! तुम्हारी यह बुद्धि बुद्धिमानोंकीसी और सुथरी हुई नहीं है । हे द्विज क्योंकि तुमने एकायक मुझसे कहा कि मैं तुम्हारा मित्र हूं ,, कालसे सभी टूट फूट जाताहै सो मित्रताभी टूट फूट जाती है ; तुमसे पहिले जो मेरी मित्रता हुई थी वह उन दिनोंके सम्बन्धही से हुई थी वास्तवमें अश्रोत्रिय जन श्रोत्रियसे रथहीन जन रथी से और राजा न होनेसे राजासे मित्रता नहीं करसकता है , अतएव क्यों पहिली मित्रता की इच्छा करते हो ? दोनों के समान होने से मित्रता होती है, पर आपसमें छोटे बडे होन से क्यों कर मित्रता होसक्तीहै ।५३। इसभूमण्डल में किसी की मित्रता कभी सदाबनी नहीं रहती है, क्योंकि कालसे वह दूरहो सकती है, अथवा

of servitude and sin." In spite of this resolve I went to king Drupad, the friend of my childhood. Hearing that my friend had got the throne I was overjoyed and went to him. Remembering his promises I spoke to him in a friendly manner and said, " I am your friend, O lion among men." Saying so I went near him. On this he looked down upon me and laughing at me he said, " Your wisdom is not developed for you said to me unhesitatingly ' I am your friend.' Time breaks all things and friendship is subject to the same rule. My friendship with you was a matter of chance. The learned can not make friends of the unlearned, a charioteer can not be the friend of one having no chariot and a king can not be the friend of one who is not king. Why do you then expect to renew the former friendship.? Friendship can exist between persons of equal rank and not otherwise. Friendship

जीर्णमुपास्वतत्वं सत्यंभवत्वपाकृधि । आसीत्सख्यंद्विजश्रेष्ठ त्वयामेऽर्थनिबन्धनम्
॥ ५५ ॥ नह्यनाढ्यःसखाढ्यस्यनाविद्वान् विदुषःसखा । नशूरस्यसखाक्लीवः सखि
पूर्वंकिमिष्यते ॥ ५६ ॥ नहिराज्ञामुदीर्णानामेवं भूतैर्नरैःक्वचित् । सख्यंभवतिमन्दा
त्मन् श्रियाहीनैर्धनच्युतैः ॥ ५७ ॥ नाश्रोत्रियःश्रोत्रियस्य नारथीरथिनःसखा ।
नाराजापार्थिवस्यापि सखिपूर्वंकिमिष्यते ॥ ५८ ॥ अहंत्वयानजानामि राज्यार्थे
सम्विदंकृताम् । एकरात्रन्तुतेब्रह्मन् कामंदास्यामि भोजनम् ॥ ५९ ॥
एवमुक्तस्त्वहंतेन सदारः प्रस्थितस्तदा । तांप्रतिज्ञांप्रतिज्ञाययां कर्त्तास्म्य
चिरादिव ॥ ६० ॥ द्रुपदेनैवमुक्तोऽहं मन्युनाभिपरिप्लुतः । अभ्यागच्छंकुरून्भीष्म
शिष्यैरर्थीगुणान्वितैः ॥ ६१ ॥ ततोऽहंभवतःकामंसम्वर्द्धयितुमागतः । इदंनागपुरं
रम्यंब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ ६२ ॥ वैशम्पायन उवाच एवमुक्तस्तदाभीष्मो भारद्वा-

क्रोध से जड़ से उखड़ जाता है; अतएव तुम उस पुरानी मित्रता की इच्छा करना छोड़ दो, अब उसको बना बनाया मत जानों। हे द्विजोंमें श्रेष्ठ जन! किसी प्रयोजन ही से तुमसे मेरी मित्रता हुई थी; देखो, दरिद्रजन धनीका, मूर्ख पण्डितका, और वीर्य्य-वर्जित जन वीरका मित्र नहीं होसकता है, सो तुम क्यों पहिली मित्रताकी इच्छाकर रहे हो? हे स्वल्प-बुद्धि! जो अनन्त ऐश्वर्य्य युक्त भूपाल हैं, उनकी कभी ऐसे दरिद्रों से मित्रता नहीं होसकती।५८। मैंने राज्यके विषयमें तुमसे जो प्रतिज्ञाकी थी, वहमुझको स्मरणनहीं होती पर तुम एक रात जो कुछ खाना चाहो वह मैं देनेको सम्मत हूं। उनकी वहबात्त सुनकर, ऐसी प्रतिज्ञा करके जोकि मैं विना विलम्बपूर्ण करसकूंगा स्त्री के साथ लौट आया। हेभीष्म! मैं राजाद्रुपदसे उस प्रकार लज्जित होकर गुणवन्त शिष्यों की खोज में कुरुराज्य में उपस्थित हुआ था आगे आपकी इच्छानुरूप कार्य्य करनेके लिये इस सुन्दर नागपुरमें आया, कहिये इससमय क्या करनाहोगा। ६२। वैशम्पायनजी बोले,

cannot endure for ever in this world, for, Time makes friends distant and anger uproots it. You must not recall the old friendship. Forget its very existence. It was only a matter of chance. A poor man can not be the friend of a wealthy man, nor an illiterate of a learned man nor a strong man can be the friend of a weakling. Why do you wish to renew the old friendship? Wealthy kings, O fool, cannot be the friends of such poverty-stricken fellows. I donot remember having promised to make you a sharer in my kingdom. But I can entertain you for one night." Having heard this I made a vow which I shall be able to bring into practice without difficulty, and returned with my wife. Being put to shame by Drupad I began to make a search for well qualified disciples and having come to the country of Kurus for that purpose I

जपभावन ॥ ६३ ॥ भीष्म उवाच । अपज्यं क्रियतां चापं साधवस्त्रं प्रतिपादय । भुंक्ष्व भोगान् भृशं प्रीतः पूज्यमानः कुरुक्षये ॥ ६४ ॥ कुरूणामस्ति यद्वित्तं राज्यं चेदं सराष्ट्रकम् । त्वमेव परमो राजा सर्वे च कुरवस्तव ॥ ६५ ॥ यच्च ते प्रार्थितं ब्रह्मन् कृतं तदिति चिन्त्यताम् दिष्ट्या प्राप्तोऽसि विप्रर्षे महान्मेऽनुग्रहः कृतः ॥ ६६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि भीष्मद्रोणसमागमे त्रय
स्त्रिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १३३ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततः सम्पूजितो द्रोणो भीष्मेण द्विपदां वरः । विशश्राम महातेजाः पूजितः कुरुवेश्मनि ॥ १ ॥ विश्रान्तेऽथ गुरौ तस्मिन् पौत्रानादाय कौरवान् । शिष्यत्वेन ददौ भीष्मो वसूनि विविधानि च ॥ २ ॥ गृहञ्च सुपरिच्छन्नं धनधान्य समाकुलम् । भारद्वाजाय सुप्रीतः प्रत्यपादयत प्रभुः ॥ ३ ॥ स तान्छिष्यान्महेष्वासः प्रति-

कि द्रोण की यह बात सुनकर भीष्मने उनसे कहा, कि शरासनके गुणको ढीला कर लीजिये ; इन कुमारों को भले प्रकार अस्त्रविद्या दान कीजिये । कुरूओं के घर में पूजे जाकर भोगके पदार्थ भोगिये ।६४। कुरूओंके इस राष्ट्रके साथ राज्य और जो कुछ ऐश्वर्य है आप सबके राजाकी समान बने रहिये ; सम्पूर्ण कौरव आपहीके हुए । हे ब्रह्मन ! जान लीजिये, कि आपकी जो कुछ प्रार्थना थी वह सब पूरी ही हो गयी है । हे विप्रर्षे हमारे भाग्यसे महत्‌जन कृपासे यहां आ गये हैं ॥ ६६ ॥

अध्याय ॥ १३४ ॥

श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि अनन्तर अति तेजस्वी मनुष्यों में श्रेष्ठजन द्रोण, भीष्म से पूजे जाकर कुरुओंके घरमें आदर पूर्वक रहने लगे । आगे आचार्य की थकाई दूर होने पर भीष्मने पौत्रों को ले जाकर उनके शिष्य बना दिये और प्रसन्न होकर, नाना धन देकर उन के रहने के लिये धन धान्य से भरा पूरा साफ एक गृह ठहरा दिया था ।३। वह

am now at your service." Vaishampayan said that having heard this from Drona, Bhishm requested him to loosen his bow-string, and said, "Educate the princes well in the exercise of arms, enjoy the good cheer of the house of Kurus and be honoured like the princes of the Kuru family having all the Kauravas under your control. As for your desire, think it as already accomplished. We have by our good fortune, a great man who has come here by his kindness."

CHAPTER CXXXIV

Vaishampayan said that being honoured by *Bhishm*, Drona the best of glorious men, began to live in the house of Kurus and was respected by them. When he was rested from the toils of the way *Bhishm* took the children to him and entrusted them to

जग्राहकौरवान् । पाण्डवान्धार्त्तराष्ट्रांश्च द्रोणोमुदितमानसः ॥ ४ ॥ प्रतिगृह्यचतान् सर्वान्द्रोणो वचनमब्रवीत । रहस्येकःप्रतीतात्मा कृतोपसदनांस्तथा ॥५॥ द्रोणउवाच॥ कार्य्यंमेकांक्षितंकिञ्चिद्ध दिसम्परिवर्त्तते । कृतास्त्रैस्तत्प्रदेयंमेतदेतद्वदतानघाः ॥६॥ वैशम्पायन उवाच। तच्छ्रुत्वा कौरवेयास्ते तूष्णीमासन् विशाम्पते । अर्जुनस्तुततः सर्वंप्रतिजज्ञेपरन्तप ॥ ७ ॥ ततोऽर्जुनंतदा मूर्द्धिन समाघ्रायंपुनःपुनः । प्रीतिपूर्वंपरिष्वज्यप्ररुरोदमुदातदा ॥८॥ ततोद्रोणः पाण्डपुत्रानस्त्राणिविविधानिच । ग्राहयामास दिव्यानि मानुषाणिच वीर्य्यवान् ॥ ९ ॥ राजपुत्रास्तथा चान्ये समेत्यभरतर्षभ । अभिजग्मुस्ततो द्रोणमस्त्रार्थे द्विजसत्तमम् ॥ १० ॥ वृष्णयश्चान्धकाश्चैव नानादेश्याश्चपार्थिवाः । सूतपुत्रश्चराधेयो गुरुंद्रोणमियात्तदा ॥ ११ ॥ स्पर्द्धमानस्तुपार्थेन सूत-

धनुषधारी द्रोण ने प्रसन्न चित्त से उन कुरु पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्रों को शिष्य बना लिया। अन्तर द्रोण अकेले उन सब निकट के कौरवों से निराले में विश्वास पूर्वक बोले कि हे अनघ गण! कोई एक वाञ्छित विषय मेरे मन में जग रहा है। सो वह सत्य कर बोलो, कि जब जब तुम अस्त्र विद्या में दक्ष बनोगे तब मेरी वह इच्छा पूरी करना।६। हे पृथ्वीनाथ! कौरव लोग यह सुनकर चुप होरहे। अनन्तर शत्रु दंसने हारे अर्जुनने उन की सब कामनाओं को पूरी करने का प्रण ठाना। तब द्रोणने वार वार अर्जुन का सिर चमकर प्रसन्नता से उनको गलेसे लगाया और हर्ष के मारे उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे अनन्तर वह वीर्य्यवन्त द्रोण पाण्डु नन्दनों को दिव्य और मानवी नाना प्रकार के अस्त्रों की शिक्षा देने लगे। हे भरत श्रेष्ठ! तब दूसरे अनेक राज कुमारभी आकर के अस्त्र शिक्षाके लिये द्विजोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के पास एकत्रित होनेलगे।१०। वृष्णिवंशी अन्धकवंशी और अनेक देशों के भूपाल तथा राधा कुमार सूत पुत्र कर्ण द्रोणाचार्य्य के

his keeping. He set apart for him a well furnished house and gave him a large amount of wealth. The great archer, Drona, made them his disciple. One day Drona took the boys aside and said to them cautiously, "I have a great desire in my heart. Tell me truly that after accomplishing yourself in the art of war you will fulfil my desire." The Kauravas were silent on hearing this. But the brave Arjun promised to accomplish his wishes. Drona thereupon imprinted kisses again and again with joy at the forehead of Arjun and embraced him. Tears of joy dropped down from his eyes. The brave Drona began to educate the Pandavas in different sorts of the art of war. Princes from different countries began to come to Drona to learn the art of war. The Vrishnis, the Andhaks, the kings of different countries and Karan the son of Radha and Sut

पुत्रोऽत्यमर्षणः । दुर्य्योधनंसमाश्रित्य सोऽवमन्यतपाण्डवान् ॥ १२ ॥ अभ्ययात्स-
ततोद्रोणं धनुर्वेदचिकीर्षया । शिक्षाभुजबलोद्योगैस्तेषु सर्वेषुपाण्डवः ॥ १३ ॥ अस्त्र
विद्यानुरागाच्च विशिष्टोऽभवदर्जुनः । तुल्येष्वस्त्रप्रयोगेषु लाघवेसौष्ठवेषुच ॥ १४ ॥
सर्वेषामेवशिष्याणां बभूवाभ्यधिकोऽर्जुनः । ऐन्द्रिमप्रतिमंद्रोण उपदेशेष्वमन्यत ।१५।
एवंसर्वकुमाराणामिष्वस्त्रं प्रत्यपादयत् । कमण्डलुञ्चसर्वेषां प्रायच्छच्चिरकारणात् १६
पुत्रायचददौ कुम्भमविलम्बनकारणात् । यावत्तेनोपगच्छन्ति तावदस्मैपरांक्रियाम् ।
॥ १७ ॥ द्रोणआचष्टपुत्राय तत्कर्मजिष्णुरौहत । ततःसवारुणास्त्रेण पूरयित्वाकमण्ड-
लुम । सममाचार्य्यपुत्रेण गुरुमभ्येतिफाल्गुनः ॥ १८ ॥ आचार्य्यपुत्रात्तस्मात्तु विशे
षोपचयेपृथक् । नव्यहीयतमेधावी पार्थोऽप्यस्त्रविदांबरः ॥ १९ ॥ अर्जुनःपरमंयत्न

निकट आकरके शिष्य बने । सूतपुत्र अति द्वेषयुक्त होकर अर्ज्जुनसे अहङ्कार दिखाकर दुर्य्योधनकी ओर झुककर पाण्डवोंका अनादर करने लगे । अर्ज्जुन धनुर्व्वेद सीखनेके लिये सदा द्रोणाचार्यके निकट रहते थे । वह शिक्षा भुजबल, उद्योग और अस्त्र-विद्यामें यत्न रखनेके कारण सबोंमें विशेष बनगये । अस्त्र चलानेमें समान होनेपरभी उसविषयमें शीघ्र और कौशलके विषयमें अर्ज्जुनही सम्पूर्ण शिष्योंसे बढ़कर निकले । तब द्रोणने समझा, कि कोई भी शिक्षा के विषय में इस इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन के समान नहीं होसकेगा; आचार्य्य द्रोण इस प्रकार बाण और अस्त्र विद्याकी शिक्षा देनेलगे । इसलिये, कि जल लानेसे विलम्ब हो, वह सब शिष्योंको एक एक कमण्डलु अर्थात् छोटा मुहवाला जलका वर्त्तन देते थे, और शीघ्र कार्य पूरा करनेके लिये अपने पुत्र अश्वत्थामाको एक कलसा देते थे; इसका अभिप्राय यह है, कि अश्वत्थामा के शीघ्र जल लानेपर द्रोणाचार्य्य उसको किसी किसी श्रेष्ठ प्रकारका उपदेश किया करते थे । पाण्डुपुत्र फाल्गुनने तर्कसे उनके इस कामको जान लिया था; सो वह वरुणास्त्रसे कमण्डलु भरकर आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामाके साथ एकही समय में गुरु

came there to become the disciples of Drona. The son of *Sut* began to show his ill feelings towards Arjun and the Pandavas and sided with Duryodhan. Arjun always remained close at hand to learn something new from Drona. He ecxelled all in training, strength and knowledge of the science of arms. Arjun was far above other disciples of Drona. in dexterity and ability. Drona knew this and began to train him specially. Drona used to give each of his disciples a narrow necked vessel to bring water and gave his own son one with a wider neck so that he might come sooner. He used to teach him some good points in the interval. Arjun argued in his mind and knew this fact. He would thenceforth by a special machine fill his vessel in a moment and bring the water along with Ashavathama. He was therefore not behind even his percepter's son

तंदृष्ट्वानित्यमु-
मातिष्ठद्गुरुपूजने । अस्त्रेचपरमंयोगं प्रियोद्रोणस्यचाभवत् ॥ २० ॥ अन्धका
सुक्तमिष्वस्त्रं प्रतिफाल्गुनम् । आहूयवचनंद्रोणो रहःसूदमभाषत ॥ २१ ॥
रे ऽर्जुनायान्नं नदेयंते कदाचन । नचाख्येयमिदंचापि मद्वाक्यं विजयेत्वया ॥ २२ ॥
त :कदाचिद्भुञ्जाने प्रववौवायुरर्जुने। तेनतत्रप्रदीपः सदीप्यमानोविलोपितः ॥ २३॥
भुंक्तएवतु कौन्तेयो नास्यादन्यत्र वर्तते । हस्तस्तेजस्विनस्तस्य अनुग्रहणकारणात्
॥ २४ ॥ तदभ्या सकृतंमत्वा रात्रावपिसपाण्डवः । योग्यांचक्रे महाबाहुर्धनुषा
पाण्डुनन्दनः ॥ २५ ॥ तस्यज्यातलनिर्घोषं द्रोणःशुश्रावभारत । उपेत्यचैनमुत्थाय
परिष्वज्येदमब्रवीत् ॥ २६ ॥ द्रोण उवाच । प्रयतिष्येतथा कर्तुंयथानान्योधनुर्द्धरः ।
त्वत्समोभवितालोके सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ २७ ॥ वैशम्पायनउवाच । ततोद्रोणोऽर्जुनं

के पास आ जाते थे, इससे अस्त्र विद्या में पण्डित मेधायुक्त पार्थ किसी विशेष गुण के वि-
षयमेंभी आचार्य्य के पुत्रसे अलग और कम नहीं हुए । वह गुरुकी सेवा में बड़ा यत्न
और अस्त्रोंके सीखने में बड़ा ध्यान देने लगे, सो द्रोणाचार्य के बड़े प्रिय बने आचार्य
द्रोण फाल्गुनको अस्त्रोंकी शिक्षा में सदा सन्नद्ध देखकर रसोई दारको निरालेमें बुलाकर
बोले कि तुम कभी अंधेरेमें अर्जुन को खाने के लिये अन्न मत देना और अर्जुन से यहभी
नहीं कहना कि मैंने तुमसे ऐसा कहा है अनन्तर एक समय अर्जुन खा रहे थे कि ऐसे स-
मय में हवा चलने लगी इससे लजते हुए प्रदीप के बुझजाने परभी तेजस्वी अर्जुन तब भ्रा
धरी में भोजन करने लगे अभ्यास के कारण उनका हाथ मुखके किसी और स्थान में नहीं
गया, इस से महाभुज पाण्डुनन्दन अर्जुन ने यह समझकर कि अभ्यास सेही ऐसा होता
है रात के समय न देखने योग्य निशाने से बाण चलानेका अभ्यास आरंभ कर दिया।
हे भारत ! आचार्य द्रोण रात्रि के समय उन के बाणों के छूटनेका शब्द सुनकर उठकर
के वहां गये और गले लगाकर अर्जुन से बोले, कि तुम से कहताहूं कि ऐसा प्रयत्न
करूंगा, कि मर्त्यलोक भर में कोई दूसरा धन्वा धरनेवाला तुम्हारे समान न होवे ।

in any accomplishment. By his attendance on his preceptor and attention to studies he had made himself very dear to Drona. Dronacharya noticed Arjun's extreme inclination towards learning the art of war. He therefore prohibited the cook, in private, from ever serving food before Arjun in darkness and enjoined him to keep well to himself this secret. One day as Arjun was at his supper a gust of wind blew and extinguished the lamp and he ate on in darkness. By the force of habit his hand went always directly to the mouth and from this he inferred that he could as well hit his mark in the dark. Thenceforth he began to shoot his arrow in the darkness of night. Dronacharya heard the sound

भूयो हयेषुचगजेषुच । रथेषुभूमावपिच रणाशिक्षामशिक्षयत् ॥ २८ ॥ गदायुद्धेऽसि चर्य्यायां तोमरप्रासशक्तिषु । द्रोणःसङ्कीर्णयुद्धेच शिक्षयामास कौरवान् ॥ २९ ॥ तस्यतत्कौशलं श्रुत्वाधनुर्वेदजिघृक्षवः । राजानोराजपुत्राश्च समाजग्मुःसहस्रशः ॥ ३० ॥ ततोनिषादराजस्य हिरण्यधनुषःसुतः । एकलव्योमहाराज द्रोणमभ्याजगामह ॥ ३१ ॥ नसतंप्रतिजग्राह नैषादिरितिचिन्तयन । शिष्यंधनुषि धर्मज्ञस्तेषामेवान्ववेक्षया ॥ ३२ ॥ सतुद्रोणस्य शिरसापादौगृह्यपरन्तपः । अरण्यमनुसम्प्राप्य कृत्वा द्रोणंमहीमयम् ॥ ३३ ॥ तस्मिन्नाचार्य्यवृत्तिञ्च परमामास्थितस्तदा । इष्वस्त्रेयोगमातस्थे परंनियममास्थितः ॥ ३४ ॥ परयाश्रद्धयोपेतो योगेनपरमेणच । विमोक्षादानसन्धानेलघुत्वं परमापसः ॥ ३५ ॥ अथद्रोणाभ्यनुज्ञाताः कदाचित्कुरुपाण्डवाः ।

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर वीर्यवन्त द्रोणाचार्य ने अर्जुनको घोडेपर रथपर, हाथी पर और भूमिपर युद्ध करने की विशेष शिक्षादी और गदायुद्धमें, खड्ग चलाने में तोमर प्रास, शक्ति, आदि विशेष २ अस्त्रोंके फेकने में और तंग युद्ध में अर्थात् एकही समय अनेक वाण चलाने अथवा एकबारही अनेक जनोंके संग युद्ध करने में सुशिक्षित किया सहस्रों राजा और राजकुमार उनके उस कौशलकी बातको सुनकर धनुर्वेद सीखनेके लिये इकट्ठे होनेलगे । हे महाराज ! हिरण्य धन नामक निषाद राजकुमार एकलव्य द्रोणके पास आया । धर्मज्ञ द्रोण यह समझकर कि यह व्याधका पुत्र है राजकुमारों के चिढ़नेके भयसे उसको नहीं लिया । हे शत्रुनाशि ! एकलव्य द्रोणाचार्य के पावोंपर सिर रखकर बनमें जाकर मिट्टी से द्रोणकी एक प्रतिमा गढी और उस प्रतिमूर्त्ति में अच्छे आचार्यकी बुद्धि देकर नियम से एकचित्तहोकर धनुर्वेद सीखनेलगा । उसकी बड़ी श्रद्धा और एकचित्तताके कारण अस्त्रोंका विमोचन आदान और सन्धान बड़ा सहजहो

of his shooting the arrows. He went to Arjun and embraced him saying, " I shall so contrive as no one in the world may be your equal in archery." *Vaishampayan* said that Dronacharya then gave Arjun special instructions in fighting on horse back, elephant, chariot and ground. He also trained him in the use of mace, sword, *tomar*, pras, *Shakti* and other weapons and fighting with many men. Thousands of princes and kings heard the fame of his instructions and came to him to learn the art. Once a Nishadh prince named Eklavya, son of Hiranyadhanu, came to Drona. The latter did not accept him as his disciple for tho fear that the princes would raise objections on their association with a fowler's son. He bowed to Drona and went back to the forest. There he made a clay image of Drona and taking it for the great preceptor he began to practice with his bow regularly. He found the

रथैर्विनिर्ययुःसर्वे मृगयामरिमर्द्दन ॥ ३६ ॥ तत्रोपकरणंगृह्य नरःकश्चिद्यदृच्छया ।
राजन्ननुजगामैकः श्वानमादायपाण्डवान् ॥ ३७ ॥ तेषांविचरतांतत्र तत्तत्कर्माचि-
कीर्षया श्वाचरन्सवने मूढो नैषादिंप्रति जग्मिवान् ॥ ३८ ॥ सकृष्णमलदिग्धाङ्गं
कृष्णाजिनजटाधरम् । नैषादिंश्वासमालक्ष्य भषंस्तस्थौतदान्तिके॥ ३९ ॥ तदातस्याथ
भषतःशुनः सप्तशरान्मुखे । लाघवंदर्शयन्नस्त्रे मुमोचयुगपद्यथा ॥ ४० ॥ सतुश्वा
शरपूर्णास्यः पाण्डवानाजगामह। तंदृष्ट्वापाण्डवावीराः परंविस्मयमागताः ॥ ४१ ॥
लाघवंशब्दवेधित्वं दृष्ट्वातत्परमंतदा। प्रेक्ष्यतंव्रीडिताश्चासन्प्रशशंसुश्चसर्वशः ॥४२॥
तंततोऽन्वेषमाणास्तेवनेवननिवासिनम्।ददृशुःपाण्डवा राजन्नस्यन्तमनिशंशरान् ॥४३॥
नचैनमभिजानंस्ते तदाविकृतदर्शनम् । तथैनंपरिपप्रच्छुः कोभवान्कस्यवेत्युत:

पडा अनन्तर किसी समय शत्रुदंसनेहारे कुरुपाण्डव लोग द्रोणाचार्यकी आज्ञासे रथपर आरूढ होकर मृगयाके लिये गये । हे राजन् ! तब एक मनुष्य मृगयाके योग्य जालादि लेकर एक कुत्तेको साथ लेकर अपनी इच्छानुसार पाण्डवों के संग चलने लगा । आगे उस वनमें जब सब लोग अपना २ काम पूराकरने लिये घूम घाम रहे थे, तब उनका साथी वह कुत्ता किसीसे न देखेजाकर व्याधकी ओर गया और उसको काला, विष्ठासे शरीर रँगा हुआ, काला चमडा पहिनेहुए और जटाधारी देखकर उसके सामने खडा होकर भोंकने लगा । व्याधपुत्र अस्त्र चलाने में शीघ्रता दिखाकर उस चिल्लाते हुए कुत्ते के मुह में एकबारही सातबाण चलाये । बाणों से मुह बन्द होने पर कुत्ता पांडवों के पास आया वीर पाण्डवों ने उसको उस दशा में देखकर बडा अचरज माना और सबलोग अस्त्र चलानेवाले की बडी फुर्ती तथा शब्द बेधने की सामर्थ देखकर बडे लज्जितहुए और सबप्रकारसे उसकी प्रशंसा करनेलगे । हे राजन् ! तब पाण्डवों ने उस बन में रहनेवाले अस्त्र चलाने हारेको बन में ढूंडते हुए देखा, कि वह हरघडी बाण चलारहाहै पर उन्होंने उस स्वरूप बिगाडेहुए व्याधको नहीं पहिंचाना

handling of weapons very easy as he had given his whole attention to learn it. Once upon a time the Kuru princes made an excursion on their chariots to hunt the deer of the forest. They saw a man equipped with the gear necessary for the chase of deer with a dog by his side. When people were roaming in the forest in search of game the dog, unseen by others went towards the fowler and finding him dirty and shabby looking began to bark at him. The hunter dexterously shoot into his mouth seven arrows. His mouth sewn with a network of arrows the dog came towards the Pandavas. They were much amazed at seeing such a feat and felt ashamed at the dexterity and precision of the archer.

॥ ४४ एकलव्य उवाच । निषादाधिपतेर्वीरा हिरण्यधनुषःसुतम् । द्रोणशिष्यञ्चमां वित्तधनुर्वेदकृतश्रमम् ॥ ४५ ॥ वैशम्पायन उवाच । तेतमाज्ञाय तत्त्वेनपुनरागम्य पाण्डवाः । यथावृत्तंवनेसर्वे द्रोणायाचख्युरद्भुतम् ॥ ४६ ॥ कौन्तेयस्त्वर्जुनो राजन्ने कलव्यमनुस्मरन् । रहोद्रोणंसमासाद्य प्रणयादिदमब्रवीत् ॥ ४७ ॥ अर्जुन उवाच। तदाहंपरिरभ्यैकः प्रीतिपूर्वमिदंवचः । भवतोक्तोनमेशिष्यस्त्वद्विशिष्टो भविष्यति ॥ ४८ ॥ अथकस्मान्मद्विशिष्टो लोकादपिच वीर्य्यवान् । अन्योऽस्तिभवतःशिष्यो निषादाधिपतेःसुतः ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । मुहूर्त्तमिवतं द्रोणश्चिन्तयित्वा विनिश्चयम् । सव्यसाचिनमादाय नैषादिंप्रतिजग्मिवान ॥ ५० ॥ ददर्शमलदिग्धाङ्गं जटिलंचीरवाससम् । एकलव्यंधनुष्पाणिमस्यन्तमनिशं शरान् ॥ ५१ ॥ एकलव्य स्तुतंदृष्ट्वाद्रोणमायान्तमान्तिकात् । अभिगम्योपसंगृह्य जगामाशिरसामहीम् ॥५२॥ पूज

अन्त में पूछा, कि आप कौन हैं ? किसके पुत्र हैं एकलव्य बोला कि हे वीरगण ! मैं निषादराज हिरण्य धनुष का पुत्रहूं, द्रोणाचार्यका शिष्यहोकरके सदा धनुर्वेद सीखने के लिये परिश्रम कररहाहूं । वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर पाण्डवों ने उसको ठीक पहिचान लौटकर वह सब आश्चर्य वृत्तांत सच २ द्रोणाचार्य को कह सुनाया । हे राजन् कुन्तपुत्र अर्जुन एकलव्य को स्मरणकरतेहुए द्रोणके पास पहुँचकर प्रेम से निराले में बोले, कि हेआचार्य ! पहिले आप ने अकेले मुझको गले से लगाकर प्रेमसे यह कहाथा कि मेरा कोई शिष्य तुम से श्रेष्ठ नहीं होगा फिर क्यों वीर्यवन्त निषादराजका पुत्र आप का शिष्यहोकर मुझसे, वरन सम्पूर्ण लोगोंसे श्रेष्ठहुआ अनन्तर द्रोण उस बातको क्षण-भर निश्चयरूप से सोचकर सव्यचारी अर्जुनको साथ लेकर उस निषादराज पुत्र के यहां गये और देखा, कि विष्टा से देह रँगा हुआ, जटाधारी चीर पहिने एक लव्य हाथों से चापको थामकर सदा बाण चला रहा है । एक लव्य ने निकट आये हुए द्रोणाचार्य्यको देखकर निकट आके पांव छूकर प्रणाम किया विधिपूर्व्वक पूज-

One and all began to laud his skill. Looking for him in the forest they saw that he was constantly shooting arrows. But they did not recognise him in that shabby dress. One of them questioned him about his name and parentage. He replied, "I am Eklavya the son of Hiranya Dhanu king of *Nishadhas*. Being a disciple of Dronacharya I am always engaged in the practice of shooting. Vaishampayan said that the Pandavas then recognised him and on their return told Drona all that had happened. Arjun, the son of Kunti, went to his preceptor, his heart full of Eklavya, and said, "You said to me once that no pupil of yours will excel me. How is it that the Nishadha prince, your pupil, has excelled your other pupils including myself. Drona considered well

यित्वाततोद्रोणं विधिवत् सनिषादजः । निवेद्यशिष्यमात्मानं तस्थौप्राञ्जलिरग्रतः ॥ ५३ ॥ ततोद्रोणोऽब्रवीद्राजन्नेकलव्यमिदंवचः । यादिशिष्योऽसिमेवीर वेतनंदीयतांमम । एकलव्यस्तुतच्छ्रुत्वा प्रीयमाणोऽब्रवीदिदम् ॥ ५४ ॥ एकलव्य उवाच । किंप्रयच्छामि भगवान्नाज्ञापयतुमांगुरुः । नहिकिञ्चिददेयं मे गुरवे ब्रह्मवित्तम ॥५५॥ वैशम्पायन उवाच । तमब्रवीत्त्वयांगुष्ठो दक्षिणोदीयता मिति । एकलव्यस्तुतच्छ्रुत्वा वचोद्रोणस्यदारुणम् ॥ ५६ ॥ प्रतिज्ञामात्मनोरक्षन् सत्येचनियतःसदा । तथैवहृष्टवदनस्तथैवादीनमानसः ॥ ५७ ॥ छित्वाविचार्यतं प्रादाद्द्रोणायांगुष्ठमात्मनः । ततः शरन्तुनैषादिरंगुलीभिर्व्यकर्षत । नतथाचसशीघ्रोऽभूद्यथा पूर्वंनराधिप ॥ ५८ ॥ ततोऽर्जुनःप्रीतमना बभूवविगतज्वरः । द्रोणश्च सत्यवागासीन्नान्योऽभिभावितार्जुनम् ॥ ॥ ५९ ॥ द्रोणस्यतुतदाशिष्यौ गदायोग्यौबभूवतुः । दुर्योधनश्चभीमश्च सदासंरब्ध

कर तथा यह कहकर, कि मै आपका शिष्य हूँ, दोनों हाथजोड सामने खड़ा रहा । हे राजन् ! अनन्तर द्रोणने एकलव्य से कहा, कि हे वीर ! यदि तुम मेरे शिष्यहो, तो मुझको वेतन दो । एकलव्य ने सुनकर प्रसन्न चित्तसे कहा, कि भगवन् ! आज्ञाकीजिये, कि क्यादूं ? हे ब्रह्मज्ञों में उत्तम ! आपमेरे गुरु हैं, गुरुको मुझे कुछभी अदेय नहीं है । द्रोणाचार्य बोले, कि यदि तुम अवश्य देनेपर हो, तो मुझको दाहिने हाथका अंगूठा देदो । एकलव्य सदा सत्यपर खडाथा सो आचार्य द्रोणकी वह कठोर वाणी सुनने परभी चित्तमें दुःख न मानकर और मुखको प्रसन्नकर अपनी प्रतिज्ञा पूरीकर के विना विचार अपने दाहिने अंगूठे को काटकर द्रोणाचार्य को देदिया । हेनरेश ! अनन्तर निषादराज कुमार शेष उंलियों से बाण चलानेलगा पर पहिलेकी समान शीघ्रतासे काम नकरसका तब अर्ज्जुन प्रसन्न चित्त हुए, उनकी मनःपीडा जातीरही और आचार्य द्रोणने पहिले जैसे कहाथा, कि कोईभी अर्ज्जुन को परास्त नहीं करसकेगा, अब वह बात सची ठहरी । दुर्योधन और भीम द्रोण के यह दो शिष्य गदा युद्ध में दक्ष बने उनमेंसे एक दूसरेपर

for some time. Then, taking Arjun with him he went to the place where the Nishadh prince was. There he saw him shabbily dressed, with long hair, and dirty, constantly shooting arrows with his bow. He bowed down at the feet of Drona saying, "I am your pupil." He then stood respectfully with his hands joined together. Drona, then said, "Give me fee if you are my pupil." With joyful heart Eklavya replied, "Pray tell me, what am I to give yon. O best of Brahmans, you are my preceptor and can command all that I possess in the world." Dronacharya said, "If you are so ready to pay me give away the thumb of your right hand." Eklaya remained firm. Without any sign of displeasure and with a

मानसौ ॥ ६० ॥ अश्वत्थामारहस्येषु सर्वेष्वभ्यधिकोऽभवत् । तथापिपुरुषानन्यान् त्सारुकौयमजावुभौ ॥ ६१ ॥ युधिष्ठिरोरथिश्रेष्ठः सर्वत्रतुधनञ्जयः । प्रथितःसागरान्तायां रथयूथपयूथपः ॥ ६२ ॥ बुद्धियोगबलोत्साहैः सर्वास्त्रेषुचनिष्ठितः । अस्त्रेगुर्वनुरागेच विशिष्टोऽभवदर्जुनः ॥ ६३ ॥ तुल्येष्वस्त्रोपदेशेषु सौष्ठवेनचवीर्य्यवान् । एकःसर्वकुमाराणां बभूवातिरथोऽर्जुनः ॥ ६४ ॥ प्राणाधिकंभीमसेनं कृतविद्यंधनंजयम् । धार्त्तराष्ट्रादुरात्मानो नामृष्यन्तपरस्परम् ॥ ६५ ॥ तांस्तुसर्वान्समानीय सर्वविद्यास्त्रशिक्षितान । द्रोणःप्रहरणज्ञाने जिज्ञासुःपुरुषर्षभः ॥ ६६ ॥ कृत्रिमंभासमारोप्य वृक्षाग्रे शिल्पिभिःकृतम् । अविज्ञातंकुमाराणां लक्ष्यभूतमुपादिशत् ॥ ६७ ॥

सदा क्रोधित बनारहता था । अस्त्र चलाने के सब रहस्योंके जानने में अश्वत्थामा सबोंसे अच्छे निकले । नकुल और सहदेव खड्गका बेंटा पकडनेमें सबोंको नांघगए । युधिष्ठिर रथियोंमें प्रधान हुए । धनंजय हर बातमेंही श्रेष्ठ निकले थे बुद्धि, उपाय बल और उत्साह से सम्पूर्ण अस्त्र चलानेसें दक्ष और रथी दलके स्वामियोंके दलपति समुद्रसे लेकर सम्पूर्ण धरती में प्रसिद्ध हुए। विशेष अस्त्रों के चलाने और गुरुकी भक्ति करने के विषयोंमें उन के समान कोई दूसरा नहीं था । सबों पर बराबर अस्त्रोपदेश होनेपरभी वीर्य्यवन्त अर्ज्जुन सौष्टव अर्थात् स्थिति मुष्टि आदिकी शुद्धि से सब कुमारों में अद्वितीय अतिरथ करके गिने गये ! हे शत्रुनाशि ! दुरात्मा धृतराष्ट्र पुत्रगण बडे बली भीमसेन और विद्या सीखे हुए अर्जुन को देखकर द्वेष से जलने लगे । हे पुरुष श्रेष्ठ एक समय द्रोण ने अस्त्र सम्बन्धी सम्पूर्ण विद्यायों में शिक्षित उन सब शिष्यों को एकत्र कर यह जानना चाहा कि किस ने कैसी शिक्षा ली है । पहिले उन्हों ने कुमारों के नजानने में शिल्पकार से बन वाकर एक कृत्रिम गिद्ध पक्षीको निशाने के लिये एक बृक्ष पर रख छोडा था । आगे

smling face he cut his thumb asunder and presented it to Drona. The prinse of Nishadas then practiced with the remaining fingers. He could not of course shoot so swifty as he did formerly. Arjun was much pleased, for as his preceptor had formerly promised, there was none in the world who could conquer Arjun. Duryodhan and Bhim excelled other pupils of Drona in hurling the mace. They were rivals. In the use of weapons Ashwathama was superior to all. Nakul and Sahadev shone in handling the sword. Yudhishthir was first among charioteers. Dhananjaya (Arjun) was good in all subjects. In wisdom, strength, energy, dexterity in the use of weapons, and being a first class charioteer he was famous throughout the world. There was none his equal in the use of weapons and attendance on his preceptor. In spite of equal training Arjun excelled all

द्रोण उवाच ॥ शीघ्रं भवन्तःसर्वेऽपि धनूंष्यादायसर्वशः । भासमेतंसमुद्दिश्य तिष्ठध्वंसन्धितेषवः ॥ ६८ ॥ मद्वाक्यसमकालन्तु शिरोऽस्य विनिपात्यताम् । एकैकशो नियोक्ष्यामि तथाकुरुतपुत्रकाः ॥ ६९ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ततोयुधिष्ठिरं पूर्व मुवाचांगिरसांवरः । सन्धत्स्ववाणंदुर्द्धर्ष मद्वाक्यान्तेविमुञ्चतम् ॥ ७० ॥ ततोयुधिष्ठिरःपूर्वं धनुर्गृह्यपरन्तपः । तस्थौभासं समुद्दिश्य गुरुवाक्यप्रचोदितः ॥ ७१ ॥ ततो विततधन्वानं द्रोणस्तंकुरुनन्दनम् । समुहूर्त्तादुवाचेदं वचनंभरतर्षभ ॥ ७२ ॥ पश्यैनन्त्वंद्रुमाग्रस्थं भासंनरवरात्मज । पश्यामीत्येवमाचार्यं प्रत्युवाचयुधिष्ठिरः । स मुहूर्त्तादिव पुनर्द्रोणस्तं प्रत्यभाषत ॥ ७३ ॥ द्रोणउवाच ॥ अथ वृक्षमिमंमांवा भ्रातॄन् वापि प्रपश्यसि ॥ ७४ ॥ तमुवाच स कौन्तेयः पश्याम्येनं वनस्पतिम् । भवन्तञ्च तथा भ्रातॄन् भासञ्चेति पुनः पुनः ॥ ७५ ॥ तमुवाचाप सर्पेति

शिष्यों से बोले कि कुमारो ? तुम शीघ्र धनुष लेकर उस में वाण जोड़ करके उस देखे जातेहुए गिद्धपर निशाना किये रहो मेरीबातके सुनतेही उसपक्षीके सिरको काटनापड़ेगा ऐबेटे ? मैं एकरकर तुम सबोंमें जब जिसे जैसे नियोगकरूंगा, वह उसी क्षण वैसाही करे । वैशम्पायननेकहा कि अनन्तर अङ्गिरा वंशियों में श्रेष्ठ द्रोण पहिले युधिष्ठिर से बोले कि हे दुर्द्धर्ष वाणसे निशाना करलो मेरी बात पूरी होतेही उसको चलाना । आगे शत्रुतपने हारे युधिष्ठिर गुरु की आज्ञा से पहिले धन्वा लेकर पक्षी पर निशाना किये खडे रहे हे भरतश्रेष्ठ ! द्रोणनेधन्व' पर गुण चढाये हुए कुरुनन्दन युधिष्ठिर से क्षणभर पीछे कहा, कि राजकुमार ! उस वृक्ष पर के गिद्ध को देखते हो ! युधिष्ठिर बोले, कि हां देखता हूं । द्रोणने कुछकाल पीछे फिर कहा, कि तुम इस वृक्षको मुझको अथवा अपने भाइयों को देखते हो युधिष्ठिर बोले, कि हां मैं इस वृक्षको, आपको, भाइयों को और उस पक्षी को देखता हूं । आचार्य से वार वार यों पूछे जाने परभी उन्होंने वार२

his contemporaries in the precision of hand and patience. The ill-natured sons of Dhritrashtra envied the strength of Bhim and the dexterity of Arjun. Drona, once, held a tournament to fathom the merit of each of his pupils. Before this he had ordered an artificial vulture to be placed as target on a tree. He then ordered all the princes to take aim at the vulture and to cut off its head at his bidding. I shall require every individual of you by name to do some thing of the sort.," Drona then addressed Yudhishthir, saying, "Aim well, you will have to shoot at my word." Yudhishthir stood, ready with his bow to hit the target. Some time after Drona asked Yudhishthir, "Do you see the bird on the tree ?" Yudhishthir replied in the affirmative. Drona again asked Yudhishthir, "Do you see the tree, myself and

द्रोणोऽप्रीतमनाइव । नैतच्छक्यंत्वयावेद्धुं लक्ष्यमित्येवकुत्सयन् ॥७६॥ ततो दुर्यो धनादींस्तान्धार्त्तराष्ट्रान्महायशाः । तेनैव क्रमयोगेनजिज्ञासुः पर्यपृच्छत ॥ ७७ ॥ अन्यांश्चशिष्यान्भीमादीन् राज्ञश्चैवान्यदेशजान् । तथाचसर्वे तत्सर्वंपश्याम इतिकुत्सिताः ॥ ७८ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोधनञ्जयं द्रोणः स्मयमानोऽभ्यभाषत । त्वयेदानींप्रहर्त्तव्य मेतल्लक्ष्यं विलोक्यताम् ॥ ७९ ॥ मद्वाक्यसमकालंते मोक्तव्योऽत्र भवेच्छरः । वितत्यकार्मुकंपुत्र तिष्ठतावन्मुहूर्त्तकम् ॥ ८० ॥ एवमुक्तःसव्यसाची मंडलीकृतकार्मुकः । तस्थौभासंसमुद्दिश्य गुरुवाक्यप्रचोदितः ॥ ८१ ॥ मुहूर्त्तादिवतंद्रोण स्तथैवसमभाषत । पश्यस्येनं स्थितं भासं द्रुमं मामपि चार्जुन ॥ ८२ ॥ पश्याम्येकं भासमिति द्रोणंपार्थोऽभ्यभाषत । नतुवृक्षं भवन्तंवा पश्यामीति च भारत ॥ ८३ ॥ ततःप्रीतमनाद्रोणो मुहूर्त्तादिवतंपुनः । प्रत्यभाषतदुर्द्धर्षः पाण्डवानांमहारथम् ॥८४॥

वैसाही कहा । इससे द्रोण उन पर अप्रसन्नचित्त होकर लाञ्छन कर बोले कि तुम चले जाओ यह लक्ष्य विद्धकरना तुम्हारा काम नहीं है ।७६। अनन्तर अतियशवन्त द्रोणने सब शिष्योंकी शक्ति पूछनेके लिये दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे और भीम, नकुल, सहदेव तथा अन्य देशोंके राजकुमारोंसेभी उसी प्रकार वाणके निशाने सहित खडे रख रखकर पूछा पर सब यह उत्तर दे देकर कि वृक्षादि सब देखता हूं आचार्य से निन्दित हुए ।७८। अनन्तर द्रोण कुछ हंसकर धनंजयसे बोले कि बेटा ! अब तुमको यह लक्ष्य विद्धकरना पडेगा सो वह लक्ष्यको देखो मेरी बातके साथही साथ वाण चलाना । इस समय शरासनमें वाण जोडकर क्षणभर ठहरे रहो । सव्यसाची अर्जुन गुरुकी आज्ञा से शरासनमें वाण जोडकर पक्षी पर निशाना जमाकर खडे रहे । क्षणभर पीछे द्रोणने पहिलेके नाई कहा कि अर्जुन तुम उस वृक्षपर के पक्षीको वृक्षको और मुझको देखते हो ।८२। हेभारत ! पार्थने कहा कि केवल पक्षीहीको तो देखता हूं, वृक्षको वा आपको नहीं देखता हूं । अनन्तर

---

your brothers ? Yudhishthir replied, "Yes I see the tree, yourself, my brothers and the bird." The preceptor put him the same questions again and again with the same result. Drona was therefore dissatisfied with him and remarked reproachfully, "You may go away. It is beyond your power to hit the mark."76. To find out the capability of his pupils Drona examined them one by one -Duryodhan and the other sons of Dhritrashtra, then, Bhishm, Nakul and Sahdev and then the princes of other countries–and placed them in the same position of hitting the mark. But one and all replied to the queries of the preceptor in the same way and saw the tree, the bird and all at the same time.78.Last of all, Drona addressed Arjun smiling, "Now, my son, you will have to hit the mark. Look at the target. You will have to hit it as soon

भासंपश्यसियद्येनं तथाब्रूहि पुनर्वचः। शिरःपश्यामिभासस्य नगात्रमितिसोऽब्रवीत्
॥ ८५ ॥ अर्जुनेनैवमुक्तस्तु द्रोणोहृष्टतनूरुहः। मुञ्चस्वेत्यब्रवीत्पार्थं समुमोचाविचा
रयन॥ ८६ ॥ ततस्तस्यनगस्थस्य क्षुरेण निशितेनच। शिरउत्कृत्यतरसा पातया
मासपाण्डवः॥ ८७ ॥ तस्मिन्कर्मणिसंसिद्धे पर्य्यष्वजतपाण्डवम्। मेनेचद्रुपदंसंख्ये
सानुबन्धं पराजितम्॥ ८८ ॥ कस्यचित्त्वथकालस्य सशिष्योऽगिरसांवरः। जगाम
गंगामभितो मज्जितुंभरतर्षभ ॥ ८९ ॥ अवगाढमथो द्रोणं सलिलेसलिलेचरः।
ग्राहोजग्राहबलवाञ्जंघान्ते कालचोदितः ॥ ९० ॥ ससमर्थोऽपि मोक्षाय शिष्यान्
सर्वानचोदयत्। ग्राहंहत्वातुमोक्षयध्वं मामितित्वरयन्निव॥ ९१ ॥ तद्वाक्यसमकाल

दुर्द्धर्ष द्रोण प्रसन्न चित्त होकर क्षणभर पीछे पाण्डवों में महारथी उन अर्जुन से बोले, कि यदि तुम उस पक्षीही को देखते हो तो कहो उस को कैसा देखते हो। अर्जुन ने उत्तर दिया कि मैं उस पक्षीका सिर मात्र देखता हूं शरीर नहीं देखता॥ ८५ ॥ अर्जुन की यह बात सुनकर द्रोण ने अति हर्ष पूर्वक कहा कि अब वाण मारो। तब पाण्डु पुत्र अर्जुन ने कोई विचार न करके वाणको मारा, उस से उसी क्षण उस तेज अस्तुरे की नाई वाणसे वृक्षपर के पक्षी का सिर कटकर नीचे गिरा द्रोणाचार्य ने वह काम पूराहोते देखकर प्रसन्न चित्तसे फाल्गुनको गले से लगाया और मनही मनमें यह निश्चय किया, कि राजा द्रुपद सहायकोंके साथ युद्ध में हार जावेगा।८८।हे भरत कुल में श्रेष्ठ पुरुष! उस के कुछ दिन पीछे द्रोणने शिष्यों के संग गङ्गा नहाने जाकर ज्योंही जल में देह डुबायी, त्योंही एक बलवन्त घड़ियालने मानो कालकी प्रेरणासे उन की जांघ तक काटा। ९०। द्रोण स्वयं उस से बचने में समर्थ होने परभी सब शिष्यों से मानो उन की शीघ्रता देखने के लिये बोले, कि तुम तुरन्त इस जलचरको नष्ट कर

as I order. Now fix your arrow to the bow-string and wait a while. The truthful Arjun put his arrow to his bow and aimed at the bird. Some time after Drona put forth his usual question. 82. But Arjun replied, "I see only the bird. I neither see you, nor the tree." A minute after, Drona again asked. Arjun, " If you see the bird, then tell me, what does it resemble ? " Arjun replied, " I see only the head of the bird and not his body.' 85. Hearing this from Arjun, Drona was over joyed and ordered him to hit the mark. Arjun let fly the arrow without hesitation and the head of the bird dropped on the ground as if cut by a razor. Dronacharya embraced Arjun joyfully on accomplishing the deed and was certain of the defeat of king Drupad with allies. 88. Some days after this Drona with his disciples went to bathe in the river. As soon as he submerged his body a shark, as if propelled by death took him by the leg. 90. Drona, although he could save himself,

न्तु वीभत्सुर्निशितैःशरैः । अवार्यैः पंचभिर्ग्राहं मग्नमम्भस्यताडयत् ॥ ९२ ॥ इतरे त्वथसंमूढास्तत्रतत्रप्रपेदिरे । तन्तुदृष्ट्वाक्रियोपेतं द्रोणोऽमन्यतपाण्डवम् ॥ ९३ ॥ विशिष्टं सर्वशिष्येभ्यः प्रीतिमांश्चाभवत्तदा । सपार्थबाणैर्बहुधा खण्डशःपरिकल्पितः ॥ ॥ ९४ ॥ ग्राहःपञ्चत्वमापेदे जंघांत्यक्त्वामहात्मनः । अथाब्रवीन्महात्मानं भारद्वाजो महारथम् ॥ ९५ ॥ गृहाणेदंमहाबाहो विशिष्टमतिदुर्द्धरम् अस्त्रंब्रह्मशिरोनाम सप्रयोगनिवर्त्तनम् ॥ ९६ ॥ नचतेमानुषेष्वेतत् प्रयोक्तव्यंकथञ्चन जगद्विनिर्दहेदेतदल्पतेजसिपातितम् ॥ ९७ ॥ असामान्यमिदंतात लोकेष्वस्त्रं निगद्यते । तद्धारयेथाः प्रयतः शृणुचेदंवचोमम ॥ ९८ ॥ बाधेतामानुषःशत्रुर्यदित्वांवीरकश्चन । तद्वधायप्रयुञ्जीथास्तदस्त्रमिदमाहवे ॥ ९९ ॥ तथेतिसंप्रातिश्रुत्य बीभत्सुःप्रकृतांजलिः । जग्रा

के मेरी रक्षा करो ! गुरु द्रोण के यह बात कहते ही वीभत्सुने पांच न रोकने योग्य बाणों से जल में डूबे हुए जलचर को विद्ध किया दूसरे शिष्य जो जहां थे, वह वहीं मूढ वत खडे रहे तब आचार्य द्रोण अर्जुन को काम में उद्योगी देख कर सब शिष्यों से उन को श्रेष्ठ समझा और उनपर बडे प्रसन्नहुए ।९४। ग्राह महात्मा द्रोणकी जांघको छोडकर पार्थ के बाणों से टुकडे टुकडे होकर परलोक को सिधारा अनन्तर महामति भारद्वाज पुत्र अर्जुन से बोले, कि हे महाभुज ! ब्रह्मशिर नामक यह अति दुर्द्धर्ष श्रेष्ठ अस्त्र तुम को प्रयोग और उपसंहार सहित देताहूं लो ।९६। मनुष्यपर इसे कभी न मारना, क्योंकि यह स्वल्प तेजस्वी मानवपर चलाये जाने से जगमण्डलको भी जला सकेगा बेटा ! तीनों लोकोंमें यह अस्त्र असाधारण कर के प्रख्यात है, सो तुम इसे यत्न से रखना और मैं जो कहताहूं सुनो ।९८। हे वीर ! यदि कभी मनुष्यके विना कोई और शत्रु तुम्हारी विरुद्धता करे तो, युद्धस्थल में उसको वध करने के लिये वह अस्त्र चलाना वीभत्सु ने दोनों हाथ

called out to his disciples for help to test their dexterity. Arjun at-once wounded the equatic monster with five irresistible arrows. The others remained standing like fools. Dronacharya then loved Arjun above all for his attention to work.94.The shark wounded by Arjun's arrows at once left the hold of Drona's leg and died. The wise preceptor then said to Arjun, " I give you this good weapon called Brahmshira with the mode of using it.96. Donot use it on a man, for, being hurled at a man of small glory it will burn the world. It is known as an extraordinary weapon throughout the three worlds. Therefore you must take care of it and hear what I say,(98)"If an enemy, other than man, encounter you, then you may hurl it at him." Arjun bowed down to the preceptor and received the weapon. The preceptor again said to him, " No

हपरमास्त्रं तदाहचैनंपुनर्गुरुः ॥ १०० ॥ भवितात्वत्समोनान्यः पुमांल्लोकेधनुर्द्धरः ।
अजेयः सर्वशत्रूणां कीर्त्तिमांश्चभविष्यसि १०१ ॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि द्रोणशिष्यपरीक्षायां
त्रिंशत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १३४ ॥

वैशम्पायन उवाच । कृतास्त्रान् धार्त्तराष्ट्रांश्च पाण्डुपुत्रांश्च भारत । दृष्ट्वाद्रोणो-
ऽब्रवीद्राजन् धृतराष्ट्रंजनेश्वरम् ॥ १ ॥ कृपस्यसोमदत्तस्य वाह्लीकस्यचधीमतः ।
गाङ्गेयस्यचसान्निध्ये व्यासस्यविदुरस्यच ॥ २ ॥ राजन्संप्राप्तविद्यास्ते कुमाराः
कुरुसत्तम । तेदर्शयेयुःस्वांशिक्षां राजन्ननुमतेतव । ततोऽब्रवीन्महाराजः प्रहृष्टेनान्तरा
त्मना ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । भारद्वाजमहत्कर्म कृतंतेद्विजसत्तम । यदानुमन्यसे
कालं यस्मिन्देशेयथायथा । तथातथाविधानाय स्वयमाज्ञापयस्वमाम् ॥ ४ ॥ स्पृहया

जोड़ के उस बातको मानकर उस परमास्त्र को ले लिया । तब गुरुने फिर उनसे कहा,
कि इस भूमण्डल भर में कोई जन तुम्हारे समान चापधारी नहीं होगा, तुम शत्रुओं से
जीते जाने के अयोग्य और यशवन्त होकर रहोगे ।

अध्याय ॥ १३५ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् ! द्रोणाचार्य्य धृतराष्ट्र के पुत्रों और पाण्डवोंको
अस्त्रशिक्षा में दक्ष देख कर कृप, सोमदत्त, वाह्लीक व्यास, विदुर और धीमान् भीष्मके
सामने राजा धृतराष्ट्र से बोले, कि हे कुरुकुल के श्रेष्ठ महाराज आप के कुमारों ने
विद्या पढ़ली है, अब आज्ञाहोतो वे अपनी शिक्षा का परिचय दें इस के अनन्तर महा-
राज प्रसन्न चित्त से बोले ।३। कि हे ब्राह्मण कुल में श्रेष्ठ भारद्वाज ! आप से अति महत्
कार्यहुआ है अब आप अस्त्र परीक्षा के लिये जो स्थान ठहरावें और जहां जिस प्रकार का

---

archer in the world will be your equal. You will be unconquerable by all."

CHAPTER CXXXV

Vaishampayan said that Dronacharya having seen the sons of Dhritrashtra and the Pandavas, well up in the science of arms, said to king Dhritrashtra in the presence of Kripa, Somdatta, Valhik, Vyas, Vidur and the wise Bhishm, "O best of the Kaurava kings your children have finished their studies. They can now be examined with your permission." The king replied joyfully, (3) "O best of Brahmans you have performed a great deed. You may fix a place for the test and manner of its holding. I shall arrange it accordingly. The experts in the art will eagerly wait to witness it although on account of my bli. dness I shall not be able to do so. 5.

म्यद्यानिर्वेदात् पुरुषाणांसचक्षुषाम् । अस्त्रहेतोःपराक्रान्तान्ये मेद्रक्ष्यन्तिपुत्रकान् ॥५॥
क्षत्तर्यद्गुरुराचार्य्यो ब्रवीतिकुरुतत्तथा । नहीदृशंप्रियंमन्ये भवितार्धर्मवत्सल ॥ ६ ॥
ततोराजानमामन्त्र्य निर्गतोविदुरोवहिः । भारद्वाजोमहाप्राज्ञो मापयामासमेदिनीम्
॥ ७ ॥ समामवृक्षां निर्गुल्मामुदक्प्रस्रवणान्विताम् । तस्यांभूमौवलिंचक्रे तिथौनक्षत्र
पूजिते ॥ ८ ॥ अवघुष्टेसमाजेच तदर्थंवदतांवरः । रङ्गभूमौसुविपुलं शास्त्रदृष्टंयथा-
विधि ॥ ९ ॥ प्रेक्षागारंसुविहितं चक्रुस्तेतस्यशिल्पिनः । राज्ञःसर्वायुधोपेतं स्त्रीणा
श्चैवनरर्षभ ॥१०॥ मञ्चांश्च कारयामासुस्तत्र जानपदाजनाः विपुलानुच्छ्रयोपेतान्
शिविकाश्च महाधनाः ॥ ११ ॥ तस्मिंस्ततोऽहनिप्राप्ते राजाससचिवस्तदा । भीष्मं
प्रमुखतःकृत्वाकृपं चाचार्यसत्तमम् ॥१२॥ मुक्ताजालपरिक्षिप्तं वैदूर्यमणिशोभितम् ।

उसका निर्वाह होना निश्चय करें उस के प्रबन्ध की आज्ञा मुझसे कीजिये । जो अस्त्र चलाने में पराक्रमी लोग मेरे इन पुत्रों को देखेंगे, आज मुझमें आंखोंके बिना, देखने की अक्षमता हेतु उन लोगोंकी चाह उभर रहीहै।५।हे विदुर! पूजनीय आचार्य जैसा कहें वह सब करो हे धर्मप्रेमी मैं समझताहूं कि इससे अधिक मेरेलिये कोई कार्य प्रिय नहीं होगा अनन्तर राजा से सम्भाषण कर के विदुर के निकलने पर महाप्राज्ञ भारद्वाज ने वृक्ष गुल्मादियों से रहित जल के सोते सहित, समभूमि देख कर उसको मापा अनन्तर समाज के सब लोगों को सूचना के द्वारा बुलाये जानेपर बोलने में चतुर आचार्य अच्छे नक्षत्र युक्त शुभ तिथि में शास्त्रोक्त विधि पूर्वक उस स्थान को तयार किया । हे नराधिप ! उनके नियुक्त कियेहुए शिल्प करनेवालों ने उस अखाडे में राजा के और नारियों के लिये शास्त्रा नुसार अच्छे सब प्रकारके अस्त्रोंसे सजे सजाये और लम्बे चौडे देखने के घर बनाये ॥ १० ॥ और नगरवासी धनियों ने भी वहां ऊंची और बडी बडी वेदी तथा मचान बनवारक्खीं अनन्तर कुमारों के विक्रम दिखाने के निश्चय

Arrange all (to Vidur) as the honourable preceptor directs. I think there is nothing more desirable to me than this" After speaking with the king, Vidur came out and the wise Drona measured a piece of level ground destitute of trees and containing a spring of water. Notice of the date and place was given to the people and the wise preceptor opened the work on an auspicious day. Artisans were employed to build spacious houses well furnished with all sorts of weapons for the king and the queens.10.The wealthy citizens made high galaries to witness the scene. On the appointed day, king Dhritrashtra with his ministers, followed Bhishm and Kripacharya and entered the house well decked with strings of pearls, jewels and gold.13.The fortunate Gandhari and Kunti also

शातकुम्भमयंदिव्यं प्रेक्षागारमुपागमत् ॥ १३ ॥ गान्धारीचमहाभागा कुन्तीचजय-
ताम्वर । स्त्रियश्चराज्ञःसर्वास्ताः सप्रेष्याःसपरिच्छदाः ॥ १४ ॥ हर्षादारुरुहुर्मञ्चा
न्मेरुंदेवस्त्रियोयथा । ब्राह्मणक्षत्रियाद्यञ्च चातुर्वर्ण्यंपुराद्द्रुतम् ॥ १५ ॥ दर्शनेप्सु
समभ्यागात् कुमाराणांकृतास्त्रताम् । क्षणेनैकस्थतांतत्र दर्शनेप्सुजगामह ॥ १६ ॥
प्रवादितैश्चवादित्रैर्जनकौतूहलेनच । महार्णवइवक्षुब्धः ससमाजःसोऽभवत्तदा ॥१७॥
ततःशुक्लाम्बरधरः शुक्लयज्ञोपवीतवान् । शुक्लकेशःसितश्मश्रुः शुक्लमाल्यानुलेपनः
॥ १८ ॥ रङ्गमध्यंतदाचार्य्यः सपुत्रःप्रविवेशह । नभोजलधरैर्हीनं सांगारकइवांशु-
मान् ॥ १९ ॥ सयथासमयंचक्रे बलिंबलवतांवरः । ब्राह्मणांस्तुसुमन्त्रज्ञान् कारया-
मासमंगलम् ॥ २० ॥ सुखपुण्याहघोषस्य पुण्यस्यसमनन्तरम् । विविशुर्विविधंगृह्य

किये हुए दिन के आजाने पर राजा धृतराष्ट्र मन्त्रियों के साथ भीष्म तथा आचार्य श्रेष्ठ कृपको आगे कर के चले और स्थान २ में मोतियों की लड़ी लटकाये और वैदूर्य मणियों से सजे सजाये सुवर्णके सुन्दर दर्शन भवन में गये। १३। और वडी भाग्यवती गान्धारी और कुन्तीभी दर्शन गृह में गयीं दूसरी राजरानियां दासियों के साथ अपूर्ववस्त्र पहिरे आनन्द की उमंग में वेदियों पर जा बैठीं उस समय जान पडने लगीं, कि मानों देवोंकी स्त्रियां सुमेरु की चोटीपर चढ़ी हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारों वर्ण के लोग कुमारोंकी अस्त्र विद्याकी योग्यता देखने के लिये नगर से निकलकर बड़े वेगसे वहां देखने की बडी चाह सेक्षण भर में एकत्रितहुए। तब सम्पूर्ण रूपसे बजते हुए बाजों के शब्द और लोगोंके आश्चर्य पूरित कलरव से समाज महासमुद्र के समान लहरानेलगा। ।१७। अनन्तर शुलवस्त्र, शुक्ल जनेऊ शुक्ल केश, शुक्ल दाढ़ी शुक्ल माला और शुक्ल चन्दन से शोभायमान तेजवान् आचार्य द्रोण अपने पुत्रके साथ अखाड़े में आये। उस समय जान पड़ा किमानों मङ्गलग्रहके साथ प्रकाशमान देव वादलरहित आकाशको जारहे हैं। श्रेष्ठ महाबली आचार्यने उसस्थान में उचित समय में देवपूजन किया और मन्त्र जाननेवाले ब्राह्मणों से

entered the houses from which they were to witness the scene. Other women of the king's household dressed in rich clothes and accompanied by maid servants sat joyfully on the raised seats and looked like goddesses on mount Sumeru. People of the four classes assembled there in great haste to see the tournament. The whole arena with its sounds of musical instruments and the mingled noise of human beings resembled the Ocean. 17. Drona with his white clothes, white sacred thread, white hair, white necklace and white sandal came there accompanied by his son. He looked like a glorious god going through the cloudless sky. The brave preceptor propitiated the gods and caused the learned Brahmans

शस्त्रोपकरणंनराः ॥ २१ ॥ ततोबद्धांगुलित्राणा बद्धकक्षाणहाग्थाः । बद्धतूणाःसध-
नुषो विविशुर्भरतर्षभाः ॥ २२ ॥ अनुज्येष्ठन्तुंतनत्र युधिष्ठिरपुरोगमाः । चक्रुरस्त्रंम-
हावीर्य्याः कुमाराःपरमाद्भुतम् ॥ २३ ॥ केचिच्छराक्षेपभयाच्छिरांस्यवननामिरे । म-
नुजाह्णमपरे वीक्षांचक्रुःसुविस्मिताः ॥ २४ ॥ तेस्मलक्ष्याणि विभिदुर्बाणैर्नामांकशो-
भितैः । विविधैर्लाघवोत्सृष्टैरुह्यन्तो वाजिभिर्द्रुतम् ॥ २५ ॥ तत्कुमारबलंतत्र गृहीत
शरकार्मुकम् । गन्धर्वनगराकारं प्रेक्ष्यतेविस्मिताभवन् ॥ २६ ॥ सहसाचुक्रुशुश्चान्ये
नराःशतसहस्रशः । विस्मयोत्फुल्लनयनाः साधुसाध्वितिभारत ॥ २७ ॥ कृत्वाधनु-
षितेमार्गान् रथचर्य्यासुचासकृत् । गजपृष्ठेऽश्वपृष्ठेच नियुद्धेचमहाबलाः ॥ २८ ॥ गृ-
हीतखड्गचर्माणस्ततोभूयः प्रहारिणः । त्सरुमार्गान् यथोद्दिष्टांश्चेरुः सर्वासुभूमिषु ॥

मंगलाचरण करवाया अनन्तर पवित्र पुण्य दिनकी कथा कही जानेपर नियुक्तकियेहुए लोग नाना अस्त्र और उन के उपकरण ले लेकर अखाडेमें जाघुसे। तब युधिष्ठिरआदि भारत वासियोंमें श्रेष्ठ महारथी और वीर्य्यवन्त कुमारगण कमर कसके उंगली रक्षक तूणीर और धनुषबाण धारणकर वहां प्रविष्ट हुए वे बड़े छोटेके क्रम से अति आश्चर्य अस्त्रविद्या प्रगट करनेलगे।२३।तब देखनेवालों में कोई२ तो बाणोंके गिरनेके भयसे सिर नीचेकिये रहे और कोई २ बिनाभय आश्चर्य चित्तसे देखनेलगे। कुमारगण शीघ्र लेजानेवाले घोडों पर नामांक से शोभायमान नाना बाणोंको शीघ्रतापूर्वक चलाके लक्ष्य वेधने लगे तब दे-खने वालोंने धनुषबाण लिये हुए कुमारों को गन्धर्व नगर के समान वह आश्चर्य लीला देखकर अचरजमाना।२६।हेभारत!वहांके सैकडों सहस्रों मनुष्य विस्मयसे प्रसन्ननेत्र होकर एकाएक चिल्लाकर "साधु,साधु" ऐसी ध्वनि कर उठे महाबली कुमारगण शरासन में रथ चलाने में हाथी घोडेपर चढने और हाथावांही में नाना कौशक बार बार दिखाकर अन्त में खड्ग चर्म लेकर फिर मारपीट में लगकर निशाने के अनुसार नाना प्रकार से असिका

to chant the hymns. After the completion of these holy rites, those who were appointed for the purpose entered the arena with the necessary arms and equipage. Yudhishthir and other princes of the house of Bharat equipped with waist bands, finger guards quivers, bow and arrow entered the lists and began to show their wonderful feats of skill in arms in the order of their age. 23. Some of the lookers on lowered their heads fearing the fall of arrows. Others looked on fearlessly. Some of them showed their skill in hitting the mark by their arrows from swiftly running horses. The lookers on wondered at the princes armed with bow and arrow. It looked like a city of Gandarvas.26.Thousands of the people raised the cry of well-done. The brave princes, having shown their dexterity in riding on horses and elephants and in fighting with hands and arms, sword and shield, began to strut in the arena. The audience sawt he beauty

॥ २९ ॥ लाघवंसौष्ठवंशोभां स्थिरत्वंदृढमुष्टिताम् । ददृशुस्तत्रसर्वेषां प्रयोगंखड्ग-
चर्मणोः ॥ ३० ॥ अथतौनित्यसंहृष्टौ सुयोधनवृकोदरौ । अवतीर्णौ गदाहस्तावेकशृं
गाविवाचलौ ॥ ३१ ॥ बद्धकक्षौमहाबाहू पौरुषेपर्य्यवस्थितौ । बृंहन्तौवाशिताहेतोः
समदाविवकुञ्जरौ ॥ ३२ ॥ तौप्रदक्षिणसव्यानि मण्डलानिमहाबलौ । चेरतुर्निर्मल-
गदौ समदाविवकुंजरौ ॥ ३३ ॥ विदुरोधृतराष्ट्राय गांधार्य्याःपाण्डवारणिः । न्यवे
दयतांतत्सर्वं कुमाराणांविचेष्टितम ॥ ३४ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यस्त्रदर्शने पंचत्रिंश-
दधिकशततोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

वैशम्पायन उवाच । कुरुराजेहिरंगस्थे भीमेचबलिनांवरे । पक्षपातकृतस्नेहः
सद्विधेवाभवज्जनः ॥ १ ॥ हावीरकुरुराजेति हाभीमइतिजल्पताम् । पुरुषाणांसुवि-

चलाना दिखा करके अखाडेमें घूमने लगे देखने वाले उन वीर कुमारों में असिचर्म्म प्र-
योगमें तेज हाथ कौशल धीरज मूठीकी दृढता और अपूर्वक शोभा देखने लगे अनन्तर
सदाके अहङ्कारी दुर्योधन और वृकोदर गदा हाथ में लेकर एकही चोटीवाले पहाडों के
समान अखाड में उतरे एक हथनी के लोभसे दो उन्मत्त हाथी जिस प्रकार चिल्लाते रहते
हैं उनके समान बडाई चाहने वाले वे दोमहाभुज वीर कमर कसकर गर्जने लगे साफ
गदा लिये हुए मदमत्त हास्तियों के समान महाबली सुयोधन और भीम दहिनी पलट और
बांयी पलटके अनुसार गोलाकार होकर अखाडेमें घूमने लगे तब विदुरने धृतराष्ट्रसे और
कुन्तीने गान्धारी के निकट कुमारोंसे कियेजातेहुए सब वृतांतको कह सुनाया ॥ ३४ ॥

अध्याय १३६ ॥

श्रीवैशम्पायनजी ने कहा । कि कुरुराज दुर्य्योधन और महाबली भीमके अखाडे
में उतरने पर देखने वाले पक्षपातसे स्नेह कर दो दलोंमें बंटगये कोई तो कहने लगे कि

and dexterity of the princes in the use of pointed weapons, and the hardness of their blows. The ever proud Duryodhan and Bhim, mace in hand, came into the arena like two mountain peaks, as two male elephants shriek for a female elephant so the two ambitious heroes roared there. Like two mad elephants the valliant Suyodhan and Bhim moved right and left and in circle. The events of the day were reported to Dhritrashtra by Vidur and to Gandhari by Kunti.34.

CHAPTER CXXXVI

Vaishampayan said that on the arrival of Bhim and Duryodhan the lookers on were divided into two parties on account of prejudice. Some of them eulogised the bravery of the Kaurav

पुलाः प्रणादाःसहस्रोत्थिताः ॥ २ ॥ ततःक्षुब्धार्णवनिभं रंगमालोक्यबुद्धिमान् । भारद्वाजःप्रियं पुत्रमश्वत्थामानमब्रवीत् ॥ ३ ॥ द्रोण उवाच । वारयैतौमहावीर्यौ कृतयोग्यावुभावपि । माभूद्रङ्गप्रकोपोऽयं भीमदुर्योधनोद्भवः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तावुद्यतगदौ गुरुपुत्रेणवारितौ । युगान्तानिलसंक्षुब्धौ महावेलाविवार्णवौ ॥ ५ ॥ ततोरंगांगणगतो द्रोणोवचनमब्रवीत् । निवार्य्यवादित्रगणं महामेघनिभस्वनम् ॥ ६ ॥ योमेपुत्रात् प्रियतरः सर्वशस्त्रविशारदः । ऐन्द्रिरिन्द्रानुजसमः स पार्थोदृश्यतामिति ॥ ७ ॥ आचार्य्यवचनेनाथ कृतस्वस्त्ययनोयुवा । बद्धगोधांगुलित्राणः पूर्णतूणःसकार्मुकः ॥ ८ ॥ कांचनंकवचंबिभ्रत् प्रत्यदृश्यतफाल्गुनः । सार्कः सेन्द्रायुधतडित् ससन्ध्यइवतोयदः ॥ ९ ॥ ततःसर्वस्यरंगस्य समुत्पिञ्जलकोऽभवत् । प्रावाद्यन्तचवाद्यानि सशंखानिसमन्ततः ॥ १० ॥ एषकुन्तीसुतःश्रीमानेष मध्यम

कुरुराज कैसे अच्छे वीर हैं ! और दूसरे कहने लगे कि भीम कैसे अच्छे वीर हैं ! चारों ओरसे इसी बातका घोर कोलाहल मच उठा उसके अनन्तर बुद्धिमान भारद्वाज हिलोडते हुए समुद्रकी भांति उस अखाडेको देखकर प्रिय पुत्र अश्वत्थामासे बोले कि यह भीम और दुर्योधन दोनो वडे वीर्य्यवन्त और युद्ध विद्यामें तेज हैं सो इनसे कहदो कि अखाडेमें इनमें क्रोध न उपजे अनन्तर प्रलयकालकी हवासे लहराते हुए ऊंचेतटवाले समुद्रके समान उन्मत्त गदा उठायेहुए भीम और सुयोधन गुरु कुमारसे रोकेगये।५।तब आचार्य द्रोण आखाडेमें जाकर घने वादल की गडगडाहट के समान वाजोंकी ध्वनिको रोककर बोले कि उपेंद्रके सदृश सर्व शास्त्रों में प्रधान और मेरे पुत्रसेभी प्यारे वह इंद्रपुत्र अब दिखाई देवें। तब आचार्य्य की आज्ञा से तरुणअवस्था के फाल्गुन मंगलाचरण करनेके पश्चात् गुणकी चोट रोकनेवाली चमडेकी पट्टी और उंगली रक्षक कस के वाणसे पूरित तूण, धनुष और सोनेके कवच पहरकर मानों सूर्यप्रकाश के समान जलतेहुए और इन्द्र धनु तथा बिजलीकी चमककीभांति सुहातेहुए सन्ध्याकाल के बादलके सदृश दीखपडे ९। उससे अखाडेकी चारों ओरसे आनन्दकी ध्वनियां उठने लगीं और शंख तथा अनेकबाजे

prince' others voted for Bhim. There was an uproar of discussion on all sides. Then, the wise Bharadwaj, seeing the whole audience waver like an Ocean current asked his dear son Ashwathama to inform the valiant Bhim and Duryodhan not to quarrel in anger with each other. So the two mace bearers, Bhim and Suyodhan, mad like two Ocean waves agitated by storm, were checked by the preceptors son.5. Then the preceptor Drona checking the noise of the musical instruments rumbling like dense clouds, called on Arjun to appear calling him Upendra like and dearer than his own son. By the permission of preceptor, the youthful Arjun, after chanting hymns, was seen there equipped with leather finger guard and belt, quiver full of arrows, bow and golden armour, shining

पाण्डवः । एषपुत्रोमहेन्द्रस्य कुरूणामेषरक्षिता ॥११॥ एषोऽस्त्रविदुषांश्रेष्ठ एषधर्मभृतांवरः । एषशीलवतांचापि शीलज्ञाननिधिःपरः ॥ १२॥ इत्येवंतुमुलावाचः शुश्रुवुः प्रेक्षकेरिताः । कुन्त्याःप्रस्नवसंयुक्तैरस्त्रैः क्लिन्नमुरोऽभवत् ॥ १३ ॥ तेनशब्देनमहता पूर्णश्रुतिरथाब्रवीत् । धृतराष्ट्रोनरश्रेष्ठो विदुरंहृष्टमानसः ॥ १४ ॥ क्षत्तःक्षुब्धार्णवनिभः किमेषसुमहास्वनः । सहसैवोत्थितोरंगे भिन्दन्निवनभस्तलम् ॥ १५ ॥ विदुर उवाच । एषपार्थोमहाराज फाल्गुनःपाण्डुनन्दनः । अवतीर्णः सकवचस्तत्रैषसुमहास्वनः ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रउवाच । धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि रक्षितोऽस्मिमहामते । पृथारणिसमुद्भूतैस्त्रिभिः पाण्डववह्निभिः ॥ १७ ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्मिन्प्रमुदिते रंगे कथंचित्प्रत्युपस्थिते । दर्शयामास बीभत्सुराचार्य्यायास्त्रलाघवम् ॥ १८ ॥ आग्नेयेनासृजद्वह्निं वारुणेनासृजत्पयः । वायव्येनासृजद्वायुं पार्जन्येनासृजद्घनान् ।१९।

बजने लगे । यह श्रीमान् पुरुष कुन्ती के पुत्र हैं, यह मझले पाण्डवहैं, यही महेंद्रके पुत्र हैं यही कुरुओंकी रक्षा करनेवाले हैं, यही अस्त्र धरनेवालों में श्रेष्ठहैं, यही धार्मिकोंमें प्रधान हैं, यही सुशीलों की शीलता और ज्ञान के परम आदर्शरूपी हुएहैं,—दर्शकोंकी ऐसी अनेक बातें सुनकर कुन्तीकी स्तनदुग्ध तथा आंसुसे छातीभीग गयी उनसब बडे भारी सब्दोंसे नरोंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र के कान भर जाने से उन्होंने प्रसन्न चित्त होकर विदुरसे पूछा, कि हे क्षत्त ! अखाडेमें हिलोडेहुए समुद्र की ध्वनिकी भांति यह महाशब्द मानोंआकाश फाड के ही क्यों एकायकउठा ।१५। विदुर बोले, कि महाराज ! यह पांडुनन्दन पार्थ अर्जुन कवच पहरकर अखाडेमें उतरे हैं, उससे ही ऐसा घोर कोलाहल मचरहा है । धृतराष्ट्र बोले, कि हेमहामते ! कुन्ती रूपी तीन अग्नियोंसे मैं धन्य, कृपायुक्त और रक्षित हुआ। श्री वैशम्पायन बोले, किअखाडेके उन हर्षयुक्त लोगोंके उत्साहित होकरकुछ शान्तहोजाने पर अर्जुन आचार्य्यको अस्त्र चलानेकी दक्षता दिखाने।१८।अग्न्यस्त्रसे अग्नि, वारुणास्त्रसे

like the sun, beautiful like the rainbow and lightning. He entered like evening clouds. 9. From all sides were heard the sounds of joy and conchs. People said, " This is the son of Kunti, the middle one of the Pandavas, the son of Mahendra, the protector of Kurus, the best of armed men, the chief of the virtuous, good natured and wise." Hearing such remarks of the audience Kunti's breast became wet with the coming out of milk and the falling of tears. Dhritrashtra heard the great noise and asked Vidur the reason of the great noise like the Ocean's roar.15.Vidur replied that Arjun thePandav had come into the arena with his armour on and was the cause of that uproor.Dhritrashtra said, " O wise Vidur Iam happy and well protected by the three sons of Kunti like fire." The preceptorloving Arjun skilfuly cut by his arrows soft things like

भौमेनप्राविशद्भूमिं पार्वतेनासृजद्गिरीन् । अन्तर्धानेनचास्त्रेण पुनरन्तर्हितोऽभवत् २०
क्षणात्प्रांशुःक्षणाद्ध्रस्वः क्षणाच्चरथधूर्गतः । क्षणेनरथमध्यस्थः क्षणेनावतरन्महीम् ।
॥ २१ ॥ सुकुमारंचसूक्ष्मञ्च गुरुचापिगुरुप्रियः । सौष्ठवेनाभिसंक्षिप्तः सोऽविध्यद्विः
विधैःशरैः ॥ २२ ॥ भ्रमतश्चवराहस्य लोहस्यप्रमुखेसमम् । पंचवाणानसंसक्तान् सं-
मुमोचैकवाणवत् ॥ २३ ॥ गव्येविषाणकोषेच चलेरज्ज्ववलम्बिनि । निचखानमहा-
वीर्य्यःशायकानेकविंशतिम् ॥ २४ ॥ इत्येवमादिसुमहत्खड्गे धनुषिचानघ । गदायां
शस्त्रकुशलो मण्डलानिव्यदर्शयत् ॥ २५ । ततःसमाप्तभूयिष्ठे तस्मिन्कर्मणिभारत ।
मन्दीभूतेसमाजेच वादित्रस्यचनिःस्वने ॥ २६ ॥ द्वारदेशात्समुद्भूतो माहात्म्यबलसू
चकः । वज्रनिष्पेषसदृशः शुश्रुवेभुजनिस्वनः ॥ २७ ॥ दीर्य्यन्तेकिंनुगिरयः किंस्वि
द्भूमिर्विदीर्य्यते । किंस्विदापूर्य्यतेव्योम जलधाराघनैर्घनैः ॥२८॥ रङ्गस्यैवंमतिरभूत्

जल, वायव्यास्त्र से वायु और पार्ज्जन्यास्त्र से बादल रचा और भौमास्त्र से धरतीमें घुस
गये ; पार्व्वतास्त्रसे पर्व्वत बना और अन्तर्द्धान अस्त्र से अन्तर्हित होगये । वह क्षणभरमें
दीर्घ, क्षणभर में ह्रस्व, क्षणभर में रथ के धुरें के निकट क्षणभर में रथ के भीतर और
क्षणभरमें धरती पर उतरनेलगे गुरु प्रेमी अर्जुन बाणों से फूल आदि वस्तु, वाणाग्र आदि
सूक्ष्म वस्तु और धातु पत्थर आदि भारी वस्तु कौशल से विद्ध करने लगे उन्हों ने चलते
हुए लोहे के बने सुअर के मुँह में एक बाणकी भांति पाँच बाणों को जोडकर एक साथ
चलाया उस महावीर ने रस्सी पर लटके हुए गौके सींगमें इक्कीस बाणमारे हे अनघ !
शास्त्रमें पंडित कुंती पुत्र इसप्रकार धनुर्विद्या तलवारऔर गदामें योग्यता दिखलानेलगा २५
हे भारत ! वोह कृत्रिमयुद्ध अन्तहोने परथा और लोगोंका कोलाहल और वाजों की ध्वनि
घट गई थी ऐसे समय में द्वारदेश से उठती हुई शूरता और वीरता सूचकवज्र के गर्जने
के समान ललकार सुनी थी हे नरनाथ ! तब अखाडे के लोग शोचने लगे कि यह क्या
है कदाचित पहाडों की पंक्ती टूट रही है अथवा घने जलभरे बादल आकाश में छारहे हैं

---

flowers, fine things like the point of an arrow and heavy things like stones and metals. He hit five arrows, like one, into the mouth of an artificial iron boar which was being moved. The brave man then hit a cow's horn dangling by a rope with twenty one arrows. He then showed his skill in the use of sword and mace. 25. The tournament was now drawing towards its close and the sounds of musical instruments and the noise of men had abated when a daunting voice like that of thunder, expressive of bravery, was heard from the gate. The audience were amazed. They began to think that it was either the sound of falling of a chain of mountains or, the rumbling of ground or, the thundering of clouds. All eyes were turned towards the gate. Dronacharya stood up surrounded by the five Pandavas and

क्षणेनवसुधाधिप । द्वारञ्चाभिमुखाःसर्वेबभूवुः प्रेक्षकास्तदा ॥ २९ ॥पञ्चभिर्भ्रातृभिः
पार्थैद्रोणःपरिवृतोवभौ । पञ्चतारेणसंयुक्तः सावित्रेणेवचन्द्रमाः ॥३०॥ अश्वत्थाम्ना
चसहितं भ्रातणांशतमूर्जितम् । दुर्योधनममित्रघ्नमुत्थितंपर्यवारयत् ॥ ३१ ॥ सतै-
स्तदाभ्रातृभिरुद्यतायुधैर्गदाग्रपाणिः समवास्थितैर्वृतः । वभौ यथा दानवसंक्षयेपुरा
पुरन्दरो देवगणैः समावृतः ॥ ३२ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यस्त्रदर्शनेषट्त्रिंश-
दधिकशतोऽध्यायः ॥ १३६ ॥

वैशम्पायन उवाच । दत्तेऽवकाशे पुरुषैर्विस्मयोत्फुल्ललोचनैः । विवेशरङ्ग
विस्तीर्णं कर्णःपरपुरञ्जयः ॥ १ ॥ सहजंकवचंविभ्रत् कुण्डलोद्योतिताननः । सधनु
र्बद्धनिस्त्रिंशः पादचारीवपर्वतः ॥ २ ॥ कन्यागर्भःपृथुयशाः पृथायाःपृथुलोचनः ।
तीक्ष्णांशोर्भास्करस्यांशः कर्णोऽरिगणसूदनः ॥ ३ ॥ सिंहर्षभगजेन्द्राणां वलवीर्य-

देखने वाले सब ऐसेही संदेहसे उससमय द्वारकी ओरमुँह फेरकर देखनेलगे तबपंचतारा
के समान हस्त नक्षत्र युक्त चन्द्रमाकी भाँति आचार्य द्रोण युधिष्ठिर आदि पांच भाइयों
के वीच सुहाने लगे शत्रुनाशी दुर्योधन के उठखडेहोने पर उनके उत्साहीसौ भाई अश्व
त्थामाके साथ उनको घेरकरखडे हुए पूर्वकाल में दानवों को नष्ट करने के लिये जिस
प्रकार देवराजदेवों से घेरेगये थे वैसेही उससमय केवल गदा धारी दुर्योधन अस्त्र शस्त्रोंसे
सुशोभित भाइयों से घेरा जाकर शोभा पाने लगा ॥ ३२ ॥

अध्याय १३७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर देखने वालों के विस्मय और प्रसन्न नेत्रों से प्रवेश का स्थान
देने पर शत्रुओं के नगर को जय करने वाला कर्ण वडेभारी अखाडे में प्रविष्ट हुआ वोह
संग में जन्मे हुए कवचको पहिनेथा उसकामुँह स्वाभाविक कुंडलोंसे सुशोभितथा उसने वडे
प्रकाश युक्त भास्करके अंश से पृथाकी कन्यादशामें जन्मलियाथा उसका वीर्य और पराक्रम

looked like the moon surrounded by five stars. Duryodhan stood up and was surrounded by his hundred brothers and Aswathma. Duryodhan, armed with mace, and surrounded by his hundred armed brothers looked like Indra surrounded by the army of gods intent upon the slaughter of the Danavas. 32.

CHAPTER CXXXVII

Vaishampayan said that on being given way by the amazed and cheerful audience, Karan, the destroyer of enemies, entered the spacious arena. He was wearing his natural armour his face decked with natural ear-rings born of the sun and Kunti in her maidenhood; his strength and energy like that of the lion or the king of elephants; bright like the sun or the moon, glorious like Agni and

पराक्रमः । दीप्तिकान्तिद्युतिगुणैः सूर्येन्दुज्वलनोपमः ॥ ४ ॥ प्रांशुः कनकतालाभः सिंहसंहननोयुवा । असंख्येयगुणःश्रीमान् भास्करस्यात्मसम्भवः ॥ ५ ॥ सनिरीक्ष्य महाबाहुः सर्वतोरङ्गमण्डलम् । प्रणामं द्रोणकृपयोर्नात्यादृतमिवाकरोत् ॥ ६ ॥ ससमाजजनःसर्वो निश्चलःस्थिरलोचनः । कोऽयमित्यागतक्षोभः कौतूहलपरोऽभवत् ॥ ॥ ७ ॥ सोऽब्रवीन्मेघगम्भीरस्वरेण वदतांवरः । भ्राताभ्रातरमज्ञातंसावित्रः पाकशासनिम् ॥ ८ ॥ पार्थयत्तेकृतंकर्म विशेषवत्तदहन्ततः । करिष्येपश्यतां नृणांमात्मनाविस्मयंगमः ॥ ९ ॥ असमाप्तेततस्तस्य वचनेवदतांवर । यन्त्रोत्क्षिप्तइवोत्तस्थौ क्षिप्रंवैसर्वतोजनः ॥ १० ॥ प्रीतिश्चमनुजव्याघ्र दुर्योधनमुपाविशत् । ह्रीश्चक्रोधश्चबीभत्सुं क्षणेनान्वाविवेशह ॥ ११ ॥ ततोद्रोणाभ्यनुज्ञातः कर्णःप्रियरणःसदा । यत

सिंह और गजेन्द्र के समानहै उसकी प्रभा सूर्य और चन्द्रमाके समान और तेज अग्नि की सदृश है वोह सुवर्ण के ताड़ के समान लम्बा है उस सूर्यकुमार अति गुणवंत सिंह सदृश शरीरधारी विशाल नेत्र शत्रुकुलनाशी युवा, श्रीमान् महाभुज कर्ण ने खड्ग बांध कर धनुषबाण लेकर चलतेहुए पर्वतकी भांति अखाडे में घुसकर आचार्य द्रोण और कृप को मानो अनादर से प्रणामकिया।६। तब अखाडेभर के सब लोग यह जानने के लिये कि यह कौनहै चुपहो और टकटकी लगाकर अप्रसन्न और आश्चर्ययुक्त हुए सूर्यपुत्र सुन्दर कर्ण ने इन्द्रपुत्र अर्जुन को सगाभाई न जानकर बादलसदृश गंभीर शब्द से कहा कि हेपार्थ तुम ने जो कार्य कियाहै मैं देखनेवालोंके सामने उससेभी विशेष करूंगा सो तुम अपने कामको आश्चर्य करके मत जानना सूर्यपुत्रकी इस बातके पूरी होनेतक सबलोग यन्त्र से उठायेहुएकी भांति उसीसमय निज२ स्थानमें जाबैठे।१०। हेमानव श्रेष्ठ ! तब दुर्योधनके हृदय में प्रीति प्राप्तहुई और अर्जुनका चित्त क्रोध और लज्जा से अधीर हुआ इस के अनन्तर पार्थ ने उस अखाडे में जो २ कार्य कियेथे सदा युद्धकी इच्छा करनेवाले

tall like a golden palm. The sun's son, of body like the lion, of large eyes, destroyer of enemies, fortunate and brave Karna, armed with sword and bow, coming like a mountain into the arena casting his eye all rouud bowed to Drona and Kripa as if it were unwillingly. 6. The audience, amazed and dissatisfied, became silent to learn all about him. In a deep tone like thunder he then addressed Arjun, not knowirg him to be his real brother, saying, " I shall perform, before the audience, braver deeds than those of your own. You will no longer regard your deeds strange. As soon as Karan finished his speech all persons took their respective seats as if they were worked by machinery. 10. Duryodhan's heart was thereupon moved with love towards Karan but Arjun was dimayed with anger and shame. By the permission of Drona,

कृतंतत्रपार्थेन तच्चकारमहाबलः ॥ १२ ॥ अथदुर्योधनस्तत्र भ्रातृभिःसहभारत । कर्णंपरिष्वज्यमुदा ततोवचनमब्रवीत् ॥ १३ ॥ दुर्योधन उवाच । स्वागतंतेमहाबाहो दिष्ट्याप्राप्तोऽसिमानद । अहंचकुरुराज्यंच यथेष्टमुपभुज्यताम् ॥ १४ ॥ कर्ण उवाच कृतंसर्वमहंमन्ये सखित्वंचत्वयावृणे । द्वन्द्वयुद्धञ्चपार्थेन कर्तुमिच्छाम्यहंप्रभो ॥ १५ दुर्योधन उवाच । भुङ्क्ष्वभोगान्मयासार्द्धं बन्धूनांप्रियकृद्भव । दुर्हृदांकुरुसर्वेषां मूर्ध्नि पादमरिन्दम ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततःक्षिप्तमिवात्मानं मत्वापार्थोऽभ्यभाषत । कर्णंभ्रातृसमूहस्य मध्येऽचलमिवस्थितम् ॥ १७ ॥ अर्जुन उवाच । अनाहूतोपसृष्टानामनाहूतोपजल्पिनाम् । येलोकास्तान्हतःकर्ण मयात्वंप्रतिपत्स्यसे ॥ १८ ॥ कर्ण उवाच । रङ्गोऽयंसर्वसामान्यः किमत्रतवफाल्गुन । वीर्यश्रेष्ठाश्चराजा

महाबली कर्ण ने द्रोणकी आज्ञा से वोह सब कर दिखाये । हेभारत ! तब दुर्योधन ने भाइयोंसहित कर्णको गले लगाकर कहा कि हेमहाभुज आप भले आये हैं आप मेरेसौभाग्य से आयेहैं अब मैं आपका आधीन हूं आप इस कुरुराज्यको मनमाना भोगिये कर्ण ने कहा कि मुझे और किसी बातकी अभिलाषा नहीं है केवल आपकी मित्रता चाहता हूं और पार्थसे एकबार द्वन्द्वयुद्धकिया चाहताहूं।१ ।दुर्योधननेकहा कि हेशत्रुनाशी आप मेरे साथ नानाप्रकारकी भोगकी वस्तुयें भोगतेरहिये और बंधुओं के मंगलेच्छुकहोकर संपूर्ण शत्रुओं को दबाइये । वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर पार्थ अपने को अपमानितसा जान कर भाइयोंमें पर्वतके समान खडेहोकर कर्णसे बोला कि हे कर्ण जो बिना बुलाये आतेहैं और न बुलाये जाकर अहित की इच्छा करते हैं उनकी जो गति होती है मुझसे प्राण खोकर तुम उसको प्राप्त करोगे कर्णने कहाकि हे अर्जुन यह अखाड़ा सबके लिये समान है सो मेरे आनेसे तुम्हारी क्या हानि होसक्ती है क्षत्रिय लोग बलहीसे प्रधान होते हैं

Karan, the lover of war, displayed all the feats that Arjun had performed in the arena. Duryodhan with his brothers embraced him and said, " You are welcome. My good fortune has brought you nither. I shall remain under your control and you will enjoy the kingdom of the Kurus." Karan replied, " I desire nothing but your friendship and a duel with Arjun."15.Duryodhan said, " O destroyer of enemies, enjoy all the good things with me wishing always the welfare of kinsmen and subduing the enemies." Vaishampayan said that Arjun, thinking that his dignity was wounded spoke out from amongst his brothers saying, " Those who seek admission, O Karn, univited and in that capacity desire one's ill are punished. You will, therefore, lose your life by my hand." Karn replied, " This arena, O Arjun, is open to all I have committed no fault in coming here. Kshetryas are

नो बलंधर्मोऽनुवर्त्तते ॥ १९ ॥ किंक्षेपैर्दुर्बलायासैः शरैःकथयभारत । गुरोःसमक्षंयावत्ते हराम्यद्यशिरःशरैः ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोद्रोणाभ्यनुज्ञातः पार्थः परपुरंजयः । भ्रातृभिस्त्वरयाश्लिष्टो रणायोपजगामतम् ॥ २१ ॥ ततोदुर्य्योधनेनापि सभ्रात्रासमरोद्यतः । परिष्वक्तःस्थितःकर्णः प्रगृह्यसशरन्धनुः ॥ २२ ॥ ततःसविद्युत्स्तनितैः सेन्द्रायुधपुरोगमैः । आवृतंगगनं मेघैर्बलाकापंक्तिहासिभिः ॥ २३ ॥ ततःस्नेहाद्धरिहयंदृष्ट्वा रंगावलोकिनम् । भास्करोऽप्यनयन्नाश समीपोपगतान्घनान् ॥ २४ ॥ मेघच्छायोपगूढस्तु ततोऽदृश्यतफाल्गुनः । सूर्य्यातपपरिक्षिप्तः कर्णोऽपि समदृश्यत ॥ २५ ॥ धार्त्तराष्ट्रायतः कर्णस्तस्मिन्देशे व्यवस्थिताः । भारद्वाजःकृपोभीष्मो यतःपार्थस्ततोऽभवन् ॥ २६ ॥ द्विधारंगःसमभवत् स्त्रीणांद्वैधमजायत । कुन्ति

इस लिये क्षत्रियों का धर्म बलही की शरण लेताहै । हेभारत ! दुर्बलकीनाईं लांछनकी क्या आवश्यकता है जबतक इन गुरु के सामने चोखे बाणों से तुम्हारा शिर नहीं काटताहूं तबतक जो कुछ कहनाहो बाणों सेही प्रकटकरो ।२०। वैशम्पायननेकहा कि अनंतर शत्रुपुर विजयी धनंजय द्रोणाचार्य की आज्ञा पाकर और भाइयों के गले से लगकर युद्ध के लिये कर्ण के सामने गये इधर कर्ण और दुर्योधन उस के भाइयों से मिलकर बाण सहित शरासन लेकर युद्ध के लिये खडे रहे उस समय इन्द्र धनुष से सोहते हुए बिजली तथा गर्जनसे भरे बादल से आकाश मंडल ढकगया अनन्तर इन्द्रको निजपुत्र अर्जुन पर स्नेह वश अखाडे की ओर ताकते हुए देखकर सूर्य ने अपने पुत्र कर्णके निकट के जल भरने वाले बादलों को नष्ट किया तब अर्जुन बादलोंकी छांह से ढका हुआ और कर्ण सूर्य की किरणोंसे घिराहुआ दीखनेलगा ।२५। कर्णकी ओर धृतराष्ट्र के पुत्र और अर्जुनकी ओर द्रोणकृप और भीष्म खडे थे अखाड़ा दोभागों में बँटगया और स्त्रियांभी दोदल होगईं

superior to others in strength. It is their duty to rely upon strength. It is useless to sully your tongue like a weak person. Speak what you have to say by arrow only till I cut your head off by my arrow in the presence of this preceptor."20 Vaishampayan said that with the permission of Dronacharya, Arjun embraced his brothers and went forward to fight with Karna. On the other hand, Karan embraced Duryodhan and his brothers and stood ready for fighting. At this time the sky was overcast with clouds decked with rainbow and lightning. Seeing Iudra looking lovingly towards his son, the sun destroyed the clouds that were over the head of Karan. Then Arjun was seen under the shade of clouds and Karan was surrounded by the rays of the sun.25 The sons of Dhritrashtra were on the side of Karan and Drona, Kripa and Bhishma were on the side of Arjun. The whole

भोजसुतामोहं विज्ञातार्थाजगामह ॥ २७ ॥ तांतथामोहमापन्नां विदुरःसर्वधर्मवित् । कुन्तीमाश्वासयामास प्रेष्याभिश्चन्दनोदकैः ॥ २८ ॥ ततःप्रत्यागतप्राणा तावुभौपरिदंशितौ । पुत्रौदृष्ट्वासुसंभ्रान्ता नान्वपद्यतकिंचन ॥ २९ ॥ तावुद्यतमहाचापौ कृपः शारद्वतोऽब्रवीत् । द्वन्द्वयुद्धसमाचारे कुशलःसर्वधर्मवित् ॥ ३० ॥ अयंपृथायास्तनयः कनीयान् पाण्डुनन्दनः । कौरवोभवतासार्द्धं द्वन्द्वयुद्धंकरिष्यति ॥ ३१ ॥ त्वमप्येवंम हावाहो मातरंपितरंकुलम् । कथयस्वनरेन्द्राणां येषांत्वंकुलभूषणम् ॥ ३२ ॥ ततोविदित्वापार्थस्त्वां प्रतियोत्स्यतिवानवा । वृथाकुलसमाचारैर्न युध्यन्तेनृपात्मजाः ॥ ॥ ३३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्यकर्णस्य व्रीडावनतमाननम् । बभौवर्षाम्बुविक्लिन्नं पद्ममागलितंयथा ॥ ३४ ॥ दुर्योधन उवाच । आचार्यत्रिविधायोनी

कुंती अपने पुत्र कर्ण और अर्जुन का युद्ध में प्रवृत्तहोना देखकर मोहवशः हुई धर्मज्ञ विदुर ने दासियोंकी सहायता से चंदन के जलसे उस मूर्च्छित कुंती को चैतन्ययुक्त किया कुंती चेतपाकर युद्ध के लिये सजेहुए दोनों पुत्रों को देखकर भयभीत रही कुछ कर न सकी ।२९। अनन्तर सब धर्म जानने वाले विशेष द्वन्द्व युद्धकी रीतिको भलेप्रकार जानते हुए शारद्वत् उन दोनों वीरों को बडे २ शरासन उठाते देखकर कर्ण से बोले कि यह अर्जुन कुरु वंशी राजा पांडु का पुत्रहै कुंती के तीसरे गर्भ से उत्पन्नहुआ है यह तुमसे द्वन्द्वयुद्ध करैगा । हे महाभुज तुमभी निज राजवंश के अलंकार हो उस कुलका वृत्तांत और माता पिता का नाम कहो उसको जानकर पार्थ निश्चय करैं गे कि तुमसे लडैंगे वा नहीं क्योंकि राजकुमार लोग छोटे कुल में जन्म लिये हुए सदाचार वर्जित जनों से द्वन्द्वयुद्ध नहीं करते । वैशंम्पायन ने कहा कि आचार्य कृपके इसप्रकार कहने पर कर्णका मुँहलज्जा से नीचाहोकर वर्षा के जल से धोये हुए कमलकीनाई मलिन होगया ।३४। तब दुर्योधनने कहा कि हे आचार्य शास्त्रोंमें

arena including the women was divided into two parties. Seeing her sons, Karan and Arjun, engaged in fight, Kunti fainted. The virtuous Vidur ordersd the maidservants to sprinkle sandal water upon the senseless Kunti and brought her to senses. Kunti seeing her two sons ready to fight was much frightened but could do nothing. 29 At length, **Sharadwat who knew well the rules of duel,** seeing the heroes ready to fight, spoke to Karan saying, " Arjun is the third son of king Pandu of the Kuru family. He will engage in a duel with you. Tell us brave man, the names of your parents and the princely family to which you belong. On learning it Arjun will consider whether he will fight with you or not. For princes do not engage in a duel with lowborn people." Vaishampayan said that on hearing this from Kripacharya Karan cast his head down with shame as a lotus leaf loses its brightness by

शास्त्रविनिश्चये । सत्कुलीनश्चशूरश्च यश्चसेनांप्रकर्षति ॥ ३५ ॥ यद्ययंफाल्गुनो युद्धे नाराज्ञायोद्धुमिच्छति । तस्मादेषोऽङ्गविषये मयाराज्येऽभिषिच्यते ॥ ३६ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तस्मिन्क्षणेकर्णः सलाजकुसुमैर्घटैः । काञ्चनैःकांचनेपीठे मन्त्रविद्भिर्महारथः ॥ ३७ ॥ अभिषिक्तोऽङ्गराज्ये सश्रियायुक्तोमहाबलः । सच्छत्र-वालव्यजनो जयशब्दोत्तरेणच ॥ ३८ ॥ उवाचकौरवंराजावचनंसवृषस्तदा । अस्यराज्यप्रदानस्य सदृशंकिंददानिते ॥ ३९ ॥ प्रब्रूहिराजशार्दूल कर्त्ताह्यस्मितथा नृप । अत्यन्तंसख्यमिच्छामीत्याहतंस सुयोधनः ॥ ४० ॥ एवमुक्तस्ततःकर्णस्तथेति प्रत्युवाचतम् । हर्षाच्चोभौसमाश्लिष्य परांमुदमवापतुः ॥ ४१ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणिकर्णाभिषेके सप्तत्रिंश दधिकशततोऽध्यायः ॥ १३७ ॥

निश्चय है कि राजकुल में जन्मालिये हुए वीर और सेनापति यह तीन भूपाल होसक्ते हैं सो अर्जुन यदि भूपाल के विना किसी दूसरे से लडना न चाहते हों तो मैं अभी इस कर्णको अंगराज्य में अभिषिक्त कर देताहूँ। वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर महाबलवंत, महारथी श्रीमान् कर्ण उसी क्षण सुवर्ण पीढ़ीपर खडेहोकर मंत्रज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा फूल और सुवर्ण घटसे अंगराज्य में अभिषिक्त हुए महाराज अनन्तर कर्ण जयके शब्द के साथ अच्छे छत्र चमरयुक्त होकर कुरुनंदन दुर्योधन से बोले कि हे राजाओं में व्याघ्रसमान महाराज आप ने जो मुझको राज्यदिया कहिये आपको मैं इसके योग्य क्यादूँ आप जैसा कहैंगे मैं वैसाही करने को सम्मतहूँ सुयोधन ने कहा कि मैं आपसे अच्छी मित्रताकी प्रार्थना करताहूँ ऐसा कहे जाकर कर्ण ने प्रतिज्ञा के साथ उसको मान लिया और दोनों हर्ष से एक दूसरे को गले लगाकर बडे प्रसन्न हुए॥ ४१ ॥

rain water.) Duryodhan, then said, "The Shastras say that those born in the royal family, heroes, and commanders of armies may become kings. So if Arjun will not fight with one who is not a king I shall at once instal Karan on the kingdom of Ang." Vaishampayan said that the brave Karan was that very moment placed on a golden seat and with due rites installed as king of the kingdom of Ang. Karan was then supplied with the insignia of royalty and sounds of victory were heard on all sides. He then said to Duryodhan, "What return shall I make you for the kingdom you have bestowed upon me? I shall obey you in all respects." Suyodhan replied, "I want your sincere friendship." Upon this Karan agreed and they embraced each other cheerfully. 41.

वैशम्पायन उवाच । ततःस्रस्तोत्तरपटः सप्रस्वेदःसवेपथुः । विवेशाधिरथोरङ्गं यष्टिप्राणोह्वयन्निव ॥ १ ॥ तमालोक्यधनुस्त्यक्त्वा पितृगौरवयन्त्रितः । कर्णोऽभिषेकार्द्रशिराः शिरसासमवन्दत ॥ २ ॥ ततःपादाववच्छाद्य पटान्तेनससंभ्रमः । पुत्रेति परिपूर्णार्थमब्रवीद्रथसारथिः ॥ ३ ॥ परिष्वज्यचतस्याथ मूर्द्धानंस्नेहविक्लवः । अङ्गराज्याभिषेकार्द्रमश्रुभिः सिषिचेपुनः ॥४॥ तंदृष्ट्वासूतपुत्रोऽयमिति संचिन्त्यपाण्डवः । भीमसेनस्तदा वाक्यमब्रवीत्प्रहसन्निव ॥ ५ ॥ नत्वमर्हसिपार्थेन सूतपुत्ररणेवधम् । कुलस्यसदृशस्तूर्णं प्रतोदोगृह्यतांत्वया ॥ ६ ॥ अङ्गराज्यञ्च नार्हस्त्वमुपभोक्तुंनराधम । श्वाहुताशंसमीपस्थं पुरोडाशमिवाध्वरे ॥ ७ ॥ एवमुक्तस्ततःकर्णःकिञ्चित्प्रस्फुरिता

अध्याय १३८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर कांपता, पसीने से नहाया, बूढा अधिरत लाठी थांमकर लटकते हुए चादर से कर्णको बुलाता हुआ अखाडे में आपहुँचा कर्ण ने उसको देखतेही सम्मान पूर्वक धनुषबाणको छोडकर अभिषेकके जलसे भीगेहुए सिरसे प्रणामकिया रथके सारथी अधिरथ ने सम्मान के साथ वस्त्रके अंतभाग से अपने पात्रों को ढककर राज्य पाने से सफल मनोर्थ कर्णको पुत्र कहकर सम्भाषण किया और स्नेह से गलेलगाकर अंगराज्यमें अभिषिक्त कर्ण के भीगे शिरको आनन्दके आसुओं से फिर भिगोया।४।भीमसेन उसको देखकर कर्ण को सूतका पुत्र जानकर मानो हँसी से बोले कि हे सूतपुत्र तुम रणभूमि में अर्जुन से मारे जाने योग्य नहीं हो तुमशीघ्र घोडा चलाने के लिये अपने कुल के योग्य पैनेको थांभो। अरे नराधम ! कुत्ता जैसे यज्ञीय अग्नि के सामने स्थित घृतपीनेके योग्य नहीं है वैसेही तूभी अंगराज को भोगने के योग्य नहीं है भीमकी इसबात से कर्ण के होठ कांपने लगे उसने ऊची सांस लेकर आकाश में स्थित दिननाथकी ओर देखा

CHAPTER CXXXVIII

Vaishampayan said that an old man with age trembling and covered with perspiration entered the arena beckoning Karan. On seeing him Karan at once put down his bow and arrows and respectfully bowed down his recently anointed head to his aged father. The chariot driver respectfully covered his feet with his cloth and affectionately embraced his son congratulating him on his getting the kingdom of Ang. He dropped tears of joy over his head already wet with the ceremony of coronation.4. Bhimsen knew him to be the son of a chariot driver and addressed him, as if in jest, saying, " O son of Sut, you are not worthy of being slain by Arjun. You must hold the whip to drive the horses. You are not worthy of enjoying the kingdom of Ang as a dog is not allowed to partake of the butter standing before the sacrificial

धरः । गगनस्थं विनिःश्वस्य दिवाकरमुदैक्षत ॥ ८ ॥ ततोदुर्य्योधनः कोपादुत्पपात महाबलः । भ्रातृपद्मवनात्तस्मान्मदोत्कट इवद्विपः ॥ ९ ॥ सोऽब्रवीद्भीमकर्माणं भीमसेनमवस्थितम् । वृकोदरनयुक्तंते वचनंवक्तुमीदृशम् ॥ १० ॥ क्षत्रियाणांबलं ज्येष्ठं योद्धव्यंक्षत्रबन्धुना । शूराणांचनदीनांच दुर्विदाःप्रभवाःकिल ॥ ११ ॥ सलिलादुत्थितो वह्निर्येनव्याप्तं चराचरम् । दधीचस्यास्थितोवज्रं कृतंदानवसूदनम् ॥ १२ ॥ आग्नेयःकृत्तिकापुत्रो रौद्रोगाङ्गेयइत्यपि । श्रूयतेभगवान्देवः सर्वगुह्ममयोगुहः ॥ ॥ १३ ॥ क्षत्रियेभ्यश्चयेजाता ब्राह्मणास्तेचतेश्रुताः । विश्वामित्रप्रभृतयः प्राप्ताब्रह्मत्वमव्ययम् ॥ १४ ॥ आचार्य्यःकलशाज्जातो द्रोणःशस्त्रभृतांवरः । गौतमस्यान्ववाये च शरस्तम्बाच्चगौतमः ॥ १५ ॥ भवतांचयथाजन्म तदप्यागमितंमया । सकुण्डलंस-

अनन्तर महाबली दुर्योधन क्रोधितहोकर मदसे उन्मत्त हस्तीके समान भ्रातृवर्गरूपी पद्मवन से उसहीक्षिण उठखडाहुआ और पास खडेहुए भीमकर्मवाले भीमसेन से कहा कि हेवृकोदर तुमको ऐसा कहना नहीं चाहियेथा क्षत्रियोंका बलही श्रेष्ठहै क्षत्रिय के निन्दितहोने परभी उससे लडनाचाहिये ऐसाकहाहै कि नदी और वीरों की उत्पत्तीका वृत्तांत जाननेके योग्य नहीं है।११। देखो अग्निने जलसे निकलकर इसचराचर भवनको घेर लियाहै और जिस वज्र से दानव वंश नष्टहुआ वोह मुनिवर दधीचि की हड्डी से बनाथा जो भगवान देव कार्तिक हैं उनकी उत्पत्ति भी जानने योग्य नहीं है क्योंके वोह अग्नि के पुत्र कृतिकाके पुत्र, रुद्र के पुत्र और गंगाके पुत्र भी कहलातेहैं फिर यहभी तुमने सुनाहोगा कि जिन्हों ने क्षत्रियों से जन्म लिया था वे ब्राह्मण होगये देखो बिश्वामित्र आदि ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर ब्राह्मण का पद प्राप्तकिया शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य यज्ञ के कलश से उत्पन्न हुए और कृपाचार्य ने गौतमके वंशमें शरकंडे की लकडीसे जन्म लिया।१५। औरों की कथा कहने का क्या प्रयोजन है तुम्हारा जन्म जिस प्रकार हुआ वहभी मैं जानता हूं

fire." Karn's lips began to quiver on hearing this from Bhim. He heaved a long sigh and looked up towards the sun in the sky. Duryodhan of great strength was very angry and jumped out like a mad elephant from the group of brothers resembling a forest of lotus plants. He thus addressed Bhim who was standing near:—" You should not say so, Virkedar, strength only is praiseworthy in heroes. One must not abstain from fighting with a hero though the latter be not praiseworthy. They say that the origin of rivers and heroes is not worthy of investigation. 11. Fire which has come out of water, has spread throughout the world. The mace which destroyed the families of the *Danavas* was made of the bone of the great Rishi *Dadhichi*. The god *Kartik's* origin is not worthy of being known. For, he is known as the son of Agni,

कवचं सर्वलक्षणलक्षितम् । कथमादित्यसदृशं मृगीव्याघ्रंजनिष्यति ॥ १६ ॥ पृथिवी
राज्यमर्होऽयं नांगराज्यंनरेश्वरः । अनेनबाहुवीर्य्येण मयाचाज्ञानुवर्त्तिना ॥ १७ ॥
यस्यवामनुजस्येदं नक्षान्तंमद्विचेष्टितम् । रथमारुह्यपद्भ्यांस विनामयतुकार्मुकम् ॥
॥ १८ ॥ ततःसर्वस्यरंगस्य हाहाकारोमहानभूत् । साधुवादानुसंबद्धः सूर्य्यश्चास्तमु
पागमत् ॥ १९ ॥ ततोदुर्य्योधनः कर्णमालम्ब्याग्रकरेनृपः । दीपिकाग्निकृतालोक-
स्तस्माद्रङ्गाद्विनिर्ययौ ॥ २० ॥ पाण्डवाश्चसहद्रोणाः सकृपाश्चविशाम्पते । भीष्मेण
सहिताःसर्वे ययुःस्वंस्वंनिवेशनम् ॥ २१ ॥ अर्जुनेतिजनःकश्चित् कश्चित्कर्णेतिभारत
कश्चिद्दुर्य्योधनेत्येवं ब्रुवन्तःप्रस्थितास्तदा ॥२२॥ कुन्त्याश्चप्रत्यभिज्ञाय दिव्यलक्षण
सूचितम् । पुत्रमंगेश्वरं स्नेहाच्छन्ना प्रीतिरजायत ॥ २३ ॥ दुर्य्योधनस्यापितदा कर्ण

यह सम्भवभी नहीं होता कि कुंडल कवच सहित जन्म लियेहुए सर्व लक्षणयुक्त सूर्यवत
इस पुरुषव्याघ्रने मृगीसे जन्म लियाहो विशेष इस कर्ण के भुजबल और आज्ञानुसारी
मेरेरहतेहुए इस नरेश्वर को केवल अंगराज्यही का भोगना क्याहै नहीं यह भूमंडल भर
के एकही अधिकारी होने के योग्य हैं पर यदि मेरा यह कार्य किसी को असहन जान
पडाहो तो वोहरथ पर खडा होकर दोनोंपांवके सहारे शरासन नवावे अनन्तर अखाडे भर
में साधु बाद युक्त बडा कोलाहल होने लगा उसी समय दिननाथ अस्ताचल को सिधारे
अनन्तर भूपाल दुर्योधन कर्णका हाथ पकडकर दीपक के उजाले में उस अखाडे से नि-
कले ।२०। हेपृथ्वीनाथ पांडवगण और आचार्य द्रोण कृप और भीष्मके साथ सब अपने२
घरको चलेगये तब देखने वालोंमें कोई अर्जुन की कोई कर्ण की कोई दुर्योधन की बात
कहता हुआ चलागया कुंती दिव्य लक्षणयुक्त पुत्रको पहचान कर उसको अंगराज्य में

Kritika, Rudra, and Ganga. Kshatryas became *Brahmans* in old times. *Viswamitra* and others born among Kshatryas became Brahmans. The preceptor Drona was born of the sacrificial vessel. *Kripacharya* was born of Gautam on a Sarkanda stick. 15. We need not disclose the origin of other people. I know the way in which you were born. It is not probable that born with ear-rings and armour and glorious like the sun, this lion among men could be of low origin. Specially with Karan's strength and my obedience to his orders he will not rule only the kingdom of Ang, but, he is worthy of having the whole empire at his command. If there be one amongst you who can not bear my act, let him come before me and try his best with arms." The audience raised the cry of approval on this speech. By this time the sun had set. Prince Duryodhan, then, took Karan by the hand and both came out of the arena by the light of the lamps. 20. The Pandavas went home accompanied by Drona, Kripa, and Bhishm. Of the lookers

मासाद्यपार्थिव । भयमर्जुनसञ्जातं क्षिप्रमन्तरधीयत ॥ २४ ॥ सचापिवीरःकृतशस्त्र-
निःश्रमः परेणसाम्नाभ्यवदत् सुयोधनम् । युधिष्ठिरस्याप्यभवत्तदा मतिर्न्न कर्णतुल्यो
ऽस्ति धनुर्द्धरः क्षितौ ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वण्यस्त्रदर्शने अष्टात्रिंश दधिकशततोऽध्यायः ॥ १३८ ॥

वैशम्पायन उवाच । पाण्डवान्धार्त्तराष्ट्रांश्च कृतास्त्रानप्रसमीक्ष्यसः । गुर्वर्थद-
क्षिणाकाले प्राप्तेऽमन्यतवैंगुरुः ॥ १ ॥ ततःशिष्यान्समानीय आचार्य्योऽर्थमचोदयत्।
द्रोणःसर्वानशेषेण दक्षिणार्थं महीपते ॥ २ ॥ पञ्चालराजंद्रुपदंगृहीत्वा रणमूर्द्धनि।
पर्य्यानयतभद्रंवःसास्यात् परमदक्षिणा ॥ ३ ॥ तथेत्युक्त्वातुतेसर्वे रथैस्तूर्णप्रहारिणः।
आचार्य्यधनदानार्थं द्रोणेनसहिताययुः ॥ ४ ॥ ततोऽभिजग्मुः पञ्चालान्निघ्नन्तस्ते

अभिषिक्त देखकर स्नेहके कारण गुप्तभावसे प्रसन्नहुई और कर्णको पाकर दुर्योधन के हृदय से अर्जुन का भय जातारहा शस्त्रविद्या में परिश्रमी वीर कर्णभी मीठी २ बातों से दुर्योधन को प्रसन्न करने लगे और युधिष्ठिर ने भी समझा कि भूमंडल में कर्ण के समान धनुषधारी और कोई नहीं है ॥ २५ ॥

अध्याय १३९ ॥

वैशम्पायन ने कहा अनन्तर आचार्य द्रोणने पांडवों और धृतराष्ट्र के पुत्रों को अस्त्रविद्यामें शिक्षित देख कर गुरु दाक्षिणा के काल आने पर दाक्षिणा के योग्य विषय का निश्चय किया अनन्तर शिष्यों को लिवा लाकर गुरु दक्षिणा के योग्य वस्तु की आज्ञा कर बोले कि तुम लड़कर पांचालराज द्रुपदको पराजय कर मेरे पास पकड़ लाओ तुम्हारा मंगल होवे ऐसा करनेसे ही तुम अच्छी दक्षिणा दोगे शिष्य द्वारा सब बोह मानकर गुरु दाक्षिणाके लिये अस्त्र शस्त्र लेकर रथपर चढकर गुरु द्रोणके साथचले।४। वे नरश्रेष्ठ

on some praised Arjun, others praised Duryodhan, and others Karn. Having recognised her god like son and seeing him installed in the kingdom of Ang, Kunti was much pleased in her mind. Duryodhan had no more fear of Arjun on having *Karan* on his side. The learned *Karan*, too, cheered Duryodhan by sweet words and Yudhishthir knew that there was no archer greater than *Karn*.25.

CHAPTER CXXXIX.

Vaishampayan said tha tDronacharya, seeing the *Pandavas* and the sons of Dhritrashtra well trainrd in the science of arms, called them together to pay their fees. He then told them to bring the king of *Panchal* captive after vanquishing him. For, by so doing they would be free from the preceptor's debt. They all agreed and made haste to go there on their chariots in the company of Drona.4. They entered the *Panchal* territories beating and killing

नरर्षभाः । ममृदुस्तस्यनगरं द्रुपदस्यमहौजसः ॥ ५ ॥ दुर्योधनश्चकर्णश्च युयुत्सुश्चमहाबलः। दुःशासनोविकर्णश्च जलसन्धःसुलोचनः ॥ ६ ॥ एतेचान्येचबहवःकुमारा वहुविक्रमाः । अहंपूर्वमहंपूर्वमित्येवं क्षत्रियर्षभाः ॥ ७ ॥ ततोवररथारूढाः कुमारासादिभिःसह । प्रविश्यनगरंसर्वे राजमार्गमुपाययुः ॥ ८ ॥ तस्मिन्कालेतुपाञ्चालःश्रुत्वा दृष्ट्वामहद्बलम् । भ्रातृभिःसहितोराजंस्त्वरया निर्ययौगृहात् ॥९॥ ततस्तुकृतसन्नाहो यज्ञसेनोमहीपतिः । शरवर्षाणिमुञ्चन्तः प्रणेदुःसर्वएवते ॥ १० ॥ ततोरथेनशुभ्रेण समासाद्यतु कौरवान् । यज्ञसेनःशरान्घोरान् ववर्षयुधिदुर्ज्जयः ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच। पूर्वमेवतुसम्मन्त्र्यपार्थो द्रोणमथाब्रवीत् । दर्पोद्रिक्तान्कुमाराणामाचार्य्यं द्विजसत्तम ॥ १२ ॥ एषांपराक्रमस्यान्ते वयंकुर्य्यामसाहसम् । एतैरशक्यःपांचालो ग्रहीतुंरणमूर्द्धनि ॥ १३ ॥ एवमुक्त्वातुकौन्तेयो भ्रातृभिःसहितोऽनघः । अर्द्धक्रोशेतु

सब पांचल देशमें मारते पीटते चले और बडे तेजस्वी द्रुपद के नगरको बिगाडने लगे दुर्योधन कर्ण महावली युयुत्सु, दुःशासन, विकर्ण, जलसंध और सुलोचन यह सब और दूसरे बड़े विक्रमी क्षत्रियों में श्रेष्ठ कुमार यह कहते हुए कि मैं पहिले मैं पहिले अच्छे रथोंपर चढकर घुडचढ़ों से घेरे जाकर नगर में घुसकर राजमार्ग से चलने लगे उससमय पांचाल राजके अधीश यज्ञसेन, वोह सब बात सुनकर आईहुई बड़ी भारी सेनाको देख कर युद्ध के लिये सजकर भाइयों के साथ भवन से शीघ्र निकले सब कौरवगण बड़ा शब्द करतेहुए वाण वरसानेलगे १०।तब दुर्जय यज्ञसेन श्वेतरथपर चढकर रणमें पांडवों के निकट आकर वहुत बाण वरसाने लगा । वैशम्पायनने कहा कि अर्जुन कुमारों को अहंकार से कूदते देखकर पहलेही परामर्श कर द्विजश्रेष्ठ आचार्य द्रोण से वोला कि इन के वल दिखा लेने पीछे हम साहस करैंगे क्योंकि रणस्थल में यह कदापि भूपाल पांचाल को पकड़ नहीं सकेंगे कुंतीपुत्र।१३।यह कहकर भाइयोंके साथ नगर से आधेकोसपर ठहरे

the people and began to destroy the capital of *Drupad*. Duryodhan, *Karan*, the brave Yuyutsu, Dushasan, Bikarn, Jalsandh and Sulochan, these and other brave Kshetrya princes vied with each other in entering the capital on their good chariots, surrounded by horsemen. The king of *Panchal* Yagyasen heard the news and came out with his brothers to fight with the large army. The *Kauravas* shot their arrows with war cries. 10. The unconquerable Yagyasen shot innumerable arrows from his white chariot. Vaishampayan said that Arjun, seeing the princes jumping with pride, had taken the permission of Dronacharya to keep himself aloof from the battle till all the princes had shown their bravery, for, he argued that they would never be able to take the king of Panchal prisoner. So Arjun with his brothers stayed half a mile

नगरादतिष्ठद्बहिरेवसः ॥ १४ ॥ द्रुपदःकौरवान्दृष्ट्वा प्राधावतसमन्ततः । शरजालेनम
हता मोहयन्कौरवींचमूम् ॥ १५ ॥ तमुद्यतं रथेनैकमाशुकारिणमाहवे । अनेकमिव
सन्त्रासान्मेनिरे तत्रकौरवाः ॥ १६ ॥ द्रुपदस्यशराघोरा विचेरुःसर्वतोदिशम् ।
ततःशंखाश्चभेर्यश्च मृदंगाश्चसहस्रशः ॥ १७ ॥ प्रावाद्यन्तमहाराज पञ्चालानांनिवे
शने । सिंहनादश्चसञ्जज्ञे पंचालानांमहात्मनाम् ॥ १८ ॥ धनुर्ज्यातलशब्दश्च सं-
स्पृश्यगगनंमहान् । दुर्योधनोविकर्णश्च सुबाहुर्दीर्घलोचनः ॥ १९ ॥ दुःशासनश्च
संक्रुद्धः शरवर्षैरवाकिरन् । सोऽतिविद्धोमहेष्वासः पार्षतोयुधिदुर्ज्जयः ॥ २० ॥
व्यधमत्तान्यनीकानि तत्क्षणादेवभारत । दुर्योधनंविकर्णञ्च कर्णञ्चापिमहाबलम् ॥
॥ २१ ॥ नानानृपसुतान्वीरान् सैन्यानिविविधानिच । अलातचक्रवत्सर्वं चरन्
बाणैरतर्पयत् ॥ २२ ॥ ततस्तुनागराःसर्वे मुसलैर्यष्टिभिस्तदा । अभ्यवर्षन्तकौरव्या

रहे इधर द्रुपद कौरवों को देखकर अगणित वाणों से कौरवी सेनाको मोहित कर चारों ओर दौडने लगे कौरव लोग युद्धस्थल में रथपर चढ़े हुए लड़ने में उद्यत अकेले द्रुपदकी शीघ्रता को देखकर भय के मारे उस एकही को अनेक समझने लगे । १६ । राजा द्रुपद के कठोर वाण चारों ओर फिरने लगे । अनन्तर पांचालों के घरमें सहस्रों शंख मृदंग और नगाड़े वजने लगे और उनके सिंह समान गर्जन और धन्वा में गुण चढाने के घोर शब्द आकाश में गूंजने लगे उससे दुर्योधन विकर्ण, सुवाहु दीर्घलोचन, और दुःशासन क्रोधित होकर वाण वर्षानेलगे हे भारत लडाई में दुर्जय बड़े चापधारी प्रशत पुत्र द्रुपद वाणोंमें वहुत विद्धहोकर उसी क्षण विपक्षी सेना को बड़ी कठोर पीडा पहुँचानेलगे।२। वह अकेले रथके पहियेके समान घूमर कर दुर्योधन, विकर्ण महावली कर्ण और नानादेश के वीर राजकुमारों को और अनेक सेनाओं को वाणों से

away from the city. Drupad, seeing the Kauravas, discharged countless arrows at them and was seen every where. The Kauravas seeing the dexterity of Drupad fighting from his chariot, considered the one too many. 16. His hard arrows began to fly on all sides. Then hundreds of conchs and other musical instruments began to play in the houses of the Panchals and their cries like those of lions and the sounds of fixing arrows to the bows were heard to the sky. Duryodhan, Vikarn, Subahu, Dirghlochan, and Dushasan began to shoot their arrows with anger. Being wounded by their arrows Drupad did greater damage to their army by his own. 20. Alone, revolving like a chariot wheel, he began to cover Duryodhan Bikarn, Karn and other princes with his arrows. There was none among them who did not taste of the cheer. At length the citizens armed with sticks, surrounded the

न् वर्षमाणाघनाइव ॥ २३ ॥ सबालवृद्धास्तेपौरा कौरवानभ्ययुस्तदा । भ्रूत्वासु तु-
मुलंयुद्धं कौरवानेवभारत ॥ २४ ॥ द्रवन्तिस्मनदन्तिस्म क्रौशन्तःपाण्डवान्प्रति ।
पाण्डवास्तुस्वनंश्रुत्वा आर्त्तानांलोमहर्षणम् ॥ २५ ॥ अभिवाद्यततोद्रोणं रथानारुरु
हुस्तदा । युधिष्ठिरंनिवार्य्याशु मायुध्यस्वेतिपाण्डवम् ॥ २६ ॥ माद्रेयौचक्ररक्षौतु फा
ल्गुनश्चतदाकरोत । सेनाग्रगोभीमसेनः सदाभूद्गदयासह ॥ २७ ॥ तदाशत्रुस्वनंश्रुत्वा
भ्रातृभिःसहितोऽनघः । आयाज्जवेनकौन्तेयो रथेनानादयन्दिशः ॥ २८ ॥ पंचाला
नांततः सेनामुद्धूतार्णवनिःस्वनाम् । भीमसेनो महाबाहुर्दण्डपाणिरिवान्तकः ॥ २९ ॥
प्रविवेशमहासेनां मकरःसागरंयथा । स्वयमभ्यद्रवद्भीमो नागानीकंगदाधरः ॥ ३० ॥
सयुद्धकुशलःपार्थो बाहुवीर्य्येणवातुलः । अहनत्कुञ्जरानीकं गदयाकालरूपधृक् ॥ ३१ ॥

मारने लगे किसी को उसका स्वाद बिना दिये नहीं छोडा अनन्तर नगरवालों ने वर्षने
वाले बादलों के समान मूसल और लाठियों से कौरवों को घेर लिया । हे भारत ! तब पुर
बासी बच्चों से लेकर बूढ़ों तक घोरयुद्धकी बात सुनकर कौरवों पर दौडे इस से कौरवगण
भागकर चिल्ला २ कर रोते हुए पांडवों की ओर चले तब पांडवगण रोयें खड़ी होनेवाली
रुलाई को सुनकर आचार्य द्रोण के पांवछूकर रथपर चढे अर्जुन ने शीघ्रता से युधिष्ठिर
से यह कहकर मना किया कि आप न लड़िये।२६।नकुल और सहदेवको चक्रकी रखवाली
में नियुक्त किया और सदा सेना के आगे चलने वाले भीमसेन हाथ में गदा लेकर चले
कुंतीपुत्र अनघ अर्जुन शत्रुओं का शब्द सुनकर रथों की आहट से दिशा भरते हुए भाइयों
के साथ बडे वेगसे रणभूमि में आगये जिस प्रकार मगर समुद्र में प्रवेश करता है वैसेही
हाथ में लकड़ी लिये यमराज के समान भीमसेन उछलते हुए समुद्रकी भांति शब्द करती
हुई पांचाल सेना में प्रविष्ट हुए अतुल भुज वीर्ययुक्त रणमें पंडित पृथापुत्र भीम स्वयम् गज
पर चढीहुई सेनाकी ओर दौड़कर और कालरूपी होकर गदासे उसको नष्ट करनेलगे। ३१।

Kauravas like clouds and ran towards them to beat them. The Kauravas began to weep and cry with pain and ran towards the Pandavas who hearing their heart rending cries touched Drona's feet and mounted their chariots. Arjun hastily enjoined Yudhishthir not to fight. 26. He appointed Nakul and Sahdev to guard the phalanx and Bhimsen, mace in hand, marched in front of the army. Arjun, the son of Kunti, with his brother, filling the firmament with the noise of his chariots, soon came into the battlefield like the god of death. Bhim entered the Panchal army, jumping with his stick in his hand, as a crocodile enters the Ocean. Bhim of matchless strength began to slay the elephant-riders with his mace. 31. He broke the heads of the elephants with his mace and they began to fall like mountain peaks struck by lighting. Bhim

तेगजा गिरिसंकाशाः क्षरन्तो रुधिरंबहु । भीमसेनस्यगदया भिन्नमस्तक पिण्डकाः । पतन्तिद्विरदाभूमौ वज्रघातादिवाचलाः ॥ ३२ ॥ गजानश्वान्रथांश्चैव पातयामासपाण्डवः । पदातींश्चरथांश्चैव न्यवधीदर्जुनाग्रजः ॥ ३३ ॥ गोपाल इव दण्डेन यथापशुगणान्वने । चालयन्रथनागांश्च संचचालवृकोदरः ॥ ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । भारद्वाजप्रियं कर्त्तुमुद्यतः फाल्गुनस्तदा । पार्षतंशरजालेन क्षिपन्नागात् सपाण्डवः ॥ ३५ ॥ हयौघांश्चरथौघांश्च गजौघांश्चसमन्ततः । पातयन्समरे राजन्युगान्ताग्निरिवज्वलन् ॥ ३६ ॥ ततस्तेहन्यमानावै पंचालाःसृंजयास्तथा । शरैर्नानाविधैस्तूर्णं पार्थंसंच्छाद्यसर्वशः ॥ ३७ ॥ सिंहनादंमुखैःकृत्वा समयुध्यन्तपाण्डवम् । तद्युद्धमभवद्घोरं सुमहाद्भुतदर्शनम् । सिंहनादस्वनंश्रुत्वा नामृष्यत्पाकशासनिः ॥

उन सब महीधर समान हस्तियों के शिर भीमसेन की गदा से टूट जानेपर वे रक्तकी धार बहातेहुए वज्रकी चोट लगेहुए पर्वत की भांति धरती पर गिरने लगे अर्जुन के बड़े भाई वृकोदर ने अगणित गज, घोड़े और रथ धरती पर गिराये और असंख्य रथी और पैदलों को यमराज के घर भेजा बन में गौओं के रखवाले जिस प्रकार लकड़ी से पशुदल को खेदते हैं वैसेही भीमने गज और रथियोंको गदा से भगाया ।३४। वैशम्पायन ने कहा कि तब पांडुपुत्र फाल्गुन ने आचार्य द्रोणके प्रिय कार्य करने में उद्यत होकर बाणों के द्वाराहस्ती परसे पांचालराज को गिराया हे राजन् वोह प्रलयकाल की अग्नि के समान जलकर चारों ओर घोडे रथ और गजों को रणशय्या पर सुलाने लगे अनन्तर मरते हुए सृंजय और पांचाल लोग मुख से सिंह समान गर्जन कर नानाबाणों से पार्थ को घेरकर कठोर युद्ध करने लगे।३७।तब देखनेमें वोह घोरयुद्ध बडाही विकरालहुआ इन्द्रनन्दन किरीटीसे वोह

the elder brother of Arjun, killed many elephants and horses and broke many chariots. He slew many charioteers and foot soldiers. As a cowherd drives with his stick many cows, so Bhimsen drove with his mace many elephants and charioteers.34.Vaishampayan said that Pandu's son, Phalgun, trying for the good of his preceptor brought down the king of Panchal from his elephant. Burning like the fire of the last day he threw down all round in the battle field, horses, chariots rnd elephants.The remaining Panchals raised a great war cry and surrounded Arjun from all sides and fought bravely. 7.The scene was dreadful to behold. Arjun could not bear their war cry. He at once shot his arrows all round and flew at the Panchal army. He sent his arrows so fast that there was no interval to be seen. People began to praise his skill. The king of Panchal made haste to come upon Arjun as Sambar had formerly assaulted Mahendra.41.Arjun covered him with his

॥ ३८ ॥ ततःकिरीटीसहसा पंचालानसमरेऽद्रवत् । छादयन्निषुजालेन महतामोह
यन्निव ॥३९॥ शीघ्रमभ्यस्यतोवाणान् सन्दधानस्यचानिशम् । नान्तरंददृशेकिंचित्
कौन्तेयस्ययशस्विनः ॥ ४० ॥ सिंहनादश्चसञ्जज्ञे साधुशब्देनमिश्रितः । ततःपांचाल
राजस्तु तथासत्यजितासह ॥ ४१ ॥ त्वरमाणोऽभिदुद्राव महेन्द्रंशम्वरोयथा । महता
शरवर्षेण पार्थःपांचालमावृणोत् ॥ ४२ ॥ ततोहलहलाशब्द आसीत्पांचालकेवले ।
जिघृक्षतिमहासिंहो गजानामिवयूथपम् ॥ ४३ ॥ दृष्ट्वापार्थंतदायान्तं सत्यजित्सत्यवि
क्रमः । पांचालंवै परिप्सुर्द्धनंजयमदुद्रवत् ॥ ४४ ॥ ततस्त्वर्जुनपांचालौ युद्धायस-
मुपागतौ । व्यक्षोभयेतांतौ सैन्यमिन्द्रवैरोचनाविव ॥ ४५ ॥ ततःसत्यजितंपार्थो द-
शभिर्मर्मभेदिभिः । विव्याधवलवद्गाढं तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४६ ॥ ततःशरशतैःपार्थं
पांचालंशीघ्रमार्दयत् । पार्थस्तुशरवर्षेणच्छाद्यमानोमहारथः ॥४७॥ वेगंचक्रेमहावेगो

सिंह गर्जन सहा नहींगया वोह उसी क्षणघोर वाणों से रणभूमि को चारों ओर भरकर पांचालोंको मोहित करके उनपर दौड़ा यशस्वी कुंती पुत्र ने इतने शीघ्र वाण जोडकर चलाये कि उनमें कुछभी देर देख नहीं पडी चारोंओर साधुवाद सहित सिंह गर्जनहोनेलगा४१। शंवर असुर जिस प्रकार महेंद्र पर दौडा था वैसेही पांचालराज तब सत्यहित के साथ शीघ्रताकरके अर्जुनपर दौडे । अर्जुनने वडे२ वाणों की वर्षाकर पांचालराज को ढकदिया इस से उस समय पांचालों में ऐसी हलहलाहट उठनेलगी कि जैसे सिंहके गज दलपति के पकडनेको चाहने से उठती है तव सत्य विक्रमी सत्यजित अर्जुन को आते देखकर पांचालराजकी रक्षा के लिये अर्जुन पर दौडे इन्द्रऔर विरोचन के पुत्र के समान पदार्थ एकत्रहुए।४५।अर्जुन और सत्यजित एक दूसरेकी सेनामें हलचल मचानेलगे तव अर्जुन ने मर्मभेद करनेवाले दश वाणों से वलपूर्वक सत्यजित को विद्ध किया वोह लीला मानो आश्चर्यसी जानपडी अनन्तर सत्यजित ने उसी क्षण धनंजय को पीडा पहुँचाई वडे

arrows. The Panchals were much frightened at this and flew towards Arjun for the protection of the king of *Panchal*. The two met like Indra and Virochan. Arjun and Satyajit both destroyed each other's army. Arjun then wounded the king of *Panchal* with ten arrows. It was a wonderful deed. Satyajit then wounded Arjun. Being covered by the arrows of the king of *Panchal* Arjun soon recovered his dexterity and having cut the bowstring of Satyajit he marched towards him. Satyajit soon mended his bowstring and wounded Arjun with his charioteer and the horses. Arjun did not forbear this assault. He shot arrows upon his horses, standard, rear-grand and charioteer. Arjun again and again cut his bow-string, and killed his horses. Satyajit thereupon turned his back. The king of *Panchal*, seeing

धनुर्ज्यामवमृज्यच । ततःसत्यजितश्चापं छित्वाराजानमभ्ययात् ॥ ४८ ॥ अथान्य-
द्धनुरादाय सत्यजिद्वेगवत्तरम् । साश्वंससूतंसरथं पार्थंविव्याधसत्वरः ॥ ४९ ॥ स
तंनममृषेपार्थः पांचालेनार्दितोयुधि । ततस्तस्यविनाशार्थं सत्वरंव्यसृजच्छरान् ५०॥
हयान्ध्वजंधनुर्मुष्टिमुभौ तौपार्ष्णिसारथी । सतथाभिद्यमानेषु कार्मुकेषुपुनःपुनः ।
॥ ५१ ॥ हयेषुविनियुक्तेषु विमुखोऽभवदाहवे । ससत्यजितमालोक्य तथाविमुख-
माहवे ॥ ५२ ॥ वेगेनमहता राजन्नभ्यवर्षत पाण्डवम् । तदाचक्रेमहद्युद्धमर्जुनो जय
तांवरः ॥ ५३ ॥ तस्यपार्थोधनुश्छित्वा ध्वजंचोर्व्यामपातयत् । पंचभिस्तस्यविव्या
ध हयान्सूतंचशायकैः ॥५४॥ ततउत्सृज्य तच्चापमाददानं शरावरम् । खड्गमुद्धृत्य
कौन्तेयः सिंहनादमथाकरोत् ॥ ५५ ॥ पांचालस्य रथस्येषामाप्लुत्य सहसापतत् ।
पांचालरथमास्थाय अवित्रस्तोधनञ्जयः ॥ ५६ ॥ विक्षोभ्याम्भोनिधिं पार्थस्तंनाग-

वेगवानमहारथी धनंजयने वाण बृष्टि से ढकेजाकर धनुषके गुणको मलकर फिर तेजको
वढालिया फिर वाणों से सत्यजित का शरासन काटकर द्रुपद की ओर चले अनन्तर
सत्यजित ने शीघ्रता से अधिक वेगवान दूसरे एकशराशनको लेकर घोडेरथ और सारथी
सहित पार्थ को विद्ध किया पार्थ ने रणस्थल में उससे पीडा पाकर उसकी क्षमा नहीं
की परन्तु उसको नष्ट करने के लिये वेगसे घोडे झंडे धन्वा, मुट्टी, और पीठके रखवाले
और सारथीपर कुछ वाण चलाये अर्जुनसे इसप्रकार धन्वा काटे और घोडे जोतसे नि-
काले जानेपर उसने लडाई में पीठ दिखाई पांचालराज सत्यजितको लडाई में हारते देख
कर अर्जुन पर बडे वेगसे वाण चलाने लगा जययुक्त अर्जुन भी फिर घोर युद्धमें प्रवृत्त
हुआ।५३। अर्जुनने उसके झंडे और धनुषको काटकरधरतीपर गिराया और पांच वाणों
से उसके सारथी और घोडों को विद्ध किया अनंतर कुंती नन्दन धनुषवाण छोड कर
खड्ग लेकर सिंहसमान गर्जन करनेलगा।५५।और एकाएक कूदकर पांचालराजके रथकी

Satyajit vanquished by Arjun began to pour a shower of arrows upon him. The virtuous Arjun, too was engaged in severe combat. 53. He cut down his standard and bow and wounded his charioteer and horses with five arrows. At last Arjun left his bow and arrows and taking out his sword began to roar like a lion. He then suddenly jumped upon the standard of the king of *Panchal's* chariot and fearlessly captured him there as people capture an elephant in the sea. Seeing this the *Panchals* were scattered in all directions. Having thus displayed his prowess in the presence of all armies, he roared like a lion and returned from the place. The princes saw Arjun coming back and gathered together to destroy the city of Drupad. Arjun then said to Bhim, " King Drupad is a kinsman of the Kauravas. Donot kill his army. It is sufficient

नापश्यत्सराजनम् । हीनंविदित्वाचात्मानं ब्राह्मणसवलेनतु ॥ ७४ ॥ पुत्रजन्मपरीप्सन्वै पृथिवीमन्वसंचरत् । अहिच्छत्रंचविषयंद्रोणः समभिपद्यत ॥ ७५ ॥ एवं राजन्नहिच्छत्रा पुरीजनपदायुता । युधिनिर्जित्यपार्थेन द्रोणायप्रतिपादिता ॥ ७६ ॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वणि द्रुपदशासने ऊन चत्वारिंश-
दधिकशततोऽध्यायः ॥ १३९ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःसम्वत्सरस्यान्ते यौवराज्यायपार्थिव । स्थापितोधृतराष्ट्रेण पाण्डुपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ १ ॥ धृतिस्थैर्य्यसहिष्णुत्वादानृशंस्यात्तथार्ज्जवात् । भृत्यानामनुकम्पार्थं तथैवस्थिरसौहृदात् ॥ २ ॥ ततोदीर्घेणकालेन कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । पितुरन्तर्दधेकीर्तिं शीलवृत्तसमाधिभिः ॥ ३ ॥ असियुद्धेगदायुद्धे रथयुद्धेच पाण्डवः । संकर्षणादशिक्षद्वैशश्वच्छिक्षां वृकोदरः ॥ ४ ॥ समाप्तशिक्षोभीमस्तु द्युमत्सेनसमोबले । पराक्रमेणसम्पन्नो भ्रातृणामचरद्वशे ॥ ५ ॥ प्रगाढदृढमुष्टित्वे ला

अनन्तर द्रोणकी शत्रुता उससे सही नहीं गई और क्षत्रिय वलसे द्रोण को परास्त करना असंभव जाना ब्राह्मण के वलसे अपने को हीन जानकर पुत्र उत्पत्तिकी इच्छा से पृथ्वी के चारों ओर घूमने लगा इधर द्रोणको अहिच्छत्र नामक राज्य मिलगया हे राजन् ! धनंजय ने अहिच्छत्रापुरी को लड़ाई में जीतकर आचार्य द्रोणको सौंप दिया था॥७६॥

अध्याय ॥ १४० ॥

वैशम्पायनने कहा कि हेपृथ्वीनाथ ! अनन्तर वर्षभर व्यतीत होनेपर धृतराष्ट्र ने धीरता, स्थिरता, सहनशीलता, अनिर्दयता, आर्जव, नौकरों पर दया और स्थिर मित्रता गुण से सुहावने पाण्डुनन्दन युधिष्ठिरको युवराजके पदपर बैठाया। कुन्तीकुमारने शीलता वृत्त और प्रजा समाधान से पिताकी सुन्दर कीर्त्तिसेभी अपनानाम बढाया।३। पांडुनन्दन वृकोदरको बलदेवजीसे सदा असि, गदा, रथके युद्ध के विषयमें अच्छी शिक्षा मिलती थी। द्युमत्सेनके समान बली भीमसेन भलीभांति शिक्षितहोकर पराक्रमी भाइयों के

his arms, he began to wander throughout the world to beget offspring. Drona got the country called Ahichatra. Arjun had conquered the country with its cities, for his preceptor.

CHAPTER CXL

Vaishampayan said that after a year Dhritrashtra installed as his heir-apparent, Yudhishthir who was endowed with all the virtues. The son of Kunti excelled his father Pandu in good behaviour. Bhim, the son of Pandu, received instructions in the use of mace and spear. Powerful like Dyumatsen, Bhim befriended his brothers after receiving instructions in arms. Arjun became very expert in the use of various weapons and in hitting

घत्रेत्रेथनेतथा । क्षुरनाराचभल्लानां विपाटानांचतत्ववित् ॥ ६ ॥ ऋजुवक्रविशालानां प्रयोक्ताफाल्गुनोऽभवत् । लाघवेसौष्ठवेचैव नान्यःकश्चनविद्यते । वीभत्सुसदृशोलोके इतिद्रोणोव्यवस्थितः ॥ ७ ॥ ततोऽब्रवींगुडाकेशं द्रोणःकौरवसंसदि । अगस्त्यस्यधनुर्वेदे शिष्योममगुरुःपुरा ॥ ८ ॥ अग्निवेशइतिख्यातस्तस्य शिष्योऽस्मिभारत । तीर्थात्तीर्थंगमयितुमहमेतत् समुद्यतः ॥ ९ ॥ तपसायन्मयाप्राप्तममोघमशनिप्रभम् । अस्त्रं ब्रह्मशिरोनाम यद्दहेत्पृथिवीमपि ॥ १० ॥ ददतागुरुणाचोक्तं नमनुष्येष्विदंत्वया । भारद्वाज विमोक्तव्यमल्पवीर्येष्वपि प्रभो ॥ ११ ॥ त्वयाप्राप्तमिदंवीर दिव्यंनान्यो ऽर्हतितिवदम् । समयस्तुत्वयारक्ष्यो मुनिसृष्टोविशाम्पते ॥ १२ ॥ आचार्यदक्षिणां देहि ज्ञातिग्रामस्यपश्यतः । ददानीतिप्रतिज्ञाते फाल्गुनेनाब्रवीद्गुरुः ॥ १३ ॥ युद्धे-

परम मित्र बने रहे ।५। फाल्गुन, अस्तुग, नाराच, भाला विपाट आदि सीधे तथा टेढ़ बड़े २ अस्त्रों के चलानेमें और बडी दृढ़ता तथा शीघ्रतासे लक्ष्यकोविद्धकरने में अच्छे समर्थ हुए । द्रोणाचार्य ने निश्चयकियाथा, कि शीघ्रता तथा सुनियमके विषय में विभत्सु के समान जगमें दूसरा कोई नहीं है ।७। यह समझकर द्रोण कौरवोंकी सभा में गुडाकेश अर्जुन से कहनेलगे, कि हेभारत ! पूर्वकाल में अग्निवेश नाम से प्रसिद्धमुनि अगस्त्य के शिष्य धनुर्वेदमें मेरेगुरु थे, मैंने उन अग्निवेश के शिष्यहोकर शिक्षा पायीथी । मैंनेतपोबलसे उन गुरु से जो वज्रसमान ब्रह्मशिर नामक अमोघ अस्त्र पायाथा, जो कि सम्पूर्ण पृथ्वी को जलासकताहै।१०।उस अस्त्र को किसी दूसरे के हाथमें सौंपकर उससे विग्रह न होने के विषयमें प्रयत्नकिया है । गुरु ने जब मुझको वह अस्त्र दियाथा, तब कहा था, कि हेभारद्वाज ! तुम स्वल्प वीर्यवाले जनपर यह अस्त्र मत मारना । हे वीर ! पीछे तुम ने मुझ से वह दिव्य अस्त्र पायाहै कोई दूसराइसके पाने योग्य नहीं है, पर हे पृथ्वीनाथ ! मुनि ने जो नियम बनादियाथा उसको मतलांघना ।१२। अब अपने स्वजनों के सामने मुझको गुरु दक्षिणा दो । उसके अनन्तर उनके वांछित दानको देनेमें अर्जुन के

difficult marks. Dronacharya was of opinion that none in the world was Arjun's equal in dexterity and training. And with this resolution he once addressed Arjun in the court of Kauravas, saying, "Formerly, I learnt archery from the fomous *Muni Agnivesh*, the disciple of *Agastya*. With great difficulty I got the great weapon, known as *Brahmshir*, from him. It can burn all the world. I always tried not to part with that weapon. At the time of giving it to me, the preceptor had warned me not to use the weapon against a being of small strength. You have since got it from me. There was no one else worthy of it. I request you to bear in mind the injunction of the

ऽहंप्रतियोद्धव्यो युध्यमानस्त्वयानघ । तथेतिचप्रतिज्ञाय द्रोणायकुरुपुङ्गवः ॥ १४ ॥
उपसंगृह्यचरणौ समायादुत्तरांदिशम् । स्वभावादगमच्छब्दो महींसागरमेखलाम् ॥
॥ १५ ॥ अर्जुनस्यसमोलोके नास्तिकश्चिद्धनुर्द्धरः । गदायुद्धेऽसियुद्धेच रथयुद्धेच
पाण्डवः ॥ १६ ॥ पारगश्चधनुर्युद्धे वभूवाथधनञ्जयः । नीतिमान्सकलांनीतिं वि-
वुधाधिपतेस्तदा ॥ १७ ॥ अवाप्यसहदेवोऽपि भ्रातॄणांववृतेवशे । द्रोणेनैवविनीतश्च
भ्रातॄणांनकुलःप्रियः ॥ १८ ॥ चित्रयोधिसमाख्यातो वभूवातिरथोदितः । त्रिवर्षक्र-
तयज्ञस्तु गन्धर्वाणामुपप्लवे ॥ १९ ॥ अर्जुनप्रमुखैःपार्थैः सौवीरःसमरेहतः । नशशाक
वशेकर्तुं यंपाण्डुरपिवीर्य्यवान् ॥ २० ॥ सोऽर्जुनेनवशन्नीतो राजासीद्यवनाधिपः ।

सम्मतहोनेपर गुरुजी वोले कि हेअनघ ! रणस्थल में मेरे तुमसे लडनेको प्रवृत्तहोनेसे तुम मेरेविरुद्ध लडना ! कुरु श्रेष्ठ अर्जुन 'तथास्तु, कहके वह वात मानकर उनके पावों पर प्रणामकर योग्य उपदेशको प्राप्तहुए । समुद्रतक सम्पूर्ण धरती में आपही आप यह वाद उड़ी, कि इसलोकमें अर्जुन के समान चापधारी कोई वीर नहीं है, चाहे गदा युद्ध वा असियुद्ध कहिये, चाहे रथयुद्ध वा धनुर्युद्ध कहिये, हर वातमें धनंजय दक्षवने हैं । सहदेव देवाधिपति इन्द्ररूपी आचार्य द्रोणसे सम्पूर्ण नीति शिक्षापाकर नीति शील होकर भाइयों के वश में है । नकुल आचार्य द्रोणसे अच्छी शिक्षा पाकर चित्रयोधी और अतिरथ कर के प्रख्यात और भाइयों के प्यारे वने रहे । अर्जुन आदि पाण्डव इतने पराक्रमी हुए, कि उन्हों ने उन सौवीरको, जिन्हो ने गन्धर्वों से विद्रोह मचाना तुच्छ जानकर तीन वर्ष यज्ञ किया था, कभी भयभीत नहीं हुए थे, रणशय्या पर सुलाया । वीर्यवन्त पांडु जिस यवनराजको वश में नहीं लासकेथे, अर्जुन ने उसको भी परास्त किया तथा आज्ञाधीन वनाया । उस सौवीर वितुलको, जो अति वली होकर कुरुओं से

preceptor. Now give me the fee before all your kinsmen." On Arjun's expressing readiness to obey him, the preceptor said "I request you to fight against me when I want you to do so." Arjun consented to do as he was ordered and bowed down at the preceptor's feet. The news, that there was no archer like Arjun, spread throughout the world. He was unequalled in the use of mace and spear and as charioteer and archer. Sahadev learned politics from Dronacharya and was obedient to his brothers. Nakul became famous as *Chitrayodhi* and *Adhirath* and was loved by his brothers. The Pandavas killed in battle *Saubir* who thought it derogatory to fight against *Gandharvas*, who had performed a sacrifice lasting for three years and who was not afraid of any one. Arjun brought under his rule the *Yavan* king whom the brave Pandu could not conquer.

अतीवबलसम्पन्नः सदामानीकुरून्प्रति ॥ २१ ॥ विपुलोनामसौवीरः शस्तःपार्थेन
धीमता । दत्तामित्रइतिख्यातं संग्रामेकृतनिश्चयम् ॥ २२ ॥ सुमित्रंनाम सौवीरमर्जु-
नोऽदमयच्छरैः । भीमसेनसहायश्च रथानामयुतंचसः ॥ २३ ॥ अर्जुनःसमरेप्राच्यान्
सर्वानेकरथोऽजयत् । तथैवैकरथोगत्वा दक्षिणामजयद्दिशम् ॥ २४ ॥ धनौघंप्रापया
मास कुरुराष्ट्रंधनञ्जयः । एवंसर्वेमहात्मानः पाण्डवामनुजोत्तमाः ॥२५॥ परराष्ट्राणि
निर्जित्य स्वराष्ट्रंववृधुःपुरा । ततोबलमतिख्यातं विज्ञायदृढधन्विनाम् ॥ २६ ॥ दू-
षितःसहसाभावो धृतराष्ट्रस्यपाण्डुषु । सचिन्तापरमोराजा ननिद्रामलभन्निशि ॥२७॥

इत्यादिपर्वणि सम्भवपर्वाणि धृतराष्ट्रचिन्तायाम्
चत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः ॥ १४० ॥

सदा अहंकार करते थे, धीमान् अर्जुन ने गिराया । दत्तामित्र नामक प्रसिद्ध सुमित्र संज्ञायुक्त सौवीर देशी वीर के लडने में कटिवद्धहोनेपर अर्जुनने वाणों से उसको रोका। अर्जुन ने आप एक रथी होनेपरभी भीम के सहारे से दशसहस्र रथों के साथ पूर्व देशीय सब राजाओं को परास्त किया और वैसेही रथपर चढ़कर दक्षिण ओर को परास्तकर कुरुराज्य में अनेक धन भेजा । मानवों में श्रेष्ठ महात्मा पांडवों ने पहिले इसप्रकार पराये राज्यों को परास्त कर २ निज राज्यको बढायाथा । अनन्तर यह जानकर कि वडेभारी योद्धे पाण्डवों का वलवीर्य वहुत प्रसिद्धहोगया, उनपर एकायक धृतराष्ट्र का भाव विगडगया, वह बड़े सोचके समुद्र में डूबे, इस से उन्हें रात्रिको नींद नहीं आती थी ॥ २७ ॥

The wise Arjun defeated Soubir who always showed the pride of his power to the Kurus. He checked by his arrows the famous Dattamitra or Sumitra of the Saubir country. Arjun defeated the eastern princes possessing ten thousand chariots with a single chariot and the assistance of Bhim. He also conquered the southern princes and sent immense wealth to the Kuru treasury. The great Pandavas had thus subdued the foreign powers to augment their own. Dhritrashtra withdrew his favour from the Pandavas on learning about their great power and renown. He was plunged into deep care and could not sleep at night.140.



वैशम्पायन उवाच । श्रुत्वापाण्डुसुतान् वीरान् बलोद्रिक्तान्महौजसः । धृतराष्ट्रो महीपालश्चिन्तामगमदातुरः ॥ १ ॥ ततआहूयमन्त्रज्ञं राजशास्त्रार्थवित्तमम् । कणिकंमन्त्रिणांश्रेष्ठं धृतराष्ट्रोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । उत्सिक्ताःपाण्डवानित्यं तेभ्योऽसूयेद्विजोत्तम । तत्रमेनिश्चिततमं सन्धिविग्रहकारणम् । कणिकत्वंममाचक्ष्व करिष्येवचनंतव ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । सम्प्रपन्नमनास्तेन परिपृष्टोद्विजोत्तमः । उवाचवचनंतक्ष्णं राजशास्त्रार्थदर्शनम् ॥ ४ ॥ कणिकउवाच । शृणुराजन्निदंतत्र प्रोच्यमानंमयानघ । नमेऽभ्यसूयाकर्त्तव्या श्रुत्वैतत्कुरुसत्तम ॥ ५ ॥ नित्यमुद्यतदण्डःस्यान्नित्यं विवृतपौरुषः।अच्छिद्रश्छिद्रदर्शी स्यात्परेषांविवरानुगः ॥६॥ नित्यमुद्यतदण्डाद्धि भृशमुद्विजतेजनः।तस्मात्सर्वाणिकार्याणि दण्डेनैवविधारयेत्॥७॥

अध्याय १४१ ॥

वैशम्पायनने कहा कि यह सुनकर कि वीर्यवन्त पांडवलोग बलसे बडे और बडे तेजस्वी हुएहैं, महाराज धृतराष्ट्र दुःखी चित्तसे सोचनेलगे । वह राजशास्त्रार्थ में पंडित मन्त्रज्ञ मुनियोंमें श्रेष्ठ कणिकको बुलवाकर बोले।२।कि हेद्विजराज ! पाण्डवोंको दिनोंदिन बढते देखकर उनपर मुझे द्वेषहोरहाहै, सो हेकणिक ! उन से सन्धि वा युद्धके बिना जो कुछ और उचितहो, सो निश्चयकरके कहो, मैं उसके अनुसार काम करूंगा । ३ । वैशम्पायन ने कहा कि द्विजोत्तम कणिक धृतराष्ट्र से इसप्रकार पूछे जाकर प्रसन्न चित्त से राजशास्त्र के प्रमाणसहित तेजभरी बातोंमें कहनेलगे कि महाराज मैं जो कहताहूं, सुनिये । हे अनघ कुरुश्रेष्ठ ! यह सुनकर मुझपर क्रोध न करना । राजों को सदा दण्ड देनेमें उद्यतहोकर अपनी बडाई फैलाना और स्वयं दोष वर्जितहोकर पराये दोषों को ढूंढकर उसके पीछे रहना चाहिये ।५। राजाके सदा दण्डदेनेमें उद्यत रहनेसे लोग उनसे

CHAPTER CXLI

Vaishampayan said that having heard of the great prowess and the fame of the Pandavas, Dhritrashtra was plunged in grief. He sent for the great Muni, Kanik who was a scholar of the Politics, and said to him, 2) " I am displeased at the great progress of the Pandavas. Let me know the proper course, excepting warfare and friendship with them. I shall act upon your advice." 3.Vaishampayan said that having heard this from Dhritrashtra, Kanik cheerfully made the following reply with proofs from the books on Politics :-" Hear attentively, O king, what I shall say to you and be not angry with me after hearing it. Kings ought always establish their greatness by punishing others and being themselves free from faults they should always seek the faults of others. People are afraid when a king is ready to punish

नास्यच्छिद्रंपरः पश्येच्छिद्रेणपरमन्वियात् । गूहेत्कूर्मइवांगानि रक्षेद्विवरमात्मनः ॥ ८ ॥ नासम्यक्कृतकारी स्यादुपक्रम्यकदाचन । कण्टकोह्यपिदुश्छिन्न आस्रावंजनयेच्चिरम् ॥ ९ ॥ वधमेवप्रशंसन्ति शत्रूणामपकारिणाम् । सुविदीर्णंसुविक्रान्तं सुयुद्धंसुपलायितम् ॥ १० ॥ आपद्यापदिकालेच कुर्वीतनविचारयेत् । नावज्ञेयो रिपुस्तात दुर्बलोऽपिकथञ्चन । अल्पोऽप्यग्निर्वनंकृत्स्नं दहत्याश्रयसंश्रयात् ॥ ११ ॥ अन्धःस्यादन्धवेलायां बाधिर्य्यमपिचाश्रयेत् । कुर्य्यात्तृणमयंचापं शयीत मृगशायिकाम् ॥ १२ ॥ सान्त्वादिभिरुपायैस्तु हन्याच्छत्रुंवशेस्थितम् । दयानतस्मिन्कर्त्तव्याश

वहुत डरतेहैं, सो सब काम दण्डही से पूरा कर लेना । राजा शत्रुकी चूक देखकर उसके पीछे चलें, पर शत्रुगण उनकी चूक न देखने पावें । कछुआ जिसप्रकार अपना अङ्ग छिपा लेताहै, वैसेही राजा सहायता साधना और उपाय आदि से अपने अङ्गों को छिपारक्खें । ८ । और ऐसा यत्न करना चाहिये जिस्से शत्रुलोग उनकी चूकके पीछे चलने न पावें । कोई काम आरम्भ कर उसका कोई अंश छोड़ देना कभी उचित नहीं है देखिये पूरा न काट डालने से कांटे से भी सदा चोटलग सकती है, हानि करनेवाले शत्रुओं को वध करनाही वहुत प्रशंसायोग्य है; यदि वह शत्रु वडा विक्रमी और योद्धा हो, तो उसकी विपत्ति के समय आनेसे उसपर चढ़कर नष्टकर डालना, वा ऐसा करना कि भागजावे, इस विषय में भला बुरा न विचारना । हे बेटा ? शत्रुके दुर्ब्बल होने से भी उसको कम न समझना चाहिये; देखिये, थोडी सी आग धीरे धीरे आसरा पाकर पूरे वनको जला सकतीहै। ११ । कभी कभी राजाको अन्धे और वहिरे के समान बनना चाहिये । शत्रुओं के दोष को देखकर के न देखना और सुनकर के भी न सुनना चाहिये । तब अपने शरासनको तिनके से बना हुआ समझना ; पर वन में सोते हुए, मृग समूह के समान सदा सावधान रहना । आगे शत्रुको अपनी हथेली के भीतर समझकर साम दान आदि उपायोंसे मरवाडालना ।

them. All purposes are served by punishment. A king should chase an enemy when at fault, but the latter should not be allowed to find out the faults of the former. As a tortoise hides his limbs, so should the king protect himself well by allies. 8. He should not let the enemy see his faults. (A work, once begun, should not be left half-done.) A thorn is always troublesome until it is thoroughly removed. It is the safest course to destroy an enemy. (If the enemy is stronger he should be attacked at the time of trouble.) He should then be destroyed or removed from the country. An enemy, though weak, should not be disregaded. Even a spark of fire, if left undisturbed, burns the whole forest. 11. A king does sometimes play the blind or deaf i. e., he sees or hears the faults of an enemy and overlooks them. He

रणागतइत्युत ॥ १३ । निरुद्विग्नोहिभवति नहताज्जायतेभयम् । हन्यादमित्रंदानेन
तथापूर्वापकारिणम् ॥ १४ ॥ हन्यात्त्रीन्पंचसप्तेति परपक्षस्यसर्वशः । मूलमेवादि
तश्छिन्द्यात्परपक्षस्य नित्यशः ॥ १५ ॥ ततःसहायांस्तत्पक्षान् सर्वांश्चतदनन्तरम् ।
छिन्नमूलेह्यधिष्ठाने सर्वेतज्जीविनोहताः ॥ १६ ॥ कथंनुशाखास्तिष्ठेरंश्छिन्नमूले वन
स्पतौ । एकाग्रःस्यादविवृतो नित्यंविवरदर्शकः ॥ १७ ॥ राजन्नित्यंसपत्नेषु नित्यो
द्विग्नः समाचरेत् । अग्न्याधानेन यज्ञेन काषायेणजटाजिनैः ॥ १८ ॥ लोकान्
विश्वासयित्वैव ततोलुम्पेद्यथावृकः । अङ्कुशंशौचमित्याहूरर्थानामुपधारणे ॥ १९ ॥

शरणलियाहुआ, समझके उसपर दया दिखानी नहीं चाहिये। स्वाभाविक शत्रुको दान देकर के वशमें लाकरभी मारना, शत्रुके नष्ट होने से ही चिन्ता जाती रहती है; क्योंकि मरे हुए जनसे किसी प्रकार भयकी सम्भावना नहीं रहती । यदि कोई पहिले हानिकारी रहकर पीछे मित्रता दिखावे, तो उसकोभी मारना ।१४। शत्रुओंके दुर्ग आदिपर चढ़कर ऐश्वर्य्यको भेदी लगाके मन्त्रको और बलसे उत्साहको इन तीनोंको नष्ट करना और सहाय, साधन उपाय, देश और कालका विभाग तथा विपत्तिका प्रतिकार इनपांच अङ्गयुक्त नय अर्थात् नियमोंका और भेद, दण्ड, साम, दान, माया ऐन्द्रजालिककार्य्य और विपक्षियोंसे कियेहुए उन विषयोंको तुच्छसमझना इन सातप्रकारके राज्यांगको सबप्रकारसे नष्ट करडालना । पहिले काल और अकालका विचार न करके शत्रुकी जडहीको काट देना, आगे उसके सहाय और पक्षियोंको नष्ट करना । अवलम्बरूपी जडके सम्पूर्ण उखडजानेसे, इसमें सन्देह नहीं है, कि उसके भरोसेभी रहते हुए सब मरेंगे, क्योंकि पेडकी जडकटने से उसकी शाखा कभी बनी नहीं रहसकतीं। हे राजन्! शत्रुसे निश्चिन्त नरहकर छिपछिपके सदा उसके दोष ढूंढनेमें चित्तको नियुक्तकर राज्य करना चाहिये ।१७ अग्निसे तपके, यज्ञकरके, वृक्षकी छाल पहिनकर और जटा अजिन धरकेभी पहिले शत्रुओं में विश्वास उपजाकर पीछे समय होने पर व्याघ्रके

then thinks his own bow to be made up of a straw; but remains on his guard like a herd of deer sleeping in a forest. When an enemy comes under his power he removes him from his way. A natural enemy should be allured by gifts and then destroyed. One can only be secure when one's enemy is destroyed. A dead man can never harm the living ones. 14. An enemy should be destroyed even when he shows friendship. (The wealth of an enemy should be destroyed by attacking on his fortress, his secret by a detective, and his courage by strength.) An enemy's allies, means, plans, country and time should be spoiled, as well, as the helpers of his kingdom. (An enemy should be uprooted, first of all, and then, his allies and helpers.) When the root or support is destroyed, those who rely on it will perish themselves. The

आनाम्यफलितांशाखांपक्कंपक्कंप्रशात येत् । फलार्थोऽयं समारम्भोलोके पुंसांविप
श्चिताम् ॥ २० ॥ वहेदमित्रंस्कन्धेन यावत्कालस्यपर्य्ययः । ततःप्रत्यागतेकाले
भिन्द्याद्घटमिवाश्मनि ॥ २१ ॥ अमित्रोनविमोक्तव्यःकृपणंवह्वपिब्रुवन् । कृपानत
स्मिनकर्त्तव्या हन्यादेवापकारिणम् ॥ २२ ॥ हन्यादमित्रंसान्त्वेन तथादानेनवा पुनः।
तथैव भेददण्डाभ्यां सर्वोपायैःप्रशातयेत् ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कथंसान्त्वेन
दानेनभेदैर्दण्डेनवापुनः । अमित्रःशक्यतेहन्तुंतन्मे ब्रूहियथातथम् ॥ २४ ॥ कणिक
उवाच॥शृणुराजन्यथावृत्तं वनेनिवसतःपुरा । जम्बुकस्यमहाराज नीतिशास्त्रार्थदर्शि
नः ॥ २५ ॥ अथकश्चित्कृतप्रज्ञः शृगालःस्वार्थपण्डितः । सखिभिर्न्यवसत्सार्द्धं
व्याघ्राखुवृकबभ्रुभिः ॥ २६ ॥ तेऽपश्यन्वनेतस्मिन् बलिनंमृगयूथपम् । अशक्ता

समान चढ जाना, क्योंकि कहा है, कि धन बटोरनेमें कुटिल होना बहुतही शुद्ध उपाय है। जिस प्रकार फलयुक्त शाखाको हिलाकर पके फल चुन लिये जाते हैं, वैसेही चुनचुन कर शत्रुओंको नष्टकरना; शत्रुओंके नाश के लिये पण्डितलोग ऐसाही कियाकरतेहैं।२०। जबतक समय न आवे तबतक शत्रुको कन्धे परचढाये रहना, आगे काल आनेपर पत्थर पर घडे को फोडने की भांति नष्ट करना । हानि करने वाले शत्रु के अति कातर वाणी कहने परभी उसको मत छोडना, एक बारगी मार डालना उसपर दया दिखानी कभी उचित नहीं है । शान्ति बनाये रखने के लिये साम वा दान अथवा भेद वा दण्ड चाहे जिस किसी उपायसेहो शत्रुको नष्टकरना।२३।धृतराष्ट्र ने कहा, कि मुझको समझाके कहो, कि साम, दान, भेद अथवा दण्ड से क्यों कर शत्रुनष्ट किये जा सकतेहैं। कणिक बोले, कि हेमहाराज ! पहिले वनमें नीतिशास्त्र जानने वाला एक सियार रहता था ; उसकी कथा कहता हूं, सुनिये। स्वार्थमें तेज बुद्धिवाला एक सियार बाघ, मूसा, चीता, और न्योला

branches can not stand when the root of a tree is cut. A king should always try to learn secretly the defects of an enemy.17.One may gain the confidence of one's enemy in the guise of an ascetic, or religious mendicant and then attack upon like a lion at the proper time. (They say that the best way to gain wealth is to be cunning.) (Enemies should be picked out and destroyed as ripe fruits are picked up after shaking a tree.) The wise act in a like manner for destroying their enemies.20.(Take your enemy on your shoulder when the times are not favourable but dash him to the ground, as one smashes a vesel upon a. stone, when oppertunity comes.) It is not well to spare an enemy even when he is humiliating himself. (It is folly to show mercy to an enemy.) One desiring safety should destroy one's enemy by every possible means.23.Dhritrashtra said, "Explain to me how enemies may

ग्रहणेतस्य ततोमन्त्रममन्त्रयन् ॥ २७ ॥ जम्बुक उवाच । असकृद्यतितोह्येष हन्तुंव्या घ्रवनेत्वया । युवावैजवसम्पन्नो बुद्धिशालीनशक्यते ॥ २८ ॥ मूषिकोऽस्यशयानस्य चरणौभक्षयत्वयम् । अथैनंभक्षितैः पादैर्व्याघ्रोगृह्णातुवैततः ॥ २९ ॥ ततोवैभक्षयि- ष्यामः सर्वेमुदितमानसाः । जम्बुकस्यतुतद्वाक्यं तथाचक्रुःसमाहिताः ॥ ३० ॥ मूषि काभक्षितैःपादैर्मृगं व्याघ्रोऽवधीत्तदा । दृष्ट्वैवाचेष्टमानन्तु भूमौमृगकलेवरम् । स्नात्वा गच्छतभद्रंवो रक्षामीत्याह जम्बुकः ॥ ३१ ॥ शृगालवचनात्तेऽपिगताः सर्वेनदींततः । साचिन्तापरमोभूत्वा तस्थौतत्रैवजम्बुकः ॥ ३२ ॥ अथाजगामपूर्वन्तुस्नात्वा व्याघ्रो महाबलः । ददर्शजम्बुकंचैव चिन्ताकुलितमानसम् ॥ ३३ ॥ व्याघ्र उवाच । किंशो चसिमहाप्राज्ञ त्वन्नोबुद्धिमतांवरः । अशित्वापिशितान्यद्य विहरिष्यामहेवयम् ॥ ३४ ॥

इन चार मित्रोंके साथ वसता था । उन सबोंने वनमें एक वली मृग दलपति को देखा और उसको पकडनेमें असमर्थहोकर नाना परामर्शकरनेलगे ।२७।पहिले सियार बोला कि हेवाघ! आपने इस मृगको मारनेका कईवार यत्न कियाहै, पर यह मृगनाथ बडा वेगवान और वुद्धिमान है, सो आप सफल मनोरथ नहीं होसके हैं, अतएव मैं समझता हूं कि वह मृग जब सोताहोगा, तव मूष जाकर उसके पांवोंको खालेगा; उसके पांवखायेजानेपर, उस चलनेमें अशक्त मृगको वाघपकडलेगा ; अनन्तर हम सव आनन्द से उसको खायंगे । सियारकी यहवातसुनकर वे सव उसके अनुसार सावधानहोकर काम करनेलगे।पहिले मूषने मृगके पांवखालिये ; उसके पीछे वाघने उस मृगको वधकिया । तव सियारने उस मृगकी देहको धरती पर लोटते देखकर सवोंसे कहा कि तुम लोगों का मङ्गल होवे, तुम नहा आओ, मैं मृग देहकी रक्षा करताहूं।३१।वाघादि सव सियारकी वातके अनुसार नहानेको नदी में गये; सियार वडे सोचसे वहां वैठारहा अनन्तर सवसे पहिले महावली वाघ नहा कर वहां आया और देखा कि सियार वडे सोच के साथ वहां वैठाहै। वाघने तव उससे पूछा, कि हे वडे वुद्धिमान् ! तुम हममें सवों से अधिक वुद्धि रखतेहो, फिर क्यों सोचमें

be destroyed in various ways." Kanik replied "In former days there lived in a forest a jackal who knew much of Politics. I tell you his story:- A wise jackal had a lion, a mouse, a wolf, and a mungoose for his friends. They saw a large stag in the forest, but not being able to overcome it they held a consultation among themselves. The jackal was the first to speak. 28. He said, "You have, several times, failed, O lion, in catching the deer on account of its swiftness and cleverness. I propose that the mouse should nibble its feet when it is sleeping. You will then find it an easy prey and we will have a hearty meal together." All agreed to act on the advice of the jackal. The mouse nibbled the deer's feet and the lion killed it. The jackal seeing the carcase lying on the

जम्बुक उवाच । शृणुमेत्वंमहाबाहो यद्वाक्यंमूषिकोऽब्रवीत् । धिग्बलंमृगराजस्य मयाद्यायंमृगोहतः ॥ ३५ ॥ मद्बाहुबलमाश्रित्य तृप्तिमद्यगमिष्यति । गर्ज्जमानस्यतस्यैव मतांभक्ष्यंनरोचये ॥ ३६ ॥ व्याघ्रउवाच । ब्रवीतियदिसह्येवं कालेह्यस्मिन्प्रबोधितः । स्वबाहुबलमाश्रित्य हनिष्येऽहंवनेचरान् । खादिष्येतत्रमांसानि इत्युक्त्वाप्रस्थितोवनम् ॥ ३७ ॥ एतस्मिन्नेवकालेतु मूषिकोऽप्याजगामह । तमागतमभिप्रेत्य शृगालोऽप्यब्रवीद्वचः ॥ ३८ ॥ जम्बुक उवाच । शृणुमूषिकभद्रंते नकुलोयदिहाब्रवीत् । मृगमांसंनखादेयं गरमेतन्नरोचते ॥ ३९ ॥ मूषिकंभक्षयिष्यामि तद्भवाननुमन्यताम् । तच्छ्रुत्वामूषिकोवाक्यं सन्त्रस्तःप्रगतोबिलम् ॥ ४० ॥ ततःस्नात्वासवैतत्र आजगामवृकोनृप । तमागतमिदं वाक्यमब्रवीज्जम्बुकस्तदा ॥ ४१ ॥ मृगराजोहिसंक्रुद्धो

हो, आओ हमअब मांस खाकर आनन्द लूटें सियार बोला, कि हेमहाभुज ! आज मूषने जो बात कहीहै, वह सुनिये! आज मैंनेही इस मृगको मारा है,सो बाघके बलपर धिक्कार है, कि वह मेरेभुजबलसे आज तृप्त होंगे । मूषके ललकारके ऐसा कहनेपर इसे खानेको मेरा मन नहीं चलताहै ।३६।बाघ बोला, कि मूषके ऐसेवात कहनेपर अबमुझको चेतना आगयी,आजसे अपने हाथके बलसे बनैले जानवरोंको मारूंगा और वही मांसखाऊंगा; यह कहकर वनमें चलागया । ऐसे समयमें मूष वहां आपहुंचा । सियार मूषको आयाहुआ देखकर बोला, कि हेमूष ! तुम्हारा भलाहो सुनों । आज न्योलेने यह कहा है, कि यहमृग बाघसे मारे जानेके कारण इसका मांस बिषके समान पचानेके अयोग्य होगा सो मैं इसे न खाऊंगा; मेरी इसपर चाह दौडतीही नहीं है, सो आज्ञा करिये कि मैं मूषको खाजाऊं यह सुनकर मूष वेगपूर्व्वक वहांसे गढेमें जाघुसा।४०।हेनृप ! अनन्तर चीता नहाकर वहां आपहुंचा । तब सियार उसको आयाहुआ देखकर बोला, कि आज बाघ तुम पर अप्रसन्न

ground told them to go to bathe and that he,in the meantime, would guard it. The lion and others went by his advice to bathe in the river and the jackal sat there thinking. The lion returned first from bathing and saw that the jackal was in deep meditation.31.The lion said, "What is the matter with you? You are wiser than us all. Why are you moody? Let us partake of the flesh and be cheerful." The jackal replied, "Hear, O brave lion, what the mouse said to-day. He said that he had killed the deer against which the lion could do nothing. Having heard this from the mouse I donot wish to partake of it."36.The lion replied,"I shall from this day,eat of the flesh of animals which I shall kill by the strength of my arm." Having said so the lion went away into the forest. The mouse was the next to come. The jackal said to him, "The mungoose was saying that the deer killed by the

नतेसाधुभविष्यति । सकलत्रस्त्विहायाति कुरुष्वयदनन्तरम् ॥ ४२ ॥ एवंसञ्चोदित स्तेन जम्बूकेनतदावृकः । ततोऽवलुम्पनंकृत्वा प्रयातःपिशिताशनः ॥ ४३ ॥ एतस्मिन्नेवकालेतु नकुलोऽप्याजगामह । तमुवाचमहाराज नकुलंजम्बुकोवने ॥ ४४ ॥ स्वबाहुबलमाश्रित्य निर्जितास्तेऽन्यतोगताः । ममदत्त्वानियुद्धंत्वं भुङ्क्ष्वमांसं यथेप्सितम् ॥ ४५ ॥ नकुल उवाच । मृगराजोवृकश्चैव बुद्धिमानपिमूषिकः । निर्जितायत्त्वया वीरास्तस्माद्वीरतरोभवान् । नत्वयाप्युत्सहे योद्धुमित्युक्त्वा सोऽप्यपागमत् ॥ ४६ ॥ कणिक उवाच । एवंतेषुप्रयातेषु जम्बुकोहृष्टमानसः । खादतिस्मतदामांसमेकस्तिन्मन्त्रनिश्चयात् ॥४७॥ एवंसमाचरन्नित्यं सुखमेधेतभूपतिः । भयेनभेदयेद्भीरुं शूरमञ्जलिकर्मणा ॥ ४८ ॥ लुब्धमर्थप्रदानेन समंन्यूनंतथौजसा । एवंतेकथितंराजन्

हुआ है, उसमें यह समझ नहीं पडती, कि तुम्हें भलाई होगी; वह स्त्री के साथ यहां आरहा है । मांस भक्षक चीता सियार की यह बात सुन करकेही अपनी जातिके स्वभाव के अनुसार देहको सिकोडकर भागा। हेमहाराज! उसके पीछे न्योलेके वहांआनेपर सियार उससे बोला, कि मैंने अपने हाथोंके बलसे बाघ, वृक आदिको परास्त किया है, वे और जगहको भागगयेहैं, अब तुम मुझसे लडकर मनमाना मांस खाओ ।४५। न्योलाबोला कि जब बाघ वृक और बुद्धिमानमूष यह सब बीर तुमसे हारकर भागगये, तुम बडे बीरहो सो तुम से लडनेका मुझमें साहस नहींहैं । यह कहकर न्योलाभागा । इस प्रकार बाघादि सबों के वहांसे चले जाने पर सियारने अपनी युक्ति पूरी होनेपर प्रसन्नचित्त होके अकेले मांस खाया ।४७। भूपाल लोग सदा ऐसा व्यवहार करनेसे सुखी होसकतेहैं । इसप्रकार भीतजनको डराकर वीर से हाथ जोडकर लोभीको धन देकर, बराबर और हीनको तेजी दिखाकर वशमें लाना । महाराज ! यह सब आप से कह चुके औरभी कुछकहता हूं,

lion had become poisonous and was not therefore fit for eating. He intends to eat you instead.' Hearing this the mouse made haste to hide itself in its hole.40. It was now the wolf's turn. The jackal informed him that he had somehow displeased the lion and that the lion with its mate was coming shortly. The wolf also turned its tail with fear. Tho mungoose was the last to come there. The jackal then said, "I have defeated the lion and others and they have fled to different places. You can only eat of this flesh after defeating me."45.The mungoose said, "I can do nothing against you when you have defeated braver animals." The mungoose also left the field. The jackal was now the sole master of the carcass and he ate it alone at his pleasure. Kings, too, may become happy if they do like him. They should frighten the coward, humiliate themselves to the more powerful, give money to the avaricious and subdue

शृणुचाप्यपरंतथा ॥ ४९ ॥ पुत्रःसखावाभ्राता वापितावायदिवागुरुः । रिपुस्थानेषु
वर्त्तन्तः कर्त्तव्या भूतिमिच्छता ॥ ५० ॥ शपथेनाप्यरिं हन्यादर्थदानेनवापुनः । विषेण
माययावापि नोपेक्षेतकथञ्चन ॥ ५१ ॥ उभौचेत्संशयोपेतौ श्रद्धावांस्तत्रवर्द्धते ।
गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्य्याकार्य्यमजानतः ॥ ५२ ॥ उत्पथप्रतिपन्नस्य न्याय्यंभवतिशा
सनम् । क्रुद्धोऽप्यक्रुद्धरूपःस्यात् स्मितपूर्वाभिभाषिता ॥ ५३ ॥ नचाप्यन्यमपध्वंसेत्
कदाचित्कोपसंयुतः । प्रहरिष्यन्प्रियंब्रूयात्प्रहरन्नपिभारत ॥५४॥ प्रहृत्यचकृपायीत
शोचेतचरुदेतच । आश्वासयेच्चापिपरं सान्त्वधर्मार्थवृत्तिभिः ॥ ५५ ॥ अथास्यप्रहरे
त्कालेयदा विचलितेपथि । अपिघोरापराधस्य धर्ममाश्रित्यतिष्ठतः ॥ ५६ ॥ सहिप्र
च्छाद्यतेदोषः शैलोमेघैरिवासितैः । यःस्यादनुप्राप्तवधस्तस्यागारंप्रदीपयेत्॥५७॥अधना

सुनिये पुत्र, मित्र, भाई, पिता, वा गुरू यदि शत्रुता करैं, तो हित चाहनेवालेको उनका नष्टकरना उचितहै । शपथ करके वा धन दानसे अथवा विषदेकर मायाका जाल फैलाकर शत्रुके नष्ट करनेमें कभीमत चूकना।५१।दोविपाक्षियोंके आपसमें सहाय साधनोपाय आदिके हेतु शङ्कायुक्त होने से, जो जन श्रद्धा सहित मुझसे कही हुई नीति के अनुसार काम करेगा उसीका सौभाग्य बढ़ेगा।यदि बड़ा और मान्यपुरुषभी कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यको न जानकर कुमार्ग गामी और अहङ्कारीहो तो उसेभी दण्ड देना उचित है। क्रोध होने से भी क्रोध न होने का सा चेहरा दिखाकर हँसकर बात करना और क्रोधित होने परभी कभी लाञ्छन न करना । मारने के पहिले और मारने के काल में भी मीठी बातें कहना । ५४ । मारकर अन्तमें कृपा दिखानी शोक प्रगटकरना और रोभी देना । शत्रुको बहुकाल, वे समझ दान और सरलतासे ढाडसदेवे इस परभी यदि वह न्यायके मार्गसे विरुद्धचले तो उसको मारना किसी के बडा अपराध करने परभी वह धर्मका आश्रय ले, तो काले बादलसे ढके हुए

the equal and weaker ones. I have told you this much and shall say more. One desiring one's own safety should destroy son, friend, brother, father and preceptor if these are inimical. One should not fail to destroy an enemy by observing a vow, spending wealth, poisoning or, deception.51 Of the two adversaries engaged in combat, he who will have implicit confidence on my advice will be successful. A preceptor or elder neglecting his duty and acting unrighteously should be properly punished. Being angry one should talk with a smiling face without any sign of anger and should not use abusive language. One should not speak harshly before or even at the time of killing.54 It is better to weep and talk of mercy or regret after death. An enemy may be endured and given donations for a long time; but whenever he goes wrong he must be punished. One pretending righteousness

न्नास्तिकांश्चौरान् विषयेस्वेनवासयेत् । प्रत्युत्थानासनाद्येनसम्प्रदानेन केनचित् ।५८। प्रतिविश्रब्धघाती स्यात्तीक्ष्णदंष्ट्रोनिमग्नकः । अशङ्कितेभ्यः शङ्कितशङ्कितेभ्यश्चसर्वशः ॥ ५९ ॥ अशङ्क्याद्भयमुत्पन्नमपि मूलंनिकृन्तति । नविश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्तेनातिविश्वसेत् ॥ ६० ॥ विश्वासाद्भयमुत्पन्नं मूलान्यपिनिकृन्तति । चारःसुविहितःकार्य्यआत्मनश्चपरस्यवा ॥ ६१ ॥ पाषण्डांस्तापसादींश्च परराष्ट्रेषुयोजयेत् । उद्यानेषु विहारेषुदेवतायतनेषुच ॥ ६२ ॥ पानागारेषुरथ्यासु सर्वतीर्थेषुचाप्यथ । चत्वरेषुच कूपेषुपर्वतेषु वनेषुच ॥ ६३ ॥ समवायेषुसर्वेषुसरित्सुच विचारयेत् । वाचाभृशंविनीतःस्याद्धृदयेनतथाक्षुरः ॥ ६४ ॥ स्मितपूर्वाभिभाषीस्यात्सृष्टो रौद्रेणकर्मणा । अञ्ज

पर्व्वतके सदृश उसका वह दोष छिप जाताहै । जो राजाके दण्डसे मारा जाय, उसका घरजला देना और जो मनुष्य बुरी रीतिसे धनार्ज्जन करतेहैं, उनको और नास्तिक तथा चोरोंको राज्यमें न बसने देना । शत्रुको प्रत्युत्थान, आसन आदि युद्धके अङ्ग अथवा विषादि दान चाहे जिस किसी उपायसेहो बडे निष्ठुर और डुबोने वाला बनकर मरवा डालना अर्थात ऐसीमारमारना, कि वह फिर न उठसके और उसबधके विषयमें सन्देह न रहे ।५९। शंका देनेयोग्यहो वा न हो सब जनसे डरतेरहना; क्योंकि किसीसे निर्भय बने रहनेसे पीछे उससे भय आजावे तो जडसे उखडनेकी बडीसम्भावनाहोतीहै । अतिश्वासी जनका विश्वास मतकरना, और विश्वासी होवे तोभी उसपरपूरा विश्वासकरना उचित नहीं क्योंकि विश्वासीजन से भयआजाने से जडसे नष्ट होना पडताहै दूतलोगोंको भली भांति परीक्षा करके निजराज्य और पराये राज्यमें नियुक्तरखना।६१।पराये राज्यमें पाषण्डी तपस्वी आदिहीको भरती करना। फुलवाडी, घूमनेका स्थान देवमन्दिर, पानघर, पथ, यागस्थान, कूप, पर्व्वत, बन, नदी और सब प्रकारके मनुष्य एकत्रितहोने का स्थान, इन

after doing a great crime, hides it as if it were under a dark cloud. The house of one undergoing a capital punishment should be burnt down. Those collecting wealth dishonestly, the athiests and the thiefs should not be allowed to live in the kingdom. The enemy should be destroyed in battle, by poison or some other means. He should be killed cruelly, merged in water or beaten so long as death is certain. 59. Fear all people whether they be suspicious or not; for, if cause for fear arises from a trustworthy source it may end in total ruin. An untrustworthy man should not be trusted and a trustworthy one should not be fully trusted, for, if cause of fear arises from the trustworthy side it may ruin totally. Detectives should be well examined before being appointed in local or foreign courts. 61. Feigned ascetics should be employed for foreign countries. Secret detectives should be appointed for the following

लिःशपथःसान्त्वंशिरसा पादवन्दनम् ॥ ६५ ॥ आशाकरणमित्येवं कर्तव्यंभूति
मिच्छता । सुपुष्पितःस्यादफलः फलवान्स्यादूरारुहः ॥ ६६ ॥ आमःस्यात्पक्वसंका
शोनचजीर्य्येतकर्हिचित् । त्रिवर्गोत्रिविधापीड़ा ह्यनुबन्धास्तथैवच ॥ ६७॥ अनुबन्धाः
शुभाज्ञेयाः पीडास्तुपरिवर्ज्जयेत् । धर्मंविचरतःपीड़ा सापिद्वाभ्यांनियच्छति ॥ ६८ ॥
अर्थं चाप्यर्थलुब्धस्य कामंचातिप्रवर्त्तिनः । अगर्वितात्मायुक्तश्च सान्त्वयुक्तोऽनसूयिता
॥ ६९॥ अवेक्षितार्थःशुद्धात्मा मन्त्रयीतद्विजैःसह । कर्मणायेनकेनैव मृदुनादारुणेनच
॥७०॥उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थोधर्ममाचरेत् । नसंशयमनारुह्य नरोभद्राणिपश्यति ७१

स्थानों में, और मन्त्री, पुरोहित, युवराज, भूपाल, द्वारपाल, शिक्षक, कारागार रखवार चीज वस्तु लाने वाले, भले बुरे कामों के ठहरानेवाले, नगरके स्वामी, काम बनानेहार धर्मस्वामी, सभापति, दण्डपाल, दुर्गपाल अस्त्रपाल, राज्य के छोर रक्षक और सेनापति इन अठारह के पास गुप्त दूत नियुक्त कर भले बुरे कामको देखना। सदा बातों में मन्त्र और हृदयमें छुरा रखना।६४।और अति कठोर काम करने में प्रवृत्त होकरकेभी हंसते हुए संभाषण करना। जो ऐश्वर्य चाहतेहों उनको हाथ जोडना, शपथ करना, खुशामद, पैरों पड़ना, आशा देना इन कामोंका करना उचित है। नीतियुक्त जनरूपी पौधेका आशा दानादिरूपी सुन्दर फूल युक्त पर बिलकुल फलसे खाली होना चाहिये। फलयुक्त जान पड़ने से भी चढ़ने के अयोग्य होना चाहिये पके समान होनेपर बिन पकेकी नाई जान पड़ना चाहिये, ऐसा होने से कभी वह टूटेगा नहीं। धर्म, अर्थ और काम यह तीन वर्ग तीन प्रकार की पीडा और तीन प्रकार के फल हैं तिन में फलों को शुभ जानना और पीडाओंको त्याग देना।६८।देखिये धर्म करनेमें वहअभिलाषी जन अर्थ और कामकी पीड़ा से बहुत सताये जाते हैं; अर्थमें बड़े आसक्तजन धर्म और कामकी पीड़ा से पीसे

eighteen places:- gardens, walks, temples, liquor stalls, streets, places of sacrifice, wells, mountains, forests rivers and all other places where people congregate, also to see the work of, ministers, priest heir, rulers of land, doorkeepers, teachers, jailor, purveyor, judges, magistrates, artisans, presidents, executive officers, keepers of fortresses and arms, boundary officers and commanders of the army.) It is well to speak mildly even at the time of doing a cruel deed and to humiliate and promise to the ambitious people. (A politician is like a plant laden with promising flowers but bearing no fruits.) If he bears fruit, he is difficult to climb upon.) The fruits though ripe should look like unripe ones. Such a tree will never break down. (*Dharm*, *Arth* and *Kam*, bear three sorts of pains and fruits. (It is wise to pick up the fruit and to shun the pain.6) (Those wishing to do good deeds (dharm) are afflicted by *Arth* (wealth)

संशयंपुनरारुह्य यदिजीवतिपश्यति । यस्यबुद्धिः परिभवेत्तमतीतेन सान्त्वयेत् ॥
॥ ७२ ॥ अनागतेनदुर्बुद्धिं प्रत्युत्पन्नेनपण्डितम् । योऽरिणासहसन्धाय शयीतकृतकृ
त्यवत् ॥ ७३ ॥ सवृक्षाग्रेयथासुप्तः पतितःप्रतिबुध्यते । मन्त्रसंवरणेयत्नःसदाकार्य्यो
ऽनसूयता ॥ ७४ ॥ आकारमभिरक्षेत चारेणाप्यनुपालितः । नच्छित्त्वापरमर्माणिना-
कृत्वाकर्मदारुणम् ॥ ७५ ॥ नाहत्वामत्स्यघातीव प्राप्नोतिमहतींश्रियम् । कर्षितंव्या

जाते हैं और काम में बहुत लगे जनकोभी धर्म और अर्थकी पीडा सताती रहती है सो
ऐसे धर्मार्थ काम करना, कि पीडादायी न होवे । अहंकार से खाली, नियम युक्त, शान्ति
पूर्ण, द्वेष वर्जित, कार्य्यदेने वाले और शुद्धात्मा होकर ब्राह्मणों के साथ परामर्श करना ।
जब आप बुरी दशा में आजावे तब सहज वा कठिन चाहे जिस किसी उपाय से हो
अपनेको बचाना, आगेसमर्थ होने पर धर्माचरणकरना । मनुष्य विना संशय में पड़े मङ्गल
लाभ नहीं करसकता है ७१ पर शंकायुक्त होकर जीता रहेतो बड़ा सौभाग्यवान होसकता
है जिस की बुद्धि शोकादि से घेरी जाती है उस को नलोपाख्यान आदि पुरानी कहानी
सुनाकर और बुरी बुद्धिवाले जनको समान आशा देकर, कि कुछ काल बीतनेपर तुम्हारा
मङ्गल होगा और पण्डित को सन्तोष देनेवाले वर्त्तमान कामसे समझाना । जो जन
शत्रु से सन्धि करके सफल मनोरथ के समान निश्चिन्त हो सो रहता है, वह ऐसे जनकी
नाईं विपत में पडकर चेतता है, कि जो वृक्षपर सोता हुआ नीचे गिर जाकर जग उठता
है । राजाको असूया से रहित होकर सदा परामर्श छुपाने का प्रयत्न करना और स्वयं
चौकस होकर विपक्षियों के भेजेहुऐ छिपे दूतों की आशङ्का से सदा भय और क्रोध
आदिको रोके रहनाचाहिये ।७५। मछुवा जिसप्रकार हिंसा न करके धन नहीं पा सकता
है, वैसेही राजा कठोर कर्म और मर्म विना नाश किये सौभाग्यवान् नहीं होसकते । शत्रुको
मथकर व्याधि औ क्लेश देकर अन्नपान छुड़ाकर उसके बलको ऐसा नाश करे जिस में

and *Kam* (worldly enjoyments). Those who wish to be wealthy are grinded by Dharm and Kam. Likewise those engaged in Kam are afflicted by Dharm and Arth. One should so act as not to be afflicted by the three. Being destitute of pride, regular, mild, free from enmity, active and pure, one should consult the Brahmans. When in difficulty, one should protect self by either method, easy or difficult, the practice of Dharm being left for better times. There is no gain without pain. 71. One may live to see good fortune if he acts cautiously. One in grief should hear old stories of *Nal* and other people. A fool should be consoled by the hope for better times and a wise one by present actions. One who makes peace with an enemy and sleeps soundly, wakes like a person falling from a tree in his sleep. A king always remaining wide awake

धितांक्छिन्नमपानीयमघासकम् ॥ ७६ ॥ पारिविश्वस्तमन्दश्च महर्त्तव्यमरेर्बलम् । नार्थिको
ऽर्थिनमभ्येति कृतार्थेनास्तिसङ्गतम् ॥ ७७ ॥ तस्मानसर्वाणिसाध्यानि सावशेषाणि
कारयेत् । संग्रहेविग्रहेचैव यत्नःकार्य्योऽनसूयता॥७८॥उत्साहश्चापियत्नेनकर्त्तव्योभूति
मिच्छता॥नास्यकृत्यानिबुध्येरान्मित्राणिरिपवस्तथा॥७९॥आरब्धान्येवपश्येरन सुपर्य्य
वसितान्यपि । भीतवत्संविधातव्यं यावद्भयमनागतम्॥८०॥आगतन्तुभयंदृष्ट्वा महर्त्त
व्यमभीतवत् । दण्डेनोपनतं शत्रुमनुगृह्णातियोनरः ॥ ८१ ॥ समृत्युमुपगृह्णीयाद्गर्भम
श्वतरीयथा । अनागतंहिबुध्येत यच्चकार्य्यंपुरःस्थितम् ॥ ८२ ॥ नतुबुद्धिक्षयात् किं-
चिदतिक्रामेत् प्रयोजनम् । उत्साहश्चापियत्नेन कर्त्तव्योभूतिमिच्छता ॥ ८३ ॥ विभ
ज्यदेशकालौच दैवंधर्मादयस्त्रयः । नैःश्रेयसौतुनोज्ञेयौ देशकालावितिस्थितिः ॥८४॥

तनिकभी सन्देह न रहजाय , अर्थ वाले से अर्थ चाहने वालेकी मित्रताकी सम्भावना नहीं है इस लिये अर्थ वाले अर्थ चाहने वाले से नहीं मिलते सो शत्रु के वशमें लानेके लिये यथोचित सम्पूर्ण कार्य्य पूरा करना, कुछ बाकी मत रखना । ऐश्वर्य्य चाहनेवाले महीपालको असूया छोडकर सहाय साधनोपाय आदि बटोर कर बिगाड का प्रयत्न और यत्न के साथ उसमें उत्साहकरना चाहिये ७८ नीतियुक्त जन ऐसेकरें, कि उसको कोईभी चाहे मित्र वा शत्रुहो पहिले समझने नपावें, पर जब काम हाथ लगे वा पूरा होजावे देखलें । जब तक भय न आनपडे तब तक भीत जनके समान भय से बचने का उपाय सोचतारहे पर भय आजाने पर निर्भयसा बनकर मारना उचित है । दण्ड से बशमे आये शत्रु पर जो कृपा करता है, वह खचरी के गर्भ धारणकी नाई अपनी मृत्यु को आपही बुलाताहै । न आए हुए कार्य को उपस्थित जानकर उचित विषयों को करना, नहीं तो एकायक उपस्थित काम के समय बुद्धि नष्ट होनेसे कोई प्रयोजनीय कार्य बिगड सकता है । ऐश्वर्य्य चाहने वाले भूपाल को देशकालका विभाग कर यत्न के सहित उत्साहकरना चाहिये ।८३। और दैवी

should try to hide his plans, fear and anger, to be safe from the spies of the enemy.75.As a fisherman cannot earn money without killing fish, so a king cannot be fortunate without hard labour and the destruction of enemies. An enemy should be made powerless by giving troubles and taking away his food and drink. The friendship between a beggar and a wealthy man cannot last. Therefore wealthy men donot meet those that want wealth. An enemy should be made powerless by every means possible. A king desireous of wealth should remain wide awake and should collect as many allies and means of destroying an enemy as he can.78.Politicians should so act as to make their actions unintelligible to friends and foes at the first sight. One should make plans for coming out of difficulties before the coming in of evil. But in the times of trouble one should act fearlessly to encounter it. He who spares an enemy

तालवत्कुरुतेमूलं वालःशत्रुरुपेक्षितः । गहनेऽग्निरिवोत्सृष्टः क्षिप्रंसञ्जायतेमहान् ८५
अग्निंस्तोकमिवात्मानं संधुक्षयतियोनरः । सवर्द्धमानोग्रसते महान्तमपिसञ्चयम् ॥
॥८६॥आशांकालवतींकुर्यात्कालंविघ्नेनयोजयेत् विघ्ननिमित्ततोब्रूयान्निमित्तंवापिहेतुतः
॥ ८७ ॥ क्षुरोभूत्वाहरेत् प्राणान्निशितः कालसाधनः । प्रतिच्छन्नोलोमहारीद्विषतां
परिकर्त्तनः ॥ ८८ ॥ पाण्डवेषु यथान्यायमन्येषुच कुरूद्वह । वर्त्तमानोनमज्जेस्त्वंतथा
कृत्यंसमाचर ॥८९॥ सर्वकल्याणसम्पन्नो विशिष्टइतिनिश्चयः । तस्मात्त्वंपाण्डुपुत्रेभ्यो
रक्षात्मानंनराधिप ॥ ९० ॥ भ्रातृव्याबलिनोयस्मात् पाण्डुपुत्रानराधिप । ब्रवीमि-

कर्म, धर्म, अर्थ काम यह सवभी देशकाल के विभाग करके करने पडेंगे क्योंकि ऐसा सिद्धान्त है, कि देश और काल यह दो वडे हितके देनेवाले हैं, शत्रु के तुच्छ होने पर उसको तुच्छ समझने से वह ताडकी नाई धीरे धीरे जड फैलाता है और वनमें गिरीहुई आगकी नाई स्वल्प के कालही के वीच में वहुत फैल जाता है इस प्रकार थोडी आगको वढानेसे वह आग वडी वडी वस्तुओं को जला सकती है, तैसेही जो अपने को सहायादि से वढाता है वह वढकर विपक्षियोंके वहुत वडे होने परभी स्वल्प कालमें उन्हें उखाड देताहै।८६।शत्रु को ऐसी आशा देनी, कि वह वहुत दिनमें पूरी होसके, आगे उसकाल के आनेपर कोई रुकावट का वहाना कर उसको चुप करदेना । उस रुकावट काभी कोई हेतु दर्शाना और उस हेतु काभी दूसरा एक हेतु दिखाकर उसको दवाए रहे । नीति जानने वाले भूपको चमकीले म्यान से ढके हुए और लोमहारी उचित समय पर काम निवटारने वाले अस्तुरेकी भांति होकर अर्थात् निर्दय, गुप्ताशय, विरुद्धजन संहारी और कालापेक्षी होकर शत्रुओं का प्राणान्त करना चाहिये। अतएव हे कुरुकुल भूषण! पाण्डव वा दूसरोंपर न्याय के अनुसार व्यवहारकर ऐसा काम करिये।८८।कि पश्चात्तापमें डूवना

once come under his power, seeks his own death like a pregnant she-mule. It is better to make plans before action, for when work comes unexpectedly it may be a failure for want of proper care. An ambitious prince should work in proper time and place whether he does a worldly or religious work. Time and place are both givers of success. A powerless enemy, if disdained, spreads his force slowly like the root of a palm tree or like the fire in a forest which spreads with great speed. A small fire, if spared, can consume large things, so, he who makes himself powerful by addition of allies may be able to uproot a large power in a short time. 86. An enemy should be given a hope which can be fulfilled in a long time and when the time comes it may be destroyed by offering some hinderances. A wise prince resembles a keen-edged razor sheathed in a shining cover, ready to kill an ememy at any time. The Pandavas

तस्माद्विष्पष्टंयत् कर्त्तव्यमरिन्दम ॥ ९१ ॥ सपुत्र.शृणुतद्राजन् श्रुत्वाचभवयत्ननान् । यथाभयंनपाण्डुभ्यस्तथा कुरुनराधिप । पश्चात्तापंयथानस्याचथा नीतिर्विधीयताम् ॥ ९२ ॥ वैशम्पायनउवाच । एवमुक्त्वासम्प्रतस्थे कणिकःस्वगृहंततः । धृतराष्ट्रोऽपि कौरव्यःशोकार्त्तः समपद्यत ॥ ९३ ॥

इत्यादिपर्व्वणि सम्भवपर्व्वणि कणिकवाक्ये एकचत्वारिंशदधिकशतो ऽध्यायः ॥ १४१ ॥ समाप्तञ्च सम्भवपर्व ॥

अथ जतुगृहपर्व्व ।

वैशम्पायन उवाच । ततःसुबलपुत्रस्तु राजादुर्य्योधनश्चह । दुःशासनश्चकर्णश्च दुष्टंमन्त्रममन्त्रयन् ॥ १ ॥ तेकौरव्यमनुज्ञाप्य धृतराष्ट्रंनराधिपम् । दहनंतुसपुत्रायाः कुन्त्याबुद्धिमकारयन् ॥ २ ॥ तेषामिङ्गितभावज्ञो विदुरस्तत्त्वदर्शिवान् । आकारेण चतंमन्त्रं बुबुधेदुष्टचेतसाम् ॥ ३ ॥ ततोविदितवेद्यात्मा पाण्डवानां हितेरतः । पला-

---

न पड़े। हे नराधिप ! मुझे यह निश्चय समझ है कि आप धन पुत्रादि सर्व मङ्गल युक्त और विशेष जानकार हैं, सो पाण्डवोंसे अपनी रक्षा करिये। हे शत्रुनाशि नरनाथ ! क्योंकि पाण्डव लोग भाइयों से बड़े बलवन्त होगये हैं। सो जैसा उचित है स्पष्टरूप से कह दिया, आप पुत्र के साथ वह सुनकर उचित विषय में ऐसा प्रयत्न करिये, कि पाण्डवों से भय न रहे और पश्चात्ताप न हो ऐसीही नीति के पथपर चलिये। कणिक ऐसा कहकर अपने घर पधारे और कुरुनन्दन धृतराष्ट्र उसे सुनकर शोकयुक्तहुए ।९३।

अध्याय १४२ ॥

वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर सुबल पुत्र शकुनि, राजा दुर्योधन, दुःशासन और कर्णने एकत्र होकर एक बुरा परामर्श किया।१। उन्हों ने कौरवी राजा धृतराष्ट्रकी आज्ञा लेकर पुत्र सहित कुन्ती को जला देना निश्चय किया। इन दुष्टात्माओं का इशारा और अभिप्राय समझने वाले तत्त्वदर्शी विदुर आंखों की सैनआदि चिह्नों से उस परा-

---

and others should be treated so wisely that you may not have to regret. You are wise and possess sons and wealth. Protect yourself from the Pandavas. The Pandavas have become more powerful than their brothers. Consult with your sons and act so wisely in respect to the Pandavas that you may not have to regret." Having said so Kanik went away leaving Dhirtrashtra in a state of deep grief.93.

CHAPTER CXLI

Vaishampayan contiuned that Shakuni the son of Subal, Duryodhan, Dushasan and Karan plotted together to burn Kunti and her sons with the permission of king Dhritrashtra. Having come to know the evil intentions of those bad-natured ones by gestures and

यनेमतिंचक्रे कुन्त्याःपुत्रैःसहानघः ॥ ४ ॥ ततोवातसहांनावं यन्त्रयुक्तांपताकिनीम् ।
ऊर्मिक्षमांदृढांकृत्वा कुन्तीमिदमुवाचह ॥ ५ ॥ विदुर उवाच । एषजातः कुलस्यास्य
कीर्तिवंशप्रणाशनः । धृतराष्ट्रःपरीतात्मा धर्मंत्यजतिशाश्वतम् ॥ ६ ॥ इयंवारिपथेयुक्ता
तरंगपवनक्षमा । नौर्ययामृत्युपाशात्त्वं सपुत्रामोक्ष्यसेशुभे ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच॥
तच्छ्रुत्वाव्यथिताकुन्ती पुत्रैःसहयशस्विनी । नावमारुह्यगंगायां प्रययौभरतर्षभ ॥ ८ ॥
ततोविदुरवाक्येन नावंविक्षिप्यपाण्डवाः । धनंचादायतैर्दत्त मरिष्टंप्राविशनवनम् ॥ ९ ॥
निषादीपंचपुत्रातु जातुषेतत्रवेश्मनि । कारणाभ्यागतादग्धा सहपुत्रैरनागसा ॥ १० ॥
सचम्लेच्छाधमः पापोदग्धस्तत्र पुरोचनः। वंचिताश्चदुरात्मानो धार्त्तराष्ट्राःसहानुगाः ११।

मर्शको समझ गये । पाण्डवों के हितैषी सम्पूर्ण जानने योग्य विषयों के विशेष जानकार पापकी छूतसे खाली विदुर ने यह समझा, कि पुत्रोंके सहित कुन्ती को भागनाही चाहिये। आगे हवाकी तेजी सहनेयोग्य, लहरों में न डूबनेवाली, यन्त्र लगीहुई, मजबूत और झण्डा फहराती हुई एक नाव वनाकर कुन्तीसे वोले, ।५। कि हेशुभे ! धृतराष्ट्र इस कुलकी कीर्ति और सन्तान को नाशने वाले बने हैं । वह उलटी बुद्धिसे शाश्वत धर्म को विसार रहे हैं । चाहे जोकुछहो, मैंने लहर और हवा के वेगको सहनेवाली यह नाव वनाकर जल में छोडदी है, इस से तुम पुत्रोंके साथ मौतके जाल से बच सकोगी । ७। हेभरत श्रेष्ठ यशस्विनी कुन्ती यह बात सुनकर पीडित चित्तसे पुत्रोंके साथ नावपर चढ कर गंगाजीमें गई। पाण्डव लोग विदुरकी बातसे नाव छोडकर दुर्योधनादि का दिया हुआ धन लेकर बिना विघ्न बनको गये । इधर एक बहेलिन किसी कारण से पांच वेटों के संग उसही जतुगृह में आके सोरही थी, जो पांडवोंके जलानेको बनायागयाथा । वह विचारी निर्दोषहोनेपरभी पुत्रों के सहित भस्महोगई और वह म्लेच्छ सेभी अधम

cruel looks, the well-wisher of the Pandavas, wise and innocent Vidur thought it safe for Kunti and her sons to run away. Having equipped a strong boat that could bear the violence of the wind and water and fitted it with sails and machinery, he said to Kunti, "Dhritrashtra will destroy the family and its fame. He is deviating from his duty by his folly. Be what it may. I have launched this boat which will bear the violence of the waves and save your sons from the jaws of death. Hearing this the unhappy Kunti sat with her sons on the boat to cross the Ganges. And leaving the boat the Pandavas with Duryodhan's money went into the woods according to the advice of Vidur. On the other hand a Bhil woman with her five sons, had slept in the inflammable house which was to burn the Pandavas. She was burnt with it although she was innocent. The bad-natured Purochan too, employed for the destruction of the

अविज्ञातामहात्मानो जनानामक्षतास्तथा । जनन्यासहकौन्तेया मुक्ताविदुर मन्त्रिताः ॥ १२ ॥ ततस्तस्मिन्पुरेलोका नगरेवारणावते । दृष्ट्वाजतुगृहंदग्धं मन्वशो चन्तदुःखिताः ॥ १३ ॥ राज्ञेचप्रेषयामासुर्यथावृत्तं निवेदितुम् । संवृत्तस्तेमहान्कामः पाण्डवान्दग्धवानसि ॥ १४ ॥ सकामोभवकौरव्य भुङ्क्ष्वराज्यंसपुत्रकः । तच्छ्रुत्वा धृतराष्ट्रस्तु सहपुत्रेणशोचयन् ॥ १५ ॥ प्रेतकार्य्याणिचतथा चकारसहबान्धवैः । पाण्डवानांतथाक्षत्ता भीष्मश्चकुरुसत्तमः ॥ १६ ॥ जनमेजय उवाच । पुनर्विस्तरशः श्रोतुमिच्छामिद्विजसत्तम । दाहंजतुगृहस्यैव पाण्डवानांचमोक्षणम् ॥ १७ ॥ सुनृशंस मिदंकर्म तेषांक्रूरोपसंहितम् । कीर्त्तयस्वयथावृत्तं परंकौतूहलंमम ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । शृणुविस्तरशोराजन वदतोमेपरन्तप । दाहंजतुगृहस्यैतत् पाण्डवानांच

पापात्मा पुरोचनभी जो जलानेके लिये नियुक्त हुआथा जल भुनकर भस्महोगया, सो धृतराष्ट्र पुत्रों का अभीष्ट पूरा न होनेसे वे साथियों के द्वारा ठगगये यह न जान कर कि महात्मा पाण्डव लोग माताके साथ विदुर के परामर्श से बचगयेहैं वारणावत नगर के लोग जतुगृह को जलते देख कर दुःखी चित्त से शोक प्रगट करने लगे ॥ १३ ॥ और उस वृत्तान्त से जो, कि जाना गया था धृतराष्ट्र को ज्ञात करने के लिये यह कहला भेजा, कि हे कौरव ! आपकी बडी इच्छा पूरी हुई आपने पाण्डवोंको जला मारा है, अब अपनी आशा पूर्णकरें पुत्र के साथ राज्य भोगें । यह सुनकर धृतराष्ट्र कुरुश्रेष्ठ भीष्म, विदुर और धृतराष्ट्र के बेटोंने बान्धवों के साथ शोक करते हुए पाण्डवों की प्रेत क्रिया की । १६ । जनमेजय बोले, कि हे द्विज श्रेष्ठ ! जतुगृह के जलने और पाण्डवों के बचने के वृत्तान्तकी कथा बिस्तारसे फिर सुना चाहता हूं । कुटिल जनके उपदेश से उन्होंने जिस प्रकार उस कठोर निष्ठुर कार्य को कियाथा वह कहें, सुनने की मेरी बड़ी इच्छा होरही है ।१८। वैशम्पायनजी बोले, कि हे शत्रुनाशी भूपाल ! जतुगृहका जलना

Pandavas, was burnt down to ashes. The purpose of the sons of Dhritrashtra was thus defeated by the negligence of their followers. Not knowing of the escape of the Pandavas with mother, by the advice of Vidur, the citizens of Barnavat' seeing the house on fire, began tolament with sorrow. 13. They sent some men to inform Dhritrashtra with what had happened and to tell him that his great desire had been fulfilled in as much as by the death of the Pandavas his son would succeed him to the throne. Having heard this, Dhritrashtra, with Bhishma, Vidur, his sons, and kinsmen, performed the obsequies of the Pandavas. 16. Janmejay asked the great Brahman to give a full description of the burning of the inflammable house and the escape of the Pandavas therefrom. He especially wished to know how they were induced to do such a cruel deed. 18.

मोक्षणम् ॥ १९ ॥ प्राणाधिकंभीमसेनं कृतविद्यंधनञ्जयम् । दुर्य्योधनोलक्षयित्वा पर्य्यतप्यतदुर्मनाः ॥ २० ॥ ततोवैकर्त्तनःकर्णः शकुनिश्चापिसौवलः । अनेकैरभ्युपायैस्ते जिघांसन्तिस्मपाण्डवान् ॥२१॥ पाण्डवाअपितत्सर्वं प्रतिचक्रुर्य्यथागतम् । उद्भावनमकुर्वन्तो विदुरस्यमतेस्थिताः ॥ २२ ॥ गुणैःसमुदितान्दृष्ट्वा पौराःपाण्डुसुतांस्तदा कथयांचक्रिरेतेषां गुणान्संसत्सुभारत ॥ २३ ॥ राज्यप्राप्तिंच सम्प्राप्तं ज्येष्ठंपाण्डुसुतंतदा । कथयन्तिस्मसम्भूय चत्वरेषुसभासुच ॥ २४ ॥ प्रज्ञाचक्षुरचक्षुष्ट्वाद्धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । राज्यंनप्राप्तवान् पूर्वं सकथंनृपतिर्भवेत् ॥ २५ ॥ तथाशान्तनवोभीष्मः सत्यसन्धोमहाव्रतः । प्रत्याख्यायपुराराज्यं नसजातुग्रहीष्यति ॥ २६ ॥ तेवयंपाण्डवज्येष्ठं तरुणंवृद्धशीलिनम् । अभ्यषिंचामसाध्वद्य सत्यकारुण्यवेदिनम् ॥ २७ ॥ सहि

और पांडवों के बचने की कथा में विस्तारसे कहताहूं, सुनिये । कुमति दुर्य्योधन भीम को अति वलवन्त और धनञ्जय को पण्डित देख कर अपार सन्ताप से जलने लगा । आगे सूर्य्य पुत्र और सुवल कुमार शकुनि नाना उपायोंसे पाण्डवों के प्राण लेने की चेष्टा करने लगे । जो विपद् आपड़ती थी पाण्डव लोगभी उस से बचने का उपाय करलेते थे, पर विदुर के मत से उसको फिर प्रकट नहीं करतेथे ।२२ । हे भारत पुरवासी लोग पांडवों को नाना गुणों से अलंकृत देख कर सब समाजों में उन के गुण गाने लगे । और सब मनुष्य सभा में और चबूतरों पर मिल कर पाण्डु के ज्येष्ठपुत्र युधिष्ठिर की राज्यपाने की योग्यता के विषय में कोलाहल मचाने लगे, और कहने लगे, कि प्रज्ञाचक्षु जननाथ धृतराष्ट्र ने अन्धे होने से पहिले राज्य प्राप्त नहीं किया था, अब वह क्योंकर राजा होगये ! और सत्यशील महाव्रत शान्तनु कुमार भीष्मने पहिले राज्य त्याग दिया था, वह फिर उसको नहीं लेंगे, अतएव आज हमलोग तरुणवयवाले रणप्यारे और भेदकेजानकार पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर को भली प्रकार राज्य में बैठावेंगे।२५। वह धर्म्मात्मा युधिष्ठिर शान्तनु

Vaishmpayan continued that the bad natured Duryodhan, seeing the great power of Bhim and the dexterity of Arjun, envied them. The son of Surya and Shakuni, the son of subal, began to plot against the life of the Pandavas. But the Pandavas avoidod their blows and did not disclose them by the advice of Vidur. 22. The citizens finding the Pandavas full of virtue began to talk of them in every society. They began to clamour in meetings and upon platforms that Yudhishthir, the eldest Pandava, was fit for ruling the empire. They said, " The blind king Dhritrashtra did not get the throne before on account of his blindness. How has he become a king now ? The virtuous, vow observing Bhishm having once renounced the kingdom will not take it back again. We will, therefore, install Yudhishthir, the son of Pandu, who is yonng, wise and brave. The

भीष्मंशान्तनवं धृतराष्ट्रंचधर्मवित् । सपुत्रं विविधैर्भोगैर्योजयिष्यति पूजयन् ॥ २८ ॥
तेषांदुर्य्योधनःश्रुत्वा तानिवाक्यानिजल्पताम् । युधिष्ठिरानुरक्तानां पर्य्यतप्यतदुर्मतिः
॥ २९ ॥ सतप्यमानोदुष्टात्मा तेषांवाचोनचक्षमे । ईर्ष्ययाचापिसन्तप्तो धृतराष्ट्रमुपा
गमत् ॥ ३० ॥ ततोविरहितंदृष्ट्वा पितरंप्रतिपूज्यसः । पौरानुरागसन्तप्तः पश्चादिदम
भाषत ॥ ३१ ॥ दुर्योधन उवाच । श्रुतामेजल्पतांतात पौराणामशिवागिरः । त्वा-
मनादृत्यभीष्मञ्च पतिमिच्छन्तिपाण्डवम् ॥ ३२ ॥ मतमेतच्चभीष्मस्य नसराज्यंबुभु-
क्षति । अस्माकन्तुपरांपीडां चिकीर्षन्तिपुरेजनाः ॥ ३३ ॥ पितृतःप्राप्तवान् राज्यं
पाण्डुरात्मगुणैःपुरा । त्वमन्धगुणसंयोगात् प्राप्तंराज्यंनलब्धवान् ॥ ३४ ॥ सएष
पाण्डोर्दायाद्यं यदिप्राप्नोतिपाण्डवः । तस्यपुत्रोध्रुवंप्राप्तस्तस्य तस्यापिचापरः ॥३५॥

नन्दन भीष्म और पुत्रों के सहित धृतराष्ट्र की अवश्य पूजा कर भोगने की नाना वस्तु देवेंगे । अनन्तर युधिष्ठिर के बारेमें प्रजाओं की यह सब बात सुनकर दुर्य्योधन कुमति बड़ा सन्तापितहुआ।वह दुष्टात्मा सन्तापयुक्तहोकर उनकीबात सह नहीं सका, सो द्वेषके मारे जलकर धृतराष्ट्रके पासगया।३०। अनन्तर पिताको निराले में पाकर उचित नियम से प्रणाम कर दुःखी चित्त से युधिष्ठिर पर पुरवासियों के प्रेम के हेतु अनुचित चित्तसे कहने लगा कि, पितः मैंने आन्दोलन करनेवाले पुरवासियों से अशुभ बातें सुनी हैं। पुरवालोंने आपका और भीष्म का अनादर कर पाण्डवोंको अधीश बनाने की कल्पनाकी है इस में भीष्म काभी मत होगा, क्योंकि वह स्वयं राज्य भोगकी इच्छा नहीं रखते पर पुरवासी लोग केवल हम सबोंहीको मर्म्मपीड़ादेनेको उद्यतहुएहैं, पहिले राजापाण्डुने अपने गुणही से राज्य प्राप्त किया था, यद्यपि आप ज्येष्ठता से राज्याधिकारी होने के सुयोग्य थे पर अन्धताके हेतु राज्य पा नहीं सके।३४।अब यदि उन पाण्डुका पुत्र उत्तराधिकारी होकर राज्य पावे तो भविष्यत में उसका पुत्र अवश्यही अधिकारी होगा और उसी

virtuous Yudhishthir will, of course respect and provide for Bhishm and Dhritrashtra with his sons. "Having heard all this from the people, Duryodhan was much displeased. Being bad-natured he could not bear it and went to Dhritrashtra, burning with rage. 30. He sought his father in private and having saluted him with respect he spoke in grief of the love which the citizens bore towards Yudhishthir. He said, "Father, I have heard ominous words from the clamouring citizens. They have resolved to make the Pandavas rulers of the land, disregarding you and Bhishm. Bhishm might have given his consent to it as he does not wish to secure the kingdom for himself. The citizens will therefore harm *us* alone. Pandu had secured the kingdom by his virtue alone. Although being elder born you should have been king, yet on account of your blindness you

तेवयंराजवंशेन हीनाःसहसुतैरपि । अवज्ञाताभविष्यामो लोकस्यजगतीपते ॥ ३६ ॥
सततंनिरयंप्राप्ताः परपिण्डोपजीविनः । नभवेमयथाराजंस्तथा नीतिर्विधीयताम् ३७॥
यदित्वंहिपुराराजन्निदं राज्यमवाप्तवान्। ध्रुवंप्राप्स्यामच वयंराज्यमप्यवशेजने ।३८।

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि दुर्योधनेर्ष्यायां द्विचत्वा
रिंशदधिकशतोऽध्यायः ॥ १४२ ॥

वैशम्पायन उवाच। एवंश्रुत्वातुपुत्रस्य प्रज्ञाचक्षुर्नराधिपः । कणिकस्यचवाक्यानि तानिश्रुत्वाससर्वशः ॥ १ ॥ धृतराष्ट्रोद्विधाचित्तः शोकार्त्तःसमपद्यत । दुर्योधनश्च कर्णश्च शकुनिःसौबलस्तथा ॥ २ ॥ दुःशासनचतुर्थास्ते मन्त्रयामासुरेकतः । ततो दुर्योधनोराजा धृतराष्ट्रमभाषत ॥ ३ ॥ पाण्डवेभ्योभयं नःस्यात्तान्विवासयतांभवान । निपुणेनाभ्युपायेन नगरंवारणावतम् ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्रस्तुपुत्रेण श्रुत्वावचनमीरि

प्रकार सिलसिले वार उनके वंश वाले राजा हुआ करेंगे । हे जगपते ऐसा होने से हम सबों को पीढ़ी के क्रम से राज वंशियों में न गिने जाकर सबोंके अनादर के साथ जीना पड़ेगा । अतएव हे महाराज ! ऐसी कोई अच्छी नीति ठहरावें, कि हम सबों को पराई कृपापर पेट पालना न पडे । हे नरनाथ ! पहिले यदि राज्यको प्राप्ति करते तो प्रजाओं के वश में न रहनेसे भी हमारी राज्य प्राप्तिमें कोई सन्देह नहीं रहता । ३८ ।

अध्याय १४३ ॥

श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि प्रज्ञानेत्र महीपाल धृतराष्ट्र पुत्रकी ऐसी बातें सुन और कणिक से जो कथा सुनी थी पूरी पूरी उसे यादकर चित्त में द्विविधा करने लगे और शोक युक्त हुए तत्पश्चात् दुर्योधन ने कर्ण, शकुनि और दुःशासन इन तीनों से सहमत होकर युक्ति पूर्वक राजा धृतराष्ट्र से कहा, कि आप किसी चतुर उपाय से पाण्डवोंको वारणावत में भेज दें ऐसा करने से उनसे हमको फिर कोई भय नहीं रहेगा ।४।

---

could not secure the throne. 34. Now, if the son of Pandu gets the throne, his son will be king after him and so on. The kingdom shall pass into his family and being deprived of the kingdom we shall have to pass a life of ignominy. Therefore, O king, devise a good plan so that we may not be forced to live upon the bounty of others. If you had got the kingdom before we should now have no difficulty in securing the throne. 38.

CHAPTER CXLIII

Vaishampayan said that the blind king Dhritrashtra, having heard this from his son and remembered the words of *Kanik*, fell into a state of suspense and grief. Duryodhan, with the advice of Karan, Shakuni, and Dushasan, asked the king to send the Pandavas away to Barnavat in order to be free from their fear.

तम् । मुहूर्त्तमिवसश्चिन्त्य दुर्य्योधनमथाब्रवीत् ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । धर्मनित्यः सदापाण्डुस्तथा धर्मपरायणः । सर्वेषुज्ञातिषुतथा मयित्वासीद्विशेषतः ॥ ६ ॥ नास्मै किंचिद्विजानाति भोजनादिचिकीर्षितम् । निवेदयतिनित्यंहि ममराज्यंधृतव्रतः ।७। तस्यपुत्रोयथापाण्डुस्तथा धर्मपरायणः । गुणवान् लोकविख्यातः पौरवाणांसुसम्मतः ॥ ८ ॥ सकथं शक्यतेऽस्माभिरपाकर्त्तुं बलादितः । पितृपैतामहाद्राज्यात्ससहायो विशेषतः ॥ ९ ॥ भृताहिपाण्डुनामात्या बलंचसततंभृतम् । भृताःपुत्राश्चपौत्राश्च तेषामपिविशेषतः ॥ १० ॥ तेपुरासत्कृतास्तात पाण्डुनानागराजनाः । कथंयुधिष्ठिरस्यार्थे ननोहन्युःसबान्धवान् ॥ ११ ॥ दुर्योधन उवाच । एवमेतन्मयातात भावितंदोषमात्मनि । दृष्ट्वाप्रकृतयःसर्वा अर्थमानेनपूजिताः ॥ १२ ॥ ध्रुवमस्मत्सहायास्ते भविष्यन्तिप्रधानतः । अर्थवर्गःसहामात्यो मत्संस्थोऽद्यमहीपते ॥ १३ ॥ सभवान्पाण्डवानाशु विवासयितुमर्हति । मृदुनैवाभ्युपायेन नगरंवारणावतम् ॥ १४ ॥ यदाप्रति

पुत्रकी बात सुनकर उन्होंने क्षणभर चिन्ता की फिर कहा कि पाण्डु धर्मशील, सम्पूर्ण ज्ञातियोंसे विशेष मुझ से सदा धर्म अनुसार व्यवहार किया करतेथे, उनको भोजन वस्त्र किसी विषयमें चाह नहीं थी, । वह सदा व्रतधारी होकर मेरे हाथ सब राज्य सौंपदिये रहते थे । अब उनके पुत्रभी उन के समान धर्म शील गुणवन्त भूमण्डलमें प्रसिद्ध और पुरवासियोंके प्यारेहुएहैं, सो उस पाण्डुनन्दनको हम क्योंकर पैत्रिकराज्यसे निकालसकते हैं विशेष वह सहायवर्जित नहींहै ।९। महाराज पाण्डु मन्त्रि, सेना और उनके बेटे पोतों को सदा पालते पोषतेथे ऐ बेटा ! जब नगर के सब लोग पाण्डु से सत्कृत हुएहैं तब उन के पुत्र युधिष्ठिरके लिये वे क्यों हमको और हमारे बान्धवोंको न बिगाडेंगे।११। दुर्योधन ने कहा कि हे पिता आपने जो आज्ञाकी वोहतो ठीकहै परन्तु अपने और मेरे अहितको शोचकर सब प्रजा को धन और मान से पूजित करने से वे हमारे बढनेके लिये अवश्य ही सहायकरेंगे क्योंकि इससमय धन और मन्त्री हमारेही हाथमेंहैं इसलिये हेपृथ्वीनाथ!

On this Dritrashtra considered a while and then said, "The virtuous Pandu had the greatest regard for me. He did not care much for food or dress. He used to entrust me his state offairs and was himself engaged in observing vows. His sons, like him, are virtuous, famous and dear to subjects. How can I deprive the son of Pandu of his paternal kingdom? Besides, he is not destitute of help. 9. Pandu used to take care of the ministers, the armies, and their families. Why will the people not try to ruin us for the sake of Yudhishthir, the son of Pandu." 11. Duryodhan said, "It is true. O father, what you say. But thinking of our present good or otherwise, the people shall surely side with us when we will offer them wealth and respect. We are now in

ष्ठिते राज्ये मयि राजन्भविष्यति। तदा कुन्ती सहापत्या पुनरेष्यति भारत ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । दुर्योधनममाप्येतद्धृदि संपरिवर्त्तते । अभिप्रायस्य पापत्वान्नैतं तु विवृणोम्यहम् ॥ १६ ॥ नच भीष्मो नच द्रोणो नच क्षत्ता न गौतमः । विवास्यमानान् कौन्तेयाननुमंस्यन्ति कर्हिचित् ॥ १७ ॥ समा हि कौरवेयाणां वयं ते चैव पुत्रक । नैते विषमपिच्छेयुर्धर्मयुक्ता मनस्विनः ॥ १८ ॥ ते वयं कौरवेयाणामेतेषांच महात्मनाम् । कथं न वध्यतान्तात गच्छाम जगतस्तथा ॥ १९ ॥ दुर्योधन उवाच । मध्यस्थः सततं भीष्मो द्रोणपुत्रो मयि स्थितः । यतः पुत्रस्ततो द्रोणो भविता नात्र संशयः ॥ २० ॥ कृपः शारद्वतश्चैव यत एतौ ततो भवेत् । द्रोणंच भागिनेयञ्च नसत्यक्ष्यति कर्हिचित् ॥ २१ ॥ क्षत्तार्थबद्धस्त्वस्माकं प्रच्छन्नं संयतः परैः । नचैकः स समर्थोऽस्मान् पाण्डवार्थेऽधिबाधितुम् ॥

आप किसी उत्तम उपायसे शीघ्र पाण्डवोंको वारणावत में भेजिये । हे राजन् ! जब कुछकाल पीछे राज मेरे हाथमें आजावेगा तब पाण्डवगण कुंतीसहित फिर यहां लौटेंगे १५ धृतराष्ट्र ने कहा कि हे दुर्योधन तुम ने जो बातकही वही मेरे चित्तमेंभी है परन्तु इसे पाप अभिप्राय जानकर प्रकाश नहीं करता । भीष्म, द्रोण, कृप और विदुर इनमें से कोईभी कदापि सम्मत नहीं होंगे कि पाण्डवगण निकाल दियेजांय हे पुत्र ! कुरुवंशियोंको तुम और पाण्डव दोनों समानहो इसमें संदेह नहीं है सो वे महानुभाव लोग कभी दोनों पक्षोंमें किसी को घट बढ करना नहीं चाहेंगे पांडवों को भगाकर हम लोग कौरवों और उन महात्माओं और पृथ्वी भर के लोगोंसे वध किये जानेके योग्य होंगे।१९। दुर्योधनने कहा कि भीष्म हम दोनों पक्षोंसे बराबर स्नेह करते हैं द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा मेरेही पक्ष में हैं सो इसमें संदेह नहीं है कि आचार्यद्रोण को हमारी तरफ रहना पड़ेगा जिस पक्ष में उन के पुत्र हैं और जिस पक्ष में पिता पुत्र यह दोनों रहेंगे शारद्वत कृपभी अवश्यही उसी पक्षमें रहेंगे क्योंकि वोह कभी भानजे और द्रोणको नहीं छोडसकेंगे ।२१।

possession of the treasury and the ministers are under our control. Manage to send the Pandavas away to Barnavat. They may return home after some time when the kingdom will be under my control."15. Dhritrashtra said, "I intended to do something of the sort, but did not do so thinking it to be a sin. Bhishm, Drona, Kripa, and Vidur, none of them will consent to the Pandavas' being driven away. The Pandavas and we are alike to them. Tney will not like to see any difference being made between the two. We will be in danger of being killed by the Kauravas and, indeed, by all the people of the world, if we drive away the Pandavas."19. Duryodhan said, "Bhishm loves us both sides, alike. Drona's son Ashwathama is on my side and Drona is sure to be on the side on which his son is. Sharadwat Krip

॥ २२ ॥ सुविश्रब्धःपाण्डुपुत्रान् सहमात्राप्रवासय । वारणावतमद्यैव यथायान्तितथा कुरु ॥ २३ ॥ विनिद्रकरणंघोरं हृदिशल्य मिवार्पितम् । शोकपावकमुद्भूतं कर्मणैतन नाशय ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि दुर्योधनपरामर्शे त्रिचत्वा रिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १४३ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततोदुर्योधनोराजा सर्वाःप्रकृतयःशनैः । अर्थमानप्रदानाभ्यां संजहारसहानुजः ॥ १ ॥ धृतराष्ट्रप्रयुक्तास्ते केचित्कुशलमन्त्रिणः । कथयां चक्रिरेरम्यं नगरंवारणावतम् ॥ २ ॥ अयंसमाजःसुमहान् रमणीयतमोभुवि । उपस्थितःपशुपतेर्नगरे वारणावते ॥ ३ ॥ सर्वरत्नसमाकीर्णे पुंसांदेशेमनोरमे । इत्येवं धृतराष्ट्रस्य वचनाच्चक्रिरेकथाः ॥ ४ ॥ कथ्यमानेतथारम्ये नगरेवारणावते । गमने

विदुर हमारे अर्थ से आवद्धहैं और छिपकर पाण्डवों से मिलभी जावें तो वोह अकेले पांडवोंके पक्ष में होकर हमारी कोई हानि नहीं करसकें गे अतएव आप निःशंक चित्तसे पांडवों को उनकी माताके सहित यहांसे दूर कीजिये ऐसा प्रयत्न कीजिये कि वेआजही वारणावतको जांय निद्राकी नाश करनेवाली शोकाग्नि मानों कठोर शूलीकी नाईं मेरे हृदय में गढरही है आप यह काम करके उसको निकाललीजिये ॥ २४ ॥

अध्याय १४४ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर राजा दुर्योधन अपने छोटे भाइयों से मिलकर सम्मान और धन देकर क्रमशः प्रजावर्गको वश में लाये कई एक कार्य दक्षमंत्री धृतराष्ट्र की आज्ञा से वारणावत नगरको सुन्दर कहकर यह प्रशंसाकरने लगे कि थोड़े दिनोंमें वारणावत में अति श्रेष्ठ पाशुपति का महोत्सव होनेवाला है उस का समाज नाना रत्नोंसे भर जायगा उस नगरको देखतेही उसपर हर मनुष्य का चित्त झुका जाता है । हे नर

will of course follow the example of Drona and his son, for he will not leave his sister's son and Drona. Vidur is dependent on us and can do us no harm even if he gives secret help to the Pandavas. You can, therefore, fearlessly remove the Pandavas with mother. Do so manage as the Pandavas may leave this very day for Barnavat. The sleep destroying fire of grief has penetrated my heart. Please extricate it by this act. 24.

CHAPTER CXLIV

Vaishampayan said that king Duryodhan and his brothers, gradually, brought the subjects under their control by the grants of donations and honours. By the order of Dhritrashtra some cunning ministers praised the beauty of Barnavat. They said that at the grand festival of Pashupati the festival house would be filled in

पाण्डुपुत्राणां जज्ञेतत्रमतिर्नृप ॥ ५ ॥ यदात्वमन्यतनृपो जातकौतूहलाइति । उवा चैतानेथतदा पाण्डवानम्बिकासुतः ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । ममैतेपुरुषानित्यं कथ यन्तिपुनःपुनः । रमणीयतमंलोके नगरंवारणावतम् ॥ ७ ॥ तेतातायदिमन्यध्वमुत्सवं वारणावते । सगणाःसान्वयाश्चैव विहरध्वंयथामराः ॥ ८ ॥ ब्राह्मणेभ्यश्चरत्नानि गायनेभ्यश्चसर्वशः । प्रयच्छध्वंयथाकामं देवाइवसुवर्च्चसः ॥ ९ ॥ कंचित्कालंविहृत्यै वमनुभूय परांमुदम् । इदंवैहास्तिनपुरं सुखिनःपुनरेष्यथ ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच धृतराष्ट्रस्यतंकाममनुबुद्ध्वा युधिष्ठिरः । आत्मनश्चसहायत्वं तथेतिप्रत्युवाचतम् । ११ ततोभीष्मंशान्तनवं विदुरञ्चमहामतिम् । द्रोणंचबाह्लिकंचैव सोमदत्तंचकौरवम् ॥ ॥ १२ ॥ कृपमाचार्य्यपुत्रंच भूरिश्रवसमेवच । मान्यानन्यानमात्यांश्च ब्राह्मणांश्चतपो धनान् ॥ १३ ॥ पुरोहितांश्चपौरांश्च गान्धारींच यशस्विनीम् । युधिष्ठिरःशनैर्दीन उवा

नाथ ! वारणावत नगरकी सुन्दरता इस प्रकार कही जानेपर पांडवोंका मन वहां जानेके लिये दौड़ा अम्बिका पुत्र राजा धृतराष्ट्रने जब समझा कि वारणावत नगरको देखने के लिये पांडवों का मन चला है तब उन से कहा कि हेपुत्रो यह सबलोग मुझसे बार २ कहाकरते हैं कि भूमंडलमें वारणावतनगर बड़ा सुन्दर है तुम वहां उत्सव देखना चाहो तो परिवार साथियों समेत वहां जाकर देवताओंकी भांति आनन्दकरो । ८ । और गवैयों और ब्राह्मणोंको मनमाना धन रत्नादि देतेरहो इसप्रकार से परम तेजस्वी सुरोंके समान कुछ काल विहारकर अच्छी प्रीति लाभकरो और अंत में कुशल से हास्तिनपुर में लौट आओ युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र का अभिप्राय समझ कर और अपनेको असहाय जानकर यह उत्तर दिया कि आप जैसी आज्ञा करते हैं वही होगा । ११ । अनन्तर उन्हों ने शांतनु पुत्र महामति विदुर, द्रोण, वाह्लिक, कौरव, सोमदत्त, कृप, आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा, भूरिश्रवा और दूसरे माननीय जनों और मन्त्रियों, ब्राह्मणों, तपोधनों, पुरोहितों, पुरवासियों और यशस्विनी गांधारीसे दीनता पूर्वक कोमलभाव से कहा कि

with precious things and that every one desired to witness the beauty of the city. On hearing the praises of Barnavat the Pandavas were inclined to see the city. When king Dhritrashtra knew of their desire he said to them, "These people have often praised, my sons, the beauty of Barnavat. If you wish to witness the festival you may go there, with family and followers and make merry like gods, giving donations to Brahmans and bards 8. You will pass your time there like gods and return hither at your pleasure. Yudhishthir understood the purpose of Dhritrashtra and finding himself helpless replied, "It shall be as you direct."11. The Pandvas then paid a visit to Bhishm, Vidur, Drona,

चेर्द्वचहाद्रा ॥ १४ ॥ रमणीयेजनाकीर्णे नगरेवारणावते । सगणास्तत्रयास्यामो धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ १५ ॥ प्रसन्नमनसःसर्वे पुण्यावाचोविमुंचत । आशीर्भिर्बृंहितानस्मान्नपापं प्रसहिष्यते ॥ १६ ॥ एवमुक्तास्तुतेसर्वे पाण्डुपुत्रेणकौरवाः । प्रसन्नवदनाभूत्वा तेऽन्ववर्त्तन्तपाण्डवान् ॥१७॥ स्वस्त्यस्तुवःपथिसदा भूतेभ्यश्चैवसर्वशः । माचवोऽस्त्वशुभंकिंचित् सर्वशःपाण्डुनन्दनाः ॥ १८ ॥ ततःकृतस्वस्त्ययना राज्यलम्भाय पार्थिवाः । कृत्वासर्वाणि कार्य्याणि प्रययुर्वारणावतम् ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि वारणावतयात्रायां चतुश्चत्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १४४ ॥

वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तेषुराज्ञातु पाण्डुपुत्रेषुभारत । दुर्य्योधनःपरं हर्षमगच्छत्सदुरात्मवान् ॥ १ ॥ सपुरोचनमेकान्तमानीय भरतर्षभ । गृहीत्वादक्षिणेपाणौ सचिवंवाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥ दुर्य्योधन उवाच ममेयंवसुसम्पूर्णा पुरोचनवसुन्धरा। यथेयंममतद्वत्ते सतांरक्षितुमर्हसि ॥ ३ ॥ नहिमेकश्चिदन्योऽस्ति विश्वासिकतरस्त्वया

हम राजा धृतराष्ट्र की आज्ञा से साथियों समेत अति सुन्दर वर्णो से भरे वारणावत नगर में जायँगे आप प्रसन्न चित्तसे पुण्यवचन कहिये कि आप के आशीसोंसे हम बुद्धि को प्राप्तकर पापयुक्त न होवें सम्पूर्ण कौरव युधिष्ठिरकी यह बात सुनकर पांडवों की इच्छानुरूप यह बोले कि पथ में सबों से सदा तुम लोगोंका मंगलहोगा । हे पांडवों तुम पर कोई अहित न होनेपावे अनन्तर पांडव स्वस्तयन करके राज्य लाभ के लिये सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मो को पूराकर बारणावत नगरकी यात्राके लिये प्रस्तुत होनेलगे ॥ १९ ॥

अध्याय १४५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे भारत ! राजा धृतराष्ट्र के पांडवों को ऐसी आज्ञा देने पर दुरात्मा दुर्योधन को बड़ा हर्ष हुआ और पुरोचन नामक मंत्री को अलग बुलाकर और दहना हाथथांभकर बोला ।२। कि हे पुरोचन यह धन भरी धरती मेरेवशमें है इस पर मेरा जितना अधिकार है तुम्हारा भी उतनाही है सो तुमको उसकी रक्षा करनी चाहिये

Valhik, Somdatt, Ashwathama, Bhurishrawa and other respectable people among Brahmans, Rishis, priests aud citizens. They humbly told Gandhri that with the permission of Dhritrashtra they were going to the beautiful and populous city of Barnavat and asked her blessings. All the Kauravas wished the *Pandavas* a happy journey and general welfare. The *Pandavas* thereupon made preparations for their journey.19.

CHAPTER CXLV

Vaishampayan said that the bad natured Duryohan was much pleased when he heard that the Pandavas were ordered by the king to go away. He called Purochan the minister in private and holding up his right hand he began, "You know, *Purchan*, this country full of

सहायोयेनसन्धाय मन्त्रयेयंयथात्वया ॥ ४ ॥ संरक्षतातमन्त्रंच सपत्नांश्चममोद्धर । निपुणेनाभ्युपायेन, यद्ब्रवीमितथाकुरु ॥ ५ ॥ पाण्डवाधृतराष्ट्रेण प्रेषितावारणावतम्। उत्सवेविहरिष्यन्ति धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ६ ॥ सत्वंरासभयुक्तेन स्यन्दनेनाशुगामिना । वारणावतमद्यैव यथायासितथाकुरु ॥ ७ ॥ तत्रगत्वाचतुःशालं गृहंपरमसंवृतम् । नगरोपान्तमाश्रित्य कारयेथामहाधनम् ॥ ८ ॥ शणसर्ज्जरसादीनि यानिद्रव्याणिकानिचित् । आग्नेयान्युतसन्तीह तानितत्रप्रदापय ॥ ९ ॥ सर्पिस्तैलवसाभिश्च लाक्षयाचाप्यनल्पया । मृत्तिकांमिश्रयित्वात्वं लेपंकुड्येषुदापय ॥ १० ॥ शणंतैलंघृतं चैव जतुदारूणिचैवहि । तस्मिन्वेश्मनिसर्वाणि निक्षिपेथाःसमन्ततः ॥ ११ ॥ यथा चतन्नपश्येरन् परीक्षन्तोऽपिपाण्डवाः । आग्नेयमितितत्कार्य्यमपि चान्येऽपिमानवाः १२

देखो तुम से अधिक विश्वासी, सहायक मेरा कोई नहीं है कि जिस से मिलकर ऐसा परामर्श करूं जैसा तुम से करसक्ता हूं तुम इस परामर्शको भली प्रकार छिपाकर मेरे शत्रु को नष्ट करडालो और मैं जो कुछ कहता हूं वोह कौशलयुक्त अच्छे उपायों से पूराकरो।५। धृतराष्ट्र ने पांडवों को वारणावत नगरमें जानेकी आज्ञादी है वे धृतराष्ट्र की आज्ञा से पाशुपत उत्सव में वहांजायंगे इस लिये तुम ऐसा करो कि आजही खच्चर जोड़कर शीघ्रगामी रथ पर वारणावत में जाओ और वहां जाकर नगरके छोर में अनेक धन खर्चकर के भले प्रकार घेरा हुआ एक चौपाल घर वनाओ सन धूप आदि जितनी आग लगने वाली वस्तु हैं और घृत, तेल चर्वी आदिसे कुछ मिट्टी मिलाकर उसकी भीतोंको पुतवा रखना । १० । और सन तेल घृत लाह और लकड़ी यह सब वस्तुएं उस घर में हर स्थान में डाल रखना और ऐसा करो कि पांडव लोग वा और कोई विशेष परीक्षा से वह न समझ सकें कि वह गृह आग से जलने वाला है इस प्रकार गृह बनवा कर पांडवों और मित्रों सहित कुंतीको आदर पूर्वक वहां ठहरावो और वहां पांडवों के लिये

wealth is in my possession. You have as much authority over it as I have. You will have to protect it. Look here! I have no helpmate more trustworthy than you. I can not disclose my secret to any one else. Keep well the secret and destroy my enemy. Use all your dexterity in doing the deed. 5. The king has given the *Pandavas* permission to go to Barnavat at the time of the *Pashupat* festival. Take a chariot of swift mules to enable you to reach there this very day. You will build a spacious house whatever the expense may be, in a secluded corner of the city. Inflammable materials should be used in the construction. The walls should have a plaster of mud mixed with butter, oil, tallow and other igniting materials. 10. Such things should also be scattered in various parts of the building, conceiled in such a way as not to excite suspicion. The *Pandavas* should be made

वेश्मन्येवंकृतेतत्र गत्वातान् परमार्चितान् । वासयेथाःपाण्डवेयान् कुन्तींच ससुहृज्जनाम् ॥ १३ ॥ आसनानिचदिव्यानि यानानिशयनानिच । विधातव्यानि पाण्डूनां यथातुष्येतवैपिता ॥ १४ ॥ यथाचतन्नजानन्ति नगरेवारणावते । तथासर्वं विधातव्यं यावत् कालस्यपर्य्ययः ॥ १५ ॥ ज्ञात्वाचतान् सुविश्वस्तान् शयानानकुतोभयान् । अग्निस्त्वयाततोदेयो द्वारतस्तस्यवेश्मनः ॥ १६ ॥ दह्यमानेस्वकेगेहे दग्धा इतिततोजनाः । नगर्हयेयुरस्मान्वै पाण्डवार्थायकर्हिचित् ॥ १७ ॥ सतथेतिप्रतिज्ञाय कौरवायपुरोचनः । प्रायाद्रासभयुक्तेन स्यन्दनेनाशुगामिना ॥ १८ ॥ सगत्वात्वरितराजन् दुर्य्योधनमतेस्थितः । यथोक्तंराजपुत्रेण सर्वंचक्रेपुरोचनः ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि पुरोचनोपदेशे पञ्च
चत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः ॥ १४५ ॥

सुंदर शय्या, आसन और यान इस प्रकार बनवा रखना कि पिता संतुष्ट होवें और इस को ऐसे प्रकार करना कि वारणावत नगर का कोई मनुष्य इस विषय में कुछ जान न सके फिर ठीक समय आने पर अर्थात् जब पांडवों को उस गृह में अच्छे विश्वास पूर्वक सोते और निःशंक होते देखो तबही उस गृहके द्वारमें आगलगाना।१६।इस में संदेह नहीं कि उस से पांडव जल मरेंगे और प्रजा समझेगी कि पांडव घरमें आग लगनेही से जल मरे सो पांडवों के लिये वोह कभी हमारी निंदा नहीं करसकेंगे पुरोचन दुर्योधन से उस बातकी प्रतिज्ञा कर अच्छे खच्चर जोड़ कर शीघ्र गामी रथपर गया । हे राजन् दुर्योधन की आज्ञानुसार पुरोचन शीघ्रता पूर्वक वारणावत में पहुंच कर राजकुमार दुर्योधन के कहेहुए सब काम पूरे करने लगा ॥ १९ ॥

to reside in that house. It should be well furnished with beddings and other furniture to please my father. The matter should be kept secret from all the residents of Barnavat. You will then set fire to the door of the house when you find the *Pandavas* feeling themselves secure and in the enjoyment of their sound sleep. 16. The *Pandavas* will of course burn with the house and the citizens, thinking that the house had caught fire by chance, will not blame us." *Purochan* promised to do all and went to Barnavat on a chariot of swift going mules. On reaching Barnavat he began to make preparations according to the directions of ~~Yudhishthir~~. 19.

Duryodhan



वैशम्पायन उवाच । पाण्डवास्तुरथान्युंक्त्वा सदश्वैरनिलोपमैः । आरोहमाणा भीष्मस्य पादौजगृहुरार्त्तवत् ॥ १ ॥ राज्ञश्चधृतराष्ट्रस्य द्रोणस्यचमहात्मनः । अन्येपाञ्चैवबृद्धानां कृपस्यविदुरस्यच ॥ २ ॥ एवंसर्वान् कुरून् वृद्धानभिवाद्ययतव्रताः । समालिंग्यसमानान्वै बालैश्चाप्यभिवादिताः ॥ ३ ॥ सर्वामातृस्तथापृच्छ्य कृत्वाचैवप्रदक्षिणम् । सर्वाःप्रकृतयश्चैव प्रययुर्वारणावतम् ॥ ४ ॥ विदुरश्च महाप्राज्ञस्तथान्येकुरुपुङ्गवाः । पौराश्च पुरुषव्याघ्रानन्वीयुः शोककर्षिताः ॥ ५ ॥ तत्रकेचिद्ब्रुवन्ति स्म पौरजानपदानराः । दीनान्दृष्ट्वा पाण्डुसुतानतीव भृशदुःखिताः ॥ ६ ॥ विषमं पश्यतेराजा सर्वथासमन्दधीः । कौरव्योधृतराष्ट्रस्तु नचधर्मंप्रपश्यति ॥ ७ ॥ नहि पापमपापात्मा रोचयिष्यतिपाण्डवः । भीमोवावलिनांश्रेष्ठः कौन्तेयोवाधनञ्जयः ॥ ॥ ८ ॥ कुतएवमहात्मानौ माद्रीपुत्रौकरिष्यतः । तान्राज्यंपितृतः प्राप्तान् धृतराष्ट्रोन

अध्याय ॥ १४६ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर व्रतशील पांडव लोग रथों में पवन की समान वेगवान् अच्छे २ घोड़े जोत कर चढ़ते समय कातर होकर भीष्म राजा धृतराष्ट्र महात्मा द्रोण,विदुर,कृप, और दूसरे वृद्धोंके पांव छूनेलगे।२। इसप्रकार अपने से बड़े कौरवों को प्रणाम किया बराबरवालों को गले लगाया और बालकों का प्रणाम लेकर सब माताओंकी आज्ञा से और उनको प्रदक्षिणा कर प्रजाओं से सम्भाषण पूर्वक वारणावत नगरको गये महाप्राज्ञ विदुर और दूसरे कौरवोंमें प्रधानलोग पुरवासी शोकाकुलहोकर पुरुषोंमें व्याघ्ररूपी पांडवों के पीछे चले और उनके चित्त को मलिन देखकर अति दुःख से कहने लगे कि कुरुवंशी राजाधृतराष्ट्र दुष्ट बुद्धिसे पक्षपात करतेहैं और धर्मकी ओर दृष्टि नहीं देते।७। पापरहित पांडुपुत्र कुंतीनंदन युधिष्ठिर, महाबलीभीम और धनंजय कभी विद्रोहरूपी पापकी इच्छा नहीं करते सो महात्मा माद्री कुमार भी चुपरहेंगे हाय कैसा भारी दुःखहै पांडवों

CHAPTER CXLVI

Vaishampayan said that the virtuous *Pandavas,* when about to start in swift chariots, began, with a heavy heart, to touch the feet of Bhishma, Dhirtrashtra, Drona, Vidur, Kirpa and the other elders.2.Thus having bowed to the superiors, embraced the equals and been respected by inferiors,the *Pandavas* took leave of the grandmothers to go to Barnavat after talking with the people. The wise Vidur, the Kaurav chiefs and the citizens followed the *Pandavas* in great grief. And some of the citizens and the villagers, seeing the *Pandavas* in distress, said with a heavy heart, " King Dhritrashtra of theKuru family has by his crooked policy done wrong. He has gone astray from the path of virtue.7. The sinless Yudhisthir, the powerful Bhim, and Arjun have never caused illfeelings.

मृष्यते ॥ ९ ॥ अधर्म्यमिदमत्यन्तं कथंभीष्मोऽनुमन्यते । विवास्यमानानस्थाने नग
रेयोऽभिमन्यते ॥ १० ॥ पितेवहि नृपोऽस्माकमभूच्छान्तनवः पुरा । विचित्रवीर्य्यो
राजर्षिः पाण्डुश्च कुरुनन्दनः ॥ ११ ॥ सतस्मिन पुरुषव्याघ्रे देवभावंगतेसति । राज
पुत्रानिमान्बालान् धृतराष्ट्रोनमृष्यते ॥ १२ ॥ वयंमतदनिच्छन्तः सर्वएवपुरोत्तमात्।
गृहान्विहायगच्छामो यत्रगन्तायुधिष्ठिरः ॥ १३ ॥ तांस्तथावादिनःपौरान दुःखिता
न्दुःखिकर्षितः । उवाचमनसाध्यात्वा धर्मराजोयुधिष्ठिरः ॥ १४ ॥ पितामान्योगुरुः
श्रेष्ठो यदाहपृथिवीपतिः । अशंकमानैस्तत् कार्य्यमस्माभिरितिनोव्रतम् ॥ १५ ॥
भवन्तःसुहृदोऽस्माकमस्मान कृत्वाप्रदक्षिणम् । प्रतिनन्द्यतथाशीभिर्निवर्त्तध्वं यथागृ
हम् ॥ १६ ॥ यदातुकार्य्यमस्माकं भवद्भिरुपपत्स्यते । तदाकरिष्यथास्माकं प्रियाणि

का पितृराज पानाभी धृतराष्ट्र से सहा नहीं जाता इस अति अधर्म युक्त कर्म में भीष्म ने क्यों अनुमति दी इसअन्याय पूर्वक पांडवों के निकालनेमें क्यों उनकी सम्मतिहुई।१०।पहले शांतनु नन्दन राजर्षि विचित्र वीर्य और कुरुनंदन पांडुने हमको पिता के समान पालाथा उस पुरुष व्याघ्र पांडु के स्वर्गको सिधारने पर अब धृतराष्ट्र इन बालक राज कुमारों पर द्वेष युक्त होगये हैं क्या ऐसे अत्याचार पर हमारी सम्मति हो सक्ती है चाहे जो कुछ हो युधिष्ठिर जहां जांयगे हम सब घरको छोड़ कर इस नगर से जांयगे पुरवासी लोग दुःखित होकर ऐसा आंदोलन कर रहेथे कि धर्मराज युधिष्ठिर मनही मनमें कुछ काल शोच कर दुःख युक्त चित्तसे उनसे बोले।१४। कि राजा धृतराष्ट्र हमारेपिता माननीय और गुरू हैं और बड़ी प्रधान हैं हमारा यह व्रत है कि उन्होंने जो कुछ कहाहै उसे हम विना शंका पूरा करेंगे आप लोग हमारे हितकारी हैं हम पर कृपा करके अशीस देकर अपने अपने घरको लौट जांय जब आप लोगोंसे हमारा कोई आवश्यकीय कामपड़ेगा

The sons of Madri, too, are quiet! Dhritrashtra could not bear seeing the *Pandavas* installed on the throne of their father. Can Bhishm give his consent to such unjustice ? How did he allow the unjust removal of the *Pandavas* ? Rajarshi Vichitra-virya and *Pandu* used to take care of us like a father.11.On the death of *Pandu*, the lion among men, Dhritrashtra bears enmity with the young princes. Can we allow such ill-treatment ? Come what it may, we shall follow Yudhishthir wherever he goes and leave our homes and the city.13. The citizens were thus clamouring when Yudhishthir the just, having reflected for a while in his mind, spoke to them with a heavy heart. He said. " King Dhritrashtra is our father, venerable, superior and chief. It is our duty to obey his orders implicitly. You are our well wishers. Be pleased to return home wlth your blessings on us. We will

चहितानिच ॥ १७ ॥ एवमुक्तास्तदापौराः कृत्वाचापिप्रदक्षिणम् । आशीर्भिश्चाभिनं
द्यैनान् जग्मुर्नगरमेवहि ॥ १८ ॥ पौरेषुविनिवृत्तेषु विदुरःसर्वधर्मवित् । बोधयन्
पाण्डवश्रेष्ठ मिदं वचनमब्रवीत् ॥ १९ ॥ प्राज्ञःप्राज्ञप्रलापज्ञः प्रलापज्ञमिदंवचः । यो
जनातिपरप्रज्ञां नीतिशास्त्रानुसारिणीम् । विज्ञायेहतथाकुर्य्यादापदं निस्तरेद्यथा ॥
॥ २० ॥ अलोहंनिशितंशस्त्रं शरीरपरिकर्त्तनम् । योवेत्तिन तुतंघ्नन्ति प्रतिघातविदं
द्विषः ॥ २१ ॥ कक्षघ्नःशिशिरघ्नश्च महाकक्षेबिलौकसः । नदहेदितिचात्मानं योरक्ष-
तिसजीवति ॥ २२ ॥ नाचक्षुर्वेत्तिपन्थानं नाचक्षुर्विन्दतेदिशः । नाधृतिर्बुद्धिमाप्नोति
बुध्यस्वैवंप्रबोधितः ॥ २३ ॥ अनाप्तैर्दत्तमादत्तेनरः शस्त्रमलोहजम् । श्वाविच्छरणमा

तब हमारे उस काम को प्रिय और हितयुक्त जानकर करना पुरवासी लोग युधिष्ठिरकी यह बात सुनकर प्रदक्षिणा पूर्वक आशीस देरकर कातरभाव से नगरको गये।१८। उनके सम्पूर्ण रूप से लौटने पर सब नीतियोंके जानने वाले विदुर पांडवोंमें प्रधान युधिष्ठिर को सावधान करने के लिये कहनेलगे और इसलिये कि और लोग न समझ सकें विदुरने म्लेच्छ भाषामें इशारे से यह कहा कि जो शत्रु के चेष्टित विषयको नीतिशास्त्र के अनुसार जानसके उनको समझकर ऐसा काम करना चाहिये कि विपदसे बचसकें जो लोग ऐसे अस्त्र को कि जो लोहेसे न बनाहो पर शरीर को न काटसके और उससे बचने के उपाय को जानते हैं उनको शत्रु बिगाड नहीं सक्ते तृणनाशी और हिमनाशी वस्तु बडे बनके भीतर गढ़ेमें रहने वाले जीवों को नहीं जलासक्ती इस नियम को आश्रय कर जो अपनी रक्षा करते हैं वही जीते रहतेहैं ।२२। जो आंखोंसे नहीं देखते वह न तो पथ जान सक्ते हैं और न दिशा निश्चय करसक्ते हैं जिनको धीरज नहीं है वे ऐश्वर्य प्राप्त नहीं कर सक्ते हैं तुम मेरे इस उपदेश को भलीभांति स्मर्ण रखना जो पुरुष शत्रुओं के बिना

give you work to do when we are in need." The citizens on hearing this offered their blessings and returned with heavy hearts to their homes After their departure, Viur the wise, spoke to Yudhishthir the chief of the Pandavas. 19. In order that others might not understand what he was saying, he talked with Yudhishthir in a foreign language. He warned Yudhishthir in the following brief sentences:- "He who comes to learn by tact the purpose of an enemy should so act as to rid himsef from trouble. He who knows how to counteract a weapon can not come to harm. A thing which can destroy straw and snow can not harm one hiding in a pit in the midst of a large forest. Those who will act upon these rules will remain secure. 22. They, who cannot see with their eyes can neither know the way nor ascertain the directions. They who have no patience can not be wealthy. Remember my words well. He who

साद्य प्रमुच्येतहुताशनात् ॥ २४ ॥ चरन्मार्गान्विजानाति नक्षत्रैर्विंदतेदिशः । आ
त्मानाचात्मनः पंचपीडयन्नानुपीड्यते ॥ २५ ॥ एवमुक्तःप्रत्युवाचधर्मराजो युधिष्ठिरः।
विदुरंविदुषांश्रेष्ठं ज्ञातमित्येवपाण्डवः ॥ २६ ॥ अनुशिक्ष्यानुगम्यैतान् कृत्वाचैवप्रद
क्षिणम् । पाण्डवानभ्यनुज्ञाय विदुरःप्रययौगृहान् ॥ २७ ॥ निवृत्तेविदुरेचापिभीष्मे
पौरजनेतथा । अजातशत्रुमासाद्य कुन्तीवचनमब्रवीत् ॥ २८ ॥ क्षत्तायदब्रवीद्वाक्यं
जनमध्येऽब्रुवन्निव । त्वयाचसतथेत्युक्तो जानीमोनचतद्वयम् ॥ २९ ॥ यदीदंशक्यम-
स्माभिर्ज्ञातुं नचसदोषवत् । श्रोतुमिच्छामितत्सर्वं सम्वादंतवतस्यच ॥ ३० ॥ युधिष्ठिर
उवाच । गृहादग्निश्चबोद्धव्य इतिमांविदुरोऽब्रवीत् । पन्थाश्चवोनाविदितः कश्चित्स्या

लोह के बने अस्त्रों के वश में नहीं है वोह सेही के घरकी भांति दोनो ओर से निकल ने के पथयुक्त बिलों के द्वारा आग से बचसक्ते हैं चलने फिरने से ही पथजाने जासक्ते हैं नक्षत्र से भी दिशाओंका निश्चय हो सक्ताहै जो मनुष्य अपनी पांच वस्तुओं को बुद्धि पूर्वक बचा सक्ते हैं वोह शत्रुओंसे नहीं दबाये जा सक्ते ।२५।पांडुपुत्र धर्म राज युधिष्ठिर विद्वद्वर विदुरकी यह बात सुनकर बोलेकि मैं समझगया विदुर पांडवों को उक्त उपदेश देकर कुछ दूर पीछे चल प्रदिक्षण पूर्वक सम्भाषण कर घरको लौटे भीष्म विदुर और पुरवासी सब के लौट जानेपर कुंतीने अजात शत्रु युधिष्ठिर के पास जाकर कहा कि विदुर के सामने अप्रकाशित अर्थ युक्त जो बात कही और तुमने भी वैसाही उत्तरदिया वोह हमारी समझ में नहीं आया यदि वोह हमारे जान ने योग्य हो और उस के जान ने में कुछ हानि न हो तो तुम दोनोंमें जो बातहुई उसका अभिप्राय हमको बतलाओ।३०। युधिष्ठिरने कहा कि विदुर ने कहा कि गृह में आग लगेगी तुम यह जानकर पहिले से सावधान होजाओ कोई पथ तुम्हारा बेजाना नहीं है जो जितेन्द्रिय होंगे वही भूमंडलपर

is not under the control of his enemy's weapon not made of iron, can protect himself from fire by making two exits to his house like a porcupine. Paths are known by investigation. Directions can be ascertained by stars. They who can wisely protect five things can not be oppressed by an enemy."25. On hearing this from wise Vidur, Yudhishthir said, "I understand! "Having thus advised the *Pandavas*, Vidur returned home. When Bhishm, Vidur and the citizens all had left, Kunti came to Yudhisthir and said, "Vidur had a talk with you in an unintelligible foreign tongue and you replied him in the same language. Let us know the purport of it if it be worth knowing and if their be no harm in disclosing it."30. Yudhishthir replied, "Vidur has warned me that we shall be in danger of fire being set to our house and that we should be on our guard. He further said that those having control over their

द्वितिधर्मधीः ॥ ३१ ॥ जितेन्द्रियश्चवसुधां प्राप्स्यतीतिचमेऽब्रवीत् । विज्ञातमितितत् सर्वं प्रयुक्तोविदुरोमया ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । अष्टमेऽहनिरोहिण्यां प्रयाताः फाल्गुनस्यते । वारणावतमासाद्य ददृशुर्नागरंजनम् ॥ ३३ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि वारणावतगमने षट्-
चत्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १४६ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ ततःसर्वाःप्रकृतयो नगराद्वारणावतात् । सर्वमंगलसंयुक्ता यथाशास्त्रमतन्द्रिताः ॥ १ ॥ श्रुत्वागतान्पांडुपुत्रान् नानायानैःसहस्रशः । अभिजग्मुर्नरश्रेष्ठान् श्रुत्वैवपरयामुदा ॥ २ ॥ तेसमासाद्यकौन्तेयान् वारणावतकाजनाः । कृत्वाजयाशिषःसर्वे परिवार्योपतस्थिरे ॥ ३ ॥ तैर्वृतःपुरुषव्याघ्रो धर्मराजोयुधिष्ठिरः। विबभौदेवसंकाशो वज्रपाणिरिवामरैः ॥ ४ ॥ सत्कृताश्चैवपौरैस्ते पौरान्सत्कृत्यचानघ। अलंकृतंजनाकीर्णं विविशुर्वारणावतम् ॥ ५ ॥ तेप्रविश्यपुरींवीरास्तूर्णंजग्मुरथोगृहान्।

का अधिकार पावेंगे धर्म शील विदुर के ऐसा कहने पर मैंने उनसे कहा कि मैं सब समझ गया । वैशम्पायन ने कहाकि पांडवों ने फागुन के महीने के आठवें दिन रोहणी नक्षत्रमें वारणावतकी यात्राकी और वहां पहुँचेहुए पांडवोंसे नगरवालोंकी भेंटहुई ।३३।

अध्याय १४७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर वारणावत नगरकी सब प्रजा पांडवोंके शुभागमन को सुनकर सुस्ती को छोड शास्त्रानुसार मांगल्य पदार्थ लेकर नानाप्रकार के अगणित यानों पर चढ उनके निकट जापहुँचे वे पांडवोंके निकट जाकर जय जय कारके साथ अशीस देतेहुए चारोंओर खडेहुए।३।देवसदृश पुरुष व्याघ्र धर्मराज युधिष्ठिर तब नगर के लोगोंसे घेरेजाकर सुरनाथके समान शोभा पानेलगे निष्पाप पांडव लोग पुरवासियों से सत्कार पाकर उनकी यथायोग्य अभ्यर्थना कर नानाअलंकारों से अलंकृत जनों से भरे

senses should be lords of the world. upon this I told Vidur that I had understood it." Vaishampayan said that the Pandavas went to Barnavat on the eighth of Phagun in the ascendency of the star Rohini. And having reached there met the citizens,33.

CHAPTER CXLVII

Vaishampayan said that the people of Barnavat having heard of the arrival of the Pandavas to their city, made haste to come to them bringing auspicious things as presents. They cried 'victory to the *Pandavas*' and gathered round them.3. *Yudhishthir* the just the lion among men. surrounded by the city people looked like another Indra. The sinless *Pandavas*, responding to the welcome of the citizens, entered the city filled by well-dressed people, The

ब्राह्मणानांमहीपाल रतानांस्वेषुकर्मसु ॥ ६ ॥ नगराधिकृतानांच गृहाणि
रथिनां तदा । उपतस्थुर्नरश्रेष्ठा वैश्यशूद्रगृहाण्यपि ॥ ७ ॥ अर्च्चिताश्चनरैः पौरैः
पाण्डवाभरतर्षभ । जग्मुरावसथंपश्चात् पुरोचनपुरःसराः ॥ ८ ॥ तेभ्योभक्ष्याणिपाना
नि शयनानिशुभानिच । आसनानिचमुख्यानि प्रददौसपुरोचनः ॥ ९ ॥ तत्रतेसत्-
कृतास्तेन सुमहार्हपरिच्छदाः । उपास्यमानाःपुरुषै रूषुः पुरनिवासिभिः ॥ १० ॥
दशरात्रोषितानान्तु तत्रतेषांपुरोचनः । निवेदयामासगृहं शिवाख्यमशिवंतदा ॥ ११ ॥
तत्रतेपुरुषव्याघ्रा विविशुःसपरिच्छदाः । पुरोचनस्यवचनात् कैलासमिवगुह्यकाः
॥ १२ ॥ तच्चागारमभिप्रेक्ष्य सर्वधर्मभृतांवरः । उवाचाग्नेयमित्येवं भीमसेनंयुधिष्ठिरः
॥ १३ ॥ युधिष्ठिर उवाच । जिघ्राणोऽस्यवसागन्धं सर्पिर्जतुविमिश्रितम् । कृतंहि
व्यक्तमाग्नेय मिदंवेश्मपरन्तप ॥ १४ ॥ शणसर्जरसं व्यक्तमानीय गृहकर्मणि ।

वारणावत नगर में जा पहुँचे वीर पांडुनन्दन पुरमें प्रवेशकर पहिले वेदपढने आदि सुकर्म में नियुक्त ब्राह्मणोंके घरों में गये फिर क्रम से नगरपाल रथी वैश्य और शूद्रोंके घरों में भी गये ।७। हे भारत श्रेष्ठ ! पांडुपुत्र गण पुरवासियोंसे पूजे जाकर पुरोचन के साथ घरमें गये पुरोचन उनको अच्छे २ भोजन और पानकी वस्तु शय्या और उत्तम आसनादि देनेलगा बहुत मूल्यवान वस्त्र पहिनेहुए पांडवगण पुरोचनकी सेवा और पुरवासियों से उपासना किये हुए वहां रहनेलगे इसप्रकार दशदिन व्यतीतहोने पर पुरोचनने उनको शिवनामक उस अशिवगृहकी बातसुनाई गुह्यक लोग जिस प्रकार कैलासकी चोटी पर चढते हैं वैसेही पांडवगण अच्छे वस्त्र पहिनकर पुरोचन के वचन सुनकर उस गृहमें प्रवेशहुए ।१२। परम धार्मिक युधिष्ठिरने उस घरको भले प्रकार देख कर भीमसेन से कहा कि यही घर आगलगाने वाली वस्तुओं से बनाहोगा है शत्रुनाशी घृत और रालसे मिलीहुई चर्बीकी गंधसे मालूम होता है कि यह घर आगलगानेवाली

Pandavas paid their first visits to the learned Brahmans of the city. Then they went to the houses of chief citizens of the heroic and trading classes. 7. Last of all, they went with the guide Purochan to the place of their residence. Purochan offered them good articles of food and drink, as well, as beds and bedclothes. The *Pandavas* wore precious clothes, were served by Purochan and revered by the citizens. After ten days Purochan told them to go to the house named Shiva. At the word of Purochan the Pandavas entered the house, going through a Kailash like ascent with their precious clothes.12. After examining the house well Yudhishthir said to Bhimsen, "This must be the house built of inflammable materials as shown by the peculiar smell. The trustworthy agents of the enemy have built the house with inflammable materials

मुञ्जवल्वजवंशादि द्रव्यंसर्वंघृतोक्षितम् ॥ १५ ॥ शिल्पिभिःसुकृतंह्याप्तैर्विनीतैर्वेश्मकर्मणि । विश्वस्तंमामयंपापो दग्धुकामःपुरोचनः ॥ १६ ॥ तथाहिवर्त्ततेमन्दः सुयोधनवशेस्थितः । इमान्तुतांमहाबुद्धिर्विदुरो दृष्टवांस्तथा ॥ १७ ॥ आपदंतेनमांपार्थ ससंबोधितवान्पुरा । तेवयंबोधितास्तेन नित्यमस्मद्धितैषिणा ॥ १८ ॥ पित्राकनीयसा स्नेहाद्बुद्धिमन्तोशिवंगृहम् । अनार्य्यैःसुकृतंगूढैर्दुर्य्योधनवशानुगैः ॥ १९ ॥ भीमसेन उवाच । यदीदंगृहमाग्नेयं विहितंमन्यतेभवान् । तथैवसाधुगच्छामो यत्रपूर्वोषितावयम् ॥ २० ॥ युधिष्ठिर उवाच । इह यत्तैर्निराकारैर्वस्तव्यमिति रोचये । अप्रमत्तैर्विचिन्वद्भिर्गतिमिष्टांध्रुवामितः ॥ २१ ॥ यदिविन्देतचाकारमस्माकं सपुरोचनः । क्षिप्रकारीततोभूत्वा प्रसह्यापिदहेतनः ॥ २२ ॥ नायं विभेत्युपक्रोशादधर्माद्वा पुरोचनः । तथाहिवर्त्ततेमन्दः

वस्तुओं से बनाहै घर बनाने में दक्ष और विपक्षियों के विश्वासी शिल्पियों ने सन, धूप, सरकंडा, तृण और बांस आदि को बटोरकर घृत में डुबाकर उन्हीं से यह गृहबनाया है सुयोधनका बशीभूत कुमति पुरोचन यह समझा हुआ है कि उसमें विश्वास होने पर वोह हमको जलावेगा ।१६। हे पार्थ ! महामति विदुरको यह बात मालूम होगई थी कि यह बिपत पडेगी इस लिये उन्हों ने पहिलेसे मुझे सावधान किया उन छोटे चचा ने स्नेहसे हमारे हितेच्छुकहोकर जतायाथा कि दुर्योधनके वशीभूत नीच स्वभावके लोगों ने इस अहित गृहको भलेप्रकार बनाया है।१९। भीमसेन ने कहा कि जब आपको मालूम होगया है कि यह घर आगलगाने वाली बस्तुओं से बनाहै तब हम पहिले जहां बसे थे वहीं जायँ तब हमारा मंगलहोसक्ताहै युधिष्ठिर ने कहा कि हम यत्न से सावधानहो यहीं रहकर बाहर देखने में कोई चेष्टा न करके बाहर निकलनेका पथ ढूंढेंगे पुरोचन हमारे आकार या किसी भाव में जान जायगा तो उसीक्षण शीघ्रता पूर्वक एकायक हम को जलादेगा।२२। क्योंकि पुरोचन लोकनिंदा वा अधर्मसे भय खानेवाला नहीं है उसी बुरी

---

such as straw, bamboo, sulphur and oil. Purochan, the foolish minister of Suyodhan, thinks he will destroy us when we are not on our guard.16.The wise Vidur knew of this calamity and warned me of it before hand. The younger uncle, out of affection, informed me that the badnatured men under Duryodhan had built this house with great care."19. Bhim said, " Why do you not return to the former place if you know that the house is built of inflammable materials ? We can live safely there." Yudhishthir replied, " We shall be vigilant and shall find out an exit without leaving the house. Purochan will burn us at once if he finds out by our gestures that we suspect him.22.He is not the person to fear sin or infamy. He has consented to do this ill deed by Duryodhan's instigation.If we die here why should Bhishm enrage the Kauravas

सुयोधनवशेस्थितः ॥ २३ ॥ अविचार्यप्रदग्धेषु भीष्मोऽस्मासु पितामहः । कोपंकु-
र्यात्किमर्थंवा कौरवान्कोपयतिसः ॥२४॥अथवापीहदग्धेषु भीष्मोऽस्माकंपितामहः।
धर्मइत्येवकुप्येरन्ये चान्येकुरुपुङ्गवाः ॥ २५ ॥ वयन्तुयदिदाहस्य बिभ्यतःप्रद्रवेमहि।
स्पशैर्नोघातयेत्सर्वान् राज्यलुब्धःसुयोधनः ॥२६॥अपदस्थानपदेतिष्ठन्नपक्षान् पक्षसं
स्थितः। हीनकोशान्महाकोशः प्रयोगैर्घातयेद्ध्रुवम् ॥२७॥तदस्माभिरिमंपापं तंचपापं
सुयोधनम् । वञ्चयद्भिर्निवस्तव्यं छन्नावासंक्वचित्क्वचित्॥२८॥तेवयंमृगयाशीलाश्चराम
वसुधामिमाम् । तथानोविदितामार्गा भविष्यन्तिपलायताम् ॥२९॥ भौमञ्चबिलमद्यैव
करवामसुसंवृतम् । गूढश्वासान्नतस्तत्र हुताशःसंप्रधक्ष्यति ॥ ३० ॥ वसतोऽत्रयथा
चास्मान्नबुध्येत पुरोचनः । पौरोवापिजनः कश्चित्तथाकार्य्यमतन्द्रितैः ॥ ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि भीमसेनयुधिष्ठिरसंवादे
सप्तचत्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १४७ ॥

बुद्धियुक्त दुर्योधनकी आज्ञा से ऐसा बुरा कर्म करने को उद्यत हुआ है फिरभी हमारे यहां जलमरनेसे पितामहभीष्म क्यों क्रोधितहोंगे और क्रोधितहोकर क्यों कौरवों को क्रोधयुक्त करेंगे।२४। हां यह होसक्ताहै कि दूसरे कौरव श्रेष्ठ धर्म के नामसे क्रोध प्रकाश करें यदि हम जलनेसे भय खाकर भाग जावें तो राज्यलोभी सुयोधन दूतोंके द्वारा हम सबको मरवासक्ताहै क्योंकि वोह दुरात्मा राजपदपर बैठा सहाययुक्त बड़े ऐश्वर्य का अधिकारी है और हम पदके बाहर सहायरहित और ऐश्वर्य वर्जितहैं सो इस में सन्देह नहीं कि वोह हमको नाना उपायोंसे नष्ट करसक्ताहै इस लिये हम पापात्मा पुरोचन और सुयोधन को ठगकर अनेक स्थानों में छिपकर इसप्रकार बास करेंगे कि भागनेके काल हमारा पथ अज्ञात रहे बड़े गुप्तभाव से धरती के नीचे एक बिल खोदेंगे गुप्तरूप से ऐसा करने से हम को आग से भस्महोने की शंका नहीं रहेगी इसलिये हम जागकर ऐसा करेंगे कि पुरोचन या दूसरा कोई पुरवासी हमारा अभिप्राय न जानसके ॥३१॥

by showing his anger? 24. The other Kauravas may show their displeasure in the name of Dharm. If we run away with fear, the spies of Duryodhan will surely overtake and kill us all. He is in possession of the kingdom, helpers and wealth; while we are destitute of all these things. There is no doubt, he can destroy us by various means. We will, therefore, deceive Duryodhan and Purochan and shall go through paths which cannot be tracked. We shall begin excavating the ground from today, so that we may be safe from fire. We shall keep vigils by night to do our business and in order to avoid the suspicions of Purochan and the citizens.31.

वैशम्पायन उवाच। विदुरस्यसुहृत्कश्चित्खनकःकुशलोनरः । विविक्तेपाण्डवा
न् राजन्निदंवचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ प्रहितोविदुरेणास्मि खनकःकुशलोह्यहम् । पाण्डवा
नां प्रियंकार्यं मितिकिंकरवाणिवः ॥ २ ॥ प्रच्छन्नंविदुरेणोक्तः श्रेयस्त्वमिहपाण्डवा
न । प्रदिपादयविश्वासा दितिकिंकरवाणिवः ॥ ३ ॥ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यां रात्रावस्यां
पुरोचनः । भवनस्यतवद्वारि प्रदास्यतिहुताशनम् ॥ ४ ॥मात्रासहप्रदग्धव्याः पाण्ड-
वाःपुरुषर्षभाः । इतिव्यवसितंतस्य धार्त्तराष्ट्रस्यदुर्मतेः ॥ ५ ॥ किंचिच्चविदुरेणोक्तो
म्लेच्छवाचासिपाण्डव । त्वयाच तत्तथेत्युक्तमेतद्विश्वासकारणम् । उवाचतंसत्यधृतिः
कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ युधिष्ठिर उवाच । अभिजानामिसौम्यत्वां सुहृदंविदुरस्य
वै ॥ ७ ॥ शुचिमाप्तंप्रियञ्चैवसदाच दृढभक्तिकम । नविद्यतेकवेः किञ्चिदविज्ञातं

अध्याय १४८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे राजन् ! एक मनुष्य जो विदुर का मित्र और मिट्टी खोदने में दक्षथा उसने पांडवोंसे अकेले मिलकर कहा कि मैं खनिक हूं भूमि भलीप्रकार खोद सक्ताहूं विदुर जीने मुझको यह कहकर भेजा है कि तुम जाकर पांडवों का प्रिय कार्य करो इस लिये पूछताहूं कि आपका कौनसा काम करना होगा उन्होंने मेराविश्वास कर कहाहै कि तुम पांडवोंका हितकरो अब आज्ञाकीजिये कि क्या करनाहै ।३। हेपांडव ! पुरोचन आप के इस गृह के द्वारपर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकी रात्रि को आग लगा देगा कुमति दुर्योधनने निश्चयकिया है कि पुरुष श्रेष्ठ पांडवों को माताके साथ जलामारे विदुरने म्लेच्छ भाषामें आप से कुछ कहा था और आपने भी उसी भाषामें उत्तर दियाथा यह बातही मुझपर आप के विश्वासहोने का कारण है सत्य शील कुंती नन्दन युधिष्ठिर ने कहा ।६। कि हेसौम्य मैं जानगया कि तुम विदुरके प्रियमित्र शुद्धस्वभावी और विश्वासी

CHAPTER

Vaishampayan said that a friend of Vidur, a skillful miner, came to the Pandavas and said, "I am a miner. I know well how to dig. Vidur has directed me to help you. I, therefore, wish to know how I can serve you. I am a trustworthy messenger of Vidur at your service.3. Purochan will set fire to the door of the house on the fourteenth night. Duryodhan of crooked policy has made up his mind to burn all the Pandavas with mother. Vidur spoke to you in a foreign tongue and you replied him in the same language. This must be sufficient for you to trust me. Yudhishthir the truthful son of Kunti, replied,(6) "I see, you are the dear friend of Vidur, right minded and trustworthy. You are ever devoted to the cause of Vidur. He knows all. There is nothing hidden from him. You are as dear to us as you are to Vidur. Protect

प्रयोजनम् ॥ ८ ॥ यथातस्यतथानस्त्वं निर्विशेषावयंत्वयि । भवतश्चयथातस्य पालया स्मान्यथाकविः ॥ ९ ॥ इदंशरणमाग्नेयं मदर्थमितिमेमतिः । पुरोचनेनविहितं धार्त्तराष्ट्र स्यशासनात् ॥ १० ॥ सपापःकोपवांश्चैव ससहायश्चदुर्मतिः । अस्मानपिचपापात्मा नित्यकालंप्रबाधते ॥ ११ ॥ सभवान्मोक्षयत्वस्मान् यत्नेनास्माद्धुताशनात् । अस्मा स्विहहिदग्धेषु सकामःस्यात्सुयोधनः ॥ १२ ॥ समृद्धमायुधागारमिदंतस्य दुरात्मनः वप्रान्तं निष्प्रतीकारमाश्रित्येदं कृतंमहत् ॥ १३ ॥ इदंतदशुभंनूनं तस्यकर्मचिकीर्षितम्। प्रागेवविदुरोवेद तेनास्मानन्वबोधयत् ॥ १४ ॥ सेयमापदनुप्राप्ता क्षत्तायांदृष्टवान्पुरा। पुरोचनस्याविदितानस्मांस्त्वं प्रतिमोचय ॥ १५ ॥ सतथेतिप्रतिश्रुत्यखनकोयत्न मास्थितः । परिखामुत्किरन्नाम चकारचमहाबिलम् ॥ १६ ॥ चक्रेचवेश्मनस्तस्यमध्ये

हो और उनपर सदा तुम्हारी बड़ी भक्ति है वोह सब जानते हैं कोई काम उनका अन-जाना नहीं है तुम विदुर के जैसे प्यारे हो हमारेभी वैसेही प्रियहो इस में कुछ विशेष नहीं है अतएव तुम उनको जैसा समझतेहो हमकोभी वैसाही समझकर हमारी रक्षा इस प्रकार करो कि जैसे वोह करते थे मैंभी समझता हूं कि दुर्योधनके मत से पुरोचन ने हमारे लियेही यह अग्निघर बनायाहै।१०। पापात्मा कुमति दुर्योधन धनवान और सहाय सहित है और सदा हमको नष्ट करनेकी चेष्टा करता है अब तुम यत्न पूर्वक हम को इस अग्नि घरसे बचाओ इस मैंभी सन्देह नहीं कि यदि हम यहां जलमरें तो सुयोधन की आशा पूरीहोगी देखो यह दुरात्मा की बड़ीभारी अस्त्रशाला है इस के आश्रय यह बडा गृह ऐसा बना है कि कहींभी निकलनेका कोई पथ नहीं है विदुर ने दुर्योधन के जिस संकल्पित अनुचित कर्म को पहिले निश्चयरूप से जानकर हमको सावधान किया था अब वही विपद आपड़ी है इस लिये ऐसा करो कि हम पुरोचनसे गुप्तभाव से भाग सकें।१५। खनिकने प्रतिज्ञाकर यत्नसे एक बडाबिल खोदना आरम्भकिया और उस गृह

us like Vidur. I see Purochan has built this inflammable house to burn us by Duryodhan's orders. The sinful Duryodhan of crooked policy, having wealth and assistance at his command, always seeks to destroy us.10.You must now save us from burning so that Duryodhan's schemes may be frustrated. Yonder is the armory of Duryodhan. It is on account of the armory that this great house has been so built as not to leave any exit in the walls. The peril which Vidur knew and warned us of is imminent. Arrange for our escape unknown to Purochan."15.The miner accepted the charge and began to excavate a large hole. He fitted it with a door on a level with the ground and covered it with earth to prevent Purochan from seeing it. Purochan always kept at the door. The Pandavs remained there well-armed

जातिमहद्बिलम् । कपाटयुक्तमज्ञातं समंभूम्याश्चभारत ॥ १७ ॥ पुरोचनभयादेव व्यदधात्संवृतंमुखम् । सतस्यतुगृहद्वारि वसत्यशुभधीःसदा ॥ १८ ॥ तत्रतेसायुधाः सर्वे वसन्तिस्मक्षपांनृप । दिवाचरन्तिमृगयां पाण्डवेयावनाद्वनम् ॥ १९ ॥ विश्वस्तवदविश्वस्ता वंचयन्तःपुरोचनम् । अतुष्टास्तुष्टवद्राजन्नूषुः परमविस्मिताः ॥ २० ॥ नचैनानन्वबुध्यन्त नरानगरवासिनः । अन्यत्रविदुरामात्यात्तस्मात् खनकसत्तमात् २१

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि जतुगृहवासे अष्टचत्वारिंश

दधिकशततोऽध्यायः ॥ १४८ ॥

वैशम्पायन उवाच । तांस्तुदृष्ट्वासुमनसः परिसम्वत्सरोषितान् । विश्वस्तानिव संलक्ष्यहर्षंचक्रेपुरोचनः ॥ १ ॥ पुरोचनेतथाहृष्टे कौन्तेयोऽथयुधिष्ठिरः । भीमसेनार्जुनौ चोभौ यमौप्रोवाचधर्मवित् ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच । अस्मानयंसुविश्वस्तान् वेत्तिपापःपुरोचनः । वंचितोऽयंनृशंसात्मा कालंमन्येपलायने ॥ ३ ॥ आयुधागारमा-

---

के भीतर औरों का अनजाना एक बडा बिल खोदकर उसमें ऐसा द्वारलगाया कि भूमि के समान होगया पुरोचन के डर से उस बिलका मुंह बन्द करदिया अहित बुद्धियुक्त पुरोचन उस गृहके द्वारपर सदा रहाकरताथा पांडवगणभी रात्रि को अस्त्र शस्त्र लेकर उस गृह के भीतर रहते और दिनको वन में घूमकर मृगयाकिया करते थे वे पुरोचन को ठगने के लिये उनपर विश्वास न रखकर भी विश्वासी के समान और सदा असंतुष्टहोकरभी संतुष्टकी भांति अति विस्मितहोकर वहां बसने लगे परन्तु विदुर के मन्त्री उस खनिकके अतिरिक्त किसी नगरवासी ने उनका अभिप्राय नहीं जाना ॥२१॥

अध्याय १४९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर उन के उस प्रकार वहां रहनेपर पुरोचन उनको विश्वासियों की नाई निःशंक जानकर मनही मन में आनन्द करने लगा कुंतीपुत्र धर्म वीर्य युधिष्ठिर उसको प्रसन्न देखकर भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवसे बोले।२। कि इस पापात्मा पुरोचन ने समझ लिया है कि हममें पूरा विश्वास आगया सो इस कुटिल को

---

by night and went during day time to hunt in the forest. To deceive Purochan they feigned to behave with him as if they fully trusted him. They looked on him smiling though they were distressed in heart. Except the agent of Vidur none knew their secret.21.

CHAPTER CXLIX

Vaishampayan said that when the Pandavas had stayed there a year, Purochan was happy at the thought of having secured their confidence. And Yudhishthir, realising the state of Purochan's mind, said to his brothers, Arjun, Nakul and Sahadev, "The sinful wretch, Purochan, believes he has succeeded in deceiving us

दीप्य दग्ध्वाचैवपुरोचनम् । पदप्राणिनोनिधायेह द्रवामोऽनभिलक्षिताः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । अथदानापदेशेन कुन्तीब्राह्मणभोजनम् । चक्रेनिशिमहाराज आजग्मुस्तत्रयोषितः ॥ ५ ॥ ताविहृत्ययथाकामं भुक्त्वापीत्वाचभारत । जग्मुर्निशिगृहानेव समनुज्ञाप्यमाधवीम् ॥ ६ ॥ निषादीपंचपुत्रातु तस्मिन्भोज्येयदृच्छया । अन्नार्थिनीसमभ्यागात्सपुत्राकालचोदिता ॥ ७ ॥ सापीत्वामदिरांमत्ता सपुत्रामदविह्वला । सहसर्वैः सुतैराजंस्तस्मिन्नेव निवेशने ॥ ८ ॥ सुष्वापविगतज्ञाना मृतकल्पा नराधिप । अथप्रवातेतुमुले निशिसुप्तेजनेतदा ॥ ९ ॥ तदुपादीपयद्भीमः शेतेयत्रपुरोचनः । ततोजतुगृहद्वारं दीपयामासपाण्डवः ॥ १० ॥ समन्ततोददौपश्चादग्नितत्र निवेशने । ज्ञात्वातुतद्गृहंसर्वं मादीप्तंपाण्डुनन्दनाः ॥ ११ ॥ सुरङ्गां विविशुस्तूर्णं मात्रासार्द्धमरिन्दमाः । ततःप्रतापः सुमहाञ्छब्दश्चैवविभावसोः ॥ १२ ॥ प्रादुरासीत्तदा

हमने ठगलिया अब हमारे भागने का समय आगया है हम अन्नशाला में आग लगाकर पुरोचन को जलाकर यहां छः मनुष्यों को छोड़ कर लोगोंसे छिपकर भागेंगे। वैशम्पायन ने कहा कि हे महाराज ! कुंतीने एक दिन दान देनेके बहाने रात्रि में ब्राह्मणों को भोजन कराया इस काम के लिये वहांकी बहुत स्त्रियां वहां आईथीं और रात्रिको सुखसे खा पीकर आनन्द पूर्वक कुंतीकी आज्ञा से निजर घरको गई।६। दैव वशकाल प्रेरणासे एक भीलिनी पांच पुत्रों सहित उस भोजमें मनमाना खानेकी इच्छा से आईथी वोह अपने बेटों सहित मदिरा से उन्मत्त और विह्वल होकर उस घरही में सोगई वह एक बारही अचेत होकर मरीसी वहां पड़ीथी अनन्तर रात्रिको बडी हवाचल रहीथी कि ऐसे समय में भीमसेन ने उस घरमें जहां पुरोचन सोताथा आग लगादी और क्षण भरमें जतुगृह के द्वार को जलाकर अंतमें उस गृह के चारों ओर आग लगादी शत्रुनाशी पांडव चारों ओर से गृहको जलते देखकर माता सहित बिलमें आघुसे अनन्तर जलती हुई आग का

and making us off our guard. It is now time for us to go.3.We shall set fire to the armory and shall go out unseen, leaving Purochan to die here with six others. Vaishampayan said that one night Kunti gave a feast to the Brahmans and many women came from the city for help. They returned home when the feast was over.6.A Bhil woman with her five sons had come there to take part in the feast. She made herself and her sons intoxicated and senseless with wine and they slept, like so many dead people, in the same place. The wind was blowing strong that night and the city people had gone to their beds, when Bhimsen set fire to that part of the house where Purochan was sleeping. And setting fire to the door he burnt it in various places all round. Seeing the house burning on all sides,

तेन बुबुधे सजनव्रजः । तद्वेक्ष्य गृहं दीप्तमाहुः पौराः कृशाननाः ॥ १३ ॥ पौरा ऊचुः ॥ दुर्योधनप्रयुक्तेन पापेनाकृतबुद्धिना । गृहमात्मविनाशाय कारितं दाहितं च तत् ॥ १४ ॥ अहो धिग्धृतराष्ट्रस्य बुद्धिर्नातिसमञ्जसा । यः शुचीन्पाण्डुदायादान् दाहयामास शत्रुवत् ॥ १५ ॥ दिष्ट्या त्विदानीं पापात्मा दग्धोऽयमतिदुर्मतिः । अनागसः सुविश्वस्तान्यो ददाह नरोत्तमान् ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं ते विलपन्ति स्म वारणावतका जनाः । परिवार्य गृहं तच्च तस्थू रात्रौ समन्ततः ॥ १७ ॥ पाण्डवाश्चापि ते सर्वे सह मात्रा सुदुःखिताः । बिलेन तेन निर्गत्य जग्मुर्द्रुतमलक्षिताः ॥ १८ ॥ तेन निद्रोपरोधेन साध्वसेन च पाण्डवाः । न शेकुः सहसा गन्तुं सह मात्रा परन्तपाः ॥ १९ ॥ भीमसेनस्तु राजेन्द्र भीमवेगपराक्रमः । जगाम भ्रातॄनादाय सर्वान्मातरमेव च ॥ २० ॥ स्कन्धमारोप्य जननीं

कठोर तेज और घोर शब्द फैलने लगा पुरवासी उस गृहको जलते देखकर मलिन मुख से कहनेलगे कि दुर्योधनके रक्खेहुए दुर्मति पापात्मा पुरोचनने स्वजनों को नष्ट करने के लियेही यह गृह बनवायाथा अब उस में आग लगाई । हाय ! धृतराष्ट्र की बुद्धि कैसी कच्ची है उसकी इस बुद्धिपर धिक्कार है जिस से उस ने निष्पापी पांडवों को शत्रुओं के सदृश जलादिया जिस पापी पुरोचन ने विश्वास युक्त और निर्दोषी नरोत्तम पांडवों को जलाया अब वोह पापात्मा अपने कर्म फलसेही जलमराहै । वैशम्पायनने कहा कि वारणावत वाले इस प्रकार शोक करते हुए उस रात्रिको गृहके चारों ओर खड़े रहे इधर शत्रुनाशी पांडव लोग माता सहित अति दुःखित चित्त से लोगों से छिपे हुए उस बिलसे निकल कर दृढ़ता के साथ शीघ्र चलने लगे पर वे सब निद्रा के झोकों और भय के कारण माता के साथ शीघ्र नहीं चलसके तब भीमगामी और भीम पराक्रमी, भीमसेन माता और सम्पूर्ण भाइयों को साथ लेकर चलने लगे अति बलवीर्यवन्त और हवाकी नाईं

the Pandavas with mother entered the cave and a furious noise ensued with that conflagration. The citizens saw the house burning and remarked with sorrow, "Purochan, the sinful and bad natured agent of Duryodhan had built this house to destroy the Pandavas. He has now set fire to it. Alas! how unsound is the policy of Dhritrashtra. Woe to the policy which burnt the Pandavas like enemies. The ill natured Purochan, the author of all this mischief, has been caught into his own trap and is burnt. Vaishmpayan said that the people of Barnavat stood weeping all round the house that night. On the other hand the distressed Pandavas with mother came out of the cave unseen and marched on with haste. But, overcome with sleep and fear they could not walk fast in the company of their mother The swift going valliant Bhim, then, took up his mother and brothers and went on with them. Bhim of immense strength and wind

यमावंकेनवीर्यवान् । पार्थौगृहीत्वापाणिभ्यां भ्रातरौसुमहाबलः ॥ २१ ॥ उरसा पादपान् भञ्जन्महीं पद्भ्यांविदारयन् । सजगामाशुतेजस्वी वातरंहावृकोदरः ॥२२

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि जतुगृहदाहे नवचत्वारिंश
दधिकशततोऽध्यायः ॥ १४९ ॥

वैशम्पायन उवाच । एतस्मिन्नेवकालेतु यथासम्प्रत्ययंकविः । विदुरःप्रेषयामास तद्वनंपुरुषंशुचिम् ॥ १ ॥ सगत्वातुयथोद्देशं पाण्डवानदद्दशेवने । जनन्यासहकौरव्य मापयानान्नदीजलम् ॥ २ ॥ विदितंतन्महाबुद्धेर्विदुरस्य महात्मनः । ततस्तस्यापिचारेणचेष्टितंपापचेतसः ॥ ३ ॥ ततःप्रवाषितोविद्वान् विदुरेणनरस्तदा । पार्थानां दर्शयामास मनोमारुतगामिनीम् ॥ ४ ॥ सर्ववातसहांनावं यन्त्रयुक्तांपताकिनीम् । शिवेभागीरथीतीरेनरैर्विस्रम्भिभिः कृताम् ॥५॥ ततःपुनरथोवाच ज्ञापकंपूर्वचोदितम्।

वेगवान, तेजस्वी वृकोदर जाते समय माताको कंधेपर नकुल और सहदेव को गोद में और युधिष्ठिर तथा अर्जुनके हाथ पकड़ कर छाती से पेड़ों को तोड़ते और पावों से धरती को फाड़ते हुए चले ॥ २२ ॥

अध्याय ॥ १५० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर इससमय सर्वज्ञ विदुरने एक पवित्र मनुष्य को इसप्रकार से कि पांडवोंके मन में उसपर विश्वासहो उस बन में भेजा । हे कुरुनंदन! विदुर के भेजे हुए पुरुष ने पांडवों को माताके साथ नदीका जल नापतेहुए देखा।२।अति बुद्धिमान महात्मा विदुर से गुप्त दूत के सहारे पापी दुर्योधनके चेष्टित सब कामों को जानते थे इसी हेतु उन्हों ने उस विद्वज्जनको वहां भेजाथा उस पुरुष ने मंगलालय भागीरथी के तटपर विश्वासीजनों की बनाई पवनकी सहनेवाली यंत्रवाली झंडोंसे सुहावनी और मन व हवाकी समान शीघ्र गामिनी पूर्व कथित नावको उन्हें दिखाया और

---

like speed, put his mother on his shoulder and Nakul andSahadev in his arms and taking Yudhishthir and Arjun by the hands he went on breaking trees with his breast and the ground with his feet ! 22.

CHAPTER CL

Vaishampayan said that the all-knowing Vidur had sent to the wood, a holy man whom the Pandavas could trust. He saw the *Pandavas* in the wood where they were measuring the depth of water in river.2. The most wise and holy Vidur had learnt all the evil plans of Duryodhan through his spy. So he had sent the wise man thither. He showed them on the bank of the Ganges the above mentioned boat, made by reliable people, able to resist the wind fitted with machinery,ornamented by flags and swift like the mind,or,

युधिष्ठिरनिबोधेदं संज्ञार्थवचनंकवेः ॥ ६ ॥ कक्षघ्नःशिशिरघ्नश्च महाकक्षेविलौकसः।
नहन्तीत्येवमात्मानं योरक्षतिसजीवति ॥७॥ तेनमांप्रेषितंविद्धि विश्वस्तंसंज्ञयानया।
भूयश्चैवाहमांक्षत्ता विदुरःसर्वतोऽर्थवित् ॥ ८ ॥ कर्णंदुर्योधनश्चैव भ्रातृभिःसहितंर
णे। शकुनिंचैवकौन्तेय विजेतासिनसंशयः ॥ ९ ॥ इयंवारिपथेयुक्ता नौरप्सुसुखगा
मिनी। मोचयिष्यतिवः सर्वानस्माद्देशान्नसंशयः ॥ १० ॥ अथतान्व्यथितान् दृष्ट्वा
सहमात्रानरोत्तमान्। नावमारोप्यगङ्गायां प्रस्थितानब्रवीत् पुनः ॥ ११ ॥ विदुरोमू
र्ध्न्युपाघ्राय परिष्वज्यवचोमुहुः। अरिष्टंगच्छताव्यग्राः पन्थानमितिचाब्रवीत् ॥१२॥
इत्युक्त्वासतुतान्वीरान् पुमान्‌विदुरचोदितः। तारयामासराजेन्द्र गङ्गांनावानरर्षभा
न् ॥ १३ ॥ तारयित्वाततोगङ्गां पारंप्राप्तांश्चसर्वशः। जयाशिषःप्रयुज्याथ यथागत-

बिश्वासके लिये कहा कि हे युधिष्ठिर विदुर ने जो कुछ संकेत में तुमसे कहाथा वोह सुनो कक्षनाशी और हिमनाशी वस्तु महाकक्ष के बिलके भीतर स्थितजन को नष्ट नहीं करसक्ती इसप्रकार जो जन अपनी रक्षा करसक्ताहै वह जीता रहताहै ।७। हेपांडव ! मैं विदुरका विश्वासी और कामों का जानकार हूं उन्हों ने मुझ को इशारे में यह बात समझाकर यहां भेजा है उस बहुत देखे भाले महाशय ने यहभी कह दियाहै कि हे कुंती पुत्र तुम रणस्थल में कर्ण शकुनि और भाइयों समेत दुर्योधन को अवश्यही परास्तकरोगे, इसमें संदेह नहींहै कि जलमें रक्खीहुई सुखसे जानेवाली इसनावपर आप इसस्थान से बचजायँ गे ।१०। तत्पश्चात् वोह पुरुष नरोत्तम पांडवोंको माताके साथ दुःखित चित्त देखकर गंगामें उन के साथ २ चलने लगा और फिर कहा कि बिदुर ने आपका नाम लेकर शिर चूमकर और गले लगाकर बार २ यह कहाहै कि तुम पथ में न घबराकर बिना विघ्न मंगल पूर्वक जाओ । हे राजेन्द्र ! विदुर के भेजेहुए उस पुरुष ने नर श्रेष्ठ पांडवों को यह बात कहतेहुए नावपर गंगा के दूसरे पार पर पहुँचाया ।१३। और दूसरे

wind.5. And to show his reliability he said, "Vidur gave you the following hints:—The destroyer of straw and ice cannot destroy one concealed in a cave amidst the forest. He who can thus protect himself shall live.7. I am, O *Pandavas* trusted by Vidur and know the secret of the above hints which he told me at my departure to this place. The far seeing one has also predicted your success in the battle-field against Karan, Shakuni and Duryodhan with his brothers. This easy-going boat in the water, will, no doubt, take you safely from this place."10. And seeing the *Pandavas* with mother distressed at heart, he seated them in the boat which began to move on the Ganges. In the way he said, " With manifestations of affection, Vidur has advised you to go on without hesitation and has wished you a happy and safe journey." Having said this he landed the

मगाद्भिसः ॥ १४ ॥ पाण्डवाश्चमहात्मानः प्रतिसन्दिश्यवैकवेः । गङ्गामुत्तीर्य्यवेगेन जग्मुर्गूढमलक्षिताः ॥ १५ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि गंगोत्तरणे पंचाशद
दधिकशतोऽध्यायः ॥ १५० ॥

वैशम्पायन उवाच । अथरात्र्यां व्यतीतायामशेषो नागरोजनः । तत्राजगाम त्वरितो दिदृक्षुःपाण्डुनन्दनान् ॥ १ ॥ निर्वापयन्तोज्वलनंतेजना ददृशुस्ततः । जातुषंतद्गृहं दग्धममात्यंचपुरोचनम् ॥ २ ॥ नूनंदुर्य्योधनेनेदं विहितंपापकर्मणा । पाण्डवानांविनाशायेत्येवंते चुक्रुशुर्जनाः ॥ ३ ॥ विदितेधृतराष्ट्रस्यधार्त्तराष्ट्रो नसंशयः । दग्धवान पान्डुदायादान्नह्येनं प्रतिषिद्धवान् ॥ ४ ॥ नूनंशान्तनवोऽपीह न धर्ममनुवर्त्तते । द्रोणश्चविदुरश्चैव कृपश्चान्येचकौरवाः ॥ ५ ॥ तेवयंधृतराष्ट्रस्य प्रेषयामोदुरात्मनः । संवृत्तस्तेपरःकामः पाण्डवान्दग्धवानसि ॥६ ॥ ततोव्यापोहमानास्ते पाण्डवार्थे

किनारे पर छोड़कर जय जय कारके साथ उनको आशीस देकर अपने स्थानको गया महात्मा पाण्डव लोग गंगापार जाकर उस पुरुष के द्वाराही विदुरको समाचार देकर किसी के बिना देखे वेगपूर्वक आगे बढ़े ॥ १५ ॥

अध्याय १५१ ॥

वैशम्पायनने कहा कि रात्रि बीतनेपर सम्पूर्ण नगरवासी पांडवों को देखनेके लिये शीघ्रता पूर्वक वहां आये उन्होंने आग बुझाकर मन्त्री पुरोचन को जतुगृह के साथ जला हुआ पाया।२। तब वे रोतेहुए चिल्लाकर कहनेलगे कि अवश्य पापात्मा दुर्योधनने केवल पांडवोंके नष्ट करने कोही ऐसा किया है इसमें संदेह नहीं कि दुर्योधनके साथ पांडवों के जलाने के विषय में धृतराष्ट्रकी सम्मतिथी उनकी सम्मति न होती तो वोह मना करते और शांतनुनन्दन भीष्म, द्रोण, विदुर, कृप और दूसरे कौरवों नेभी इस विषय में धर्म पर दृष्टि नहीं दी ।५।अब हम दुरात्मा धृतराष्ट्र से कहला भेजते हैं कि तुम्हारी बडीआशा पूर्ण

Pandavas on the opposite bank of the Ganges and bidding them farewell went his own way. On reaching the opposite bank, the *Pandavas* sent their greetings to Vidur through his messenger and went or unobserved.15.

CHAPTER CLI

Viashampayan continued that at break of day the citizens came in haste to see the*Pandavas.*They put down the fire and found Purochan burnt with the house.2.They cried out weeping, "Certainly, the sinful Duryodhan has done all this to destroy the *Pandavas.* And, no doubt, Dhritrashtra had given his consent to the burning of the *Pandavas.* For, otherwise, he should have prevented it

हुताशनम् । निषादींदद्दशुर्दग्धां पञ्चपुत्रामनागसम् ॥ ७ ॥ खनकेनतुतेनैव वेश्मशो-
धयताविलम् । पांसुभिःपिहितं तच्च पुरुषैस्तैर्नलक्षितम् ॥ ८ ॥ ततस्ते ज्ञापयामासुर्धृ
तराष्ट्रस्यनागराः । पाण्डवानग्निना दग्धानमात्यञ्च पुरोचनम् ॥ ९ ॥ श्रुत्वातुधृतराष्ट्र
स्तद्राजा सुमहदप्रियम् । विनाशंपाण्डुपुत्राणां विललापसुदुःखितः ॥ १० ॥ अद्य-
पाण्डुर्मृतोराजा ममभ्रातामहायशाः । तेपुवीरेषुदग्धेषु मात्रासहविशेषतः ॥ ११ ॥
गच्छन्तुपुरुषाःशीघ्रं नगरंवारणावतम् । सत्कारयन्तुतान्वीरान् कुन्तिराजसुतांचता-
म् ॥ १२॥ कारयन्तुचकुल्यानि शुभानिचवृहन्तिच । येचतत्रमृतास्तेषां सुहृदोयान्तु
तानपि ॥ १३ ॥ एवंगतेमयाशक्यं यद्यत्कारयितुंहितम् । पाण्डवानांचकुन्त्याश्च
तत्सर्वंक्रियतांधनैः ॥ १४ ॥ एवमुक्त्वाततश्चक्रे ज्ञातिभिःपरिवारितः । उदकंपाण्डु
पुत्राणां धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः ॥ १५ ॥ रुरुदुःसहिताःसर्वे भृशंशोकपरायणाः । ह

हुई तुमने पांडवों को जलामारा अनन्तर पांडवोंको ढूंढने के लिये आग्निको उठाकर बुझा
तेहुए पांचों पुत्रों सहित जली भुनी भीलिनी को देखा ।७। उससमय विदुर के भेजे हुए
पूर्वोक्त खनिक ने गृह को साफ करने के मिस से दूसरोंके न देखते हुए उस बिलका
द्वार बन्द कर दिया इस के अनन्तर नगरवालों ने धृतराष्ट्र के पास जाकर यह कह
सुनाया कि पांडवगण मन्त्री पुरोचनसहित जलगये राजा धृतराष्ट्र पांडवों के विनाशरूपी
अति अप्रिय समाचारको सुनकर दुःखी चित्तसे विलापकर कहनेलगे ।१०। हाय ! आज
सब वीरों के मातासहित जलजाने से मेरेभाई बडे यशस्वी पांडु सत्यहीमरे कौरव लोग
बारणावत में जाकर उन वीरों और राजपुत्री कुंती का अग्नि संस्कार करें और कुल
मर्यादाके जितने शुभ और बडे २ कर्म हैं उन को भी भलेप्रकार करें और जिन लोगोंने
वहां देह छोड़ी है उन के बांधवभी वहां जावें पांडवों और कुंती के लिये जितने हितकार्य
होसकें सब धन के व्यय से किये जायँ अम्बिकापुत्र ने ऐसा कहकर जातिवालों के साथ

Bhishm the son of Shantanu, Drona, Vidur, Krip and the other Kauravas shut their eyes from justice in this matter.5. We will now send men to tell Dhirtrashtra that his great desire, the burning of the *Pandavas* is satisfied." At length, searching for the *Pandavas* amid heaps of burnt matter, they came upon the bodies of the Bhil woman and her five sons burnt in the conflagration.7. In the mean time, the abovementioned miner, the messenger of Vidur, pretending to clean the house, closed the mouth of the cave unseen by others. Then the citizens informed king Dhritrashtra who wept with grief on hearing the sad news and cried out in dismay,10. "Alas! On the death of those brave ones with mother, to day, my glorious brother Pandu, has died in reality. The Kauravas should go to Barnavat to perform the obsequies of the brave men and Kunti. The

युधिष्ठिरकौरव्य हाभीमइतिचापरे ॥१६॥ हाफल्गुनेतिचाप्यन्ये हायमाविति चापरे। कुन्तीमार्त्ताश्च शोचन्त उदकंचक्रिरेजनाः ॥ १७ ॥ अन्ये पौरजनाश्चैवमन्वशोचन्त पाण्डवान्। विदुरस्त्वल्पशश्चक्रे शोकंवेदपरंहि सः ॥ १८ ॥ पाण्डवाश्चापिनिर्गत्य नगराद्वारणावतात्। नदींगङ्गामनुप्राप्ता मातृषष्ठामहाबलाः ॥ १९ ॥ दाशानांभुजवेगेन नद्याःस्रोतोजवेनच। वायुनाचानुकूलेन तूर्णंपारमवाप्नुवन् ॥ २० ॥ ततोनावंपरित्यज्य प्रययुर्दक्षिणांदिशम्। विज्ञायनिशिपन्थानं नक्षत्रगणसूचितम् ॥ २१ ॥ यतमानावनंराजन् गहनंप्रतिपेदिरे। ततःश्रान्ताःपिपासार्त्ता निद्रान्धाःपाण्डुनन्दनाः ॥ २२ ॥ पुनरूचुर्महावीर्य्यम्भीमसेनमिदंवचः। इतःकष्टतरंकिन्नुयद्वयंगहनेवने। दिशश्चनविजानीमो गन्तुंचैवनशक्नुमः ॥ २३ ॥ तंचपापंनजानीमो यदिदग्धःपुरोचनः।

पांडवोंकी जलक्रियाकी।१५।सब कौरव एकत्रहोकर अतिशोकसे हायरकर रोनेलगे किसी ने कहा हा ! कुरुकुल भूषण युधिष्ठिर किसी ने हा भीम हा फाल्गुन, हा नकुल, हा सहदेव, किसी ने हा कुंती।भी कहा इसप्रकार कातर स्वर से शोक करते हुए उदकक्रिया पूरीकी और दूसरे पुरबासी पांडवोंके शोक से बहुत कातरहुए विदुर अल्प शोकयुक्त दीखपडे क्योंकि वोह सच्चा समाचार जानतेथे।१८।इधर महाबली पांडवगण मातासहित वारणावत नगर से निकलकर गंगाजीके किनारे जा मल्लाहोंके भुजबल सोते के बेग और सहाय वायुके सहारे बडेशीघ्र दूसरी पार जापहुँचे।२०।वे नावको छोडकर रात्रिको तारों के सहारे पथ जानकर दक्षिण ओर चलने लगे। हे राजन् ! उनको बडी परिश्रम से एक वपोवन मिला तब नींद से अंधे और थके प्यासे पांडवों ने भीमसेन से कहा कि देख इस से अधिक और क्या कष्टहोसक्ताहै कि हम इससघनवन में आपडेहैं अब न तो दिशा प्रतीत होसक्ती है और न चलसक्ते हैं। न जाने वोह पापात्मा पुरोचन जला या

family rites should be performed well. The kinsmen of those who have died there may go, also. All the good, that can now be done to the deceased *Pandavas* and Kunti, should be performed with great expense. Having said so, Dhritrashtra with the people of his caste, performed the obsequies of the Pandavas with water. All the Kauravas wept for them with grief and lamented the death of each of them severally, calling out their names. The water rite was thus performed. The citizens felt a great shock at the death of the *Pandavas*. Vidur showed the least signs of grief, as he knew the real state of things. 18. On the other hand the *Pandavas* having left Barnavat and crossed the ganges went on southward and knew the direction with the help of stars. After great exertions they came to a dense forest. Then the sleepless *Pandavas*, tired and thirsty, said to Bhimsen, " What trouble can be greater than that we are in? We are now in the midst of a dense forest where we can neither know

कथन्तुविप्रमुच्येम भयादस्मादलक्षिताः ॥ २४ ॥ पुनरस्मानुपादाय तथैवव्रजभारत।
त्वंहिनोवलवानेको यथासततगस्तथा ॥२५॥ इत्युक्तोधर्मराजेन भीमसेनोमहाबलः।
आदायकुन्तींभ्रातृंश्च जगामाशुमहाबलः ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि जतुगृहपर्वणि पाण्डववनप्रवेशे एकपंचाशद
दधिकशततोऽध्यायः ॥ १५१ ॥

वैशम्पायन उवाच। तेनविक्रममाणेन ऊरुवेगसमीरितम्। वनंसवृक्षविटपंव्या
घूर्णितमिवाभवत् ॥ १ ॥ जंघावातोववौचास्य शुचिशुक्रागमेयथा। आवर्जितलता
वृक्षं मार्गंचक्रेमहाबलः ॥ २ ॥ सगृह्णन्पुष्पितांश्चैव फलितांश्चवनस्पतीन्। अवरुज्य
ययौगुल्मान् पथस्तस्यसमीपजान् ॥ ३ ॥ सरोषितइवक्रुद्धो वनेभञ्जन्महाद्रुमान्।
त्रिःप्रस्रुतमदःशुष्मी षष्टिवर्षीमतंगराट् ॥४॥ गच्छतस्तस्यवेगेन तार्क्ष्यमारुतरंहसः।

नहीं वोह जलभी गया हो तो हम औरों के विना देखे क्योंकर इस गहरी विपत्ति से पारहोंगे ।२४। हे भारत! तुम्हीं हम सबसे बली और पवनकी समान वेगवानहो सो हम सबों को पूर्ववत ले चलो धर्मराज के ऐसा कहने पर महाबली भीमसेन कुंती और भ्राता ओं को लेकर शीघ्र चलने लगे ॥ २६ ॥

अध्याय १५२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि महाबली भीमसेन के जाने के समय में शाखा पल्लवों से भराहुआ वोह वन उनकी ऊरुओं की चोटसे हिलताहुआ मानों घूमने लगा जिसप्रकार जेठ और असाढ के महीने में प्रबल हवा चलती है वैसेही उस महाबलीकी जांघकी चोटसे हवासंसनाने लगी इस से निकटकी लता और वृक्ष टूट फूटकर अच्छापथ बनने लगा और वोह उस पथ के फूल फलवाले बनस्पति लताओं को खूंदतेहुए चलने लगे गर्दन आदि तीन अंगोंसे साठवर्षकी अवस्थावाला क्रोधित गजराज जिसप्रकार बनके बड़े २

the directions nor walk with ease. We donot know the fate of the sinful Purochan. Supposing he was burnt, how shall be able to extricate ourselves from this difficulty without being seen by others.24. You are the strongest and swiftest amongst us. You had better lead us all as before."Having heard this fromYudhishthir, the braveBhim took up Kunti and the brothers and went on with speed.26.

CHAPTER CLII

Vaishampayan said that at the time of Bhimsen's departure the forest, full of branches and leaves, seemed to turn round by the blows of his legs. A strong wind like that of Jeth and Asharh (two months in the beginning of the rainy season) began to blow by the speed of his legs,breaking the neighbouring trees and creepers to make him a smooth path. He went trampling over the flower

भीमस्यपाण्डुपुत्राणां मूर्च्छेवसमजायत ॥५॥ असकृच्चापिसन्तीर्य्य दूरपारंभुजप्लवैः। पथि प्रच्छन्नमासेदुर्धार्त्तराष्ट्रभयात्तदा ॥ ६ ॥ कृच्छ्रेणमातरंचैव सुकुमारींयशस्विनीम् । अवहत्सतुपृष्ठेनरोधःसुविषमेषुच ॥ ७ ॥ अगमच्च वनोद्देशमल्पमूलफलोदकम् । क्रूरपक्षिमृगंघोरं सायान्हेभरतर्षभ ॥ ८ ॥ घोरासमभवत्सन्ध्या दारुणामृगपक्षिणः अप्रकाशादिशःसर्वा वातैरासन्ननार्त्तवैः ॥ ९ ॥ शीर्णपर्णफलैराजन् बहुगुल्मक्षुपैर्द्रुमैः । भग्नावभुग्नभूयिष्ठैर्नानाद्रुमसमाकुलैः ॥ १० ॥ तेश्रमेणच कौरव्यास्तृष्णयाच प्रपीडिताः । नाशक्नुवंस्तदागन्तुं निद्रयाचप्रवृद्धया ॥ ११ ॥ न्यविशन्तहितेसर्वे निरास्वादेमहावने । ततस्तृषापरिक्रान्ता कुन्तीपुत्रानथाब्रवीत् ॥ १२ ॥ मातासतीपाण्डवानां पंचानांमध्यतःस्थिता । तृष्णयाहिपरीतास्मि पुत्रान्भृशमथाब्रवीत् ॥ १३ ॥

पेडोंको तोडताहुआ चलाजाता है वैसेही वोह बडे २ पेडों को तोडते हुए चलने लगे गरुड और पवनसमान वेगवान भीमसेनकी गति के वेग से युधिष्ठिर आदि अचेत से होगये।५। वोह दोनों भुजरूपी पल्लवोंसे गंगाजीकी बहतीहुई धारको पारकर दुर्योधनके भय से छिपकर चले थे नदी तट के ऊंचे नीचे स्थान में यशस्विनी कोमलांगी माताको पीठपर लेकर वोह अति कष्टसे चले।७। अनन्तर ऐसे एक भयानक निर्जन बन में जहां फल, मूल, जलका पता नहीं था और हिंसक पशु पक्षी वसते थे सन्ध्या के समय आ पहुँचे वहां गहरी अंधेरी से सन्ध्या आई हुई भयावने पशु पक्षियों के शब्द सुनाई देने लगे और दिशाएं छिपगई बडी प्रचंड आकालित पवन चलरहीथी उस से वहांके गले सडे पत्ते और सूखे फलवाले छोटेबडे पेड और लता कुछ टूटने और कुछ नीचे गिरने लगे।१०।तब कौरवलोग नींद से जकडे, थके और प्यासे बनमें आगे नहीं चलसके अन्न पानरहित उस बडे भारी बनही में बैठगये तब कुंती प्यास से विकलहोकर पुत्रों से बोली।१२। कि मैं पांच पांडवों की माताहोकर पांचो पांडवों के बीचमें रहकरभी जलकी

and fruit bearing vegetation standing round. He went breaking large trees of the forest like a full grown angry elephant. By the speed of Bhim, like that of Garur or wind, Yudhishthir and others became nearly insensible. They were going through that forest as if crossing the Ganges by the help of the two oars of Bhim's arms by the fear of Duryodhan.7. At last they came to a dreadful and uninhabited forest, destitute of fruits and water, full of cruel animals. There the evening fell upon them with its dense darkness. The dreadful noises of beasts and birds were heard; the directions were not perceptible and the wind was blowing furiously, breaking large and small dried up trees and creepers, The *Pandavas* over come by sleeps fatigue and thirst, could not proceed and sat down in the wood without food and water. Being much afflicted by thirst

॥ १४ ॥
तच्छ्रुत्वाभीमसेनस्य मातृस्नेहात्प्रजल्पितम् । कारुण्येनमनस्तप्तं गमनायोपचक्रमे ॥ १४ ॥
ततोभीमोवनंघोरं प्रविश्यविजनंमहत् । न्यग्रोधंविपुलच्छायं रमणीयंददर्शह ॥ १५ ॥
तत्रानिक्षिप्यतान् सर्वानुवाचभरतर्षभः । पानीयंमृगयामीह विश्रमध्वमितिप्रभो १६
एतेरुवन्तिमधुरं सारसाजलचारिणः । ध्रुवमत्रजलस्थानं महच्चेतिमतिर्मम ॥ १७ ॥
अनुज्ञातःसगच्छेति भ्रात्राज्येष्ठेनभारत । जगामतत्रयत्रस्म सारसाजलचारिणः ॥
॥ १८ ॥ सतत्रपीत्वापानीयं स्नात्वाचभरतर्षभ । तेषामर्थेचजग्राह भ्रातृणाभ्रातृव-
त्सलः ॥ १९ ॥ उत्तरीयेण पानीयमानयामास भारत । गव्यूतिमात्रादागत्य त्वरि-
तोमातरंप्रति । शोकदुःखपरीतात्मा निशश्वासोरगोयथा ॥ २० ॥ ससुप्तांमातरंदृष्ट्वा
भ्रातॄंश्चवसुधातले । भृशंशोकपरीतात्मा विललापवृकोदरः ॥ २१ ॥ अतःकष्टतरं
किन्नुद्रष्टव्यंहि भविष्यति । यत्पश्यामिमहीसुप्तान भ्रातॄनद्यसुमन्दभाक् ॥ २२ ॥

प्यास से कातर होगई कुंती वार २ यह कहनेलगी भीमसेन का हृदय वसे सुनकर मातृ स्नेह तथा करुणाभाव से पूरित हुआ वोह फिर चलने लगे इस के पश्चात् निर्जन महा घोरवनमें प्रवेशकर दूरतक छांहदेनेवाले एक सुन्दर वडको देखा। १५। भरत श्रेष्ठ भीमसेन उन सबोंको वहां उतारकर वोले कि आप यहांठहरें मैं जल ढूंढलाऊं वहां जलमें चरने वाले सारसों का शब्द सुन पडता है विदितहोता है कि वहां एक वड़ा तालहोगा फिरवोह वड़े भाईकी आज्ञासे उधरको चले जिधरसे जलचर पक्षियोंकी ध्वनि सुनी जाती थी। १८। हे भरतश्रेष्ठ उन्हों ने वहां नहाकर जल पिया और भ्रातृ प्रिय भीम भाइयों के लिये डुपट्टे में जललिये लौट चले अनन्तर वेग पूर्वक उस दोकोसकी दूरी से लौटआकर माताकी ओर देख शोक और दुःख से विह्वलहोकर उरगकी भांति लम्बी सांस छोडी वृकोदर माता और भाइयों को धरतीपर पडे और सोये देखकर अति शोक से विलाप कर कहने

Kunti spoke to her sons, "(I endure the pangs of thirst in spite of my being surrounded by my five sons, the *Pandavas*.) Bhimsen's heart was filled with affliction and pity on hearing this from her again and again. He proceeded and going for some time in the dense forest he saw a beautiful banyan tree spreading its shadow far and wide. 15. He left them there and said, " You all stay here, I am going in search of water. Yonder I hear the noise of cranes and guess there must be a large tank there.', He went thither by the permission of his elder brother. 18. He bathed in the tank, drank water and took some for his brothers in his sheet. Retracing with haste the distance of two miles, he looked at his mother and heaved a long sigh of grief and distress. Seeing his mother and brothers sleeping on the ground he gave vent to his grief, saying, " What misery can be greater than this: I see my brothers lying on the

शयनेषुपराद्ध्र्येषु येपुरावारणावते। नाधिजग्मुस्तदानिद्रां तेऽद्यसुप्तामहीतले ॥२३॥ स्वसारंवसुदेवस्य शत्रुसंघावमर्द्दिनः। कुन्तिराजसुतांकुन्तीं सर्वलक्षणपूजिताम् ॥२४ स्नुषांविचित्रवीर्य्यस्य भार्य्यांपाण्डोर्महात्मनः। तथैवचास्मज्जननीं पुण्डरीकोदरप्रभाम् ॥ २५ ॥ सुकुमारतरामेनां महार्हशयनोचिताम्। शायनांपश्यताद्येह पृथिव्यामतथोचिताम् ॥ २६ ॥ धर्मादिन्द्राच्चवाताच्च सुषुवेयासुतानिमान्। सेयंभूमौपरिश्रान्ता-शेतेप्रासादशायिनी ॥ २७ ॥ किन्नुदुःखतरंशक्यं मयाद्रष्टुमतःपरम्। योऽहमद्यनर-व्याघ्रान् सुप्तान्पश्यामि भूतले ॥ २८ ॥ त्रिषुलोकेषुयो राज्यंधर्मनित्योऽर्हतेनृपः। सोऽयंभूमौपरिश्रान्तः शेतेप्राकृतवत्कथम् ॥ २९ ॥ अयंनीलाम्बुदश्यामो नरेष्वप्रति

लगा कि इस से अधिक और कष्ट क्या होसक्ता है कि मुझ दुर्भाग्य को भाइयोंको धरती पर सोतेहुए देखना पडता है पहिले वारणावत नगर में बडे २ मूल्यवान विस्तरों पर जिनको नींद नहीं आतीथी आज वे मिट्टी पर पड़े सोते हैं देखो जो शत्रुदलनाशी वसुदेव की बहिन राजाकुंति भोजकी बेटी विचित्रवीर्य की पुत्रवधू महात्मा राजापांडुकी स्त्री और हमारी माता है जो सब अच्छे लक्षणों से सुशोभित पद्मगर्भ सदृश रूपवती बडी।२५।कोम-लांगी और मूल्यवान विस्तरों पर सोने योग्यहै क्या उस कुन्ती का आज मिट्टीपर सोना अच्छा लगताहै जिसने धर्म, इन्द्र और पवन देवताओंसे सन्तानप्राप्तकी और सदासे बडे२ भवनों में सोती आई है वोह आज थकावट के मारे धरती पर लोटती है।२७। फिर इस से मेरेलिये और कौनसा दुःख देखना अधिकहोगा कि आज मैं इन पुरुषोत्तमों को मिट्टी के बिछौनेपर पडेहुए देखता हूं धार्मिकवर राजा युधिष्ठिर जो तीनों लोकोंके अधिकारी होने के योग्यहैं। हाय आज वोह क्योंकर सामान्य जनोंकी भांति थकावट से धरतीपर सोते हैं इस से अधिक और क्या दुःखहोनाहै।२९।कि नीले बादलकी समान श्रीमान अर्जुन जिसकी

ground. Those who could not sleep with ease on precious beds in Barnavat, are lying here in a sound sleep on the bare ground. The sister of Basudev the destroyer of enemies, daughter of king Kuntibhoj, daughter-in-law of Vichitravirya, wife of king *Pandu*, and our mother who is endowed with all the marks of fortune and beautiful like the lotus flower, worthy of sleeping on the most precious beds, is it proper for such Kunti to sleep on earth? She who has given birth to the sons of Dharm, Indra and *Pavan* and has ever slept in large palaces, is sleeping tired on earth. What miserable sight can be greater to me than beholding these best of mankind lying on the bed of earth. Yudhishthir the just who is worthy of ruling the three worlds, alone, is lying tired like an ordinary man on the earth. What misery can be greater than that the fortunate Arjun resembling a blue cloud, who has not

मोऽर्जुनः । शेतेप्राकृतवद्भूमौ ततोदुःखतरंनुकिम् ॥ ३० ॥ अश्विनाविवदेवानांयावि
मौरूपसम्पदा । तौप्राकृतवदद्येमौ प्रसुप्तौधरणीतले ॥ ३१ ॥ ज्ञातयोयस्यनैवस्युर्वि-
षमाःकुलपांशनाः । सजीवेतसुखंलोके ग्रामद्रुमइवैकजः ॥ ३२ ॥ एकोवृक्षोहियोग्रामे
भवेत्पर्णफलान्वितः । चैत्योभवति निर्ज्ञातिरर्च्चनीयः सुपूजितः ॥ ३३ ॥ येषाञ्चबहवः
शूराज्ञातयो धर्ममाश्रिताः । तेजीवन्ति सुखंलोके भवन्तिचनिरामयाः ॥ ३४ ॥
वलवन्तःसमृद्धार्था मित्रवान्धवनन्दनाः । जीवन्त्यन्योन्यमाश्रित्य द्रुमाःकाननजा इव
॥ ३५ ॥ वयन्तुधृतराष्ट्रेण सपुत्रेणदुरात्मना । विवासितानदग्धाश्च कथञ्चिदैवसंश्र
यात् ॥ ३६ ॥ तस्मान्मुक्तावयं दाहादिमंवृक्षमुपाश्रिताः । कान्दिशं प्रतिपत्स्यामः
प्राप्ताःक्लेशमनुत्तमम् ॥ ३७ ॥ सकामोभवदुर्बुद्धे धार्त्तराष्ट्राल्पदर्शन । नूनंदेवाःप्रसन्नास्ते
नानुज्ञांमेयुधिष्ठिरः ॥ ३८ ॥ प्रयच्छतिवधेतुभ्यं तेनजीवसिदुर्मते । नन्वद्यससुतामात्यं

वराबर इस मर्त्यलोक में कोई नहीं है आज छोटेसे मनुष्यकी भांति मिट्टी पर पड़े हैं और यह दोछोटेभाई जो रूपसम्पद में अश्विनीकुमारोंके सदृश द्युतिमानहैं वे साधारण लोगोंकी भांति धरती पर लोटरहे हैं। ३१। जिसके कुलनाशी भयानक ज्ञाति नहीं है वोह ग्रामके वृक्ष कीनाई अकेला सुखसे दिन काटसक्ताहै देखो ग्रामभर में अकेला फल पत्रों से सुशोभित एकही वृक्षहो तो वोह वृक्ष चैत्य करके भले प्रकार पूजा जाताहै और इस भूलोक में जिन के धार्मिक वीरवर बहुत ज्ञातिहों वेभी विना क्लेश सुखसे कालकाटतेहैं औरभीसुखसे बली ऐश्वर्ययुक्त और मित्र बांधवोंको आनन्द देतेहुए वन में उपजे हुए वृक्षोंकी भांति एक दूसरे के सहारे परमसुखसे काल व्यतीतकरतेहैं। ३५। पर कुबुद्धि धृतराष्ट्र और दुर्योधनने हमको भगाया है दैवबश किसी प्रकार हम जलने से वचे उस आग से बचकर कठोर क्लेश भुगतेहुए इसवृक्षके आसरे आयेहैं अब फिर किधरजावें। ३७। अरे कुबुद्धि अल्पदर्शी धृतराष्ट्र पुत्र तू अब अपनी आशा पूरीकर इस में संदेह नहीं कि तुझपर देवगण प्रसन्न

his opponent in the world, is lying on the ground like one in a low position. And these two younger brothers, glorious in the wealth of beauty like the gods Aswini Kumars, are lying on the bed of earth like ordinary people. He who has no kinsmen and allies can live the life of loneliness and ease like the village tree. A tree, standing by itself, bearing fruits and leaves, is respected by the village people as Chatiya. In this world, those who have virtuous and brave kinsmen live a life of ease and freedom from trouble. Many powerful and wealthy men, giving pleasure to their friends and kinsmen pass their time like a forest of trees giving and receiving mutual help. But we are driven away by foolish Dhritrashtra and Duryodhan. We had a narrow escape from being

सकर्णानुजसौबलम् ॥ ३९ ॥ गत्वाक्रोधसमाविष्टः प्रेषयिष्येयमक्षयम् । किन्तुशक्यं मयाकर्त्तुंयत्तेनक्रुध्यतेनृपः ॥४०॥धर्मात्मापाण्डवश्रेष्ठः पापाचारयुधिष्ठिरः ! एवमुक्त्वा महाबाहुः क्रोधमन्दीप्तमानसः ॥ ४१ ॥ करंकरेणनिष्पिष्य निःश्वसन् दीनमानसः। पुनर्दीनमनाभूत्वा शान्तार्चिरिवपावकः ॥ ४२ ॥ भ्रातॄन्महीतलेसुप्तानवैक्षत वृकोदरः विश्वस्तानिवसंविष्टान् पृथग्जनसमानिव ॥४३॥ नातिदूरेणनगरं बनादस्माद्धिलक्षये जागर्त्तव्येस्वपन्तीमे हन्तजागर्म्यहंस्वयम् ॥ ४४ ॥ पास्यन्तीमेजलंपश्चात् प्रतिबुद्धा जितक्लमा इतिभीमो व्यवस्यैव जजागारस्वयंतदा ॥ ४५ ॥

इत्यादिपर्वाणि जतुगृहपर्वाणि भीमजलाहरणे द्विपंचाश दधिकशतोऽध्यायः ॥१५२॥

समाप्तं जतुगृहपर्व ॥ अथ हिडिम्बबध पर्व ॥

हैं अरे कुमति राजायुधिष्ठिर तुझे मारडालनेकी आज्ञा नहीं देते इस लिये तू जीता है क्या आजही मैं कोपाविष्टहोकर तुझको बेटा, मन्त्री, कर्ण छोटेभाइयों और शकुनि के साथ यमराज के घर नहीं भेजसक्ता हूं पर क्या करूं धर्मात्मा पाण्डवों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर तुझपर क्रोधित नहीं होते महाभुज वृकोदर ने इसप्रकार क्रोध से चित्त को मलिनकर।४१।हाथसे हाथ रगड दुःखसे लम्बीसांस छोडी फिर बुझीहुई आगकीनाईं दीन चित्त से भाइयों की ओर देख सोचने लगे कि यह लोग विश्वाससे साधारण जनोंकी भांति सोरहे हैं मुझको जान पडता है कि इस बन के पासही नगर है जागते रहनाचाहिये यदि ये सोगये हैं तो मैं जागताहूं थकावट दूरहोने पर जब यह जागेंगे तब जल पियें गे भीमसेन तब ऐसा निश्चयकर स्वयम् जागने लगे ॥ ४५ ॥

burnt. With great difficulty we have reached this tree and donot know where to go next. O foolish and short sighted son of Dhritrashtra you may now enjoy the kingdom. No doubt, the gods are pleased with you, O fool, because king Yudhishthir does not permit me to kill you. Can I, in anger, not kill you with son, ministers, Karan, younger brothers and Shakuni ? Yet what is to be done, Yudhishthir is not angry." The brave Vrikodar's mind was thus upset with anger. He rubbed his hands with anger and heaved a long sigh of grief. Looking sorrowfully again towards his brothers he said to himself, "They are sleeping fearlessly like ordinary people. I think the city is near and I should keep watch while they are sleeping. They will drink water when they awake." So saying, Bhimsen kept watch. 45.

वैशम्पायन उवाच । तत्रतेषुशयानेषु हिडिम्बोनामराक्षसः । अविदुरेवनात्तस्मा
च्छालवृक्षं समाश्रितः ॥ १ ॥ क्रूरोमानुषमांसादो महावीर्य्यपराक्रमः । प्रावृड्जलधर
श्यामः पिङ्गाक्षोदारुणाकृतिः ॥ २ ॥ दंष्ट्राकरालवदनः पिशितेप्सुःक्षुधार्दितः ।
लम्बस्फिग्लम्बजठरो रक्तश्मश्रुशिरोरुहः ॥ ३ ॥ महावृक्षगलस्कन्धः शंकुकर्णोविभी
षणः । यदृच्छयातानपश्यत् पाण्डुपुत्रान्महारथान् ॥ ४ ॥ विरूपरूपःपिङ्गाक्षःकराले
घोरदर्शनः । पिशितेप्सुःक्षुधार्त्तश्च तानपश्यद्यदृच्छया ॥ ५ ॥ उर्द्धांगुलिःसकण्डूयन्
धुन्वन्रूक्षान्शिरोरुहान्‌जृम्भमाणोमहावक्त्रःपुनःपुनरवेक्ष्यच॥६॥ हृष्टोमानुषमांसस्य
महाकायोमहाबलः । मेघसंघातवर्ष्माच तीक्ष्णदंष्ट्रोज्ज्वलाननः ॥७ ॥ आघ्रायमानुषं
गन्धं भगिनीमिदमब्रवीत् । उपपन्नश्चिरस्याद्य भक्ष्योऽयंममसुप्रियः ॥ ८ ॥ स्नेहस्र-
वान्प्रस्रवतिजिह्वापर्य्येतिमेसुखम् । अष्टौदंष्ट्राः सुतीक्ष्णाग्राश्चिरस्यापातदुःसहाः ।९।

अध्याय १५३ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि वे जहां सोतेथे वहांसे थोडीदूर एक सालके बृक्षपर नर मांसका खानेवाला बडा वीर्यवन्त और पराक्रमी वर्षाके बादलकी भांति काला देखने में भयानक और भूखा हिडिंब नामक एक कुटिल राक्षस था उस मांसभोजी का जिह्वा मूल और पेट बहुत बडा दोनों नेत्र पिघले दाढी और केश लाल, मुख बडे दांतों से बडा बिकराल।३।गला और गर्दन बडे बृक्षकी शाखाकी नाईं, और दोनों कान शंखकी भांति थे देखने में बडेभयानक उस पिघलीहुई आंखवाले, मांस खानेवाले, भूंख कराल रूप राक्षस की दृष्टि एकायक सोतेहुए पांडवोंपर पडी बडाभारी अतिबली घने बादल के समान, कटीले दांतवाला, और जलते हुए मुखवाला, वोह मांसखानेवाला मनुष्यों की गन्ध सूंघकर उँगली उठाकर शिर खुजलाता रूखे बाल हिलाता, लम्बा चौडा मुँहखोल बार २ उनको देखताहुआ।७।नरमांस खानेकी आसा से बहिन से बोला कि आज बहुत

CHAPTER CLIII

Vaishampayan said that at a short distance from the sleeping Pandavas, on a sal tree, there lived a cannibal, very powerful, black like a cloud charged with rain, voracious and dreadful to look at, a cruel Rakshasa named Hidimva. The tongue and belly of the cannibal were extremely large, with melting eyes, red beard and hair, mouth dreadful with large teeth, neck like the trunk of a large tree and ears like conchs. His eyes fell on the sleeping Pandavas. Having got a smell of human being, he pointed towards them with his finger and with a scratching of his hairy head and opening of large mouth to eat of the human flesh, he spoke to his sister, saying, "I have got my favourite food after a long time. My tongue is dropping water in the expectation of the treat. The points of my eight teeth

देहेषुमज्जयिष्यामि स्निग्धेषुपिशितेषुच । आक्रम्यमानुषं कण्ठमाच्छिद्यधमनीमपि। १०
उष्णंनवंप्रपास्यामि फेनिलंरुधिरंबहु । गच्छजानीहिकेत्वेते शेरतेवनमाश्रिताः ॥
॥ ११ ॥ मानुषयोबलवान्गन्धो घ्राणंतर्पयतीवमे । हत्वैतान्मानुषान् सर्वानानयस्व
ममान्तिकम् ॥ १२ ॥ अस्मद्विषयसुप्तेभ्यो नैतेभ्योभयमस्तिते। एषामुत्कृत्यमांसानि
मानुषाणांयथेष्टतः ॥१३॥ भक्षयिष्यावसहितौ कुरुतूर्णंवचोमम। भक्षयित्वाचमांसानि
मानुषाणांप्रकामतः ॥ १४ ॥ नृत्यावसहितावावां दत्ततालावनेकशः। एवमुक्ताहिडि
म्बातु हिडिम्बेनतदावने ॥ १५ ॥ भ्रातुर्वचनमाज्ञाय त्वरमाणेवराक्षसी। जगामतत्र
यत्रस्म पाण्डवाभरतर्षभ ॥ १६ ॥ ददर्शतत्रसागत्वा पाण्डवान्पृथयासह । शयानान
भीमसेनंच जाग्रंतंत्वपराजितम् ॥ १७ ॥ दृष्ट्वैवभीमसेनंसा शालपोतमिवोद्गतम् । राक्ष

दिन पीछे मेरा प्रिय खाना आपहुँचा है मांसखाने का सुख आनेपर मेरी जीभ से रस गिररहा है मेरेआठदांतों का अगला भाग बडा तेजहै यह बडे दांत जिसपर जालगते हैं उनकी चोट उस से सही नहींजाती उन दांतोंको आज बहुत दिन पीछे कोमल मांसवाली देहमें घुसाऊंगा आज मैं मनुष्यका गलापकड नसैं निकाल बहुतसा रक्त पिऊंगा । तुम वहांजाकर जानो कि वे कौन और क्योंकर बनमें सोतेहैं।११।मुझको निश्चय जानपडता है कि वे मनुष्यहोंगे क्योंकि मनुष्यकी तेजगन्ध मेरीनाकको सुख पहुँचारहीहै सो तुम उन मनुष्यों को मारकर मेरेपास लेआओ वे मेरेअधिकार में सोरहे हैं उन से तुम कुछ भय मत खाना।१३।हम दोनों मिलकर उन मनुष्योंकी देहसे मांस चुनरकर मनमाना खायँगे तुम तुरन्त मेरीबात मानकर कामकरो आज हम मनमाना मांस खाकर दोनों मिलकर भांति २ की ताल देतेहुए नाचैंगे । तब राक्षसी हिडिंबा हिडिंबकी यह बातसुनकर जहां पांडवलोग विराजते थे वहां झटचली गई और पहुँचकर देखा कि पृथासहित पांडवलोग सोते हैं और जयके अयोग्य भीमसेन जागते हैं।१७। राक्षसी नये साल के बृक्षकीसमान

are very keen. No one can bear the attack of my teeth. After so long, I shall thrust my teeth, to day, in the soft flesh. I shall drink warm human blood after taking out the tendrils of their necks. Go there and ascertain who they are and why they are sleeping in this forest. I believe they are human beings for, I smell of human beings. Kill them and bring them to me. You should have no fear as they are sleeping within my authority. We shall both together pick out flesh from their bodies. Do at once my bidding. We shall eat flesh today to our hearts' content and shall dance together on different tunes. The demoness, Hidimba went to the place where the Pandavas were and saw that Pratha and the Pandavas were sleeping and the unconquerable Bhimsen was keeping watch. Seeing the matchless manly beauty of Bhimsen she was overpowered with love and

सीकामयामास रूपेणाप्रतिमंभुवि ॥१८॥ अयंश्यामोमहाबाहुः सिंहस्कन्धोमहाद्युतिः। कम्बुग्रीवःपुष्कराक्षो भर्त्तायुक्तोभवेन्मम ॥ १९ ॥ नाहंभ्रातुर्वचोजातु कुर्य्यांक्रूरोपसंहितम्। पतिस्नेहोऽतिबलवान्न तथाभ्रातृसौहृदम् ॥ २० ॥ मुहूर्त्तमेवतृप्तिश्च भवेद्भ्रातुर्ममैवच। हतैरतैरहत्वातु मोदिष्येशाश्वतीःसमाः ॥ २१ ॥ साकामरूपिणीरूपं कृत्वा मानुषमुत्तमम्। उपतस्थेमहाबाहुं भीमसेनंशनैःशनैः ॥ २२ ॥ लज्जमानेवललना दिव्याभरणभूषिता। स्मितपूर्वमिदंवाक्यं भीमसेनमथाब्रवीत् ॥ २३ ॥ कुतस्त्वमसिसंप्राप्तः कश्चासिपुरुषर्षभ। कइमेशेरतेचेह पुरुषादेवरूपिणः ॥ २४ ॥ केयंचबृहतीश्यामा सुकुमारीतवानघ। शेतेवनमिदंप्राप्य विश्वस्तास्वगृहेयथा ॥ २५ ॥ नेदंजानातिगहनं वनं राक्षससेवितम्। वसतिह्यत्रपापात्मा हिडिम्बोनामराक्षसः ॥ २६ ॥ तेनाहंप्रेषिताभ्रात्रा दुष्टभावेनराक्षसा। विभक्षयिषतामांसं युष्माकममरोपमाः ॥ २७ ॥ साहंत्वामभिसंप्र

उदित और धरती भर में अनुपम रूप सौंदर्ययुक्त सुन्दर पुरुष भीमसेन को देखतेही कामदेव के वश में होगई और समझा कि यह महाभुज सिंहकीसी गर्दनवाला अतिद्युतिमान शंखग्रीव पद्म नेत्र पुरुष मेरा पति होनेके योग्य है।१९। मैं कभी निठुरभाईकी बात न मानूंगी क्योंकि पति पर स्नेह जितना बलकरता है उतनाभाई पर कभी नहीं करता और इनको मारने से भाई को और मुझको क्षणभर सुख मिलेगा पर न मारने से सदा आनन्दकी उमंगमें इनसे बडा सुख पासकूंगी।२१।ऐसा समझकर कामरूपा राक्षसी नम्रता और लज्जा से कुछ मुसकराती हुई भीमसेन से बोली कि हेपुरुष श्रेष्ठ आप कौन हैं कहांसे आये हैं और जो यह देवरूपी गण सोये हैं वे कौनहैं । हेअनघ ! यह जो तरुण सुवर्ण के रंगकी कोमलांगी स्त्री घर में रहनेकी भांति विश्वासपूर्वक इस बन में सोरही है क्या वोह नहीं जानती कि इस वन में राक्षस रहते हैं यहां हिडिंब नामक पापात्मा राक्षस रहताहै।२७।वोह मेरा भाई है हे देववत मनुष्यगण उस मांसभोजीने आपका मांस

thought that the brave man of lion-like neck and lotus eyes was worthy of becoming her husband. She resolved to disregard her brother's word as she felt that the love of a husband was stronger than that of a brother and that by killing them she and her brother would get a momentary pleasure while by sparing them she would be able to pass her time in pleasure for ever. Thereupon she assumed the form of a beautiful woman and walking slowly she reached Bhimsen. The demoness decorated with ornaments spoke humbly and with blushes to Bhimsen, saying, "Who are you best of men and whence do you come ? Who are these godlike men ? Who is this delicate woman of golden colour, sleeping fearlessly in the forest as if it were her home ? What relation does she bear to you ? Does she not know that this forest is infested by demons ? Here lives a

क्ष्य देवगर्भसमप्रभम् । नान्यंभर्त्तारमिच्छामि सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ २८ ॥ एतद्विज्ञा-
यधर्मज्ञ युक्तमग्निसमाचर । कामोपहतचित्तांगीं भजमानांभजस्वमाम् ॥ २९ ॥ त्रा-
स्यामित्वांमहाबाहो राक्षसात् पुरुषादकात् । वत्स्यावोगिरिदुर्गेषु भर्त्ताभवममानघ ।
॥ ३० ॥ अन्तरिक्षचरीह्यस्मि कामतोविचरामिच । अतुलामाप्नुहिप्रीतिं तत्रतत्रमया
सह ॥ ३१ ॥ भीमसेन उवाच । मातरंभ्रातरंज्येष्ठं सुखसुप्तानकथंत्विमान् । परित्य
जेतकोन्वद्य प्रभवन्निहराक्षसि ॥ ३२ ॥ कोहिसुप्तानिमान् भ्रातॄन्दत्त्वा राक्षसभोज-
नम् । मातरञ्चनरोगच्छेत् कामार्त्तइवमद्विधः ॥ ३३ ॥ राक्षस्युवाच । यत्तेप्रियंतत्क-
रिष्ये सर्वानेतान्प्रबोधय । मोक्षयिष्याम्यहंकामं राक्षसात् पुरुषादकात् ॥ ३४ ॥
भीम उवाच । सुखसुप्तान्वने भ्रातॄन्मातरंचैवराक्षसि । नभयाद्बोधयिष्यामि भ्रातु-

---

खाने के बुरे अभिप्राय से मुझे भेजाहै पर मैं सच कहतीहूं कि आपको देवरत देखकर आप के विना किसी दूसरे को पति बनाया नहीं चाहती हे धर्म शील इसपर ध्यान देकर मेरेसाथ यथोचित व्यवहार कीजिये मेरामन और सब अंग काम के बाण से घायल हुआ है मैं आपको भजरही हूं आप मुझपर कृपाकरैं।२९।हेमहाभुज मैं आपको इस पुरुष भोजी राक्षससे बचाऊंगी आप मेरेपति होवें हम दोनों पहाड़पर दुर्ग में रहेंगे मैं आकाश में उडनेवालीहूं इच्छानुसार आकाश आदि सब स्थानों में चलती फिरतीहूं आप मेरेसाथ सब स्थानों में घूमकर अपार आनन्द लूटेंगे ।३१। भीमसेन ने कहा कि हेराक्षसि ! इन्द्रिय सतानेवाले मुनि के समान कौन माता और बड़े तथा छोटे भाइयोंको त्याग सक्ता है और मेरेसदृश कौन मनुष्य काम से पीडितकी भांति सुखसे छोटेभाई और माता को राक्षसके भोजनके लिये छोड़कर चलाजासक्ताहै राक्षसीने कहा कि आप जो ऐसा चाहैं गे तो मैं वही करूंगी आप इनको जगावें मैं सहजही में सबको मनुष्य के खानेवाले राक्षसके हाथसे छोड़ाऊंगी।३४।भीमसेन ने कहा हे राक्षसी ! तेरेदुरात्मा भाई के भय से

---

cruel demon, my brother, named Hidimb, who with the bad purpose of eating your flesh has sent me hither. But I tell you truly that seeing you god like I shall not make any one else my husband. I hope you will behave with me properly after due consideration. My mind and limbs are pierced by the arrow of love. I love you. Be kind to me. I shall protect you, brave man, from the man eating demon. Be my husband. We will both live together in a mountain fortress. I can fly in the air and can go at will everywhere. You can enjoy my company in all those places." Bhimsen replied, "Who can leave his mother and younger brothers like a recluse? Who, like me, can leave his younger brothers and mother sleeping soundly, to become a prey to the demon?" The demoness said, "I shall do as you wish. Awaken them from sleep; I shall easily save

स्तवदुरात्मनः ॥ ३५ ॥ नहिमेराक्षसाभीरु सोढुंशक्ताःपराक्रमम् । नमनुष्यानगन्धर्वा नयक्षाश्चारुलोचने ॥ ३६ ॥ गच्छवातिष्ठवाभद्रे यद्वापीच्छसितत्कुरु । तंवाप्रेषयतन्व ङ्गि भ्रातरंपुरुषादकम् ॥ ३७ ॥

इत्यादिपर्वणि हिडिम्बवधपर्वणि हिडिम्बाभीमसेनसम्वादे त्रिपंचाशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १५३ ॥

वैशम्पायन उवाच । तांविदित्वाचिरगतांहिडिम्बोराक्षसेश्वरः । अवतीर्य्य द्रुमात्तस्मादाजगामाशु पाण्डवान् ॥ १ ॥ लोहिताक्षो महाबाहुरूर्ध्वकेशो महाननः । मेघसंघातवर्ण्णाच तीक्ष्णदंष्ट्रोभयानकः ॥ २ ॥ तमापतन्तंदृष्ट्वैव तथाविकृतदर्शनम् । हिडिम्बोवाचवित्रस्ता भीमसेनमिदंवचः ॥ ३ ॥ आपतत्येषदुष्टात्मा संक्रुद्धः पुरुषादकः । साहंत्वांभ्रातृभिःसार्द्धं यद्ब्रवीमितथाकुरु ॥ ४ ॥ अहंकामगमावीर रक्षोवलसमन्विता ।

इस वन में सुखसे सोयेहुए भाइयों और माताको नहीं जगा सकूंगा । हे भीरु सुनेत्रे मनुष्य, गन्धर्व यक्ष वा राक्षस कोईभी मेरापराक्रम नहीं सहसक्ता । हेभद्रे ! तुम चाहै जाओ या रहो अथवा जो चाहतीहो करो चाहे अपने उस पुरुष भोजीभाई को भेजो मैं न तो कोई विधि कहूंगा और न मने करूंगा ॥ ३७ ॥

अध्याय १५४ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर लाल नेत्र महाभुज खड़ेहुए बालवाला, बडेमुँहवाला, बादलकी समान काला, और तेज दांतवाला वोह विकराल करालयुक्त राक्षसनाथ हिडिंब हिडिंबा को बहुत देर करते देख उस वृक्षसे नीचे पांडवोंके पास शीघ्र आनेलगा हिडिंबा राक्षस को गिरते देखकर भय से घबडाकर भीमसेन से बोली ।३। कि वोह देखो दुष्टात्मा पुरुषनाशी क्रोधितहोकर उतररहाहै अब मैं जैसा कहतीहूं आप भाइयों के साथ

them from the cannibal." Bhimsen said, "I shall not awaken my brothers and mother, sleeping with ease in this forest, by the fear of your bad-natured brother. Man, Gandharv, Yaksh or Rakshas cannot encounter me. You may either go or stay or, do as you wish or, send your cannibal brother. I shall not say, anything good or bad, to you."

CHAPTER CLIV·

Vaishampayan said that the demon Hidimb of red eyes, great arms, erected hair, large mouth, sharp teeth, deformed face black like a cloud, being impatient of Hidimba's great delay, came down the tree and made haste to reach the Pandavas. Hidimba seeing him come down from the tree was much terrified and said to Bhim, "See, the bad-natured cannibal is coming down in anger. Now act upon my advice. I can go at will. Nature has given me the power. I

आरुह्येमांमत्तश्रोणिंनेष्यामित्वां विहायसा ॥ ५ ॥ प्रबोधयैतान् संसुप्तान्मातरंचपरन्तप। सर्वानेवगमिष्यामि गृहीत्वावोविहायसा ॥ ६ ॥ भीम उवाच । माभैस्त्वंपृथुसुश्रोणि नैषकश्चिन्मयिस्थिते । हिंसितुकक्नुयात् रक्षइतिमेनिश्चितामतिः । अहमेनंहनिष्यामि प्रेक्ष्यन्त्यास्तेसुमध्यमे ॥ ७ ॥ नायंप्रतिबलोभीरु राक्षसापसदोमम।सोढुंयुधिपरिस्पन्द मथवा सर्वराक्षसाः ॥ ८ ॥ पश्यबाहूसुवृत्तौमे हस्तिहस्तनिभाविमौ । ऊरूपरिघसङ्काशौसंहतंचाप्युरोमहत् ॥ ९ ॥ विक्रमंमेयथेन्द्रस्य साद्यद्रक्ष्यसिशोभने । मावमंस्थाः पृथुश्रोणिमत्वा मामिहमानुषम् ॥ १० ॥ हिडिम्बोवाच । नावमन्येनरव्याघ्रत्वामहं देवरूपिणम् । दृष्टप्रभावस्तुमया मानुषेष्वेराक्षसः ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच । तथा सञ्जल्पतस्तस्य भीमसेनस्यभारत । वाचःशुश्रावताःक्रुद्धोराक्षसः पुरुषादकः । १२ । अवेक्षमाणस्तस्याश्च हिडिम्बो मानुषंवपुः । स्रग्दामपूरितशिखं समग्रेन्दुनिभाननम्

वोह करें । हेवीर ! मैं अपनी जातिके बल वीर्य रखनेके हेतु जहां चाहे जासक्तीहूं आप मेरी कमरपर चढ लें मैं आपको आकाश में लेजाऊं । हेशत्रुनाशी ! आप इन सोतीहुई माता और भाइयोंको जगावें मैं सबको लेकर आकाश मार्गसे जाऊंगी।६।भीमसेनने कहा हे सुन्दरी तुमभय मतखाओ मुझ को निश्चय जान पडता है कि मेरेलिये वह राक्षस बड़ा तुच्छ है वोह मुझको नहीं मार सकेगा हे सुन्दरी तुम देखलो तुम्हारे सामनेही मैं उस को नष्ट करताहूं उस नीच राक्षसका क्या कहना है जितने राक्षस हैं यदि सबभी आवें तो मेरे साथ लड़कर नाश से नहीं बचैंगे ।८। हस्ती की सूंड़की समान यह दोभुजलोहे के मुद्गर समान दो जांघ, और बडे तथा कड़े दांतो को देखो हे सुन्दरी ! तुम आज मेरे महेन्द्र समान विक्रमको देखोगी तुम मुझको मनुष्य मानकर कम न समझना ।१०। हिडिंबानेकहा कि हे नरव्याघ्र आप देवरूपी हैं मैं आपका अनादर नहींकरती पर मनुष्य पर राक्षसका जितना प्रभाव है वोह मैं देखचुकीहूं । वैशम्पायन नेकहा कि हे भारत ! भीमसेन हिडिंबा से यह बातेंकर रहेथे कि मनुष्य के खानेवाले हिडिंबने क्रोध पूर्वक आकर वोह बातें सुनलीं।१२।और देखा कि हिडिंबाने सुन्दर मनुष्यका स्वरूपलियाहै उस

shall take you on my back to the skies. Please awaken the sleeping mother and brothers, I shall take them all." 6. Bhimsen replied, "Have no fear, beautiful one. I believe the demon is powerless against me. I shall destroy him in your sight. If all the Rakshashes were to encounter me they could not escape destruction by my hand. 8. These two arms like elephant's trunk, the two thighs like iron clubs and large hard teeth of mine are trustworthy. You will witness my Indra like prowess to day. Donot think little of me because I am a human being." 10. Hidimba replied you are like a god. I donot honour you the less. But I have witnessed the superiority of the

॥ १३ ॥ सुभ्रूनासाक्षिकेशान्तं सुकुमारनखत्वचम् । सर्वाभरणसंयुक्तं सुसूक्ष्माम्बर-
वाससम् ॥ १४ ॥ तांतथामानुषंरूपं बिभ्रतीं सुमनोहरम् । पुंस्कामां शङ्कमानश्च
चुक्रोधपुरुषादकः ॥१५ ॥ संक्रुद्धोराक्षसस्तस्या भगिन्याः कुरुसत्तम । उत्फाल्यवि
पुलेनेत्रेततस्तामिदमब्रवीत् ॥ १६ ॥ कोहिमेभोक्तुकामस्य विघ्नंचरति दुर्मतिः । नबि
भेषिहिडिम्बेकिंमत्कोपाद्विप्रमोहिता ॥ १७ ॥ धिक्त्वामसति पुंस्कामेममविप्रियका-
रिणी । पूर्वेषांराक्षसेन्द्राणां सर्वेषामयशस्करि ॥ १८ ॥ यानिमानाश्रिताकार्षीर्विप्रियं
सुमहन्मम । एषतानद्यवैसर्वान् हनिष्यामित्वयासह ॥ १९ ॥ एवमुक्त्वाहिडिम्बांस
हिडिम्बोलोहितेक्षणः । वधायाभिपपातैनान् दन्तैर्दन्तानुपस्पृशन् ॥ २० ॥ तमापत-
न्तंसंप्रेक्ष्य भीमःप्रहरतांवरः । भर्त्सयामासतेजस्वी तिष्ठतिष्ठतिचाब्रवीत् ॥ २१ ॥
वैशम्पायन उवाच । भीमसेनस्तुतंदृष्ट्वा राक्षसंप्रहसन्निव । भगिनींप्रतिसंक्रुद्धमिदं

के केशोंमें फूलहार लगे हैं मुंह पूर्ण चन्द्रमा सा शोभायमानहै भौं, नाक, नेत्र, और केश सब सुशोभित हैं नख और त्वचा कोमल हुए हैं और सुन्दर पतला वस्त्र तथा सम्पूर्ण आभूषणोंसे सबशरीर बनाठनाहै।१४।उसको ऐसे सुन्दर मानवी रूप में देखकर पुरुष चाहने वाली जानकर बडा कोपाविष्ठ हुआ । हे कुरुश्रेष्ठ ! तब क्रोध के मारे अपनी बडी लाल आंखखोलकर बहिनसे बोला।१६।कि मैं भोजन चाहता हूं किसको ऐसी कुमतिहुई कि मेरी उस इच्छा में विघ्न डाला चाहता है हिडिंबे कया तू मोहित होगई मेरे क्रोध से भय नहीं खाती तू पुरुष की चाह से मेरे अप्रिय काम में हाथ डालती है तुझ पर धिक्कार है तुझ से पहिले श्रेष्ठ राक्षसोंके यशरूपी चन्द्रमापर कलंकके धब्बे लगे तू जिसके भरोसे मेरा अप्रियकरने पर उद्यतहुई है आज मैं अभी तेरे सहित उसका काम पूराकिये देताहूं १९। राक्षस हिडिंब आंखे लालकर हिडिंबासे इसप्रकार कहकर दांतपीसताहुआ पांडवोंके वधके लिये दौड़ा मारनेमें दक्ष तेजस्वी भीमसेनने उसको आते देखकर लांछन के साथ कहा कि ठहरजा ।२१। वैशम्पायनने कहा कि भीमसेन उस राक्षस को बहिन पर क्रोधित देखकर

demoniac power over that of human beings." Vaishampayan said that Bhimsen was talking thus with Hidimba when the cannibal reached near enough to hear them and saw that Hidimba was transformed into a beautiful woman, her hair adorned with flowery garland, face radiant like the full moon, eyebrows, nose and eyes all adorned and soft body adorned with fine clothes and ornaments.14. Seeing her in such a beautiful womanly garb and knowing her to be in love he was very angry and with his eyes red with anger he said to his sister." I desire food. Who has come foolishly between me and my desire ? Are you infatuated, Hidimba ? Do you not fear my anger ? Has love prompted you to do against my pleasure ? Fie on you. You have dishonoured my predecessors. I shall kill you a s

वचनमब्रवीत् ॥ २२ ॥ किन्ते हिडिम्बएतैर्वा सुखसुप्तैःप्रवोधितैः। मामासादयदुर्वुद्धे तरसात्वंनराशन ॥ २३ ॥ मय्येवप्रहरैहित्वं नस्त्रियंहन्तुमर्हसि । विषेषतोऽनपकृते परेणापकृतेसति ॥ २४ ॥ नहीयंस्ववशाबाला कामयत्यद्यमामिह । चोदितैषाह्यनङ्गेन शरीरान्तरचारिणा ॥ २५ ॥ भगिनीतवदुर्वृत्तरक्षसां वैयशोहर । त्वन्नियोगेनचैवेयं रूपंममसमीक्ष्यच ॥ २६ ॥ कामयत्यद्यमां भीरुस्तवनैषापराध्यति। अनङ्गेनकृते दोषे नेमांगर्हितुमर्हसि ॥ २७ ॥ मयितिष्ठतिदुष्टात्मन्न स्त्रियंहन्तुमर्हसि । संगच्छस्व मयासार्द्धमेकेनैको नराशन । २८ ॥ अहमेकोगमिष्यामि त्वामद्ययमसादनम्। अद्य मद्बलनिष्पिष्टं शिरोराक्षसदीर्य्यताम् ॥ २९ ॥ कुञ्जरस्येवपादेन विनिष्पिष्टं बलीयसः। अद्यगात्राणितेकंकाः श्येनागोमायवस्तथा ॥ ३० ॥ कर्षन्तुभुविसंहृष्टा निहतस्यमयामृधे । क्षणेनाद्यकरिष्येऽहमिदं वनमराक्षसम् । पुरायद्दूषितंनित्यं त्वयाभक्षय

हँसतेहुए वोले अरे कुमति मनुष्य खानेवाले तुझे हिडिंवा से क्या प्रयोजन है और इन सव सुख से सोये हुए भाइयों के जगाने की क्या आवश्यकता है तू तुरन्त मेरे पास आ और मुझको मार स्त्रीको मारना तुझे नहीं सोहता विशेष एक के दोषसे दूसरे को मारना ठीक नहीं है।२४।इसवालाने आज अपने वश में रहकर मेरीकामना नहीं की है किंतु कामदेव ने इस के शरीर में घुसकर इस ओर झुकाया है। अरे दुराचारी राक्षस तेरी वहिन ने तेरे कहने से यहां आकर मेरा रूप देखकर मेरी कामना की इस लिये यह अवला तेरी दोषी नहीं होसक्ती कामदेवनेही यह दोष किया है अतएव तुझे इस सुन्दरी को लांछन नहीं करनाचाहिये।२७।मेरेरहते तू इस नारीको नहीं मारसकेगा तू अकेलाहै अकेले मेरेही साथ लड़ मैं अकेला ही आज तुझको यमराज का पाहुना वनाऊंगा आज तेरा शिर मेरे भुजवल से पीसा जाकर ऐसा चूर होजायगा कि मानों वलवंत हाथी के पैर से कुचल गया आज रणभूमि में तेरे मारेजाने पर गृद्ध और गीदड आनन्दसे नीचे उतर कर तेरे शरीर को खींचेंगे पहिले तूने सदा मनुष्य खाकर जिसवन को दूषित कियाथा आज मैं

well as him for whose sake you are ready to do what I do not like."19. Having so said, the demon gnashed his teeth and ran towards the Pandavas to kill them. The valliant Bhim seeing him advance stopped him with reproach.21.Vaishampayan said that Bhim seeing the demon angry with his sister said to him smiling, "What for, O foolish cannibal, are you angry with Hidimba and what have you to do with my sleeping brothers ? Come and kill me. It is not proper for you to kill a woman for the fault of another.24. This young woman his acted by love and not of her own accord. She came here by your permission and fell in love with me. You can not therefore blame her,O worst of demons 27. You shall not be able to kill her as long as I live. We shall fight a duel together and I alone shall kill you.

तान्नरान् ॥ ३१ ॥ अद्यत्वांभगिनीरक्षः कृष्यमाणंमयाऽसकृत् । द्रक्ष्यत्यद्रिप्रतीकाशं सिंहेनेवमहाद्विपम् ॥ ३२ ॥ निराबाधास्त्वयिहते मयाराक्षसपांसन । वनमेतच्चरिष्यन्ति पुरुषावनचारिणः ॥ ३३ ॥ हिडिम्ब उवाच । गर्जितेनवृथाकिंते कत्थितेनचमानुष । कृत्वैतत्कर्मणासर्वं कत्थेथामाचिरंकृथाः ॥ ३४ ॥ बलिनंमन्यसे यच्चाप्यात्मानंसपराक्रमम् । ज्ञास्यस्यद्यसमागम्य मयात्मानंबलाधिकम् ॥ ३५ ॥ नतावदेतान् हिंसिष्ये स्वपन्त्वेतेयथासुखम् । एषत्वामेवदुर्बुद्धे निहन्म्यद्याप्रियम्वदम् ॥ ३६ ॥ पीत्वातवासृग्गात्रेभ्यस्ततः पश्चादिमानपि । हनिष्यामिततःपश्चादिमां विप्रियकारिणीम् ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वाततोबाहुं प्रगृह्यपुरुषादकः । अभ्यद्रवतसंक्रुद्धो भीमसेनमरिन्दमम् ॥ ३८ ॥ तस्याभिद्रवतस्तूर्णं भीमोभीमपराक्रमः । वेगेनप्रहितंबाहुं निजग्राहहसन्निव ॥ ३९ ॥ निगृह्यतंबलाद्भीमो विस्फुरन्तंचकर्षह ।

क्षणभर में उस वनको राक्षससे खालीकर दूंगा ।३१।सिंह जिसप्रकार गजपर चढजाताहै वैसेही आज पर्वत वत तुझको तेरी बहिन के सामने मैं बार २ खीचूंगा अरे ! राक्षस कुल में अधम तेरेमारे जाने से इस वन के रहनेवाले लोग विनावाधा इस वनमें रहेंगे हिडिंब ने कहा अरे मनुष्य तेरे इस व्यर्थ गर्जन और व्यर्थ बातों से क्या होना है जैसा कहरहा है वैसा कर दिखा और अपनीबडाई प्रकटकर देरमतकर।३४।तू अपने को बली और पराक्रमी समझता है पर तू अपना बल और पराक्रम मुझ से मिलने से समझ सकेगा मैं इस समय उनको नहीं मारूंगा वे सुख से सोतेरहें अरे कुबुद्धि पहिले मैं तेरे समान कडीवात कहने वालेकोही नष्टकरूंगा पहले तेरी देह से रक्त पीऊंगा फिर उनको मारूंगा और इस अप्रिय करने वाली को भी मारडालूंगा । ३७ । वैशम्पायन ने कहा कि नर मांस खाने वाला राक्षस यह बात कह कर हाथ बढाकर क्रोधसे शत्रुनाशी भीमसेन पर दौडा भीम पराक्रमी भीमने हँसतेहुए उसी क्षण दौडतेहुए उस राक्षसके वेगसे चलायेहुए हाथों को पकड लिया ॥ ३९ ॥ वोह बलपूर्वक उन

Thy head shall be crushed by my arms as if it were under an elephant's foot. Beasts of prey will devour thy carcass when thou art slain. I shall clear to day the forest which thou hast long infested.31. As a lion attacks an elephant, I shall drag your body, huge like a mountain, in the sight of thy sister. The people of the forest will live safely when thou art killed." Hidimb said, " Cease your useless talk and prove your boasted superiority. You think yourself strong and valliant. But you will know your worth when you will meet me. I shall not kill them at present. Let them sleep with ease. I shall kill a boaster like you, first. I shall drink first the blood of thy body. I shall kill them next along with this wicked woman.37. Vaishampayan said that with these words the cannibal attackedBhim,

तस्मादेशाद्धनूंष्यष्टौ सिंहःक्षुद्रमृगंयथा ॥ ४० ॥ ततःसराक्षसःक्रुद्धः पाण्डवेनवलार्दितः । भीमसेनंसमालिंग्य व्यनदद्भैरवंरवम् ॥ ४१ ॥ पुनर्भीमोबलादेनं विचकर्षमहाबलः । माशब्दःसुखसुप्तानां भ्रातॄणांमेभवेदिति ॥ ४२ ॥ अन्योऽन्यंतौसमासाद्य विचकर्षतुरोजसा । हिडिम्बोभीमसेनश्च विक्रमंचक्रतुःपरम् ॥ ४३ ॥ बभञ्जतुस्तदा वृक्षांल्लताश्चाकर्षतुस्तदा । मत्ताविवचसंरब्धौ वारणौषष्टिहायनौ ॥ ४४ ॥ तयोःशब्देनमहता विबुद्धास्तेनरर्षभाः । सहमात्राच ददृशुर्हिडिम्बामग्रतः स्थिताम् ॥ ४५ ॥

इत्यादिपर्वणि हिडिम्बवधपर्वणि हिडिम्बभीमयुद्धे
चतुष्पंचाशदधिकशततोऽध्यायः ॥ १५४ ॥

वैशम्पायन उवाच । प्रबुद्धास्तेहिडिम्बाया रूपंदृष्ट्वातिमानुषम् । विस्मिताःपुरुषव्याघ्रा बभूवुःपृथयासह ॥ १ ॥ ततःकुन्तीसमीक्ष्यैनां विस्मितारूपसम्पदा । उवा-

फैलायेहुए हाथों को थांभकर तथा उसको इसप्रकार खींच के कि जैसे सिंह छोटेमृग को पकडता है वहांसे आठ धनु अर्थात् ३२ हाथकी दूरीपर लेगया अनन्तर राक्षस बलपूर्वक पांडव भीमसेन से पीडित होकर उनको कसकर लिपटगया और बडे शब्द से चिल्लाने लगा उस शब्द को सुनकर सोतेहुए भाई जाग न उठें इसलिये महावली भीमसेनने फिर उसे बल पूर्वक पकडा तब हिडिंब और भीमसेन दोनों एकदूसरेपर विक्रम प्रकाश करते हुए बल से एक दूसरेको पकडनेलगे।४३।वे दोनों साठवर्षके क्रोधित गजोंके समान वृक्षों को तोडने और लताओं को उखाडने लगे उन के उस बडे कोलाहल से नर श्रेष्ठ पांडवोंने मातासहित जागकर सामने खडी हिडिंबाको देखा ॥ ४५ ॥

अध्याय १५५ ॥

वैशम्पायननेकहा कि कुन्ती और पुरुष श्रेष्ठ पांडवोंने जागकर हिडिंबाका अलौकिक रूप देखकर अचरज माना फिर कुंती उसकी ओर भलीभांति देखकर रूपकी शोभा से

the destroyer of enemies, with outstretched arms. The valliant Bhim at once caught hold of the outstretched arms and dragged him at a a distance of thirty two yards as a lion carries a deer. The demon being held forcibly by the Pandava Bhimsen began to pull and roar with all his might. In order that his cries might not awaken the sleeping brothers, Bhim caught hold of him again with force. A furious combat then ensued and both began to show their valour. Both began to break down trees and creepers like full grown elephants. Their noise awakened the sleeping Pandavas who saw Hidimba standing before them. 45.

CHAPTER CLV

Vaishmpayan said that Kunti and the Pandavas were astonished at the extraordinary beauty of Hidimba. Having gazed towards her

चमधुरंवाक्यं सान्त्वपूर्वमिदंशनैः ॥ २ ॥ कस्यत्वंसुरगर्भाभे कावासिवरवर्णिनि । केनकार्य्येणसम्प्राप्ता कुतश्चागमनंतव ॥ ३ ॥ यदिवास्यवनस्यत्वं देवतायदिवाप्सराः । आचक्ष्वममतत्सर्वं किमर्थंचेहतिष्ठसि ॥ ४ ॥ हिडिंबोवाच । यदेतत्पश्यसिवनं नीलमेघनिभंमहत् । निवासोराक्षसस्यैष हिडिम्बस्यममैवच ॥ ५ ॥ तस्यमांराक्षसेन्द्रस्य भगिनींविद्धिभाविनि । भ्रात्रासम्प्रेषितामार्य्ये त्वांसपुत्रांजिघांसितुम् ॥ ६ ॥ क्रूरबुद्धेरहंतस्य वचनादागतात्विह । अद्राक्षंनवहेमाभं तवपुत्रंमहाबलम् ॥ ७ ॥ ततोऽहंसर्वभूतानांभावे विचरताशुभे । चोदितातवपुत्रस्य मन्मथनवशानुगा ॥ ८ ॥ ततोवृतो मयाभर्ता तवपुत्रोमहाबलः । अपनेतुंचयतितो नचैवशकितोमया ॥ ९ ॥ चिरायमाणांमांज्ञात्वा ततःसपुरुषादकः । स्वयमेवागतो हन्तुमिमान् सर्वांस्तवात्मजान् ॥ १० ॥

अचरज मानकर शांत और मीठी बातोंमें धीरे२ बोली।२।कि ऐ देवकन्या समान सुन्दरी तुम कौनहो ऐ वर वर्णिनी तुम किसकी स्त्रीहो तुम किस काम के लिये और कहांसे यहां आई हो यदि तुम इस बनकी देवी वा अप्सराहो तो मुझसे कहो कि क्यों यहां खडीहो४ हिडिंबाने कहा कि नीले बादलकी भांति जो यह बड़ा बन देखते हैं यह हिडिंब नामक राक्षस के और मेरेबसने का स्थानहै मैं उस राक्षसनाथ हिडिंबकी बहिन हूं मेरेभाई ने आपकी और आपके पुत्रोंकी हिंसाकरने के लिये मुझे भेजाथा।६।ऐ आर्य्ये मैंने उस कुटिल बुद्धि भाईकी बातसे यहां आकर कच्चे सुवर्णकी समान अंगवाले आपके महाबली पुत्रको देखा मैं आप के पुत्रको देखतेही उस मन्मथ के वश में होगई जो सब जीवों के मन के मन्दिरों में फिरा करते हैं मैंने मदनबाण को मन से निकालना चाहा पर किसी प्रकार समर्थ नहींहुई।८। अतएव आप के महाबली पुत्रको मैंने मनही मन में भर्तामाना अनन्तर वोह राक्षस मुझको जिस काम के लिये भेजाथा उस में देर देखकर आप के

for a short time and wondered at her beauty. Kunti spoke to her in soft words, saying, "Who are you, O girl of godlike beauty, whose wife, and what for have you come hither? If you are an apsara or the goddess of the forest, why you are standing here."4. Hidimba replied, "The forest that you see extended like a blue cloud is the home of my brother, the Rakshas Hidimb and myself.6. My brother had sent me to kill you and your sons. I came hither by my brother's order and saw your son of body like gold. I was overpowered by love at first sight. I wanted to extricate the shaft from my mind but, could not succeed.8. Then I resolved to make your son my husband. The demon at my delay came himself and has been dragged at a short distance by your son. Look, yonder are the man and demon trying their strength.12 Vaishamayan said that on hearing her, Yudhishthir, Arjun, Nakul and Sahdev went to the place where the two were fighting.

सतेनममकान्तेन तवपुत्रेणधीमता । बलादितोविनिष्पिष्य ह्यपनीतोमहात्मना ॥ ११ ॥
विकर्षन्तौमहावेगौ गर्ज्जमानौपरस्परम् । पश्यैवंयुधिविक्रान्ता वेतौचनरराक्षसौ ॥ १२
वैशम्पायनउवाच । तस्याःश्रुत्वैववचनमुत्पपात युधिष्ठिरः । अर्जुनोनकुलश्चैव सहदेव
श्चवीर्य्यवान् ॥ १३ ॥ तौतेददृशुरासक्तौ विकर्षन्तौपरस्परम् । कांक्षमाणौजयंचैव
सिंहाविवबलोत्कटौ ॥ १४ ॥ अथान्योन्यंसमाश्लिष्य विकर्षन्तौपुनःपुनः । दावाग्नि
धूमसदृशं चक्रतुःपार्थिवंरजः ॥ १५ ॥ वसुधारेणुसंवीतौ वसुधाधरसन्निभौ । वभ्रा
जतुर्य्यथाशैलौ नीहारेणाभिसंवृतौ ॥ १६ ॥ राक्षसेनतदाभीमं क्लिश्यमानंनिरीक्ष्यच
उवाचेदंवचः पार्थःप्रहसञ्छनकैरिव ॥ १७ ॥ भीममाभैर्महावाहो नत्वांबुध्यामहेवय-
म् । समेतंभीमरूपेण रक्षसाश्रमकर्षिताः ॥ १८ ॥ साहाय्येऽस्मिस्थितः पार्थपातयि

इन पुत्रोंको नष्ट करनेके लिये स्वयम् आगया और मेरे प्रिय धीमान् महात्मा वोह पुत्र बल पूर्वक खींचकर उसको यहांसे लेगये हैं देखिये वोह मनुष्य और राक्षस दोनों युद्धमें विक्रम देखाकर ललकारतेहुए एक दूसरे को वेगसे पकडरहे हैं ।१२। वैशम्पायन ने कहा कि उसकी बात यह सुनकर वीर्यवन्त युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव एकायक उठकर उस युद्धस्थल के निकट गये उन्होंने देखा कि राक्षस और भीमदोनों जय की आशा से एक दूसरेको पकडकर अतिबली सिंह समान खैंचरहे हैं।१४।और वे एक दूसरे से लिपटकर बार २ खिंचके दावाग्नि के धुएंकी नाई धुएं उठा रहे हैं तथा पर्वतवत धुएं से ढके जाकर हिम से ढके पर्वतकी भांति दिखाई देते हैं।१६।अनन्तर अर्जुन भीमसेन को राक्षससे पीडितहोते देखकर हँसतेहुए धीरे से बोले कि हे महाभुज भीम आप भय न खावें हम थके मांदे थे सो नहीं जानसके कि आप ऐसे घोररूप राक्षस से भिडगये हैं । हेपार्थ मैं आपको सहारा देनेको खड़ाहोगया हूं मैही इस राक्षस को नष्ट करूंगा

They saw that the Rakshas and Bhim were both pulling each other with force to gain victory. Smoke went out of their bodies by the friction and the two looked like a mountain covered with smoke.16.Arjun seeing Bhim in trouble with the Rakshas said to him smiling, "Have no fear, Bhim. We were tired and could not know in our sleep that you were engaged in battle with such a fell demon.I am here ready to help you.I shall destroy him.Nakul and Sahdev will protect mother."19. Bhim said, "You need not mix yourself in this matter. Donot fear. When once the demon comes under my power he shall not escape death."Arjun said, " Donot spare long this ill-natured Rakshas. We should not stay here long. It will be day-break in a short time. The Rakshases are very powerful just at day break. 22.Finish his work soon and donot dally.Cease fighting with this cannibal.He may use his cunningness at any time.Show the power of your arms.Vaishmpayan

स्यामिराक्षसम् । नकुलःसहदेवश्च मातरंगोपयिष्यतः ॥ १९ ॥ भीम उवाच । उदासीनोनिरीक्षस्वन कार्य्यःसंभ्रमस्त्वया । नजात्वयंपुनर्जीवेन्मद्बाहन्तरमागतः ॥२०॥ अर्जुन उवाच । किमनेनचिरंभीम जीवतापापरक्षसा । गन्तव्येनचिरंस्थातुमिह शक्यमरिन्दम ॥ २१ ॥ पुरासंरज्यतेप्राची पुरासन्ध्याप्रवर्त्तते।रौद्रेमुहूर्तेरक्षांसि प्रवला निभवन्त्युत ॥ २२ ॥ त्वरस्वभीमसाक्रीड जहिरक्षोविभीषणम् । पुराविकुरुतेमायां भुजयोःसारमर्पय ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । अर्जुनेनैवमुक्तस्तु भीमोरोषाज्ज्वलन्निव । बलमाहारयामास यद्वायोर्ज्जगतःक्षये ॥२४॥ ततस्तस्याम्बुदाभस्य भीमो रोषात्तुरक्षसः । उत्क्षिप्याभ्रामयद्देहं तूर्णंशतगुणंतदा ॥ २५ ॥ भीम उवाच । वृथा मांसैर्वृथापुष्टो वृथावृद्धोवृथामतिः । वृथामरणमर्हस्त्वं वृथाद्यनभविष्यति ॥ २६ ॥

नकुल और सहदेव माताकी रक्षाकरेंगे।१९।भीमने कहा कि तुम्हारे इसमें मिलनेका कुछ काम नहीं देखो मत घबराओ जब यह राक्षस मेरेदोनोंहाथों के नीचे दबगया है तब कभी जीता नहीं रहेगा अर्जुन ने कहा कि हे भीम इस पापात्मा राक्षस का देर तक जीवित रखने का क्या प्रयोजन है यहां अब अधिक रहने का काल नहीं है थोडी देर पूर्व दिशा लाल और प्रातः सन्ध्या का काल आजायगा रौद्र मुहूर्त्त में अर्थात् ब्राह्म मुहूर्त्त के पूर्व दो घडी तक राक्षस प्रवलहोते हैं । २२ । अतएव हे भीम आप शीघ्र पूर्ण कार्य कीजिये अब इसे लेकर न खेलिये इस मांसभोजी को त्यागदीजिये इससेपीछे वोह माया फैलासक्ताहै सो भुजबल प्रकटकीजिये । वैशम्पायन ने कहा कि भीमने अर्जुन की इसबात से क्रोधितहोकर प्रलयकालिक बायुका बल संचय किया और उसीक्षण कोप प्रकटकर बादलके रंगवाली उस राक्षसकी देहको सौवारसे भी अधिक उठाकर ऊपर घुमाया।२५।और उसकानाम लेकर कहा कि तू मांस से व्यर्थ पुष्ट और बृद्धहुआहै तेरीबुद्धि भी व्यर्थ है सो तू व्यर्थ मृत्यु अर्थात् जिस बाहुयुद्धमें मरनेसे स्वर्ग नहीं मिलता बस

said that hearing this from Arjun, Bhim collected in himself strength like that of the wind on the last day of the world. And giving vent to anger circled the cloudy body of the demon a hundred times round his head. 25. And calling him by his name, he said, "You have uselessly fattened your body with flesh. Thy wisdom is also useless. So you will die a useless death (people dying in battle without weapons donot attain heaven) by my hands. I shall make this forest free from danger. You will no longer eat human flesh." Arjun said, "I am ready to help you, if you find it difficult to cope with him. Kill him at once or let me finish the work. You are tired with work and must disengage yourself. Vaishampayan said that on hearing this, Bhimsen in great anger, brought the Rakshas to ground with great force and crushed him to death like a brute. At his last moment the Rakshas

क्षेममद्यकरिष्यामि यथावनमकण्टकम् । नपुनर्मानुषानहत्वा भक्षयिष्यासिराक्षस ।२७। अर्जुन उवाच । यदिवामन्यसेभारं त्वमिमंराक्षसंयुधि । करोमितवसाहाय्यं शीघ्रमेषनिपात्यताम् ॥ २८ ॥ अथवाप्यहमेवैनं हनिष्यामि वृकोदर । कृतकर्मापरिश्रान्तः साधुतावदुपारम ॥ २९ ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वा भीमसेनोऽत्यमर्षणः। निष्पिष्यैनंबलाद्भूमौ पशुमारममारयत् ॥ ३० ॥ समार्य्यमाणोभीमेन ननादविपुलंस्वनम् । पूरयंस्तद्वनंसर्वं जलार्द्रइवदुन्दुभिः ॥ ३१ ॥ बाहुभ्यांयोक्त्रयित्वातं बलवान्पाण्डुनन्दनः। मध्येभङ्क्त्वा महाबाहुर्हर्षयामास पाण्डवान् ॥३२॥ हिडिम्बंनिहतंदृष्ट्वा संहृष्टास्तेतरस्विनः। अपूजयन्नरव्याघ्रं भीमसेनमरिन्दमम् ॥ ३३ ॥ अभिपूज्यमहात्मानं भीमं भीमपराक्रमम् । पुनरेवार्जुनोवाक्यमुवाचेदं वृकोदरम् ॥ ३४ ॥ नदूरंनगरंमन्ये वनादस्मादहं विभो । शीघ्रंगच्छामभद्रंते ननोविद्यात्सुयोधनः ॥ ३५ ॥ ततःसर्वेतथेत्युक्त्वा मात्रासहमहारथाः । प्रययुःपुरुषव्याघ्रा हिडिम्बाचैवराक्षसी ॥ ३६ ॥ इत्यादिपर्वणि हिडिम्बवधपर्वाणि हिडिंबवधेपंच पंचाशदधिकशतोऽध्यायः ॥१५५॥

केही योग्य है इससे तू व्यर्थ मृत्युको प्राप्तकरेगा।२६। हे राक्षस आज मैं इस बनको शांति युक्त और निष्कंटक करूंगा तू फिर मनुष्यमारकर नहीं खासकेगा।२७।अर्जुन ने कहा कि यदि आपने इसराक्षसको युद्ध में भार समझाहो तो मैं आपकी सहायताकरूं आप इसका तुरन्त अंतकीजिये। हे वृकोदर ! अथवा कहिये तो मैंही इसका काम पूराकरूं आप कार्य करके थकगये हैं अब निवृत्तहोना ठीकहै।२९।वैशम्पायनने कहा कि भीमसेन ने उनकी उसबातको सुनकर क्रोधितहो बलसे राक्षसको मिट्टी पर पीसकर पशुकी भांति नष्ट किया राक्षस ने मरने के समय जल से भीगेहुए नगाडे कीभांति घोर शब्द से चिल्लाकर उस बन को पूरितकिया।३१।बलवन्त महाभुज पांडुनन्दन ने राक्षसको हाथों से पकडकर उस के मझिले भाग को तोडकर पांडवों को आनन्दित किया बलशाली पांडुपुत्रों ने हिडिंब को नष्टहोते देखकर प्रसन्न चित्त से नर श्रेष्ठ शत्रुनाशी भीमसेनकी बड़ी प्रशंसाकी।३३। अनन्तर अर्जुन महात्मा भीम पराक्रमी वृकोदरका आदरकर बोले कि हे विभो मुझ को जान पडताहै कि इस बनसे नगर बडी दूर नहीं है चलिये हम उस स्थान में शीघ्र जायँ तभी सुयोधन हमारा समाचार नहीं पावे गा । अनन्तर कुन्ती और महारथी पुरुषोत्तम पाण्डव गण उसपर सम्मतहो वहांसे चलने लगे और हिडिंबाभी उनके संग चली।।३६।।

filled the forest with a sound resembling that of a wet drum. The brave son of Pandu pleased the Pandavas by breaking the middle part of his body. The brave Pandavas cheerfully praised the work of Bhimsen, the best of men and destroyer of enemies. Arjun, then, said, "I think the city is not far off. Let us hasten to the city in order to escape being seen by Suyodhan's men. All having agreed to this proposal, proceeded in that direction and Hidimba followed them.

भीमसेन उवाच । स्मरन्तिवैरंरक्षांसि मायामाश्रित्यमोहिनीम् । हिडिम्बेव्रजप-
न्थानं त्वमिमंभ्रातृसेवितम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर उवाच । क्रुद्धोऽपिपुरुषव्याघ्र भीम
मास्मस्त्रियंवधीः । शरीरगुप्त्यभ्यधिकंधर्मं गोपायपाण्डव ॥ २ ॥ वधाभिप्रायमायान्त
मवधीस्त्वंमहाबलम् । रक्षसस्तस्यभगिनी किंनःक्रुद्धाकरिष्यति ॥ ३ ॥ वैशम्पायन
उवाच । हिडिम्बातुततः कुन्तीमभिवाद्यकृताञ्जलिः । युधिष्ठिरन्तुकौन्तेयमिदं वचन-
मब्रवीत् ॥ ४ ॥ आर्येजानासि यद्दुःखमिह स्त्रीणामनङ्गजम् । तदिदंमामनुप्राप्तं भीम
सेनकृतंशुभे ॥ ५ ॥ सोढंतत्परमंदुःखं मयाकालप्रतीक्षया । सोयमभ्यागतः कालो
भवितामेसुखोदयः ॥ ६ ॥ मयाह्युत्सृज्यसुहृदः स्वधर्मंस्वजनंतथा । वृतोऽयंपुरुष-
व्याघ्रस्तव पुत्रःपतिःशुभे ॥ ७ ॥ वीरेणाहंतथातेन त्वयाचापियशस्विनी । प्रत्याख्या

अध्याय १५६ ॥

भीमसेन ने हिडिंबा को पीछे आते देखकर कहा कि राक्षसगण मोहिनी माया
धारणकर पहिलीशत्रुताको स्मरण किये रहते हैं सो तेराभाई जिस पथ में गयाहै तूभी
उसी पथमें जा युधिष्ठिर ने यह सुनकर कहा कि हेपुरुष व्याघ्र भीम तुम क्रोधितभी
हुएहोतो स्त्री को मत मारो । हेपांडव ! शरीरसे धर्म बड़ाहै धर्म को पालनकरो जब तुम
ने उस महाबली राक्षस को जो हमको मारने आया था मारडाला तब उसकी बहिन
क्रोधकर हमारा क्या करलेगी ।३। वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर हिडिंबाने कुंती और
युधिष्ठिर को प्रणामकर कुंती से कहा कि ऐ आर्ये तुम जानतीहो कि स्त्रियों को अनंग से
कितना दु खहोता है । ऐ शुभे ! उस अनंग के द्वारा मैं भीमसेन से सताई जाती हूं ।५।
मैंने कालकी ओर देखकर उस गहरे दुःख को सह लिया अब सुखका समय आपहुँचाहै
ऐ शुभे मैंने स्वधर्म मित्रों और स्वजनों को छोड़कर आपके पुरुष श्रेष्ठ पुत्रको पतिके पद
पर बैठाया है । हेसुन्दरी यशस्विनी मैं सच कहती हूं कि यदि यह वीर या आप मेरी

CHAPTER CLVI

Seeing Hidimba follow, Bhimsen said, "The Rakshases are deceivers and often remember the old enmity. So you must follow the path of your brother." Yudhishthir interrupted him and said, "Donot kill a woman even if you are angry. (Dharm is superior to one's body and must be kept.) When you have killed the Rakshas who had come to kill us, we donot fear his sister's anger. Vaishampayan said that, then, Hidimba with a bow to Yudhishthir and Kunti addressed the latter as follows:-You know well good woman, how much trouble does love give to women. I am distressed by Bhimsen through love. I bore the sight of death (brother's) hoping to get relief now. Having renounced my Dharm, friends and kinsmen, I have resolved

तानजीवामि सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ ८ ॥ तदर्हसिकृपांकर्त्तुं मयित्वंवरवर्णिनि। मत्वा मूढेतितन्मांत्वं भक्तावानुगतेतिवा ॥ ९ ॥ भर्त्रानेनमहाभागे संयोजयसुतेनह । तमुपादायगच्छेयं यथेष्टंदेवरूपिणम् । पुनश्चैवानयिष्यामि विस्रम्भंकुरुमेशुभे ॥ १० ॥ अहंहिमनसाध्याता सर्वान्नेष्यामिवःसदा । वृजिनात्तारयिष्यामि दुर्गेषुविषमेषुच ॥ ११ ॥ पृष्ठेनवोवहिष्यामि शीघ्रंगतिमभीप्सतः । यूयंप्रसादंकुरुत भीमसेनोभजेतमाम् ॥ १२ ॥ आपदस्तरणेप्राणान्धारयेद्येन तेनवा । सर्वमावृत्यकर्त्तव्यं तंधर्ममनुवर्त्तता ॥ १३ ॥ आपत्सुयोधारयति धर्मंधर्मविदुत्तमः । व्यसनंह्येवधर्मस्य धर्मिणामापदुच्यते ॥ १४ ॥ पुण्यंप्राणान्धारयति पुण्यंप्राणदमुच्यते। येनयेनाचरेद्धर्मं तस्मिन्गर्हानविद्यते ॥ १५ ॥ युधिष्ठिर उवाच । एवमेतद्यथात्थत्वं हिडिम्बेनात्रसंशयः ।

बात को न सुनोगी तो मैं न जीऊंगी इस लिये आप चाहैं मूढ समझकर वा भक्त अथवा कृपापात्र जानकर मुझपर कृपा दिखावें।९।और अपनेपुत्र मेरेपति भीमसेनसे मुझे मिलावें मैं इस देवरूपी पति को लेकर जहां मन चाहे चलीजाऊं और फिर लेआऊंगी । हे शुभे आप मेरा विश्वासकरें आप के स्मरणकरतेही मैं आकर आपलोगों को मनमाने स्थान में लेजाऊंगी।१०।और जाने के अयोग्य कठिन स्थानमेंभी विपत आनेपर उस से बचाऊंगी यदि आप कहीं शीघ्र जाना चाहें तो उसीक्षण पीठपर चढाकर लेजाऊंगी आप प्रसन्नहोवें कि भीमसेन मुझसे प्रीति करे।१२।विपतसे बचनेके लिये जिस उपाय सेभी होसके अपनी रक्षा करनी चाहिये और एक धर्मकी शरणलेकर सब दशा सहलेनी चाहिये धर्मशील जनों के लिये विपदही धर्मकी रोकनेवाली है जो जन विपतकालमेंभी धर्मकी रक्षा करते हैं वही धार्मिकोंमें श्रेष्ठहैं प्राण रखनेही के लिये पुण्य और प्राण देनेवालाभी पुण्यही को पण्डितों ने बतलाया है इस लिये हर किसी मना कियेहुए कर्म को करके प्राण बचाना चाहिये उससे निंदा नहीं होती।१५।युधिष्ठिरने कहा हे सुन्दरि हिडिंबे इस में सन्देह नहीं

to make your son my husband. I speak the truth when I say I shall cease to live if you and your son will not grant my request. Have mercy upon me, whether you regard me as a fool, a true lover or pitiable. Let your son Bhimsen be my dear husband. I shall take him wherever I like. Believe me, I shall bring him again. I shall take you all to the place you desire to reach. I shall bring you out safely, when you are in danger, though it be an impregnable place. Again, if you want to reach a place soon, I shall take you on my back. Be pleased to allow Bhimsen to love me. We must protect self from ill by every possible means. One must endure all for Dharm. Misery is the only test of Dharm. Those, who are firm on their Dharm in misery, are really good. The learned say that one must do good to preserve life and

स्यातव्यंतुत्वयासत्ये यथाब्रूयांसुमध्यमे ॥ १६ ॥ स्नातंकृताह्निकंभद्रे कृतकौतुकमङ्ग लम् । भीमसेनंभजेथास्त्वं प्रागस्तगमनाद्रवेः ॥ १७ ॥ अहःसुविहरानेन यथाकामं मनोजवा । अयंत्वानयितव्यस्ते भीमसेनःसदानिशि ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । तथेतितत्प्रतिज्ञाय भीमसेनोऽब्रवीदिदम् । शृणुराक्षसिसत्येन समयंतेवदाम्यहम् १९ यावत्कालेनभवति पुत्रस्योत्पादनंशुभे । तावत्कालंगमिष्यामि त्वयासहसुमध्यमे ॥ ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । तथेतितत्प्रतिज्ञाय हिडिम्बाराक्षसीतदा । भीमसेन मुपादाय सोर्द्धमाचक्रमेततः ॥ २१ ॥ शैलशृङ्गेषुरम्येषु देवतायतनेषुच । मृगपक्षिवि घुष्टेषु रमणीयेषुसर्वदा ॥ २२ ॥ कृत्वाचरूपंपरमं सर्वाभरणभूषिता । संजल्पन्तीसु मधुरं रमयामासपाण्डवम् ॥ २३ ॥ तथैववनदुर्गेषु पुष्पितद्रुमवल्लिषु।सरःसुरमणीयेषु पद्मोत्पलयुतेषुच ॥ २४ ॥ नदीद्वीपप्रदेशेषु वैदूर्य्यसिकतासुच । सुतीर्थवनतोयासु त

जो तुम ने कहा सबठीक है पर तुम ने जैसा कहा तुमको उसी सत्य में आवद्ध रहना पडेगा । हेभद्रे ! भीमसेन के नहाकर आह्निक कर लेने और कौतुकमंगल करचुकने से सूर्यास्तके पूर्वतक तुम उनको साथ रखसकोगी हे मन के वेग के समान चलनेवाली दिन को भीमसेन से मनमाना विहारकरके नित्यरात्रिको यहां लादेना।१८। वैशम्पायन ने कहा कि भीमसेनने इसपर सम्मतहोकर हिडिंबासे कहा कि हे निशाचरि मैं सत्य करके तुम से एक नियम करताहूं सुनो हेसुन्दरि ! जब तक तुम्हारे पुत्र न होगा मैं तब तक तुमसे मिलूंगा ।२०। वैशम्पायननेकहा कि अनन्तर राक्षसी हिडिंबा यह मानकर भीमसेनको ले उसी क्षण आकाश मार्ग को चली गई फिर मनके समान तेज चलनेवाली वोह राक्षसी परम मनोहर रूप धारणकर सब भूषणोंसे सजकर मीठीबोली बोलती हुई समय २ पर नानास्थानों में भीमसेनके साथ आनन्द करनेलगी कभी सुन्दर पहाडकी चोटीपर कभी मृग पक्षियों के शब्द से गूंजतेहुए मनोहर देवमन्दिर में, कभी बन दुर्ग में, कभी फूले वृक्षोंसे सुहावनी जगह कभी नीले व लाल पद्मसे सुशोभित सुन्दर सरोवर में, वैदूर्य मणि और नदी के बालू से पूरित द्वीप में, कभी सुन्दर बन और अमृत समान जल

that the doing of good is the source of life. Life should be preserved even at the risk of having to do a thing that is prohibited. This course is unblamable." Yudhishthir said, "What you say is true. But you shall have to abide by the promise you have given. Bnimsen will remain with you from morniug, after finishing his ablutions and libations to fire, till sunset. You will take him where you like during day time; but at night fall you must bring him hither. Vaishampayan said that having consented to this Bhim said to Hidimba, "I propose to you yet another condition, viz, I shall have connectien with you till you have a son, and you will have to abide by this condition." Vaishmpayan

धागिरिनदीषुच ॥ २५ ॥ काननेषुविचित्रेषु पुष्पितद्रुमवल्लिषु । हिमवद्गिरिकुंजेषु गुहासुविविधासुच ॥ २६ ॥ प्रफुल्लशतपत्रेषु सरःस्वमलवारिषु । सागरस्यप्रदेशेषु मणिहेमचितेषुच ॥ २७ ॥ पल्वलेषुचरम्येषु महाशालवनेषुच । देवारण्येषुपुण्येषु तथा पर्वतसानुषु ॥ २८ ॥ गुह्यकानांनिवासेषु तापसायतनेषुच । सर्वर्त्तुफलरम्येषु मानसेषुसरःसुच ॥ २९ ॥ विभ्रतीपरमंरूपं रमयामासपाण्डवम् । रमयन्तीतथाभीमं तत्रतत्रमनोजवा ॥ ३० ॥ प्रजज्ञेराक्षसीपुत्रं भीमसेनान्महाबलम् । विरूपाक्षंमहावक्त्रंशंकुकर्णंविभीषणम् ॥ ३१ ॥ भीमनादंसुताम्राष्ठं तीक्ष्णदंष्ट्रंमहाबलम् । महेष्वासंमहावीर्यं महासत्त्वंमहाभुजम् ॥ ३२ ॥ महाजवंमहाकायं महामायमरिन्दमम् । दीर्घघोणंमहोरस्कं विकटोद्बद्धपिण्डिकम् ॥ ३३ ॥ अमानुषंमानुषजं भीमवेगंमहाबलम् ।

सुशोभित अच्छे तीर्थ पहाड़ी नदीमें।२५।कभी फूलवाले पौधों और लताओंसे सुहावने बन में, कभी हिमाचल के कुञ्ज में, कभी कन्दरा के भीतर, कभी खिले कमलों से सोहते हुए जलभरे ताल में, कभी सुवर्ण से भरे सागर खण्डमें, कभी मनोहर नगर और उपवन में, कभी देवोंके पवित्र बन में, कभी पहाड़की कन्दरा में ।२८।कभी गुह्यकोंकी बास भूमि में, कभी तपस्वियों के स्थान में, कभी सदा फल फूलयुक्त मनमोहन मानसरोवर में, क्रीडाकर पाण्डव भीमसेन को आनन्द देनेलगी ।३०।फिर उस राक्षसीने भीमसेन से भीमाकार बड़ाभारी अति बलवीर्यवन्त बड़ाचापधारी महान् सत्ववान् बड़े हाथवाला अति वेगवान, बड़ा मायारचनेवाला, शत्रुनाशी, अमनुष्य, परमनुष्य वीर्य से उत्पन्न एक पुत्र उत्पन्न किया उस पुत्रकी आंखें बड़ी विकट, मुँह बडाभारी, कान शंख के समान, स्वर अति भयानक, होठों का रंग तांबेकी भांति, दांतकटीले, नाक लम्बी, छाती चौड़ी और पिंडली टेढ़ीथीं।३३। वोह कुमार सम्पूर्ण पिशाच और राक्षसोंमें बडाविक्रमी

said that she took Bhimsen with her and flew into the air The Rakshas woman, of movements swift like the mind assumed a heart enchanting shape decked herself in ornaments and talking in a sweet tone she enjoyed Bhimsen's company in different places. They were, at times, on the summit of a beautiful mountain, in a gods' temple ringing with the sounds of birds and animals, in a forest fortress, amidst flower trees, on a lake decked with blue or red lotus, cn an island full of gems and the river sand, in a beautiful forest, by a mountain river having water like nectar, in a forest full of beautiful fruit trees and creepers, in a cave of the Himalayas, on the Ocean full of gold and jewels, in a beautiful orchard, in a forest consecrated to gods, in the habitataions of Guhyaks and hermits, or by the lake Mansarowar always decked with heartenchanting fruits and flowers. In time she gave birth to a son of large boly. His eyes were very wonderful,

यःपिशाचानतीत्यान्यान् बभूवातीवराक्षसान ॥३४॥ बालोऽपियौवनंप्राप्तो मानुषेषु
विशाम्पते । सर्वास्त्रेषुपरंवीरः प्रकर्षमगमद्बली ॥ ३५ ॥ सद्यो हिगर्भान्राक्षस्यो लभं
तेप्रसवन्तिच । कामरूपधराश्चैव भवन्तिबहुरूपिकाः ॥ ३६ ॥ प्रणम्यविकचःपादा-
वगृह्णात् सपितुस्तदा । मातुश्चपरमेष्वासस्तौच नामास्यचक्रतुः ॥ ३७ ॥ घटोह्यस्यो-
त्कचइतिमाता तंप्रत्यभाषत । अब्रवीत्तेननामास्य घटोत्कचइतिस्मह ॥ ३८ ॥ अनु-
रक्तश्चतानासीत् पाण्डवान्सघटोत्कचः । तेषाञ्चदयितो नित्यमात्मनित्योबभूवह ॥
॥ ३९ ॥ संवाससमयोजीर्ण इत्याभाष्यततस्तुतान् । हिडिम्बासमयंकृत्वा स्वांगतिं
प्रत्यपद्यत ॥ ४० ॥ कृत्यकालउपस्थास्ये पितॄनितिघटोत्कचः । आमन्त्र्यरक्षसांश्रेष्ठः

हुआ हे राजन् ! उस बलवान वीर पुत्रने बालकहोने परभी यौवन प्राप्तकिया और उसने मनुष्य लोक में प्रचलित सम्पूर्ण अस्त्रों में बड़ी उन्नति की राक्षसी जिस दिन गर्भवती होती है उसी दिन प्रसव करती है और प्रसवकिया हुआ बालकभी जन्म लेतेही मन-मानारूप धारण करसक्ताहै ।३६। कमर, गर्दन, मुख, कान और केश इन सब अंगोंके वेढबहोने परभी अनेक प्रभायुक्त और बडाचापधारी हिडिंबा कुमार जन्म लेतेही प्रणाम कर पिता और माताके पाओंपर गिरा उन्होंनेभी उसका नाम रखदिया उस बालक के घटकी समान उत्कच अर्थात् खडेकेश थे सो हिडिंबाने उसको देखकर कहा कि इसके उत्कच घटकी भांति हैं इसलिये भीमसेनने उसका नाम घटोत्कच रक्खा।३८।घटोत्कच स्वाधीन होने परभी पांडवों का बड़ा प्रेमी था पांडव लोगभी उस से बडा स्नेह करतेथे फिर हिडिंबा ने नियमानुसार काम कर यह कह के कि पति के साथ रहने का काल बीता पांडवों से सम्भाषणकर अपनारूप लेलिया।४०।राक्षसोंमें श्रेष्ठ घटोत्कचभी पितरों

---

mouth large, ears like a conch, voice dreadful, lips of the colour of copper, teeth sharp, nose long, breast broad, and the joints of his feet were crooked and high. He became the most vlliant of the Rakshases. Although a child he was very powerful and was dexterous in the use of weapons prevalent among mankind. A Rakshas woman gives birth the very day she conceives and the child becomes at once full grown and can assume any form. Although his waist, neck, mouth, ear and hair were deformed, yet the son of Hidimba was of dignified appearance. Soon after birth he prostrated himself before his father and mother. He was named Ghatotkach by Bhimsen because the hair or *otkach* on his head resembled a *ghat* or pitcher. Ghatotkach, though independent, loved the Pandavas. Hidimba, according to her promise, bade the Pandavas farewell and retook her real form. Having

प्रतस्थेचोत्तरांदिशम् ॥ ४१ ॥ सहिसृष्टोमघवता शक्तिहेतोर्महात्मना । कर्णस्याप्रति वीर्य्यस्य प्रतियोद्धामहारथः ॥ ४२ ॥

इत्यादिपर्वणि हिंडिम्बवधपर्वणि घटोत्कचोत्पत्तौ षट्पंचाशदधिकशतोऽध्यायः ॥ १५६ ॥

वैशम्पायन उवाच । तेवनेनवनंगत्वा घ्नन्तोमृगगणान्बहून् । अपक्रम्ययय़ूराजं स्त्वरमाणा महारथाः ॥ १ ॥ मत्स्यांस्त्रिगर्त्तान्पञ्चालान् कीचकानन्तरेणच । रमणीयान्वनोद्देशान् प्रेक्षमाणाःसरांसिच ॥ २ ॥ जटाःकृत्वात्मनःसर्वेवल्कलाजिनवाससः । सहकुन्त्यामहात्मानो विभ्रतस्तापसंवपुः ॥ ३ ॥ कचिद्वहन्तोजननीं त्वरमाणा महारथाः । कचिच्छन्देनगच्छन्तस्तेजग्मुः प्रसभंपुनः ॥ ४ ॥ ब्राह्मंवेदमधीयानां वेदाङ्गानिचसर्वशः । नीतिशास्त्रञ्चधर्मज्ञा ददृशुस्तेपितामहम् ॥ ५ ॥ तेऽभिवाद्यमहात्मानं

से यह कहकर कि काम आने पर आपहुँचूंगा सम्भाषण कर उत्तरकी ओर गया महात्मा महेन्द्रने विरुद्ध वीर्य वर्जित कर्ण को एक पुरुष मारनेवाली शक्ति के लिये इस महारथी घटोत्कच को विरोधी योद्धा बनाया था ॥ ४२ ॥

अध्याय १५७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर वे महारथी महात्मा वीर पांडवगण जटाधारी होकर मृगचर्म और वल्कल पहिन कर माताकुंती सहित तपस्वीका वेष लेकर बन २ घूमने लगे रास्ते में मत्स्य, त्रिगर्त, पांचाल और कीचक देशोंके सुन्दर बन खण्ड और नानाप्रकार की लताओं को देखने लगे कहीं २ शीघ्रताके लिये कुंती को उठालेतेथे और कहीं २ सहज चाल में सुख से चलकर फिर शीघ्र चलते थे एक समय वे सम्पूर्ण वेद वेदांग और नीतिशास्त्र पढरहे थे कि उन्हों ने पितामह व्यासजी को देखा महात्मा कृष्ण

proimsed to come at the time of need, Ghatotkch, too, left the Pandavas and went Northward. Ghatotkach became a prey to the missile given by Mahendra to Karan.

CHAPTER CLVII.

Vaishmpayan said that the Pandavas assumed the garb of hermits with long locks of hair, deer skin, and clothes made of the barks of trees. They wandered from forest to forest hunting the deer. They saw in their way the beautiful scenery in the countries of Matsya, Trigart, Panchal, and Kichak. Sometimes they took up Kunti when they had to go faster, otherwise they walked slowly. Once, when they were engaged in the study of the Vedas, Vedangas and Philosophy, they saw their grand father, the Rishi Vyas. On seeing the great Rishi, the Pandavas with their mother. paid respect and stood

कृष्णद्वैपायनंतदा । तस्थुःप्राञ्जलयःसर्वे सहमात्रापरन्तपाः ॥ ६ ॥ व्यास उवाच ।
मयेदंव्यसनंपूर्वं विदितंभरतर्षभाः । यथातुतैरधर्मेण धार्त्तराष्ट्रैर्विवासिताः ॥ ७ ॥
तद्विदित्वास्मिसम्प्राप्तश्चिकीर्षुः परमंहितम् । नविषादोऽत्रकर्त्तव्यः सर्वमेतत्सुखायवः
॥ ८ ॥ समास्तेचैवमेसर्वे यूयंचैवनसंशयः । दीनतोबालतश्चैव स्नेहंकुर्वन्ति मानवाः
॥ ९ ॥ तस्मादभ्यधिकःस्नेहो युष्मासुममसाम्प्रतम् । स्नेहपूर्वंचिकीर्षामि हितंवस्तन्नि
बोधत ॥ १० ॥ इदंनगरमभ्याशे रमणीयंनिरामयम् । वसतेहप्रतिच्छन्ना ममागमन
काङ्क्षिणः ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंसतान्समाश्वास्य व्यासःसत्यवतीसुतः ।
एकचक्रामभिगतः कुन्तीमाश्वासयत्प्रभुः ॥ १२ ॥ व्यास उवाच । जीवत्पुत्रि
सुतस्तेऽयंधर्मनित्योयुधिष्ठिरः । धर्मेणपृथिवींजित्वा महात्मापुरुषर्षभः । पृथिव्यांपार्थि
वान्सर्वान् प्रशासिष्यतिधर्मराट् ॥ १३ ॥ पृथिवीमखिलांजित्वा सर्वांसागरमेखलाम्।

द्वैपायन के देखतेही शत्रुनाशी पांडवगण मातासहित उनको प्रणामकर दोनोंहाथ जोड
कर उन के सामने खडेहुए व्यासजीने कहा कि हे राजगण मैं पहलेही से जानताहूं कि
धृतराष्ट्र के पुत्रोंने अधर्मसे तुमको निकाला है इसी लिये तुम्हारे परम मंगलके निमित्त
यहां आयाहूं तुम उस विषय में दुःखी मतहो यह सब तुम्हारे सुख के लियेही होरहे हैं
इस में संदेह नहीं कि धृतराष्ट्र के पुत्र और तुम लोग दोनोंपक्ष मेरेस्नेह के पात्रहो पर
जो पक्ष दीन और बालकहोता है मानवगण उसपरही स्नेह प्रकट करते हैं सुनो इसी
से मैं तुम्हारा हितकार्य करना चाहताहूं वोह सामने सुन्दर विनारोगका नगर दीख
पडता है वहां हमारे लौटनेकी बाट देखतेहुए छिपकर बसे रहना । वैशम्पायन ने कहा
कि सत्यवती पुत्र धर्मात्मा प्रभु व्यास पांडवों को भलीभांति ढाढसदेकर संग लेकर उस
दिखाई देतीहुई एक चक्रानगरी को जानेलगे और कुंती सेभी फिर समझाकर कहा कि
हे बेटी जीतीरहो तेरेपुत्र धर्मशील महात्मा पुरुषोत्तम धर्मराज युधिष्ठिर धर्मानुसार

with joined hands before him. Vyas said, "I already know, princes, that the sons of Dhritrashtra have driven you away unjustly. I have, therefore come for your good. Be not troubled at all. All things are being done to do you good. I love both you and the sons of Dhritrashtra. But people have a greater affection for the side which is weaker and younger. For this reason my love for you is greater and I wish to do you good, Yonder is a healthy quarter of the city. You may remain there concealed till my return," Vaishampayan said that Satyavati's son, the virtuous Vyas, having thus consoled the Pandavas, took them to the city of Ekchakra. In the way he again addressed Kunti and said, "Live long, daughter. Thy son the virtuous and just Yudhishthir shall conquer justly, the whole earth and shall rule over the princes of the world. By the help of Bhim and Arjun's

भीमसेनार्ज्जुनवलाद्भोक्ष्यते नात्रसंशय ॥ १४ ॥ पुत्रास्तवचमाद्रयाश्च सर्वएवमहारथाः। स्वराष्ट्रे विहरिष्यन्ति सुखंसुमनसःसदा ॥ १५ ॥ यक्ष्यन्तिचनरव्याघ्रा निर्ज्जित्य पृथिवीमिमाम् । राजसूयाश्वमेधाद्यैः क्रतुभिर्भूरिदक्षिणैः ॥ १६ ॥ अनुगृह्यसुहृद्वर्गं भोगैश्वर्य्यसुखेनच । पितृपैतामहं राज्यमिमेभोक्ष्यन्तितेसुताः ॥ १७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वानिवेश्यैनान् ब्राह्मणस्यनिवेशने । अब्रवीत्पाण्डवश्रेष्ठमृषिर्द्वैपायनस्तदा ॥ १८ ॥ इहमासं प्रतीक्षध्वमागमिष्याम्यहं पुनः । देशकालौविदित्वैव लप्स्यध्वंपरमांमुदम् ॥ १९ ॥ सतैःप्राञ्जलिभिः सर्वैस्तथेत्युक्तो नराधिप । जगाम भगवान्व्यासो यथागतमृषिःप्रभुः ॥ २० ॥

इत्यादिपर्व्वणि हिडिंबवध पर्व्वाणि व्यासदर्शने एकचक्रा प्रवेशे सप्तपञ्चाशदधिकशतोऽध्यायः ॥ १५७ ॥ समाप्तञ्च हिडिम्बवधपर्व ॥ अथ बकवध पर्व ॥

धरती मंडल को जयकरके पृथ्वीभर के सब भूपालों का शासन करेंगे इस में संदेह नहीं है कि वोह भीमसेन और अर्जुन के भुजवल से सागरतक भूमण्डल को जीत कर भोग करेंगे तुम्हारे महारथी पुत्र और माद्रीके कुमारगण सदा अपने राज्य में प्रसन्न मन होकर सुख से आनन्द करेंगे । यह राजसिंह गण धरती मंडलको जयकर राजसूय और अश्वमेध आदि अनेक बडी दक्षिणावाले यज्ञ करेंगे और भोग ऐश्वर्य तथा सुखसे मित्रवर्ग को कृपा दिखाकर परम आनन्द पूर्वक पितामहका राज्य भोगेंगे । २७ । वैशम्पायन ने कहा कि महर्षि द्वैपायन यह कहकर उनको एक ब्राह्मण के घर में बसाकर युधिष्ठिर से बोले कि तुम मेरेआने तक यहीं रहो मैं फिर आऊंगा तुम देशकाल को विचार कर काम करते रहोगे तो परम हर्ष प्राप्तकरोगे उन सबने हाथ जोड़कर उनकी बातमानली अनन्तर महर्षि भगवान व्यास जहां से आयेथे वहां चलेगये ॥ २० ॥

arms he is sure to conquer the whole world. Your sons and those of Madri will live joyfully in their country and shall perform Rajsuya and Ashwamedh sacrifices giving away large donations. And showing kindness to their friends they will cheerfully rule over the country of their fore fathers." Vaishampayan said that maharshi Dwaipayan lodged the Pandavas in the house of a Brahmen and said to Yudhishthir, "Wait for me here. I shall come again. If you will act with due consideration to time and place you will be happy in the end." The Pandavas promised to do as Vyas had desired them to do. The Rishi, then, went his own way.



जनमेजय उवाच । एकचक्रांगतास्तेतु कुन्तीपुत्रामहारथाः । अतऊर्ध्वंद्विजश्रेष्ठ किमकुर्वतपाण्डवाः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । एकचक्रांगतास्तेतु कुन्तीपुत्रामहारथाः । ऊषुर्नातिचिरंकालं ब्राह्मणस्यनिवेशने ॥ २ ॥ रमणीयानिपश्यन्तो वनानि विविधानिच । पार्थिवानपिचोद्देशान् सरितश्चसरांसिच ॥ ३ ॥ चेरुर्भैक्षंतदातेतुसर्वे एवविशाम्पते । बभूवुर्नागराणाञ्च स्वैर्गुणैःप्रियदर्शनाः ॥ ४ ॥ निवेदयन्तिस्मतदा कुन्त्याभैक्षंसदानिशि । तयाविभक्तान्भागांस्ते भुञ्जतेस्मपृथक्पृथक् ॥ ५ ॥ अर्द्धंते भुञ्जतेवीराः सहमात्रापरन्तपाः । अर्द्धंसर्वस्यभैक्ष्यस्य भीमोभुङ्क्तेमहाबलः ॥ ६ ॥ तथातुतेषांवसतांतस्मिन् राष्ट्रेमहात्मनाम् । अतिचक्रामसुमहान् कालोऽथभरतर्षभ ॥ ७ ॥ ततःकदाचित्भैक्ष्याय गतास्तेपुरुषर्षभाः । सङ्गत्याभीमसेनस्तु तत्रास्तेपृथया सह ॥ ८ ॥ अथार्तिजंमहाशब्दं ब्राह्मणस्यनिवेशने । भृशमुत्पतितंघोरं कुन्तीशुश्राव

अध्याय १५८ ॥

जनमेजय ने कहा कि हे द्विज श्रेष्ठ इस के पश्चात् महारथी कुंती पुत्रोंने एक चक्रा नगरीमें रहकर क्या किया।१।वैशम्पायन ने कहा कि महारथी कुन्तीपुत्र एक चक्रानगरी में ब्राह्मण के घर कुछकाल वसे वे उन दिनों नित्य सुन्दर प्रदेश नदी और सरोवरोंको देखतेहुए शिक्षा पूर्वक वहांके सब स्थानोंमें घूमतेथे ।३। क्रमशः वे अपने गुण से नगरवालोंके प्रिय बने वे दिनको जो भिक्षा पाते थे वोह माताको देतेथे कुंती जब उनकी उस भिक्षा से मिलीहुई वस्तु को अलग २ बांटदेती थी तब वे भोजन करते थे भिक्षासे जो मिलताथा उसका आधा भाग युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव और कुन्ती यह सब मिलकर भोजन करते थे और आधाभाग महाबली भीमसेन खातेथे ।६। हे भ रत श्रेष्ठ ! महात्मा पांडवों को इसप्रकार बसतेहुए उसराज्यमें कुछसमयबीतगया अनन्तर एक दिन युधिष्ठिर आदि सब भिक्षाको गये दैवसे भीमसेन भिक्षाको न जाकर कुंतीके साथ घरमें रहे।८। अनन्तर कुंती ने उस ब्राह्मण के घर से रोनेकी आवाज सुनी । हेराजन् ! कुंती

CHAPTER CLVIII

Janmejaya said, "Tell me, O best of Brahmans, how the Pandavas passed their days when they were at Ekchakra." Vaishmpayan replied, "They stayed for some time in the house of a Brahman. They used to go out of the city, to see in the suburbs, the rivers, the lakes and the other places of interest and gained experience. Gradually he made many friends in the city. They presented to their mother what they got as alms during the day. Kunti set apart for each of them a share which they ate as supper. Bhim received half of it and the other half was distributed equally among Ydhishisthir, Arjun, Nakul, Sahdev and Kunti. They passed some days in this way. One day Yudhisthir

भारत ॥ ९ ॥ रोरूयमाणांस्तान् दृष्ट्वापरिदेवयतश्चसा । कारुण्यात्साधुभावाच्च कुन्ती
राजन्नचक्षमे ॥ १० ॥ मथ्यमानेवदुःखेन हृदयेनपृथातदा । उवाचभीमंकल्याणी
कृपान्वितमिदंवचः ॥११॥ वसामसुसुखंपुत्र ब्राह्मणस्यनिवेशने । अज्ञाताधार्त्तराष्ट्रस्य
सत्कृतावीतमन्यवः ॥ १२ ॥ साचिन्तयेसदापुत्र ब्राह्मणस्यास्यकिन्वहम् । प्रियंकुर्या
मितिगृहेयत् कुर्य्युरुषिताःसुखम् ॥ १३ ॥ एतावान्पुरुषस्तात कृतंयास्मिन्ननश्यति ।
यावच्चकुर्य्यादन्योऽस्य कुर्य्यादभ्यधिकंततः ॥ १४ ॥ तदिदं ब्राह्मणस्यास्य दुःखमा
पतितंध्रुवम् । तत्रास्ययदिसाहाय्यं कुर्य्यासुपकृतंभवेत् ॥ १५ ॥ भीमसेन उवाच ।
ज्ञायतामस्ययद्दुःखंयतश्चैव समुत्थितम् । विदित्वाव्यपनेष्यामि यद्यपिस्यात्सुदुष्करम्
॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंतौकथयन्तौचभूयः शुश्रुवतुःस्वनम् । आर्त्तिजंतस्य
विप्रस्य सभार्यस्यविशाम्पते ॥ १७ ॥ अन्तःपुरंततस्तस्य ब्राह्मणस्यमहात्मनः । वि-

उनको अत्यन्त रोते और विलाप करते सुनकर अच्छे स्वभावके कारण चुपचाप बैठी न रहसकी।१०।उसका हृदय दुःखसे पूरितहुआ तब कल्याणि कुंती भीमसेनसे करुणा भरी बातों में कहनेलगी कि बेटा हम धृतराष्ट्र के पुत्रों से छिपकर इस ब्राह्मण से सत्कार पाकर शोक रहितहोकर सुखसे बसरहेहैं।१२। इस से मैं सदा इस सोच में रहाकरती हूं कि जिसप्रकार दुर्वासा आदि महात्मा लोग जिसके घरमें बसते हैं उनकाकोई हितकार्य करते हैं वैसेहि मैं इस ब्राह्मण का बदले में क्या उपकारकरूं उपकार के बदले में जो उपकार करता है वही पुरुष है और जो जितना उपकार करताहै बदलेमें उसका उससे अधिक उपकार करना चाहिये।१४।मुझको निश्चय जान पडताहै कि इस ब्राह्मणके घरमें कोई दुःख है और उस दुःख के दूर करने के लिये यदि उनकी कुछ सहायता करसकें तो उपकारका बदलाहोसक्ता है भीमसेन ने कहा कि इस ब्राह्मण का दुःख आप मालूम करें उसके जान लेनेपर यदि कठिनभी होगा तो उस के दूरकरने का प्रयत्नकरूंगा।१६। वैशम्पायनने कहा कि हे पृथ्वीनाथ ! जब वे इसप्रकार बात चीत कररहे थे उससमय

and others went out to collect alms. Bhimsen was with his mother. Kunti heard a sound of weeping from the Brahman's house. Being of good manners, Kunti could not hear their wailing silently. Her heart was moved with compassion and she said to Bhimsen, "By the fear of the sons of Dhritrashtra we live in concealment and peace in the house of this Brahman. Durbasa and other great men used to do good to the people in whose houses they dwelt. I have been thinking of how to recompense this good Brahman. One who repays one goodness by another is a man. Goodness must be recompensed by another and a greater one I believe the Brahman is in some sort of trouble. It would be but proper for us if we could assist and relieve

वेशत्वरिताकुन्ति बद्धवत्सेवसौरभी ॥ १८ ॥ ततस्तंब्राह्मणंतत्र भार्ययाचसुतेनच ।
दुहित्राचैवसहितं ददर्शावनताननम् ॥ १९ ॥ ब्राह्मण उवाच । धिगिदंजीवितंलोके
गतसारमनर्थकम् । दुःखमूलंपराधीनं भृशमप्रियभागिच ॥ २० ॥ जीवितेपरमंदुःखं
जीवितेपरमोज्वरः । जीवितेवर्त्तमानस्य दुःखानामागमोध्रुवः ॥ २१ ॥ आत्माह्येको
हिधर्मार्थौ कामंचैवनिषेवते । एतैश्चविप्रयोगोऽपि दुःखंपरमनन्तकम् ॥ २२ ॥ आहुः
केचित्परंमोक्षं सचनास्तिकथञ्चन । अर्थप्राप्तौतुनरकः कृत्स्नएवोपपद्यते ॥ २३ ॥
अर्थेप्सुतापरं दुःखमर्थप्राप्तौ ततोधिकम् । जातस्नेहस्यचार्थेषु विप्रयोगमहत्तरम् ॥ २४॥
नहियोगंप्रपश्यामि येनमुच्येयमापदः । पुत्रदारेणवासार्द्धं प्राद्रवेयमनामयम् ॥ २५ ॥

फिर उस ब्राह्मण, ब्राह्मणी के रोनेकी आवाज सुनाई दी अनन्तर कुंतीने इसप्रकार वेग
से कि जैसे कामधेनु अपने बँधेहुए बछडे के पास जाती है उस महात्मा ब्राह्मण के घर
में जाकर देखा कि ब्राह्मण मलिन मुखकिये बैठाहै और स्त्री,पुत्र, कन्यासे कहताहै।१९।
कि यह संसार केवल दुःखकी जड दूसरे का आधीन और अति हानिकारी है ऐसेव्यर्थ
जीवन पर धिक्कार है जीनेहीसे परम दुःख और परमपीडा भोगनी पडती है जीतेहुए
मनुष्य को निश्चयही दुःख घेरलेताहै।२१।एकही आत्मा धर्म, अर्थ और काम इनतीनोंकी
एक दूसरे से विना विरोध किये सेवा नहीं करसक्ती और इनके बुराप्रयोग होनेसेही
अनन्त दुःख आताहै।२२।कोई२ पंडित कहते हैं कि मोक्षही श्रेष्ठहै पर हम सब संसार
केप्रेमी हैं हम से वोह किसीप्रकारहोनेकी सम्भावना नहीं है अर्थ पानेके विषय मेंभी सब
प्रकार दुःख भोगना पड़ता है देखो उपार्जनकी चाह बडी दुःखदाई होती है उपार्जन
हुआभी तो और एक दुःख भोगना पडता है क्योंकि प्राप्तकिये हुए धनपर स्नेह बढ
जाताहै यदि किसीप्रकार वोह अर्थ नष्टहुआ तो पूर्वोक्त दुःखसेभी अधिक दुःख घेरलेता
है।२४। ऐसाभी कोई उपाय नहीं दीखता कि इस विपत्ति से बचें अथवा स्त्री पुत्र लेकर

him from the trouble." Bhimsen replied, "First ascertain, mother, what sort of trouble he is in. On learning it I shall try to relieve him however difficult the task may be."

Vaishampayan said that during the course of their coversation, a cry, more heart-rending than before, was heard from the Brahman's honse. As a cow runs to meet her tied calf, Kunti made haste to reach the Brahmana's house and saw that he was sitting with a mournful countenance and saying to his wife, son and daughter, "This world is the source of evil, tyranny and trouble. Fie, on such life which is full of misery and sorrows. A man while living is surely infested with troubles. One soul cannot serve Dharm, Arth, and Kam without hinderance and trouble comes from the ill-management of them. Some learned men say that moksh (freedom from world, is the best. But we

यतितंवैमयापूर्वं वेत्थब्राह्मणितत्तथा । क्षेमंयतस्ततोगन्तुं त्वयातुममनश्रुतम् ॥ २६ ॥
इहजाताविवृद्धास्मि पिताचापिममेतिवै । उक्तवत्यसिदुर्मेधे याच्यमाना मयासकृत्
॥ २७ ॥ स्वर्गतोऽपिपिता वृद्धस्तथा माताचिरंतव । बान्धवाभूतपूर्वाश्च तत्रवासेतुका
रतिः ॥ २८ ॥ सोऽयंते बन्धुकामाया अशृण्वन्त्यावचोमम । बन्धुनाशःसम्प्राप्तो
भृशंदुःखकरोमम ॥ २९ ॥ अथवामद्विनाशोऽयं नहिशक्ष्यामिकञ्चन । परित्यक्तुमहं
बन्धुंस्वयं जीवन्नृशंसवत् ॥ ३० ॥ सहधर्मचरींदान्तां नित्यंमातृसमांमम । सखायं
विहितांदेवैर्नित्यं परमिकांगतिम् ॥ ३१ ॥ पित्रामात्राचविहितांसदा गार्हस्थ्यभागि-
नीम् । वरयित्वायथान्यायं मन्त्रवत्परिणीयच ॥ ३२ ॥ कुलीनांशीलसम्पन्नामपत्य
जननीमपित्वामहंजीवितस्यार्थे साध्वीमनपकारिणीम् ॥ ३३ ॥ परित्यक्तुंनशक्ष्यामि

कहीं भाग जावें हे ब्राह्मणी ! स्मरण करो कि जहां २ मंगलहोता था मैं वहीं जाने का प्रयत्न करताथा उस समय तुम मेरी बातपर ध्यान नहीं धरतीथीं यह तुम्हारीही कुबुद्धि है कि जब मैंने बार २ दूसरे स्थानको जाना चाहा तभी तुमनेकहा कि यह मेरी पैतृक भूमिहै यहां मैं जन्मलेकर बूढीहुईहूं इसको त्याग नहींसक्ती।२७।प्यारी तुम्हारेपिता, माता और बान्धवों के स्वर्गवासको बहुत दिन बीतगए थे तिसपरभी तुमने क्यों यहां बसना चाहाथा तुमने जिस प्रकार बन्धुकी कामना से मेरी बातपर ध्यान नहीं दिया वैसेही अब तुम्हारे बन्धु नाश का समय आगया इससे मुझको बडा दुःख होरहाहै यहांतक कि इस समय मेराही नाश उपस्थित है क्योंकि मैं स्वयम् जीता रहकर किसी प्रकार बन्धु को त्याग नहीं सकूंगा तुम मेरी सहधर्मचारिणी नित्य माताकी समान स्नेह करनेवाली गुणवती और परमागतिहो देवोंने तुम्हें मेरेमित्र सदृश निश्चय करदियाहै।३१।पिता माताने तुम को गृहस्थ धर्म भागिनी बनायाहै और तुम कुलीना शीलवती सन्तानकी उत्पन्न करनेवाली साध्वी श्रम कारणी और सदा व्रतशीला भार्याहो पहले वरन पूर्वक यथा विधि तुम्हारा

are lovers of the world and so it is impossible to us. It is hard to earn wealth. We are anxious for its safety and if it is lost in some way or other, we have to grieve for it still more. I donot see any way out of this difficulty. I cannot now escape to any other place with wife and children. Remember, dear wife, I always wanted to remove whenever I heard of a safe place. But you turned a deaf ear to my words. Was it not your folly to say, in reply to my repeated requests for removal to some other place, that this was your mother country, that you were born and brought up here and that you could not leave it? Your father and mother were long dead. Why did you, then, wish to stick to this place ? You did not leave this for the love of your kinsmen. Now the time has come for the destruction of your kinsmen. I am in great distress. The time of my destruction has

भार्य्यांनित्यमनुव्रताम् । कुतएवपरित्यक्तुं सुतंशक्ष्याम्यहंस्वयम् ॥ ३४ ॥ बालामप्राप्त वयसमजातव्यञ्जनाकृतिम् । भर्त्तुरर्थायनिक्षिप्तां न्यासंधात्रामहात्मना ॥ ३५ ॥ यया दौहित्रजांल्लोकानाशंसे पितृभिःसह । स्वयमुत्पाद्यतां बालांकथमुत्स्रष्टुमुत्सहे ॥ ३६ ॥ मन्यन्तेकेचिदधिकं स्नेहंपुत्रेपितुर्नराः । कन्यायांकेचिदपरेमम तुल्यावुभौस्मृतौ ॥ ३७ ॥ यस्यांलोकाः प्रसूतिश्चस्थिता नित्यमथोसुखम् । अपापांतामहंबालां कथमुत्स्रष्टुमुत्सहे ॥ ३८ ॥ आत्मानमपि चोत्सृज्यतप्स्यामि परलोकगः । त्यक्ताह्येतेमयाव्यक्तं नेह शक्ष्यन्तिजीवितुम् ॥ ३९ ॥ एषांचान्यतमत्यागो नृशंसोगर्हितोबुधैः । आत्मत्यागे कृतेचेमेमरिष्यन्ति मयाविना ॥ ४० ॥ सकृच्छ्रामहमापन्नो नशक्तस्तर्त्तुमापदम् । अहो

पाणिग्रहणकर इससमय अपनी जीवनरक्षाके हेतु क्योंकर त्यागदूंगा ।३४।फिर जिसबालक की आजतक दाडी मूंछ नहीं निकली है ऐसे अल्प अवस्थावाले पुत्र कोभी क्योंकर स्वयम् त्यागसक्ता हूं महात्मा विधाताने योग्य भर्ताके हाथमें सौंपनेके लिये जिसकन्याको न्याय पूर्वक मेरेपास छोडाहै जिस कन्या से मैं पितरों के साथ दौहित्रज लोक के पानेकी आशा रखताहूं उस बालिका को क्योंकर स्वयम् त्याग देनेको उद्यतहूं।३६।कोई २ कहा करते हैं कि पिताका पुत्रही पर अधिक स्नेह होता है और कोई कहते हैं कि कन्याहीपर अधिक स्नेहहोताहै पर मेरेलिये दोनों समानहैं।३७।जिससे सुगति मिलती है जिससे वंश की रक्षा होती है और जिससे नित्य सुख मिलता है उस पापरहित बालिका को त्याग देनेका साहस कैसेकरूं मैं यदि अपने जीवनकी बलि चढाकर परलोकको जाऊं तौभी दुःखी होऊंगा क्योंकि मेरे इन को छोडजाने से वह कभी जीनहींसकेंगे।३९।इनमेंसे किसी एक को त्यागदेना बडा अनुचित और निष्ठुर कामहोगा और अपना जीवन त्यागने से मेरेबिना जीवन देंगे अतएव मैं गहरी विपतमें पडाहूं हाय इस विपत से बचनेका उपाय

come. For, I can not give up any one of my family while I am living. You are partner of my religious duties, loving as a mother, and virtuous. The gods have made you my friend. My father and mother made you my partner in household affairs. You are of good family, virtuous, the mother of my children, good mannered, painstaking wife. How can I give you up, for the protection of my life, against the vows ot the time of marriage? Again, how can I give up my yourg son who is still a beardless boy? The girl is intrusted to me by gods to be given up to an able hnsband and through her I hope to attain the heaven called Douhitraj (obtainable through a daughter's son) with my predecessors. Having given birth to such a girl how can I give her up ? Some say that a father has greater affection for a son while others say that a girl is the greater object of love. For me, both are alike. How can I give up the innocent girl who gives a better position is heaven, protects the family, and gives com-

विकलांगतिंत्वद्य गमिष्यामिसबान्धवः । सर्वैःसहमृतंश्रेयो नचमेजीवितक्षमम् ॥४१॥

इत्यादिपर्वणि बकवधपर्वणि ब्राह्मणचिन्तायां अष्टपञ्चाश दधिकशततोऽध्यायः ॥ १५८ ॥

ब्राह्मण्युवाच । नसन्तापस्त्वयाकार्य्यः प्राकृतेनेवकर्हिचित् । नहिसन्तापकालोयं वैद्यस्यतवविद्यते ॥ १ ॥ अवश्यंनिधनं सर्वैर्गन्तव्यमिहमानवैः । अवश्यभाविन्यर्थे वैशन्तापोनेहविद्यते ॥ २ ॥ भार्य्यापुत्रोऽथदुहिता सर्वमात्मार्थमिष्यते । व्यथांजहि सुबुद्धयात्वं स्वयंयास्यामितत्रच ॥ ३ ॥ एतद्धिपरमंनार्य्याः कार्य्यंलोकेसनातनम ॥ प्राणानपिपरित्यज्य यद्भर्तुर्हितमाचरेत् ॥ ४ ॥ तच्चतत्रकृतंकर्म तवापीदंसुखावहम् । भवत्यमुत्रचाक्षय्यं लोकेऽस्मिंश्चयशस्करम् ॥ ५ ॥ एषचैवगुरुर्धर्मोयं प्रवक्ष्याम्यहंत-

नहीं दीखता मुझपर धिक्कार है आज परिवार सहित मेरी कोई गति नहीं है सो परिवारसहित जीवन छोडनाही मेरेलिये मंगलदायी है मेरा जीवित रहना कभी उचित नहीं है ॥ ४१ ॥

अध्याय १५९ ॥

ब्राह्मणी ने कहा कि हे ब्राह्मण साधारण मनुष्यकी भांति शोककरना कदापि तुम को नहीं सोहता क्योंकि तुम विद्वानहो अब दुःख करने का समय नहीं है भूमंडलभर के सब लोगोंको अवश्यही मरना पडेगा अतएव अवश्यहोनेवाले विषयका दुःख करना उचित नहीं है।३। लोग अपने सुखके लियेही स्त्री, पुत्र, कन्या इन सबकी प्रार्थनाकरतेहैं अतएव अपनी सुबुद्धि से मनः पीडा त्यागदो मैं स्वयम् वहां जाऊंगी संसार में नारी के लिये सनातन धर्म यही है कि प्राण देकरभी पतिका हितकरै।४।अतएव उस कर्मके लिये जाने पर वोह इस लोक में यश देने वाला और परलोकमें अक्षय और तुम्हारा सुखदाई

fort. I shall die unhappy if I sacrifice myself, for, they cannot live without me. To give up one of them would be improper and cruel and they can not live if I die. I am in a great distress. I see no way out othis difficulty. Alas ! Woe me ! Isee nc end of misery to day for myself and my family. It is good for me to die with my family. It is no good to live any longer."

CHAPTER CL IX

The Brahman's wife said, "It is not proper for you to weep like an ordinary man. You are a learned man. It is no occasion for grief. All men are mortal. It is useless to grieve for a thing that must happen. People wish for wife, son and daughter for their own happiness. Remove your sorrow by your wisdom. I myself, will go there. It is the wife's duty to do her husband good even at the sacrifice of her own life. I shall get fame in this world by doing this and we both

वे । अर्थश्चतत्रधर्मश्च भूयानत्रप्रदृश्यते ॥ ६ ॥ यदर्थमिष्यतेभार्य्या प्राप्तःसोऽर्थस्त्व-
यामयि । कन्याचैकाकुमारश्च कृताहमनृणात्वया ॥ ७ ॥ समर्थःपोषणेचासि सुतयो-
रक्षणेतथा । नत्वहंसुतयोःशक्ता तथारक्षणपोषणे ॥ ८ ॥ ममहित्वद्विहीनायाः सर्वगा
णधनेश्वर । कथंस्यातांसुतौबालौ भरेयंचकथंत्वहम् ॥ ९ ॥ कथंहिविधवानाथा बा-
लपुत्राविनात्वया । मिथुनंजविगिष्यामि स्थितासाधुगतेपथि ॥ १० ॥ अहंकृतावलि
प्तैश्च प्रार्थ्यमानामिमांसुताम् । अयुक्तैस्तवसम्बन्धे कथंशक्ष्यामिरक्षितुम् ॥ ११ ॥
उत्सृष्टमामिषंभूमौ प्रार्थयन्तियथाखगाः । प्रार्थयन्तिजनाःसर्वे पतिहीनांतथास्त्रियम्
॥ १२ ॥ साहंविचाल्यमानावै प्रार्थ्यमानादुरात्मभिः । स्थातुंपथिनशक्ष्यामि सज्ज-
नेष्टेद्विजोत्तम ॥ १३ ॥ कथंतवकुलस्यैकामिमां बालामनागसम् । पितृपैतामहेमार्गे

होगा हे द्विज श्रेष्ठ मैं जो कहती हूं वोह श्रेष्ठ धर्म है ऐसा करने से तुम्हारे लिये भी प्रचुर धर्म और अर्थ का कार्यहोगा।६।देखो जिस अभिप्राय से स्त्रीकी कामनाकीजाती है वोह तुमको सिद्धहोगयाहै मैं पुत्र और कन्याको उत्पन्न कर उऋणहोचुकीहूं तुम इस पुत्र कन्याके पालने पोषने और देखने भालने में समर्थहो मुझसे वोह भलीप्रकार सिद्धहोना कदापि संभव नहीं है।८।तुम मेरेप्राण और धन सब के ईश्वरहो तुम्हारेबिना मैं क्योंकर जीऊंगी और तुम्हारे न रहनेसे क्योंकर दो छोटे बालक जीसकेंगे तुम्हारे बिना मैं विधवा और अनाथहोकर जीती रहने सेभी क्योंकर सुपथ में रहकर इन दो बच्चों को जिला सकूंगी।१०।तुम्हारेसाथ विवाहिक सम्बन्धके अयोग्य कलंकित और गर्वितजन यदि तुम्हारी इस कन्याकी प्रार्थना करे तो मैं कैसे इसकी रक्षाकर सकूंगी जिसप्रकार पक्षी मिट्टी पर पड़ी हुई मछली को चाहते हैं वैसेही मनुष्य गण पति हीना रमणीकी कामना करते हैं।१२।हे द्विज श्रेष्ठ ! मेरेपति हीनाहोने से दुरात्मालोग मेरी कामनाकर मेरेचित्त को टाल सक्ते हैं ऐसा होनेसे मैं क्योंकर साधुओंके अभीष्ट पथ में रहसकूंगी और क्यों

shall get bliss in the wolrd to came. It is the best course. I have given birth to a son and daughter and yonr object of getting a wife is gained. You can bring up the children properly which is impossible for me. You are the lord of my life and wealth. How shall. I live without you ? How ean these two children live without you ? Being a widow and unprotected without you, how shall I be able to live in the path of virtne and to rear these two children. How shall I be able to protect your daughter from a worthless and proud fellow who should woo her in marriage. People fall on an unprotected woman like sea birds on a fish lying on the earth. Finding me unprotected, wicked people may turn me from the path of virtue. How shall. I be able to keep myself on the right path and how shall I keep this only daughter of your family on the path that your forefathers have

नियोक्तुमहमुत्सहे ॥ १४ ॥ कथंशक्ष्यामिबालेऽस्मिन् गुणानाधातुमीप्सितान् । अ-
नाथेसर्वतोलुप्ते यथात्वंधर्मदर्शिवान ॥ १५ ॥ इमामपिचतेबालामनाथांपरिभूयमाम् ।
अनर्हाःपार्थयिष्यन्ति शूद्रावेदश्रुतिंयथा ॥ १६ ॥ तांचेदहंनदित्सेयं त्वद्गुणैरुपबृंहि-
ताम् । प्रमथ्यैनांहरेयुस्ते हविर्ध्वांक्षाइवाध्वरात् ॥ १७ ॥ संप्रेक्षमाणापुत्रंते नानुरूपं
मिवात्मनः । अनर्हवशमापन्नामिमां चापिसुतांतव ॥ १८ ॥ अवज्ञाताचलोकेषु तथा
त्मानमजानती । अवलिप्तैर्नरैर्ब्रह्मन्मरिष्यामिनसंशयः॥१९॥तौचहीनौमयाबालौत्वया
चैवतथात्मजौ । विनश्यतांनसन्देहो मत्स्याविवजलक्षये ॥ २० ॥ त्रितयंसर्वथाप्येवं
विनशिष्यत्यसंशयम् । त्वयाविहीनंतस्मात्त्वं मांपरित्यक्तुमर्हसि ॥ २१ ॥ व्युष्टिरेषा
परास्त्रीणां पूर्वंभर्त्तुःपरांगतिम् । गन्तुंब्रह्मन् सपुत्राणामिति धर्मविदोविदुः ॥ २२ ॥

फिर आप के वंशकी एकही कन्या इस निर्दोषी बालाको पितृ पितामहोंके पथ में नियुक्त करसकूंगी और फिर क्योंकर उस पूरे अभावके काल में इस पितृहीन अनाथ बालक को आप जैसे धर्मज्ञ के योग्य वांछित विद्या पढासकूंगी।१५।अयोग्यजन मुझको हराकर शूद्रों के वेद सुननेकी प्रार्थनाके सदृश इस अनाथ बालाको मांगेंगे तिसपर आप के गुणों से सुहावनी इस कन्याको यदि मैं अयोग्य वर को न देना चाहूं तो कौआ जैसे यज्ञकी वस्तु लूटखाता है वैसेही वेलूटकर बल पूर्वक इसको हरलेजायँगे।१७। हेब्रह्मन् ! जब मैं लोकों में अनादर कीजाऊंगी तौ नहीं कहसक्ती कि मेरी कैसी कुगति होगी ऐसी दशा में आप के पुत्रको आपके असदृशहोते और आपकी कन्या को अयोग्यजनके वश में जाते देखकर मैं निःसंदेह प्राण छोडूंगी तब इस में संदेह नहीं कि आप के और मेरे बिना यह दोनों बालक बिना जलकी मछलीकी भांति प्राण छोडेंगे।२०।अतएव समझली-जिये कि आप के बिना मैं और दोनों बालक तीनोंहीके जीवन निश्चय नष्टहोंगे इस लिये मेरी समझ में मुझको त्याग देनाही आपको उचित है । हे ब्रह्मन् ! धर्म जाननेवाले लोग कहते हैं कि पुत्रवाली स्त्रियां यदि पति से पहिले परलोकको जावें तोउनके लिये बड़ा

trod on ? And how in that time of total want shall I be able to give your son education worthy of the son of such a learned man as you are?15.Unworthy men will force me to give up this orphan daughter like Shudras making a rsquest to hear the Vedas. And if I shall refuse to give this virtuous daughter of yours to an unworthy person they will take her away by force as crows spoil the offerings of a sacrifice.17. I shall then become unfit to mix in society. I cannot say how badly I shall fare. Seeing your son unlike you and your daughter in the possession of an wnworthy fellow, I shall, without doubt commit suicide and your son and daughter will die without us like fish without water.20.Bear in your mind that after your death myself as well as the two children shall die. So I think it would be the best

परित्यक्तःसुतश्चायं दुहितेयंतथामया । बान्धवाश्च परित्यक्तास्त्वदर्थं जीवितञ्चमे २३॥
यज्ञैस्तपोभिर्न्नियमैर्द्दानैश्च विविधैस्तथा । विशिष्यतेस्त्रिया भर्त्तुर्न्नित्यं प्रियहितेस्थितिः
॥ २४ ॥ तदिदंयाच्चिकीर्षामि धर्मंपरमसम्मतम् । इष्टञ्चैवहितञ्चैवतवचैव कुलस्यच
॥ २५ ॥ इष्टानिचाप्यपत्यानि द्रव्याणिसुहृदःप्रियाः। आपद्धर्मप्रमोक्षाय भार्याचापि
सतांमतम् ॥ २६ ॥ आपदर्थेधनं रक्षेद्दारान्रक्षेद्धनैरपि । आत्मानंसततंरक्षेद्दारैरपि
धनैरपि ॥ २७ ॥ दृष्टादृष्टफलार्थंहिभार्य्या पुत्रोधनंगृहम् । सर्व्वमेतद्विधातव्यं बुधाना
मेषनिश्चयः ॥ २८ ॥ एकतोवाकुलं कृत्स्नमात्मावाकुलवर्द्धनः । नसमंसर्वमेवेतिबुधा
नामेषनिश्चयः ॥ २९ ॥ सकुरुष्वमयाकार्य्यं तारयात्मानमात्मना । अनुजानीहिमामा
र्यसुतौमेपरिपालय ॥ ३० ॥ अवध्यां स्त्रियमित्याहुर्द्धर्मज्ञा धर्मनिश्चये । धर्मज्ञान्राक्ष
सानाहुर्न्नहन्यात्सचमामपि ॥ ३१ ॥ निःसंशयंवधःपुंसां स्त्रीणांसंशयितोवधः। अतो

भारी सौभाग्यहै।२२। मैं आप के हितके लिये पुत्र, कन्या, वान्धव और जीवन सबत्याग देनेको उद्यत हुई हूं स्त्रियों के लिये नानायज्ञ, तप, नियम और दान इन सबकामों से सदा पतिका प्रिय और हित करनाही अधिकफलदाई है।२४।मैंने जिसकामका करना ठान लिया है वही इष्ट परम धर्म और आप के तथा आपके वंशका मंगल करनेवाला है पंडितों ने कहाहै कि स्त्री, पुत्र, प्यारे मित्र और अर्थ चाहैं जितनी इष्ट वस्तुहों वोह सब विपतसे बचनेके लिये रक्खीजाती हैं।२६।और विपतसे बचनेके लिये धनभी रखनाचाहिये धन से स्त्री को वचाना और आत्मा की चाहै धन से हो वा स्त्रीसे हो सदा रक्षा करनी चाहिये पंडितों ने निश्चयकियाहै कि दृष्ट और अदृष्ट दोनों फलों के लिये स्त्री, पुत्र, धन और गृह सब करनाचाहिये।२८। एक ओर सम्पूर्ण कुल और दूसरीओर आत्मा को रख कर तोलनेसे सम्पूर्ण कुलभी आत्मा के समान नहीं होते । अतएव हे आर्य ! आप मुझ से काम पूराकर बुद्धि के अनुसार अपनी रक्षा कीजिये और मुझको जानेकीआज्ञा देकर इन दोसन्तानों का पालन कीजिये।३०। धर्म जाननेवालोंने कहाहै कि स्त्रियों का बध नहीं

course for you to give me up. Learned men say that the women having sons are regarded as happy if they die in the lifetime of their husbands. 22. I am ready to leave son, daughter, kinsmen and life for your good. To do good to their husbads is more preferable for women than sacrifices, vows and charity. To do that which I have set my mind on is conducive to the welfare of yourself and your family. Learned men are of opinion that women, sons, dear friends and wealth, however dear, are to be of use at the time of trouble. Women should be protected by wealth and self at the expense of either. Woman, son, wealth and house are useful. Self outweighs the family if both are weighed in scales. Leave me, then, and protect yourself wisely. Bring up your two children. Learned men say that women should not be killed. Rakshases know this

मामेवधर्मज्ञ प्रस्थापयितुमर्हसि ॥ ३२ ॥ भुक्तं प्रियाण्यवाप्तानि धर्मश्चचरितोमहान् ।
त्वत्प्रसूतिःप्रियाप्राप्तानमां तपस्यत्यजीवितम् ॥ ३३ ॥ जातपुत्राचवृद्धाच प्रियकामा
चतेसदा । समीक्ष्यैतदहंसर्वं व्यवसायंकरोम्यतः ॥ ३४ ॥ उत्सृज्यापिहिमामार्य्य
प्राप्स्यस्यन्यामपिस्त्रियम् । ततःप्रतिष्ठितोधर्मो भविष्यतिपुनस्तव ॥ ३५ ॥ नचाप्य
धर्मःकल्याण बहुपत्नीकृतान्नृणाम् । स्त्रीणामधर्मःसुमहान भर्त्तुःपूर्वस्यलंघने ॥ ३६ ॥
एतत्सर्वंसमीक्ष्यत्व मात्मत्यागंचगर्हितम्।आत्मानंतारयाद्य।शुकुलंचेमौचदारकौ।३७।
वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्तयाभर्त्ता तांसमालिङ्ग्य भारत । मुमोचवाष्पंशनकैः
सभार्य्यो भृशदुःखितः ॥ ३८ ॥

इत्यादिपर्वणि बकवधपर्वाणि ब्राह्मणीवाक्ये ऊनषष्ट्य
धिकशतोऽध्यायः ॥ १५९ ॥

करना चाहिये और राक्षस लोग धर्म के जाननेवाले होते हैं सो वोह राक्षस मुझको न मारकर त्यागभी सक्ताहै । हे धर्मज्ञ ! जब कि वहां पुरुषका वध निश्चय है और स्त्री वध के विषय में संदेहहै तब मुझकोही भेजना योग्यहै मैंने बहुत सुख पालियाहै बहुतसे प्रिय कार्य मेरेहोगये हैं मैंने बहुत धर्माजन कियाहै और आपसे प्यारीसन्तानभपाचुकीहूं अब जीवनछोडने में मुझे अति दुःख नहीं है मेरीसन्तान हुईहै मैं बूढीहोगईहूं और तुम्हारे प्रिय कार्य करनेमें सदासे मेरी चेष्टाहै इन सबबातोंको सोचकरही ऐसा कियाहै।३४।आप मुझको त्यागकर दूसरी स्त्री पासकेंगे ऐसा करने से आपका धर्मभी प्रतिष्ठितहोगा हे मंगलमय पुरुषको अधिक स्त्री करलेने सेभी अधर्म नहीं होता पर स्त्री को पूर्वपति छोड कर अन्य पुरुष के वश में जानेसे बड़ा अधर्म होता है।३६।आप इन सब बातों को भली भांति विचार कर अपना नाश करना अनुचित जानकर अपने कुल इन दोबालकों और आत्माकी रक्षा करैं । वैशम्पायनने कहा हे भारत ! वोह ब्राह्मण ब्राह्मणीकी यहबातें सुन कर उसको गले लगाकर उसके साथ अति दुःखी चित्त से आंसूबहाने लगा ॥ ३८ ॥

fact. He may, therefore, abstain from killing me. Death of men is certain there, while it is not so with women. Let me go away. I have seen happy days and done good deeds. I have borne children and I shall not feel much the loss of my life. I have got chidren, have become old and am always anxious to please you. After considering all these facts I have taken my resolve. 34. You can easily get another wife when I am gone. (A man is allowed by religion to take more than one wife while a woman, who leaves one husband and goes to another, commits a sin.) Considering well upon all these things and knowing your destruction to be improper, you should protect your family, the two children and yourself. Vaishampayan said that having heard all this from his wife, the Brahman embraced her and shed tears with her in distress.

वैशम्पायन उवाच । तयोर्दुःखितयोर्वाक्यमतिमात्रं निशम्यतु । ततोदुःखपरीताङ्गी कन्यातावभ्यभाषत ॥ १ ॥ किमेवंभृशदुःखार्त्तौ रोरूयेतामनाथवत् । ममापि श्रूयतांवाक्यं श्रुत्वाचक्रियतांक्षमम् ॥ २ ॥ धर्मतोऽहंपरित्याज्या युवयोर्नात्रसंशयः । त्यक्तव्यांमांपरित्यज्य त्राहिसर्वंममैकया ॥ ३ ॥ इत्यर्थमिष्यतेऽपत्यं तारयिष्यतिमामिति । अस्मिन्नुपस्थितेकाले तरध्वंप्लुववन्मया ॥ ४ ॥ इहवातारयेद्दुर्गादुतवाप्रेत्य भारत । सर्वथातारयेत्पुत्रः पुत्रइत्युच्यतेबुधैः ॥ ५ ॥ आकाङ्क्षन्तेच दौहित्रान्मायि नित्यंपितामहाः । तत्स्वयंवैपरित्रास्ये रक्षन्तीजीवितंपितुः ॥ ६ ॥ भ्राताचममबालोऽयं गतेलोकममुंत्वयि । अचिरेणैव कालेन विनश्येतनसंशयः ॥ ७ ॥ तातेऽपिहि गतेस्वर्गंविनष्टेच ममानुजे । पिण्डःपितॄणांव्युच्छिद्येत्तत्तेषां विप्रियंभवेत् ॥ ८ ॥ पित्रा त्यक्तातथामात्रा भ्रात्राचाहमसंशयम् । दुःखाद्दुःखतरंप्राप्य म्रियेयमतथोचिता ॥ ९ ॥

अध्याय १६० ॥

वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर कन्या उन दुःखी माता पिताकी वात आद्योपान्त सुनकर खेदयुक्त चित्त से वोली कि आप क्यों दुःखिहोकर अनाथ की समान रो रहेहैं पहले मेरी बातसुनकर जो उचितहो सो करैं ।२। इसमें संदेह नहीं कि आप धर्मानुसार मुझको कभी न कभी अवश्य त्यागेंगे सो मेरी समान अवश्य त्यागनीयको छोड़ कर सवकी रक्षा करो यह समझ कर कि सन्तान से तैंगे सन्तान की कामना करते हैं तुम इस कन्यारूपी नाव से वर्त्तमान विपतके समुद्रको पारकरो । ४ । आत्मज से लोग इस लोक और पर लोक में सव विपत से उद्धार होते हैं इस लिये पंडित लोग उसको पुत्र कहते हैं पितृ लोगोंके उद्धार के निमित्तही मुझसे नाती की आशा करते हैं पर मैं नाती की अपेक्षा न कर के स्वयम् पिताका जीवन वचाकर उनका उद्धार करूंगी ।६। हे पिता ! यदि आप परलोक को सिधारैं तो इसमें संदेह नहींहै कि मेरा छोटाभाई थोड़ेही कालमें मरजायगा आप के और भाई के न रहने से एक वारही पितरों का पिंडा लोप होकर बड़ा अनिष्टहोगा।८। और मैं तव पिता, भ्राताके विना वडी दुःखी हूंगी और दुःख पाकर

CHAPTER CLX

Vaishmpayan said that hearing all that had passed between her father and mother, the girl spoke out with a sad heart, saying, "Why do you weep thus like orphans ? Hear me first and then you may do what you like.2. It is certain that according to custom you will have to give me up at one time or another. You may protect yourself by giving me up now. People desire for offspring to cross (the Ocean of evil) through them. You may now cross the ocean of this trouble considering me to be a boat. A son is called Putra because it is a means of going across the troubles of this world and the next. A son is expected from me to rid the forefathers from the troubles (of hell). But without having to wait for the son I shall, myself, save the

त्वयित्वरोगेनिर्मुक्ते माताभ्राताचमेशिशुः । सन्तानश्चैवपिण्डश्च प्रतिष्ठास्यत्यसंशयम् ॥ १० ॥ आत्मापुत्रःसखाभार्या कृच्छ्रन्तुदुहिताकिल । सकृच्छ्रान्मोचयात्मानं माञ्चधर्मेनियोजय ॥ ११ ॥ अनाथाकृपणाबाला यत्रक्वचनगामिनी । भविष्यामि त्वयातात विहीनाकृपणासदा ॥ १२ ॥ अथवाहंकरिष्यामि कुलस्यास्यविमोचनम् । फलसंस्थाभविष्यामिकृत्वाकर्मसुदुष्करम् १३ ॥ अथवायास्यसेतत्रत्यक्त्वामांद्विजसत्तम। पीड़िताहंभविष्यामि तदवेक्षस्वमामपि ॥ १४ ॥ तदस्मदर्थंधर्मार्थं प्रसवार्थञ्चसत्तम। आत्मानंपरिरक्षस्वत्यक्तव्या मांचसन्त्यज ॥१५॥ अवश्यकरणीयेचमात्वां कालोऽत्यगादयम् । किंत्वतःपरमंदुःखं यद्वयंस्वर्गतेत्वयि ॥ १६ ॥ याचमानाःपरादन्नं परिधावेमहिश्ववत् । त्वयित्वरोगेनिर्मुक्ते क्लेशादस्मात्सबान्धवे । अमृतेवसतीलोके भविष्यामिसुखान्विता ॥ १७ ॥ इतःप्रदानेदेवाश्च पितरश्चेतिनश्रुतम् । त्वयादत्तेनतोयेन

अनुचित मृत्यु के वश में होजाऊंगी आप के स्वास्थ होकर इस विपत्तिसे छूटने पर माता छोटा भाई वंश और पिंड सब रक्षितहोंगे।१०।विचारिये कि पुत्र अपना स्वरूप, स्त्री मित्र का स्वरूप, और कन्या कष्ट का स्वरूप है सो कष्ट के स्वरूप कन्या के द्वारा अपनी रक्षा करो मुझको धर्म में नियुक्त करदो । हे पिता ! मैं वालिकाहूं सो आपके विना अनाथ और दीन होकर जहां तहां जाना पड़ेगा।१२। अतएव मैं इस कठिन कामको कर कुलकी रक्षा पूर्वक फल प्राप्त करूंगी हे द्विज श्रेष्ठ यदि आप मुझे छोडकर उस राक्षस के पास जांयगे तो मुझे बड़ा कष्ट होगा।१४।अतएव मुझपर कृपा दृष्टिकरो मुझको, धर्मको, और वंश को बचाने के लिये अपनी रक्षा करो एक समय मुझको तो त्यागना ही होगा फिर अब ही त्याग देने में क्या हानि है अवश्य होने वाले कार्य के लिये काल गँवाना उचित नहीं है।१६।इस से अधिक दुःखकी क्या वातहोगी कि आपके स्वर्गको सिधार ने पर हमको सदा अन्नमांग २ कर कुत्तों की नाई फिरना पड़ेगा और आप के बांधवों सहित इस दुःख से मुक्त होने से अमर लोक में सुख से वसूंगी यहभी सुना है कि ऐसे अनुचित

life of my father and shall release him from this difficulty. My younger brother will not live long if you die. The names of our forefathers will become extinct as soon as you and my brother are gone. I shall be in a great distress without you and may commit suicide. The family and my younger brother will be safe when you are released from this trouble. 10. Bear in your mind that a son is the personification of self; the wife of friend and the daughter of misery. Protect yourself by the daughter who is the personification of misery. Sacrifice me, a young girl, who will have to lead a life of beggary if you leave her an orphan. I shall, therefore, reap a rich reward, by doing this difficult task of protecting the family. I shall be very miserable if you will to go to the Rakshasand leaveme. Be, therefore, kind to me. Protect yourself for the sake of myself, religion and family. You will

भविष्यन्तिहितायवै ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंवहुविधंतस्या निशम्यपरि-
देवितम् । पितामाताचसाचैव कन्याप्ररुरुदुस्त्रयः ॥ १९ ॥ ततःप्ररुदितान् सर्वान्नि-
शम्याथ सुतस्तदा । उत्फुल्लनयनोवालः कलमव्यक्तमब्रवीत् ॥ २० ॥ मापितारुद
मामातर्मा स्वसस्त्विवतिचाब्रवीत् । प्रहसन्निव सर्वांस्तानेकैकमनुसर्पति ॥ २१ ॥ ततः
सतृणमादाय प्रहृष्टःपुनरब्रवीत् । अनेनाहंहनिष्यामि राक्षसंपुरुषादकम् ॥ २२ ॥ तथा
तेषांदुःखपरीतानांनिशम्यतत् । वालस्यवाक्यमव्यक्तं हर्षःसमभवन्महान् ॥ २३
अयंकालइतिज्ञात्वाकुन्तीमभुपसृत्यतान् । गतासूनमृतनेव जीवयन्तीदमब्रवीत् ॥ २४ ॥
इत्यादिपर्वणि वकवधपर्वणि ब्राह्मणकन्यापुत्रवाक्येषष्ट्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १६० ॥

कार्य में कन्या दंदने परभी पितरों को जल देनेसे वे हित करनेवाले बने रहते हैं अतएव
आप यह कार्य मुझको सौंपकर स्वयम् जीवित रहके यदि पितरों को जल दें तो वे हित
करनेवाले होंगे ।१८ उस कन्याकी इसप्रकार दुःखभरी बातें सुनकर पिता माता और
कन्या तीनों रोनेलगे । अनन्तर वालक पुत्र उन सबको रोते देखकर प्रसन्न नेत्र और
हँसते मुखसे मीठी और अस्पष्ट बातोंमें कहनेलगा । २० । हेवाप ! मत रो, मा मत रो
वहिन मत रो यह कहताहुआ हर एक के पास एकर बार जानेलगा फिर एकतृण उठाकर
आनन्दसे बोला कि मैं इससे उस पुरुषनाशी राक्षसको मारूंगा।२२।उस के पिता माता
और बहिन यद्यपि बडे दुःख से कातर थे तौभी उससमय उसबालककी अस्पष्टबात सुन
कर उनको बड़ा हर्षहुआ अनन्तर कुन्ती यह समझकर कि यह अभिप्राय प्रकाश करने
का समय है उन के निकट जा पहुँची और मरेहुओं को अमृत से जिलाने की भांति
उनसे कहने लगी ॥ २४ ॥

have to leave me in time. Where lies the harm if you do it now ? It is useless to dally when you must do a thing. What misery can be greater for usthan going abegging from door to door like dogs after your death?On the other hand, by releasing you with family from this trouble I shall live happily in heaven. We hear that the manes may be propitiated with libations of water after giving away a girl for such need. Therefore, do the needful and intrust the work to me." 18. At these heart-rending words of the girl, the father, mother, and daughter wept together. On this the youug son lisped out in sweet tones with a smiling face, "Don't weep father, don't weep mother, don't weep sister." With these words he went to each of them in succession.Then picking up a straw he said again cheerfully, "With this I shall kill the man eating demon." The father and mother, though much distressed at the time, were much amused at the words of their son. Kunti now saw that it was time to show herself and went near them. She spoke to themas if she were reviving the dead with nectar.24.

कुन्त्युवाच । कुतोमूलमिदंदुःखं ज्ञातुमिच्छामितत्त्वतः । विदित्वाप्यपकर्षेयं शक्यंचेदपकर्षितुम ॥ १ ॥ ब्राह्मण उवाच । उपपन्नं सतामेतद्यद्ब्रवीषितपोधने । नतुदुःखमिदंशक्यं मानुषेणव्यपोहितुम् ॥२॥ समीपेनगरस्यास्य बकोवसतिराक्षसः । ईशोजनपदस्यास्य पुरस्यचमहाबलः ॥ ३ ॥ पुष्टोमानुषमांसेन दुर्बुद्धिःपुरुषादकः । रक्षत्यसुरराण्नित्यमिमंजनपदंबली ॥ ४ ॥ नगरंचैवदेशंच रक्षोबलसमन्वित । तत् कृतेपरचक्राच्च भूतेभ्यश्चननोभयम् ॥ ५ ॥ वेतनंतस्यविहितं शालिवाहस्यभोजनम् । महिषौपुरुषश्चैको यस्तदादायगच्छति ॥ ६ ॥ एकैकश्चापिपुरुषस्तत् प्रयच्छतिभोजनम् । सवारो बहुभिर्वर्षैर्भवत्यसुकरोनरैः ॥ ७ ॥ तद्विमोक्षाययेकेचिद्यतन्तिपुरुषाः क्वचित् । सपुत्रदारांस्तान् हत्वातद्रक्षोभक्षयत्युत ॥ ८ ॥ वेत्रकीयगृहेराजा नायंनय-

अध्याय १६१ ॥

कुंती ने कहा कि मैं जानना चाहतीहूं कि ऐसे दुःखका कारण क्याहै क्योंकि यदि उससे बचने का उपाय बनपड़े तो करूंगी ब्राह्मण ने कहा कि हेतपोधने तुम जो कहती हो वोह साधुओंहीके योग्यहै पर यह दुःख दूरकरना मनुष्यकी शक्ति से बाहरहै।२। इस नगर के निकट बक नामक एक महाबली राक्षस रहताहै वोह मांसभोजी इसनगर और प्रदेशका अधीशहै मनुष्य मांस से पुष्ट बली और दुष्टबुद्धि वोह असुरराज सदा इस देश की रक्षाकरताहै।४। इस देश के राक्षस बल से रक्षित होनेके कारण अन्य देश वा किसी प्राणीसे हमारे भयकी सम्भावना नहीं है एकगाडी अन्न और दो भैंसे और वोह मनुष्य जो उन्हें लेजाताहै यह सब उस राक्षसके भोजनके लिये वेतन के स्वरूप में निर्दिष्टहैं ।६। इस देशका हर एक गृहस्थ अपनी २ वारीसे एक २ दिन के हिसाब से नित्य भोजन पहुँचाता है बहुत वर्षो के पीछे एक २ गृहस्थ के लिये यह कठोर वारी आती है यदि कभी कोई इस से बचनेकी चेष्टा करताहै तो वोह राक्षस स्त्री पुत्रों के साथ उस को

CHAPTER CLXI

Kunti said, "I wish to know the cause of so much grief and I shall relieve you from the trouble if I can." The Brahman replied, "What you say is worthy of great beings like yourself. But to rid us of this difficulty is out of the power of man. 2. Near this city lives a powerful Rakshas named Bak, He rules over the suburbs. Strong with the eating of human flesh, powerful and cruel, the Rakshas king protects the country. Being protected by demoniac power, this country fears no foreign power or any other being, A cart full of food, two buffaloes and the driver of the cart are the daily ration of the Rakshas. 6. Every citizen, in his turn, is bound to supply the demon with provisions. Of course this dangerous turn comes once in many years. One who tries to escape has his whole family destroyed and

सिंहास्थितः । उपायंतंनकुरुते यत्नादपिसमन्दधीः ॥ ९ ॥ अनामयंजनस्यास्य येन स्यादद्यशाश्वतम् । एतदर्हावयंनूनं वसामोदुर्बलस्यये विषयेनित्यवास्तव्याः कुराजानमुपाश्रिताः ॥ १० ॥ ब्राह्मणाःकस्यवस्तव्याः कस्यवाच्छन्दचारिणः । गुणैरेतेहिवत्स्यन्ति कामगाःपक्षिणोयथा ॥ ११ ॥ राजानंप्रथमंविन्देत्ततो भार्य्यांततोधनम् । त्रयस्यसञ्चयेनास्य ज्ञातीन् पुत्रांश्चतारयेत् ॥ १२॥ विपरीतंमयाचेदं त्रयंसर्वमुपार्ज्जितम् । तदिमामापदंप्राप्य भृशंतप्यामहेवयम् ॥ १३ ॥ सोऽयमस्माननुप्राप्तो वारःकुलविनाशनः । भोजनंपुरुषश्चैकः प्रदेयंवेतनंमया ॥ १४ ॥ नचमेविद्यतेवित्तं संक्रेतुंपुरुषंक्वचित् । सुहृज्जनंप्रदातुञ्च नशक्ष्यामिकदाचन ॥ १५ ॥ गतिंचैवनपश्यामि

मारकर खाजाता है।८। इस खण्डमें वेत्रकीय गृहनामक स्थानमें एक राजाहै वोह बुद्धिहीन भूप नीति को आश्रय नहीं करता यद्यपि राक्षसके वध के लिये वोह स्वयम् असमर्थ है पर यत्न से ऐसा कोई उपाय नहीं ढूंढता कि इन सब लोगों के लिये सदा कुशल होजाय हम लोग जब उस दुर्बल बुरे राजाके भरोसे सदा भयभीत होकरभी उस के अधिकार में रहते हैं तब अवश्यही इस दुःख के भोगने के योग्यहैं देखो ब्राह्मणको कोई अपनी भूमि में नहीं वसासक्ता क्योंकि वे किसीकी इच्छा से नहीं चलते वे अपनेगुणसे कामचारी पक्षीके सदृश मनमाना वासकरते हैं।११।पर मैंने उसका विपरीत काम किया है और कहाभी है ।कि पहले भूप तब स्त्री और पीछे धनार्जन करना इन तीन विषयों के सञ्चितहोने पर ज्ञाति और पुत्रोंका उद्धारहोता है इन तीनों विषयों के उपार्जन में भी मैंने बड़ा विपरीत काम किया है सो अब इस विपत के समुद्र में गिरकर बडादुःखी होरहा हूं आज हमारी वोह कुलनाशी बारी आई है राक्षस के भोजनके लिये बेतन के स्वरूप में एक मनुष्य मुझको देना पड़ेगा।१४ पर मेरेपास इतना धन नहीं है कि किसी स्थान से मोललेकर एक मनुष्यदूं और किसी स्वजन को भी नहीं देसकूंगा सो ऐसा

devoured by him.8. In this country there is a king who lives in a place called Batraki But the foolish king does not act wisely. Although he is himself unable to kill the Rakshas, yet he might devise some means to get rid of him for ever. We rely npon such a weak king, and are surely worthy of this treatment. Observe that no one can settle a Brahman in his land as the latter does not act upon the wish of the former. A Brahman lives like a bird wherever he likes. But I have acted against this principle. They say that one should seek for a king first, then, wife and then wealth. On these three depends the safety of the family. In this respect, too, I have erred and so I have fallen into the Ocean of difficulty. To day is the turn of the destruction of my family. I shall have to send a man as ration to the Rakshas. I have no money to purchase one, nor the heart to give one out of my family. I see

तस्मान्मोक्षायराक्षसः । सोऽहंदुःखार्णवेमग्नो महत्यसुकरेभृशम्॥१६॥सहैवैतैर्गमिष्यामि
बान्धवैरद्यराक्षसम् । ततोनःसहितान्क्षुद्रः सर्वानेवोपभोक्ष्यति ॥ १७ ॥

इत्यादिपर्वणि बकवधपर्वणि कुन्तीप्रश्ने एकषष्ट्य
धिकशततोऽध्यायः ॥ १६१ ॥

कुन्त्युवाच । नविषादस्त्वयाकार्यो भयादस्मात्कथंचन । उपायःपरिदृष्टोऽत्र
तस्मान्मोक्षायरक्षसः ॥ १ ॥ एकस्तवसुतोबालः कन्याचैकातपस्विनी । नचैतयोस्त-
थापत्न्या गमनंतवरोचये ॥ २ ॥ ममपंचसुताब्रह्मं स्तेषामेकोगमिष्यति । त्वदर्थंबलि
मादाय तस्यपापस्यरक्षसः ॥ ३ ॥ ब्राह्मण उवाच । नाहमेतत्करिष्यामि जीवितार्थे
कथंचन । ब्राह्मणस्यातिथेश्चैव स्वार्थेप्राणान्वियोजयन् ॥ ४ ॥ नत्वेतदकुलीनासु
नाधर्मिष्ठासुविद्यते । यद्ब्राह्मणार्थे विसृजेदात्मानमपिचात्मजम् ॥ ५ ॥ आत्मनस्तु

कोई उपाय नहीं दीखता कि जिससे उस राक्षसके हाथ से बचसकूं इस लिये अतिअपार दुःख के समुद्र में डूबाहूं अतएव समझताहूं कि मैं सब बांधवोंके साथ उस राक्षस के पास जाऊंगा कि जिससे वोह नीचाशय राक्षस हम सबको खाले ॥ १७ ॥

अध्याय १६२ ॥

कुंती ने कहा हे ब्रह्मन् ! तुम इस दुःख का भय मत करो मैंने उस राक्षससे बचने का उपाय निश्चय किया है तुम्हारा एक शिशुपुत्र और एकही ब्रतशीला कन्या है उन मेंसे किसी का वो तुम्हारी स्त्रीका अथवा तुम्हारा जानाभी उचित नहीं है।२।मेरे पांच पुत्र हैं उन मेंसे एक तुम्हारे उपकार के लिये उपहार लेकर उस पापी राक्षस के यहां जायगा ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपना जीवन बचाने के लिये कभी ऐसा काम नहीं करसकूंगा मैं अपने लिये ब्राह्मण और अतिथिका प्राण लेनेके लिये साहस नहीं करसक्ता ।४।जो नीच वंश में उत्पन्न और अधार्मिक हैं वेभी ऐसे काम में हाथ नहीं डालते ब्राह्मण के उपकार

no way to get rid of the Rakshas and am, therefore, fallen in to the boundless Ocean of grief. I think I should go to the *Rakshas* with all my family so that he may eat us all at once".17.

CHAPTER CLXII

Kunti said, "Donot be troubled with this grief, Brahman, I have provided for you a remedy to save you from the *Rakshas.* You have only one son and one daughter and I donot think it proper for you or for your wife to go there.2.I have five sons. One of them shall go with provisions for your sake." The Brahman replied, "I shall do no such thing to save my life. I dare not take the life of a Brahman or guest to save my own.4. Even those who are low born and sinful dare not commit such a crime. The rule that a son may be forsaken for the good of a Brakman, seems to me salutary and

मयाश्रेयो वोद्धव्यमितिरोचये । ब्रह्मबध्यात्मबध्यावा श्रेयानात्मबधोमम ॥ ६ ॥ ब्रह्म बध्यापरंपापं निष्कृतिर्नात्रविद्यते । अबुद्धिपूर्वंकृत्वापि वरमात्मबधोमम ॥ ७ ॥ नत्व हंबधमाकांक्षे स्वयमेवात्मनःशुभे । परैःकृतेबधेपापं नकिंचिन्मयिविद्यत ॥ ८ ॥ अ-भिसन्धिकृतेतस्मिन् ब्राह्मणस्यबधेमया । निष्कृतिंनप्रपश्यामि नृशंसंक्षुद्रमेवच ॥ ९॥ आगतस्यगृहं त्यागस्तथैव शरणार्थिनः । याचमानस्यचबधो नृशंसोगर्हितोबुधैः ।१० कुर्य्यान्ननिन्दितंकर्मन नृशंसंकथंचन । इतिपूर्वेमहात्मान आपद्धर्मविदोविदुः ॥११॥ श्रेयांस्तुसहदारस्य विनाशोऽद्यममस्वयम् । ब्राह्मणस्यबधं नाहमनुमंस्येकदाचन ॥ ॥ १२ ॥ कुन्त्युवाच । ममाप्येषामतिर्ब्रह्मन् विप्रारक्ष्याइतिस्थिरा । नचाप्यनिष्टः पु-त्रोमे यदिपुत्रशतंभवेत् ॥ १३ ॥ नचासौराक्षसःशक्तो ममपुत्रविनाशने । वीर्य्यवान्म

लिये जो यह विधि बनी है कि आत्मज को त्याग देना मुझको वही मंगलदायी समझना चाहिये और मैं वैसाही करना चाहताहूं ब्राह्मण वध और आत्महत्या इन दोनोंमें आत्म हत्याही मंगलयुक्त है ।६। क्योंकि ब्राह्मण वध बड़ा पापहै उस के करनेसे फिर बचनेका कोई उपाय नहीं मैं समझताहूं कि अनिच्छा से ब्राह्मण वध करने से अनिच्छा आत्म-हत्याकरना मेरेलिये अच्छा है और मैं स्वयम् आत्महत्याभी नहीं करताहूं और कोईमुझ को मारेगा उसका पाप मुझको नहीं लगसक्ता ।८। मुझको नहीं जान पडता कि बुद्धि से अथवा छल पूर्वक ब्रह्म वध करके सहज में छूटसकूंगा पण्डितोंने कहाहै कि अतिथि वा शरण लियेहुए को त्याग देना और मागनेवालेको मारडालना अति निष्ठुर और अनुचित कार्य है ।१०। आपद्धर्म के जाननेवाले पहले महात्माओंने कहाहै कि निन्दित और निष्ठुर कर्म कभी न करना अतएव आज मैं स्त्री सहित प्राण छोड़ूंगा मेरेलिये यही अच्छा है मैं किसीप्रकारसे ब्राह्मण हत्याकी सम्मति नहीं देसकूंगा।१२।कुंतीने कहा हे ब्राह्मण ! मैंने भी यही निश्चय किया है कि ब्राह्मणोंकी अवश्य रक्षाकरनी चाहिये और यदि सौपुत्रभी

I shall act upon it, Of the killing of a Brahman and suicide the latter is preferable,6. For the killing of a Brahman is a great sin for which there is no remedy. I prefer unintentional suicide to the unintentional murder of a Brahman. I donot wish to commit suicide. Another person will kill me and therefore I shall be free from sin.8.I donot think I shall escape easily if I secure the death of a Brahman by cunningness or wisdom. Learned men say that to forsake a guest or one who seeks quarter and to kill a beggar are cruel and improper acts.10The holy men of old,who knew the course to be followed at the time of difficulties, say that one must never do a bad and cruel act. I shall, therefore, die with my wife and I like it, I shall never give consent to the death of a Brahman." Kunti said, "I too, concur with you in holding that *Brahmans* should be protected. A son is not the

न्त्रसिद्धश्च तेजस्वीचसुतोमम ॥ १४ ॥ राक्षसायचतत्सर्वं प्रापयिष्यतिभोजनम् ।
मोक्षयिष्यतिचात्मानामिति मेनिश्चितामतिः ॥ १५ ॥ समागताश्चवीरेण दृष्टपूर्वाश्चरा-
क्षसाः । बलवन्तोमहाकाया निहताश्चाप्यनेकशः ॥ १६ ॥ नत्विदंकेषुचिद्ब्रह्मन् व्या
हर्त्तव्यंकथञ्चन । विद्यार्थिनोहिमेपुत्रान् विप्रकुर्य्युःकुतूहलात् ॥ १७ ॥ गुरुणाचान-
नुज्ञातो ग्राहयेद्यंतसुतोमम । नसकुर्य्यात्तथाकार्य्यं विद्ययेतिसतांमतम ॥१८ ॥ एवमु-
क्तस्तुपृथयास विप्रोभार्य्यायासह । हृष्टःसम्पूजयामास तद्वाक्यममृतोपमम् ॥ १९ ॥
ततःकुन्तीचविप्रश्च सहितावनिलात्मजम् । तमब्रूतांकुरुष्वेति सतथेत्यब्रवीच्चतौ २०॥

इत्यादिपर्वणि बकवधपर्वणि भीमबकवधाङ्गीकारे
द्विषष्ठ्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १६२ ॥

होवें तौभी पुत्र मेरे अनादरकी वस्तु नहीं है मेरेपुत्र वीर्यवन्त, तेजस्वी और मन्त्र में सिद्धहैं सो वोह राक्षस उनको नष्टकरनेमें समर्थ न होगा।१४।मुझको निश्चय जानपडता है कि मेरा पुत्र उसराक्षस को वोह सब खानेकी वस्तु पहुँचाभी देगा और अपनी रक्षा भी करेगा मैंने पहिले देखाहै कि बडे २ बली राक्षस आकर मेरेपुत्रों से यमराजके घर भेजेगये।१६।हेब्रह्मन् ! यह बात तुम किसीसे किसीप्रकार प्रकाश मत करना प्रकाशहोने से विद्यार्थी लोग बडी इच्छासे इस विद्याके सीखने के लिये मेरेपुत्रों को सदा दिक्करेंगे मेरेपुत्र गुरुकी आज्ञा बिना और किसी को यह विद्या देंगे तो उस विद्या से फिर काम नहीं करसकेंगे।१८।ब्राह्मण ने कुंतीकी यहबात सुनकर स्त्रीसहित अति प्रसन्नहोकर अमृत सदृश उसबातको आदरपूर्वक मान लिया फिर कुंती और ब्राह्मण ने एकत्रहोकर पवन नन्दन भीमसे उस कठोर कार्य करने को कहा भीमसेननेभी उसको मान लिया ॥२०॥

object of inaffection to me if I have a hundred. My sons are strong, brave and learned in the art of killing *Rakshases.* He will not be able to harm my son. 14. I believe my son will take provisions to him and will return safely. I have seen many *Rakshases* killed by my sons 16. You should not disclose this secret to any one. For, by so doing, those who wish to learn this art will annoy my sons who are not at liberty to teach this knowledge without the permission of their preceptor and may lose it if they act against the instructions. The 18. Brahman and his wife gladly accepted the offer. The *Brahman* and Kunti jointly, requested *Bhimsen* to perform the difficult task and *Bhim sen* gave his consent to it. 20.



वैशम्पायन उवाच । करिष्यइतिभीमेन प्रतिज्ञातेऽथभारत । आजग्मुस्तेततः सर्वेभैक्ष्यमादायपांडवाः ॥ १ ॥ आकारेणैवतंज्ञात्वा पाण्डुपुत्रोयुधिष्ठिरः । रहःसमुपविश्यैकस्ततः पप्रच्छमातरम् ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच । किञ्चिकीर्षत्ययंकर्म भीमोभीमपराक्रमः । भवत्यनुमतेकाच्चित् स्वयंवाकर्त्तुमिच्छति ॥ ३ ॥ कुन्त्युवाच । ममैव वचनादेष करिष्यतिपरन्तपः । ब्राह्मणार्थेमहत्कृत्यं मोक्षायनगरस्यच ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच । किमिदंसाहसंतीक्ष्णं भवत्यादुष्करंकृतम् । परित्यागंहिपुत्रस्य नप्रशंसन्तिसाधवः ॥ ५ ॥ कथंपरसुतस्यार्थे स्वसुतंत्यक्तुमिच्छसि । लोकवेदविरुद्धं हिपुत्रत्यागात्कृतंत्वया ॥ ६ ॥ यस्यबाहूसमाश्रित्य सुखंसर्वेशयामहे । राज्यंचापहृतं

अध्याय १६३ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हे भारत ! भीमसेन से उस कामकी प्रतिज्ञा करने पर सम्पूर्ण पांडव भिक्षाकी वस्तुलेकर गृहको लौटआये अनन्तर युधिष्ठिरने आकार द्वारा वोह सब बातजानकर निरालेमें बैठकर मातासे पूंछा ।२। कि भीमपराक्रमी भीम किस कामको जाते हैं क्या तुमने आज्ञा दीहै अथवा भीमने स्वयम् इसके करनेकी इच्छाकी है कुंती ने कहा कि शत्रुनाशी वृकोदर मेरेही आज्ञा से ब्राह्मण के उपकार और इसनगर के मुक्त करने के लिये यह भारीकाम पूराकरेंगे।४।युधिष्ठिरने कहा कि यह आपने कैसा भयानक साहस किया साधुगण कभी पुत्र त्यागनेकी प्रशंसा नहीं करते और दूसरेका पुत्र बचाने के लिये अपना पुत्र त्यागना क्योंकर उचित होसक्ता है आज तुमने पुत्रको त्यागकर लोकाचारके विपरीत और वेदके विरुद्ध कर्मकियाहै।६।जिसके भुजबलके आसरे हम सुख से सोते हैं जिसके भुजबल के भरोसे हमको नीचाशय दुर्योधनादिसे लूटेहुए राज्य के पानेकी आशाहै, जिसके अपरिमित वीरको स्मरणकर दुर्योधन और शकुनी को दुःख से

CHAPTER CLXIII

Vaishampayan said that when Bhim had promised to do the work, the Pandavas came with the things obtained as alms. Yudhishthir guessed out all and asked his mother in private, saying, " On what business is Bhim going, mother ? Is it by your order or Bhim's own wish that he is doing it ?" Kunti replied " It is by my order that Bhim is going to do kindness to the Brahman and to relieve the city by his bravery." 4. Yudhishthir said, " What a hazardous undertaking ! The good never praise the giving up of a son. How can it be proper to give up one's own son to save another's. By giving up the son you have acted against the worldly practice and the injunctions of the Vedas. 6. Bhim, on the reliance of whose strength we sleep soundly and hope to get back our kingdom which we are robbed of by the meanDuryo-

क्षुद्रैराजिहीर्षामहेपुनः ॥ ७ ॥ यस्यदुर्य्योधनोवीर्य्यं चिन्तयन्नमितौजसः। नशेतेरजनीः सर्व्वादुःखाच्छकुनिनासह ॥ ८ ॥ यस्यवीरस्यवीर्य्येण मुक्ताजतुगृहाद्वयम्। अन्येभ्यश्चैवपापेभ्योनिहतश्चपुरोचनः ॥ ९ ॥ यस्यवीर्य्यंसमाश्रित्य वसुपूर्णांवसुन्धराम्। इमां मन्यामहेप्राप्तां निहत्यधृतराष्ट्रजान ॥ १० ॥ तस्यव्यवसितस्त्यागो बुद्धिमास्थायकां त्वया। कच्चिन्नुदुःखैर्बुद्धिस्ते विलुप्तागतचेतसः ॥ ११ ॥ कुन्त्युवाच। युधिष्ठिर न सन्तापस्त्वयाकार्यो वृकोदरे। नचायंबुद्धिदौर्बल्याद्व्यवसायः कृतोमया ॥ १२ ॥ इह विप्रस्यभवनेवयं पुत्रसुखोषिताः। अज्ञाताधार्त्तराष्ट्राणां सत्कृतावीतमन्यवः ॥ १३ ॥ तस्यप्रतिक्रियापार्थ ममेयंप्रसमीक्षिता। एतावानेवपुरुषः कृतंयस्मिन्ननश्यति ॥ १४ ॥ यावच्चकुर्य्यादन्योऽस्य कुर्य्याद्बहुगुणंततः। दृष्ट्वाभीमस्यविक्रान्तं तदाजतुगृहेमहत् ॥ १५ ॥ हिडिम्बस्यवधाच्चैवं विश्वासोमेवृकोदरे। बाह्वोर्बलंहिभीमस्य नागायुतसमं

रात्रि में नींद नहीं आती।८।जिसवीरके भुजवीर्य्य से हम लोग जतुगृह और दूसरी विपदों से बचे और जिसने पुरोचनको यमराजके घर भेजा यहांतक कि जिसके भुजवीर्य्य की आशा से हमको ऐसा विश्वासहै कि मानो हम धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मारकर इस खोयेहुए राज्य को फिर पाचुकेहैं।१०।तुम ने कैसी बुद्धि से उस भीमसेन को त्याग देना निश्चय किया है क्या तुम ने अपना ज्ञान खोदिया, क्या दुःख से तुम्हारी बुद्धि जाती रही। कुंतीने कहा हे युधिष्ठिर वृकोदर के लिये दुःख मत करो मैंने बुद्धिकी अल्पता से इस काम में हाथ नहीं डालाहै १२ हम ब्राह्मण के घरमें धृतराष्ट्र के पुत्रों से छिपकर सत्कारके साथ बिना कष्ट बसरहे हैं इसके बदले मैंने इसकामका करना निश्चय कियाहै क्योंकि जो लोग उपकारके बदले में उपकार करतेहैं वही पुरुषहैं।१४।विशेष कर जो जितना उपकार करता है बदले में उसका उससे अधिक उपकार करना उचितहै जतुगृह में भीमसेन का जितना विक्रम देखाहै और उसने जिसप्रकार हिडिंबको मारा उस से मुझको विश्वास

dhan and others, the recollection of whose boundless strength keeps away sleep at night from the eyes of Duryodhan and Shakuni, by the strength of whose arms we could save ourselves from the burning house and other perils, who sent Purochan to sleep in the arms of death and the reliance we put on the strength of whose arms is so great as to make us quite certain of the recovery of our lost kingdom and the death of the sons of Dhritrashtra, has been given up by you.10.Have you lost your reason and wisdom under difficulties ?" Kunti replied, "Donot be grieved for Bhim, Yudhishthir. I have not done it through want of wisdom. Because we live safely in the Brahman's house, unknown by the sons of Dhritrashtra I have resolved to recompense the *Brahman* by this act. For those who do kindness in return are really men.14.*Besides*, one should do a

महत् ॥ १६ ॥ येनयूथंगजमख्या निर्व्यूढावारणावतात् । वृकोदरेणसदृशोबलेनान्यो
नविद्यते । योऽप्यतीयाद्युधि श्रेष्ठमपिचक्रधरंस्वयम् ॥ १७ ॥ जातमात्रःपुराचैव ममा-
ङ्कात्पतितोगिरौ । शरीरगौरवादस्य शिलागात्रैर्विचूर्णिता ॥ १८ ॥ तदहंप्रज्ञयाज्ञात्वा
बलंभीमस्यपाण्डव । प्रतिकार्य्येचविप्रस्य ततःकृतवतीमतिम् ॥ १९ ॥ नेदंलोभान्न
चाज्ञानान्नचमोहाद्विनिश्चितम । बुद्धिपूर्वन्तुधर्मस्य व्यवसायःकृतोमया ॥ २० ॥
अर्थौद्वावपिनिष्पन्नौ युधिष्ठिरभविष्यतः । प्रतीकारश्चवासस्य धर्मश्चचरितोमहान् २१
योब्राह्मणस्यसाहाय्यं कुर्यादर्थेषुकर्हिचित् । क्षत्रियःसशुभाँल्लोकान् प्राप्नुयादितिमेमतिः
॥ २२ ॥ क्षत्रियस्यैवकुर्वाणः क्षत्रियोवधमोक्षणम् । विपुलांकीर्त्तिमाप्नोति लोकेऽस्मिं
श्चपरत्रच ॥ २३ ॥ वैश्यस्यार्थेचसाहाय्यं कुर्वाणःक्षत्रियोभुवि । ससर्वेष्वपिलोकेषु प्रजा

होगयाहै कि उसकी भुजाओंका बल दशसहस्र हाथीके समानहै।१६।जिस बृकोदरने हाथी
की भांति तुमको वारणावत नगर से निकालाथा उस भीमके समान बली इस धरती भर
में कोई नहीं दीख पडता जान पड़ता है कि मेरा भीम योद्धोंमें श्रेष्ठ वज्रधारी इन्द्रको
भी युद्ध में परास्त करसक्ताहै हेपांडव श्रेष्ठ ! भीमसेन जन्म लेतेही मेरीगोद से पहाडपर
गिरगयाथा उस के शरीरकी चोटसे पत्थर के टुकडे पिसकर चूर२ होगये।१८।इसकारण
सेभी मैं भीमका बल जानतीहूं इस लिये ब्राह्मण के शत्रुको नष्ट करने का संकल्पकियाहै
मैंने लोभ व अज्ञानता और मोह से इस काम में हाथ नहीं डालाहै बुद्धि सेही इस धर्म
कार्य में प्रवृत्तहुईहूं।२०।हे युधिष्ठिर ! इसकार्य से दोप्रयोजन सिद्धहोंगे एक यह कि यहां
के बसने के बदले में उपकार और दूसरा महान्धर्म मैं निश्चय जानतीहूं कि जो क्षत्रिय
ब्राह्मणकी सहायता करते हैं वोह शुभ लोक को पाते हैं । २२ । जो क्षत्रिय
क्षत्रिय का प्राण बचाते हैं वोह इस लोक और परलोकमें अत्यन्त यश प्राप्त करते हैं इस

greater kindness in return. From the prowess of *Bhimsen*, shown in the burning house and in killing Hidimb, I belive he has the strength of ten thousand elephants. I see no man in the world stronger than Bhim who rescued us from Barnavat. I think Bhim can defeat in battle the first of warriors, Indra the wielder of thunder bolt. Bhim, when a child, fell down from my lap on stone and broke it into pieces.18. I know, therefore, the strength of Bhim and have resolved to send him to kill the Brahman's enemy. I have not done this through avarice, ignorance or foolishness. On the other hand I have done this with due consideration. Two purposes will be served by this deed: one, the return of kindness and the other, an act of great piety. A Kshatrya saving the life of another Kshatrya or a *Brahman* reaps a great reward in this world and the next. A Kshatrya helping a Vaishya is beloved by his sub-

रञ्जयते भुवम् ॥ २४ ॥ शूद्रन्तु मोचयेद्राजा शरणार्थिनमागतम् । प्राप्नोतीह कुलेजन्म सद्द्रव्ये राजपूजिते ॥ २५ ॥ एवं मां भगवान्व्यासः पुरा पौरवनन्दन । प्रोवाचासु करप्रज्ञस्तस्मादेतं चिकीर्षितम् ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि बकबधपर्वणि कुन्तीयुधिष्ठिरसंवादे
त्रिषष्ट्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १६३ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ उपपन्नमिदं मातस्त्वया यद्बुद्धिपूर्वकम् । आर्त्तस्य ब्राह्मणस्यैतदनुक्रोशादिदं कृतम् ॥ १ ॥ ध्रुवमेष्यति भीमोऽयं निहत्य पुरुषादकम् । सर्वथा ब्राह्मणस्यार्थे तदनुक्रोशवत्यसि ॥ २ ॥ यथा त्विदं न विन्देयुर्नरा नगरवासिनः । तथायं ब्राह्मणो वाच्यः परिग्राह्यश्च यत्नतः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततो रात्र्यां व्यतीतायामन्नमादाय पाण्डवः । भीमसेनो ययौ तत्र यत्रासौ पुरुषादकः ॥ ४ ॥ आसाद्य तु वनं तस्य रक्षसः

में संदेह नहीं कि यदि क्षत्रिय वैश्यकी सहायता करै तो भूमंडल में सर्वत्र प्रजा उसकी प्रेमी होती है। २४। क्षत्रिय शूद्र वा शरणलियेहुए जनको विपदसे बचावे तो वोह ऐश्वर्ययुक्त राजों से पूजित वंश में जन्म लेता है । हे कौरवनन्दन ! पूर्व काल में अति बुद्धिमान भगवान् व्यास देव ने मुझको यह सब उपदेश किये थे इसी लिये मैंने यह काम करने की इच्छा की ॥ २६ ॥

अध्याय १६४ ॥

मातकी यह बातें सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि हे माता तुम ने जो इस विपत में पड़े ब्राह्मण पर कृपा दिखाकर बुद्धिसे जो काम कियाहै वोह बहुतही अच्छा है आपने ब्राह्मण पर दयाकी है इसी से संदेह नहीं है कि भीमसेन उस मनुष्य लोभी राक्षस को मारकर लौट आवेगा तुम यत्न पूर्वक ब्राह्मण से यह स्वीकार करा लेना कि नगरवालों को यह बात विदित न हो । २३ । वैशम्पायन ने कहा कि रात्रिहोने पर भीमसेन ने भोजनकी सामग्री लेकर वहांकी यात्राकी जहां राक्षस था अनन्तर उस राक्षसके बसने

jects. A Kshatrya relieving a Shudra or any other man who seeks his help, is born in a family respected by kings. The wise sage Vyas taught me all this and I have acted accordingly, 26.

CHAPTER CLXIV

Having heard this from his mother Yudhishthir replied, "Your kindness to the Brahman will surely help Bhimsen in returning safely after killing the cannibal. You must manage to take a promise from the Brahman to the effect that he will not disclose the secret to the citizens." 23. Vaishampayan said that at night fall *Bhimsen* went with provisions to the place where the Rakshas was. Having entered his dwelling he began to consume the provisions himself, calling out the Rakshas by his name. Upon this the

पाण्डवोवली । आजुहावततोनाम्ना तदन्नमुपपादयन् ॥ ५ ॥ ततःसराक्षसः क्रुद्धो
भीमस्यवचनात्तदा । आजगामसुसंक्रुद्धो यत्रभीमोऽव्यवस्थितः ॥ ६ ॥ महाकायोमहा
वेगो दारयन्निवमेदिनीम् । लोहिताक्षःकरालश्च लोहितश्मश्रुमूर्द्धजः ॥ ७ ॥ आक-
र्णाच्छिन्नवक्त्रश्च शंकुकर्णोविभीषणः । त्रिशिखांभ्रुकुटिंकृत्वा सन्दश्यरदशच्छदम् ॥
॥ ८ ॥ भुञ्जानमन्नंतद्दृष्ट्वा भीमसेनंसराक्षसः । विवृत्यनयनेक्रुद्ध इदंवचनमब्रवीत् ॥९
कोऽयमन्नमिदंभुङ्क्ते मदर्थमुपकल्पितम् । पश्यतोमम दुर्बुद्धिर्यियासुर्यमसादनम् ।१०
भीमसेनस्ततःश्रुत्वा प्रहसन्निवभारत । राक्षसंतमनादृत्य भुङ्क्तएवपरांमुखः ॥११॥
रवंसभैरवंकृत्वा समुद्यम्यकरावुभौ । अभ्यद्रवद्भीमसेनं जिघांसुःपुरुषादकः ॥ १२॥
तथापिपरिभूयैनं प्रेक्षमाणोवृकोदरः । राक्षसंभुङ्क्तएवान्नं पाण्डवःपरवीरहा ॥ १३॥

के घरमें घुसकर स्वयम् वोह सब भोजनकी सामग्री खातेहुए उसका नाम लेकर पुकार नेलगे इस से बडाभारी और अति तेजस्वी वोहराक्षस भीमकीबातसे क्रोधितहोकर पृथ्वी को फाडताहुआ वहां आपहुँचा जहां भीम बैठाथा।६।उसराक्षसकी आंखें, दाढी और केश लाल, मुँह कानतक फैलाहुआ और कान शंख के समान थे ऐसा विकट भयानक वोह राक्षस भीमसेनको अन्न खाते देखकर दांतों से होठ काटता हुआ माथेमें तीनबल डालकर भौं चढाये हुए बोला कि किसपर यह कुबुद्धि चढी है कि यमराजके घर जाने के लिये मेरे भोजनके लिये मँगायाहुआ अन्न मेरेसामनेही खारहाहै।१०। भीमसेनने यहबात सुन करभी हँसतेहुए राक्षस का अनादर कर मुँह फेककर भोजन को न छोडा और उसकी ओर आंखतक न फेरी तब वोह मांसभोजी भयानक शब्द से दोनों हाथ उठाकर भीम-सेन को मारडालने के लिये दौडा तब शत्रुनाशी भीमसेन अनादर से राक्षस की ओर एकवार देखकर भोजन करने लगे राक्षस ने तब क्रोध से जलकर भीमसेनके पीछे खड़ा

Rakshas got very angry and came to the place where *Bhim* was sitting. The eyes, beard, and hair of the Rakshas were red, mouth open to the ears and ears like conchs. The dreadful *Rakshas* seeing *Bhimsen* eating the food brought for him, began to bite his lips with his teeth and contracting his forehead he said, "Who is this man seeking his own death foolishly by eating before my eyes the food brought for me. *Bhimsen* paid no heed to his words but continued to eat. He laughed at the *Rakshas* and turned his face from him. The cannibal, thereupon, intending to kill *Bhimsen* ran towards him with upraised arms. *Bhimsen* looked scornfully at the *Rakshas* and again continued to eat. The Rakshas struck *Bhimsen* with both hands with all his might. *But* in spite of the pain *Bhimsen* did not turn his eye towards him. The brave *Rakshas* then angrily rooted up a tree and ran to strike *Bhemsen*

अमर्षेणतुसम्पूर्णः कुन्तीपुत्रंवृकोदरम् । जघानपृष्ठे पाणिभ्यामुभाभ्यां पृष्ठतःस्थितः ॥ १४ ॥ तथाबलवताभीमः पाणिभ्यांभृशमाहतः । नैवावलोकयामास राक्षसंभुङ्क्त एवसः ॥ १५ ॥ ततःसभूयःसंक्रुद्धो वृक्षमादायराक्षसः । ताडयिष्यंस्तदाभीमं पुनरभ्यद्रवद्बली ॥ १६ ॥ ततोभीमःशनैर्भुक्त्वा तदन्नंपुरुषर्षभः । वार्य्युपस्पृश्य संहृष्टस्तस्थौ युधिमहाबलः ॥ १७ ॥ क्षिप्तंक्रुद्धेनतंवृक्षं प्रतिजग्राहवीर्यवान् सव्येनपाणिना भीमः प्रहसन्निवभारत ॥ १८ ॥ ततःसपुनरुद्यम्य वृक्षान्बहुविधान्बली । प्राहिणोद्भीमसेनाय तस्मैभीमश्चपाण्डवः ॥ १९ ॥ तद्वृक्षयुद्धमभवन्महीरुहविनाशनम् । घोररूपंमहाराज नरराक्षसराजयोः ॥ २० ॥ नामाविश्राव्यतुवकः समभिद्रुत्य पाण्डवम् भुजाभ्यांपरिजग्राह भीमसेनंमहाबलम् ॥ २१ ॥ भीमसेनोपितद्रक्षः परिरभ्यमहाभुजः । विस्फुरन्तंमहाबाहुं विचकर्षबलाद्बली ॥ २२ ॥ सकृष्यमाणोभीमेन कर्षमाणश्चपांडवम् । समयुज्यततीव्रेण क्रमेनपुरुषादकः ॥२३ ॥ तयोर्वेगेनमहतापृथिवी समकम्पत ।

होकर दोनों मुट्ठियों से भीमसेनकी पीठपर मारा भीमसेन ने उस बली राक्षसके दोनों भुजोंकी चोटसे बहुत कष्ट पाने परभी उसकी ओर आंख नहीं फेरी एकचित से भोजन में लगे रहे ।१५।तब वोह महाबली राक्षस अति क्रोध से अंधे के समानहोकर मारने के लिये वृक्ष उठाकर फिर उनपर दौडा फिर महाबली पुरुषेन्द्र भीमसेन धीरे २ वोह अन्न खाकर मुँहधोकर प्रसन्न चित्तसे युद्धके लिये खडेहुए।१७।क्रोधितहोकर राक्षसने भीमसेन पर उस वृक्ष को फेंका परन्तु वीर्यवन्त भीमसेन ने हँसकर उसीक्षण बायें हाथसे उस को थांभ लिया यह देखकर बलवन्त राक्षस भांति २ के पेडउखाडकर भीमपर फेंकने लगा और भीमभी वृक्ष उठाकर उसपर फेकनेलगे।१९।तब राक्षसकेसाथ मनुष्यका ऐसा भयानक युद्धहोने लगा कि इस से वहां के वृक्ष नष्टहोनेलगे तब मांसभोजी बक ने अपना नाम लेकर कूदतेहुए महाबली भीमसेनके दोनों हाथोंको पकडलिया।२१।तब महाभुज बलवन्त भीमसेन उस महावेगवान राक्षस को पूरा बल प्रकटकरतेहुए देखकर बल से खैंचने लगे राक्षस भीम से खैंचे जाकर उनको बलसे खैंचने लगा इस से मांसभोजीही

like a blind man. The mighty Bhimsen finished his meal with satisfaction and having wiped his mouth stood ready to fight. 17. He smilingly held in his left hand the tree hurled by the Rakshas at him. Seeing this the Rakshas hurled many trees at him. Bhimsen hurled them back at the Rakshas. 19. A furious fight with trees ensued between the man and the Rakshas. The cannibal pronounced his name and jumping towards Bhimsen held both his hands. Bhimsen seeing that the Rakshas was spending his whole energy, began to pull him with his might. Both pulled each other. The cannibal was much tired by this time. By their efforts the ground

पादपांश्चमहाकायां श्चूर्णयामासतुस्तदा ॥ २४ ॥ हीयमानन्तुतद्रक्षः समीक्ष्यपुरुषादकम् । निक्षिप्यभूमौजानुभ्यां समाजघ्नेवृकोदरः ॥ २५ ॥ ततोऽस्यजानुना पृष्ठमवपीड्यवलादिव । वाहुनापरिजग्राह दक्षिणेनशिरोधराम् ॥ २६ ॥ सव्येनचकटीदेशे गृह्यवाससिपाण्डवः । तद्रक्षोद्विगुणंचक्रे रुवन्तंभैरवंरवम् ॥ २७ ॥ ततोऽस्यरुधिरं वक्रात् प्रादुरासीद्विशाम्पते । भज्यमानस्यभीमेन तस्यघोरस्यरक्षसः ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि वकवधपर्वणि वकभीमयुद्धे

चतुःषष्ठ्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १६४ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःसभग्नपार्श्वाङ्गो नादित्वाभैरवंरवम् । शैलराजप्रतीकाशो गतासुरभवद्वकः ॥ १ ॥ तेनशब्देनवित्रस्तो जनस्तस्याथरक्षसः । निष्पपातगृहाद्राजनसहैवपरिचारिभिः ॥ २ ॥ तान्भीतान् विगतज्ञानान् भीमःप्रहरतांवरः । सान्त्व

बहुत थकनेलगा।२३।उन दोनों के वेगसे धरती हिली और निकटके बडेवृक्षटूटे अनन्तर वृकोदर राक्षस को बलखोते देखकर घुटनों से धरतीपर पीसर कर मारने लगे।२५।फिर उसकी पीठपर घुटनों को लगाकर दहनेहाथसे गले को और बायें हाथसे कमरको पकडा और उसको दोटुकडे करडाला तब राक्षस घोरशब्द करने लगा जब भीमसेन ने विकट राक्षस को तोडा तब उसके मुंह से रक्त निकलने लगा ॥ २८ ॥

अध्याय १६५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि महाराज उस बडेभारी पहाड समान राक्षस वक ने देह टूटने पर बड़ा कोलाहलकरतेहुए प्राण छोडा उस के परिवार वाले उस शब्द से भय खाकर नौकर चाकरों सहित घरसे निकलकर भीमसेन के पासआये ।२। मारने में तेज महाबली भीमसेन ने उनको भयभीत और ज्ञान रहित देखकर समझाया और यह कह

shook and the trees were broken. Seeing the Rakshas lose his energy, Bhimsen began to press him with his knees. 25. Having thrown him on the ground he held his neck by the right and the waist by the left hand and broke his body into two pieces. The Rakshas then uttered a loud cry and died with a vomitting of blood. 28.

CHAPTER CLXV

Vaishampayan said that Bak died with a tremendous roar when his body, huge like a mountain, was broken. His kinsmen, alarmed at the cry, came out with servants from their house. 2. The valliant *Bhim*, seeing them frightened out of their senses, told them that they would be destroyed in the same way if they ever took the life of a human being and they promised to obey *Bhim's* orders. From

यामासवलवान् समयेचन्यवेशयत् ॥३॥ नाहिंस्यामानुषाभूयो युष्माभिरितिकर्हिचित्।
हिंसतांहिवधः शीघ्रमेवमेव भवेदिति ॥ ४ ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वा तानिरक्षांसि भारत।
एवमस्त्वितितं माहुर्जगृहुःसमयश्चतम् ॥५ ॥ ततःप्रभृतिरक्षांसि तत्रसौम्यानिभारत।
नगरेप्रत्यदृश्यन्त नरैर्नगरवासिभिः ॥ ६ ॥ ततोभीमस्तमादाय गतासुंपुरुषादकम्।
द्वारदेशेविनिक्षिप्य जगामानुपलक्षितः ॥ ७ ॥ दृष्ट्वाभीमवलोद्भूतं वकंविनिहतंतदा।
ज्ञातयोऽस्यभयोद्विग्नाः प्रतिजग्मुस्ततस्ततः ॥ ८ ॥ ततःसभीमस्तंहत्वागत्वा ब्राह्म-
णवेश्मतत्। आचचक्षेयथावृत्तं राज्ञःसर्वमशेषतः ॥९॥ ततोनराविनिष्क्रान्ता नगरा
त्कल्यमेवतु। ददृशुर्निहतंभूमौ राक्षसंरुधिरोक्षितम् ॥ १० ॥ तमद्रिकूटसदृशं विनि-
कीर्णंभयानकम्। दृष्ट्वासंहृष्टरोमाणो बभूवुस्तत्रनागराः ॥ ११ ॥ एकचक्रांततोगत्वा
प्रवृत्तिंप्रददुःपुरं। ततःसहस्रशो राजन्नरा नगरवासिनः ॥ १२ ॥ तत्राजग्मुर्वकंद्रष्टुं
सस्त्रीवृद्धकुमारकाः। ततस्तेविस्मिताःसर्वे कर्मदृष्ट्वातिमानुषम्। दैवतान्यर्चयांचक्रुः

कर उनसे प्रतिज्ञा कराली कि तुम फिर कभी मनुष्य न मारना यदि मारोगे तो तुम को भी तुरन्त इसीप्रकार नष्ट होना पडेगा।४।राक्षसोंने वृकोदरकी यहवात सुनकर उस नियम को मान लिया। हे भारत! तव से नगरवाले उसनगर में राक्षसों को शान्त स्वभावी देखते थे।६।अनन्तर भीमसेन उस मरेहुए राक्षस को लेकर नगर के द्वार पर डालकर लोगों के विन देखे चलेआये राक्षस वककी जातिवाले भीमसेनसे बल पूर्वक उसको मारेजाते देखकर भय से चित्तको मलिनकर इधर उधरभागे।८।भीमसेनने उस राक्षस राजको मारकर ब्राह्मण के घरमें जाकर आद्योपांत सम्पूर्ण वृत्तांत कह सुनाया। अनन्तर प्रातःकाल में नगरवासियों ने नगर से निकलतेही पर्वतकी चोटी की समान वडेभारी राक्षस वक को रक्त से नहाया और मराहुआ पडा देखकर रोमांचित हुए।११। और एक चक्रा नगर में जाकर वोह समाचार सुनाया हे राजन्! तव सहस्रों नगर वाले राक्षस वक को देखने के लिये एकत्रित हुए उन सब ने वोह अलौकिक कार्य देखकर आश्चर्य किया और सब लोग देवताओं की उपासना

that time the citizens had no cause of fear from them. 6. *Bhimsen* then dragged the corpse to the city gate and entered the city unseen. The kinsmen of the demon ran away in terror and dispersed. Having slain the demon, *Bhim* entered the Brahman's house and told all that had happened. At break of day, the citizens, coming out of the city gate, saw the huge *Rakshas*, big like a mountain lying blood stained and slain. 11. They published the happy news in the city. Thousands of citizens gathered to see the Rakshas. They wondered at the extraordinary deed and began to praise the gods. They then inquired amongst themselves as to

सर्वएवविशाम्पते ॥ १३ ॥ ततःप्रगणयामासुः कस्यवारोऽद्यभोजने। ज्ञात्वाचागम्य तंविप्रं पप्रच्छुःसर्वएवते ॥ १४ ॥ एवंपृष्टःसबहुशो रक्षमाणश्चपाण्डवान् । उवाचनागरान्सर्वा निदंविप्रर्षभस्तदा ॥ १५ ॥ आज्ञापितंमामशने रुदन्तंसहबन्धुभिः । ददर्शब्राह्मणः कश्चिन्मन्त्रसिद्धोमहामनाः ॥१६॥ परिपृच्छ्यचासमांपूर्वं परिक्लेशंपुरस्यच। अब्रवीद्ब्राह्मणश्रेष्ठो विश्वास्यप्रहसन्निव॥१७॥ मापयिष्याम्यहंतस्मा अन्नमेतद्दुरात्मने । मन्निमित्तंभयंचापि नकार्य्यमितिचाब्रवीत् ॥ १८ ॥ सतदन्नमुपादाय गतोवकवनंप्रति । तेननूनंभवेदेतत्कर्म लोकहितंकृतम् ॥ १९ ॥ ततस्तेब्राह्मणाःसर्वे क्षत्रियाश्चसुविस्मिताः । वैश्याःशूद्राश्चमुदिताश्चक्रुर्ब्रह्ममहं तदा ॥ २० ॥ ततोजानपदाःसर्वे आजग्मुर्न्नगरंप्रति। तदद्भुततमंदृष्ट्वा पार्थास्तत्रैवचावसन् ॥ २१ ॥

इत्यादिपर्वणि वकवधपर्वणि वकवधे पञ्चषष्ठ्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १६६ ॥
समाप्तश्च वकवधपर्व ॥ अथ चैत्ररथ पर्व ॥

करने लगे फिर वोह यह पूंछने लगे कि आज राक्षसको भोजन देनेकी किसकी बारीथी अन्तमें सब ठीक जानकर उस ब्राह्मण के पासजाकर विशेष समाचार पूंछा।१४।सम्पूर्ण नगर वालों के ब्राह्मण से बार २ पूंछने पर विप्रेंद्र ने पांडवों को छिपाने के लिये कहा कि मैं राक्षस को भोजन देने की आज्ञा पाकर वन्धुओं सहित रो रहा था उस समय एक मंत्र में सिद्ध महात्मा ब्राह्मणने मुझको उसदशा में देखकर पूंछा।१६।और इसनगर के घोर क्लेश के वृत्तान्त से ज्ञात होकर ढाढस देकर हँसते हुए मुझ से कहा कि मैं उस दुरात्मा के निकट यह अन्न लेजाऊंगा मेरे लिये कुछ भय न करना।१८।यह कहकर वोह अन्न लेकर राक्षस वक के वन में गये इस में सन्देह नहीं है कि उन्होंने ही लोगों के हित के निमित्त यह काम किया होगा यह सुनकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र सबने अचरजमान और ब्रह्म महोत्सव किया । नगर वाले उस आश्चर्य लीला का वृत्तांत जानकर नगर को लौटगये और पांडवलोग वहीं बसे रहे ॥२१॥

whose turn it was to carry provisions to the *Rakshas* and having ascertained the fact they came to the brahman's house to know all about it.14.But to conceal the names of the Pandavas he said, "I was bewailing my unhappy lot when a great *Brahman* came to me and on learning the cause of my distress he smilingly offered to carry the provision to the *Rakshas* without danger to himself.18.I think he has killed the demon for the good of the people." Having heard this the people were satisfied and gave out entertainments in honour of the *Brahman*. The citizens returned to their respective houses and the Pandavas remained there.21.

जनमेजय उवाच तेतथापुरुषव्याघ्रा निहत्यबकराक्षसम् । अतऊर्ध्वंततोब्रह्मन किमकुर्वत पाण्डवाः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच॥तत्रैवन्यवसन् राजन्निहत्य वकराक्षसम् । अधीयानाःपरंब्रह्म ब्राह्मणस्य निवेशने ॥ २ ॥ ततःकतिपयाहस्य ब्राह्मणःशंसितव्रतः । प्रतिश्रयार्थीतद्वेश्म ब्राह्मणस्याजगामह ॥ ३ ॥ ससम्यक्पूजयित्वातं विप्रं विप्रर्षभस्तदा । ददौप्रतिश्रयंतस्मै सदासर्वातिथिव्रतः ॥ ४ ॥ ततस्तेपांडवाःसर्वेसह कुन्त्यानरर्षभाः । उपासाञ्चक्रिरेविप्रं कथयन्तंकथाःशुभाः ॥५॥ कथयामासदेशांश्च तीर्थानिसरितस्तथा । राज्ञश्चविविधाश्चर्यान्देशांश्चैव पुराणि च ॥ ६ ॥ सतत्राकथयद्विप्रः कथान्तेजनमेजय । पंचालेष्वद्भुताकारं याज्ञसेन्याः स्वयम्वरम् ॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नस्य चोत्पत्तिमुत्पत्तिञ्च शिखण्डिनः । अयोनिजत्वंकृष्णाया द्रुपदस्यमहामखे॥ ८॥

अध्याय ॥ १६६ ॥

जनमेजय ने कहा कि हे ब्राह्मण मैं सुना चाहता हूं कि पुरुष सिंह पांडवों ने राक्षस वकके मारने के पीछे क्या किया । वैशम्पायनने कहा कि हे राजन् ! पांडव गण राक्षस वकको मार कर उस ब्राह्मणके घर में रहकर वेद पढ़ाकरते थे।२। कुछ दिन पीछे एक व्रत शील ब्राह्मण वसने के लिये उस ब्राह्मण के घर आये नित्य अतिथियोंकी सेवा करने वाले ब्राह्मणने उसब्राह्मणकी भलीभाँति पूजाकर वसनेको घरदिया।४। वोह अभ्यागत द्विज वहां टिककर वातों में भाँति २ की अच्छी कथाएं कहने लगा नरश्रेष्ठ पांडव गण और कुंती ने वोह सब कथायें सुनने के अभिलाषी होकर उसका आदर किया वोह भांति २ के आश्चर्य नगर तीर्थ, सरोवर, देश और राजों के वृत्तांत और नानानगरोंकी कथा सुनाने लगा।६।हेजनमेजय उस ब्राह्मण ने कथा पूरी होने पर पांचाल देशमें याज्ञसेनी के अलौकिक स्वयम्वर में धृष्टद्युम्न तथा शिखंडी का जन्म और राजा द्रुपद के महायज्ञ में कृष्णाकी उत्पत्ति इन सब वार्तोंका वर्णन किया ।८। पुरुश्रेष्ठ पांडवगणने ब्राह्मणसे उन महात्माओं

CHAPTER CLXVI

Janmejaya said, "I wish to know, O *Brahman*, all that the Pandavs, the lions among men, did after killing the Rakshas." Vaishampayan replied that the Pandavas were engaged there in the study of the Vedas. A few days after, a vow-observing brahman came to live there. The brahman, who was a perpetual entertainer of guests received him with great respect and gave him a house to live in. The new comer used to tell many stories, in the course of his conversation. The Pandavas and Kunti, desirous of hearing his stories, went to him. He gave them an account of wonderful countries, cities, rivers, lakes and kingdoms. 6. At the end of his story he informed them of the election of a bride groom, in a strange manner, by Yagyaseni, the births of Dhrishtdyumn and Shikhandi and the birth of

तदद्भुततमंश्रुत्वालोके तस्यमहात्मनः । विस्तरेणैवपप्रच्छुः कथान्तेपुरुषर्षभाः ॥ ९ ॥ पाण्डवा ऊचुः । कथं द्रुपदपुत्रस्य धृष्टद्युम्नस्यपावकात् । वेदीमध्याचकृष्णायाःसम्भवः कथमद्भुतः ॥ १० ॥ कथंद्रोणान् महेष्वासात् सर्वाण्यस्त्राण्यशिक्षत । कथंविप्रसखायौ तौभिन्नौकस्यकृतेनवा ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंतैश्चोदितोराजन् साविप्रः पुरुषर्षभैः । कथयामासतत्सर्वं द्रौपदीसम्भवंतदा ॥ १२ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि द्रौपदीसम्भवेषष्ठ

षष्ट्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १६६ ॥

ब्राह्मण उवाच । गङ्गाद्वारंप्रति महान्बभूवर्षिर्महातपाः । भरद्वाजोमहाप्राज्ञः सततं शंसितव्रतः ॥ १ ॥ सोऽभिषेक्तुंगतोगङ्गां पूर्वमेवागतांसतीम् । ददर्शाप्सरसंतत्र घृताचीमाप्लुतामृषिः ॥ २ ॥ तस्यावायुर्नदीतीरे वसनंव्यहरत्तदा । अपकृष्टाम्बरांदृष्ट्वा

की अलौकिक लीलाओं को सुनकर कथा अंतहोनेपर सबको प्रसस्तरूपसे सुननाचाहा। ९। और कहा कि हे मित्र ! अग्नि से क्योंकर द्रुपद कुमार धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई क्यों कर वेदीमें से कृष्णाका अद्भुत जन्म हुआ धृष्टद्युम्नने बड़े चापधारी आचार्य द्रोण से सब अस्त्रोंकी शिक्षा कैसे पाई और राजा द्रुपद से द्रोणकी मित्रता कैसे टूटी। वैशम्पायन ने कहा कि हे राजन् ! पुरुषों में प्रधान पांडवों से यह बात सुनकर वोह ब्राह्मण द्रौपदी की जन्म कथा कहने लगा ॥ १२ ॥

अध्याय ॥ १६७ ॥

ब्राह्मणने कहा कि गंगाद्वार के निकट भारद्वाज नामक सदा व्रतशील महाप्राज्ञ, महा तपस्वी एक महर्षि थे एक समय उन्हों ने गंगा नहानेको जाकर देखा कि उन के आनेसे पहिले घृताची अप्सरा आकर नदीतटपर खड़ीहै।२।उस समय पवन से उसका वस्त्र उड़ने पर ऋषि उसको नंगी देखकर उसी क्षण काम के वश में होगये कौमार दशा

Krishna at the great sacrifice of king Drupad. The Pandavas desiring to learn in detail the wonderful incidents put the following questions to him, saying, "How was Dhrishtdyumn born? How did Krishna come out of the sacrificial fire? How did Dhrishtdyumn the mighty archer learn the use of weapons from Dronacharya? And, how was Drona's friendship with Drupad broken?" Vaishampayan said that having heard this from the Pandavas he gave the following description of the birth of Draupadi. 12.

CHAPTER CLXVII

The *Brahman* said that near the bank of the Ganges, there lived a great *Rishi*, vow observing, wise and ascetic, named *Bharadwaj*. One day, going to bathe in the Ganges, he saw Ghritachi the apsara standing at the bank. Her dress being raised by air, she was seen

ताम्रुषिश्चकमेतदा ॥ ३ ॥ तस्यांसंसक्तमनसः कौमारब्रह्मचारिणः । चिरस्यरेतश्चस्कन्द तदृषिर्द्रोणआदधे ॥ ४ ॥ ततःसमभवद्द्रोणः कुमारस्तस्यधीमतः । अध्यगीष्टसवेदांश्च वेदाङ्गानिचसर्वशः ॥५॥ भरद्वाजस्यतुसखा पृषतोनामपार्थिवः । तस्यापिद्रुपदोनाम तदासमभवत्सुतः ॥ ६ ॥ सनित्यमाश्रमं गत्वाद्रोणेन सहपार्षतः । चिक्रीडाध्ययनं चैवचकारक्षत्रियर्षभः ॥ ७ ॥ ततस्तुपृषतेऽतीते सराजाद्रुपदोऽभवत् । द्रोणोऽपिरामं शुश्रावदित्सन्तंवसुसर्वशः ॥ ८ ॥ वनन्तुप्रस्थितंरामं भरद्वाजसुतोऽब्रवीत् । आगतं वित्तकामंमांविद्धि द्रोणंद्विजोत्तम ॥ ९ ॥ रामउवाच । शरीरमात्रमेवाद्य मयासमवशेषितम् । अस्त्राणिवाशरीरं वाब्रह्मन्नेकतमंवृणु ॥ १० ॥ द्रोण उवाच । अस्त्राणि चैव सर्वाणि तेषांसंहारमेवच । प्रयोगश्चैव सर्वेषांदातुमर्हतिमे भवान् ॥ ११ ॥

से ब्रह्मचारी उस महर्षि का चित्त घृताची पर चलतेही उन का सदा का रक्षाकियाहुआ वीर्य गिरगया उन्होंने उसको उसीक्षण द्रोणनामक पात्रमें रखलिया इसप्रकार उसधीमान् ऋषिसे द्रोणनामक कुमारने जन्म लिया वोहकुमार सम्पूर्ण वेद और वेदांगको पढनेलगा।५। इससमय पृषत् नामक राजा भरद्वाजका मित्रथा उसका पुत्र द्रुपदहुआ वोह क्षत्रिय, पृषत्पुत्र द्रुपद नित्य भरद्वाजके आश्रममें जाकर द्रोणके साथ खेलता और पढ़ताथा,फिर राजा पृषत्के स्वर्गको सिधारनेपर द्रुपद राजाहुआ द्रोणने सुना कि परशुरामजी अपना सब धन दान कर रहे हैं फिर जब राम सब कुछ देकर वनमें जाने को उद्यत हुए तब भरद्वाज पुत्रने वहांजाकर कहा कि हेद्विजोत्तम मेरानाम द्रोणहै मैं धनकी अभिलाषासे आपके पास आयाहूं रामने कहा कि हेब्रह्मन्! मैं सब कुछ दान करचुकाहूं अबमेरा शरीर और अस्त्र ही शेषहै अतएव चाहै मेरे अस्त्र वा शरीर इन दोनोंमें से एक की प्रार्थना करो द्रोणने कहा कि आप प्रयोग और उपसंहार के साथ सम्पूर्ण अस्त्र मुझको देदें ।११। अनन्तर भृगुनन्दन

naked by the Rishi, who was at once smitten with desire. Celibate from his early days the rishi's long protected semen dropped down as soon as his heart inclined towards *Ghritachi*. He put it at once in a vessel called Drona. From this the boy Drona was born and he began to study the Vedas and the branches. In those days, king Prishat had friendship with *Bharadwaj*. His son was named Drupad who came every day to the hermitage to read and play with Drona. Durpad became king after his father's death. Drona heard that Parashuram was giving away all his wealth. When he had given away his all, Drona reached there and said, "My name is Drona. I have come, O best of Brahmans, for wealth." *Ram* replied. "I have give away all. My body and the weapons are the only things left. Choose one of the two." Drona said, "Give me all your weapons with the method of using them." *Ram* gave him up all the weapons and Drona con-

ब्राह्मण उवाच । तथेत्युक्त्वाततस्तस्मै प्रददौभृगुनन्दनः । प्रतिगृह्यतदाद्रोणः कृतकृत्यो
ऽभवत्तदा॥१२॥संप्रहृष्टमनाद्रोणो रामात्परमसम्मतम् । ब्रह्मास्त्रंसमनुप्राप्य नरेष्व
भ्यधिकोऽभवत् ॥ १३ ॥ ततोद्रुपदमासाद्य भारद्वाजःप्रतापवान । अब्रवीत्पुरुषव्या
घ्रःसखायं विद्धिमामिति ॥ १४ ॥ द्रुपद उवाच । नाश्रोत्रियःश्रोत्रियस्य नारथी
रथिनःसखा । नाराजापार्थिवस्यापि सखिपूर्वंकिमिष्यते ॥ १५ ॥ ब्राह्मण उवाच ।
सविनिश्चित्यमनसा पांचाल्यंप्रतिबुद्धिमान् । जगामकुरुमुख्यानां नगरंनागसाह्वयम्
॥ १६ ॥ तस्मैपौत्रान्समादाय वसूनिविविधानिच । प्राप्तायप्रददौभीष्मः शिष्यान्
द्रोणायधीमते ॥ १७ ॥ द्रोणः शिष्यांस्ततः पार्थानिदंवचनमब्रवीत् । समानीयतुतान्
शिष्यान्द्रुपदस्यासुखायवै ॥१८॥ आचार्यवेतनं किंचिद्धृदि यद्वर्त्ततेमम । कृतास्त्रै-
स्तत्प्रदेयं स्यात्तद्वतंवदतानघाः । सोऽर्जुनप्रमुखैरुक्तस्तथास्त्विति गुरुस्तदा ॥ १९ ॥

ने तथास्तु कहकर उनको सब अस्त्र देदिये । द्रोणने उनको लेकर अपने को कृतार्थ
समझा।१२।वह रामसे परमसम्मत ब्रह्मास्त्र पाकर और सब अस्त्रों के पानेसे अधिकप्रसन्न
हुए अनन्तर प्रतापी पुरुषेन्द्र भरद्वाज नन्दनने द्रुपदके पास आकरकहा।१४।कि मैं तुम्हारा
मित्र हूं द्रुपद ने उत्तर दिया कि जो श्रोत्रिय नहीं है वोह कभी श्रोत्रिय का मित्र नहीं हो-
सक्ता जो रथी नहीं है वोह कभी रथी का मित्र नहीं होसक्ता और जो स्वयम् राजा नहीं
है वोह कभी राजा का मित्र नहीं होसक्ता । अतएव तुम क्यों मुझको मित्र कहतेहो द्रोण
ने पांचाल राजकी यह बात सुनकर मनही मनमें बदलालेनेका निश्चय किया और कौरवों
के हास्तिनपुर नामक नगर को गये । अनन्तर भीष्म ने उन आये हुए द्रोणका शिष्य
पौत्रों को बनाया और नानाधन देकर उनका आदर किया अनन्तर द्रोण ने द्रुपदकी
हानि के लिये शिष्य पांडवों को बुलाकरकहा कि हेनिष्पाप राजकुमारो।१८।सत्यकर बोलो
कि तुम्हारे अस्त्रविद्या में पंडितहोनेपर तुम वो गुरु दक्षिणा दोगे कि जिसके लिये मैंने

sidered himself fortunate on receiving them. He was overjoyed by his possession of the Brahmastra above all other weapons. The glorious son of Bharadwaj then came to Drupad and said, "I am your friend." Drupad replied, "A scholar of the Vedas cannot contract friendship with one who is not so; a chariotless man cannot be the friend of a charioteer; likewise, one who is not a king can not be the friend of a king. Why do you call me a friend?" At these words of the king, Drona, intending to revenge himself on Drupad, went to Hasthinapur the city of the Kauravas. Bhishma intrusted to him the training of his grand children and gave him great wealth. Drona, intending to harm Drupad, called his disciples together and said, "Princes, promise to give me the thing which I have set my mind on, at the completion of your learning.

यदाचपांडवाःसर्वे कृतास्त्राःकृतनिश्चयाः। ततोद्रोणोऽब्रवीद्भूयो वेतनार्थमिदंवचः २०॥
पार्षतोद्रुपदोनाम छत्रवत्यांनरेश्वरः। तस्मादाकृष्यतद्राज्यं ममशीघ्रंप्रदीयताम् ॥ २१॥
ततःपाण्डुसुताःपञ्च निर्जित्यद्रुपदंयुधि । द्रोणायदर्शयामासुर्बद्धा ससचिवंतदा
॥ २२ ॥ द्रोण उवाच। प्रार्थयामित्वयासख्यं पुनरेवनराधिप। अराजाकिलनोराज्ञः
सखाभवितुमर्हति ॥ २३ ॥ अतःप्रयतितंराज्ये यज्ञसेनत्वयासह। राजासिदक्षिणेकूले
भागीरथ्याहमुत्तरे ॥ २४ ॥ ब्राह्मण उवाच । एवमुक्तोहिपाञ्चाल्यो भारद्वाजेन
धीमता। उवाचास्त्रविदांश्रेष्ठो द्रोणंब्राह्मणसत्तमम् ॥ २५ ॥ एवंभवतुभद्रन्ते भारद्वाज
महामते। सख्यंतदेवभ तु शश्वद्यदभिमन्यसे ॥ २६ ॥ एवमन्योन्यमुक्त्वातौ कृत्वा
सख्यमनुत्तमम्। जग्मतुर्द्रोणपाञ्चाल्यौ यथागतमरिन्दमौ ॥ २७ ॥ असत्कारःसतु

मन में निश्चय किया है उसको अर्जुन आदि शिष्यों ने तथास्तु कहकर मान लिया। जब प्रण किये हुए पांडवों ने अस्त्र विद्या को भलीभांति सीखलिया तब आचार्य द्रोण ने उन से गुरु दक्षिणा के लिये यह कहा।२०। कि द्रुपद नामक राजा पृषत् के पुत्र अहिच्छत्र के अधीश से शीघ्र उसका राज्य छीन कर मुझको देदो अनन्तर पांडवों ने द्रुपदको युद्ध में परास्त कर के मंत्रियों सहित बांधकर द्रोण की भेट किया।२२। तब द्रोणने द्रुपद से कहा कि हे नरनाथ ! मैं फिर तुम से मित्रता चाहता हूं पर इस समय मैं राजा हूं तुम राजा नहीं हो राजा न होने से राजाकी मित्रता नहीं होसक्ती इस लिये तुम्हारे साथ एकत्रित राज्यकरने में यह निश्चय किया है कि तुम भागीरथी के दक्षिण देशके राजा होओ और मैं उत्तर देशका राजारहूं।२४। ब्राह्मणने कहाकि तब पांचालराज ने अस्त्र विद्या में पंडित द्विजवर धीमान् द्रोणकी यह बातसुनकर कहा कि हे महामति भारद्वाज तुम्हारा मंगलहोवे तुम ने जैसा समझ लियाहै वहीहो मेरेसाथ तुम्हारी मित्रता बनी रहे।२६। शत्रु-नाशी द्रोण और राजापांचाल एक दूसरेसे ऐसा कहकर अनुत्तम मित्रता निश्चय कर

the use of weapons." Arjun and others consented to it. When they had learnt well the art of war, the preceptor Drona demanded of them his fee and said, "Take by force of arms the kingdom of Drupad the son of Prishat and king of Ahichatra, and give it to me." The Pandavas brought king Drupad and his ministers prisoner and presented them to Drona.22."I court your friendship again." said Drona to Drupad, "At this time I am a king and you are none. One not a king can not be friend of a king. I have, therefore, resolved to rule the kingdom jointly with you. I shall rule the country North of the Ganges and you South." The king of Panchal heard this from the great warrior Drona and said, "May you be happy, *Bharadwaj*. Let it be as you have proposed. Let us be friends for ever."26. Drona the destroyer of enemies and the king of Panchal,

महान्मुहूर्त्तमपितस्यतु । नापैतिहृदयाद्राज्ञो दुर्मनाःसकृशोऽभवत् ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि द्रौपदीसम्भवे

सप्तषष्ठ्याधिकशतोऽध्यायः ॥ १६७ ॥

ब्राह्मण उवाच । अमर्षीद्रुपदोराजा कर्मसिद्धान्द्विजर्षभान् । अन्विच्छन्परिचक्राम ब्राह्मणावसथान्बहून् ॥ १ ॥ पुत्रजन्मपरीप्सन्वै शोकोपहतचेतनः । नास्ति श्रेष्ठमपत्यंमे इतिनित्यमचिन्तयत् ॥ २ ॥ जातानपुत्रान्स निर्वेदाद्धिग्बन्धूनिति चाब्रवीत् । निःश्वासपरमश्चासीद्द्रोणं प्रतिचिकीर्षया ॥ ३ ॥ प्रभावंविनयंशिक्षां द्रोणस्य चरितानिच । क्षात्रेणचबलेनास्य चिन्तयन्नाध्यगच्छत ॥ ४ ॥ प्रतिकर्त्तुंनृपश्रेष्ठो यतमानोऽपिभारत । अभितःसोऽथकल्माषीं गङ्गाकूलेपरिभ्रमन् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणावसथंपुण्यमाससाद महीपतिः । तत्रनास्नातकःकश्चिन्न चासीदव्रतीद्विजः ॥ ६ ॥ तथैव

निज २ स्थानको चले गये पर राजाद्रुपद के मन से वह बड़ा अपमान क्षणभरके लिये दूर नहीं हुआ वह उसके सोचमें अति दुःखी और दुबले होने लगे । २८ ।

अध्याय ॥ १६८ ॥

ब्राह्मण ने कहा कि राजाद्रुपद दुःख और शोकसे विकलहोकर योग्य पुत्र पानेकी अभिलाषा से कर्म में सिद्ध अच्छे ब्राह्मणोंको ढूंढतेहुए एक आश्रम से दूसरे में जाने लगे यह चिन्ता कि मेरे अच्छी सन्तान नहीं है उनके हृदय में सदा रहती थी।२। वोह अपने अनादर के कारण अपने पुत्रों और मित्रों को धिक्कार करतेहुए द्रोणका बदला लेने के लिये सदा लम्बी सांस छोडा करते थे वोह बदला लेनेको चाहने परभी सोचकर निश्चय नहीं करसके कि क्षत्रिय बलसे क्योंकर द्रोण के प्रभाव, नम्रता, शिक्षा और चरित्र से बढसक्ते हैं ।४। अनन्तर गंगाके किनारे घूमते हुए कल्माषपाद राजाकी पुरी के निकट ब्राह्मणों के पास जापहुँचे वहां के सब ब्राह्मण स्नातक, व्रतशील और महाभाग थे।६। उन

having thus contracted friendship with each other, separated. But Drupad did not, for a moment, frogive Drona. He began to be lean with grief.28.

CHAPTER CLXVIII

The *Brahman* said that king Drupad dismayed with grief began to wander from one hermitage to another in search for a good a *Brahman* who should help him in getting a worthy offspring. Being insulted himself, he always heaved long sighs and losing all regard for his sons and ministers he thought only of revenge on Drona. He could not make up his mind as to how to excel Drona in glory, humility, training and deeds by his Kshatrya strength.4. At length wandering in the territories of king Kalmashpad, by the bank of the Ganges, he reached a holy place where Brahmans were

चरणशाभागः सोऽपश्यत्संसितव्रतौ । याजोपयाजौब्रह्मर्षी शाम्यन्तौपरमेष्ठिनौ ॥ ७ ॥
संहिताध्ययनेयुक्तौ गोत्रतश्चापिकाश्यपौ । तारणेयौयुक्तरूपौ ब्राह्मणावृषिसत्तमौ ॥ ८ ॥
सतावामन्त्रयामास सर्वकामैरतन्द्रितः । बुद्ध्वाबलंतयोस्तत्र कनीयांसमुपह्वरे ॥ ९ ॥
प्रपेदेच्छन्दयन् कामैरुपयाजंधृतव्रतम् । पादशुश्रूषणेयुक्तः प्रियवाक्सर्वकामदः ॥ १०
अर्चयित्वा यथान्यायमुपयाजमुवाचसः । येनमेकर्मणाब्रह्मन् पुत्रःस्याद्द्रोणमृत्यवे ।
उपयाजकृतेतस्मिन् गवांदातास्मितेऽर्बुदम ॥ ११ ॥ यद्वातेऽन्यद्द्विजश्रेष्ठ मनसःसुप्रि-
यंभवेत् । सर्वंतत्तेप्रदाताहं नहिमेऽत्रास्तिसंशयः ॥ १२ ॥ इत्युक्तोनाहिमित्येवं नमृ-
षिःप्रत्यभाषत । आराधयिष्यन्द्रुपदः सतंपर्य्यचरन्पुनः ॥ १३ ॥ ततःसम्वत्सर-
स्यान्तेद्रुपदं सद्विजोत्तमः । उपयाजोऽब्रवीत्काले राजन्मधुरयागिरा ॥ १४ ॥ ज्येष्ठो

में याज और उपयाज नामक, व्रतशील, शमगुणी, ब्रह्म प्रेमी, संहिता पाठ में नियुक्त काश्यप गोत्रवाले ऋषियों में श्रेष्ठ दो ब्रह्म ऋषियों को देखकर उनको इच्छा नुरूप कार्य पूरा करने के योग्य समझा फिर वोह आलस्य को छोडकर सम्पूर्ण कामनाओं से उनकी उपासना करने लगे ९। अनन्तर उन दोनों को शक्तिमान जानकर एकान्तमें उनकी शरणली और सम्पूर्ण कामकी वस्तुओं का लोभ दिखा पांवदाब मीठी बातकह अभिलाषापूरी करने आदि उपायोंसे उस व्रतशील उपयाज को प्रसन्नकरनेलगे। १०। एक समय द्रुपद ने विधि पूर्वक उपयाजकी पूजा कर कहा कि हे ब्रह्मन् ! यदि आप यह कर्म करें कि जिस से मेरेद्रोणनाशी पुत्र का जन्महो तो मैं आपको एक अर्बुद गौ दूंगा । हे द्विज श्रेष्ठ यदि आपको और वस्तुकी अभिलाषाहो तो इस में संदेह नहीं है कि उसेभी पूरा करदूंगा। १२। ऋषिने कहा कि मैं यह काम नहीं करसकूंगा द्रुपद इसपरभी उस ऋषिकी उपासनाके लिये फिर सेवा करनेलगा अनन्तर एक वर्ष बीतने पर द्विजोत्तम उपयाजने राजाद्रुपद से मीठी बातोंमें कहा। १४। कि एकसमय मेरेबडे भाई ने घने वन में चलतेहुए

living. All the residents of that place were holy, vow observing and fortunate. Seeing amongst them two Brahmans of the family of Kashyap, named Yaj and Upyaj, the best of Brahmarshis, he was certain of his success through them. He began to please them with diligence. 10. At length finding the younger one the abler of the two, he sought his protection. He tried to please Upyaj by good words, attendance and promises. Durpad, one day, said to Upyaj, "I shall give you a million of cows, if you help me in getting a son that should destroy Drona and shall give you any thing you desire over and above them." 12. The Rishi replied, "I shall not be able to do this thing." In spite of this reply Drupad continued to attend upon him. After a year Upyaj was pleased to say to the king, "My elder brother, once, picked up a fruit from a place which

भ्रातामामागृह्णाद्विचरन् गहनेवने । अपरिज्ञानशौचायां भूमौनिपतितंफलम् ॥ १५ ॥
तदपश्यमहं भ्रातुरसाम्प्रतमनुव्रजन् । विमर्पंसंकरादाने नायंकुर्य्यात्कदाचन ॥ १६ ॥
दृष्ट्वाफलस्य नापश्यद्दोषान् पापानुबन्धकान् । विविनक्तिनशौचंयः सोऽन्यत्रापिक-
थंभवेत् ॥ १७ ॥ संहिताध्ययनंकुर्वन् वसन्गुरुकुलेचयः । भैक्ष्यमुत्सृष्टमन्येषां भुङ्
क्तेस्मचयदातदा ॥ १८ ॥ कीर्त्तयन्गुणमन्नानामघृणीच पुनःपुनः । तंवैफलार्थिनं
मन्ये भ्रातरंतर्कचक्षुषा ॥ १९ ॥ तंवैगच्छस्वनृपतसत्वां संयाजयिष्यति । जुगुप्स-
मानोनृपतिर्मनसेदं विचिन्तयन् ॥ २० ॥ उपयाजवचःश्रुत्वा याजस्याश्रममभ्यगात्
अभिसम्पूज्यपूजार्हमथ याजमुवाचह ॥ २१ ॥ अयुतानिददाम्यष्टौ गवांयाजयमां

ऐसे स्थान से गिराहुआ फल उठा लिया जिसको वोह नहीं जानते थे कि पवित्र है या नहीं मैंने पीछे आतेहुए इस अयोग्य कामको देखा । हे राजन् ! उन्हों ने उसदोष युक्त वस्तु के लेने में कोई विचार नहीं किया उस फलको देखतेही उसके पापयुक्त दोषकी समझ उनकी बुद्धि में एकबारभी नहीं आई ।१६।अतएव जिन्हों ने एकस्थान में शौचका विचार नहीं किया वोह अन्य स्थान में क्योंकर दोष दर्शी होसक्तेहैं अर्थात् वोह तुम्हारे अभीष्ट विषय में दोष नहीं देखपावेंगे जब वोह गुरुकुलमें रहकर संहिता पढतेथे तब बहुधा औरोंकी जूठी वस्तुभी खालेतेथे इसमें उनको घृणा नहींथी।१८।वोह सदा अन्नही का गुण गायाकरते थे उनके इसप्रकार कामोंको देखनेसे मैं तर्करूपी आंखों से उनको फलार्थी समझरहाहूं हेमहाराज तुम उनकेपास जाओ वोह तुम्हारे याजनकार्यकरनेमेंसम्मत होंगे राजाद्रुपद याजके चरित्रको सुन निन्दाकरनेकी इच्छाहोनेपरभी मनही मन में अपने कार्य के शोचमें उपयाज के कहनेपर उनके आश्रम को गये वहां पहुँचकर पूजनीय याजको पूज कर सब प्रकार कहा कि हे विभो मैं आपको अस्सी सहस्र गौदान करूंगा

he did not know whether it was clean or not. I was coming behind and so I could see him do this improper deed. 16 He did not hesitate in taking the objectionable thing without ever thinking of the impropriety of the deed. For this reason, he who did not think of purity once, may not think of it on another occasion. I mean that he will not be able to find out the flaw in your case. When he was reading the Vedas in the house of his preceptor he often used to eat things left by others without disgust. 18. He always used to praise the food. By these signs I infer that you will succeed with him. Go to him. He will perform your work," King Drupad in spite of the disgust which he felt on hearing the deeds of Yaj, thought of his own business and went to his hermitage. On reaching there he paid his respect to Yaj and said, "I shall give you eighty thousands of cows as fee for the intendend sacrifice.

विभो । द्रोणवैराभिसन्तप्तं प्रह्लादयितुमर्हसि ॥ २२ ॥ सहिब्रह्मविदांश्रेष्ठो ब्रह्मास्त्रे
चाप्यनुत्तमः । तस्मात्द्रोणःपराजैष्ट मांवैससखिविग्रहे ॥ २३ ॥ क्षत्रियोनास्तितस्या
स्यां पृथिव्यांकश्चिदग्रणीः । कौरवाचार्य्यमुख्यस्य भारद्वाजस्यधीमतः ॥२४ ॥ द्रोण
स्यशरजालानि प्राणिदेहहराणिच । षडरत्निधनुश्चास्य दृश्यतेपरमंमहत् ॥ २५ ॥
सहिब्राह्मणवेषेण क्षात्रंवगमसंशयम् । प्रतिहन्तिमहेष्वासो भारद्वाजोमहामनाः ॥२६
क्षत्रोच्छेदायविहितो जामदग्न्यइवास्थितः । तस्यह्यस्त्रबलं घोरमप्रधृष्यंनरैर्भुवि ।२७।
ब्राह्मंमन्धारयंस्तेजो हुताहुतिरिवानलः । समेत्यसदहत्याजौ क्षात्रधर्मपुरःसरः ॥२८॥
ब्रह्मक्षत्रचविहिते ब्राह्मंतेजोविशिष्यते । सोहंक्षात्राद्बलाद्धीनो ब्राह्मंतेजःप्रपेदिवान
॥ २९ ॥ द्रोणाद्विशिष्टमासाद्य भवन्तंब्रह्मवित्तमम् । द्रोणान्तकमहंपुत्रं लभेयंयुधि

आप मेरा याजन कार्य करें मैं द्रोण की शत्रुता रूपी आगसे जल रहाहूं आप कृपारूपी जलसे सींचकर मुझको शीतलकरें।२२। द्रोण ब्रह्मविद्या और ब्रह्मास्त्र दोनों में दक्षहै इस लिये मित्रताकी लड़ाई में मुझको परास्त किया है वोह बुद्धिमान कौरवों का प्रधान आचार्य है।२४। इसभूमंडल में कोई क्षत्रिय उन से श्रेष्ठ नहीं है उनका धनुष बहुत बड़ाहै उनका वाणजाल सर्व जीवों को नाश करसक्ता है इस में संदेह नहीं है किवोह महानुभव भरद्वाज ब्राह्मण के वंश में बडे चापधारी होकर क्षत्रिय तेजका नाशकररहे हैं ।२६। वोह क्षत्रिय नाशने के लिये मानो दूसरे परशुरामबने हैं इस पृथ्वी भरमें कोई भी उन के कठोर अस्त्र को हटा नहीं सक्ता वोह आहुति युक्त प्रज्वलित अग्निकी भांति ब्रह्मतेज के साथ क्षत्रिय तेज को मिलाकर शत्रुको जलादेते हैं उनका ब्राह्म तेज क्षत्रिय तेजसे मिलकर श्रेष्ठहोने परभी आपका ब्राह्म तेज उनसे श्रेष्ठ है और केवल क्षत्रिय वलधारी मैं उन से हीन बनाहूं।२९।अतएव मैं आपको जो द्रोणसे श्रेष्ठहैं और वेदज्ञानीहैं प्राप्तहोकर आप के ब्रह्मतेजकी शरण लेताहूं हेयाज ऐसा कामकरो कि मैं लड़ाई में जयके अयोग्य

I am burning with the fire of Drona's enmity and request the favour of your kindly quenching it by your kindness.22.Drona is very dexterous in the use of Brahmastra and the knowledge of Brahma and has defeated me in the battle for friendship. He is wise and the chief preceptor of the Kurus.24.No Kshatrya is more mighty than the Kauravas. They have their bows six yards long and can destroy every creature by their arrows. He is indeed born in the Brahman family to destroy Kshatrya glory.26.He is a destroyer of Kshatryas like Parashuram. No one in the world can excel him. By his glory like the fire fed by libations of butter, assisted by Kshatrya power, he can destroy every enemy. But your glory to superior is his, which is assisted by Kshatrya power .My power alone is insufficient to cope with him..29.You are

दुर्जयम् ॥ ३० ॥ तत्कर्म कुरु मे याज वितराम्यर्बुदं गवाम् । तथेत्युक्त्वा तु तं याजो याज्यार्थमुपकल्पयत् ॥ ३१ ॥ गुर्वर्थ इति चाकाममुपयाजमचोदयत् । याजो द्रोणविनाशाय प्रतिजज्ञे तथा च सः ॥ ३२ ॥ ततस्तस्य नरेन्द्रस्य उपयाजो महातपाः । आचख्यौ कर्म वैतानं तदा पुत्रफलाय वै ॥ ३३ ॥ स च पुत्रो महावीर्यो महातेजा महाबलः । इष्यते यद्विधो राजन् भविता ते तथाविधः ॥ ३४ ॥ भारद्वाजस्य हन्तारं सोऽभिसन्धाय भूपतिः । आजह्रे तत्तथा सर्वं द्रुपदः कर्मसिद्धये ॥ ३५ ॥ याजस्तु हवनस्यान्ते देवीमाज्ञापयत्तदा । प्रेहि मां राज्ञि पृषति मिथुनं त्वामुपस्थितम् ॥ ३६ ॥ राज्ञ्युवाच । अवलिप्तं मुखं ब्रह्मन् दिव्यान्गन्धान्बिभर्मि च । सुतार्थं नोपलब्धास्मि तिष्ठ याज मम प्रिये ॥ ३७ ॥ याज

और द्रोणनाशी पुत्र पानेकूं आपको दसकरोड़ गौदानकरने को प्रस्तुतहूं याज तथास्तु कहकर यज्ञके प्रयोगके विषय में मनही मन में ध्यान करनेलगे ।३१।और उस कार्य को कठिन जानकर निष्काम उपयाज से सहायता करने को कहा महर्षि याज ने जब द्रोण नाश के लिये प्रतिज्ञाकी तब महात्मा उपयाज ने नरेन्द्र द्रुपद से उनके पुत्र फलके लिये श्रौताग्नि साध्यकर्म की कथा कह सुनाई और कहा कि हे द्रुपद तुम जैसे तपस्वी और बलवीर्यवन्त पुत्रकी कामनाकरोगे तुमको वैसाही पुत्रमिलेगा।३४।अनन्तर भूपाल द्रुपदने द्रोणनाशी पुत्रपानेकी युक्ति निश्चयकर कार्य साधने के लिये उस यज्ञके योग्य सम्पूर्ण सामग्री एकत्रित करदी तब उन्होंने यज्ञआरम्भ किया।३५ हवनके होजानेपर याजने रानी को यह आज्ञादी कि हेरानी पृषत् राजवधू तुम हवि लेनेके लिये शीघ्र मेरेपासआओ तुम्हारे पुत्र और कन्या उपस्थित हैं।३६।रानीने कहा कि हेब्रह्मन् ! मेरा मुँह कुंकुमादि गन्ध के पदार्थों से पूरित है अंगरागोंसे भी भूषित हूं सो सन्तानके लिये यज्ञकी हवि लेनेको मैं अभी अशुचि हूं अतएव मेरेअभीष्ट पुत्र के लिये आप कुछकाल विलंब करें मैं शुचि हो

superior to Drona and a scholar of the Vedas. I, therefore, come under your protection. Help me to get a son unconquerable in battle and able to destroy Drona. I am ready to offer you ten crores of cows." Yaj agreed to his request and thought about the management of the sacrifice. Finding the task difficult he sought the help of the disinterested Upyaj. The great Upyaj hinted to him the proper way to get a son. He said to Draupad, "You will get by this method as powerful a son as you desire."35.At length king Drupad having ascertained the method of gaining his desire, made preparations for the sacrifice. At the end of it Yaj said to the queen, "Come soon to me, Queen and daughter-in-law of king Prishat, to receive the fruit. A son and a daughter are ready for you."36.The queen replied, "My mouth is full of scented articles and am decked with ornaments. I am, therefore, not in a fit state

उवाच । याजेनश्रपितंहव्यमुपयाजाभिमन्त्रितम् । कथंकामंनसन्दध्यात् सात्वंविप्रोहि तिष्ठना ॥ ३८ ॥ ब्राह्मण उवाच । एवमुक्तत्वातुयाजेन हुतेहविषिसंस्कृते । उत्तस्थौ पावकात्तस्मात् कुमारोदेवसन्निभः ॥ ३९ ॥ ज्वालावर्णोघोररूपः किरीटीवर्मचोत्तमम् बिभ्रत्सखड्गःसशरो धनुष्मानविनदन्मुहुः ॥ ४० ॥ सोऽध्यारोहद्रथवरं तेनचप्रययौ तदा । ततःप्रणेदुःपञ्चालाः प्रहृष्टाःसाधुसाध्विति ॥ ४१ ॥ हर्षाविष्टांस्ततश्चैतान्नेयं सेहेवसुन्धरा । भयापहोराजपुत्रः पञ्चालानांयशस्करः ॥ ४२ ॥ राज्ञःशोकापहोजात एषद्रोणवधायवै । इत्युवाच महद्भूतमदृश्यं खेचरंतदा ॥ ४३ ॥ कुमारीचापिपाञ्चाली वेदीमध्यात् समुत्थिता । सुभगादर्शनीयाङ्गी स्वसितायतलोचना ॥ ४४ ॥ श्यामा पद्मपलाशाक्षी नीलकुञ्चितमूर्द्धजा । ताम्रतुङ्गनखी सुभ्रूश्चारुपीनपयोधरा ॥ ४५ ॥

आतीहूं३७याजने कहा कि हवनके पदार्थ उपयाज से मंत्रयुक्तहोकर याजके द्वारा पकाये गये हैं तुम चाहे आओ या न आओ अवश्यही उस से कामना पूरी होगी याज ने यह कहकर अग्नि से संस्कार किये हुए हव्यकी आहुति ज्योंही दी तभी उस अग्नि से ज्वाला वर्ण भीमाकृति सुन्दर कवच युक्त धनुष वाण धारी और देव सदृश एक कुमार उत्पन्न हुआ वोह कुमार जन्म लेतेही वार२ सिंह गर्जन करता हुआ प्रधान रथपर चढगया।४०। और उस रथ पर इधर उधर जानेलगा यह देख कर पांचाल लोग आनंदित होकर साधु साधु कह कर ऐसा चिल्लाये कि मानो धरती उन हर्ष युक्त पांचालों का भार संभाल ने को असमर्थ होगई तव आकाश वाणी हुई कि इस राजकुमार ने द्रोणवध के लिये जन्म लिया है यह पुत्र पांचालों का यशवढाने वाला भयनाशी और राजा का दुःख दूरकरने वाला होगा ।४३। फिर वेदीके मध्य से पंचाल राजकुमारी सौभाग्यवती श्यामांगी एक कुमारी निकली उस कन्या के अंगों की शोभा वहुत सुंदर दोनों आंखेंनीली चौड़ी और

to receivethem. Wait a little, till I purify myself." Yaj replied," The materials of sacrifice have been cooked by me according to the method pointed out by Upyaj and will bearfruit whether you come or not .Having said, this Yaj poured down into the fire the materials purified by fire. And as soon as the libation was poured a boy of the colour of fire, dreadful visage, decked with beautiful coat of mail and bow, and god like came out. As soon as the boy was born he roared like a lion and having mounted a chariot began to drive it in different directions. The Panchals on seeing him raised a loud cry of joy and seemed as if the earth were unable to bear their weight.41 A voice was then heard from heaven, saying, "This prince is born to kill Drona. He will increase the power of the Panchals, will destroy their fear and will alleviate the grief of the king.43."Then came out from the altar the princess of Panchal. Her limbs were symmetrical, eyes blue and

मानुषंविग्रहं कृत्वामाक्षादमरवर्णिनी । नीलोत्पलसमो गन्धो यस्याःक्रोशात् प्रधावति ॥ ४६ ॥ याविभर्त्तिपरंरूपं यस्यानास्त्युपमा भुवि । देवदानवयक्षाणामीप्सितां देव रूपिणीम् ॥ ४७ ॥ तांचापिजातां सुश्रोणीं वागुवाचाशरीरिणी । सर्वयोषिद्वरा कृष्णा निनीषुः क्षत्रियान क्षयम् ॥ ४८ ॥ सुरकार्यमियं काले करिष्यति सुमध्यमा । अस्या हेतोः कौरवाणां महद्भुत् पत्स्यते भयम् ॥ ४९ ॥ तच्छ्रुत्वासर्वे पंचालाः प्रणेदुःसिंहसंघवत् । नचैतानहर्षसम्पूर्णां नियंसेहेवसुन्धरा ॥ ५० ॥ तौदृष्ट्वापार्षतीयाजं प्रपेदेवैसुतार्थिनी । नवैमदन्यांजननींजा नीयातामिमावितिः ॥ ५१ ॥ तथैत्युवाचतंयाजो राज्ञःप्रियचिकीर्षया । तयोश्चनामनी चक्रुर्द्विजाः सम्पूर्णमानसाः ॥ ५२ ॥ धृष्टत्वादत्यमार्षित्वाद्युम्न द्युत्सम्भवादपि । धृष्टद्युम्नः

पद्म पलाश के समान केश काले और घुंघुराले नख ऊंचे और और तामे के रंगके दोनों भौंहें बड़ी शोभा देनेवाली, स्तन बड़े और शोभा युक्त उसकी शोभा देख कर समझ पड़ती थी कि मानों साक्षात् देव कन्या मानवी के स्वरूप में प्रकट हुई थी उसकी नील पद्म समान देहकी गंध कोस भर तक पहुँचने लगी वोह देव रूपिणी कन्या ऐसी अनुपम रूपवती थी कि देव, दानव, यक्ष आदि भी उसकी प्रार्थना करें।४७।उस सुंदरी कन्या के जन्म लेने पर भी आकाश वाणी हुई कि यह कृष्णा सम्पूर्ण नारियों में श्रेष्ठ और बहुत क्षत्रिय कुलों का नाश चाहनेवाली होगी इस सुंदरी से उचित समय पर देवताओं का कार्य पूराहोगा इसके कारणही कौरवोंमें बड़ाभय उपस्थितहोगा।४९सम्पूर्ण पांचाल यह सुनकर हर्ष से सिंहकी नाई ऐसी ध्वनि करनेलगे कि मानो धरती उन हर्षित पांचालोंका भार संभालने को असमर्थ हुई। पुत्र चाहने वाली राजा द्रुपद की रानी ने पुत्र और कन्या को देखकर याज के पास जाकर कहा कि आप ऐसा करें कि यह पुत्र और कन्या मेरे अतिरिक्त किसी दूसरी को माता करके न जानसके।५१।याजने राजाके प्रिय कार्य

large like lotus petals, hair black and curly, nails raised and of the colour of copper, eyebrows beautiful and breasts large and beautiful. Her beauty was such as to make her look like a god's daughter in the form of a human being. A scent like that of blue lotus extended a mile on all sides. She was so beautiful as to be an object of desire for gods, demons, and Yakshes.47. Again a voice from heaven was heard, saying, "This girl will be the best of women and the cause of destruction of many a Kshatrya family. In time she will be able to perform the work of a god. She will cause much fear among the Kauravas." The Panchals roared like lions so loudly as to show that the earth would not be able to support their weight. The Queen, seeing the son and the daughter, approached Yaj and said, "Be pleased to introduce me to them as their mother. The Brah-

कुमारीयं द्रुपदस्यभवत्विति ॥ ५३ ॥ कृष्णेत्येवाब्रुवनकृष्णां कृष्णाभूत्साहि वर्णतः । तथातन्मिथुनंजज्ञे द्रुपदस्यमहामखे ॥ ५४ ॥ धृष्टद्युम्नन्तुपांचाल्यमानीय स्वंनिवेशनम् । उपाकरोदस्त्रहेतोर्भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ५५ ॥ अमोक्षणीयंदैवंहि भाविमत्वामहामतिः । तथातत्कृतवान्द्रोण आत्मकीर्त्यनुरक्षणात् ॥ ५६ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणिद्रौपदी संभवे अष्टषष्ठ्यधिक
शतोऽध्यायः ॥ १६८ ॥

वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वातुकौन्तेयाः शल्यविद्धाइवाभवन् । सर्वेचास्वस्थमनसोवभूवुस्ते महाबलाः ॥ १ ॥ ततःकुन्तीसुतान्दृष्ट्वा सर्वांस्तद्गतचेतसः । युधिष्ठिर

करने के लिये तथास्तु कहा फिर ब्राह्मणों ने सफल मनोरथ होकर कहा कि द्रुपदका यह कुमार धृष्ट अर्थात् विपक्षियोंकी उन्नति न सहनेवाला और द्युम्न अर्थात् कवच कुंडल आदि के साथ उत्पन्नहुआ है सो इसका नाम धृष्टद्युम्नहुआ।५३।और यह कुमारी काली हुईहै सो इसका नाम कृष्णा हुआ राजा द्रुपद के महा यशसे ऐसे पुत्र औरकन्या की उत्पत्ति हुईथी अनन्तर प्रतापी भारद्वाज द्रोण ने पांचाल पुत्र धृष्टद्युम्न को अपने घर में लाकर अस्त्रोंकी शिक्षा देकर पहिले लिये हुए आधे राज्यके लेने के वदले में उपकार किया महामति द्रोण ने यह समझकर कि दैवीवात उल्लंघन के योग्य नहीं है अपनी कीर्तिकी रक्षाके लिये ऐसा कार्य किया ॥ ५६ ॥

अध्याय १६९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर महाबली पांडवगण यह वृत्तांत सुनकर शूली से विंधेजानेकी भांति दुःखीहुए सत्य कहनेवाली कुंती ने पुत्रों को बेचैन देखकर युधिष्ठिरसे

mans. Being successful in their enterprise, said, " This son of king Drupad is, *Dhrisht*, not bearing the greatness of enemies, and *Dyumn*, born with coat of mail and earrings. His name will, therefore be *Dhrishtdyumn* 53. This girl is black and will be named Krishna. This son and daughter are born to Drupad by his good fortune." The glorious Bharadwaj *Drona* then took Dhrishtdyumn home with him and gave him education in arms in return for half the kingdom which he had taken before from his father. The wise *Drona* thinking that the decree of fate could not be altered, had done this for the sake of his glory. 56.

CHAPTER CLXIX

Vaishampayan said that having heared this account the Pandavas became distressed as if they were pierced by the point of

सुवाचेदं वचनंसत्यवादिनी ॥ २ ॥ कुन्त्युवाच। चिररात्रोषिताःस्मेह ब्राह्मणस्यनिवे शने। रममाणाःपुरेरम्ये लब्धभैक्षामहात्मनः ॥ ३ ॥ यानीहरमणीयानि वनान्युप वनानिच। सर्वाणितानिदृष्टानि पुनःपुनररिन्दम ॥ ४ ॥ पुनर्दृष्टुंहितानीह प्रीणयन्ति ननस्तथा। भैक्ष्यञ्चनतथावीर लभ्यतेकुरुनन्दन ॥ ५ ॥ तेवयंसाधुपंचालान् गच्छा मयदिमन्यसे। अपूर्वदर्शनंवीर रमणीयंभविष्यति ॥ ६ ॥ सुभिक्षाश्चैवपंचालाः श्रू यन्तेशत्रुकर्षन। यज्ञसेनश्चराजासौ ब्रह्मण्यइतिशुश्रुम ॥७॥ एकत्रचिरवासश्च क्षमोन चमतोमम। तेतत्रसाधुगच्छामो यदित्वंपुत्रमन्यसे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच। भवत्या यन्मतंकार्य्यं तदस्माकंपरंहितम्। अनुजांस्तुनजानामि गच्छेयुर्नेतिवापुनः ॥ ९ ॥ वैशम्पायन उवाच। ततःकुन्तीभीमसेन मर्जुनंयमजौतथा। उवाचगमनंतेच तथेत्येवा-

कहा।२। कि हमको इसब्राह्मण के घर रहतेहुए बहुत दिनहोगये इस सुन्दरनगरमें महा त्माओं से भिक्षा लेकर खेल कूद में काल गँवाया यहां जितने सुन्दरबन और उपबनहैं वोह सब कईबार देख लिये।४।अब उन स्थानोंकी फिर देखनेकी प्रीति नहीं होती और एक स्थान में रहने से वैसीभिक्षा मिलनेकीभी सम्भावना नहीं रहती। अतएव यदि तुम चाहो तो हम सुखसे पांचाल देशको जायँ वोह स्थान पहिले नहीं देखा है उस के देखनेसे सुख प्राप्तहोगा।६। हे शत्रुनाशी! सुना है कि पांचाल देश अन्नसे भराहुआ है और वहांका राजा यज्ञसेनभी ब्रह्मपरायण है एक स्थान में सदा रहनाभी मेरा अभीष्ट नहीं है और उचितभी नहीं है यदि तुम चाहो तो हम उसस्थानको सुख पूर्वक चलें।८। युधिष्ठिर ने कहा कि तुम्हारी जैसी इच्छा होगी वैसाही करेंगे और वही हमारे लिये मंगलदाई होगी और यह मालूम नहीं कि भाई लोग क्या चाहते हैं। वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर कुंती ने जब भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवसे वहां जानेकी इच्छा

stake. The truthful Kunti seeing her sons sad at heart said to Yudhishthir, " We have been long in the house of this Brahman. We have passed our days in fun at the expense of the good residents of this beautiful city. We have seen, more than once, all the places of interest(4)and shall feel no pleasure in seeing them again. We cannot get food for ever here. Let us go to the country of Panchal. We have not seen the place before and shall feel pleasure by seeing it.6.We have heard that the country is full of corn and its king Yagyasen, is kind to brahmans. I donot, moreover, wish to live in one place for ever nor, it is proper for us. We shall go there if you desire."8.Yudhishthir replied, " I am ready to do your bidding. It is always for our good. I donot know the inclination of brothers." Vaishampayan said that Kunti then asked Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev if they wanted to go there and they all agreed.

युवंस्तदा ॥ १० ॥ तत्आमन्त्र्यतंविप्रं कुन्तीराजन्सुतैःसह । प्रतस्थेनगरींरम्यां द्रुपदस्यमहात्मनः ॥ ११ ॥

इत्यादिपर्वाणि चैत्ररथपर्वणि पांचालदेशयात्रायां ऊनषष्ठ्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १६९ ॥

वैशम्पायन उवाच । वसत्सुतेषुप्रच्छन्नं पाण्डवेषुमहात्मसु । आजगामाथतान्द्रष्टुं व्यासःसत्यवतीसुतः ॥ १ ॥ तमागतमभिप्रेक्ष्य प्रत्युद्गम्यपरन्तपाः । प्रणिपत्याभिवाद्यैनं तस्थुःप्राञ्जलयस्तदा ॥ २ ॥ समनुज्ञाप्यतान्सर्वानासीनान्मुनिरब्रवीत् । प्रच्छन्नंपूजितःपार्थैः प्रीतिपूर्वमिदंवचः ॥ ३ ॥ अपिधर्मेणवर्त्तध्वं शास्त्रेणचपरन्तपाः अपिविप्रेषुपूजावः पूजार्हेषुनहीयते ॥ ४ ॥ अथधर्मार्थवद्वाक्य मुक्त्वासभगवानृषिः विचित्राश्चकथास्तास्ताः पुनरेवेदमब्रवीत् ॥ ५ ॥ व्यास उवाच । आसीत्तपोवने का

पूंछी तब उन्होंनेभी स्वीकार किया अनन्तर कुंती और उसके बेटे ब्राह्मण से मिलकर महात्मा भूपाल द्रुपदके नगरको गये ॥ ११ ॥

अध्याय ॥ १७० ॥

वैशम्पायन नें कहा कि जब महात्मा पांडवलोग ब्राह्मण के घरमें छिपकर बसतेथे तब एक दिन सत्यवती के पुत्र व्यासजी उनसे मिलने को आये शत्रुनाशी पांडवगण उन को आते देखकर उठकर प्रणाम दण्डवतपूर्वक दोनोंहाथ जोडकरखडेरहे फिर उनकीआज्ञा से वे सब बैठगये उन्होंने उनसे पूजे जाकर प्रीति पूर्वक यह कहा।३।कि हे शत्रुनाशियो तुम धर्म मार्ग में रहकर धर्मानुसार अपनी जीविका करलेते हो और पूजनीय ब्राह्मणोंको पूजतेहो ? अनन्तर भगवान कृष्ण द्वैपायन धर्मार्थयुक्त बहुतभाँतिकी विचित्रकथायें कहकर फिर यह कहनेलगे ।५। कि एक तपोबन में किसी महात्मा ऋषिकी एक कन्याथी उसकी कमर पतली और और भौंह अच्छीथी और वोह बडी सुन्दरी और सबगुणों से सुहावनी

Kunti and her sons then took leave of the Brahman and went to the beautiful capital of Drupad. 11.

CHAPTER CLXX

Vaishampayan said that when the Pandavas were living in concealment in the house of the Brahmen, Satyavati's son Vyas came one day to them. The Pandavas respectfully stood up with joined hands at seeing him and then sat down with his permission. Being respected by them he asked affectionately, " Do you get your living in a lawful manner ? Do you pay respect to worthy Brahmans?" 4. After telling them many stories he said, " There was a hermit's daughter living in a forest. She was of slender waist, good eyebrows, great beauty and many good qualities. But she was unfortunate on account of her own actions in previous life. She

चिद्देवः कन्यामहात्मनः । विलग्नमध्यासुश्रोणी सुभ्रूःसर्वगुणान्विता ॥ ६ ॥ कर्मभिः
स्वकृतैःसातु दुर्भगासमपद्यत । नाध्यगच्छतपतिंसातु कन्यारूपवतीसती ॥ ७ ॥ त-
तस्तप्तुमथारेभे पत्यर्थमसुखाततः । तोषयामासतपसा साकिलोग्रेणशङ्करम् ॥ ८ ॥
तस्याःसभगवांस्तुष्टस्तामुवाच यशस्विनीम् । वरंवरयभद्रंते वरदोऽस्मीतिशङ्करः ॥
॥ ९ ॥ अथेश्वरमुवाचेदमात्मनः सावचोहितम् । पतिंसर्वगुणोपेतमिच्छामीति पुनः
पुनः ॥ १० ॥ तामथप्रत्युवाचेदमीशानो वदतांवरः । पंचतेपतयोभद्रे भविष्यन्ती
तिभारताः॥ ११ ॥ एवमुक्त्वाततःकन्या देवंवरदमब्रवीत् । एकमिच्छाम्यहंदेव त्व-
त्प्रसादात् पतिंप्रभो ॥ १२ ॥ पुनरेवाब्रवीदेव इदंवचनमुत्तमम् । पञ्चकृत्वस्त्वया
युक्तःपतिंदेहीत्यहंपुनः ॥ १३ ॥ देहमन्यङ्गतायास्ते यथोक्तंतद्भविष्यति । द्रुपदस्य
कुलेजज्ञेसाकन्या देवरूपिणी । निर्दिष्टाभवतांपत्नी कृष्णापार्षत्यनिन्दिता ॥ १४ ॥
पाञ्चालनगरेतस्मान्निवसध्वं महाबलाः । सुखिनस्तामनुप्राप्य भविष्यथनसंशय ।१५।

थी ऋषि कन्या अपनेकर्मवश अभागी हुई थी सती और रूपवती होनेपरभी पति नहीं
मिला।७।अनन्तर वोह चित्त में दुःख मानकर पति पानेके लिये तपकरने लगी फिर कड़ी
तपस्यासे भगवान् शंकरको संतुष्ट करने पर शंकर ने प्रसन्नहोकर कहा कि हेभद्रे ! मैं
शंकर तुमको वर देनेको उद्यतहुआहूं वरमांगो।९।तुम्हारा मंगलहोगा ऋषि कन्याने अपने
हित के निमित्त ईश्वर से बार २ कहा कि मैं सबगुणों से भूषित पति मांगती हूं वाक्
पति ईशान ने कहा कि हेभद्रे तुमको पांच भरतवंशी पति मिलेंगे कन्या ने वरदाता
महादेवजीकी यह बात सुनकर कहा कि हे देव, हेविभो मैं आपकी कृपा से एकही पति
मांगतीहूं।१३।तब देव देवने कहा कि तुमने पांचबार मुझसे कहा कि पति दो इस लिये दूसरे
जन्म में तुम्हारे पांचपति होंगे हेभरतकुल भूषण ! उस कन्या ने इनदिनों द्रुपदकुल में
जन्म लियाहै देवकन्या समान अनन्दनीया कृष्णानामवाली वह द्रौपदी तुम्हारी पत्नी
बना चाहतीहै।१४।सो अब तुम पांचाल नगर में जाकर वहां टिकेरहो।हे महाबली पांडवो

could not get a husband for all her beauty and chastity.7. With a distressed heart she began to practice severe penance to get a husband. She pleased the god Shankar who asked what she wanted and said that he was ready to grant her request.9. The Rishi's daughter, several times, said to him that she wanted a good husband. The lord Ishan, thereupon told her that in her next life she would get five men of the *Bharat* family for her husbands. The girl respectfully said that she wanted only one husband.12. But he replied that as she had repeated her request for a husband five times she should get five. The girl is now born in the house of Drupad and is waiting to become your wife.14. You must go to the country of Panchal, and stay there. You shall be happy on

एवमुक्त्वामहाभागःपांडवांन् सपितामहः।पार्थानामन्त्र्यकुंतींच प्रातिष्ठतमहातपाः।१६।
इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि द्रौपदीजन्मांतरकथने सप्तत्यधिक शततोऽध्यायः॥१७०॥

वैशम्पायन उवाच। गतेभगवतिव्यासे पाण्डवाहृष्टमानसाः। तेप्रतस्थुःपुरस्कृत्य मातरंपुरुषर्षभाः॥ १ ॥ आमंत्र्य ब्राह्मणं पूर्वं पनिवाद्य नुमान्य च। सर्वैरुदङ्मुखैर्मार्गैर्यथोदिष्टं परन्तपाः। तेत्वगच्छन्नहोरात्रात्तीर्थंसोमाश्रयायणम्॥ २ ॥ आसेदुः पुरुषव्याघ्रा गङ्गायांपाण्डुनन्दनाः। उल्मुकन्तु समुद्यम्य तेषामग्रेधनञ्जयः॥ ३ ॥ प्रकाशार्थंययौतत्र रक्षार्थंच महारथः। तत्रगंगाजलेरम्ये विविक्तेक्रीडयन्स्त्रियः। ईर्ष्युर्गन्धर्वराजोवै जलक्रीडामुपागतः॥ ४ ॥ शब्दंतेषांसशुश्राव नदीं समुपसर्पताम्। तेनशब्देनचाविष्टश्चुक्रोध बलवद्बली॥ ५ ॥ सदृष्ट्वापाण्डवांस्तत्रसह मात्रापरन्तपान्। विस्फारयन्धनुर्घोर मिदंवचनमब्रवीत्॥ ६ ॥ सन्ध्यासंरज्यते

तुम निःसंदेह उस कृष्णा को पाकर सुखपाओगे पांडवों के दादा महातपस्वी महाभाग व्यास देव पृथा और पार्थो से यह कहकर चलेगये॥ १६॥

अध्याय १७१॥

वैशम्पायन ने कहा कि भगवान् व्यास के चलेजाने पर पुरुष श्रेष्ठ शत्रुनाशी पांडव गण ब्राह्मण का नमस्कार पूर्वक सत्कार करके प्रसन्न चित्तसे माताके पीछे पांचाल नगर की ओर चले वे अपने उद्देश्यके अनुसार सीधे उत्तरकी ओर चलकर सोमाश्रयननामक तीर्थ में जापहुँचे जहां भगवान् चन्द्रशेखर विराजते हैं।२। वहां दिन बीतने पर महारथी धनंजय पथ दिखाने और रक्षाके लिये एक जलती हुई लकड़ी उठाकर आगे २ चले फिर पुरुष व्याघ्र पांडवलोग गंगातट पर पहुँचे वहां ईर्षासे भराहुआ एक गंधर्वराज जल क्रीडा के लिये आकर सुंदर भागीरथी के जलमें स्त्रियों के संग निराले में खेल रहाथा।४। पांडवगण उस नदी में उतर रहे थे कि उस महाबली गंधर्वराज को उनका शब्द मिला और वोह क्रोध से जलसे निकला अनन्तर शत्रुनाशी पांडवों को माताके साथ आते देख

finding Krishna." The grandfather of the Pandavas Maharshi Vyas, then took leave of Pratha and her sons and went away. 61.

CHAPTER CXXI

Vaishampayan said that after the departure of maharshi Vyas, the brave Pandavas respectfully said good bye to the Brahman and followed their mother to the country of Panchal with joyful hearts. Going directly Northward they reached the holy Somashrayan, the residensce of Chandrashekhar. 2. At the close of the day the brave Arjun went before them with a lighted wood to light the way and for protection. At length they approrahed the bank of the Ganges where a hot-tempered *Gandharva* was revelling in water with women. The Pandavas were crossing the river when the Gandharva heard their voice and came out of water in anger. Seeing

घोरापूर्वगत्रागमेषुया । अशीतिभिर्लवैर्हीनं तन्मुहूर्त्तंप्रचक्षते ॥ ७ ॥ विहितंकामचा-
राणां यक्षगन्धर्वरक्षसाम् । शेषमन्यन्मनुष्याणां कर्मचारेषुवैस्मृतम् ॥ ८॥ लोभात्
प्रचारंचरतस्ता सुवेलामुवैनगान् । उपक्रान्तान्निगृह्णीमो राक्षसैःसहबालिशान् ॥ ९ ॥
अतोरात्रौप्राप्नुवतो जलंब्रह्मविदोजनाः । गर्हयन्तिनरान्सर्वान् बलस्थान्नृपतनापि
॥ १० ॥ आरात्तिष्ठतमामह्यं समीपमुपसर्पत । कस्मात्मांनाभिजानीत प्राप्तंभागीरथी
जलम् ॥ ११ ॥ अंगारपर्णगन्धर्वं वित्तमांस्ववलाश्रयम् । अहंहिमानीचेर्षुश्च कुवेरस्य
प्रियःसखा ॥१२॥ अङ्गारपर्णमित्येवं ख्यातंचेदंवनंमम । अनुगङ्गंचरन् कामांश्चित्रं
यत्ररमाम्यहम् ॥ १३ ॥नकौणपाःशृङ्गिणोवा नदेवानचमानुषाः । इदंसमुपसर्पन्तिततर्किं
समनुसर्पथ ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच । समुद्रेहिमवत्पार्श्वे नद्यामस्याञ्चदुर्मते । रात्राव

कर कठोर शरासन को फैलाकर कहनेलगा ।६। कि रात्रि आने से पहले जो घोर सन्ध्याका काल होता है उसके अस्सीलव के अतिरिक्त शेष सब मुहूर्त्तही कामचारी यक्ष, गंधर्व और राक्षसों के विचरनेका काल है इस के सिवाय शेषकाल मनुष्योंके कर्माचरण के निमित्त निश्चयहै ।८। यदि मनुष्यगण लोभवश घूमते हुए उस काल में हमारे निकट आते हैं तो हम उन मूर्खोंको मार डालते हैं इस लिये जो लोग रात्रि को जलाशय में जाते हैं वे बली भूपालभी होंतो वेदज्ञ ब्राह्मण उनकी निन्दाकरतेहैं ।१०। अतएव तुम दूररहो मेरेपास न आओ क्या तुम नहीं जानतेहो कि मैं भागीरथी के जल में नहा रहाहूं । मैं मानवाला कुबेर का मित्र अंगारपर्ण नामक गंधर्व हूं और अपने भुजबल सेहीकाम पूरा कर लेताहूं किसीको क्षमा नहीं करताहूं ।१२। मेरेअधिकारका यह बन अंगारपर्ण नाम से प्रसिद्ध है मैं इस बन के भीतर और गंगामें भांति २ की क्रीडा करता फिरता हूं मैं कुबेर का प्रिय मित्र हूं लक्षणोंसे जान पडता है कि तुम राक्षस, शृंगी, गंधर्व अथवा यक्ष नहींहो फिर कैसे मेरेपास आने का साहस किया ।१४। अर्जुनने कहा कि हेदुर्गति समुद्र

the Pandavas with mother he stood ready with his bow and said, "The time of red evenig, before night, with the exception of a few minutes, is given to Yakshes, Gandharvas and Rakshes for their recreation. The rest of the time is set apart for human beings. It they foolishly approach us within our time we kill them. Learned Brahmans therefore, denounce entering a river by night. 10. Donot come near me. Do you not see that I am bathing in the Ganges. I am a friend of Kuver and my name is Angarparn the Gandharv? I perform my work by the strength of my arms and never forgive. 12. This forest, named Angarparn, is under my sway. I make merry in the forest and, the Ganges wherever I please. I am a friend of Kuver who rsepects me. I know by signs that you are not Rakshases, Gandharvas or Yakshes. How dare you come near me?" Arjun

हानि सन्ध्यायां कस्यगुप्तःपरिग्रहः ॥ १५ भुक्तोवाप्यथवाभुक्तो रात्रावहनिखेचर ।
नकालनियमोह्यस्ति गंगांप्राप्यसरिद्वराम् ॥ १६ ॥ वयञ्चशक्तिसम्पन्ना अकालेत्वाम
धृष्णुम। अशक्ताहिरणेक्रूर युष्मानर्चन्तिमानवाः ॥ १७ ॥ पुराहिमवतश्चैषा हेमशृङ्गाद्वि-
निःसृता। गङ्गागत्वासमुद्राम्भः सप्तधासमपद्यत ॥ १८ ॥ गङ्गाञ्चयमुनाञ्चैव प्लक्षजातां
सरस्वतीम्। रथस्थांसरयूञ्चैव गोमतींगण्डकींतथा ॥ १९ ॥ अपर्युषितपापास्ते
नदीःसप्तपिबन्तिये। इयंभूत्वाचैकवप्रा शुचिराकाशगापुनः। देवेषुगंगागन्धर्व प्राप्नो-
त्यलकनन्दताम् ॥ २० ॥ तथापितॄन्वैतरणी दुस्तरापापकर्मभिः। गंगाभवतिवैप्राप्य
कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् ॥ २१ ॥ असम्बाधा देवनदी स्वर्गसम्पादनीशुभा।
कथमिच्छसितां रोद्धुं नैष धर्मः सनातनः ॥ २२ ॥ अनिवार्य्यमसम्बाधं तव
वाचा कथंवयम्। नस्पृशेम यथाकामं पुण्यं भागीरथी जलम् ॥ २३ ॥

हिमाचल और गंगा यह सब स्थान चाहे दिन, रात वा सन्ध्या समयहो किसके लिये रुकसक्ते हैं चाहे पेट भराहो वा नहो किसी के लिये दिन व रात्रि किसी समय जलभरी गङ्गापर आने का नियम नहीं है।१६।विशेष कुसमय में तुमको चिढाने से हमको क्या हो सक्ता है हम शक्तिवान हैं। हेकुटिल! जो लोग लडनेमें असमर्थ हैं वही तुम्हारी पूजा करतेहैं पूर्वकाल में यह गङ्गा हिमाचलकी चोटी से निकलकर सात भागों में बँट कर समुद्र के जलसे मिलगई है।१८।जो लोग गंगा,यमुना,प्लक्षजाता, सरस्वती, रथस्था, शरयू गोमती और गंडकी इन सात नदियों का जलपीते हैं उनके सब पाप कट जाते हैं। हे गंधर्व! आकाश में बहनेवाली पवित्र यह गंगा देवलोक में अलकनन्दाके नामसे और पितृलोकमें पापात्माओं को तारनेके लिये वैतरणी नाम से प्रसिद्ध हुई है कृष्ण द्वैपायनने कहाहै।२१।कि स्वर्ग तथा शुभ देनेवाले इस सुरसोतेमें किसीके जानेकी मनाई नहीं है तुम गंगाजीमें जानेसे क्यों रोकतेहो यह सनातनधर्म नहींहै२२अतएव हम क्यों तुम्हारी सुन

replied, "The sea the Himalaya mountains and the Ganges are open to all by day or night. People may come to Ganges whenever they like. 16. We are not afraid of your displeasure. Those who are weak may pay you respect. Coming out from the golden peak of the Himalayas this Ganges enters the Ocean in seven branches. 18. Those who drink of the waters of the Ganges, the Yamuna, the Plakshjata, the Saraswati, the Rathastha, the Saryoo, the Gomtee and the Gandki have all their sins removed. The Ganges flowing in the country of gods is named Alaknanda and the Baitarni which the sinners have to cross, in the country of the Pitris. Krishna Dwaipayan says that no one is prohibited from going into the godly current of the Ganges. Why do you try to keep us away from the Ganges. It is not unlawful and therefore we are not prepared to

वैशम्पायन उवाच। अङ्गारपर्णस्तच्छ्रुत्वा क्रुद्ध आनम्यकार्मुकम् । मुमोच वाणान्नि-
शितानहीनाशीविषानिव ॥ २४ ॥ उल्मुकंभ्रामयंस्तूर्णं पाण्डवश्चर्मचोत्तमम् । व्यपो
हतशरांस्तस्य सर्वानेवधनञ्जयः ॥ २५ ॥ अर्जुन उवाच । विभीषिकावैगन्धर्व ना-
स्त्रज्ञेषुप्रयुज्यते । अस्त्रज्ञेषुप्रयुक्तेयं फेनवत्प्रविलीयते ॥ २६ ॥ मानुषानतिगन्धर्वान्
सर्वान्गन्धर्वलक्षये । तस्मादस्त्रेणदिव्येन यात्स्येऽहंनतुमायया ॥ २७ ॥ पुरास्त्रमिद-
माग्नेयं प्रादात्किलबृहस्पतिः । भरद्वाजायगन्धर्व गुरुर्मान्यःशतक्रतोः ॥ २८ ॥ भर-
द्वाजादग्निवेश्य अग्निवेश्याद्गुरुर्मम । साध्विदंमह्यमददद्द्रोणो ब्राह्मणसत्तमः ॥ २९
वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वापाण्डवःक्रुद्धो गन्धर्वायमुमोचह । प्रदीप्तमस्त्रमाग्नेयं द-
दाहास्यरथन्तुतत ॥ ३० ॥ विरथंविप्लुतंतन्तु सगन्धर्वमहाबलैः । अस्त्रतेजःप्रमूढश्च

कर इस बाधारहित पवित्र गंगाको न छुएं।२३। वैशम्पायनने कहा कि अंगारपर्ण यह बात सुनकर क्रोध के मारे शरासन को चढाकर अति विषयुक्त सर्प के समान तेजबाण बरसाने लगा पांडुपुत्र धनंजयने उस जलती हुई लकडी और उत्तम चर्म को घुमाकर उसके सब बाणों को व्यर्थ किया।२५। और कहा कि हेगन्धर्व जो लोग अस्त्रविद्या जानतेहैं उनको धमकाना उचित नहीं है क्योंकि वोह उस से नहीं डरसक्ते हेगन्धर्व मैं समझताहूं कि गंधर्व मनुष्यजाति से अधिक पराक्रमी हैं मैं तुम से दिव्य अस्त्रों के द्वारा लडूं गा कपटयुद्ध नहीं नहीं करूंगा पूर्वकाल में देवराज के गुरू सबोंके माननीय बृहस्पतिजीने यह अग्न्यस्त्र भरद्वाज को देदिया था भरद्वाज से अग्नि वेश्यको मिला और अग्निवेश्य से मेरेगुरू ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणको मिला उन्हों ने यह सुन्दर अस्त्र मुझको दिया है ।२९। वैशम्पायनने कहा कि पांडुनन्दन अर्जुनने यह कहकर क्रोध से गंधर्व पर उस प्रज्वलित अग्न्यास्त्र को छोडकर उसके प्रसिद्ध रथको भस्म किया वोह महाबली गंधर्व अग्न्यस्त्र

desist from entering into the Ganges merely by your saying.''23. Vaishampayan said that on hearing this Angarparn shot many sharp arrows but Arjun rendered them all useless by the waving of the burning stick and the strap of leather.25. Arjun then said, " It is not proper to intimidate those who are adept in the use of weapons. I think that the Gandharvas are superior to human beings. I shall therefore fight with you by celestial weapons and shall deal honestly with you. In former times Brahaspati the preceptor of gods gave this Agnyastra to Bharadwaj who gave it to Agnivesh. The latter gave it to my preceptor Drona who gave it to me. Vaishampayan said that Arjun thereupon burnt the famous chariot of the Gandharb by his firearm. The great Gandharva falling headlong from his burning chariot was captured by Arjun who dragged him by his beautiful hair decked with garlands and brought him near

प्रपतन्तमवांमुखम् ॥ ३१ ॥ शिरोरुहेषुजग्राह माल्यवत्सुधनञ्जयः । भ्रातॄनप्रतिचकर्षाथ सोऽस्त्रपातादचेतसम् ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिरंतस्यभार्या प्रपेदेशरणार्थिनी । नाम्ना कुम्भीनसीनाम पतित्राणमभीप्सती ॥ ३३ ॥ गन्धर्व्युवाच । त्रायस्वमांमहाभाग पतिंचेमंविमुंचमे । गन्धर्वींशरणंप्राप्ता नाम्नाकुम्भीनसीप्रभो ॥ ३४ ॥ युधिष्ठिर उवाच।युद्धेजितंयशोहीनं स्त्रीनाथमपराक्रमम् । कोनिहन्याद्रिपुंतात मुंचेमंरिपुसूदन ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच । जीवितंप्रतिपद्यस्व गच्छगन्धर्वमाशुचः । प्रदिशत्यभयंतेऽद्यकुरुराजोयुधिष्ठिरः ॥ ३६ ॥ गन्धर्व उवाच । जितोऽहंपूर्वकंनाम मुंचाम्यङ्गारपर्णताम् । नचश्लाघेबलेनाङ्ग नाम्नाजनसंसदि ॥ ३७ ॥ साध्विमंलब्धवांल्लाभं योऽहं

के प्रभावसे रथसे भूमिपर गिररहा था कि अर्जुन ने मालाओं से सजेहुए उस के केश पकडलिये और अस्त्रकी चोट से अचेत उस गंधर्व को भाइयोंके पास लेआया अनन्तर उस गंधर्वकी कुंभीनसी नाम्नी स्त्री पतिकी रक्षाके लिये युधिष्ठिरकी शरण लेकरबोली३३। कि हेमहाभाग मेरी रक्षाकरो मेरेपति को छोडदो हे प्रभो मेरानाम कुंभीनसी है मैं गंधर्वीहूं आपकी शरण लेती हूं तब युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि हेशत्रुनाशी जो शत्रु युद्ध में हारकर पराक्रम और यशहीनहोकर स्त्रीसे बचायाजाता है उसको कौन मारसक्ता है तुम इसको छोडदो।३५।अनन्तर अर्जुन ने गंधर्व से कहा कि हेगंधर्व तुमको जीवन मिल गया चलेजाओ शोक मत करो आज कुरुराज युधिष्ठिर ने तुमको बचानेकी आज्ञा दीहै गंधर्व ने कहा कि मेरा पर्ण अर्थात् वाहन प्रज्वलित अंगारकी भांति दूसरों के छूनेके अयोग्यथा इस लिये मैं अंगारपर्ण नाम से प्रख्यातथा अब यह नाम छोडदेता हूं क्योंकि जब जन समाज में बल और वीर्य का मानही नहीं रहा तब केवल नाममात्र माननीय बने रहने से क्या प्रयोजनहै।३७।आज मुझको यह परमलाभहुआ कि दिव्यास्त्रधारी मित्र

his brothers. His wife Kumbhi, then addressed Yudhishthir saying, "Protect me, O fortunate one, and release my husband. My name is Kumbhi, my lord, I am a Gandharv woman seeking your protection." Yudhishthir said "Who can kill an enemy, vanquished, destitute of prowess and protected by women? Set him free, brother."35. Arjun then said to Gandharv, "Your life is safe. You may go, Gandharv. Donot be sorry. Yudhishthir the prince of Kurus has given an order to spare your life." The Gandharva replied, "No one could touch my chariot like a burning charcoal. I was therefore called Angarparn. Being defeated by you I shall give up my name. For, no one would like to stick to the name when one has lost the power. I have been a gainer today, for, I have got a friend who possesses celestial weapons. I wish to impart my friend all the knowledge of my tribe that I possess. I had a beautiful chariot

दिव्यास्त्रधारिणम् । गान्धर्व्यामाययेच्छामि संयोजयितुमर्जुनम् ॥ ३८ ॥ अस्त्राग्निना
विचित्रोऽयं दग्धोमेरथउत्तमः । सोऽहंचित्ररथोभूत्वा नाम्नादग्धरथोऽभवम् ॥३९॥
सम्भृताचैवविद्येयं तपसेहमयापुरा । निवेदयिष्येतामद्य प्राणदायमहात्मने ॥ ४० ॥
संस्तम्भयित्वातरसा जितंशरणमागतम् । योरिपुंयोजयेत्प्राणैः कल्याणंकिंनसोऽर्हति
॥ ४१ ॥ चाक्षुषीनामविद्येयं यांसोमायददौमनुः । ददौसविश्वावसवे ममविश्वावसु-
र्ददौ ॥ ४२ ॥ सेयंकापुरुषंप्राप्ता गुरुदत्ताप्रणश्यति । आगमोऽस्यामयाप्रोक्तो वीर्य्यं
प्रतिनिबोधमे ॥ ४३ ॥ यच्चक्षुषाद्रष्टुमिच्छेत्त्रिषु लोकेषुकिंचन । तत्पश्येद्यादृशं चे-
च्छेत्तादृशंद्रष्टुमर्हति ॥ ४४ ॥ एकपादेनषण्मासान् स्थितोविद्यांलभेदिमाम । अनुने

मिलगया आज मुझे मित्र अर्जुन को गांधर्वी मायासिखलाने की इच्छा है मेरा उत्तम विचित्र रथ था सो मैं चित्ररथ करके प्रसिद्ध था अब वोह रथ अस्त्राग्नि से जलगया अतएव चित्ररथ होनेपर मुझको दग्धरथ नाम मिला।३९।हेमित्र मैंने पहले तपस्या से जो गांधर्वी विद्या लाभकी थी आज वोह तुमको देताहूं क्योंकि तुम मेरेप्राणदाता और महा-त्माहो जो बलसे शत्रुको हराकर मोहित करते और उस हारेहुए मोहित शत्रुके शरण लेनेपर उसकाप्राण दे देतेहैं वोह अवश्यही कल्याण पानेके योग्यहैं।४१।उस विद्याकानाम चाक्षुषी है भगवान् मनु ने वोह विद्या सोमको दीथी, सोम ने विश्वावसु को दी, और मुझको विश्वावसुसे मिली पर वोह गुरु के हाथकी दीहुई विद्या इस कायर के हाथ से नष्टहोगई इस चाक्षुषी विद्या के गुरुओं से क्रम पूर्वक दियेजाने का वृत्तांत कहा अब उस के गुणकी बात कहताहूं।४३।तीनोंलोकमें जिस किसी पदार्थको आंखोंसे देखनाचाहो गे वोह दीख पडेगा और उस पदार्थका स्वभाव और दशा जैसी है वोह देखना चाहोगे तो देखलोगे छःमहीनेतक एकपांवसे खडेरहकर तपकरनेपर वोहविद्या मिलती है पर तुम्हारे

of many colours and was called Chitrarath. My chariot has been burnt and I am no more worthy of being called Chitrarath but Dagdhrath (burnt chariot). I shall teach you to-day the knowledge that I have got with great pains, because you are the giver of my life and a great being. Those who spare the life of a defeated and insensible enemy are sure to reap a good reward. 14. The name of the knowledge is Chakshushi. It was given by Manu to Som, who gave it to Vishwavasu. The latter gave it to me. But it has been made a bad use of by a cowardly fellow (myself). I have told you how it was handed down. I shall now tell you what power it possesses. Whomsoever you will desire to see in the world will come before your eyes and will be seen in his true state. One may learn it by standing on one leg for six months in penance. But I shall impart it to you without that trouble. We are superior to

ध्याम्यहंविद्यां स्वयंतुभ्यंव्रतेऽकृते ॥ ४५ ॥ विद्ययाह्यनयाराजन् वयंनृभ्योविशेषिताः । अविशिष्टाश्च देवानामनुभावप्रदर्शिनः ॥ ४६ ॥ गन्धर्वजानामश्वाना महंपुरुषसत्तम । भ्रातृभ्यस्तवतुभ्यञ्च पृथग्दाताशतंशतम् ॥ ४७ ॥ देवगन्धर्ववाहास्ते दिव्यवर्णामनोजवाः । क्षीणाक्षीणाभवन्त्येते नहीयन्तेचरंहसः ॥ ४८ ॥ पुराकृतंमहेन्द्रस्य वज्रंवृत्रनिवर्हणम् । दशधाशतधाचैव तच्छीर्णंवृत्रमूर्द्धनि ॥ ४९ ॥ ततोभागीकृतो देवैर्वज्रभागउपास्यते । लोकेयशोधनं किंचित्सावैवज्रतनुः स्मृता ॥ ५० ॥ वज्रपाणिर्ब्राह्मणःस्यात् क्षत्रंवज्ररथंस्मृतम् । वैश्यावदानवज्राश्च कर्मवज्रायवीयसः ॥ ५१ ॥ क्षत्रवज्रस्यभागेन अवध्यावाजिनःस्मृताः । रथाङ्गंवडवासूते शूराश्चाश्वेषुयेमताः ॥ ५२ ॥ कामवर्णाःकामजवाः कामतःसमुपस्थिताः । इतिगन्धर्वजाःकामं पूरयिष्यन्तिमेहयाः

उस व्रतको न करने परभी उसे तुमको दूंगा।४५।हम लोग उस विद्याके वलसेही अनुभव दर्शीहोकर मनुष्यों से विशिष्ट और देवोंकी सदृश हुएहैं हे पुरु श्रेष्ठ ! फिर मैं तुमको और तुम्हारे भाइयों मेंसे हर एकको सौ २ गन्धर्वज घोडे देताहूं सुन्दर रंग और मन के समान वेगवाले वे घोडे गंधर्वों और देवताओंके बाहन हैं उनको युवावस्था वा बुढापा नहींहै वे कभी वेगरहित नहीं होते।४८।पूर्वकाल में बृत्रासुरके मारनेके लिये देवराजमहेंद्र का वज्रबनाथा वोह वज्र बृत्रासुर के शिरपर गिरकर सहस्रभागों में बँटगया देवगण उन अनेक भागोंकी प्रशंसा करतेहैं इनतीनों लोकोंमें यशरूपी धन उस वज्रका एकभाग है ब्राह्मण गण जिसहाथ से अग्नि में आहुति चढाते हैं उनकावोह हाथ वज्रका एकभाग है वैश्यगण देवता और ब्राह्मणोंको जो दानदेकर सुखी होतेहैं उनकावोह दानभी वज्रका एकभाग है और शूद्रगण जो ब्राह्मणोंकी सेवाकर निज धर्मकी रक्षा करते हैं उनकी वोह सेवाभी उस वज्रका एकभाग है अतएव घोडेक्षत्रियों के वज्ररूपी रथके अंगहोने के हेतु मारने के अयोग्य कहे हैं पर रथके अंगघोडे घोडियों से उत्पन्नहोते हैं उन में जो घोडे गंधर्व लोकमें जन्मलेतेहैं वे सब शूरहैं५२ और वे मनमाने वेगवान और वशीभूत होतेहैं

men and nearly equal to gods by that knowledge alone. I shall moreover, give you and every one of your brothers a hundred Gandharv horses, of beautiful colour and speed like thought, those horses are used by gods and Gandharvas. They are not affected by age.48.In former days Indra had prepared a mace to kill Bratrasur. It was broken into a thousand fragments when it fell upon his head. The gods praise the fragments. All the glory in this world is a fragment of the mace, likewise, the hand of the Brahman offering libation into fire, the chariot of a Kshatrya going to destroy the enemy of gods and Brahmans, the donation which a Vaishya feels pleasure in giving the Brahmans and gods, and the attendance of a Shudra upon a Brahman by which he protects his religion.

॥ ५३ ॥ अर्जुन उवाच । यदिप्रीतेनमेदत्तं संशयेजीवितस्यवा । विद्याधनंश्रुतवापि न तद्गन्धर्वरोचये ॥ ५४ ॥ गंधर्व उवाच । संयोगोवैप्रीतिकरो महत्सुप्रतिदृश्यते । जीवितस्यप्रदानेन प्रीतोविद्यांददामिते ॥ ५५ ॥ त्वत्तोऽप्यहंग्रहीष्यामि अस्त्रमाग्नेय मुत्तमम् । तथैवयोग्यंबीभत्सोचिराय भरतर्षभ ॥ ५६ ॥ अर्जुन उवाच । त्वत्तोऽस्त्रे णवृणोम्यश्वान् संयोगःशाश्वतोऽस्तुनौ । सखेतद्ब्रूहिगन्धर्वयुष्मभ्योयद्भयंभवेत् ।५७। कारणंब्रूहिगन्धर्व किंतन्नेनस्मधर्षिताः । यांतोवेदविदःसर्वे सन्तोरात्राविरिन्दमाः ॥ ॥ ५८ ॥ गन्धर्व उवाच । अनग्नयोनाऽहुतयोनच विप्रपुरस्कृताः।यूयंततोधर्षिताःस्थ मयावैपाण्डुनन्दनाः ॥ ५९ ॥ यक्षराक्षसगन्धर्वाः पिशाचोरगदानवाः ।विस्तरंकुरुवंशस्य धीमन्तःकथयन्तिते ॥६०॥ नारदप्रभृतीनान्तु देवर्षीणांमयाश्रुतम् । गुणान्कथय

इस लिये मेरे उनघोड़ों से तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोगा अर्जुन ने कहा कि हे गंधर्व तुम जीवन नष्टहोने के भय से बचजाने पर प्रसन्नहोकर मुझको विद्या व घोडे देतेहो सो मैं उन्हें नहीं लियाचाहता।५४।गंधर्वने कहा कि महानुभावजनोंसे मिलनाही प्रीतियुक्त होता है विशेष मैं जीवन पाने से प्रसन्नभी हुआहूं इस लिये तुमको वोह विद्या देताहूं हे भरत श्रेष्ठ मैं जिसप्रकार तुमको वोह विद्या दूंगा वैसेही बदले में तुम से सनातन उत्तम अग्न्यास्त्र लूंगा।५६।अर्जुन ने कहा कि हे गंधर्व मैं अस्त्रदेकर तुम से घोडे चाहताहूं हमारी मित्रता बनी रहे हे गंधर्व यह बतलाओ कि गंधर्वकी जाति से मनुष्यकी जाति को क्यों भयहोताहै और यहभी बतलाओ कि हम शत्रुनाशी साधु और वेदज्ञहोनेपरभी रात को चलते हुए तुम से क्यों लांछित हुए गंधर्व ने कहा कि हे पांडवो तुम गुरु कुल से लौटआये हो परन्तु बिवाह नहीं कियाहै इस लिये बिन आश्रमहो और तुम्हारे साथ ब्राह्मणभी नहीं है इसीलिये मैंने तुमपर चढाई कीथी यक्ष, राक्षस, गंधर्व, पिशाच उरग और दानव यह सबधीमान हैं और कुरु वंशकी कथा कहते हैं।६०।मैंनेभी नारदादि

Horses, being a part of a Kshatrya's chariot which is a fragment of the mace, should not be destroyed. Horses are produced from mares.54.Those born in the country of Gandharvas are brave and possess immence speed. The horses given by me will be of much use to you." Arjun replied, "I shall not accept your horses and knowledge which you are ready to give me because you have been spared your life." The Gandharv said, "To see great beings is to love them, epecially, when I am overjoyed at the regaining of my life. I shall therefore, teach you the knowledge. I shall take your firearm in return for the knowledge." Arjun said, "I would take your horses in return. Let us remain friends. Let me know, please, why does fear arise to human beings from your tribe. Let us also know how did you insult us for our going at night while you knew that

तांवीर पूर्वेषांतवधीमताम् ॥ ६१ ॥ स्वयंचापिमया दृष्टश्चरता सागरांम्बराम् । इमां वसुमतींकृत्स्नांप्रभावः सुकुलस्यते ॥ ६२॥ वेदेधनुषि चाचार्य्यमभिजानामि तेऽर्जुन। विश्रुतंत्रिषुलोकेषु भारद्वाजंयशस्विनम् ॥ ६३ ॥ धर्मंवायुञ्चशक्रञ्च विजानाम्यश्विनौ तथा। पाण्डुञ्चकुरुशार्दूल षडेतानकुरुवर्द्धनान्। पितॄनेतानहंपार्थ देवमानुषसत्तमान्। ॥ ६४ ॥ दिव्यात्मानोमहात्मानः सर्वशस्त्रभृतांवराः। भवन्तोभ्रातरःशूराः सर्वेसुचरितव्रताः ॥ ६५ ॥ उत्तमाञ्चमनोबुद्धिं भवतांभावितात्मनाम्। जानन्नपिचवःपार्थ कृतवानिहधर्षणाम् ॥ ६६ ॥ स्त्रीसकाशेचकौरव्य नपुमानक्षन्तुमर्हति। धर्षणामात्मनःपश्यन् बाहुद्रविणमाश्रितः ॥६७॥ नक्तञ्चबलमस्माकं भूयएवाभिवर्द्धते। यतस्ततोमांकौन्तेय सदारंमन्युराविशत् ॥ ६८ ॥ सोऽहंत्वयेह विजितःसंख्ये तापत्यवर्द्धन। येनतेनेहविधिना कीर्त्यमानंनिबोधमे ॥ ६९ ॥ ब्रह्मचर्य्यपरोधर्मः सचापिनियतस्त्वयि। यस्मात्त

देवर्षियोंसे तुम्हारे ज्ञान शील अगले पुरुषोंके गुणकी कहानी सुनी है और स्वयम् इस सागर जडीकृतसा धरती में घूमताहुआ तुम्हारे वंशका प्रभाव देखता हूं हेअर्जुन ! वेद और धनुर्विद्या में तीनों लोकोंमें प्रशंसित तुम्हारे यशस्वी आचार्यपुत्र को भलीप्रकार जानताहूं हेकुरुव्याघ्र तुम्हारे ज्ञान शील पितृपुरुष कुरुवंश बढानेवाले देवों में श्रेष्ठ धर्म, पवन, इन्द्र और दोनों अश्विनीकुमार और मानवों में श्रेष्ठ पांडु इन छहों को विशेष रूपसे जानताहूं तुम पांचो भाई सम्पूर्ण अस्त्र विद्या में दक्ष अच्छे स्वभाववाले महात्मा सुचरित्रवान व्रतशील और शूरहो।६५।तुम्हारे मन और बुद्धि बहुतअच्छी और स्वभाव अति शुद्ध हैं हेपार्थ मैंने यह सब जानने परभी तुमको लांछन कियाथा क्योंकि भुजबलयुक्त कोई पुरुष स्त्री के सामने अपने अपमान को नहीं सहसक्ता विशेष रात्रि समय हमारा बल बहुत बढजाता है इस लिये मैं स्त्रीके सहित क्रोध के वश में होगया था मैं जिस विधि के अनुसार युद्ध में परास्तहोगयाहूं तुम से कहताहूं।६९। सुनो हे पार्थ

we were Brahmcharis and scholars of the Vedas." The Gandharv replied, "You have returned, Pandavas, from the house of your preceptor, but you are not married and have no Brahman as your companion. I did, therefore, assault you. All the Yakshes, Rakshases, Pishachas, Urags and Danavas are wise and know the history of the Kuru family. I have heard from Narad and other Devarshis the chronicles of your forefathers and have received an occular proof of your valour on this very ground. I know the famous son of your preceptor well. Your progenitors the gods Dharm, Pavan, Indra, and both Ashwini kumars as well as Pandu, the best of human beings, are especially known to me. You five brothers are dexterous in the knowledge of arms, goodnatured, good mannered and vowobserving.65.Your hearts and intellects

स्मादहंपार्थरणेऽस्मिविजितस्त्वया ॥ ७० ॥ यस्तुस्यात्क्षत्रियः कश्चित्कामवृत्तःपरन्तप।
नक्तञ्चयुधियुध्येत न सजीवेत्कथंचन ॥ ७१ ॥ यस्तु स्यात्कामवृत्तोऽपि पार्थब्रह्मपु-
रस्कृतः। जयेन्नश्चरानसर्वान् सपुरोहितधूर्गतः ॥ ७२ ॥ तस्मात्तापत्ययत्किञ्चिन्नृणां
श्रेय इहेप्सितम्। तस्मिन्कर्मणियोक्तव्या दान्तात्मानःपुरोहिताः ॥ ७३ ॥ वेदेषडङ्ग
निरताः शुचयःसत्यवादिनः। धर्मात्मानःकृतात्मानः स्युर्नृपाणांपुरोहिताः ॥ ७४ ॥
जयश्चनियतोराज्ञः स्वर्गश्चतदनन्तरम्। यस्यस्याद्धर्मविद्वाग्मीःपुरोधाःशीलवानशुचिः
।७५।लाभंलब्धुमलब्धुंवा लब्धंवापरिरक्षितुम्।पुरोहितंप्रकुर्वीतराजागुणसमन्वितम्७६
पुरोहितमतेतिष्ठेद्य इच्छेद्भूतिमात्मनः। प्राप्तुंवसुमतींसर्वां सर्वशःसागराम्बराम् ॥७७॥

ब्रह्मचर्य परमधर्म है तुम उस धर्म को अवलंबन कियेहो इस लिये तुम से हारगया। हे शत्रुनाशी! कोई विवाह कियाहुआ क्षत्रिय यदि रात्रि काल में हम लोगोंसे लडे तो वोह किसीप्रकार जीवित नहीं रहसक्ता विवाह करलेने परभी जो क्षत्रिय वेदसे अलंकृतहोकर पुरोहितोंपर सब कार्य का भार सौंप देताहै वोह युद्धमें निशाचरोंको परास्त करसक्ताहै।७२।इस लिये मनुष्योंको हरएक शुभकर्म में दमगुणयुक्त पुरोहित नियुक्तकरना चाहिये हे मित्र जो वेद और शिक्षा आदि छः अंगों में पण्डित पवित्र वंशी सत्यवादी धर्मात्मा और जितेन्द्रियहैं वही राजपुरोहितहोने के योग्यहैं।७४।जिस राजाके धर्मज्ञ वाक्निपुण, सुशील, सुवंशी पुरोहितहोते हैं उसकी इस लोक में सदा जय और परलोक में स्वर्ग प्राप्तिहोती है राजाको न मिलेहुए पदार्थके मिलने और मिलेहुए पदार्थकी रक्षाके लिये गुणवान पुरोहित नियुक्त करना चाहिये।७६। जो राजा अपने लिये ऐश्वर्यकी इच्छा करते हैं उनको सागरसहित सम्पूर्ण पृथ्वी प्राप्तकरने के निमित्त सबप्रकार से पुरोहित

are good and you are brave. I insulted you in spite of my knowing all this, for, one who possesses strength of arms cannot bear insult before women. Our power increases by night and I was, therefore, enraged in the presence of women. I shall tell you how I was defeated in battle by you.69.Celibacy is a very blessed state. You are celibates and I was therefore defeated by you. A married Kshatrya would not escape with his life if he fought with us by night. Even a married Kshatrya learned in the Vedas and accompanied by a priest can defeat us in battle.72.(Human beings should therefore employ a good priest on all occasions.) The priests of kings should be learned in the Vedas and their branches, of good family, speakers of truth, virtuous and having control over their senses. Kings having such priests are victorious in this world and gain heaven in their next life. A king should employ a virtuous priest to gain an object and to protect what is gained. Those who wish for wealth and conquest

नहिकेवलशौर्य्येण तापत्याभिजनेनच। जयेद्ब्राह्मणः कश्चिद्भूमिंभूमिपतिःक्वचित् ७८॥ तस्माद्देवंविजानीहि कुरूणांवंशवर्द्धन। ब्राह्मणप्रमुखराज्यं शक्यंपालयितुंचिरम्॥७९॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि गन्धर्वपराभवे एकसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः॥ १७१॥

अर्जुन उवाच। तापत्यइति यद्वाक्यमुक्तवानसि मामिह। तदहंज्ञातुमिच्छामि तापत्यार्थविनिश्चितम्॥१ तपतीनामकाचैषा तापत्यायत्कृतेवयम्। कौन्तेयाहिवयंसाधो तत्त्वमिच्छामिवेदितुम्॥२ "वैशम्पायनउवाच। एवमुक्तःसगन्धर्वः कुन्तीपुत्रंधनञ्जयम्। विश्रुतांत्रिषुलोकेषु श्रावयामासवैकथाम्॥३॥ गन्धर्व उवाच। हन्ततेकथयिष्यामि कथामेतांमनोरमाम्। यथावदखिलांपार्थ सर्वबुद्धिमतांवर॥ ४ ॥ उक्तवानस्मियेन त्वांतापत्यइतियद्वचः। तत्तेऽहंकथयिष्यामि शृणुष्वैकमनाभव॥५॥ यएषदिविधिष्ण्येन

के मतानुसार रहनाचाहिये कोई राजा ब्राह्मण वर्जितहोकर केवल शूरता और अभिजात्य से पृथ्वी को नहीं जीतसक्ता अतएव निश्चय जानना कि जिस राज्यकी कार्य चिन्ता में ब्राह्मणकी प्रधानता रहती है उस राज्यकी सदा रक्षाहोती है॥ ७९॥

अध्याय १७२॥

अर्जुन ने कहा कि हे मित्र तुमने मुझको तापत्य कहा मैं जानना चाहताहूं कि तापत्य शब्द का अर्थ क्या है हम कुंतीकी सन्तान है इस हेतु कौन्तेय करके प्रख्यातहैं पर तपती किसका नाम है जिससे हम तापत्य कहके पुकारे जासकें इसका सच्चा तत्व जानने की इच्छाहै।२।वैशम्पायन ने कहा कि गंधर्वराज कुंती पुत्र धनंजयकी यहबात सुनकर उन से लोकों में प्रसिद्ध इस कथा को कहनेलगे गंधर्व ने कहा कि यह मनोहर कथा तुम से आद्यो पांत कहता हूं जिस कारण तुमको तापत्य कहा उसकी कथा विस्तृत रूप से कहता हूं ध्यान लगाकर सुनो।५। जिसदेवताने अपने तेज से आकाश मण्डल को भरलियाहै उसकी तीनों

should act upon the advice of priests. No king can conquer the earth by his bravery alone. The kingdom which is presided by a Brahman is always safe.79.

CHAPTER CLXXII

Arjun said, "You call me Tapatya friend. Please let me know the meaning of the word. We are the offspring of Kunti and are, therefore, called Kaunteyas. Who was Tapati after whom you have called me Tapatya? I wish to know the truth."2. Vaishampayan said that the Gandharv having heard this from Arjun informed him with the following account, saying, "I tell you this story from beginning to end. I shall tell you the reason why of the word Tapatya:5. The god who has filled all this sky with his light had a daughter named Tapati. She was the younger sister to

नार्कंव्याप्नोतितेजसा । एतस्यतपतीनाम बभूवसदृशीसुता ॥ ६ ॥ विवस्वतोवैदेवस्य
सावित्र्यवरजाविभो । विश्रुतात्रिषुलोकेषु तपतीतपसायुता ॥ ७ ॥ नदेवीनासुरीचैव
नयक्षीनचराक्षसी । नाप्सरानचगन्धर्वी तथारूपेणकाचन ॥ ८ सुविभक्तानवद्याङ्गी
स्वसितायतलोचना । स्वाचाराचैवसाध्वीच सुवेशाचैवभामिनी ॥ ९ ॥ नतस्याः
सदृशंकंचित्त्रिषुलोकेषुभारत । भर्त्तारंसविताथमेने रूपशीलगुणश्रुतैः ॥ १० ॥ सम्प्रा
प्तयौवनां पश्यन्देयां दुहितरन्तुताम् । नोपलेभेततःशान्ति सम्प्रदानंविचिन्तयन् ।११।
अथर्क्षपुत्रःकौन्तेय कुरूणामृषभोवली । सूर्य्यमाराधयामास नृपःसम्वरणस्तदा ।१२।
अर्घ्यमाल्योपहाराद्यैर्गन्धैश्च नियतःशुचिः । नियमैरुपवासैश्च तपोभिर्विविधैरपि ।१३।
शुश्रूषुरनहंवादी शुचिःपौरवनन्दनः । अंशुमन्तंसमुद्यन्तं पूजयामासभक्तिमान ।१४।
ततःकृतज्ञंधर्मज्ञं रूपेणासदृशंभुवि । तपत्याःसदृशंमेने सूर्य्यःसम्वरणंपतिम् ॥ १५ ॥

लोकों में प्रसंशित तपस्विनी तपती नाम वाली कन्या थी वोह सावित्री की छोटीवहिनथी तपनदेव जैसे रूपवानहैं वोह तपतीभी वैसेही रूपवतीथी कोई उसके रूपकी शोभा से जान नहीं सक्ताथा कि वोह देवकन्या, असुर कन्या, यक्ष कन्या, गंधर्व कन्या, राक्षस-कन्या, अथवा वह अप्सराथी।१४।उसवालाकी दोनोंआंखे अच्छी काली और वडीथीं और सव अंग सुडौल और निन्दा के अयोग्य थे हे भारत ! उसके पिता सविता ने उस भामि नीको अति रूपवती सती और सुचारिणी देखकर जाना कि उसके सदृश रूपगुण शील और विद्यायुक्त योग्य वर तीनोंलोकोंमें नहींहै।१०।अनन्तर यथा कालमें कन्याको यौवना वस्था में देखकर सम्प्रदान करने के लिये योग्य वरकी चिन्ता करने लगे उन दिनों ऋक्ष पुत्र कुरु श्रेष्ठ बलवान राजा सम्पूर्ण सूर्य की उपासना किया करते थे विना अहं-कार पौरव नंदन संवर्ण सेवा शील नियम युक्त और शुचि होकर शुद्ध चित्त से भक्ति पूर्वक नाना तपस्या उपवास और नियम तथा अर्घ, माला, गंध और दूसरे उपहार देकर दीप्यमान सूर्यकी नित्य उपासना करतेथे सूर्यदेवने उनको कृतज्ञ, धर्मज्ञ और अप्रतिम रूपवान

Savitri and beautiful like her father, the Sun. No one could tell from her great beauty whether she was the daughter of a god, Asur, Yaksh, Gandharv, or Rakshas or whether she was an apsara. 8 Her eyes were large. and black and limbs symmetrical, well-proportioned and blameless. Her father, finding her very beautiful and virtuous, knew that she had no equal, throughout the world in beauty, virtue and learning. In time her father thought of her marriage but could not make up his mind. In those days Sambarn of the Kuru family was worshipping the sun. He was pridless, diligent, vow- observing and ascetic and worshipped the sun with all sorts good flowers, scents and other things. Surya selected him to be

दातुमैच्छत्ततःकन्यां तस्मैसम्वरणायताम् । नृपोत्तमायकौरव्य विश्रुताभिजनायच
॥ १६ ॥ यथाहिदिविदीप्तांशुः प्रभासयतितेजसा । तथासुविमहीपालो दीप्यासम्व
रणोऽभवत् ॥ १७ ॥ यथार्च्चयन्तिचादित्यमुद्यन्तं ब्रह्मवादिनः । तथासम्वरणंपार्थ
ब्राह्मणावरजाःप्रजाः ॥ १८ ॥ ससोममतिकान्तत्वादादित्यमतितेजसा । बभूवनृप-
तिःश्रीमान् सुहृदांदुर्हृदामपि ॥ १९ ॥ एवंगुणस्यनृपतेस्तथावृत्तस्य कौरव । तस्मैदा
तुंमनश्चक्रे तपतींतपनःस्वयम् ॥ २० ॥ सकदाचिदथोराजा श्रीमानमितविक्रमः । च-
चारमृगयांपार्थ पर्वतोपवनेकिल ॥ २१ ॥ चरतोमृगयांतस्य क्षुत्पिपासासमन्वितः ।
ममारराज्ञःकौन्तेय गिरावप्रतिमोहयः ॥ २२ ॥ समृताश्वश्चरन् पार्थ पद्भ्यामेवगिरौ
नृपः । ददर्शासदृशींलोके कन्यामायतलोचनाम् ॥ २३ ॥ सएकएकामासाद्य कन्यां
परबलार्दनः । तस्थौनृपतिशार्दूलः पश्यन्नविचलेक्षणः ॥ २४ ॥ सहितांतर्कयामास

जानकर तपती के योग्य पति समझा हे कौरव्य उस के अनन्तर उन्होंने उस प्रख्यात नृपोत्तम सम्वरणहीको कन्या सम्प्रदान करनेकी इच्छाकी हेपार्थ ! जिसप्रकार प्रकाशित किरणयुक्त दिवाकर अपने प्रकाश से आकाश मंडलको प्रकाशित करते हैं वैसेही भूपाल सम्वगरने अपने तेज से पृथ्वीको प्रकाशित कियाथा।१७।और जिसप्रकार सूर्यके निकलने पर ब्राह्मण लोग उनकी उपासना करतेहैं वैसेही ब्राह्मण क्षत्रिय आदि प्रजा भूपाल सम्बरण की उपासना करते थे वोह श्रीमान राजा मित्रों के लिये चन्द्रमाकी नाईं और शत्रु के लिये तेजवन्त आदित्यकी नाईं थे ।१९ हे कौरव ! ऐसे गुणशील और चरित्रवान उस भूपालको सूर्य देवने तपती नामवाली कन्या देनी चाहीथी हेपार्थ ! एक समय अति विक्रमी भूपाल संवरण मृगयाके लिये पर्वतके निकट के बन में टहलरहे थे ।२१। कि उससमय उनके अनुपम अश्वने भूख प्याससे कातरहोकर प्राणछोडा तब वोह बाहन के विना पैदलही पर्वतपर चलनेलगे तब प्रशस्तनेत्रा अनुपम रूपवाली एककन्या उनको दिखलाईदी ।२३। शत्रुनाशी भूप श्रेष्ठ उस अकेली कन्याको देखकर उसकी ओर देखते

---

her daughter's husband. He then wished to give Sambarn his daughter in marriage. King Sambarn had illumined the world by his glory as the sun illumines the sky. 17. He was worshipped by his subjects as the sun is worshipped by Brahmans at the time of rising. He was milder than the moon for his friends and hotter than the sun to his enemies. Such was the monarch whom the sun had desired to give his daughter in marriage. One day, the glorious monarch, Sambaran, was roaming in search of deer in a mountain forest when his good horse died of extreme hunger and thirst. So he had to walk on foot, In the way he saw a girl of matchless beauty. 23. Seeing her alone be stood gazing at her and thought that

रूपतोनृपतिःश्रियम् । पुनःसन्तर्कयामास रवेर्भ्रष्टामिवप्रभाम् ॥ २५ ॥ वपुषावर्च्चसा चैव शिखामिवविभावसोः । प्रसन्नत्वेचकान्त्याच चन्द्ररेखामिवामलाम् ॥ २६ ॥ गिरिपृष्ठेतुसायस्मिन् स्थितास्वसितलोचना । विभ्राजमानाशुशुभे प्रतिमेवहिरण्मयी ॥ २७ ॥ तस्यारूपेणसगिरिर्वेशेणच विशेषतः । ससवृक्षक्षुपलतो हिरण्मयइवाभवत् ॥ २८ ॥ अवमेनेचतांदृष्ट्वा सर्वलोकेषुयोषितः । अवाप्तंचात्मनोमेने सराजाचक्षुषःफलम् ॥२९॥ जन्मप्रभृति यत्किंचिद्दृष्टवान् समहीपतिः । रूपंनसदृशं तस्यास्तर्कयामासकिंचन ॥ ३० ॥ अस्यानूनंविशालाक्ष्याः सदेवासुरमानुषम । लोकंनिर्मथ्यधात्रेदं रूपमाविष्कृतंकृतम् ॥ ३१ ॥ एवंसन्तर्कयामास रूपद्रविणसम्पदा ! कन्यामसद्दर्शीलोके नृपःसम्वरणस्तदा ॥ ३२ ॥ तांचदृष्ट्वैवकल्याणीं कल्याणाभिजनोनृपः ।

खडेरहे और उसकीसुन्दरता देखकर समझा कि वोह हरिकी प्यारी लक्ष्मीहोगी अथवा सूर्यकी किरण पृथ्वीपर गिरकर उस कन्याके स्वरूपमें प्रकाशमान हुईहोगी उसबालाकी तेजभरी देहसे मानो अग्निकी शिखा और प्रसन्नता तथा कान्तिसे मानो चन्द्रकी रेखा प्रकाशमान होरहीथी।२६। वास्तव में वोह सुलोचना जिस पर्वतपर खडी होकर प्रकाशमयी सुवर्णकी प्रतिमाकीसी शोभा देरहीथी तरु, लता और गुल्म आदि सहित वोह पर्वत उस कन्याकी अनुपम शोभा और भेषकी बनावटसे सुवर्णका प्रतीतहोने लगा।२८। राजा उसको देखकर मनहीमन में तीनों लोकों की स्त्रियोंका अनादर करने लगे और नेत्रोंको कृतार्थ समझा विचारकर देखा कि जन्म से पश्चात् जो सब सुन्दर २ पदार्थ देखेथे उन में से एकभी इसकन्या के समान रूपयुक्त नहीं है।३०।उससुन्दरीको देखतेही उस के गुण जाल में महीपाल का चित्त और नेत्र फँसगये और उनको वहां से हटनेकी सामर्थ नहीं रही चेतना जाती रही फिर यह समझा कि विधाताने सुर, असुर और मनुष्य सबको मथन करके इस विशालाक्षी का रूप बनाया है क्योंकि त्रैलोक्य भर में इस के रूप के उपमाकी शोभा नहींहै।३२।उस कल्याणी को देखतेही कुलीन राजा काटनेवाले मदनबाण

she must be either the godess Lakshmi, or a ray of the sun fallen on earth. Her bright body shed rays like the sun and the beauty of her face was like the mild moon beam. 26. The mountain on which she stood like a bright statue of gold had, together with its trees and creepers, imbibed of the golden hue of that girl of uncommon beauty. Seeing her, the king in his heart began to despise all the other women of the world and thought that his eyes were fortunate. He thought that of all the beautiful things that he had seen from his infancy this girl was the best. 30 His heart was captivated by her beautiful form so that he had no power to move and could not understand what to do. Then he thought that the Maker had made the

जगाममनसाचिन्तां कामबाणेनपीडितः ॥ ३३ ॥ दह्यमानःसतीव्रेण नृपतिर्मन्मथाग्नि-
ना । अप्रगल्भांप्रगल्भस्तां तदोवाचमनोहराम् ॥ ३४ ॥ कासिकस्यासिरम्भोरु कि
मर्थंचेहतिष्ठसि । कथंचनिर्ज्जनेऽरण्ये चरस्येकाशुचिस्मिते ॥ ३५ ॥ त्वंहिसर्वानवद्या
ङ्गी सर्वाभरणभूषिता । विभूषणमिवैतेषां भूषणानामभीप्सितम् ॥ ३६ ॥ नदेवींना
सुरींचैव नयक्षींनचराक्षसीम् । नचभोगवतींमन्ये नगन्धर्वींनमानुषीम् ॥ ३७ ॥ या
हिदृष्टामयाकाश्चिच्छ्रुता वापिवरांगनाः । नतासांसदृशींमन्ये त्वामहंमत्तकाशिनि ।३८।
दृष्ट्वैवचारुवदने चन्द्रात्कान्ततरंतव । वदनंपद्मपत्राक्षं मांमथ्नातीवमन्मथः ॥ ३९ ॥
एवंतांसमहीपालो वभाषेनतुसातदा । कामार्त्तंनिर्ज्जनेऽरण्ये प्रत्यभाषतकिञ्चन ॥४०॥
ततोलालप्यमानस्य पार्थिवस्यायतेक्षणा । सौदामिनीवचाभ्रेषु तत्रैवान्तरधीयत ॥
॥४१॥ तामन्वेष्टुंसनृपतिः परिचक्रामसर्वतः । वनंवनजपत्राक्षीं भ्रमन्नुन्मत्तवत्सदा

सेघायलहोकर शोचनेलगा और कठोर कामाग्निसे जलकर उसमनोहर कन्यासे कहनेलगा कि तुम कौन किसकी बेटीहो औरयहां क्यों खडीहो।३५।तुमको सर्वांग सुन्दरी और सब आभूषणों से सजीहुई देखताहूं। हे सुन्दरि ! तुम्हीं इन सब आभूषणोंके प्रार्थना योग्य आभूषण कीभांति हुईहो तुम देवकन्या, यक्षकन्या, राक्षस कन्या,नागकन्या, गंधर्वकन्या, वा मानवकन्या जाननहीं पडती हो।३७।हे मदगर्विते मैंने जितनीस्त्रियां देखी वा जिनकी कथा सुनी है उन में कोई तुम्हारे सदृश जान नहीं पडती है सुमुखि पद्मपलाश सुशो-भित आंखोंवाली,चन्द्रमासेभी कोमल तुम्हारेमुखको देखकर मैं मदनसे मथाजाताहूं३९। महीपाल काम से पीडितहोकर निर्जन वन में उस बालासे इसप्रकार कहनेलगे पर उस कन्या ने कुछभी उत्तर नहीं दिया राजाके बार २ उसप्रकार कहने पर वोह प्रशस्तनेत्रा इसप्रकार अन्तर्हितहुई कि जिसप्रकार विजली मेघ में छिपजाती है।४१।भूपाल उस पद्म पलाश लोचना बालाको ढूंढने के लिये बावलेकी भांति उस वन के चारों ओर घूमने

girl out of an essence of gods, Asurs and human beings and there was none her equal in beauty in the three worlds. He was wounded by the piercing arrow of love and he said to her in soft words, "Who are you and whose daughter ? 35. How do you live alone in this desolate forest ? I see that your limbs are symmetrical and you are decked with ornaments which are rather in need of you than you in need of them. You donot look like the daughter of a god, Yaksh, Rakshas, Nag, Gandharv, or man. None of the women, that I have seen or heard of, are like you. I am distressed by love at seeing your eyes like the lotus and your face like the moon." The love-striken king, spoke to that young woman in this strain. 40. But she made no reply and on the words being repeated several times, she disappeared like the lightning. The king began to roam child-

॥४२॥ अपश्यमानःसतुतांबहुतत्रविलप्यच।निश्चेष्टःपार्थिवश्रेष्ठो मुहूर्त्तंसव्यतिष्ठत्।४३।
इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि तपत्युपाख्याने द्विसप्तत्यधिकशतोऽध्यायः॥ १७२ ॥
गन्धर्व उवाच। अथ तस्यामदृश्यायां नृपतिःकाममोहितः। पातनःशत्रुसङ्घानां पपातधरणीतले ॥ १ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमावथ साचारुहासिनी। पुनःपीनायतश्रोणी दर्शयामासतं नृपम्। ॥२॥ अथावभाषे कल्याणि वाचामधुरयानृपम्। तंकुरूणां कुलकरं कामाभिहतचेतसम् ॥ ३ ॥ उवाच मधुरंवाक्यं तपतीप्रहसन्निव। उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रन्ते नत्वमर्हस्यरिन्दम ॥ ४ ॥ मोहंनृपतिशार्दूल गन्तुमाविष्कृतःक्षितौ। एवमुक्तोऽथनृपतिर्वाचा मधुरयातदा ॥ ५ ॥ ददर्शविपुलश्रोणीं तामेवाभिमुखेस्थिताम्। अथ तामसितापाङ्गीमाबभाषे सपार्थिवः ॥ ६ ॥ मन्मथाग्निपरीतात्मा सन्दिग्धाक्षरया गिरा। साधुत्वमासितापाङ्गी कामार्त्तंमत्तकाशिनि ॥ ७ ॥ भजस्वभजमानं मांप्राणा

लगे इस के अनन्तर वोह उसको न देखकर अनेक प्रकारसे विलाप करने के पश्चात् क्षणभर चुपहोरहे ॥ ४३ ॥

अध्याय १७३ ॥

गंधर्व ने कहा कि अनन्तर उस नारीके अदृश्य होनेपर शत्रुकुलनाशी भूपाल काम से मोहितहोकर धरतीपर गिरपडे तब वोह सुन्दर तपती फिर उनको दिखाईदी।२।और कामवश कुरुवंशी श्रेष्ठ भूपाल से मुसकरातीहुई मीठी बातोंमें कहनेलगी कि हे शत्रुनाशी उठो उठो तुम्हारा मंगलहोवे।४। तुम भूमण्डल भरमें प्रसिद्ध प्रधान भूपहो तुमको मोहवशहोना नहीं चाहिये तब राजा ने यह मीठीबात सुनकर उसको अपने सामने देखा अनन्तर मदनसे जलेहुए चित्तवाला वोह भूपाल उस कामिनीसे तुतलाता हुआ बोला।६।कि हेनीलनेत्रे मैं कामवशहोकर तुम्हारी भजना कररहाहूं तुम मुझपर साधुभाव

like throughout the forest in search of that lotus eycd one. He began to weep when he did not find her. He was ealm after some time.

CHAPTER CLXXIII

The Gandharv said that on the disappearance of the woman the king fell down senseless on the ground. The beautifnl Tapati then showed herself and said to the king with a sweet smile "Rise, destroyer of enemies. May you be happy. 4. A great king like you should not become so insensible." The king hearing these sweet words opened his eyes on the beautiful form. Burning with the fire of love, the king spoke to the woman in a faltering tone, saying "I am burning by the fire your love, O blue-eyed one! Be kind to me. I am dying. Love has wounded my heart with five swift

हिप्रजहन्तिमाम् । त्वदर्थंहिविशालाक्षि मामयंनिशितैःशरैः ॥८॥ कामःकमलगर्भाभे प्रतिविध्यन्नशाम्यति । दष्टमेवमनाक्रन्दे भद्रेकाममहाहिना ॥ ९॥ सात्वंपीनायतश्रोणि मामाभुहिवरानने । त्वदधीनाहिमप्राणाः किन्नरोद्गीतभाषिणि ॥ १० ॥ चारुसर्वानवद्याङ्गि पद्मेन्दुप्रतिमानने । नह्यहंत्वदृतेभीरु शक्ष्यामिखलुजीवितुम् ॥ ११ ॥ कामः कमलपत्राक्षि प्रतिविध्यतिमामयम् । तस्मात्कुरुविशालाक्षि मय्यनुक्रोशमंगने ॥१२॥ भक्तंमामसितापाङ्गि नपरित्यक्तुमर्हसि । त्वंहिमांप्रीतियोगेन त्रातुमर्हसिभाविनि ॥१३॥ त्वद्दर्शनकृतस्नेहं मनश्चलतिनेभृशम् । नत्वांदृष्ट्वापुनरन्यां द्रष्टुंकल्याणिरोचते ॥ १४ ॥ प्रसीदवशगोऽहंते भक्तंमांभजभाविनि । दृष्ट्वैवत्वांवरारोहे मन्मथोभृशमङ्गने ॥ १५ ॥ अन्तर्गतंविशालाक्षि विध्यतिस्मपतत्रिभिः । मन्मथाग्निसमुद्भूतं दाहंकमललोचने ।१६। प्रीतिसंयोगयुक्ताभिरद्भिः प्रह्लादयस्वमे । पुष्पायुधंदुराधर्षं प्रचण्डशरकार्मुकम ।१७।

से प्रसन्नहोओ मेराप्राण निकलरहाहै हे विशालाक्षि मदन मुझको तुम्हारे लियेही पांच वाण से विद्ध कररहाहै ।८। किसीप्रकार शांत नहीं होता हेभद्रे प्रफुल्ल चित्त अनंगरूपी घोर भुजंग मुझको काटरहाहै तुम उस कठोर सर्प विष से मेरी रक्षाकरो हेकिन्नरगीतानुरूप भाषिणी मनोहर सर्वांग सुंदरी पंकजानने चन्द्रबदने अब मेरा जीवन तुम्हारेहाथ मेंहै।११। हेभीरु तुम्हारे विना मैं नहीं जीसकूंगा । हेपद्मपत्राक्षि ! रतिपति मुझको बहुत विद्ध कररहाहै हेविशालाक्षि मुझपर कृपाप्रकटकरो।१२। मैं तुम्हारा भक्तहूं मुझको त्याग देना तुमको उचित नहीं है हे भामिनि प्रीतियोगसे मेरी रक्षाकरो क्योंकि तुम्हें देखकर स्नेहसे मेरा चित्त विह्वलहोरहा है हे कल्याणि तुम्हारी सुंदरता देखकर दूसरी स्त्री को देखनेकी मेरीअभिलाषा नहीं होती।१४।हे भामिनि मैं तुम्हारे वश में हूं तुम प्रसन्न होओ इस अधीन भक्तजनकी भजनाकरो हे वरारोहे विशालाक्षि मदनने कठोर वाणों से मेरा मर्म भेदन कियाहै हेकमललोचने मेराशरीर कामाग्नि से जलरहाहै।१६।तुम प्रेम संयोगके जल से उसको ठंढा करदो हेभाविनि तुम्हारे दर्शन से उपजाहुआ कठिन कामदेव कठोर

---

arrows. 8 It has no rest anyhow. The serpent of love is biting my heart. Protect me from the venom of that serpent. *My* life is in your hands, O beautiful one. 11. I shall not live without you. I am much distressed by love. Be kind to me. You should not leave me. You must protect me by your love, for, my mind is distressed by love. Having seen your beauty I wish no longer to see any other woman. 14. I am in your power. Be kind to me, your humble lover. *My* heart is wounded by the hard arrows of love. *My* body is burning with the fire of love. Cool it by the water of your love. The god of love has entered my heart at the sight of your beauty and has pierced my heart with five arrows. Cure it by self sacrifice. 18

त्वद्दर्शनसमुद्भूतं विध्यन्तंदुःसहैःशरैः। उपशामयकल्याणि आत्मदानेनभाविनि ।१८।
गान्धर्वेणविवाहेन मामुपैहिवराङ्गने । विवाहानांहिरम्भोरु गान्धर्वःश्रेष्ठउच्यते । १९।
तपत्युवाच । नाहमीशात्मनोराजन् कन्यापितृमतीह्यहम् । मयिचेदस्तिते प्रीतिर्याचस्व
पितरंमम ॥ २० ॥ यथाहितेमयाप्राणाः संगृहीतानरेश्वर । दर्शनादेवभूयस्त्वं तथा
प्राणान्ममाहरः ॥ २१ ॥ नचाहमीशा देहस्यतस्मान्नृपतिसत्तमम् । समीपंनोपगच्छामि
नस्वतन्त्राहियोषितः ॥२२॥ काहिसर्वेषुलोकेषु विश्रुताभिजनंनृपम् । कन्यानाभि-
लषेन्नाथं भर्त्तारंभक्तवत्सलम् ॥ २३ ॥ तस्मादेवंगतेकाले याचस्वापितरंमम ।
आदित्यंप्रणिपातेन तपसानियमेनच ॥ २४ ॥ सचेत्कामयतेदातुं तवमामारिसूदन ।
भविष्याम्यहंते राजन् सततंवशवर्त्तिन ॥ २५ ॥ अहंहितपतीनाम सावित्र्यवरजा
सुता । अस्यलोकप्रदीपस्य सवितुःक्षत्रियर्षभः ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि तपत्युपाख्याने त्रिःसप्तत्याधिकशततोऽध्यायः ॥१७३॥

पंचवाणोंसे मुझको विद्ध कररहा है तुम आत्मदान कर उसको आरोग्य करो।१८।गांधर्व
विधि के अनुसार मुझसे विवाह करलो क्योंकि कहा है कि सब बिवाहोंसे गांधर्व विवाह
ही श्रेष्ठ है तपती ने कहा कि हे महाराज आत्मदान में मेरा अधिकार नहीं है क्योंकि
मेरेपिता विद्यमान हैं यदि मुझपर तुम्हारे चित्तकी प्रीतिहो तो पितासे प्रार्थनाकरो ।२०।
हेनरनाथ मैंने जिसप्रकार तुम्हारा चित्त चुरालिया है तुमनेभी देखतेही वैसे मेरेहृदयपर
कोमल वर्ताव कियाहै हेनृप श्रेष्ठ कोई स्त्री स्वाधीन नहीं है सो अपनी देहपर अधिकार
न होनेसे मैं तुम्हारे पास नहीं गई।२२।नहीं तो जिनकी कुलीनता सब लोकोंमें प्रशंसित
है उस भक्त प्यारे लोकनाथ भूपाल को कौन कन्या पति बनाना नहीं चाहतीहोगी
अतएव तुम योग्य समय आने पर मेरेपिता आदित्यकी प्रणाम और नियम पूर्वक उपा-
सना करके उनसे मुझे मागना।२४।हे शत्रुनाशी महाराज यदि पिता मुझको दान करने
को सम्मतहोवें तो मैं सदा तुम्हारी बशीभूत रहूंगी हेक्षत्रिय वर मेरा नाम तपती है
और लोक प्रकाशक आदित्यकी कन्या और सावित्रीकी छोटी वहिनहूं ॥ २६ ॥

Marry me according to theGandharv form which is said to be the best of all." Tapati replied, "I can not give myself. My father is alive. Ask me from him if you love me. Our love is mutual. Women are not independent. I could not come to you for that reason. Otherwise what girl would not desire to marry such a great king whose family is praised by all the world? You should, therefore, at the proper time, ask my father to give me in marriage. I shall always remain obedient to you if my father agrees to give me to you. My name is Tapati. O best of Kshatryas! I am the daughter of Aditya, the illuminater of the world, and the younger sister of Savitri." 26.

गन्धर्व उवाच । एवमुक्त्वाततस्तूर्णं जगामोर्द्धमनिन्दिता । सतुराजापुनर्भूमौ
तत्रैवनिपपातह । अन्वेषमाणःसवलस्तं राजानंनृपोत्तमम् । अमात्यःसानुयात्रश्चतंददर्श
महावने ॥ २॥ क्षितौनिपातितंकाले शक्रध्वजमिवोच्छ्रितम् तंहिदृष्ट्वामहेष्वासं निरस्तं
पतितंक्षुति ॥ ३ ॥ बभूवसोऽस्यसचिवः संप्रदीप्तइवाग्निना । त्वरयाचोपसङ्गम्य स्नेहा
दागतसम्भ्रमः ॥ ४ ॥ तंसमुत्थापयामास नृपतिंकाममोहितम् । भूतलाद्भूमिपालेशं
पितवपतितं सुतम् ॥ ५ ॥ प्रज्ञयावयसाचैव वृद्धःकीर्त्यानयेनच । अमात्यस्तंसमुत्था-
प्यवभूवविगतज्वरः ॥६ ॥ उवाचचैनंकल्याण्यावाचामधुरयोत्थितम् ।माभैर्मनुजशार्दूल
भद्रमस्तुतवानघ ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासापरिश्रान्त तर्कयामासवैनृपम् । पतितंपातनंसंख्ये
शात्रवाणांमहीतले ॥ ८ ॥ वारिणाचसुशीतेन शिरस्तस्याभ्यषेचयत् । अस्फुटन्मुकुटं
राज्ञः पुण्डरीकसुगन्धिना ॥ ९ ॥ ततःप्रत्यागतप्राणस्तद्बलं बलवान्नृपः । सर्वंविसर्ज्ज-

---

अध्याय ॥ १७४ ॥

गंधर्व ने कहा कि अनिन्दित रूपवती तपती यह कहकर उसीक्षण ऊपरको चढगई राजा फिर उस भूमिपर गिरपड़ा इधर मंत्री ने साथियों और सम्पूर्ण सेनाके साथ राजा को ढूंढते हुए उस बडे बन में ऐरावतकी भांति धरती पर पडे पाया उस बडेचाप धारी भूपाल को बिना अश्व पृथ्वीपर लोटते देखकर बुझीहुई आगकी भांति होगये और सन्मान पूर्वक वेगसे निकट जाकर काम से मोहित भूपाल श्रेष्ठ को इसप्रकार भूमि से उठाया कि जैसे पिता पुत्रको उठाताहै।८।प्रज्ञा अवस्था कीर्ति और नीति में वृद्ध उसमंत्री ने राजा को उठाकर अपनी पीडा दूरकी अनन्तर वोह उठेहुए राजा से कल्याणयुक्त मीठीबातों में कहनेलगा कि हेमनुज शार्दूल तुम्हारा मंगल होवे तुम भय मतकरो उस शत्रुनाशी भूपालको थका मांदा और भूखा प्यासा समझकर वोह पद्मगन्ध ठंढे जल से उसके मिट्टी में सनेहुए और मुकट से खाली शिरको धोनेलगा अनन्तर बली भूपाल ने

CHAPTFR CLXXIV

The Gandharv said that Tapati of blameless beauty ascended the mountain after this conversation. The king again fell on the ground. The minister with the followers and the army, searching the forest, saw him, with his huge body like that of Airavat, lying on the ground. He was much perplexed at seeing him lying thus withont his horse. Respectfully going near the insensible monarch, he gently raised him up as a father does a child and began to speak to him in a sweet tone, saying, "May you be happy ! Have no fear." He thought that the king, the destroyer of enemies, was tired and hungry and began to wash his bare head. The great monarch, then, sent away all his attendants with the exception of the minister aud sat down again on the mountain. The king stood with joined hands to wor-

यामास तमेकंसचिवंविना ॥ १० ॥ ततस्तस्याज्ञयाराज्ञो विप्रतस्थेमहद्बलम् । सतुराजा गिरिप्रस्थे तस्मिन्पुनरुपाविशत् ॥११॥ ततस्तस्मिन्गिरिवरेशुचिर्भूत्वाकृताञ्जलिः । आरिराधयिषुःसूर्य्यंतस्थावूर्द्ध्वमुखःक्षितौ ॥ १२ ॥ जगाममनसाचैव वसिष्ठमृषिसत्तमम् । पुरोहितममित्रघ्नंतदा सम्वरणोनृपः ॥ १३ ॥ नक्तन्दिनमथैकत्र स्थिते तस्मिन् जनाधिपे । अथाजगाम विप्रर्षिस्तदा द्वादशमेऽहनि ॥ १४॥ सविदित्वैवनृपतिंतपत्याहृतमानसम् । दिव्येनविधिनाज्ञात्वा भावितात्मामहानृषिः ॥ १५ ॥ तथातुनियतात्मानं तंनृपंमुनिसत्तमः । आबभाषेसधर्मात्मा तस्यैवार्थचिकीर्षया ॥ १६ ॥ सतस्यमनुजेन्द्रस्यपश्यतोभगवानृषिः । ऊर्द्ध्वमाचक्रमेद्रष्टुं भास्करंभास्करद्युतिः ॥ १७ ॥ सहस्रांशुं ततोविप्रःकृताञ्जलिरुपस्थितः । वसिष्ठोऽहमिति प्रीत्यासचात्मानं न्यवेदयत् ॥१८॥ तमुवाच महातेजा विवस्वान्मुनिसत्तमम् । महर्षेस्वागतंतेऽस्तु कथयस्वयथेप्सितम ।१९। यदिच्छसिमहाभाग मत्तःप्रवदतांवर । तत्तद्द्यामभिप्रेतं यद्यपिस्यात् सुदुष्करम ।२०।

उस मंत्री के सिवाय और सबको बिदाकर दिया ।१०। सब सेनाओंके राजाकी आज्ञा से चलेजानेपर राजा फिर उसपर्वतपर बैठा अनन्तर वोह शत्रुनाशी महाराज पर्वतपर शुद्ध आचरणके साथ सूर्य की उपासना करने के लिये दोनोंहाथ जोडकर खडेरहे और मनही मनमें ऋषि श्रेष्ठ वसिष्ठ को स्मरण करने लगे अनन्तर दिन रात इसप्रकार खडे रहने पर बारहवें दिन वसिष्ठजी वहां आये वोह विशुद्धात्मा धर्मशील महर्षि योगबलसे उस संयत चित्त भूपाल का चित्त तपतीसे हराहुआ जानकर उसका कार्य पूरा करने के लिये समझानेलगे।१६। अनन्तर सर्वप्रकाशधारी भगवान् ऋषि सूर्यसे मिलनेके लिये भूपालके सामनेही ऊपरको चढगये दोनों हाथ जोडकर सहस्रांशु के निकट पहुँचकर यह कहकर अपना परिचय दिया कि मैं वसिष्ठहूं अति तेजस्वी बिवस्वान ने मुनिबर से कहा कि हे महर्षे तुम्हारा आना शुभहोवे कहो क्या चाहतेहो हे महाभाग तुम मुझ से जो कुछ प्रार्थना करोगे वोह बडी दुर्लभभी होगी तो मैं तुम्हारी उस वांछित वस्तुको देदूंगा महा

ship the sun and thonght of Rishi Basishth. The king remained standing twelve days and nights At last Basishth came and knowing his love for Tapati, by the power of his asceticism, he consoled him. The great Rishi, glorious like the sun, rose up in the presence of the king towards the sun. Having reached there he joined his hands in respect and said, "I am Basishth.' The god replied, "You are welcome, great Rishi. Let me know your desire and I shall give you the thing you desire even if it be difficult to obtain it." The Rishi said with a bow, "I ask your daughter, the younger sister of Savitri, for king Samaran who is very brave, virtuous and wise. He will make a worthy husband to your daughter." The Sun, having resolved to grant the request of the Rishi, said, "King Sambaran

एवमुक्तःसतेनर्षिर्वसिष्ठः प्रत्यभाषत । प्रणिपत्य विविस्वन्तं भानुमन्तंमहातपाः ॥२१॥ वासिष्ठ उवाच । यैषाततपतीनाम सावित्र्यवरजा सुता । तांत्वां सम्वरणस्यार्थे वरयामिविभावसो ॥ २२॥ सहिराजा बृहत्कीर्त्तिर्द्धर्मार्थविदुदारधीः । युक्तःसम्वरणो भर्त्तादुहितुस्ते विहंगम ॥ २३ ॥ इत्युक्तःसतदातेन ददानीत्येवनिश्चितः। प्रत्यभाषत तंविप्रंप्रतिनन्द्य दिवाकरः ॥ २४ ॥ वरः सम्वरणो राज्ञां त्वमृषीणांवरो मुने । तपतीयोपितांश्रेष्ठा किमन्यदपवर्ज्जनात् ॥ २५ ॥ ततःसर्वानवद्यांगीं तपतीं तपनः स्वयम् । ददौ सम्वरणस्यार्थे वसिष्ठाय महात्मने ॥ २६ ॥ प्रतिजग्राहतांकन्यां महर्षिस्तपतीं तदा । वासिष्ठोऽथ विसृष्टस्तु पुनरेवाजगामह ॥ २७ ॥ यत्र विख्यात कीर्त्तिः स कुरूणामृषभोऽभवत् । स राजा मन्मथाविष्टस्तद्गते नान्तरात्मना ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा च देवकन्यांतां तपतीं चारुहासिनीम् । वासिष्ठेन सहायान्तीं संहृष्टोऽभ्यधिकंबभौ ॥ २९ ॥ रुरुचेसाधिकंसुभ्रू रापतन्तीनभस्तलात् । सौ

तपस्वी ऋषि वसिष्ठ सहस्रांशु बिवस्वानकी यह बात सुनकर प्रणाम पूर्वक बोले।२१। कि हेविभावसो सावित्रीसे छोटी जो आपकी तपती नाम्नी कन्याहै मैं उसको संवरणके लिये मागताहूं हे आकाशपते वोह राजा अति कीर्तिशाली धर्मार्थ तत्वोंका जाननेवाला और उदार बुद्धि है सो वह आपकी पुत्रीके वरहोनेके योग्यहै।२३।दिवाकर ऋषिकी यह बात सुनकर सम्प्रदान करना ठानकर आदरपूर्वक उस विप्र से बोले कि हेमुने राजासम्वरण भूपोंमें श्रेष्ठहैं तुम मुनियों में श्रेष्ठहो और तपतीभी नारियोंमें श्रेष्ठाहै अतएव सम्प्रदान के विना और क्या विचारहोसक्ता है।२५। अनन्तर सूर्यदेवने स्वयंही सम्वरणके निमित्त महात्मा वसिष्ठ के निकट सर्वांग सुन्दरी तपती को देदिया । महर्षि बसिष्ठ तपती को लेकर सूर्यसे विदा होकर उस स्थान को लौटगये जहां प्रख्यात कीर्त्तिशाली कुरुश्रेष्ठ सम्वरण थे यह काम से जले सुने और तपती के कारण हृदय जलाये राजा देवबालाके समान सुन्दर हासिनी तपती को वसिष्ठ के संग आते देखकर अति प्रसन्नहोकर शोभा पाने लगे।२९। बादलसे गिरीहुई विजली जिसप्रकार दशों दिशा को उजाले से छादेती है

is the best of princes. I cannot find a better one.' 25.He then gave the beautiful Tapati to Basishth for the sake of King *Sombaran.* Having got her, Basishth took leave of the sun and returned to the place where the king was. Burnt by the fire of Tapati's love he was much pleased when he saw the beautiful Tapati coming with the Rishi.29.Tapati illumined the earth by her presence as the lightning does all the directions when it falls from clouds. The king's severe vow of twelve nights was at an end when the Rishi Basishth came there. King Sambaran had, thus by the worship of the sun and the power of Basishtha's asceticism got Tapati the daughter of

दामिनीवविभ्रष्टा द्योतयन्तीदिशस्त्विषा ॥ ३० ॥ कृच्छ्राद्द्वादशरात्रेतु तस्यराज्ञःस
माहिते । आजगामविशुद्धात्मा वसिष्ठोभगवानृषिः ॥ ३१ ॥ तपसाराध्यवरदं देवं
गोपतिमीश्वरम् । लेभेसम्वरणोभार्य्यां वसिष्ठस्यैवतेजसा ॥ ३२ ॥ ततस्तस्मिन् गि-
रिश्रेष्ठे देवगन्धर्वसेविते । जग्राहविधिवत्पाणिं तपत्याःसनरर्षभः ॥ ३३ ॥ वसिष्ठेना
भ्यनुज्ञातस्तस्मिन्नेवधराधरे । सोऽकामयतराजर्षिर्विहर्त्तुं सहभार्य्यया ॥ ३४ ॥ ततः
पुरेचराष्ट्रेच वनेषूपवनेषुच । आदिदेशमहीपालस्तमेव सचिवंतदा ॥ ३५ ॥ नृपतिं
त्वभ्यनुज्ञाप्य वसिष्ठोऽथापचक्रमे । सोऽथराजागिरौतस्मिन् विजहारामरोयथा ३६॥
ततोद्वादशवर्षेषु काननेषुवनेषुच । रेमेतस्मिन् गिरौराजा तथैवसहभार्य्यया । ३७ ॥
तस्यराज्ञःपुरेतस्मिन् समाद्वादशसत्तम । नववर्षसहस्राक्षो राष्ट्रेचैवास्यभारत ॥ ३८॥
ततस्तस्यामनावृष्ट्यां प्रवृत्तायामरिन्दम । प्रजाःक्षयमुपाजग्मुः सर्वाःसस्थाणुजङ्गमाः ॥
॥ ३९ ॥ तस्मिंस्तथाविधेकाले वर्त्तमानेसुदारुणे । नावश्यायःपपातोर्व्यां ततःशस्या

वैसेही सुन्दरी तपती ने आकाश से उतरकर अपनी शोभा से दिशाओं को सुशोभित
किया।३०।राजाका वारहरात्रियोंका कठोर नियम अन्तहोनेपर विशुद्धात्मा भगवान् ऋषि
वसिष्ठ वहीं आये। भूपाल सम्वरणने इसप्रकार तपस्या से वरदाता ईश्वर सूर्यदेवकी
उपासनाकर महर्षि वसिष्ठ के तेजोबलसे अपनी पुत्री तपतीको स्त्री प्राप्तकिया।३२।अनन्तर
उन नरसिंह ने वसिष्ठकी आज्ञा से देव गन्धर्वोंसे सेवा किये जातेहुए उस श्रेष्ठ पर्वतही
पर तपती से विधि पूर्वक बिवाह किया।३४।आगे उस पहाडहीपर विहार करने के अभि-
लाषी होकर मन्त्री पर नगर, राज्य, वाहन और सेना आदिकी रक्षाकी आज्ञाकी अनन्तर
वसिष्ठ उनको जताकर निज स्थानको पधारे। नरदेव सम्वरण देवोंकी भांति उस पर्वत
पर विहार करने लगे।३६।उन्हों ने वारह वर्षतक उसपर्वत के वन और उपवनों में विहार
किया था हे भारत श्रेष्ठ ! सहस्रनेत्र इन्द्र ने उनकी राजधानी और राज्यमें बारहवर्ष
तक बर्षा नहीं की।३८।हेशत्रुनाशि ! तब वृष्टि न होनेसे स्थावर जंगम और सबप्रजा क्षय
पानेलगी बिना वृष्टि ऐसा कठोर काल आगया कि उन दिनों पृथ्वी पर हिम तक नहीं

the Sun for his wife. Then, by the permission of Basishth the king married Tapati with due rites on the same mountain and was respected by Gandharvas and gods.34. And having resolved to stay on the same mountain the king intrusted the affairs of his state to the ministers. Vaishth also went home. The king revelled for twelve years in the forests and gardens of the mountain like gods. The thousand eyedIndra did not pour rain in his kingdom for twelve years.38. The vegetables could not grow for want of rain and the people began to die. The times became so hard for want of rain and snow as to leave no prospect for the growing of any corn. People, distressed

निनारुहन् ॥ ४० ॥ ततोविभ्रान्तमनसो जनाःक्षुद्भयपीडिताः । गृहाणिसम्परित्य-
ज्य बभ्रमुःप्रदिशोदिशः ॥ ४१ ॥ ततस्तस्मिन्पुरेराष्ट्रे त्यक्तदारपरिग्रहाः । परस्पर-
ममर्य्यादाः क्षुधार्त्ताजघ्निरेजनाः ॥ ४२ ॥ तत् क्षुधार्त्तैर्निराहारैः शवभूतैस्तथानरैः ।
अभवत्प्रेतराजस्य पुरंप्रेतैरिवावृतम् ॥ ४३ ॥ ततस्तत्तादृशंदृष्ट्वा सएवभगवानृषिः ।
अभ्यवर्षत धर्मात्मा वसिष्ठो मुनिसत्तमः ॥४४॥ तञ्च पार्थिवशार्दूल मानयामासतत्
पुरम् तपत्यासहितंराजन् व्युषितंशाश्वतीःसमाः ॥ ४५ ॥ ततःप्रविष्टस्तत्रासीद्यथापूर्वं
सुरारिहा। तस्मिन्नृपतिशार्दूले प्रविष्टेनगरंपुनः ॥ ४६ ॥ प्रववर्षसहस्राक्षः शस्यानिज
नयन्प्रभुः।ततःसराष्ट्रंमुमुदेतत्पुरंपरयामुदा।तेनपार्थिवमुख्येनभावितंभावितात्मना४७
ततोद्वादशवर्षाणि पुनरीजेनराधिपः। तपत्यासहितःपत्न्या यथाशच्यामरुत्पतिः।४८।
गन्धर्व उवाच । एवमासीन्महाभागा तपतीनामपौर्विकी। तत्रवैवस्वतीपार्थ तापत्यस्त्वं

गिरा सो भला अनाज उपजनेकी कौनसी सम्भावना होती।४०।प्रजा भूखसे विकल और
भूली भटकीसी बनकर इधर उधर घूमने फिरने लगी । राज्य और राजधानीके लोग
सदा भूखेरहनेके कारण आपसकी मर्यादा खोकर स्त्री पुत्रादि परिवारोंको छोड़नेलगे।४२।
वह देश भूखे तथा मुर्झायेहुए जनों से पूरित होकर प्रेत-राजके नगर के समान प्रेत-
पूरित प्रतीतहोने लगा । हे राजन् ! मुनि श्रेष्ठ भगवान् वसिष्ठ उस के राज्यको उसदशा
में देखकर उसे रक्षा करनेकी चेष्टा करने लगे। वह वर्षो तक तपती के साथ अन्यत्र
रहतेहुए उस पृथ्वीनाथ को लिवा लाये। अनन्तर नृपशार्दूल के पुर में प्रविष्टहोनेपर
असुरनाशी प्रभु इन्द्र ने उस राज्य पर कृपादृष्टि की । यथानियम जल वृष्टि कर
अनाज उप जाने लगे । जितेन्द्रिय भूपश्रेष्ठ के राज्यकी मंगल चिन्तामें नियुक्त रहनेपर
सम्पूर्ण प्रजा अति प्रसन्न हुई ।४०।अनन्तर नरपति सम्वरण ने स्त्री तपतीके साथ बारह
वर्षतक ऐसा यज्ञ किया कि जैसा शचीपति ने शची के साथ कियाथा । हे पार्थ ! उस
तपती नाम्नी तपन-कन्या के वंश में तुम ने जन्म लिया है, इसी लिये तुमको तापत्य कह

by hunger, began to wander hither and thither. The people of the kingdom, leaving all consideration for the ties of relationship, began to leave their wives and children.42.The country, with its hungry and lean inhabitants, looked like the city of the king of Shadows, full of ghosts. The great Rishi Basishth, seeing the country in that wretched condition, thought of saving it and brought in the long absent king together with Tapati. On the entrance of the king in his capital, Indra turned a kind eye towards the capital and began to pour rain in time to produce grain.47.Under the kind treatment of the monarch all the people were happy. The king, with his wife Tapati, performed a twelve year's sacrifice such as Shachi and her lord had done. You are descended, Arjun,

यया मतः ॥ ४९ ॥ तस्यां सञ्जनयामासकुरुंसम्वरणो नृपः । तपत्यां तपतां श्रेष्ठ तापत्यस्त्वं ततोऽर्जुन ॥ ५० ॥

इत्यादिपर्व्वणि चैत्ररथपर्वणि तापत्युपाख्यानसमाप्तौ चतुःसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः॥१७४॥

वैशम्पायन उवाच । सगन्धर्व्ववचःश्रुत्वा तत्तदाभरतर्षभ । अर्जुनःपरयाभक्त्या पूर्णचन्द्रइवाबभौ ॥ १ ॥ उवाच च महेष्वासो गन्धर्व्वंकुरुसत्तमः । जातकौतूहलोऽतीव वासिष्ठस्यतपोबलात् ॥ २ ॥ वसिष्ठइति तस्यैतदृपेर्नाम त्वयेरितम् । एतादिच्छाम्यहं श्रोतुं यथावत्तद्वदस्वमे ॥ ३ ॥ यएषगन्धर्व्वपते पूर्व्वेषांन पुरोहितः । आसीदेतन्ममाचक्ष्वकएषभगवानृषिः ॥ ४ ॥ गन्धर्व्व उवाच । ब्रह्मणोमानसःपुत्रो वसिष्ठोऽरुन्धतीपतिः । तपसानिर्जितौ शश्वदजेयावमरैरपि ॥ ५ ॥ कामक्रोधावुभौयस्य चरणौसंववाहतुः । यस्तुनोच्छेदनंचक्रे कुशिकानामुदारधीः ॥ ६ ॥ विश्वामित्रापराधेन धारय

के पुकारा है । हे शत्रुसन्तापन ! राजा सम्वरणने उस तपतीसे कुरुनामक पुत्रको जन्म दियाथा उस कुरुवंश में तुम्हारे जन्म लेनेके कारण तुम तापत्य कहे जासकतेहो ॥५०॥

अध्याय ॥ १७५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि हेभरत वंश श्रेष्ठ ! अर्जुन गन्धर्व से यह कथा सुनकर परम भक्ति पूर्वक पूर्ण चन्द्रमाकी भांति शोभा पाने लगे । महाचापधारी कुरुश्रेष्ठ अर्जुन बसिष्ठ के तपोवलसे अचरज मानकर गन्धर्व से बोले कि मित्र तुम ने जिन ऋषि का नाम वासिष्ठ करके कहा है मैं उनका वृत्तान्त सुनाचाहताहूं, तुम आद्योपान्त कहकर सुनाओ हेगन्धर्वनाथ मुझसे बोलो, कि वह भगवान् ऋषि जो हमारे अगले पुरुषोंके पुरोहितथे कौनथे ।४। गन्धर्व बोले कि ऋषि वसिष्ठ ब्रह्मा के मानस-पुत्र हैं उनकी पत्नीका नाम अरुन्धती है जिस काम और क्रोधपर देवोंनेभी जय नहीं पाई है वे दोनों उनकी तपस्या से परास्तहो सदा पांव दावकर फिरते थे । अति क्रोधित होनेपरभी उस उदार चित्त महर्षि ने कुशिक वंश को उखाड नहीं डालाथा ।६। वह महात्मा विश्वामित्र से पुत्र

from that Tapati and I have therefore called you Tapatya. Kuru was born of Tapati and Sambaran and being a descendent of Kuru you may be called Tapatya.50.

CHAPTER CLXXV

Vaishmpayan said that having heard this from the Gandharb, Arjun looked beautiful like the full moon. Wondering at the great ascetic powers of Basishth, Arjun said, " I desire, friend, to hear the history of Basishth the priest from beginning to end. Let me know king ofGandharvas,who was Basishth the priest of our forefathers."4. The Gandharb, replied. " Basishth was the son of Brahma. His wife was Arundhati. He had under his control both desire and anger whom even the gods could not conquer. He did not destroy

न्मन्युमुत्तमम् । पुत्रव्यसनसन्तप्तः शक्तिमानप्यशक्तवत् ॥ ७ ॥ विश्वामित्रविनाशाय नचक्रेकर्मदारुणम् । मृतांश्चपुनराहर्त्तुं शक्तःपुत्रान्यमक्षयात् ॥ ८ ॥ कृतान्तंनातिचक्राम वेलामिवमहोदधिः । यंप्राप्य विजितात्मानं महात्मानंनराधिपाः ॥ ९ ॥ इक्ष्वाकवो महीपालालेभिरे पृथिवीमिमाम् । पुरोहितमिमंप्राप्य वसिष्ठमृषिसत्तमम् ॥ १० ॥ ईजिरेक्रतुभिश्चैव नृपास्तेकुरुनन्दन । सहितान्याजयामास सर्वान्नृपतिसत्तमान् । ब्रह्मर्षिःपाण्डवश्रेष्ठ बृहस्पतिरिवामरान् ॥ ११ ॥ तस्माद्धर्मप्रधानात्मा वेदधर्मविदीप्सितः । ब्राह्मणोगुणवान्कश्चित् पुरोधाःप्रतिदृश्यताम् ॥ १२ ॥ क्षत्रियेणाभिजातेन पृथिवींजितुमिच्छता । पूर्वंपुरोहितःकार्यः पार्थ राज्याभिवृद्धये । महींजिगीषता राज्ञा ब्रह्मकार्य्यंपुरःसरम् ॥ १३ ॥ तस्मात्पुरोहितः कश्चिद्गुणवान्विजितेन्द्रियः । विद्वान् भवतुवो विप्रो धर्मकामार्थतत्त्ववित् ॥ १४ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि पुरोहितकरणकथनेपंचसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः॥१७६॥

नाश-रूपी खेद पाकर शक्ति रहने के कारण कठोर कार्य में प्रवृत्त नहीं हुए थे उन्हों ने यमालय से मृतपुत्रों को न लौटालाकर यमराजकी मर्यादा इसप्रकार रक्षाकीथी, कि जैसे समुद्र अपने तटको नष्ट नहीं करताहै । ९ । इक्ष्वाकुवंश के भूपालों ने उन जितेन्द्रिय महात्मा को प्राप्तकर इस धरतीभरका पूराअधिकार लाभ कियाथा । हेकुरुनन्दन उन सब राजाओंने ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ठ को पुरोहित पाकरही नाना यज्ञ किये थे हे पाण्डव श्रेष्ठ ! उन्हों ने उन महाराजोंकी यज्ञक्रिया इसप्रकार निर्बाह करायीथी कि जिसप्रकार बृहस्पति देवोंका यज्ञकरातेहैं। ११।अतएव तुमभी धार्मिकवर वैदिक धर्म के जानकार कोई पुरोहित ढूंढो हेपार्थ पृथ्वी जय करनेकी इच्छा रखनेवाले क्षत्रियको राज्यवृद्धि के लिये पहिले पुरोहित नियुक्त करना चाहिये क्योंकि पृथ्वीजयेच्छुक राजाका ब्राह्मणको सामने रखना उचित है । अतएव धर्म काम और अर्थ के वत्वज्ञ जितेंद्रिय विद्वान् और गुणवान् कोई ब्राह्मण तुम्हारा पुरोहित होवे ॥ १४ ॥

---

the Kushik family in spite of his having so much cause for anger. Having power he did not revenge the destruction of his sons by Vishwamitra. He did not recall his sons from the abode of Yam and would not break the rule as the Ocean does not destroy its shore.9.The descendants of Ikshwaku had got the sovereignty of the world by making him their priest and performed many sacrifices by his help. He presided over the sacrifices of those kings as Vrihaspati does over the sacrifice of gods.11. You must also appoint a priest learned in the manners of the Vedas. A Kshatrya wishing to extend his kingdom must first employ a priest. Employ as your priest a Brahman learned in the ways of the world, virtuous and having control over his senses."14.

अर्जुन उवाच । किंनिमित्तमभूद्वैरं विश्वामित्रवसिष्ठयोः । वसतोराश्रमेदिव्ये शंसनःसर्वमेवतत् ॥ १ ॥ गन्धर्व उवाच । इदंवासिष्ठमाख्यानं पुराणंपरिचक्षते । पार्थसर्वेषुलोकेषु यथावत्तन्निबोधमे ॥ २ ॥ कान्यकुब्जे महानासीत्पार्थिवोभरतर्षभ। गाधीतिविश्रुतोलोके कुशिकस्यात्मसम्भवः ॥ ३ ॥ तस्यधर्मात्मनःपुत्रः समृद्धबलवाहनः । विश्वामित्रइतिख्यातो बभूवरिपुमर्दनः ॥ ४ ॥ सचचारसहामात्यो मृगयांगहनेवने । मृगान्विध्यन्वराहांश्च रम्येषुमरुधन्वसु ॥ ५ ॥ व्यायामकर्षितःसोऽथ मृगलिप्सुःपिपासितः। आजगामनरश्रेष्ठ वसिष्ठस्याश्रमंप्रति ॥ ६ ॥ तमागतमभिप्रेक्ष्य वसिष्ठःश्रेष्ठभागृषिः । विश्वामित्रंनरश्रेष्ठं प्रतिजग्राहपूजया ॥ ७ ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयैस्तंस्वागतेनच भारत। तथैव परिजग्राहवन्येन हविषातदा ॥ ८ ॥ तस्याथ कामधुग्धेनुर्वसिष्ठस्यमहात्मनः । उक्ताकामानप्रयच्छेति सा कामान्दुह्यतेसदा ॥९॥ ग्राम्यारण्या

अध्याय १७६ ॥

अर्जुनने कहा कि निज निज दिव्याश्रमों में रहनेवाले विश्वामित्र और वसिष्ठ में क्योंकर आपस में शत्रुता हुई वह हम से कहो गन्धर्व ने कहा कि हेपार्थ ! यह वसिष्ठकी कथा सर्वलोकों में पुराण कर के कहीजाती है मैं यथार्थ रीति से कहता हूं, सुनो हेभरत श्रेष्ठ कान्यकुब्ज देश में कुशिकपुत्र गाधि के नाम से प्रख्यात एक राजा थे उन धर्मात्मा के विश्वामित्र नामक एक पुत्र थे उन विश्वामित्र की अनगिनत सेना तथा वाहनथे और वह शत्रुओं के मथनेहारे थे ।४। वह एक समय मन्त्रीके साथ घने बनमें और सुंदर निराली तथा वृक्षों से खाली भूमि पर मृग और वराह विद्ध करते हुए मृगयाकरते फिरने लगे हे नृप वह मृग पानेकी चेष्टामें थककर और प्यासेबनकर वसिष्ठ के आश्रम में जा पहुँचे ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ठने नरश्रेष्ठ विश्वामित्र को आते देखकर अतिथिकी सेवाके लिये स्वागत किया ।७।हेभारत उनऋषि ने कुशल क्षेम पूछकर पाद्य, अर्घ्य आचमनीय बनैले फल मूल और पुरोडास आदि

CHAPTER CLXXVI

Arjun said, "How did Bishwamitra and *Bishisth* become enemies of each other ?" The Gandharb replied, " The history of *Bashishth* is known throughout the world as Puran. I shall tell you all. There was a king, named Gadhi the son of Kushik, in the country of Kanyakubj. The virtuous king had a son named Vishwamitra who had a large army and was a great destroyer of enemies.4. He was one day killing deer and wild boars in a forest. Tired and thirsty, he reached the hermitage of Basishth who welcomed him as a guest. Having inquired about his welfare, the rishi offered him water, to wash his feet and drink, and the fruits of the forest with other articles of food.8. The Rishi had a cow, which gave him every thing that he desired. He

श्चौषधीश्च दुदुहेपयएवच । षड्रसं चामृतनिभं रसायनमनुत्तमम् ॥ १० ॥ भोजनीयानिपेयानि भक्ष्याणिविविधानिच । लेह्यान्यमृतकल्पानि चोष्याणिच तथार्जुन ॥११॥ रत्नानिचमहार्हाणि वासांसिविविधानिच । तैःकामैःसर्वसम्पूर्णैः पूजितश्चमहीपतिः । सामात्यःसबलश्चैव तुतोषसभृशंतदा ॥ १२ ॥ षडुन्नतांसुपार्श्वोरुं पृथुपञ्चसमावृताम्। मण्डूकनेत्रांस्वाकारां पीनोधसमनिन्दिताम् ॥ १३ ॥ सुवालधिंशंकुकर्णां चारुशृङ्गां मनोरमाम् । पुष्टायताशिरोग्रीवां विस्मितःसोऽभिवीक्ष्यताम् ॥ १४ ॥ अभिनन्द्य स तांराजन्नन्दिनीं गाधिनन्दनः । अब्रवीच्चभृशंतुष्टः सराजातमृषिंतदा ॥ १५ ॥ अर्बुदेनगवांब्रह्मन्मम राज्येनवापुनः । नन्दिनींसंप्रयच्छस्व भुङ्क्ष्वराज्यं महामुने ।१६।

भोजनकी सामग्री देकर उनका आतिथ्य सत्कार किया हेअर्जुन महात्मा वसिष्ठकी कामदुधा एक गौ थी, ऋषि उस गौको कुछ कामना की वस्तु देने को कहकर दुहते थे उसी क्षण उसे पाते थे । उस दिन वसिष्ठ को कामना के अनुसार काम धेनु को दोहने पर ग्राम तथा वनकी ओषधी, दुग्ध, अमृत समान छओं रस, उन रसयुक्त विशेष विशेष वस्तुओं में से अमृत समान सुमिष्ट बहु विध भोजन पीने, चवाने, चाटने और चूसनेकी सामग्री और वडे मूल्यवान वस्त्र और रत्न आदि प्राप्त हुए मन्त्री और सेना सहित भूपाल ने उन सब काम्य वस्तुओं से सत्कृत होकर अति संतोष प्राप्तकिया और उस मनोरमा कामधेनु को देखकर वडा अचरज माना॥१२। उस कामधेनु के शरीर की वनावट बहुत सुन्दरथी उसका मेरुदण्ड पूछ और स्थन ऊंचे पार्श्व और ऊरु सुन्दर कान और माथा वडा आंखें वडी और मेंडक के समान ऊंची पूंछ मनोहर दोनों कानकीलोंके समान सींग देखने में बहुतही सुन्दर और शिर, गला मोटा और चौडाथा हे राजन ! उस मधुर नंदिनी नाम्नी कामधेनु को देखकर राजा गाधिकुमार ने अति संतुष्ट चित्त से उसकी प्रसंशा कर ऋषि से कहा।१५।कि हेब्रह्मन् तुम मुझसे दशकरोड गौलेकर मुझको यह नन्दिनी दो अथवा हे महामुने नंदिनी को देकर मेरा राज्य

gave that day, at the Rishi's desire, the medicines of the village .and the forest, milk, the six sorts of the articles of taste, and the articles of clothing and jewellery. Having been treated with all those things, the king with his ministers was very much pleased and wondered at the sight of the beautiful cow. 12. The structure of her body was very good, Her shoulders, tail and teets were high, back and thighs beautiful, ears and forehead large, eyes prominent like those of a frog, teets broad, tail beautiful, ears like nails, horns beautiful to look at and head and neck were thick and broad. Seeing such a beautiful cow the king praised her and asked the Rishi to give her to him in return for a hundred millions of cows or even the whole of his kingdom." 16. The Rishi replied,

वासिष्ठ उवाच । देवतातिथिपित्रर्थं याज्यार्थञ्चपयस्विनी । अदेयानन्दिनीयंवै राज्ये
नापितवानघ ॥ १७ ॥ विश्वामित्र उवाच । क्षत्रियोऽहंभवान् विप्रस्तपःस्वाध्याय-
साधनः । ब्राह्मणेषुकुतोवीर्यं प्रशान्तेषुधृतात्मसु ॥ १८ ॥ अर्बुदेनगवांयस्त्वं नददासि
ममेप्सितम् । स्वधर्मंनप्रहास्यामि नेष्यामिच वलेनगाम् ॥ १९ ॥ वासिष्ठ उवाच ।
वलस्थश्चासि राजा च वाहुवीर्यश्चक्षत्रियः । यथेच्छासि तथा क्षिप्रं कुरुमात्वं विचारय
॥ २० ॥ गन्धर्व उवाच । एवमुक्तस्तथा पार्थ विश्वामित्रो वलादिव । हंसचन्द्रप्रती
काशां नन्दिनींतां जहार गाम ॥ २१ ॥ कशादण्डप्रणुदितां काल्यमानामि-
तस्ततः । हंभायमाना कल्याणि वासिष्ठस्याथ नन्दिनी ॥ २२ ॥ आगम्या-
भिमुखीपार्थ तस्थौभगवदुन्मुखी । भृशञ्चताड्यमानावै नजगामाश्रमात्ततः ॥ २३ ॥

लेकर भोगो वसिष्ठ ने कहा कि हे अनघ यह दुधारी नन्दिनी देवता, अतिथि, पितर, और यज्ञके लिये रक्खीहुईहै सो तुम्हारे राज्यको लेकरभी मैं इसको नहीं देसक्ता।१७।विश्वामित्र ने कहा कि मैं क्षत्रिय और तुम तपस्वी वेदपढ़नेवाले ब्राह्मणहो शांत चित्त संयत ब्राह्मण को सामर्थ कहां अतएव यदि तुम दश करोड गौलेकर मुझे इच्छाकीहुई गौ नहीं दोगेतो मैं अपना धर्म नहीं छोडूंगा वल से छीन कर लेजाऊंगा।१९। वसिष्ठने कहा कि तुम वलिष्ठ क्षत्रिय राजा और भुजवल युक्तहो अतएव तुम जैसा चाहो वैसाकरो विलम्व मतकरो अ-धिक विचारका प्रयोजन नहीं है।२१।गन्धर्वराज ने कहा किहे पार्थ विश्वामित्र उनकी यह वात सुनकर सूर्य चन्द्रमाकी समान प्रकाशवाली उस नन्दिनी को कोडों से मारकर और इधरउधर से वांधकर वल से हर लेजाने को उद्यतहुए हे पार्थ ! कल्याणी नन्दिनी शब्द करती हुई भगवान् ऋषि वसिष्ठ के सामने आकर ऊंचा मुंह करके खडीहुई और वहुत सताए जाने परभी उस आश्रम से नहीं गयी तब वसिष्ठ वोले कि ऐ भद्रे नन्दिनी तुम

"This mitch cow, Nandini, is reserved for gods, guests, Pitars and sacrifices. I shall not part with her even for the whole of your kingdom."17. Viswamitra said, "I am a Kshatrya and you are a Brahman and reader of the Vedas. A meek Brahman can have no strength. I shall take her by force, as our custom is, if you will not give her to me in return for a hundred millions of cows." 19. Basisth replied, "You are a powerful Kshatrya king. Do as you like without further delay or hesitation," 21. The Gandharva continued that having heard this from Basisth, the king beat the cow with lashes and surrounded her on all sides to take her away by force. The cow came towards the rishi and stood bellowing with upraised head and neck. She did not go out of the Rishi's hermitage in spite of so much persecution. Bashisht then said, "I hear all your bellowing, Nandini, but being a forgiving Brahman I can do nothing against the king who is trying

वशिष्ठ उवाच । शृणोमितेरवंभद्रे विनदन्त्याःपुनःपुनः । ह्रियसेत्वंबलाद्भद्रे विश्वामित्रेणनन्दिनि । किंकर्त्तव्यंमयातत्र क्षमावानब्राह्मणोह्यहम् ॥ २४ ॥ गन्धर्व उवाच । साभयान्नन्दिनीतेषां बलानांभरतर्षभ । विश्वामित्रभयोद्विग्ना वसिष्ठंसमुपागमत् ॥ २५ ॥ गौरुवाच । कशाग्रदण्डाभिहतां क्रोशन्तीमामनाथवत् । विश्वामित्रबलैर्घोरैर्भगवन् किमुपेक्षसे ॥ २६ ॥ गन्धर्व उवाच । नन्दिन्यामेवंक्रन्दन्त्यां धर्षितायांमहामुनिः । नचुक्षुभेतदाधैर्यान्नचचाल धृतव्रतः । २७ ॥ वसिष्ठ उवाच । क्षत्रियाणांबलंतेजो ब्राह्मणानांक्षमाबलम् । क्षमामांभजते यस्माद्गम्यतांयदिरोचते ॥२८॥ नन्दिन्युवाच । किन्नुत्यक्तास्मिभगवन्यदेवं त्वंप्रभाषसे । अत्यक्ताहंत्वयाब्रह्मन्नेतुं शक्यानवैबलात् ॥ २९ ॥ वसिष्ठ उवाच । नत्वांत्यजामिकल्याणि स्थीयतांयदिशक्यते । दृढेनदाम्नावद्धैष वत्सस्तेह्रियतेबलात् ॥ ३० ॥ गन्धर्व उवाच । स्थीयतामिति तच्छ्रुत्वावसिष्ठस्यपयस्विनी । ऊर्ध्वाञ्चितशिरोग्रीवा प्रबभौरौद्रदर्शना ॥ ३१ ॥ क्रो-

बार २ जो चिल्लातीहो वह मैं सुनताहूं पर ऐ भद्रे जब राजा विश्वामित्र तुमको बलसे हररहे हैं तब मैं क्या करूंगा क्योंकि मैं क्षमाशील ब्राह्मणहूं।२४।गन्धर्व ने कहा कि हेभरत श्रेष्ठ ! नन्दिनी विश्वामित्र और उनकी सेनाओं के भय से घबराकर वसिष्ठ के बहुत निकट आगई और बोली कि हेभगवन् मैं विश्वामित्रकी भयानक सेनाओं के कोडोंकी मारसे घायलहोकर अनाथके समान रोरहीहूं आप मेरी क्यों उपेक्षा कररहेहैं।२६। गंधर्व ने कहा कि नन्दिनी कातरहोकर इसप्रकार रोनेलगी पर नियमशील महामुनि तिसपर भी क्षुब्ध वा अधीर नहीं हुए । वह नन्दिनी से बोले कि क्षत्रिय का बल तेज और ब्राह्मणका बल क्षमाहै सो मैं क्षमा गुणसे आकृष्टहोरहाहूं सो यदि तुम चाहो तो जाओ२८। नन्दिनी बोली कि हेभगवन् क्या आपने मुझको त्यागदिया कि ऐसा कहते हैं हेब्रह्मन् आपके न त्यागनेसे मुझको कोई बलपूर्वक न लेजासकेगा वसिष्ठ बोले कि हे कल्याणि मैं तुमको नहीं त्यागताहूं यदि तुम रहसको तो रहजाओ वह तुम्हारे बछडे को कठिन रस्सी से बांधकर लेजारहे हैं।३०।गन्धर्व ने कहा कि दुधारी नन्दिनी तब वसिष्ठकी "रह जाओ यह बात सुनतेही सिर और गला ऊपर उठाकर भयानक मूर्तिकर क्रोध के मारे

to take you away by force. The Gandharv continued that Nandini came yet nearer the rishi by the fear of Viswamitra and his army and said, "I am weeping by the wounds of the lashes that I have received from the cruel army of Vishwamitra. Why are you so indifferent?,,26.TheGandharv continued that the cow wept but the rishi was not moved and said, (The strength of a Kshatrya lies in anger while that of a Brahman in mercy.) I am drawn by the quality of mercy. You may go if you like."28.Nandini said, " Have you left me altogether as you say this ? No one can take me by force if you

धरक्तेक्षणासा गौर्हम्भारवघनस्वना। विश्वामित्रस्यतत्सैन्यं व्यद्रावयतसर्वशः ॥३२॥
कशाग्रदण्डाभिहता काल्यमानाततस्ततः । क्रोधरक्तेक्षणाक्रोधं भूयएवसमादद ॥
॥ ३३ ॥ आदित्यइवमध्यान्हे क्रोधदीप्तवपुर्वभौ । अङ्गारवर्षमुञ्चन्ती मुहूर्वालधितो
महत् ॥ ३४ ॥ असृजत्पह्लवान् पुच्छात् प्रस्नवाद्द्राविडाञ्छकान । योनिदेशाच्चयव
नान्शकृतःशवरान्बहून् ॥ ३५ ॥ मूत्रतश्चासृजत् कांश्चिच्छवरांश्चैवपार्श्वतः । पौण्ड्रान्
किरातान्यवनान् सिंहलानवर्वरान्खसान ॥ ३६ ॥ चिवुकांश्चपुलिन्दाश्च चीनान्
हूनान्सकेरलान् । ससर्ज्जफेनतःसा गौम्र्लेच्छानवहुविधानपि ॥ ३७ ॥ तैर्विसृष्टैर्महा
सैन्यैर्नानाम्लेच्छगणैस्तदा । नानावरणसंच्छन्नैर्नानायुधधरैस्तथा ॥ ३८ ॥ अवाकी
र्य्यत संरब्धैर्विश्वामित्रस्य पश्यतः । एकैकश्चतदायोधः पञ्चभिःसप्तभिर्वृतः ॥ ३९ ॥
अस्त्रवर्षेण महता वध्यमानंवलंतदा । प्रभग्नंसर्वतस्त्रस्तं विश्वामित्रस्यपश्यतः ॥ ४० ॥
नचप्राणैर्वियुज्यन्ते केचित्तत्रास्यसैनिकाः । विश्वामित्रस्यसंक्रुद्धैर्वासिष्ठैर्भरतर्षभ॥४१॥

नेत्र लालकर बार २ हम्बारव करती हुई विश्वामित्र की सेनाओं को चारों ओर खदेडने लगी।३२।तब फिर सेनाओंके कोडोंकी मारसे घायलहोकर और चारों ओरसे बांधीजाकर अति क्रोधितहोकर जलती हुई देहको दुपहरके सूर्यकी भांति देखने के अयोग्य बनाया और पूंछसे बार २ बडे२ अंगारोंकी वृष्टि करनेलगी।३४। आगे पूंछ से पह्लवगण थन से द्राविड और शकगण गोबर से कांची गण पार्श्वभाग से शवरगण और फेन से पौण्ड्र, किरात, यवन, सिंहल, बर्बर, खस, चिबुक पुलिन्द, चीन, हुन, केरल, आदि नाना म्लेच्छोंकी सेना उसक्षण उत्साहितहोकर विश्वामित्रके सामनेही इधर उधर फैलगयी।३८। और उनमें से पांच पांच वा सात सात ने विश्वामित्र के एक एक योद्धे को घेरलिया। आगे विश्वामित्र के देखतेही देखते उनकी सेना उन लोगोंकी गहरी शस्त्रबृष्टिसे घायल होकर और भय खाकर इधर उधर भागनेलगी।४०।हेभरत श्रेष्ठ वसिष्ठकी सेना ने युद्धमें पूर्ण क्रोधितहोने परभी विश्वामित्रकी सेनामें किसी के प्राण नष्ट नहीं किये नन्दिनी ने

donot give me up.'' *Bashisth* replied, "I donot give you up. Stay if you can. They are taking away your calf tied with a strong rope.''30.The Gandharv coutinued that having heard the word stay from *Basishth*, the cow raised her head and neck and pursued the army with fearful visage and red eyes. But again smarting under the lashes and surrounded by the army, she became angry and made her body dazzling like the midday sun,throwing out a shower of charcoal from her tail.34.She brought forth Mleches from the various parts of her body. They were armed with various sorts of weapons and wore different uniforms. They outnumbered the soldiers of Viswamitra and surrounded them. The army of Viswamitra, wounded by their weapons,wss defeated and dispersed in all directions.They did

सागौस्ततसकलंसैन्यं कालयामासदूरतः। विश्वामित्रस्यततत्सैन्यं काल्यमानंत्रियोजनम् ॥ ४२ ॥ क्रोशमानंभयोद्विग्नं त्रातारंनाध्यगच्छत । दृष्ट्वातन्महदाश्चर्यं ब्रह्मतेजोभवत्तदा।४३। विश्वामित्रः क्षत्रभावान्निर्विण्णो वाक्यमब्रवीत्।धिग्बलंक्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्।४४। बलाबलंविनिश्चित्य तपएवपरंबलम्। सराज्यंस्फीतमुत्सृज्य तांञ्च दीप्तांनृपश्रियम् ॥ ४५ ॥ भोगांश्च पृष्ठतः कृत्वा तपस्येव मनो दधे । सगत्वा तपसा सिद्धिं लोकान्विष्टभ्य तेजसा ॥ ४६ ॥ ततापसर्वान्दीप्तौजा ब्राह्मणत्वमवाप्तवान् । अपिबच्च ततः सोममिन्द्रेण सह कौशिकः ॥ ४७ ॥

इत्यादिपर्वणिचैत्ररथपर्वणिवासिष्ठेविश्वामित्रपराभवेषट्सप्तत्यधिकशततोऽध्यायः१७६॥

गन्धर्व उवाच । कल्माषपादइत्येवं लोकेराजाबभूवह ।इक्ष्वाकुवंशजःपार्थ तेजसासदृशोभुवि ॥ १ ॥ सकदाचिद्वनंराजा मृगयांनिर्ययौपुरात् । मृगान्विध्यन्वरा

केवल उनको दूर को खदेडा वेतीन योजन दूर भगायी जाकर घबराहट के मारे रोनेलगे और ऐसा किसी को नहीं देखा कि उनकी रक्षाकरे तब विश्वामित्रने ब्रह्मतेजकी उस बडी आश्चर्यलीला को देखकर क्षत्रियधर्म से विरक्तहोकर यह कहा कि क्षत्रिय बलपर धिकार है ब्रह्मतेजका बलहीबलहै।४४।बलाबल निश्चय करनाहो तो तपस्याही उत्कृष्ट कही जायगी अनन्तर उन्हों ने बडेभारीराज्य और प्रज्वलित राज्यलक्ष्मी को छोडकरके भोग से विरक्तहोकर तप में मन लगाया फिर तप में सिद्ध और प्रदीप्त तेजस्वी होकर अपने तेजसे तीनों लोकोंको छाकर सम्पूर्ण लोकोंको तापित करके ब्राह्मण बने आगे उन कुशिकनन्दन ने इन्द्रके साथ सोमरस पानभी किया ॥ ४७ ॥

अध्याय ॥ १७७ ॥

गन्धर्व ने कहा कि हे पार्थ ! कल्माषपाद नामक अनुपम तेजःपूर्ण इक्ष्वाकुवंशी एक राजा थे एक समय वह मृगयाके निमित्त नगरसे बनको गये शत्रु मथनेहारे भूपाल घोर

not kill even a single soldier of his army, but drove them farther on till they began to weep and had no one to protect them. Viswamitra seeing the wonderful sight believed that the power of asceticism was far superior to that of a Kshatrya. He despised mere physical strength of a Kshatrya and owned the greatness of the Brahmanic power. 44. He resigned his kingdom and set his mind on asceticism. He shone in the glory of his asceticism and having filled all the world with his glory, was, at last, transformed into a Brahman. The son of Kushik was great enough to drink the som juice with Indra.

CHAPTER CLXXVII

The Gandharv continued that there was a glorious monarch, named Kalmashpad in the family of Ikshwaku. One day, he

हांश्चचचाररिपुमर्द्दनः ॥ २ ॥ तस्मिन्वनेमहाघोरे खड्गांश्च बहुशोऽहनत् । हत्वाच सुचिरंश्रान्तो राजा निववृतेततः ॥३॥ अकामयत्तंयाज्यार्थे विश्वामित्रः प्रतापवान्। सतुराजा महात्मानं वासिष्ठमृषिसत्तमम् ॥ ४ ॥ तृषार्त्तश्चक्षुधार्त्तश्च एकायनगतः पथि । अपश्यदजितःसंख्ये मुनिंप्रातिमुखागतम् ॥ ५ ॥ शक्तिंनाममहाभागं वासिष्ठ-कुलवर्द्धनम् । ज्येष्ठंपुत्रं पुत्रशताद्वासिष्ठस्य महात्मनः ॥ ६ ॥ अपगच्छपथोऽस्माकमि-त्येवं पार्थिवोऽब्रवीत् । तथाऋषिरुवाचैनं सान्त्वयन् श्लक्ष्णयागिरा ॥ ७॥ ममपन्था महाराज धर्मएषसनातनः । राज्ञासर्वेषुधर्मेषु देयःपन्थाद्विजातये ॥ ८ ॥ एवंपरस्प रंतौतु पथोऽर्थंवाक्यमूचतुः । अपसर्पापसर्पेति वागुत्तरमकुर्वताम् ॥ ९ ॥ ऋषिस्तुना पचक्रामतस्मिन्धर्मपथे स्थितः । नापिराजामुनेर्मानात् क्रोधाच्चाथजगामह ॥ १० ॥ अमुचंतन्तुपन्थानं तमृषिंनृपसत्तमः । जघानकशयामोहात्तदा राक्षसवन्मुनिम् ॥११॥ कशाप्रहाराभिहतस्ततः समुनिसत्तमः । तंशशापनृपश्रेष्ठं वासिष्ठःक्रोधमूर्च्छितः ।१२

वन में मृग और वराहों को काटकूट कर घूमने लगे वह देरतक ऐसा करके थककर मृगयासे निवृत्तहुए।३।इस के पहिले प्रतापी विश्वामित्रने उनको यजमान बनाना चाहाथा युद्धमें अजेय राजा कल्माषपाद -भूख प्यास के मारे विकलहोकर एकही मनुष्य के चलने योग्य संकीर्ण पथ से चलरहे थे कि सामने आतेहुए ऋषि श्रेष्ठ वसिष्ठ पुत्र महा-त्मा मुनि शक्ति को देखा वसिष्ठकुलके वढानेवाले महाभाग शक्ति महात्मा वसिष्ठ के सौ पुत्रों मेंसे वडेथे राजा उन से बोले कि तुम मेरेपथ से हटजाओ ऋषि मीठीबातों में उन को समझाकर बोले कि महाराज यह मेरापथ है सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों में यह सनातन धर्म करके कहा है कि ब्राह्मणों को पथदेना राजाका कर्त्तव्यहै।८।वे पथ के लिये आपसमें इस प्रकार बकबाद करनेलगे और :एक दूसरेको हटो यह कहनेलगे ऋषि धर्म के पथिकहोकर पथसे नहीं हटे राजानेभी मान और क्रोधके वश मुनि को पथ नहीं दिया ।१०।अनन्तर ऋषिके पथ न छोडने पर राजाने मोह से राक्षसकी भांति उनके कोडेमारे तव मुनि श्रेष्ठ वसिष्ठ पुत्र ने कोडोंकी चोटसे घायल और क्रोध से अचेतहोकर यह कह के उन

went to the forest to hunt deer. He was roaming there after killing many a deer and wild boar and was much tired. Viswa mitra had offered to become his priest. The king, distressed by hunger and thirst, was going on a narrow foot-path when he saw the great Rishi, Shaktri the eldest of the hundred sons of Bashishth, coming from the opposite direction and told him to move aside. The Rishi said mildly, " This is my way. It is a king's duty to give way to a Brahman.8. They quarrelled, thus, for the path—the Rishi being on the right did not turn aside and the king was proud and angry. The king beat the Rishi like a demon with lashes. The Rishis, wounded by the cut of lashes and mad with anger, cursed the king thus:— " You will, henceforth, be

हंसि राक्षसवद्यस्माद्राजापसद तापसम् । तस्मात्त्वमद्यप्रभृति पुरुषादो भविष्यसि ॥ ॥ १३ ॥ मनुष्यपिशिते शक्तश्चरिष्यसि महीमिमाम् । गच्छराजाधमेत्युक्तः शक्तिना वीर्यशक्तिना ॥ १४ ॥ ततो याज्यनिमित्तन्तु विश्वामित्रवसिष्ठयोः । वैरमासीत्तदा तन्तु विश्वामित्रोऽन्वपद्यत ॥ १५ ॥ तयोर्विवदतोरेवं समीपमुपचक्रमे । ऋषिरुग्रतपाः पार्थ विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ १६ ॥ ततः सबुबुधे पश्चात्तमृषिं नृपसत्तमः । ऋषेः पुत्रंवासिष्ठस्य वासिष्ठमिवतेजसा ॥१७॥ अंतर्द्धाय ततोऽत्मानं विश्वामित्रोऽपि भारत। तावुभावतिचक्राम चिकीर्षन्नात्मनः प्रियम् ॥ १८ ॥ सतुशप्तस्तदातेन शक्तिनावै नृपोत्तमः । जगामशरणंशक्तिं प्रसादयितुमर्हयन् ॥ १९ ॥ तस्यभावंविदित्वासनृपतेः कुरुसत्तम । विश्वामित्रस्ततोरक्ष आदिदेशनृपंप्रति ॥ २० ॥ शापात्तस्यतुविप्रर्षेर्विश्वामित्रस्यचाज्ञया । राक्षसः किङ्करोनाम विवेशनृपतिंतदा ॥ २१ ॥ रक्षसातंगृहीतंतु

भूपाल को शापदिया।१२।कि रेनराधम क्योंकि मुझ तपस्वीको तूने राक्षससमान मारा तू आजसे राक्षसहोगा, तू नरमांस पर आसक्तहोकर पृथ्वी पर टहलाकरेगा रेक्षत्रियाधम! अब जा तपोबलयुक्त शक्तिने यह कहकर पथ छोडादिया।१४।इससे पहिले उसकल्माषपाद राजाकी याजन-क्रिया के बिषय में विश्वामित्र और वसिष्ठ में आपसकी शत्रुता होगयी थी इस लिये विश्वामित्र वसिष्ठ को लक्ष्यकर राजाके निकट गये हेपार्थ राजा और शक्ति उसप्रकार झगडरहेथे, कि ऐसेसमय कठोर तपस्वी प्रतापी विश्वामित्र उन के समीप जा पहुँचे।१६। अनन्तर नृप श्रेष्ठ कल्माषपादने वसिष्ठके समान तेजस्वी ऋषि शक्ति को वसिष्ठ-पुत्र करके जाना हे भारत आगे विश्वामित्र अपनी प्रिय इच्छा को सिद्धकरनेके लिये अपने को अन्तर्हित करके उन दोनों को नांघगये।१८। नृपोत्तम कल्माषपादने शक्ति से शापग्रसितहोकर उनको प्रसन्नकरने के लिये उनकी उपासना कर शरण ली। हेकुरु श्रेष्ठ विश्वामित्र ने उन राजा के भावको समझकर राक्षस को उन के शरीर में घुसने की आज्ञा दी।२०। किंकर नामक राक्षस उनविप्रर्षि के शाप और विश्वामित्रकी आज्ञा

---

transformed into a Rakshas like which you have beaten me. Go away." The ascetic, Shaktri, having said this, gave him the way. Bashisth and Viswamitra had already quarrelled on the subject of sacrifice by Kalmashpad. Viswamitra went to the king when he was quarrelling with the rishi's son in order to do some harm to Bashishth.16.The king had by this time come to know that the great Rishi was the son of Bashishth. Vishwamitra passed them over stealthily. The king begged the Rishi's pardon and praised to please him. Viswamitra noticed the king's mevements and ordered a Rakshas to enter into the body of the king.20.The Rakshas did as he was bidden to do by Viswamitra's command and the cruse of the Rishi. Viswamitra himself went away on seeing the king in the

विदित्वा मुनिसत्तमः । विश्वामित्रोऽप्यपाक्रामत्तस्माद्देशादरिन्दम ॥ २२ ॥ ततः सनृप तिस्तेन रक्षसान्तर्गतेनच । बलवत्पीडितः पार्थ नान्वबुध्यत किंचन ॥ २३ ॥ ददर्शाथ द्विजः कश्चिद्राजानं प्रस्थितं वनम् । अयाचत क्षुधापन्नः समांसं भोजनं तदा ॥ २४ ॥ तमुवाचाथ राजर्षिर्द्विजं मित्रसहस्तदा । आस्व ब्रह्मंस्त्वमत्रैव मुहूर्तं प्रतिपालयन् ॥ २५ ॥ निवृत्तः प्रतिदास्यामि भोजनं ते यथेप्सितम् । इत्युक्त्वा प्रययौ राजा तस्थौ च द्विजसत्तमः ॥ २६ ॥ ततो राजा परिक्रम्य यथाकामं यथासुखम् । निवृत्तोऽन्तः पुरं पार्थ प्रविवेश महामनाः ॥ २७ ॥ ततोऽर्द्धरात्र उत्थाय सूदमानाय्य सत्वरम् । उवाच राजा संस्मृत्य ब्राह्मणस्य प्रतिश्रुतम् ॥ २८ ॥ गच्छामुष्मिन्वनोद्देशे ब्राह्मणो मां प्रतीक्षते । अन्नार्थी तं त्वमन्नेन समांसेनोपपादय ॥ २९ ॥ गन्धर्व उवाच । एवमुक्तस्ततः सूदः सोऽनासाद्यामिषं क्वचित् । निवेदयामास तदा तस्मै राज्ञे व्यथान्वितः ॥ ३० ॥ राजा तु रक्षसाविष्टः सूदमाह गतव्यथः । अप्येनं नरमांसेन भोजयेति पुनः पुनः ॥ ३१ ॥ तथेत्युक्त्वा

से राजाके शरीरमें जा घुसा है शत्रुदमन मुनि श्रेष्ठ विश्वामित्र राजा को राक्षस युक्त जानकर वहांसे चलेगये।२२।हेपार्थ राजा शरीर स्थित राक्षस से अत्यन्त पीडितहोकरके कुछ समझ नहीं सके अनन्तर वह बनको लौट जारहेथे कि ऐसेसमयमें भूखे एकब्राह्मण ने उनको देखकर उनसे मांसयुक्त भोजनकी सामग्री मांगी।२४।मित्र पालनेवाले राजा वन से बोले कि हे ब्रह्मन् मुहूर्त्त भर यहां ठहरकर मेरेलौटनेकी बाट देखते रहो मैं लौटकर आपकी इच्छानुरूप भोजनदेदूंगा राजा यह कहकर चले गये ब्राह्मण वहांराजाकी प्रतीक्षा में ठहरे रहे।२६। हे पार्थ महानुभाव महाराज ने सुख से मनमाना घूमधाम कर लौट करके अन्तःपुर में प्रवेश किया आगे वह आधीरातको उठकर ब्राह्मण से स्वीकारकियेहुए विषय को स्मरणकर उसीक्षण रसोइये को बुलवाकर बोले कि उस बन में एक ब्राह्मण भोजनकी इच्छासे मेरी बाट ताकतेहैं।२८।तुम अब वहांजाकर उनको मांस सहित अन्नदे आओ। गन्धर्व बोले कि रसोइयेने राजाकीआज्ञा को सुनकर कहीं मांस न पाकरके पीडित चित्तहोके उन से यहबात कहसुनाई।३०।राजा राक्षसयुक्तथे सो बिना सोच समझ

possession of the Rakshas. The king lost all his wits. On his way back a Brahman met him and asked for some food.24.The generous king promised to comply with his request, in a short time, on his return. The king went home and the Brahman kept waiting for him. The king remembered his promise to the Brahman at midnight and ordered the cook to take some flesh as food to Brahman who was waiting in the forest.28.The cook not finding flesh in the house informed the king. The king possessed by the Rskshas had lost his wits and could not understand. He enjoined the cook to carry at once to the Brahman some human flesh as food. The cook brought it from the house of the executioner and having cooked the human flesh brought it before the hungry Brahman who

ततःसूदः संस्थानंवध्यघातिनाम् । गत्वाजहारत्वरितो नरमांसमपेतभीः ॥ ३२ ॥
एतत्संस्कृत्यविधिवदन्नोपहितमाशुवै । तस्मैप्रादाद्ब्राह्मणाय क्षुधितायतपस्विने ।३३।
ससिद्धचक्षुषादृष्ट्वा तदन्नंद्विजसत्तमः । अभोज्यमिदमित्याह क्रोधपर्याकुलेक्षणः ।३४।
ब्राह्मणउवाच । यस्मादभोज्यमन्नंमे ददातिसनृपाधमः । तस्मात्तस्यैवमूढस्य भविष्यत्य
त्रलोलुपा ३५। सक्तोमानुषमांसेषु यथोक्तःशक्तिनातथा। उद्वेजनीयोभूतानां चरिष्यति
महीमिमाम् ।३६। द्विरनुव्याहृतेराज्ञःस शापांवलवानभूत्। रक्षोवलसमाविष्टो विसंज्ञश्चा
भवन्नृपः ।३७। ततःसनृपतिश्रेष्ठो रक्षसापहृतेन्द्रियः। उवाचशक्तिंतंदृष्ट्वानचिरादिवभारत
।३८। यस्मादसदृशःशापः प्रयुक्तोऽयंमयित्वया । तस्मात्त्वत्तःप्रवर्त्तिष्ये खादितुंपुरुषान
हम् ॥३९॥ एवमुक्त्वाततःसद्यस्तं प्राणैर्विप्रयुज्यच । शक्तिंनंभक्षयामास व्याघ्रःपशु
मिवेप्सितम् ॥ ४० ॥ शक्तितन्तुमृतंदृष्ट्वा विश्वामित्रःपुनःपुनः । वसिष्ठस्यैवपुत्रेषु त-

के वार वार कहा कि तुम नरमांस लाकर उस ब्राह्मणको खिलाओ रसोइया तथास्तु कर कर वेगसे विना भय वध्य घातियोंके घर में जाकर नरमांस लाया।३२।आगे अन्नके साथ उस नरमांस को विधिपूर्वक पकाकर विना विलम्ब उन भूखे तपस्वी ब्राह्मण के निकट जाकर उनको देदिया । ब्राह्मण ने सिद्ध नेत्रोंसे उस अन्न को देखकर क्रोधयुक्त नेत्रोंसे कहा कि यह अन्न भोजनयोग्य नहीं है।३४। जिस नृपाधम ने मुझको भोजन के अयोग्य अन्न दिया है उस मूर्खकी नरमांस पर लालसाहोगी, पहिले ऋषि शक्त्रि ने जैसा कहा था वैसाही होगा——यह राजा नरमांस पर आसक्त होकर जीवों में घबराहट लाकर इस पृथ्वी पर घूमा करेगा । ३६ । इसप्रकार राजा पर दूसरी बार शाप लगने से वोह अति वलयुक्त हुआ राजा शरीर में घुसे हुए राक्षसके वल से अचेत होगया अनन्तर राक्षस से इन्द्रियों के चुराये जाने पर नृप श्रेष्ठ ने कुछ काल पीछे शक्तिको देख कर कहा ।३५। कि तुमने मुझको अनुचित शाप दिया है सो मैं पहले तुम्हीं से आरम्भ कर मनुष्य खाने को प्रवृत्त होता हूं राजा यह कह कर उसी क्षण उनके प्राण नष्ट कर उन को इस प्रकार खागया कि जैसे व्याघ्र मनमाने पशुको खाताहै ।४०। विश्वामित्र वसिष्ठ पुत्र

knowing the fact by the power of asceticism said that the food was not worth eating and ratified the words of Shaktri saying angrily, "The king will have a hankering after human flesh bacause he has sent me food which is not worth eating. He will roam on the earth in search of human flesh and will cause fear among the people. The king thus cursed a second time, became very powerful and lost his wits. Some days after, the king seeing Shaktri. said, "You have given me a bad curse. I shall therefore, eat up human beings and shall begin with you." So saying the king devoured the Rishi as a lion does his prey. 40. Seeing the death of Shaktri, Vishwamitra instigated the Rakshas to eat up all the other sons of Vashisth. The monarch, having the Rakshas within his body, ate up all the sons of Vashishth

द्रक्षःसन्दिदेशह ॥ ४१ ॥ सतानशक्त्यवरान् पुत्रान्वसिष्ठस्यमहात्मनः। भक्षयामास संक्रुद्धः सिंहःक्षुद्रमृगानिव ॥ ४२ ॥ वसिष्ठोघातितानश्रुत्वा विश्वामित्रेणतान्सुतान्। धारयामासतंशोकं महाद्रिरिवमेदिनीम् ॥ ४३ ॥ चक्रेचात्मविनाशाय बुद्धिंसमुनिसत्तमः। नत्वेवकौशिकोच्छेदं मेनेमतिमतांवरः ॥ ४४ ॥ समेरुकूटादात्मानं मुमोचभगवानृषिः। गिरेस्तस्यशिलायान्तु तूलराशाविवापतत् ॥ ४५ ॥ नममारचपातेन सयदातेनपाण्डव। तदाग्निमिद्धंभगवान संविवेशमहावने ॥ ४६ ॥ तंतदासुसमिद्धोऽपि नददाहहुताशनः। दीप्यमानोऽप्यमित्रघ्न शीतोऽग्निरभवत्ततः ॥ ४७ ॥ ससमुद्रमभिप्रेक्ष्य शोकाविष्टोमहामुनिः। बद्ध्वाकण्ठेशिलांगुर्वी निपपाततदाम्भसि ॥ ४८ ॥ ससमुद्रोर्मिवेगेन स्थलेन्यस्तोमहामुनिः। जगामसततःखिन्नः पुनरेवाश्रमंप्रति ॥ ४९ ॥
इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि वासिष्ठे वसिष्ठशोके सप्तसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः ।१७७।

शक्ति को मरते देख कर चार २ राक्षस को वसिष्ठके ही पुत्रों को खाने की आज्ञा देनेलगे वोह राक्षस युक्त राजा क्रोधित होकर महात्मा वसिष्ठ के दूसरे पुत्रों को क्रमसे इस प्रकार खागया कि जैसे सिंह छोटे मृगको खाताहै।४२। वसिष्ठ ने विश्वामित्र के द्वारा उन पुत्रों का नष्ट होना सुनकर पुत्र विछोह के कठोर शोक को इस प्रकार सह लिया कि जैसे महाद्रि का भारधरती सहती है उस महामति मुनि श्रेष्ठ ने आत्मघात करना निश्चय किया पर तौभी कुशिक के वंश को उखाड़ने की चेष्टा नहीं की।४४। उसने सुमेरु की चोटी पास अपने को गिराया पर उस से कोई क्लेश नहीं पहुँचा उनका पत्थरोंके ढेर पर गिरना मानो रुई पर गिरने के सदृश हुआ हे पाण्डव वोह भगवान् महर्षि पहाड़ की चोटी से गिरकर न मरनेके हेतु महावनमें आग लगाकर उसमें जाघुसे।४६।पर उस जलती हुई आग ने वेग से जलने परभी उनको नहीं जलाया। हे शत्रुनाशि ! उन को वोह आग ठंडी जान पडी अनन्तर पुत्र शोक से विकल महामुनि समुद्र देख कर अपने गलेमें भारी पत्थर बांधकर उसके जलमें जागिरे। ४८। फिरभी न डूबकर समुद्र की लहर के बल से तटपर बैठाये गये तब किसी प्रकार अपनी मृत्यु न होने पर वोह दुःखी चित से आश्रम को लौट गये ॥४९॥

one by one, as a lion does the deer. Having heard about the death of his sons through Vishwamitra, Yashisth bore all the grief of the separation of his sons as the earth bears the weight of a mountain. The Rishi resolved to commit suicide but not the destruction of the Kushik family.44.He fell down from the summit of mount Meru and was not hurt. His fall upon the heap of mountain stones was like that on a heap of cotton down. He then set fire to a large forest and entered in it,but,the fire did not burn him.Then the great muni threw himself into the sea with a heavy stone tied to his neck, but the waves lashed him back and left him on shore. Then, seing no way to die, he returned to his hermitage in great grief.49.

गंधर्व उवाच । ततोदृष्ट्वाश्रमपदंरहितं तैःसुतैर्मुनिः । निर्ज्जगामसुदुःखार्त्तः पुन-
रप्याश्रमात्ततः ॥ १ ॥ सोऽपश्यत्सरितंपूर्णां प्रावृट्कालेनवाम्भसा । वृक्षान्वहुवि-
धान्पार्थ हरन्तींतीरजान्वहून् ॥ २ ॥ अथचिन्तासमापेदे पुनःकौरवनन्दन । अम्भ
स्यस्यांनिमज्जेयामितिदुःखसमन्वितः ॥ ३ ॥ ततःपाशैस्तदात्मानं गाढंबध्वामहामुनिः ।
तस्याजलेमहानद्या निममज्जसुदुःखितः ॥ ४ ॥ अथाच्छित्वानदी पाशांस्तस्यारिवलसू
दन । स्थलस्थंतमृषिंकृत्वा विपाशंसमवासृजत् ॥ ५ ॥ उत्ततारततःपाशैर्विमुक्तः स
महानृषिः । विपाशेतिच नामास्या नद्याश्चक्रेमहानृषिः ॥ ६ ॥ शोकेबुद्धिंतदाचक्रे नचै
कत्रव्यतिष्ठत । सोऽगच्छत्पर्वतांश्चैव सरितश्चसरांसिच ॥ ७ ॥ दृष्ट्वासपुनरेवर्षिर्नदीं
हैमवतींतदा । चण्डग्राहवतींभीमां तस्याःस्रोतस्यपातयत् ॥ ८ ॥ सातमग्निसमंविप्रम
नुचिन्त्यसरिद्वरा । शतधाविद्रुता यस्माच्छतद्रुरितिविश्रुता ॥ ९ ॥ ततःस्थलगतं

अध्याय १७८ ॥

गन्धर्व बोले, कि अनन्तर भगवान् मुनि अपने आश्रम को पुत्रों से खाली देखकर अति दुःखी चित्त से फिर आश्रम से निकले । हे कौरव नन्दन पार्थ ! वह शोकयुक्त ऋषि वर्षा में नए जलसे भरी हुई एक बहतीहुई नदी को तट के नाना वृक्षों को हरते देख कर फिर सोचने लगे कि मैं इस जल में डूबकर प्राणछोड़ूं ।३। आगे उन्होंने रस्सीसे अपनेको दृढरूप से बांधकर उस बडी नदी के जल में डुबाया । हे शत्रुबल-मथनेहारे ! तब उस नदी ने उनकी रस्सी को काटकर बन्धन को तोड़कर स्थलपर छोडदिया, इससे उन्होंने बंधनसे मुक्तहो और उठकर उस नदी का 'विपाशा' नाम रक्खा ।६। अनन्तर वह शोकसे विकल होकर एक स्थान पर रहनहींसके, पर्वत, नदी और तालों में घूमते फिरने लगे । एक समय हैमवती नाम्नी नदी को अति क्रोधी हिंसक जल-जन्तुओं से भरीहुई और भीषणाकार देखकर उसके सोतेमें जागिरे ।८।वह बडी नदी विप्रवरको अग्निवत अनुभव कर सैकड़ों भागोंमें द्रुतवेग से बह चली इस लिये तभीसे उस नदी का नाम 'शतद्रु,

CHAPTER CLVIII

The Gandharv continued that seeing his hermitage destitute of all his sons, he again went out with a distressed heart. And seeing a river swollen by rains and washing away large trees, the rishi tied a strong rope round his body and threw himself into the stream. But the rope was broken and he was again left upon the shore. He bestowed the name of Bipasha on the river. 6. After this occurrence he could not stay in one place for grief. One day seeing the Hemvati full of aquatic animals and flowing angrily, he threw himself into its currents. The river finding the great Rishi hot like fire, divided itself into a hundred branches and was thenceforward called the Shatadru. The great Rishi, seeing himself lifted

दृष्ट्वा तत्राप्यात्मानमात्मना । मर्त्तुंनशक्यामीत्युक्त्वा पुनरेवाश्रमंययौ ॥ १० ॥ स गत्वाविविधान् शैलान्देशान् बहुविधांस्तथा । अदृश्यन्त्याख्यया वध्याथाश्रमेऽनुसृतोऽभवत् ॥ ११ ॥ अथशुश्रावसङ्गत्या वेदाध्ययननिस्वनम् । पृष्ठतःपरिपूर्णार्थं षड्भिरङ्गैरलंकृतम् ॥ १२ ॥ अनुव्रजतिकोऽन्वेष मामित्येवाथसोऽब्रवीत् । अहमित्यदृश्यन्तीमंसा स्नुषाप्रत्यभाषत । शक्तेर्भार्य्यामहाभाग तपोयुक्तातपस्विनी ॥ १३ ॥ वसिष्ठ उवाच । पुत्रिकस्यैषसांगस्य वेदस्याध्ययनस्वनः । पुरासांगस्यवेदस्य शक्तेरिवमयाश्रुतः ॥ १४ ॥ अदृश्यन्त्युवाच । अयंकुक्षौसमुत्पन्नः शक्तेर्गर्भःसुतस्यते । समाद्वादशतस्येह वेदानभ्यस्यतोमुने ॥ १५ ॥ गंधर्व उवाच । एवमुक्तस्तयाहृष्टो वसिष्ठःश्रेष्ठभागृषिः । अस्तिसन्तानमित्युक्त्वा मृत्योःपार्थन्यवर्त्तत ॥ १६ ॥ ततःप्रतिनिवृत्तःस तयावध्वासहानघ । कल्माषपादमासीनं ददर्शविजनेवने ॥ १७ ॥ सतुद

प्रसिद्ध हुआ है । महर्षि उस भयानक नदी में गिरके भी अपनेको स्थल पर उठाये जाते देखकर यह समझे कि ' इच्छानुसार प्राण त्याग नहीं करसकेंगे ' फिर आश्रमको ओर चले ।१०। वह भांति भांति के पर्वत और नाना देशोंसे होकर अन्तमें आश्रमको जा रहेथे कि ऐसे समय में अदृश्यन्ती नाम्नी उनकी पुत्रवधु उनके पीछे जा रहीथी। तव उन ऋषि ने निकट होनेके कारण पीछेसे षडङ्गों से अलंकृत पूर्णार्थयुक्त वेद पठनकी ध्वनि सुनकर पूछा कि कौन मेरेपीछे आरहाहै । पुत्रवधु बोली, कि हे महाभाग मैं शक्तिकी तपोयुक्त तपस्विनी स्त्री अदृश्यन्ती, आपकी पुत्रवधुहूं १३।वसिष्ठ बोले, कि वेटी मैंने पहिले शक्ति के मुखसे जिस प्रकार सांगवेदकी ध्वनि सुनीथी, अव किसके मुखसे वेदके पठनकी वैसी ध्वनि सुन पडी ! अदृश्यन्ती बोली, कि हे मुने ! तुम्हारे पुत्र शक्ति के वीर्य औरमेरे गर्भसे एक सन्तान है, वह पुत्र वारह वर्ष से ऐसा वेदाभ्यास कररहाहै, आपने उसीसे वेदकी ध्वनि सुनी है ।१५। गन्धर्व वोले, कि हेपार्थ ! भाग्यवान् ऋषि श्रेष्ठ वसिष्ठ अदृश्यन्ती की उस वातको सुनकर प्रसन्न होकर यह समझ कर, कि 'मेरा वंशहै,' मृत्युकी इच्छासे निवृत्ताहुए । हे अनघ ! वह लौटकर पुत्रवधु के संग जारहे थे कि ऐसे समय निराले में

up from the great river, believed that he could not destroy himself at will and went back to his hermitage. 10. On his way back he saw his son's wife Adrishyanti, following him. Hearing the hymns of the Vedas from behind his back, he inquired who was coming after him. His son's wife said, "I am Adrishyanti the ascetic wife of your son, Shakti." Basisth said, "From whom do I hear, daughter, the sounds of the Vedic hymns like that of my son Shakti ?" Adrishyanti replied, "You hear the voice of Shaktri's son who has, for twelve years, been reading the Vedas." 15 The Gandharv continued that Vashisth was much pleased on learning that his

ष्ठवंतराजा क्रुद्धउत्थायभारत । आविष्टोरक्षसोग्रेण इयेषात्तुंतदामुनिम् ॥ १८ ॥ अदृ
श्यन्तीतुतंदृष्ट्वा क्रूरकर्माणमग्रतः । भयसंविग्नयावाचा वसिष्ठमिदमब्रवीत् ॥ १९ ॥
असौमृत्युरिवोग्रेण दण्डेनभगवन्नितः । प्रगृहीतेनकाष्ठेन राक्षसोऽभ्येतिदारुणः ॥२०
तंनिवारयितुंशक्तो नान्योऽस्तिभुविकश्चन । त्वदृतेऽद्यमहाभाग सर्ववेदविदांवर ॥
॥ २१ ॥ पाहिमांभगवन् पापादस्माद्दारुणदर्शनात् । राक्षसोऽयमिहात्तुंवै नूनमावां
समीहते ॥ २२ ॥ वसिष्ठ उवाच । माभैःपुत्रिनभेतव्यं राक्षसात्तुकथञ्चन । नैतद्रक्षो
भयंयस्मात् पश्यसित्वमुपस्थितम् ॥ २३ ॥ राजाकल्माषपादोऽयं वीर्य्यवान्प्रथितो
भुवि । सएषोऽस्मिन् वनोद्देशे निवसत्यतिभीषणः ॥ २४ ॥ गंधर्व उवाच । तमापत
न्तंसंप्रेक्ष्य वसिष्ठोभगवानृषिः । वारयामासतेजस्वी हुङ्कारेणैवभारत ॥ २५ ॥ मन्त्र
पूतेनचपुनःस तमभ्युक्ष्यवारिणा । मोक्षयामासवै शापात्तस्माद्योगान्नराधिपम् ॥२६॥

बैठे हुए कल्माषपाद को देखा। १७। हेभारत ! उस कठोर राक्षसयुक्त राजाकल्माषपादने मुनि को देखकर उसीक्षण क्रोध से उठ कर खा जाना चाहा; अदृश्यन्ती सामने उस कठोर कर्मवाले को देखकर भय से घबराकर वसिष्ठ से बोली।१९।किहे भगवन्! वह कठोर राक्षस कठोर दण्डधारी साक्षात् यमराज के समान लकडी उठाकर इधर आरहाहै। हेसर्ववेद निपुण महाभाग ! धरती भरमें आपके विना कोई भी इसके रोकने को समर्थ नहीं है । २१ । हेभगवन् ! इस कठोर भयावने आकार के पापात्मा से मेरी रक्षाकरो। मुझको जान पडता है कि वह राक्षस हम दोनों के खाजाने को निश्चय ही उद्यतहुआ है । २२ । वसिष्ठ बोले कि बेटि भय मत खाओ राक्षस से कोई भय नहीं है । तुम जिनसे वर्तमान भय देखतीहो वह राक्षस नहीं हैं जो कल्माषपाद नामक भूमण्डल में प्रसिद्ध राजा हैं वही इस वनमें अति भयंकर आकार धारणकर राक्षसके स्वरूपमें बास कररहे हैं ।२४। गन्धर्व ने कहा कि हेभारत! तेजस्वी भगवान् ऋषि वसिष्ठने उनको आ गिरते देखकर घोरनाद से रोका आगे मन्त्र से पवित्र कियेहुए जल से उनको नहलाकर

family was not altogether extinct. In the way he saw Kalmashpad sitting alone. Seeing the Rishi the king angrily desired to eat him up. Adrishyanti was much afraid at seeing the fearful visage of the king and called out to Basisth saying, " Look, the Rakshas is coming with a stick this way like Yamraj (the angel of death) ! No one, in the world, can check him ! Protect me from this sinful wretch ! 21. I believe the Rakshas will now eat us both." Bashisth said, " Have no fear of the Rakshas, daughter. He is not a Rakshas whom you fear, but the famous king Kalmashpad who has been living in the forest in the likeness of a Rakshas." 24. The Gandharv continued that Vashisth stopped him with a loud voice and rid him of the great curse with a sprinkling of water

सहिद्वादशवर्षाणि वासिष्ठस्यैवतेजसा । ग्रस्तआसीद्ग्रहेणेव पर्वकालेदिवाकरः ॥२७॥ रक्षसाविप्रमुक्तोऽथस नृपस्तद्वनंमहत् । तेजसारञ्जयामास सन्ध्याभ्रमिवभास्करः ॥ २८ ॥ प्रतिलभ्यततः संज्ञामभिवाद्यकृताञ्जलिः । उवाचनृपतिःकाले वसिष्ठमृषिसत्तमम् ॥ २९ ॥ सौदासोऽहंमहाभाग याज्यस्तेमुनिसत्तम । अस्मिन्कालेयदिष्टंते ब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ ३० ॥ वसिष्ठ उवाच । वृत्तमेतद्यथाकालं गच्छराज्यंप्रशाधिवै । ब्राह्मणंतुमनुष्येन्द्र मावमंस्थाःकदाचन ॥ ३१ ॥ राजोवाच । नावमंस्येमहाभाग कदाचिद्ब्राह्मणर्षभान् । त्वन्निदेशेस्थितःसम्यक् पूजयिष्याम्यहंद्विजान् ॥ ३२ ॥ इक्ष्वाकूणांचयेनाहमनृणः स्यांद्विजोत्तम । तत्त्वतःप्राप्तुमिच्छामि सर्ववेदविदांवर ॥ ॥ ३३ ॥ अपत्यमीप्सितंमह्यं दातुमर्हसिसत्तम । शीलरूपगुणोपेतमिक्ष्वाकुकुलवृद्धये ॥ ३४ ॥ गन्धर्व उवाच । ददानीत्येवतंतत्र राजानंप्रत्युवाचह । वसिष्ठःपरमेष्वासं सत्यसन्धोद्विजोत्तमः ॥ ३५ ॥ ततःप्रतिययौकाले वसिष्ठःसहतेनवै । ख्यातांपुरीमि-

उसघोर शापसे मुक्तकिया।२६।वह राजा बारहवर्षतक वसिष्ठपुत्र शक्तिके तेजसे इसप्रकार ग्रसित थे कि जिसप्रकार सूर्य राहुसे ग्रसितहोताहै, अब शाप से मुक्तहोकर ऐसे तेजसे उस बडे वनको सुशोभित किया कि जैसे सूर्यदेव सन्ध्याकालके बादलको रंगदेते हैं।२८। तब राजा ज्ञान प्राप्तकर प्रणाम-पूर्वक दोनोंहाथ जोडकर ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ठ से बोले कि हे महाभाग मैं सुदास-राजाका पुत्र आपका यजमान हूं हेमुनि श्रेष्ठ कहो अब आपकी क्या इच्छा है मैं उसको पूरी करदेता हूं।३०।वसिष्ठबोले कि हेमानवेन्द्र मेरी जो इच्छाथी, वह काल के क्रम से पूरी होगयी है, अब तुम राजधानी में जाकर राज्यशासन करो, फिर कभी ब्राह्मण का अनादर मत करना राजा बोले कि हेमहाभाग मैं कभी ब्राह्मणका अनादर नहीं करूंगा आप के आज्ञाधीन रहकर ब्राह्मणोंकी भलीभांति पूजा करूंगा।३२।हे सर्ववेद निपुण द्विजोत्तम मैं आप से वह वस्तु पानेकी इच्छा करताहूं जिससे इक्ष्वाकुवंश के ऋण से छुटकारा पाऊं हे श्रेष्ठ आप इक्ष्वाकुवंश का बढानेवाला रूपगुणशील अच्छा पुत्र मुझको देवें।३४।गन्धर्वराज बोले कि सत्यशील द्विजोत्तम वसिष्ठने यहकहकर कि पुत्रदूंगा उन बडे चापधारी राजासे अंगीकारकिया हेमनुजेन्द्र अनन्तर वसिष्ठ कालानुसार उस

made holy by pronouncing the Mantras over it. The king had been for twelve years under the influence of Shaktri's curse as the Sun eclipsed by Rahu. Being now free from the curse the king brightened the forest as the sun sheds redness over the sky in the evening. 28. The king now being in his senses spoke respectfully to Bashisth, saying, "I am the son of king Sudas at your service. I am ready to fulfil your desires." Bashisth said, "My desire, O king, has been gratified by time. You may now go to your capital to administer the affairs of your kingdom. Never be discourteous to

मां लोकेष्वयोध्यांमनुजेश्वर ॥ ३६ ॥ तंप्रजाःप्रतिमोदन्त्यः सर्वाःप्रत्युद्गतास्तदा । विपाप्मानंमहात्मानं दिवौकसइवेश्वरम् ॥ ३७ ॥ सुचिरायमनुष्येन्द्रो नगरींपुण्यलक्षणाम् । विवेशसहितस्तेन वसिष्ठेनमहर्षिणा ॥ ३८ ॥ ददृशुस्तं महीपालमयोध्यावासिनोजनाः । पुरोहितेनसहितं दिवाकरमिवोदितम् ॥ ३९ ॥ सचतांपूरयामासलक्ष्म्या लक्ष्मीवतांवरः । अयोध्यांव्योमशीतांशुः शरत्कालइवोदितः ॥ ४० ॥ संसिक्तमृष्टपन्थानं पताकाध्वजशोभितम् । मनःप्रह्लादयामासतस्य तत्पुरमुत्तमम् ॥ ४१ ॥ तुष्टपुष्टजनाकीर्णा सापुरीकुरुनन्दन । अशोभततदातेन शक्रेणेवामरावती ॥ ४२ ॥ ततःप्रविष्टेराजर्षौ तस्मिंस्तत्पुरमुत्तमम् । राज्ञस्तस्याज्ञयादेवी वसिष्ठमुपचक्रमे ॥४३॥ महर्षिःसम्विदंकृत्वा सम्बभूवतयासह । देव्यादिव्येनविधिना वसिष्ठःश्रेष्ठभाग्ऋषिः । ॥ ४४ ॥ ततस्तस्यांसमुत्पन्ने गर्भेसमुनिसत्तमः । राज्ञाभिवादितस्तेन जगाममुनिरा-

राजाके साथ साथ अयोध्या नाम्नी प्रसिद्ध नगरीको गये।३६।प्रजाओंने महात्मा राजाको आते देखकर इसप्रकार प्रसन्न चित्तसे स्वागत किया कि जैसे देवगण देवराजको आते देखकर प्रमुदितहोते हैं नरेन्द्र ने बहुत दिनोंके पीछे महात्मा वसिष्ठ के साथ पुण्यलक्षणों से भरीहुई नगरीमें प्रवेशकिया।३८।तव अयोध्यावासी जन पुरोहितके साथ उन महीपाल को उगेहुए सूर्यकीभांति देखने लगे उन भूपति ने अपनी शोभा से अयोध्या नगरी को इसप्रकार छा लिया कि जैसे शरत्कालमें उगाहुआ चन्द्रमा आकाशमण्डल को सुशोभित करताहै।४०।उसकालमें राजमार्ग जलसे भिगोया गया और भलेप्रकार साफ कियागयाथा और नगरके स्थान स्थानमें फहरातीहुई ध्वजा और पताका सोहरही थीं सो नगर देखकर राजाका चित्त अति आनन्दित हुआ हेकुरुनन्दन तव तुष्ट और पुष्ट जनों से छायी हुई वह नगरी भूपाल कल्माषपादसे इसप्रकार शोभा पानेलगी कि जिसप्रकार अमरावती अमरनाथसे सुशोभितहोतीहै।४२।अनन्तर राजर्षिके अपूर्व पुरीमें प्रवेश करने पर उनकी आज्ञा से देवी राजरानी वसिष्ठकी उपासना करनेलगी महर्षिश्रेष्ठ वसिष्ठ दिव्य विधि के अनुसार नियमकरके उससे मिले ।४४। अनन्तर राजरानीके गर्भहोनेपर महर्षि राजासे

Brahmans. The king promised to be always courteous to Brahmans, and said, "I request you to enable me to get rid of the debts of Pitris. Give me a son to perpetuate the line of Ikshwaku."34. The Gandharv continued that Vasisth the best of Brahmans promised to give the king a son. He then went with the king to Ayodhia the famous city. The people gave a hearty welcome to the king like the welcome of gods to Indra. The king had entered the city with Vashisth after so many years. He was looked by the people like the rising sun. He beautified the city like the moon of the winter season. At the king's entry the Public road was watered and decorated with

श्रमम् ॥ ४५ ॥ दीर्घकालेनसागर्भं सुषुवेनतुतंयदा । तदादेव्यश्मनाकुक्षिं निर्बिभेद यशस्विनी ॥ ४६ ॥ ततोऽपिद्वादशेवर्षे सजज्ञेपुरुषर्षभः । अश्मकोनामराजर्षिः पौदन्यंयोन्यवेशयत् ॥ ४७ ॥

इत्यादिपर्वणिचैत्ररथपर्वणिवासिष्ठसौदासमुतोत्पत्तौ अष्टसप्तत्यधिकशतोऽध्यायः १७८

गन्धर्व उवाच । आश्रमस्थाततः पुत्रमदृश्यन्ती व्यजायत । शक्तेःकुलकरंराजन् द्वितीयमिवशक्तिनम् ॥ १ ॥ जातकर्मादिकास्तस्य क्रियाःसमुनिसत्तमः । पौत्रस्यभरतश्रेष्ठ चकारभगवान् स्वयम् ॥ २ ॥ परासुःसयतस्तेन वासिष्ठःस्थापितोमुनिम् । गर्भस्थेन ततोलोके पराशरइतिस्मृतः ॥ ३ ॥ अमन्यतसधर्मात्मा वासिष्ठंपितरंमुनिः । जन्मप्रभृतितास्मिंस्तुपितरीवान्ववर्त्तत ॥ ४ ॥ सतातइतिविप्रर्षि वासिष्ठंप्रत्यभाषत । मातुः

प्रणाम पूर्वक पूजेजाकर आश्रम में लौटआये बहुत दिन बीतने परभी रानी के संतान नहीं हुई तब यशस्विनी राजरानी ने अश्म अर्थात् पत्थरकी चोट से कोखको फाडडाला। इस लिये बारहवर्ष तक गर्भ में स्थित उन पुरुष श्रेष्ठ ने अश्मक नामक राजर्षिहोकर जन्म लिया कि जिन्हों ने पौदन्यनामक नगरको बसाया था ॥ ४७ ॥

अध्याय ॥ १७९ ॥

गन्धर्व ने कहा कि हेराजन् अनन्तर आश्रममें स्थित अदृश्यन्तीने दूसरे शक्ति के समान शक्ति का वंश बढानेवाला पुत्र प्रसव किया हेभारत श्रेष्ठ मुनि श्रेष्ठ भगवान् वसिष्ठ ने स्वयं उसपोतेकी जात-कर्मादि क्रियाकी।२।वह पुत्र जब गर्भ में था तबवसिष्ठने परासुहोना अर्थात् जीवन त्याग देना निश्चयकियाथा सो वह पराशर नाम से भूमण्डल में प्रसिद्ध हुए धर्मात्मा पराशर जन्म से मुनि बसिष्ठ को पिता जानकर उनपर पिता के सदृश व्यवहार किया करतेथे हेशत्रु-मथन कुन्तीनन्दन एक दिन उन्होंने माताअदृश्यन्ती

flags. He was much pleased at seeing the city so decorated. The city was full of happy subjects and the king looked like Indra entering Amraoti.42.By the order of the king, the queen worshipped Vashisth who met her with due rites When the queen had conceived, Vashisth returned to his hermitage. A long time passed, but the queen did not bring forth any child. She then struck her womb with a stone and miscarried. A prince was born of her and was named Ashmak. He was the founder of the city named Paudanya.47.

CHAPTER CLXXIX

The Gandharv continued that Adrishyanti brought forth in the hermitage a son, like another Shaktri and perpetuator of his line. Vashisth himself performed the rites of the child's birth.2. Vashisth had resolved suicide when the child was in the womb.He was, there-

समक्षंकौन्तेय अदृश्यन्त्याःपरन्तप ॥ ५ ॥ तातेतिपरिपूर्णार्थं तस्यतन्मधुरंवचः । अदृश्यन्त्यश्रुपूर्णाक्षी शृण्वतीतमुवाचह ॥ ६ ॥ मातातततातेति मूह्येनंपितरंपितुः । रक्षसा भक्षितस्तातत्र तातोवनान्तरे ॥ ७ ॥ मन्यसेयन्तुताततेति नैषताततस्तवानघ । आर्य्य एषपितातस्यपितुस्तवयशस्विनः ॥ ८ ॥ सएवमुक्तो दुःखार्त्तःसत्यवागृषिसत्तमः । सर्वलोकविनाशाय मतिश्चक्रेमहामनाः ॥ ९ ॥ तंतथानिश्चितात्मानं स महात्मामहातपाः । ऋषिर्ब्रह्मविदांश्रेष्ठो मैत्रावरुणिरंत्यधीः । वासिष्ठो वारयामास हेतुनायेनतच्छृणु ॥ १० ॥ वसिष्ठ उवाच । कृतवीर्यइतिख्यातो बभूवपृथिवीपतिः । याज्योवेदविदां लोके भृगूणांपार्थिवर्षभः ॥ ११ ॥ सतानग्रभुजस्तात धान्येनचधनेनच । सोमान्ते तर्पयामास विपुलेनविशाम्पते ॥ १२ ॥ तस्मिन्नृपतिशार्दूले स्वर्यातेऽथकस्मिन । बभूव तत्कुलेयानां द्रव्यकार्य्यमुपस्थितम् ॥ १३ ॥ भृगूणान्तुधनंज्ञात्वा राजानःसर्वएवते । याचिष्णवोऽभिजग्मुस्तांस्ततो भार्गवसत्तमान् ॥ १४ ॥ भूमौतुनिदधुः केचिद्भृगवो

के साम ने विप्रर्षि वसिष्ठ को पिता कह के पुकारा अदृश्यन्ती उनको मीठीबोली मे स्पष्टरूप से पिता कहते सुनकरके आंखोंमें आंसूभर कर बोली।६।कि बेटा तुम अपनेदादा को पिता कह के मत पुकारना हे पुत्र एक राक्षसने बन में तुम्हारे पिता को खा लिया है हेअनघ तुम जिनको पितासमझ रहेहो वे तुम्हारे पिता नहीं हैं पिता के पिता हैं ।८। सत्यबादी ऋषि श्रेष्ठ पराशर ने यहबात सुन कर दुःखी हो कर सर्व लोकों को नष्टकरना निश्चय किया महा तपस्वी वेदमें पण्डितोंसे श्रेष्ठ परिणामदर्शी मैत्रावरुणि ऋषिवसिष्ठ ने उनको सर्वलोक नष्ट करने का प्रण ठानते देखकर रोका उन्होंने जिसरीति से रोकावह कहताहूं सुनो।१०।बसिष्ठ बोले कि पहिले कृतवीर्य नामक प्रख्यात भूपाल श्रेष्ठ पृथ्वीनाथ वेदज्ञ भृगुवंश के यजमान थे उन्हों ने यज्ञ के अन्तहोनेपर अग्रभुक् ब्राह्मणों को बहुत धन दानसे सन्तुष्ट किया।१२।अनन्तर उस नृपशार्दूल के स्वर्गको सिधारनेपर उनके वंश के राजाओंको धनकी आवश्यक्ता हुई तब वे राजा यहजानकर कि भार्गवोंके पास बहुत धन है याचककी भांति उन के पासगये ।१४। भार्गवों मेंसे किसी २ ने यह शोचकर कि

fore, named Parashar. From his infancy, Parashar knew Vashisth to be his father. One day he called Vashisth father in the presence of his mother. She said to him with tears in her eyes,(6)"Donot call your grandfather father. A Rakshas devoured your father in the forest. He, whom you call father, is your grandfather."8.On hearing this, the truthful Rishi Parashar thought of destroying the whole world. But he was checked by Vashisth, who said, "In former days, the famous king Kritvirya had the Bhrigus for his priests. He offered large wealth to Brahmans at the end of his sacrifice. When the king was dead his descendants needed wealth and went to the Bhrigus to

धनमक्षयम् । ददुःकेचिद्द्विजातिभ्यो ज्ञात्वाक्षत्रियतोभयम् ॥ १५॥ भृगवस्तुददुःकेचि-
त्तेषांवित्तंयथेप्सितम् । क्षत्रियाणांतदातात कारणान्तरदर्शनात् ॥ १६ ॥ ततोमही
तलंतातक्षत्रियेण यदृच्छया। खनताधिगतंवित्तं केनचिद्भृगुवेश्मनि ॥ १७ ॥ तद्वित्तंद-
दृशुःसर्वेसमेताः क्षत्रियर्षभाः । अवमन्यततःक्रोधाद्भृगूंस्तान् छरणागतान् ॥१८॥ निज
घ्नुःपरमेष्वासाः सर्वांस्तान्निशितैःशरैः । आगर्भादवकृन्तन्तश्चेरुः सर्वांवसुन्धराम्
॥ १९ ॥ तत उच्छिद्यमानेषु भृगुष्वेवंभयात्तदा । भृगुपत्न्योगिरिंदुर्गं हिमवन्तंप्रपेदिरे
॥ २० ॥ तासामन्यतमागर्भं भयाद्दध्रेमहौजसम् । ऊरुणैकेन वामोरूर्भर्तुःकुलविवृद्धये
॥ २१ ॥ तद्गर्भमुपलभ्याशु ब्राह्मणीयाभयार्दिता । गत्वैकाकथयामास क्षत्रियाणामुप
ह्वरे ॥२२ ॥ ततस्तेक्षत्रिया जग्मुस्तंगर्भं हन्तुमुद्यताः । ददृशुर्ब्राह्मणींतेऽथ दीप्यमानां
स्वतेजसा ॥ २३ ॥ अथगर्भःसभित्त्वोरुं ब्राह्मण्यानिर्जगामह । मुष्णन्दृष्टीःक्षत्रि-
याणांमध्याह्नइवभास्करः ॥ २४ ॥ ततश्चक्षुर्विहीनास्ते गिरिदुर्गेषुवभ्रमुः । ततस्तेमोह

हमारा धन क्षय न होने पावे उसको धरती में गाडदिये किसी ने क्षत्रियोंसे भय खाकर अपना धन ब्राह्मणों को दान कर दिया किसी ने और कुछ समझकर उन क्षत्रियों को मनमाना धन देदिया ।१६।अनन्तर किसी क्षत्रीने भार्गवोंका घरखोदकर बहुत धनपाया तब बडेचापधारी क्षत्री लोग सब मिलकर उस अतुल धनको देखकर शरण लिये हुए भार्गवों को अनादर पूर्वक तेज बाणों से मारने लगे यहांतक कि वे भार्गवोंके गर्भ में स्थित बालकोंकोभी नष्टकर पृथ्वीभर में घूमने लगे इसप्रकार भृगुवंश के उजडजाने पर भार्गवोंकी स्त्रियां भयखाकर जानेके अयोग्य हिमाचल पहाडपर भागगईं२०उनमेंसे किसी एक सुन्दर नारीने पतिकुलकी रक्षा के लिये क्षत्रिय के भय से एक जांघ में अतिवीर्यवन्त एक गर्भ धारणकिया अनन्तर एक ब्राह्मण ने उस गर्भ का वृत्तांत जानकर भय के मारे क्षत्रियों के यहां सबहाल कह दिया क्षत्रिय लोग यह सुनतेही उस गर्भ के नष्ट करने को उद्यतहोकर चले और गर्भवती ब्राह्मणीको उस के तेज से जलतेहुए।२३। देखा उससमय गर्भमें स्थित बालक ब्राह्मणीकी जांघको तोडकर दुपहरके तेज सूर्यकीभांति क्षत्रियोंकीआंखें

beg.14. Some of the Bhargavas buried their wealth underground; others gave it away to the *Brahmans* by their fear; while others, thinking otherwise gave it to the Kshatryas. Some of the Kshatryas dug the houses of the Bhargavas and got much wealth. Then the brave Kshatryas, seeing that great wealth, fell upon the *Bhargavas* and began to shoot them with sharp arrows till they had destroyed even the children within the wombs of their mothers. The women fled for fear to the inaccessible parts of the Himalayas. One of the beautiful women of the Bhrigu family had concealed her child within her womb. A *Brahmin* informed them and they came

गापन्नाराजानो नष्टदृष्टयः । ब्राह्मणींशरणंजग्मुर्दृष्ट्यर्थं तामनिन्दिताम् ॥ २५ ॥ ऊचु-श्चैनां महाभागां क्षत्रियास्ते विचेतसः । ज्योतिःप्रहीणाद्दुःखार्त्ताःशान्तार्चिषइवाग्नयः ॥ २६ ॥ भगवत्याःप्रसादेन गच्छेत्क्षत्रंसचक्षुषम् । उपारम्यचगच्छेम सहिताःपाप कर्मिणः ॥ २७ ॥ सपुत्रात्वंप्रसादं नः कर्त्तुमर्हसि शोभने । पुनर्दृष्टिप्रसादेन राज्ञः सन्त्रातुमर्हसि ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वण्यौर्वोपाख्याने ऊनाशीत्य धिकशततोऽध्यायः ॥ १७९ ॥

ब्राह्मण्युवाच । नाहंगृह्णामिवस्ताता दृष्टीर्नास्मिरुषान्विता । अयन्तुभार्गवो नूनमूरुजःकुपितोऽद्यवः ॥ १ ॥ तेनचक्षूंषिवस्तातान्यक्तं कोपान्महात्मना । स्मरतानिहतान बन्धूनादत्तानि नसंशयः ॥ २ । गर्भानपियदायूयं भृगूणांघ्नतपुत्रकाः । तदा यमूरुणागर्भो मयावर्षशतंधृतः ॥ ३ ॥ षडङ्गश्चाखिलोवेद इमंगर्भस्थमेवह । विवेश

झुलसकर निकला राजा लोग नेत्रहीनहोने से मोहवशहोकर चलने के अयोग्य पहाड़ के चारों ओर घूमने लगे फिर दृष्टि प्राप्तकरनेकी आशा से उस ब्राह्मणीकी शरणली उन्होंने बुझी हुई अग्निकी भांति ज्योति रहित और अचेतहोकर दुःखी चित्तसे महाभागा ब्राह्मणीसे यह कहा कि तुम्हारी कृपा से नेत्र पावें तो इस पापकर्म से निवृत्त होकर घरको जायँ तुम पुत्रसहित लोगोंपर प्रसन्नहोओ और आंखें देकर इनराजाओंकी रक्षाकरो।२८।

अध्याय ॥ १८० ॥

ब्राह्मणी बोली कि हे बेटो मैं क्रोधित नहीं हुई हूं और न मैंने तुम्हारी दृष्टि हरली है पर सन्देह नहीं है कि मेरी जांघ से पैदाहुआ यह भृगुवंशी कुमार तुम पर क्रोधित हुआ है हे बेटो इस महात्मा बालकही ने बन्धुओं का नाश स्मरणकर क्रोधित चित्त से तुम्हारी आंखें हरलीहैं।२। हेपुत्रों जब तुम लोग भार्गवों के गर्भ स्थित बालकों कोभी नष्ट करने लगे तब से मैंने सौवर्ष तक यह गर्भ धारण किया है भृगुवंश के फिर हिता-

to desrroy the child in the womb and srw the woman glorious like fire. At that time the child came out blinding them with his glory like the mid day sun. Having lost their eyes they began to wander round the mountain and sought protection of the woman in the hope of getting back their eyes. They begged the *Brahaman's* woman to give them back their eyes, promising to go back to their houses peacefully and never to repeat the crime. 28.

CHAPTER. CLXXX.

The woman replied, " I am not angry with you, children, nor have I deprived you of your eyesight. No doubt, the child, angry at the destruction of his kinsmen, has made you blind. 2. I have preserved the child from the time you began the destruction of the *Bhargav* child-

भृगुवंशस्य भूयःप्रियाचिकीर्षया ॥ ४ ॥ सोऽयंपितृवधाद्व्यक्तं क्रोधाद्वोहन्तुमिच्छति। तेजसातस्यदिव्येन चक्षूंषिमुषितानिवः ॥ ५ ॥ तमिमंतातयाचध्वमौर्वं ममसुतोत्तमम्। अयंवःप्रणिपातेन तुष्टोदृष्टीः प्रमोक्ष्यति ॥ ६ ॥ वसिष्ठ उवाच । एवमुक्तास्ततःसर्वे राजानस्तेतमूरुजम्। ऊचुःप्रसीदेतितदा प्रसादञ्चचकारसः ॥ ७ ॥ अनेनैवचावि-ख्यातो नाम्नालोकेषुसत्तमः । सऔर्वइतिविप्रर्षिरूरुंभित्वा व्यजायत ॥ ८ ॥ चक्षूं-षिप्रतिलब्ध्वाच प्रतिजग्मुस्ततोनृपाः । भार्गवस्तुमुनिर्मेने सर्वलोकपराभवम् ॥ ९ ॥ सचक्रेतातलोकानां विनाशाय महामनाः । सर्वेषामेवकात्स्न्येनमनः प्रवणमात्मनः ॥ १० ॥ इच्छन्नपचितिंकर्त्तुं भृगूणांभृगुनन्दनः। सर्वलोकविनाशाय तपसामहतैधितः ॥ ११ ॥ तापयामासतां लोकान् सदेवासुरमानुषान । तपसोग्रेणमहता नन्दयिष्यन्

नुष्ठानके निमित्त छओ अंगों के साथ सम्पूर्ण वेद इस बालकके हृदय-मन्दिरमें प्रविष्ट हुए हैं।४। इस बालकने पितरों के बध के कारण निश्चयही तुम लोगों को नष्टकरनेकी इच्छाकी है इसी के दिव्य तेज के बलसे तुम्हारी आंखें नष्ट हुई हैं हेपुत्रों तुम लोग इस मेरी जांघ से पैदाहुए बालकसे प्रार्थना करो वह तुम्हारे प्रणामसे प्रसन्नहोकर आंखें दे सकताहै।६।वसिष्ठ बोले कि अनन्तर सब राजालोग यह बात सुनकर उस जांघ से पैदा हुए बालकसे कहने लगे कि प्रसन्नहो, प्रसन्नहो तब और्व्व ने प्रसन्नहोकर उन को आंखेंदीं इन साधु श्रेष्ठ विप्रर्षि ने उरुको भेदकर जन्म लियाथा, इस लिये वह और्व्व नाम से लोकों में प्रख्यातहुए ।८। राजों के आंखें पाकर अपने स्थानको चलेजानेपर भार्गव और्व्व ने सर्व लोकोंका परास्त करना निश्चय किया है बेटा भृगुवंश के शत्रुओं को नष्ट करनेकी इच्छा करनेवाले महानुभाव भृगुनन्दन और्व्व ने सर्वलोक नष्ट करने के लिये कठोर तपस्या में नियुक्तहोकर अपने मनको सम्पूर्ण रूप से निविष्ट किया यह सोचकर कि पितामहों को आनन्द पहुँचावेंगे कठोर तप से सुर असुर

ren even in the wombs of their mothers. He has learnt all the Vedas with their six branches for the good of the *Bhargav* family. 4. This child has certainly resolved to destroy you for the destruction of the *Bhargavas.* Your eyesight is lost by the glory of this child. Gratify him by your entreaties. He may restore your eyesight." Vasisth continued that having heard this from her, the princes entreated the child who being pleased with them gave them back eye sight. The great Rishi was born by breaking open the *Uru* (thigh) of his mother and was therefore called Aurva. 8. When the princes had got their eyesight and returned home, the Bhargav Aurva resolved to vanquish the whole world. Bent on the destruction of the enemies of Bhargavas, Aurva engaged in severe penance. Bent upon pleasing his ancestors, the great rishi terrified

पितामहान् ॥ १२ ॥ ततस्तंपितरस्तात विज्ञायकुलनन्दनम् । पितृलोकादुपागम्य
सर्वऊचुरिदंवचः ॥ १३ ॥ पितर ऊचुः । और्वदृष्टःप्रभावस्ते तपसोग्रस्यपुत्रक ।
प्रसादंकुरुलोकानां नियच्छक्रोधमात्मनः ॥ १४ ॥ नानीशैर्हितदातात भृगुभिर्भावि-
तात्मभिः । बधोह्युपेक्षितःसर्वैः क्षत्रियाणांविहिंसताम् ॥ १५ ॥ आयुषातिप्रकृष्टेन
यदानःखेदआविशत् । तदास्माभिर्वधस्तात क्षत्रियैरीप्सितस्वयम् ॥ १६ ॥ निखातं
यच्चवैवित्तं केनचिद्भृगुवेश्मनि । वैरायैवतदान्यस्तं क्षत्रियान्कोपयिष्णुभिः ॥ १७ ॥
किंहिवित्तेननःकार्य्यं स्वर्गेप्सूनां द्विजोत्तम । यदस्माकंधनाध्यक्षः प्रभूतंधनमाहरत्
॥ १८ ॥ यदातुमृत्युरादातुं ननःशक्नोतिसर्वशः । तदास्माभिरयंदृष्ट उपायस्तातस-
म्मतः ॥ १९ ॥ आत्महाचपुमांस्तात नलोकांल्लभतेशुभान् । ततोऽस्माभिःसमीक्ष्यैवं
नात्मनात्मा निपातितः ॥ २० ॥ नचैतन्नःप्रियंतात यदिदंकर्त्तुमिच्छसि । नियच्छेदं

और नर इन सबलोगों को तापितकरने लगे । १२ । हेबेटा अनन्तर उनके सब पितर
लोग यह जानकर पितृलोक से आन करके कुलके आनन्द देनेवाले, और्व से बोले,
कि हे पुत्र और्व्व तुम तपोबलसे कठोरहुएहो, तुम्हारा प्रभाव हमने प्रत्यक्ष कियाहै अब
तुम सम्पूर्ण लोकोंपर प्रसन्नहोओ । १४ । अपनेक्रोधको त्यागदो पहिले जब क्षत्रियों ने
भार्गवोंकी हिंसाकी थी, तब जितेन्द्रिय भार्गवों ने अपने बधको तुच्छ समझाथा वे उस
के प्रति विधान करने में असमर्थ नहीं थे आयु बहुत बढ जाने से जब हमको क्लेशहोने
लगा तब हम ने स्वयंही क्षत्रियोंसे मारे जानेकी अभिलाषाकी थी ।१६।इसलिये भार्गवोंने
घर में धन गाडकर उनको क्रोधित कियाथा हे द्विजोत्तम हम स्वर्ग चाहनेवाले हैं, हम
को धन से क्या प्रयोजनहै कुबेरने हमारे लिये बहुत धन बटोर रक्खाहै।१८।जब हमने
देखा कि मृत्यु किसीप्रकार हमको ले नहीं सकी तब हम ने इसउपायको अच्छा समझा
हे बेटा आत्मघाती पुरुष शुभलोक नहीं पाता है इसकी आलोचना कर हम ने आत्म-
घात नहीं कियाथा।२०।हेबेटा तुम ने जो कर्मकरनेकी इच्छाकी है वह हमारा प्रिय नहींहै

the gods, Asurs and men by his severe asceticism 12. The Pitars, thereupon, came down from the upper regions and said, "You have practiced severe asceticism, Aurva. We have published your glory. Be at peace, now, with the world and give up your anger." The Bhargavas did not mind much their destruction by the Kshatryas. They were quite competent to take revenge. But they did not do so as their destruction was the result of their own wish. Being very old they did not wish to live any longer and had exasperated the Kshatryas by burying their treasures under ground. We are desirous of heaven and not of wealth. Kuber has amassed for us large treasures. 18. When we saw that death did not approach us we had hit upon that plan. One who commits

मनः पापात्सर्वलोकपराभवात् ॥ २१ ॥ मावधीः क्षत्रियांस्तात नलोकान्सप्तपुत्रक ।
दूषयन्तंतपस्तेजः क्रोधमुत्पातितंजहि ॥ २२ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वण्यौर्ववारणे आशीत्य धिकशतोऽध्यायः ॥ १८० ॥

और्व उवाच । उक्तवानस्मियांक्रोधात् प्रतिज्ञांपितरस्तदा । सर्वलोकविनाशाय नसामेतितथाभवेत् । वृथारोषप्रतिज्ञोवै नाहंभवितुमुत्सहे । अनिस्तीर्णोहिमांरोषो दहेदग्निरिवारणिम् ॥ २ ॥ योहिकारणतःक्रोधं सञ्जातंक्षन्तुमर्हति । नालंसमनुजःसम्यक् त्रिवर्गंपरिरक्षितुम् ॥ ३ ॥ अशिष्टानांनियन्ताहि शिष्टानांपरिरक्षिता । स्थानेरोषःप्रयुक्तः स्यान्नृपैःसर्वजिगीषुभिः ॥ ४ ॥ अश्रौषमहमूरुस्थो गर्भशय्यागतस्तदा । आरावं मातृवर्गस्यभृगूणां क्षत्रियैर्वधे ॥ ५ ॥ संहारोहियदालोके भृगूणांक्षत्रियाधमैः । आगर्भो

अतएव तुम सर्व्वलोकोंके परास्त करनेकी इच्छारूपी पापकर्म से मनको निवृत्त करो । हे पुत्र तुम तपके तेज से दूषित इस जन्मे क्रोधको त्यागदो सातों लोकतो दूरकी बात है क्षत्रियों कोभी नष्ट मत करना ॥ २२ ॥

अध्याय १८१ ॥

और्व्व बोलेकि हेपितरो ! मैंने क्रोधित होकर सर्व्वलोकों के विनास के लिये जो प्रतिज्ञाकी है, वह कभी व्यर्थ नहीं होगी ; मैं व्यर्थ क्रोध और व्यर्थ प्रतिज्ञा करना नहीं चाहता । यदि मैं इस प्रतिज्ञाको पूरी न करूं, तो क्रोधकी आगमुझको इस प्रकार जलावेगी कि जैसे अग्नि वनको जलाताहै ॥ २ ॥ क्रोध किसी कारण से आजाय तो जो उसको रोक लेताहै वहकभी पूरी रीतिसे धर्म्म अर्थ काम इन तीन वर्गों को पालन नहीं करसकता है और सर्व्वजय चाहनेवाले भूपभी विशेष बिशेष स्थान में क्रोध दिखावें तो उस क्रोधसे दुष्टका शासन और सुजनका पालनहोता है ४। पहिले क्षत्रियोंने जब भार्गवों को नष्ट कियाथा, तब मैंने उरु के भीतर गर्भशय्या पर लेटेरहकर भार्गवोंकी चिल्लाहट सुनीथी जब क्षत्रिय कुलनाशी लोग गर्भ में स्थित बालक तक

---

suicide does not attain heaven. It was, therefore, that we did not commit suicide. We donot like the thing which you want to do. Give up your intention of defeating all the world. Give up your anger. Donot destroy even the Kshatryas, nothing to say of the whole world." 22.

CHAPTER CLXXXI

Aurva said, "I cannot give up the resolution of destroying the three worlds, for, if I do so, the fire of anger will burn me down like a forest. My promise or anger is never vain. (One who subdues his anger can never be successful in his enterprises relating to worldly or religious matters.) A king justly angry may destroy the wicked and protect the good. 4I. had heard the cries of the Bhargavas when

छेदनात् क्रान्तस्तदामां मन्युराविशत् ।।६।। सम्पूर्णशोकाः किलमे मातरः पितरस्तथा ।
भवात्सर्वेषुलोकेषु नाभिजग्मुः परायणम् ।। ७ ।। तान्भृगूणांयदादारान् कश्चिन्नाभ्यु
पपद्यत । मातातदा दधारेयमूरुणैकेनमांशुभा ।८। प्रतिषेद्धाहिपापस्ययदालोकेषुविद्यते ।
तदासर्वेषुलोकेषुपापकृन्नोपपद्यते ।९। यदातुप्रतिषेद्धारं पापोनलभतेक्वचित् । तिष्ठंतिबहवो
लोकास्तदापापेषु कर्मसु ।। १० ।। जानन्नपिचयः पापं शक्तिमान्ननियच्छति । ईशः
सन्सोऽपितेनैव कर्मणासंप्रयुज्यते ।। ११ ।। राजभिश्चेश्वरैश्चैव यदिवैपितरोमम ।
शक्तैर्नशकितास्त्रातुमिष्टं मत्वेहजीवितम् ।। १२ ।। अतएषामहंकुद्धो लोकानामीश्वरो
ह्यहम् । भवतांचवचो नालमहंममभिवर्तितुम् ।। १३ ।। ममापिचेद्भवेदेवमीश्वरस्य
सतोमहत् । उपेक्षमाणस्यपुनर्लोकानां किल्बिषाद्भयम् ।। १४ ।। यश्चायंमन्युजोमेऽ-
ग्निर्लोकानादातुमिच्छति । दहेदेषचमामेव निगृहीतः स्वतेजसा ।। १५ ।। भवतांचवि

सब भार्गवों को नष्ट करनेलगे तबसे मैं क्रोधितहोगया।६। मेरे पितृगण और पूर्णगर्भवती माता जब शोकसे विकला और भयसे कातरहुयेथे तब तीनोंलोक में किसी ने उनकी रक्षा नहींकिथी जब किसी ने भृगुपत्नियोंकी रक्षा नहीं की तब मेरी शुभलक्षणा इस माताने एक उरु में मुझको धारणकर रक्खाथा।८।देखो इसभूमण्डल में एक मनुष्य पाप-कर्मका नष्ट करनेवाला हो तो कोईभी पापकर नहीं सकता यदि लोकों में कोई पापकर्मका नष्टकरनेवाला नहीं होतो बहुतेरे पापकर्म में प्रवृत्तहोते हैं।१०। जो जन शक्तिवान और पापरोकने योग्यहोने परभी जानबूझकर पापकर्म्म नहीं रोकताहै वह उसपापमें लिप्तहोता है पर राजा लोग और समर्थगणजन उस पापकर्म रोकनेकी सामर्थ रखनेपरभी इस लोकमें अपनेजीवनको अभीष्ट जानकर मेरेपितरोंकी रक्षा नहीं करसके।१२।मैंने इसीहेतु क्रोधितहोकर उन सबलोगों के उसपापकर्मका प्रति विधान करने का उद्योग कियाहै सो आपकी आज्ञा मान नहीं सकता मैं प्रति विधान के योग्यहोकरकेभी यदि प्रतिविधानका प्रयत्न न करूं तो लोकोंपर फिर अत्याचार के कारण बडाभय आन पडेगा।१४।मेरेजिस क्रोधाग्नि ने लोकों को जलानेकी इच्छाकी है यदि उसे अपने तेज से रोक लूं तो वह

the Kshatryas were destroying them. I became angry when they had begun to destroy the Bhargav children in the wombs of their mothers, no one protected my father and mother when they were in great distress and fear. My good mother concealed me within her thigh when there was no protector to the Bhargava women. No one would dare to do evil deeds if there were some one to punish the wicked. People become bad if there be none to punish crimes.10. One who having power to punish crimes does not do his duty, is an abettor. The kings and others having power were selfish enough to let them destroy my forefathers without giving us any protection.12. I have, therefore, resolved, to check the crime and shall not be able to obey you. People may again have cause to fear if I donot

लोकानांममचेश्वराः ॥ १६ ॥
जानामि सर्वलोकहितेप्सुताम् । तस्माद्विधध्वंयच्छ्रेयो लोकानांममचेश्वराः ॥ १६ ॥
पितर ऊचुः । यएषमन्युजस्तेऽग्निर्लोकानादातुमिच्छति । अप्सुतंमुंचभद्रंते लोकाह्य-
प्सुप्रतिष्ठिताः ॥ १७ ॥ आपोमयाःसर्वरसाः सर्वमापोमयंजगत् । तस्मादप्सुविमुञ्चेमं
क्रोधाग्निंद्विजसत्तम ॥ १८ ॥ अयंतिष्ठतुतविप्र यदीच्छसिमहोदधौ । मन्युजोऽग्निर्दहं
न्नापालोका ह्यापोमयास्मृताः ॥ १९ ॥ एवंप्रतिज्ञासत्येयं तवानघभविष्यति। नचैवं
सामरालोका गमिष्यन्तिपराभवम् ॥ २० ॥ वसिष्ठ उवाच । ततस्तंक्रोधजंतात औ
र्वोऽग्निंवरुणालये । उत्ससर्जसचैवाप उपयुङ्क्तेमहोदधौ ॥२१॥ महद्धयशिरोभूत्वा
यत्तद्वेदविदोविदुः । तमग्निमुद्गिरन्वक्त्रात्पिबत्यापोमहोदधौ ॥ २२ ॥ तस्मात्त्व-
मपिभद्रंते नलोकान्हन्तुमर्हसि । पराशर परांल्लोकान्जानन् ज्ञानवतांवर ॥ २३ ॥
इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वण्यौर्वोपाख्याने एकाशीत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १८१ ॥

अग्नि मुझकोही जलामारेगा हेप्रभुगण मैं जानताहूं कि आप सर्वलोकों के हित चाहनेवाले
हैं सो ऐसी आज्ञा करें कि मेरा और सर्वलोकोंका मंगलहोवे।१६। पितृगण बोले कि सभी
लोक जलपर प्रतिष्ठितहैं अतएव तुम्हारा जो क्रोधाग्नि सर्वलोकोंको खालेना चाहता है
तुम उसको जलमें डालदो तभी तुम्हारा मंगलहोगा हे द्विज श्रेष्ठ ! सब रस जलपूर्ण हैं,
और सम्पूर्ण जगभी जलपूर्ण है सो तुम इस क्रोधाग्निको जल में छोडदो तुम्हारा क्रोधाग्नि
महासमुद्र में रहकर जलको जलाने लगेगा ।१८। हेविप्र जब सम्पूर्ण लोक जलपूर्णहैं, तब
तुम ने जैसा संकल्पकिया है वह पूरा नहीं होगा । हेअनघ ! ऐसाहोनेसे तुम्हारी प्रतिज्ञा
सच्ची ठहरेगी और देव तथा मानवोंको परास्तभी नहीं होनापडेगा।२०।वसिष्ठबोले कि
अनन्तर और्वने अपने क्रोध से उपजे हुए अग्निको समुद्र में छोडदिया वह अग्निसमुद्र
में रहकर जलपीया करताहै वेदके जानकार ब्राह्मण लोग जिस महत् बडवामुख से ज्ञात
हैं वह अग्नि बडवामुख बनकर उसमुख से लोकों में प्रसिद्ध वाडवाग्नि वमनकरता
हुआ जलपीनेलगा हे ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ पराशर तुमभी सब परलोकों से ज्ञातहो तुम्हारा
मंगलहोवे सर्व लोकोंका विनाश करना तुमको नहीं सोहता ॥ २३ ॥

check the cruelty. The fire of my anger, ready to burn the world, may burn myself if I check it. I know, my lords, you are the well wishers of the world. Be good enough to think of my good as well as that of the world." The Pitris, thereupon, told him to throw the fire of his anger into water which only could quench it and which pervaded the world. 18. By so doing, they said, he would do no harm to the world and should, moreover, be able to fulfil his vow. 20. Vashisth continued that thus enjoined, Aurva let fall the fire of his anger into the Ocean. The great fire began to drink of the Ocean and is known among the learned as Barvagni. Vasisth thus had advised his gaandson Parashar against the destruction of the world." 23.

गन्धर्व उवाच । एवमुक्तःसविप्रर्षिर्वशिष्ठेन महात्मना । न्ययच्छदात्मनः क्रोधं सर्वलोकपराभवात् ॥ १ ॥ ईजेचसमहातेजाः सर्ववेदविदांवरः । ऋषीराक्षससत्रेण शाक्तेयोऽथपराशरः ॥ २ ॥ ततोवृद्धांश्चवालांश्च राक्षसान्समहामुनिः। ददाहवितते यज्ञे शक्तेर्वधमनुस्मरन् ॥ ३ ॥ नहितंवारयामास वसिष्ठोरक्षसांवधात् । द्वितीयाम-स्यमाभांक्षं प्रतिज्ञामितिनिश्चयात् ॥ ४ ॥ त्रयाणांपावकानांच सत्रेतस्मिन्महामुनिः। आसीत्पुरस्तादीप्तानांचतुर्थ इवपावकः ॥ ५ ॥ तेनयज्ञेनशुभ्रेण हूयमानेनशक्तिजः। तद्विदीपितमाकाशं सूर्येणेवघनात्यये ॥ ६ ॥ तंवसिष्ठादयःसर्वे मुनयस्तत्रमेनिरे । तेजसादीप्यमानंवै द्वितीयमिवभास्करम् ॥ ७ ॥ ततःपरमदुष्प्रापमन्यैर्क्षोपरुदारधीः। समापिपयिषुःसत्रं तमत्रिःसमुपागमत् ॥ ८ ॥ तथापुलस्त्यःपुलहः क्रतुश्चैवमहाक्रतुः ।

अध्याय १८२ ॥

गन्धर्व बोले कि विप्रर्षिपराशर ने महात्मा वसिष्ठकी यह सव बातें सुनकर अपना सर्व लोकोंको पराम्त करने का क्रोध त्याग दिया पर वह सर्व वेदोंके जानकारोंमें श्रेष्ठ वडे तेजस्वी शक्तिपुत्र महर्षि पराशर राक्षस-यज्ञ करने को प्रवृत्त हुए अनन्तर उस महा यज्ञ के फैल पडनेहर शक्तिका नष्टहोना स्मरणकर उस यज्ञ में बालकसे लेकर बूढे तक सम्पूर्ण राक्षसों को जलाने लगे वासिष्ठ ने यह समझकर कि उनकी दूसरी पतिज्ञा भंग करना उचित नहीं है, उनको राक्षस वधकरनेसे नहीं रोका ।४।महामुनि पराशर राक्षस यज्ञ में प्रदीप्त तीनों पावकोंके सामने मानो चौथे पावकके समान सोहनेलगे शक्तिनन्दन ने हवनयुक्त शुक्लयज्ञ से इसप्रकार आकाशमण्डल को प्रदीप्तकिया कि जिसप्रकार दिवाकर बादल दूरहोनेसे आकाश मण्डल को प्रकाशयुक्त करते हैं तब वशिष्ठ आदि सम्पूर्ण मह-र्षि लोग अपने तेज से जलते हुए परस्पर को दूसरे प्रभाकर समझने लगे अनन्तर उदार बुद्धियुक्त अत्रि औरों के करने के अयोग्य उस यज्ञको पूरा करनेकी इच्छा से उन के निकट आये ।८। हे शत्रुनाशि ! इस के पश्चात् पुलस्त्य, पुलह और महाक्रतु यह सब

CHAPTER CLXXXII

The Gandharva continued that having heard all this from Basisth, Parashar gave up his resolution of destroying the whole world. But he made up his mind to burn down all the Rakshases in the sacrificial fire. He began the sacrifice and remembering the death of his father he burnt down all the Rakshases, young and old. Vasisth, too, thought it proper not to stand in the way of his second resolution. 4, The great Rishi Parashar looked glorious like another Fire at the sacrifice. The son of Shaktri had so illumined the firmament by the fire of his sacrifice as the Sun illumines the sky after the removal of clouds. All the glorious rishis, Basisth and others, regadred one another as a second Sun. The

तत्राजग्मुर्गनिनत्रं रक्षसांजीवितेप्सया ॥ ९ ॥ पुलस्त्यस्तुवधात्तेषां रक्षसांभरतर्षभ उवाचेदंवचःपार्थ पराशरमरिन्दमम् ॥ १० ॥ कच्चित्तातापविघ्नं तेकच्चिन्नन्दसिपुत्रक अजानतामदोषाणां सर्वेषांरक्षसांबधात् ॥ ११ ॥ प्रजोच्छेदमिमंमह्यं नहिकर्तुंत्वमर्हसि । नैषताताद्विजातीनां धर्मोदृष्टस्तपस्विनाम् ॥ १२ ॥ शमएवपरो धर्मस्तमाचर पराशर । अधर्मिष्ठंवरिष्ठः सनकुरुषेत्वंपराशर ॥ १३ ॥ शक्तिंचापिहिधर्मज्ञं नातिक्रान्तुमिहार्हसि । प्रजायाश्चममोच्छेदं नचैवंकर्त्तुमर्हसि ॥ १४ ॥ शापाद्धिशक्तेर्वासिष्ठ तदातदुपपादितम् । आत्मजेनसदोषेण शक्तिर्नीतइतोदिवम् ॥ १५ ॥ नहितंराक्षसः कश्चिच्छक्तोभक्षयितुंमुने । आत्मनैवात्मनस्तेन दृष्टोमृत्युस्तदाभवत् ॥ १६ ॥ निमित्तभूतस्तत्रासीद्विश्वामित्रः पराशर । राजाकल्माषपादश्च दिवमारुह्यमोदते ॥ १७ ॥

राक्षसों के प्राण बचाने के लिये वहां आये हेभरत श्रेष्ठ बहुत राक्षसों के मारेजाने पर पुलस्त्य ने शत्रुमथन पराशर से बोले कि हे बेटा ।९। तुम्हारे अग्निहोत्र कार्य में विघ्नतो नहीं है हे पुत्र क्या तुम उन निर्दोष राक्षसोंको जो तुम्हारे पिताके वध के विषय में कुछ नहीं जानते मारकर आनन्द प्राप्तकररहे हो बेटा मेरी प्रजाओं को इसप्रकार उखाडना तुमको नहीं चाहिये तपस्वी ब्राह्मणों का धर्म ऐसा नहीं है।११।हेपराशर शान्तिही उनका परमधर्म है तुम वह धर्म करो तुम ने निष्पापहोकर के अधर्मयुक्त कर्म में हाथडाला है यह कर्म करके अपने पिता शक्ति को लंघनकरना तुमको नहीं सोहता हे वासिष्ठ बिना कारण मेरी प्रजाओं को सम्पूर्ण उखाडना तुमको नहीं चाहिये क्योंकि उसकालमें तुम्हारे पिताका जो अनिष्ट हुआ था वह केवल उन के अपनेही शाप से हुआ था वह अपनेही दोषसे इसलोकसे स्वर्ग को सिधारेहैं।१५। हेमुने तुम्हारे पिताको खालेना किसी राक्षसकी सामर्थ नहीं थी, पर उन्होंने आपही अपनी मृत्यु रचीथी विश्वामित्र इस विषय में केवल निमित्तही बने थे हेपराशर अब शक्ति और राजाकल्माषपाद स्वर्ग को सिधारकर।१७।

wise Atri then came there to complete the sacrifice beyond the power of others.8. At length, Pulastya, Pulah and Mahakratu came to save the lives of the Rakshases. After the destruction of many Rakshases, Pulastya said, " Is there any obstruction to your sacrifice ? Do you feel pleasure in killing those who knew nothing of the death of your father and are innocent ? You should not, thus,destroy my subjects.Such is not the proper course for an ascetic. Peace is the attribute of Brahmans and you must observe it. Being innocent you are engaged in this sinful act. It does not look well for you to engage; aganist the principles of your father in this act. You should not destroy my subjects thus without any cause. Your father brought his ruin by his own curse. He died of his own fault. No Rakshas could eat up your father. He had

येचशक्त्यवराःपुत्रा वसिष्ठस्यमहामुने। तेचसर्वेमुदायुक्ता मोदन्तेसहिताःसुरैः॥१८॥ सर्वमेतद्वसिष्ठस्य विदितंवैमहामुने। रक्षसांचसमुच्छेद एषतातमनस्विनाम्॥ १९॥ निमित्तभूतस्त्वंचात्र क्रतौवासिष्ठनन्दन। तत्सत्रंमुञ्चभद्रंते समाप्तमिदमस्तुते॥२०॥ गन्धर्व उवाच। एवमुक्तःपुलस्त्येन वसिष्ठेनचधीमता। तदासमापयामास सत्रंशाक्तो महामुनिः॥ २१॥ सर्वराक्षससत्राय सम्भृतंपावकंतदा। उत्तरेहिमवत्पार्श्वे उत्ससर्जमहावने॥ २२॥ सतत्राद्यापिरक्षांसि वृक्षानश्मनएवच। भक्षयन्दृश्यते वन्हिः सदा पर्वाणि पर्वणि॥ २३॥

इत्यादिपर्वाणि चैत्ररथपर्वण्यौर्वोपाख्याने द्व्यशीत्यधिकशततोऽध्यायः॥ १८२

अर्जुन उवाच। राज्ञाकल्माषपादेन गुरौब्रह्मविदांवरे। कारणंकिंपुरस्कृत्यभार्यावैसान्नियोजिता॥ १॥ जानतावैपरंधर्मं वासिष्ठेनमहात्मना। अगम्यागमनंकस्मात्

सुख लूटरहेहैं और महामुनि वसिष्ठ के शक्तिसे छोटे जो सब पुत्र थे वेभी देवोंके साथ परम आनन्द भोगरहे हैं हेमहामुने वसिष्ठ सब जानते हैं। हे वासिष्ठ-नन्दन इस यज्ञ में निर्दोष राक्षसों का जो नाश होरहा है तुम केवल उस के निमित्तही बन रहेहो अतएव तुम यहयज्ञ त्यागदो तुम्हारामंगलहोवे अब यहयज्ञ पूराकरो।२०।गन्धर्व बोले कि बुद्धिमान पुलस्त्य और वसिष्ठ के महामुनि शक्तिनन्दन को ऐसा कहने पर उन्होंने तब उस यज्ञको पूरा किया और सम्पूर्ण राक्षसों ने यज्ञ के लिये जो अग्नि प्रज्वलित हुआ था उसको हिमाचल के उत्तर और बडे बन में छोडदिया वहां अभी तक यह दीखपडता है कि वह अग्नि हर त्योहार में राक्षस, बृक्ष और पत्थरोंको खालेता है॥ २३॥

अध्याय १८३॥

अर्जुन बोले कि हे मित्र राजा कल्माषपाद ने क्यों वेदज्ञ श्रेष्ठ गुरु वसिष्ठ के प्रति स्त्रीको नियोग किया था महात्मा महर्षि वसिष्ठभी क्यों धर्म के जानकार होकर मिलनेके

himself paved the way for his own death. Viswamitra was only a means. Shakti, Kalmashpad and the younger brothers of Shakti are enjoying their residence with gods in heaven. Vasisth knows all this. You have become the means of the destruction of Rakshases by this sacrifice. Give up, therefore, your sacrifice. May you be happy!"20. The Gandharv continued that at the instance of Pulastya and Vashisth, the son of Shakti closed the sacrifice and threw away the fire, kindled for the destruction of the Rakshases, in the large forest to the north of Himalyas. There it is seen up to this day eating the Rakshases, stones and trees on every festival 23.

CHAPTER. CLXXXIII.

Arjun asked, "Why did Kalmashpad send his wife to the learned Bashisth? Why did Bashisth, well versed in religious doctrines,

कृतंतेनमहर्षिणा ॥ २ ॥ अधर्मिष्ठंवसिष्ठेन कृतञ्चापिपुरासखे । एतन्मेसंशयंसर्वं छेत्तु
मर्हसिपृच्छतः ॥ ३ ॥ गन्धर्व उवाच । धनञ्जयनिवोधेदं यन्मांत्वंपरिपृच्छसि ।
वसिष्ठंप्रतिदुर्धर्ष तथामित्रसहंनृपम् ॥ ४ ॥ कथितंतेमयासर्वं यथाशप्तःसपार्थिवः ।
शक्तिनाभरतश्रेष्ठ वासिष्ठेनमहात्मना ॥ ५ ॥ सतुशापवशंप्राप्त क्रोधपर्य्याकुलेक्षणः ।
निर्ज्जगामपुराद्राजा सहदारःपरन्तपः ॥ ६ ॥ अरण्यंनिर्ज्जनंगत्वा सदारःपरिचक्रमे ।
नानामृगगणाकीर्णं नानासत्त्वसमाकुलम् ॥ ७ ॥ नानागुल्मलताच्छन्नं नानाद्रुमस-
माहृतम् । अरण्यंघोरसन्नादं शापग्रस्तःपरिभ्रमन् ॥ ८ ॥ सकदाचित्क्षुधाविष्टो मृग
यन्भक्ष्यमात्मनः । ददर्शसुपरिक्लिष्टः कस्मिंश्चिन्निर्ज्जनेवने ॥ ९ ॥ ब्राह्मणंब्राह्मणी-
श्चैव मिथुनायोपसङ्गतौ । तौतंवीक्ष्य सुवित्रस्तावकृतार्थौ प्रधावितौ ॥ १० ॥ तयोः
प्रद्रवतोर्विप्रं जग्राहनृपतिर्बलात् । दृष्ट्वागृहीतंभर्त्तारमथब्राह्मण्यभाषत ॥ ११ ॥ शृणु

अयोग्य स्त्रीसे जामिले।२।क्या वह अधर्मयुक्त कर्ममें प्रवृत्त हुएथे इस विषय में मुझे शंका होरही है, तुम उसे दूर करो । गन्धर्व बोले कि हेदुर्द्धर्ष धनंजय तुम ने उसप्रजापालक राजा और वसिष्ठ के विषय में जो कुछ पूछा वह कहता हूं सुनो हेभारत श्रेष्ठ ! वसिष्ठ पुत्र महात्मा शक्ति ने जिसप्रकार शाप दियाथा वह मैंने सब सुनायाहै।५।वह शत्रुमथन भूपाल शापग्रस्त होकर क्रोधयुक्त नेत्र से स्त्री के साथ नगर से निकले आगे निर्जन बनको जाकर स्त्रीके साथ घूमेन लगे शापग्रस्त भूपाल अनेक प्रकार के मृगों से भरे भांतिर के बनैले जीवों से पूरे नानावृक्ष और गुल्मलताओंसे ढंपे और घोरशब्द से गूंजते हुए उस बडे बनमें घूमते हुए।८। बहुत क्षुधितहुए वह भोजनकी सामग्री ढूंढतेहुए बहुत थकगये थे कि ऐसे समय में देखा कि उस वन के एक निराले स्थान में एक ब्राह्मण और एक ब्राह्मणी मैथुनकर्म में प्रवृत्त हैं वे राजाको देखकरके ही कामपूरा न होने परभी अति भयभीत चित्तहोकर वहांसे उठभागे।१०।राजाने उनके पीछे दौडकर उसदम्पतिमेंसे ब्राह्मण

meet with the woman whom he should not have met? Did he commit a crime by so doing ? Please remove my doubts." The Gandharva replied, " I shall tell you what you have asked about Vashisth and Kalmashpad. I have told you all about the curse of Shakti, the son of Vasisth.5. The king, after the curse, came out of the city with his wife in anger and began to roam in the forest. The king under the influence of the curse, roaming with his wife in the forest full of various sorts of trees covered with creepers, resounding with the sounds of birds and beasts, felt much tired and hungry, when he saw a Brahman cohabiting with his wife. They were terrified at seeing him and fled away with their desire unsatisfied.10. The king pursued them and caught the Brahman. The woman, seeing her husband caught, said " Hear what I say, king ! It is known throughout

राजन्ममवचो यत्त्वांवक्ष्यामिसुव्रत । आदित्यवंशप्रभवस्त्वंहि लोकेपरिश्रुतः ॥ १२ ॥
अप्रमत्तःस्थितोधर्मे गुरुशुश्रूषणेरतः । शापोपहतदुर्धर्ष नपापंकर्त्तुमर्हसि ॥ १३ ॥ ऋतु
कालेतुसम्प्राप्ते भर्तृव्यसनकर्षिता । अकृतार्थाह्यहंभर्त्रा प्रसवार्थसमागता ॥ १४ ॥
प्रसीदन्नृपतिःश्रेष्ठ भर्त्तायंमेविसृज्यताम् । एवंविक्रोशमानायास्तस्यास्तु सनृशंसवत्
॥ १५ ॥ भर्त्तारंभक्षयामास व्याघ्रोमृगमिवेप्सितम् । तस्याःक्रोधाभिभूताया यान्य-
श्रूण्यपतन्भुवि ॥ १६ ॥ सोऽग्निःसमभवद्दीप्तस्तञ्च देशंव्यदीपयत् । ततःसाशोकसंत
प्ता भर्तृव्यसनकर्षिता ॥ १७ ॥ कल्माषपादं राजर्षिमशपद्ब्राह्मणीरुषा । यस्मान्म-
माकृतार्थायास्त्वया क्षुद्रनृशंसवत् ॥ १८ ॥ प्रेक्षन्त्याभक्षितोमेऽद्य प्रियोभर्त्तामहाय-
शाः । तस्मात्त्वमपिदुर्बुद्धे मच्छापपरिविक्षतः ॥ १९ ॥ पत्नीमृतावनुप्राप्य सद्यस्त्य-
क्ष्यसिजीवितम् । यस्यचर्षेर्वसिष्ठस्य त्वयापुत्राविनाशिताः ॥ २० तेनसङ्गम्यते

को पकडा अनन्तर ब्राह्मणी पतिको पकडे जाते देखकर बोली, कि हेसुव्रत महाराज मैं जो कहतीहूं सुनो यह सर्वलोकों में प्रसिद्धहै कि तुमने सूर्यवंशमें जन्म लिया है।१२।और प्रमत्त न होकर गुरुकी सेवाभी किया करते हो हेदुर्धर्ष अब तुम शापग्रस्त हुएहो इसीसे तुमको ऐसा पाप करना नहीं चाहिये इससमय मेरा ऋतुकाल आजाने पर मैं पति से मिल रहीथी पर मेरा मनोरथ सफल नहीं हुआहै१४अतएव हेभूपश्रेष्ठ प्रसन्नहोओ मेरेपति को छोडदो ब्राह्मणी यह सबकहतीहुई रोनेलगी पर राजा ने निर्दईपन से उसके पति को इसप्रकार खा लिया कि जैसे व्याघ्र मृगको खाताहै तब ब्राह्मणीने क्रोध के मारे भूमि पर जो आंसू गिराये उनसे जलतीहुई आग बनकर उस स्थान में उजालाहोगया आगे पतिके बिछोहसे कातर, शोक से विकल उस ब्राह्मणीने शोक के मारे राजर्षि कल्माषपादको यह कह कर शाप दिया कि रेनीच मिलन के सुख से मेरा मनोरथ सफलहोते न होतेही तुम ने कुबुद्धि से निष्ठुर के समान मेरेसामनेही मेरेप्यारे अति यशोवन्त पतिको मारडाला सो मेरेशापसे तुम घायलहोकर ऋतुकालमें स्त्रीसे मिलकरकेही उसीक्षण प्राणछोडोगे।१९।तुम

the world that you are born in the Solar line and serve your preceptor. You are now under the influence of a curse. You should not, therefore commit such a crime. I was meeting with my husband and was in season. My desire has not been satisfied. 14. Be pleased, therefore, to leave my husband." She wept and entreated. The king took no notice of her and devoured the Brahman as a lion does a deer. Then the tears of the woman burnt like fire and illumined the forest. Out of grief for her husband's separation she cursed the king saying, "Mean fellow, you have killed my dear and glorious husband before my eyes when my desire remained unsatisfied. For this you will die when you will meet with your wife in her season. Your wife shall beget offspring from the Rishi whose sons you have killed.

भार्य्या तनयंजनयिष्यति । सतेवंशकरःपुत्रो भविष्यतिनृपाधम ॥ २१ ॥ एवंशस्वा तुराजानं सातमाङ्गिरसीशुभा । तस्यैवसन्निधौदीप्तं प्रविवेशहुताशनम् ॥ २२ ॥ वसिष्ठश्चमहाभागः सर्व्वमेतदवैक्षत । ज्ञानयोगेनमहता तपसाचपरन्तप ॥ २३ ॥ मुक्तशापश्चराजर्षिः कालेनमहताततः । ऋतुकालेऽभिपतितो मदयन्त्यानिवारितः ॥ २४ ॥ नहिसस्मारसनृपस्तं शापंकाममोहितः । देव्याःसोऽथवचः श्रुत्वासंभ्रान्तो नृपसत्तमः॥ तंशापमनुसंस्मृत्य पर्य्यतप्यद्भृशंतदा ॥ २५ ॥ एतस्मात्कारणाद्राजा वसिष्ठंसंन्ययोजयत् । स्वदारेषुनरश्रेष्ठ शापदोषसमन्वितः ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि चैत्ररथपर्वणि वसिष्ठोपाख्याने त्र्यशीत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १८३ ॥

अर्जुन उवाच । अस्माकमनुरूपोवै यःस्याद्गन्धर्ववेदवित् । पुरोहितस्तमाचक्ष्व सर्व्वंहिविदितंतव ॥ १ ॥ गन्धर्व उवाच । यवीयान्देवलस्यैष वनेभ्रातातपस्यति ।

ने जिन महर्षि के पुत्रों को नष्ट किया है तुम्हारी स्त्री उन्हींसे मिलकर पुत्र प्रसव करेगी। रेनृपाधम ! उसी पुत्रसे तेरेवंशकी रक्षाहोगी।२१।अंगिराकुलसे उत्पन्न शुभलक्षणयुक्त वह ब्राह्मणी राजाको यह शाप देकर उन के सामनेहीजलतीहुई आग में जाघुसी हेशत्रुमथन ! महाभाग वसिष्ठ तपोबलके कारण ज्ञानचक्षु से वह जानगये।२३।अनन्तर बहुत दिन पीछे राजर्षि शाप से युक्तहुआ फिर एकसमय मदयंती नाम्नी उसकी रानी का ऋतुकाल आपहुँचा राजाके उसकी ऋतुरक्षा के लिये उद्यतहोनेपर मदयंतीने उसको टोका राजा काम से मोहितहोने परभी शापकी बात सुनकर बहुत घवडाया और उसशापको स्मरण करके बहुत दुःखी हुए हेनरवर शापग्रस्त राजा ने इसीलिये अपनी रानीकी ऋतुरक्षा के हेतु वसिष्ठ को नियुक्त कियाथा ॥ २६ ॥

अध्याय ॥ १८४ ॥

अर्जुन बोले, कि हे गन्धर्व ! तुम सभी जानतेहो, सो कहो, कि वेद जाननेवाले कौन ब्राह्मण हमारे पुरोहित होनेके योग्यहैं । गन्धर्व बोले कि वन के भीतर उत्कोचक

The son, thus born, will protect your line."21.The woman of Angira family, after saying this, leaped into the fire in the presence of the king. The great Rishi Vasisth knew all this by the power of his asceticism and wisdom.23.The king, after many days, was freed from the curse. One day, his wife Madayanti was in her season. The king was ready to satisfy her desire, but she checked him. The king was much distressed on hearing about the curse and felt very sorry on remembering it. For this reason, the king had employed Vasisth to protect his wife's season.26.

CHAPTER CLXXXIV

Arjun said, "You know all things, Gandharva. Let us know who is worthy of being our priest." The Gandharve replied, "De-

धौम्यउत्कोचकेतीर्थे तंवृणुध्वंयदीच्छथ ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोऽर्जुनोऽस्त्रमाग्नेयं प्रददौतद्यथाविधि । गन्धर्वायतदाप्रीतो बचनंचेदमब्रवीत् ॥ ३ ॥ त्वय्येवतावत् तिष्ठन्तु हयागन्धर्वसत्तम । कार्य्यकालेग्रहीष्यामः स्वस्तितेऽस्त्वितिचाब्रवीत् ॥ ॥ ४ ॥ तेऽन्योन्यमभिसम्पूज्य गन्धर्वःपाण्डवाश्चह । रम्याद्भागीरथीतीराद्यथाकामंप्रतस्थिरे ॥ ५ ॥ ततउत्कोचकंतीर्थं गत्वाधौम्याश्रमन्तुते । तंववुःपाण्डवाधौम्यं पौरोहित्यायभारत ॥ ६ ॥ तान्धौम्यःप्रतिजग्राह सर्ववेदविदांबरः । वन्येनफलमूलेन पौरोहित्येनचैवह ॥ ७ ॥ तेसमाशंसिरेलब्धां श्रियंराज्यञ्चपाण्डवाः । मातृषष्ठास्तुतेतेन गुरुणासङ्गतास्तदा । ब्राह्मणंतंपुरस्कृत्य पांचालींचस्वयम्वरे ॥ ८ ॥ पुरोहितेनतेनाथ गुरुणासङ्गतास्तदा । नाथवन्तमिवात्मानं मेनिरेभरतर्षभाः ॥ ९ ॥ सहिवेदार्थतत्त्वज्ञस्तेषां गुरुरुदारधीः । तेनधर्मविदापार्था याज्याधर्मविदःकृताः ॥ १० ॥ वीरांस्तुसहितान्मेने प्राप्तराज्यानस्वधर्मतः । बुद्धिवीर्य्यबलोत्साहैर्युक्तान्देवानिव द्विजः ॥

नाम तीर्थ में देवल के छोटे भाई धौम्य नामक ऋषि तप कर रहेहैं, तुम चाहो तो उनको पुरोहित बनाओ।२।वैशम्पायन ने कहाकि अनन्तर अर्जुन प्रसन्न होकर उन गन्धर्व को विधिपूर्वक अग्न्यस्त्र देकर बोले, कि तुम्हारा मङ्गल होवे, तुम्हारे दियेहुए घोडे अभी तुम्हारे ही पास रहें, जब काम पडेगा, तब लूंगा।४।अनन्तर पाण्डवगण और गन्धर्व एक दूसरेकी अभ्यर्थना करके रमणीय भागीरथी तटसे अपने अपने मनमाने स्थानों को पधारे हेभारत अनन्तर पाण्डवोंने उत्कोचक तीर्थ में धौम्य के आश्रममें जाकर उनको पुरोहितबनाया ।६। वेदज्ञों मे श्रेष्ठ धौम्य ने वनैले फलमूलोंसे उनकी पूजा कर पुरोहित होना स्वीकार किया माता के साथ पाण्डवोंने उन ब्राह्मण को गुरुकी भांति पुरस्कृत कर ऐसा समझ लिया, कि राजलक्ष्मी और स्वयम्वर स्थानमें पांचाली मिल गयी।८।वेउन गुरुरूपी पुरोहितसे मिलकर अपने को नाथ युक्त समझने लगे, क्योंकि वेदार्थ तत्त्व जाननेवाले उदार बुद्धि युक्त वह ऋषि उनके गुरु हुए। धर्म जानने वाले, सर्व विषयोंके जानकार उन द्विजने भी उनके गुरु स्वरूप नियुक्त होकर उनको यजमान बनाया।१०।उन्होनें बुद्धि,वीर्य,बल और उत्साह

val's younger brother Dhaumya is practising asceticism at *Utkochak* in this forest. You may make him your priest if you like."2. Vaishampayan said that Arjun joyfully gave the Gandharve the missile and said, "May you be happy! Keep your horses with you. We shall take them when required." The Gandharve and the Pandavas then seperated and went their ways.5. The Pandavas made Dhaumya their priest at Utkochak. The learned Dhaumya offered the fruits and roots of the forest and became their priest. The Pandavas with mother, having waited upon the Brahman, were sure of getting back their kingdom and of their succes at the Swayamvara. Hav-

॥ ११ ॥ कृतस्वस्त्ययनास्तेन ततस्तेमनुजाधिपाः । मेनिरेसहितागन्तुं पाञ्चाल्यास्तं स्वयम्वरम् ॥ १२ ॥

इत्यादिपर्व्वणि चैत्ररथपर्व्वणि धौम्यपुरोहितकरणे चतुरशीत्यधिकशततोऽध्यायः ।१८४।

समाप्तञ्च चैत्ररथपर्व्व ॥ अथ स्वयम्वरपर्व्व ॥

वैशम्पायन उवाच । ततस्तेनरशार्दूला भ्रातरःपञ्चपाण्डवाः । प्रययुर्द्रौपदीन्द्रष्टुं तञ्चदेशंमहोत्सवम् ॥ १ ॥ तेप्रयातानरव्याघ्राः सहमात्रापरन्तपाः । ब्राह्मणान्ददृशुर्मार्गे गच्छतःसङ्गतान्बहून् ॥ २ ॥ तऊचुर्ब्राह्मणाराजन् पाण्डवान् ब्रह्मचारिणः । क्वभवन्तोगमिष्यन्ति कुतोवाभ्यागताइह ॥ ३ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आगतानेकचक्रायाःसोदर्य्यानेकचारिणः । भवन्तोवैविजानन्तु सहमात्राद्विजर्षभाः ॥ ४ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः । गच्छतान्चैव पाञ्चालान्द्रुपदस्य निवेशने । स्वयम्वरोमहांस्तत्र भवितासुम-

---

युक्त देवोंकेसदृश उन वीरोंको अपने धर्म के अनुसार राज्य पाये हुए समझा । उन ब्राह्मण के स्वस्त्यन करने पर मानव श्रेष्ठ पाण्डवोंने एकत्र पाञ्चाल देश को स्वयम्वर स्थान में जाना निश्चय किया । १२ ।

अध्याय ॥ १८५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर कुरु श्रेष्ठ पाचों पाण्डव महोत्सव युक्त पांचाल देश और पांचाली को देखने चले शत्रुनाशी नर व्याघ्र भाइयों ने माता के साथ जाते समय पथमें एकसाथ मिलकर वहुत ब्राह्मणों को जाते देखा ।२।हेराजन् ! उन ब्रह्मचारी ब्राह्मणों ने पाण्डवों से पूछा कि तुम कहां जातेहो और कहां से आएहो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि हे ब्राह्मणों हम पाचों भाई माता के साथ घूमा करतेहैं अब एक चक्रानगरी से आरहेहैं ।४। ब्राह्मणों ने कहा कि तुम आजही पांचाल नगर में राजा द्रुपद के घर जाओ वहां वहुत धन

---

ing found the priest they beleived that they had got a protector and priest in him. The learned priest was their preceptor as well and was sure that the wise, brave, energetic and god-like Pandavas would soon regain their kingdom. The Pandavas then thought of proceeding to Panchal.12.

CHAPTER CLXXXV

Vaishampayan said the Pandavas then proceeded to Panchal to see the celebration of Draupadi's Swayamvara. The brave brothers, going with mother, were met in the way by a party of Brahmans who asked them of their whereabouts. They replied that they were five brothers roaming with mother and were coming from Ekchakra. 4. The Brahmans said, "Go at once, to king Draupad of the Panchal country. A Swayamvara will be celebrated there with great expense and congregation. King of

द्धाधनः ॥ ५ ॥ एकसार्थंप्रयाताःस्म वयंतत्रैवगामिनः । तत्रह्यद्भुतसङ्काशो भवितासुम
होत्सवः ॥ ६ ॥ यज्ञसेनस्यदुहिता द्रुपदस्यमहात्मनः । वेदीमध्यात्समुत्पन्ना पद्मपत्र
निभेक्षणा ॥ ७ ॥ दर्शनीयानवद्याङ्गी सुकुमारीमनस्विनी । धृष्टद्युम्नस्यभगिनी द्रोण
शत्रोःप्रतापिनः ॥ ८ ॥ योजातःकवचीखड्गी सशरःसशरासनः । सुसमिद्धेमहा
बाहुः पावकेपावकोपमः ॥ ९ ॥ स्वसातस्यानवद्याङ्गी द्रौपदीतनुमध्यमा । नीलोत्पल
समोगन्धो यस्याःक्रोशात्प्रवातिवै ॥ १० ॥ यज्ञसेनस्यचसुतां स्वयम्वरकृतक्षणाम् ।
गच्छामोवैवयंद्रष्टुं तच्चदिव्यंमहोत्सवम् ॥ ११ ॥ राजानोराजपुत्राश्च यज्वानोभूरिद
क्षिणाः । स्वाध्यायवन्तःशुचयो महात्मानोयतव्रताः ॥ १२ ॥ तरुणादर्शनीयाश्च
नानादेशसमागताः । महारथाःकृतास्त्राश्च समुपैष्यन्तिभूमिपाः ॥ १३ ॥ तेतत्रविवि
धान्दायान् विजयार्थंनरेश्वराः । प्रदास्यन्तिधनंगाश्च भक्ष्यंभोज्यञ्चसर्वशः ॥ १४ ॥
प्रतिगृह्यचतत्सर्वं दृष्ट्वाचैवस्वयम्वरम् । अनुभूयोत्सवंचैव गमिष्यामोयथेप्सितम् ।१५।

खर्च करके भारी स्वयम्वर होगा हमभी वहीं जारहे हैं चलो साथही चलें वहां आश्चर्य महोत्सव होगा॥६। पांचाल नाथ महात्मा यज्ञसेन राजा द्रुपद की कुमारी देखने के योग्य उस पुत्री द्रौपदी ने वेदी से जन्म लिया है जिसकी आंखें पद्मकी भांति हैं जिसका कोई अंग निन्दनीय नहीं है और जिसकी नीलपद्म सी गंधको सगरसेभी अनुभवहोतीहै स्वयम्बर होना निश्चय किया है वोह सुन्दरी अनिन्दतांगी महाभुज अग्नि समान प्रतापी धृष्टद्युम्न की बहिन है जिसने द्रोण के मारने के लिये जलतीहुई अग्निसे खड्ग, कवच, शर, शरासन आदि सहित जन्म लियाहै।१०। उस द्रौपदी और उसके सुन्दर स्वयम्बर के महोत्सव को देखनेजाते हैं उस महोत्सव में बहुत दक्षिणा देनेवाले यज्ञशील, स्वाध्याय मैंनयुक्त पवित्र स्वधर्म निष्ठ, महात्मा, तरुण अवस्था, तरुण अवस्थावाले, सुन्दर अस्त्रविद्या में पण्डित, महारथी भूपाल राजा और राजकुमार अनेक देशोंसे आवेंगे वे उसस्वयम्बर में विजय की आशा से गौ, धन, भक्ष्य, भोज्य इत्यादि दान करने योग्य अनेक सामग्री दानकरेंगे हम वोह सब लेकर और स्वयम्बर तथा महोत्सव को देखकर अपनी इच्छानुसार घर

-anchal's daughter, beautiful Draupadi, born of the sacrificial fire, of lotus eyes, blameless body, having a fragrance like that of blue lotus, reaching a mile, is to elect for her a husband. The beautiful girl is the sister of Dhrishtdyumn, who came out of fire with sword, mail, bow and arrows, to destroy Drona. 9. Many kings and princes, of great charity and learning, beautiful, young, brave and worthy, will visit the place from various countries. They will give away cows, wealth, food and other articles in the hope of their success at the Swayamvara and we shall return home with the gifts after seeing the celeberation and festival.15. There will come from various places

नटावैतालिकास्तत्र नर्त्तकाःसूतमागधाः । नियोधकाश्चदेशेभ्यः समेष्यन्तिमहाबलाः ॥ १६ ॥ एवंकौतूहलंकृत्वा दृष्ट्वाचप्रतिगृह्यच । सहास्माभिर्महात्मानः पुनःप्रतिनिवर्त्स्यथ ॥ १७ ॥ दर्शनीयांश्च वः सर्वान्देवरूपानवास्थितान् । समीक्ष्यकृष्णावरेयत्सङ्गत्यैकतमंवरम् ॥ १८ ॥ अयंभ्रातातव श्रीमान्दर्शनीयो महाभुजः । नियुज्यमानो विजयत्संगत्याद्राविणंबहु ॥ १९ ॥ युधिष्ठिर उवाच । परमंमोहमिष्यामो द्रष्टुंचैवमहोत्सवम् । भवद्भिःसहिताःसर्वे कन्यायास्तंस्वयम्वरम् ॥ २० ॥

इत्यादिपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि पाण्डवागमने पंचाशीत्यधिकशतोऽध्यायः ॥१८५ ॥

वैशम्पायन उवाच । एवमुक्ताःप्रयातास्ते पाण्डवाजनमेजय । राज्ञादक्षिणपाञ्चालान्द्रुपदेनाभिरक्षितान् ॥ १ ॥ ततस्तेषुमहात्मानं शुद्धात्मानमकल्मषम् । ददृशुः पांडवावीरा मुनिंद्वैपायनंतदा ॥ २ ॥ तस्मैयथावत्सत्कारं कृत्वातेनचसत्कृताः ।

को लौटेंगे।१५।उसस्वयम्बर भूमि में नाना देशोंके नट भांतिर के भेषधरनेवाले वैतालिक मंगलगानेवाले सूत पुराणकी कथा कहनेवाले, मागधवंशकी सूचना देनेवाले महाबली पहलवान और नाचनेवाले आवें गे हेमहात्माओ तुमभी आनन्द से हम लोगोंके साथ लौटना तुम सबको देवोंकी भांति सुन्दर देखते हैं स्वयम्वर स्थानमें तुम्हारे होने से द्रौपदी तुमको देखकर दैववश तुम लोगों मेंसे किसी श्रेष्ठको वरण करसक्ती है तुम्हारे इस भाई को महाभुज श्रीमान् और दर्शन योग्य कार्य कुशल देखते हैं इनके वरेजानेसे दैववश बहुत धनभी पासक्तेहो युधिष्ठिर ने कहा कि हम सब तुम्हारे साथ द्रौपदी के उस परम-महोत्सवयुक्त स्वयंबर को देखने जायँगे ॥ २० ॥

अध्याय १८६ ॥

वैशम्पायनने कहा कि हे जनमेजय ! पाण्डवलोग ब्राह्मणों से यह बातें सुनकर राजाद्रुपद से शासन किये जाते हुए दक्षिणीय पांचाल में जाने लगे पदमें पापके स्पर्शसे खाली विशुद्ध स्वभावी महात्मा मुनि द्वैपायन को देखकर विधिपूर्वक उनकी पूजाकी

acrobats, singers, historious, bards, wrestlers and dancers. You may also return with us with gifts. You look like gods. Draupadi may choose one of you. We see this brother of yours of great arms, fortunate, beautiful and dexterous. You may be fortunate to gain great wealth if he is chosen." Yudhishthir replied, "We shall go with you to see the celebration of draupadi's Swayamvar and other entertainments.

CHAPTER CLXXXVI

Vaishampayan said that the Pandavas, after hearing this from the Brahmans, went to Southern Panchal ruled by Drupad. In their way they met the sinless, pure and good Rishi, Krishna

कथान्तेचाभ्यनुज्ञाताः प्रययुर्द्रुपदक्षयम् ॥ ३ ॥ पश्यन्तोरमणीयानि वनानिचसरांसि
च। तत्रतत्रवसन्तश्च शनैर्जग्मुर्महारथाः ॥ ४ ॥ स्वाध्यायवन्तःशुचयो मधुरःप्रियवा
दिनः। आनुपूर्व्येणसम्प्राप्ताः पांचालानपाण्डुनन्दनाः ॥ ५ ॥ तेतुदृष्ट्वापुरंतच्च स्क-
न्धावारञ्चपाण्डवाः। कुम्भकारस्यशालायां निवासञ्चाक्रिरेतदा ॥ ६ ॥ तत्रभैक्ष्यं
समाजह्रुर्ब्राह्मणीं वृत्तिमाश्रिताः। तान्सम्प्राप्तांस्तथा वीरान्जज्ञिरेननराःक्वचित् ॥ ७ ॥
यज्ञसेनस्यकामस्तु पाण्डवायाकिरीटिने। कृष्णांदद्यामिति सदानचैतद्विवृणोतिसः। ८।
सोऽन्वेषमाणःकौन्तेयं पाञ्चाल्योजनमेजय। दृढंधनुरनानम्यं कारयामासभारत। ९।
यन्त्रंवैहायसंचापिकारयामासकृत्रिमम्।तेनयन्त्रेणसमितंराजालक्ष्यंचकारसः।१० द्रुपद
उवाच।इदंसज्यंधनुःकृत्वासज्जैरेभिश्चसायकैः।अतीत्यलक्ष्यंयोवेद्धासलब्धामत्सुताभि-
ति।।११॥ वैशम्पायन उवाच। इतिसद्रुपदोराजा स्वयम्वरमघोषयत्। तच्छ्रुत्वापा-

और वेभी उन से सत्कार किये जाकर नाना वार्त्तालाप के पीछे उनकी आज्ञा से द्रुपद के भवनकी ओर चले स्वाध्याय में नियुक्त, अच्छे, पवित्र, सुन्दर-दर्शन, मीठी वाणी बोलनेवाले महारथी पाण्डवगण पथ में सुन्दर सुन्दर वन और ताल देखकर उन स्थानों में ठहर ठहर कर धीरे२ चलते पांचाल देश में पहुँचगये।५।वे पांचाल नगर और वहां के सेनालय को देखकर एक कुम्भार के घर में टिके रहे वहां ब्राह्मणका भेषधरकर भिख मांग कर पेट पालतेहुए बसे रहे उससे यज्ञ में आये हुए उन वीरों को किसी ने नहीं जाना।७।राजा यज्ञसेनकी सदा यह कामनाथी, कि पाण्डुपुत्र किरीटी अर्जुनकोही कन्यादान करें पर उन्हों ने यह बात किसी से प्रगट नहीं की। हे जनमेजय! उन्हों ने कुन्ती पुत्र अर्जुन को स्मरण कर ऐसा एक दृढ चाप बनवाया, कि जिसे अर्जुन के बिना कोई दूसरा नवा न सके और आकाश में स्थित एक कृत्रिम यंत्र बनाकर उस यंत्र में एक लक्ष्य जुडवाया।१०।और कहा कि जो राजा इसशरासन में गुणचढाकर उस सजेहुए सायक से उस यंत्र को पारकर लक्ष्यको विद्ध करसकेंगे वही मेरी कन्या को लाभ करेंगे। वैशम्पायन ने कहा कि हे भारत! राजाद्रुपद के ऐसे स्वयंवरकी सूचना

Dwaipayan and having worshipped him and been kindly treated by him they proceeded by his permission towards *Drupad's* palace. Engaged in self study, good, holy, beautiful, eloquent and brave the Pandavas stayed in the way to see many charming forests and lakes and, at last, by slow marches, reached the country.5. After seeing the city and various camps they stayed at the house of a potter, begging their food in the guise of Brahmans and thus no one knew of their coming there.7. Yagyasen was very desirous of securing Arjun as his son-in-law, but did not disclose this secret to any one else. With this intention, he had a very stiff bow made, such as Arjun

थिंवाःसर्वे समीयुस्तत्रभारत ॥ १२ ॥ ऋषयश्चमहात्मानः स्वयम्वरदिदृक्षवः । दुर्यो धनपुरोगाश्चसकर्णाः कुरवोनृप ॥ १३ ॥ ब्राह्मणाश्चमहाभागा देशेभ्यः समुपागमन् । ततोऽर्चिताराजगणा द्रुपदेनमहात्मना ॥ १४ ॥ उपोपाविष्टामञ्चेषु द्रष्टुकामाःस्वयम्व रम् । ततःपौरजनासर्वे सागरोद्धूतनिःस्वनाः ॥ १५ ॥ शिशुमाराशिरःप्राप्य न्यवि शंस्तेस्मपार्थिवाः । प्रागुत्तरेणनगराद्भूमिभागे समेशुभे । समाजवाटःशुशुभे भवनैः सर्वतोवृतः ॥ १६ ॥ प्राकारपरिखोपेतो द्वारतोरणमण्डितः । वितानेनविचित्रेणसर्वतः समलङ्कृतः ॥ १७ ॥ तूर्य्यौघशतसङ्कीर्णः पराद्ध्यागुरुधूपितः । चन्दनोदकसिक्त श्चमाल्यदामोपशोभितः ॥ १८ ॥ कैलासशिखरप्रख्यैर्नभस्तलविलेखिभिः ॥ सर्वतःसंवृतःशुभ्रैःप्रसादैःसुकृतोच्छ्रयैः ॥१९॥ सुवर्णजालसम्वीतैर्मणिकुट्टिमभूषणैः। सुखारोहणसोपानैर्महासनपरिच्छदैः ॥२०॥ स्रग्दामसमवच्छन्नैरगुरूत्तमवासितैः ।

देनेपर राजालोग उसे सुनकर वहां आनेलगे।१२।और नाना देशोंसे महात्मा महर्षिलोग, महाभाग ब्राह्मणगण और कर्ण तथा दुर्योधनादि कौरव स्वयम्वर के देखने के लिये आ पहुँचे महात्मा राजाद्रुपदने उन सब भूपालोंका सत्कारकिया।१४।अनन्तर पुरवासी लोग महासमुद्र से उठतीं हुई लहरकी भांति बडा कोलाहल मचाते हुए द्रौपदीके स्वयम्बर को देखनेकी इच्छा से निकटकी एक बेदीपर बैठनेलगे राजालोग शिशुमार शिरः नामके स्थान से होकर स्वयम्बर सभा में प्रविष्टहोने लगे। नगर के ईशानकोण में अच्छी सम-भूमि पर चारों ओर बाड़े घिरीहुई स्वयम्बरकी सभा शोभा पारहीथी ।१६। वह सभा खंदक और परकोटोंसे घेरी, द्वारतोरणों से जडी, सर्वत्र चंदवे से सजी, सैकडों तूर्योंसे बजती, अच्छे अगुरुकी गन्ध से सुगंधित चन्दन के जल से अभिषिक्त और फूलके हारों से भलेप्रकार सुशोभितथी।१८।उसके चारों ओर सोनेके जालेस सजेधजे, मणिमय कुट्टिमों से सुहावने, अच्छे अच्छे आसन और साजों से बनेठने चढने में सुखदायी सीढी युक्त, कैलासकी चोटीकी नाईं आकाशको चूमनेवाले ऊंचे बडे बडे शुभभवन शोभा पारहेथे।२०।

only could bend, and on high, an artificial machine with the target.10. He then said, "The king, who will hit the target with this bow, will get my daughter." Vaishampayan said that kings began to come in from all parts at the anouncement of the Swayamvar. 12. Great Rishis, Brahmans, Karan and Duryodhan with other Kauravas came there from great distances to witness it. Drupad gave a hearty welcome to the kings.14. On the appointed day, the citizens came in large numbers with great noise and sat on a platform. The kings were admitted by a special entrance into the hall of assembly. A level piece of ground had been selected to the East of the city and barricaded for the purpose. It had a ditch all round, was furnished with gates and flags and was covered with an awning.

हंसांशुवर्णैर्बहुभिरायोजनसुगन्धिभिः ॥ २१ ॥ असम्बाधशतद्वारैःशयनासनशोभितैः। बहुधातुपिनद्धाङ्गैर्हिमवच्छिखरैरिव ॥२२॥ तत्रनानाप्रकारेषु विमानेषु स्वलङ्कृताः। स्पर्द्धमानास्तदान्योन्यं निषेदुःसर्वपार्थिवाः ॥ २३ ॥ तत्रोपविष्टान्ददृशुर्महासत्त्वपराक्रमान् । राजसिंहान्महाभागान् कृष्णागुरुविभूषितान् ॥ २४ ॥ महाप्रसादान्ब्रह्मण्यान् स्वराष्ट्रपरिरक्षिणः। प्रियान्सर्वस्यलोकस्य सुकृतैःकर्मभिःशुभैः २५।मंचेषुचपरार्द्धेषुपौरजानपदाजनाः । कृष्णादर्शनासिद्ध्यर्थं सर्वत समुपाविशन् ॥ २६ ॥ ब्राह्मणैस्तेचसहिताः पाण्डवाःसमुपाविशन् । ऋद्धिंपाञ्चालराजस्य पश्यन्तस्तामनुत्तमाम् ॥ २७ ॥ ततःसमाजोववृधे सराजन्दिवसानबहून् । रत्नप्रदानबहुलः शोभितोनटनर्त्तकैः ॥ २८ ॥ वर्त्तमानेसमाजेतु रमणीयेऽह्निषोडशे । आप्लुतांगीसुवसना सर्वाभर

हंसकी गर्दनके रंगकी भांति धौले, गांओंमें न रहनेवाले जनों से भरे, शय्या और आसनों से सुशोभित, हिमाचलकी चोटीकी नांई धातुओं से रंगे और अच्छे अगुरुकी गंध से सुगन्धित उन सबभवनोंकी सुगन्ध योजन भरकी दूरी सेभी अनुभवहोती थी, उन सब भवनों के सैकडों द्वार इतने लंबे चौडे थे कि एकवारही बहुत लोगोंके जाने सेभी एक दूसरेकी बाधानहीं होती थी।२२।सब भूप अच्छेप्रकार अलंकृत और दूसरोंपर अहंकार युक्तहोकर उन सब भांति भांति के साततल्ले भवनों में जा बैठे महासत्ववान अति पराक्रमी, महाभाग, महाप्रसाद तथा गुणयुक्त, निज राज्योंके पालनकरनेवाले, शुभकर्मों से सब लोगोंके प्यारे और कृष्णागुरु से सजे उन सब राजसिंहों के उन स्थानों में बैठे जाने पर, द्रौपदीके देखनेके अभिप्राय से चारों ओर अच्छी अच्छी वेदियोंपर बैठेहुए नगर और जनपदवासी उन लोगोंको देखनेलगे।२६। पाण्डवलोग ब्राह्मण समाजके साथ एकत्र बैठकर राजा पांचालका महत् ऐश्वर्य देखनेलगे नट और नाचनेवालोंके नाच आदि और दाताओंके बहुत धन रत्नों के दान से सुशोभित वह सभा बहुत दिनों तक इस प्रकारसे बढनेलगी । २८ । हेभरत श्रेष्ठ ! सोलहवें दिन द्रौपदी नहा धोकर और सर्व

It was scented with incense, was painted with Sandal and decorated with flower garlands. 18. Within were spread all round carpets studded with precious stones and there were good rooms above, very high and having steps easy to ascend. Of brownish colour like that of a swan's neck, filled with citizens, decorated with carpets and beds, and metal coloured like the peaks of the Himalayas, the rooms above sent out their fragrance to a great distance. Hundreds of large gates were set to allow many people to come in together freely. 22. All the kings, having ornaments on their bodies and showing their pride to one another were seated within. Very glorious, fortunate, virtuous, protectors of their people, and dear to all on account of their good deeds, the brave kings sat in their places and then the

णभूषिता ॥ २९ ॥ मालांचसमुपादाय कांचनींसमलंकृताम् । अवतीर्णाततोरंगं द्रौपदीभरतर्षभ ॥ ३० ॥ पुरोहितःसोमकानां मन्त्रविद्ब्राह्मणःशुचिः । परिस्तीर्य्य जुहावाग्निमाज्येन विधिवत्तदा ॥ ३१ ॥ संतर्पयित्वाज्वलनं ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य च । वारयामाससर्वाणि वादित्राणिसमन्ततः ॥ ३२ ॥ निःशब्देतुकृतेतस्मिन् धृष्टद्युम्नोविशाम्पते । कृष्णामादाय विधिवन्मेघदुन्दुभिनिस्वनः ॥ ३३ ॥ रङ्गमध्येगतस्तत्र मेघगम्भीरयागिरा । वाक्यमुच्चैर्ज्जगादेदं श्लक्ष्णमर्थवदुत्तमम् ॥३४॥ इदंधनुर्लक्ष्यमिमेचबाणाः शृण्वन्तुमेभूपतयःसमेताः । छिद्रेणयन्त्रस्यसमर्पयध्वं शरैःशितैर्व्योमचरैर्दशार्द्धैः ॥ ३५ ॥ एतन्महत्कर्मकरोतियोवै कुलेनरूपेणबलेनयुक्तः । तस्याद्यभार्य्या भगिनीममेयं कृष्णाभवित्रीनमृषाब्रवीमि ॥ ३६ ॥ तानेवमुक्त्वाद्रुपदस्यपुत्रःपश्चादि-

आभूषणों से बन ठन के विचित्र वस्त्र पहिने सुशोभित सुवर्ण पात्र लेकर उस सुन्दर समाजकी रंगभूमि पर जा पहुँची । ३० । सोमवंशके पुरोहित मन्त्रज्ञ ब्राह्मण ने शुचिहोकर फूल फैलाकर यथाविधि अग्नि को आहुति दे २ करके हविसे हवि भक्षी को प्रसन्न कर और ब्राह्मणों से स्वस्ति कहलवाकर चारों ओरके बाजोंकी ध्वनि को रोका।३२।हेपृथ्वीनाथ ! अनन्तर सभा के चुपहोनेपर बादल और नगाडे की भांति स्वर युक्त धृष्टद्युम्न ने यथाविधि द्रौपदीको लेकर रंग में खडे होकर के मेघ के समान गम्भीर बडेशब्द से यह अर्थयुक्त मनोहर अच्छीबातकही।३४।कि हेउपस्थित भूपालो ! सुनो यह शरासन, यह तेज पांचबांण और आकाशमें स्थित लक्ष्य दीख पडता है, इन पांचबाणों से उस यन्त्र के छिद्रको विद्ध करनाहोगा मैं सत्यकरके कहताहूं कि रूपवान बली, कुलीन जो राजा इस महत् कार्य को पूरा करसकें गे मेरी बहिन यह कृष्णा आज उनकी

citizens and villagers began to look towards them from their platforms in the hope of getting a glimpse of Draupadi's face.26.The Pandavas sitting among the Brahmans saw the great wealth of the Panchal king. With the performances of the acrobats and dancers and the donations of the generous kings the audience increased day after day. On the sixteenth day, Draupadi, having washed her body and put on her best clothes and ornaments, came into the hall of assembly with a gold vessel. 30. The priest, a learned Brahman of Som family, having purified himself, sprinkled flowers, poured libations into fire and caused the sounds of musical instruments to be stopped to hear the hymns from the Brahmans.32. When the audience was silent, Dhrishtdyumn stood with Draupadi in the hall and spoke out, in a voice like that of thunder, as follows:—Hear ye, the kings that are present. Here are a bow, five arrows and the target seen on high. You will have to hit the target with these five arrows. I say truly, that

दंतांभगिनीमुवाच । नाम्नाचगोत्रेणचकर्मणाच सङ्कीर्त्तयन्भूमिपतीन्समेतान् ॥ ३७ ॥
इत्यादिपर्वणि स्वयम्बरपर्वणि धृष्टद्युम्नवाक्ये षडशीत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १८६ ॥
धृष्टद्युम्न उवाच । दुर्योधनोदुर्विषहो दुर्मुखोदुष्प्रधर्षणः । विविंशतिर्विकर्णश्च सहोदुःशासनस्तथा ॥ १ ॥ युयुत्सुर्वायुर्वेगश्च भीमवेगरवस्तथा । उग्रायुधोवलाकी च कनकायुर्विरोचनः ॥ २ ॥ कुण्डकश्चित्रसेनश्च सुवर्चाःकनकध्वजः । नन्दकोबाहुशालीच तुहुण्डोविकटस्तथा ॥ ३ ॥ एतेचान्येचवहवो धार्त्तराष्ट्रामहाबलाः । कर्णेनसहिता वीरास्त्वदर्थं समुपागताः ॥ ४ ॥ असंख्यातामहात्मानः पार्थिवाःक्षत्रियर्षभाः । शकुनिःसौबलश्चैव वृषकोऽथवृहद्बलः ॥ ५ ॥ एतेगान्धारराजस्य सुताः सर्वे समागताः । अश्वत्थामाचभोजश्च सर्वशस्त्रभृतांवरौ ॥ ६ ॥ समवेतौमहात्मानौ त्वदर्थेसमलंकृतौ । वृहन्तोमणिमांश्चैव दण्डधारश्चपार्थिवः ॥ ७ ॥ सहदेवजयत्सेनौ मेघसन्धिश्चपार्थिवः । विराटःसहपुत्राभ्यां शङ्खेनैवोत्तरेणच ॥ ८ ॥ वार्द्धक्षेमिःसुशर्माच

स्री होगी ।३६। द्रुपदकुमार आयेहुए भूपालोंसे यह कहकर आगे उनके नाम, गोत्र और कर्मकी बात सुनाकर बहिन से कहनेलगे ॥ ३७ ॥

अध्याय १८७ ॥

धृष्टद्युम्न ने कहा कि दुर्योधन, दुर्विसह, दुर्मुख, दुष्प्रधर्षण, विबिंशति, विकर्ण, सह, दुःशासन, युयुत्सु, वायुवेग, भीमवेगरव, उग्रायुध, बलाकी, कनकायु, विरोचन, कुण्डक, चित्रसेन, सुवर्चा, कनकध्वज, नन्दक,बाहुशाली, तुहुण्ड, विकट, यह सब वीर और दूसरे महाबली धृतराष्ट्रकुमार बहुतेरे कर्ण के साथ तुम्हारे लिये आये हैं ।४। और अगणित क्षत्रिय श्रेष्ठ महात्मा राजालोग उपस्थित हुए हैं शकुनि, सौबल, वृषक,वृहद्बल यह सब गान्धारराज कुमार आयेहैं सर्वास्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महात्मा अश्वत्थामा और भोज अलंकृतहोकर तुम्हारे लिये आयेहैं वृहन्त,मणिमान,दण्डधार,सहदेव,जयत्सेन, मगधराज, मेघसन्धि, संख्य और उत्तर नामक दोपुत्रोंके साथ विराट ।८। वार्द्ध क्षेमि, सुशर्मा,सेना

the king who is beautiful, powerful and of good family and performs this great deed shall have my sister Krishna for his wife." Having said this, Drupad told his sister the names, families and qualities of the assembled princes.37.

CHAPTER. CLXXXVII.

Dhrishtdyumna said,"Duryodhan, Durvisah, Durmukh,Dushpradharshan, *Bibinshati*, *Bikarn Sah*, *Dushasen*, *Yuyutsu Vayuveg*, *Bhimveg*, *Ugrayudh*, *Balaki*, *Kanakayu*, *Virochan*, *Kundak*, *Chitrasen*, *Suvarcha*, *Kanakdhwaj*, *Nandak*, *Vahushali*, *Tuhund*, *Vikat*, *Vir*-all these and other brave sons of *Dhitrastra* with *Karan* have come for your sake.4. Besides these there are other *Kshatrya* kings, *Viz.*, *Shakuni*, *Saubal*, *Vrishak* *Vrihadbal*-all these are

सेनाविन्दुश्चपार्थिवः । सुकेतुःसहपुत्रेण सुनाम्नाचसुवर्च्चसा ॥ ९ ॥ सुचित्रःसुकुमार
श्च वृकःसत्यधृतिस्तथा । सूर्य्यध्वजोरोचमानो नीलश्चित्रायुधस्तथा ॥ १० ॥ अंशु-
मांश्चेकितानश्च श्रेणिमांश्चमहाबलः । समुद्रसेनपुत्रश्च चन्द्रसेनःप्रतापवान् ॥ ११ ॥
जलसन्धःपितापुत्रौ विदण्डोदण्डएव च । पौण्ड्रकोवासुदेवश्च भगदत्तश्चवीर्य्यवान् ॥
॥ १२ ॥ कलिङ्गस्ताम्रलिप्तश्च पत्तनाधिपतिस्तथा । मद्रराजस्तथाशल्यः सहपुत्रोम-
हारथः ॥ १३ ॥ रुक्मांगदेनवीरेण तथारुक्मरथेनच । कौरव्यःसोमदत्तश्च पुत्रश्चा-
स्यमहारथः ॥ १४ ॥ समवेतास्त्रयःशूरा भूरिर्भूरिश्रवाःशलः । सुदक्षिणश्चकाम्बोजो
दृढधन्वाचपौरवः ॥ १५ ॥ बृहद्बलःसुषेणश्च शिविरौशीनरस्तथा । पटच्चरनिहन्ताच
कारूषाधिपतिस्तथा ॥ १६ ॥ सङ्कर्षणोवासुदेवो रौक्मिणेयश्चवीर्य्यवान् । शाम्बश्च
चारुदेष्णश्च प्राद्युम्निःसगदस्तथा ॥ १७ ॥ अक्रूरःसात्यकिश्चैव उद्धवश्चमहामतिः ।
कृतवर्माचहार्दिक्यः पृथुर्विपृथुरेवच ॥ १८ ॥ विदूरथश्चकङ्कश्च शंकुश्चसगवेषणः ।
आशावहोनिरुद्धश्च समीकःसारिमेजयः ॥ १९ ॥ वीरोवातपतिश्चैव झिल्लीपिण्डारक

विन्दु,सुवर्चः और सुनामानामक दोपुत्रों के साथ सुकेतु,सुचित्र,सुकुमार,वृक, सत्यधृति, सूर्यध्वज,रोचमान,नील,चित्रायुध,अंशुमान,चेकितान,महाबली श्रेणीमान्, समुद्रसेनके पुत्र प्रतापी चन्द्रसेन, जलसन्ध, विदण्ड और दण्ड यह दो पिता पुत्र, पौण्ड्रक वासुदेव वीर्यवान भगदत्त कलिंग, ताम्रलिप्त, पत्तनाधिपति, पुत्र के साथ महारथी मद्रराज शल्य वीर रुक्मांगद, रुक्मरथ, कौरव्य, सोमदत्त, सोमदत्त के पुत्र महारथी भूरि, भूरिश्रवा और शल एकत्र यह तीन वीर,सुदक्षिण, काम्बोज, पौरव दृढधन्वा, बृहद्बल, सुषेण, औशीनर शिवि, पटच्चर निहन्ता, कारूषाधिप, बलदेव, कृष्ण, वीर्यवन्त रौक्मिणेय, शाम्ब, चारुदेष्ण, प्राद्युम्नि, सगद, अक्रूर, सात्यकि, महामतिउद्धव हार्दिक्य, कृतवर्मा, पृथु, विपृथु, विदूरथ, कंक, शंकु, गवेषण, आशावह, अनिरुद्ध, समीक, सारिमेजय,

the sons of the king of *Kandhar*; *Ashwathama* the best of those that bear arms, *Bhoj*, *Brihant*, *Maniman*, *Dandadhar*, *Sahdeva*, *Jayatsen*, *Meghsandhi* the king of *Magdh*, *Virath* with his two sons *Sank* and *Uttar*, *Bardhkshemi*, *Susharma*, *Senavindu*, *Suketu* with *Suvarcha* and *Sunama* his two sons, *Suchitra*, *Sukumar*, *Vrika*, *Satyadhriti*, *Suryadhwaj*, *Rochman*, *Nil*, *Chitrayudh*, *Anshuman*, *Chekitan*, the brave *Shreniman*, *Chandrasen* the son of *Samudrasen*, *Jalasandh*, *Vidanda* and *Danda* father and son; *Paundrak*, *Vasudeva*, powerful *Bhagdatta*, *Kaling*, *Tomralipta*, the king of *Madra Shalwa with his son, brave Rukmngad*, *Rukmarath Kauravya*, *Somdatta* and his sons the brave Bhuri, Bhurishrava and Shala, Sudakshan, Kamboj, Dirrhadhanwa the Paurav, Brihadval, Sushen, Aushinar, Shivi, Pattachar, Nihanta, Karushadhip, Baladev, Krishna, the

स्तथा । उशीनरश्चविक्रान्तो वृष्णयस्तेप्रकीर्त्तिताः ॥ २० ॥ भगीरथोबृहत्क्षत्रः सैन्धवश्चजयद्रथः । बृहद्रथोवाह्लिकश्च श्रुतायुश्चमहारथः ॥ २१ ॥ उलूकःकैतवोराजा चित्राङ्गदशुभाङ्गदौ । वत्सराजश्चमतिमान कोशलाधिपतिस्तथा॥ २२ ॥ शिशुपालश्च विक्रांतो जरासन्धस्तथैवच । एतेचान्येचबहवो नानाजनपदेश्वराः ॥ २३ ॥ त्वदर्थमागताभद्रे क्षत्रियाःप्रथिताभुवि । एतेभेत्स्यन्ति विक्रान्तास्त्वदर्थे लक्ष्यमुत्तमम् । विध्येत य इदं लक्ष्यं वरयेथाः शुभेऽद्य तम् ॥ २४ ॥

इत्यादिकपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि राजनामकीर्त्तने सप्ताशीत्यधिकशतोऽध्यायः॥१८७

वैशम्पायन उवाच । तेऽलंकृताःकुण्डलिनोयुवानः परस्परंस्पर्द्धमानानरेन्द्राः । अस्त्रंबलंचात्मनिमन्यमानाः सर्वेसमुत्पेतुरुदायुधास्ते ॥ १ ॥ रूपेणवीर्य्येण कुलेन चैवशीलेन वित्तेनचयौवनेन । समिद्धदर्पामदवेगभिन्ना मत्तायथाहैमवतागजेन्द्राः ॥२॥

वीर वातपति झिल्लि, पिण्डारक, विक्रमी, उशीनर, यह सब वृष्णिगण, भगीरथ, बृहक्षत्र सैन्धव, जयद्रथ, बृहद्रथ, बाह्लीक, महारथी श्रुतायुः, उलूक, कैतव, चित्रांगद, शुभांगद मतिमान वत्सराज, कोशलाधिप, शिशुपाल और विक्रमी जरासन्ध। हेभद्रे ! भूमण्डल में प्रसिद्ध विक्रमी यह सब राजा और क्षत्रियवंशी नानाजनपदनाथ तुम्हारे लिये इस अच्छे लक्ष्य को भेद करनेकी इच्छा से आये हैं; हेशुभे ! जो इस लक्ष को विद्ध करेंगे, उन को तुम वरण करना ॥ २४ ॥

अध्याय १८८ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर कुण्डलादि अलंकारों से सजे हुए युवा नरेंद्रगण सभी कोई अपने को अस्त्रविद्या में पण्डित और बली समझकर एक दूसरे पर अहंकार युक्तहोकर के अस्त्र लेकर उठके खडेहुए। वे धन, यौवन, कुल, शील, रूप और वीर्य में हिमाचल में जन्मे मदमत्त हस्तीकी भांति अति दर्पयुक्तहोकर एक दूसरे को निहारने

valliant Raukmaneya, Samva, Charudeshna, Pradyumni, Gada, Akrur, Satyaki, the wise Uddhava, Hardikya, Kritvarma, Prithu, Viprathu, Vidurath, Kank, Shanku, Gaveshan, Ashavah, Anirudh, Samik, Sarimejaya, Jhilli the valliant Vatpati, Pindarak, Vikrami, Ushinar (all these Vrishnis) Bhagirath, Vrihakshatra, Saindhava, Jayadrath, Vrihadrath, Valhik, the valliant Shrutayu, Uluk, Kaitava, Chitrangad, Subhanged, Batsraj the wise, Koshaladhip, Shishupal, and the valliant Jarasandh, these famous kings and other rulers have come to hit the target. You should elect him who hits it."

CHAPTER, CLXXX.

Vaishampayan said that the princes decked with ornaments, proud of their knowledge of arms, stood up and being proud of their wealth, youth, family, manners, beauty and strength they began

परस्परंस्पर्द्धयाप्रेक्षमानाः सङ्कल्पजेनाभिपरिप्लुतांगाः । कृष्णाममैवेत्यभिभाषमाणा नृपासनेभ्यः सहसोदतिष्ठन् ॥३॥ तेक्षत्रियारङ्गगताःसमेता जिगीषमाणाद्रुपदात्मजां ताम् । चकाशिरेपर्वतराजकन्यामुमां यथादेवगणाःसमेताः ॥ ४ ॥ कन्दर्पवाणाभिनिपीडितांगाः कृष्णागतैस्तेहृदयैर्नरेन्द्राः । रङ्गावतीर्णाद्रुपदात्मजार्थं द्वेषःप्रचक्रुःसुहृदोऽपितत्र ॥ ५ ॥ अथाययुर्देवगणा विमानैरुद्रादित्यावसवोऽथाश्विनौच । साध्याश्चसर्वेमरुतस्तथैव यमंपुरस्कृत्यधनेश्वरश्च ॥ ६ ॥ दैत्याःसुपर्णाश्चमहोरगाश्च देवर्षयो गुह्यकाश्चारणाश्च । विश्वावसुर्नारदपर्वतौच गन्धर्वमुख्याःसहसाप्सरोभिः ॥७॥ हलायुधस्तत्रजनार्दनश्च वृष्ण्यन्धकाश्चैवयथाप्रधानम् । प्रेक्षांस्मचक्रुर्यदुपुङ्गवास्ते स्थिताश्च कृष्णस्यमतेमहान्तः ॥८॥दृष्ट्वातुतान्मत्तगजेन्द्ररूपान् पंचाभिपद्मानिववारणेन्द्रान्। भस्मावृतांगानिवहव्यवाहान् कृष्णः प्रदध्यौयदुवीरमुख्यः ॥ ९ ॥ शशंसरामाय

लगे ।२। और कामके वशमें होकर यह कहतेहुए कि द्रौपदी मेरीहीहोगी एकायक राजा आसनोंसे उतरे रंगभूमिमें उतरे हुए क्षत्रियलोगोंने द्रुपद कन्याको जय करनेकी इच्छा से उस के चारोंओर खड़े होकर ऐसीअपूर्व शोभा धारणकी कि जैसे देवों ने गिरिराज पुत्री उमाको घेरकरधरीथी ।४। वेकामदेवके वाणों से जलकर. द्रौपदी लाभकी आशा से हृदय में उसी को धरकर प्यारे मित्रोंकाभी द्वेषकरने लगे । अनन्तर रुद्रगण, आदित्यगण, वसुगण, दोनों अश्विनीकुमार, साध्यगण, मरुद्गण, यमराज, कुबेर और सम्पूर्ण देवगण रथों पर चढके वहां आगये।६। दैत्यगण सुपर्णगण, महोरगगण, देवर्षिगण,गुह्यक गण, चारणगण, विश्वावसु, नारद, ऋषि, पर्वत और अप्सराओं के साथ प्रधान प्रधान गन्धर्व वहां आ पहुंचे । ७ । हलायुध, कृष्ण और कृष्ण के मतको मानने वाले प्रधान प्रधान वृष्णिगण, अन्धकगण और यादवगण, इधर उधर देखने लगे । यदुवीरों में प्रधान कृष्ण पद्मकी ओर दौड़ते हुए गज राज की भांति द्रौपदी की ओर किये और मनुष्यों से ढंपे हुए अग्नि सदृश उन उन्मत्त हस्ती के समान पांच्च पाण्डवों को देखकर सोचने लगे और बलदेवजी से बोले, कि मुझको जान पडता है, कि यह युधिष्ठिर, यह

to look down upon one another like the Himalayan elephants mad with youth. Desirous of obtaining Draupadi they came down at once from their kingly seats. The Kshatryas surrounding Droupadi looked like so many gods surrounding Uma the daughter of Giriraj.4. Their hearts were filled by the desire of obtaining her and they began to hate even their dearest friends. The Rudras the Adityas, the Vasus, the twin Aswins, the Sadhyas, the Maruttas. Kuver and other gods came there upon their chariots. Daityas, Suparnas, Mahoragas, Devarshis, Guhyaks, Charans, Vishwavasu, Narad with Rishis, Apsaras and the principal Gandharvas came there.7. Halayudh,

युधिष्ठिरं सभीमं सजिष्णुंयमजौचवीरौ। शनैःशनैस्तान् प्रसमीक्ष्यरामो जनार्दनंप्रीतम-
नादर्दशह ॥१०॥ अन्येतुवीरानृपपुत्रपौत्राः कृष्णागतैर्नेत्रमनःस्वभावैः। व्यायच्छ-
मानाददृशुर्नतानन्वैसन्दष्टदन्तच्छदताम्रनेत्राः ॥११॥ तथैवपार्थाःपृथुबाहवस्ते वीरौ
यमौचैवमहानुभावौ। तांद्रौपदींप्रेक्ष्य तदास्मसर्वे कन्दर्पबाणाभिहताबभूवुः ॥ १२॥
देवर्षिगन्धर्वसमाकुलंतत् सुपर्णनागासुरसिद्धजुष्टम्। दिव्येनगन्धेनसमाकुलञ्च दिव्यै-
श्चपुष्पैरवकीर्य्यमाणम् ॥ १३ ॥ महास्वनैर्दुन्दुभिनादितैश्च बभूवतत्संकुलमन्तरिक्ष
म्। विमानसम्बाधमभूत्समन्तात्सवेणुवीणापणवानुनादम् ॥१४॥ ततस्तुतेराजगणाः
क्रमेण कृष्णानिमित्तंकृतविक्रमाश्च। सकर्णदुर्य्योधनशाल्वशल्य द्रौणायनिक्राथसुनी
थवक्राः ॥ १५ ॥ कलिङ्गवङ्गाधिपपाण्ड्यपौण्ड्रा विदेहराजोयवनाधिपश्च। अन्येच
नानानृपपुत्रपौत्रा राष्ट्राधिपाःपङ्कजपत्रनेत्राः॥१६॥किरीटहाराङ्गदचक्रवालैर्विभूषिता-

भीम, यह अर्जुन, यह नकुल और यह सहदेव हैं बलदेवजीने भी धीरे धीरे उनको नि-
हारकर प्रसन्न हृदय से जनार्दनकी ओर देखा ।१०। दूसरे वीरराजाओं [illegible] राजपुत्र
नेत्रों को लालकर होठों को काटतेहुए द्रौपदीकी ओर स्वभाव मन और [illegible] कर
द्रौपदी कोही देखनेलगे पाण्डवोंकी ओर उनकी दृष्टिभी नहीं पड़ी पृथुबाहु [illegible] युधि
ष्ठिर भीम और अर्जुन तथा महानुभव वीर नकुल और सहदेव यह सबभी उससमय
द्रौपदी को देखकर मदनबाण से घायलहुएथे।१२।तब दिव्य गन्धकी उमंगसे भरे दिव्य
फूलों से पूरे वेणु, वीणापणव आदिकी ध्वनि संयुक्त और बड़े बड़े नगाड़ों के शब्द से
गूंजतेहुए उसस्थानका आकाश सर्वत्र देव, ऋषि, गन्धर्व, सुपर्ण, नाग, असुर और सिद्धों
से भरजानेके कारण उनके रथों में आपसकी रुकावटहोने लगी।१४।कर्ण, दुर्योधन, शाल्व
शल्य, द्रौणायनि, क्राथ, सुनीथ, वक्र, कलिंगाधिप, वंगाधिप, पाण्ड्य, पौण्ड्र, राजा
विदेह, यवनराज, यह सब राजा और दूसरे राजाधिप पद्मपलाश नेत्र राजपुत्र तथा
राजपौत्र लोग द्रौपदीके लिये क्रमशः विक्रम प्रकट करनेलगे।१६।किरीट, हार, केयूर,

Krishna and his followers and kinsmen, the Vrishnis, the Andhaks and the Yadavas looked all round. Krishna, the chief of the Yadavas, saw the Pandavas, like mad elephants desirous of lotus, looking towards Draupadi and surrounded by people. He then addressed Baldeva, saying, "I think this is Yudhishthir, this Bhim, this Arjun, this Nakul and this Sahadev. Baldev looked towards them at leisure and then cheerfully turned his eyes towards Krishna. Other kings and princes, with red eyes, biting their lips, set their hearts and eyes on Draupadi only. They did not look, even once, towards the Pandavas. Yudhishthir, Bhim, Arjun, Nakul and Sahadeo also, were struck with the arrow of Draupadi's love. The place fragrant with incense and flowers and ringing by the sounds of musical instruments, was choked by gods, Rishis, Gandharvas,

गाः पृथुबाहवस्ते । अनुक्रमं विक्रमसत्त्वयुक्ता बलेनवीर्य्येणचनर्द्दमानाः ॥ १७ ॥
तत्कार्म्मुकंसंहननोपपन्नं सज्यंनशेकुर्मनसापिकर्त्तुम् । तेविक्रमन्तःस्फुरताद्दढेन विक्षि-
प्यमाणा धनुषानरेन्द्राः ॥ १८ ॥विचेष्टमानाधरणीतलस्था यथाबलंशैक्ष्यगुणक्रमाश्च।
गतौजसः स्रस्तकिरीटहारा विनिःश्वसन्तःशमयाम्बभूवुः ॥ १९ ॥ हाहाकृतंतद्धनुषा
दृढेन विस्रस्तहारांगदचक्रवालम् । कृष्णानिमित्तं विनिवृत्तकामं राज्ञांतदामण्डलमा-
र्त्तमासीत् ॥ २० ॥ सर्वान्नृपास्तान्प्रसमीक्ष्यकर्णो धनुर्द्धराणांप्रवरोजगाम। उद्धृत्य
तूर्णधनुरुद्यतंतत्सज्यं चकाराशुयुयोजबाणान् ॥ २१ ॥ दृष्ट्वासूतंमेनिरेपाण्डुपुत्रा भि-
त्त्वानीतंलक्ष्यवरंधरायाम् । धनुर्धरा रागकृतप्रतिज्ञमत्याग्निसोमार्कमथार्कपुत्रम् ॥२२॥
दृष्ट्वातुतंद्रौपदीवाक्यमुच्चैर्ज्जगाद नाहंवरयामिसूतम् । सामर्षहासंप्रसमीक्ष्यसूर्य्यं तत्या

चक्रवाल आदि नानाआभूषणों से सजे विक्रमी, सत्ववान् और बलवीर्यसे तरसाते और गरजतेहुए वे सब सुबाहु बडेभारी उस चाप में गुण चढानेकी कल्पना मनमेंभी नहीं ला सके।१८।उन्होंने होठों को फुलाकर अपने बल, शिक्षा,गुण और क्रमके अनुसार ज्यों धन्वा नवाने और उसपर गुण चढाने को विक्रम प्रकट किया उसीक्षण धन्वाकी कोटि से भगाये और फेंके जाकर धरती पर लोटगये और उसकी चेष्टा से मनको हटाया इस से उन के पहिनेहुए किरीट आदि आभूषण अंग से च्युतहोगये और वे बलखोकर बार बार हांफते हुए चुपहो बैठे। तब कठिन शरासन से भयभीत और अलंकारों से च्युत वे भूपगण द्रौपदी की आशा छोडकर हाय हायकरने लगे । २० । सबराजाओंको बल-हीन देखकर धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ कर्ण ने शीघ्रही धनुष को उठाकर बाणों को चढा लिया । २१ । उसीसमय पाचो पाण्डवों ने जाना कि यह सूतपुत्र सम्पूर्ण पृथिवी के धनुर्द्धर शूर वीरों में बडा है अवश्यही निशाने को बींध लेगा यह विचारतेही उन अग्नि सूर्य चन्द्रमाके तेजकोभी उलांघनेवाले कर्ण ने निशानेकी ओर धनुष को किया जभी कर्ण निशाना लगानेलगा तबही । २२ । द्रौपदीने खडे होकर बडे ऊंचे स्वरसे यह कहा

Suparnas, Nagas, Asuras and Siddhas and their chariots. Karan, Duryodhan, Shalwa Shalya, Dronayani, Krath, Sunith, Bakra, the kings of Kaling and Bang, the kings Pandya, Paundra, and Videh, king of the Yavans, and other kings and princes began to show their bravery one after another. Decked with garlands and other ornaments, awe-inspring and roaring, the kings could not bend the bow. Many of them were flung back to the ground by the sudden jerk when they tried to bend the bow. Their ornaments fell down with their fall and they had to retreat breathless with exertion. They were afraid of the hardness of the bow, their ornaments dropped down and they gave up all hope of getting Draupadi. Seeing all the kings powerless, Karan the best of archers took up the bow and fixed an arrow. The Pandavas were sure that the son of Sut would win

जकर्णः स्फुरितंधनुस्तत् ॥ २३ ॥ एवंतेषुनिवृत्तेषु क्षत्रियेषुसमन्ततः । चेदीनामधिपो वीरो बलवानन्तकोपमः ॥ २४ ॥ दमघोषसुतोधीरः शिशुपालोमहामतिः । धनुरादायमानस्तु जानुभ्यामगमन्महीम् ॥ २५ ॥ ततोराजामहावीर्य्यो जरासन्धोमहाबलः । धनुषोऽभ्यासमागत्य तस्थौगिरिरिवाचलः ॥ २६ ॥ धनुषापीड्यमानस्तु जानुभ्यामगमन्महीम् । ततउत्थायराजास स्वराष्ट्राण्यभिजग्मिवान् ॥ २७ ॥ ततःशल्योमहावीरोमद्रराजोमहाबलः । तदप्यरोप्यमानस्तु जानुभ्यामगमन्महीम् ॥ २८ ॥ तस्मिंस्तुसंभ्रान्तजनेसमाजे निक्षिप्तवादेषुजनाधिपेषु । कुन्तीसुतोजिष्णुरियेषकर्तुंस ज्यंधनुस्तत्सशरंप्रवीरः ॥ २९ ॥

इत्यादिपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि राजपरांमुखी अष्टाशीत्यधिकशतोऽध्यायः ॥१८८॥

कि मैं इस सूतपुत्र के साथ स्वयम्बर में विवाह न करूंगी यह द्रौपदीका वाक्य सुन महाराज कर्ण ने बडे क्रोधमें भर और कुछ मुसकराय सूर्यकी ओर को देख उस चंचल चापको झटही धरणी पर धर दिया । २३ । इसप्रकार चारों ओर से सब क्षत्रियों के निवृत्त होजाने पर चेदि देशोंके राजा वडेवीर यमराज के तुल्य पराक्रमी ।२४। दमघोष के पुत्र महामति धीर शिशुपाल ने धनुषको जांघों तक उठाया और वाण के न चढने से फिर पृथ्वी परही धर दिया ।२५। तदनन्तर बडे वीर्यवन्त वलशाली महाराज-जरासंध भी धनुष के पास आप पर्वत के समान निश्चल खडेहुए प्रतीतहोने लगे । २६ । जांघों तक धनुषको उठाकर फिर धरणीपर धरदिया लज्जासे शिशुपालभी अपने घरको चले गये । २७। तत्पश्चात् महाविक्रमी मद्रदेशके राजा शल्य नेभी कुछही जांघोंतक धनुषको उठाया और शरों के न चढनेसे पृथ्वीपर धरदिया । २८। इस के पीछे सम्मानित सज्जनोंके उस समाज में राजाओंके निन्दा के योग्यहोने पर वीरोंमें प्रधान कुन्ती पुत्र जिष्णु ने उस धनुषपर गुण चढाने और वाण लगानेकी इच्छाकी ॥ २९ ॥

Karan took aim, and was about to shoot the arrow, when Draupadi stood up and said in a loud voice, " I will not choose this son of Sut for my husband." Having heard this from Draupadi, Karan was very angry, looked towards the sun with a smile and threw down the bow. 23. Then the king of Chedi, valliant like Yamraj, Shishupal the son of Damghosh, took up the bow but being unable to fix an arrow, put it down. the brave and valliant king jarasandh came near the bow and looked like a mountain. He took up the bow but again put it down. He too went away ashamed like Shishupal. 27. Shalya the king of Madra, also tried it but could not fix an arrow. When the kings had put themselves to shame before the assembly of the great men, Arjun, the bravest warrior, thought of bending the bow and hitting the mark. 29.

वैशम्पायन उवाच । यदानिवृत्ताराजानो धनुषःसज्यकर्मणः । अथोदतिष्ठद्वि
प्राणां मध्याज्जिष्णुरुदारधीः ॥ १ ॥ उदक्रोशन्विप्रमुख्या विधुन्वन्तोऽजितानिच ।
दृष्ट्वासम्प्रस्थितं पार्थमिन्द्रकेतुसमप्रभम् ॥ २ ॥ केचिदासन्विमनसः केचिदासन्
मुदान्विताः । आहुःपरस्परं केचिन्निपुणा बुद्धिजीविना ॥ ३ ॥ यत्कर्णशल्यप्रमुखैः
क्षत्रियैर्लोकविश्रुतैः ॥ नानतंबलवद्भिर्हिधनुर्वेदपरायणैः ॥ ४ ॥ तत्कथंत्वकृतास्त्रेण
प्राणतोदुर्बलीयसा ॥ बटुमात्रेणशक्यंहि सज्यंकर्त्तुंधनुर्द्विजाः ॥ ५ ॥ अवहास्याभवि
ष्यन्ति ब्राह्मणाःसर्वराजसु । कर्मण्यस्मिन्नसंसिद्धे चापलादपरीक्षिते ॥ ६ ॥ यद्येष
दर्पाद्धर्षाद्वाप्यथ ब्राह्मणचापलात् । प्रस्थितोधनुरायन्तुं वार्य्यतांसाधुमागमत् ॥ ७ ॥
ब्राह्मणा ऊचुः ॥ नावहास्याभविष्यामो नचलाघवमास्थिताः । नचविद्विष्टतांलोके
गमिष्यामोमहीक्षिताम् ॥ ८ ॥ केचिदाहुर्युवा श्रीमान्नागराजकरोपमः । पीनस्कन्धा

अध्याय ॥ १८९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर राजाओं के उस शरासन पर गुण चढाने से मुख फेर लेने पर उदारचित्त जिष्णु ब्राह्मण-समाज से उठ खडे हुए । प्रधान प्रधान ब्राह्मण लोग बादलसमान प्रकाशयुक्त अर्जुन को जाते देखकर मृगचर्म कँपाते हुए कोलाहल मचाने लगे । कोई कोई दुःखी और दूसरे हर्षयुक्त हुए कोई कोई बुद्धिमान निपुणतायुक्त विप्र आपस में इसप्रकार कहने लगे कि हे द्विजगण धनुर्वेद में पण्डित, बली कर्ण और शल्य आदि लोकों में प्रशंसित क्षत्रिय लोग जिस धन्वा को नवा नहीं सके अस्त्र विद्या के न जानकार शक्ति में दुर्बल एक बटु क्योंकर उसपर गुण चढा सकेगा इस बटु ने चपलता से जिस अनजाने काम में हाथ डाला है वह पूरा नहो तो हम सब राजों से हँसे जायँगे । हे ब्राह्मणो ! यह ब्राह्मणकुमार अहंकार वा कौतूहल अथवा चपलता से शरासन नवाने को जा रहा है इसको रोको, कि ऐसे काम में न जाय किसी किसी ब्राह्मण ने कहा, कि इस से हमारी लघुता नहीं होगी, हम राजों के द्वेष के पात्र वा हंसे जाने के योग्य

CAAPTER CLXXXIX

Vaishampayan said that when the kings had turned their faces, the magnanimous Jishnu stood out from the assembly of the Brahmans. The leaders among Brahmans, seeing Arjun going with majestic steps, began to shake their deerskins and to make noise. Some of them were angry while others were pleased. Some of the wise Brahmans said amongst themselves "A poor Brahman can not bend the bow which the famous Kshatryas like Shalwa and Karan could not. We will be laughed at by them if he fail in what he has foolishly undertaken. Keep him back, Brahmans, from proceeding to do the rash act," Others said, "We should not be laughed at or ill-treated by kings for his failure." Others said,

स्कन्धोरुबाहुश्च धैर्येणहिमवानिव ॥ ९ ॥ सिंहखेलगतिः श्रीमान्मत्तनागेन्द्रविक्रमः । स-
म्भाव्यमस्मिन् कर्मेदमुत्साहाच्चानुमीयते ॥ १० ॥ शक्तिरस्यमहोत्साहा नह्यशक्तःस्वः-
यंव्रजेत् । नचतद्विद्यतेकिञ्चित् कर्मलोकेषुयद्भवेत् ॥ ११ ॥ ब्राह्मणानामसाध्यञ्च
नृषुसंस्थानचारिषु । अब्भक्षावायुभक्षाश्च फलाहारादृढव्रताः ॥ १२ ॥ दुर्बलाअपि
विप्राहि वलीयांसःस्वतेजसा । ब्राह्मणोनावमन्तव्यः सदसद्वासमाचरन् ॥ १३ ॥
सुखंदुःखंमहद्ध्रस्वं कर्मयत्समुपागतम् । जामदग्न्येनरामेण निर्जिताःक्षत्रियायुधि ।१४।
पीतःसमुद्रोऽगस्त्येन अगाधोब्रह्मतेजसा । तस्माद्ब्रुवन्तुसर्वेऽत्रवटुरेषधनुर्महान् ।१५॥
आरोपयतुशीघ्रंवै तथेत्यूचुर्द्विजर्षभाः । एवंतेषांविलपतां विप्राणांविविधागिरः ।१६।
अर्जुनोधनुषोऽभ्यासे तस्थौगिरिरिवाचलः । सतद्धनुपरिक्रम्य प्रदक्षिणमथाकरोत्

नहीं होंगे कोई कोई बोले, कि इस नव विप्रको श्रीमान गजराज के सूंडकीभांति विशाल गर्दन, उरु और भुजधारी हिमाचल सदृश धीरजयुक्त, सिंहके खेलकी नाई चालवाला और उन्मत्त गजसा विक्रमी देखते हैं और उनका उत्साह जैसा है, उससे जानपडताहै कि यह कार्य इन्हींसे पूराहोसकता है यह ब्राह्मण बडे उत्साही और शक्तिवान हैं इनको शक्ति न रहती तो यह कभी नहीं जाते फिरभी तीनों लोकोंमें ऐसा कोईभी कार्य नहीं है कि जो इन मरनेवाले मनुष्यों में ब्राह्मण का असाध्यहो कठोर व्रतयुक्त द्विजातिगण फलाहार वायु भक्षण अथवा निराहारके हेतु देखनेमें दुर्बलहोंवेंभी तो अपने तेजसे वली रहते हैं ब्राह्मण सुकर्म करें वा बुराकर्म करें तौभी सुख वा दुःखदायी और महत् वा क्षुद्र किसी उपस्थित कार्य में उनका अनादर करना नहीं चाहिये । देखो, जमदग्निपुत्र रामने क्षत्रियों को युद्ध में परास्त कियाथा ऋषि अगस्त्यने ब्रह्मतेजसे गहरे समुद्रको पी लिया था अतएव तुम सब आज्ञादो कि यह महात्मा शीघ्र शरासनपर गुण चढावें आगे द्विजवरों ने तथास्तु कहा ब्राह्मण लोग इसप्रकारकी नानावातें कहने सुनने लगे तब अर्जुन शरासन के निकट जाकर पर्वतकी भांति खडेहुए आगे इसके चारों ओर

"His neck, thighs and arms are like the trunk of an elephant, he is grave like a mountain, walks like a playful lion and is energetic as a mad elephant. We foresee from his boldness that he will perform the deed for he would not proceed if he was not sure of success; and there was nothing impossible for a Brahman among mortals. A Brahman may appear lean on account of his severe vows, eating fruits, air or nothing; yet, he gains in glory. A Brahman whether doing good or ill should not be despised while doing a great or small thing. Ram the son of Jamadagni defeated all the Kshatryas and the sage Agastya drank the water of the sea. Let him, therefore, fix an arrow to the bow." The Brahmans gave out their consent and began to talk on various subjects. Arjun

॥ १७ ॥ प्रणम्यशिरसादेव मीशानं वरदंमप्रभुम्। कृष्णञ्चमनसाकृत्वा जगृहेचार्जुनो
धनुः ॥ १८ ॥ यत् पार्थिवैरुक्ममसुनीथवक्रैराधेयदुर्य्योधनशल्य शाल्वैः। तदाधनुर्वे
दपरैर्नृसिंहैःकृतं नसज्यंमहतोपियत्नात् ॥ १९ ॥ तदर्जुनोवीर्यवतां सदर्पस्तदैन्द्रिरि-
न्द्रावरजप्रभावः। सज्यञ्चचक्रे निमिषान्तरेण शरांश्चजग्राहदशार्द्धसंख्यान् ॥२०॥
विव्याधलक्ष्यंनिपपात तच्चच्छिद्रेणभूमौसहसातिविद्धम् ॥ ततोऽन्तरिक्षेचबभूव
नादःसमाजेमध्येच महान्निनादः ॥ २१ ॥ पुष्पाणिदिव्याणिववर्षदेवः पार्थस्यमूर्द्धनि
द्विषतांनिहन्तुः। चैलानिविव्यधुस्तत्र ब्राह्मणाश्चसहस्रशः ॥ २२ ॥ विलक्षितास्तत
श्चक्रुर्हाहाकारांश्च सर्वशः। न्यपतंश्चात्रनभसः समन्तात्पुष्पवृष्टयः ॥२३॥ शतांगानि
च तूर्य्याणिवादकाःसमवादयन्। सूतमागधसंघाश्चाथस्तुवंस्तत्रसुस्वराः ॥ २४ ॥ तं
दृष्ट्वाद्रुपदःप्रीतोबभूव रिपुसूदनः। सहसैन्यैश्च पार्थस्य साहाय्यार्थमियेषसः ॥२५॥

घूमकर वरदाता देव प्रभु ईशान को शिरनायकर प्रणामकिया और मनही मन में श्रीकृष्ण की चिन्ताकर शरासन को उठालिया। रुक्म, सुनीथ, वक्र राधापुत्र दुर्योधन, शल्य और शाल्व यह सब धनुर्वेदमें पण्डित नरसिंह भूपाल अति यत्न सेभी जिस धन्वापर गुण नहीं चढ सके थे वीर्यवन्तोंमें दर्पयुक्त इन्द्रानुज सदृश प्रभावी अर्जुनने देखतेही देखते उसपर गुण चढ़ाया और पांच शर लेकर लक्ष्य को भेद किया लक्ष्य बहुत विद्ध होकर उसीक्षण यन्त्रके छेदसे धरती पर गिरगया तब आकाश मण्डल और समाज में अति कोलाहलहोने लगा देवताओंने शत्रुकुलनाशी अर्जुनके शिरपर दिव्य पुष्प वर्षाये सहस्रों ब्राह्मण उन के विजय ध्वजाकी भांति अपने अपने डुपट्टोंके छोर उडातेहुए उठ खडे हुए जो लोग लक्ष्य को विद्ध नहीं करसके थे वे लज्जितहोकर चारों ओर हाय हाय करने लगे समाज में आकाश मण्डल से चारों ओर फूल बरसने लगे बाजेवाले तूर्य यंत्र को सौ यंत्र मिलाकर बजाने लगे और सूत मागधलोग मीठे स्वरसे स्तुति गाने लगे शत्रुमथन राजाद्रुपद अर्जुन को देखकर प्रसन्न हुए और सेनाओंके साथ उनकी सहा-

then stood like a mountain near the bow and going round it he bowed down to Lord Ishan, the giver of desires. He took it up thinking all the time of Krishna. Arjun, glorious like Vishnu and the best of warriors, fitted the string to the bow, which Rukma, Sunith, Vakra, Karan, Duryodhan, Shalya and Shalwa could not bend, and hit the target by the arrows. The target separated from the machine fell down upon the ground. Then there was a great noise of the people reaching to the sky. The gods poured a shower of flowers over the head of Arjun. Hundreds of Brahmans stood up shaking the ends of their sheets. Musical instruments began to play and the bards sang songs of praise. King Drupad was satisfied at seeing Arjun and wished to help him with the armies.

तस्मिंस्तुशब्देमहतिप्रवृद्धे युधिष्ठिरो धर्मभृतांवरिष्ठः । आवासमेवोपजगाम शीघ्रं सार्द्धंयमाभ्यां पुरुषोत्तमाभ्याम् ॥ २६ ॥ विद्धन्तुलक्ष्यं प्रसमीक्ष्यकृष्णा पार्थञ्च शक्रप्रतिमंनिरीक्ष्य । आदायशुक्लाम्बरमाल्यदाम जगामकुन्तीसुतमुत्स्मयन्ती ॥२७॥ सतामुपादाय विजित्यरङ्गे द्विजातिभिस्तैरभिपूज्यमानः । रङ्गान्निरक्रामदचिन्त्यकर्मा पत्न्या तथा चाप्यनुगम्यमानः ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि लक्ष्यच्छेदने ऊननवत्यधिकशतोऽध्यायः ॥१८९॥

वैशम्पायन उवाच । तस्मैदित्सतिकन्यान्तु ब्राह्मणायतदानृपे । कोप आसीन्महीपानामालोक्यान्योन्यमन्तिकात् ॥ १ ॥ अस्मानयमतिक्रम्य तृणीकृत्यचसङ्गतान । दातुमिच्छतिविप्राय द्रौपदींयोषितांवराम् ॥ २ ॥ अवरोप्येहवृक्षन्तु फलकाले निपात्यते । निहन्मैनंदुरात्मानं योऽयमस्मान्नमन्यते ॥३॥ नार्हत्येपसम्मानं नापिवृद्ध

यता करनेकी इच्छाकी जब वोह भारी कोलाहल आरम्भहोगया तब धार्मिकवर युधिष्ठिर वेगसे पुरुष श्रेष्ठ दोनों यमज भाइयों को लेकर डेरेपर चलेगये । द्रौपदी पार्थसे लक्ष्यका विद्धहोना देखकर और उनको इन्द्र सदृश देखकर प्रसन्न चित्तसे शुभ वस्त्र और माला लेकर उन के पास जा पहुँची अद्भुत कर्मवाले अर्जुन द्रौपदी को जय कर द्विजातियों से सत्कृतहोकर उस रंगभूमि से निकले द्रौपदीभी उन के पीछे जानेलगी ॥ २८ ॥

अध्याय १९० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर राजा के लक्ष्य भेद करनेवाले उस ब्राह्मण को कन्यादान करनेकी इच्छा प्रकट करनेपर निकट स्थित भूपाल लोग एक दूसरेको देख कर क्रोधित होगये और कहने लगे कि इस राजा ने सब उपस्थित नरेशोंको तिनके समान समझ कर ब्राह्मण को कन्या देनेकी इच्छाकी है यह दुरात्मा वृक्ष लगाकर फल ने के काल में उसे ऐसे काटता है और हम लोगों को अपमानित कर रहा है इसको

Yudhishthir with the twin brothers left for home when the hubbub began. Draupadi, seeing the target hit by Arjun and finding him like Indra, approached him cheerfully with the garland in her hand. The brave Arjun having conquered Draupadi and being honoured by the people came out of the hall. Draupadi followed him.

CHAPTER CXC

Vaishampayan said that at the king's intending to give away his daughter to the Brahman who had hit the mark, the other kings looked at one another and said, "This king has disregarded us and intends to give his daughter in marriage to a Brahman: this ill-natured man, having planted a tree will cut it at the time of giving fruit. He is insulting us all. We shall kill him. This wicked

क्रमंगुणैः । हन्मैनंसहपुत्रेण दुराचारंनृपद्विषम् ॥ ४ ॥ अयंहिसर्वानाहूय सत्कृ
त्यचनराधिपान् । गुणवद्भोजइत्वान्नं ततःपश्चान्नमन्यते ॥ ५ ॥ अस्मिन्राजसमवा
ये देवानामिवसन्नये । किमयंसदृशंकञ्चिन नृपतिंनैवदृष्टवान् ॥ ६ ॥ नचविप्रेष्व
धिकारो विद्यतेवरणंप्रति । स्वयम्वरःक्षत्रियाणा मितीयं प्रथिताश्रुतिः ॥ ७ ॥ अ
थवायदिकन्येयं नचकश्चिद्बुभूषति । अग्नावेनां परिक्षिप्य यामराष्ट्राणिपार्थिवाः
॥ ८ ॥ ब्राह्मणोयदिचापल्याल्लोभाद्वाकृतवानिदम् । विप्रियंपार्थिवेन्द्राणां नैषवध्यः
कथञ्चन ॥ ९ ॥ ब्राह्मणार्थंहि नो राज्यं जीवितं हि वसूनिच । पुत्रपौत्रं च यच्चा
न्यद् स्माकं विद्यते धनम् ॥ १० ॥ अवमानभयाच्चैव स्वधर्मस्यचरक्षणात् । स्वय
म्वराणामन्येषां मार्भूदेवंविधागतिः ॥ ११ ॥ इत्युक्त्वाराजशार्दूला हृष्टाःपरिघ
बाहवः । द्रुपदन्तु जिघांसन्तः आयुधाः समुपाद्रवन् ॥ १२ ॥ तानगृहीतशरावापान्

मारे डालेंगे यह दुराचारी वृद्धके अनुसार गुण युक्त सम्मान के योग्य नहीं है सो राजा ओंका द्वेष करने वाले इस दुरात्मा को पुत्र के साथ मारनाही उचित है यह दुरात्मा सम्पूर्ण भूपालों को बुलवा कर सम्मान के साथ अपूर्व भोजन आदिसे पूजकर अब अप मान कर रहा है इन भूपालों का समागम ऐसा ही हुआ है कि जैसा देवताओं का सम वाय होता है क्या इनमें से इसको एकभी योग्य न समझ पड़ा यह प्रसिद्ध कहावत है कि स्वयम्बर क्षत्रियों के लिये ही बनाया गया है इस में ब्राह्मण का अधिकार नहीं है फिर भी यदि यह कन्या किसी राजा को पति न बनाया चाहे तो इसको जलती हुई आग में छोड़ कर हम अपने अपने राज्यों को चले जांय इस ब्राह्मण ने यद्यपि चपलता से राजाओं कार्य अप्रिय का किया है तौभी इसको मारना किसी प्रकार उचित नहीं है क्यों कि हमारा राज्य अर्थ जीवन, पुत्र पौत्र और दूसरे जो कुछ धन है, वह सबी ब्राह्मणों के लिये हैं । हम यहीं शासन करेंगे, तो दूसरे स्वयम्बर के स्थानों में फिर कभी ऐसा नहीं होगा, सब लोग अपमान के भयसे अपने अपने धर्म की रक्षा करेंगे ।

old man is not worthy of respect. It would be better to destroy this enemy of the kings together with his son. This ill-natured man having welcomed us as his guests is now insulting us. These kings have collected here like gods. Does he think that none of us is worthy of his daughter? The ceremony of Swayamvar is ordained solely for the Kshatryas. Brahmans can not take part in it. If the girl does not select any one of us we shall throw her into the fire and go home. This Brahman, though he has displeased the kings by his naughtiness, must not be killed. Our kingdom, wealth, life, sons, grandsons and all other things are at the service of Brahmans. No one will repeat such a thing at a Swayamvara if we remedy the evil here. Others will remain firm on the path of

क्रुद्धानापततो बहून् । द्रुपदो वीक्ष्य सन्त्रासाद् ब्राह्मणाञ्छरणं गतः ॥
॥ १३ ॥ वेगेना पततस्तांस्तु प्रभिन्नानिव वारणान् । पाण्डुपुत्रौ महेष्वासौ
प्रतियातावरिन्दमौ ॥ १४ ॥ ततःसमुत्पेतुरुदायुधास्ते महीक्षितो बद्धगोधांगुलित्राः ।
जिघांसमानाः कुरुराजपुत्रावमर्षयन्तोऽर्जुनभीमसेनौ ॥ १५ ॥ ततस्तुभीमोऽद्भुतभीम
कर्मामहाबलो वज्रसमानसारः । उत्पाट्यदोर्भ्यां द्रुममेकवीरोनिष्पत्रयामास यथाग-
जेन्द्रः ॥ १६ ॥ तंवृक्षमादायरिपुप्रमाथी दण्डीवदण्डं पितृराजउग्रम् । तस्थौसमीपेपु
रुषर्षभस्य पार्थस्यपार्थःपृथुदीर्घबाहुः ॥ १७ ॥ तत्प्रेक्ष्यकर्मातिमनुष्यबुद्धिर्जिष्णुः
सहिभ्रातुरचिन्त्यकर्मा । विसिस्मियेचापिभयं विहायतस्थौधनुर्गृह्य महेन्द्रकर्मा ॥१८॥
तत्प्रेक्ष्य कर्मातिमनुष्यबुद्धिर्जिष्णोः सहभ्रातुराचिन्त्यकर्मा । दामोदरो भ्रातरमुग्रवी-

परिघ समान भुजवाले, सब राजासिंह ऐसी बात कह कर प्रसन्न चित्त से अस्त्र लेकर राजा द्रुपदको मारनेकेलिये दौडे।१२।द्रुपदने राजाओं को क्रोधितहोकर शरासनलिये आते देखकर इस भय से कि ब्राह्मणों के क्रोध से कहीं क्षत्रियकुल नष्ट न होजाय ब्राह्मणोंकी शरण ली बडे चापधारी शत्रुदमन पाण्डुनन्दन भीम और अर्जुन भूपालों को मदोन्मत्त गजोंकी भांति वेगसे दौडकर आते देखकर उनकीओरचले।१४।उंगलीरक्षक पहिनेहुए वह सब राजा क्रोध के मारे अस्त्र शस्त्र उठाकर कुरुराजपुत्र अर्जुन और भीमसेन को मार डालने के लिये जा गिरे। अनन्तर वज्रसमान कठोर महाबली आश्चर्य डरावने कार्य कर नेवाले अद्वितीय वीर भीमसेन ने उन्मत्त गजराजकी भांति हाथों से एकवृक्ष उखाडकर पत्रों से खाली किया।१६।और शत्रुमथन दीर्घभुज पृथा-नन्दन उस पत्रों से खाली पेड को लेकर पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन के सम्मुख इसप्रकार खडे होगये कि जैसे यमराजकठोर दण्ड लेकर खडे होते हैं। चिन्तातीत कर्म करनेवाले असामान्य बुद्धिमान महेन्द्र सदृश जिष्णुने भाईका अलौकिक कार्य देखकर अचरज माना। अनन्तर निर्भय चित्तसे चाप लेकर खडेहुए।१८।चिन्तातीत कर्मकरनेवाले असाधारण बुद्धिशाली दामोदर भीमार्जुनका

virtue for fear of punishment.' Having thus consulted, the brave kings took up arms against Drupad who took refuge amongst the *Brahmans* at seeing their intentions. *Bhim* and Arjun, the sons of Pandu, destroyers of enemies, seeing the kings thus coming in haste then came forward.14.The angry kings armed with weapons, fell upon *Bhim* and Arjun. Then,hard like the Vajra,the bravest warrior, performer of wonderful deeds, Bhim rooted up a tree like a mad elephant and having made it bare of leaves, stood up in front of Arajun like Yamraj. The wise Arjun, wonderworking like Indra, wondered at the extrordinary deed of his brother and stood still with bow in his hand.18.The wonderworking Damodar, seeing the extra-ordinry deeds of *Bhim* and Arjun, told his elder brother *Baldeva* that

यैंहलायुधं वाक्यमिदंबभाषे ॥ १९ ॥ यएषसिंहर्षभखेलगामी महद्धनुःकर्षति ताल
मात्रम् । एषोऽर्जुनोनात्र विचार्यमस्ति यद्यस्मिसङ्कर्षण वासुदेवः ॥ २० ॥ यस्त्वेष
वृक्षं तरसावभज्य राज्ञांनिकारेसहसाप्रवृत्तः । वृकोदरान्नान्य इहेतदद्यकर्त्तुंसमर्थः
समरेपृथिव्याम् ॥ २१ ॥ योसौ पुरस्तात्कमलायताक्षस्तनुर्महासिंहगतिर्विनीतः ।
गौरः प्रलम्बोज्ज्वलचारुघोणो विनिःसृतः सोऽच्युतधर्मपुत्रः ॥ २२ ॥ यौतौकुमारा
विवकार्त्तिकेयौ द्वावश्विनेयाविति मे वितर्कः । मुक्ताहितस्माज्जतुवेश्मदाहान्मया श्रुताः
पाण्डुसुताःपृथाच ॥ २३ ॥ तमब्रवीन्निर्जलतोयदाभो हलायुधोऽनन्तरजं प्रतीतः ।
प्रीतोऽस्मिदृष्ट्याहि पितृस्वसारंपृथां विमुक्तांसहकौरवाग्र्यैः ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वाणि स्वयम्वरपर्वाणि कृष्णवाक्ये नवत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १९० ॥

वह आश्चर्य कार्य देखकर महावीर्यवन्त बडे भाई हलायुधसे बोले कि हे संकर्षण ! सिंह वरकी भांति अकडतेहुए चलनेवाले जो पुरुष पांचहाथसे कुछ कम मापके चापको खींच रहे हैं उनका अर्जुनहोना इतना निश्चय है, कि जितना मेरा कृष्णहोना निश्चयहै।२०।जो वेगसे वृक्ष उखाडकर एकायक भूपालों के अन्त करनेको प्रवृत्त हुए हैं वह वृकोदरहोंगे वृकोदर के विना इस भूमण्डल भर में कोई मनुष्य आज ऐसा कार्य करनेको समर्थ नहीं होगा। हेअच्युत ! मुझको जान पडताहै कि इस के पहिले पद्मकी भांति प्रशस्त नेत्रयुक्त भारी सिंहसमान चलनेवाले नम्र, गोरे, दीर्घ और उज्वल सुन्दर नाकवाले,चार हाथ लंबे और उस के योग्य स्थूल देह युक्त, जो पुरुष पधारे हैं, वही धर्म-पुत्रहैं।२२। उन के साथ कार्त्तिकेय के सदृश जो दोकुमार गये हैं वे अश्विनीकुमारों के पुत्र होंगे। मैंने सुना है कि पाण्डवलोग पृथाके साथ जतुगृहसे जलनेसे बचेथे विना जलके बादल के रंगयुक्त हलायुध आनन्दित होकर कनिष्ठ कृष्णसे बोले कि मैं यह सुनकर कृतार्थ हुआ कि बडेभाग्य से पुत्रों के साथ फूफीजी बचगयी हैं ॥ २४ ॥

the man walking there like a lion and drawing the bow somewhat less than five hands, was Arjun and that there was as little doubt about it as there was about himself being Krishna, that he who had uprooted the tree was Bhim, for none other than *Bhim* could do such a deed; that the man with beautiful eyes like lotus, walking like a lion, white, tall, with beautiful nose, four hands long and of proportionate thickness, who had just gone out, was Yudhishthir and that the two beautiful youths who had followed him were the twin sons of Aswins "I have heard," said Krishna, "that the Pandavas had escaped from being burnt in the house." "I am very happy to hear, Krishna," said Baldeo, "That our aunt fortunately escaped from the death."24.

वैशम्पायन उवाच । अजिनानिविधुन्वन्तः करकांश्चद्विजर्षभाः । ऊचुस्तेभीर्न कर्त्तव्या वयंयोत्स्यामहे पुरान् ॥ १ ॥ तानेवंवदतो विप्रानर्जुनःप्रहसन्निव । उवाच प्रेक्षकाभूत्वा यूयंतिष्ठतपार्श्वतः ॥ २ ॥ अहमेनानजिह्माग्रैः शतशोविकिरञ्छरैः । वारयिष्यामिसंक्रुद्धान्मन्त्रै राशीविषानिव ॥ ३ ॥ इति तद्धनुरानम्य शुल्कावाप्तं महाबलः । भ्रात्रभीमेनसहितस्तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥ ४ ॥ ततः कर्ण मुखान्दृष्ट्वा क्षत्रियान्युद्धदुर्मदान् सम्पेततुरभीतौ तौगजौप्रतिगजानिव ॥ ५ ॥ ऊचुश्चवाचःपरुषास्ते राजानोयुयुत्सवः । आहवेहिद्विजस्यापि वधोदृष्टोयुयुत्सतः ।६। इत्येवमुक्त्वाराजानः सहसादुद्रुवुर्द्विजान् । ततःकर्णोमहातेजा जिष्णुंप्रतिययौरणे ॥ ७ ॥ युद्धार्थी वासितोहेतोर्गजः प्रतिगजंयथा । भीमसेनंययौशल्यो मद्राणामीश्वरो बली ॥ ८ ॥ दुर्योधनादयःसर्वे ब्राह्मणैःसहसङ्गताः । मृदुपूर्वमयत्नेन प्रत्ययुध्यंस्त दाहवे ।९।ततोऽर्जुनःप्रत्यविध्यदापतन्तं शितैःशरैः ।कर्णंवैकर्त्तनं श्रीमान्विकृष्य बलवद्ध

अध्याय ॥ १९१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर ब्राह्मण लोग मृगचर्म और कमण्डुल कँपाते हुए बोले, कि मत डरो, हम शत्रुओं से लडेंगे अर्जुन ब्राह्मणोंकी यह बात सुनकर हँसके बोले, कि आप एक ओर दर्शक बनकर खडे रहें। २। मैं सैकडों तेज वाणों से इन सब क्रोधित राजाओं को इधर उधर इसप्रकार तीन तरह करके रोक दूंगा, कि जिसप्रकार मन्त्र के जानकार मन्त्र से अति विषैले सर्पको तेजसे खाली कर देते हैं। महाबली अर्जुन यह कहकर रण में जीतलिये हुए धन्वा को लाकर भाई भीमसेन के साथ पहाड की भांति अचल बने रहे। ४। तब भीम और अर्जुन दोनों ने इसप्रकार कि जैसे हस्ती विपक्षी हस्तीपर चढजाताहै, रणोन्मत्त कर्णादि राजोंको देखकर बिना भय उनकी ओर दौडे लडाई चाहनेवाले राजालोग अहंकारसे बोले कि युद्धस्थल में लडनेवाले ब्राह्मणभी बध किये जासकते हैं। ६। भूपाल लोग यह कहकर उसी क्षण ब्राह्मणों पर दौडे। अनन्तर बडे तेजस्वी कर्ण लडनेके लिये अर्जुन से इसप्रकार जा भिडे, कि जैसे हस्ती हथिनी के

CHAPTER CXCI

Vaishampayan said that the Brahmans shaking their deer skins and gourds said, "Have no fear. We shall fight against the enemies." Arjun, there upon said with a smile, "You will do well to stand aside and look on.2. I shall disperse with my sharp arrows these angry monarchs as an enchanter disvenoms a serpent. The brave Arjun then took possession of the bow won in the Swayamvara and stood at ease by the side of his brother Bhim. 4. Bhim and Arjun then fearlessly made an attack upon the kings like elephants. The kings desirous of battle said that Brahmans fighting

नुः ॥ १० ॥ तेषांशराणांवेगेन शितानां तिग्मतेजसाम् । विमुह्यमानोराधेयो यत्नात्समनुधावति ॥ ११ ॥ तावुभावप्यनिर्देश्यौ लाघवाज्जयतांवरौ । अयुध्येतां सुसंरब्धावन्योन्येविजिगी षिणौ ॥१२॥ कृतेप्रतिकृतंपश्य पश्यबाहुबलञ्चमे । इति शूरार्थवचनैरभाषेतां परस्परम् ॥ १३ ॥ ततोऽर्जुनस्य भुजयोर्वीर्य्यमप्रतिमं भुवि । ज्ञात्वावैकर्त्तनःकर्णः संरब्धःसमयोधयत् ॥ १४ ॥ अर्जुनेन प्रयुक्तांस्तान्बाणान्वेगवतस्तदा । प्रतिहत्यननादोच्चैः सैन्यानितदपूजयन् ॥ १५ ॥ कर्ण उवाच । तुष्यामि तेविप्रमुख्य भुजवीर्य्यस्यसंयुगे । अविषादस्यचैवास्य शस्त्रास्त्रविजयस्यच ॥ १६ ॥ किंत्वंसाक्षाद्धनुर्वेदो रामोवाविप्रसत्तम । अथसाक्षाद्धरिहयः साक्षाद्वाविष्णुरच्युतः ॥ १७ ॥ आत्मप्रच्छादनार्थंवै बाहुवीर्य्यमुपाश्रितः । विप्ररूपंविधायेदं मन्येमांप्रति-

लिये दूसरे हस्तीपर चढजाताहै महाबली मद्राधिप शल्य भीमसेनकी ओर दौडे।८।दुर्योधन आदि सबोंने ब्राह्मणोंपर चढाईकी । वे द्विजोंके साथ बिना यत्न धीमी लडाई लडने लगे अनन्तर श्रीमान अर्जुन आदित्य पुत्र कर्ण को विरुद्ध में आते देखकर बडे भारी चापको खींच के तेजबाणोंसे मारकर विद्धकरनेलगे।१०।राधाकुमारने अर्जुन के तेजबाणों के वेगसे मुर्झाकर अति यत्न से उनपर आक्रमण किया जय करनेवालोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और कर्ण एक दूसरे पर क्रोधितहोकर जयकी आशा से ऐसी फुर्त्ती से लडनेलगे, कि किसी ने समझ न पाया, कि उन में कौन कब आदान सन्धानादि करते थे वे एक दूसरे पर शूरता प्रगटकर यह कहकर बार्तालाप करनेलगे।१२।कि तुम ने जो किया, देखो उस को रोक लेताहूं, मेरा भुजबल देखलो । अनन्तर सूर्यकुमार कर्ण अर्जुन का ऐसा भुज वीर्य देखकर कि जिसकी उपमा संसार भर में नहीं मिलती एक चित्त से लडनेलगे । वह अर्जुन के चलाये हुए बाणों को रोककर सिंहकी भांति गरजनेलगे, सेना उन के उस कार्यकी प्रशंसा करनेलगी।१५।आगे कर्णने अर्जुनसे कहा, कि हेद्विजातिश्रेष्ठ इसयुद्धस्थल में तुम्हें न चूकने वाला भुजवीर्ययुक्त और विजयी शस्त्रधारी देखकरमैं प्रसन्नहुआ। हेब्राह्मण

in a battle might be killed and fell upon them. Karan met Arjun in battle as one elephant encounters another for the sake of a female elephant. The brave king of Madra met *Bhim*.8. Duryodhan and others attacked the Brahmans and fought irregularly. Arjun saw Karan coming towards him and wounded him with numerous sharp arrows.10. The son of Radha answered him nobly. The two heroes fought so dexterously that the bystanders were unable to understand their movements. They tried to vie with each other saying " I check your artifice. See the power of my arms!" At length the son of Surya, seeing, Arjun's matchless strength began to fight yet more attentively. He checked Arjun's arrows and roared like a lion. The audience praised their art.15.

युध्यसे ॥ १८ ॥ नहिमामाहवेक्रुद्धमन्यः साक्षाच्छचीपतेः । पुमानयोधयितुंशक्तः पाण्डवाद्वाकिरीटिनः ॥ १९ ॥ तमेवंवादिनंतत्र फाल्गुनःप्रत्यभाषत । नास्मिकर्ण धनुर्वेदो नास्मिरामःप्रतापवान् ॥ २० ॥ ब्राह्मणोऽस्मियुधांश्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतांवरः । ब्राह्मेपौरन्दरेचास्त्रे निष्ठितो गुरुशासनात् । स्थितोऽस्म्यद्यरणेजेतुं त्वांवैवीरस्थिरोभव ॥ २१ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्तु राधेयो युद्धात् कर्णो न्यवर्त्तत । ब्राह्मन्तेजस्तदाजय्यं मन्यमानो महारथः ॥ २२ ॥ अपरस्मिन्वनोद्देशे वीरौशल्यवृकोदरौ । बलिनौयुद्धसम्पन्नौ विद्ययाचबलेनच ॥ २३ ॥ अन्योऽन्यमाह्वयन्तौतु मत्ताविवमहागजौ । मुष्टिभिर्जानुभिश्चैव निघ्नन्ताावितरेतरम् । ॥ २४ ॥ प्रकर्षणाकर्षणयोरभ्याकर्षविकर्षणैः । आचकर्षतुरन्योन्यं मुष्टिभिश्चापिज-

---

मुझको जान पडता है, कि तुम साक्षात् धनुर्वेद वा राम अथवा देवराज इन्द्र वा अच्युत विष्णु हो तुम अपने को गोपित रखने के लिये ब्राह्मण का स्वरूप लेकर भुज वीर्य को आश्रय कर के लड रहे हो मेरे रण भूमि में क्रोधित होने से साक्षात् इन्द्र अथवा पांडुनन्दन किरिटि के विना कोई भी मुझ से लड़ नहीं सक्ता।१९।अर्जुन कर्णकी यह बातें सुनकर बोले कि हे कर्ण ! मैं धनुर्वेद वा राम नहीं हूं मैं सर्व शस्त्रधारी योद्धोंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण हूं । मैं गुरु की कृपा से ब्राह्म और इन्द्र अस्त्रों में दक्ष हुआ हूं । हे विज्ञ ! तुम रहजाओ मैं आज लड़ाई में तुम पर जय पाने के लिये ठहरा हूं।२१।वैशम्पायनने कहा कि तव राधाकुमार महारथी कर्ण यह बात सुनकर ब्रह्मतेज को जीतने के अयोग्य समझ कर युद्ध से निवृत्त हुऐ । दूसरी ओर विद्या और वल से युद्ध में पंडित उन्मत्त गज के समान वली वीर वृकोदर और राजा शल्य युद्धकरनेलगे।२३। वेदोनों एक दूसरे को पुकार कर मुट्ठी और घुटनों से मारते हुए कभी दूर फेंकने कभी आगे खींचने कभी सामने ललकारने कभी झपट के एक दूसरे को पकड़ने, और कभी घूंसा मारनेलगे।२५। इस के पश्चात्

At length Karn said, "I am pleased to see, Brahman, the power of your unerring arms. I think you are either Dhanurved in person, or Ram, or Indra the king of gods, or Vishnu. You have assumed the disguise of a *Brahman* to fight without being known. No one except Indra himself or Arjun can withstand my attack."19. Arjun replied, "I am neither Dhanurved nor Ram, Karn. I am a Brahman the best of warriors and of wielders of weapons. By the kindness of my preceptor I have become dexterous in the use of all sorts of weapons. Stay, I have resolved to conquer you to day." Vaishampayan said that when Karn knew that he could not conquer the *Brahman* he desisted from fighting. On the other hand, the wise and valliant *Bhim* and Shalya were engaged in fight. They struck each other with fists and knees and showed

घ्नतुः ॥ २५ ॥ ततश्चटचटाशब्दः सुघोरोह्यभवत्तयोः । पाषाणसम्पातनिभैः प्रहारैर
भिजघ्नतुः ॥ २६ ॥ मुहूर्त्तंतौतदान्योन्यं समरेपर्य्यकर्षताम् । ततोभीमःसमुत्क्षिप्यबा
हुभ्यांशल्यमाहवे । अपातयत्कुरुश्रेष्ठो ब्राह्मणाजहसुस्तदा ॥ २७ ॥ तत्राश्चर्य्यंभीम
सेनश्चकार पुरुषर्षभः । यच्छल्यंपातितंभूमौ नावधीद्बलिनंबली ॥ २८ ॥ पातिते
भीमसेनेन शल्येकर्णेचशङ्किते । शङ्किताःसर्वराजानः परिवव्रुर्वृकोदरम् ॥ २९ ॥
ऊचुश्चसहितास्तत्र साध्विमौब्राह्मणर्षभौ । विज्ञायेतांक्वजन्मानौ क्वनिवासौतथैवच ॥
॥ ३० ॥ कोहिराधासुतंकर्णं शक्तोयोधयितुंरणे । अन्यत्ररामाद्द्रोणाद्वा पाण्डवाद्वा
किरीटिनः ॥ ३१ ॥ कृष्णाद्वादेवकीपुत्रात् कृपाद्वापिशरद्वतः । कोवादुर्य्योधनंशक्तः
प्रतियोधयितुंरणे । ३२ ॥ तथैवमद्राधिपतिं शल्यंबलवतांवरम् । बलदेवादृतेवीरात्
पाण्डवाद्वावृकोदरात् ॥ ३३ ॥ वीराद्दुर्य्योधनाद्वान्यः शक्तःपातयितुंरणे । क्रियताम

उन दोनोंकी मार के चट चट शब्द कानों में पड़ने लगे । वे एक दूसरे को पत्थर पर गिराने की भांति मारने लगे फिर दोनों को पकड़ने लगे क्षणभर पीछे कुरुवंश श्रेष्ठ भीमने शल्य को भुजाओं से ऊपर उठाकर रणभूमि पर पटक दिया यह देखकर ब्राह्मण लोग सब हँस उठा।२७।पर पुरुष श्रेष्ठ भीमसेनने बलशाली शल्यको ऐसे आश्चर्यरूप से भूमि पर पटक दिया कि शल्य के कुछभी चोट नहीं लगी अनन्तर राजा लोग शल्यको भीमसेन से गिराये जाते और कर्ण को शंका युक्त देख कर भयभीत चित्त से शल्य को घेर कर खड़े होगये ओर सब इकट्ठे होकर साधु साधु कहकर यह कहने लगे कि यह दो ब्राह्मण सबों से श्रेष्ठ हैं विशेष रूप से जानलेना चाहिये कि वोह कहां रहते हैं और उन्हों ने कहां जन्म लिया है।३१।इस धरतभिर में राम द्रोण पांडुनंदन, अर्जुन, देवकीजी के पुत्र अथवा शारद्वत कृप के बिना कौन राधा कुमार कर्ण से लड़सक्ता है, और दुर्योधन से युद्ध करने को समर्थ होसकता है वीर बलदेवजी, पाण्डुपुत्र वृकोदर

various sleights in wrestling. The sound of their blows was heard above the noise. Their blows were hard like stones. After some time *Bhim* raised the king above his arms and dashed him to the ground. The *Brahmans* laughed.27.*Bhim* let Shalya fall so gently on the ground as not to hurt him in the least. The kings, seeing, Shalya overthrown by *Bhim,* and Karan in a state of wonder, surrounded Shalya with troubled heart and all unanimously praised the dexterity of the Brahmans. They said " Let us know all about the place of their residence and birth. No other warrior in the world, except Ram, Drona, Arjun the son of Pandu, Krishna the son of Dewaki, and Shardwat Kripa, can fight against Karan. Who would dare fight against Duryodhan ?32.Who can overthrow Shalya the king of Madra, except the valliant Baldeo, Pandu's son *Bhim* and Dur-

वहारोऽस्माद्युद्धाद्ब्राह्मणसम्भृतात् ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणाहिसदारक्ष्याः सापराधापिनित्यदा । अथैतानुपलभ्येह पुनर्योत्स्यामहेइत्यवत्॥ ३५॥तांस्तथावादिनःसर्वान्समीक्ष्य क्षितीश्वरान् । अथान्यान्पुरुषाश्चापि कृत्वातत्कर्मसंयुगे ॥ ३६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत्कर्मभीमस्यसमीक्ष्यकृष्णः कुन्तीसुतौतौपरिशङ्कमानः ॥ निवारयामास महीपतींस्तान्धर्मेण लब्धेत्यनुनीय सर्वान् ॥ ३७ ॥ एवंतेविनिवृत्तास्तु युद्धाद्युद्धविशारदाः । यथावासंययुःसर्वे विस्मिताराजसत्तमाः ॥ ३८ ॥ वृत्तोब्रह्मोत्तरोरङ्गः पाञ्चालीब्राह्मणैर्वृता । इतिब्रुवन्तःप्रययुर्ये तत्रासन्समागताः ॥ ३९ ॥ ब्राह्मणैस्तुप्रतिच्छन्नौरौरवाजिनवासिभिः । कृच्छ्रेण जग्मतुस्तौतु भीमसेनधनञ्जयौ ॥ ४० ॥ विमुक्तौजनसम्बाधाच्छत्रुभिः परिविक्षतौ । कृष्णयानुगतौतत्र नृवीरौतौविरेजतुः ॥ ४१ ॥ पौर्णमास्यांघनैर्मुक्तौ चन्द्रसूर्याविवोदितौ । तेषांमाताबहुविधं विनाशंपर्य्यचिन्तयत् ॥

वा दुर्योधन के विना कौन महाबली मद्रनाथ शल्यको रणभूमि पर गिरा सकता है अब सब कोई ब्राह्मणोंसे लड़ाई बन्दकरदो।३४।ब्राह्मण अपराधभी करें तौभी सदा उनकीरक्षा करनी चाहिये । पहिले इनका परिचय लेकर पीछे प्रसन्न चित्त से हम इनके साथ लडने को प्रवृत्त होंगे । श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि श्रीकृष्ण ने भीमसेन का वह अलौकिक कार्य देखकर उन दोनोंको कुन्ती पुत्र करके जाना । आगे सम्पूर्ण राजाओंसे विनय पूर्वक यह कह कर युद्धसे निवृत्त किया कि इस ब्राह्मणने धर्म के अनुसारही द्रौपदी लाभकी है, सो इनपर द्वेष करना उचित नहींहै।३८।अनन्तर वे सब युद्ध में पण्डित राजालोग युद्ध बन्दकर आश्चर्य चित्त से अपने अपने भवनों को सिधारे । जो सब लोग दर्शन के लिये एक चित्त हुएथे वे यह कहते हुए चले गये, कि आज रङ्गस्थल में ब्राह्मण लोगही प्रधान बने, पांचाली ब्राह्मणों से वृता हुई । अनन्तर भीम और अर्जुन मृग चर्म पहिनेहुए ब्राह्मणों से घेरेजाकर अति क्लेशसे पथ पाकर चलनेलगे।४०।शत्रुओंसे कटे कूटे नरवीर भीम और अर्जुन पीछे चलती हुई द्रौपदी के साथ जनों की भीड से मुक्त होकर इस प्रकार सोहने लगे, कि जैसे पूर्णिमा तिथि में उगे हुए चन्द्र सूर्य बादल से मुक्त होकर अपूर्व शोभा प्राप्त करते हैं। इधर उनकी

yodhan ? Let us now close the Battle against *Brahmans* who should be spared even if they commit offence. We will ascertain first as to who they are and then we may fight against them.36.Vaishampayan said that Krishna seeing the extraordinary deeds of *Bhim* knew them to be the sons of Kunti. He then pacified the kings saying, "The Brahmans have lawfully won Draupadi. We should not, therefore, bear ill-will against them."38.The kings thereupon went away amazed. The lookers-on went away saying "Brahmans have here asserted their supremacy to day and have won the princess of Panchal. *Bhim* and Arjun, surrounded by *Brahmans*,

।४२। अनागच्छत्सुपुत्रेषु भैक्ष्यकालेभिगच्छति । धार्त्तराष्ट्रैर्हतानु स्युर्विज्ञायकुरुपुङ्गवाः ॥ ४३ ॥ मायान्वितैर्वारक्षोभिः सुघोरैर्दृढवैरिभिः । विपरीतंमतंजातं व्यासस्यापिमहात्मनः ॥ ४४ ॥ इत्येवंचिन्तयामास सुतस्नेहावृतापृथा । ततःसुप्तजनप्राये दुर्दिनेमेघसंप्लुते ॥ ४५ ॥ महत्यथापराह्नेतु घनैःसूर्य्यइवावृतः । ब्राह्मणैःप्राविशत्तत्र जिष्णुर्भार्गववेश्म तत् ॥ ४६ ॥

इत्यादिपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि पाण्डवप्रत्यागमने एकनवत्यधिकशततोऽध्यायः १९१॥

वैशम्पायन उवाच । गत्वातुतांभार्गवकर्मशालां पार्थौपृथांप्राप्यमहानुभावौ । तांयाज्ञसेनींपरमप्रतीतौ भिक्षेत्यथावेदयतांनराग्र्यौ ॥ १ ॥ कुटीगतासात्वनवेक्ष्यपुत्रौ प्रोवाचभुङ्क्तेतिसमेत्यसर्वे।पश्चाच्चकुन्तीप्रसमीक्ष्यकृष्णां कष्टंमयाभाषितमित्युवाच।२।

माता कुन्ती उनके भिक्षाकर लौटने के काल बीतने पर उनको न आते देखकर भांति भांति के अनिष्टकी आशंका से यह चिन्ता करने लगी, कि कदाचित धृतराष्ट्र के पुत्रों ने मेरेबच्चों को पहिचान कर मारडाला है अथवा कठोर शत्रु मायाधारी अति भयानक राक्षसों ने नष्ट किया होगा। महात्मा व्यासजी की भी कैसी उलटी बुद्धि हुई थी ! उन्हों ने क्यों हम को इस देशमें आनेको कहा ।४४। कुन्ती पुत्रस्नेहसे इसप्रकार सोच रही थी, कि ऐसे समय में अर्जुन ब्राह्मणों से घेरे जाकर लोगोंके प्रायः चुप होने के काल में बड़े अपरान्ह में बादलसे घिरे कुदिनके मेघढंपे सूर्यकी भांति उस कुम्भारके घर में जाघुसे ।४६।

अध्याय ॥ १९२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि महानुभव नरश्रेष्ठ भीम और अर्जुन परम प्रसन्न चित्त से याज्ञसेनी को साथ लेकर कुम्भार के घर में जाकर कुन्तीसे बोले कि मा आज यह भिक्षा मिली है कुन्ती तबकुटी के भीतरथी कुछ न देख करके ही बोली, कि तुम सब मिलकर भोगो पीछे कृष्णाको देखकर बोली कि हा ! मैंने कैसी अनुचित्त बात कही।२।

---

found their way with great difficulty and being rid of the crowd and followed by Draupadi, they looked like the full moon and the sun coming out from the clouds. On the other hand Kunti, finding that her sons did not return in time, was much distressed. She feared that the sons of Dhritrashtra had recognised her sons and destroyed them, or they were killed by deceitful Rakshases. She blamed Vyase's wrong decision in sending them there.44.Kunti was thus reflecting when Arjun surrounded by Brahmans, like the sun hidden by clouds, entered the potter's hut.46.

CHAPTER CXCII

Vaishampayan said that *Bhim* and Arjun, having entered the potter's hut with Yagyaseni, said, " Mother, we have got this to-day as alms." Kunti was within ths house and without seeing anything,

॥ साधर्मभीतापरिचिन्तयन्ती तांयाज्ञसेनीं परमप्रतीता । पाणौगृहीत्वोपजगाम कुन्ती युधिष्ठिरंवाक्यमुवाचचेदम् ॥ ३ ॥ कुन्त्युवाच । इयन्तुकन्याद्रुपदस्य राज्ञस्तवानुजाभ्यां मयिसन्निविष्टा । यथोचितंपुत्रमयापिचोक्तं समेत्यभुङ्क्तेतिनृपप्रमादात् ॥ ४ ॥ मयाकथंनानृतमुक्तमद्य भवेत् कुरूणामृषभब्रवीहि । पंचालराजस्यसुता मधर्मो नचोपवर्त्तेतनविभ्रमेच्च ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । सएवमुक्तोमतिमान् नृवीरोमात्रामुहूर्त्तंतु विचिन्त्यराजा । कुन्तींसमाश्वास्यकुरुप्रवारो धनञ्जयंवाक्यमिदं वभाषे ॥ ६ ॥ त्वयाजिताफाल्गुनयाज्ञसेनी त्वयैवशोभिष्यति राजपुत्री । प्रज्वाल्य तामग्निरमित्रसाह गृहाणपाणिंविधिवत्त्वमस्याः ॥ ७ ॥ अर्जुन उवाच । मामांनरेन्द्र त्वमधर्मभाजं कृथानधर्मोऽयमशिष्टदृष्टः । भवान्निवेश्यःप्रथमंततोऽयं भीमोमहाबाहुरचिन्त्यकर्मा ॥ ८ ॥ अहंततोनकुलोऽनन्तरंमे पश्चादयंसहदेवस्तरस्वी । वृकोदरोऽहं

है अनन्तर वह अधर्मका भय खाकर सोचती हुई अनान्दिता उस याज्ञसेनी का हाथ पकड़ कर युधिष्ठिर के पास जाकर उनसे वोली, कि बेटा ! तुम्हारे दोभाइयों ने-जब राजा द्रुपद से इस पुत्री को लाकर मेरे पास भिक्षा कह के दिया तब मैंने असावधानता से उस काल के योग्य यह बात कह डाली है कि तुम सब मिल कर भोगो, हे कुरुवंश श्रेष्ठ अब यह कहो, कि क्यों कर मेरी वह बात झूठी न ठहरे क्यों कर अधर्म इस राजा पाञ्चालकी पुत्री को छू न सके और क्योंकर यह अप्रसन्न न होवे ।५। वैशम्पायन ने कहा कि नरवीर मतिमान कुरु प्रवीर राजा युधिष्ठिर माता की यह बात सुनकर क्षणभर सोच कर उन को समझा कर धनञ्जय से बोले, फाल्गुन तुमने इस राज पुत्री याज्ञसेनीको जय कर लिया है, तुम्हीं से इसका विवाह हो तो ठीक होवे, हे शत्रुवेग सहने वाले तुम आग बालकर विधि पूर्वक इस से व्याह करलो ।७। अर्जुनबोले कि हे नरेन्द्र ! आप मुझको अधर्म में न डालें, जैसी आज्ञा करते हैं वह धर्म युक्त नहीं है वह अनबूझा पथ है । पहिले आपका, आगे चिन्तातीत कर्म करने वाले महाभुज भीमसेन का, उसके पीछे मेरा तब मेरे पीछे जन्म लिये हुए नकुलका और अन्तमें कनिष्ठ

said, "You may all enjoy it." Then seeing Krishna, she said, "What an improper word I have uttered ?" Then, being afraid of having committed a sin, she took Yagyaseni by the hand and leading her to Yudhishthir's presence said, "Your two brothers brought this girl and presented me as alms from king Drupad. I told them in words suitable for the occassion that you all might enjoy it. Let me know now how my words may not become false and this daughter of the king of Panchal be not displeased." 5. Vaishampayan said that having heard this from his mother, Yudhishthir reflected for awhile and then told Arjun to marry Draupadi as he had won her.

चयमौच राजन्नियंच कन्याभवतोनिजोज्याः ॥९ ॥ एवंगतेयत्करणीयमत्र धर्म्यंयश-
स्यंकुरुतद्विचिन्त्य । पाञ्चालराजस्य हितंचयत्स्यात् प्रशाधिसर्वेस्मवशेस्थितास्ते ।१०।
वैशम्पायन उवाच । जिष्णोर्वचनमाज्ञाय भक्तिस्नेहसमन्वितम् । दृष्टिंनिवेशयामासुः
पांचाल्यां पाण्डुनन्दनाः ॥ ११ ॥ दृष्ट्वातेतत्रपश्यन्तीं सर्वेकृष्णांयशस्विनीम् । सम्प्रे
क्ष्यान्योन्यमासीना हृदयैस्तामधारयन ॥ १२ ॥ तेषान्तुद्रौपदींदृष्ट्वा सर्वेषाममितौज
साम् । सम्प्रमथ्येन्द्रियग्रामं प्रादुरासीन्मनोभवः ॥ १३ ॥ काम्यंहिरूपंपाञ्चाल्या वि
धात्राविहितंस्वयम् । वभूवाधिकमन्याभ्यः सर्वभूतमनोहरम् ॥ १४ ॥ तेषामाकार-
भावज्ञः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । द्वैपायनवचःकृत्स्नं सस्मारमनुजर्षभः ॥ १५॥ अब्रवी
त् सहितान् भ्रातॄन्मिथोभेदमयान्नृपः । सर्वेषांद्रौपदीभार्य्या भविष्यतिहिनःशुभा ॥
॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । भ्रातुर्वचस्तत्प्रसमीक्ष्यसर्वे ज्येष्ठस्य पाण्डोस्तनया-

सहदेवका विवाह होनाही विधि पूर्वक है भीमसेन, नकुल सहदेव, यह कन्या और मैं आपकी आज्ञा के अनुसारी होते हैं इस से जो कुछ धर्म और जिस से राजा पाञ्चाल का मंगल होवे, उस पर ध्यान कर के आज्ञा करें हम लोगोंमें से कोई भी आपकी आज्ञा मानने से मुह नहीं मोड़ेगा।१०।वैशम्पायनने कहा अर्जुनकी भक्तिपूर्ण स्नेह, रसभरी बातें सुनकर पाण्डवों नें राज पांचाल की पुत्रीकी ओर देखा और पाञ्चाली भी उन की ओर देखने लगी। पाण्डु पुत्र लोग उस यशस्विनी बालाको देख कर एक दूसरे के मुखकी ओर ताक के बैठगये और सबोंका चित्त उसकी ओर झुका।१३। विधाता ने उस पांचालीका सुन्दर रूप दूसरी नारियों से श्रेष्ठ और प्राणियोंका ऐसा मनोहर बनाया था कि बड़े तेजस्वी पाण्डुपुत्रों के देखते ही मदन उन की इन्द्रियों को मथन करके प्रगटहुआ। मनुष्य श्रेष्ठ कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर छोटे भाइयों के आकारों को देख कर उन के हृदय के भावको समझ गये और उस समय वेदव्यासजी की सम्पूर्ण बातें उन के स्मरणपथ में आपंहुचीं।१५। वह भाइयों में आपस के विगाड़ का भयकर बोले, कि शुभलक्षणोंसे

Arjun said that he could not do so as it was not right. It is proper that we should marry according to the order of our birth: first you, then *Bhim*, then I, then Nakul and last of all the youngest, Sahadev. Bhimsen, Nakul, Sahadev, this girl and I are obedient to your will. Consider well upon the right path and the welfare of the king of Panchal and then order us to do what you like. None of us will disobey you."10.Vaishampayan said that having heard this from Arjun, the Pandavas looked towards Draupadi and she looked towards them. All the Pandavas looked at one another and the minds of all were bent towards her. The creator had made her so beautiful and heart enchanting as to make all the Pandavas fall in love with her at the first sight. Yudhishthir knew what

स्तदानीम् । तमेवार्थंध्यायमानामनोभिः सर्वेचतेतस्थुरदीनसत्त्वाः ॥ १७ ॥ वृष्णि-
प्रवीरस्तु कुरुप्रवीरानाशंसमानः सहरौहिणेयः । जगामतांभार्गवकर्मशालां यत्रासते
तेपुरुषप्रवीराः ॥ १८ ॥ तत्रोपविष्टंपृथुदीर्घबाहुं ददर्शकृष्णःसहरौहिणेयः । अजात
शत्रुंपरिवार्य्य तांश्चाप्युपोपविष्टान् ज्वलनप्रकाशान् ॥ १९ ॥ ततोऽब्रवीद्वासुदेवोऽभि
गम्य कुन्तीसुतंधर्मभृतांवरिष्ठम् । कृष्णोऽहमस्मीतिनिपीड्यपादौ युधिष्ठिरस्याजमीढ
स्यराज्ञः ॥ २० ॥ तथैवतस्याप्यनुरौहिणेयस्तौ चापिहृष्टाःकुरवोऽभ्यनन्दन् । पितृ-
ष्वसुश्चापियदुप्रवीरावगृह्णतां भारतमुख्यपादौ ॥ २१ ॥ अजातशत्रुश्चकुरुप्रवीरः पप्र-
च्छकृष्णंकुशलंविलोक्य । कथंवयंवासुदेवत्वयेह गूढावसन्तोविदिताश्चसर्वे ॥ २२ ॥
तमब्रवीद्वासुदेवःप्रहस्य गूढोऽप्यग्निर्ज्ञायतएवराजन् । तंविक्रमंपाण्डवेयानतीत्य को-

मढीहुई यह द्रौपदी हम सबोंकी स्त्री होगी । वैशम्पायन ने कहा कि पाण्डु पुत्रगण बडे भाईकी यहबात सुनकर बिना कष्ट मनहीमनमें उस बातकी चर्चा करनेलगे।१७।अनन्तर वृष्णिवंशके प्रधानवीर श्रीकृष्णजी उनको कुरुवीर समझ कर भार्गवकी जिस शाला में वे वीर पुरुष लोग टिके थे वहां बलदेवजी के संग आ पहुँचे । आगे रोहिणी पुत्र और उन्हों ने वहां बैठेहुए दीर्घ-भुज अजात-शत्रु युधिष्ठिर को और उनकी चारोंओर पासही बैठे अग्नि समान जलते हुए उनके छोटे भाइयों को देखा । इस के अनन्तर वासुदेव श्री कृष्ण अजमीढ वंशी धार्मिकवर कुन्तीकुमार युधिष्ठिर के सामने जाकर उन के पांव छू कर बोले कि मैं कृष्णहूं।२०।और बलदेवजीनेभी वैसाही किया पाण्डवगण राम औरकृष्ण को देखकर प्रसन्न चित्तसे आनन्द प्रकाश करने लगे । हेभारत श्रेष्ठ ! अनन्तर यदुवीर राम और कृष्ण फूफी पृथाके पांव लगे । अजातशत्रु कुरुवीर युधिष्ठिर कृष्ण को देखकर कुशल क्षेम पूछकर बोले, कि हे वासुदेव ! तुमने क्योंकर यह जाना, कि हम छिपकर यहां बसेहैं।२२।कृष्ण ने हंसकरकहा, कि हेमहाराज ! अग्नि छिपरहने सेभी कभी अज्ञात

was passing in their hearts and remembered the words of Vyasa.15. Considering well upon the inclinations of all the brothers he said, "She shall be the wife of us all. Vaishampayan said that the Pandavas having heard this from their elder brother began to reflect upon it. At length Krishna, the chief of Vrishnis, came with *Baldeo* to the place where the Pandavas were staying. They saw the long-armed Yudhishthir surrounded by his younger brothers glorious like fire. Touching Yudhishthir's feet, he said, "I am Krishna."20. and *Baldeo* followed suit. The Pandavas were very glad to see them. Ram and Krishna then touched the feet of their aunt Kunti. Yudhishthir asked about the welfare of the Yadus and said, "How did you know that we were living in concealment here." "Fire cannot remain hidden," said Krishna with a smile,

ऽन्यःकर्त्ता विद्यतेमानुषेषु ॥ २३ ॥ दिष्ट्यासर्वेपावकाद्विप्रमुक्ता यूयंघोरात् पाण्डवाःशत्रुसाहाः । दिष्ट्यापापोधृतराष्ट्रस्यपुत्रः सहामात्योन सकामोऽभविष्यत् ॥ २४ ॥ भद्रं वोऽस्तुनिहितंयद्गुहायांविवर्द्धध्वं ज्वलनाइवैधमानाः । मावोविदुः पार्थिवाः केचिदेव यास्यावहेशिविरायैवतावत् । सोऽनुज्ञातः पाण्डवेनाव्ययश्रीः प्रायाच्छीघ्रं बलदेवेन सार्द्धम् ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि स्वयम्वरपर्वणि रामकृष्णागमने द्विनवत्यधिकशततोऽध्यायः ॥१९२॥

वैशम्पायन उवाच । धृष्टद्युम्नस्तुपांचाल्यः पृष्ठतःकुरुनन्दनौ । अन्वगच्छत्तदा यान्तौ भार्गवस्यनिवेशने ॥ १ ॥ सोऽज्ञायमानः पुरुषानवधाय समन्ततः । स्वयमारान्निलीनोऽभूद्भार्गवस्य निवेशने ॥ २ ॥ सायंचभीमस्तुरिपुप्रमाथी जिष्णुर्यमौचापि महानुभावौ । भैक्ष्यंचरित्वातुयुधिष्ठिराय निवेदयांचक्रुरदीनसत्त्वाः ॥ ३ ॥ ततस्तु

नहीं रहता और इस भूमण्डल के मानवोंमें पाण्डवों के विना कौन वैसा विक्रम दिखा सकता है आप लोग बडे भाग्य से शत्रुका वेग सहकर कठोर जलने से बचे हैं और भाग्यहीके कारण पापात्मा धृतराष्ट्रपुत्र और उस के मन्त्रियों का मनोरथ सफल नहीं हुआ अब आपका मंगलहोवे वह मंगल इन दिनों औरोंके बिन देखे स्थान में छिपाहुआ है आप बढनेवाले अग्निकी भांति बढते रहें अब आज्ञा करें कि हम अपनी रनवास में चले जांय, कि जिससे कोई राजा आपको न जानने पावे, अक्षय श्रीयुक्त श्रीकृष्ण जी यह कहकर युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर बलदेव जीके साथ शीघ्र वहांसे पधारे ॥ २५ ॥

अध्याय १९३ ॥

वैशम्पायनने कहा कि कुरु नन्दन भीम और अर्जुन जब भार्गव के घर को जा रहे थे, उस समय पांचालकुमार धृष्टद्युम्न उन के पीछे पीछे छिपकर गये थे । वह साथियों को सावधान कर पाण्डवों और दूसरोंके न जानते उसके निकट किसी एकस्थान में छिपे थे ।२। सन्ध्याकालमें शत्रुगथने हारे असामान्य सत्वयुक्त महाबली भीम,अर्जुन,

"and who, except the Pandavas, can do such deeds of valour? You fortunately escaped being burnt by the enemy and the hopes of the sons of Dhritrastra and their ministers were not realised. May you be happy! The happiness is concealed here now from the eyes of others. May you grow up like a spreading fire! Let us now depart in order that no other kings may know your whereabouts. The immortal Krishna went away with *Baldeo* by the permission of Yudhishthir.

CHAPTER CXCIII

Vaishampayan said that when *Bhim* and Arjun were going to the *Bhargava's* house Dhrishtadyumna the prince of Panchal followed them. Having told his followers to be careful he remained concealed

कुन्तीद्रुपदात्मजां तामुवाचकालेवचनंवदान्या। त्वमग्रभागादायेकुरुष्वभद्रे बलिंचविप्रा-
यचदेहि भिक्षाम्॥ ४॥ येचान्नमिच्छन्तिददस्वतेभ्यः परिश्रितायेपरितोमनुष्याः।
ततश्चशेषंप्रविभज्य शीघ्रमर्द्धंश्चतुर्द्धा ममचात्मनश्च॥ ५॥ अर्द्धन्तुभीमायचदेहिभद्रे
यएष नागर्षभतुल्यरूपः। गौरोयुवा संहननोपपन्न एषोहिवीरोबहुभुक्सदैव॥ ६॥
साहृष्टरूपेवतुराजपुत्री तस्यावचः साधुविशङ्कमाना। यथावदुक्तंप्रचकारसाध्वी ते
चापिसर्वे बुभुजुस्तदन्नम्॥ ७॥ कुशैस्तुभूमौशयनंचकार माद्रीपुत्रः सहदेवस्तरस्वी
यथास्वकीयान्यजिनानिसर्वे संस्तीर्य्यवीराःसुषुपुर्द्धरण्याम्॥ ८॥ अगस्त्यशास्ताम-
भितोदिशन्तु शिरांसितेषां कुरुसत्तमानाम्। कुन्तीपुरस्तात्तुबभूवतेषां पादान्तरेचाथ
बभूवकृष्णा॥ ९॥ अशेतभूमौसहपाण्डुपुत्रैः पादोपधानीवकृताकुशेषु। नतत्रदुःखंम
नसापितस्या नचावमेने कुरुपुङ्गवांस्तान्॥ १०॥ तेतत्रशूराःकथयाम्बभूवुः कथावि-

नकुल और सहदेवने भिक्षा से लौटकर भिक्षा की सामग्री युधिष्ठिर को देदी तब कुन्ती ने द्रौपदी से कहा कि भद्रे! तुम इस भिक्षाकी सामग्री से अगलाभाग लेकर देवों को उपहार और ब्राह्मणों को भिक्षा देदो और जो सब लोग अतिथि बने हैं और जो भोजन करना चाहेंगे उनकोभी दो। आगे जो बची रहेगी वह दोभागोंमें बांटकर एकभाग भीम को दो क्योंकि वह पर्वतकी भांति बडाभारी गोरा तरुण वीर वृकोदर नित्य बहुत भोजन करता है दूसरे भागको छः भागों में बांटो उनको युधिष्ठिर आदि चारभाई, तुम और हम खायँगे।६। राजपुत्री सती द्रौपदीने उनकी उस श्रेष्ठ बातका कोई विचार न करके ही आनन्दित चित्तसे उसको जो कहा गया था, वह पूरा किया। इस के पीछे सबों ने भोजन किया। अनन्तर तरस्वी माद्रीपुत्र सहदेव ने भूमिपर कुशा बिछाकर सेज बनायी। आगे उसपर सब यथोपयुक्त अपना अपना मृगचर्म बिछाकर सोगये। कुरु श्रेष्ठों ने दक्षिण ओर सिर करके शयन किया था।८। उन के सिरकीओर कुन्ती और पांवकी ओर द्रौपदी सोरही। द्रौपदी ने भूमि पर लेटने और सब के पांवके नीचे तकियेकी भांति बनने पर नतो मन में दुःख माना और न उनकीओर अनादर प्रकट किया।१०। शूरतायुक्त

in a neighbouring house without the knowledge of the Pandavas and others. *Bhim*, Arjun, Nakul and Sahdev returned in the evening and presented to Yudhishthir the food they had brought as alms. The charitable Kunti then said, "Set apart a portion of this for gods, *Brahmans* and guests. Divide the remainder into two parts. Give one to *Bhim* who always eats much, and divide the other moity into six parts for the four brothers, yourself and me. 5. The princess Draupadi obeyed her without hesitation. Then all partook of the food. Sahdev spread on the earth beds of Kusa grass for all. Each spread his own deer skin for himself and they

चित्राःपृतनाधिकाराः । अस्त्राणिदिव्यानि रथांश्चनागान् खड्गान् गदाश्चापिपरश्वधां
श्च । ११ ॥ तेषांकथास्ताःपरिकीर्त्यमानाः पांचालराजस्य सुतस्तदानीम् । शुश्राव
कृष्णांचतदानिषण्णां ते चापिसर्वेददृशुर्मनुष्याः ॥ १२ ॥ धृष्टद्युम्नोराजपुत्रस्तु सर्वं
वृत्तंतेषांकथितंचैवरात्रौ । सर्वंराज्ञेद्रुपदायाखिलेन निवेदयिष्यंस्त्वरितोजगाम । १३।
पांचालराजस्तु विषण्णरूपस्तान् पाण्डवानप्रतिविन्दमानः । धृष्टद्युम्नंपर्यपृच्छन्महात्मा
क्सागतांकननीताचकृष्णा ॥ १४ ॥ कच्चिन्नशूद्रेणनहीनजेन वैश्येनवाकरदेनोपपन्ना ।
कच्चित्पदंमूर्ध्निनपङ्कदिग्धं कच्चिन्नमालापतिताश्मशाने ॥ १५ ॥ कच्चित्सुवर्णप्रवरो
मनुष्य उद्रिक्तवर्णोऽप्युतएवकाचित् । कच्चिन्नवामोममसूर्ध्नि पादः कृष्णाभिमर्षेन कृ-
तोद्यपुत्र ॥ १६ ॥ कच्चिन्नतप्स्येपरमप्रतीतः संयुज्यपार्थेन नरर्षभेण । वदस्वतत्त्वेनमहा
नुभावकोऽसौविजेता दुहितुर्ममाद्य ॥ १७ ॥ विचित्रवीर्य्यस्य सुतस्यकच्चित् कुरुप्र-

पाण्डवगण लेटकर रथ, नाग, खड्ग, गदा, परश्वध, दिव्यास्त्र और सेना सम्बन्धी नाना विचित्र कथायें कहने लगे । पांचालराजपुत्र धृष्टद्युम्न पाण्डवोंकी उन सबकथाओं को सुनने लगे और वहांके लोगोंनेभी राजकन्या कृष्णाको उसदशामें देखा। १२।अनन्तर रात्रि को पाण्डवों ने जैसी कही सुनथी और वहां जो कुछ हुआथा सब राजा द्रुपदके पास आद्योपान्त कहने के लिये राजकुमार धृष्टद्युम्न तुरन्त चले गये । महात्मा राजा पांचाल पाण्डवों को न प्राप्तकरके दुःखी होकर पडे थे । धृष्टद्युम्न के वहां जा पहुँचनेपर उस से उन्हों ने पूछा कि बेटा ! कृष्णाको कौन लेगया है ? कृष्णा कहां गयी है किसी नीचजाति वा शूद्र अथवा कर देनेवाले वैश्य ने मेरी कन्याको ले जाकर मेरेसिरपर लात तो नहीं मारी है सुन्दर मालातो श्मशान में नहीं गिरी है ।१५। किसी क्षत्रिय श्रेष्ठ अथवा ब्राह्मण ने मेरी कन्याको तो नहीं जीत लियाहै किसी नीच जनने कृष्णाको जीत कर मेरेसिरपर बांयापांवतो नहीं डाला है, यदि मेरी कन्या कृष्णा नरसिंह जन के साथ मिलकर चली गयी हो तो मुझको दुःख नहीं है । हे महानुभव ! किस ने मेरी पुत्रीको

all lay with their heads towards the South. Kunti slept on the side of their heads and Draupadi below their feet. Draupadi was not displeased by sleeping below their feet nor showed any ill-will towards them. 15. The Pandavas lying on their beds began to talk of all sorts of weapons. Dhrishtadyumna heard all and saw his sister in that state. He then went to Drupad to report what he had seen there or heard. The king of Panchal, not finding the Pandavas, was lying in grief. On seeing Dhrishtadyumna he began to ask, "Who has taken away Krishna? Where is she? Has any low caste, Shudra, or a taxpayer Vaishya got my daughter and set foot upon my head? Has the beautiful necklace fallen on the cremation ground? 15. Has a Kshatrya or *Brahman* got my daughter?

वीरस्यध्रियन्तिपुत्राः । कच्चित्तुपार्थेनयवीयसाद्य धनुर्गृहीतं निहतंचलक्ष्यम् ॥ १८ ॥
इत्यादिपर्व्वणि स्वयम्वरपर्व्वणि धृष्टद्युम्नप्रत्यागमने त्रिनवत्यधिकशततोऽध्यायः ।१९३।
समाप्तंच स्वयम्वरपर्व्व ॥ अथ वैवाहिक पर्व्व ॥

वैशम्पायन उवाच । ततस्तथोक्तःपरिहृष्टरूपः पित्रेशशंसाथसराजपुत्रः । धृष्टद्युम्नःसोमकानांप्रवर्हो वृत्तंयथायेनहृताचकृष्णा ॥ १ ॥ धृष्टद्युम्न उवाच । योऽसौयुवाव्यायतलोहिताक्षः कृष्णाजिनीदेवसमानरूपः । यःकार्मुकाग्र्यंकृतवानाधिज्यं लक्ष्यञ्चयःपातितवान्पृथिव्याम् ॥ २ ॥ असज्जमानश्चततस्तरस्वी वृतोद्विजाग्र्यैरभिपूज्यमानः । चक्रामवज्रीवदितेःसुतेषु सर्व्वैश्चदेवैर्ऋषिभिश्चजुष्टः ॥ ३ ॥ कृष्णाप्रगृह्याजिनमन्वयात्तं नागंयथानागवधूःप्रहृष्टा । अमृष्यमाणेषुनराधिपेषु क्रुद्धेषुवैतत्रसमापतत्सु ॥ ४ ॥ ततोऽपरःपार्थिवसंघमध्ये प्रवृद्धमारुज्यमहीप्ररोहम् । प्रकाल-

जीतलियाहै।१७।क्या कुरुवीर विचित्रवीर्य के पुत्र राजा पाण्डुके लडके जीते हैं ? क्या अर्जुन ने धनवा लेकर लक्ष्यभेद किया है ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ १९४ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि सोमवंश श्रेष्ठ राजपुत्र धृष्टद्युम्न पिताकी यहबातें सुनकर प्रसन्न चित्तसे जिसने द्रौपदी को जय कर लियाथा और उस विषय में जो कुछ हुआ था सब आद्योपान्त पितासे कहने लगे विशेषरूप से चौड़ी और लाल आखोंसे सुहावने काला मृगचर्म पहिने देवसदृश रूपवान जिस युवापुरुष ने बडेभारी चाप में गुणचढाकर लक्ष्यभेद करके भूतल में गिरायाथा वह तपस्वी किसी से नहीं मिले। वह ब्राह्मणों से घेरे और पूजे जाकर राजोंमें इसप्रकार पराक्रम प्रगट करने लगे, कि जैसे सम्पूर्णमहर्षि और देवोंसे घिरेहुए देवराज दैत्यों में जा घुसते हैं । कृष्णा उस पुरुषके काले मृगचर्म को लेकर प्रसन्न मन से इसप्रकार पीछे पीछे चली, कि जैसे सर्प की स्त्री सर्पराजकेपीछे जाती है तब सब राजों के असह्य और क्रोधयुक्तहोकर युद्ध के लिये दौडने पर एक वीर

I shall not be grieved, my son, if a Kshatrya has my daughter. Say, who has got her? Are the sons of Pandu alive? Did Arjun hit the mark ?18.

CHAPTER CXCIV

Vaishampayan said that Dhrishtadyumn told his father all that he had learned about the winner of Draupadi. He said "The youth with large and red eyes, beautiful, wearing black deer skin, beautiful like a god, who hit the mark with the big bow, did not mix with any one. Surrounded and respected by *Brahmans* he expressed as much bravery among the kings as the prince of gods does among the enemies of gods. Krishna held his deer skin and followed him as cheerfully as the Naga woman follows the

यन्नेवसपार्थिवौघान क्रुद्धोऽन्तकःप्राणभृतोयथैव ॥ ५ ॥ तौपार्थिवानांमिषतांनरेन्द्र
कृष्णामुपादायगतौनराग्रयौ ।विभ्राजमानाविवचन्द्रसूर्य्यौ बाह्यांपुराद्भार्गवकर्मशालाम्
॥ ६ ॥ तत्रोपविष्टार्चिरिवानलस्य तेषांजनित्रीतिममप्रतर्कः । तथाविधैरेवनरप्रवीरैरु
पोपविष्टैस्त्रिभिरग्निकल्पैः ॥ ७ ॥ तस्यास्ततस्तावभिवाद्यपादा उक्ताचकृष्णात्वभि-
वादयेति । स्थिताश्चतत्रैवानिवेद्यकृष्णां भिक्षःप्रचारायगतानराग्रयाः ॥ ८ ॥ तेषा-
न्तुभैक्ष्यंप्रतिगृह्यकृष्णा दत्त्वाबलिंब्राह्मणसाच्चकृत्वा । ताश्चैववृद्धांपरिवेश्यतांश्च
नरप्रवीरान्स्वयमप्यभुङ्क्त ॥ ९ ॥ सुप्तास्तुतेपार्थिवसर्वएव कृष्णाचतेषांचरणोप-
धाने । आसीत्पृथिव्यांशयनश्चतेषां दर्भाजिनाग्रास्तरणोपपन्नम् ॥१०॥ तेनर्दमाना-
इवकालमेघाःकथा विचित्राःकथयाम्बभूवुः । नवैश्यशूद्रौपयिकीःकथास्ता नचद्विजानां

उस पार्थिव सेना में घुसकर इसप्रकार कि जैसे क्रोधित यमराज दण्ड लेकर प्राणियोंको नष्ट करते हैं, एक बडे भारी प्राचीन वृक्ष को उखाड कर उससे भूपालों को भगाने लगे हे नरनाथ ! तब राजा लोग उन नरसिंह दो वीरोंकी ओर ताकने लगे। वे दोनों वीर चन्द्रमा और सूर्यकी भांति सोहतेहुए कृष्णाको लेकर एक कुम्भार के घर में जा घुसे वहां अग्निकी चिंगारीकी भांति एक बुढिया नारी अग्नि सदृश तीन वीरोंके साथ बैठी मुझको जान पड़ा, कि वह उनकी माताहोंगी। अनन्तर वह दोवीर उन के निकटजाकर और उन के पांव छूकर कृष्णाको उन्हें प्रणाम करने को बोले आगे कृष्णा को भिक्षा कह के जताकर उन के पास सौंपके वेसब भिक्षाके लिये निकले आगे उन के भीखलेकर लौटआने पर कृष्णा से उन के भोजनकी सामग्री लेकर उसका कुछ अंश देवोंको अर्पण किया और कुछ ब्राह्मणों को दिया अनन्तर शेष भाग बुढिया और पांचों वीरोंको परोस कर अन्त में उसने भोजन किया। हे नरनाथ ! इस के पश्चात् धरती पर मृगचर्म बि-छाये जाने के पश्चात् वे उसपर सोये कृष्णा उन के पांव के नीचे तकियेकी भांति सो रही तब वे वीर काले बादल के समान गम्भीर स्वरसे आपस में भांतिरकी विचित्रकथा

prince of Nagas. When the kings being unbearable and angry made an attack to fight, another warrior entered the army of kings as Yamraj destroying mortals with his club. He began to disperse the kings by a tree which he had uprooted. The kings were amazed and the two heroes glorious like the Sun and the moon took Krishna with them to a potter's hut outside the city. There an old woman, like the spark of fire, was sitting with three fiery youths. I think she must be their mother. The two youths with Krishna went to her and having touched her feet told Krishna to pay respect to her. They told her that they had got Krishna as alms and went away to get alms leaving the latter with her. On their return Krishna was asked to offer a part of the alms to gods and

कथयन्तिवीराः ॥ ११ ॥ निसंशयंक्षत्रियपुङ्गवास्ते यथाहियुद्धंकथयन्तिराजन् । आशाहिनोव्यक्तमियंसमृद्धामुक्तान् हिपार्थान्शृणुमोऽग्निदाहात् ॥१२॥ यथाहिलक्ष्यं निहतंधनुश्च सज्यंकृतंतेनतथाप्रसह्य । यथाहिभाषन्तिपरस्परन्ते छन्नाभुवंतेप्रचरन्ति पार्थाः ॥१३॥ वैशम्पायनउवाच॥ततःसराजाद्रुपदःप्रहृष्टः पुरोहितंप्रेषयामासतेषाम् । विद्यामयुष्मानितिभाषमाणो महात्मनःपाण्डुसुतास्तुकच्चित्॥१४॥ गृहीतवाक्योनृपतेः पुरोधागत्वा प्रशंसामभिधायतेषाम् । वाक्यंसमग्रंनृपतेर्यथा वदुवाचचानुक्रमविक्रमेण ॥ १५ ॥ विज्ञातुमिच्छत्यवनीश्वरोवः पाञ्चालराजोवरदोवरार्हाः । लक्ष्यस्यवेद्धारमिमंहिदृष्ट्वा हर्षस्यनान्तंप्रतिपद्यतेसः ॥ १६ ॥ आख्यातचज्ञातिकुलानुपूर्वीं पदंशिरः

कहनेलगे । वे जो सब कथा कहरहे थे वे कभी ब्राह्मण, वैश्य वा शूद्र जातिकी नहीं हो सकती । हे महाराज ! वे जैसे युद्ध सम्बन्धी कथा कहने लगे, उस से वे निः संदेह क्षत्रिय श्रेष्ठ होंगे । हे पितः ! इस में सन्देह नहीं है, कि हमारी आशा पूरी हुई है, क्योंकि सुन चुकाहूं,कि पाण्डव अग्निमें जलनेसे बचेहैं।१२।और उसमहावीरनें जिसप्रकार से शरासन में विना विलम्ब गुण चढाया, जिसप्रकार सहजही में लक्ष्य भेद किया और उन में आपसकी जैसी कथा सुनी, उस से निश्चय जान पडता है, कि यही पंच पाण्डव होंगे, इस में सन्देह नहीं, कि वे माताके साथ छिपकर घूम रहे हैं । वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर राजा द्रुपदने आनन्द पूर्वक पुरोहित से यह कह के पाण्डवोंके पास भेजा, कि आप उन के निकट जा यहकहना, कि तुम महात्मा पाण्डुकी सन्तानहो,कि नहीं मैं तुम्हारीसुध लिया चाहताहूं।१४।राजपुरोहित राजाकीआज्ञा को सुनकर पाण्डवों के पास जा क्रमसे उनमेंसे हरेकका यश गाकर राजाकी कही सबबात कहने लगे हे श्रेष्ठ बरदाता भूनाथ राजापांचाल आपका परिचय जानना चाहते हैं वह इस वीर को लक्ष्य भेदकरते देखकर अपार आनन्द पारावारमें मग्न हैं । १६ । आप अपनी, ज्ञातिकी और कुलकी

Brahmans and they partook the rest. Krishna took her food last of all. They then spread their deer skins on the earth and lay down. Krishna slept below their feet like a pillow. The brave men then had a talk on various subjects and spoke gravely like thunder. From their talk I infer that they can not be *Brahmans*, Vaishyas, or Shudras. From their talk about war and warriors they can be none other than Kshatryas. I have no doubt that our hopes have been realised. I have heard that the Pandavas were not destroyed by fire.12.From the readiness with which the warrior pierced the arrow, the ease with which he hit the target and their mutual talk, I believe that they must be the five Pandavas living in concealment with mother. Vaishampayan said that then king Drupad with a cheerful heart sent his priest to the Pandavas to ascertain if they

सुद्विषतांकुरुध्वम् । महादयध्वंहृदयंममेदं पाञ्चालराजस्यचसानुगस्य ॥ १७ ॥
पाण्डुर्हिराजाद्रुपदस्यराज्ञः प्रियःसखाचात्मसमोबभूव । तस्यैषकामोदुहितामग्रेयं स्नु
षांप्रदास्यामिहिकौरवाय ॥ १८ ॥ अयंहिकामोद्रुपदस्यराज्ञो हृदिस्थितो नित्यमनि
न्दिताङ्गाः। यदर्जुनोवै पृथुदीर्घबाहुर्धर्मेण विन्देतसुतांममैताम् ॥१९॥ कृतंहिततस्यात्
सुकृतंममेदं यशश्चपुण्यंचहितंतदेतत् । अथोक्तवाक्यंहिपुरोहितंस्थितंततो विनीतंसमु-
दीक्ष्यराजा ॥ २० ॥ समीपतोभीममिदंशशास प्रदीयतांपाद्यमर्घ्यं तथास्मै । मान्यः
पुरोधाद्रुपदस्य राज्ञस्तस्मै प्रयोज्याऽभ्यधिकाहिपूजा ॥ २१ ॥ भीमस्ततस्तत्कृतवान्न
रेन्द्र तांचैवपूजांप्रतिगृह्यहर्षात् । सुखोपविष्टन्तुपुरोहितं तदा युधिष्ठिरो ब्राह्मणमित्यु-
वाच ॥ २२ ॥ पांचालराजेनसुतानिसृष्टा स्वधर्मदृष्टेन यथानकामात् । प्रदिष्टशुल्का

कथा आद्योपान्त सुनाकर राजा पांचाल के, उन के साथियों के और मेरेहृदय में आनन्द
दें, शत्रुओंके सिरपर पांव रक्खें महाराज पांडु राजाद्रुपद के आत्मवत प्यारेसखा थे,
सो भूपाल द्रुपदकी यह चाहथी कि उनकी कन्या कृष्णा सखा पाण्डुकी पुत्रवधु बने।१८।
हे अनिन्दित रूपवान वीरों ! राजा द्रुपदके हृदयमन्दिर में सदा यह कामना रहतीथी
कि महाभुज अर्जुन धर्मानुसार उनकी कन्याको ब्याहें यदि वही हुआहो, तो उनके
लिये बडाहित पुण्यपूरित, यशयुक्त और सुकृत हुआ है । पुरोहित के नम्रभाव से यह
सब कह के चुपहोने पर पाण्डव राज ने उनकी ओर देख निकटस्थित भीमसेन को
आज्ञादी, कि इनको पाद्य अर्घ्यदो यह राजा द्रुपदके पुरोहित, बडेमाननीयहैं भलेप्रकार
इनको पूजनाचाहिये ।२१। हे नरनाथ ! भीमसेनने भाईकी आज्ञानुसार भलीभांति उनकी
पूजाकी, पुरोहित ब्राह्मणके पूजा लेकर प्रसन्न चित्तसे सुख पूर्वक बैठनेपर युधिष्ठिर उनसे
बोले, कि हे ब्राह्मण राजा पांचाल ने मनमाना कन्यादान नहीं किया है उन्हों ने निज

were the sons of Pandu .14.The priest went to them, sang praises of their bravery and gave out the king's message saying, "The king wishes to know all about you. He was much pleased to see this brave warrior hit the mark. Be pleased to let me know the history of your family and caste, make the king, his followers and myself happy and tread upon the heads of enemies. King Pandu was very dear to Draupad. , Drupad always desired that his daughter Krishna may become the daughter-in-law of Pandu.18.He always wished to make Arjun his son-in-law. He would be very happy if his hopes were realised." Having heard this from the priest Yudhishthir made sign to Bhim to wash his feet and to offer him a libation of water as a mark of respect worthy of the priest of king Draupad.21.Bhim did accordingly. The priest was much pleased and sat down near Yudhishthir who said, "King Drupad

द्रुपदेन राज्ञासा तेनवीरेणतथानुवृत्ता ॥ २३ ॥ नतत्रवर्णेषु कृताविवक्षानचापि शीले नकुलेनगोत्रे । कृतेनसज्येनहि कार्मुकेनविद्धेनलक्ष्येणहिसाविसृष्टा ॥२४॥ सेयंतथा नेनमहात्मनेहकृष्णा जितापार्थिवसंघमध्ये । नैवंगतेसौमकिरद्यराजा सन्तापमर्हत्य-सुखायकर्त्तुम् ॥ २५ ॥ कामश्चयोऽसौद्रुपदस्य राज्ञःसचापिसम्पत्स्यतिपार्थिवस्य । संप्राप्यरूपांहि नरेन्द्रकन्यामिमामहं ब्राह्मणसाधुमन्ये ॥ २६॥ नतद्धनुर्मन्दबलेनशक्यं मौर्व्यासमायोजयितुं तथाहि । नचाकृतास्त्रेणनहीनजेनलक्ष्यं तथापातयितुंहिशक्यम् ॥ २७ ॥ तस्मान्नतापंदुहितुर्निमित्तं पाञ्चालराजोऽर्हतिकर्त्तुमद्य । नचापितत्पातन-मन्यथेहकर्त्तुंहि शक्यंभुविमानवेन ॥ २८ ॥ एवंब्रुवत्येवयुधिष्ठिरेतु पाञ्चालराजस्य समीपतोऽन्यः । तत्राजगामाशुनरोद्वितीयो निवेदयिष्यन्निह सिद्धमन्नम् ॥ २९ ॥ इत्यादिपर्वणिवैवाहिकपर्वणि पुरोहितयुधिष्ठिरसंवादेचतुर्नवत्यधिकशतोऽध्यायः १९४

धर्म के अनुसार लक्ष्यभेद का प्रण करके कन्यादान करना निश्चय किया था, तिससेही इस वीर ने उनकी कन्या लाभकी है, अब जाति, कुल, शील गोत्रके पूछने के विषय में उनको कुछभी अधिकार नहीं है धनुषमें गुण चढाकर लक्ष्य भेदनेही पर वह सब पूछने के अधिकार खो चुके हैं ।२४। उन्हींके संकल्पसे यहमहात्मा सब राजाओंमेंसे द्रौपदीको जयकर लाया है, ऐसी दशा में सोमवंशी राजाद्रुपद का इससमय दुःख मानना केवल सुखसे हाथ धोनाहीहै पर उनकी जो चाहहै, वह पूरीहोगी, क्योंकि इस अतिरूपवती राजकुमारीके लक्षण भले दीखपडतेहैं।२६।जिसकी सामर्थ थोडीहै वह कभी उसशरासनमें गुण नहीं चढासकताहै और जो नीच जाति अथवा अस्त्रके व्यवहारसे ज्ञात नहींहै, वह भी कभी लक्ष्यको भेदकर धरतीपर गिरा नहीं सकताहै फिरभी इस भूमंडलभर में किसी को ऐसीसामर्थ नहींहै कि उस लक्ष्यका गिराना व्यर्थ कहे सो अब कन्या के लिये उनका दुःख मानना ठीक नहीं । युधिष्ठिर ऐसा कहरहे थे, कि राजा पांचाल से एक दूत यह कहनेको वहां आया, कि अन्न बना है ॥ २९ ॥

has not given away his daughter by his desire. He had promised to give her away to him who hitted the mark and this brave man has accordingly won her. He has now no authority to make enquiries about our caste and family. He had lost all power of making such enquiries as soon as the mark was hit. 24. This brave man has won her according to the king's wish and he should not grieve at his own doing. However his hopes will be realised as his daughter, this beautiful princess has marks of good luck. A weak fellow could not fix arrow to the bow, nor could a low caste or one who did not know the use of weapons, bring down the target to the ground. No one on the earth can say now that it was useless to hit it. The king's grief is therefore useless." Yudhishthir was saying so when a messenger from the king announced that food was ready.

दूत उवाच । जन्यार्थमन्नंद्रुपदेन राज्ञाविवाहहेतोरुपसंस्कृतंच । तदाप्नुवध्वं कृतसर्वकार्य्याः कृष्णांचतत्रैवाचिरंनकार्य्यम् ॥ १ ॥ इमेरथाःकाञ्चनपद्मचित्राःसदश्वयुक्तावसुधाधिपार्हाः । एतान्समारुह्यपरैतसर्वे पांचालराजस्यनिवेशनंतत् ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततःप्रयाताःकुरुपुङ्गवास्ते पुरोहितंतंपरियाप्यसर्वे । आस्थाय यानानिमहान्तितानि कुन्तीचकृष्णाचसहैकयाने ॥ ३ ॥ श्रुत्वातुवाक्याणिपुरोहितस्य यान्युक्तवान्भारतधर्मराजः । जिज्ञासयैवाथकुरुत्तमानां द्रव्याण्यनेकान्युपसञ्जहार ॥ ४ ॥ फलानिमाल्यानिचसंस्कृतानि वर्माणिचर्माणितथासनानि । गाश्चैवराजन्नथ चैवरज्जूर्बीजानिचान्यानि कृषीनिमित्तम् ॥ ५ ॥ अन्येषुशिल्पेषुचयान्यपिस्युः सर्वाणिकृत्यान्यखिलेनतत्र । क्रीड़ानिमित्तान्यपियानितत्र सर्वाणितत्रोपजहारराजा । ६ । वर्माणिचर्माणिचभानुमन्ति खड्गामहान्तोऽश्वरथाश्चचित्राः । धनूंषिचाग्र्याणिशराश्च

अध्याय ॥ १९५ ॥

दूतबोला, कि महाराज द्रुपदने व्याहनेकी इच्छा से बराती लोगों के लिये अच्छा अन्न बनवाया है । आप नित्यकृत्य पूरा कर शीघ्र वहां आवें, वहीं कृष्णाका बिवाहहोगा बिलम्ब न करें सुवर्ण पद्म सुहावने, अच्छे घोडेवाले यह सब रथ खडे हैं आप सबकोई इनपर चढ के पांचाल राजभवन में शुभागमन करें ।२। वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर कुरु श्रेष्ठ पाण्डव पुरोहितको विदाकर उन वडे २ यानोंमें से एक पर कुन्ती और कृष्णा को चढाय आप एक और पर चले इधर राजा पांचाल ने पुरोहितसे धर्मराज युधिष्ठिरके वचन सुन उनकी जाति की पहिचान और उपहार के लिये चारों वर्णयोग्य फल, सुन्दर सुन्दर माला, चर्म, वर्म, आसन, गौ, रस्सी, बीज, कृषीके दूसरे सब पदार्थ, शिलपयोग्य काटने कूटने के यन्त्र और क्रीडाकी वस्तु आदि भांति भांति के पदार्थ बटोरे । ६ । आगे चमकीला चर्म, वर्म और सुन्दर खड्ग, घोडे, रथ, अच्छे चाप, भांति भांति के

CHAPTER CXCV

The messenger said, " King Drupad has prepared a feast for the wedding guests. You may be pleased to go there after the performance of your daily worship. Make no delay: Krishna will be married there. Chariots with good horses are sent to take you to the palace."2. Vaishampayan said that after the departure of the priest the Pandavas seated Kunti and Krishna upon one of the Chariots and themselves occupied the other. On the other hand, having heard Yudhishthir's reply from the priest, the king collected various sorts of fruits, garlands, leather, fur, beds, cows, ropes seeds and other requisites of husbandry, tools, weapons, and requisites of games to make presents of and to test the caste.6. He also set apart bright leather, furs, swords, horses, chariots, good bows, arrows of

चित्राः शक्त्यृष्टयःकांचनभूषणाश्च ॥७॥ प्रासाभुशुण्ड्यश्चपरश्वधाश्च सांग्रामिकंचैव तथैहसर्वम् । शय्यासनान्युत्तमवस्तुवन्ति तथैववासोविविधञ्चतत्र ॥ ८ ॥ कुन्तीतु कृष्णांपरिगृह्य साध्वीमन्तःपुरंद्रुपदस्याविवेश। स्त्रियश्चतांकौरवराजपत्नीं प्रत्यर्चयामासुरदीनसत्त्वाः ॥ ९ ॥ तान्सिंह विक्रान्तगतीन्निरीक्ष महर्षभाक्षानजिनोत्तरीयान् । गूढोत्तरांसान् भुजगेन्द्रभोगप्रलम्बबाहून पुरुषप्रवीरान् ॥ १० ॥ राजाचराज्ञःसचिवाश्चसर्वे पुत्राश्चराज्ञःसुहृदस्तथैव । प्रेष्याश्चसर्वेनिखिलनराजन् हर्षसमापेतुरतीवतत्र ॥ ११ ॥ तेतत्रवीराःपरमासनेषु सपादपीठेष्वविषङ्कमानाः। यथानुपूर्वं विविशुर्नराग्र्यास्तथा महार्हेषुनविस्मयन्तः ॥ १२ ॥ उच्चावचंपार्थिवभोजनीयं पात्रीषुजाम्बूनदराजतीषु । दासाश्चदास्यश्चसुमृष्टवेशाः सम्भोजकाश्चाप्युपजह्रुरन्नम् ॥ १३ ॥ तेतत्र भुक्त्वापुरुषप्रवीरा यथात्मकामंसुभृशंप्रतीताः । उत्क्रम्यसर्वाणिवसूनि राजन् सांग्रा

वाण सुवर्ण से सजी शक्ति प्रास, भुशुण्डी और कुठार, युद्धयोग्य भांति भांतिकी दूसरी वस्तु और अच्छी सेज, घटाटोप बहुविध चीर आदि अनेक प्रकारकी सामग्री अलग २ रखदी ।८। अनन्तर कौरवराजपत्नी कुंतीसती द्रौपदीको लेकर राजा द्रुपद के अन्तःपुर में गई राजमहर्षियोंने प्रसन्न चित्तसे उनका स्वागत कर सम्मानित किया । हे राजन् ! अनन्तर राजा पांचाल उन के मन्त्री, पुत्र, मित्र टहलुये और राजपरिवारके दूसरे लोग मृगचर्म का दुपट्टा लिये आगये हुए पाण्डवोंकी सिंहसमान विक्रमी चाल, बडे बैलसदृश आंख, सर्पराजकी देहकी भांति लटके भुज और बडे स्कन्ध देख आनन्दित हुए ।११। वे नरश्रेष्ठ वीरगण बिना आश्चर्य और निडर चित्त से अलग अलग पादपीठयुक्त अति सुन्दर मूल्यवान आसनोंपर बडे छोटे के क्रम से बैठगये अनन्तर अच्छे लिवास गहनोंसे बनेठने टहलुये महरिन और खिलाने पिलानेवालोंने यथायोग्य सुवर्ण और चांदीके वर्तनोंमें परम स्वादिष्ट राजाओंके भोजनयोग्य अन्नपानादि भांति भांतिकी सामग्री लाकर देदी।१३। हेमहाराज ! पुरुषोंमें वीर पाण्डव मनमाने भोजनकर तृप्तहुए और उपहारकी वस्तुओं में

sorts, golden missiles and other implements of war, nice bed clothes, tents, clothes and other articles.8. Kunti and Draupadi entered the female apartments of the king and were welcomed by the queens. The king of Panchal and his ministers, sons, friends, attendants and kinsmen were overjoyed to see the lion like gait, large bull like eyes, arms hanging like serpents, and large shoulders of the Pandavas who entered with their deerskins.11. The brave princes, without any amazements or fear sat down on precious seats in the order of their age. Attendants in gaudy dresses brought food worthy of kings, in gold and silver vessels. When the feast was over they began to inspect the implements of war among presents and

पिकेंतत्रिविशुर्न्वीराः ॥ १४ ॥ तल्लक्षयित्वाद्रुपदस्यपुत्रो राजाचसर्वैःसहमन्त्रिमुख्यैः।
समर्थयामासुरुपेत्य हृष्टाःकुन्तीसुतानपार्थिव राजपुत्रान ॥ १५ ॥
इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि युधिष्ठिरादिपरीक्षणे पंचनवत्यधिकशतोऽध्यायः १९५
वैशम्पायन उवाच। ततआहूय पांचाल्योराजपुत्रं युधिष्ठिरम् परिग्रहेणब्राह्मेण
परिगृह्यमहाद्युतिः ॥ १ ॥ पर्य्यपृच्छददीनात्मा कुन्तीपुत्रंसुवर्च्चसम्। कथञ्जानीम
भवतःक्षत्रियान् ब्राह्मणानुत ॥ २ ॥ वैश्यानवागुणसम्पन्नानथवा शूद्रयोनिजान्।
मायामास्थायवाविप्रांश्चरतः सर्वतोदिशम् ॥ ३ ॥ कृष्णाहेतोरनुप्राप्ता देवाःसन्दर्श
नार्थिनः। ब्रवीतुनोभवान्सत्यं सन्देहोह्यत्रनो महान् ॥ ४ ॥ अपिनःसंशयस्यान्ते
मनः सन्तुष्टिमावहेत्। अपिनोभागधेयानि शुभानिस्युःपरन्तप ॥ ५ ॥ इच्छयाब्रूहि
तत्सत्यं सत्यंराजसुशोभते। इष्टापूर्त्तेनचतथा वक्तव्यमनृतंनतु ॥ ६ ॥ श्रुत्वाह्यमर

से दूसरी सब तजकर केवल लडाई योग्य पदार्थों को देखने लगे। तब राजा द्रुपद और उन के पुत्र और प्रधान प्रधान मन्त्री यह देख कुंतीकुमारों को राजकुमार निश्चय कर आनन्द मनाने लगे ॥ १५ ॥

अध्याय १९६ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर अति द्युतिमान पांचाल्य द्रुपद, बडे तेजस्वी राज-पुत्र युधिष्ठिरको सम्भाषण करके विना दुःख ब्राह्मण योग्य आदर के साथ बोले, कि तुमको ब्राह्मण, क्षत्रिय, गुणवान वैश्य वा शूद्र इन में से कौनसी जाति समझूं! अथवा तुम देवताता नहीं हो, कि देखनेके लिये माया लेकर ब्राह्मणों के स्वरूपमें टहलते हुए कृष्णा के निमित्त यहां शुभागमन किया है? तुम सचकहो इस विषय में हमको शंका हुई है।४।हेशत्रुमथन! क्या इस शंका के दूरहोने से हमारे हृदय में आनन्दजल वर्षेगा क्या हमारा सौभाग्य उगाहै हेअगर-डगवन! अपनी इच्छा से सत्य वचनबोलो राजाके सामने सच कहना, जितनी शोभा है इष्टापूर्त्त अर्थात् यज्ञादि क्रिया और ताल

gave no attention to other articles. King Drupad and his sons and ministers knew that they were the sons of a king and were overjoyed. 15.

CHAPTER CXCVI

Vaishampayan said that then the glorious king of Panchal, Drupad talked with them cheerfully showing respect worthy of Brahmans and said, "Are you Brahmans, Kshatryas, virtuous Vaishyas, Shudras, or gods in the disguise of Brahmans come for the sake of Krishna? Let me know the truth and remove my doubt. 4, Will it be good for us to remove our doubt? Has fortune favoured us? Let us know the truth. (One should speak the truth before kings.) (Sacrifices and charity can not bo equal to

सङ्काशतत्ववाक्यमरिन्दम । श्रुत्वं विवाहकरणमास्थास्यामि विधानतः ॥७॥ युधिष्ठिर उवाच । माराजन्विमनाभूस्त्वं पांचाल्यप्रीतिरस्तुते । ईप्सितस्तेध्रुवःकामः सम्वृत्तोऽयमसंशयम् ॥८॥ वयंहिक्षत्रियाराजन् पाण्डोःपुत्रामहात्मनः । ज्येष्ठंमांविद्धि कौन्तेयं भीमसेनार्जुनाविमौ ९ आभ्यांतवसुताराजन्निर्ज्जिता राजसंसदि।यमौचतत्र कुन्ती चयत्र कृष्णाव्यवास्थिता ।१०। व्येतुतेमानसंदुःखंक्षत्रियाःस्मोनरर्षभ । पद्मिनीवसुतेयंतेहृदाद न्यहृदंगता।११।इतितथ्यंमहाराजसर्वमेतदब्रवीमिते।भवान्हिगुरुरस्माकंपरमंचपरायणम् ।१२।वैशम्पायनउवाच । ततःसद्रुपदोराजा हर्षव्याकुललोचनः।प्रतिवक्तुंमुदायुक्तो नाशकत्तंयुधिष्ठिरम् ॥१३॥ यत्नेनतुसतंहर्षं सन्निगृह्यपरन्तपः । अनुरूपंतदावाचा प्रत्युवाचयुधिष्ठिरम् ॥ १४ ॥ पप्रच्छचैनंधर्मात्मा यथातेप्रद्रुताःपुरात् । सतस्मै सर्वगाचख्यावानुपूर्व्वेण पाण्डवः ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वाद्रुपदोराजा कुन्तीपुत्रस्यभाषितम् ।

प्रतिष्ठा आदि पुण्यदायी कर्मभी उतनी शोभा नहीं देते, सो असत्य न कहना। हे शत्रु मथन ! मैं तुम्हारा वचन सुन के यथा रीति तुम्हारी जातियोग्य विवाह करने का उद्योग करूंगा । ७ । युधिष्ठिर बोले कि हे पांचालनाथ ! आप दुःख न मानें, सन्तोष करें, सन्देह नहीं, कि आप का मनोरथ सफल हुआ है । हे महाराज ! हम क्षत्रिय वंशी महात्मा राजा पाण्डु के पुत्र हैं । मैं कुन्ती का ज्येष्ठ पुत्र हूं, यह दो भीमार्ज्जुन हैं, इन्होंने ही राजसभा में आपकी कन्या जयकरली है और जहां कृष्णा है वहीं, यमज भ्राता नकुल सहदेव और माता विराज रही हैं । १० । सो आप हमको क्षत्रिय निश्चयकरलें; हे नरसिंह ! आप मनका दुःख दूरकरें ; पद्मिनीसमान आपकी यह कन्या एक झीलसे दूसरे झीलमें लायी गयी है । हे महाराज ! आप हमारे गुरु और परम गतिहैं सो आपसे यह सब ब्योरा सचकह दिया । १२ । श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि हे महाराज ! अनन्तर शत्रु डरावने धर्म्मधर राजा द्रुपद पाण्डवोंका परिचय पाकर परम हर्षसे घवराकर युधिष्ठिरको योग्य उत्तर न देसके । वह उसहर्षको यत्नसे दबाकर धर्म्मराज से काल

---

truth.) Do not tell a lie. I shall perform wedding ceremonies in accordance with the caste to which you belong."7. Be not grieved, king of Panchal," said Yudhishthir, "no doubt your desire has been realised. We are Kshatryas and sons of king Pandu. I am the eldest son of Kunti. These two are Bhim and Arjun who won your daughter. The twins Nakul and Sahdev are with Krishna and mother.10.So you may believe us to be Kshatryas. Relieve your troubles. (Your daughter has been transferred from one lake to another.) You are our elder. I have spoken the truth." Vaishampayan said that Drupad the destroyer of enemies, having known them to be Pandavas was unable to return a suitable reply to Yudhishthir for excess of joy. He suppressed his joy and asked

विगर्हयामासतदा धृतराष्ट्रंनरेश्वरम् ॥१६॥ आश्वासयामासच तं कुन्तीपुत्रंयुधिष्ठिरम्। प्रतिजज्ञेचराज्याय द्रुपदोवदतांवरः ॥१७॥ ततःकुन्तीचकृष्णाच भीमसेनार्जुनावपि। यमौचराज्ञासन्दिष्टं विविशुर्भवनंमहत् ॥१८॥ तत्रतेन्यवसन् राजन्यज्ञसेनेन पूजिताः। प्रत्याश्वस्तस्ततोराजा सहपुत्रैरुवाचतम् ॥ १९ ॥ गृह्णातुविधिवत् पाणिमद्यायंकुरुनन्दनः। पुण्येऽहनिमहाबाहुरर्जुनः कुरुतांक्षणम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच। तमब्रवीत्ततोराजा धर्मात्माचयुधिष्ठिरः । ममापिदारसम्बन्धः कार्य्यस्तावद्विशाम्पते ॥ ॥ २१ ॥ द्रुपद उवाच। भवान्वाविधिवत्पाणिं गृह्णातुदुहितुर्मम । यस्यवामन्यसे वीर तस्यकृष्णामुपादिश ॥ २२ ॥ युधिष्ठिर उवाच। सर्वेषांमहिषी राजन्द्रौपदीनो भविष्यति। एवंप्रव्याहृतंपूर्वं ममपात्राविशाम्पते ॥ २३ ॥ अहञ्चाप्यनिविष्टोवै भीमसेनश्चपाण्डवः। पार्थेनविजिताचैषा रत्नभूतासुतातव ॥२४॥ एषनःसमयोराजन्

योग्य वचन बोले। १४। पूछा, कि वे क्योंकर वारणावत नगरसे भागेथे। पाण्डुपुत्रने आद्योपान्त वह सब कथा कह सुनायी। वचनशील राजा द्रुपद उनकी बात सुनकर नरनाथ धृतराष्ट्रकी निन्दा करने लगे। १६। और कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको ढाड़स दे उनको राज्यमें बैठाने की प्रतिज्ञाकी। अनन्तर कुन्ती द्रौपदी भीम, अर्ज्जुन नकुल और सहदेव राजाकी आज्ञासे एक बडे भवनमें गये। १८। हे महाराज! वे राजा यज्ञसेन से सम्मान पाकर उस भवनमें बसने लगे। अनन्तर राजापुत्रों के साथ सोचतज युधिष्ठिरसे बोले, कि आज शुभ दिन है, आज कुरुनन्दन अर्ज्जुन विवाहके कौलिक कर्म्मों को करके कृष्णासे विवाह करें। २०। श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि हे महाराज! धर्म्मात्मा युधिष्ठिर उनसे बोले, कि हे नरनाथ! मुझकोभी विवाह करना है। द्रुपदने कहा, कि हे वीर! तुमहीं विधि पूर्व्वक मेरी बेटीका पाणिग्रहणकरो, अथवा तुम जिससे कृष्णाको ब्याहा चाहो उसीसे ब्याहो। २२। युधिष्ठिर बोले, कि महात्मा! द्रौपदी हम सबोंकी रानी बनेगी, क्योंकि पहिले मेरी माताने ऐसी आज्ञाकी है, विशेष मेरा और भीमसेनका विवाह नहीं हुआ है; यद्यपि अर्ज्जुनने

Yudhishthir how they had escaped from Barnavat. Yudhishthir told him what had happened from beginning to end. Drupad spoke in grievous terms of king Dhritrashtra and promised to help them to regain their kingdom.17. Then Kunti, Draupadi, Bhim, Arjun, Nakul and Sahdeo were put up in a large place and lived in great respect. When all doubts of king Drupad had vanished away he said to Yudhishthir, "To day is an auspicious day. Let us join Arjun's hand with Krishna." 20. Vaishampayan said that Yudhishthir the just then replied, "I am also to be married." Drupad said, "You may yourself marry Krishna or let one of your brothers do so." Yudhishthir said, "Draupadi will be the queen of us all as our mother has permitted it. Specially, when

रत्नम्यसहभोजनम् । नचतंहातुमिच्छामः समयंराजसत्तम ॥ २५ ॥ सर्वेषांधर्म
तःकृष्णा महिषीनोभविष्यति । आनुपूर्व्येणसर्वेषां गृह्णातुज्वलनेकरान् ॥ २६ ॥
द्रुपद उवाच । एकस्यबह्व्योविहिता महिष्यःकुरुनन्दन । नैकस्याबहवःपुंसः श्रूयन्ते
पतयःक्वचित् ॥ २७ ॥ लोकवेदविरुद्धंत्वं नाधर्मंधर्मविच्छुचिः । कर्तुमर्हसिकौन्तेय
कस्मात्तेबुद्धिरीदृशी ॥२८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । सूक्ष्मोधर्मोमहाराज नास्यविद्मोवयं
गतिम् । पूर्वेषामानुपूर्व्येण यातंवर्त्मानुयामहे ॥ २९ ॥ नमेवागनृतंप्राह नाधर्मेधीयते
मतिः । एवंचैवचदत्यम्बा ममचैतन्मनोगतम् ॥ ३० ॥ एषधर्मोध्रुवो राजंश्चरैनमविचा
रयन् । माचशङ्कातत्रतेस्यात् कथञ्चिदपिपार्थिव ॥ ३१ ॥ द्रुपद उवाच । त्वंचकुन्ती

तुम्हारी रत्नसदृश कन्याको बाजी में जीत लिया है पर हे राजेन्द्र ! हम भाइयों में एक नियमहै, कि रत्न पाने से हम सब एकत्र होकर भोग करेंगे । हम उस नियम के विरुद्ध चलनेका साहस नहीं रखते; सो द्रौपदी हम सबोंकी धर्म्मपत्नी होगी; वह अग्नि के सामने बड़े छोटे के क्रमसे हम सबोंसे विवाह करे । २६ । द्रुपद बोले, कि कुरुनन्दन ! शास्त्रकी विधिसे एक पुरुषकी बहुत स्त्रीहोती हैं, परएक नारिके बहुपति होना कभी नहीं सुना । हे कुन्तीपुत्र ! तुम पवित्र और धर्म्मके जानकार होकरके भी क्योंकर लोक और वेदके विरोधी कर्म्ममें हाथ डाला चाहते हो! क्यों तुम्हारी ऐसी बुद्धि हुई।२८।युधिष्ठिर बोले, महाराज ! धर्म्ममार्ग सूक्ष्म है,उसकी गति हम जान नहीं सकते । पर प्रचेताआदि पहिले के महात्मा जिस पथसे चले हैं हम उसी पथसे चलेंगे । हे राजन् ! मेरी माताने वह आज्ञा दी है और वह मेराभी मनमाना हुआ है; सो वह अवश्यही सनातन धर्म्म है, क्योंकि मेरे वागेन्द्रियसे कभी झूंठ नहीं निकलती और मेरा मनभी अधर्म्म की ओर नहीं चलता । आप इस मतसे कामकरें, अधिक विचारनेका प्रयोजन नहीं हैं। ३०। हे पृथ्वीनाथ ! इस विषय में आप कोई शङ्का न करें । द्रुपदबोले, कि हे कुन्तीपुत्र ! तुम,

Bhim and I are unmarried Arjun can not marry her although he won her. . All the brothers have agreed amongst ourselves to enjoy the jewel that we have got. We dare not do against this rule. Draupadi will, therefore, be wife to us all. Let her be married to all of us in the order of our ages "26. Drupad said. "One woman can be the wife of only one man according to law. I have never heard several men marrying the same woman. Knowing all the ways of religion and Vedas, how are you set upon doing such thing. Why have you thought it proper ?"28. Yudhishthir said, "The way of Dharm is very fine. We cannot know the true significance of it. We shall, however act as Pracheta and others have done before us. My mother has permitted it and I also approve of it. It is, therefore, lawful. For, I never tell a lie, nor does my mind ever incline

चकौन्तेय धृष्टद्युम्नश्चमेसुतः । कथयन्त्विति कर्त्तव्यं श्वःकालेकरवामहे ॥ ३२ ॥
वैशम्पायन उवाच । तेसमेत्यततःसर्वे कथयन्तिस्मभारत । अथद्वैपायनो राजन्नभ्या
गच्छद्यदृच्छया ॥ ३३ ॥
इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि द्वैपायनागमने षण्णवत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १९६ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततस्तेपाण्डवाःसर्वे पांचाल्यश्चमहायशाः । प्रत्युत्थायमहात्मानं कृष्णंसर्वेऽभ्यवादयन् ॥ १ ॥ प्रतिनन्द्यसतांपूजां दृष्ट्वाकुशलमन्ततः । आसने कांचनेशुद्धे निषसादमहामनाः ॥ २ ॥ अनुज्ञातास्तुतेसर्वे कृष्णेनामिततेजसा । आसनेषुमहार्हेषु निषेदुर्द्विपदांवराः ॥ ३ ॥ ततोमुहूर्त्तान्मधुरां वाणीमुच्चार्यपार्षतः । पप्रच्छतंमहात्मानं द्रौपद्यर्थेविशाम्पते ॥४ ॥ कथमेकाबहूनां स्याद्धर्मपत्नीनसङ्करः ।

कुन्ती और मेरा पुत्र धृष्टद्युम्न यह तीन मिलके विचार कर जोकरना है, निश्चय करलो मैं कलजो करना हो, करूंगा । वैशम्पायनने कहा कि हे भारत ! कुन्ती युधिष्ठिर और धृष्टद्युम्न यह तीन एकत्र होकर उस विषयमें विचार करनेलगे । ऐसे समय में भगवान द्वैपायन आपही वहां आ पहुंचे ॥ ३३ ॥

अध्याय ॥१९७ ॥

वैशम्पायनबोले कि अनन्तर सब पाण्डव बड़े यशवन्त राजा पाञ्चाल और वहां के दूसरे लोगोंने उठकर महात्मा कृष्ण द्वैपायनका स्वागत किया । महानुभव महर्षि उनका प्रणाम आदर पूर्व्वक लेकर कुशलक्षेम पूछकर सुन्दर सुवर्णके आसन पर वैठे ।२। पाण्डव आदि सबने अति तेजस्वी कृष्ण द्वैपायनकी आज्ञासे महामूल्य आसन लिये । हे पृथ्वीनाथ ! पृषतराज पुत्र राजा पाञ्चालने क्षण भर पीछे मधुरवचन कहके महात्मा ऋषिसे द्रौपदी के व्याहने के विषयमें प्रश्न किया ।४। हे भगवन! सच कहो, कि एक स्त्री

---

towards sin. You will act accordingly without hesitation or doubt."30.Drupad said, "You, Kunti, and Dhrishtadyumn hold a consultation together to determine what is to be done.I shall act accordingly tomorrow." Vaishampayan said that thereupon Kunti, Yudhishthir and Dhrishtadyumn held consultation together. In the meantime Rishi Vyas arrived 33.

CHAPTER CXCVII

Vaishampayan said that the Pandavas, the king of Panchal and others present respectfully welcomed Maharshi Vyas. The Rishi asked about their welfare and sat down on a golden seat.2. The Pandavas and others sat down by his permission. After sometime, the king humbly asked the opinion of the Rishi on the subject of Draupadi's marriage and whether a woman married to several men did not give birth to children of mixed descent. Vyas said, "This

एतन्मेभगवान्सर्वं प्रब्रवीतुयथातथम् ॥ ५ ॥ व्यास उवाच । अस्मिन्धर्मे विप्रल-
ब्धेलोकवेदविरोधके । यस्ययस्यमतं यद्यच्छ्रोतुमिच्छामितस्यतत् ॥ ६ ॥ द्रुपद
उवाच । अधर्मोऽयंममतो विरुद्धोलोकवेदयोः । नह्येकाविद्यतेपत्नी बहूनांद्विजसत्तम
॥ ७ ॥ नचाप्याचरितःपूर्वैरयंधर्मोमहात्मभिः। नचाप्यधर्मो विद्वद्भिश्चरितव्यः कथं-
चन ॥ ८ ॥ ततोऽहंनकरोम्येनं व्यवसायक्रियांप्रति । धर्मःसदैवसन्दिग्धः प्रतिभा
तिहिमेत्वयम् ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्न उवाच । यवीयसःकथंभार्य्यां ज्येष्ठोभ्राताद्विजर्षभ।
ब्रह्मन्समभिवर्तेत सद्वृत्तःसंस्तपोधन ॥ १० ॥ नतुधर्मस्यसूक्ष्मत्वाद्गतिं विद्मःकथं-
चन । अधर्मोधर्मइतिवाव्यवसायो नशक्यते ॥ ११ ॥ कर्तुमस्माद्विधैर्ब्रह्मंस्ततोऽयं न
व्यवस्यते । पंचानांमहिषीकृष्णा भवत्वितिकथञ्चन ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
नमेवागनृतंप्राह नाधर्मेधीयतेमतिः । वर्त्ततेहिमनोमेऽत्र नैषोऽधर्मःकथञ्चन ॥ १३ ॥

के बहुत पुरुषोंकी धर्म्मपत्नी होने से सङ्करताका दोष पहुंचता है कि नहीं । व्यासजी बोले, कि बेद और लोकाचार में प्रसिद्ध न रहनेसे यह धर्म्म लोप होगया है, पर इस विषय में तुममें से किसका क्या मतहै, सुना चाहताहूं ।६। द्रुपद बोले,कि हे द्विज श्रेष्ठ कहीं अनेक पुरुषोंकी एकस्त्री नहीं हैं; सो यह कर्म्म लोकाचार और वेदके विरोधी होने के कारण अधर्म्मयुक्त जान पडताहै; पहिले के महात्माओं ने भी ऐसा कार्य्य नहीं किया विद्वान उनको किसी प्रकार अधर्म्म मार्गमें पांवडालना नचाहिये।८। इसलिये मैं इसकाम में हाथ डालने का साहस नहीं करसकता हूं: यह धर्म्म मुझको सदा सन्देह से भराहुआ प्रतीत होरहाहै धृष्टद्युम्न बोले, कि हे ब्रह्मन् ! आप द्विजों में श्रेष्ठ और तपोबल से बली हैं, कहें तो सही, कि बडाभाई सुमार्गीहोकर क्योंकर छोटेभाईकी स्त्रीसे मिलसक्ताहै।१०। धर्म बहुत सूक्ष्म है, सो कौनसा विषय धर्मयुक्त और कौन अधर्मयुक्तहै, इसका विचार नहीं कर सकते, इसीसे साहस पूर्वक यह नहीं कहा, कि द्रौपदी पांच पुरुषोंकी स्त्री बने ।१२। युधिष्ठिर बोले, कि मेरावचन कभी उलट पलट बात नहीं होती, मनभी कभी

practice has been forgotten by long disuse. However, I wish to hear your opinions seperately."6. Drupad said. "We find nowhere one woman having several husbands. The practice being against the Vedic and lay principles is open to objection. Men of former times never did such a thing. The wise should never walk in the path of sin. 8. I, therefore, dare not do it. This practice appears doubtful to me." Dhrishtadyumna said, "You are the best of Brahmans and Rishis. Tell me, how the elder brother can, with due regard to virtue, meet the wife of his younger brother. 10. The ways of Dharm are very subtle. One cannot say whether a thing is in accordance with Dharm or not. I dared not, therefore, vote for Draupadi becoming the wife of five men." Yudhishthir said, "I never tell

श्रूयतेहिपुराणेऽपि जटिलानामगौतमी । ऋषीनध्यासितवती सप्तधर्मभृताम्वरा ॥
॥ १४ ॥ तथैवमुनिजावार्क्षी तपोभिर्भावितात्मनः । सङ्गताभूदश भ्रातृनेकनाम्नःप्र-
चेतसः ॥ १५ ॥ गुरोर्हिवचनंप्राहुर्धर्म्यं धर्मज्ञसत्तम । गुरूणाञ्चैवसर्वेषां मातापरम-
कोगुरुः ॥ १६ ॥ साचाप्युक्तवतीवाचं भैक्ष्यवद्भुज्यतामिति । तस्मादेतदहंमन्ये परं
धर्मंद्विजोत्तम ॥ १७ ॥ कुन्त्युवाच । एवमेतद्यथाप्राह धर्मचारीयुधिष्ठिर । अनृतान्मे
भयंतीव्रं मुच्येऽहमनृतात्कथम् ॥ १८ ॥ व्यास उवाच । अनृतान्मोक्ष्यसेभद्रे धर्म-
श्चैषसनातनः । नतुवक्ष्यामिसर्वेषां पांचालश्रृणुमेस्वयम् ॥ १९ ॥ यथायंविहितोधर्मो
यतश्चायंसनातनः । यथाचप्राह कौन्तेयस्तथाधर्मोन संशयः ॥ २० ॥ वैशम्पायन

अधर्म पर नहीं झुकता, इस विषय में मेरा मनभी दौडरहाहै, सो यह किसीप्रकार धर्मके विरोधी जान नहीं पडता। पुराणों मेंभी सुनाहै, कि जटिला नाम्नी गौतमगोत्रकी धर्म पालनेवाली तापसी एककन्याथी,सातऋषियोंने उससे विवाह कियाथा।१४।और पूर्वकाल में तपस्वी जितेन्द्रिय प्रचेता इस एक नाम के दशभाई थे, वृक्षसे उपजीहुई एक मुनि कन्या उन दशोंसे व्याहीथी। हेधर्मके जानकारों में श्रेष्ठ! कहा है, कि गुरु जैसीआज्ञा करते हैं वही धर्मयुक्तहै, और सबगुरुओंमें माताही परमगुरु है।१६।उनपरमगुरु माताने हमको आज्ञा दीहै, कि भीखकी सामग्रीको तुम सब मिलकर भोगो। हे द्विजोत्तम! मैंने इस लिये इस कर्म को परमधर्म विचारा है। कुन्ती बोली, धर्म चारी युधिष्ठिर ने जैसा कहा, वह ठीकही है, मेरी यहबात झूठी न ठहरजाय इस लिये मैं बहुत भय खा गयी हूं हे ब्रह्मन्! क्योंकर मेरी उस बातकी सच्चाई बनी रहेगी।१८। व्यासबोले, कि भद्रे तुम्हारी बातकी सचाई बनी रहेगी, तुम ने जो कहाहै वह सनातन धर्म है। हेपांचाल! युधिष्ठिर ने जो कहाहै वही धर्मयुक्त है इस में कोई शंका नहीं है यह जिसप्रकार जिनसे सनातन धर्म करके निश्चय कियागया वह सबों से नहीं कहूंगा, केवल तुमही सुनो।२०।

a lie, nor does my mind ever bend towards sin. My mind is inclined towards it and I do not think it is unlawful. There is a story in the Purans of Jatla, a woman ascetic of Gautam family, who was the wife to seven Rishis. 14. In former times there were ten brothers whose common names were Pracheta. They all married the daughter of a Muni. It is said that the word of preceptor is law. A mother holds the highest position among preceptors. Our mother directed us to enjoy the thing brought as alms and the word of my mother is law to me." Kunti said, "It is true what Yudhishthir says. I fear lest my word may prove a lie. How can my word prove true, Brahman?" 18. Vyas said, "Your word shall be true. It is the way of our forefathers. There is no doubt, king of Panchal, in the word of Yudhishthir being in accordance with law. I shall tell you

उवाच । ततउत्थायभगवान् व्यासोद्वैपायनःप्रभुः । करेगृहीत्वाराजानं राजवेश्मसमाविशत् ॥ २१ ॥ पाण्डवाश्चापिकुन्तीच धृष्टद्युम्नश्चपार्षतः । विविशुर्यत्रतत्रैव प्रतीक्षन्तेस्मतावुभौ ॥ २२ ॥ ततोद्वैपायनस्तस्मै नरेन्द्रायमहात्मने । आचख्यौतद्यथाधर्मो बहूनामेकपत्निता ॥ २३ ॥

इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि व्यासवाक्ये सप्तनवत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १९७ ॥

व्यास उवाच । पुरावै नैमिषारण्ये देवाःसत्रमुपासते । तत्रवैवस्वतोराजन् शामित्रमकरोत्तदा ॥ १ ॥ ततोयमोदीक्षितस्तत्र राजन्नामारयत् कञ्चिदपिप्रजानाम् । ततःप्रजास्तावहुलावभूवुः कालातिपातान्मरणप्रहीणाः ॥ २ ॥ सोमश्चशक्रोवरुणः कुवेरः साध्यारुद्रावसवोऽथाश्विनौच । प्रजापतिर्भुवनस्यप्रणेता समाजग्मुस्तत्र देवास्तथान्ये ॥ ३ ॥ ततोऽब्रुवन्लोकगुरुं समेता भयात्तीव्रान्मानुषाणांविवृद्ध्या । त

वैशम्पायनने कहा, कि अनन्तर प्रभु द्वैपायन भगवान व्यासजी उठकर राजाका हाथ थामकर राजमन्दिरको गये कुन्ती, पाण्डव और धृष्टद्युम्न उन दोनोंकी बाट ताकते हुए वहीं बैठरहे अनन्तर महर्षि द्वैपायन महात्मा द्रुपद से यह कथा कहने लगे, कि अनेक पुरुषोंकी एक स्त्री होना धर्म के विरुद्ध नहीं है ॥ २३ ॥

अध्याय १९८ ॥

श्री व्यासजी ने कहा, कि महाराज पहिले नैमिषारण्यमें देवों ने महायज्ञ आरम्भ कियाथा । उस महायज्ञ में वैवस्वत यम पशु मारने को नियुक्त हुए थे । वह उस काम में प्रवृत्त रहकर किसी प्रजाको नहीं मारते थे, इस से मनुष्यों के मृत्युसे बचनेपर देवताओं का भय दिनोदिन बढनेलगा ।२। अनन्तर चन्द्र, इन्द्र, वरुण, कुवेर, दोनों अश्विनीकुमार, साध्यगण, रुद्रगण, वसुगण और दूसरे देवगण भुवन रचने वाले प्रजापति के निकट जा पहुँचे, और सब मिलकर मनुष्योंकी संख्या वृद्धिहोने के कारण भीतचित्तसे लोकों के

in private who did follow that practice." Vaishampayan said that Vyas then took Drupad by hand and led him into a separate compartment of the palace. Kunti, the Pandavas and Dhrishtadyumna had to wait for their arrival. Then Vyas told the history, given below, showing that it was not unlawful for one woman to become wife to more than one man. 23.

CHAPTER CXCVIII

Vaishampayan said that in former times the gods performed a sacrifice in the forest of Naimish. Vaivaswat Yam was appointed to kill animals. Being engaged in that work he no longer killed human beings whose number increased day by day to the great consternation of the gods. 2. At length Chandra, Indra, Barun, Kuver, the twin Aswins, the Sadhyas, the Rudras, the Vasus and other gods

स्माद्भयादुद्विजन्तः सुखेप्सवः मयामसर्वेशरणं भवन्तम् ॥ ४ ॥ पितामह उवाच ।
किंवोभयंमानुषेभ्यो यूयंसर्वेयदामराः । मावोमर्त्यसकाशाद्वै भयंभवितुमर्हति ॥ ५ ॥
देवा ऊचुः । मर्त्याअमर्त्याःसंवृत्ता नविशेषोऽस्तिकश्चन । अविशेषादुद्विजन्तो विशेषा
र्थमिहागताः ।६। भगवानुवाच । वैवस्वतोव्यापृतः सत्रहेतोस्तेन त्विमेनम्रियन्तेमनुष्याः
तस्मिन्नेकाग्रेकृतसर्वकार्य्ये ततएषांभवितैवान्तकालः ।७। वैवस्वतस्यैव तनुर्विभक्ता
वीर्य्येणयुष्माकसुतप्रवृद्धा । सैषामन्तोभविताह्यन्तकाले नतत्रवीर्य्यं भवितानरेषु ॥८॥
व्यास उवाच । ततस्तुतेपूर्वजदेववाक्यं श्रुत्वाजग्मुर्यत्रदेवायजन्ते । समासीनास्तसमे
तामहाबला भागीरथ्यांददृशुः पुण्डरीकम् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वाचतद्विस्मितास्ते बभूवुस्तेषामि
न्द्रस्तत्रशूरोजगाम । सोऽपश्यद्योषामथ पावकप्रभां यत्रदेवीगङ्गासततंप्रसूता ॥१०॥

गुरु ब्रह्माजीसे बोले, मनुष्योंकी संख्या बढनेसे हम बडेभय से उदास हैं, और सुखकी आशा से आपकी शरण लेते हैं।४।पितामहबोले, कि मनुष्योंसे तुम्हें क्या भय है तुम सब अमरहो,सो मरनेवालोंसे तुमको भयखाना नहीं चाहिये देवगणबोले कि अब मर्त्यगण अमर हुए हैं, सो हमलोगोंसे कोई विशेषता नहीं रही, इस लिये हम उदासहो उन से अपना प्रभेद बनाये रखनेकी चाहसे यहांआये हैं ।६। भगवानबोले, कि तपनपुत्र इसकाल में यज्ञ में लगेहैं, सो नरोंकी मृत्यु नहीं होरही, पर उन के यज्ञके सम्पूर्ण कार्यहोजानेपर मानवों का अन्तकाल आ पहुँचे गा तब यमराजका शरीर तुम्हारेही वीर्य्य से सजकर और बढ कर जीवनाशी बन जायगा, मनुष्योंको कुछ वीर्य नहीं रहेगा । श्रीव्यासजी बोले, कि अनन्तर महाबली देवगण पितामहका वचन सुनकर नैमिषारण्य में यज्ञ भूमिपर गये । वे उसीजगह ठहरे थे, कि ऐसे समय में देखा, कि भागीरथीके जल में एक सुवर्ण पद्म बहाजाताहै ।९। उस के देखतेही वे अचम्भे में होरहे, अनन्तर यह ढूंढनेके लिये, कि वह सोनेका कमल कहां से उपजा है, उन मेंसे शूरतायुक्त इन्द्र वहांसे चल निकले जहां से गंगाजी निकलती हैं, वहां पहुँचकर उन्होंने अग्निकी शोभा के समान एक उजली कन्या

came to Brahma the creator of the world, expressed their fears at the increase in the number of human beings and asked Brahma's protection. 4. The grandfather asked what fear they could have from human beings for immortals should have no fear from mortals. The gods said that, as human beings died no longer and were placed in the same level with gods, they were the cause of dissatisfaction among them. Brahma replied that human beings were safe from death only so long as Yam was engaged in the sacrifice. After the sacrifice they would again become mortals as they were. Having heard this from Brahma the gods returned to the forest where the sacrifice was held. There they saw a golden lotus floating over the water of the Ganges and were amazed. The brave

सातत्रयोषारुदतीजलार्थिनी गङ्गांदेवींव्यवगाह्यव्यतिष्ठत । तस्याश्रुविन्दुःपतितोजले यस्तत् पद्ममासीदथतत्र काञ्चनम् ॥ ११ ॥ तदद्भुतंप्रेक्ष्यवज्रीतदानीमपृच्छत्तां योषितमान्तिकाद्वै । कात्वंभद्रेरोदिषिकस्य हेतोर्वाक्यं तथ्यंकामयेऽहंब्रवीहि ॥ १२ ॥ स्त्र्युवाच । त्वंवेत्स्यसेमामिहयास्मिशक्र यदर्थंचाहंरोदिमिमन्दभाग्या । आगच्छ राजन्पुरतोगमिष्ये द्रष्टासितद्रोदिमियत्कृतेऽहम् ॥ १३ ॥ व्यास उवाच । तांगच्छन्तीमन्वगच्छत्तदानीं सोऽपश्यदारात्तरुणंदर्शनीयम् । सिंहासनस्थंयुवतीसहायं क्रीडन्तमक्षैर्गिरिराजमूर्ध्नि ॥ १४ ॥ तमब्रवीद्देवराजोममेदंत्वं विद्धिविद्वन्भुवनंवशेस्थितम् । ईशोऽहमस्मीतिसमन्युरब्रवीद्दृष्ट्वा तमक्षैःसुभृशंप्रमत्तम् ॥१५॥ क्रुद्धञ्चशक्रंप्रसमीक्ष्य देवोजहासशक्रञ्चशनैरुदैक्षत । संस्ताम्भितोऽभूदथ देवराजस्तेनेक्षितःस्थाणुरिवावतस्थे

देखी वह नारी रोतीहुई जलकी चाह से गंगाजीमें देह डुबा रही थी उसकी आंसु के बूंदें गंगा जलमें गिरकर सुवर्ण कमल बनजाते थे देवराज वैसी अचम्भी लीला देखके उस के पास जाकरबोले, कि भद्रे!तुम कौनहो और क्यों रोरहीहो ? मैं इसका व्योरा जानाचाहता हूं ।१२।बालाबोली, कि देवराज ! मैं बडी अभागीहूं, तुम मेरेसंग चलो, तो जान सकोगे कि मैं कौन और क्यों रोरही हूं हेमहाराज ! तुम मेरेसाथ आओ, मैं तुम्हारे आगे चलती हूं मेरी रुलाई का कारण तुम देखलोगे। श्री व्यासजी बोले, कि देवराज तब नारीकी यह बात सुन कर उस के पीछे पीछे चलने लगे । आगे कुछ दूर जाकर पासही हिमाचलकी चोटी पर देखा, कि एक परम सुन्दर युवा पुरुष युवती के साथ सिंहासन पर बैठे चौसर खेल रहे हैं । सुरनाथ उनको चौसरमें बडेमग्न देखकर बोले।१५।कि अजी पण्डितवर ! जानना, कि यह तीनों भुवन मेरेही वशमें हैं । इसपर पुरुषके कोई उत्तर न देने पर इन्द्रने क्रोधके मारे फिर कहा, कि मैं भूमण्डल भरका अर्धांश हूं । तब उन

Indra started in quest of the place from where the flower had come. Coming to the source of the Ganges, he saw a girl bright like fire weeping and washing her body in the water. Her tear drops were transformed into golden lotuses. Seeing the wonderful sight Indra was much amazed and asked her who she was and why she wept. The girl replied that she was very unfortunate and asked him to follow her if he wanted to know who she was and why she was weeping. Indra followed her and on a peak of the Himalayas saw a youth on a throne playing at chess with a young woman. The chief of gods, seeing him wholly engaged, said, " You must know, wise man, that I have authority over the three regions." He received no reply and said again angrily, " I am the lord of the world." Hearing the angry voice of Indra, he turned his eyes towards him. His one look was sufficient to deprive Indra of the

॥ १६ ॥ यदातुपर्य्याप्तविहास्यक्रीडया तदादेवींरुदन्तींतामुवाच । आनीयतामेष
यतोऽहमारान्नैनं दर्पःपुनरप्याविशेत ॥ १७ ॥ ततःशक्रःस्पृष्टमात्रस्तयातुस्रस्तैरङ्गैः
पतितोऽभूद्धरण्याम् । तमब्रवीद्भगवानुग्रतेजा मैवंपुनःशक्रकथाःकथंचित् ॥ १८ ॥
निवर्त्तयैनञ्चमहाद्रिराजं बलंचवीर्यंचतवाप्रमेयम् ।छिद्रस्यचैवाविशमध्यमस्य यत्रासते
त्वद्विधाःसूर्य्यभासः ॥ १९॥ सतद्विवृत्यविवरं महागिरेस्तुल्यद्युतींश्चतुरोऽन्यान्ददर्श।
सतानभिप्रेक्ष्य बभूवदुःखितः कच्चिन्नाहंभवितावैयथेमे ॥ २० ॥ ततोदेवोगिरिशो
वज्रपाणिंविवृत्य नेत्रेकुपितोऽभ्युवाच । दरीमेतांप्रविशत्वंशतक्रतो यन्मांबाल्यादव-
मस्थाःपुरस्तात् ॥ २१ ॥ उक्तस्त्वेवंविभुनादेवराजः प्रवेपतार्त्तोभृशमेवाभिषङ्गात् ।

खेलते हुए पुरुषने देवराजको क्रोधित देख एकवार उनकी ओर आंखें फेरीं । देवराज
उनकी आखों के सामने पडतेही जडवत बनगये । अनन्तर वह पुरुष चौसर खेल लेनेके
पीछे उस रोती हुई बालासे बोले कि तुम इस इन्द्रको लाओ, उसको शासन कर दूंगा,
कि वह मेरे सामने फिर अहङ्कार न प्रगट करे । अनन्तर उस नारीके देवराज को लाने
के लिये छूतेही देवराजके अंग अवश हुए और वह धरती पर गिर पडे । तब उन पुरुष
रूपी कठोर तेजस्वी भगवान महादेवजी ने उनसे कहा।१८। कि इन्द्र ! तुम किसीप्रकारसे
फिर कभी ऐसा काम न करना ! तुम्हारा बलवीर्य्य बहुत अधिक है; सो तुम इस गड्ढे
के द्वारा रोके हुए बडे पर्व्वतको खोलकर बिलके भीतर जा घुसो; तुम वहां देखोगे कि
तुम्हारे समान सूर्य्यवत प्रकाशवान बहुत इन्द्र हैं । तब देवराज ने पर्व्वतराज के उस
बिलके द्वारको खोलकर उसमें अपने ऐसे दूसरे चार इन्द्रोंको देखा । वह उनको देखते ही
यह कहकर दुःख करने लगे, कि " मुझकोभी ऐसी दशामें रहना न पडे ! तब देवदेव
महेश्वर क्रोधसे नेत्र फैलाकर इन्द्रसे बोले कि हेइन्द्र ! तू इस बिलमें जा गिर, क्योंकि पहिले
तूने चपलतासे मेराअनादर किया है।२१।इन्द्र विभु के क्रोधित वचन से अतिकातरहोकर

power of motion. After finishing his play he said to the weeping girl, " Bring this Indra. I shall punish him that he may not again show his pride before me." Indra, whose limbs were benumbed, fell down at her touch. The glorious Mahadeo then said, " You should never do so again. You are very powerful. Remove this mountain barring entrance to yonder pit and lie down in it. There you will see other Indras glorious like the sun." Indra opening the mountain door of the cave saw four Indras like himself and was afraid for his own safety. Mahadeo, the god of gods, with anger in his eyes then told him to fall down into the pit for his having been disrespectful. Indra spook with fear like the leaves of a Pipal tree on a mountain moved by the wind. Hearing these harsh words from Mahadeo who rode his ox, he joined his hand in

स्रस्तैरंगैरनिलेनेव नुन्नमश्वत्थपत्रंगिरिराजमूर्ध्नि ॥ २२ ॥ सप्राञ्जलिर्वैवृषवाहनेन प्रवेपमानः सहसैवमुक्तः । उवाचदेवंवहुरूपमुग्रं मद्याशेषस्यभुवनस्यत्वं भवाद्यः ॥२३॥ तमब्रवीदुग्रवर्च्चाःप्रहस्य नैवंशीलाःशेषमिहाप्नुवन्ति । एतेऽप्येवंभवितारः पुरस्तात्तस्मा देतां दरीमाविशास्वैवशेष्व ॥ २४ ॥ तत्रह्येवंभवितारोनसंशयो योनिंसर्वेमानुषीमाविशध्वम् । तत्रयूयंकर्मकृत्वाविषह्यं वहूनन्यान्निधनंप्रापयित्वा ॥ २५ ॥ आगन्तारः पुनरेवन्द्रलोकं स्वकर्मणापूर्वचितंमहार्हम् । सर्वंमयाभाषितमेतदेवंकर्त्तव्यमन्यद्विविधार्थयुक्तम् ॥ २६ ॥ पूर्वेन्द्रा ऊचुः । गमिष्यामोमानुषं देवलोकाद्दुराधरो विहितोयत्र मोक्षः । देवास्त्वस्मानादधीरन् जनन्यांधर्मोवायुर्मघवानश्विनौच । अस्त्रैर्दिव्यैर्मानुषान्

इस प्रकार वेगसे कांपने लगे, कि जैसे पहाड परके पीपलके पत्ते हवासे डोलाये जाकर थरथरातेहैं । वह बैलपर चढे महादेवजी से एकायक ऐसी कटीलीबात सुनकर थरथराये हुए दोनों हाथ जोडकर अनेकरूप लेनेवाले उन कठोर देवसे बोले।२३।कि हेआदिनाथ ! हे भव ! तुम चराचर सहित सम्पूर्ण विश्वके देखने वाले हो, तुम सब कुछ जानलेते हो। तब कठोर तेजस्वी महादेवजी हंसकर बोले, कि मैं उन पर कभी प्रसन्न नहीं होता, जो लोग ऐसा अहंकारी स्वभाव रखतेहैं । देखो, पहिले यह सब इन्द्र ऐसाही कर्म्म कर इस विलमें जा गिरे हैं, सो तुमभी उसमें जाकर लेटरहो।२५।सन्देह नहीं है, कि तुम सबोंका यही हाल होगा कि तुम पांचों को मनुष्य जन्म लेकर मर्त्यलोक में अनेक भांतिके कठोर कर्म्म करने पडेंगे अनेक जीवोंको मारकर पहिले के जीत लिये हुए अति मूल्यवान इन्द्र-लोकमें शुभागमन करोगे ; तुम्हारे लिये मैंने ऐसाही निश्चय किया है । पहिले इन्द्रलोग बोले कि हम पांचों देवलोकसे मर्त्यलोक की उसठौरको जायंगे कि जहां मोक्षका मिलना कठिन है ; पर हमारी प्रार्थना यह है, कि उस स्त्रीके कि जो हमारी माता होगी, धर्म्म, वायु, मघवान और दोनों अश्विनी कुमार यह पांचदेव हमारे लिये गर्भाधान करें । हम

a supplicatory attitude to the great god of manifold forms and said, "Thou seest everything, movable and immovable, in the world. Thou knowest all." The glorious Mahadeo replied, "I am never pleased with those who are so proud. All these Indras have fallen into this pit by such conduct. You, too, will fall into this pit.25.You five will have to be born among the mortals. After doing hard work and killing many creatures you will be able to win back the great region of Indra formerly won by you. I have decided this for you." The former Indras said, "We five shall go from the country of gods to that of mortals where salvation is hard to attain. We have but this request that our mother may conceive by Dharm, Vayu, Indra and the twin Aswins. We shall go into the country of mortals to fight against men and then shall return

योधयित्वा आगन्तारःपुनरेवेन्द्रलोकम् ॥ २७ ॥ व्यास उवाच । एतच्छ्रुत्वावज्रपा-
णिर्वचस्तु देवश्रेष्ठंपुनरेवेदमाह । वीर्य्येणाहंपुरुषं कार्य्यहेतोर्दद्यामेषां पञ्चमंमत्प्रसूतम्
॥ २८ ॥ विश्वभुग्भूतधामाच शिबिरिन्द्रःप्रतापवान् । शान्तिश्चतुर्थस्तेषां वैतेजस्वी
पञ्चमःस्मृतः ॥ २९ ॥ तेषांकामं भगवानुग्रधन्वा प्रादादिष्टं सन्निसर्गाद्यथोक्तम् ।
तांचाप्येषांयोषितं लोककान्तां श्रियंभार्य्यां व्यदधान्मानुषेषु ॥ ३० ॥ तैरेवसार्द्ध-
न्तुततःसदेवो जगामनारायणमप्रमेयम् । अनन्तमव्यक्तमजंपुराणं सनातनंविश्वमनन्त
रूपम् ॥ ३१ ॥ सचापितद्व्यदधात्सर्वमेवततः सर्वेसम्बभूवुर्द्धरण्याम् । सचापिकेशौहरि-
रुद्बबर्ह शुक्लमेकमपरंचापिकृष्णम् ॥ ३२ ॥ तौचापिकेशौनिविशेतां यदूनां कुलेस्त्रियौ
देवकींरोहिणींच । तयोरेकोबलदेवोबभूव योऽसौश्वेतस्तस्य देवस्यकेशः । कृष्णोद्वि-
तीयःकेशवःसम्बभूव केशोयोऽसौवर्णतः कृष्णउक्तः ॥ ३३ ॥ येतेपूर्वंशक्ररूपानिब-

मर्त्यलोक में अनेक मनुष्योंसे लडेंगे; फिर इन्द्रलोकमें आवेंगे।२७। व्यास बोले, कि इन्द्र-
जी देवपति देवसे बोले, कि मैं स्वयं न जाकर कार्य्य पूरा करने के लिये निज वीर्य्यसे
एक पुरुष उपजा दूंगा। अनन्तर भगवान् पिनाकधारीने दया-स्वभाव से विश्वभुक, भूत-
धामा, शिवि, शांति और तेजस्वी इन प्रतापी पांचइन्द्रोंकी प्रार्थना मानली और लोकोंके
मन हरनेवाली स्वर्गकी श्री उसबालाको मर्त्य लोक में उनकी पत्नी बनानेका विधान कर
दिया।२९।आगे वह देव उनको साथ लेकर अप्रमेय नारायणके पासगये भगवान श्रीनारा
यणजीने यह सब जान कर उस विषयमें अपनी सम्मति दी अनन्तर वे भूमण्डल में जन्म
लेनेलगे भगवान् हरि ने अपनी शक्तिरूपी कृष्ण और शुक्ल इन दो वरणोंके दो केश
उखाडदिये।३२।वे केश यदुवंशमें रोहिणी और देवकीके गर्भमें जाकर प्रविष्टहुए श्रीनारायण
जीके उस शुक्लकेश ने बलदेवजीके स्वरूपमें जन्म लिया है और कालेवरणका वह दूसरा
केश स्वरूपके अनुसार कृष्ण बनकर उपजाहै इन्द्ररूपी जोचारपुरुष उस पर्वतकी कन्दरा

to the region of Indra."27. Vyas said that Indra requested the god of gods, " I may be allowed not to go there in person. I shall bring forth a son." Mahadeo kindly granted the requests of the five Indras, named respectively, Vishwa-Bhuk, Bhoot-dhama, Shivi, Shanti, and Tejaswi, and the heart enchanting Shree of heaven, that young woman, was ordained to become their wife.29. The god then took them to Narayan who having learnt all that had happened, was of the same opinion. They were born on the Earth. Hari gave away a black and a white hair,32. They entered the conceptions of Dewaki and Rohini in the family of Yadu. The white hair of Narayan was born as *Baldeo* and the black one, according to its colour, was Krishna. The four Indras, captives in the montain cave, were born as Pandavas. The former Indras were themselves

द्धास्तस्यांदर्य्यापर्वतस्योत्तरस्य । इहैवतेपाण्डवावीर्य्यवन्तः शक्रस्यांशःपाण्डवःसव्य
साची ॥ ३४ ॥ एवमेतेपाण्डवाःसम्बभूवुर्येते राजन्पूर्वमिन्द्राबभूवुः । लक्ष्मीश्चैषां
पूर्वमेवोपदिष्टा भार्य्यायैषाद्रौपदीदिव्यरूपा ॥ ३५ ॥ कथंहिस्त्रीकर्मणांते महीतला
त्समुत्तिष्ठेदन्यतो दैवयोगात् । यस्यारूपंसोमसूर्य्यप्रकाशं गन्धश्चास्याःक्रोशमात्रात्
प्रवाति ॥ ३६ ॥ इदंचान्यत्प्रीतिपूर्वंनरेन्द्र ददानितवरमत्यद्भुतञ्च । दिव्यञ्चक्षुः
पश्यकुन्तीसुतांस्त्वं पुण्यैर्दिव्यैःपूर्वदेहैरुपेतान् ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततो
व्यासःपरमोदारकर्मा शुचिर्विप्रस्तपसातस्यराज्ञः । चक्षुर्दिव्यंप्रददौतांश्च सर्वान्राजा
पश्यत् पूर्वदेहैर्यथावत् ॥ ३८ ॥ ततोदिव्यान् हेमकिरीटमालिनः शक्रप्रख्यान्पावका
दित्यवर्णान् । बद्धापीडांश्चारुरूपांश्च यूनो व्यूढोरस्कांस्तालमात्रान्ददर्श ॥ ३९ ॥
दिव्यैर्वस्त्रैरजोभिः सुगन्धैर्माल्यैश्चाग्र्यैः शोभमानानतीव ।साक्षात्त्र्यक्षान्वा वसूंश्चा-

में बधु ये थे उन्होंने इस मर्त्य लोक में पाण्डवोंके स्वरूप में जन्म लिया है पाण्डव सव्य
साची इन्द्र के अंश से उपजे हैं हेमहाराज जो पहिले इन्द्र थे वे इसप्रकारसे पाण्डवों के
रूप में अवतीर्ण हुए हैं और जिस दिव्यरूपिणी स्वर्ग-लक्ष्मीकी बात कही गयी है वही
यह द्रौपदी है यह पहिलेही निश्चय हुआ है कि यह इन सबोंकी पत्नी बनेगी।३५।देखो,
जिसकारूप चन्द्रमा और सूर्यके उजालेकी भांतिहै और जिसकी सुगंध कोसभरतक पहुं-
चती है, वह क्या स्त्री दैवसंयोगके बिना धरतीसे निकलसकती है हे नरनाथ ! मैं प्रीति
पूर्वक तुमको अति आश्चर्य दिव्य नेत्रोंका वर देताहूं, उस से तुम कुन्ती पुत्रों को दिव्य
और पवित्र पहिलेकी देहमें देखलोगे।३७।वैशम्पायनने कहा कि अनन्तर परम उदारकर्मा
पवित्र विप्रवरश्रीव्यासजी के तपो-बल से उस राजाको दिव्य नेत्र देनेपर राजा ने
सब पाण्डवोंको यथावत पूर्व देह में देखा उन्होंने उनको सुवर्ण किरीट और मालापहिने
इन्द्र और सूर्य के समान उजाले रंगसे रंगे अच्छे अलंकारों से सुन्दर रूपसे सजे,
तरुण, विशाल छातीवाले पांचहांथसे कुछ कम ऊंचे और इन्द्ररूपी देखा सर्व गुणयुक्त,

born as Pandavas. Draupadi was the heavenly goddess Lakshmi mentioned above. It had been already settled that she should be married to all of them. 35. For a woman like the sun or the moon in beauty and sending out her fragrance for a mile could not be born on the earth without being a goddess. Vyas then gave the king the power of mental vision to enable him to see the sons of Kunti in their former state. Vaishampayan said that on finding such vision by the grace of Vyas, the king saw them in their former state with gold crowns, decked with various bright ornaments, young, broad chests, a little less than five hands tall and resembling Indra. He was much pleased at seeing their clean heavenly clothes and fragrant garlands. The former Indras looked like Trilochan, Vasus, Rudras, or Adityas and Arjun the son of Indra closely resembled

पिरुद्रानादित्यान् वा सर्वगुणोपपन्नान् ॥ ४० ॥ तानपूर्वेन्द्रानभिवीक्ष्याभिरूपान्
शक्रात्मजंचेन्द्ररूपं निशम्य । प्रीतोराजाद्रुपदो विस्मितश्च दिव्यांमायां तामवेक्ष्याप्र-
मेयाम् ॥ ४१ ॥ तांचैवाग्र्यां स्त्रियमतिरूपयुक्तां दिव्यां साक्षात्सोमवह्निप्रकाशाम् ॥
योग्यांतेषांरूपतेजोयशोभिःपत्नीं मत्वाहृष्टवान्पार्थिवेन्द्रः ॥ ४२ ॥ सतदृष्ट्वामहदाश्च-
र्यरूपं जग्राहपादौसत्यवत्याःसुतस्य । नैतच्चित्रंपरमर्षेत्वयीति प्रसन्नचेताःसउवाच
चैनम् ॥ ४३ ॥ व्यास उवाच । आसीत्तपोवनेकाचिदृषेः कन्यामहात्मनः । नाध्य-
गच्छत्पतिंसातु कन्यारूपवतीसती ॥४४॥ तोषयामासतपसा साकिलोग्रेणशङ्करम् ।
तामुवाचेश्वरःप्रीतो वृणुकाममितिस्वयम् ॥ ४५ ॥ सैवमुक्त्वाब्रवीत्कन्या देवंवरदमी
श्वरम् । पतिंसर्वगुणोपेतमिच्छामीति पुनःपुनः ॥ ४६ ॥ ददौतस्मैसदेवेशस्तं वरंप्री
तमानसः । पंचतेपतयोभद्रे भविष्यन्तीतिशङ्करः ॥ ४७ ॥ साप्रसादयतीदेव मिदंभू-

अमल स्वर्ग चीर पहिने और अच्छीसुगन्धयुक्त मालासे सजे पहिलेके इन्द्रोंकी भांति उन पाण्डवोंको साक्षात् त्रिलोचन वा वसुगण, रुद्रगण, अथवा आदित्यगण के समान देख कर और इन्द्रपुत्र अर्जुनको साक्षात् इन्द्ररूपी निहारकर प्रसन्नहुए।४०।फिर उस अप्रमेय दिव्यमायाको देखकर और अचरजमानकर चंद्रमा और अग्निसमान प्रकाशवती लक्ष्मीजी सदृश परम रूपवती, श्रेष्ठतमा उस स्वर्ग-कन्याको उस के रूप, तेज और यशके द्वारा उनकी स्त्रीबननेके योग्य समझा।४२।राजाद्रुपद उस अतिआश्चर्य लीलाको देखकर सत्य-वती पुत्र के पांव छूकर बोले, कि हेपरमर्षे ! मुझको दिव्य नेत्र देकर इन सब आश्चर्य रूपोंका दिखाना आप के लिये कोई बडीबात नहीं है अनन्तर द्वैपायन प्रसन्न चित्त से फिरबोले, कि एक तपोवन में किसी महात्मा ऋषिकी एक कन्याथी वह कन्या रूपवती युवती और सतीहोनेपरभी पति पा नहीं सकी थी, सो कठोरतप कर शंकरको प्रसन्न किया।स्वयं वरदाता देवोंके ईश्वर प्रसन्नहोकरबोले कि अपना मनमाना वर मांगो ।४५। कन्या यह सुन कर हडबडीमें वरदाता ईश्वर से बार बार बोली, कि मैं सर्वगुण शीलपति को मांगती हूं देवनाथ शंकरने प्रसन्न मन से यह कहकर वर दिया कि भद्रे तुम्हारेपांच

his father. He was amazed at seeing the heavenly sight and believed that the heavenly girl, beautiful like Lakshmi and luminous like the sun, the moon or fire, was fit to be their wife.42. Having seen that wonderful sight, king Drupad touched the feet of Vyas and said, "It was not difficult for you to have given me the power to see their amazing shapes," Dwaiyayan then said cheerfully, "There was in a Tapoban the daughter of a certain ascetic. She did not get a husband in spite of her great beauty and virtues. She pleased Shankar by severe asciticism. The god of gods and giver of boons himself told her to ask a boon.45. In a hurry the girl said again and again that she wanted a virtuous husband. Shankar the

योऽभ्यभाषत । एकंपतिंगुणोपेतं त्वत्तोऽर्हामीतिशङ्कर ॥ ४८ ॥ तांदेवदेवः प्रीतात्मा पुन प्राहशुभंवचः । पंचकृत्वस्त्वयोक्तोऽहं पतिंदेहीतिवैपुनः ॥ ४९ ॥ तत्तथाभविता भद्रे वचस्तद्भद्रमस्तुते । देहमन्यंगतायास्ते सर्वमेतद्भविष्यति ॥ ५० ॥ द्रुपदैषाहि साजज्ञे सुतावैदेवरूपिणी । पंचानांविहितापत्नी कृष्णापार्षत्यनिन्दिता ॥ ५१ ॥ स्वर्गश्रीःपाण्डवार्थन्तु समुत्पन्नामहामखे । सेहतप्त्वातपोघोरं दुहितृत्वंतवागता ।५२। सैषादेवीरुचिरादेवजुष्टा पंचानामेकास्वकृतेनेह कर्मणा। सृष्टास्वयंदेवपत्नी स्वयम्भुवा श्रुत्वाराजन्द्रुपदेष्टं कुरुष्व ॥ ५३ ॥

इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि पंचेन्द्रोपाख्याने अष्टनवत्यधिकशतोऽध्यायः ॥१९८॥

द्रुपद उवाच । अश्रुत्वैवंवचनंतेमहर्षे मयापूर्वंयतितंसम्विधातुम् । नवैशक्यंविहि

पतिहोंगे।४७।शिवकी कृपा लाभकीहुई वह बाला वरदाता देवसे फिरबोली, कि हेशंकर मैं आप से गुणशीलयुक्त एक पतिकी प्रार्थना करतीहूं प्रसन्नात्मा देव-देवने उस से फिर यह शुभवचन कहे कि भद्रे तुम ने यहकहकर कि पति दो मुझ से पांचवार प्रार्थनाकी है, सो तुम्हारे पांच पतिहोंगे, तुम्हारा मंगलहोवे, मेरीबात न पलटेगी दूसरे जन्ममें तुम्हारे पांचपतिहोंगे।५०।हेद्रुपद देवरूपिणी अनिन्दिता वह तुम्हारीकन्या पांच मनुष्योंकी पत्नी होने के लिये निश्चय कीगईहै स्वर्गकी श्री यहबाला कठोर तपकर के पाण्डवों के लिये महामख से उपजकर तुम्हारी कन्याहुईहै, देवों से सेवीजातीहुई वह सुन्दरी यह देवी स्वकृत कर्मसे अकेली पांचमनुष्योंकी स्त्रीहोगी इस अभिप्राय से विधाताने स्वयं इसको रचाहै हेमहाराज द्रुपद तुम ने सबकथा सुनली अब जो चाहो सो करो ॥ ५३ ॥

अध्याय १९९ ॥

द्रुपदबोले, कि महर्षे मैंने पहिले आप से यह न सुने रहने से वैसा विधान करने का प्रयत्न कियाथा, अब विशेष ।तहुआ, देवताके ठहरायेहुए बिषयकी कभी उपेक्षा

god of gods granted her request cheefully and said that she should have five husbands. On this the girl said that she wanted only one husband. But Shankar replied that as she had asked him five times to give a husband she should get five and that his word was irrevocable.50. This daughter of yours, Drupad, has been ordained to get five husbands. The heavenly Lakshmi, after severe asceticism, is born as your daughter to become the wife of the Pandavas. This girl, praised by gods, shall become the wife of five men as a result of her own doing. The Creator, Himself, has made her for this purpose. Drupad, you have now heard all and are at liberty to do as you like."53.

CHAPTER CXCIX

Draupad said, "I was against the proceeding before I had heard this from you. I am now wiser One can not act against

तस्यापयानं तदेवेदमुपपन्नंविधानम्॥१॥दिष्टस्यग्रन्थिरनिवर्त्तनीयः स्वकर्मणा विहितं नेहकिंचित् । कृतंनिमित्तंहि वरैकहेतोस्तदेवेदमुपपन्नं विधानम ॥२॥ यथैवकृष्णोक्तवतीपुरस्तान्नैकान् पतीन्मेभगवान्ददातु । सचाप्येवंवरमित्यब्रवीत्तांदेवोहिवेत्तापरमं यदत्र॥३॥यदिचैवंविहितःशङ्करेण धर्मोऽधर्मोवानात्रममापराधःगृह्णन्त्विमे विधिवत्पाणिमस्या यथोपजोषं विहितैषांहिकृष्णा ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोऽब्रवीद्भगवान्धर्मराजमद्यैव पुण्याहमुतवःपाण्डवेयाः । अद्यपौष्यं योगमुपैतिचन्द्रमाः पाणिं कृष्णायास्त्वं गृहाणाद्यपूर्वम् ॥५॥ ततोराजायज्ञसेनः सपुत्रोजन्यार्थमुक्तं बहुतत्तद्ग्रयम् । समानयामाससुतान्च कृष्णामाप्लाव्य रत्नैर्बहुभिर्विभूष्य ॥ ६ ॥ ततस्तुसर्वे सुहृदोनृपस्यसमाजग्मुः सहितामन्त्रिणश्च । द्रष्टुंविवाहंपरमप्रतीता द्विजाश्चपौराश्च

नहीं कीजासकती है, अतएव पहिलेके ठहराये हुए विधान के अनुसारही कर्तव्य निश्चय करता हूं। भाग्यकी गांठ पलटी नहीं जासकती, निज कर्मसे कुछहोता नहीं, एक वर के लिये लक्ष्य रचाथा, वही अब पांचके लिये निश्चयहोगया।२।कृष्णा पहिले जन्म में जिस प्रकार पांचवार बोली थी, कि मुझको वर दें, उसहीप्रकार भगवान् नेभी कहा था कि तुमको पांच पतिकाही वर मिलताहै, सो इस बातकी भलाई बुराई वही जानते हैं, जब भगवान शंकरने ऐसा विधान किया है, और इन्हींके लिये कृष्णा बनाई गई है तब यह चाहे धर्म वा अधर्म होवे मुझको कोई दोष नहीं लगसकता यह लोग विधि के विधान से सुखपूर्वक द्रौपदीसे विवाह करें ।४। वैशम्पायन ने कहा कि उनन्तर भगवान महर्षि धर्मराज से बोले, कि हेयुधिष्ठिर आज शुभ दिनहै, चन्द्रमा पौष्टिकयोग प्राप्त करेगा, सो पहिले तुम आज द्रौपदी से विवाह करो । भगवान द्वैपायन के ऐसा कहने पर पुत्र सहित राजा यज्ञसेन कन्याको व्याहने का प्रयत्न करने लगे । वह दान के लिये यथा योग्य अनेक अच्छी अच्छी सामग्री बटोर कर और द्रौपदी को भांति २ के रत्न अलङ्कारोंसे सजाकर लिवा लांय ।६।राजाके मित्र और मन्त्री तथा ब्राह्मण और दूसरे पुरवासी

the decrees of gods. I shall do now as has been arranged before. No one can alter the knot of fate. One can not bring about the result he wishes by his deeds. The hitting of mark was meant for one husband ; but it has now resulted in bringing five husbands. In her former life Krishna had asked five times for a husband and she was accordingly granted the boon of five husbands. They know the propriety or otherwise of the thing. When Shankar has ordained so and she has been created for those five, I am not concerned in the doing of it. They may marry her according to due rites." 4. Vaishampayan said that the Rishi then told Yudhishthir to marry Draupadi, the day being auspicious. King Drupad and his son made preparations for the wedding. They collected various articles to be given with the bride and decked her with precious

यथाप्रधानाः ॥ ७ ॥ ततोऽस्यवेश्माग्र्यजनोपशोभितं विस्तीर्णपद्मोत्पलभूषिताजिरम् । बलौघरत्नौघविचित्रमाबभौ नभोयथानिर्मलतारकान्वितम् ॥ ८ ॥ ततस्तुतेकौरव्यराजपुत्रा विभूषिताःकुण्डलिनोयुवानः ।महार्हवस्त्राम्बरचन्दनोक्षिताः कृताभिषेकाः कृतमङ्गलक्रियाः ॥ ९ ॥ पुरोहितनाग्निसमानवर्चसा सहैवधौम्येनयथाविधिप्रभो । क्रमेणसर्वेविविशुस्ततःसदो महर्षभागोष्ठमिवाभिनन्दिनः ॥ १० ॥ ततःसमाधायस वेदपारगोजुहाव मन्त्रैर्ज्वलितंहुताशनम् । युधिष्ठिरंचाप्युपनीय मन्त्रविन्नियोजयामास सहैवकृष्णया ॥११॥ प्रदक्षिणंतौप्रगृहीतपाणी परिणयामासस्सवेदपारगः । ततोऽभ्यनुज्ञाय तमाजिशोभिनं पुरोहितोराजगृहाद्विनिर्ययौ ॥ १२ ॥ क्रमेनचानेन नराधिपात्मजा वरस्त्रियस्तेजगृहुस्तदाकरम् । अहन्यहन्युत्तमरूपधारिणो महारथाःकौरववंश

सब विवाह को देखने के लिये, प्रसन्न चित्त से अपनी अपनी प्रधानता के अनुसार मिल कर आने लगे । राज--भवन का आंगन पद्म आदि जल से उपजे हुए अनेक फूलोंकी बड़ी बडी माला से सजा था; सम्मानित जनों के शुभागमन से उसकी अपूर्व्व शोभा हुई । वह राज भवन यथा योग्य जगहमें सजी सजाई सेना और भांति भांतिके विचित्र रत्नों से खचित होकर ऐसी सुन्दर शोभापाने लगा, कि जैसे आकाशमण्डल नक्षत्रोंकी मण्डली से ढँपे जाकर परमरूप से सुशोभित हो ।८। हे प्रभो ! अनन्तर जलतीहुई बालुकाकी भांति तेजस्वी पुरोहित धौम्यसे पाण्डवोंके अभिषेक और माङ्गलिक क्रिया करलेने पर तरुण अवस्था वाले पांडुपुत्र गण नाना वस्त्र आभूषणोंसे सजकर सुगन्धी चन्दनलगाकर और कुण्डल पहिरे गोशाला में घूसते हुए बडे बडे वैलोंकी भांति बड़े आनन्द की उमंगसे उससभामें जा पहुंचे । १० । अनन्तर मन्त्र के जानकार वेद दक्ष धौम्य अग्नि स्थापन कर जलती हुई आग में यथा विधि मन्त्र पढकर आहुति चढ़ाने लगे; आगे आगे युधिष्ठिर को लाकर द्रौपदी से गांठ जोड़ देने पर बर और कन्या दोनों ने अग्नि की परिक्रमा कर पाणिग्रहण किया देवदत्त पुरोहित उनकी विवाह क्रिया पूरी कर युद्ध में पण्डित युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर राज भवनसे पधारे इसप्रकार महारथी कौरववंश के

jewels. The friends and ministers of the king as well as Brahmans and other citizens came there to see the nuptials. The courtyard of the palace was decorated with garlands of flowers and looked very grand by the presence of respectful people there. The palace, with the soldiers in gaudy dresses stationed in proper places and abundance of jewels looked like the sky studded with stars. 8. The glorious priest Dhaumya sprinked holy water over the Pandavas and they entered the great hall in precious dresses, wearing ear-rings and other ornaments, with cheerful hearts walking like bulls. The wise and learned Dhaumya poured libations into fire along with the incantations of Vedic hymns. The hands of Yudhishthir and Draupadi were united and after tying the marriage knot they were

वर्द्धनाः ॥ १३ ॥ इदञ्चतत्राद्भुतरूपमुत्तमं जगाद देवर्षिरतीतमानुषम् । महानुभावा
किलसासुमध्यमा बभूवकन्यैवगतेगतेऽहनि ॥ १४ ॥ कृतेविवाहेद्रुपदोधनं ददौमहा
रथेभ्योबहुरूपमुत्तमम् । शतंरथानांवरहेममालिनां चतुर्युजांहेमखलीनमालिनाम् ॥१५॥
शतंगजानामपिपद्मिनां तथाशतंगिरीणामिव हेमशृङ्गिणाम् । तथैवदासीशतमग्र्ययौ
वनं महार्हवेशाभरणाम्बरस्रजम् ॥ १६ ॥ पृथक्पृथग्दिव्यदृशां पुनर्ददौतदाधनं
सौमकिरग्निसाक्षिकम् । तथैववस्त्राणिविभूषणानि प्रभावयुक्तानिमहानुभावः ॥१७॥
कृतेविवाहेचततस्तुपाण्डवाः प्रभूतरत्नामुपलभ्यतां श्रियम् । विजह्रुरिन्द्रप्रतिमामहाब-
लाःपुरेतु पांचालनृपस्यतस्यह ॥ १८ ॥

इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि द्रौपदीविवाहे ऊननवत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १९९ ॥

बढानेवाले राज-पुत्रगण सबने अच्छे अच्छे लिबास गहनोंसे सजकर क्रमसे एक एक दिन उस सुन्दरी का पाणिग्रहणकिया, हे महाराज महर्षि श्रीव्यासजीने इस विषय में मुझको एक आश्चर्य लीलाकी कथा कही थी उस महानुभव सुन्दरी द्रौपदीका एक दिन बिवाहहोजाने पर फिर दूसरे दिन कन्यावस्थाहोजाती थी।१४।इसप्रकार बिवाहहोजानेपर महानुभव सौमकि राजा द्रुपद ने अग्नि को साक्षी कर महारथी पाण्डवों को पीछे कहे हुए नाना धन यौतुक में दिये। उन्हों ने सुवर्ण रासयुक्त चारघोडोंके साथ सुवर्णसे मंढे हुए सौ रथ, सुवर्णकी चोटीवाले पहाड के समान और बिन्दु जाल से सुशोभित सौगज, नव यौवन से मदमाती, मूल्यवान चीर, गहने और मालादिकों से बनीठनी सौ दासी अनेकभांति मुल्यवान चीर और गहने।१६।तथा उनमेंसे हरएकको अलग अलग एकलाख सुवर्ण मुद्रा देदिया अनन्तर बिबाहहोजानेपर महाबली पाण्डव बहुत रत्नके साथ उस रत्नरूपी स्त्री को लाभकर राजा पांचालकी पुरीमें इन्द्रके समान विहार करनेलगे १८॥

---

made to go round the fire. The priest having finished the marriage ceremony left the palace by Yudhishthir's permission. In the same manner the Pandavas were married indiviually on different days. Vaishampayan said that he had heard Maharshi Vyas a wonderful incident in connection with that scene. He had said that the girl became again a maiden on each succeeding day when she was to be married to another brother.14. After the marriage, king Drupad gave them the things mentioned above. He gave them a hundred chariots each furnished with golden traces and four horses, hundred trained elephants like mountains and well-decorated, hundred maid-servants young, well-decked with ornaments and precious clothes, valuable clothes and ornaments, and to each of them a hundred thousand gold coins. After their marriage, the Pandavas having got large wealth and the best woman lived happily in the capital of the king of Panchal.18.

वैशम्पायन उवाच । पाण्डवैःसहसंयोगं गतस्यद्रुपदस्यह । नवभूवभयंकिंचि
द्देवेभ्योपिकथंचन ॥ १ ॥ कुन्तीमासाद्यतानार्य्यो द्रुपदस्यमहात्मनः । नामसङ्कीर्त्तयन्त्यो
ऽस्याजग्मुः पादौस्वमूर्द्धभिः ॥ २ ॥ कृष्णाचक्षौमसम्वीता कृतकौतुकमङ्गला । कृता-
भिवादनाश्वश्रूः ।तस्थौ प्रह्वाकृतांजलिः ॥ ३ ॥ रूपलक्षणसम्पन्नां शीलाचारसम
न्विताम् । द्रौपदीमवदत्प्रेम्णा पृथाशीर्वचनंस्नुषाम् ॥ ४ ॥ यथेन्द्राणीहरिहये स्वाहा
चैवविभावसौ । रोहिणीचयथासोमे दमयन्तीयथानले ॥ ५ ॥ यथावैश्रवणेभद्रा व
सिष्ठेचाप्यरुन्धती । यथानारायणे लक्ष्मीस्तथात्वंभवभर्तृषु ॥ ६ ॥ जीवसूर्वीरसूर्भ
द्रेबहुसौख्यसमन्विता । सुभगाभोगसम्पन्ना यज्ञपत्नीपतिव्रता ॥ ७ ॥ अतिथीनाग
तान्साधून् वृद्धानबालांस्तथागुरून् । पूजयन्त्यायथान्यायं शश्वद्गच्छन्तुतेसमाः ॥८॥
कुरुजाङ्गलमुख्येषु राष्ट्रेषुनगरेषुच । अनुत्वमभिषिच्यस्व नृपतिंधर्मवत्सला ॥ ९ ॥

अध्याय ॥ २०० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि पाण्डवों से राजाद्रुपद की मित्रता होजाने पर वह एकवार ही निडर बने, देवों सेभी उनको कोई भय न रहा । महात्मा द्रुपदकी पर्देवाली स्त्रियोंने कुन्ती के पास आकर अपना अपना नाम कहकर उन के पांवपर सिर झुकाकर प्रणाम किया॥२॥मांगलिक सूतादि लिये हुए क्षौम पहिने द्रौपदी सास के पांवपर गिरकर दोनों हाथ जोड सिर झुकाकर खडीहुई कुन्ती ने रूप-लक्षणों से सजी सुशीला शुभआचार-वती पुत्रवधु द्रौपदीको प्यार से यह अशीस दिया।४।कि ऐ कल्याणि ! जिसप्रकार इन्द्र पत्नी महेंद्रकी, स्वाहा विभावसुकी, रोहिणी चन्द्रमाकी, दमयंती नलकी, भद्रा कुवेरकी, अरुन्धती वसिष्ठकी और लक्ष्मीनारायणकी प्यारी है, वैसेही तुम पतियोंकी प्यारीवनो।६। हेभद्रे ! तुम दीर्घजीवनवाले वीरपुत्र प्रसवकरो, बहुत सुखीरहकर सौभाग्य पाकर यज्ञ भोगकरो; पतिव्रताहो यज्ञ में दीक्षित पतियोंकी सहासाथी बनी रहो। अतिथि, पाहुने, बाल, वृद्ध और गुरुओंकी सदा विधि पूर्वक सेवा करते तुम्हारा काल बीते।८।तुम कुरु-जांगल के राज्य और नगर में धर्मराज के साथ गद्दीपर बैठो सम्पूर्ण धरती तुम्हारे महा

CHAPTER CC

Vaishampayan said that the Pandavas and king *Drupad*, being friends, lived in perfect security. They had no fear even from gods. The women of *drupad's* household touched Kunti's feet with their heads and made known to her their names.2. Draupadi in auspicious dress fell at Kunti's feet and stood head downcast with joined hands. Kunti blessed the virtuous and beautiful *Draupadi*, saying, May you be dear to your husbands as *Indra's* wife to Indra, Swaha to Vibhavasu, Damayanti to Nal, Bhadra to Kuver, Arundhati to Vasishth and Lakshmi to *Narayan*.6.May you bring forth

पतिभिर्निर्ज्जितामुर्व्वीं विक्रमेणमहाबलैः । कुरुब्राह्मणसात् सर्व्वामश्वमेधेमहाक्रतौ ॥
॥ १० ॥ पृथिव्यांयानिरत्नानि गुणवन्तिगुणान्विते । तान्याप्नुहित्वंकल्याणि सुखि
नीशरदांशतम् ॥ ११ ॥ यथाचत्वाभिनन्दामि वध्वद्यक्षौमसम्वृताम् । तथाभूयोऽभि
नन्दिष्ये जातपुत्रांगुणान्विताम् ॥ १२ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तुकृतदारेभ्यः
पाण्डुभ्यःप्राहिणोद्धरिः । वैदूर्य्यमणिचित्राणि हैमान्याभरणानिच ॥ १३ ॥ वासां
सिचमहार्हाणि नानादेश्यानिमाधवः । कम्बलाजिनरत्नानि स्पर्शवन्तिशुभानिच ।
॥ १४ ॥ शयनासनयानानि विविधानिमहान्तिच । वैदूर्य्यवज्रचित्राणि शतशोभा-
जनानिच ॥ १५ ॥ रूपयौवनदाक्षिण्यै रुपेताश्चस्वलंकृताः । प्रेष्याःसम्प्रददौकृष्णो
नानादेश्याःस्वलंकृताः ॥ १६॥ गजान् विनीतान्भद्रांश्च सदश्वांश्चस्वलंकृतान् । रथांश्च
दान्तान्सौवर्णैः शुभ्रैःपट्टैरलंकृतान ॥ १७ ॥ कोटिशश्चसुवर्णञ्च तेषामकृतकंतथा ।

बली पतियोंके पराक्रम से जयहोकर अश्वमेध महायज्ञद्वारा तुम से ब्राह्मणों को सौंपदी
जावे।१०।हेगुणवति ! पृथ्वीभरमें जो सब गुणयुक्त रत्नहैं, उनपर तुम्हारा हाथलगे तुम
परम सुखसे शतवर्ष गंवाओ ऐगुणवति वधु ! आज तुमको क्षौमपहिनी देखकर जैसा
आनंद प्रगट करती हूं तुम्हारा पुत्र उपजनेसे फिर ऐसा आनंद लूटूंगी।१२। वैशम्पायन
ने कहा कि अनन्तर श्रीकृष्णचंद्रने व्याहेहुए पाण्डवों के लिये पीछे कह धनको भेजा
उन्हों ने वैदूर्य-मणि से जडे सुवर्ण अलंकार, नानादेशों के दुर्लभ वस्त्र, सुंदर कोमल
अच्छे अच्छे कम्बल तथा मृगछाल, भांति भांतिकी अच्छीसे अच्छी सेज आसन और
यान वैदूर्य से झलकते हीरे से खचित सैकडों वर्तन, भले सिखाये पढाये सुंदर लक्षण
वाले गज, गहनोंसे भले सजे अच्छे अच्छे घोडे, सुंदर बरण ऊंचे ऊंचे अच्छे दांतवाले
घोडों से जुतेहुए रथ और खानिसे उपजा शुद्धसुवर्ण यह सब वस्तु बहुत अधिक और

---

brave sons with long lives. May you be happy. Live in chastity with your husbands. May you be attending upon guests and preceptors. May you sit upon the throne of Kurujangal with Yudhishthir. May your husbands conquer the whole earth and may it be given to Brahmans by your hand at the Ashwamedh sacrifice. May all the precious jewels on earth come into your possession. May you live happily for a hundred years. May I again be happy to see your son as I am at seeing you in these auspicious clothes!" 12. Vaishampayan said that Shree Krishna sent large wealth to the married Pandavas. He sent them gold ornaments with precious jewels, cloth of sorts from various countries; nice and soft blankets and deerskins, good beds, clothes and carriages; hundreds of gold vessels studded with jewels, trained elephants; horses decked with ornaments, beautiful and large golden chariots; pure gold from the

वीथीकृतममेयात्मा प्राहिणोन्मधुसूदनः ॥ १८ ॥ तत्सर्वम्प्रतिजग्राह धर्मराजोयुधिष्ठिरः । सदापरमयायुक्तो गोविन्दप्रियकाम्यया ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि श्रीकृष्णोपहारप्रेषणे द्विशतोऽध्यायः ॥ २०० ॥

समाप्तं वैवाहिक पर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । ततोराज्ञांचरैराप्तैः प्रवृत्तिरुपनीयत । पाण्डवैरुपसम्पन्ना द्रौपदीपातिभिःशुभा ॥ १ ॥ येनतद्धनुरादाय लक्ष्यंविद्धंमहात्मना । सोऽर्जुनो जयतांश्रेष्ठोमहाबाणधनुर्द्धरः ॥ २ ॥ यःशल्यंमद्रराजं वैप्रोत्क्षिप्यापातयद्बली । त्रासयामास संक्रुद्धोवृक्षेण पुरुषान्रणे ॥३॥ नचास्यसंभ्रमः कश्चिदासीत्तत्रमहात्मनः । स भीमोभीमसंस्पर्शः शत्रुसेनाङ्गपातनः ॥ ४॥ ब्रह्मरूपधरान्श्रुत्वा प्रशान्तान्पाण्डुनन्दनान् । कौन्तेयान्मनुजेन्द्राणां विस्मयःसमजायत ॥५ ॥ सपुत्राहिपुराकुन्ती दग्धा

कोड़ों सुवर्ण के टुकड़े भेज दिये अमेयात्मा मधुसूदन ने पाण्डवोंकी सेवाके लिये रूप, यौवन और दयासे सुहावनी गहनोंसे बनीठनी अनेकदेशोंकी सहस्रों दासी दीं । धर्मराज युधिष्ठिर ने गोविंदकी प्रीति के लिये परम प्रसन्न चित्तसे वह सब सामग्री लेली ॥ १९॥

अध्याय २०१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि अनन्तर भूपालों को अपने अपने दूतोंसे सुध मिलगई कि अच्छे लक्षणवाली द्रौपदी पाण्डवोंको मिल गयी है, और जिन महात्मा ने धनुष को नवाकर लक्ष्य को विद्धकियाथा, वही धनुषबाणधारी जयशील अर्जुनहैं।२।और जिन बली पुरुष ने मद्रनाथ शल्य को धरती पर पटक दियाथा, जिन्हों ने क्रोधके मारे युद्धस्थल में खडे होकर वृक्ष से सबों को डरवाया था, उसकाल में जिन महात्मा के मन में कुछभी भय हमको दीख नहीं पडता था, जिनका स्पर्शभी शत्रुओं को भयानक जान पड़ाथा, वही शत्रुनाशी भीमसेनहैं।४। हेमहाराज ! नरेशोंने पहिले सुनाथा, कि पाण्डवगण माता सहित जतुगृह में जलगये, अब पाण्डवों को प्रशांत और ब्राह्मणों का वेश कियेहुए सुन

mines and millions of gold pieces. He also sent the Pandavas thousands of beautiful and young slave girls from various countries. Yudhishthir accepted all these for the love of Gobind. 19.

CHAPTER CCI

Vaishampayan said that the kings were informed by their own ambassadors that Draupadi was married to the Pandavas, that he, who had bent the bow and hit the mark, was Arjun, and that he who had vanquished Shalya the king of Madra, terrified the kings by uprooting a tree, was seen fearless in the battle-field and whose mere touch struck terror among the enemies, was none other than Bhim the destroyer of enemies. 4. They had heard before of the death of the Pandavas with their mother in the burning house and

जतुगृहेश्रुता । पुनर्जातानिवचतां स्तेऽमन्यन्तनराधिपाः ॥ ६ ॥ धिगकुर्वंस्तदाभीष्मं
धृतराष्ट्रञ्चकौरवम् । कर्मनातिनृशंसेन पुरोचनकृतेनवै ॥ ७ ॥ वृत्तेस्वयम्वरेचैव
राजानःसर्वएवते । यथागतंविप्रजग्मुर्विदित्वा पाण्डवान्वृतान् ॥ ८ ॥ अथदुर्योधनो
राजा विमनाभ्रातृभिःसह । अश्वत्थाम्नामातुलेन कर्णेनचकृपेणच ॥ ९ ॥ विनिवृत्तो
वृतंदृष्ट्वा द्रौपद्याश्वेतवाहनम् । तन्तुदुःशासनो व्रीडोमन्दं मन्दमिवाब्रवीत् ॥ १० ॥
यद्यसौब्राह्मणोन स्याद्विन्देतद्रौपदींनसः । नहितंतत्त्वतोराजन् वेदकश्चिद्धनञ्जयम् ।
॥ ११ ॥ दैवंचपरमंमन्ये पौरुषंचाप्यनर्थकम् । धिगस्तुपौरुषंतात ध्रियन्तेयत्रपाण्ड-
वाः ॥ १२ ॥ एवंसम्भाषमाणास्ते निन्दन्तश्चपुरोचनम् । विविशुर्हास्तिनपुरंदीना
विगतचेतसः ॥ १३ ॥ त्रस्ताविगतसंकल्पा दृष्ट्वापार्थान्महौजसः । मुक्तान्हव्यभुजश्चै

कर अचम्भे में हो उन्हों ने समझा कि पाण्डव फिर जन्म लेकर आये हैं । ६ । आगे वे पुरोचनका किया बडा निष्ठुरकर्म स्मरणकर कौरव धृतराष्ट्र और भीष्म को धिक्कार देनेलगे अनन्तर सम्पूर्ण स्वयम्वर का कार्य पूराहोनेपर द्रौपदी पाण्डवों से व्याही गयी सुन कर वे सब भूपाल निज निज राजधानी को पधारे । ८ । राजा दुर्य्योधन यह जानकर कि द्रौपदी ने अर्ज्जुन से विवाह किया है अश्वत्थामा, शकुनि, कर्ण, कृप और भाइयों के साथ उदास होकर लौटा । आगे दुःशासन लज्जित मुख से मन्द मन्द वचनों में उससे बोला । १० । कि महाराज ! धनञ्जय ब्राह्मण बेशमें नहोतातो कभी द्रौपदी को लाभ नहीं कर सकताथा लोग उसको धनञ्जय नहीं समझते थे, इसी लिये उसकी क्षमाकर दीथी । भइया ! पाण्डवों के नष्ट करने को हमारे बडा प्रयत्न करने परभी वे जीते जागते हैं अतएव हमारी पुरुषतापर धिक्कारहै; सो दैवहीको परम साधन कहना चाहिये; पुरुषका किया यत्न कोई कार्य्य नहीं दे सकता ।१२। दुःशासन आदि सब ऐसी बातें करते और पुरोचनको निन्दते हुए दीन और दुःखी चित्तसे हास्तिनपुर में

were now amazed to hear that they were alive and disguised as Brahmans. They thought that the Pandavas were born a second time and remembering the cruel act of Purochan reproached Dhritrashtra and Bhishma. All the kings returned to their countries after the marriage of Draupadi with the Pandavas. 8. Having heard of the marriage of Draupadi with Arjun, Duryodhan with a sad heart returned accompanied by Ashwathama, Shakuni, Karn, Kripa and brothers. Dushasan cast down his head with shame and said in a low tone, " Arjun could not win Draupadi if he were not disguised as a Brahman. People did not know that he was Arjun and so forgave him. In spite of our contrivances to destroy the Pandavas they are yet alive and our manliness has come to nought. We therefore, say that fate is above all and man can do nothing." 12.

च संयुक्तान्द्रुपदेनच ॥ १४ ॥ धृष्टद्युम्नन्तुसंचिन्त्य तथैवचाशिखण्डिनम् । द्रुपदस्या-
त्मजांश्चान्यान सर्वयुद्धविशारदान ॥ १५ ॥ विदुरस्त्वथतांश्रुत्वा द्रौपदींपाण्डवैर्वृ-
ताम् । व्रीडितान्धार्त्तराष्ट्रांश्च भग्नदर्पानुपागतान् ॥ १६ ॥ ततःप्रीतमना क्षत्ता धृतराष्ट्रं
विशाम्पते । उवाचदिष्ट्याकुरवो वर्द्धन्तइतिविस्मितः ॥ १७ ॥ वैचित्रवीर्य्यस्तुनृपो
निशम्यविदुरस्यतत् । अब्रवीत्परमप्रीतो दिष्ट्यादिष्ट्येतिभारत ॥ १८ ॥ मन्यतेस
वृतंपुत्रंज्येष्ठं द्रुपदकन्यया । दुर्योधनमविज्ञानात् प्रज्ञाचक्षुर्नरेश्वरः ॥ १९ ॥ अथ
त्वाज्ञापयामास द्रौपद्याभूषणंबहु । आनीयतांवैकृष्णेति पुत्रंदुर्य्योधनंतदा ॥ २० ॥
अथास्यपश्चाद्विदुर आचख्यौपाण्डवान्वृतान । सर्वानकुशलिनोवीरान् पूजितान्द्रु-
पदेनह ॥ २१ ॥ तेषांसम्बन्धिनश्चान्यान् बहूनबलसमन्वितान । समागतान पाण्डवै

आ पहुंचे; और पाण्डवोंको अति बलवन्त, अग्निसे बचे और द्रुपद से मिले देखकर धृष्ट
द्युम्न, शिखण्डी तथा सर्व्व प्रकारसे दक्ष द्रुपदके दूसरेपुत्रोंको स्मरणकर भयभीत हुए और
उनकाउत्साह जातारहा ।१५। हेमनुष्यनाथ ! यह सुनकर कि पाण्डवोंने द्रौपदी को लाभ
किया और धृतराष्ट्रके पुत्रगण लज्जित और टूटे फूटे अहंकारके साथ लौटे हैं, विदुर प्रस-
न्न मनसे धृतराष्ट्रसे बोले, कि हमारे सौभाग्यसे कौरवगण बढ रहे हैं । राजा विचित्र-
वीर्य के पुत्र विदुरका यह वचन सुनकर अचम्भे में होकर और बडे प्रसन्नहोकर
कहने लगे कि हमारा कैसा सौभाग्य है ! हे भारत ! प्रज्ञानेत्र भूपाल विदुर से संक्षेप में
कहेहुए कौरवशब्द को सुनकर समझ नहीं सके, कि पाण्डव जीवित रहकर बढ रहे हैं।
उन्होंने समझा, कि द्रुपदपुत्रीने उनके ज्येष्ठपुत्र दुर्योधन से बिवाहकर लिया।१९।अतएव
उन्हों ने उसीक्षण पुत्रवधु द्रौपदीको भांति भांति के गहने देकर उस को लिवा लाने के
लिये पुत्र दुर्योधनको आज्ञादी । अनन्तर विदुर ने उनको विशेषरूपसे कहा, कि सब
पाण्डव कुशल से हैं, द्रौपदी ने उन्हीं वीरोंसे बिवाह किया है, राजा द्रुपद ने उनका

Dushasan and others talked in this way and spoke ill of Purochan till they reached Hasthinpur. They were terrified at seeing the Pandavas so powerful and remembered their escape from burning as well as their union with Drupad and his brave sons, Dhrishtadyumna Shikhandi and others.15.Having heard of the marriage of Draupadi with the Pandavas and the return of the sons of Dhritrashtra with shame and crushing of pride, Vidur cheerfully said to king Dhritrashtra, " The Kauravas are prosperous by our good fortune." The king hearing this from Vidur the son of Vichitravirya, was amazed and said cheerfully, " What a good luck !" The blind king did not understand clearly by Vidur's allusion of the word Kaurava that the *Pandavas* were alive. He thought that Draupadi was won by his eldest son Duryodhan. 19.So he ordered Duryodhan to bringhis

यैस्तस्मिन्नेवस्वयम्वरे ॥ २२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । यथैवपाण्डोःपुत्रास्तु तथैवाभ्य-
धिकामम । यथाचाभ्यधिकाबुद्धिर्ममतान् प्रतितच्छृणु ॥ २३ ॥ यत्तेकुशलिनोवीरा
मित्रवन्तश्चपांडवाः । तेषांसम्बन्धिनश्चान्ये बहवश्चमहाबलाः ॥ २४ ॥ कोहिद्रुपदमा
साद्य मित्रक्षत्तःसबान्धवम् । नबुभूषेद्भवेनार्थी गतश्रीरपिपार्थिवः ॥ २५ ॥ वैशम्पा-
यन उवाच । तंतथाभाषमाणन्तु विदुरःमत्यभाषत । नित्यंभवतुतेबुद्धिरेषा राजन्
शतंसमाः इत्युक्त्वाप्रययौराजन विदुरस्वनिवेशनम्२६ततोदुर्योधनश्चापि राधेयश्चवि
शाम्पते । धृतराष्ट्रमुपागम्य वचोब्रतामिदंतदा ॥ २७ ॥सन्निधौविदुरस्यत्वां दोषंवक्तुं
नशक्नुवः । विविक्तमितिवक्ष्या वःकिंतदेवंचिकीर्षितम् ।२८। सपत्नवृद्धिंयत्तातमन्यसे
वृद्धिमात्मनः । अभिष्टौषिचयत् क्षत्तुःसमीपेद्विषतांवर ॥ २९ ॥ अन्यस्मिन्नृपकर्त-

बडा सम्मान कियाहै और उस स्वयम्वर स्थलही में उन के सम्बन्धी, बन्धु आदि दूसरे बहुतेरे वलवन्त उन से जा मिले हैं धृतराष्ट्र बोले कि हे क्षत्र ! वे जिसप्रकार पाण्डु के स्नेहके पात्रहैं, उस सेभी मेरेअधिक स्नेह के पात्रहैं । इससे उनपर मेरी औरभी प्रसन्नता होरही है कि वेवीर पुरुष कुशल से रहगये, मित्रों से मिले और उन के सम्बन्धी दूसरे महाबली बहुतेरे उन से जा मिले विशेष वह कौन राजाहोगा जिनकी चाहे श्री बनी रहे वा न रहे बन्धु सहित राजा द्रुपद को मित्र पाकर कुशल युक्तहोनेकी इच्छा न रखते होंगे ; २५। वैशम्पायन ने कहा कि भूपालकी यह बात सुनकर विदुर ने उत्तर दिया, कि महाराज आपकी सैकडों वर्षों तक सदा ऐसीही बुद्धि बनी रहे यह कहकर विदुर अपने घरको चले गये । २६ । हेनरनाथ ! अनन्तर दुर्योधन और राधा पुत्र धृतराष्ट्र के निकट आकर बोले, कि हम आप से विदुर के सामने कोई दोष दर्शा नहीं सके थे अब एकांत पाकर कहतेहैं, सुनिये आपकी कैसी इच्छाहुई। हेपितः ! क्या आप शत्रुओंकी बढती में अपनी बढती समझ रहे हैं हे नरवर ! क्या आप विदुर से

daughter-in-law Draupadi with great pomp. Vidur at length explained that the *Pandavas* were alive, that they had married Draupadi, that they were living in great esteem with Drupad and had got powerful kinsmen and allies in the Swayamvar. Dhritrashtra said, " The *Pandavas* are as dear to me as they were to *Pandu.* I am very glad to hear that they escaped death and have got powerful friends and allies. Besides what king will not desire his prosperity when he has got Drupad as his kinsman?" 25. Vaishampayan said that having heard this from the king, Vidur replied, " *May* you live to be of this openion for hundreds of years." Having said this Vidur went to his house. Duryodhan and Karan then came to Dhritrashtra and said, "We could not express our grievances before Vidur. What is this resolution of yours ? Do you feel pleasure, father,

ऽप त्वमन्यत्कुरुषेऽनघ। तेषांबल विघातोहि कर्त्तव्यस्ताततनित्यशः ॥ ३० ॥ तेवयं
प्राप्तकालस्यचिकीर्षामन्त्रयामहे। यथानोनग्रसेयुस्ते सपुत्रबलवान्धवान् ॥ ३१ ॥
इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि दुर्योधनवाक्ये एकाधिकद्विशतोऽध्यायः॥२०२॥
धृतराष्ट्र उवाच। अहमप्येवमेवैतच्चिकीर्षामि यथायुवाम्। विवेक्तुंनाहमिच्छामित्वा-
कारंविदुरंप्रति ॥ १ ॥ ततस्तेषांगुणानेव। कीर्त्तयामिविशेषतः। नावबुध्येतविदुरो
ममाभिप्रायमिङ्गितैः ॥ २ ॥ यच्चत्वंमन्यसेप्राप्तं तदब्रवीहिसुयोधन। राधेयमन्यसेयच्च
प्राप्तकालंवदाशुमे ॥ ३ ॥ दुर्योधन उवाच अद्यतान् कुशलैर्विप्रैः सुगुप्तैराप्तकारिभिः।
कुन्तीपुत्रानभेदयामो माद्रीपुत्रौचपण्डवौ ॥ ४ ॥ अथवाद्रुपदोराजा महद्भिर्वित्तसञ्च
यः। पुत्राश्चास्य प्रलोभ्यन्तामाप्याश्चैव सर्वशः ॥ ५ ॥ परित्यजेद्यथाराजा कुन्ती-

---

विपक्षियोंकी प्रशंसा कर रहे थे हे अनघ जहां जैसा काम करना चाहिये आप उसका विपरीत करते हैं हेपितः अब सदा यह चेष्टा करनी चाहिये कि उनका बल घटे हाल में जैसा काल आ पडा है अब ऐसी युक्ति करनी चाहिये कि वे हमको और हमारे पुत्र, बंधु और सेनाओं को नष्ट न कर सकें ॥ ३१ ॥

अध्याय २०२ ॥

धृतराष्ट्र बोले, कि तुम्हारी जैसी इच्छाहै, मैंभी वही किया चाहताहूं पर विदुरसे कोई अभिप्राय प्रगट नहीं करना चाहता, इस लिये कि विदुर इशारे सेभी मेराअभिप्राय समझ न पावें, मैं पाण्डवोंका गुण गा रहाथा।२।हे सुयोधन ! अब तुम्हारी समझमें जो करना उचित निश्चयहुआ है, और हे राधानंदन तुम नेभी जैसा समझा है, वह सबकह नेका यही समय है सो इसकाल में कहदो दुर्योधन बोले, कि अब हमारे विश्वासी और ब्राह्मणगण बहुत छिप कर जावें; कुन्तीपुत्र और माद्रीपुत्रों में आपसका विगाड कर देवें।४।अथवा राजा द्रुपद और उन के पुत्र तथा सम्पूर्ण मंत्रियों को बहुत धन देकर

---

in the greatness of enemies? Were you praising the enemies before Vidur? You are going to act preposterously! You should always try, father, to diminish their power. Let us now so act as not to let the *Pandavas* destroy ourselves.31.

CHAPTER CCII

Dhritrashtra said, "I shall do as you desire. But I donot wish that Vidur should know what passes in my mind. I was praising the *Pandavas* in order that Vidur might not know the secret.2. Let me know, Yudhishthir and Karan, what you have decided to do in this emergency." Duryodhan replied, "We shall send our trustworthy Brahmans who will secretly manage to cause the sons of Kunti and madri to quarrel among themselves, or wo shall offer great wealth to Drupad and his ministers so that they may desert

पुत्रंयुधिष्ठिरम् । अथतत्रैवत्रातेषां निवासंरोचयन्तुते ॥ ६ ॥ इहैषांदोषवद्वासं वर्णयन्तुपृथक्पृथक् । तेभिद्यमानास्तत्रैव मनःकुर्वन्तुपाण्डवाः ॥ ७ ॥ अथवाकुशलाः केचिदुपायनिपुणानराः । इतरेतरतःपार्थान् भेदयन्त्वनुरागतः ॥ ८ ॥ व्युत्थापयन्तु वाकृष्णां बहुत्वात्सुकरंहितत् । अथवापाण्डवांस्तस्यां भेदयन्तुततश्चताम् ॥ ९ ॥ भीमसेनस्यवाराजन् तुपायकुशलैर्नरैः । मृत्युर्विधीयतांछन्नैः सहितपांबलाधिकः ॥ १० ॥ तमाश्रित्यहिकौन्तेयः पुराचास्मान्नमन्यते । सहितीक्ष्णश्चशूरश्च तेषांचैवपरायणम् ॥ ॥ ११ ॥ तस्मिंस्त्वभिहतेराजन् हतोत्साहाहतौजसः । यतिष्यन्तेनराज्याय सहितपां व्यपाश्रयः ॥ १२ ॥ अजेयोह्यर्जुनःसंख्ये पृष्ठगोपिवृकोदरे । तमृतेफाल्गुनोयुद्धे राधेयस्यनपादभाक् ॥ १३ ॥ तेजानानास्तुदौर्बल्यं भीमसेनमृतेमहत् । अस्मान्बलवतो ज्ञात्वा नयतिष्यन्तिदुर्बलाः ॥ १४ ॥ इहागतेषुवातेषु निदेशवशवर्त्तिषु । प्रवर्त्तिष्या-

लुभावें कि वे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर को त्याग देवें । अथवा हमारे भेजे हुए लोगों में हरेक अलग अलग पाण्डवों को इस स्थानमें वसने का दोष दर्शा कर उस स्वसुर के यहां वसने को लुभावें, ऐसा करने सेही पाण्डवों के वहां रहनेकी इच्छाहोगी ।७। अथवा कुछ उपायों के जान कार दक्ष जन ऐसा करें कि पाण्डवों में बिगाड़ हो और उन में आपस का प्रेम न वना रहे । अथवा कृष्णाको ऐसा उभारे कि उसका पातियों से मन ढल जाय । उस के बहुत पति हैं, सो यह करना कठिन नहीं होगा । अथवा ऐसा करें कि पाण्डवों पर द्रौपदी का प्रेम न रहे, ऐसा होनेसे द्रौपदी उनपर चिढ़ जायगी ।९। अथवा अच्छे उपाय निकालने वाले वहां जाके छिपकर ऐसा कोई उपाय करें, कि भीमकी मृत्यु हो, क्योंकि उन में भीमही बड़ा वली है, उस केही भरोसे युधिष्ठिर हमको नहीं मानता था । भीमसेन बड़ा बली और पांडवों का प्रधान अवलम्ब है । हे महाराज ! उनके एकही आसरा रूपी उस भीम के मारे जानेपर वे तेज और उत्साह से हाथ धोकर फिर राज्य पानेका प्रयत्न नहीं करेंगे । युद्धस्थल से वृकोदर पीठकी रखवाली करेतो अर्जुन पर कोईभी जय

the *Pandavas*, or the men sent by us will explain to Yudhishthir the harm of coming to this place and to induce them to remain at his father-in-law's. By so doing the *Pandavas* will be desirous to remain there. Our wise men will try to raise a quarrel amongst the *Pandavas* or induce Draupadi to remove her love from the *Pandavas*. The latter course will not be difficult to manage as she has many husbands and may be easily displeased.9.Or, let some clever man murder Bhim who is the most powerful amongst the *Pandavas* and relying on whose strength Yudhishthir disregards us. Bhim is the most powerful support of the *Pandavas*. They will never try to regain their kingdom by the death of Bhim alone.12. No one can conquer Arjun when *Bhim* protects him on the rear.

महाराजन यथाशास्त्रंनिबर्हणम् ॥ १५ ॥ अथवादर्शनीयाभिः प्रमदाभिर्विलोभ्यताम्।
एकैकस्तत्रकौन्तेयस्ततः कृष्णाविरज्यताम् ॥ १६ ॥ प्रेष्यतांचैवराधेय स्तेषामागमना-
यवै । तैस्तैःप्रकारैःसन्नीय पात्यन्तामाप्तकारिभिः ॥ १७ ॥ एतेषामाप्युपायानां यस्ते
निर्दोषवान्मतः । तस्यप्रयोगमातिष्ठपुरा कालोऽतिवर्त्तते ॥ १८ ॥ यावद्धयकृतविश्वा
सा द्रुपदेपार्थिवर्षभे । तावदेवहितेशक्या नशक्यास्तुततःपरम् ॥ १९ ॥ एषाममति
स्तात निग्रहायप्रवर्त्तते । साध्वीवायदिवासाध्वी किम्वाराधेयमन्यसे ॥ २० ॥
इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि दुर्योधनवाक्येद्व्यधिकद्विशतोऽध्यायः॥२०२॥

नहीं पा सकता, पर युद्धस्थल में वृकोदर के न रहने से अर्जुन कर्णका चौथा अंशभी नहीं हो सकता । भीमसेन के बिना दुर्बल पाण्डव अपने को बल वार्जित और हमको अधिक बलवन्त जान कर राज्य पाने का प्रयत्न नहीं करेंगे । पर यदि वे यहां आकर हमारे आधीन और आज्ञा नुसारी होवें, तो हम उन पर नीतिशास्त्र के अनुसार दण्ड देने को प्रवृत्तहोंगे।१५।अथवा परम रूपवती प्यारी युवतीसे उनको लुभाना चाहिये; ऐसा करनेसे द्रौपदी का प्रेम उन से टल जायगा । हे राधानन्दन! अथवा उनको लिवालाने के लिये दूत भेजा जाय, उन के एकत्र मिलकर आने से पहिले किसी उपाय से वे नष्ट किये जा सकेंगे।१७। हे पितः ! इन सब उपायोंमेंसे आपकी समझमें जो दोष रहित जान पड़े वही करें काल बीत रहा है, अधिक बिलम्ब करना उचित नहीं है जब तक पृथ्वीनाथ द्रुपद पर उनका विश्वास न जमे उस के पहिले योग्य उपाय करने से उन से बढ चढ़ सकेंगे राजा द्रुपद पर उनका विश्वास होजाने से फिर कोई उपाय न चलेगा । हे पितः! उन को सताने के लिये मैंने यह उपाय निश्चय किये हैं । यह भले हैं वा बुरे समझ लें । कर्ण तुम क्या समझते हो ? ॥ २० ॥

Without *Bhim* Arjun will not be even one-fourth as strong as Karan. Without Bhim, the Pandavas will find us stronger than themselves and will never try to recover the kingdom from us. And if they will come to live here, under our protection, we shall be able to punish them according to the law. 15 Or we may try to estrange their hearts from Draupadi's love. Or, let us send messengers to call them here. We shall be able to destroy them here. You may choose, father, whichever way seems to you less dangerous. Time is passing and further delay is dangerous. We shall be able to overcome them before Drupad puts his trust in them, otherwise we shall be too late. I have told you these plans to harass the Pandavas. You know which of them is good and which impracticable. Karan, what do you think about it ?" 20.

कर्ण उवाच। दुर्य्योधनतवप्रज्ञा नसम्यगितिमेमतिः । नह्युपायेनतेशक्याः पाण्डवाःकुरुवर्द्धन ॥ १ ॥ पूर्वमेवहिते सूक्ष्मैरुपायैर्यतितास्त्वया । निग्रहीतुंतदावीर नचैवशकितास्त्वया ॥२ ॥ इहैववर्त्तमानास्ते समीपेतवपार्थिव । अजातपक्षाःशिशवः शकितानैवबाधितुम् ॥ ३ ॥ जातपक्षाविदेशस्था विवृद्धाःसर्वशोऽद्यते । नोपायसाध्याः कौन्तेयाममैषामतिरच्युत ॥ ४ ॥ नचतेव्यसनैर्योक्तुं शक्यादिष्टकृतेनच । शकिताश्चेप्सवश्चैव पितृपैतामहम्पदम् ॥५॥ परस्परेणभेदश्च नाधातुंतेषुशक्यते । एकस्यांयेरताःपत्न्यां नभिद्यन्तेपरस्परम् ॥६॥ नचापिकृष्णाशक्येत तेभ्योभेदयितुंपरैः । परिद्यूनान्वृतवती किमुताद्यमृजावतः ॥ ७ ॥ ईप्सितश्चगुणः स्त्रीणामेकस्याबहुभर्तृता । तंच-

अध्याय ॥ २०३ ॥

कर्ण बोले, कि हे दुर्योधन ! तुमने जो सोचा है वह सुयुक्ति समझ नहीं पड़ती । हे कुरुनन्दन ! इनमें से कोई उपाय पाण्डवों के विरुद्ध न चलेगा । हे बीर ! तुमने पहिले सूक्ष्म उपायों से उनको नष्ट करने का प्रयत्न किया था पर उस से मनोरथ सफल; नहीं होसके थे उस समय वे अल्प अवस्थावाले, निःसहाय और तुम्हारे निकट थे, तिस परभी उनकी कोई हानि नहीं कर सकेथे। ३. हे पुरुषार्थशील । अब वे दूसरे देशमें स्थित सहाय सहित और सब प्रकार से बढ़ गये हैं, सो यह मुझको निश्चय जान पडताहै कि इस समय इन उपायों से उनकी कोई हानि नहीं की जा सकेगी । और लुभाने से भी वे न भूलेंगे क्यों कि उन में दैवी शक्ति भरी है और बाप दादों के पद के चाहने वाले हैं उन भाइयों में आपस का बिगाड़ कर देना भी शक्ति के बाहर है; क्योंकि जो लोग पांच भाई एक स्त्रीसे मिलते हैं, उन में कभी आपस का विरुद्ध भाव होना सम्भव नहीं है।६।किसी उपाय से कृष्णा के चित्तको पाण्डवों से टालना भी कठिनहै, क्योंकि कृष्णा ने पाण्डवों से उनकी कड़ी दीन दशाके दिनों में विवाह किया था; अबतो वे भले वस्त्र

CHAPTER CCIII

Karan said, "I donot think, Duryodhan, that any of the plans that you have mentioned can avail against the Pandavas. You have already tried to destroy them by various means but to no purpose. They were then young, helpless and near you, but you could do them no harm. 3. They are now venturesome, in a foreign country, grown up and with allies. I, therefore, believe that they can come to no harm by these means. They cannot be misled or deluded as they have heavenly power within themselves. They are desirous of getting the post of their father and grandfather. It is impossible to raise a quarrel among the five brothers who have a wife common among themselves. 6. It is equally difficult to cause disaffection

माप्तवतीकृष्णा नसाभेदयितुंक्षमा ॥८॥ आर्य्यव्रतश्चपांचाल्यो नसराजाधनप्रियः।
नसन्त्यक्ष्यतिकौन्तेयान् राज्यदानैरपिध्रुवम्।९।तथास्यपुत्रो गुणवाननुरक्तश्चपाण्डवान्
तस्मान्नोपायसाध्यां स्तानहंमन्येकथञ्चन।१०।इदंत्वद्यक्षमं कर्त्तमस्माकं पुरुषर्षभ।यावन्न
कृतमूलास्ते पाण्डवेयाविशाम्पते। तावत्प्रहरणीयास्ते तत्तुभ्यंतातरोचताम्।११। अस्म
त्पक्षोमहान यावद्यावत् पांचालकोलघुः। तावत्प्रहरणंतेषां क्रियतांमाविचारय।१२।
वाहनानिप्रभूतानि मित्राणिचकुलानिच। यावन्नतेषांगान्धारे तावद्विक्रमपार्थिव।१३
यावच्चराजापांचाल्यो नोद्यमेकुरुतेमनः। सहपुत्रैर्महावीर्य्यैस्तावद्विक्रमपार्थिव ॥१४॥
यावन्नायातिवार्ष्णेयः कर्षन्यादववाहिनीम्। राज्यार्थेंपाण्डवेयानां पांचाल्यसदनं

गहनों से सजे हैं, विशेष स्त्रियों के लिये बहुत पतियों का मिलना प्रार्थना की बात है, कृष्णाको वह मिले हैं, सो पतियों से उसका मन टालना असम्भव है।८। राजापाञ्चाल सुपथ में चलते हैं, वह धन के लोभी नहीं हैं, सो इस में सन्देह नहीं, कि उनको सब राज्य देभी दो तो वह पांडवों को नहीं छोड़ेंगे, उन राजा के पुत्र गण गुणवन्त हैं, विशेष पाण्डवों के वे प्रेमी बने हैं, सो लुभा कर वे वशमें नहीं लाये जा सकेंगे; सो मुझ को जान पड़ता है, कि उक्त प्रकार के किसी उपाय से पाण्डवों को कुछ नहीं होनेवाला है। हे पुरुष श्रेष्ठ महाराज ! इस समय हमारा यही कर्त्तव्य है, कि जब तक पाण्डव जड़ से न उखड जायं तबतक उनको मारते रहैं हे पितः इस विषय में आप सम्मत होवें। जबतक हमारा पक्ष महान और पाण्डवों का पक्ष लघु है, तब तक युद्ध प्रारम्भ कर उनको मारना आरम्भकरें। इसका अन्य विचार करने का प्रयोजन नहीं है।१२। हेमहाराज गान्धारी नन्दन ! जबतक उन के मित्र और बन्धु तथा बहुत वाहन न एकत्रित हों उस के पहिले ही उन पर विक्रम प्रगट करके चढ़ जाओ। जबतक राजा पाञ्चाल अति वीर्यवन्त पुत्रों के साथ लडाई का उद्योग न कर सकें उस काल से पहिलेही विक्रम दिखाओ।१४। और जब तक श्रीकृष्ण पाण्डवोंके राज्यके लिये यादवी सेना लेकर

between Draupadi and the Pandavas, for she accepted them when they were in great poverty where as now they are decked with ornaments and precious clothes and especially when it is desirable for a woman to have many husbands. The king of Panchal is virtuous and not covetuous. He will not desert them for all your kingdom. His sons are virtuous and love the Pandavas. They are out of the reach of bribe. For these reasons I believe that the Pandavas cannot come to harm in any of the above-mentioned ways. The only thing we can do now is to persecute them till they are destroyed. You will agree with me father, in holding that we should commence fighting against them before they get too strong for us. I hope you will not think otherwise. Let us attack them

प्रति ॥ १५ ॥ वसूनिविविधान्भोगान् राज्यमेवचकेवलम् । नात्याज्यमस्तिकृष्णस्य
पाण्डवार्थेकथञ्चन ॥ १६ ॥ विक्रमेणमहीप्राप्ता भरतेनमहात्मना विक्रमेणचलोकां-
स्त्रीन जितवान्पाकशासनः ॥१७॥ विक्रमञ्चप्रशंसन्ति क्षत्रियस्यविशाम्पते । स्वको-
हिधर्मःशूराणां विक्रमःपार्थिवर्षभ ॥ १८ ॥ तेबलेनवयंराजन्महता चतुरङ्गिणा ।
प्रमथ्यद्रुपदं शीघ्रमानयामेह पाण्डवान् ॥ १९ ॥ नहिसाम्नानदानेन नभेदेनचपांड-
वाः । शक्याःसाधयितुंतस्माद्विक्रमेणैवतान्जहि ॥ २० ॥ तान्विक्रमेणजित्वेमामखि
लांभुङ्क्ष्वमेदिनीम् । अतोनान्यंप्रपश्यामि कार्य्योपायंजनाधिप ॥ २१ ॥ वैशम्पायन
उवाच । श्रुत्वातुराधेयवचोधृतराष्ट्रः प्रतापवान् । अभिपूज्यततःपश्चादिदं वचनमब्र-
वीत् २२ ॥ उपपन्नंमहाप्राज्ञे कृतास्त्रेसूतनन्दने । त्वयिविक्रमसम्पन्नमिदं वचनमीदृ
शम् ॥ २३ ॥ भूयएवतुभीष्मश्च द्रोणोविदुरएवच । युवाञ्चकुरुतंबुद्धिं भवेद्यानःसुखो

राजा पाञ्चाल के भवन में न आवें, उस से पहिलेही विक्रम प्रगट करो । कृष्ण पांडवों
के उपकारके लिये भांति भांतिके भोग, धन और राज्यको छोड़ सकतेहैं ।१६। हेभूतनाथ
महात्मा भरत विक्रमही से भूपोंके अधीश बनेथे और पाक शासन तथा विक्रमही के द्वारा
तीनों लोक जीत लिये थे । हे राजेन्द्र ! क्षत्रियों को विक्रम दिखाना ही प्रशंसा योग्यहै ।
विक्रमही शूरों का धर्म है ।१८। अतएव हम बडभारी चतुरङ्गिणी सेना से विना विलम्ब
राजा द्रुपद को मथन कर पाण्डवोंको यहां लेते आवें । शाम, दान वा भेद द्वारा
पाण्डव नष्ट नहीं किये जा सकेंगे, सो विक्रमही से उन का भले प्रकार
नाश करो।२०।विक्रम दिखाकर उनको हराकर इस सम्पूर्णधरतीपर राज्यकरते रहो । हे
जनाधिप ! मैं इस के विना कार्य पूरा करने का कोई दूसरा उपाय नहीं दीखता ।
वैशम्पायन ने कहा कि प्रतापी धृतराष्ट्र राधानन्दनकी बात सुनकर उनकी प्रशंसा कर
बोले।२२।कि हेसूतपुत्र ! तुम बडेबुद्धिमान और अस्त्र विद्या में पण्डितहो, सो ऐसाविक्रम
युक्त वचन बोलना तुम्हारे योग्यही हुआ है पर भीष्म, द्रोण, विदुर, और तुम दोनों

before they collect a great force of allies. We must defeat them before the king of Panchal and his sons can prepare to join them, or before Shree Krishna comes to help them in the country of Panchals. Krishna can part with his wealth and kingdom for the good of the Pandavas. 16. *Bharat* became the king of kings by his valour alone and it was by his valour that he conquered so many countries. Bravery is praiseworthy in the Kshatryas. It is their duty as well. Let us, then, attack the kingdom of Drupad and make the Pandavas prisoners. They can not be destroyed by any means other than valour. 20. We shall be masters of the whole kingdom when they are defeated. I see no other way." Vaishampayan said that Dhritrashtra praised the wisdom of the son of Radha and said, " You are very

द्या ॥२४॥ ततआनाय्यतान् सर्वान्मन्त्रिणः सुमहायशाः । धृतराष्ट्रोमहाराजमन्त्रयामासवै तदा ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्व्वणि विदुरागमनपर्वणि धृतराष्ट्रमन्त्रणे त्र्यधिकद्विशततोऽध्याय ॥२०३॥

भीष्म उवाच । नरोचतेविग्रहोमेपाण्डुपुत्रैः कथंचन । यथैवधृतराष्ट्रोमेतथा पांडुरसंशयम् ।१। गान्धार्य्याश्चयथा पुत्रास्तथाकुन्तीसुतामम यथाचममतेरक्ष्या धृतराष्ट्रतथातव ।२। यथाचममराज्ञश्च तथादुर्य्योधनस्यते तथाकुरूणां सर्वेषामन्येषामपिपार्थिव ।३। एवंगतेविग्रहंतैर्नरोचेसंधाय वीरैर्दीयतामर्द्धभूमिः । तेषामपीदंप्रपितामहानां राज्यंपितुश्चैव कुरुत्तमानाम ॥ ४ ॥ दुर्य्योधनयथाराज्यं त्वमिदंतातपश्यसि । ममपैतृकमित्येव तेऽपिपश्यन्तिपाण्डवाः ॥ ५ ॥ यदिराज्यंनतेप्राप्ताः पांडवेयायशस्विनः । कुतएवतवा

फिर युक्ति करके यह निश्चय करो, कि जिससे हमारा मंगलहोवे । महाराज ! अति यशोवन्त धृतराष्ट्र भीष्मादि सम्पूर्ण मंत्रियों को बुलवाकर युक्ति करने लगे ॥ २५ ॥

अध्याय २०४ ॥

भीष्मजी बोले कि हे धृतराष्ट्र पाण्डवों के साथ युद्धकरना किसीप्रकार मेरा अभीष्ट नहीं है क्योंकि मेरेलिये जैसे तुम पाण्डुभी वैसेही थे, और गांधारी के पुत्र जिस प्रकार स्नेहके पात्रहैं कुन्ती के पुत्रभी तैसेही हैं मुझको जिसप्रकार उनकी रक्षा करनीहै, तुम्हारीभी वैसीही करनी है ।२।हे पृथ्वीपाल वे मेरेजैसे आत्मजहैं, राजा दुर्योधन आदि सब कौरवभी वैसेही आत्मजहैं इस में कोई शंका नहीं है ऐसी दशा में क्योंकर उन से लडने को मेरी सम्मति होसकती है हेमहाराज उन वीरों से सन्धिकर के उनको आधा राज्य देदो क्योंकि यह उन कुरुत्तमों काभी राज्यहै।४।बेटा दुर्योधन तुम जिसप्रकार इसे अपना पैत्रिक राज्यसमझ रहेहो, वैसेही पाण्डवभी अपना पैत्रिक राज्यजानते हैं यदि वे यशोवन्त पाण्डव राज्यके अधिकारी नहीं, तो तुम अथवा कोई दूसरा भरतवंशी क्योंकर

wise and brave and have spoken words worthy of your valour. Let us consult Bhishm, Drona and Vidur and let me know their opinion." The glorious Dhritrashtra then assembled all his ministers including *Bhishm* to hold consulatation. 25.

CHAPTER CCIV.

Bhishma said, "I donot like to fight against the Pandavas, for you and they are both equal in my eyes. I love the sons of Kunti as well as those of Gandhari. It is my duty to protect both. They are my kinsmen as well as the other Kauravas. How can I give my opinion for war against them.? Settle amicably half the kingdom on them as they are partners in it. 4. The Pandavas consider it to be their inheritance as you do, Duryodhan. How can you or any other descendant of Bhart inherit the kingdom if they donot? If you

पीदंभारतस्यापिकस्यचित् ॥ ६ ॥ अधर्मेणचराज्यंत्वं प्राप्तवान्भरतर्षभ। तेऽपिराज्यमनुप्राप्ताः पूर्वमेवेतिमेमतिः ॥ ७ ॥ मधुरेणैवराज्यस्य तेषामर्द्धंप्रदीयताम्। एतद्धि पुरुषव्याघ्र हितंसर्वजनस्यच ॥ ८ ॥ अतोन्यथाचेत्क्रियते नहितंनोभविष्यति। तवाप्यकीर्त्तिःसकला भविष्यतिनसंशयः ॥ ९ ॥ कीर्त्तिरक्षणमातिष्ठ कीर्त्तिर्हिपरमं बलम्। नष्टकीर्त्तेर्मनुष्यस्य जीवितंह्यफलंस्मृतम ॥ १० ॥ यावत्कीर्त्तिर्मनुष्यस्य न प्रणश्यतिकौरव। तावज्जीवतिगान्धारे नष्टकीर्त्तिस्तुनस्यति ॥ ११ ॥ तमिमंसमुपातिष्ठ धर्मंकुरुकुलोचितम्। अनुरूपंमहाबाहो पूर्वेषामात्मनःकुरु ॥ १२ ॥ दिष्ट्याध्रियन्तेपार्थाहि दिष्ट्याजीवतिसापृथा। दिष्ट्यापुरोचनःपापो नसकामोऽत्ययंगतः ।१३। यदाप्रभृतिदग्धास्ते कुन्तिभोजसुतासुताः । तदाप्रभृतिगान्धारे नशक्नोम्यभिवीक्षि

राज्यका अधिकारी होसकताहै ।६।हेभरत श्रेष्ठ यदि तुम ने ऐसा समझाहै, कि मैं धर्मानुसार राज्यका अधिकारी बनाहूं तो पहिले धर्मानुसार उन्हींका अधिकार हुआ है, सो मेरा मत यह है, कि प्रसन्नता से उनको आधा राज्यदो । हेपुरुषव्याघ्र ! ऐसा करने से सबोंका मंगलहोगा।८।यदि इसकी विरुद्धताकरो, तो हम में से किसीका मंगल नहींहोगा और इस में सन्देह नहीं, कि तुम्हारी बडी निंदा फैलेगी । हे गांधारी-नंदन तुम कीर्ति की रक्षा करने का प्रयत्न करो इस भूमण्डल में कीर्तिही परमबल है, और कीर्ति न रखने वालेका जीवनही व्यर्थ है।१०।हेकौरव जबतक किसीकी कीर्ति नहीं बिगडती, उस के परलोक में सिधारने परभी तबतक वह जीवित रहता है, और कीर्त्ति नष्टहोने पर जीवित रहनेसेभी वह मराहुआ कहा जाताहै । हेमहाभुज तुम कुरुकुल के योग्य कर्म में चित्त लगाओ और अपने पूर्व पुरुषोंकीभांति कार्य करो।१२।हमारे सौभाग्यही से पाण्डव और कुन्ती जीवित हैं यह हमाराही सौभाग्य है, कि पापात्मा पुरोचनका मनोरथ सफल नहीं हुआ और वह यमराज के घरको जा पहुँचा हेगांधारीकुमार ! मैंने जब सुना, कि कुंती के पुत्र जलमरे हैं, तब से मैं इस धरती पर किसीसे भलेप्रकार भेंट नहीं

think yourself the rightful heir, they have a prior claim to it. 6. It is, therefore, my opinion that you should give them half the kingdom. The safety of all depends on it and not otherwise. If you act otherwise you will cause disgust. Try to protect your good name, son of Gandhari. Fame is the strongest power in this world. The life of one who has no good name, is useless. 10. A man is alive as long as his good name lasts even after his death. On the other hand a living man may be considered as dead if he has lost his good name. Do acts worthy of the family to which you belong and take after your predecessors. The Pandavas and Kunti are spared by our good fortune. It was good by our luck that the sinful Purochan failed in his purpose and was himself dead. I cannot look any one in the face from

तुम्॥१४॥लोकेप्रमाणभूतां कश्चिच्छ्रुत्वा कुन्तींतथागताम् । नचापिदोषेणतथालोको मन्येत्पुरोचनम् । यथात्वांपुरुषव्याघ्र लोकोदोषेणगच्छति ॥ १५ ॥ तदिदंजीवितं तेषां तवकिल्विषनाशनम् । संमतव्यंमहाराज पाण्डवानांचदर्शनम् ॥ १६ ॥ नचापितेषांवीराणां जीवतांकुरुनन्दन । पित्र्योंऽशःशक्य आदातुमपिवज्रभृता स्वयम् ॥ ॥ १७ ॥ तेसर्वेऽवस्थिताधर्मे सर्वेचैवैकचेतसः । अधर्मेणनिरस्ताश्च तुल्येराज्येविशेषतः ॥ १८ ॥ यदिधर्मस्त्वयाकार्यो यदिकार्यंप्रियंचमे । क्षेमंचयदिकर्त्तव्यं तेषामर्द्धंप्रदीयताम् ॥ १९ ॥

इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि भीष्मवाक्ये चतुरधिकद्विशततोऽध्यायः ॥२०४॥

द्रोण उवाच । मन्त्राय समुपानीतैर्धृतराष्ट्र हितैर्नृप । धर्म्यमर्थ्यंयशस्यंच वाच्यमित्यनुशुश्रुम ॥ १ ॥ ममाप्येषामतिस्तात याभीष्मस्यमहात्मनः । संविभज्यास्तु

करसकताहूं ।१४। हेपुरुषव्याघ्र लोग कुन्तीको उसदशामें गिरी सुनकर जिसप्रकार तुम को दोषी जानते हैं, पुरोचनको वैसा दोषी नहीं समझते हे महाराज पाण्डवोंका जीना और उनको फिर देखना तुमको केवल अपना कलंक नष्टहोने का हेतु करके जानना चाहिये हेकुरुनन्दन उन सबवीरों के जीवित रहने से स्वयं महेंद्रभी उन के पैत्रिकराज्य को लेनेकी सामर्थ नहीं रखते।१७।विशेष पाण्डव सब एकमत और धर्म-पथ के चलनेवाले होने परभी तुल्य अधिकार के राज्यसे अधर्म पूर्वक हटाये जाते हैं, अतएव यदि तुम को धर्म रक्षा करनी उचितहो, यदि तुमको मेरा प्रिय-कार्य करनाहो और यदि तुम अपनी भलाई चाहो तो पाण्डवों को आधा राज्यदो ॥ १९ ॥

अध्याय ॥ २०५ ॥

द्रोणबोले, कि हे महाराज धृतराष्ट्र हम ने सुना है, कि मन्त्रियों के युक्ति के लिये आ पहुँचने पर धर्म, अर्थ और यश देनेवाला वचन कहनाही उनका कर्त्तव्यहै। ऐ बेटा !

the time I heard that the sons of Kunti were burnt. People did not think him as much sinner in the matter as they thought you, son of Gandhari. You must think, king, that the escape and safe return of the Pandavas have washed the blot of (infamy) from your name. Indra himself cannot deprive the brave Pandavas of their kingdom as long as they are alive, 17. Besides, being virtuous peaceful, and having equal rights the Pndavas are unjustly being deprived of their kingdom. Therefore. if you wish to keep up Dharm do me this favour and do yourself good by giving the Pandavas half the kingdom." 19.

CHAPTER CCV

Drona said, "We hear, king, that its is the duty of ministers to speak in accordance with the principles of Dharm, Arth and glory

नरःकश्चित्प्रियम्वदः । बहुलं
कौन्तेया धर्मएषसनातनः ॥ २ ॥ प्रेषतांद्रुपदायाशु नरःकश्चित्प्रियम्वदः । बहुलं
रत्नमादाय तेषामर्थायभारत ॥ ३ ॥ मिथःकृत्यंचतस्मैस आदायवसुगच्छतु । वृद्धिं-
चपरमां ब्रूयात्त्वत्संयोगोद्भवांतथा ॥ ४ ॥ संप्रीयमाणंत्वां ब्रूयाद्राजन्दुर्योधनंत
था । असकृद्द्रुपदेचैव धृष्टद्युम्नेचभारत ॥ ५ ॥ उचितत्वंप्रियत्वञ्च योगस्यापिच
वर्णयेत् । पुनःपुनश्च कौन्तेयान्माद्रीपुत्रौच सान्त्वयन् ॥ ६ ॥ हिरण्मयानिशुभ्राणि
बहून्याभरणानिच । वचनात्तवराजेन्द्र द्रौपद्याःसंप्रगच्छतु ॥ ७ ॥ तथाद्रुपदपुत्राणां
सर्वेषांभरतर्षभ । पाण्डवानांचसर्वेषां कुन्त्यायुक्तानियानिच ॥ ८ ॥ एवंसान्त्वसमा
युक्तं द्रुपदंपाण्डवैःसह । उक्त्वासोऽनन्तरं ब्रूयात्तेषामागमनंप्रति ॥ ९ ॥ अनुज्ञातेषु
वीरेषु बलंगच्छतुशोभनम् । दुःशासनो विकर्णश्चाप्यानेतुं पाण्डवानिह ॥ १० ॥

करनेही से
महात्मा भीष्म से मैं सहमत हूं । पाण्डवोंको अंश देना उचित है, ऐसा करनेही से
सनातन धर्मकी रक्षा होगी ।२। हे भारत ! अब प्यारी बोली बोलनेवाले किसी पुरुषको
आज्ञा करें, कि पाण्डवों के लिये बहुत धन लेकर द्रुपद के यहां जाय । वह भेजा हुआ
पुरुष वर और वधुके योग्य रत्न और अलङ्कार भी लेकर द्रुपद के सम्मुख जाकर कहे,
कि हे महाराज । आप के साथ राजा धृतराष्ट्र और दुर्योधन की पहुनाई होने से वे वहुत
कृतार्थ हुए और अपने को श्रीमन्त समझते हैं।४।हे भारत वह दूत राजा द्रुपद और धृष्टद्यु
म्नसे वार वार ऐसा कहे कि आप के साथ विवाहसे जो पहुनाई बनी वह बहुत योग्य
और कौरवोंके मनभावन हुईहै।हे महाराज ! अनन्तर वह दूत पाण्डवोंको वार वार सम
झानेकी वातें कहकर द्रौपदीको शुद्ध सुवर्ण के अनेक अलङ्कार देकर राजा पाञ्चाल के
सब पुत्रों पाण्डवों और कुन्तीके योग्य चीर गहने देवे ।८। हेभरत श्रेष्ठ ! इसप्रकार द्रुपद
और पाण्डवों को समझाकर अन्त में उनको लानेकी बात कहे । पाण्डवों के द्रुपद से
आनेकी आज्ञा पानेपर दुःशासन और विकर्ण अच्छी सेनादि के साथ उनको लिवालाने
को जावें । आगे पुरुषश्रेष्ठ पाण्डवों के राजधानीमें आ जानेपर आप उनको सादरपूर्वक

when their opinion is asked. I agree with *Bhishma* in saying
that the Pandavas should get their share. Please send an ambassa-
dor with a large amount of wealth to the Pandavas. He should also
take with him ornaments worthy of the bridegrooms and the bride,
and say to Drupad that Dhritrashtra and Duryodhan are very
glad to have this kinship with him and consider themselves very
fortunate. 4. He should say again and again to Drupad and
Dhrishtadyumna that his relationship with the Kauravas has given
a great joy to our hearts. He should then give the Pandavas, the
sons of the king of Panchal, and Kunti ornaments of gold and clothes.
8. In the end he should talk of bringing the Pandavas here. On
their return from Draupad's country Dushasan and Bikarn should

ततस्तेपाण्डवाःश्रेष्ठाः पूज्यमानाःसदात्वया । प्रकृतीनामनुमते पदेस्थास्यन्तिपैतृके ।
।। ११ ।। एतत्तत्रमहाराजपुत्रेषु तेषुचैवहि । वृत्तमौपयिकंमन्ये भीष्मेणसहभारत ॥
।। १२ ।। कर्ण उवाच । योजितावर्थमानाभ्यां सर्वकार्य्येष्वनन्तरौ । नमन्त्रयेतांत्व
च्छ्रेयः किमद्भुततरंततः ॥ १३ ॥ दुष्टेनमनसायोवै प्रच्छन्नेनान्तरात्मना ब्रयाच्छ्रे-
यसंनाम कथंकुर्य्यात्सतांमतम् ॥ १४ ॥ नमित्राण्यर्थकृच्छ्रेषु श्रेयसेचेतरायवा । वि-
धिपूर्वंहिसर्वस्य दुःखंवायदिवासुखम् ॥ १५ ॥ कृतप्रज्ञोऽकृतप्रज्ञो बालोवृद्धश्चमान-
वः । ससहायोऽसहायश्च सर्वंसर्वत्रविन्दति ॥ १६ ॥ श्रूयतेहिपुरा कश्चिदम्बुवीच
इतीश्वरः । आसीद्राजगृहेराजा मागधानांमहीक्षिताम् ॥ १७ ॥ सहीनःकरणैः सर्वै

स्वागत करना अनन्तर वे प्रजाओं के मत से पैत्रिक पद पर आरूढहोवें । महाराज ! मेरा और भीष्मका मत यह है, कि आपके पुत्ररूपी उन पाण्डवों से ऐसा व्यवहारही आपको करना चाहिये।१२।कर्ण बोले, कि भीष्म और द्रोण यह दोनों सबकार्योंके बिगाड़नेवाले हैं, और आपही के दिये धन और मान से बड़े हैं इस से और क्या आश्चर्य होगा, कि यह आपको आप के मंगलका परामर्श नहीं देते महाराज! जो जीमें मित्रका द्रोह रखकर शत्रु के हितकी बुद्धि से युक्ति कहतेहैं वे क्योंकर मंगलका निश्चय करसकतेहैं।१३।पर ऐसा नहीं है कि विपद में पडनेसे साधु वा असाधु मित्रही मंगल वा अमंगलके कारण बनते हैं, क्योंकि सुख और दुःखकी जड भाग्यहीहै, देखो विज्ञ, अविज्ञ, बाल, वृद्ध, सहाय वा बिन सहाय सबप्रकारके लोग सबजगहमें सबवस्तु पाजातेहैं।१६।सुना है कि पहिले राजगृह नामक राजधानीमें मगधदेशी राजाओंके अधीश अम्बुवीच नामक एक पृथ्वीनाथ थे राजकार्य में उनकी टुकभी दृष्टि नहीं थी; वह इतनाही काम करतेथे, कि श्वासखैंचते और छोडतेथे सो उनका सम्पूर्ण राजकार्य मन्त्रियों के हाथमें गया।१८।

go out with a large army to receive and bring them here. You should welcome them personally on their arrival into the Capital and then they may be installed on the throne of their father by the consent of the people. It is Bhishma's opinion and mine that you should behave like sons towards the Pandavas." Karan said, "Bhishma and Drona spoil the mess and have become great through the wealth and honours heaped upon them by you. What can be more amazing than their advices which can bring you no good? How can those who are wellwishere of the enemy give salutary advice?14. It is not that good or bad friends only may give joy or trouble at the time of need, but the root of happiness and misery lies in fate. See, the wise and the fool, old and young, those having allies and the helpless, all these get all sorts of things in all places.16. It is said that there was a king named Ambuvich who ruled over

॥ १८ ॥ तस्यामात्यो
रुच्छ्रासपरमोनृपः। अमात्यसंस्थःसर्वेषु कार्येष्वेवाभवत्तदा ॥ १९ ॥ सराज्ञ
महाकर्णिर्बभूवैकेश्वरस्तदा । सलब्धबलमात्मान मन्यमानोऽवमन्यते ॥ २० ॥ तदा
उपभोग्यानि स्त्रियोरत्नधनानिच । आददेसर्वशोमूढ ऐश्वर्यंचस्वयंतदा ॥२१॥
दायचलुब्धस्य लोभाल्लोभोऽभ्यवर्द्धत। तथाहिसर्वमादाय राज्यमस्यजिहीर्षति ॥२२॥
हीनस्यकर्णैःसर्वैरुच्छ्वासपरमस्यच । यतमानोऽपितद्राज्यं नशशाकेतिनःश्रुतम् ॥२३॥
किमन्यद्विहितान्नूनं तस्यसापुरुषेन्द्रता । यदितेविहितंराज्यं भविष्यतिविशाम्पते
॥ २३ ॥ मिषतःसर्वलोकस्य स्थास्यतेतवयितद्ध्रुवम्। अतोऽन्यथाचेद्विहितं यतमानो
नलप्स्यसे ॥ २४ ॥ एवंविद्वन्नुपादत्स्व मन्त्रिणांसाध्वसाधुताम्। दुष्टानाञ्चैवबोद्ध-
व्यमदुष्टानाञ्च भाषितम् ॥ २५ ॥ द्रोण उवाच । विद्मतेभावदोषेण यदर्थमिदमुच्यते।

महाकार्णिक नामक उनका मन्त्री पूरा अधिकार पाकर और अपनेको बलयुक्त जानकर
राजाका अनादर करने लगा। उस मूर्ख मन्त्री ने राजा के भोगनेकी स्त्री, रत्न और
धन सब ऐश्वर्य आप ले लिया।२०। और यह सब लेकर उस लोभीका लोभ बढा, वह
राजाका सब कुछ लेकर भी चुप नहीं हुआ, राज्यतक हरना चाहा, पर हमने सुनाहै
कि वह मन्त्री अपनी पूरी सामर्थ से चेष्टा करने परभी उस कार्यरहित श्वासमात्र लेते
हुए राजाका राज्य नहीं हरसका।२२। हेमहाराज ! अम्बुबीच राजा को भाग्यके बिना
कौनसा पुरुषार्थ था, कि जिस से राज्यकी रक्षा हुई हेमहाराज ! यदि विधिने यहराज्य
आप के लिये निश्चय कर दियाहो, तो आप के सबलोगों के परास्तहोनेपरभी यह आप
ही के हाथमें बना रहेगा यदि भाग्य में न रहे तो आप चेष्टाभी करें, तो बचा नहीं
सकेंगे।२४। हे महाराज ! आप पण्डित हैं, मन्त्रियोंमें कौन साधुहैं और कौन असाधुहैं
आपही विचार लेवें और दुष्ट अदुष्टजनोंके वचनका प्रयोजन समझें। द्रोणबोले, कि कर्ण
समझगया कि तुम्हारा हृदय दोषसे भरे रहनेही के कारण तुम ऐसा कहते हो, पाण्डवों

the kingdom of Rajgriha. He never looked into the affairs of his kingdom. He passed his life in indolence and left all his kingdom to the ministers. His minister Mahakarnik became very powerful and headstrong and deprived the king of his wife, jewels and wealth. 20. But his avarice did not abate. He did not keep quiet even after taking from the king his all. He wished to become king, but failed in his attempt. The king had no one to protect his kingdom except his own good fortune. In the same manner, if, by the decree of fate you are to rule the kingdom then no one can deprive you of it. Otherwise you can not save it with all your exertions. 24. You know, king, which of your ministers are good and which not and can understand the significance of their words." Drona remarked. "You say so, Karan, because your heart is full of wickedness. You

दुष्प्राण्डवहेतोस्त्वं दोषमाख्यापयस्युत ॥ २६ ॥ हितन्तुपरमंकर्ण ब्रवीमिकुलवर्द्धनम् । अथत्वंमन्यसेदुष्टं ब्रूहियत्परमंहितम् ॥ २७ ॥ अतोऽन्यथाचेत्क्रियते यद्ब्रवीमिपरं हितम् । कुरवोवैविनङ्क्ष्यन्ति नचिरेणैवमेमतिः ॥ २८ ॥

इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि द्रोणवाक्ये पञ्चाधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २०५ ॥

विदुर उवाच । राजान्निःसंशयंश्रेयो वाच्यस्त्वमसिवान्धवैः । नत्वशुश्रूषमाणेवै वाक्यंसंप्रति तिष्ठति ॥ १ ॥ प्रियंहितञ्च तद्वाक्यमुक्तवान् कुरुसत्तमः । भीष्मःशान्तनवोराजन् प्रतिगृह्णासितन्नच ॥२॥ तथाद्रोणेनवहुधा भाषितंहित मुत्तमम् । तच्चराधा सुतःकर्णो मन्यतेनहितंतव ॥ ३ ॥ चिन्तयंश्चनपश्यामि राजंस्तवसुहृत्तमम् । आभ्यां पुरुषसिंहाभ्यां योवास्यात्प्रज्ञयाधिकः ॥ ४ ॥ इमौहिवृद्धौवयसा प्रज्ञयाचश्रुतेनच । समौचत्वयिराजेन्द्र तथापाण्डुसुतेषुच ॥ ५ ॥ धर्मेचानवरौराजन् सत्यतायाञ्चभारत ।

पर तुम्हारा द्वेष रहनेहीके हेतु तुमने हमपर दोष लगाया।२६।पर मैंने जो कहा वह कुल बढ़ानेवाला और परम हित देनेवालाहै, यदि वह तुम्हारी समझ में बुरा जान पडे, तो जिससे परम हितहोना है वही कहो वास्तव में मुझको निश्चय जान पडता है, कि यदि मेरेकहे परम हित वचन की विरुद्धता कीजावे, तो बिना विलम्ब कौरव गण लय पा जायँगे ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ २०६ ॥

विदुर बोले, कि हे महाराज ! आपके बन्धु लोग बिनासन्देह आपको हितवचन कह रहे हैं, पर आपके ध्यान के बिना उसकी रक्षा नहीं होती है, हेमहाराज ! कुरु श्रेष्ठ शान्तनु पुत्र भीष्म जो प्रिय और हित वचन बोले; आप उसपर ध्यान नहीं देते हैं।२। आचार्य द्रोणने अनेक हित बात कही; राधापुत्र कर्णकी समझ में वे आपके हितकारी नहीं हैं हे महाराज मैं सोचकर नहीं समझ सकता, कि भीष्म और द्रोणसे अधिकज्ञानी और आपका परम मित्र और कौन विद्यमानहैं।४। वे दोनों बुद्धि विद्या और अवस्था में

have found fault with us because you dislike the Pandavas. But what I have said is for the good of the family. If you think otherwise you may give your opinion as to what is best to be done. I fully believe that the Kauravas will court their destruction if they do against my proposal. 28.

CHAPTER CCVI

Vidur said; "Your kinsmen; O king, are no doubt giving you good advice, but it can not be acted upon without your paying attention to it. 2. Dronacharya has given you profitable advice though in the eyes of Karan it is not so. I donot think; king, that there is any person more wise and faithful than them. They are old in wisdom knowledge and age. They have equal regard for both you and the

रामाद्दाशरथेश्चैव गदाचैवनसंशयः ॥ ६ ॥ नचोक्तवन्तावश्रेयः पुरस्तादपिकिञ्चन ।
नचाप्यपकृतं किञ्चिदनयोर्लक्ष्यतेत्वयि ॥ ७ ॥ तावुभौ पुरुषव्याघ्रावनागसिनृपेत्वयि ।
नमन्त्रयेतांत्वच्छ्रेयः कथंसत्यपराक्रमौ ॥ ८ ॥ प्रज्ञावन्तौनरश्रेष्ठावस्मिल्लोके नराधिप ।
त्वन्निमित्तमतोनेमौ किञ्चिज्जिह्मंवदिष्यतः ॥ ९ ॥ इतिमेनैष्ठिकी बुद्धिर्वर्त्ततेकुरुनन्दन ।
नचार्थहेतोर्द्धर्मज्ञौ वक्ष्यतःपक्षसंश्रितम् ॥ १० ॥ एतद्धिपरमंश्रेयो मन्येऽहंतवभारत ।
दुर्य्योधनप्रभृतयः पुत्राराजन्यथातव । तथैवपाण्डवेयास्ते पुत्राराजन्नसंशयः ॥ ११ ॥
तेषुचेदहितंकिंचिन्मन्त्रयेयुरतद्विदः । मन्त्रिणस्तेनचश्रेयः प्रपश्यन्तिविशेषतः ॥ १२ ॥
अथतेहृदयेराजन् विशेषःस्वेषुवर्त्तते । अन्तरस्थंविवृण्वानाः श्रेयःकुर्य्युर्नतेध्रुवम् ॥ १३ ॥

वृद्ध हैं । हे महाराज ! आपपर उनका जैसा भावहै पाण्डवों परभी वैसाही है हेभारत-राज इस में सन्देह नहीं, कि यहलोग धर्म और सत्य के विषय में दशरथके पुत्र रामचन्द्र और गयासुरसेभी श्रेष्ठहैं ।६। यह दीखही नहीं पडता, कि इन्होंने पहिलेभी कभी आपका कोई अहित वाक्य कहा वा कोई हानिकीहो।हेपृथ्वीनाथ ! आपने तो इन दोनों पुरुषवरोंका कोई अनिष्ट नहीं किया, कि जिससे यह आपके लिये कल्याणदायी परामर्श नदें।८।विशेष यह दोनों पुरुष सिंह सत्यशील और ज्ञानी हैं, सो हेनरनाथ यह आप के विषय में कभी कुछ कुटिल वचन नहीं बोलेंगे हे कुरुनन्दन ! मेरी समझ में यह निश्चय किया हुआहै, कि यह दोधर्मज्ञ पुरुष धन के लोभ से कभी पक्षपातकी बात नहीं कहेंगे।१०।सो इन्होंने जो कहाहै मेरी समझ में वह आपके लिये मंगलदायीहै हेमहाराज ! आपके लिये दुर्योधनादि पुत्र जैसे स्नेहपात्रहैं, सन्देह नहीं कि पाण्डवभी वैसेही स्नेहपात्र हैं जो सब मन्त्री उस विषय को न सोचकर उन पाण्डवों के अहित का परामर्शदेतेहैं वे आपकी भलाई पर विशेष दृष्टि नहीं देते । हेभूप ! यद्यपि आपके हृदय में अपने पुत्रोंपर विशेषताभी रहे, तौभी जो लोग आप के उस हृदय स्थित भाव के अनुसार वचन बोलेंगे, इसमें सन्देह नहीं कि वे आपका अनिष्ट करेंगे इस लिये इन दोनों महा

Pandavas. Undoubtedly, they are superior to Ram Chandra the son of Dasarath, and Gayasur in the matter of Truth and Dharm 6. I do not think of their having ever done you any harm or given you bad advice. You have never offended these best of men to cause them to give you bad advice. Especially when they are truthful and wise they will never say anything harmful to you. I believe they will never be biassed by the hope of gain.10.I therefore think that their advice is beneficial to you. The Pandavas are as worthy of your love as your sons are. Those who speak ill of the Pandavas, without considering this, are not your well-wishers. Those who advise you to do ill to the Pandavas are not your friends even though you may perfer your sons to them.13.

एतदर्थमिमौराजन् महात्मानौमहाद्युती । नोचतुर्विंवृतंकिंचिन्न ह्यषतवनिश्चयः ॥१४॥ यच्चाप्यशक्यतां तेषामाहतुः पुरुषर्षभौ । तत्तथापुरुषव्याघ्र तवतद्भद्रमस्तुते ॥ १५ ॥ कथंहिपाण्डवःश्रीमान् सव्यसाचीधनञ्जयः । शक्योविजेतुंसंग्रामे राजन्मघवतापिहि ॥ १६ ॥ भीमसेनो महाबाहुर्नागायुतवलो महान् । कथंस्मयुधिशक्येत विजेतुममरैरपि ॥ १७ ॥ तथैवकृतिनौयुद्धे यमौयमसुताविव । कथंविजेतुंशक्यौतौ रणेजीवितुमिच्छता ॥ १८ ॥ यस्मिनधृतिरनुक्रोशः क्षमासत्यंपराक्रमः । नित्यानिपांडवेज्येष्ठे सजीयेतरणे कथम् ॥ १९ ॥ येषांपक्षधरोरामो येषांमन्त्रीजनार्दनः । किन्नुतैरजितंसंख्ये येषांपक्षेचसात्यकिः ॥ २० ॥ द्रुपदःश्वशुरोयेषां येषांश्यालाश्चपार्षतः । धृष्टद्युम्नमुखावीरा भ्रातरोद्रुपदात्मजाः ॥ २१ ॥ सोऽशक्यताञ्चविज्ञाय तेषामग्रेचभारत । दायाद्यतांच

तेजस्वी महात्माओं ने उसप्रकार अनुचित परामर्श नहीं दियाहै, पर आप के चित्तका भाव पक्षपातरहित न होनेही के हेतु वह आप समझ नहीं सकतेहैं । हेपुरुषव्याघ्र ! इन दोनों ने आप से कहाहै, कि पाण्डव जीतेनहीं जासकेंगे, वह झूठ नहीं है सो हमारी यही प्रार्थना है, कि पाण्डवों से आपकी भलाईहोवे हेनरनाथ ! क्या देवराजभी युद्धस्थल में श्रीमान् सव्यसाची पाण्डव धनंजयको जयकरसकतेहैं।१६।रणभूमि में दशसहस्र गजों के समान बली महान् महाभुज भीमसेन को क्या देवगणभी जय कर सकतेहैं रणस्थल में क्या कोईभी जय चाहनेवाले युद्धदक्ष यमवत यमज नकुल सहदेवका पराक्रम सहसक्ता है ।१८। जिस पुरुष में धीरज, दया, क्षमा, सत्य और पराक्रम यह सब गुण सदा विराजमान हैं क्या वह पाण्डवों के ज्येष्ठ युधिष्ठिर जीतेजाने के योग्यहैं ? विशेष राजा द्रुपद जिनके ससुर, द्रुपदके पुत्र वीर धृष्टद्युम्नादि वीरभाई जिनके साले, बलराम और सात्यकि जिनके पक्षी और जनार्दन जिनके मन्त्री हैं, रणस्थल में क्या कुछभी उन से जीतेजाने के अयोग्यहैं।२१।अतएव हेभारत ! रणस्थल में उनकी अजयता

The two great men have not given you bad advice, but you donot think so because your mind is not free from prejudice. They both agree in saying that the Pandavas can not be conquered and there is no doubt about it. We therefore pray that you may suffer no injury from them. Can Indra himself conquer Arjun in battle? Can even the gods defeat Bhim who has the power of ten thousands of elephants? Can any one desiring his own safety, bear the Yam like prowess of the twins Nakul and Sahadev? Can any one conquer Yudhishthir the eldest brother of the Pandavas, having the qualities of patience, mercy, forgiveness, truth and prowess within him ?19. Whom can they not conquer who have Drupad for their father-in-law; Dhrishtadyumna and other brave sons of Drupad for their brother's-in-law; Balram and Satyaki for their allies; and Janardan for their counsellor? You must therefore act properly, king, consi-

धर्मेण सम्यक्तेषुसमाचर ॥ २२ ॥ इदंनिर्द्दिष्टमयशः पुरोचनकृतंमहत् । तेषामनुग्रहेणेदं-
राजन् प्रक्षालयात्मनः ॥ २३ ॥ तेषामनुग्रहश्चायं सर्वेषाञ्चैवनःकुले । जीवितञ्च
परंश्रेयः क्षत्रस्यचविवर्द्धनम् ॥ २४ ॥ द्रुपदोऽपिमहान्राजा कृतवैरश्चनःपुरा । तस्य
संग्रहणंराजन् स्वपक्षस्यविवर्द्धनम् ॥ २५ ॥ बलवन्तश्चदाशार्हा बहवश्चविशाम्पते ।
यतःकृष्णस्ततःसर्वे यतःकृष्णस्ततोजयः ॥ २६ ॥ यच्चसाम्नैवशक्येत कार्य्यंसाधयितुं
नृप । कोदैवशप्तस्तत्कार्य्यं विग्रहेणसमाचरेत् ॥ २७ ॥ श्रुत्वाचजीवतःपार्थान् पौर
जानपदाजनाः । बलवद्दर्शनेहृष्टास्तेषांराजन् प्रियंकुरु ॥ २८ ॥ दुर्य्योधनश्चकर्णश्च शकु-
निश्चापिसौबलः । अधर्मयुक्तादुष्प्रज्ञा बालामैषांवचःकृथाः ॥ २९ ॥ उक्तमेतत्पुरा

और धर्मानुसार राज्याधिकारिताकी बातको ध्यानमें लाकर पहिलेही उनसे योग्य व्यव-
हारकरें । हे पृथ्वीपाल ! पुरोचनका किया जो बडे कुयशका धब्बा आपपर लगगयाहै,
आप आज पाण्डवों पर कृपा दर्शाकर उसको धोडालें । २३ । उनपर इस कृपाके दर्शाने
से हमारे वंश में सबके जीवनकी रक्षा, परम मंगल और क्षत्रियकुलकी वृद्धिहोगी । हे
भूनाथ ! पांचाल देशीय द्रुपद बहुत बडे राजाहैं, पहिले उन से हमारी शत्रुता हुईथी,
पर उनको मिलालेनेमे हमारा पक्ष बहुत बढ़ेगा ।२५। हेनरनाथ ! यहभी समझनेयोग्य
है, कि दशार्ह देशीयगण बली और बहुत हैं, कृष्ण जिस ओर रहेंगे वेभी उसी ओर
रहेंगे, सो जिस पक्ष में कृष्ण उसी पक्षकी जयहोगी। जो कार्य साम के द्वारा भलेप्रकार
सिद्धहोसकताहै, बिना दैवी विडम्बना कौन उसको युद्धद्वारा सिद्धकरना चाहताहोगा२७
हेमहाराज ! नगर और जनपदबासी सब जन पाण्डवोंको जीवित सुनकर उनकी भेंटके
लिये प्रसन्न हुएहैं, सो अवश्यही उनका प्रिय करना चाहिये । दुर्योधन, कर्ण और
सुबलपुत्र शकुनि, यह अधार्मिक कुसमझ और बालक हैं, इनकी बात किसी प्रकार

dering well that they are invincible and are rightful heirs to the kingdom. Wash the blot of Purochan's misdeeds from yourself by doing kindness to the Pandavas.23.By doing kindness to them we expect peace of our family, joy, and the improvement of the Kshatrya race. King Drupad is a very powerful king. We had a quarrel with him before but we shall be very strong if we can make him our ally.25.It is also worthy of consideration that the people of Dasharha are brave and numerous. They will join the side which Krishna does and victory is sure to be on the side on which the latter is. Who will desire to do a thing by the help of war when it can be managed peacefully? Hearing of the escape of the Pandavas from death, the people of the city and province are desirous to see them. Duryodhan, Karan, and Subal's son Shakuni are unjust, foolish and young. Their word is not worthy

राजन्मया गुणवतस्तव । दुर्य्योधनापराधेन प्रजेयंवैविनङ्क्ष्यति ॥ ३० ॥
इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि विदुरवाक्ये षष्ठाधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २०६ ॥
धृतराष्ट्र उवाच । भीष्मःशान्तनवो विद्वान्द्रोणश्चभगवानृषिः । हितंचपरमंवाक्यं त्वञ्चसत्यंब्रवीषिमाम् ॥ १ ॥ यथैवपाण्डोस्तेवीराः कुन्तीपुत्रामहारथाः । तथैवधर्मतःसर्वे ममपुत्रानसंशयः ॥ २ ॥ यथैवममपुत्राणामिदं राज्यंविधीयते । तथैवपाण्डुपुत्राणामिदं राज्यंनसंशयः ।३। क्षत्तरानयगच्छैतान्सहमात्रासुसत्कृतान् । तथाचदेवरूपिण्या कृष्णयासहभारत।४। दिष्ट्याजीवन्तितेपार्था दिष्ट्याजीवतिसापृथा । दिष्ट्याद्रुपदकन्यांच लब्धवन्तोमहारथाः ।।५।। दिष्ट्यावर्द्धामहेसर्वे दिष्ट्याशान्तःपुरोचनः । दिष्ट्याममपरं दुःखमपनीतं महाद्युते ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोजगामविदुरो धृतराष्ट्रस्यशासनात् । सकाशंयज्ञसेनस्य पाण्डवानांचभारत ॥ ७ ॥ समुपादायरत्ना

सुनने के योग्य नहीं है । हेगुणोंसे सजे भूप ! मैंने पहिलेभी आप से कहाथा, कि दुर्योधनके दोषसे यह सब प्रजा नष्टहोगी ॥ ३० ॥

अध्याय २०७ ॥

धृतराष्ट्र बोले, कि पण्डित शान्तनुनन्दन और भगवान ऋषि द्रोणने, जो कहा और तुम जो कहतेहो वह परम हित और सब सत्य है । वे सब महारथी वीर कुन्तीनन्दन जिसप्रकार पाण्डुके पुत्रहैं, वैसेही धर्मानुसार मेरेभी पुत्रहैं।२।और मेरेभी पुत्र जिस प्रकार इस राज्यके अधिकारी हैं, इस में संदेह नहीं, कि पाण्डुपुत्रभी वैसेही अधिकारी हैं । हे क्षत्त ! जाओ, मातासहित पाण्डव और देवतारूपी कृष्णाको सत्कार करके लिवा लाओ ।६। मेरे सौभाग्यही से पाण्डव जीवितहैं, मेरे सौभाग्यही से कुन्ती का कोई बड़ा अहित नहीं हुआ और महारथी पाण्डवों का द्रौपदी लाभ करनाभी मेरेसौभाग्यही का फल है । हे महाप्रकाश ! बड़े भाग्यहीसे हम सब बढ रहे हैं, सौभाग्यही से पुरोचन नष्ट हुआ, भाग्यही के वश हमारा परम दुःख दूरहुआ ।६। वैशम्पायन ने कहा, कि हे

of credit. I have already foretold king that the people will be destroyed by the fault of Duryodhan !"30.

CHAPTER. CCVII.

Dhritrashtra said,"The advice given by the learned son of Shantanu, Rishi Drona, and yourself is really good. The brave sons of Kunti are my sons as well as of Pandu and are no doubt, right ful heirs of the kingdom like my sons. Go, Vidur and bring the Pandavas here with mother and Krishna.4. The Pandavas are alive by my good fortune. It was by my good fortune that Kunti came to no great harm and her sons won Draupadi. By our good luck we are rising and Purochan is dead to our great relief."6. Vaishampayan said that by Dhritrashtra's order Vidur went to the Pandavas and

नि वस्त्राणिविविधानिच । द्रौपद्याःपाण्डवानांच यज्ञसेनस्यचैवह ॥ ८ ॥ तत्रगत्वास
धर्मज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः । द्रुपदंन्यायतोराजन् संयुक्तमुपतस्थिवान् ॥ ९ ॥ सचा
पिप्रतिजग्राह धर्मेणविदुरंततः । चक्रतुश्चयथान्यायं कुशलप्रश्नसम्विदम् ॥ १० ॥
ददर्शपाण्डवांस्तत्र वासुदेवंचभारत । स्नेहात्परिष्वज्यसतान् पप्रच्छानामयंततः ॥
॥ ११ ॥ तैश्चाप्यमितबुद्धिःस पूजितोहियथाक्रमम् । वचनाद्धृतराष्ट्रस्य स्नेहयुक्तंपुनः
पुनः ॥ १२ ॥ पप्रच्छानामयं राजंस्ततस्तान् पाण्डुनन्दनान् । प्रददौचापिरत्नानि वि
विधानिवसूनिच ॥ १३ ॥ पाण्डवानांचकुन्त्याश्च द्रौपद्याश्चविशाम्पते । द्रुपदस्यच
पुत्राणां यथादत्तानिकौरवैः ॥ १४ ॥ प्रोवाचचामितमतिः प्रश्रितंविनयान्वितः ।
द्रुपदंपाण्डुपुत्राणां सन्निधौकेशवस्यच ॥ १५ ॥ विदुर उवाच । राजन्छृणुसहामात्यः
सपुत्रश्चवचोमम । धृतराष्ट्रःसपुत्रस्त्वां सहामात्यःसबान्धवः ॥ १६ ॥ अब्रवीत्कुशलं

भारत ! अनन्तर विदुर धृतराष्ट्रकी आज्ञा से राजा यज्ञसेन, द्रौपदी और पाण्डवों के लिये अनेक धन रत्न लेकर उन के निकट गये । आगे उन सर्वशास्त्रों में पण्डित धर्म के जानकार यज्ञसेनके पास पहुँचकर यथायोग्य नमस्कार आलिंगन आदि किया । राजा यज्ञसेन ने धर्मानुसार उठकर विदुरको सम्मानित किया अनन्तर वे दोनों विधि पूर्वक आपसमें कुशलक्षेम पूछने पाछनेलगे । १० । हेभारत अति बुद्धिमान विदुर ने उसस्थान में पाण्डव और वासुदेव को देखकर स्नेह पूर्वक गले से लगाकर स्वास्थ्यकी बात पूछी अनन्तर वह उन से क्रमके अनुसार सत्कृतहोकर धृतराष्ट्रकी आज्ञा से स्नेह पूर्वक बार२ कुशल पूछने लगे ।१२। हेनरनाथ आगे उन्होंने पाण्डव, कुन्ती, द्रौपदी और द्रुपदके पुत्रों को यथोचित धृतराष्ट्र का भेजा अनेक धन और रत्न दिया, और वह अमित चित विनयसे नम्रहोकर पाण्डव और केशवके सम्मुख द्रुपदसे प्रेमभरी बातों में कहने लगे ।१५। कि हे महाराज आप मन्त्री और पुत्रोंके साथ मेरावचन सुनें । राजा धृतराष्ट्रने मन्त्री पुत्र और मित्रोंके साथ प्रसन्न होकर बारबार आपका कुशल पूछा है ।

took with him wealth and jewels for the king, Draupadi and the Pandavas. He was received with respect by Drupad and both exchanged mutual greetings.10.The wise Vidur seeing the Pandavas and Vasudev there, embraced them affectionately and asked about their welfare.He asked in the name of Dhritrashtra about the welfare of Drupad.He then presented to the Pandavas, Kunti, Draupadi, and the sons of Drupad the wealth sent by Dhritrashtra. He then called the attention of Drupad, in an humble tone, in the presence of the Pandavas and Keshav, and said, "King Dhritrashtra with ministers and sons has asked about your welfare and is proud of the relationship with you. The wise son of Shantanu, as representative

राजन् प्रीयमाणःपुनःपुनः । प्रीतिमांस्तेदृढंचापि सम्बन्धेननराधिप ॥ १७ ॥ तथा भीष्मःशान्तनवः कौरवैःसहसर्वशः । कुशलंत्वांमहाप्राज्ञः सर्वतःपरिपृच्छति ॥ १८ ॥ भारद्वाजोमहाप्राज्ञो द्रोणःप्रियसखस्तव । समाश्लेषमुपेत्यत्वां कुशलंपरिपृच्छति ॥ ॥ १९ ॥ धृतराष्ट्रश्चपांचाल्य त्वयासम्बन्धमीयिवान् । कृतार्थंमन्यतेत्मानं तथासर्वेऽपिकौरवाः ॥ २० ॥ नतथाराज्यसंप्राप्तिस्तेषांप्रीतिकरीमता । यथासम्बन्धकंप्राप्य यज्ञसेनत्वयासह ॥२१॥ एतद्विदित्वातुभवान् प्रस्थापयतुपाण्डवान् । द्रष्टुंहिपाण्डुपुत्रांश्च त्वरन्तिकुरवोभृशम् ॥ २२ ॥ विप्रोषितादीर्घकालमेते चापिनरर्षभाः । उत्सुका नगरंद्रष्टुं भविष्यन्तितथापृथा ॥ २३ ॥ कृष्णामपिचपाञ्चालीं सर्वाः कुरवरस्त्रियः । द्रष्टुकामाःप्रतीक्षन्ते पुरंचविषयाश्चनः ॥ २४ ॥ सभवान् पाण्डुपुत्राणामाज्ञापयतु मा चिरम् । गमनंसहदाराणामेतदत्र मतंमम ॥ २५ ॥ निसृष्टेषुत्वयाराजन् पाण्डवेषुम-

हे नरनाथ ! आप से यह सम्बन्धहोने से वह आप पर बहुत प्रसन्न हुए हैं । बडे ज्ञानी शान्तनुनन्दन भीष्म ने सम्पूर्ण कौरवों के सहित सब प्रकारसे आप का स्वास्थ्य पूछा है, । १८ । और आप के प्रिय सखा बडे ज्ञानी भारद्वाज द्रोणजी ने आप से संयोग पाकर उद्देश में आलिङ्गन कर के कुशल प्रश्न किया है । हे महाराज पाञ्चाल ! धृतराष्ट्र और सब कौरव आप से सम्बन्ध लाभकर अपने को कृतार्थ मान रहे हैं ।२० । हे यज्ञसेन अधिक क्या कहें, आप से वैवाहिक सम्बन्ध प्राप्त करने से उनकी जितनी प्रीति हुई राज्य मिलने से उतनी नहीं होती; आप समझ कर पाण्डवों को वहां भेज देवें । कौरव लोग पाण्डवों को देखने के लिये बहुत व्यग्रह हुए हैं ।२२। यह नरश्रेष्ठ पाण्डव और पृथा बहुत काल तक निरुद्देश थे, सो नगर देखने को बहुत घबराये होंगे, कौरवों की स्त्रियां और हमारे नगर तथा जनपदवासी सब लोग पांचाली कृष्णाको देखने के लिये बाटदेख रहे हैं।२४।अतएव मेरामत यहहै, कि आप पाण्डवों को पत्नी के साथ वहां जाने की आज्ञा दें, बिलम्ब न करें । हे महाराज ! महात्मा पाण्डवों को आप से वहां जाने की आज्ञा मिलेगी, तो मैं शीघ्र जानेवाले दूत द्वारा धृतराष्ट्र को

of the Kauravas wishes you happiness. The dearest of your friends Drona has asked me to embrace you and wish you joy. Dhritrashtra and the Kuravas think themselves fortunate by this relationship with you. I dare say, that they are more pleased by your relationship than they shauld be at finding a kingdom. Please send the Pandavas there. The Kauravas are very eager to see them. The Pandavas and Kunti have long been in exile and must wish to see their country again. The Kaurav women and the citizens are longing to see Krishna. I therefore beg you to send the Pandavas with their wife. I shall inform Dhritrrshtra through a swift mes-

ह्यतमस्तु । ततोऽहंमेषगिष्यामि धृतराष्ट्रस्यशीघ्रगान् । आगमिष्यन्तिकौन्तेयाः कुन्तीच सहकृष्णया ॥ २६ ॥

इत्यादिपर्वणि विदुरागमनपर्वणि विदुरद्रुपदसंवादे सप्ताधिकद्विशतोऽध्यायः "२०७"

द्रुपद उवाच । एवमेतन्महाप्राज्ञ यथात्थविदुराद्यमाम् । ममापिपरमोहर्षः संबन्धेऽस्मिनकृतेप्रभो ॥ १ ॥ गमनंचापियुक्तं स्यादृढमेषांमहात्मनाम् । नतुतावन्मया युक्तमेतद्वक्तुंस्वयंगिरा ॥ २ ॥ यदातुमन्यतेवीरः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । भीमसेनार्जुनौचैव यमौचपुरुषर्षभौ ॥ ३ ॥ रामकृष्णौचधर्मज्ञौ तदागच्छन्तुपाण्डवाः । एतौहि पुरुषव्याघ्रावेषां प्रियहितेरतौ ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच । परवन्तोवयं राजस्त्वयि सर्वेमहानुगाः । यथावक्ष्यसिनःप्रीत्या तत्करिष्यामहेवयम् ॥ ५ ॥ वैशम्पायनउवाच ततोऽब्रवीद्वासुदेवो गमनंरोचतेमम । यथावामन्यतेराजा द्रुपदःसर्वधर्मवित् ॥ ६ ॥

यह समाचार दूंगा। अनन्तर पाण्डव और कुन्ती कृष्णाको साथ लेकर वहांजायगी २६॥

अध्याय ॥ २०८ ॥

राजा द्रुपद बोलेकि हे महाप्राज्ञ विदुर ! इस काल में आपने जो कहा, वही ठीक है। हे प्रभो ! इस वैवाहिक सम्बन्ध से मैं भी बड़ा प्रसन्न हूं अब इन महात्माओं को, घर जानाही सब प्रकार से योग्य है; पर स्वयं यह कहना मेरे लिये उचित नहीं है।२। यदि कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन और पुरुषश्रेष्ठ नकुल तथा सहदेव, यहांसे जाना चाहैं और धर्मज्ञराम तथा कृष्ण आज्ञादें तो चलेजायं: क्योंकि यह पुरुषव्याघ्र राम और कृष्ण सदा इनका प्रियकरने और हित साधनेमें नियुक्तहैं।४।युधिष्ठिर बोले, कि महाराज अब मैं भाइयोंके साथ आपके आधीनहूं, आप प्रसन्नहोकर हमको जोकहेंगे, वही हम करेंगे वैशम्पायनने कहा, कि अनन्तर वासुदेवजीनेकहा, कि मेरीसमझ में जाना उचितहै पर सर्व धर्मोके जानकार राजा द्रुपदका जो विचारहो, वही उचितहै ।६। द्रुपदबोले, कि

senger as soon as you will give them permission to go. The Pandavas and Knnti with Krishna will then go there.'"26.

CHAPTER CCVIII

Drupad said, "It is true, Vidur, what you have said. I myself am very happy to contract this relationship. Their going home is advisable, but I could not say so of my own accord. The sons of Kunti may go with you if they like and if they are allowed to do so by all knowing Ram and Krishna who seek always to do them good." 4. Yudhishthir said, "My brothers and I are now under your protection and shall do as you will desire." Vaishampayan continued that Krishna also advised them to go by Drupad's permission. Drupad said, "I have no objection when Krishna, who

द्रुपद उवाच । यथैवंगन्यतेवीरो दाशार्हःपुरुषोत्तमः । प्राप्तकालंमहाबाहु साबुद्धिर्निश्चितामम ॥ ७ ॥ यथैवहिमहाभागाः कौन्तेयाममसाम्प्रतम् । तथैववासुदेवस्य पाण्डुपुत्रानसंशयः ॥ ८ ॥ नतद्ध्यायतिकौन्तेयः पाण्डुपुत्रोयुधिष्ठिरः । यथैषांपुरुषव्याघ्रश्रेयोध्यायातिकेशवः ॥ ९ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तेगमनुज्ञाता द्रुपदेनमहात्मना । पाण्डवाश्चैवकृष्णश्च विदुरश्चमहीपते ॥ १० ॥ आदायद्रौपदींकृष्णां कुन्तींचैव यशस्विनीम् । सविहारंसुखंजग्मुर्नगरं नागसाह्वयम् ॥ ११ ॥ श्रुत्वाचाप्यागतान्वीरान् धृतराष्ट्रोजनेश्वरः । प्रतिग्रहायपाण्डूनां प्रेषयामासकौरवान् ॥ १२ ॥ विकर्णंचमहेष्वासं चित्रसेनंचभारत । द्रोणंचपरमेष्वासं गौतमंकृपमेवच ॥ १३ ॥ तैस्तेपरिवृतावीराः शोभमानामहाबलाः । नगरंहास्तिनपुरंशनैः प्रविविशुस्तदा ॥ १४ ॥ कौतूहलेननगरं दीप्यमानमिवाभवत् । तत्रतेपुरुषव्याघ्राः शोकदुःखविनाशनाः ।१५।

इसकालके अनुसार महाभुज पुरुषोत्तम और वीर दाशार्हने जैसा विचारा मेरी समझ में वही ठीक है अब महाभाग पाण्डव जैसे मेरेस्नेहके पात्रहैं, वैसेही इस में सन्देह नहींहै, कि पुरुषश्रेष्ठ वासुदेवकेभी स्नेहके पात्रहैं ।८। वह जैसे इनकी मंगल-चिन्ताकरतेहैं,कुन्ती नन्दन युधिष्ठिर सेभी वैसी बन नहीं पडती। वैशम्पायन ने कहा, कि हे पृथ्वीनाथ! अनन्तर पाण्डव, कृष्ण और विदुर महात्मा द्रुपदकी आज्ञापाकर परम सुखसे विहारकरते हुए यशस्विनी कुंती और द्रौपदीके साथ हास्तिनपुरमें जानेलगे। ११। हेभारत जननाथ धृतराष्ट्र ने वीर पाण्डवों के शुभागमन का समाचार सुनकर, उनको लिवालानेके लिये बडे चापधारी विकर्ण, चित्रसेन धनुषधरनेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोण और गौतम, कृप इन सब कौरव पक्ष के लोगों को भेजा ।१३। महाबली वीर पाण्डव उन से घिरेजाकर सोहतेहुए धीरे धीरे हास्तिनपुर में गये तब वह नगर नगरवालोंके देखनेकी बडीचाहकी हडबडी से मानो फटने लगा। पुरुषव्याघ्र पाण्डवों को देखकर पुरवासियों के शोक दुःख दूरहो-

holds them as dear as I do, advises them to go. He thinks of the happiness of the Pandavas more than Yudhishthir can." 9. Vaishampayan said that the Pandavas, Krishn and Vidur with Kunti and Draupadi went to Hasthinpur by Drupad's permission. King Dhritrashtra, having heard of the arrival of the Pandavs, sent the great archer Vikarn, Chitrasen, Drona the best of archrrs, Gautam, Krip, and other Kauravas to receive them. The brave Pandavas surrounded by them entered the city with great pomp. By the crowds of the eager spectators the city looked as if it would expand. The grief of the citizens was changed into joy at seeing the Pandavas. 15. The well-wishers of the Pandavas among the citizens, were heard to say, "These are the virtuous lions among men who used to protect us like Kinsmen. We feel as if Pandu himself were return

ततउच्चावचावाचः पौरैःप्रियचिकीर्षुभिः । उदीरिताअशृण्वंस्तेपाण्डवा हृदयङ्गमा॥१६॥
अयंसपुरुषव्याघ्रः पुनरायातिधर्मवित् । योनःस्वानिवदायादान धर्मेणपरिरक्षति।१७।
अद्यपाण्डुर्महाराजो वनादिवजनप्रियः । आगतःप्रियमस्माकं चिकीर्षुर्नात्रसंशयः।१८।
किन्नुनाद्यकृतंतात सर्वेषांनःपरंप्रियम् यन्नःकुन्तीसुतावीरा नगरंपुनरागताः ॥१९॥
यदिदत्तंयदिहुतंविद्यते यदिनस्तपः । तेनतिष्ठन्तुनगरे पाण्डवाःशरदांशतम ॥ २० ॥
ततस्तेधृतराष्ट्रस्य भीष्मस्यचमहात्मनः । अन्येषांचतदर्हाणां चक्रुःपादाभिवन्दनम ।
॥ २१ ॥ कृत्वातुकुशलप्रश्नं सर्वेणनागरेणच । न्यविशन्ताथवेश्मानि धृतराष्ट्रस्यशा-
सनात् ॥ २२ ॥ विश्रान्तास्तेमहात्मानः कञ्चित्कालंमहाबलाः । आहूताधृतराष्ट्रेण
राज्ञाशान्तनवेनच ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । भ्रातृभिःसहकौन्तेय निबोधगदतोमम।
पुनर्वोविग्रहोमाभूत् खाण्डवप्रस्थमाविश ॥ २४ ॥ नचवोवसतस्तत्र कश्चिच्छक्तःप्र-

---

गये।१५। प्रियचाहनेवाले पुरवासियोंके हृदयप्यारे पाण्डव उनसे कहेजातेहुए इसप्रकारके भांति भांति के वचन सुननेलगे, कि यह वही धर्मज्ञ पुरुषव्याघ्र फिर आरहे हैं, कि जो अपने परिवारोंकी भांति हमारी रक्षा करते थे । आज मानो सब जनोंके प्यारे महाराज पाण्डुही हमारे प्रिय चाहनेवाले बनकर बनसे लौट आरहेहैं।१८। इससे बढकर हमारा कौनसा प्रिय कार्यहोगा, कि आज वीर कुन्तीपुत्रगण हमारे नगर में फिर आ रहेहैं । यदि हमने दान वा हवन कियाहो अथवा यदि हमारा बटोराहुआ तपहो, तो उस के बलसे पाण्डव लोग इसनगरमें सैकडों वर्षबसें ।२०।अनन्तर पाण्डवोंने धृतराष्ट्र, महात्मा भीष्म और दूसरे गुरुजनोंके पांवछुए। आगे नगर वालोंका कुशल पूछकर वार्त्तालापकर धृतराष्ट्रकी आज्ञासे राज मन्दिर में बसनेलगे।२२। महात्मा महाबली पाण्डवों के कुछ काल विश्राम करने के पीछे राजा धृतराष्ट्र और शान्तनु पुत्र भीष्मने उन को बुलवाया । अनन्तर उन के आने पर धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा, कि हे कुन्तीपुत्र ! मैं जो कहूं भाइयों के साथ सुनो, तुम खाण्डवप्रस्थ में जा बसो, कि तुम से हमारा फिर

---

ing from the forest to do us good.18. What can give us more joy than the coming back of the Pandavas? If we have ever given in charity, poured libations into fire, or amassed the fruits of asceticism, may the Pandavas live in this city for hundreds of years. The Pandavas then touched the feet of Dhritrashtra, Bhishma, and other elders of the Kaurava family. Having asked the welfare of the citizens and talked with them, the *Pandavas* went to reside in the palace.22. When they had taken rest for a few days after the fatigues of the journey, they were sent for by Dhritrashtra and Bhishma the son of Shantanu. Dhritrashtra then addressed Yudhishthir, saying, " Hear me. son of Kunti, with all thy brothers: " You will settle in the forest of Khandava to avoid further quarrelling.

बाधितुम् । संरक्ष्यमाणान् पार्थेनत्रिदशानिववज्रिणा । अर्द्धराज्यस्यसम्प्राप्य खाण्ड
वप्रस्थमाविश ॥ २५ ॥ वैशम्पायन उवाच । प्रतिगृह्यतुतद्वाक्यं नृपंसर्वेप्रणम्यच ।
प्रतस्थिरेततोघोरं वनंतन्मनुजर्षभाः ॥ २६ ॥ अर्द्धराज्यस्य सम्प्राप्य खाण्डवप्रस्थ
माविशन् । ततस्तेपाण्डवास्तत्र गत्वाकृष्णपुरोगमाः ॥ २७ ॥ मण्डयाञ्चक्रिरेतद्वै परं
स्वर्गवदच्युताः । ततःपुण्येशिवेदेशे शान्तिकृत्वामहारथाः ॥ २८ ॥ नगरंस्थापयामासु
र्द्वैपायनपुरोगमाः । सागरप्रतिरूपाभिः परिखाभिरलङ्कृतम् ॥ २९ ॥ प्राकारेणच
सम्पन्नंदिवमावृत्यतिष्ठता । पांडुराभ्रप्रकाशेन हिमराशिनिभेनच ॥ ३० ॥ शुशुभेतत्
पुरश्रेष्ठं नागैर्भोगवतीयथा । द्विपक्षगरुडप्रख्यैर्द्वारैः सौधैश्चशोभितम् ॥ ३१ ॥ गुप्तमभ्र-
चयप्रख्यैर्गोपुरैर्मन्दरोपमैः । विविधैरपिनिर्विद्धैः शस्त्रोपेतैःसुसंवृतैः ॥३२॥ शक्तिभि
श्चावृतंतद्धि द्विजिह्वैरिवपन्नगैः । तल्पैश्चाभ्यासिकैर्युक्तं शुशुभेयोधरक्षितम् ॥३३॥ तीक्ष्णां

बिगाड़ न हो।२४। तुम अर्जुनसे इसप्रकार रक्षितहोकर, कि जैसे इन्द्रजीसे देवता रक्षित होतेहैं वहां वासकरो, तो तुमसे कोई छेड़ छाड नहीं करसकेगा, सो तुम राज्यका आधा भाग लेकर खाण्डवप्रस्थ में रहो। वैशम्पायन ने कहा कि मनुष्य श्रेष्ठ पाण्डवों ने राजा धृतराष्ट्र की बात मानकर राज्यका आधा भाग पाकर उन के पांव छूकर घने वनमें जा खाण्डवप्रस्थ में प्रवेश किया। उन अच्युत पुरुषोंने कृष्णके साथ वहां पहुंचकर उस जगह को देवलोककी भांति बनाया। महारथी पाण्डवों ने कृष्णद्वैपायन के साथ शुभ पुण्य स्थानमें शांति-कार्य करवाकर भलेप्रकारसे नगर बसाया। वह नगर सागरसमान बडी खाई और चन्द्रमा तथा धुंधले बादलसमान अकाश चूमनेवाले भवनोंकी कतारसे ऐसी शोभा पाने लगा, कि जैसे भोगवती नगर सर्पोंसे सुशोभितहोताहै उस के घरोंको किवाड़युक्त प्रशस्त द्वारों से उडनेको चाहनेवाले पंखफैलाये गरुडसे शोभाहुई।३१।वह श्रेष्ठ पुरी बादलदल और मन्दर पर्वत सदृश भलेप्रकार संवृत, अस्त्रयुक्त, भेदने के अयोग्य और भांति भांति के गोपुरों से अच्छेप्रकार रक्षित हुई और ठौर ठौरमें दोजिभवाले सर्प

You will live there under the protection of Arjun as gods do under that of Indra, and no one will be able to molest you. You will rule half the kingdom and dwell in the forest of Khandav."25. Vaishampayan said that the Pandavas having obtained half the kingdom touched the feet of Dhritrashtra and went to dwell in the forest of Khandava. They entered the thick forest in the company of Krishna and made the place like the city of gods. The brave Pandavas having purified a part of a forest by the help of Dwaipayan laid the foundation of a city. The city surrounded by a deep ditch, with its rows of buildings touching the clouds, looked as grand as Bhogwati the city of Nagas. The doors of the houses were painted with the pictures of Gadur with wings spread as if ready for flight.31. The city

कुशशतघ्नीभिर्यन्त्रजालैश्च शोभितम्। आयसैश्चमहाचक्रैः शुशुभेततपुरोत्तमम् ॥३४॥
सुविभक्तमहारथ्यं देवताबाधवर्ज्जितम् । विरोचमानंविविधैःपाण्डुरैर्भवनोत्तमैः । ३५॥
तत्त्रिविष्टपसङ्काशमिन्द्रप्रस्थं व्यरोचत । मेघवृन्दामिवाकाशेविद्धं विद्युत्समावृतम्।३६।
तत्ररम्येशिवेदेशे कौरव्यस्यनिवेशनम् । शुशुभेधनसम्पूर्णं धनाध्यक्षक्षयोपमम् ॥ ३७॥
तत्रागच्छनद्विजाराजन् सर्ववेदविदाम्वराः । निवासंरोचयन्तिस्म सर्वभाषाविदस्तथा
॥ ३८ ॥ वणिजश्चाययुस्तत्र नानादिग्भ्योधनार्थिनः । सर्वशिल्पविदस्तत्र वासायाभ्यागमंस्तदा ॥ ३९ ॥ उद्यानानिचरम्याणि नगरस्यसमन्ततः । आम्रैराम्रातकैर्नीपै
रशोकैश्चम्पकैस्तथा ॥ ४० ॥ पुन्नागैर्नागपुष्पैश्च लकुचैःपनसैस्तथा । शालतालतमालैश्च वकुलैश्चसकेतकैः ॥ ४१ ॥ मनोहरैःसुपुष्पैश्च फलभारावनामितैः । प्राचीनामल

वत शक्ति नामक अस्त्रों से घिरी, अस्त्र शिक्षा के लिये बडे बडे भवनों से सुशोभित,
योधोंसे रक्षित, तेज अंकुश तथा एकबारही सैकड़ों मनुष्यों के प्राणनाशी शतघ्नी नामक
अस्त्रयुक्त यन्त्रजाल और लोहेके बडे बडे चक्रों से सुशोभित हुई ३४।उस के पथ चौड़े
और बड़े हिसाब से बनाये गये । उस नगरी में कभी दैवी छेड छाडकी सम्भावना
नहीं रही वह नगर धुंधले रंगके भांति भांति के अच्छे अच्छे भवनों की कतारों से
दीप्यमानहोकर अमरोंकी पुरी के समान शोभायमानहोने के कारण इन्द्रप्रस्थ कहलाया ।
ऐसे नगर के सुंदर शुभस्थानमें पाण्डवोंकी धनभरी धननाथ सदृश भवन मण्डली
आकाश मण्डल में चमकती हुई विजली से जटित बादलसमान सोहने लगी ।३७। हे
महाराज अनन्तर संस्कृत प्राकृतआदि देशकी भाषा जाननेवाले और सबबेदोंके जानकार
ब्राह्मणोंने आकर उस स्थानमें बसना निश्चयकिया ।३८। वणिक लोग धनार्जन के अभिलाषी
बनकी अनेक दिशाओं से वहां आनेलगे । अनेक प्रकार शिल्प विद्यावों के जाननेवाले
वहां आ बसे ।३९। नगर के चारों ओर सुन्दर सुन्दर फुलवाडी आम आम्रातक,
कदम्ब, अशोक, चम्पा, पुन्नाग, नागकेशर, लकुच, पनस, शाल, ताल, तमाल, वकुल,

was protected by walls and houses impregnable by enemies and containing all sorts of weapons. In some places it had a paling of pointed iron like the two tongues of a serpent. There were large houses for training men in the science of arms. It was protected by warlike men and guns which could kill hundreds of men at once. 34. Its thoroughfares were made wide with great accuracy. It was quite safe from molestation even of gods. From the rows of dark colored houses it looked like the city of gods and was therefore called Indraprasth. In a beautiful part within the city were the palaces of the Pandavas, reaching to the sky like those of the god of wealth. 37. Scholars of Sanskrit and Prakrit came from great distances to settle in the city. Traders from all parts came there to earn wealth

कैर्ल्लोध्रैरङ्कोलैश्चसुपुष्पितैः ॥ ४२ ॥ जम्बूभिःपाटलाभिश्च कुञ्जकैरतिमुक्तकैः । करवीरैःपारिजातैरन्यैश्च विविधैर्द्रुमैः ॥ ४३ ॥ नित्यपुष्पफलोपेतैर्नानाद्विजगणायुतैः । मत्तबर्हिणसंघुष्टं कोकिलैश्च सदामदैः ॥ ४४ ॥ गृहैरादर्शविमलैर्विविधैश्च लतागृहैः । मनोहरैश्चित्रगृहैस्तथा जगतिपर्वतैः ॥ ४५ ॥ वापीभिर्विविधाभिश्च पूर्णाभिःपरमाम्भसा । सरोभिरतिरम्यैश्च पद्मोत्पलसुगन्धिभिः ॥ ४६ ॥ हंसकारण्डवयुतैश्चक्रवाकोपशोभितैः । रम्याश्चाविविधास्तत्र पुष्करिण्योवनावृताः । तडागानिचरम्याणि बृहन्ति सुबहूनिच ॥ ४७ ॥ तेषांपुण्यजनोपेतं राष्ट्रमाविशतांमहत् । पांडवानांमहाराज शश्वत्प्रीतिरवर्द्धत ॥ ४८ ॥ तत्रभीष्मेणराज्ञाच धर्मप्रणयनेकृते । पाण्डवाःसमपद्यन्त खाण्डवप्रस्थवासिनः ॥ ४९ ॥ पञ्चभिस्तैर्महेष्वासैरिन्द्रकल्पैः समन्वितम् । शुशुभेतत्पुर

मनोहर फूल सहित केतक, फलके भार से नम्र पानीय आमलक, लोध्र, सुन्दर फूलयुक्त अङ्कोल, जम्बु, पाटल, माधवी लताकुञ्ज, करवीर और मन्दार यह सब और दूसरे नित्य फूल फलवाले भांति भांतिके वृक्षों से सुहावनी । वे फुलवाड़ी अनेक प्रकार के पक्षी, उन्मत्त मयूर दल और उमङ्ग से चुह चुहातीहुई कोयलकी कूकसे भरकर पहिलेकी अन देखी सुन्दरता फैलाने लगीं । और अनेक प्रकार के आदर्श सदृश निर्मल गृह, भांति भांतिके लतागृह, सुहावने चित्रगृह, क्रीडार्थ मिट्टी के कृत्रिम पहाड़ श्वेत लाल आदि नाना प्रकार के पद्मकी गन्ध से अति मनोहर सरोवर हंस, कारण्डव और चकवोंसे सुहावने बनसे घिरे, भांति भांतिके ताल और बडे बडे सुन्दर तडागोंसे सुहाई।४७।महाराज उस पुण्यशील जनों से पूरित महान् प्रदेश में जाकर पाण्डवों का आनन्द दिन पर दिन बढने लगा । राजा धृतराष्ट्र और भीष्मके पाण्डवों के लिये उसप्रकार धर्मकी व्यवस्था करदेने पर पाण्डव खाण्डव प्रस्थ में बासकर आनन्दितहुए भोगवती नगरी जिसप्रकार

and were followed by mechanics and artisans of all sorts. All round the city there were orchards containing various trees bearing fruits and flowers, viz., Amb, Amratak, Kadamb, Ashok, Champa, *Punnag*, Nagkessar, Lakuch, *Panas*, Shal, Tal, Tamal, Vakul, Ketak bearing beautiful flowers, Amlak bowed down by the weight of its fruit, Lodhra, Ankol bearing elegant flowers, Jamba, *Patal*, Madhavi a bushy creeper, Karvir, Madar and other trees bearing fruits and flowers, and evergreens. The gardens became exceedingly charming by the presence of peacocks and cuckoos. There were excellent houses, bowers, observatories, artificial hills for pleasure, tanks with red and blue lotus abounding in swans and other aquatic birds. Tanks and lakes were made in the midst of the forest. The joy of the Pandavas increased day by day in that holy place. By the justice of Bhishma and Dhritrashtra the Pandavas were able to

श्रेष्ठं नागैर्भोगवतीयथा ॥ ५० ॥ तांनिवेश्यततोवीरो रामेणसहकेशवः। ययौद्वारवतीं राजन् पाण्डवानुमते तदा ॥ ५१ ॥

इत्यादिपर्व्वणि राज्यलाभपर्व्वणि विदुरागमने अष्टाधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २०८ ॥

जनमेजयउवाच। एवंसम्प्राप्य राज्यन्तदिन्द्रप्रस्थं तपोधन। अतऊर्द्ध्वंमहात्मानः किमकुर्व्वतपाण्डवाः ॥ १ ॥ सर्व्वएवमहासत्त्वा ममपूर्व्वपितामहाः। द्रौपदीधर्मपत्नीञ्च कथंतानन्ववर्त्तत ॥ २ ॥ कथञ्चपंच कृष्णायामेकस्यांते नराधिपाः। वर्त्तमानामहाभागा नाभिद्यन्तपरस्परम्। श्रोतुमिच्छाम्यहंसर्वं विस्तरेणतपोधन। तेषांचेष्टितमन्योऽन्यं युक्तानांकृष्णयासह ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच। धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञाताः कृष्णया सहपाण्डवाः। रेमिरेखाण्डवप्रस्थे प्राप्तराज्याः परन्तपाः ॥ ५ ॥ प्राप्यराज्यंमहातेजाः सत्यसन्धोयुधिष्ठिरः। पालयामासधर्मेण पृथिवींभ्रातृभिःसह ॥ ६ ॥ जितारयोमहा

नागों से सोहती है, वैसेही वह नगर पंच पाण्डवों से अच्छी शोभा पाने लगा, हे महाराज! वलदेव जीके साथ वीर श्रीकृष्ण इसप्रकार से पाण्डवों को राज्य में बैठाकर उनकी सम्मति से द्वारकाको गये ॥ ५१ ॥

अध्याय २०९ ॥

जनमेजयबोले, कि हेतपोधन! महासत्व महात्मा मेरेपहिले के दादे पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थमें इस के पीछे क्या कियाथा? उनकी स्त्री द्रौपदी क्योंकर उन सबोंके संग मिलती थी और वे महाभाग भूपति पांचों एकद्रौपदीसे रतहोते थे, फिर तिसपरभी उन पांचों में आपसका झगडा नहीं उभडाथा, इसका क्या कारण है? हे तपोधन! कृष्णा से मिलतेहुए महात्माओं ने आपस में कैसा व्यवहार कियाथा? यह सब विस्तारपूर्वक सुना चाहता हूं। वैशम्पायन ने कहा, कि शत्रुमथनेहारे पांडव धृतराष्ट्रकी आज्ञा से राज्यलाभ कर खाण्डवप्रस्थ में कृष्णाकेसाथ गृहस्थी करने लगे बड़े तेजस्वी सत्यशील

live there in great happiness. The city looked as grand by the presence of the Pandavas as Bhogwati the city of Nagas. Krishna with Baldev having installed the *Pandavas* on the throne went to Dwarika.51.

CHAPTER CCIX

Janmejaya said, "Tell me, learned man, all that the Pandavas did after this, while they were at Indraprasth. How did they manage to meet with their wife? Having a wife common to themselves how did they manage to live peacefully? How did they behave towards each other with regard to Krishna? I wish to know all this in detail." Vaishampayan said that having obtained the kingdom from Dhritrashtra they managed to keep house by the help of Draupadi. Yudhishthir ruled the Kingdom by the

प्रजाः सत्यधर्मपरायणाः । मुदंपरमिकां प्राप्तास्तत्रोषुः पाण्डुनन्दनाः ॥ ७ ॥ कुर्वाणाः
पौरकार्य्याणि सर्वाणिपुरुषर्षभाः । आसांचक्रुर्महार्हेषु पार्थिवेष्वासनेषुच ॥ ८ ॥ अथ
तेषूपविष्टेषु सर्वेष्वेतमहात्मसु । नारदस्त्वथदेवर्षिराजगाम यदृच्छया ॥ ९ ॥ आसनं
रुचिरंतस्मै प्रददौस्वंयुधिष्ठिरः । देवर्षेरुपविष्टस्य स्वयमर्घ्यंयथाविधि ॥ १० ॥ मा-
दाद्युधिष्ठिरोधीमान् राज्यंतस्मैन्यवेदयत् । प्रतिगृह्यतुतां पूजामृषिः प्रीतमनास्तदा ।
॥ ११ ॥ आशीर्भिर्वर्द्धयित्वाच तमुवाचास्यतामिति। निषसादाभ्यनुज्ञातस्ततो राजा
युधिष्ठिरः ॥ १२ ॥ कथयामासकृष्णायै भगवन्तमुपस्थितम् । श्रुत्वैतद्द्रौपदीचापिशु
चिर्भूत्वासमाहिता ॥ १३ ॥ जगामतत्रयत्रास्ते नारदःपाण्डवैःसह । तस्याभिवाद्य-
चरणौ देवर्षेर्धर्मचारिणी ॥ १४ ॥ कृतांजलिःसुसम्वीता स्थिताथद्रुपदात्मजा ।
तस्याश्चापिसधर्मात्मा सत्यवागृषिसत्तमः ॥ १५॥ आशिषोविविधाःप्रोच्य राजपुत्र्या

युधिष्ठिर राज्यपाकर भाइयोंके साथ धर्म के अनुसार प्रजा पालने लगे । शत्रु विनाशी,
महाप्राज्ञ, सत्य-धर्मशील पुरुष-श्रेष्ठ दूसरे पाण्डवगण बड़े आनंद से उसस्थानमें बसेरहे।
वे बड़े मूल्यवान राजासनों पर बैठकर सम्पूर्ण पौर-कार्यों को निबटाया करते थे ।८।
अनन्तर एक दिन वे सब महात्मा बैठे थे, कि ऐसे समय में देवर्षि नारद मनमाने
वहां आ पहुँचे । बुद्धिमान युधिष्ठिर ने ऋषि को आते देखकर अपना सुंदर आसनछोड
दिया, अनन्तर देवर्षि के बैठनेपर उन्हों ने उनको विधि पूर्वक अर्घ्य देकर सम्पूर्ण राज-
कार्यकी बातें कह सुनाईं । ऋषिने पूजा लेकर प्रसन्न चित्तसे उनको अशीस देकर बैठने
को कहा ।११।राजा युधिष्ठिर मुनिकीआज्ञा से बैठगये और कृष्णाके पास देवर्षि के आने
का समाचार भिजवाया । द्रौपदी वह बात सुनतेही शुचि और समाहितहोकर उसजगह
आगयी जहां देवर्षि पाण्डवों के साथ बैठे थे ।१३।धर्मचारिणी कृष्णा देवर्षि के पांओं को
प्रणामकर हाथजोड घूंघट काढ खडी हुई धर्मात्मा सत्यवादी ऋषिश्रेष्ठ नारद ने अनि
न्दिता राज्यकन्या को अनेक अशीस देकर जानेकी आज्ञा दी।१६।अनंतर द्रौपदीके चले

help of his brothers. The other Pandavas virtuous, wise
and truthful lived there peaceably and used to minister the affairs
of the kingdom from precious kingly seats. 8. They were sitting
together one day when Rishi Narad came there. Yudhishthir
received him with great respect. After offering him arghya they
told him all about the affairs of their kingdom. The Rishi after
accepting their worship told them to sit down. 11. Yudhishthir sat
down and informed Draupadi of the arrival of the Rishi.
Draupadi at once came to the place where the rishi was
sitting with the Pandavas. The virtuous Draupadi touched
the Rishi's feet and stood up with downcast head and joined
hands. The virtuous Narad pronounced his benedictions on
Draupadi and told her to go away. 16. After her departure

स्तुनारदः। गम्यतामितिहोवाच भगवांस्तामनिन्दिताम् ॥ १६ ॥ गतायामथकृष्णायां युधिष्ठिरपुरोगमान्। विविक्तेपाण्डवान् सर्वानुवाचभगवानृषिः ॥ १७ ॥ नारद उवाच। पांचालीभवतामेका धर्मपत्नीयशस्विनी। यथावोनात्रभेदः स्यात्तथानीतिर्विधीयताम् ॥ १८ ॥ सुन्दोपसुन्दौहिपुरा भ्रातरौसहितावुभौ। आस्तामवध्यावन्येषां त्रिषुलोकेषुविश्रुतौ ॥ १९ ॥ एकराज्यावेकगृहावेकशय्यासनाशनौ। तिलोत्तमायास्तौ हेतोरन्योऽन्यमभिजघ्नतुः ॥ २० ॥ रक्ष्यतांसौहृदं तस्मादन्योऽन्यप्रीतिमावहम्। यथावोनात्रभेदःस्यात्तत् कुरुष्वयुधिष्ठिर ॥ २१ ॥ युधिष्ठिर उवाच। सुन्दोपसुन्दावसुरौ कस्यपुत्रौमहामुने। उत्पन्नश्चकथंभेदः कथञ्चान्योऽन्यमघ्नताम् ॥ २२ ॥ अप्सरा देवकन्यावै कस्यचैषातिलोत्तमा। यस्याःकामेनसंमत्तौ जघ्नतुस्तौपरस्परम् ॥२३॥ एतत्सर्वंयथावृत्तं विस्तरेणतपोधन। श्रोतुमिच्छामहेब्रह्मन् परंकौतूहलंहिमे ॥२४॥

इत्यादिपर्वणि राज्यलाभपर्वणि युधिष्ठिरनारदसंवादे नवाधिकद्विशतोऽध्यायः२०९

जाने पर भगवान देवर्षि युधिष्ठिर आदि पाण्डवों से निराले में बोले, कि यशस्विनी द्रौपदी अकेली तुम सबोंकी धर्मपत्नी बनी है, ऐसी दशा में तुम भाइयोंमें बिगाडहोसकताहै, सो ऐसा कोई नियम करो, कि वह न होने पावे।१८।पूर्वकाल में सुन्द और उपसुंद नामक दोभाई एकत्र बसतेथे। वे दूसरोंसे बधेजाने के अयोग्य और उनका एक राज्य, एक गृह, एक सेज, एक भोजन स्थानथा। उन में सदा ऐसी मित्रता बनी रहने परभी तिलोत्तमा के लिये उन्हों ने एक दूसरेको मारडाला।२०।हे युधिष्ठिर! तुम आपस की प्रीति बढानेवाले भ्रातृप्रेम बनाये रक्खो। यह प्रयत्न करो, कि तुम में भ्रातृभेद न होने पावे। युधिष्ठिर बोले, कि हेमहामुने! सुंद और उपसुंद किसके पुत्र थे? क्योंकर उन में आपस का भेदहोगया और क्योंकर उन्होंने एक दूसरेको मारडाला था।२२।और जिस नारी के लिये उन्हों ने एक दूसरे को मारडाला था, वह तिलोत्तमा किसकीकन्या थी वह बाला अप्सरा वा देवकन्याथी? । हेब्रह्मन्! यह सब विस्तारपूर्वक आद्योपांतसुना चाहताहूं। हे तपोधन! यह सुननेकी मुझे बडी इच्छा है । २४ ॥

he said to the Pandavas, "As Draupadi is the wife of you all, you should make a rule to avoid dispute.18. Formerly there were two brothers Sund and Upsund living together. They were indefatigable by any one else, ruled the same kingdom, lived in the same horse, slept on the same bed and ate together. In spite of such friendship they killed each other for Tilottama. You should always love one another and make rules that may enable you to live together peacefully." Yudhisthir asked, "Let me know, great Muni, whose sons Sund and Upsund were and how they quarrelled and killed each other.22. Whose daughter was Tilottama for whom they killed each other? Was she an Apsara or a godess? I wish to hear all this in detail and am very anxious."

नारद उवाच। शृणुमेविस्तरेणेममितिहासं पुरातनम्। भ्रातृभिःसहितःपार्थ पश्चात्त्वंयुधिष्ठिर ॥ १ ॥ महासुरस्यान्ववाये हिरण्यकशिपोपुरा। निकुम्भोनाम दैत्येन्द्रस्तेजस्वीबलवानभूत् ॥ २ ॥ तस्यपुत्रौमहावीर्यौ जातौभीमपराक्रमौ। सुन्दोपसुन्दौदैत्येन्द्रौ दारुणौक्रूरमानसौ ॥ ३ ॥ तावेकनिश्चयौ दैत्यावेककार्य्यार्थसम्मतौ। निरन्तरमवर्त्तेतां समदुःखसुखावुभौ ॥ ४ ॥ विनान्योऽन्यंनभुञ्जाते विनान्योऽन्यंन जल्पतः। अन्योन्यस्य प्रियकरावन्योऽन्यस्य प्रियंवदौ ॥ ५ ॥ एकशीलसमाचारौ द्विधैवैकोऽभवत्कृतः। तौविवृद्धौमहावीर्यौ कार्य्येष्वप्येकनिश्चयौ ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यविजयार्थाय समाधायैकनिश्चयम्। दीक्षांकृत्वागतौविन्ध्यं तावुग्रंतेपतुस्तपः ॥ ७ ॥ तौतुदीर्घेणकालेन तपोयुक्तौबभूवतुः। क्षुत्पिपासापरिश्रान्तौ जटावल्कलधारिणौ

अध्याय ॥ २१० ॥

श्रीनारदजी बोले, कि हे पृथापुत्र युधिष्ठिर! भाइयों के साथ तुम यह पुरानी कथा सुनो। पूर्वकाल में महावीर हिरण्यकशिपुके वंश में निकुम्भनामक बली तेजस्वी एक दैत्यवर ने जन्म लियाथा।२। उस के बडे पराक्रमी, बड़े वीर्यवन्त, कुटिलचित्त दो कठोर पुत्र हुए। उन दो दैत्यराज पुत्रों में एकका नाम सुन्द और दूसरेका उपसुन्द था। वे दोनों सदा एकही विषयमें सम्मत, एकही विषय में दत्तचित्त और एकहीकार्य के करनेवाले होकर समान सुख दुःख से काल गँवाते थे।४।दोनों एक दूसरे को प्यारी बोली बोलते और एक दूसरेका प्रियकार्य करते थे; एक भाईके विना दूसराभाई भोजन वा गमन नहीं करता था। उन दोभाइयों के स्वभाव और व्यवहार में भेद न रहने के हेतु जान पड़ताथा, कि मानो एक मनुष्य दोभागों में बंटगया है। हर काम में एकबुद्धि रखनेवाले वे दो बड़े वीर्यवन्त भाई क्रमसे बढगये।६। वे तीनों लोक जीतना निश्चयकर विन्ध्या पर्वत पर जाकर दीक्षित और समाहितहोकर कठोर तप करनेलगे पहिले वल्कल

CHAPTER CCX

Narad said, "Hear this old tale Yudhishthir with your brothers. In former times there was a very powerful demon, named Nikumbh, in the family of Hiranyakashipu. He had two sons who were very brave and cruel. They were named Sund and Upsund. They were always of one mind, were engaged in doing the same thing and were partners in woe or weal. 4. They pleased each other by sweet words and pleasant deeds. One brother did not eat or go anywhere without the other. They resembled so much in their manners and actions as to seem that one man was divided into two. They excelled in every sort of acquirement by mutual help. 6. Having resolved to conquer the whole world they began to practice severe asceticism on the Vindhya hills. In the beginning they wore barks

॥ ८ ॥ मलोपचितसर्वाङ्गौ वायुभक्षौबभूवतुः । आत्ममांसानिजुह्वन्तौ पादांगुष्ठाग्रधि
ष्ठितौ । ऊर्द्धबाहूचानिमिषौ दीर्घकालंधृतव्रतौ ॥ ९ ॥ तयोस्तपःप्रभावेण दीर्घकालं
प्रतापितः । धूमंप्रमुमुचे विन्ध्यस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १० ॥ ततोदेवाभयंजग्मु रुग्रं
दृष्ट्वातयोस्तपः । तपोविघातार्थमथो देवाविघ्नानिचक्रिरे ॥ ११ ॥ रत्नैःप्रलोभयामासुः
स्त्रीभिश्चोभौपुनःपुनः । नचतौचक्रतुर्भङ्गं व्रतस्यसुमहाव्रतौ ॥ १२ ॥ अथमायां पुन-
र्देवास्तयोश्चक्रुर्महात्मनोः । भगिन्योमातरो भार्य्यास्तयोश्चात्मजनस्तथा ॥ १३ ॥
प्रपात्यमानावित्रस्ताः शूलहस्तेनरक्षसा । भ्रष्टाभरणकेशान्ता भ्रष्टाभरणवाससः ॥
॥ १४ ॥ अभिभाष्यततःसर्वास्तौ त्राहीतिविचुक्रुशुः । नचतौचक्रतुर्भङ्गं व्रतस्यसुम-
हाव्रतौ ॥ १५ ॥ यदाक्षोभंनोपयाति नार्तिमन्यतरस्तयोः । ततःस्त्रियस्ताभूतंच सर्वं

पहिन कर और भूखप्यास छोडकर तपमें चित्त लगाया और सर्वशरीर में भस्म लगाकर वायु खाकर पांवके अंगूठों के बल खडेहोकर हाथ ऊंचे उठाकर, निमेषतजकर और व्रत धारणकर वहुतकाल तक अपने मांसकी आहुति चढाई ।९।उसकालमें यह एक आश्चर्य लीला हुई, कि विन्ध्या पर्वतने उनकी तपस्याके प्रभावसे तपकर धुआं वमन किया था। अनन्तर देवगण उनकी कठोर तपस्या देखकर भय खाकर तप नष्ट करनेके लिये विघ्न डालने लगे। उन्होंने लुभानेवाले रत्न और नारीसे उनदोनोंको बार बार लुभाया पर उनदोनों वडे अच्छे व्रत करनेवाले भाइयोंने किसीप्रकार व्रत नहीं छोडा ।१२। आगे उन्होंने फिर उनदोमहात्माओं के सामने माया फैलाकर यह एक बडीभारीलीलादिखाई, कि उन दोनों असुरोंकी माता, वहिन, स्त्री और दूसरे स्वजन अलंकारों से च्युतहोकर केश से रहितहोकर और वस्त्र खोकर, हाथों में शूल लिये हुए एक राक्षससे गिराये जाकर अति भयखाकर उन दोनों असुरों को पुकार पुकार कर त्राहि त्राहि चिल्लाने लगे। यह देखनेपरभी अति बडेव्रतधारी सुंद और उपसुंदने व्रत नहीं छोडा।१५।अनन्तर जब दोनों

of trees, did not mind hunger and thirst, and having smeared their bodies with ashes they stood on the toes of their feet with their hands upraised, living on air only and making their bodies lean. A strange event occured in those days : The Vindhya hills emitted smoke from the subterranean fire.10.The gods being afraid of their severe asceticism began to offer hinderances in their asceticism. They tried to tempt them by means of jewels and women but the two brothers could not be induced to break their vows. The gods then tried another trick: The mother, sister, wife and other kinsmen of the brothers were seen destitute of ornaments, hair and cloths and being beaten down by a Rakshas bearing weapons they were heard to call them for help. The brothers saw all this but did not break their vows.15.At length when none of the two was affected or

मन्तरधीयत ॥ १६ ॥ ततःपितामहःसाक्षादभिगम्य महासुरौ । वरेणच्छन्दयामास सर्वलोकहित प्रभुः ॥ १७ ॥ ततःसुन्दोपसुन्दौतौ भ्रातरौदृढविक्रमौ । दृष्ट्वापितामहं देवं तस्थतुःप्राञ्जलीतदा ॥ १८ ॥ ऊचतुश्चप्रभुंदेवं ततस्तौसहितौतदा । आवयोस्त-पसानेन यदिप्रीतःपितामहः ॥ १९ ॥ मायाविदावस्त्रविदौ बलिनौकामरूपिणौ । उभावप्यमरौस्यावः प्रसन्नौयदिनौप्रभुः ॥ २० ॥ ब्रह्मोवाच । ऋतेऽमरत्वंयुवयोः सर्वं मुक्तंभविष्यति । अन्यद्वृणीतंमृत्योश्च विधानममरैःसमम् ॥ २१ ॥ प्रभविष्यावइति यन्महदभ्युद्यतंतपः । युवयोर्हेतुनानेन नामरत्वंविधीयते ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यविजया-र्थाय भवद्भ्यामास्थितंतपः । हेतुनानेनदैत्येन्द्रौ नवाकामंकरोम्यहम् ॥ २३ ॥ सुन्दोपसुन्दौऊचतुः । त्रिषुलोकेषुयद्भूतं किंचित्स्थावरजङ्गमम् । सर्वस्मान्नोभयं नस्याद्दृत-

मेंसे कोईभी उस से असंतुष्ट वा कातर नहीं हुआ तब वे स्त्रियां और राक्षस अन्तर्हित हुए।१६।इसके पश्चात् सर्वलोकोंके मंगलकारी प्रभु पितामहने उन दोनोंमहाबीरोंके सामने आकर उन से वर मांगने को कहा । दृढ विक्रमी सुंद और उपसुंद दोनों भाई प्रभु पितामहदेवको देखकर दोनोंहाथ जोडकर खडेहुए।१८।और दोनों एकत्रहोकर बोले, कि प्रभो पितामह ! हमारी तपस्या में यदि आप प्रीति रखते हैं और प्रसन्नहुएहैं, तो हमको यह वर दें, कि हम दोनों मायाके जानकार अस्त्रके जानवार, बली कामरूपी और अमर होसकें।२०।श्रीब्रह्माजी बोले, कि तुमने जो जो प्रार्थनाकी उन मेंसे अमरहोनेके अतिरिक्त तुम्हारी सब अभिलाषा पूरीहोगी । तुम अमरताके बिना और कुछ प्रार्थना ऐसी करो, कि अमरहोनेके तुल्यहो।२२।तीनोंलोकोंके प्रभु बननेहीकी इच्छासे तुम ने यह बडीतपस्या प्रारम्भ कीथी इसलिये तुमको अमरता लाभहोना ठीक नहीं है । हे दोनों दैत्यवर ! तीनों लोक जय करनाही तुम्हारी तपस्याका अभिप्राय है ; इसकारण मैंने तुम्हारे अमरहोनेकी अभिलाषा पूरी नहींकी । सुंद और उपसुंद ने कहा कि, हे पितामह ! हम दोनोंको एक

disturbed, the women and the Rakshas vanished. The Grand-father of all came to them and wished them to express their desire. The two brave brothers stood up with joined hands before the lord grand-father and said, " If you are pleased with our asceticism, grandfather, grant us the boon that we may become the most accomplished in the knowledge of arms and may become powerful, able to assume any form, and become immortal." Brahma replied, "You will have all your desires with the exception of immortality. You may crave another boon of equal importance instead. You commenced this severe asceticism with a desire to become masters of the world. It will not, therefore, be proper for you to become immortal. The object of your asceticism is to rule over the world. I do not therefore grant you the boon of immortality." 23. Sund and Upsund then

न्योऽन्यं पितामह ।२४। पितामह उवाच । यत्प्रार्थितंयथोक्तंच काममेतद्ददानिवाम् ।
मृत्योर्विधानमेतच्च यथावद्वांभविष्यति ।२५। नारद उवाच । ततःपितामहोदत्त्वा वरमे-
तदातयोः । निवर्त्यतपसस्तौच ब्रह्मलोकंजगामह ।२६। लब्ध्वावराणि दैत्येन्द्राबथतौ
भ्रातरावुभौ ।अवध्यौसर्वलोकस्य स्वमेवभवनंगतौ ।२७ तौतुलब्धवरौदृष्ट्वा कृतकामौ
मनस्विनौ । सर्वःसुहृज्जनस्ताभ्यां प्रहर्षमुपजग्मिवान ।२८। ततस्तौतुजटाभित्त्वा मौलि
नौसम्बभूवतुः । महार्हाभरणोपेतौ विरजोऽम्बरधारिणौ ॥ २९ ॥ अकालकौमुदीं
चैव चक्रतुःसार्वकालिकीम् । नित्यःप्रमुदितः सर्वस्तयोश्चैव सुहृज्जनः ॥ ३० ॥ भक्ष्य
तांभुज्यतांनित्यं दीयतांरम्यतामिति । गीयतांपीयतांचेति शब्दश्चासीद्गृहेगृहे ॥ ३१ ॥
तत्रतत्र महानादैरुत्कृष्टतलनादितैः । हृष्टंप्रमुदितंसर्वं दैत्यानामभवत्पुरम् ॥ ३२ ॥

दूसरे के विना इस त्रिलोकभर में स्थावर जंगम आदि किसीसे मृत्युका भय न रहे।२४।
पितामह बोले, कि तुमने जो प्रार्थनाकी और जो कहा, वही होगा । मैंने तुम्हारी इस
प्रार्थनाके अनुसार तुम्हारी मृत्युका नियम निश्चय किया । श्रीनारदजी बोले, कि अनन्तर
पितामह सुन्द और उपसुन्दको यह वर देकर तपसे निवृत्तकर ब्रह्मलोक में गये।२६।दोनों
भाई दैत्यवर वर पाकर सब लोकोंके बधके अयोग्य होकर अपने घरको पधारे। उनके स्वजन
उन दोनों मनस्वियों को वर पाते और उनका मनोरथ सफलहोते देखकर बडे प्रसन्न
हुए।२८।उन दोभाइयों ने तब जटा कटवाकर किरीट आदि अतिमूल्यवान आभूषण और
स्वच्छ वस्त्रपहिने । अनन्तर सर्वकालिक अकाल कौमुदीका महोत्सव करना प्रारंभ किया
उन के स्वजन सदा आमोद प्रमोद से काल काटनलगे।३०।उन के घरोंमें भक्षण करो,
भोजन करो, दान करो, खेलो, गीत गाओ, पीओ, ऐसे शब्द सदा उच्चारे जाने लगे ।
ठौर ठौरसे दैत्योंके सिंह समान गर्जन के साथ थपोडीकी कठोर आहटसे सम्पूर्ण नगर
में आनन्दकी उमंग फैल गई । कामरूपी दैत्योंके बडेआनंदसे उन प्रकारोंके भांति भांति

asked the grand-father to grant that no one should have power over their life excepting themselves: one over the other. Brahma granted this boon. They should not die except by each other's hand. Narad continued that Brahma having given them the boon went to his own abode and they gave up their asceticism.26. The two brothers having got the boon that no one else should be able to kill them went home. Their kinsmen were overjoyed at seeing them return successful. They removed their long hair and put on ornaments, They began a great festival named *Akal Koumudi* and their kinsmen passed the time in happiness and joy.30. Sounds of eat, drink, play and sing were heard from their houses. The citizens were over-joyed and the sounds and noises of revelry and

तैस्तैर्विहारैर्बहुभिर्दैत्यानां कामरूपिणाम्। समाः संक्रीडतां तेषामहरेकमिवाभवत्। ३३।
इत्यादिपर्वणि राज्यलाभपर्वणि सुन्दोपसुन्दोपाख्याने
दशाधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २१० ॥

नारद उवाच। उत्सवेवृत्तमात्रेतु त्रैलोक्याकाङ्क्षिणावुभौ। मन्त्रयित्वाततः सेनां तावाज्ञापयतांतदा ॥ १ ॥ सुहृद्भिरप्यनुज्ञातौ दैत्यैर्वृद्धैश्चमन्त्रिभिः। कृत्वाप्रास्थानिकंरात्रौ मघासुययतुस्तदा ॥ २ ॥ गदापट्टिशधारिण्या शूलमुद्गरहस्तया। प्रस्थितौसहधर्मिण्या महत्यादैत्यसेनया ॥ ३ ॥ मङ्गलैः स्तुतिभिश्चापि विजयप्रतिसंहितैः। चारणैः स्तूयमानौतौ जग्मतुः परयामुदा ॥ ४ ॥ तावन्तरिक्षमुत्प्लुत्य दैत्यौ कामगमावुभौ। देवानामेवभवनं जग्मतुर्युद्धदुर्मदौ ॥ ५ ॥ तयोरागमनंज्ञात्वा वरदानञ्चतत्प्रभोः। हित्वात्रिविष्टपंजग्मुर्ब्रह्मलोकं ततः सुराः ॥ ६ ॥ ताविन्द्रलोकंनिर्ज्जित्य यक्षरक्षोगणांस्तदा। खेचराण्यपिभूतानि जघ्नतुस्तीव्रविक्रमौ ॥ ७ ॥ अन्तर्भूमिगतान्नागान जि-

के विहार में लगे रहने से उनको एक एक वर्ष एक एक दिन जान पड़ने लगा ॥ ३३ ॥

अध्याय २११ ॥

नारदजी ने कहा, कि अकाल कौमुदी के महोत्सव के अंतहोने पर तीनों लोकों के अधिकार लाभ करने के अभिलाषी होकर दोनों भाइयोंने युक्तिकर सेनाओंको सजने की आज्ञा दी। उन्हों ने स्वजन, और वृद्ध दैत्य मंत्रियोंकी आज्ञा से यात्राकरनेकीक्रिया पूरी कर रात्रिको मघा नक्षत्र में यात्रा की।२।तुल्य धर्मवाली बड़ी दैत्यसेना गदा, पट्टिश शूल, मुद्गर आदि शस्त्र लेकर उनके साथ चली। दोनों दैत्यराज चारणोंकी विजयसूचक मांगलिक स्तुति पाठसे प्रशंशितहोकर परम हर्षपूर्वक जानेलगे।४।युद्धमें कठोर कामगामी वे दोनों दैत्यवर आकाश पर चढ़कर देवलोक को गये। देवगण उन के आनेकी सुधपा पितामहका वर देना स्मरणकर अपनी अपनी जगह छोड़कर ब्रह्मलोकमें गये।६। तेजस्वी विक्रमी दोनों दैत्योंने इसलोक, यक्षगण, राक्षसगण और दूसरे खेचरी प्राणियोंको जीत

play were heard on all sides. *Being* engaged in play and festivities a year passed like a day." 33.

CHAPTER CCXI

Narad said that at the end of the great festival the two brothers prepared a large army to conquer the world. They went out of the city on an auspicious night. A large army of Daityas armed with different sorts of weapons went with them. Bards began to sing the songs of their glory. They went through the sky to the country of gods who knew that Brahma had granted them boon and left their posts to go to the abode of Brahma.6. The two brothers overran the countries of Yakshas, Rakshas and others who roam through the air. They then vanquished the Nagas of Patal and the Mlechas

त्वातौचमहारथौ । समुद्रवासिनीःसर्वा म्लेच्छजातीर्विजिग्यतुः ॥८॥ ततःसर्वांमहीं जेतुमारब्धावुग्रशासनौ । सैनिकांश्चसमाहूय सुतीक्ष्णंवाक्यमूचतुः ॥९॥ राजर्षयो महायज्ञैर्हव्यकव्यैर्द्विजातयः । तेजोबलंचदेवानां वर्द्धयन्तिश्रियंतथा ॥१०॥ तेषामेवंप्रवृत्तानां सर्वेषाममुरद्विषाम् । सम्भूयसर्वैरस्माभिः कार्य्यःसर्वात्मनावधः ॥११॥ एवंसर्वान्समादिश्य पूर्वतीरेमहोदधेः । क्रूरांमतिंसमास्थाय जग्मतुःसर्वतोमुखौ ॥ ॥१२॥ यज्ञैर्यजन्तिये केचिद्याजयन्तिच येद्विजाः । तान्सर्वान्प्रसभंहत्वा बलिनौ जग्मतुस्ततः ॥१३॥ आश्रमेष्वग्निहोत्राणि मुनीनांभावितात्मनाम् । गृहीत्वाप्रक्षिपन्त्यप्सुविश्रब्धं सैनिकास्तयोः ॥१४॥ तपोधनैश्चयेक्रुद्धैः शापाउक्तामहात्मभिः । नाक्रामन्ततयोस्तेऽपि वरदाननिराकृताः ॥१५॥ नाक्रामन्तयदाशापा बाणामुक्ताः शिलास्विव । नियमान्संपरित्यज्य व्यद्रवन्तद्विजातयः ॥१६॥ पृथिव्यांयेतपःसिद्धा

कर वहांसे चलकर पाताल में बसेहुए सर्पों को परास्तकर समुद्र द्वीप में म्लेच्छों को हराया।८।अनन्तर कठोर शासनेवाले दोनों महाबली भाइयोंने भूमण्डलको परास्त करने को उद्यतहोकर सेनाओं को पुकार पुकार यह कठोलीबातकही, कि राजर्षिवृंद महायज्ञों से और ब्राह्मणगण हव्यकव्यसे देवोंको तेज बल और श्रीवृद्धि पहुंचातेहैं ।१०। वह सब लोग इन कार्य्योंसे हमारी शत्रुता करते हैं, सो हम सब एकत्रहोकर सर्वप्रकार से उनको नष्ट करेंगे । वे महासमुद्रके पूर्व तटपर ऐसी निष्ठुर कल्पना कर सब सेनाओं को आज्ञा देकर चारों ओर दौडे उन दोनों बली भाइयों ने जिन जिन ब्राह्मणों को यजन वा याजन करते देखा, उसी क्षण उनको मार कर आगे बढने लगे उनकी सेना निःशंक चित्तसे मुनियों के आश्रम में जाकर उनके अग्निहोत्र लेकर जलमें छोडने लगी।१४।महात्मा तपोधनवृन्द क्रोधितहो शापदेने लगे, पर वह ब्रह्माजीके वर से व्यर्थ होने लगा, उनपर वर्त्ताव नहीं करसका जब द्विजों का शाप शिलापर छोडे शिलीमुखकी भांति व्यर्थ होने लगा तब वे नियम छोडकर भागने लगे।१६।भूमण्डल में जितने समशील,तपःसिद्ध दांत

living on the islands of the seas.8. Then the two brave brothers intending to conquer the whole world addressed the soldiers of their army and said, "The Rajarshis by their sacrifices and *Brahmans* by their libations to fire increase the power of gods who are our enemies. We shall, therefore, destroy them by every means." Having made this cruel resolution on the eastern shore of the Ocean, they over-ran all parts of the world killing in their way the Brahmans engaged in performing sacrifices. The soldiers of their army fearlessly poured water over the sacrificial fire in the hermitages of the *Rishis*.14.The curses of the wrathful *Rishis* had no effect over them on account of the blessing of *Brahma* and had to run away in terror. The *Rishis* and ascetics in all parts of

दान्ताः शमपरायणाः । तयोर्भयाद्दुद्रुवुस्ते वैनतेयादिवोरगाः ॥ १७ ॥ मथितै-
राश्रमैर्भग्नैर्विकीर्णकलशस्रुवैः । शून्यमासीज्जगत्सर्वं कालेनेवहतंतदा ॥ १८ ॥ ततो
राजन्नदृश्यद्भिर्ऋषिभिश्च महासुरौ । उभौविनिश्चयंकृत्वा विकुर्वातेवधैषिणौ ॥१९॥
प्रभिन्नकरटौमत्तौ भूत्वाकुञ्जररूपिणौ । संलीनमपिदुर्गेषु निन्यतुर्य्यमसादनम् ।२०।
सिंहौभूत्वापुनर्व्याघ्रौ पुनश्चान्तर्हिताबुभौ । तैस्तैरुपायैस्तौ क्रूरावृषीन्दृष्ट्वानिजघ्नतुः
॥ २१ ॥ निवृत्तयज्ञस्वाध्याया प्रनष्टनृपतिद्विजा । उत्सन्नोत्सवयज्ञाच बभूववसुधा
तदा ॥ २२ ॥ हाहाभूताभयार्त्ताच निवृत्तविपणापणा । निवृत्तदेवकार्य्याच पुण्यो-
द्वाहविवर्जिता ॥ २३ ॥ निवृत्तकृषिगोरक्षा विध्वस्तनगराश्रमा । अस्थिकङ्कालस-
ङ्कीर्णा भूर्वभूवोग्रदर्शना ॥ २४ ॥ निवृत्तपितृकार्य्यश्च निर्वषट्कारमङ्गलम् । जगत्

ऋषि थे, वे इसप्रकार भागे, कि जैसे गरुड के भयसे सर्पभागे इसप्रकार आश्रम मथने और कलसे, स्रुव आदि इधर उधर छिरकाये तथा टूट फूट जानेपर सम्पूर्ण जग प्रलय काल में नष्टहोनेकी भांति खाली होगया ।१८। हे महाराज ! अनन्तर मुनियोंके इधर उधर छिपकर दृष्टि के बाहरहोजाने पर दोनों महावीर उनका बध निश्चय कर नानारूपधरने लगे वे कभी मदोन्मत्त गजका स्वरूपलेकर दुर्ग में गयेहुए तपस्वियों कोभी नष्ट करने लगे।२०।वेदोनों कुटिल कभी सिंहका स्वरूप कभी व्याघ्रकारूप धारणकरतेथे और कभी दृष्टि के बाहरहोजाते थे । इसप्रकार उन्होंने नानाउपायों से ऋषियों को नष्ट किया तब धरती पर यज्ञ और स्वाध्याय रुक जाकर और ब्राह्मण तथा राजा नष्टहोकर एकवारही यज्ञोत्सवका नाशहोगया।२२।सवलोक भयभीत होकर हाय हाय करने लगे मोल, विक्री, हाटका कार्य, दैवी कार्य, पुण्य कार्य, बिवाहकार्य, ऋषिकार्य और गौरक्षा आदि सम्पूर्ण कार्यही रुकगये नगर और आश्रमोंका सत्यानाशहोकर केवल हड्डी और कंकालोंसे पृथ्वी वहुत भयावनी दीख पडनेलगी।२४।सम्पूर्ण देशोंमें पितृकार्य और वषट्कार आदि मांगलिक

the world ran away before them as serpents do by the fear of Garur. The sacrificial vessels were broken and the hermitage of the *Rishis* became desolate as if the world had come to an end.18. The ascetics having concealed themselves from their sight the two brothers resolved to kill them and put on various disguises. Some-time they assumed the shape of mad elephants and destroyed the *Rishis* hidden within fortresses. Some time they transformed them-selves into lions and then disappeared altogether. Sacrifices and self study were put a stop to along with the destruction of kings and Brah-mans. The people began to cry with fear, purchase, sale, commerce, worship of gods, charity, marriages, functions of Rishis, protection of cows and other works were put in abeyance. Cities and hermita-ges were destroyed and ruins and bones disfigured the land on all

मतिभयाकारं दुष्प्रेक्ष्यमभवत्तदा ॥ २५ ॥ चन्द्रादित्यौग्रहास्तारा नक्षत्राणिदिवौकसः । जग्मुर्विषादंतत्कर्म दृष्ट्वासुन्दोपसुन्दयोः ॥ २६ ॥ एवंसर्वादिशोदैत्यौ जित्वा क्रूरेणकर्मणा । निःसपत्नौकुरुक्षेत्रे निवेशमभिचक्रतुः ॥ २७ ॥

इत्यादिपर्वणि राज्यलाभपर्वणि सुन्दोपसुन्दोपाख्याने

एकादशाधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २११ ॥

नारद उवाच । ततोदेवर्षयःसर्वे सिद्धाश्चपरमर्षयः । जग्मुस्तदापरामार्तिं दृष्ट्वा तत्कदनंमहत् ॥ १ ॥ तेऽभिजग्मुर्जितक्रोधा जितात्मानोजितेन्द्रियाः । पितामहस्य भवनंजगतः कृपयातदा । ततोददृशुरासीनं सहदेवैःपितामहम् । सिद्धैर्ब्रह्मर्षिभिश्चैव समन्तात्परिवारितम् ॥ ३ ॥ तत्रदेवो महादेवस्तत्राग्निर्वायुनासह । चन्द्रादित्यौचशक्रश्चपारमेष्ठ्यास्तथर्षयः ॥ ४ ॥ वैखानसावालखिल्या वानप्रस्थामरीचिपाः । अजाश्चैवाविमूढाश्च तेजोगर्भास्तपस्विनः ॥ ५ ॥ ऋषयःसर्वएवैते पितामहमुपागमन् । ततो

क्रियाके लोपहोजाने पर जग बड़ा भयानकहो देखनेके अयोग्य हुआ । चन्द्र, सूर्य, ग्रह, तारे और आकाश में रहनेवाले अश्विनी आदि नक्षत्र सुंद उपसुंद का यह कार्य देखकर उदास हुए वे इसप्रकार कुटिल कार्य से सब ओर पराजय कर अन्त को शत्रुवर्जितहोकर कुरुक्षेत्र में बसने लगे ॥ २७ ॥

अध्याय २१२

श्रीनारदजी बोले, कि अनन्तर शमदमशील देवर्षि, परमर्षि और सिद्धगण उस भारी प्राणिहत्याको देखकर बड़े दुःखीहुए । वे तब जगत् पर कृपायुक्तहो पितामह के भवन में गये।२।अनन्तर वहां पितामहको सिद्ध और ब्रह्मर्षियोंसे चारों ओरसे घिरे और देवोंके देव महादेव, अग्नि, वायु, चंद्र, आदित्य, इंद्र, ब्रह्मनिष्ठ ऋषिगण, वैखानस, बालखिल्य, वानप्रस्थ, मरीचि, अज, अविमुग्ध और तेजोगर्भ आदि भिन्न भिन्न तपस्वी

sides.24.The study of the Vedas and other good deeds were nowhere to be seen throughout the country which became dreary and unbearable to look at. The Moon, theSun,the stars and other luminaries of the sky lost their lustre at such deeds of Sund Upsund. The two brothers having thus cleared all the land of all their enemies settled at last in Kurukshetra."27.

CHAPTER CCXII

Narad said that the Dewarshis, Paramarshis and *Siddhas* were much troubled at the sight of such slaughter of beings. Out of kindness to the people they went to the Grand-father and saw him surrounded by *Siddhas*, Brahmarshis and gods. There they saw Mahadeva, Agni, Vayu, Chandra, Aditya, Indra and other gods, and Rishis and complained of the great misdeeds and cruelties of Sund

ऽभिगम्यतेदीनाः सर्वएवमहर्षयः ॥ ६ ॥ सुन्दोपसुन्दयोःकर्मसर्वमेवशशंसिरे । यथा हृतंयथाचैव कृतंयेनक्रमेणच ॥ ७ ॥ न्यवेदयंस्ततःसर्व मखिलेनपितामहे । ततोदेवगणाःसर्वेतेचैवपरमर्षयः ॥ ८ ॥ तमेवार्थंपुरस्कृत्य पितामहमचोदयन् । ततःपितामहः श्रुत्वासर्वेषां तद्वचस्तदा ॥ ९ ॥ मुहूर्त्तमिवसञ्चिन्त्य कर्त्तव्यस्यचनिश्चयम् । तयोर्बधं समुद्दिश्य विश्वकर्माणमाह्वयत् ॥ १० ॥ दृष्ट्वाचविश्वकर्माणं व्यादिदेशपितामहः । सृज्यतांप्रार्थनीयैका प्रमदेतिमहातपाः ॥ ११ ॥ पितामहंनमस्कृत्य तद्वाक्यमभिनन्द्यच । निर्ममेयोषितंदिव्यां चिन्तयित्वापुनःपुनः ॥ १२ ॥ त्रिषुलोकेषुयत्किञ्चिद्भूतं स्थावरजङ्गमम् । समानयद्दर्शनीयं तत्तद्यत्नसविश्ववित् ॥ १३ ॥ कोटिशश्चैवरत्नानि तस्यागात्रे न्यवेशयत् । तांरत्नसङ्घातमयीमसृजद्देवरूपिणीम् ॥ १४ ॥ साप्रयत्नेनमहतानिर्मिता विश्वकर्मणा । त्रिषुलोकेषुनारीणां रूपेणाप्रतिमाभवत् ॥ १५ ॥ नतस्याःसूक्ष्ममप्यस्ति

ऋषिगण सभी उपस्थितहुए सम्पूर्ण महर्षिगणने दुःखीचित्त से सुंद और उपसुंदके कार्यो का वृत्तांत कह सुनाया उन दोनों दैत्यों ने जैसे धूम के साथ जो काम किया और जैसे माग वह सब क्रमसे आद्योपांत कहसुनाया।७।सम्पूर्ण देवगण और परमर्षियोंने उस विषय के लिये पितामहका अनुरोध किया। अनन्तर पितामहने उन सबों का वचन सुन क्षण भर सोचकर क्या करना ठीकहै उसका निश्चयकर दुराचारी दोनों दैत्योंके वध के लिये विश्वकर्माको बुलवाया।१०।विश्वकर्मा के आनेपर महानुभव पितामहने उसकी ओर देख, आज्ञा दी, कि सबोंकी प्रार्थनीया मनभावनी एक प्रमदा बनाओ। विश्वकर्मा उनको प्रणामकर आदरपूर्वक उनकी आज्ञा मानकर यत्न से बार बार सोच विचार कर एक सुन्दरी बाला बनाने लगा।१२।त्रिलोकभरमें दर्शनयोग्य परम सुन्दर जितने स्थावर जंगम पदार्थ हैं, विश्वकर्माने उन सबों से चुन चुन कर देवरूपी एक कामिनी बनाकर उस के अंगादि सम्पूर्ण शरीर को सजाकर उसको रत्नकी प्रतिमा बनाया।१४।विश्वकर्माके बड़े प्रयत्नसे बनायी हुई वह कन्या ऐसी रूपवती बनी, कि तीनों भुवन में कोईभी नारी

and Upsund from beginning to end. The gods and Maharshis drew the attention of Brahma to the subject. Brahma considered for a while and having resolved upon the proper course to adopt, called Vishwakarma into his presence and ordered him to create a heart-enchanting woman. 11. Vishwakarma obeyed the orders and gave his whole attention towards making a woman. Whatever aesthetics there are in the three worlds, among moveables and immoveable, Vishakarma selected from them suitable portions for her body and made her body as if it were a statue of jewels. The girl made by Vishwakarma was matchless in beauty. Even the slightest parts of her body were sufficient to entangle the heart of the beholder. Like Lakshmi herself the beauty of her person enchanted the eyes and hearts of

यद्गात्रेरूपसम्पदा । नियुक्तायत्रबाद्दष्टिर्न सज्जातिनिरीक्षताम् ॥ १६ ॥ साविग्रहवतीव श्रीःकामरूपावपुष्मती । जहारसर्वभूतानां चक्षूंपिचमनांसिच ॥ १७ ॥ तिलंतिलं समानीय रत्नानांयद्विनिर्मिता । तिलोत्तमेतितत्तस्यानाम चक्रेपितामहः ॥ १८ ॥ ब्रह्माणंसानमस्कृत्य प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् । किंकार्य्यमयिभूतेश येनास्म्यद्येहनिर्मिता ॥ १९ ॥ पितामह उवाच । गच्छ सुन्दोपसुन्दाभ्यामसुराभ्यां तिलोत्तमे । प्रार्थनीयेन रूपेण कुरुभद्रप्रलोभनम् ॥ २० ॥ त्वत्कृतेदर्शनादेव रूपसम्पत्कृतेनवै । विरोधःस्याद्यथाताभ्यामन्योऽन्येनतथाकुरु ॥ २१ ॥ नारद उवाच । सातथेतिप्रतिज्ञाय नमस्कृत्यापितामहम् । चकारमण्डलंतत्र विबुधानांप्रदक्षिणम् ॥२२॥ प्राङ्मुखोभगवानास्ते दक्षिणेनमहेश्वरः । देवाश्चैवोत्तरेणासन् सर्वतस्त्वृषयोऽभवन् ॥ २३ ॥ कुर्वंत्यातुतदा तत्रमण्डलंतत् प्रदक्षिणम् । इन्द्रःस्थाणुश्चभगवान् धैर्येणप्रत्यवस्थितौ ॥२४॥ द्रष्टुका-

उसकी उपमा के योग्य न रही, उसके शरीर भरमें ऐसा कोई सूक्ष्म स्थानभी न था, कि जिसपर देखनेवालेकी आंख पडनेसे उसके अपूर्व रूपकी शोभामें फंस नहीं जाताथा।१६। साक्षात लक्ष्मीकी भांति वह कामिनी हर प्राणीके नयन मन चुराने लगी विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण रत्न बटोरकर तिल तिल चुनकर उस कन्याको बनायाथा, इसलिये पितामह ने उसका नाम तिलोत्तमा रक्खा ।१८। अनन्तर तिलोत्तमा दोनों हाथ जोडकर ब्रह्माजी से बोली, कि हे भूतनाथ ! मुझको क्या करनाहोगा कहो, कि मैं क्यों साम्प्रत बनाई गई। पितामहबोले, कि तुम सुंद और उपसुंद दोनों असुरों के यहांचली जाओ, वहां जाकर सुंदर रूप दिखा उनको लुभानेकी चेष्टाकरो।२०। भद्रे ! ऐसी चेष्टा करो, कि वे तुम्हारे रूपकी सम्पद देखकर आपस में झगडाकरें । श्रीनारदजी बोले, कि अनन्तर तिलोत्तमा उनका कहना मानकर प्रतिज्ञा ठानकर पितामहके पांवपर सिरझुकाकर देवोंकी चारोंओर परिक्रमा देनेलगी।२२। उससमय भगवान पितामह पूर्वओर, महेश्वर दक्षिण ओर, दूसरे देवगण उत्तरओर और ऋषियोंने नानाओर को मुह फेरेथे, तिलोत्तमा जब परिक्रमा देती थी, तब इन्द्र और भगवान महेश्वर अतिधीरजधर अपने अपने स्थानों में बैठेथे। २४।

the beholders. Vishwakarma had made her entire frame a colletion of all jewels. The grand-father therefore named her Tilottama.18. She asked *Brahma* with joined palms, "What shall I have to do? What for am I made?" The grandfather replied, "Go to the house of Sund and Upsund and tempt them by your beauty. You must any how raise a quarrel among the brothers." Narad said that Tilottama promised to do accordingly after bowing at the feet of the Grand-father. At the time she was going round *Brahma* the gods turned their faces from her. Indra and Maheshwar could with great difficulty check their desire. Maheshwar was seated with his face towards

मस्यचात्यर्थं गतयापार्श्वतस्तया । अन्यदञ्चितपद्माक्षं दक्षिणंनिःसृतं मुखम् ॥ २५ ॥
पृष्ठतःपरिवर्तन्त्या पश्चिमंनिःसृतंमुखम् । गतयाचोत्तरंपार्श्वमुत्तरंनिःसृतं मुखम् ॥२६॥
महेन्द्रस्यापिनेत्राणां पृष्ठतःपार्श्वतोऽग्रतः । रक्तान्तानांविशालानां सहस्रंसर्वतोऽभवत्
॥ २७ ॥ एवंचतुर्मुखः स्थाणुर्महादेवोऽभवत् पुरा । तथासहस्रनेत्रश्च बभूववलसूदनः
॥ २८ ॥ तया देवनिकायानां महर्षीणांचसर्वशः । मुखानिचाभ्यवर्त्तन्त येनयातीतिलोत्तमा ॥ २९ ॥ तस्यागात्रेनिपतितादृष्टिस्तेषां महात्मनाम् । सर्वेषामेवभूयिष्ठमृते
देवंपितामहम् ॥ ३० ॥ गच्छन्त्यातुतयासर्वे देवाश्चपरमर्षयः । कृतमित्येवतत्कार्य्यं
मेनिरे रूपसम्पदा ॥ ३१ ॥ तिलोत्तमायांतस्यान्तु गतायांलोकभावनः । सर्वान्विसर्ज्जयामास देवानृषिगणांश्चतान् ॥ ३२ ॥

इत्यादिपर्वणि राज्यलाभपर्वणि तिलोत्तमाप्रस्थापे
द्वादशाधिकाद्विशततोऽध्यायः ॥ २१२ ॥

महेश्वर के बडे वेगसे देखनेकी चाह होने पर तिलोत्तमा जब उनकी दक्षिण ओरकोगई तब खिले पद्मपलाश समान नेत्रोंसे सुशोभित एक दक्षिण मुख निकल आया, तिलोत्तमा जब उन के पीछे गयी तब उनका एक पश्चिम मुख निकला, और वह बाला जब उत्तर ओर गयी, तब उनकी बाईओरसे एक मुख निकला।२६।महेंद्रकेभी देखनेकी चाहरखनेके कारण जब तिलोतमा उनकी परिक्रमा देती थी, तब उनके सामने पार्श्व में और पीठ पर सम्पूर्ण शरीरही में बडी बडी सहस्रलाल आंखें निकलीं हे पार्थ ! पूर्वकाल में इस प्रकार महादेवजी चतुर्मुख और वलसूदन सहस्रनेत्रयुक्तहुए ।२८।और परिक्रमा के काल तिलोतमा जिस जिस ओर को जातीथी, देव और महर्षियों के मुख उस उस ओर को घूम जातेथे उस काल में उस ब्रह्मसभा में जो जो उपस्थित थे उन में केवल पितामह के विना सब महात्माओंकी दृष्टि उस नारीकी देहपरपडीथी।३०।जब तिलोतमा जानेलगी, तव सम्पूर्ण देव और परमर्षियों ने उस के रूपका उजाला देख अभीष्टकामना को सिद्ध जाना तिलोतमा के देवकार्य साधन को चलेजाने पर लोकभावन हिरण्य गर्भ ने सम्पूर्ण देव और ऋषियों को विदा किया ॥ ३२ ॥

the east but as she went round three other faces sprang up towards South, West, and North with a desire to see her again and again. Mahendra himself had a thousand eyes opened in all parts of his body ! Mahadeo thus came to have four faces and Indra thousand eyes ! The faces of the gods and Rishis were turned to whatever direction she went. All eyes were turned towards her except those of the grand-father and all believed that they had been fortunate to see her with their eyes. After the departure of Tilottama to do the work of gods, *Brahma* dismissed the audience.32.

नारद उवाच। जित्वातुपृथिवींदैत्यौ निःसपत्नौगतव्यथौ। कृत्वात्रैलोक्यमव्यग्रं कृतकृत्यौबभूवतः ॥ १ ॥ देवगन्धर्वयक्षाणां नागपार्थिवरक्षसाम्। आदायसर्वरत्नानि परांतुष्टिमुपागतौ ॥ २ ॥ यदानप्रतिषेद्धारस्तयोः सन्तीहकेचन। निरुद्योगौतदाभूत्वा विजह्रातेऽमराविव ॥ ३ ॥ स्त्रीभिर्माल्यैश्च गन्धैश्च भक्ष्यभोज्यैःसुपुष्कलैः। पानैश्चविविधैर्हृद्यैःपरांप्रीति मवापतुः ॥ ४ ॥ अन्तःपुरवनोद्याने पर्वतेषुवनेषुच। यथेप्सितेषुदेशेषु विजह्रातेमराविव ॥ ५ ॥ ततःकदाचिद्विन्ध्यस्य प्रस्थे समशिलातले। पुष्पिताग्रेषु शालेषु विहारमभिजग्मतुः ॥ ६ ॥ दिव्येषुसर्वकामेषु समानीतेषुतावुभौ। वरासनेषु संहृष्टौसहस्त्रीभिर्निषीदतुः ॥७॥ ततो वादित्रनृत्याभ्यामुपातिष्ठन्त तौस्त्रियः। गीतैश्च स्तुतिसंयुक्तैः प्रीत्यासमुपजग्मिरे ॥ ८ ॥ ततस्तिलोत्तमातत्र वनेपुष्पाणिचिन्वती।

अध्याय ॥ २१३ ॥

श्री नारदजी बोले, कि इधर दैत्य सुंद और उपसुंद दोनोंभाइयों ने भूमण्डल को परास्तकर तीनों भुवनों को तुल्यरूप से हथेली तले ला दुःख खो और एकभी विरोधी न पाकर मनोरथ सफल जाना और देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, भूपाल, आदिके सम्पूर्ण रत्नलेकर परम संतुष्टहो काल गँवानेलगे।२।जब देखा, कि इस त्रिलोकभरमें कोई भी उन का रोकनेवाला नहीं है, तब उद्योग छोडकर देवोंकी भांति परम सुखसे विहारकरने लगे। माला, चन्दन, स्त्री, सुन्दर खाने, चबाने और चूसनेकी सामग्री इन सब भांति २ की वस्तुओंसे अति आनन्द भोगने लगे। ४ । देवोंकी भांति कभी अन्तःपुरमें, कभी बनमें कभी फूल बाडीमें कभी पर्वत पर, जब जहां मनचले विहार करने लगे। एक दिन फूल युक्त वृक्षों से सुशोभित अनरूखी शिला तलवाली विंध्याचलकी चोटीपर विहारकरने को गये। वहां मनमाने सम्पूर्ण दिव्य काम्य वस्तुओं को लेजाने पर स्त्रियोंके साथ प्रमुदित मनसे सुन्दर आसनों पर जा बैठे। नारियां उन के सन्तोषके लिये सुंदर नाच गीत और स्तुतिभरे संगीतों से उनकी उपासना करने लगीं ।८। ऐसे समय तिलोत्तमा एकही लाल

CHAPTER CCXIII

Narad said, that the two brothers, Sund and Upsund, having conquered the three worlds, destroyed their enemies, and taken valuables from gods, Gandharvas, Yakshas Rakshases, Nagas, and kings, began to live in happiness. 2. When they found themselves irresistible by all the world, they retired from the life of business and passed the life of perfect ease like gods. They revelled in garlands, perfumes, women, and the luxuries of food and drink. 4. Like gods they were at times in their palaces, in forest, in gardens, and on mountains. One day, they went to the Vindhya hills decorated by various flower trees. There they took with them the things they desired and

वेषसाक्षिप्तमाधाय रक्तेनैकेनवाससा ॥ ९ ॥ नदीतीरेषुजातान्सा कार्णिकारान् प्रचि-
न्वती । शनैर्जगामतंदेशं यत्रास्तांतौमहासुरौ ॥ १० ॥ तौतुपीत्वावरंपानं मदरक्तान्त
लोचनौ । दृष्ट्वैवतांवरारोहां व्यथितौसम्बभूवतुः ॥ ११ ॥ तावुत्थायासनंहित्वा जग्म
तुर्यत्रसास्थिता । उभौचकामसम्मत्तावुभौ प्रार्थयतश्चताम् ॥ १२ ॥ दक्षिणेतांकरे
सुभ्रंसुन्दोजग्राहपाणिना । उपसुन्दोऽपिजग्राह वामेपाणौतिलोत्तमाम् ॥ १३ ॥ वरप्रदा
नमत्तौतावौरसेनबलेनच । धनरत्नमदाभ्यांच सुरापानमदेनच ॥ १४ ॥ सर्वैरेतैर्मदै
र्मत्तावन्योऽन्यं भ्रुकुटीकृतौ । मदकामसमाविष्टौ परस्परमथोचतुः १५ ममभार्य्यातवगुरु
रितिसुन्दोऽभ्यभाषत । ममभार्य्यातववधूरुपसुन्दोऽभ्यभासत ॥ १६ ॥ नैषातवममै
षेतितत्तस्तौ मन्युराविशत् । तस्यारूपेणसम्मत्तौ विगतस्नेहसौहृदौ ॥ १७ ॥ तस्या

वस्त्र पहिन मनमाने बने ठने उस बन में आ फूल तोड़ने लगी, और नदीतीर में उपजे हुए कर्णिकार फूल तोड़ती हुई दोनों दैत्यों के सामने धीरेधीरे गयी । वेदोनों बहुत मद पीकर आखें लालकर नशेसे चूर थे, सो उस सुंदरी को देखतेही कामदेव के बाणसे बहुत घायलहुए।११।वे दोनों कामवश होकर के आसन छोड उठ कर उस नारिके पास गये और दोनोंने उस पर मन चलाया । सुन्दने अपने हाथ से उस सुंदरीका दहिना हाथ थाम लिया और उपसुन्दने उसका बायांहाथ पकडा ॥ वे एक तो वर पानेके अहंकार अपने भुजवीर्य के अहंकार और धनरत्नों के अहंकारसे उन्मत्त थेही, फिर तिस पर दोनों मद और काम के नशे से बावलों के समान बनेथे, सो एक दूसरेकी ओर भौंह चढायके झगडनेलगे।१५।सुंदबोला, कि यह बाला मेरी स्त्री है, तुम्हारी गुरुयानीहै तुम छोडदो उपसुन्दबोला, कि यह नारी मेरी महरीहै, तुम्हारे छोटेभाईकी वधु है, तुम त्यागदो । अनन्तर आपसमें ऐसा कहते हुए, कि 'यह मेरी स्त्रीहै, तुम्हारी नहीं' दोनों हीका क्रोध उभरा, दोनों ने उसके रूपकी शोभा से मोहितहो और उस के लिये क्रोध

sat on valuable seats among women. Women began to dance and sing songs in their praises to please them. At this time *Tilottama* clad in a single red garment, began to pluck flowers in that beautiful forest and picking aquatic and terrestrial flowers passed slowly before the two brothers. Their eyes were red by the excessive drinking of wine and they fell an easy prey to the love of Tilottama. They lost all patience and went towards her in eager desire. Sund took her by the right hand and Upsund by the left. Already flushed with the pride of their strength and the drinking of wine, their lust made them now totally senseless and mad. They frowned at each other and began quarrelling.15. " She is my wife and your superior " said Sund, " You must leave her. " " She is my mistress and wife to

हस्तोर्गदेभीमेसंगृहीता सुभौतदा । प्रगृह्यचगदेभीमे तस्यांतौकाममोहितौ ॥ १८ ॥ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यन्योऽन्यं निजघ्नतुः । तौगदाभिहतौभीमौ पेततुर्धरणीतले ॥ १९ ॥ रुधिरेणावसिक्ताङ्गौ द्वाविवार्कौनभश्च्युतौ । ततस्ताविद्रुतानार्य्यः सचदैत्यगणस्तथा। पातालमगमत्सर्वो विषादभयकम्पितः ॥ २० ॥ ततःपितामहस्तत्र सहदेवैर्महर्षिभिः। आजगामविशुद्धात्मा पूजयंश्चतिलोत्तमाम् ॥२१। वरेणच्छन्दयामास भगवान्प्रपितामहः। वरंदित्सुःसतत्रैनां प्रीतःप्राहपितामहः ॥ २२ ॥ आदित्यचरिताल्लोकान् विचरिष्यसिभाविनि । तेजसाचसुदृष्टांत्वां नकरिष्यतिकश्चन ॥ २३ ॥ एवंतस्यैवरंदत्वा सर्वलोकपितामहः । इन्द्रेत्रैलोक्यमाधाय ब्रह्मलोकंगतःप्रभुः ॥ २४ ॥ नारद उवाच। एवंतौसहितौभूत्वा सर्वार्थेष्वेकनिश्चयौ।तिलोत्तमार्थेसंक्रुद्धावन्योऽन्यमभिजघ्नतुः२५

के मारे स्नेह खो स्नेहको भूल कर भारी भारी गदा उठायीं उस एक नारीके लिये काममोहित दोनों भाइयों ने वडी वडी गदा उठाकर यह कहतेहुए, कि मैंने पहिले कर थामाहै, मैंने पहिले कर थामाहै एक दूसरे को वडी मार मारी उस गदाकी चोट से वे भयानक दोनों दैत्य मारे जाय और शरीरोंको रक्तसे नहाय आकाश से गिरे दो सूर्योंकी भांति धरतीपर लोटगये।१९।तब उनके मित्र दैत्य और दैत्योंकी स्त्रियां भागकर पाताल में जाय घुसीं अनन्तर विशुद्धात्मा भगवान पितामह तिलोत्तमा के सत्कार के लिये देव और महर्षियोंके साथ वहां आ पहुँचे । भगवान पितामह ने वहां पहुंच कर तिलोत्तमाको वर देना चाहा वह वर देना स्वीकार कर उस से बोले, कि भाविनि, तुम सूर्यलोक में विचर सकोगी । तुम्हारा इतना तेजहोगा, कि कोई पुरुष तुमको देर तक नहीं देख सकेगा।२३। सर्वलोकोंके पितामह प्रभु हिरण्यगर्भ ऐसा वर देकर और इंद्रको तीनों लोकोंका अधिकार सौंप कर ब्रह्मलोक को सिधारे । श्री नारदजी बोले, कि हे भरतवंशश्रेष्ठो ! सुन्द और उपसुन्द दोनों भाई मित्रभावयुक्त और हरबात में एकमत होने परभी तिलोत्तमाके लिये क्रोधित होकर आपही एक दूसरे को मारकर नष्टहुए ।

---

your younger brother," said Upsund, "You must keep apart." At last from words they came to blows and being incensed by the fire of her love they lost all brotherly affection and took up their heavy maces. For the love of that woman the two brothers struck each other heavy blows each saying that he was the first to hold her hand. The two terrible brothers, wounded and blood-stained lay dead on the ground like two suns fallen from heaven. 19. The grand-father himself, with gods and Maharshis, came for the glory of Tilottama and wishing to grant her a boon said, "You will be able to go to the region of the sun and no one will be able to look long towards you on account of your glory." Brahma gave her this

तस्माद्ब्रवीमिवः स्नेहात्सर्वान् भरतसत्तमाः । यथावोनात्रभेदःस्यात् सर्वेषांद्रौपदी कृते ॥ २६ ॥ तथाकुरुतभद्रंवो ममचेत्प्रियमिच्छथ । वैशम्पायन उवाच । एवमुक्ता महात्मानो नारदेनमहर्षिणा ॥ २७ ॥ समयंचक्रिरे राजंस्तेऽन्योन्य वशमागताः । समक्षंतस्यदेवर्षेर्न्नारदस्यामितौजसः ॥२८॥द्रौपद्यानः सहासीनानन्योऽन्यं योभिदर्शयेत् । सनोद्वादशवर्षाणि ब्रह्मचारीवनेवसेत् ॥२९॥कृतेतुसमयेतस्मिन् पाण्डवैर्धर्मचारिभिः । नारदोऽप्यगमत्प्रीत इष्टंदेशंमहामुनिः ॥ ३० ॥ एवंतैःसमयःपूर्वं कृतोनारदचोदितैः । नचाभिद्यन्ततेसर्वे तदान्योऽन्येयनभारत ॥ ३१ ॥

इत्यादिपर्वणि राज्यलाभपर्वणि सुन्दोपसुन्दोपाख्याने त्रयोदशाधिक द्विशतोऽध्यायः ॥ २१३ ॥ समाप्तश्च राज्यलाभपर्व ॥

सो स्नेहके हेतु मैं तुम से कहताहूं, कि तुम मेरा प्रिय कर्म करना चाहो, तो ऐसाकोई नियम ठहरालो, कि द्रौपदी के लिये तुम भाइयों में विगाड़ न हो । श्रीवैशम्पायन ने कहा, कि हे महाराज ! महात्मा पाण्डवोंने अमित तेजस्वी महर्षि नारदकी यह बात सुनकर एक दूसरे के मत के अनुसार उन देवर्षि के सामनेही यह नियम ठहराया, कि उन मेंसे एक भाई जब द्रौपदी से मिलेगा तब जो दूसराभाई उस को देखलेगा, उसे बारह वर्ष ब्रह्मचारी बन कर वन में बसना होगा । धर्मचारी पाण्डवों के ऐसा नियम निश्चय करने पर महा मुनि नारद प्रसन्नहो मनमाने स्थानको चले गये । हेभारत ! पहिले पाण्डवोंकी बात से ऐसा नियम कर लेने पर उन भाइयों में आपस का विगाड नहीं हुआ था ॥ ३१ ॥

boon and having intrusted the management of the world to Indra, went back to his own region. Narad said, 'd' Sund an Upsund, in spite ot their union and brotherly love, died for, Tilottama by each other's hand. I therefore warn you kindly to make rules in order to avoid any dispute among the brothers." Vaishampayan said that in accordance with the advce of Narad the Pandavas settled among themselves that one brother seeing another with Draupadi should be exiled for twelve years. Havding hear this resolution of the brothers the Rishi went away. The Pandavas acting on the advice of N arad had never any quarrel among themselves.31.



अथार्जुनवनवासपर्व ।

वैशम्पायन उवाच । एवंतेसमयंकृत्वा न्यवसंस्तत्रपाण्डवाः । वशेशस्त्रप्रतापेन कुर्वन्तोऽन्यान्महीक्षितः ॥ १ ॥ तेषांमनुजसिंहानां पञ्चानाममितौजसाम् । बभूव कृष्णासर्वेषां पार्थानांवशवर्त्तिनी ॥ २ ॥ तेतयातेश्चसावीरैः पतिभिःसहपञ्चभिः । ब भूवपरमप्रीता नागैरिवसरस्वती ॥ ३ ॥ वर्त्तमानेषुधर्मेण पाण्डवेषुमहात्मसु । व्यव- र्द्धन्कुरवःसर्वे हीनदोषाःसुखान्विताः ॥ ४ ॥ अथदीर्घेणकालेन ब्राह्मणस्यविशाम्प- ते । कस्यचित्तस्कराजह्रुः केचिद्गानृपसत्तम ॥ ५ ॥ ह्रियमाणेधनेतस्मिन ब्राह्मणः क्रोधमूर्च्छितः । आगम्य खाण्डवप्रस्थमुदक्रोशत् सपाण्डवान् ॥ ६ ॥ ह्रियतेगोधनं क्षुद्रैर्नृशंसैरकृतात्मभिः । प्रसह्यचास्मद्विषयादभ्यधावत पाण्डवाः ॥ ७ ॥ ब्राह्मणस्य

अध्याय २१४ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि इस के पीछे पाण्डवों ने द्रौपदी के विषय में इसप्रकार का नियम ठहराकर उस स्थानमें बासकर अस्त्रोंके प्रभावसे दूसरे भूपालों को वशीभूत किया कृष्णा उन बड़े तेजस्वी मनुष्य सिंह पांच पाण्डवोंहीके वश में बनी रही।२। सरोवर युक्त बन और हस्तिगण जिसप्रकार एक दूसरे का सौभाग्य बढ़ाते हैं, वैसेही द्रौपदी और उसके पांच पति एक दूसरेकी प्रीति बढ़ाने लगे । महात्मा पाण्डवों के धर्मपथपर चलने से कौरव मात्रही दोषकी आंच से बचकर सुखपूर्वक वृद्धि पाने लगे।४। हे नरनाथ! कितने एक दिन बीतने पर एक ब्राह्मण के घर में कुछ चोर आकर गौ चुराने लगे। हे नृपश्रेष्ठ! लुटेरोंसे ब्राह्मणकी गौ चुराई जानेपर ब्राह्मण क्रोध से अचेत हो खाण्डव प्रस्थ में आकर दुःख प्रकट करते हुए चिल्ला चिल्ला कर पाण्डवोंको पुकार पुकार कर बोले । ६ । कि हे पाण्डवो ! तुम्हारे राज्य में आज दुष्ट नीच निष्ठुर लुटेरे एकायक मेरीगौ चुरा रहे हैं, तुम तुरन्त दौडो । हा ! कितने दुःखकी बात है । कौआ आकर ब्राह्मण के

CHAPTER CCXIV

Vaishampayan said that the Pandavas having fixed the above-mentioned limit about Draupadi, conquered other kings by the force of arms and Krishna remained obedient to the five brave Pandavas.2. Draupadi and her husbands advanced in mutual love as a forest with lake and a group of elephants increase each other's glory. The Pandavas treading the path of virtue saved all the Kauravas from sin and lived in happiness.4. Days passed by. Some thieves entered a Brahman's house to steal his cows. The Brahman came to the Pandavas and asked their help, saying, "Thieves are stealing my cows to day within your territories. To the rescue at once! Alas! miserable me! A crow is taking away the sacrificial butter belonging to a Brahman! The low-born jackal finding a lion's

प्रशान्तस्य हविर्ध्वांक्षैः प्रलुप्यते । शार्दूलस्यगुहांशून्यां नीचःक्रोष्टाभिमर्द्दति ॥ ८ ॥
अरक्षितारंराजानं बलिषड्भागहारिणम् । तमाहुःसर्वलोकस्य समग्रंपापचारिणम् ।
॥ ९ ॥ ब्राह्मणस्वेहृते चोरैर्धर्मार्थेच विलोपिते । रोरूयमाणेच मयिक्रियतांहस्तधार-
णा ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच । रोरूयमाणस्याभ्यासे भृशंविप्रस्यपाण्डवः । ता-
निवाक्यानिशुश्राव कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः ॥ ११ ॥ श्रुत्वैवचमहाबाहुर्माभैरित्याह तं
द्विजम् । आयुधानिचयत्रासन् पाण्डवानांमहात्मनाम् ॥ १२ ॥ कृष्णयासहतत्रास्ते
धर्मराजोयुधिष्ठिरः । सम्प्रवेशायचाशक्तो गमनायचपाण्डवः ॥ १३ ॥ तस्यचार्त्तस्य
तैर्वाक्यैश्चोद्यमानः पुनःपुनः । आक्रन्देतत्र कौन्तेयश्चिन्तयामास दुःखितः ॥ १४ ॥
ह्रियमाणेधनेतस्मिन् ब्राह्मणस्यतपस्विनः । अश्रुप्रमार्ज्जनंतस्य कर्त्तव्यमितिनिश्चयः
॥१५॥ उपप्रेक्षणजोऽधर्मः सुमहान्स्यान्महीपतेः । यद्यस्यरुदतोद्वारि नकरोम्यद्यरक्ष-

शांत यज्ञका हूत हर रहाहै, नीच सियार सिंहकी गुफा खाली देखकर मथ रहा है, । ८ ।
जो राजा प्रजाकी रक्षा नहीं करते, और छठवांभाग करभी लेते हैं, पंडितलोग उन्हींको
सर्वलोकों में पापी कहते हैं, हेपाण्डवो चोर ब्राह्मणका धन हर रहे हैं, धर्म कर्म लोप
होरहे हैं, मैं शोकरूपी कीचड में डूबकर बार बार रोरहा हूं, सो मेरा हाथ थांमकर
मुझको बचाओ । १० । वैशम्पायन ने कहा, कि कुन्ती पुत्र धनंजय ने निकट आकर रोते
पीटते हुए उन ब्राह्मणकी रुलाई सुनी । उन महाभुज ने वह सुनतेही ब्राह्मणको माभय,
कहकर समझाकर ढाडस दिया, पर जिस घर में महात्मा पाण्डवों के अस्त्र धरेथे, उस
घरमें धर्मराज द्रौपदीके साथ विराज रहे थे, सो वह भय खाये ब्राह्मणकी बातोंसे बार २
जल उठने परभी ठहरायेहुए नियमके अनुसार अस्त्रशाला में प्रवेश करने या चोरी
रोकने को नहीं जा सके । ब्राह्मणकी वैसी रुलाई सुनकर दुःखी चित्तसे शोचने लगे । १४ ।
कि इस तपस्वी ब्राह्मणकी गौ चुराई जाती हैं, उन्हें बचाकर इसके आंसू मुझको अवश्य

den unprotected is ransacking it! The kings who take the sixth part of the produce and donot protect their subjects are sinners in the eyes of the learned. 9. The thieves are robbing the *Brahman's* property. Religious duties are being lost sight of. Being plunged in the mud of sorrow I am crying again and again. Give me a helping hand and save me from misery." Vaisham payan said that Arjun the son Kunti heard the Brahman's cries of distress and consoled him. The armoury of the Pandavas was occupied by Yudhishthir and Draupadi. He could not enter the apartment to bring arms without breaking the rule, although his heart was burning at the cries of the Brahman. He felt it to be his duty to help the Brahman. He thought within himself. 14. "The kingdom will suffer if I do not protect the property of the

णम् ॥ १६ ॥ अनास्तिक्यञ्च सर्वेषामस्माकमपिरक्षणे । प्रतितिष्ठेत लोकेऽस्मिन्न-
धर्मश्चैवनोभवेत् ॥ १७ ॥ अनादृत्यतुराजानं गतेमयिनसंशयः । अजातशत्रोर्नृपतेर्म-
यि चैवानृतंभवेत् ॥ १८ ॥ अनुप्रवेशेराज्ञस्तु वनवासोभवेन्मम । सर्वमन्यत्परिहृतं
धर्षणात्तुमहीपतेः ॥ १९ ॥ अधर्मोवैमहानस्तु वनेवामरणंमम । शरीरस्यविनाशेन धर्म
एवविशिष्यते ॥ २० ॥ एवंविनिश्चित्यततः कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः । अनुप्रविश्यराजा-
नमापृच्छ्यच विशाम्पते ॥ २१ ॥ धनुरादायसंहृष्टो ब्राह्मणंप्रत्यभाषत । ब्राह्मणा-
गम्यतांशीघ्रं यावत्परधनैषिणः ॥ २२ ॥ नदूरेतेगताः क्षुद्रास्तावद्गच्छावहेसह । या
वन्निवर्त्तयाम्यद्य चौरहस्ताद्धनंतव ॥ २३ ॥ सोऽनुसृत्यमहाबाहुर्द्धन्वी वर्मीरथी
ध्वजी । शरैर्विध्वस्य तांश्चौरानवजित्यच तद्धनम् ॥ २४ ॥ ब्राह्मणंसमुपाकृत्य यशः

पोंछने चाहिये । यह ब्राह्मण द्वारपर आकर रोरहे हैं, इनको न बचावें, तो मेरेनकरने
के हेतु राजा को बडा अधर्म होगा और बचानेही से इन सबोंकी इस लोक में आस्तिकता
बन जायगी और अधर्मभी नहीं होगा पर अब अजात शत्रुराजाके यहां जाने से उनका
अनादरहोगा।१८।और मेरा झूठा व्यवहारहोगा, इस में संदेह नहीं और उनके सामने जाने
से मुझको बन में जानाभी पडेगा । वास्तव में राजाका चाहे अनादरहो मेरा अनुचित
व्यवहारके लिये अधर्महो, और बन में चाहे मृत्युहीहो, इन सबोंको तो सिरपर चढा
भी लेसकता हूं पर धर्मको छोड नहीं सकता; क्योंकि देह छूटने परभी धर्म्म बनारहेगा।२०।
हेनरनाथ ! वह ऐसा निश्चय कर अस्त्रशालामें घुस राजा युधिष्ठिर से मिले, और
धनुष लेकर प्रसन्न मन से निकल ब्राह्मण से बोले, कि हे द्विज ! शीघ्र चलो, पराये धन
के लोभी नीच लूटेरोंके बड़ी दूर जाने से पहिले ह एकत्र चलकर उन के हाथसे तुम्हारे
चुराये हुए धनको छीनलें।२४।महाभुज पृथा पुत्रसव्यसाचीधनञ्जय यह कहकर देह रक्षक
कसक धनुष लेकर ध्वजा फहरातेहुए रथ पर चढ़े और वेग से लुटेरोंका पीछाकरते हुए
वाणोंसे काटकूट कर परास्त किया ।२४। आगे उस ब्राह्मण को उनकी गौदेकर प्रसन्न

Brahman who is seeking our protection and is crying for help, but to go into the apartment of the king will be an act of impudence on my part and I shall have to go into exile. Whether it be impudence or I may have to die in exile I shall bear all but cannot forego conscience which will accompany me even after my death."20. Having thus resolved in his mind he went into the armoury, met Yudhishthir and having taken his bow and arrows came back with a light heart to the Brahman. "Let us go soon" said Arjun, "So that we may recover your property from the robbers before they are gone far." Having said this Arjun put his armour and having mounted his chariot, chased and defeated the robbers. 24. He received the blessing of the Brahman by recovering

प्राप्यचपाण्डवः । ततस्तद्गोधनंपार्थो दत्त्वातस्मैद्विजातये ॥ २५ ॥ आजगामपुरंवीरः सव्यसाचीधनञ्जयः । सोऽभिवाद्यगुरून्सर्वान् सर्वैश्चाप्यभिनन्दितः ॥ २६ ॥ धर्मराजमुवाचेदं व्रतमादिशमेप्रभो । समयःसमतिक्रान्तो भवत्सन्दर्शनेमया ॥ २७ ॥ वनवासंगमिष्यामि समयोह्येषनःकृतः । इत्युक्तोधर्मराजस्तु सहसावाक्यमप्रियम् ॥ ॥ २८ ॥ कथमित्यब्रवीद्वाचा शोकार्त्तःसज्जमानया । युधिष्ठिरोगुडाकेशं भ्राताभ्रातरमच्युतम् ॥ २९ ॥ उवाचदीनोराजाच धनञ्जयमिदंवचः । प्रमाणमस्मियदितेमत्तःशृणुवचोऽनघ ॥ ३० ॥ अनुप्रवेशेयद्वीर कृतवांस्त्वंममाप्रियम् । सर्वंतदनुजानामि व्यलीकंनचमेहृदि ॥ ३१ ॥ गुरोरनुप्रवेशोहि नोपघातोयवीयसः । यवीयसोऽनुप्रवेशो ज्येष्ठस्यविधिलोपकः ॥ ३२ ॥ निवर्त्तस्वमहाबाहो कुरुष्ववचनंमम । नहितेधर्मलोपोऽस्ति नचतेधर्षणाकृता ॥ ३३ ॥ अर्जुन उवाच । नव्याजेनचरेद्धर्ममि-

कर यश लिया । अनन्तर वह अपने पुरमें लौटकर सब गुरुओंकर पांव लग के उन से स्वागताकिये गये ।२६। कुछकाल बीतनेपर उन्होंने धर्मराजसे कहा, कि प्रभो मैंने द्रौपदीके संग तुमको देख कर तुम्हारे ठहराये हुए नियम को तोड़ दिया है सो मुझको व्रत पालने की आज्ञादो, मैं वनवास को जाऊं । धर्म्मराज युधिष्ठिर एकायक भाई अर्जुन की यह बात सुन कर शोकसे विकल हुए; और कुछ टूटी फूटी बातोंमें कहा कि क्यों आगे वह मलिन चित्त से भाई धनंजयसे बोले, कि हे अनघ ! यदि मैं तुम्हारे लिये प्रमाणस्वरूप हूं, तो मैं जो कहूं, सुनो ।३०। हेवीर ! मैं जब द्रौपदीके साथ विराजरहाथा तब मेरेयहां जाकर मेरा जो अप्रिय कियाहै, उस से मेरेचित्तमें असन्तोष नहीं पहुंचा उस विषय में मैं तुमको आज्ञा देताहूं, सुनो जब बडेभाई स्त्रीके साथ विराजतेहैं तब छोटेके उस घरमें जाने से हानि नहीं होती, पर ज्येष्ठ भाईहीका कनिष्ठ के घरमें जाना नियम के विरुद्धहै । अतएव इस से तुम्हारा धर्म लोप नहीं हुआ और मेरा मानभी नहीं टूटा हेमहाभुज ! रहजाओ, मेरी बात मानो अर्जुन बोले, कि मैंने आप से सुनाहै, कि छल

his cows from the robbers. He then returned home and was welcomed by his elders. Some time after he said to Yudhishthir, "My lord, I have broken the rule by seeing you with Draupadi. Let me now go to the forest as a penalty of so doing." Yudhishthir was much distressed on hearing these words from Arjun and spoke in broken sentences, saying, "Why, brother, if you are to obey my command, hear me. 30. I am not displeased by your entering on my privacy. I say hear me, there is no harm done if a younger brother enters the apartment where his elder brother lives with his wife. It is otherwise when an elder one enters the apartments of a younger one. You have done no wrong and my dignity was not offended. Stay here I say." Arjun replied, "No decep-

तिमेभवतःश्रुतम् । नसत्याद्विचलिष्यामि सत्येनायुधमालभे ॥ ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । सोऽभ्यनुज्ञाप्यराजानं वनचर्य्यायदीक्षितः । वनेद्वादशवर्षाणि वासायानुजगामह ॥ ३५ ॥

इत्यादिपर्वणि अर्जुनवासपर्वणि अर्जुनतीर्थयात्रायां
चतुर्दशाधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २१४ ॥

वैशम्पायन उवाच । तंप्रयांतंमहाबाहुं कौरवाणांयशस्करम् । अनुजग्मुर्महात्मानो ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ १ ॥ वेदवेदाङ्ग विद्वांसस्तथैवाध्यात्मचिन्तकाः । भैक्षाश्च भगवद्भक्ताः सूताःपौराणिकाश्चये ॥ २ ॥ कथकाश्चापरेराजन् श्रमणाश्चवनौकसः । दिव्याख्यानानियेचापि पठन्तिमधुरंद्विजाः ॥ ३ ॥ एतैश्चान्यैश्चबहुभिः सहायैःपाण्डुनन्दनः । वृतःश्लक्ष्णकथैः प्रायान्मरुद्भिरिववासवः ॥ ४ ॥ रमणीयानिचित्राणि वनानिचसरांसिच । सरितःसागरांश्चैव देशानपिचभारत ॥ ५ ॥ पुण्यान्यपिचतीर्था-

पूर्वक धर्मकरना उचित नहीं है, सो मैं सत्य से टल नहीं सकूंगा । सत्यको लेकरही अस्त्रधर रहाहूं । वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर अर्जुन राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर वनचर्या में दीक्षितहो बारह वर्ष वनवासके लिये गये ॥ ३५ ॥

अध्याय २१५ ॥

वैशम्पायनने कहा, कि अनन्तर कुरुकुल कीर्त्तिरूपी महाभुज अर्जुन पधारे । महात्मा वेदज्ञ ब्राह्मण आदि बहुतेरे उन के साथ चले । हे महाराज ! वेदपारग और वेद वेदांगोंमें पण्डित, अध्यात्मकी चिंता करनेवाले ब्राह्मण, गानेके पण्डित, पुराणकी कथा कहनेवाले सूत, भगवद्भक्त कथक, ऊर्द्धरेता, वनवासी और जो मधुरभाव से सुन्दर उपाख्यान पाठकरते हैं, वे सब जन और दूसरे साथियोंके संग मरुद्गणके साथ चलते हुए देवराजकी भांति चलनेलगे ।४। भरतवंश चूडामणि अर्जुनने जानेके काल में अनेक प्रकार सुन्दर सुन्दर बन,सरोवर,नदी, समुद्र, भांति२ के देश और पुण्यतीर्थोंको देखा।

tion is allowable in doing one's duty. I shall not deviate from truth." Vaishampayan said that Arjun thereupon went by Yudhishthir's permission to live for twelve years in forest,15.

CHAPTER CCXV

Vaishampayan said that Arjun the pride of the Kuru family, was followed by learned Brahmans,Scholars of theVedas, their branches and Adhyatma. Sutas, Kathaks and others accompanied him like the Marutas going with Indra.4. In the way he saw many a beautiful forest, lake, river, sea, country and holy place till he reached Ganga-dwar. When there he performed a wonderful deed: The Brahmans who had gone with him were offering libations to fire and the learned men purified by the water of the Ganges, were

नि ददर्श भरतर्षभः । सगङ्गाद्वारमाश्रित्य निवेशमकरोत्प्रभुः ॥ ६ ॥ तत्रतस्याद्भुतं कर्मशृणुत्वंजनमेजय । कृतवान्यद्विशुद्धात्मा पाण्डूनांप्रवरोहिसः ॥ ७ ॥ निविष्टेतत्र कौन्तेये ब्राह्मणेषुचभारत । अग्निहोत्राणिविप्रास्ते प्रादुश्चक्रुरनेकशः ॥ ८ ॥ तेषुप्र-बोध्यमानेषु ज्वलितेषुहुतेषुच । कृतपुष्पोपहारेषु तीरान्तरगतेषुच ॥ ९ ॥ कृताभि-षेकैर्विद्वद्भिर्नियतैः सत्पथिस्थितैः । शुशुभेऽतीवतद्राजन गङ्गाद्वारंमहात्मभिः ॥ १० ॥ तथापर्य्याकुले तस्मिन्निवेशे पाण्डवर्षभ । अभिषेकायकौन्तेयो गङ्गामवततारह ॥ ११ ॥ तत्राभिषेकंकृत्वास तर्पयित्वापितामहान् । उत्तितीर्षुर्जलाद्राजन्नग्निकार्य्यचिकीर्षया। ॥ १२ ॥ अपकृष्टो महाबाहुर्नागराजस्यकन्यया । अन्तर्जलेमहाराज उलूप्याकाम यानया ॥ १३ ॥ ददर्शपाण्डवस्तत्र पावकंसुसमाहितः । कौरव्यस्याथनागस्य भवने परमार्चिते ॥ १४ ॥ तत्राग्निकार्य्यंकृतवान कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः । अशङ्कमानेन हुतस्ते

गंगाद्वार में पहुंच कर वहां बसने लगे । हे जनमेजय ! पाण्डव वर विशुद्धात्मा अर्जुन ने उस स्थान में जो अद्भुत कर्म किया था, वह कहताहूं, सुनो । कुन्तीपुत्र के साथ ब्राह्मणों के वहां विराजने के कालमें वे सब ब्राह्मण नाना प्रकार के अग्निहोत्र प्रकट करनेलगे । हे महाराज ! गंगातीर में अभिषेक किये हुए पण्डित, नियमयुक्त सुमार्गी महात्मा ब्राह्मणों से उन सब अग्निहोत्रों के प्रबोधित, और फूलोंसे सुशोभित होने तथा वाले और आहुति दिये जाने पर गंगाद्वारकी बडी शोभाहुई ।१०। किसी एकसमय पाण्डव वर अर्जुन नहाने के लिये द्विजों में भरे उस आश्रम के निकट भागीरथी के जल में जा उतरे । महाराज ! वह नहा धोकर पितरोंका तर्पणकर आगे कार्य्यके लिये जलसे उठना चाहतेथे, कि ऐसेसमय में पातालके नीचे रहनेवाली उलूपी नाम्नी नागराज–पुत्री मदनकी आज्ञा मानकर उनको जलमें घसीट ले गयी।१३।तब उन्होंने कौरव्य नामक सर्प राजके भवनमें जाकर अग्निको देखा । आगे भले प्रकार समाहितहोकर उस में अग्निकार्य कर लिया । उन के आशङ्कित चित्त से आहुति देनेसे अग्निको बड़ा सन्तोष हुआ। कुन्ती

performing Agnihotra on the bank of the Ganges and the scene was beautiful to look at, when Arjun entered into the Bhagirathi near the hermitage. When he had washed his body and offered libations of water to the Pitris he was dragged down by Ulupi, the daughter of a Naga, living in Patal.13.He reached the palace of Kauravya the king of serpents. He offered libation to fire when he had rested from the fatigue. Agni was well pleased by the act of Arjun. He then spoke smilingly, " What daring deed have you done ? What place is this ? And whose daughter you are ? "17. Ulupi replied, " I am the daughter of Kuravya, a descendant of Airavat and king of Nagas. My name is Ulupi. I was pierced by the arrow of love when you plunged your body in the water

नातुष्यद्धुताशनः ॥ १५ ॥ अग्निकार्य्यंसकृत्वातु नागराजसुतांतदा। प्रहसन्निवकौन्तेय इदंवचनमब्रवीत् ॥ १६ ॥ किमिदंसाहसंभीरु कृतवत्यसिभाविनि। कश्चायंसुभगेदेशः काचत्वंकस्यचात्मजा ॥ १७ ॥ उलूप्युवाच। ऐरावतकुलेजातः कौरव्योनाम पन्नगः। तस्यास्मिदुहिताराजन्नुलूपीनामपन्नगी ॥ १८ ॥ साहंत्वामभिषेकार्थमवतीर्णं समुद्रगाम्। दृष्ट्वैवपुरुषव्याघ्र कन्दर्पेणाभिमूर्च्छिता ॥ १९ ॥ तांमामनङ्गग्लपितां त्वत्कृतेकुरुनन्दन अनन्यांनन्दयस्वाद्य प्रदानेनात्मनोऽनघ ॥२० ॥ अर्जुन उवाच ब्रह्मचर्य्यमिदंभद्रे ममद्वादशवार्षिकम्। धर्मराजेनचादिष्टं नाहमस्मिस्ववंगशः ॥ २१॥ तवचापिप्रियं कर्त्तुमिच्छामि जलचारिणि। अनृतंनोक्तपूर्वंच मयाकिंचनकर्हिचित्। ॥ २२ ॥ कथंचनानृतंमे स्यात्तवचापिप्रियंभवेत्। नचपीड्येतमे धर्मस्तथाकुर्य्याभुजङ्गमे ॥ २३ ॥ उलूप्युवाच। जानाम्यहंपाण्डवत्वं यथाचरसिमेदिनीम्। यथाचते

पुत्र धनञ्जय अग्निकार्य्य होजाने पर मुसकराते हुए नागराज कन्यासे बोले, कि भाविनि तुमने यह क्या साहसकिया ? हेभीरु सुभगे ! यह कौन देशहै और तुम कौन और किस की कन्याहो॥१७।उलूपीबोली, कि हे महाराज ! ऐरावतवंशमें उपजे कौरव्य नामक एक नागराज हैं, मैं उनकी कन्या उलूपी नाम्नी पन्नगी हूं। हे पुरुषव्याघ्र तुम स्नानके लिये जब गङ्गाजीमें उतरे, तब मैं तुमको देख कर मदनवाण से घायल हुई। हे कुरुनन्दन ! मेरा विवाह नहीं हुआ, मैं किसी से पहिले मिली नहीं, अब तुम्हारे लिये काम से मोहित हुईहूं। हे अनघ ! अब तुम आत्मदानकर मुझे आनन्द दो।२०।अर्ज्जुनबोले कि हे भद्रे जलमें विराजने वाली ! मैंने धर्मराजकी आज्ञा से वारहवर्ष के लिये ब्रह्मचर्य्य व्रत लिया है, सो अपने आधीन नहीं हूं; तुम्हारा प्रियभी किया चाहता हूं, पर मैंने पहिले कभी झूठी बात नहीं कही; सो हे भुजंगमे ! तुम ऐसा विधान करो, कि अब मेरी बातकी सचाई बनी रहे और तुम्हारा प्रियभी कर सकूं और मुझको अधर्म में पड़ना न हो।२३। उलूपी बोली, कि हेपाण्डव ! तुम जिस निमित्त पृथ्वी को भ्रमण कर रहे हो

of the Ganges. I am not yet married. I am a maiden fallen in love with you. Bestow yourself on me and make me happy." Arjun replied, "I have taken the vow of celibacy by Yudhishthir's permission and can not therefore do as you desire.21.I wish to please you at the same time. I have never told a lie before. I therefore wish you to devise a plan by which I can please you without having to tell a lie or deviating from the path of virtue." Ulupi said, "I know the purpose of your remaining in exile for twelve years and observing the vow of celibacy. I know all about your agreement to remain celibate and in exile for twelve years because you went into the compartment of Draupadi while she was with your brother. You are sent out to protect Dharm. Under these circum-

ब्रह्मचर्य्य मिदमादिष्टवान्गुरुः ॥२४॥ परस्परंवर्त्तमानान् द्रुपदस्यात्मजांप्रति । यो नोऽनुप्रविशेन्मोहात्सवै द्वादशवार्षिकम् ॥ २५ ॥ वनेचरेद्ब्रह्मचर्य्यमितिवः समयः कृतः । तदिदं द्रौपदीहेतोरन्योऽन्यस्य प्रवासनम् ॥ २६॥ कृतवांस्तत्रधर्मार्थमत्रधर्मो नदुष्यति । परित्राणंचकर्त्तव्यमार्त्तानां पृथुलोचन ॥ २७ ॥ कृत्वाममपरित्राणं तव धर्मोनलुप्यते । यदिवाप्यस्यधर्मस्य सूक्ष्मोऽपिस्याद्व्यतिक्रमः ॥२८॥ सचतेधर्मएव स्यादत्त्वा प्राणान्ममार्जुन । भक्ताञ्चभजमांपार्थ सतामेतन्मतंप्रभो ॥ २९ ॥ नकरिष्यसिचेदेवं मृतांमामुपधारय । प्राणदानान्महाबाहो चरधर्ममनुत्तमम् ॥ ३० ॥ शरणञ्चप्रपन्नास्मि त्वामद्यपुरुषोत्तम । दीनाननाथान्कौन्तेय परिरक्षसिनित्यशः साहंशरणमभ्येमि रोरवीमिचदुःखिता ॥ ३१ याचेत्वांचाभिकामाहं तस्मात्कुरुस मप्रियम् । सत्वमात्मप्रदानेन सकामांकर्त्तुमर्हसि ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्तुकौन्तेयः पन्नगेश्वरकन्यया । कृतवांस्तत्तथासर्वं धर्ममुद्दिश्यकारणम् ॥३३॥

और गुरुने जिस प्रकार तुमको ब्रह्मचर्य्य व्रत करने की आज्ञादी है, वह सब कुछ मैं जानतीहूं । तुमने नियम किया था, कि तुम पांच भाइयोंमें से कोई जब द्रौपदीसे मिलता हो तब जो मोह से वहां जा पहुंचेगा, उसको बारह बर्षतक ब्रह्मचर्य्य ले वनमें जाना पड़ेगा।२५।तुममें आपस का वनमें जानेका यह नियम केवल द्रौपदी ही से बना है, सो तुम केवल उस धर्मकी रक्षाही के लिये भेजे गयेहो, ऐसी दशा में तुम्हारा धर्म्म बिगड़ने की कौनसी सम्भावना है ! हे सुन्दर नेत्रवाले पुरुष ! विह्वल जनको तुम्हें बचाना उचितहै।२७।सो मुझको विह्वल जानकर बचाने से तुम्हारा धर्म नहीं बिगडेगा।हेअर्ज्जुन ! यद्यपि इसमें धर्मकी कुछ हानि होती है पर मुझको प्राण देने से तुम्हारा वह पूराही बना रहेगा। साधुलोग मिलना चाहती हुई नारीकी कामना पूरी करनेका उपदेश करते हैं, सो मुझको भक्ता जानकर भजो । हे प्रभो ! यदि तुम इसमें सम्मत न हो तो, मुझको मरी जानलो । हे पुरुषोत्तम महाभुज ! आज मैंने तुम्हारी शरण ली है मुझको प्राण देकर परम धर्म उपार्जन करो । हेकुन्तीपुत्र ! मैं अनाथ और दीनहोकर बार बार रोती हुई तुम्हारी शरणलेती हूं और कामवशहोकर तुम्हारे मिलनेकी प्रार्थना कररही हूं और तुमभी दीनों और अनाथोंकी सदा रक्षा करतेहो, सो तुमको मेरा प्रिय करना चाहिये।

stances you can marry me with a clear conscience. It is your duty to help those in trouble and I am one of them. Your *Dharm* will not suffer if you will protect my life. Learned men recommend meeting with a woman full of desire. I shall certainly die if you act otherwise. I seek your protection today. You will reap a rich reward by saving my life. A helpless woman comes weeping under your protection and desires your love. You always help the distressed and the helpless. Help me and satisfy my desire."32. Vaishampayan

सनागभवनेरात्रिं तामुषित्वाप्रतापवान् । उदितेऽभ्युत्थितः सूर्य्ये कौरव्यस्यनिवेशनात्
॥ ३४ ॥ आगतस्तुपुनस्तत्र गङ्गाद्वारंतयासह । परित्यज्यगतासाध्वी उलूपीनिज
मन्दिरम् ॥ ३५ ॥ दत्त्वावरमजेयत्वं जलेसर्व्वत्रभारत । साध्याजलचराःसर्वे भवि-
ष्यन्तिनसंशयः ॥ ३६ ॥

इत्यादिपर्व्वणि अर्जुनवनवासपर्व्वणि उलूपीसंगे पंचदशाधिकद्विशतोऽध्यायः॥२१५॥

वैशम्पायन उवाच । कथयित्वाचतत्सर्वं ब्राह्मणेभ्यःसभारत । प्रययौ
हिमवत्पार्श्वं ततोवज्रधरात्मजः ॥ १ ॥ अगस्त्यवटमासाद्य वसिष्ठस्यचपर्वतम् ।
भृगुतुङ्गेचकौन्तेयः कृतवान्शौचमात्मनः ॥ २ ॥ प्रददौगोसहस्राणि सुबहूनिचभारत ।
निवेशांश्चद्विजातिभ्यः सोऽददत्कुरुसत्तमः ॥ ३ ॥ हिरण्यबिन्दोस्तीर्थेच स्नात्वापु-
रुषसत्तमः । दृष्टवान्पाण्डवश्रेष्ठः पुण्यान्यायतनानिच ॥ ४ ॥ अवतीर्य्यनरश्रेष्ठो

अतएव तुम अपनेको सौंपकर मेरी अभिलाषा पूरी करो ३२, वैशम्पायन ने कहा, कि नागराज पुत्री के प्रतापी अर्जुन से ऐसी बात कहने पर अर्जुन ने धर्म्म के उपदेश से उसका मनमाना सम्पूर्ण कार्य्य पूरा किया कौरव्यनाम सर्पराजके भवन में वह रात गंवाकर सूर्योदयके समय उठे और उस नागराज पुत्री के संग फिर गंगाद्वार को लौट आये। आगे सती उलूपी उनको यह वर देकर लौटी, कि तुम जल में सर्वत्र अजेय बनोगे। सन्देह नहीं है, कि सबही जलचर तुम से जीतेजानेके योग्यहोंगे। ३६।

अध्याय २१६ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर इंद्रपुत्र ब्राह्मणों से पहिले दिनका सब ब्योरा कहकर हिमाचल को गये। और अगस्त्य वटको देखकर वसिष्ठ पर्वत में जा पहुंचे और भृगुतुंग नामक पर्व्वतपर अपनी शौचक्रिया करके शुचिहोकर ब्राह्मणों को अनेक सहस्र गौ और गृहदान किये। ३। अनन्तर पुरुषोत्तम पाण्डवश्रेष्ठ हिरण्यबिंदु नामक तीर्थ में नहाधोयकर वहां के पुण्यस्थानों को देखने लगे।

said that Arjun, having heard all this from the Naga girl, did as she desired. Having passed the night in the palace of king Kauravya he returned with her in the morning to the bank of the Ganges. The virtuous Ulupi gave him the boon that he will ever remain unconquerable in water by aquatic animals and returned home.36.

CHAPTER CCXVI

Vaishampayan said that Arjun told the Brahmans what had occurred during the previous night and went on towards the Himalyas. In the way he saw Agastya-but and reached the hill of Vashisth. Having purified himself on mount Tungnath he gave the *Brahmans* many cows and houses. 3.Having bathed and

ब्राह्मणैःसहभारत । प्राचीं दिशमभिप्रेप्सुर्जगाम भरतर्षभः ॥५॥ आनुपूर्व्येणतीर्थानि दृष्टवान्कुरुसत्तमः । नदींचोत्पलिनीं रम्यामरण्यंनैमिषंप्रति ॥६ ॥ नन्दामपरनन्दांच कौशिकींच यशस्विनीम् । महानदींगयांचैव गङ्गामपिचभारत ॥ ७ ॥ एवंतीर्थानि सर्वाणि पश्यमानस्तथाश्रमान् । आत्मनःपावनंकुर्वन् ब्राह्मणेभ्योददौचगाः ॥ ८ ॥ अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु यानितीर्थानिकानिचित् । जगामतानिसर्वाणि पुण्यान्यायतनानिच ॥ ९ ॥ दृष्ट्वाचविधिवत्तानि धनञ्चापिददौततः । कलिङ्गराष्ट्रद्वारेषु ब्राह्मणाःपाण्डवानुगाः । अभ्यनुज्ञाय कौन्तेयमुपावर्त्तन्त भारत ॥ १०॥ सतुतैरभ्यनुज्ञातः कुन्तीपुत्रो धनंजयः । सहायैरल्पकैःशूरः प्रययौयत्रसागरः ॥ ११ ॥ सकलिङ्गानतिक्रम्य देशा नायतनानिच । हर्म्याणिरमणीयानि प्रेक्षमाणोययौप्रभुः ॥ १२ ॥ महेन्द्रपर्वतंदृष्ट्वा तापसैरुपशोभितम् । समुद्रतीरेण शनैर्मणिपूरंजगामह ॥ १३ ॥ तत्रसर्वाणितीर्थानि

अनन्तर ब्राह्मणों के साथ उसस्थान से उतरकर पूर्वदिशाको देखनेकी इच्छा से चले ।५। हे भारत ! वह क्रम से तीर्थोंको देखने लगे, नैमिषारण्यसे बहती हुई सुन्दर उत्पलिनी नदी, गया और यशस्विनी महानदी गंगा, कौशिकी, नंदा और अपर नंदा और अन्यान्य तीर्थ तथा आश्रमों के दर्शन करतेहुए आत्मा को पवित्रकर ब्राह्मणों को अनेकधन दानदिये ।८। अंग, बंग और कलिंग देशोंमें जितने तीर्थ और पवित्र स्थानहैं, उन्हों ने उन स्थानों में जा उनका दर्शनकर उन स्थानों में ब्राह्मणों को धन दानदिया । हे भरतनंदन ! जो सब ब्राह्मण कुन्तीनन्दन के साथ जारहे थे, वे कलिंग राज्यके द्वार अर्थात् वहांकी पर्वत-सन्धितक जाकर उनकी आज्ञा से लौट आये । कुन्तीपुत्र वीर धनंजय द्विजोंकी आज्ञा से थोडे मनुष्यों को साथ लेकर समुद्रकी ओर चले।१०। वह प्रभु कलिंग देशको पीछे छोडकर नानादेश, आश्रम और बडे बडे भवनोंको देखतेहुए चले।१२।क्रम से तपस्वियोंसे सुशोभित महेंद्र पर्वत को देखकर समुद्र तीरसे मणिपुर में जा पहुँचे । हे

---

purified himself in the Hiranya Vindu he visited the other holy places there. He then proceeded Eastward in the company of *Brahmans* and saw the holy places in his way. 5. He visited the Utpalini flowing through the forest of Naimish, Gaya, the holy Ganges, Kaushiki, Nanda and other holy rivers and having purified himself he gave away many cows to *Brahmans*. 8. He also visited the holy places situated in the countries of Ang, Bang and Kaling and gave wealth to the *Brahmans* there. The *Brahmans* who were following Arjun returned by his permission from the boundary mountains of the kingdom of Kaling. Arjun the brave son of Kunti then proceeded towards the Sea. Crossing the country of Kaling he saw on his way many countries, hermitages and large palaces. 12. He saw mount Mahendra inhabited by ascetics and reached

पुण्यान्यायतनानिच । अभिगम्य महाबाहुरभ्यगच्छन्महीपतिम् ॥ १४ ॥ मणिपूरे-
श्वरंराजन् धर्मज्ञंचित्रवाहनम् । तस्यचित्रांगदानाम दुहिताचारुदर्शना ॥ १५ ॥ तां
ददर्शपुरेतस्मिन् विचरन्तींयदृच्छया । दृष्ट्वाचतांवरारोहां चकमेचैत्रवाहनीम् ॥ १६॥
अभिगम्यच राजानमवदत् स्वंप्रयोजनम् । देहिमेखल्विमांराजन् क्षत्रियायमहात्मने ।
॥ १७ ॥ तच्छ्रुत्वात्वब्रवीद्राजा कस्यपुत्रोऽसिनामकिम् । उवाचतंपाण्डवोऽहं कुन्ती
पुत्रोधनंजयः ॥ १८ ॥ तमुवाचाथराजास सान्त्वपूर्वमिदंवचः । राजाप्रभंजनो नाम
कुलेऽस्मिन्सम्बभूवह ॥ १९ ॥ अपुत्रःप्रसवेनार्थी तपस्तेपेसउत्तमम् । उग्रेणतपसा
तेन देवदेवःपिनाकधृक् ॥ २० ॥ ईश्वरस्तोषितःपार्थ देवदेवउमापतिः । सतस्मैभग
वान् प्रादादेकैकंप्रसवंकुले ॥ २१॥ एकैकः प्रसवस्तस्माद्भवत्यस्मिन् कुलेसदा । तेषां

महाराज ! वह महाभुज उस देश में पुण्यतीर्थ और यज्ञ स्थानों को देखकर अन्त में मणि
पुरनाथ चित्रवाहन नामक धर्मज्ञ महीपालके निकटगये ।१५।उसभूपकी चित्रांगदानाम्नी
एक सुंदरी कन्याथी । एक दिन वह सुंदरी मनमाने उस नगर में टहलतीथी, कि ऐसे
समय धनंजय उसको देखकर काम के वशमें होगये और अपनी अभिलाषा पूरी करने
के लिये राजाके पास पहुँचकर बोले, कि हे महाराज ! मैं महात्मा क्षत्रियका पुत्र हूं,
मुझको कन्यादानदो।१७।राजा यहबात सुनकरबोले, कि तुम किसके पुत्रहो। तुम्हारा नाम
क्याहै ? अर्जुन बोले, कि मैं कुन्तीपुत्र पाण्डवहूं, मेरा नाम धनंजय है । अनंतर राजा
मीठीबातों में उन से बोले, कि हे पुरुषश्रेष्ठ ! इस देश में प्रभंजन नामक एक भूपनेजन्म
लियाथा ।१९।उनकीसंतान न होनेसे वह संतानकी कामनासे भलेप्रकार तप करने लगे ।
पिनाकधारी ईश्वर उमापति भगवान देवदेव महादेवने उनकी कठोर तपस्यासे प्रसन्न
होकर उनको वर दिया, कि पुरुषोंकी परम्परा से उनके इस वंश में एक एक संतान
जन्म ले। इस लिये हमारे कुलमें सदा एकही संतान उपजतीहै । मेरेसब पुरुषाओं के
पुत्र उपजे थे। हेपुरुषेंद्र कुल मेरीबढानेवाली यह एकही कन्याहुई है।मैं इसको पुत्र करके

Manipur by the sea shore. After seeing the sacrifices and other holy places he went to the king of Manipur whose name was Chitravahan. 15. The king had a beautiful daughter named Chitrangada. Arjun saw her walking through the city and fell in love with her. He went to the king and said, "I am the son of a respectable Kshatrya, give me your daughter, king." The king asked his name and parentage and Arjun continued, "I am the son of Pandu and Kunti. My names is Dhananjaya." 18. Thereupon the king addressed him in sweet tones, saying. "There was a king named Prabhanjan. He had no offspring and began to practice severe asceticism with a view to get one. The god of gods Mahadev the husband of Uma was pleased with him and gave a boon that he

कुमाराःसर्वेषां पूर्वेषांममजज्ञिरे ॥ २२ ॥ एकाचममकन्येयं कुलस्योत्पादनीभृशम्।
पुत्रोममायमितिमे भावनापुरुषर्षभ ॥ २३ ॥ पुत्रिकाहेतुविधिना संज्ञिताभरतर्षभ।
तस्मादेकःसुतोयोऽस्यां जायतेभारतत्वया ॥ २४ ॥ एतच्छुल्कंभवत्वस्याः कुलकृ-
ज्जायतामिह। एतेनसमयेनेमां प्रतिगृह्णीष्वपाण्डव ॥ २५ ॥ सतथेतिप्रतिज्ञायतां
कन्यांप्रतिगृह्यच। उवासनगरेतस्मिंस्तिस्रःकुन्तीसुतःसमाः ॥ २६ ॥ तस्यांसुतेसमु-
त्पन्ने परिष्वज्यवरांगनाम्। आमन्त्र्यनृपतिंतन्तु जगामपरिवर्त्तितुम् ॥ २७ ॥
इत्यादिपर्वणि अर्जुनवनवासपर्वणि चित्रांगदासंगमे षोड़शाधिकद्विशतोऽध्यायः२१६

वैशम्पायन उवाच। ततःसमुद्रेतीर्थानि दक्षिणेभरतर्षभः। अभ्यगच्छत्सुपु-
ण्यानि शोभितानितपस्विभि ॥ १ ॥ वर्जयन्तिस्मतीर्थानि तत्रपञ्चस्मतापसाः। अ
वकीर्णानियान्यासन् पुरस्तात्तुतपस्विभिः ॥ २ ॥ अगस्त्यतीर्थं सौभद्रं पौलोमञ्चसु-

---

समझताहूं।२३। हेभारतवर! मैंने इस कन्याको विधि-पूर्वक पुत्रिका बनायीहै, इस लिये इस कन्या के गर्भ और तुम्हारे वीर्य से जो एक पुत्र उत्पन्नहोगा वह मेरी पुत्रिकाका पुत्र होगा। वह पुत्रही इसकन्या के शुल्कवतहोकर मेरेवंशकी रक्षा करेगा, इस नियम से तुम मेरी यह कन्या लो।२५। कुन्ती-पुत्र अर्जुनने 'तथास्तु' कहकर मान लिया। और उस कन्यासे बिवाह कर उस नगर में तीनवर्ष गँवाया। सुन्दरी चित्रांगदा के गर्भ से पुत्र उत्पन्नहोने पर वह उसको गले लगाकर और प्रेमसे सम्भाषणकरके राजासे बिदा होकर देश भ्रमण को निकले ॥ २७ ॥

अध्याय २१७ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर भरतवंश-श्रेष्ठ अर्जुन दक्षिणसमुद्रके तपस्वियों से शोभायमान सब पुण्यतीर्थोंमें गये। उस स्थान में अश्वमेध के फलदायी पापनाशी प्रसन्न सुपवित्र अग्निरूपी सौभद्र पौलोम, कारन्धाम और भारद्वाज यह पांचमहातीर्थ थे।४। उन

---

and his descendants should each have one offspring.21.Every one of my predecessors had a son while I have only a daughter. She is my heiress and I have brought her up as a son. The son born of you and my daughter will be my grandson and heir. I give you my daughter on this condition.25.Arjun consented to the proposal, and having married her he lived there for three years. When the beautiful Chitrangada had a son Arjun affectionately kissed the child and took leave of the king to roam in other countries. 27.

CHAPTER. CCXVII.

Vaishampayan said that Arjun then visited all the holy places inhabited by ascetics near the South Sea. Five holy places of great purity named *Prasanna*, *Soubhadra*, *Paulom*, *Karandham* and *Bharadwaj*

पावनम्। कारन्धमं प्रसन्नंच हयमेधफलंचतत् ॥ ३ ॥ भारद्वाजस्यतीर्थन्तु पापप्रशमनंमहत्। एतानिपंचतीर्थानि ददर्शकुरुसत्तमः ॥ ४ ॥ विविक्तान्युपलक्ष्याथ तानि तीर्थानिपाण्डवः। दृष्ट्वाचवर्ज्यमानानि मुनिभिर्द्धर्मबुद्धिभिः ॥ ५ ॥ तपस्विनस्ततोऽपृच्छत् प्रांजलिःकुरुनन्दनः। तीर्थानीमानिवर्ज्यन्ते किमर्थंब्रह्मवादिभिः ॥ ६ ॥ तापसा ऊचुः। ग्राहाःपञ्चवसन्त्येषु हरन्तिचतपोधनान। ततएतानिवर्ज्यन्ते तीर्थानिकुरुनन्दन ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच। तेषांश्रुत्वा महाबाहुर्वार्य्यमाणस्तपोधनैः। जगामतानितीर्थानि द्रष्टुंपुरुषसत्तमः ॥ ८ ॥ ततःसौभद्रमासाद्य महर्षेस्तीर्थमुत्तमम्। विगाह्यसहसाशूरः स्नानञ्चक्रेपरन्तपः ॥ ९ ॥ अथतं पुरुषव्याघ्रमन्तर्जलचरोमहान। जग्राहचरणेग्राहः कुन्तीपुत्रंधनंजयम ॥ १० ॥ सतमादायकौन्तेयो विस्फुरन्तं जलेचरम्। उदतिष्ठन्महाबाहुर्बलेन बलिनांवरः ॥ ११ ॥ उत्कृष्टएवग्राहस्तु सो-

पांच तीर्थों के सामने बहुतेरे तपस्वी बसते थे, पर उसके भीतर किसी तपस्वीका वास नहीं था पुरुषश्रेष्ठ अर्जुनने उन पंचतीर्थोंको देखा। उन्हों ने उन पंचतीर्थों को पूर्वोक्त धर्मज्ञ मुनियों से त्यागेहुए देखकर उस के सामने बसेहुए तपस्वियों से पूछा, कि ब्रह्मवादी ब्राह्मण लोग क्यों यह पंचतीर्थ छोड़देतेहैं।६। तपस्वीगण बोले, कि हे कुरुनंदन इन पंचतीर्थों के जल में पांचग्राह हैं, वे तपस्वियों को मार डालती हैं, सो मुनि लोग इन तीर्थों में नहीं बसते। वैशम्पायन ने कहा, कि पुरुषोत्तम महाभुज अर्जुन तपोधनों का वह वचन सुनकर उनसे रोके जाने परभी उन सबतीर्थोंको देखने गये।८। वह पहिले महर्षि सम्बन्धी सौभद्र नामक अच्छे तीर्थमें पहुंच कर उसमें एकायक देहको डुबाकर नहाने लगे। ऐसे समय में जलके भीतर चलनेवाले एक बड़े ग्राहने उन शत्रु–दमन बीरपुरुषोंमें व्याघ्ररूपी कुन्तीपुत्र धनंजयका पांव पकड़ा महाबली महाभुज पाण्डुपुत्र उस फुर्तीले जलचर जंतुको लेकर बलपूर्वक तटपर उठा लाये।११। हे महाराज ! जलचर

were situated there and a great number of ascetics lived in the vicinity of each of them but no one was seen to live within their bounds. Arjun visited these holy places and finding them deserted he asked the ascetics living in the vicinity as to why they did not occupy them. 6. The Rishis said that five crocodiles lived in the five lakes and devoured the ascetics. They did not therefore venture to live there. Vaishampayan said that the brave man went to see the lakes in spite of the resistance by the ascetics. He first went to Saubhadra and began to plunge his body within its waters. A crocodile at once caught him by the leg, but he brought it to the bank with all his might. 11. As soon as the animal was raised up it was transformed into a woman shining in her heavenly beauty, heart enchanting and decorated with ornaments. Arjun

ऽर्जुनेनयशस्विना। बभूवनारीकल्याणी सर्वाभरणभूषिता ॥ १२ ॥ दीप्यमाना श्रियाराजन् दिव्यरूपामनोरमा । तदद्भुतंमहद्दृष्ट्वा कुन्तीपुत्रोधनंजयः ॥ १३ ॥ तां स्त्रियंपरमप्रीत इदंवचनमब्रवीत। कात्वैत्वमसिकल्याणि कुतोवासिजलेचरि। किमर्थं चमहत्पापमिदं कृतवतीपुरा ॥ १४ ॥ वर्गोवाच । अप्सरास्मिमहाबाहो देवारण्यविहारिणी । इष्टाधनपतेर्नित्यं वर्गानाममहाबल ॥ १५ ॥ ममसख्यश्चतस्रोऽन्याः सर्वाःकामगमाःशुभाः। ताभिःसार्द्धंप्रयातास्मि लोकपालनिवेशनम् ॥ १६ ॥ ततः पश्यामहेसर्वा ब्राह्मणंशंसितव्रतम्। रूपवन्तमधीयानमेकमेकांतचारिणम् ।१७॥ तस्यैव तपसाराजंस्तद्वनं तेजसावृतम् । आदित्यइवतंदेशं कृत्स्नंसर्वंव्यकाशयत् ॥१८॥ तस्यदृष्ट्वातपस्तादृग्रूपं चाद्भुतमुत्तमम्। अवतीर्णाःस्मतंदेशं तपोविघ्नचिकीर्षया।१९। अहंचसौरभेयीच समीचीबुद्बुदालता। यौगपद्येनतं विप्रमभ्यगच्छामभारत ॥२०॥

ग्राह यशोवंत अर्जुनसे ऊपर उठाये जातेही एक नारीके स्वरूपमें दिखाई दिया।१२। वह बाला दिव्यरूप सुंदरता से चमकती हुई, कल्याणी, मनोरमा और सर्व आभूषणोंसे सजी थी। कुन्तीपुत्र धनंजय उस बडी आश्चर्य लीला को देखकर अति प्रसन्न चित्तसे उस नारी से बोले, कि ऐ कल्यणि जलचरि तुम कौन क्यों ऐसी बनी हो और क्यों पहिले ऐसा महापाप कियाथा।१४।वर्गानाम्नी वह नारी बोली, कि हेमहाबली महाभाग मैं देववन में विराजनेवाली अप्सराहूं, मेरानाम वर्गा है, मैं सदा से कुवेरकी प्यारी हूं, मेरी कामगामी शुभ-लक्षणा और चार सखी हैं, किसीसमय मैं उन चार सखियों के साथ लोकपालके यहां जा रही थी, उस समय देखा, कि प्रशंसित व्रतधारी एकांत में रहने वाले परम रूपवान एक ब्राह्मण वेद पढ रहेहैं।१७। हेमहाराज उन के तपके तेज से वह वन ढंप गया है, उन्हों ने आदित्यकी भांति उस स्थान में उजाला कर दिया है। हम उनकी वैसी अति तपस्या और आश्चर्य रूप देखकर तप में विघ्न डालनेकीइच्छा से वहां उतर गयीं।१९। हे भारत सौरभेयी, समीचि, बुद्बुदा, लता और मैं यह

was amazed at this wonderful occurrence and cheerfully said, "Who are you beautiful woman, how are you so transformed, and for what sin were you in the former shape?" 14. She replied, "I am an Apsara living among gods. My name is Barga. I am ever loved by Kuver. I have four companions. I was one day going to Lokpal with my four companions. On our way there we saw a beautiful *Brahman* reading the Vedas in a lonely place and observing the vow of celibacy. The whole forest was lit by his glory like that of the sun 18. Seeing his great beauty and the power of his asceticism we came down to hinder him from asceticism. Saurbhayi Samichi, Budbuda, Lata (my four companions) and myself went at once to the *Brahman* and began to tempt him by laughing and

गागन्त्योऽथहमंत्यश्च लोभयित्वाचतंद्विजम् । सचनास्मासु कृतवान्मनोवीरकथञ्चन ॥ २१ ॥ नाकम्पतमहातेजाः स्थितस्तपसिनिर्मले । सोऽशपत्कुपितोऽस्मासु ब्राह्मणः क्षत्रियर्षभ । ग्राहभूताजलेयूयं चरिष्यथशतंसमाः ॥ २२ ॥

इत्यादिपर्वणि अर्जुनवनवासपर्वणि तीर्थग्राहविमोचने
सप्तदशाधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २१७ ॥

वर्गोवाच । ततोवयंप्रव्यथिताःसर्वा भारतसत्तम । अयामशरणंविप्रं तन्तपोधन मच्युतम् ॥ १ ॥ रूपेणवयसाचैव कन्दर्पेणचदर्पिताः । अयुक्तंकृतवत्यःस्म क्षन्तुमर्हसि नोद्विज ॥ २ ॥ एषएववधोऽस्माकं सुपर्य्याप्तस्तपोधन । यद्वयंसंसितात्मानं प्रलोब्धुंत्वा मिहागताः ॥३ अवध्यास्तुस्त्रियः सृष्टामन्यन्ते धर्मचारिणः । तस्माद्धर्मेणवर्द्धत्वं नास्मानर्हिंसितुमर्हसि ॥ ४ ॥ सर्वभूतेषुधर्मज्ञ मैत्रोब्राह्मणउच्यते । सत्योभवतुकल्याण

पांच एकत्रहोकर उस ब्राह्मण के यहां एकबारही जा पहुंची। हेवीर ! हम उनको लुभाने के लिये हंसने और गीत गाने लगीं, पर उस विप्र ने किसी प्रकार से हमारी ओर ध्यान नहीं दिया। उनका मन निर्मल तपस्या में निश्चल बना रहा, किसी प्रकार नहीं टला। हे क्षत्रियनर ! अनन्तर उन्हों ने क्रोधितहोकर हमको यह शाप दिया, कि तुम ग्राह बन कर जलमें सौ वर्ष चरा करोगी ॥ २२ ॥

अध्याय २१८ ॥

वर्गा बोली, कि हेभरत वंशी श्रेष्ठ ! अनन्तर हमने कातरहोकर उन अच्युत तपोधन की शरण लेकर कहा, कि हे तपोधन हमने रूप, यौवन और काम के अहंकारसे यह अनुचित कार्य किया है। हे द्विज ! हमारी क्षमा करनी योग्यहै ।२। यही हमारे लिये मृत्युवत हुआ है, कि हम ऐसे जितेंद्रिय मुनि को लुभानेकी इच्छा से यहां आई हैं, धर्मचारी लोग विचारते हैं, कि नारी बध के अयोग्य बनायी गयी हैं, सो आप हमारी हिंसा न करें।४। हे धर्मज्ञ ! पण्डित लोग कहते हैं, कि ब्राह्मण सर्वप्राणियों के मित्र हैं, हे कल्याण !

singing in his presence. But he paid no attention towards us and remained engaged in his asceticism. At length he became angry and pronounced a curse on us, saying, "You will be transformed into crocodiles and shall remain in water for a hundred years." 22.

CHAPTER CCXVIII

Barga continued, "On hearing this we asked pardon of the Rishis, saying that we had done such improper act in the pride of our beauty and youth, that it was a deadly sin in us to have come to allure a Muni who had such control over his senses. Learned men say that capital punishment should not be given to women. You will not destroy our life. Learned men say that *Brahmans* are friendly to all being. Let their saying prove true. The good

एषवादोमनीषिणाम् ॥ ५ ॥ शरणञ्चप्रपन्नानां शिष्टाःकुर्वन्तिपालनम् । शरणंत्वांप्रप-
न्नाःस्मनस्मात्त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तःसधर्मात्मा ब्राह्मणः
शुभकर्मकृत् । प्रसादंकृतवान्वीर रविसोमसमप्रभ ॥ ७ ॥ ब्राह्मण उवाच । शतंशत-
सहस्रन्तु सर्वमक्षय्यवाचकम् । परिमाणंशतं त्वेतन्नेदमक्षय्यवाचकम् ॥ ८ ॥ यदाचवो
ग्राहभूता गृह्णन्तीःपुरुषान्जले । उत्कर्षतिजलात्तस्मात् स्थलंपुरुषसत्तमः ॥ ९ ॥ तदा
यूयंपुनःसर्वाः स्वरूपंप्रतिपत्स्यथ । अनृतंनोक्तपूर्वंमेहसतापिकदाचन ॥ १० ॥ तानि
सर्वाणि तीर्थानि ततःप्रभृतिचैवह । नारीतीर्थानिनाम्नेह ख्यातिंयास्यन्तिसर्वशः ।
पुण्यानिचभविष्यन्ति पावनानिमनीषिणाम् ॥ ११ ॥ वर्गोवाच । ततोऽभिवाद्यतंविप्रं
कृत्वाचापिप्रदक्षिणम् । अचिन्तयामोऽपसृत्य तस्माद्देशात्सुदुःखिताः ॥ १२ ॥ क्वनु
नामवयंसर्वाः कालेनाल्पेनतंनरम् । समागच्छेमयोन स्तद्रूपमापादयेत्पुनः ॥ १३ ॥

पण्डितों के इस वचन को सत्यहोने दो। शिष्टलोग शरण लियेहुए लोगोंकी रक्षा करते हैं हम ने आपकी शरणली है, सो आपको हमारी रक्षा करनी चाहिये।६। वैशम्पायनने कहा, कि हे वीर अनंत सूर्य चंद्रमा को उजला रखनेवाले शुभकर्म किये धर्मात्मा वह ब्राह्मण अप्सराओंकी यह बात सुनकर प्रसन्न हुए और बोले, कि शत और शत सहस्र का अर्थ अनंत कालभी होता है, पर मैंने 'शतवर्ष' यह शब्द कहा है, उसका अर्थ सौही होगा अनंतकाल नहीं होगा।८। तुम जलचर ग्राह बनकर पुरुषोंको पकडा करोगी,पर शत वर्ष पूर्ण होने पर एक पुरुषश्रेष्ठ तुमको पकडकर स्थलपर उठालेगा, तब तुम फिर अपना रूप प्राप्तकरोगी, मेरीबात कभी झूठी नहीं ठहरेगी। मैंने पहिले कभी हंसी मेंभी झूठी बात नहीं कही है।१०।तुम्हारे छुटकारा पानेपर तब से वे सबतीर्थ, नारी तीर्थ नाम से प्रख्यातहोकर साधुओं के तारनेवाले और पुण्यदायी बनेंगे। वर्गाबोली, कि अनन्तर हम उस ब्राह्मण को प्रणामकर परिक्रमादे दुःखी चित्तसे वहांसे भागकर सोचनेलगीं।१२।कि जो महापुरुष हमको स्वरूप दिखावेंगे उन से कहां थोडेकाल में हमारी भेंटहो-

protect those that come under their protection. We seek your refuge and you must protect us." 6. Vaishampayan said that the the virtuous Brahman was pleased to hear this from the Apsaras and said, "The word hundred and hundred thousand mean an unlimited number, but in your case it will be taken in the strictest sense of the word. 8. You will be transformed into sharks and shall catch human beings. After the lapse of a hundred years a brave man will bring you out to the ground. My word cannot prove untrue because I have never told a lie even in jest. 10. From that time the lakes will be named after you and shall be holy. *Barga* continued, "We bowed to the *Brahman* and having gone round him went away with a distressed heart. In our way we

तावयंचिन्तयित्वैव मुहूर्त्तादिवभारत । दृष्टवत्योमहाभागं देवर्षिसुतनारदम् ॥ १४ ॥
सम्प्रहृष्टाःस्मतंदृष्ट्वा देवर्षिममितद्युतिम् । अभिवाद्यचतंपार्थ स्थिताःस्मव्रीडिताननाः
॥ १५ ॥ सनोऽपृच्छद्दुःखमूलमुक्तवत्यो वयञ्चतम् । श्रुत्वातत्रयथातत्वमिदं वचनम
ब्रवीत् ॥ १६ ॥ दक्षिणेसागरानूपे पंचतीर्थानि सन्तिवै । पुण्यानिरमणीयानि तानि
गच्छतमाचिरम ॥ १७ ॥ तत्राशुपुरुषव्याघ्रः पाण्डवोधनञ्जयः । मोक्षयिष्यति
शुद्धात्मादुःखादस्मान्न संशयः ॥ १८ ॥ तस्यसर्व्वावयंवीर श्रुत्वावाक्यमितोगताः ।
तदिदंसत्यमेवाद्य मोक्षिताहंत्वयानघ ॥ १९ ॥ एतास्तुममताः सख्यश्चतस्रोऽन्याजले
श्रिताः । कुरुकर्मशुभंवीर एताःसर्व्वाविमोक्षय ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्ताः
पाण्डवश्रेष्ठः सर्व्वाएवविशाम्पते । तस्माच्छापाददीनात्मा मोक्षयामासवीर्य्यवान ॥२१॥
उत्थायचजलात्तस्मात् प्रतिलभ्यवपुः स्वकम् । तास्तदाप्सरसो राजन्नदृश्यन्तयथा
पुरा ॥ २२ ॥ तीर्थानिशोधयित्वातु तथानुज्ञायताःप्रभुः । चित्राङ्गदांपुनर्द्रष्टुं मणिपूरं

सकती है । हेभारत ! हम ऐसी चिंता करती हुई, पल भरमें भागकर देवर्षि को देख कर प्रसन्न चित्तसे उनके पांवपर सिर झुकाकर लज्जा से मुंह नीचे कर खडी रहीं।१५। उन के हमारे दुःखका कारण पूछने पर हमने आद्योपांत सब ब्योरा कह सुनाया। वह हमारीबात सुनकर बोले, कि दक्षिण-समुद्रमें प्रायः जलभरी ठौरमें पांचतीर्थ हैं, तुम वहां जाओ, देर मत करो।१७।उस स्थानमें शुद्धात्मा पुरुषश्रेष्ठ पाण्डुपुत्र धनंजय तुमको इस दुःख से निःसंदेह बचावेंगे । हे वीर ! हम सब उस महर्षि का वचन सुनकर यहांआई थीं । हे अनघ ! अब सचमुच तुम से मुक्त होगई। मेरी वह चार सखी इसप्रकार दूसरे जल में हैं, हे वीर ! तुम इसप्रकार उन चारोंकोभी मुक्तकर शुभकर्म का फल लो ।२०। वैशम्पायन ने कहा, कि हे भूपाल ! अनन्तर वीर्यवन्त पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन ने प्रसन्न मन से उन सभोंही को उस शाप से बचाया । हेमहाराज ! अप्सरायें उस जल से उठकर अपने पहिलेके रूपमें दीखपडीं।२२। इसप्रकार अर्जुन उन पंचतीर्थोंको सुधारकर उनको

considered how we could meet our deliverer in the shortest time possible. We, therefore, saw the Rishi again and having bowed down at his feet stood up with downcast heads.15.And on his asking the reason of our distress we told him all. He directed us to go to the five lakes near the South Sea and said, "Arjun the son of Pandu will surely extricate you from the difficulty." We all came here by the directions of the Rishi and are released by you. My four companions are in the four lakes. Be good enough to release them as well,"20.Vaishampayan said that the brave Arjun released them all cheerfully and they were seen in their former shapes. Thus Arjun made the five lakes free and having bidden farewell to the five Apsaras he went again to Manipur to see Chitrangada. His

पुनर्ययौ ॥ २३ ॥ तस्यामजनयत्पुत्रं राजानंबभ्रुवाहनम् । तंदृष्ट्वा पाण्डवो राजन् गोकर्णमभितोऽगमत् ॥ २४ ॥

इत्यादिपर्वणि अर्जुनवनवासपर्वणि अर्जुनतीर्थयात्रायां अष्टादशाधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २१८ ॥

वैशम्पायन उवाच । सोऽपरान्तेषुतीर्थानि पुण्यान्यायतनानिच । सर्वाण्येवानुपूर्व्येण जगामामितविक्रमः ॥ १ ॥ समुद्रेपश्चिमेयानि तीर्थान्यायतनानिच । तानि सर्वाणिगत्वास प्रभासमुपजग्मिवान् ॥ २ ॥ प्रभासदेशंसम्प्राप्तं बीभत्सुमपराजितम् । सुपुण्यंरमणीयञ्च शुश्रावमधुसूदनः ॥ ३ ॥ ततोऽभ्यगच्छत्कौन्तेयं सखायं तत्रमाधवः । ददृशातेतदान्योऽन्यं प्रभासेकृष्णपाण्डवौ ॥ ४ ॥ तावन्योऽन्यंसमाश्लिष्य पृष्ट्वाचकुशलंवने । आस्तांप्रियसखायौ तौ नरनारायणावृषी ॥ ५ ॥ ततोऽर्जुनं वासुदेवस्तांचर्य्यां पर्य्यपृच्छत । किमर्थंपाण्डवैतानि तीर्थान्यनुचरस्युत ॥ ६ ॥ ततो

विदा कर चित्रांगदा को देखनेके लिये फिर मणिपुरको पधारे, हे राजन्! तब उन के वीर्य और चित्रांगदाके गर्भ से उपजे बभ्रुवाहन नामक पुत्र वहां राजा हुए थे। पार्थ चित्रांगदाको देखकर वहांसे गोकर्ण की ओर चले ॥ २४ ॥

अध्याय २१९ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर अति विक्रमी अर्जुन पश्चिम प्रदेशमें जितने तीर्थ और पुण्य स्थानहैं, एक एक कर उन सबों में गये और पश्चिम समुद्रमें जितने तीर्थ और स्थानहैं, वहां घूम कर अंतमें प्रभास तीर्थ में जा पहुंचे।२। मधुसूदन माधव ने सुना कि अति पुण्ययुक्त सुन्दर प्रभास तीर्थ में अजेय सखाबीभत्सु आ पहुँचे हैं अनन्तर वोह उनकी भेंटके लिये वहां गये उस प्रभास में कृष्ण और पाण्डव से परस्परकी भेंटहोनेपर दोनों प्यारे सखा ऋषि नर और नारायणरूपी कृष्ण तथा पाण्डव एक दूसरे को गले लगाकर कुशल क्षेम पूछकर उसजगह बैठे।५।वासुदेव अर्जुनका भ्रमण वृत्तांत सुनने की

son Babrubahan by Chitrangada was crowned king of the place. Having seen Chitrangada Arjun went towards Gokarn.24.

CHAPTER CCXIX

Vaishampayan said that the brave Arjun saw all the holy places in the Western country and having seen all the holy places near the Wetern Sea reached Prabhas. Madhusudan Madhav (Krishn) heard of the arrival of his dear friend Arjun and came to see him. Krishna and Arjun, the two dear friends, met at Prabhas. They embraced each other affectionately and each having asked about the welfare of the other they sat there. 5. Wishing th hear an account of the wanderings of Arjun, Vasudev asked, "Why are you wandering in these holy places?" Arjun told all

ऽर्जुनोयथावृत्तं सर्वमाख्यातवांस्तदा । श्रुत्वोवाचचवार्ष्णेय एवमेतदितिप्रभुः ॥७॥
तौविहृत्ययथाकामं प्रभासेकृष्णपाण्डवौ । महीधरंरैवतकं वासायैवाभिजग्मतुः ॥८॥
पूर्वमेवतुकृष्णस्य वचनात्तंमहीधरम् । पुरुषा मण्डयांचक्रुरुपजह्रुश्च भोजनम् ॥ ९ ॥
प्रतिगृह्यार्जुनः सर्वमुपभुज्यचपाण्डवः । सहैववासुदेवेन दृष्टवान्नटनर्त्तकान् ॥ १० ॥
अभ्यनुज्ञायतान् सर्वानर्चयित्वाच पाण्डवः । सत्कृतंशयनं दिव्यमभ्यगच्छन्महामतिः
॥११॥ ततस्तत्रमहाबाहुः शयानःशयनेशुभे । तीर्थानांपल्वलानांच पर्वतानांचदर्शनम् ।
आपगानांवनानांच कथयामाससात्वते ॥ १२ ॥ एवंसकथयन्नेव निद्रयाजनमेजय ।
कौन्तेयोऽपिहृतस्तस्मिन् शयनेस्वर्गसन्निभे ॥ १३ ॥ मधुरेणैवगीतेन वीणाशब्देनचै
वह । प्रबोध्यमानोबुबुधे स्तुतिभिर्मङ्गलैस्तथा ॥ १४ ॥ सकृत्वावश्यकार्य्याणि वा-
र्ष्णेयनाभिनन्दितः । रथेनकांचनाङ्गेन द्वारकामभिजग्मिवान् ॥ १५ ॥ अलंकृताद्वा-

इच्छा से बोले, कि हे पाण्डव ! तुम क्यों इन तीर्थों में फिरा करते हो ? अर्जुनने आ-
द्योपांत सब कह सुनाया प्रभु वार्ष्णेयने सुनकर कहा, कि यह उचितही हुआहै।७।अनन्तर
वे दोनों प्रभास में मनमाने विहारकर रहने के लिये रैवतक पर्वत पर गये इस के पहिले
ही कृष्णकी आज्ञा से नौकरों ने पर्वत पर भांति भांतिकी भोजनकी सामग्री बनवारक्खी
थीं, इतनी कि जिन से पहाड छिपगया था अर्जुन वासुदेवके साथ वहां भोजनादि कर
और नट नाचनेवालोंके नाच आदि देखनेलगे।१०।आगे महामति पाण्डव उनको यथोचित
पारितोषिक देकर विदाकर भलेप्रकार सजी सेजपर जाकर सोये अनंतर महाभुज अर्जुन
इस शुभ बिछौने पर लेटकर कृष्ण से भांति भांतिकी नदी, सोते पर्वत, वन आदिकी
कथा कहने लगे हेजनमेजय ! वह इसप्रकारकी नाना कथा कहतेहुए सोगये।१३। आगे
रातबीतने पर मीठे गीत स्तुतिपाठ और वीणाकी ध्वनि से जाग उठे; और नित्यकृत्योंका
अंतकर यादवों से नमस्कार किये जाकर सुवर्ण के रथपर द्वारकाको गये।१५।हेजनमेजय

that had happened. Krishna heard all and remarked that it was good. They then went to Raivatak hill to enjoy their residence in Prabhas. The attendants of Krishn had collected all sorts of food there in great quantity. Arjun was entertained by Krishna with food and the performances of acrobats and dancers.10.The wise Pandav sent them away with large donations and slept on a well furnished bed. Reclining on that nice bed Arjun told Krishna about various rivers, mountains, forests and other places. They slept talking about various things. In the morning they awoke at the sweet sounds of songs, praises and musical instruments and having performed their daily duties and being respected by the Yadavas they went to Dwaraka on a golden chariot.15.The royal road, flower gardens and palaces of Dwaraka were decorated in the honour of

रकातु बभूव जनमेजय । कुन्तीपुत्रस्य पूजार्थमपिनिष्कुटकेष्वपि ॥ १६ ॥ दिदृक्षन्तश्च कौन्तेयं द्वारकावासिनोजनाः । नरेन्द्रमार्गमाजग्मुस्तूर्णं शतसहस्रशः ॥ १७ ॥ अवलोकेषुनारीणां सहस्राणिशतानिच । भोजवृष्ण्यन्धकानांच समवायोमहानभूत् ॥ ॥ १८ ॥ सतथासत्कृतः सर्वैर्भोजवृष्ण्यन्धकात्मजैः । अभिवाद्याभिवाद्यांश्च सर्वैश्च प्रतिनन्दितः ॥ १९ ॥ कुमारैःसर्वशोवीरः सत्कारेणाभिवंदितः । समानवयसः सर्वानाश्लिष्यस पुनःपुनः ॥ २० ॥ कृष्णस्यभवनेरम्ये रत्नभोज्यसमावृते । उवास सहकृष्णेन बहुलास्तत्रशर्वरीः ॥ २१ ॥

इत्यादिपर्वणि अर्जुनवनवासपर्वण्यर्जुनद्वारकागमने ऊनविंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २१९.

समाप्तंचार्जुनवनवासपर्व ॥ अथ सुभद्राहरण पर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःकतिपयाहस्य तस्मिन्रैवतकेगिरौ । वृष्ण्यन्धकानाम भवदुत्सवो नृपसत्तम ॥ १ ॥ तत्रदानंददुर्वीरा ब्राह्मणेभ्यःसहस्रशः । भोजवृष्ण्यन्ध काश्चैव महेतस्यगिरेस्तदा ॥ २ ॥ प्रासादैरत्नचित्रैश्च गिरेस्तस्यसमन्ततः । सदेशः

कुंतीनंदनके गौरव के लिये द्वारकापुरीके राजपथ, फुलवाडी और भवन आदि सब स्थान सजाये गयेथे सैकडों सहस्रों द्वारकावासी अर्जुन को देखने के लिये राजपथ पर वेग से पहुंचने लगे।१७।पाण्डव दर्शन के लिये सैकडों सहस्रों भोज वृष्णि और अंधकवंशी नर नारियोंकी बडीभिड लगी; अर्जुन भोज वृष्णि और अंधकवंशियों से यथायोग्य सत्कृत हुए, नमस्कार योग्य जनों को नमस्कार किया और उनसे प्रणामकिये जाकर और सब कुमारोंके पांवलागन ले समअवस्थावालों को बार बार गले लगाया आगे कृष्णके साथ भांति २ के रत्न तथा भोगकी सामग्रियोंसे भरे पूरे सुन्दर भवनमें बहुत दिन काटे२१।

अध्याय २२० ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर कुछ दिनों तक उस रैवतक पर्वतपर वृष्णि और अन्धक वंशियों का उत्सवहोने लगा। भोजवृष्णि और अंधकवंशी वीर उस गिरि सम्बंधी उत्सव में सहस्रों ब्राह्मणों को भांति भांतिकी सामग्री दान देनेलगे।२। हेमहाराज !

---

the son of Kunti. Hundreds and thousands of the citizens came out to see the Pandav. There was a great crowd of men and women of the Andhaks and Vrishnis. Arjun was duly respected by them. He bowed to the elders, embraced equals and was respectfully saluted by the younger ones. He went with Krishn into the palace full of wealth and passed many days there. 21.

CHAPTER CCXX

Vaishampayan said that the Andhaks and the Vrishnis held on mount Raiwatak a great festival which lasted for several days. They gave the Brahmans great wealth during the festival. On all

शोभितोगजन कल्पवृक्षश्चसर्वशः ॥ ३ ॥ वादित्राणिचनत्रान्ये नादकाःसमवादयन ।
ननृतुर्नर्तकाश्चैव जगुर्गेयानिगायनाः ॥ ४ ॥ अलंकृताःकुमाराश्च वृष्णीनांसुमहौज
साम् । यानैर्हाटकचित्रैश्च चञ्चूर्यन्तेस्मसर्वशः ॥ ५ ॥ पौराश्चपादचारेण यानैरुच्चाव
चैस्तथा सदाराःसानुयात्राश्च शतशोऽथसहस्रशः ॥ ६ ॥ ततोहलधरःक्षीवो रेवती
सहितःप्रभुः । अनुगम्यमानो गन्धर्वै रचरत्तत्र भारत ॥७॥ तथैवराजा वृष्णीनामुग्र-
सेनः प्रतापवान् । अनुगीयमानोगन्धर्वैः स्त्रीसहस्रसहायवान् ।८। रौक्मिणेयश्चशाम्बश्च
क्षीवौसमरदुर्मदौ । दिव्यमाल्याम्बरधरौ विजह्रातेऽमराविव ॥ ९ ॥ अक्रूरःसारण-
श्चैवगदःबभ्रुर्विदूरथः । निशठश्चारुदेष्णश्च पृथुर्विपृथुरेवच ॥ १० ॥ सत्यकःसात्य
किश्चैव भङ्गकारमहारवौ । हार्दिक्यउद्धवश्चैव येचान्येनानुकीर्त्तिताः ॥ ११ ॥ एतेपरिवृताः
स्त्रीभिर्गन्धर्वैश्च पृथक् पृथक् । तमुत्सवंरैवतके शोभयाञ्चक्रिरेतदा ॥ १२ ॥ चित्रकौतू

रैवतक पर्वत ऊपर और नीचे रत्नों से सजे कल्पवृक्ष की समान कामनाओं की वस्तुओं से भरे घरों से सुहाने लगा। बाजेवाले, नाचनेवाले और गानेवालोंने नाना भांतिके बाजे नाच और गीत आरम्भकर दिये।३।अति वीर्यवंत वृष्णिवंशी कुमारगण सज धजकर सुनहले रथों पर इधर उधर घूमते फिरते हुए सुहाने लगे। सैकड़ों, सहस्रों पुरवासी पत्नी और साथियों समेत अनेक प्रकारके यानों पर टहलने लगे। कोई कोई पैदलही घूमने लगा हे भारत! रेवती के साथ प्रभु हलधर मधु से मतवालेहो सहचर गन्धर्वों से घिरेजाकर घूमने लगे। वैसेही सहस्र नारियोंके साथ वृष्णियोंके प्रतापी राजा उग्रसेन सहचर गन्धर्वों से घेरेजाकर घूमने में प्रवृत्त हुए। ८। युद्ध में कठोर शाम्ब और रुक्मिनीकुमार मधु से मतवालेहो सुंदर माला और वस्त्र पहिने देवोंकीभांति विहार करने लगे। अक्रूर, सारण, गद, बभ्रु, विदूरथ, निशठ, चारुदेष्ण, पृथु, विपृथु, सत्यक सात्यकि, भंगकार, महारव, हार्दिक्य, उद्धव और दूसरे बहुतेरों ने अलग अलग स्त्री और गन्धर्वोंके साथ वहां टहलते हुए उस महोत्सवकी शोभा बढायी।१२।इसप्रकार उस

sides of the mountain there were store houses of luxuries making the mountain like (Kalp-vrik-h that gave everything that one desired.) Musicians and players began to show their performances.4. The heroic youths of the Vrishni family were seen riding hither and thither on golden cars. Hundreds and thousands of citizens with their wives and friends were seen on different sorts of carriages. Some were walking on foot. Lord Haldhar and Rewati intoxicated with honey, were seen surrounded by Gandharvas. King Gandharvsen and his thousand queens were also roaming with their companion Gandharvas .8. The mighty warriors, Shamv and Rakminikumar intoxicated with honey and wearing fine garlands

हल्लतस्मिन् वर्त्तमानेमहाद्भुते । वासुदे अपार्थश्च सहितौपरिजग्मतुः ॥ १३ ॥ तत्र
चंक्रममाणौतौ वसुदेवसुतांशुभाम् । अलंकृतांसखीमध्ये सुभद्रांददृशतुस्तदा ॥ १४ ॥
दृष्ट्वैवतामर्जुनस्य कन्दर्पःसमजायत । तंतदैकाग्रमनसंकृष्णः पार्थमलक्षयत् ॥ १५ ॥
अब्रवीत्पुरुषव्याघ्रः प्रहसन्निवभारत । वनेचरस्यकिमिदं कामेनालोड्यतेमनः ॥ १६ ॥
ममैषाभगिनीपार्थ सारणस्यसहोदरा।सुभद्रानामभद्रंते पितुर्मेदयितासुता । यदितेवर्त्तते
बुद्धिर्वक्ष्यामिपितरंस्वयम् ॥ १७ ॥ अर्जुन उवाच दुहितावसुदेवस्य वासुदेवस्यच
स्वसा । रूपेणचैषासम्पन्ना कमिवैषानमोहयेत् ॥ १८ ॥ कृतमेवतुकल्याणं सर्वंमम
भवेद्ध्रुवम् । यदिस्यान्ममवार्ष्णेयी महिषीयंस्वसातव ॥ १९ ॥ प्राप्तौतुकउपायः
स्यात्तंब्रवीहि जनार्दन । आस्थास्यामितदासर्वं यदिशक्यंनरेणतत् ॥ २० ॥ वासुदेव

मनोहर अति आश्चर्य कौतूहल के बर्ताव होनेपर वासुदेव और पार्थ एकत्रहो टहलनेलगे
उन्हों ने इधर उधर घूमते समय सखियोंसे घिरी नाना आभूषणों से बनी ठनी, शुभ-
लक्षणों वाली वासुदेवकन्या सुभद्राको देखा ।१४। अर्जुन उस कोमलांगी बालाको देख
तेही मदनबाण से मोहित हुए । हे भारत ! पुण्डरीकाक्ष कृष्ण उस के मनको सुभद्रा
पर बहुत चलते देखकर हँसकर बोले, कि यह क्या ? क्या बनबासीके मन मेंभी काम
डांवाडोल मचाता है । १६ । हे पार्थ ! यह कन्या सारणकी सगी बहिन, मेरीभी
बहिन है, इसका नाम सुभद्रा है यह बाला मेरेपिताकी प्यारी कन्या है यदि तुम्हारा
चित्त इसपर झुकाहो, तो कहो, मैं स्वयंही पितासे यह कहूं, इस से तुम्हारा मंगलहो
सकता है । अर्जुन बोले, कि बसुदेवकी कन्या, वासुदेवकी बहिन अनुपम रूपवती
यहकन्या किसके मनको मोहित न करेगी ।१८। तुम्हारी बहिन यह सुभद्रा यदि मेरी
रानीबने, तो इस में संदेह नहीं, कि तुम से मेरा सर्वप्रकार कल्याणहोगा । हे जनार्दन !
कहो अब किस उपायसे सुभद्रा मिल सकतीहै । यदि मनुष्यकी सामर्थ्य में होतो सर्व

and clothes were roaming like gods. Akrur, Saran, Gad, Babhru, Vidurath, Nishath, Charudeshna, Prithu, Viprithu, Satyak, Satyaki, Bhangkar, Maharav, Hardikya, Udhav, and others with their wives increased the grandeur of the festival by their presence. 12. Amid such wonderful revelry Vasudev and Arjun were seen walking side by side. In the course of their rambles they saw Subhadra the daughter of Vasudev surrounded by her companions. Arjun was struck by the arrow of her love at first sight. Pundrikaksh Krishna seeing his mind drawn towards Subhadra said with a smile, "What is this ? Is the mind of one living in forests agitated by love ?16. This girl is Saran's own sister and mine own as well. Her name is Subhadra. She is my father's dear daughter. I shall myself speak to father for your sake if you really wish to have her for

उवाच स्वयम्वरः क्षत्रियाणां विवाहः पुरुषर्षभ । सच संशयितः पार्थ स्वभावस्यानिमि-
त्ततः ॥ २१ ॥ प्रसह्य हरणं चापि क्षत्रियाणां प्रशस्यते । विवाहहेतुः शूराणामिति धर्म-
विदो विदुः ॥ २२ ॥ सत्वमर्जुन कल्याणीं प्रसह्य भगिनीं मम । हर स्वयम्वरे ह्यस्याः को
वै वेद चिकीर्षितम् ॥ २३ ॥ ततोऽर्जुनश्च कृष्णश्च विनिश्चित्येति कृत्यताम । शीघ्रगान्
पुरुषानन्यान प्रेषयामासतुस्तदा ॥ २४ ॥ धर्मराजाय तत्सर्वं मिन्द्रप्रस्थगताय वै ।
श्रुत्वैव च महाबाहुरनुजज्ञे स पाण्डवः ॥ २५ ॥

इत्यादिपर्वणि सुभद्राहरणपर्वणि युधिष्ठिरानुज्ञाया
विंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २२० ॥

प्रकारसे वह करूं ।२०। वासुदेव बोले, कि हे पुरुषश्रेष्ठ पार्थ ! क्षत्रियोंका स्वयम्वर विवाह का नियमतो है, पर उसमें शंका होती है, क्योंकि नारियों का स्वभाव और हृदय शूरता पाण्डित्य आदि पर नहीं चलता । वे पहिले देखनेमें सुंदर जनपर मोहितहोती हैं अतएव शूर क्षत्रियों के लिये बलसे कन्या हरकर विवाह करने के जिस नियमकी धर्मज्ञ गण प्रशंसा करते हैं, हेअर्जुन ! तुम उस विधान के अनुसार बलपूर्वक इस शुभलक्षणा मेरी बहिनको हरलो, स्वयम्वर का प्रयोजन नहीं है, क्योंकि कौन जानताहै कि सुभद्रा का कैसा अभिप्राय है, अनन्तर अर्जुन और कृष्ण ने क्या करना उचितहै उसका निश्चय कर इन्द्रप्रस्थमें धर्मराज के यहां शीघ्र जानेवाला दूत भेज दिया महाबाहु पाण्डवनंदन युधिष्ठिर ने वह सब वृत्तांत सुनतेही उसकी आज्ञा भेजदायी ॥ २५ ॥

---

your wife." Arjun replied, "This daughter of Vasudev and your sister of extraordinary beauty is sure to draw every heart towards her. I shall be really thankful to you if I can make her my wife. I am ready to do every thing that a man can."20. Vasudev said, 'Though the custom of Swayamvar is prevalent among Kshatrias, yet the result is doubtful, for women are not naturally fond of brave and learned men. They fall at once in love with one who is more beautiful. You should take this beautiful sister of mine by force, a practice applauded by the learned in brave Kshatryas. A Swayamvar is out of question. Who know what the inclinations of Subhadra may be ?" Arjun and Krishna then resolved upon what was best to be done and sent a swift messenger to Yudhishthir at Indraprasth. Yudhishthir the son of Pandu gave his consent.25.



वैशम्पायन उवाच । ततःसंवादिते तस्मिन्ननुज्ञातो धनञ्जयः । गतांरैवतकेकन्यां विदित्वाजनमेजय ॥ १ ॥ वासुदेवाभ्यनुज्ञातः कथयित्वेतिकृत्यताम् । कृष्णस्यमतमादाय प्रययौभरतर्षभः ॥ २ ॥ रथेनकाञ्चनांगेन कल्पितेनयथाविधि । शैब्यसुग्रीवयुक्तेन किङ्किणीजालमालिना ॥ ३ ॥ सर्वशस्त्रोपपन्नेनजीमूतरवनादिना । ज्वलिताग्निप्रकाशेन द्विषतांहर्षघातिना ॥ ४ ॥ सन्नद्धःकवचीखड्गी बद्धगोधांगुलित्रवान् । मृगयाव्यपदेशेनप्रययौ पुरुषर्षभः ॥ ५ ॥ सुभद्रात्वथ शैलेन्द्रमभ्यर्च्यैवहिरैवतम् । दैवतानिचसर्वाणि ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्यच ॥ ६ ॥ प्रदक्षिणंगिरेःकृत्वा प्रययौद्वारकांप्रति । तांगभिद्रुत्यकौन्तेयः प्रसह्यारोपयद्रथम् ॥ सुभद्रांचारुसर्वाङ्गीं कामबाणप्रपीडितः ।७। ततःसपुरुषव्याघ्रस्तामादाय शुचिस्मिताम् । रथेनकाञ्चनाङ्गेन प्रययौस्वपुरंप्रति ॥ ८ ॥ ह्रियमाणान्तुतांदृष्ट्वा सुभद्रांसैनिकाजनाः । विक्रोशन्तोऽद्रवन्सर्वे

अध्याय २२१ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि हेजनमेजय ! अनंतर युधिष्ठिरकी आज्ञा पानेपर पुरुषश्रेष्ठ धनंजयने वासुदेवके उपदेश से क्या करनाहै, ठीककर उनकी आज्ञा लेकर यात्राकी ।२। वह खड्ग, कवच, गोधा, उंगली रक्षक आदि पहिने बद्ध सन्नद्धहो शैव्य और सुग्रीव नामक घोड़ेजोते, जाल माला से सजे विधिपूर्वक कल्पित, सर्व शास्त्रोंके अनुसार बने प्रज्वलित अग्नि समान चमकीले सुनहले, बादल सदृश गम्भीर शब्द करने वाले और विपक्षी के हर्षनाशी रथ पर चढ आखेट के मिससे चलने लगे।५। सुभद्रा शैलराज रैवतक को पूजकर परिक्रमादे देवोंकी पूजा कर और ब्राह्मणों से स्वस्ति कहलवाकर द्वारकाकी ओर जारहीथी कि ऐसे समय कामबाण से घायल कुन्तीनन्दन धनञ्जय ने उसकी ओर दौड कर एकायक उस सर्वांग सुंदरी सुभद्रा को रथ पर चढ़ाया ।७। पुरुषव्याघ्र अर्जुन इस प्रकार से सुन्दरी सुभद्राको लेकर सुवर्ण रथपर अपने नगरकी ओर जानेलगे । सैनिक लोग सुभद्राको अर्जुन

CHAPTER CCXXI

Vaishampayan said, that by the permission of Yudhishthir, Arjun settled with Vasudeo what was proper to be done and set out by the permission of the latter. Armed with sword and bow, having harnessed the horses known as *Shaivya* and *Sugreev* decked with net of garlands and protected properly, Arjun set out on a feigned hunting expedition on a well-built golden car, bright like fire, rumbling deep like a cloud and distressing the hearts of enemies. *Subhadra* was returning to Dwaraka after worshipping the gods on Raiwatak the prince of mountains and receiving the blessings of the Brahmans, when Arjun, the son of Kunti, wounded by the arrow of her love, sprang upon her and set her on his chariot. 7. Having thus seized her he turned his chariot towards his own city

द्वारकामभितःपुरीम् ॥ ९ ॥ तेसमासाद्यसहिताः सुधर्मामभितःसभाम् । सभापालस्य तत्सर्वमाचख्यु पार्थविक्रमम् ॥ १० ॥ तेषांश्रुत्वासभापालो भेरींसान्नाहिकींततः । समाजघ्नेमहाघोषां जाम्बूनदपरिष्कृताम् ॥ ११ ॥ क्षुब्धास्तेनाथशब्देन भोजवृष्ण्यन्धकास्तदा । अन्नपानमपास्याथ समापेतुःसमन्ततः ॥१२॥ तत्रजाम्बूनदाङ्गानि स्पर्ध्यास्तरणवन्तिच । मणिविद्रुमचित्राणि ज्वलिताग्निप्रभाणिच ॥ १३ ॥ भेजिरे पुरुषव्याघ्रा वृष्ण्यन्धकमहारथाः । सिंहासनानिशतशो धिष्ण्यानीवहुताशनाः ।१४। तेषांसमुपविष्टानां देवानामिवसन्नये । आचख्यौचेष्टितंजिष्णोः सभापालः सहानुगः ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वावृष्णिवीरास्ते मदसंरक्तलोचनाः । अमृष्यमाणाःपार्थस्य समुत्पेतुरहंकृताः ॥ १६ ॥ योजयध्वंरथानाशु प्रासानाहरतेतिच । धनूंषिचमहार्हाणि कवचानिबृहन्तिच ॥ १७ ॥ सूतानुच्चुक्रुशुः केचिद्रथान्योजयतेतिच । स्वयञ्चतुरगान् केचिदयुञ्जन् हेमभूषितान् ॥ १८ ॥ रथेष्वानीयमानेषु कवचेषुध्वजेषुच । अभिक्रन्दे

से पकड़े जाते देखकर चिल्लाते हुए द्वारका नगरकी ओर दौड़े । उन सबों ने सर्व प्रकार से देवसभा समान उस राजसभा में उपस्थित हो सभापाल से अर्जुन का विक्रम वृत्तान्त कह सुनाया।१०।सभापाल उनसे सब वृत्तांत सुनकर सुवर्ण सुहावनी बड़ीआहट मचानेवालीयुद्ध सेनाके लिए सजनेकी सूचना देनेवाली भेरी बजानेलगा।भोज वृष्णि और अन्धक लोग उस भेरीके शब्द से उदासहो अन्नपान तजकर चारों ओर से बटुरने लगे।१२। तेज अग्नि जिस प्रकार अपना आधार इन्धन पकड लेता है, वैसेही महारथी पुरुषव्याघ्र वृष्णि और अन्धक लोग परम सुंदर चादरा से आच्छादित मणियोंसे खचित अग्नि के उजाले समान चमकीले सैकडों सुनहले सिंहासनोंपर जाबैठे।१४।देवोंके समागमकी भांति उनके बटुरनेपर सभापाल ने उन से अर्जुनका किया कार्य कह सुनाया। अहंकारसे नेत्रलाल किये गर्वित वे बीरगण उस वृत्तांतको सुनतेही रिसाकर सिंहासनों से उठ खड़ेहुए।१६।उन मेंसे किसी किसी ने कहा, कि तुरंत रणकी तय्यारी करो, किसी किसी ने कहा, कि प्रास लाओ, किसी किसी ने कहा, मूल्यवान शरासन और बड़े बड़े कवच लाओ, किसी किसी ने

The guards seeing *Subhadra* seized by Arjun ran away crying towards Dwaraka and gave an account of the bravery of Arjun to the manager of the royal court. He sounded the golden bugle to inform the army to assemble at once for war. Warriors of the Bhoj, Vrishni and Andhak tribes left their food and drink and began to come together at the sound of the bugle. Shining brightly like fire the heroes of the Vrishni and Andhak race dressed in fine clothes and decked with jewels came together and sat on golden seats bright as fire.14. When they had all assembled like gods, the manager told them what Arjun had done. The brave men rose in

वृत्तीराणां तदासीत्तुमुलंमहत् ॥ १९ ॥ वनमालीततःक्षीवः कैलासशिखरोपमः। नी-
लवासामदोत्सिक्त इदंवचनमब्रवीत् ॥ २०॥ किमिदं कुरुथाप्रज्ञास्तूष्णींभूते जनार्दने।
अस्यभावमविज्ञाय संक्रुद्धामोघगर्ज्जिताः ॥ २१ ॥ एष तावदभिप्रायमाख्यातु स्वं
महामतिः। यदस्यरुचितंकर्त्तुं तत्कुरुध्वमतन्द्रिताः ॥ २२ ॥ ततस्तेतद्वचःश्रुत्वा ग्राह्य-
रूपंहलायुधात्। तूष्णींभूतास्ततः सर्वेसाधुसाध्वितिचाब्रुवन् ॥ २३ ॥ समंवचोनिश-
म्यैवबलदेवस्य धीमतः। पुनरेवसभामध्ये सर्वेतेसमुपाविशन् ॥ २४ ॥ ततोऽब्रवीद्वासु
देवं वचोरामःपरन्तपः। किमवागुपविष्टोऽसि प्रेक्षमाणोजनार्दन ॥ २५ ॥ सत्कृतस्त्वत्
कृतेपार्थः सर्वैरस्माभिरच्युत। नचसोऽर्हतितांपूजां दुर्बुद्धिःकुलपांसनः ॥ २६ ॥ को
हितत्रैवभुक्तान्नं भाजनंभेत्तुमर्हति। मन्यमानःकुले जातमात्मानं पुरुषःक्वचित् ॥२७॥
इच्छन्नेवहिसम्बन्धं कृतं पूर्वंश्च मानयन्। कोहिनामभवेनार्थी साहसेनसमाचरेत्

चिल्लाकर सारथी को पुकारकर कहा, कि तुरंत रथ जोतो, कोई कोई शीघ्रताके लिये
सुवर्ण जडे घोडे लेकर रथ जोतने लगे तब रथ, कवच, ध्वजा आदि लानेके लिये वीरों
का कोलाहल होने लगा अनन्तर गले में बनमाला डाले कैलाशपर्वत समान नीलांबर
पहिरे मदोन्मत्त बलदेवजी बोले ।२०। कि जनार्दन के कुछ न कहतेही तुम यह
क्या कररहेहो ? इनका अभिप्राय न जान करही तुम क्रोधके मारे गर्ज्जन कररहेहो।
यह महामति कृष्ण पहिले अपना मत प्रकटकरें, वह जानकर तुम वेगसे वही पूरा
करना अनंतर सब जन धीमान हलधरकी सुनने योग्य वहबात सुनकर उनको साधु २
कहकर चुप्‌हो, फिर सभा में बैठगये।२३।तब शत्रुमर्दन रामने वासुदेवसे कहा कि जना
र्दन तुम क्यों कुछ नहीं कहते क्यों उदासीन समान बैठे ताकरहेहो।२५।अच्युत हम सब
ने पृथापुत्रका भलेप्रकार सत्कार कियाथा वह कुबुद्धि कुलांगार वैसे सत्कार योग्य नहीं
है, जो सुवंशी करके अपना परिचय देता है, वह कभी अन्न-खाकर अन्नके बासन को
फोड नहीं सकता है यद्यपि ऐसा वैवाहिक सम्बंध बनाने को मन चाहताहै, तौभी कोई

anger from their seats on hearing the news and there were confused noises and calls for arms and chariots to revenge the wrong done by Arjun. At last, Baldeo, with his garland reaching to the knees and blue dress of the colour of sky, said,(20)" What are you going to do without the order of Janardan ? Why are you roaring without knowing his intentions? Let him empress his opinion first and you may do accordingly." All applauded the advise of Haldhar and sat down on their seats. Ram then said, " Why are you silent Vasudev ? Why are you sitting like a recluse ?23. We all had welcomed the son of Kunti. The wretch proved unworthy of the honour. He who has regard for the honour of his family never breaks the vessel out of which he has eaten. Although such relation

॥ २८ ॥ सोऽवमन्य तथास्माकमनादृत्य च केशवम् । प्रसह्यहृतवानद्य सुभद्रांमृत्युमा-
त्मनः ॥ २९ ॥ कथंहिशिरसोमध्ये कृतंतेनपदंमम । मर्षयिष्यामिगोविन्द पादस्पर्श
मिवोरगः ॥ ३० ॥ अद्यनिष्कौरवामेकः करिष्यामिवसुन्धराम् । नहिमेमर्षणीयोऽय
मर्जुनस्यव्यतिक्रमः ॥ ३१ ॥ तंतथागर्ज्जमानन्तु मेघदुन्दुभिनिस्वनम् । अन्वपद्यन्त
तेसर्वे भोजवृष्ण्यन्धकास्तदा ॥ ३२ ॥

इत्यादिपर्वणि सुभद्राहरणपर्वणि बलदेवक्रोधे एकविंशत्यधिकद्विशतो
ऽध्यायः ॥ २२१ ॥ समाप्तश्च सुभद्राहरणपर्व ॥

अथ हरणाहरणपर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । उक्तवन्तो यथावीर्यमसकृत्सर्ववृष्णयः । ततोऽब्रवीद्वासु
देवो वाक्यंधर्मार्थसंयुतम् ॥ १ ॥ नावमानंकुलस्यास्य गुडाकेशःप्रयुक्तवान् । सम्मा-
नोऽभ्यधिकस्तेन प्रयुक्तोऽयंनसंशयः ॥ २ ॥ अर्थलुब्धान्नवःपार्थो मन्यतेसात्त्वतान्

ऐश्वर्य चाहनेवाला पहिले का उपकार स्मरणकर ऐसे साहसके काममें हाथ नहींडालता है।२८। उस पाण्डव ने हमारा अनादरकर और तुमको तुच्छ समझकर अपनी भृत्यस्वरूप सुभद्रा को हर लियाहै। गोविंद ! उस ने मेरेशिरपर लात मारी है, सो सर्प जिसप्रकार दूसरे के पांवको छू नहीं सकता, वैसेही मैंभीकभी यह नहीं सह सकूंगा । भोज, वृष्णि और अन्धक सबों ने बादल और नगाडे की भांति उन गरजते हुए बलदेवकी बात को मान लिया ॥ ३२ ॥

अध्याय २२२ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनंतर वृष्णियों के निज निज वीर्य्य के अनुसार बार२ इसप्रकार कहने पर, वासुदेव धर्मार्थ युक्त यह बचन कहने लगे, कि अर्जुन ने जो कार्य किया है, उस से हमारे कुलका अपमान नहीं हुआ, वास्तव में इस में सन्देह नहीं, कि उन्हों ने हमारा सम्मान बहुत बढ़ाया है ।२। वह जानतेहैं, कि हम धन के लोभी नहीं हैं

---

is desirable yet no one will dare do such thing in return for the good he has received.28.The Pandava has done us wrong and has taken away Subhadra like a slave girl. He has set foot on my head. I can not bear this insult as a serpent cannot touch the feet of others." The audience approved the speech of Baldev.32.

CHAPTER CCXXII

Vaishampayan said that when all the Vrishnis had thus expressed their opinions Vasudev began, "Arjun has done our family no wrong. On the contrary he has added much to our respectability. He knows that we do not covet wealth and did not, therefore, attempt to offer wealth for his marriage. Choice of the bridegroom was doubtful. For this reason he did not wait for her

सदा । स्वयम्वरमनाधृष्यं मन्यंतचापिपाण्डवः ॥ ३ ॥ प्रदानमपिकन्यायाः पशुवत् कोऽनुमन्यते । विक्रयं चाप्यपत्यस्य कःकुर्य्यात्पुरुषोभुवि ॥ ४ ॥ एतानदोषांस्तु कौन्तेयो दृष्टवानितिमेमतिः । अतःप्रसह्यहृतवान् कन्यांधर्मेणपाण्डवः ॥ ५ ॥ उचितश्चैवसम्बन्धःसुभद्रांचयशस्विनीम् । एषचापीदृशःपार्थः प्रसह्यहृतवानिति ॥ ६ ॥ भरतस्यान्वेयजातं शान्तनोश्चयशस्विनः। कुन्तिभोजात्मजापुत्रं कोबुभूषेत्नार्जुनम् ।७। नचपश्यामियःपार्थं विजयेतरणबलात् । वर्ज्जयित्वाविरूपाक्षं भगनेत्रहरंहरम ॥ ८ ॥ अपिसर्वेषुलोकेषु सेन्द्ररुद्रेषुमारिष । सचनामरथस्तादृङ् मदीयास्तेचबाजिनः ॥९॥ योद्धापार्थश्चशीघ्रास्त्रः कोनुतेनसमोभवेत् । तमभिद्रुत्यसान्त्वेन परमेणधनञ्जयम् । न्यवर्त्तयतसंहृष्टा ममैषापरमामतिः ॥ १० ॥ यदिनिर्ज्जित्यवःपार्थो बलाद्गच्छेत्स्वकं पुरम् । प्रणश्येद्वोयशःसद्यो नतुसान्त्वेपराजयः ॥ ११ ॥ तच्छ्रुत्वावासुदेवस्य तथा

इस लिये उन्हों ने धन देकर विवाहकी चेष्टा नहीं कीहै। और स्वयम्बर में शंकाहै, सो उन्हों ने उसकाभी प्रयत्न नहीं किया पशुकी भांति कन्यादान किसी क्षत्रियका प्यारा नहीं है, और कन्या बेचनाभी किसी मनुष्यकी सम्मतियुक्त नहीं।४।मुझको जानपड़ताहै, कि इन सब दोषोंकी भलीभांति आलोचना करकेही अर्जुनने एकायक कन्या हरली है सुभद्रा जैसी यशस्विनी है पार्थभी वैसेही गुणवन्त हैं, सो यह संबन्ध अयोग्य नहीं है इसकाभी विचारकर उन्होंने कन्या बल से हरली है।६।फिरभी भरतवंशी यशोवंत शांतनु नंदन कुंती भोजके दौहित्र उस अर्जुन को, ऐसा कौनहै जो मित्र बनाना न चाहताहोगा विशेष इस त्रिलोकी भर में भग नेत्र हर विरूपाक्ष महादेवके बिना कोई भी ऐसा नहीं दीखता जो बलपूर्वक अर्जुन को परास्त कर सके।८। हेआर्य ! उनका वह रथ, मेरे वे सबघोडे वह स्वयं वैसे योधे और वैसी शीघ्रतासे शस्त्र फेंकना (यह सब बने रहते) इंद्रलोक आदि जितनेभर लोकहैं उन में ऐसा कौनहोगा जो इनका सामना करसके।१०। सो मेरा विचार यह है, कि तुम तुरंत दौड़कर प्रसन्न चित्तसे धनंजय को ढाड़स देकर

Swayamwar. No Kshatrya likes to give his daughter like a beast, nor does any one like to sell her. 4. I think Arjun had considered well all these points before he took away the girl suddenly. Arjun is as virtuous as Subhadra is glorious. This relation is not improper. He gave his attention to this point also before he ran away with her. Again, Arjun the grandson of *Shantanu* and Kuntibhoj and the descendant of Bharat, is a desirable friend to all. Me-thinks, no one in the world except Mahadev can defeat Arjun by force of arms .8. Who, in the world, can withstand Arjun in battle when he in possession of my chariot and horses, himself being such a renowned warrior and dexterous in the use of weapons. I advise you to bring him peacefully and cheerfully. You will lose

चक्रुर्जनाधिप । निवृत्तश्चार्जुनस्तत्र विवाहं कृतवान्प्रभुः ॥ १२ ॥ उषित्वा तत्र कौंतेयः
संवत्सरपराः क्षपाः । विहृत्य च यथाकामं पूजितो वृष्णिनन्दनैः ॥ १२ ॥ पुष्करे तु ततः
शेषं कालं वर्तितवान्प्रभुः । पूर्णे तु द्वादशे वर्षे खाण्डवप्रस्थमागतः ॥ १४ ॥ अभिगम्य च
राजानं नियमेन समाहितः । अभ्यर्च्य च ब्राह्मणान्पार्थो द्रौपदीमभिजग्मिवान् ॥ १५ ॥
तं द्रौपदी प्रत्युवाच प्रणयात्कुरुनन्दनम् । तत्रैव गच्छ कौंतेय यत्र सा सात्वतात्मजा ।१६।
सुबद्धस्यापि भारस्य पूर्वबंधः श्लथायते तथा बहुविधं कृष्णां विलपन्तीं धनञ्जयः ॥ १७ ॥
सांत्वयामास भूयश्च क्षमयामास चासकृत् । सुभद्रां त्वरमाणश्च रक्तकौशेयवासिनीम् १८।
पार्थः प्रस्थापयामास कृत्वा गोपालिकावपुः । साधिकं तेन रूपेण शोभमाना यशस्विनी १९

लौटा लाओ। यदि वह बलपूर्वक तुम सबोंको परास्त कर अपनी राजधानीमें जाय, तो आजही तुम्हारा यश लोप होजायगा, ढाढ़स देनेसे तुम्हारी पराजय नहीं होगी। हे जनाधिप! यादवोंने वासुदेवकी यह बात सुनकर उस के अनुसार कार्य किया प्रभावी अर्जुन ने वृष्णियोंसे आदरपा द्वारकापुरी में लौटकर सुभद्रासे विवाहकर नानाप्रकार मनमाने विहारकर वर्षभर काल गंवाया ।१३। अनन्तर पुष्करतीर्थ में जाकर शेष काल काटने लगे बारहवर्ष पूरे होजानेपर खाण्डवप्रस्थमें लौट राजा युधिष्ठिरके निकट जा पहुंच आगे वह विनय पूर्वक राजा युधिष्ठिर और ब्राह्मणों को पूजकर द्रौपदीके निकट गये। १५। द्रौपदी प्रेमकी रिसके साथ उनसे बोली, कि हे कुंतीपुत्र! जहां सात्वतपुत्री है, वहींजाओ रस्सी से बंधी वस्तु के ढेर पर एक औरभी कठिन बंधन डालनेसे पहिलेका बंधन अवश्यही ढीला होजाता है, धनंजय द्रौपदी को इसप्रकार नानारीतिसे विलपते देखकर बार बार समझाने लगे और बार बार क्षमा मांगी। अनन्तर उन्हों ने लाल पाटम्बर पहिरेहुई सुभद्रा के यहां जा वेगसे उसका गोपी वेश बनाकर उसको अन्तःपुरमें भेजवाया। वीरपत्नी यशस्विनी ताम्र रंगकी बड़ी बड़ी आंखवाली उस बालाने उस वेष

your fame if you are defeated by him in battle and he returns to his own country in glory. You will escape defeat by reassuring him." The Yadavas acted upon the advice of Vasudev. The glorious Arjun returned to Dwaraka and was respected by the Vrishnis He married *Subhadra* and passed a year there in great happiness. 13 He then went to Pushkar and staid there. At the end of twelve years he rerurned to Khandavprasth. He paid due respect to Yudhishthir and the Brahmans and went to Draupadi. She spoke out in jealousy, "Go to the daughter of Satwat. The former binding of a bundle tied by a rope gets slack if another rope be tied round it yet harder." Hearing such complaints from Draupadi Aajun consoled her again and again and asked her pardon. He then went to *Subhadra* who was dressed in red garments

भवनश्रेष्ठमासाद्यवीरपत्नीवराङ्गना ववन्देपृथुताम्राक्षी पृथांभद्रायशस्विनी ॥ २० ॥
तांकुन्तीचारुसर्वाङ्गीमुपाजिघ्रतमूर्द्धनि। प्रीत्यापरमयायुक्ताआशीर्भिर्युञ्जतातुलम्॥२१॥
ततोऽभिगम्यत्वरिता पूर्णेन्दुसदृशानना। ववन्देद्रौपदींभद्रा प्रेष्याहमितिचाब्रवीत्।
॥ २२ ॥ प्रत्युत्थायतदाकृष्णा स्वसारंमाधवस्यच। परिष्वज्यावदत प्रीत्या निःस-
पत्नोऽस्तुतेपतिः ॥ २३ ॥ तथैवमुदिताभद्रा तामुवाचैवमस्त्विति। ततस्तेहृष्टमनसः
पाण्डवेयामहारथाः ॥ २४ ॥ कुन्तीचपरमप्रीता बभूवजनमेजय। श्रुत्वातुपुण्डरीका
क्षः संप्राप्तंस्वंपुरोत्तमम् ॥ २५ ॥ अर्जुनः पाण्डवश्रेष्ठमिन्द्रप्रस्थगतंतदा। आजगाम
विशुद्धात्मा सहरामेणकेशवः ॥ २६ ॥ वृष्ण्यन्धकमहामात्रैः सहवीरैर्महारथैः।
भ्रातृभिश्चकुमारैश्च योधैश्चबहुभिर्वृतः ॥ २७ ॥ सैन्येनमहता शौरिरभिगुप्तःपरन्तपः
तत्रदानपतिर्धीमानाजगाम महायशाः ॥ २८ ॥ अक्रूरोवृष्णिवीराणां सेनापतिररि-

में और भी शोभायमान परम सुंदर भवनमें पहुंचकर पहिले कल्याणी कुंतीके निकट जाकर उनके पांव को प्रणाम किया।२०। कुंतीने अति प्रसन्नहो सर्वांग सुंदरी नयी बधु सुभद्राका सिर सूंघकर अनेक अशीस दी। अनंतर पूर्ण चंद्रमा के समान मुखवाली सुभद्राने वेगसे द्रौपदीके निकट जाकर उसको प्रणामकिया और कहा, कि मैं आपकी दासीआयीहूं।२२। कृष्णा उसीक्षण उठकर माधवकी बहिन को गले लगा प्रीति पूर्वक बोली, कि तुम्हारेपति का कोई सपत्न न रहे। सुभद्रा ने तब प्रमुदित चित्त से तथास्तु यह बात कही। हे जनमेजय! अनंतर महारथी पाण्डवगण और कुंती परमप्रीति पूर्वक रहनेलगे।२५। शत्रुओं के दुःखदायी विशुद्धात्मा पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णचन्द्र ने जब सुना, कि पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन इन्द्रप्रस्थ में जाकर राजधानी को पहुंचे हैं तब वह युद्धविद्या में पण्डित महारथी वीर सेनाओं की अच्छी रखवाली में भ्राता और पुत्रोंसे घेरेजाय और श्रेष्ठ वृष्णि तथा अन्धकों से मिलकर बलभद्र के साथ खाण्डव प्रस्थ में आपहुंचे।२८। और धीमान अति

and sent her into the women's apartment. The glorious woman of large eyes like copper looked more beautiful in that dress. On reaching there she fell first at Kunti's feet.22.Kunti was much pleased to see the beautiful bride *Subhadra*. *S*he kissed her head and pornounced blessings on her. *Subhadra*, with her face beautiful like the full moon, then went to Draupadi, saluted her and said, "I am here to serve you." Draupadi embraced the sister of Madhav and said affectionately, "May your husband never have a rival." *Subhadra* said "Amen" with cheerful heart. The Pandavas and kunti then lived in great happiness.25.When *Shree Krishna*, Pundarikaksh dertroyer of enemies and of pure soul, heard that Arjun had reached Indraprasth, the capital of Pandavas, he set out with a large army of warriors.Surrounded by his brother

न्द्रम् । अनाधृष्टिर्महातेजा उद्धवश्च महायशाः ॥ २९ ॥ साक्षाद्बृहस्पतेः शिष्यो महा-
बुद्धिर्महायशाः । सत्यकः सात्यकिश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ३० ॥ प्रद्युम्नश्चैव शाम्बश्च
निशठः शंकुरेव च । चारुदेष्णश्च विक्रान्तो झिल्ली विपृथुरेव च । सारणश्च महाबाहुर्गदश्च
विदुषां वरः ॥ ३१ ॥ एते चान्ये च बहवो वृष्णिभोजान्धकास्तथा । आजग्मुः खाण्ड-
वप्रस्थमादाय हरणं बहु ॥ ३२ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा श्रुत्वा माधवमागतम् । प्रतिग्र-
हार्थं कृष्णस्य यमौ प्रस्थापयत्तदा ॥ ३३ ॥ ताभ्यां प्रतिगृहीतन्तु वृष्णिचक्रं महर्द्धिमत्
विवेश खाण्डवप्रस्थं पताकाध्वजशोभितम् ॥ ३४ ॥ संमृष्टसिक्तपन्थानं पुष्पप्रकरशो-
भितम् । चन्दनस्य रसैः शीतैः पुण्यगन्धैर्निषेवितम् ॥ ३५ ॥ दह्यतागुरुणा चैव देशे देशे
सुगन्धिना । हृष्टपुष्टजनाकीर्णं वणिग्भिरुपशोभितम् ॥ ३६ ॥ प्रतिपेदे महाबाहुः सह
रामेण केशवः । वृष्ण्यन्धकैस्तथा भोजैः समेतः पुरुषोत्तमः ॥ ३७ ॥ सम्पूज्यमानः पौरैश्च

कीर्त्तिवंत दाता अक्रूर, वृष्णि सेनापति अति तेजस्वी शत्रुनाशी अनाधृष्टि, बडे यशोवंत उद्धव, साक्षात् बृहस्पति के चेले अति बुद्धिमान महानुभव सत्यक, सात्यकि, सात्वत कृतवर्मा, प्रद्युम्न, साम्ब, निशठ, शंकु, चारुदेष्ण, विक्रमी झिल्ली, विपृथु, सारण और महाभुज पण्डितवर गद, यह सब और बहुतेरे वृष्णि, भोज और अन्धक अनेक यौतुक ले कर उस स्थान में आए।३२। राजा युधिष्ठिरने यह सुनकर कि माधवका शुभागमन हुआ है उनको आदर पूर्वक लिवालाने के लिए नकुल और सहदेव को भेजा। बडे भागी वृष्णि दलने उनदो पुरुषों से आदर पूर्वक लिवाए जाकर खाण्डवप्रस्थ पुरीमें प्रवेश किया। तब हृष्ट पुष्ट जनों से और वणिकोंसे सुहावने उस नगरकी हर जगह फूलोंकी माला लटकती जलती हुई सुगन्धी अगुरुकी गंध उडती, तथा पवित्र गंधवाले चन्दन का रस छिडका था और वहांके सब राजपथ साफ और ध्वजा पताकाओं से सुहाते थे। वृष्णि, अन्धक और भोजों से घेरे पुरुषोत्तम महाभुज केशव रामके साथ उस नगर में आकर

ers and sons and accompanied by the Vrishnis, the Andhaks and Balbhadra, he reached Khandavaprasth.28.The wise, glorious and generous Akrur, Anadhrishti, the destroyer of enemies and most glorious commander-in-chief of the Vrishnis, Udhav, wise Satyak the disciple of Vrihashpati himself, *Satyaki*, *Satwat*, Kritvarma, Pradyumna, *Shamva*, Nishath, Shanku, Charudeshna, brave Jhilli, Viprithu and the learned warrior Gad—all these and other people of the *Vrishni*, *Bhoj* and *Andhak* tribes brought the dowry there. Hearing the welcome news of Madhavas's arrival, *Yudhishthir* sent *Nakul* and *Sahadev* to receive him. They brought the Vrishni army respectfully to the city. Then the city full of healthy people and merchants was decorated with garlands of flowers, perfumed with incense, and sprinked with *Sandol* oil. The royal road was decorated

ब्राह्मणैश्चसहस्रशः । विवेशभवनंराज्ञः पुरन्दरगृहोपमम् ॥ ३८ ॥ युधिष्ठिरस्तु रामेण समागच्छद्यथाविधि । मूर्ध्निकेशवमाघ्राय बाहुभ्यांपरिषस्वजे ॥ ३९ ॥ तं प्रीयमाणोगोविंदो विनयेनाभिपूजयन् । भीमश्चपुरुषव्याघ्रं विधिवत्प्रत्यपूजयत् ॥ ४० ॥ तांश्चवृष्ण्यन्धकश्रेष्ठान् कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । प्रतिजग्राह सत्कारैर्यथाविधि यथागतम् ॥ ४१ ॥ गुरुवत्पूजयामास कांश्चित्कांश्चिद्वयस्यवत् । कांश्चिदभ्यवदत्प्रेम्णा कैश्चिदप्यभिवादितः ॥ ४२ ॥ तेषांददौहृषीकेशो जन्यार्थेधनमुत्तमम् । हरणं वै सुभद्राया ज्ञातिदेयंमहायशाः ॥ ४३ ॥ रथानांकांचनांगानां किङ्किणीजालमालिनाम् । चतुर्युजामुपेतानां सूतैःकुशलशिक्षितैः ॥ ४४ ॥ सहस्रंप्रददौकृष्णो गवामयुतमेवच । श्रीमान्माथुरदेश्यानां दोग्ध्रीणांपुण्यवर्चसाम् ॥ ४५ ॥ वडवानांचशुद्धानां चन्द्रांशुसमवर्चसाम् । ददौजनार्दनःप्रीत्या सहस्रंहेमभूषितम् ॥ ४६ ॥ तथैवाश्वतरीणांच दा-

सहस्रों ब्राह्मण और पुरवासियोंसे आदरपूर्वक ग्रहण कियेगए, अनंतर इन्द्रपुर के समान राजभवन में प्रवेश किया। राजायुधिष्ठिरने विधि पूर्वक बलदेवजीको स्वागतकर श्रीकृष्ण को सिर सूंघ कर हाथोंसे गले लगाया।३९।कृष्ण ने प्रसन्न मनसे विनय पूर्वक उनकी पूजा कर पुरुष श्रेष्ठ भीमको विधि पूर्वक नमस्कार किया। युधिष्ठिर ने उन सब वृष्णि और अन्धकों को यथा नियम आदर से ग्रहण किया। उन्होंने किसी २ को गुरुकी भांति प्रणाम किया, किसी२ से सम अवस्था वालोंके सदृश व्यवहार किया और किसी किसी को प्रेमालाप से सम्मानित किया, और किसी किसी ने उनको प्रणाम किया।४२। अति यशोवन्त श्रीमान कमल नेत्र कृष्णने विवाहकी रीतिके अनुसार वरकी ओर के लोगोंको अच्छे धन दिये और सुभद्राको ज्ञातियों के देने योग्य यौतुक के स्वरूप में धन दिया, उन्हों ने पाण्डवों को सुशिक्षित सारथि समेत चार घोडेवाले किङ्किणी जाल मालासे सुहावने सहस्र सुनहले रथ मथुरा खण्डकी तेजस्वी बहुत दूध देनेवाली दश सहस्र गौ, चन्द्रमा समान रंगवाली

with flags. Keshav and Ram surrounded by the Vrishni, Andhak and Bhoj tribes were received with respect by thousands of Brahmans and citizens and entered the royal palace resembling the city of Indra. King Yudhishthir welcomed Baldev and having smelt the forehead of *S*hree Krishna embraced him.39. Krishna humbly worshipped Yudhishthir with a cheerful heart and bowed to Bhim. Yudhishthir treated all the Vrishnis and Andhaks with proper respect. He bowed to some and treated others as his equals or honoured as friends. *S*ome bowed to Yudhishthir. The lotus-eyed and glorious Krishna offered great wealth to the bridegroom and his party and gave dowry to *Subhadra* to make presents out of it to her relations. They gave the Pandavas four hundred golden chariots each with four

तानांवातरंहसाम् । श्वेताम्वञ्जनकेशीनां श्वेतानांपञ्चपञ्चच ॥ ४७ ॥ स्नानपानोत्स
वेचैव प्रयुक्तंवयसान्वितम् । स्त्रीणांसहस्रं गौरीणांसुवेशाणां सुवर्चसाम् ॥ ४८ ॥
सुवर्णशतकण्ठीनामरोमाणां स्वलंकृताम् । परिचर्य्यासुदक्षाणां प्रददौपुष्करेक्षणः ।४९।
पृष्ठ्यानामपिचाश्वानां वाह्लिकानांजनार्दनः । ददौशतसहस्राख्यं कन्याधनमनुत्तमम्
॥५०॥ कृताकृतस्यमुख्यस्य कनकस्याग्निवर्चसः । मनुष्यभारानदाशार्हो ददौदशज-
नार्दनः ॥ ५१ ॥ गजानान्तुप्रभिन्नानां त्रिधाप्रस्रवतांमदम् । गिरिकूटनिकाशानां समरे
ष्वनिवर्तिनाम् ॥ ५२ ॥ कॢप्तानांपटुघण्टानां चारूणांहेममालिनाम् । हस्त्यारोहैरुपे-
तानांसहस्रंसाहसप्रियः ॥ ५३ ॥ रामःपाणिग्रहणिकं ददौपार्थायलाङ्गली । प्रीयमा
णोहलधरः सम्बन्धंप्रतिमानयन् ॥ ५४ ॥ समहाधनरत्नौघो वस्त्रकम्बलफेनवान् ।
महागजमहाग्राहः पताकाशैवलाकुलः ॥ ५५ ॥ पाण्डुसागरमाविद्धः प्रविवेशमहाधनः ।

विशुद्ध सुवर्ण से सजी सहस्र घोडी, काले केश वाली सुफेद पवनसमान तेजस्विनी अच्छी सिखी सिखायी सहस्रघोडी, स्नानपानोत्सव प्रयोग दक्षा सेवा में तेज युवती गौर रंगकी सुवेश पहिनी, रोगों से छूटी, सुंदरी भलीप्रकार बनीठनी गले में सोनेके सौ छल्ले लटकायी सहस्र दासी बाह्लिक देशीय सैकडों सहस्रों घोडे, भांति भांति के मूल्य-वान वस्त्र और कम्बल आदि अनेक सामग्री प्रसन्न मन से देदी ।.५०। और सुभद्राको मनुष्य के लेजाने योग्य दश भार विशुद्ध और बिन मिलावटी अग्नि के रंगका सुवर्ण यौतुक में देदिया । हलधर राम ने प्रसन्नहो विवाहके विषय में सम्बन्धकी बडाई बढाने के लिये नाना मद प्रगट करनेवाले, पहाड के समान बडे साहस वाले, युद्ध से मुह न मोडनेवाले सुवर्ण हार से सजे, झनकतीहुई घण्टालिया लटकाये बैठनेके हौदे लगाये अनेक प्रकार के सुन्दर सुन्दर सहस्र हस्ती महावत समेत धनंजयको दिये ।५३। वस्त्र कम्बलादि रूपी फेन भरे, बड़े बड़े गजरूपी बडे ग्राहोंसे पूर्ण और झण्डेरूपी शिवालों

horses decked with ornaments, a thousand cows from the District of Mathura famous for their excess of milk, a thousand well-trained, moon-white mares with black manes and gold trappings, a thousand slave girls, young, well-trained, beautiful healthy and decked with ornaments and precious dresses, hundreds of horses from the country of Valhiks, precious clothes and other articles. 50. They gave *Subhadra* as much of pure gold as ten men could carry. Haldhar Ram gave a thousand elephants [huge] like mountains, brave, decked with garlands, bells and houdahs. The treasury of of the Pandavas was filled by the various articles of clothing and wealth. Having accepted all these things, Yudhishthir treated the Vrishnis very hospitably. 56. The Kurus, the Vrishnis and the

पूर्णमापूरयंस्तेषां द्विषच्छोकावहोऽभवत् ॥ ५६ ॥ प्रतिजग्राहतत्सर्वं धर्मराजो युधिष्ठिरः।
पूजयामासतांश्चैव वृष्ण्यन्धकमहारथान् ॥ ५७ ॥ तेसमेतामहात्मानः कुरुवृष्ण्यन्धकोत्तमाः । विजह्रुरमरावासे नराःसुकृतिनोयथा ॥ ५८ ॥ तत्रतत्रमहानादैरुत्कृष्टतलनादितैः । यथायोगंयथाप्रीति विजह्रुःकुरुवृष्णयः ॥ ५९ ॥ एवमुत्तमवीर्यास्ते विहृत्यादिवसान्बहून् । पूजिताःकुरुभिर्जग्मुः पुनर्द्वारवतींप्रति ॥ ६० ॥ रामंपुरस्कृत्य ययुर्वृष्ण्यन्धकमहारथाः । रत्नान्यादायशुभ्राणि दत्तानिकुरुसत्तमैः ॥ ६१ ॥ वासुदेवस्तुपार्थेन तत्रैवसहभारत । उवासनगरेरम्ये शक्रप्रस्थेमहात्मना ॥ ६२ ॥ व्यचरद्यमुनातीरे मृगयांसमहायशाः । मृगान्विध्यन्वराहांश्च रेमेसार्द्धंकिरीटिना ॥ ६३ ॥ ततःसुभद्रा सौभद्रं केशवस्यप्रियास्वसा । जयन्तमिवपौलोमी ख्यातिमन्तमजीजनत् ६४। दीर्घबाहुंमहोरस्कं वृषभाक्षमरिन्दमम् । सुभद्रासुषुवे वीरमभिमन्युंनरर्षभम् । ६५। अभिश्चमन्यु

से पूरे उस अनन्त धनरत्न रूपी जलकी लहरों से पाण्डवरूपी सागर के भर जानेपर वह शत्रुओं को शोकमें डुबाने लगे।५६।धर्मराज युधिष्ठिर ने वह सब लेकर वृष्णि और अंधकों के महारथियोंका भलीप्रकार सत्कार किया । अनंतर पुण्यवन्त जन जिसप्रकार देवलोक में विहार करतेहैं वैसेही महात्मा कुरु, वृष्णि और अंधकवंशी लोग वहांएकत्र होकर आनंद लूटनेलगे।५८।वे अपनी अपनी प्रीति के अनुसार वहां जगह२ में बडे बडे यानों पर घूम और ताल बजाकर नाचने गानेका बडा कोलाहल मचातेहुए यथायोग्य विहार करने लगे । अति वीर्यवन्त महारथी अंधक और वृष्णिगण उस नगर में बहुत दिनों तक आनंद उडाकर अंत में कौरवों से पूजे जाकर उन के दिये अमल रत्नों को ले रामको आगे करके द्वारकापुरी में गये ।६१। हेभारत ! बडे यशोवंत महानुभव बासुदेव अर्जुन के साथ उस सुंदर इन्द्रप्रस्थ नगरहीमें रहे और उनके साथ यमुना तटपर मृग, सुअर, विद्ध करतेहुए आखेटका आनंद लेनेलगे।६३।अनंतर शचीने जिसप्रकार प्रख्यात जयंत को प्रसव किया था, वैसेही कृष्णकी प्यारी बहिन कल्याणी सुभद्राने दीर्घबाहु

Andhaks enjoyed one another's company as the virtuous enjoy the society of gods. They contracted friendships, sang, danced, and wandered in each other's company. The brave warriors of the Andhak and Vrishni tribes lived there for many days, respected and entertained by the Kauravas and returned at last to Dwarka with Ram alone. 61. Vasudev remained with Arjun in Indraprasth and used to hunt the deer and boars on the bank of the Jamna. Subhadra the dear sister of Krishna gave birth to Abhimanyu of long arms, broad breast and eyes like those of a bull, destroyer of enemies and glorious like Jayant the son of Shachi. He was so named by the people because he was of fearless (abhi) disposition

मांश्चैव ततस्तमरिमर्दनम्। अभिमन्युमिति प्राहुरार्जुनिं भरतर्षभम्।६६। स सात्वत्याम
तिरथः सम्बभूव धनञ्जयात्। मखेनिर्मथनेनेव शमीगर्भाद्धुताशनः।६७। यस्मिन्जाते
महातेजाः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः। अयुतंगाद्विजातिभ्यः प्रादान्निष्कांश्चभारत।६८।
दयितोवासुदेवस्य बाल्यात्प्रभृतिचाभवत्। पितॄणामिवसर्वेषां प्रजानामिवचन्द्रमाः॥
॥६९॥ जन्मप्रभृतिकृष्णश्च चक्रेतस्यक्रियाःशुभाः। सचापिववृधेबालः शुक्लपक्षेयथा
शशी॥७०॥ चतुष्पादंदशविधं धनुर्वेदमरिन्दमः। अर्जुनाद्वेदवेदज्ञः सकलंदिव्य
मानुषम्॥७१॥ विज्ञानेष्वपिचास्त्राणां सौष्ठवेचमहाबलः। क्रियास्वपिचसर्वासु
विशेषानभ्यशिक्षयत्॥७२॥ आगमेचप्रयोगेच चक्रेतुल्यमिवात्मना। तुतोष पुत्रं
सौभद्रंप्रेक्षमाणोधनञ्जयः॥७३॥ सर्वसंहननोपेतं सर्वलक्षणलक्षितम्। दुर्द्धर्षमृषभ

चौडीछातीवाले बैलसमान नेत्रवाले नरोंमें श्रेष्ठ शत्रुमर्दन वीर अभिमन्युको प्रसवकिया।६५। वह शत्रुनाशी पुरुषश्रेष्ठ अर्जुनकुमार अभि अर्थात् निर्भयचित्त मन्युयुक्त हुए थे, सो सब लोग उनको अभिमन्यु कहते थे। यज्ञस्थलमें मथनद्वारा जिसप्रकार शमीगर्भ से अग्नि उपजता है, वैसेही सात्वती के गर्भ में धनंजय से उस महारथी अभिमन्युने जन्म लियाथा।६७। हे भारत! उस कुमारके जन्महोतेही बडे तेजस्वी कुंतीपुत्र युधिष्ठिर ने ब्राह्मणोंको दशसहस्र गौ और अशरफी दानदिया। चंद्रमा जिसप्रकार प्रजाओं का प्याराहै, वैसेही अभिमन्यु बालेपन से पिता, चचे और वासुदेवके प्यारे बने। कृष्ण ने उनके सब शुभ जात-कर्म किये थे। वह असाधारण बालक शुक्ल तिथि के चंद्रमा के समान दिनपर दिन बढने लगा।७०। वेदको जानकर शत्रुनाशी अभिमन्युने अर्जुन से आदान, संधान, मोक्षण विनिवर्तन, स्थान, मुष्टि प्रयोग, प्रतिकार, मण्डल और भेद इन दशांकयुक्त तथा मंत्रमुक्त, पाणिमुक्त, मुक्तामुक्त और अमुक्त यह चार पाद-युक्त सम्पूर्ण दिव्य और मानुषी वेदकी शिक्षा पाई। महाबली अर्जुन ने उनको अस्त्र विज्ञान

(manyu). The child of Arjun came out of her mother's womb as the sacrificial fire comes out by rubbing the wood. At the birth of this child, Yudhishthir the glorious son of Kunti distributed ten thousands of cows and gold coins among the Brahmans. Abhimanyu was as dear to his father, uncles and Vasudev as the moon is to the people of the world. Krishn had performed all the ceremonies relating to his birth. The extraordinary child grew day by day like the moon of the moonlit fortnight. 70. Abhimanyu, the scholar of the Vedas, learnt the art war, in all its details, from Arjun. Arjun gave his full attention to the education and training of Abhimanyu and made him a first rate warrior like himself. Seeing him possessed of every good quality, strong, of bull like

स्कन्धं व्यात्ताननमिवोरगम् ॥ ७४ ॥ सिंहदर्पंमहेष्वासं मत्तमातङ्गविक्रमम् । मेघदुन्दु
भिनिर्घोषं पूर्णचन्द्रनिभाननम् ॥ ७५ ॥ कृष्णस्यसदृशंशौर्ये वीर्येरूपेतथाकृतौ ।
ददर्शपुत्रं वीभत्सुर्मघवानिवतंयथा ॥ ७६ ॥ पाञ्चाल्यपितुपंचभ्यः पतिभ्यःशुभल-
क्षणा । लेभेपञ्चसुतान्वीरान श्रेष्ठानपञ्चचलानिव ॥ ७७ ॥ युधिष्ठिरात्प्रतिविन्ध्यं
सुतसोमंवृकोदरात् । अर्जुनाच्छ्रुतकर्माणं शतानीकञ्चनाकुलिम् ॥ ७८ ॥ सहदेवा
च्छ्रुतसेनमेतान् पञ्चमहारथान् । पाञ्चालीसुषुवे वीरानादित्यानादितिर्यथा ॥ ७९ ॥
शास्त्रतः प्रतिविन्ध्यन्तमूचुर्विप्रा युधिष्ठिरम् । परप्रहरणज्ञाने प्रतिविन्ध्योभवत्वयम्
॥ ८० ॥ सुतेसोमसहस्रेतु सोमार्कसमतेजसम् । सुतसोमंमहेष्वासं सुषुवेभीमसेनतः
॥ ८१ ॥ श्रुतंकर्ममहत्कृत्वा निवृत्तेनकिरीटिना । जातःपुत्रस्तथेत्येवं श्रुतकर्माततोऽभवत्

और सौष्ठव और उत्सर्पण प्रसर्पण आदि सब क्रियाओंके विषय में अच्छी शिक्षादी।७२। उन्हों ने शास्त्रमें और प्रयोगके विषय में उसको अपने सदृश बनाया और जय कर नेके गुणयुक्त सर्व लक्षणोंसे भरे, कठोर, बैलके समान कंधेवाले बडेमुखवाले सर्पसमान, सिंह सदृश दर्पयुक्त, बडे चापधारी, उन्मत्त गजकी भांति विक्रमी बादल और नगाडेके समान गरजनेवाले पूर्ण चंद्रानन और शूरता वीर्य तथा डील डौलमें कृष्णकी भांति देखकर संतोष माना । देवराज जिसप्रकार अर्जुन को देखतेथे अर्जुन उस पुत्रको वैसेही देखते रहे ।७६।शुभलक्षणा पांचालीनेभी पांच पतियोंसे पांच पर्वत समान बडे वीर पांच पुत्र प्राप्तकिये अदिति ने जैसे देवों को प्रसवकियाथा, वैसेही पांचालीने युधिष्ठिरसे प्रति विंध्य, वृकोदर से सुतसोम, अर्जुन से श्रुतकर्मा, नकुल से शतानीक, सहदेवसे श्रुतसेन यह पांच महारथी वीरपुत्र प्रसवकिये।७९।ब्राह्मणोंने शास्त्रों के अनुसार यह जानकर, कि युधिष्ठिर का पुत्र प्रतिविंध्य पर्वतकी भांति शत्रुको मारने योग्यहोगा उसका नाम प्रतिविंध्य रक्खा सहस्र सोमयज्ञ करने के पीछे भीमसेनसे सोमके उजाले समान तेजस्वी बडेचाप धारी सुतके उपजनेसे उसका नाम सुतसोम हुआ किरीटिके अनेक श्रुतकर्म कर लौटने

shoulders, brave like a lion, a great archer, full of prowess like a mad elephant, roaring like thunder of clouds or beat of drum, face like the full moon and like Krishna in the structure of body, Arjun was much pleased and looked upon him in the same manner as he himself was seen by Indra. The virtuous Draupadi gave birth to five brave sons by her five husbands.77.She gave birth to Prativindhya by Yudhishthir, Sutsom by Vrikodar, Shrutkarma by Arjun, Shatanik by Nakul and Shrutsen by Sahdev. Her children were as brave and strong as those of Aditi. Knowing that the son of Yudhishthir would be destroyer of enemies like Prativindhya, the Brahmans gave him that name. When Bhim had performed a

॥ ८२ ॥ शतानीकस्यराजर्षेः कौरव्यस्यमहात्मनः । चक्रेपुत्रंसनामानं नकुलःकीर्त्ति वर्द्धनम् ॥ ८३ ॥ ततस्त्वजीजनत्कृष्णा नक्षत्रेवह्निदैवते । सहदेवात्सुतंतस्माच्छ्रुत सेनेतियंविदुः ॥ ८४॥ एकवर्षान्तरास्त्वेते द्रौपदेयायशस्विनः । अन्वजायन्तराजेन्द्र परस्परहितैषिणः ॥ ८५ ॥ जातकर्माण्यानुपूर्व्याच्चूडोपनयनानिच । चकारविधिव-द्धौम्यस्तेषां भरतसत्तम ॥ ८६ ॥ कृत्वाचवेदाध्ययनं ततःसुचरितव्रताः । जगृहुःसर्वमिष्वस्त्रमर्जुनाद्दिव्यमानुषम् ॥८७॥ दिव्यगर्भोपमैः पुत्रैर्व्यूढोरस्कैर्महारथैः। अन्विता राजशार्दूल पाण्डवामुदमाप्नुवन् ॥ ८८ ॥

इत्यादिपर्वणि हरणाहरणपर्वणि द्विविंशत्यधिक द्विशतोऽध्यायः ॥ २२२ ॥
समाप्तंच हरणाहरणपर्व ॥

पर उनका वह पुत्र उपजा था, सो उसका नाम श्रुतकर्मा हुआ कुरु वंशकी कीर्तिबढाने वाले शतानीक नामक एक राजर्षि थे नकुल ने उस राजाके अनुसार अपने पुत्रका नाम शतानीक रक्खाथा और सहदेव से द्रौपदी के जिस पुत्र ने जन्म लियाथा, वह कृत्तिका नक्षत्र में हुआथा, सेनापति कार्त्तिकेय कृतिकाकी संतान थे, सो सहदेव के पुत्रका नाम श्रुतसेन हुआ ।८४। हेमहाराज ! द्रौपदीके कुमारोंने हरएकने एक दूसरेसे वर्ष वर्ष भर पीछे जन्म लियाथा, वे सब एक दूसरेके हित चाहनेवाले और यशोवंतहुए थे । हेभरत वंशश्रेष्ठ ! पुरोहित धौम्यने विधिपूर्वक उनका जातकर्म चूडा उपनयन संस्कार कर्म एक के बाद दूसरा, उसी रीतिसे सब कराया।८६।अनंतर सुचरित्र बालकोंने वेदपढकर अर्जुनसे सब दिव्य और मानुषी अस्त्रोंकी शिक्षाली । हे राजशार्दूल ! पाण्डवलोग देव-कुमारों के समान उन सब चौडी छाती वाले कुमारों को लाभकर प्रसन्न हुए ॥ ८८ ॥

thousandSom sacrifices his son Sut-som was born and being like Som and was so named. He was a great archer. Kiriti's son was born when the latter had returned after hearing a great many things, so his son was named Shrutkarma. *Shatanik* was a fomous Rajarshi of Kuru dynasty and Nakul's son was named after him. *Sahdeva's* son was born in Kritika Nakshatra and the commander of the army, Kartikeya was the son Kritika, therefore *Sahdeo* named his son *Shrutsen*.84. Draupadi's children were born at the interval of a year from one another. They were glorious and loved each other. Dhaumya the priest presided at the ceremonies of birth, tonsure and investiture of sacred thread etc respectively, of all the boys. After reading the Vedas they learnt the use of all the weapons of men, and gods from Arjun. The Pandavas were much pleased at having all those broad breasted princes for their sons.88.

अथ खाण्डवदाहपर्व वैशम्पायन उवाच। इन्द्रप्रस्थेवसन्तस्ते जघ्नुरन्यान्नराधिपान्।
शासनाद्धृतराष्ट्रस्य राज्ञःशान्तनवस्यच॥१॥ आश्रित्यधर्मराजानं सर्वलोकोवसत्सुखम्।
पुण्यलक्षणकर्माणं स्वदेहमिवदेहिनः॥२॥ ससमंधर्मकामार्थान् सिषेवेभरतर्षभ। त्रीनि
वात्मसमान् बन्धून्नीतिमानिवमानयन्॥ ३॥ तेषांसमविभक्तानां क्षितौदेहवतामिव।
बभौधर्मार्थकामानां चतुर्थइवपार्थिवः॥ ४॥ अध्येतारंपरंवेदान् प्रयोक्तारंमहाध्वरे।
रक्षितारंशुभांल्लोकान् लेभिरेतंजनाधिपम्॥ ५॥ अधिष्ठानवतीलक्ष्मीः परायण-
वतीमतिः। वर्द्धमानोऽखिलोधर्मस्तेनासीत् पृथिवीक्षिताम्॥ ६॥ भ्रातृभिःसहितो
राजा चतुर्भिरधिकंबभौ। प्रयुज्यमानैर्विततो वेदैरिवमहाध्वरः॥ ७॥ तन्तुधौम्या-
दयोविप्राः परिवार्योपतस्थिरे। बृहस्पतिसमामुख्याः प्रजापतिमिवामराः॥ ८॥
धर्मराजेह्यतिप्रीत्या पूर्णचन्द्रइवामले। प्रजानांरेमिरेतुल्यं नेत्राणिहृदयानिच॥ ९॥

अध्याय २२३॥

वैशम्पायन ने कहा, कि हे भरतश्रेष्ठ! पाण्डवगण राजा धृतराष्ट्र और शांतनु नंदन भीष्मकी आज्ञा से इंद्रप्रस्थमें बसकर दूसरे राजाओं को वश में लाने लगे। आत्मा जिसप्रकार पुण्य लक्षणयुक्त शरीर को अवलम्ब कर सुखसे विराजती है, वैसेही सब प्रजा धर्मराज युधिष्ठिरको आश्रय कर सुखसे रहनेलगी।२।नीतिमान युधिष्ठिर धर्म,अर्थ काम इन तीनों वर्गोंकी, अपने बन्धुओंकी भांति इसप्रकार सेवा करने लगे, कि उनमें एक दूसरे का विगाड न उभरने पावे। धर्म, अर्थ, काम, मानो यह देह धरकर धरती पर उतर आये थे, राजा युधिष्ठिर मानो उनमें एक चौथे बनकर शोभा पाने लगे।४। प्रजाओं ने उन राजा को अच्छे वेदपाठी बडे यज्ञकारी और सम्पूर्ण पुण्यवंत प्राप्तकिया था उनके साम्राज्य के दिनोंमें राजाओंकी लक्ष्मी न टलती, चित्त परब्रह्मकी ओर झुक और धर्म बहुत वृद्धि पर था।६। जिसप्रकार प्रयुज्यमान चतुर्वेद से फैलाहुआ बडा यज्ञ सुशोभितहोताहै, वैसेही धर्मराज युधिष्ठिर चार भाइयोंसे औरभी अधिक सुहाने लगे। जिसप्रकार देवगण प्रजापतिजी को घेरकर उपासना किया करते हैं, वैसेही धौम्यआदि

CHAPTER CCXXIII

Vaishampayan said that the Pandavas having settled in Indraprasth by the permission of Dhritrashtra and Bhishm the son of Shantanu brought other kings under subjection. The people were as happy under the rule of Yudhishthir the just as the soul that occupies the body of a virtuous man. He served Dharm, Arth and Kam like his kinsmen so as to keep them all in harmony. He was an incarnation on earth of the three. Himself being the fourth, he had united the other three in his person. The people had found in him a scholar of the Vedas, great performer of sacrifices and virtuous prince. During his reign no rich men became poor and the people were godly and virtuous. He was glorious by the union of his

नतुकेवलदेवेन प्रजाभावेननरेमिरे । यद्बभूवमनःकान्तं कर्मणासचकारतत् ॥ १० ॥
नह्ययुक्तंनचासत्यं नासह्यंनचवाप्रियम् । भाषितंचारुभासस्य जज्ञेपार्थस्यधीमतः ॥११॥
सहिसर्वस्यलोकस्य हितमात्मनएवच । चिकीर्षन्सुमहातेजारेमेभरतसत्तम ॥ १२ ॥
यथातुमुदिताःसर्वे पाण्डवाविगतज्वराः । अवसन्पृथिवीपालांस्तापयन्तः स्वतेजसा
॥ १३ ॥ ततःकतिपयाहस्य बीभत्सुःकृष्णमब्रवीत् । उष्णानिकृष्णवर्त्तन्ते गच्छावो
यमुनांप्रति ॥ १४ ॥ सुहृज्जनवृतौतत्र विहृत्यमधुसूदन । सायाह्नेपुनरेष्यावो रोचतां ते
जनार्द्दन ॥ १५ ॥ वासुदेव उवाच । कुन्तीमातर्ममाप्येतद्रोचते यद्वयंजले । सुहृज्जन
वृताःपार्थ विहरेमयथासुखम् ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । आमन्त्र्यतौ धर्मराज

बृहस्पति सदृश प्रधान प्रधान ब्राह्मणगण उनको चारों ओर घेरकर उपासना करतेथे।८। पूर्णचन्द्रमा समान निर्मल धर्मराज युधिष्ठिरकी ओर प्रजाओं के नयन और मन दोनों एकही रूप झुक पड़े थे। यही नहीं, कि प्रजा उनको राजाही जान कर प्रेमी बनी थी, वरण वह ऐसे ऐसेही कार्य में दत्तचित्तहोतेथे, कि जिनसे प्रजाको संतोष मिले।१०।वह बुद्धिमान बड़े पाण्डव मीठी बोली बोलते थे, उनका वचन कभी झूठा, युक्तिके विरुद्ध असह्य वा अप्रिय नहीं होताथा। हे भरतश्रेष्ठ! वह बड़े तेजस्वी पुरुष अपने और दूसरे सब जनों के हित साधने में सदा तुल्य भाव से लगे रहकर परम सुखसे काल गँवानेलगे।१२।उनके भाईलोगभी अपने अपने तेजोबलसे भूपालों को तपाकर विना कण्टक प्रमुदित चित्तसे बसनेलगे। कुछ दिन बीतनेपर, अर्जुन श्रीकृष्णसे बोले, कि कृष्ण! अब ग्रीष्मकाल आया, यदि तुम चाहो तो चलो हमयमुनाजीके किनारे जांय।१४।हेजनार्द्दन! हम मित्रोंसे मिल कर वहां विहार कर संध्याको फिर लौटेंगे। श्रीकृष्णजी महाराज बोले, कि कुन्तीपुत्र! मेरीभी इच्छा होरही है, कि हम मित्रों के संग सुख चैन से यमुना किनारे विहार करें।१६।वैशम्पायन ने कहा, कि हे भारत! अनन्तर अर्जुन और कृष्ण

four brothers as a sacrifice by the four Vedas. As Indra is praised by gods so was Yudhishthir, surroundad by Dhaumya and other chief Brahmans like Vrihaspati. The eyes and hearts of the people were inclined towards Yudhishthir as if he were the full moon. People loved him not only because he was their king but also they loved the deeds which he performed to make them happy. He always spoke in a sweet tone of voice and his word was never untrue, illogical, unbearable, or disagreeable. He passed his time pleasantly in doing good to himself and others. His brothers, too, threatened the kings by the power of their arms and lived a life of happiness. After some days Arjun said to Krishn, "The hot weather has come. Let us go to the bank of the Gonges if you please. We shall enjoy there the mcopany of friends and shall return in the evening." Krishna assented to the proposal of Arjun. Vaishampayan said that Krishn and Arjun both went out with

मनुज्ञाप्यच भारत । जग्मतुःपार्थगोविन्दौ सुहृज्जनवृतौततः ।। १७ ।। विहारदेशं सं-
प्राप्य नानाद्रुममनुत्तमम् । गृहैरुच्चावचैर्युक्तं पुरन्दरपुरोपमम् ।।१८।। भक्ष्यैर्भोज्यैश्च
पेयैश्चरसवद्भिर्महाधनैः । माल्यैश्चविविधैर्गन्धैर्युक्तं वार्ष्णेयपार्थयोः ।। १९ ।। विवे-
शान्तःपुरंतूर्णं रत्नैरुच्चावचैःशुभैः । यथोपजोषंसर्वेश्च जनश्चिक्रीड़भारत ।। २० ।।
स्त्रियश्च विपुलश्रोण्यश्चारुपीनपयोधराः । मदस्खलितगामिन्यश्चिक्रीडुर्वामलोचनाः
।। २१ ।। वनेकाश्चिज्जलेकाश्चित् काश्चिद्वेश्मसुचांगनाः । यथादेशंयथाप्रीति चिक्रीडुः
पार्थकृष्णयोः ।। २२ ।। द्रौपदीचसुभद्राच वासांस्याभरणानिच । प्रायच्छतांमहाराज
स्त्रीणांतेस्ममदोत्कटे ।। २३ ।। काश्चित्प्रहृष्टा ननृतुश्चुक्रुशुश्च तथापराः । जहसुश्चपरा
नार्य्यःपपुश्चान्यावरासवम् ।। २४ ।। रुरुधुश्चापरास्तत्र प्रजघ्नुश्चपरस्परम् । मन्त्रया-
मासुरन्याश्च रहस्यानिपरस्परम् ।। २५ ।। वेणुवीणामृदङ्गानां मनोज्ञानाञ्चसर्वशः ।

आपस में ऐसी बातेंकर धर्मराजकी आज्ञा ले मित्रों के साथ निकले। वे अनेक पेड़ों से घिरी, इन्द्रपुरीकी भांति नाना घरोंसे सजी, स्वादिष्ट भक्ष्य, भोज्य और पानकी सामग्री से भरी, महामूल्य वान भांति भांति की सुगन्धी मालाओं से सुहावने, अच्छे विहारके स्थानमें जा पहुँचे और नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित पुरी में बिना विलम्ब जा घुसे साथी लोग सुख से खेलने कूदने लगे ।२०। स्थूलकुचावाली सुन्दर नितम्बिनी, मतवाली चाल चलती युवती श्रीकृष्ण और अर्जुनकी आज्ञा से खेल में प्रवृत्त हुई कोई वनमें, कोई जलमें कोई घरमें प्रीति के साथ विहार करने लगीं ।२२। महाराज! तब द्रौपदी और सुभद्रा मदसे मतवाली बन उन सब स्त्रियों को वस्त्र और गहने देने लगीं। कोई कोई नारी आनन्दित चित्त से नाचने लगीं। कोई कोई गाने लगीं, कोई कोई रमणी हंसी ठट्ठेमें मग्न हुई कोई कोई अच्छी मदिरा पीने लगीं, कोई कोई एक दूसरेको मारने पीटने तथा रोने लगीं, और कोई कोई रहस्य युक्ति करने लगीं, वास्तव में जिस की जैसी इच्छाथी, वह उसीको करनेमें प्रवृत्त हुई ।२५। तव वह वन वंसी बीणा मृदङ्ग आदिके मन

friends by the permission of Yudhishthir 17. They entered the pleasure ground surrounded by various trees, abounding in various sorts of houses like the city of Indra, full of the tasteful articles of food and drink and decked with garlands of sweet scented flowers. The companions were engaged in play.20. Beautiful young women began their play by the order of Krishn and Arjun. Some were roaming in the woods, others were bathing in water or playing love games within their houses. Draupadi and *Subhadra* intoxicated with liquor began to distribute clothes and ornaments among the women. Some of the women began to dance in the excess of joy, others sang or were engaged in joking and laughing. Some drank wine, while others quarrelled amongst themselves and wept.

शब्देनपूर्यतेहर्म्यंतद्वनंसुमहर्द्धिमत् ॥ २६ ॥ तस्मिंस्तदावर्त्तमाने कुरुदाशार्हनन्दनौ ।
समीपंजग्मतुःकञ्चि दुद्देशं सुमनोरमम ॥ २७ ॥ तत्रगत्वामहात्मानौ कृष्णौपरपुरञ्ज-
यौ । महार्हासनयोराजंस्ततस्तौ संन्यषीदतुः ॥ २८ ॥ तत्रपूर्वंव्यतीतानि विक्रान्ता
नीतराणिच । बहूनिकथयित्वातौ रेमातेपार्थमाधवौ ॥ २९ ॥ तत्रोपविष्टौमुदितौ नाक
पृष्ठेऽश्विनाविव । अभ्यागच्छत्तदाविप्रो वासुदेवधनञ्जयौ ॥ ३० ॥ बृहच्छालप्रतीकाशः
प्रतप्तकनकप्रभः । हरिपिङ्गोज्ज्वलश्मश्रुः प्रमाणायामतःसमः ॥ ३१ ॥ तरुणादित्य-
सङ्काशश्चीरवासा जटाधरः । पद्मपत्राननःपिङ्गस्तेजसा प्रज्वलन्निव ॥ ३२ ॥ उपसृ-
ष्टन्तुतंकृष्णौ भ्राजमानंद्विजोत्तमम् । अर्जुनोवासुदेवश्च तूर्णमुत्पत्यतस्थतुः ॥ ३३ ॥

इत्यादिपर्वणि खाण्डदाहपर्वणि ब्राह्मणरूप्यनलागमने
त्रयोविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २२३ ॥

भावन बाजेसे भर कर बहुत सुहावना बन गया । हे महाराज ! इस प्रकार बड़ा भारी उत्सव उपस्थित होजाने पर महात्मा शत्रुपुर के जयकारी धनञ्जय और श्रीकृष्ण निकट के एक सुन्दर स्थानमें जाकर बड़े मूल्यवान आसनों पर बैठे ।२८। वे उस स्थानमें अतीव विक्रमके सम्बन्ध में और दूसरी भांति भांतिकी कथा कहते सुनते हुए खेलने लगे। जिस प्रकार देवलोक में दोनों अश्विनी कुमार एकत्र विराजतेहैं, वैसेही वासुदेव और धनञ्जय प्रमुदित मन से उस स्थानमें बैठे थे, ।३०। कि ऐसे समय में बड़े साल के वृक्ष समान लंबे गर्म सुवर्णसदृश उजालावाले, पीले और पिंगलीरंगकी चमकीली दाढी वाले, लम्बाई और चौडाई में आपही अपनी उपमा योग्य, बालसूर्यकी भांति सदृश पद्म पत्र मुखयुक्त तेजसे प्रदीप्त पिंगल बरण, जटाधारी चीर पहिनेहुए एक ब्राह्मण बन के पास आये । वे लोकोंमें न मिलने योग्य, तेजसे प्रकाशमान द्विजोत्तमको निकट देख आसन को छोडकर खडेहुए । ३३ ।

They were all engaged in doing as they desired and the forest rang with the sounds of different sorts of musical instruments. While they were thus engaged in merry-making, Arjun the destroyor of enemies and Krishn sat together on valuable seats and passed their time in talking about warlike deeds and other conversations. Vasudev and Dhananjaya were sitting together cheerfully like the twin Aswins in the country of gods, when came to them a Brahman tall as a tree, glorious like gold, with beard of bright yellow colour, incomparable to any one else in stature, his face bright like the sun, yellow locks and dress of the same colour. Seeing the extraordinary *Brahman* they rose up to receive him. 33.

वैशम्पायन उवाच । सोऽब्रवीदर्जुनंचैव वासुदेवञ्चसात्वतम् । लोकप्रवीरौति-
ष्ठन्तौ खाण्डवस्यसमीपतः ॥ १ ॥ ब्राह्मणोबहुभोक्तास्मि भुंजेऽपरिमितंसदा । भिक्षे
वार्ष्णेयपार्थौ वामेकांतृप्तिंप्रयच्छतम् ॥ २ ॥ एवमुक्तौतमब्रूतां ततस्तौकृष्णपाण्डवौ ।
केनान्नेन भवांस्तृप्येत्तस्यान्नस्य यतावहे ॥ ३ ॥ एवमुक्तःस भगवानब्रवीत्तावुभौततः ।
भाषमाणौतदावीरौ किमन्नंक्रियतामिति ॥ ४ ॥ ब्राह्मण उवाच । नाहमन्नंबुभुक्षे वै
पावकंमांनिबोधतम् । यदन्नमनुरूपंमे तद्युवांसम्प्रयच्छतम् ॥ ५ ॥ इदमिन्द्रःसदादावं
खाण्डवंपरिरक्षति । नचशक्नोम्यहंदग्धुं रक्ष्यमाणंमहात्मना ॥ ६ ॥ वसत्यत्रसखातस्य
तक्षकःपन्नगःसदा । सगणस्तत्कृतेदावं परिरक्षतिवज्रभृत् ॥ ७ ॥ तत्रभूतान्यनेकानि
रक्षतेऽस्यप्रसङ्गतः । तंदिधक्षुर्नशक्नोमि दग्धुंशक्रस्यतेजसा ॥ ८ ॥ समाम्प्रज्वलितं

अध्याय २२४ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनंतर ब्राह्मण ने श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज और अर्जुन से कहा, कि तुम दोनों सब लोकोंमें बडे वीर, इस खाण्डवप्रस्थ के निकट विराजरहे हो, मैं बहुत खानेवाला ब्राह्मण हूं, सदा अपरिमित भोजन खा जाता हूं । अब तुम से भिक्षा करताहूं, कि तुम भोजन देकर मुझको प्रसन्न करो ।२। वीर अर्जुन और कृष्ण यह बात सुनकर उन से बोले, कि कहिये, कैसा अन्न भोजन करने से आपकी तृप्तिहोगी, हम उसका प्रयत्न करेंगे । वे कैसा अन्न बनवावेंगे, इस विषय में आपसमें बात चीत कर रहे थे, कि ऐसे अवसर में उस ब्राह्मणरूपी भगवानने उत्तर दिया, कि मैं वैसा अन्न खाना नहीं चाहताहूं । मैं अग्नि हूं, जो अन्न मेरेयोग्यहो वही मुझको दो।५।देवराज इंद्र सदा खाण्डव नामक बडे बनकी रखवाली करते हैं, सो मैं उसको जला नहींसकता हूं । इन्द्रका सखा तक्षक नामक सर्प साथियों समेत सदा इस बनमें बसताहै, इसी लिये वह वज्रधारी सर्व प्रयत्नोंसे इसकी रक्षा करते हैं।७।साथ साथ अनेकजीव उस बन

CHAPTER CCXXIV

Vaishampayan said that the *Brahman* then addressed Shree Krishna and Arjun saying, "You two are the bravest men in this world and are staying in the vicinity of the forest of Khandav. I am a *Brahman* of very great apetite and eat much every day. I request you to gratify me by food."2. Brave Arjun and Shree Krishna asked him what sort of food he wanted and promised to gratify his desire. The *Brahman* continued, "I donot like to take the food that you are thinking of. I am Agni. Give me my proper food. Indra the chief of gods always protects the Khandav forest and does not let me burn it because his friend Takshak lives there. Indra protects the forest by every means in his power. 7.

दृष्ट्वा मेघाम्भोभिःप्रवर्षति । ततोदग्धुंनशक्नोमि दिधक्षुर्दावमीप्सितम् ॥ ९ ॥ सयुवा-
भ्यां सहायाभ्यामस्त्रविद्भ्यांसमागतः । दहेयंखाण्डवं दावमेतदन्नंवृतंमया ॥ १० ॥
युवांह्युदकधारास्ता भूतानिचसमन्ततः । उत्तमास्त्रविदौसम्यक् सर्वतोवारयिष्यथः ॥
॥ ११ ॥ जनमेजय उवाच । किमर्थंभगवानग्नि खाण्डवंदग्धुमिच्छति । रक्ष्यमाणंम-
हेन्द्रेण नानासत्त्वसमायुतम् ॥ १२ ॥ नह्येतत्कारणंब्रह्मन्नल्पं सम्प्रतिभातिमे । यद्द
दाहधुसंक्रुद्धः खाण्डवंहव्यवाहनः ॥ १३ ॥ एतद्विस्तरशोब्रह्मन् श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः
खाण्डवस्यपुरादाहो यथासमभवन्मुने ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । हन्ततेकथयिष्या
मि पौराणीमृषिसंस्तुताम् । कथामिमांनरश्रेष्ठ खाण्डवस्यविनाशिनीम् ॥ १५ ॥ पौ-
राणः श्रूयतेराजन् राजाहरिहयोपमः । श्वेतकिर्नामविख्यातो बलविक्रमसंयुतः ।१६।

में रहते हैं, उनको जलाना चाहने परभी मैं देवराज के तेजसे मनोरथको सफल कर नहीं सकता हूं। वह मुझको जलते देखकर जलधरकी जलधारासे बुझादेते हैं, सो मन में खाण्डव को जलानेकी बडी चाह रखनेपरभी जला नहीं सकताहूं। तुम दोनों अस्त्र-विद्या में पण्डितहो, तुम मेरी सहायता करो, तो मैं इस खाण्डववनको जला सकताहूं, तभी मेरा अच्छा भोजनहोगा, तुम से मैं यहीअन्न मांगताहूं।१०।खाण्डवदाहके कालमें जो सब जीव इधर उधर भागने पर होंगे, उनको और जलधरकी जलधाराओं को तुम अस्त्र विद्याके बल से सबप्रकार रोकना। जनमेजय बोले, कि हे ब्रह्मन्! भगवान अग्नि ने क्यों देवराज से रक्षित अनेक जीवोंसे पूरित खाण्डववनको जलाना चाहाथा।१२।मुझ को जान पडता है, कि उन के रिसाकर खाण्डव के जलाने को चाहने का कोई विशेष कारणहोगा। हे ब्रह्मन्! मैं इसका सत्य तत्व जाना चाहताहूं, सो यह कहो, कि क्यों वह खाण्डवदाह हुआथा।१४।वैशम्पायन ने कहा, कि हेनरनाथ! खाण्डवदाहके विषय में ऋषिकी स्वीकृत पौराणिकी कथा आपसे कहताहूं, सुनें। महाराज! पुराणोंमें सुना है, कि पूर्वकाल में बल विक्रमयुक्त महेंद्र समान श्वेतकि नामक प्रख्यात एक भूप थे। उन

Many creatures live in that forest. I wish to burn them but can not do so on account of Indra's prowess. As soon as I commence burning he extinguishes it by the down-pour of rain. In spite of my great hankering to burn it I always fail in my attempt. You two are dexterous in the use of arms and I shall be able to burn it by your help and to satisfy my desire. I beg only this food of you. 10. You must keep the animals from flying away and the downpour of rain from reaching the earth by the strength of your arms." "Tell me Vaishampayan," said Janmejay, "the reason of Agni's desire to burn the forest of Khandav full of numerous creatures and protected by the chief of gods. I think there must be a strong reason for his desire to burn the forest in anger. Let me know all about it."

यज्वादानपतिर्द्धीमान् यथानान्योऽस्तिकश्चन । ईजेचसमहायज्ञैः क्रतुभिश्चाप्तदक्षिणैः
॥ १७ ॥ तस्यनान्याभवद्बुद्धिर्दिवसे दिवसेनृप । सत्रक्रियासमारम्भे दानेषुविविधेषु
च ॥ १८ ॥ ऋत्विग्भिःसहितो धीमानेवमीजेसभूमिपः । ततस्तुऋत्विजश्चास्य धूम-
व्याकुललोचनाः ॥१९ ॥ कालेनमहता खिन्नास्तत्यजुस्ते नराधिपम् । ततःप्रचोदया-
मास ऋत्विजस्तान्महीपतिः । चक्षुर्विकलतांप्राप्ता नप्रपेदुश्वेतक्रतुम् ॥ २० ॥ ततस्ते
षामनुमते तद्विधैस्तुनराधिपः । सत्रंसमापयामास ऋत्विग्भिरपरैःसह ॥ २१ ॥ तस्यै
वं वर्त्तमानस्य कदाचित् कालपर्य्यये । सत्रमाहर्त्तुकामस्य सम्वत्सरशतं किल ॥२२॥
ऋत्विजो नाभ्यपद्यन्त समाहर्त्तुं महात्मनः । सच राजाकरोद्यत्नं महान्तं ससुहृज्जनः
॥ २३ ॥ प्रणिपातेनसान्त्वेन दानेनचमहायशाः । ऋत्विजोऽनुनयामास भूयोभूयस्त
न्द्रितः ॥ २४ ॥ तेचास्यतमभिप्रायं नचक्रुरमितौजसः । सचाश्रमस्थान् राजर्षि-

के सदृश धीमान, दाता और यज्ञशाली कोई दूसरा नहीं था । उन्हों ने बहुत दक्षिणा दे देकर ज्योतिष्टोम आदि क्रतु और देवयज्ञ आदि पांचमहायज्ञ किये थे।१७।हेमहाराज ! उनकी बुद्धि सदा केवल क्रियारम्भ, यज्ञ और नानादान बिना किसी अन्य कार्य में नहीं रहतीथी । बुद्धिमान पृथ्वीपति के ऋत्विजों के साथ बहुत दिनों तक यज्ञ करनेपर ऋत्विजों ने धुएं से घबराकर और उदासहोकर उसनरेशको छोडदिया।१९।भूपालने बार बार समझा बुझाकर उनको बुलाया पर उनकी आखें धुंधली होजानेसे उन्हों ने फिर उस यज्ञ में आना नहीं चाहा । अनन्तर भूपाल ने उन सब पुरोहितोंकी आज्ञा से दूसरे पुरोहित लाकर उस आरम्भ कियेहुए यज्ञको पूराकिया।२१।कुछकाल बीते महीपाल ने एक समय सौ वर्षों में पूराहोनेवाला यज्ञ कराना चाहा, पर उन के पुरोहितोंने उस को पूरा करना स्वीकार नहीं किया । बडे यशोवन्त भूप आलस्य तज मित्रों के साथ अति यत्न से शिरझुका गिड़गिड़ा समझा बुझाकर दान दे पुरोहितोंको हाथ जोड़ने लगे।२४।पर अति तेजस्वी पुरोहितोंने किसीप्रकार उनका मनोरथ सिद्ध नहीं किया। तब

Vaishampayan said, " I shall tell you the story of the burning of Khandav as related by the Rishi: There was a king powerful like Indra, named Shwetaki. He was unrivalled in wisdom, charity and sacrifices. He performed his daily and periodical sacrifices with large donations. 17. He was always engaged in doing good deeds. During his long sacrifice the Ritwijas could not bear the smoke and left him. The king sent for them again and again but they did not return as their eyes had become dim with smoke. By the permission of priests the king called other Brahmans as their substitute and completed the sacrifice. Some days after the king wished to perform a sacrifice to be completed in hundred-years, but the priests would not help him. The good king began to entreat them

स्तानुवाचरुषान्वितः ॥ २५ ॥ यद्यहंपतितोविप्राः शुश्रूषायांनचोस्थितः । आशुत्याज्योऽस्मि युष्माभिर्ब्राह्मणैश्चजुगुप्सितः ॥ २६ ॥ तन्नाहंथ क्रतुश्रद्धांव्याघातयितुमत्र ताम् । अस्थानेवापरित्यागं कर्तुमर्हद्विजसत्तमाः ॥ २७ ॥ प्रपन्नएववोविप्राः प्रसादं कर्तुमर्हथ । सान्त्वदानादिभिर्वाक्यैस्तत्त्वतः कार्य्यवत्तया ॥ २८ ॥ प्रसादयित्वावक्ष्यामियन्नः कार्य्यंद्विजोत्तमाः । अथवाहंपरित्यक्तो भवद्भिर्द्वेषकारणात् ॥ २९ ॥ ऋत्विजोऽन्यान् गमिष्यामियाजनार्थं द्विजोत्तमाः । एतावदुक्त्वावचनं विरराममसपार्थिवः ॥ ३० ॥ यदानशेकूराजानं याजनार्थंपरन्तपम् । ततस्तेयाजकाः क्रुद्धास्तमूचुर्नृपसत्तमम् ॥ ३१ ॥ तवकर्माण्यजस्रंवै वर्त्तन्तेपार्थिवोत्तम । ततोवयंपरिश्रान्ताःसततंकर्मवाहिनः ॥३२॥ श्रमादस्मात्परिश्रान्तान् सत्वंनस्त्यक्तुमर्हसि । बुद्धिमोहंसमास्थाय त्वरासम्भावितोऽनघ ॥ ३३ ॥ गच्छरुद्रसकाशंत्वं सहित्वांयाजयिष्य

राजर्षि रिसाकर उन आश्रमों में टिके विप्रोंसे कहने लगे, कि ब्राह्मणों ! यदि मैं पतित हूं, और सदा आपकी सेवामें दत्त चित्त नहीं हूं, तो मैं ब्राह्मणों से निंदितहूंगा और उसी क्षण मुझको त्याग दे सकते हैं।२६। पर जब मैं न तो पतित और आपपर अप्रसन्न चित्त हूं तब अनुचित रीतिसे मुझको त्यागना वा जिस क्रतुश्रद्धाको करने में मैं उद्यत हूं उसमें बाधा देना आप के योग्य नहीं हैं। मैं आपकी शरण लेताहूं, सो आप प्रसन्न होवें। हे द्विजवरगण ! यदि विद्वेषवश मुझको त्याग देवें, तो मुझको याज्य कार्यके लिये अन्य पुरोहितोंके निकट जाना पडेगा और अपना कार्य पूरा करने के लिये समझा बुझाकर दान दे उनको प्रसन्न कर अपना काम उनको सच सच जताके अभिलाषा सिद्ध कर लूंगा। राजा यह वचन कह कर चुपहो रहा।३०।अनन्तर पुरोहित लोग यहतो जानतेही थे, कि आप उन नृपवरका याजन कार्य्य नहीं कर सकेंगे, सो क्रोधकर बोले, कि हे महाराज ! सदा आपके दैवी कर्म होतेहैं, हम सदा उन कार्योंको कर कर थकगये हैं, तुमभी बुद्धिकी गडबडीसे शीघ्रता चाहतेहो, सो इन थके मादे पुरोहितों को त्यागकर तुमको अन्य

with all his friends but the priests were inexorable. The king was much afflicted in his mind and said, "You can leave me if I am degraded or do anything to displease you, but in the absence of such causes why do you hinder me from my long-wished sacrifice ? I am come under you protection. Be pleased to help me, Brahmans. I shall have to go to other priests if you donot wish to help me. I shall bring other priests with entreaties and donations." Having said this the king was silent. The priests knew that they were unable to help the king and said in anger, "We are tired of your constant sacrifices and you begin another as soon as one is finished. Seek other priests and leave these tired ones. Go to Rudra. He will help you in your sacrifice." King Shwetaki was

ति । साधिक्षेपंवचः श्रुत्वा संक्रुद्धः श्वेतकिर्नृपः ॥ ३३ ॥ कैलासंपर्वतंगत्वा तपउग्रं समास्थितः । आराधयन्महादेवं नियतः संशितव्रतः ॥ ३५ ॥ उपवासपरोराजन् दीर्घकालमतिष्ठत । कदाचिद्द्वादशेकाले कदाचिदपिषोडशे । ३६ । आहारमकरोद्राजा मूलानिच फलानिच । ऊर्द्ध्वबाहुस्त्वनिमिषस्तिष्ठन् स्थाणुरिवाचलः ॥ ३७ ॥ षण्मासानभवद्राजा श्वेतकिःसुसमाहितः । तंतथानृपशार्दूलं तप्यमानंमहत्तपः ॥ ३८ ॥ शङ्करः परमप्रीत्यादर्शयामास भारत । प्रीतोऽस्मिनरशार्दूल तपसातेपरन्तप ॥ ३९ ॥ वरं वृणीष्वभद्रन्ते यंत्वमिच्छसिपार्थिव । एतच्छ्रुत्वातुवचनं रुद्रस्यामिततेजसः ॥ ४० ॥ प्रणिपत्यमहात्मानं राजर्षिःप्रत्यभाषत । यदिमेभगवान्प्रीतः सर्वलोकनमस्कृतः ॥ ४१ ॥ स्वयंमांदेवदेवेश याजयस्वसुरेश्वर । एतच्छ्रुत्वावचनंराज्ञा तेनप्रभाषितम् ॥ ४२ ॥ उवाच भगवान्प्रीतः स्मितपूर्वमिदंवचः । नास्माकमेतद्विषये वर्त्ततेयाजनंप्रति ॥ ४३ ॥ त्वया

पुरोहितों का आसरा ढूंढना चाहिये, तुम रुद्र के यहां जाओ, वही तुम्हारे याजन कार्य करनेके समर्थहोंगे । भूप श्वेतकि उनका यह लांछन वचन सुनकर क्रोध के वश में होगये अनन्तर कैलास पर्वत पर जाकर कठोर तपस्या करने लगे । हे महाराज ! उन्होंने वहां नियमयुक्त, व्रतशील और उपवास में नियुक्त होकर बहुत दिनों तक महादेवजीकी आराधनाकी और कुछकाल कभी बारहें मुहूर्त्त, कभी सोलहवेंमुहूर्त्त पर फलमात्र खाते थे । उन्हों ने छःमास भलेप्रकार समाहित, ऊर्द्ध्वबाहु और निमेष वर्जितहोकर अचल जडवत् काटे।३८।हे भारत ! भगवान शंकर उसप्रकार कठोर तपस्या करतेहुए उन नृपशार्दूलकी तपस्यासे बडेप्रसन्न हो उनको दर्शन देकर बोले, कि हे नरवर ! मैं तुम्हारी तपस्या देखकर बडा प्रसन्नहूं, तुम्हारा मंगलहोगा, तुम मनमाना वर मांगो । राजर्षि श्वेतकि अति तेजस्वी महात्मा महादेवजीकी यह बात सुन शिरनाय बोले, कि हे सुरेश्वर ! हे हे देवनाथ ! सर्व लोकोंके प्रणाम योग्य भगवान ! आप यदि मुझपर प्रसन्न हुएहों, तो आप स्वयं मेरायाजन कार्य करें।४२।भगवान रुद्र राजाका यह वचन सुन प्रसन्नहो लाज

very angry when he heard this reproach. He went forthwith to Mount Kailas and began asceticism. He tried to please Mahadeo by his severe asceticism. He lived upon fruits which he ate very sparingly. He remained standing with arms upraised for six months, like a statue. *S*hankar being much pleased by the severe asceticism of the king came to him and said, "I am much pleased with you. Ask of me a boon." Having heard this from Mahadeo, king *S*hwetaki bowed down his head and said, "Bhagwan, worthy of respect from all the world, if you are kind to me, preside at my sacrifice!" Rudra replied with blushes, "We are not authorised to do such things, but as you have performed severe asceticism for the performance of your sacri-

चसुमहत्तप्तं तपाराजन्वराथिना । याजयिष्यामिराजंस्त्वां ममयेनपरन्तप ॥ ४४ ॥
रुद्र उवाच । समाद्वादशराजेन्द्र ब्रह्मचारीसमाहितः । सततंत्वाज्यधाराभिर्यदि तर्प-
यसेऽनलम् ॥ ४५ ॥ कामंप्रार्थयसेयं त्वन्मत्तःप्राप्स्यसितंनृप । एवमुक्तस्तुरुद्रेण श्वे-
तकिर्मनुजाधिपः ॥ ४६ ॥ तथाचकारतत्सर्वं यथोक्तंशूलपाणिना । पूर्णेतुद्वादशेवर्षे
पुनरायान्महेश्वरः ॥ ४७ ॥ दृष्ट्वैवचसराजानं शङ्करोलोकभावनः । उवाचपरमप्रीतः
श्वेतकिंनृपसत्तमम् ॥ ४८ ॥ तोषितोऽहंनरश्रेष्ठ त्वयेहाद्येनकर्मणा । याजनंब्राह्मणा-
नान्तु विधिदृष्टंपरन्तप ॥ ४९ ॥ अतोऽहंत्वांस्वयंनाद्य याजयामिपरन्तप । ममांश-
स्तुक्षितितले महाभागोद्विजोत्तमः ॥ ५० ॥ दुर्वासाइतिविख्यातः सहित्वांयाजयि-
ष्यति । मन्नियोगान्महातेजाः सम्भाराःसंभ्रियन्तुते ॥ ५१ ॥ एतच्छ्रुत्वातु वचनं
रुद्रेणसमुदाहृतम् । स्वपुरंपुनरागम्य सम्भारान्पुनरार्जयत् ॥ ५२ ॥ ततःसम्भृत

भगे महदेव से बोले, कि महाराज ! इस याजन कार्य करने का हम लोकों को अधिकार नहीं है, पर तुम ने याजन-रूपी वर मांगनेके लिये कठोर तपस्याकी है, सो हेशत्रुनाशी नृप ! मैं इस नियम से तुम्हारा याजन कार्य कर सकताहूं, कि यदि तुम बारह वर्ष ब्रह्मचारी और भलेप्रकार समाहित सदा बिना रोक टोक आज्यकी धारसे अग्निको तपा सको, तो जो प्रार्थना करते हो वह मुझको प्राप्त करोगे । पृथ्वीनाथ श्वेतकि शूलधर रुद्रकी ऐसी आज्ञा सुनकर उनका कहा सब काम करनेलगे । जब बारह वर्ष बीते, तब वह फिर लोकभावन भगवान भूतनाथके निकट जा पहुँचे।४७।शंकर उनको देख करकेही बड़े प्रसन्नहो बोले, कि नरनाथ ! मैं तुम्हारे कार्य से बहुत संतुष्ट हुआहूं, पर हे शत्रु-दमन ! याजन कार्य करना ब्राह्मणों हीके लिये विधि बद्धहै, सो मैं स्वयं इस क्षण तुम्हारा याजन करने में प्रवृत्त नहीं हूंगा । धरतीपर दुर्वासा नाम से प्रख्यात महाभाग एक द्विजोत्तमहैं, वह मेराही अंशहै । वह तेजस्वी महर्षि मेरेनियोगसे तुम्हारा याज्य कार्य करेंगे । तुम यज्ञकी सामग्री बटोरो।५१।राजाश्वेतकि ने रुद्रकी आज्ञासे राजधानीमें

fices I shall grant your request if you can observe a vow of celibacy for twelve years and keep your fire burning by a constant pouring of butter for that period." The king did as he was told to do and after the lapse of twelve years he went again to Mahadev. Shankar was much pleased to see him and said, "I am much pleased by your work. But as Brahmans alone can preside at sacrifices, I shall not be able to do it myself. I shall, however, depute the great rishi Durvasa who is a part of mine on the earth, to do the work. You may collect materials for the sacrifice." The king returned to his capital and collected materials for the sacrifice according to the directions of Rudra. He then informed Mahadev that all was ready and requested to begin it on the next day. Rudra called Durvasa to

सम्भारो भूयोरुद्रमुपागमत । सम्भृतामममसम्भाराःसर्वोपकरणानिच ॥ ५३ ॥ त्व
त्प्रसादान्महादेव श्वोमेदीक्षाभवेदिति । एतच्छ्रुत्वातुवचनं तस्यराज्ञोमहात्मनः ।५४।
दुर्वाससंसमाहूय रुद्रोवचनमब्रवीत् । एषराजामहाभागः श्वेतकिर्द्विजसत्तम ॥५५॥
एनंयाजयविप्रेन्द्र मन्नियोगेनभूमिपम् । वाढमित्येववचनं रुद्रंत्वृषिरुवाचह ॥ ५६ ॥
ततःसत्रंसमभवत्तस्य राज्ञोमहात्मनः । यथाविधियथाकालं यथोक्तंबहुदक्षिणम् ५७॥
तस्मिन्परिसमाप्ततु राज्ञःसत्रेमहात्मनः । दुर्वाससाभ्यनुज्ञाता विप्रतस्थुःस्मयाजकाः ।
॥ ५८ ॥ येतत्रदीक्षिताःसर्वे सदस्याश्चमहौजसः । सोऽपिराजन्महाभागः स्वपुरंप्रावि
शत्तदा ॥ ५९ ॥ ततोभगवतोवह्नेर्विकारः समजायत । तेजसाविप्रहीनश्च ग्लानिश्चै
नंसमाविशत् ॥ ६० ॥ सलक्षयित्वाचात्मानं तेजोहीनंहुताशनः । जगामसदनंपुण्यं
ब्रह्मणोलोकपूजितम् ॥ ६१ ॥ तत्रब्रह्माणमासीन मिदंवचनमब्रवीत् । तेजसाविप्रही
नोऽस्मि बलेनचजगत्पते ॥ ६२ ॥ इच्छेयंत्वत्प्रसादेन स्वात्मनःप्रकृतिंस्थिराम् ।

लौटकर यज्ञकी सामग्री फिर इकट्ठीकी और पुनः रुद्र के यहां पहुँचकर बोले, कि हे प्रभो महादेव ! मैंने सब वस्तु तथा उपकरण संग्रह कियेहैं मेरी प्रार्थना यहहै, कि आप की कृपासे कल मेरी दीक्षा होवे । भगवान् रुद्र उन महात्मा महीपालकी यहबात सुन कर दुर्वासाको बुलाकर बोले, कि विप्रवर ! इन महीपालका नाम श्वेतकि है।५५।तुममेरे नियोग से इनका याज्य कार्य करो । ऋषिने स्वीकार किया अनन्तर महात्मा महीपति की अभिलाषानुसार जैसे कहागया था, वैसेही भूरिदक्षिण यज्ञ प्रारम्भ हुआ । हेमहाराज अनन्तर महायज्ञहोजाने पर जो सब बडे तेजस्वी याजक और सदस्य लोग उसमें दीक्षित हुए थे दुर्वासाकी आज्ञा से अपने अपने घरको चले गये । अनन्तर महाभाग दुर्वासाभी अपने आश्रम को पधारे । महाराज ! उस भारी यज्ञ में अपरिमित हव्य पीकर भगवान हुताशन को विकारहोगया । वह दिन पर दिन तेजसे हाथ धोनेलगे । उन के अंग में ग्लानि जान पडनेलगी।६०।वह अपनेको कम तेजस्वी होते देखकर सर्व लोकोंसे पूजेजाते हुए पवित्र ब्रह्मलोक में गये । आगे वहां बैठेहुए श्रीब्रह्माजी से बोले, कि हेजगत्पते ! अब मैं तेजरहित और दुर्बल हुआहूं , आपकी कृपासे अपनी पूर्व प्रकृति को पाना चाहता

him and said, " This is king Shwetaki. I request you to preside at his sacrifice." The rishi consented and the sacrifice began according to the king's wishes. 57. At the completion of the sacrifice, the Brahmans who had helped in the work were allowed to return home and Durvasa returned to his own hermitage. Agni fell sick by drinking too much of the sacrificial butter and began to lose his glory day after day. The skin of his body became loathsome. 60. Seeing his body so attacked by disease, he went to Brahma and said, " Lord of the world, I am becoming powerless and my glory is on

एतच्छ्रुत्वाहुवबह्मान्भगवान् सर्वलोककृत् ॥ ६३ ॥ हव्यवाहमिदंवाक्यमुवाच प्रहसन्निव । त्वयाद्वादशवर्षाणि वसोर्द्धाराहुतंहविः ॥ ६४ ॥ उपयुक्तंमहाभाग तेनत्वां ग्लानिराविशत् । तेजसाविप्रहीनत्वात् सहसाहव्यवाहन ॥ ६५ ॥ मागमस्त्वंव्यथां वह्ने प्रकृतिस्थोभविष्यसि । पुरादेवनियोगेन यत्त्वयाभस्मसात्कृतम् ॥ ६६ ॥ आलयंदेवशत्रूणां सुघोरंखाण्डवंवनम् । तत्रसर्वाणिसत्त्वानि निवसन्तिविभावसो ॥ ॥ ६७ ॥ तेषांत्वंमेदसातृप्तः प्रकृतिस्थोभविष्यसि । गच्छशीघ्रंप्रदग्धुंत्वं ततोमोक्ष्यसेकिल्बिषात् ॥ ६८ ॥ एतच्छ्रुत्वातुवचनं परमेष्ठिमुखाच्च्युतम् । उत्तमंजवमास्थाय प्रदुद्रावहुताशनः ॥ ६९ ॥ आगम्यखाण्डवं दावमुत्तमंवीर्यमास्थितः । सहसाप्राज्वलच्चाग्निः क्रुद्धोवायुसमीरितः ॥ ७० ॥ प्रदीप्तंखाण्डवंदृष्ट्वा येस्युस्तत्रनिवासिनः । परमंयत्नमातिष्ठन् पावकस्यप्रशान्तये ॥७१॥ करैस्तुकरिणःशीघ्रं जलमादायसत्वराः । सिषिचुःपावकंक्रुद्धाः शतशोऽथसहस्रशः ॥ ७२ ॥ बहुशीर्षास्ततोनागाः शिरोभि-

हूं । सर्वलोकोंके धाता भगवान अग्नि का यह वचन सुनकर हँसकर बोले कि हेमहाभाग तुमने बारह वर्ष बिना रोक टोक वसुधारा से आहुति दियेहुए हव्य को पानकियाहै, सो तुमको ऐसी ग्लानि हुई है । हे हव्यवाहन ! तुम कमतेज हुएहो ।६५। इस से एकायक दुःखी मत होना, तुम स्वास्थ्य को प्राप्त करोगे । हे विभावसो ! पूर्वकाल में तुमने देवों के नियोगसे देवों के शत्रुओंकी वासभूमि जिस कठोर खाण्डव बनको भस्म कियाथा, अब उस स्थानमें अनेक प्रकारके प्राणी बसतेहैं, तुम उनकी चर्बीसे तृप्तहो कर अपनी प्रकृति को प्राप्त कर सकोगे, सो उस खाण्डव को जलाने के लिये शीघ्र जाओ । उसको जलाने से तुम्हारी यह ग्लानि दूरहोजायगी।६८।अग्नि पितामहके मुखसे यह वचन सुन उसी क्षण बड़े वेगसे दौड़े और घोर खाण्डव बन में शीघ्र पहुंच क्रोधसे एकायक पवन के सहारे जलउठे।७०।खाण्डव बनवासी सबप्राणी उस बनको जलते देखकर आग बुझाने के लिये निज शक्तिके अनुसार प्रयत्न करनेलगे । सैकड़ों सहस्रों हस्ती क्रोधकर शीघ्रता के साथ सूंड़से तुरन्त जल उठाकर सींचने लगे।७०।और अनेक सिर वाले सर्प क्रोध से

the decrease. I wish to regain my former strength.' Brahma the lord of the world smiled at his words and said, "You have drunk the sacrificial butter constantly for twelve years and are, therefore, attacked by this loathsome disease. You have lost your power.65. Be not grieved, for you will regain your former strength. The forest of Khandav, the residing place of the enemies of gods, which you burnt once, is now occupied by various living beings. You can recoup your lost energy by burning the forest and drinking the fat of the animals living therein. Your disease will disappear after burning the forest."68. Hearing these words from Brahma, Agni ran

ज्जलसन्ततिम् । मुमुचुःपावकाभ्याशे सत्वराःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ ७३ ॥ तथैवान्यानि सत्त्वानि नानाप्रहरणोद्यमैः । विलयंपावकं शीघ्रमनयन्भरतर्षभ ।७४। अनेनतुप्रकारेण भूयोभूयश्चप्रज्वलन् । सप्तकृत्वःप्रशामितः खाण्डवेहव्यवाहनः ॥ ७५ ॥

इत्यादिपर्वणि खाण्डवदाहपर्वणि अग्निपराभवे चतुर्विंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः।२२४।

वैशम्पायन उवाच । सतुनैराश्यमापन्नः सदाग्लानिसमन्वितः । पितामहमुपागच्छत्तंसंक्रुद्धोहव्यवाहन ॥ १ ॥ तच्चसर्वंयथान्यायं ब्रह्मणेसन्यवेदयत् । उवाचचैनंभगवान्मूहूर्त्तं सविचिन्त्यतु ॥ २ ॥ उपायःपरिदृष्टो मेयथात्वंधक्ष्यसेऽनघ । खाण्डवंदावमद्यैवमिषतोऽस्यशचीपतेः ॥३॥ नरनारायणौयौतौ पूर्वदेवौविभावसो । संप्राप्तौमानुषे लोकेकार्य्यार्थंहि दिवौकसाम् ॥ ४ ॥ अर्जुनंवासुदेवञ्च यौतौलोकोऽभिमन्यते । ता-

झुझाकर वेगपूर्वक बहुत फणों से अग्नि पर जल छोडने लगे । हे भरतकुल प्रदीप वैसेही दूसरे प्राणियों नेभी जल छिड़कना शाखा पीटना आदि अनेक उपायों से शीघ्र आग बुझाई । हव्यवाहन खाण्डवबन में बारम्बार, यहां तक कि सातवार जल उठे थे, पर इस प्रकार रोके जाने के कारण उनका मनोरथ सफल नहीं होसका ॥ ७५

अध्याय २२५ ॥

वैशम्पायनजी बोले, कि अनन्तर ग्लानियुक्त हव्यवाहन खाण्डवदाहकी आशा छोड कर क्रोधित चित्त से पितामह श्रीब्रह्माजीके निकट गये और ब्योरेवार उनसे सब अहवाल कह सुनाया उस भगवानने पलभर सोचकर कहा।२। कि हेअनघ ! मैंने इसका एक अच्छा उपाय निश्चय कियाहै, जिससे आजही तुम देवराज के सामने खाण्डवबन जला सकोगे । हे विभावसो नरनारायण नामक उन सनातन दो देवताओंने देवकार्यके लिये मर्त्यलोकमें अवतार लियाहै ।४। लोग उनको अर्जुन और वासुदेव करके जानतेहैं । अब

at once to the forest of Khandav and began to burn it by the help of wind. The inhabitants of the forest tried their best to extinguish the fire. Hundreds of elephants brought water in their trunks and began to pour it over.72.Other animals joined them in pouring water and at last extinguished it. Seven time he made attempt to burn it but failed.75.

CHAPTER CCXXV

Vaishampayan said that being unable to burn the forest, Agni went again to Brahma the grand-father and told him all that had happened. Brahma reflected upon the matter for a short while and said, " I have devised a good remedy for this evil. Acting upon it, you will be able to burn the forest in spite of Indra: 3. Nar and Narayan, the two eternal gods, are born on the earth to perform the work of gods. They are called Arjun and Vasudev by the people.

वेतौसहितावेहि खाण्डवस्यसमीपतः ॥ ५ ॥ तौत्वंयाचस्वसाहाय्ये दाहार्थंखाण्डव-
स्यच । ततोशक्ष्यसितंदावं रक्षितंत्रिदशैरपि ॥ ६ ॥ तौतुसत्वानिसर्वाणि यत्नतोवार
यिष्यतः । देवराजश्चसहितौ तत्रमेनास्तिसंशयः ॥ ७ ॥ एतच्छ्रुत्वातुवचनं त्वरितो
हव्यवाहनः । कृष्णपार्थावुपागम्य यमर्थंत्वभ्यभाषत ॥८॥ तन्तेकथितवानस्मि पूर्वमेव
नृपोत्तम । तच्छ्रुत्वावचनं त्वग्नेर्बीभत्सुर्जातवेदसम् ॥९॥ अब्रवीन्नृपशार्दूल तत्का-
लसदृशंवचः । दिधक्षुंखाण्डवं दावमकामस्यशतक्रितोः ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच । उत्तमा
स्त्राणिमेसन्ति दिव्यानिचबहूनिच । यैरहंशक्नुयांयोद्धुमपि वज्रधरानबहून् ॥ ११ ॥
धनुर्मेनास्तिभगवन् बाहुवीर्य्येणसम्मितम् । कुर्वतःसमरेयत्नं वेगंयद्विषहेन्मम ॥१२॥
शरैश्चमेऽर्थोबहुभिरक्षयैः क्षिप्रमस्यतः । नहिवोढुंरथःशक्तः शरान्ममयथेप्सितान् ॥१३॥
अश्वांश्चादिव्यानिच्छेयंपाण्डुरान्वातरंहसः । रथश्चमेघनिर्घोषंसूर्य्यप्रतिमतेजसम् ।१४।

वे दोनों खाण्डव के निकट विराजते हैं । तुम खाण्डवदाहके लिये उस से सहाय मांगो,
तब वन सब देवों से रक्षितहोने परभी जला सकोगे । वासुदेव और अर्जुन वहांके प्राणियों
को विना सन्देह रोक सकेंगे । हव्यवाहन यह सुन कर तुरंत कृष्णार्जुन के पास
गये । हे नृपोत्तम अग्नि ने उन के सामने पहुँच कर जो कहाथा, वह मैंने पहिलेही आप
से कहा है । ७ । हे नृपशार्दूल इसके पीछे अर्जुन इंद्र की विना सम्मति खाण्डववन के
जलानेकी इच्छा करनेवाले अग्निसे बोले।१०।कि हेभगवन् मेरे अनेक दिव्यअस्त्रहैं, उनसे
मैं वज्रधारी सैकडों इन्द्रसे युद्धकर सकताहूं, पर युद्धकाल में मेरा वेग सर्वप्रकारसे सह
ले ऐसा मेरेभुजवीर्य के योग्य चाप नहीं है, विशेष मुझको शीघ्रतासे वाण छोडने पडेंगे
सो अनेक अक्षय वाणों का प्रयोजनहै । और जो मेरा रथ है, वह प्रयोजनके अनुसार
उन वाणों को ले नहीं सकेगा, सो पीत वरण वायु समान वेगवान दिव्य घोडे और
बादलसदृश गरजनेवाले सूर्यकीभांति तेजयुक्त रथका प्रयोजनहोगा।१४।और इन माधवके

They are, at present, staying near Khandav. You must ask them to give you help in burning the forest and you shall be able to do your work even if all the gods come together to protect it. Vasudev and Arjun will, no doubt, obstruct the animals' way."7. Having heard this, Angni went at once to krishn and Arjun and asked their help. Thereupon, Arjun spoke against the consent of Indra to Agni who was eager to burn the forest, saying "I have various heavenly weapons with which I can fight hundreds of Indras, bearers of Vajra, but I have no bow that can bear my swiftness at the time of action. Moreover, I shall have to shoot my arrows fast enough and shall require an inexhaustible supply of arrows for that purpose. My chariot is not large enough to contain the supply of arrows, I, therefore want heavenly horses of yellow colour swift

तथाकृष्णस्यवीर्येणनायुधंविद्यतेसमम्। येननागानपिशाचांश्चनिहन्यात्माधवोरणे १५
उपायंकर्मसिद्धौच भगवन्नवक्तुमर्हसि । निवारयेयंयेनेन्द्रं वर्षमाणंमहावने ॥ १६ ॥
पौरुषेणतुयत्कार्य्यं तत्कर्त्तारौस्वपावक। करणानिसमर्थानि भगवन्दातुमर्हसि ।१७।
इत्यादिपर्वणि खाण्डवदाहपर्वणि अर्जुनाग्निसंवादे पंचविंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः२२५

वैशम्पायन उवाच। एवमुक्तःसभगवान् धूमकेतुर्हुताशनः। चिन्तयामासवरुणं लोकपालंदिदृक्षया ॥ १ ॥ आदित्यमुदकेदेवं निवसन्तंजलेश्वरम् । सचतच्चिन्तितं ज्ञात्वा दर्शयामासपावकम् ॥ २ ॥ तमब्रवीद्धूमकेतुः प्रतिगृह्यजलेश्वरम्। चतुर्थंलोकपालानां देवदेवंसनातनम् ॥ ३ ॥ सोमेनराज्ञायद्दत्तं धनुश्चैवेषुधीचते। तत्प्रयच्छोभयंशीघ्रं रथञ्चकपिलक्षणम् ॥ ४ ॥ कार्य्यंचसुमहत्पार्थो गाण्डीवेनकरिष्यति ।

भुजवीर्य के योग्य कोई अस्त्र नहीं है, कि जिससे यह रणभूमि में पिशाच और सर्पों को गिरावें। अतएव हे भगवन् ऐसा कोई उपाय कहें, कि जिससे देवराजके इस बडे वन में वर्षा करने से हम उनको रोकसकें और यह बडा कार्य भलीभांति पूराहो। हे पावक पौरुषसे जिसकी साधनाहोगी, वह हम करने को प्रस्तुत हैं, पर युद्धकरने के लिये जिन उपकरणोंकी आवश्यकताहो वह आप हमको देवें ॥ १७ ॥

अध्याय २२६ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर भगवान धूमकेतु हुताशनने अर्जुनका यह वचनसुन जलमेंरहनेवाले जलनाथ अदितिनन्दन लोकपाल वरुणजीकी भेटके लिये उनको स्मरणकिया। जलनाथ वरुण उनका स्मरण करना जानकर उनके सम्मुख आ पहुँचे ।२। हुताशन चौथे लोकपाल उन सनातन देवदेव जलाधिपका आदर पूर्वक स्वागत कर बोले, कि राजा सोमने तुमको जो तूणीर और शरासन तथा कपिध्वज रथदियाथा, वह सब तुरन्त देदो ।४।

like the wind and a chariot shining like the sun and rumbling like thunder.14.This Madhav has no weapon, worthy the prowess of his arms, with which to fell the Rakshases and Nagas at the time of battle. *Bhagwan*, you will have to supply the means of resisting the downpour of Indra's rain over the forest and performing the work well. We are ready to exert our energy to its full extent in doing it if you will supply us the materials of war required for the purpose."17.

CHAPTER CCXXVI

Vaishampayan said that having heard this from Arjun Bhagwan Agni, called Varun the son of Aditi, lord of water and protector of the world. Varun at once appeared there. 2. Agni gave proper respect and welcome to the fourth lord of the world (Varun) lord of water and eternal god, and said, "Give me without delay the

चक्रेण वासुदेवश्च तन्ममाद्य प्रदीयताम् ॥ ५ ॥ ददानीत्येव वरुणः पावकं प्रत्यभाषत ।
तदद्भुतं महावीर्यं यशःकीर्त्तिविवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ सर्वशस्त्रैरनाधृष्यं सर्वशस्त्रप्रमाथि च ।
सर्वायुधमहामात्रं परसैन्यप्रधर्षणम् ॥ ७ ॥ एकं शतसहस्रेण संमितं राष्ट्रवर्द्धनम् । चि
त्रमुच्चावचैर्वर्णैः शोभितं श्लक्ष्णमव्रणम् ॥ ८ ॥ देवदानवगन्धर्वैः पूजितं शाश्वतीः समाः ।
प्रादाच्चैव धनूरत्नमक्षय्यौ च महेषुधी ॥ ९ ॥ रथं च दिव्याश्वयुजं कपिप्रवरकेतनम् ।
उपेतं राजतैरश्वैर्गान्धर्वैर्हेममालिभिः ॥ १० ॥ पाण्डुराभ्रप्रतीकाशैर्मनोवायुसमैर्जवे ।
सर्वोपकरणैर्युक्तमजय्यं देवदानवैः ॥ ११ ॥ भानुमन्तं महाघोषं सर्वरत्नमनोरमम् ।
ससर्ज यं सुतपसा भौमनो भुवनप्रभुः ॥ १२ ॥ प्रजापतिरनिर्देश्यं यस्य रूपं रवेरिव ।
यं स्म सोमः समारुह्य दानवानजयत् प्रभुः ॥ १३ ॥ नवमेघप्रतीकाशं ज्वलन्तमिव च श्रिया ।

पार्थ उस गाण्डीव शरासन से और वासुदेव चक्र से बड़ा भारी कार्य पूरा करेंगे। सो वह आजही मुझको दो। वरुणजी ने देताहूं कह कर मानलिया। अनन्तर जो धनुष बड़ा वीर्यवन्त, सर्वशस्त्र मथने योग्य, यश और कीर्त्ति बढाने वाला, शस्त्रोंसे काटेजानेके अयोग्य, सम्पूर्ण अस्त्रोंसे बड़ा, शत्रुसेनाको नष्टकरनेवाला राज्य बढ़ानेवाला सैकड़ो सहस्रों चापका सामना करने परभी न टूटने फूटने वाला, रंग बिरंग के सुन्दर सुन्दर वरणों से रंगा, मनोहर और जिसकी पूजा देव दानव गन्धर्व सदा किया करते हैं। ८। वरुणजी ने ऐसाही अद्भुत धनुष और दो ऐसे तूणीर, कि जिनमें वाण रखने से कभी नहीं चुकते दे दिये। जो रथ मन और पवनकी भांति वेगवान, पाण्डुवर्ण बादल सदृश चांदीकी नाईं उजालेवाला, सुवर्ण सुशोभित गन्धर्वों के नगर के घोड़ोंसे खींचा जाता है, जो दिव्यास्त्र और सब उपकरणों से भरा और देव दानवों से अजेय, जिसकी घर घराहट बड़ी दूरसे सुनाई देती है, जिसको भुवन के प्रभु प्रजापति विश्वकर्मा ने बड़ी तपस्यासे बनाया था, जिसकारूप सूर्य्य सदृश दृष्टिसे देखनेके अयोग्य, जिसपर चढ़कर प्रभुसोमने दानवों को परास्त किया था, जिसका उजाला बहुत अधिक है, जिसके किरण दूर से

bow, the quiver and the chariot bearing the ensign of monkey, given you by king Som. 4. Parth with that bow called Gandiv and Vasudev with discus, will perform a great work. Give me, therefore all the things to day." Varun consented and gave the bow which was very strong, able to defeat all weapons, giver of glory and prowess to the wielder, not to be cut by any weapon, greater than all other weapons dertroyer of enemies' forces, conquerer of kingdoms, able to withstand hundreds and thousands of bows without being broken or cut by them, of many colours, heart enchanting and worshipped by gods and Danavas. 8. With the bow *Barun* gave two inexhaustible quivers full of arrows and a chariot swift like the wind, pale coloured, bright like silver clouds, drawn by

आश्रितौतंरथश्रेष्ठं शक्रायुधसमावुभौ ॥ १४ ॥ तत्पर्णीयासुरुचिरा ध्वजयष्टिरनुत्तमा। तस्यान्तुवानरोदिव्यः सिंहशार्दूलकेतनः ॥ १५ ॥ दिधक्षन्निवतत्रस्म संस्थितो मूर्द्ध-न्यशोभत । ध्वजेभूतानितत्रासन् विविधानिमहान्तिच । नादेनरिपुसैन्यानां येषां-संज्ञाप्रणश्यति । १६। सतंनानापताकाभिः शोभितंरथसत्तमम् । प्रदक्षिणमुपावृत्य दैवतेभ्यःप्रणम्यच ॥ १७ ॥ सन्नद्धःकवचीखड्गी बद्धगोधाङ्गुलित्रकः। आरुरोहतदा पार्थो विमानंसुकृतीयथा ॥ १८ ॥ तच्चदिव्यंधनुश्रेष्ठंब्रह्मणा निर्मितंपुरा । गाण्डी-वमुपसंगृह्य बभूवमुदितोऽर्जुनः ॥ १९ ॥ हुताशनंपुरस्कृत्य ततस्तदपिवीर्य्यवान् । जग्राहबलमास्थाय ज्ययाचयुयुजेधनुः ॥२०॥ मौर्व्यान्तुयोज्यमानायां बलिनापाण्डवे नह । येऽश्रृण्वनकूजितंतत्र तेषांवैव्यथितंमनः ॥ २१ ॥ लब्ध्वा रथंधनुश्चैव तथाक्षय्ये महेषुधी । बभूवकल्यःकौन्तेयः प्रहृष्टःसाह्यकर्मणि ॥ २२ ॥ वज्रनाभंततश्चक्रं ददौ

अनुभव होते हैं, जो अकाशतल के नये बादल समान दीख पड़ता है, जिसके ऊपर इन्द्र धनुष सदृश शोभायमान मनोहर परम सुन्दर सुनहला झण्डेकी लकड़ी के ऊपर सिंह शार्दूल समान पराक्रमी सुन्दर दिव्य बन्दर मानो सर्वलोकों को जलाने की इच्छा से विराज रहा है, और ध्वजा पताकामें प्रकटित भांति भांति के भूतों के गम्भीर कोलाहल को सुन कर शत्रु सेना की चेतना जाती रहती है, । १६ । वरुणजी ने ऐसा कपिवर सहित ध्वज युक्त रथ दिया । अर्ज्जुन खड्ग कवच गोधा और अंग रक्षक पहिनकर स्नानकर अनेक पताकाओं से सुशोभित उस अनुपम सुन्दर रथकी परिक्रमा देकर देवोंको प्रणामकर पुण्यात्मा जन के विमान पर चढ़नेकी भांति उसपर चढे और ब्रह्मा के बनाये उस गाण्डीव श्रेष्ठ शरासनको आनन्दसे लेलिया । अनन्तर वीर्य्यवन्त अर्जुनने हुताशन के आगे शिरझुका, बल प्रकटकर उस गाण्डीवमें गुणचढाया। बली पाण्डुनन्दनके गुण चढाने के काल में उसका शब्द जिस जिस के कानोंमें पड़ा, बस उसका हृदय थरथराने लगा, अर्जुन इसप्रकार से रथ, धनुष और दोमहान अक्षय

horses of the country of Gandharvas with gold trappings. The chariot was full of heavenly weapons and other requisites of war, unconquerable by gods and Danavas, the rumbling of whose wheels was heard far and wide, made by Vishwakarma the maker of the world with great exertion and application, dazzling the eyes of the beholders like the sun; on which lord Som rode to conquer the Danavas; whose bright rays were seen from a far distance; like the new clouds under the sky; on which, beautiful like the rainbow, was seen on the pole of the golden standard the figure of a monkey, bold as a lion, bright and full of prowess as if ready to burn the whole world; and the dreadful and deep sound of whose standard made the hearts of enemies tremble with fear. 16. Such was the chariot

कृष्णायपावकः । आग्नेयमस्त्रंदायितं सचकल्योऽभवत्तदा ॥ २३ ॥ अब्रवीत्पावकश्चै-
वमेनंमधुसूदन । अमानुषानपिरणे जेष्यसित्वमसंशयम् ॥ २४ ॥ अनेनतुमनुष्या-
णां देवानामपिचाहवे । रक्षःपिशाचदैत्यानां नागानांचाधिकस्तथा ॥ २५ ॥ भवि-
ष्यसिनसन्देहः प्रवरोऽपिनिबर्हणे । क्षिप्तंक्षिप्तंरणेचैतत्त्वयामाधवशत्रुषु । हत्वाप्रति-
हतंसंख्ये पाणिमेष्यतितत्पुनः ॥ २६ ॥ वरुणश्चददौतस्मै गदामशनिनिःस्वनाम् । दै-
त्यान्तकरणींघोरां नाम्नाकौमोदकींप्रभुः ॥ २७ ॥ ततःपावकमब्रूतां प्रहृष्टावर्जुनाच्यु-
तौ । कृतास्त्रौशस्त्रसम्पन्नौ रथिनौध्वजिनावपि ॥ २८ ॥ कल्यौस्वोभगवन् योद्धुमपि
सर्वैःसुरासुरैः । किंपुनर्वज्रिणैकेन पन्नगार्थेयुयुत्सुना ॥ २९ ॥ अर्जुन उवाच । चक्र
पाणिर्हृषीकेशो विचरन्युधिवीर्यवान् । त्रिषुलोकेषुतन्नास्ति यन्नकुर्याज्जनार्दनः ॥ ३० ॥

तूणीर पाकर आनन्दित चित्तसे हुताशन की सहायता देनेको समर्थ हुए, अनन्तर हुताशनने श्रीकृष्णचन्द्र को चक्र और दयित आग्नेयास्त्र देदिया, इस से वहभी तब अग्निकी सहायता करने के योग्य बने ।२३। आगे अग्नि ने उनसे कहा, कि हे मधुसूदन ! तुम युद्धस्थल में इस अस्त्र से बिना संदेह मानवके अतिरिक्त अन्य प्राणियों कोभी परास्त कर सकोगे । तुम रणस्थलमें इस अस्त्र से देव, दानव, राक्षस, पिशाच, नाग और मनुष्य इन से निःसंदेह अधिक शक्तिवान होगे । हे माधव ! यह अस्त्र यदि शत्रुदल पर बार बार फेंका जाय तौभी बिना रुकावट शत्रुनाश करता हुआ फिर तुम्हारे हाथमें आजायगा ।२६। अनन्तर वरुणजी ने उनको दैत्यकुलनाशी घोररूपी वज्र समान गरजने वाली कौमुदकी गदादी तब अस्त्रमें पण्डित अर्जुन और श्रीकृष्ण ध्वजा, रथ और शस्त्रादि प्राप्त कर प्रसन्न चित्त से अग्निसे बोले, कि हे भगवन ! अब हम लोग सम्पूर्ण सुरासुर से लडनेको समर्थ हुए, सर्प रक्षा के लिये युद्ध चाहने वाले अकेले वज्रधारी इन्द्र से लडना हमारे लिये कोई बड़ी बात न रही ।२९। अर्जुन बोले, कि हे पावक ! तीनो लोकोमें ऐसा पदार्थही नहीं है, कि जिसे वीर्यवन्त चक्रपाणि जनार्दन रणस्थलमें टहलते हुए इस चक्रसे मार नहीं सकेंगे ।

with monkey's ensign given by Kuver. Having washed himself and armed with sword, and coat of mail, Arjun went round the chariot and having bowed down to gods, rode it as the good ride the heavenly cars. 18. He took up with pleasure the good bow Gandiv, made by *Brahma* himself. He then bowed to Agni and fixed with his might an arrow to the bow. The sound of drawing the bow made the minds of the hearers tremble with fear. Arjun was thus able to help Agni with the chariot, the bow, and the two inexhaustible quivers. Agni gave Krishna the discus and a fire-arm by which he was able to help the former. 23. Agni then said, "*By* the help of this weapon you will be able to defeat not only human beings but others as well. *By* the help of this weapons you will find your-

गाण्डीवंधनुरादाय तथाक्षय्येमहेषुधी । अहमप्युत्सहेलोकान विजेतुंयुधि
पावक ॥ ३१ ॥ सर्वतःपरिवार्य्यैवं दावमेतंमहाप्रभो । कामंसम्प्रज्वलाद्यैव कल्पौस्वः
साह्यकर्मणि ॥३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तःसभगवान् दाशार्हेणार्जुनेनच ।
तैजसंरूपमास्थाय दावंदग्धुंप्रचक्रमे ॥ ३३ ॥ सर्वतःपरिवार्य्याथ सप्तार्च्चिर्ज्वलनस्त
था । ददाहखाण्डवंदावं युगान्तमिवदर्शयन् ॥ ३४ ॥ प्रतिगृह्यसमाविश्य तद्वनंभरत
र्षभ । मेघस्तनितनिर्घोषः सर्वभूतान्यकम्पयत् ॥ ३५ ॥ दह्यतस्तस्यचबभौ रूपंदाव
स्यभारत । मेरोरिवनगेन्द्रस्य कीर्णस्यांशुमतोऽशुभिः ॥ ३६ ॥ इत्यादिपर्वणि
खाण्डवदाहपर्वणि गाण्डीवाद्दिदाने षड्विंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २२६ ॥

मैं भी यह अक्षय तूणीर और गाण्डीव धनुष लेकर सम्पूर्ण लोक परास्त करने का साहस कर सकता हूं सो आप आजही इच्छा नुसार इस वडे वनको सम्पूर्ण रूपसे घेर कर जलावें, हम आपको सहारा देनेको समर्थ हुए हैं ।३२। वैशम्पायनने कहा, कि भगवान हुताशन अर्जुन और श्रीकृष्णचन्द्र के यह वचन सुनकर पावक तैजसका रूपधारणकर उस वनको जलाने लगे। तब वह सात शिखा फैलाकर सब ओर फैलकर खाण्डववन जलाने लगे। उस काल में जान पडनेलगा, कि मानो युगके अंतहोने का काल प्रकटित होरहाहै हेभरतश्रेष्ठ प्रज्वलित अग्निदेव उस बडेभारी वनको पकड कर उस में घुसकर बादलकी गडगडाहटकी भांति भयानक शब्दसे सब प्राणियोंको थरथरानेलगे। हेभारत! तब जलतेहुए उस वनने सूर्यकी किरणोंसे रंगेहुए सुमेरुपर्वतका स्वरूप धारण किया।३६।

self stronger than gods, Danavas, Rakshases Pishachas, Nagas, and men at the time of battle. This weapon thrown again and again will destroy the enemies without resistance and will return to you.26. Varun made him the present of a mace, the destroyer of Daityas, and dreadful like Vajra. Dexterous in the use of weapons, Arjun and Krishn, having got the chariot with standard and arms, said cheerfully to Agni, "We are now prepared to fight against gods and Asurs. To encounter Indra alone wishing to protect the serpent is nothing to us."29. There is nothing in the world which Janardan cannot destroy in battle by the help of this discus. I dare challenge the whole world with this bow and the inexhaustible quivers of arrows. You may burn the forest to day and surround it on all sides. We are now able to help you.32. Vaishampayan said that having heard this from Krishna and Arjun, Agni assumed his proper shape and began to burn the forest. Spreading his seven flames throughout the forest he surrounded it on all sides. It appeared as if the world was coming to an end. The burning fire having caught the extensive forest, entered into the heart of it and trembled the hearts of the inmates by its dreadful uproar. The forest, then looked like Mount Meru coloured by the rays of the Sun.36.

वैशम्पायन उवाच । तौरथाभ्यांरथिश्रेष्ठौ दावस्योभयतःस्थितौ । दिक्षुसर्वासु भूतानां चक्राते कदनंमहत् ॥ १ ॥ यत्रयत्रचदृश्यन्ते प्राणिनःखाण्डवालयाः । पलायन्तःप्रवीरौतौ तत्रतत्राभ्यधावताम ॥ २ ॥ छिद्रंनस्मप्रपश्यन्ति रथयोराशुचारिणोः । आविद्धावेवदृश्येते रथिनौतौरथोत्तमौ ॥ ३ ॥ खाण्डवेदह्यमानेतु भूताःशतसहस्रशः । उत्पेतुर्भैरवान्नादान् विनदन्तः समन्ततः ॥ ४ ॥ दग्धैकदेशावहवो निष्टप्ताश्चतथापरे । स्फुटिताक्षाविशीर्णाश्च विप्लुताश्चतथापरे ॥ ५ ॥ समालिङ्ग्यसुतानन्ये पितॄन्भ्रातॄनथापरे । त्यक्तुंनशेकुःस्नेहेन तत्रैवनिधनंगताः ॥ ६ ॥ सन्दष्टदशनाश्चान्ये समुत्पेतुरनेकशः । ततस्तेऽतीवघूर्णन्तः पुनरग्नौप्रपेदिरे ॥ ७ ॥ दग्धपक्षाक्षिचरणा विचेष्टन्तोमहीतले । तत्रतत्रस्मदृश्यन्ते विनश्यन्तःशरीरिणः ॥ ८ ॥ जलाशयेषुतप्तेषु

अध्याय २२७ ॥

वैशम्पायन ने कहा । कि अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण और अर्जुन रथपरचढ़ कर उस बनकी दोनों ओर रहकर चारों ओरके प्राणियों को नष्ट करने लगे । खाण्डववासी प्राणी जहां जहां भागते दीखपड़े वे दोनों वीर तहां तहां दौड़नेलगे । २ । वे दोनों महारथी रथपर चढ़कर बन के चारों ओर इतना शीघ्र फिरने लगे, कि दोनों रथ आपस में जुड़ेहुए जानपड़नेलगे, उन में विछोह दीख नहीं पड़ा । खाण्डव बन के जलने से सैकड़ों सहस्रों प्राणी बड़ा कोलाहल मचातेहुए चारों ओर गिरने लगे । ४ । किसी किसी का एक एक अंग जलगया, कोई कोई अति ताप से जल भुनकर गिरगया, किसी किसी जन्तुकी आंखें फूटगयीं, कोई कोई दुबलाहोगया, कोई भय से दौड़ने लगे, किसी किसी प्राणीने बच्चे से, किसी किसीने पितासे किसी किसी ने भाईसे लिपटकर वासस्थलही में प्राण छोड़े, पर स्नेह वश उनको छोड़ नहीं सके । ६ । कोई२ दृढ़धारी दांत से दांत पीसता अनेक वार गिरता पड़ता और बहुत चक्कर खाता फिर आग में गिरने लगा । कोई पंख जलने, कोई नेत्र जलने अथवा कोई पांव जलने पर मृतदीख पड़नेलगा । ८ । वहांके

CHAHTER CCXXVII

Vaishampayan said that the best of charioteers Krishna and Arjun, having mounted their chariots, began to kill the inmates of the forest from all sides. They ran into whatever direction they saw the inmates of the forest running. 2. Both Maharathis drove so fast round the forest as to seem that their chariots were joined together. There was no separation seen between the two. Hundreds and thousands of living beings were seen falling into that burning forest. 4. Some were burnt in one part of the body, others were burnt altogether; some of the animals lost their eyes, others looked lean and were seen flying hither and thither. Some were clasping their young ones, others were clasped by their parents or

काध्यमानेषुवह्निना । गतसत्वाःस्मदृश्यन्ते कूर्ममत्स्याःसमन्ततः ॥ ९ ॥ शरीरैरपरे-
र्दीप्तैर्देहवन्त इवाग्नयः । अदृश्यन्तवनेतत्र प्राणिनःप्राणिसंक्षये ॥ १० ॥ कांश्चिदुत्पत
तःपार्थः शरैःसञ्छिद्यखण्डशः । पातयामासविहगान् प्रदीप्तेवसुरेतसि ॥ ११ ॥
तेशराचितसर्वाङ्गा निनदन्तोमहारवान् । ऊर्ध्वमुत्पत्यवेगेन निपेतुःखाण्डवेपुनः ।१२
शरैरभ्याहतानांच संघशःस्मवनौकसाम् । विरावःशुश्रुवेघोरः समुद्रस्येवमथ्यतः ।१३
वह्नेश्चापिप्रदीप्तस्य खमुत्पेतुर्महार्चिषः । जनयामासुरुद्वेगं सुमहान्तंदिवौकसाम् ।१४।
तेनार्चिषासुसन्तप्ता देवाःसर्षिपुरोगमाः । ततोजग्मुर्महात्मानः सर्वएवदिवौकसः ।
शतक्रतुंसहस्राक्षं देवेशमसुरार्दनम् ॥ १५ ॥ देवा ऊचुः । किन्न्विमेमानवाःसर्वे दह्य-
न्तेचित्रभानुना । कच्चिन्नसंक्षयःप्राप्तो लोकानाममरेश्वर ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच ।
तच्छ्रुत्वावृत्रहातेभ्यः स्वयमेवान्ववेक्ष्यच । खाण्डवस्यविमोक्षार्थं प्रययौहरिवाहनः ।

जलाशय अग्नि से तपने और उथल उठनेसे मछली कछुए आदि प्राणी इधर उधर मरे दिखाई देनेलगे । उस वन में देहियोंकी जो सब देह जली वह सब जली देह मानों भांति भांतिकी अग्निदेह के समान प्रतीतहोतीथी ।१०। उस वन से जो सब पक्षी उछल रहेथे, अर्जुन उनको बाणों से टुकडे टुकडे कर जलतेहुए अग्नि में गिराने लगे । वेप्राणी देह काटे जाने से बड़ा कोलाहलमचाते हुए वेगसे कुछ ऊपर चढकर फिर उसखाण्डव वनहीमें गिरनेलगे ।१२। समुद्र मथने के काल में जैसा घोरशब्द उठाथा वैसेही बाणोंसे घायल बनैले जानवरों का बडा कोलाहल सुन पड़ने लगा और जलतेहुए अग्निकी बडी बडी शिखायें देवों को घबराहट में डालनेवाली बन कर आकाश मण्डल में छागई।१४।अनन्तर महात्मा देवगण उस अग्निकी शिखाओंसे बहुत तपकर पुर में बसे ऋषियों के साथ असुरनाशी सहस्र नेत्र शतक्रतु सुरनाथ के पास गये और बोले, कि हे अमरनाथ ! क्या अग्नि इन अमरवृन्दको जला रहाहै क्या अब हम सब लोगोंका प्रलय काल आगयाहै।१६।वैशम्पायनने कहा, कि सिंहपर चढेहुए वृत्रनाशीने उन से यहसुनकर

brothers. They lost their lives, but did not leave them. 6. Some of the inmates gnashed their teeth in rage and fell reeling into the burning fire. Some had their feathers, eyes, or feet burnt and looked like dead.8. The resceptacles of water being heated by fire, their fish and tortoises were dead. The burning bodies of the inmates of the forest looked like bodies of fire.10.The birds trying to escape from fire were shot down by Arjun and fell again into fire. The wounded animals flew up with a great noise and fell down again. The noise of the wounded animals resembled that of the churning of the ocean and the flames of fire reaching the sky were terrifying to the gods.14.The gods feeling much the flames of fire went with rishis to Indra of thousand eyes and said, "Will fire burn down all

॥ १७ ॥ महतारथवृन्देन नानारूपेणवासवः। आकाशंसमवाकीर्य्य प्रववर्षसुरेश्वरः
॥ १८॥ ततोऽक्षमात्राव्यसृजन् धाराःशतसहस्रशः। चोदितादेवराजेन जलदाःखाण्ड
वंप्रति ॥ १९ ॥ असंप्राप्तास्तुता धारास्तेजसा जातवेदसः। खएवसमशुष्यन्त नका-
श्चित्पावकंगताः ॥ २० ततोनमुचिहाक्रुद्धो भृशमर्चिष्मतस्तदा। पुनरेवमहामेघैर-
म्भांसि व्यसृजद्बहु ॥ २१ ॥ अर्चिर्द्धाराभिसम्बद्धं धूमविद्युत्समाकुलम्। बभूवतद्व-
नंघोरं स्तनयित्नुसमाकुलम् ॥ २२ ॥

इत्यादिपर्वणि खाण्डवदाहपर्वणि इन्द्रक्रोधे सप्तविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः ॥२२७॥

वैशम्पायन उवाच। तस्याथवर्षतोवारि पाण्डवःप्रत्यवारयत्। शरवर्षेणवीभ-
त्सुरुत्तमास्त्राणि दर्शयन् ॥ १ ॥ खाण्डवञ्चवनंसर्वं पाण्डवोबहुभिःशरैः। प्राच्छा
सुनकर और स्वयं देखकर खाण्डववनकी रक्षाके लिये चल निकले।१८। उन्हों ने अनेक

महारथों से आकाशमण्डल को छाकर जल बर्षाना आरम्भ कर दिया। सैकडों बादल
देवराजकी आज्ञा से खाण्डवबन पर रथके पहियेकी लकड़ी के समानमोटी धारसे जल
वर्षाने लगे। सब मोटीधार अग्नि के तेजसे आकाशहीमें सूखगयीं, एकभी धार अग्नि
पर गिर नहीं सकी।२०। तब नमुचि सूदन इन्द्र बहुत क्रोधकर फिर बडेर बादलों से
अग्नि के ऊपर बहुत जल वर्षाने लगे। तब वह बड़ाभारी बन अग्निशिखा और जलधारा
से गीला धुआं और बिजली से मिला और ऊपरके बादलोंसे घिरा प्रकट होकर बड़ा
भयानक दीख पडने लगा ॥ २२ ॥

अध्याय २२८ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर पाण्डुनन्दन अर्जुन ने देवराज को उस प्रकार
जल वर्षाते देखकर अपने उत्तम अस्त्र प्रकटकरके वाण वर्षाकर उसको रोका। चन्द्रमा
जिसप्रकार ओस से जग को छा देताहै वैसेही अमेयात्मा पाण्डुनन्दनने सैकडों बाणों से

the gods? Has our end come?" 16. Vaishampayan said that the destroyer of Vritra having heard this from them saw it himself and riding his lion started to save the forest from being burnt. He began to pour down rain from the sky. Hundreds of clouds began to pour torrents of rain thick as the spokes of a wheel, but all the water was dried up in the way by the heat of fire and did not reach the earth. Indra was angry and rained yet harder. Then the great forest from the flames of fire and torrent of rain was changed into a column of smoke and surrounded by clouds and lightning was dreadful to behold. 22.

CHAPTER CCXXVIII

Vaishampayan said that Arjun the son of Pandu, seeing Indra's downpour of that excessive rain, obstructed it by his arrows. The

इयदमेयात्मानीहारेणेव चन्द्रमाः । २ ॥ नचस्मकिंचिच्छक्नोति भूतंनिश्चरितुंततः । सञ्छाद्यमानेखे वाणैरस्यतासव्यसाचिना ।' ३ ॥ तक्षकस्तुन तत्रासीन्नागराजो महाबलः । दह्यमानेवनेतस्मिन कुरुक्षेत्रेगतोहिस ॥ ४ ॥ अश्वसेनोऽभवत्तत्र तक्षकस्य सुतोबली । सयत्नमकरोत्तीव्रं मोक्षार्थं जातवेदसः ॥ ५ ॥ नशशाकसनिर्गन्तुं निरुद्धोऽर्जुनपत्रिभिः । मोक्षयामासतंमाता निगीर्य्यभुजगात्मजा ॥ ६ ॥ तस्यपूर्वंशिरोग्रस्तं पुच्छमस्यनिगीर्य्यते । निगीर्य्यमाणा साक्रामत्सुतं नागीमुमुक्षया ॥ ७ ॥ तस्याःशरेणतीक्ष्णेन पृथुधारेणपाण्डवः । शिरश्चिच्छेद गच्छन्त्यास्तामपश्यच्छचीपतिः ॥८॥ तंमुमोचयिषुर्वज्री वातवर्षेणपाण्डवम् । मोहयामास तत्कालमश्वसेनस्त्वमुच्यत ॥९॥ तांचमायांतदादृष्ट्वा घोरांनागेनवंचितः । द्विधात्रिधाचखगतान् प्राणिनः पाण्डवोऽच्छिनत् ॥ १० ॥ शशापतश्चतंक्रुद्धो वीभत्सुर्जिह्मगामिनम् । पावकोवासुदेवश्चाप्यप-

सम्पूर्ण खाण्डव वनको छिपाया । २ । वहांका आकाशमण्डल सव्यसाची धनञ्जय के फेंके वाणों से ऐसा ढंपा, कि कोई प्राणी वहां से निकल नहीं सका । पर महावली सर्पराज तक्षक उससमय वहां नहीं था । जव खाण्डवदाह आरम्भहुआ था, तब कुरुक्षेत्र में गया था ।४। उसका पुत्र बली अश्वसेन वहां था । तक्षक के उस पुत्र ने अग्नि से निकलनेकी वडी चेष्टाकी, पर अर्जुन के वाणों से बँधुआबनकर निकल नहीं सका । आगे उसकी माता सर्पकन्या ने उसको निगलकर बचाया ।६। नागकन्या उसे बचानेकी चाह से उसका सिर निगलकर उसकी पूंछको निगलतीहुई आकाशमार्ग से निकल रही थी, ऐसे समय में अर्जुनने उसको देख चौडी नोकवाले तेजवाणसे उस सर्पिनका सिर काटडाला। शचीनाथ ने यह देखकर अश्वसेन को बचाने के लिये उसीक्षण पवन चलाकर अर्जुनको मोहमें डाला । उस अवसर में अश्वसेन बचकर भागा ।९। अर्जुनने तब उस सर्पसे ठगे जाकर और वह माया देखकर आकाश तक पहुंचेहुए भयानक प्राणियों को काटकर

great son of Pandu covered the whole forest of Khandav as the moon does the earth by dew. The firmament over the forest was so covered by Arjun's arrows as to leave no place for the inmates of the forest to get out. 3. Takshak the powerful prince of serpents was not there at that time. He was gone to Kurukshetra before the commencement of the burning, but his brave son Ashwasen was there. He tried, his best to get out of the forest but could not do so on account of the network of Arjun's arrows. His mother, the daughter of a snake, swallowed him and was flying to save him when she was seen by Arjun and her head was cut off by his arrow. Seeing this Indra wished to save the son of Takshak and with a blow of the wind made Arjun insensible. In the meantime Ashwa-

तिष्ठोभविष्यसि ॥ ११ ॥ ततोजिष्णुःसहस्राक्षं खंवितत्याशुगैःशरैः । योधयामास संक्रुद्धो वञ्चनांतामनुस्मरन् ॥ १२ ॥ देवराजोऽपितंदृष्ट्वा संरब्धंसमरेऽर्जुनम् । स्वमस्त्रमसृजत्तीव्रं छादयित्वाखिलंनभः ॥ १३ ॥ ततोऽवायुर्महाघोषः क्षोभयन्सर्वसागरान् । वियत्स्थोजनयन्मेघान् जलधारासमाकुलान् ॥ १४ ॥ ततोऽशनिमुचोघोरांस्तडितस्तनितनिःस्वनान् । तद्विघातार्थमसृजदर्जुनोऽप्यस्त्रमुत्तमम् ॥ १५ ॥ वायव्यमभिमन्त्र्याथ प्रतिपत्तिविशारदः । तेनेन्द्राशनिमेघानां वीर्य्यौजस्तद्विनाशितम् । ॥ १६ ॥ जलधाराश्चताःशोषं जग्मुर्नेशुश्चविद्युतः । क्षणेनचाभवद्व्योम सम्प्रशान्तरजस्तमः ॥ १७ ॥ सुखशीतानिलवहं प्रकृतिस्थार्कमण्डलम् । निष्प्रतीकारहृष्टश्च हुतभुग्विविधाकृतिः ॥ १८ ॥ सिच्यमानोवसौघैस्तैः प्राणिनांदेहनिःसृतैः । प्रजज्वाला

दोर तीनर टुकड़े करदिया।१०।बीभत्सु, वासुदेव और पावकने बहुतक्रोधकर उस कुटिलगामी सर्प को शाप दिया, कि तुम्हारी प्रतिष्ठा जाती रहेगी । अनन्तर पाण्डुपुत्र ने उस वञ्चना को स्मरणकर क्रोध से तुरन्त दौड़नेवाले बाणों से आकाश मंडलको छा सहस्र नेत्र से लड़ाई मचायी ।१२। देवराज नेभी उनको युद्धमें कटिबद्ध देखकर अपना तीक्ष्ण अस्त्र छोडकर आकाश मण्डल को छा लिया । अनन्तर पवन ने बड़े शब्द के साथ फैलकर सम्पूर्ण समुद्रमें हलचल मचाकर अति घोर बादल बूंद उपजाये१४उन सब बादलों से उसस्थान में बिजली वज्राघात और गड़गड़ाहट के साथ जलधारा वर्षनेलगी । प्रतिविधानकी शक्ति रखनेवाले अर्जुन ने उन सबको दूर करने के लिये सुन्दर वायव्यास्त्र मन्त्र पढ़कर छोड़ा, उससे इन्द्रके उसवज्र और बादलोंका वीर्य तथा तेज नष्टहुआ।१६। और जलधारा सूखी तथा बिजली नष्टहुई पल भर में आकाश मण्डल गर्द और अंधेरी से साफहोगया । सुखदाई ठण्ढी हवा चलने लगी और सूर्य मण्डलने पहिलेकी प्रकृति प्राप्तकी ।१८। तब अग्नि बिना रोक टोक देहियोंकी देहसे निकलीहुई चर्बीसे औरभी प्रबल होकर आनन्दकी उमंग में नाना आकार धरकर और बड़े शब्द से जगभर में शिखायें

sen escaped. Being cheated by the serpent and seeing the delusion, Arjun cut the animals to pieces by his arrows reaching the sky.10. Arjun, Vasudev and Agni cursed the serpent in anger saying that he would lose his respect. Remembering Indra's cunningness, Arjun let fly his sharp arrows towards him and overcast the sky with them. Indra seeing the attitude of Arjun darkened the sky with his weapon. The wind blew with great force and having agitated the water of the ocean brought over a thick storm of clouds.14. Lightning, thunder and a storm of rain came out from the clouds. Having the power of counteracting, Arjun shot his air-weapon and the force of Indra's clouds and lightning abated. Rain and lightning ceased and the sky was cleared of dust and darkness. A refreshing breeze

थ सोऽर्चिष्मान् स्वनादैः पूरयन् जगत् ॥ १९ ॥ कृष्णाभ्यां रक्षितं दृष्ट्वा तं च दावमहंकृताः । खमुत्पेतुर्महाराज सुपर्णाद्याः पतत्रिणः ॥ २० ॥ गरुत्मानवज्रसदृशैः पक्षतुण्ड नखैस्तथा । प्रहर्तुकामो न्यपतदाकाशात् कृष्णपाण्डवौ ॥ २१ ॥ तथैवोरगसंघाताः पाण्डवस्य समीपतः । उत्सृजन्तो विषं घोरं निपेतुर्ज्वलिताननाः ॥ २२॥ तांश्चकर्त्तशरैः पार्थः स्वरोषाग्निसमुक्षितैः । विविशुश्चापि तं दीप्तं देहाभावाय पावकम् ॥ २३ ॥ ततोऽसुराः सगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । उत्पेतुर्नादमतुलमुत्सृजन्तो रणार्थिनः ॥ २४ ॥ अयःकणपचक्राश्मभुशुण्डुद्यतबाहवः कृष्णपार्थौ जिघांसन्तः क्रोधसंमूर्च्छितौजसः ।२५। तेषामतिव्याहरतां शस्त्रवर्षं प्रमुञ्चताम् । प्रममाथोत्तमाङ्गानि बीभत्सुर्निशितैः शरैः ॥ २६ ॥ कृष्णश्च सुमहातेजाश्चक्रेणारिविनाशनः । दैत्यदानवसंघानां चकारकदनं

फैलाकर जल उठा । हे महाराज ! सुपर्ण आदि पतत्रीगण श्रीकृष्ण और अर्जुन से उस खाण्डव दावानलको रक्षित होते देखकर अहंकारसे आकाशको उडे।२०।और वज्रसमान पंख चोंच और नखों से वासुदेव और धनंजय को मारनेकी इच्छा से आकाशसे नीचे उतर आये तथा जलते हुए मुखवाले विषैले सर्पगण कठोर विष गिराते हुए पाण्डव के सामने आ गिरे ।२२। आगे पाण्डुनन्दनने क्रोधकी आगसे सुलगेहुए बाणोंसे उन सबको काट डाला, सो वे देहको नष्ट करने के लिये भलेप्रकार जलतेहुए अग्नि में आ गिरे अनन्तर असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और पन्नगगण लडने के लिये बड़ाकोलाहलमचाते हुए दौडे । क्रोधके मारे तब उनका तेज बढनेलगा।२४।वे अयःकणप अर्थात् लोहेकी गेंद गिराने का यंत्र और चक्राश्म अर्थात् पत्थर के टुकडों को बड़ी दूर फेंकने का लकडीका बना यंत्र, भुशुण्डी अर्थात् पत्थर फेंकने का चमड़ेकी रस्सीसे बनाहुआ यंत्र, यह सब अस्त्र लेकर हाथ उठाकर श्रीकृष्ण और अर्जुन को नष्ट करने के लिये उद्यत हुए । बीभत्सु उनको अयोग्य वचन कह कहकर बाण वर्षाते देखकर चोखे बाणों से उन के सिर मथनेलगे।२६।शत्रुकुलनाशी बडे तेजस्वी श्रीकृष्णचक्र से उन सब दैत्य दानवोंकोनष्ट

began and the sun shone as before. 18. Agni became stronger by the fat of the animals and spreading his flames in various forms began to burn the forest yet faster. Winged animals seeing the burning forest protected by Krishna and Arjun flew towards the sky and then came down to attack them by their beak and talon. Venomous serpents fell down before the Pandava and were cut down by his arrows and thrown into the fire to be burnt. Asurs, Gandharvas, Yakshas, Rakshases and Pannagas came up to fight with great noise and anger. They attacked Arjun and Krishna with various weapons and had their heads cut off by Arjun's arrows or Shree Krishn's discus. Some of the powerful Daityas and Danavas, wounded by the arrows and discus lost courage and became immovable like pieces of

महत् ॥ २७ ॥ अथापरे शरैर्विद्धाश्चक्रवेगगितास्तथा । वेलामिवसमासाद्य व्यतिष्ठन्न मितौजसः ॥ २८ ॥ ततः शक्रोऽतिसंक्रुद्धस्त्रिदशानां महेश्वरः । पाण्डुरङ्गजमास्थाय तावुभावमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ वेगेनाशनिमादाय वज्रमस्त्रञ्चसोऽसृजत् । हतावेतावि तिप्राह सुरानसुरसूदनः ॥ ३० ॥ ततःसमुद्यतांदृष्ट्वा देवेन्द्रेणमहाशनिम् । जगृहुःसर्वे शस्त्राणि स्वानिस्वानिसुरास्तथा ॥ ३१ ॥ कालदण्डंयमोराजन् गदाञ्चैवधनेश्वरः पाशांश्चतत्रवरुणो विचित्रांचतथाशनिम् ॥ ३२ ॥ स्कन्दःशक्तिसमादाय तस्थौमेरु- रिवाचलः । ओषधीर्दीप्यमानाश्च जगृहातेऽश्विनावपि ॥ ३३ ॥ जगृहेचधनुर्द्धाता मुसलन्तुजयस्तथा । पर्वतञ्चापिजग्राह क्रुद्धस्त्वष्टामहाबलः ॥ ३४ ॥ अंशस्तुशक्तिं जग्राह मृत्युर्देवःपरश्वधम् । प्रगृह्यपरिघंघोरं विचचारार्यमाअपि ॥ ३५ ॥ मित्रश्च क्षुरपर्यन्तं चक्रमादायतस्थिवान् । पूषाभगश्चसंक्रुद्धः सविताचविशाम्पते ॥ ३६ ॥

करने लगे । कोई कोई अति बली दैत्य दानव शरों से विद्ध और चक्रसे घायलहो उत्साह छोड़ ऐसे चुपहुए, कि जैसे जलके सोते में लहरकी चोटसे घूमते हुए तिनके स्थिरहोते हैं । २८ । अनन्तर देवों के अधीश असुरसूदन इंद्र अति क्रोधकर पाण्डुवरण गज पर चढकर धनंजय और श्रीकृष्ण पर चढ आये और वेग से अमोघ अस्त्र लेकर उन पर छोड़ने को उद्यतहोकर देवोंसे बोले, कि अब यह दोनों मरेंगे।३०। देवों ने देवराज को महावज्र उठाते देखकर सब ने अपना अपना अस्त्र लेलिया । हेमहाराज ! यमराज कालदण्ड लेकर खडेहुए, धननाथने गदाली, वरुणने पाश और विचित्र वज्रलिया, स्कन्द शक्ति लेकर अचल गिरि मेरुकी भांति खड़े हुए, दोनों अश्विनीकुमार हाथों में दीप्यमान औषधि लेकर खडेहुए, धाताने धनुष लिया, जलने मूसल लिया, महाबली त्वष्टा ने रिसाकर पर्वत उठाया, सूर्य का अंश हाथों में देव शक्ति लेकर लडनेको उद्यत हुआ । मृत्यु ने देव परश्वध लिया, आर्यमा घोर परिघ लेकर घूमने लगे । ३५ । और मित्र अस्तुरे के समान नोकदार चक्र लेकर खडे रहे । हे नरपाल ! भग, पूषा और सबिता

straw, beaten by the current of water. 28. Then the chief of gods, Indra the destroyer of enemies attacked Krishna and the Pandav and being ready to destroy them by his unfailing weapons said to the gods, "They will die this time."30. The gods seeing Indra ready to raise the *Vajra* took up their own weapons. Yamraj stood up with the staff of death, Kuver with his mace, Varun with his noose and mace, Skand with his *Shakti* stood up like Mount Meru. The twin Aswins stood up medicines in their hands, Dhata took up his bow, Jal his Moosal, powerful Twashtha raised up a hill in anger, the Sun took up the godly *Shakti* in his hand, the god of death took up his parashwadh, Aryama was roaming with his *Parigh* and Mitra stood up with his *Chakra* sharp edged like a razor. Bhag Poosa and *S*avita attacked Arjun and *S*hree Krishn

आत्तकार्मुकनिस्त्रिंशाः कृष्णपार्थौमदुद्रवुः । रुद्राश्चवसवश्चैव मरुतश्चमहाबलाः ॥३७
विश्वेदेवास्तथासाध्या दीप्यमानाःस्वतेजसा । एतेचान्येचबहवो देवास्तौपुरुषोत्तमौ
॥ ३८ ॥ कृष्णपार्थौजिघांसन्तः प्रतीयुर्विविधायुधाः । तत्राद्भुतान्यदृश्यन्त निमित्ता
निमहाहवे ॥ ३९ ॥ युगान्तसमरूपाणि भूतसंमोहनानिच ॥ तथादृष्ट्वासुसंरब्धं शक्रं
देवैःमहाच्युतौ ॥ ४० ॥ अभीतौयुधिदुर्द्धर्षौ तस्थतुःसज्यकार्मुकौ । आगच्छतस्ततो
देवानुभौयुद्धविशारदौ ॥ ४१ ॥ व्यताडयेयांसंक्रुद्धौ शरैर्वज्रोपमैस्तदा । असकृ-
द्भग्नसङ्कल्पाः सुराश्चबहुशःकृताः ॥ ४२ ॥ भयाद्रणंपरित्यज्य शक्रमेवाभिशिश्रियुः ।
दृष्ट्वानिवारितान्देवान् माधवेनार्जुनेनच ॥ ४३ ॥ आश्चर्य्यमगमंस्तत्र मुनयोनभसि
स्थिताः । शक्रश्चापि तयोर्वीर्यमुपलभ्यासकृद्रणे ॥ ४३ ॥ बभूवपरमप्रीतो भूयश्चैताव
योधयत । ततोऽश्मवर्षं सुमहद्व्यसृजत्पाकशासनः ॥ ४५ ॥ भूएवतदावीर्य्यं जिज्ञासुः
सव्यसाचिनः । तच्छरैरर्जुनोवर्षं प्रतिजघ्नेऽत्यमर्षितः ॥ ४६ ॥ विफलंक्रियमाणं तत्

भयानक धनुष और निस्त्रिंश लेकर क्रोध से अर्जुन और श्रीकृष्णकी ओर दौडे अपने तेज से जलनेवाले महाबली रुद्रगण, वसुगण, मरुद्गण, विश्वेदेवगण, और साध्यगण, यह और दूसरे अनेक देवगण भांति भांति के अस्त्र लेकर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनको नष्ट करने के लिये चढदौडे ।३९। तब युग अन्तहोनेके कालकी भांति भूतों को मोहनेवाले आश्चर्य नक्षत्र पतन आदि बुरे बुरे चिन्ह प्रगटहोने लगे। युद्धमें अति कठोर अर्जुन और श्रीकृष्ण देवों के साथ देवराज को युद्ध में सबप्रकार से सन्नद्ध देखकर सज्य शरासन लेकर निर्भय और अटल चित्त से खडेहुए युद्ध में दक्ष वे दोनों वीर सब आये हुए देवोंको वज्रसमान बाणों से क्रोधपूर्वक सबप्रकारसे पछाडनेलगे ।४१। अनन्तर देवोंने कृष्णार्जुनसे बारम्बार सबप्रकार संकल्प खोकर भय खाकर युद्धस्थलको छोडकर देवराजकी शरणली । आकाशमें खडे मुनियों ने देवों को कृष्णार्जुन के आगे पीठदिखाते अचरज माना । अर्जुन और श्रीकृष्णका रणस्थल में वार वार भुजवीर्य का प्रमाणपाकर देवराज बहुतप्रसन्नहुए, और फिर लडनेलगे।४३।तब वह सव्यसाची धनंजयकी सामर्थ्य

with their bows and arrows. The glorious Rudras, the Vasus, the Marutas, the Vishwedevas, the Sadhyas and other gods, with weapons, attacked Krishna and Arjun.39.Bad signs like the falling of stars at the end of the world were then seen. Brave Arjun and Shree Krishna, seeing the chief of gods ready to fight, stood up unmoved without hesitation and began to defeat the gods in anger with their arrows.41.The gods,defeated again and again,sought the protection of Indra. The *Munis* in the sky were astonished to see the gods defeated by Krishna and Arjun and the chief of gods was much pleased at the sight of their prowess and began to fight

समवेक्ष्यशतक्रतुः । भूयःसम्वर्द्धयामास तद्वर्षंपाकशासनः ॥ ४७ ॥ सोऽश्मवर्षंमहावेगैरिषुभिः पाकशासनिः । विलयंगमयामास हर्षयन्पितरंतथा ॥ ४८ ॥ ततउत्पाट्य पाणिभ्यांमन्दराच्छिखरंमहत् । सद्रुमंव्यसृजच्छक्रो जघांसुःपांडुनन्दनम् ॥ ४९ ॥ ततोऽर्जुनोवेगवद्भिर्ज्वलिताग्रैःराजिह्मगैः । शरैर्विध्वंसयामास गिरेःशृङ्गंसहस्रधा॥५०॥ गिरेर्विशीर्य्यमाणस्य तस्यरूपंतदाबभौ । सार्कचन्द्रग्रहस्येव नभसःपरिशीर्य्यतः॥५१॥ तेनाभिपतताद्दावं शैलेनमहताभृशम् ।शृङ्गेण निहतास्तत्र प्राणिनःखाण्डवालयाः॥५२॥

इत्यादिपर्वणि खाण्डवदाहपर्वणि देवकृष्णार्जुनयुद्धे

अष्टत्रिंशत्यधिकद्विशतोऽध्याय ॥ २२८ ॥

समाप्तंच खाण्डव दाहपर्व ।

जाननेकी इच्छा से बहुत पत्थर बर्षाने लगे । अर्जुन ने बहुत क्रोधकर उस पत्थर वृष्टिको वाण वृष्टि से रोका । इन्द्र पत्थर वृष्टि को विफल देखकर फिर औरभी अधिक गिराने लगे । इन्द्रनन्दन बडे तेज वाणों से उस भयानक पत्थर-वृष्टि को रोककर पिताका आनन्द बढ़ानेलगे।४८।अनन्तर महेन्द्रने पाण्डुपुत्रको मारनेकी इच्छासे दोनों हाथोंसे मंदर पर्वतकी वृक्षसहित एक बड़ी भारी चोटी को उखाड कर फेंका । अर्जुन ने अजिह्मग, जलतीहुई नोकवाले बडे तेजबाणों से पहाडकी चोटी को सहस्र खण्डोंमें तोड डाला, आकाश मण्डल से चन्द्र सूर्यादि ग्रह टुकडे टुकडेहो गिरने के काल में जैसे दीख पडते हैं, वह टूटी फूटी पहाडकी चोटी गिरने के काल में वैसेही दीख पडी । उस बडी भारी चोटी के खाण्डववन पर गिर जाने के हेतु उस काल उसकी चोट से बहुतेरे प्राणियों ने प्राण छोड़े ॥ ५२ ॥

again. To learn the extent of Arjun's power he began to shower stones on him, but Arjun angrily checked the shower of stones by the shower of his arrows.46.Seeing his shower of stones fail, Indra let fall another shower yet harder. The son of Indra checked it by his sharp arrows and increased the joy of his father. At last Indra threw down a large peak of mount Mandar together with its trees towards Arjun, but Arjun broke it into a thousand fragments with his sharp pointed arrows. The fragments of the mountain fell down like the falling of stars from the sky. Many lives were lost by the fall of the peak of mountain over the forest of Khandav.52.



अथमय दर्शन पर्व ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ तथाशैलनिपातेन भीषिताःखाण्डवालयाः । दानवा राक्षसा नागास्तरक्ष्वृक्षवनौकसः ॥ १ ॥ द्विपाःप्रभिन्नाःशार्दूलाः सिंहाः केसरिणस्तथा । मृगाश्च महिषाश्चैव शतशः पक्षिणास्तथा । समुद्विग्ना विससृपुस्तथान्या भूतजातयः ॥ २ ॥ तं दावं समुदैक्षन्त कृष्णौचाभ्युद्यतायुधौ । उत्पातनादशब्देन संत्रासितइवास्थिताः ॥ ३ ॥ तेवनंप्रसमीक्ष्याथ दह्यमानमनेकोधा । कृष्णमभ्युद्यतास्त्रश्च नादंमुमुचुरुल्बणम् ॥ ४ ॥ तेननादनरौद्रेण नादेनचविभावसोः । ररासगगनं कृत्स्नमुत्पातजलदैरिव ॥ ५ ॥ ततःकृष्णोमहाबाहुः स्वतेजोभास्वरंमहत् । चक्रंव्यसृजदत्युग्रं तेषांनाशायकेशवः ॥ ६ ॥ तेनार्त्ताजातयःक्षुद्राः सदानवनिशाचराः । निकृत्ताःशतशःसर्वा निपेतुरनलंक्षणात् ॥ ७ ॥ तत्रादृश्यन्ततेदैत्याः कृष्णचक्रविदारिताः । वसारुधिरसंपृक्ताः सन्ध्यायामिवतोयदाः ॥ ८ ॥ पिशाचान्

अध्याय २२९ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर खाण्डव वन के रहनेवाले दानव राक्षस सर्प ऋक्ष भेडिये उन्मत्त हस्ती केशरी सिंह, बाघ और दूसरे वनैले भूत उस पहाडके गिरने से भय खाकर भागने लगे । २ । और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को अस्त्र उठाये और उस बनको सब ओर बडे शब्द से डोलता हुआ देखा । तब वे बनको चारों ओर से जलते और श्रीकृष्णको अस्त्र मारते देखकर बडा भयानक शब्द करने लगे ।४। उन सब बनैले जीवोंके भयानक शब्द और अग्निकी चट चटाहटसे आकाश मण्डल ऐसा गूंजने लगा, कि जैसे मेघ गर्जनसे गूंजे । अनन्तर महाभुज श्रीकृष्ण ने उनको मारने के लिये अपने तेजसे जलताहुआ अति ऊंची नोकवाला बडा भारी चक्र उठाया ।६। उस चक्र से दानव निशाचर आदि वे सब जानवर भय खाकर टुकडे २ हो उसी क्षण अनल के मुख में जा गिरे । दैत्यगण श्रीकृष्णचन्द्रके चक्रसे टुकडे २ हो और चर्वी तथा रक्त

CHAPTER CCXXIX

Vaishampayan said that the *Rakshases*, serpents, bears, wolves, mad elephants, lions, tigers and other animals of the forest were terrified by the fall of the mountain peak and fled, but they found no way to get out on account of the weapons of Shree Krishn and Arjun and began to make a great noise. 4. The noise made by the animals and the burning of the forest resembled the roll of thunder. Shree Krishn raised his sharp discus to destroy them and cut them into pieces to be burnt by fire. The Daityas and Danavas, wounded by Krishn, wallowed in blood and looked like thick evening clouds. 8. Like Yamraj, Krishn destroyed innumerable birds, Pishaches, serpents and animals and the Pishaches and *Rakshases*

पक्षिणोनागान् पशूंश्चैवसहस्रशः । निघ्नंश्चरतिवार्ष्णेयः कालवत्तत्रभारत ॥९ ॥ क्षिप्तं
क्षिप्तंपुनश्चक्रं कृष्णस्यामित्रघातिनः । छित्वानैकानिसत्त्वानि पाणिमेतिपुनःपुनः ।१०।
तथातुनिघ्नतस्तस्य पिशाचोरगराक्षसान । बभूवरूपमत्युग्रं सर्वभूतात्मनस्तदा ॥ ११ ॥
समेतानांचसर्वेषां दानवानाञ्चसर्वशः । विजेतानाभवत्कश्चित् कृष्णपाण्डवयोर्मृधे
॥ १२ ॥ तयोर्बलात्परित्रातुं तञ्चदावंयदासुराः । नाशक्नुवनशमयितुं तदाभूवन
पराङ्मुखाः ॥ १३ ॥ शतक्रतुस्तुसंप्रेक्ष्य विमुखानमरांस्तथा । बभूवमुदितोराजन
प्रशंसनकेशवार्जुनौ ॥ १४ ॥ निवृत्तेष्वथदेवेषु वागुवाचाशरीरिणी।शतक्रतुंसमाभाष्य
महागम्भीरनिःस्वना ॥ १५ ॥ नतेसखासन्निहतस्तक्षको भुजगोत्तमः । दाहकाले
खाण्डवस्य कुरुक्षेत्रंगतोह्यसौ ॥ १६ ॥ नचशक्यौयुधाजेतुं कथंचिदपिवासव । वासु
देवार्जुनावेतौ निबोधवचनान्मम॥१७ नरनारायणावेतौ पूर्वदेवौदिविश्रुतौ । भवानप्य

धारसे नहाकर सन्ध्याकालके गाढे बादलकी भांति दीखनेलगे।८। हे भारत ! वृष्णिनंदन
श्रीकृष्ण यमराजकी भांति सहस्रों पिशाच, पक्षी, सर्प और पशु मारते हुए फिरने लगे
सर्व भूतोंकी आत्मा श्रीकृष्ण के इसप्रकार पिशाच, उरग, राक्षस आदि को नष्ट करने
पर उस काल में उनका आकार बड़ा रूखा जान पड़ने लगा।११।आयेहुए देवों मेंसे एक
भी कृष्णार्जुन के युद्धमें जय नहीं पासका । देवों ने जब देखा, कि कृष्णार्जुनके बाहुबल
से इस बनको बचाने के लिये दावानल बुझाना उनकी शक्तिसे बाहर है तब वे पीठ
दिखाकर चले गये।१३।हेमहाराज ! अमरों को मुख मोड़ते देख इन्द्र प्रसन्नहोकर केशव
और अर्जुनकी प्रशंसा करने लगे। अनन्तर सब स्वर्ग पतियोंके निवृत्त होनेपर महेंद्र
को इसप्रकार आकाशवाणी हुई, कि तुम्हारा सखा सर्पराज तक्षक मारा नहीं गया,
खाण्डवदाह के काल में वह कुरुक्षेत्रमें गयाथा।१६।हेइन्द्र तुम मेरेवचनसे निश्चयजानना
कि कोईभी किसीप्रकारसे बासुदेव अर्जुनका युद्धमें सामना नहीं करसकेगा यह लोग देव

were dreadful to behold. The gods who had come to fight against Krishn and Arjun could not gain victory over them. They turned back when they found that they could not save the forest from being burnt guarded as it was by Krishn and Arjun. The chief of gods, seeing the gods turn back, was much pleased and praised the prowess of Krishn and Arjun.14. At that time Indra heard a heavenly voice saying, " Your friend Takshak has not been burnt as he was in Kurukshetra at the time of burning the forest. Be sure, Indra, no one can encounter Vasudev and Arjun in the field of battle.17. They are the eternal gods Nar and Narayan praised by gods. You yourself know their prowess.18. They are unconquerable by any one throughout the world. These two primeval rishis are worshipped by gods, Asurs, Yakshas, Rakshases, Gandharvas, men, Kinnars

भिजानाति यद्वीर्य्यौयत्पराक्रमौ ॥ १८ ॥ नैतौशक्यौदुराधर्षौ विजेतुमजितौयुधि । अपिसर्वेषुलोकेषु पुराणावृषिसत्तमौ ॥ १९ ॥ पूजनीयतमावेतावपि सर्वैःसुरासुरैः । यक्षराक्षसगन्धर्वनरकिन्नरपन्नगैः ॥ २० ॥ तस्मादितःसुरैःसार्द्धं गन्तुमर्हसिवासव । दिष्टंचाप्यनुपश्यैतत् खाण्डवस्यविनाशनम् ॥ २१ ॥ इतिवाक्यमुपश्रुत्य तथ्यमित्यमरेश्वरः । क्रोधामर्षौसमुत्सृज्य संप्रतस्थेदिवंतदा ॥ २२ ॥ तंप्रस्थितंमहात्मानंसमवेक्ष्य दिवौकसः । सहिताःसेनया राजन्ननुजग्मुःपुरन्दरम् ॥२३॥ देवराजंतदायान्तं सहदेवैरवेक्ष्यतु । वासुदेवार्जुनौवीरौ सिंहनादंविनदतुः ॥ २४ ॥ देवराजेगतेराजन् प्रहृष्टौ केशवार्जुनौ । निर्विशङ्कंवनंवीरौ दाहयामासतुस्तदा ॥ २५ ॥ समारुतइवाभ्राणि नाशयित्वार्जुनःसुरान् व्यधमच्छरसंघातैर्देहिनः खाण्डवालयान ॥ २६ ॥ नचस्म किंचिच्छक्नोतिभूतं निश्चरितुंततः । संछिद्यमानमिषुभिरस्यता सव्यसाचिना ॥२७॥

लोक में प्रशंसित पुरातन देव नर और नारायणहैं, इनकाजैसा वीर्य और जितनापराक्रमहै वह तुमभी जानते हो।१८। यह युद्ध में अजेय और दुर्धर्षहैं, इनको पराजय करना सर्वलोकों में किसीकी सामर्थ्य नहीं है । यह दो पुराणऋषिसत्तम, अमर, असुर, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, नर, किन्नर, पन्नग आदि सबों के बड़े पूजनीयहैं, सो हेइन्द्र ! तुम देवों के साथ यहांसे लौटजाओ यह खाण्डवदाह विधिपूर्वकहीहुआहै ।२१। तब अमरनाथ इन्द्र वह वचन सचजानकर क्रोध तज देवलोकको गये । हेमहाराज ! देवोंने अपने नाथ इन्द्रको चले जाते देखकर सेनाओंके साथ उनकी राहली । वीर अर्जुन और वासुदेवने सेनागण और इन्द्रको मुखमोड़ते देखकर सिंहनाद किया । हे महाराज ! इन्द्रके चले जानेपर वे निर्भयहोकर खाण्डवबनको जलानेलगे।२५।पवन जिसप्रकार बादलोंकोभगाती है वैसेही अर्जुन देवोंको परास्त कर खाण्डव में रहनेवाले प्राणियोंको मार मारकर फूकने लगे । उन के बाणों से काटे जाकर कोईभी प्राणी वहां से निकल नहीं सका । बड़े बड़े महाबली प्राणियों का अर्जुन से लड़ना तो दूर रहा, वे उनकी ओर देखभी नहीं सके ।

and Pannags. Take your army of gods back, Indra. The forest has been burnt properly."21.The chief of gods having heard and believed upon these words went back with a cheerful heart. The army of gods followed their chief. Brave Arjun and Vasudev, seeing Indra return with the army, roared like lion and fearlessly burnt the forest.25.The gods being dispersed like the clouds by the winds, Arjun killed at leisure the animals of the forest and burnt them. No animal escaped death. No living being could resist Arjun who sometimes killed a hundred animals with one arrow. They fell down into fire as if killed by Kal himself without any funeral rites. Innumerable living beings began to weep and cry with grief. Elephants, deer and wolves joind in the cry and terrified the neigh-

नाशक्नुवंश्चभूतानि महान्त्यपिरणेऽर्जुनम् । निरीक्षितुममोघास्त्रं योद्धुंचापिकुतोरणे
॥ २८ ॥ शतंचैकेनविव्याध शरेनैकपतत्रिणाम् । व्यसवस्तेऽपतन्नग्नौ साक्षात्कालहता
इव ॥ २९ ॥ नचालभन्तते शर्म रोधःसुविषमेषुच । पितृदेवनिवासेषु सन्तापश्चाप्य-
जायत ॥ ३० ॥ भूतसंघाश्चबहवो दीनाश्चक्रुर्महास्वनम् । रुरुदुर्वारणाश्चैव तथामृग
तरक्षवः ॥ ३१ ॥ तेनशब्देनवित्रेसुर्गंगोदधिचराझषाः । विद्याधरगणाश्चैव येच
तत्रवनौकसः ॥ ३२ ॥ नत्वर्जुनंमहाबाहो नापिकृष्णंजनार्दनम् । निरीक्षितुंवैशक्नो
ति कश्चिद्योद्धुंकुतःपुनः ॥ ३३ ॥ एकायनगतायेऽपि निष्पेतुस्तत्रकेचन । राक्षसा
दानवानागा जघ्नेचक्रेणतानहरिः ॥ ३४ ॥ तेतुभिन्नशिरोदेहाश्चक्रवेगाद्गतासवः ।
पेतुरन्येमहाकायाः प्रदीप्तेवसुरेतसि ॥ ३५ ॥ समांसरुधिरौघैश्च वसाभिश्चापितर्पितः ।
उपर्याकाशगाभूत्वा विधूमः समपद्यत ॥ ३६ ॥ दीप्ताक्षोदीप्तजिह्वश्च सम्प्रदीप्तमहान
नः । दीप्तोर्ध्वकेशः पिंगाक्षः पिबन्प्राणभृतांवसाम् ॥ ३७ ॥ तांसकृष्णार्जुनकृतां

अर्जुन कभी कभी एक बाण से सौ प्राणी मारने लगे । वे सब प्राणी मानों साक्षात काल से मारेजाकर और प्राण छोड अग्नि के मुखमें गिरनेलगे।२९। वे न तो नदी तट, न रूखी जगह और न स्मशान कहींभी मंगल प्राप्ति नहीं कर सके सभी स्थान बडे तापसे तपने लगे । अगणित प्राणी दीन मन से बडी चिल्लाहटके साथ रोने पीटने लगे, हस्ती, हरिण और भेडिये चिल्लाकर रोने लगे, उस शब्द से अति दूरकी गंगाचर और समुद्रचर मछलियां और विद्याधर तथा उन स्थानों के निकट जितने बनबासी थे, सब बहुत भय खागये । हे महाभुज ! किसीका कृष्णार्जुन से लड़ना तो दूर रहा अर्जुन और जनार्दन पर दृष्टि चलानाभी बन नहीं पड़ा।३३।जिन सबराक्षस, दानव और नागोंने एकत्र मिलकर दौडकर भागना चाहा श्रीकृष्ण ने उनको चक्रसे नष्ट किया । वे चक्रके वेगसे सिर कटे, धडकटे बनकर प्राण छोड़ जलतीहुई आग में जा गिरे और दूसरे बडेभारी जीव भी आगके मुंहमें गिरनेलगे।३५। तब अग्नि मांस रक्त और चर्बीसे भलेप्रकार तृप्तहोकर धुआं तज आकाश को चढ गये और पिंगल आखें जीभ, मुख और ऊंचे ऊंचे बालों को

bouring birds aad animals. No one could resist Krishn and Arjun. The Rakshases, Danavas and Nagas,running together to escape from death, were destroyed by Krishn. Cut asunder by chakra, their heads and trunks fell down into fire. Animals of large size were also burnt in the flames.35.Being well-satisfied with the flesh, blood, and fat and becoming free from smoke, Agni rose up to heaven and with pale eyes, tongue, mouth and long hair began to drink the fat of animals. Agni was gratified by Krishn and Arjun. Madhusudan saw the Asur Maya running away from the residence of Takshak and Pavan the charioteer of Agni chasing him with his long

सुधांपाप्यहुताशनः । बभूवमुदितस्तृप्तः परांनिर्वृतिमागतः ॥ ३८ ॥ तथासुरमयंनाम तक्षकस्य निवेशनात् । विप्रद्रवन्तंसहसा ददर्शमधुसूदनः ॥ ३९ ॥ तमग्निःप्रार्थयामास दिधक्षुर्वातसारथिः । शरीरवानजटीभूत्वा नदन्निवबलाहकः ॥ ४० ॥ जिघांसुर्वासुदेवस्तं चक्रमुद्यम्य धिष्ठितः । सचक्रमुद्यतंदृष्ट्वा दिधक्षन्तञ्चपावकम् ॥ ४१ ॥ अभिधावार्जुनेत्येवं मयस्त्राहीतिचाब्रवीत् । तस्यभीतस्वनंश्रुत्वा माभैरितिधनञ्जयः ॥ ४२ ॥ प्रत्युवाचमयंपार्थो जीवयन्निवभारत । तंनभेतव्यमित्याह मयंपार्थोदयापरः ॥ ४३ ॥ तंपार्थेनाभयेदत्ते नमुचेर्भ्रातरंमयम् । नहन्तुमैच्छद्दाशार्हः पावकोनददाह च ॥ ४४ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ तद्वनंपावकोधीमान् दिनानिदशपञ्चच । ददाह कृष्णपार्थाभ्यां रक्षितःपाकशासनात् ॥ ४५ ॥ तस्मिन्वनेदह्यमाने षडग्निर्नददाहच । अश्वसेनंमयञ्चैव चतुरः शार्ङ्गकांस्तथा ॥ ४६ ॥

इत्यादिपर्वणि मयदर्शनपर्वणि मयदानवत्राणे ऊनत्रिंशदधिक द्विशतोऽध्यायः ॥ २२९ ॥

प्रज्वलित कर जीवोंकी चर्बी पीने लगे । उन कृष्णार्जुनसे मृत पीकर प्रमुदित और तृप्त हो परम सन्तोष प्राप्तकिया । अनन्तर मधुसूदन ने एकायक देखा, कि मय नामक असुर तक्षक के वासस्थान से भागा जाता है और पवन के सारथि अग्नि शरीर लेकर और जटाधर के बादल के समान शब्द करते हुए उसको पकडनेकी इच्छा कर रहे हैं । ३९ । तब वासुदेवजी उसको मारने के लिये चक्र उठाकर खडेहुए । मयदानवने उनको चक्र उठाते और अग्निको निगलनेकी इच्छा पर आते देखकर कहा, कि हे अर्जुनदौडो, मुझे बचाओ अर्जुन उसका वह करुणास्वर सुनकर मानों जीवन देकरही बोले, कि मत डरो, वह दयाशीलथे, सो मयको ढाढस दिया । अनन्तर अर्जुन के नमुचि के भाई उस दैत्यको ढाढस देनेपर दाशार्ह श्रीकृष्ण ने फिर उसे मारना नहीं चाहा, और अग्निभी जलानेको प्रवृत्त नहीं हुए । वैशम्पायन ने कहा, कि धीमान हुताशनने अर्जुन और श्रीकृष्ण द्वारा इन्द्रसे रक्षित होकर पन्द्रह दिनमें उस बनको जलाया । उस बनके जलानेके काल में अग्नि ने केवल अश्वसेन मय और शार्ङ्गकनामक चार पक्षी इन छओंको नहीं जलाया । ४६ ।

hair and roar like that of thunder. Vasudev stood ready to destroy him with his discus. Maya saw that Vasudev was ready to kill him with his discus and Agni ready to swallow him and he called Arjun to protect him. Arjun heard his cry and gave him life by saying 'Donot fear.' Being kind hearted, Arjun reassured him. Upon this Krishn and Agni desisted from killing and burning him. Vaisham-payan said that being protected from Indra by Krishna and Arjun Agni burnt the forest in fifteen days. During this time Agni burnt all the living beings except Ashwasen, Maya and four birds called Sharangak 46.

जनमेजय उवाच । किमर्थं शार्ङ्गकानाग्निर्न ददाहतथागते । तस्मिन्वनेदह्यमाने ब्रह्मन्नतत्प्रचक्ष्व मे ॥ १ ॥ अदाहेह्यश्वसेनस्य दानवस्यमयस्यच । कारणंकीर्तितंब्रह्मन् शार्ङ्गकाणांनकीर्तितम् ॥ २ ॥ तदेतदद्भुतंब्रह्मन् शार्ङ्गकाणामनामयम् । कीर्तयस्वाग्निसम्मर्दे कथंतेनविनाशिताः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । यदर्थंशार्ङ्गकानग्निर्न ददाहतथागते । तत्तेसर्वंप्रवक्ष्यामि यथाभूतमरिन्दम ॥ ४ ॥ धर्मज्ञानांमुख्यतमस्तपस्वी संशितव्रतः । आसीन्महर्षिः श्रुतवान्मन्दपालइतिश्रुतः ॥ ५ ॥ समार्गमास्थितोराजन्नृषीणामूर्ध्वरेतसाम् । स्वाध्यायवान धर्मरतस्तपस्वी विजितेन्द्रियः ॥ ६॥ सगत्वातपसःपारं देहमुत्सृज्यभारत । जगामपितृलोकाय नलेभेतत्रतत्फलम् ॥ ७॥ सलोकानफलान्दृष्ट्वा तपसानिर्जितानपि । पप्रच्छधर्मराजस्य समीपस्थान्दिवौकसः ॥८॥ मन्दपाल उवाच । किमर्थमावृतालोका ममैतेतपसार्जिताः । किंमयानकृतंतत्र

अध्याय २३० ॥

जनमेजय बोले, कि हे ब्रह्मन् ! यह बतलाओ, कि उस वनके जलाने के समय उस दशा में अग्नि ने क्यों शार्ङ्गक पक्षियों को नहीं जलाया, अश्वसेन और मयदानव जिन उपायों से नहीं जले वह आपने कह सुनाया है, पर चार शार्ङ्गकों के न जलने का कारण नहीं कहा । हे ब्रह्मन् ! शार्ङ्गकोंका बचना मुझको अचरजसा जान पडताहै, कहो कि वे उस अग्निदाहसे क्यों नहीं मरे । वैशम्पायन ने कहा, कि हेशत्रुदमन ! उस दशा में हुताशन ने जिस कारण शार्ङ्गकों को नहीं जलाया वह आप से कहताहूं, सुनो । हे महाराज ! मन्दपाल नाम प्रख्यात तपस्वी विद्वान व्रतशील धर्म के जानकार अति श्रेष्ठ एक महर्षिथे । वह स्वाध्याय में नियुक्त और जितेन्द्रिय होकर सदा तपस्या और धर्म करते थे । वह ऊर्ध्वरेता ऋषियोंकी बाट से चलकर तपस्या के दूसरे पारको उतर गये थे । हे भारत ! जब वह देहछोडकर पितृलोक को गये तब बटोरी हुई तपस्याका कोई फल प्राप्त नहीं हुआ । उन महर्षिने अपनी कठोर तपस्या से उपार्जन किये हुए लोक में

CHAPTER CCXXX

Janmejaya said, "Let me know, Brahman, why Agni didnot burn Sharangak birds. You have already told me how Ashwasen and Mayadanav escaped from being burnt, but have said nothing yet about the four Sharangaks. I am amazed at their escape. Please tell me why they did not die." 3. Vaishampayan replied, "Hear the story of the escape of Sharangaks: There was a great sage, named Mandpal, a learned man, vow observing and virtuous. He was always engaged in asceticism, doing good, and study. He led the life of chastity and walking in the way of celibate rishis he had completed his asceticism. When, however, he went after death to the region of Pitris he did not get the reward of his asceticism.7.

यस्यैतत्कर्म्मणःफलम् ॥ ९ ॥ तत्राहंतत्करिष्यामि यदर्थमिदमावृतम् । फलमे तस्यतपसः कथयध्वंदिवौकसः ॥ १० ॥ देवा ऊचुः । ऋणिनोमानवाब्रह्मन् जायन्तेयेनतच्छृणु । क्रियाभिर्ब्रह्मचर्य्येण प्रजयाचनसंशयः ॥ ११ ॥ तदपाक्रियतेसर्वं यज्ञेनतपसासुतैः । तपस्वीयज्ञकृच्चासि नचतेविद्यतेप्रजा ॥ १२ ॥ तइमेप्रसवस्यार्थे तवलोकाःसमावृताः । प्रजायस्वततो लोकानुपभोक्ष्यसि पुष्कलान् ॥१३॥ पुन्नाम्नो नरकात् पुत्रस्त्रायतेपितरंश्रुतिः । तस्मादपत्यसन्ताने यतस्वब्रह्मसत्तम ॥१४॥ वैशंपायन उवाच । तच्छ्रुत्वामन्दपालस्तु वचस्तेषांदिवौकसाम । क्वनुशीघ्रमपत्यंस्याद्बहुलं चेत्यचिन्तयत् ॥१५॥ सचिन्तयन्नभ्यगच्छत् सुबहुप्रसवान्खगान । शार्ङ्गिकांशार्ङ्गिकोभूत्वा जरितांसमुपेयिवान् ॥ १६ ॥ तस्यांपुत्रानजनयच्चतुरो ब्रह्मवादिनः। तान

न जाने पर धर्मराजके निकट देवोंसे पूछा, कि मेरी तपस्या से उपार्जन कियाहुआ पुण्य लोक क्यों रुका है ? जिन कर्मों के करने से इन सब पुण्यलोकोंमें जायाजाताहै क्या मैंने उन कर्मों को नहीं किया है ? हे देवगण ! आप कहें, कि क्यों मेरी तपस्या का फल रुका हुआ है, मैं उस के करनेको प्रस्तुत हूं ।१०।देवोंने कहा, कि हे ब्रह्मन् ! सुनो इस में संदेह नहीं कि मानवगण क्रिया, ब्रह्मचर्य और सन्तान उपजाना इन सबका ऋणीबनकर जन्म लेता है यज्ञ, तपस्या और पुत्रोत्पादन इन तीन कर्मोंसे वह ऋण चुकता है तुम ने बहुत तपस्या और यज्ञ किया है, पर तुम्हारे सन्तान नहीं है सो यह सब पुण्यलोक तुम्हारेलिये रुके हैं तुम पुत्र उपजाओ, तो इन श्रेष्ठ लोकोंको भोगनेपाओगे , हेब्रह्मश्रेष्ठ ! श्रुति है, कि पुत्र पिताको पुन-नामक नरकसे बचाता है, सो तुम पुत्र उपजानेका प्रयत्न करो।१४।वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर मन्दपाल देवोंका वह वचन सुनकर सोचनेलगे कि किसयोनि में जन्म लेनेसे शीघ्र अधिक सन्तान उपजसकती हैं अनन्तर उन्होंने यह सोचकर कि पक्षियोंकी स्वल्पकाल में बहुत संतान होती हैं, शार्ङ्गक पक्षी बनकर जरिता नाम शार्ङ्गिका से मिलकर चार ब्रह्मबादी पुत्र उपजाये । अनन्तर वह अण्डे से

The Maharshi, not being able to enter the region obtained through asceticism, asked the gods in the presence of Dharmraj, "Please let me know the reason of obstruction to the way of my going to the region acquired by my asceticism. Have I not done the deeds by which people enter those holy places ? Let me know, gods, why the reward of my asceticism is withheld from me. I am ready to do anything for it."10.The gods replied, "Human beings, no doubt, are born with debts of celibacy and the bringing forth of offspring. You have performed severe asceticism and offered sacrifices, but you have no progeny, hence you cannot enter these holy places.13.Without bringing forth offspring you cannot enjoy these regions. The Vedas say that a son saves the father from the hell called Pun.

पास्यसतत्रैव जगामलपितांप्रपि ॥ १७ ॥ बालानसतानण्डगतान् सहमात्रामुनिर्वने। तस्मिन्गतेमहाभागे लपितांप्रतिभारत ॥ १८ ॥ अपत्यस्नेहसंयुक्ता जरितावहुचिन्त यत् । तेन त्यक्तानसन्त्याज्यानृषीनण्डगतान्वने ॥ १९ ॥ नजहोपुत्रशोकार्त्ता जरिताखाण्डवेसुतान् । बभारचैतानसञ्जाताम् स्ववृत्त्यास्नेहविक्लवा ॥ २० ॥ ततोऽग्निं खाण्डवं दग्धुमायान्तंदृष्टवानृषिः । मन्दपालश्चरंस्तस्मिन् वनेलपितयासह ॥ २१ ॥ तंसंङ्कल्पंविदित्वाग्नेर्ज्ञात्वापुत्रांश्चबालकान् । सोऽभितुष्टावविप्रर्षिब्राह्मणो जातवेदसम्। पुत्रान्प्रतिवदनभीतो लोकपालंमहौजसम् ॥ २२ ॥ मन्दपाल उवाच । त्वमग्नेसर्व- लोकानां मुखंत्वमसिहव्यवाट् । तमन्तःसर्वभूतानां गूढश्चरसिपावक ॥२३॥ त्वामे- कमाहुः कवयस्त्वामाहुस्त्रिविधंपुनः । त्वामष्टधाकल्पयित्वा यज्ञवाहमकल्पयन् ॥२४॥

उपजे हुए बच्चोंको उनकी माताके साथ उस वनही में छोडकर लपिता के पास गये । हे भारत ! उन महाभाग के लपिताके पास चलेजाने पर जरिता पुत्र स्नेहसे कातरहो अनेक प्रकारकी चिंता करने लगी। ऋषि के उसखाण्डवबनमें उन अण्डोंमें स्थित बच्चों को छोडने परभी जरिता पुत्र शोकसे कातरहोकर त्यागनेके अयोग्य उन बच्चोंको छोड़ नहीं सकी, उनको स्नेहसे अपनीवृत्ति अवलम्बकर पालने लगी।२०।अनन्तर ऋषि मन्द पालने लपिता के साथ उस बन में चरते हुए देखा, कि अग्नि खाण्डववन जलाने को आरहा है, ब्रह्मके जानकार विप्रर्षि महातेजस्वी मन्दपाल जातवेदाका वह अभिप्राय समझ कर अपनी संतानों को बालक जानकर उन के लिये उन से बिनय करनेकी इच्छा से भयखाकर स्तव करनेलगे।२२।कि हे अग्ने!तुम सर्वलोकोंके मुखस्वरूप हुएहो, तुम हवन के पदार्थ ग्रहणकिया करते हो । हे पावक ! तुम सर्वलोकोंके हृदय में छिपकर चराकरते हो । कविगण तुमको अद्वितीय कहा करते हैं, और तीनप्रकारकाभी कहते हैं तथा तुम को अष्टधा कल्पना करके यज्ञ किया करते हैं ।२४। हेहुताशन ! परमर्षिगण कहतेहैं, कि

You must, therefore manage to bring forth a son." Vaishampayan said that having heard this from the gods, Mandpal reflected for awhile as to the shape in which he can bring forth the greatest number of offspring in the shostest time. At last he chose to become a bird of the genus Sharangak and produced four virtuous young ones by the union of a female bird of the same tribe, named *Jarata*. Before the bursting forth of the eggs, he left them in the charge of their mother and went to Lapita. 17. After his departure, *Jarita* was very sorry for her offspring but could not leave them alone. She brought them up affectionately. Rishi Mandpal, walking with Lapita, saw Agni coming to burn the forest. He feared much for the safety of his offspring and began to praise him saying, 22. "Agni, you are the mouth of all the world, you receive sacrifices, you remain hid-

त्वयाविश्वमिदंसृष्टं वदन्तिपरमर्षय । त्वदृतेहिजगत्कृत्स्नं सद्योनश्येद्धुताशन ॥२५॥ तुभ्यंकृत्वानमोविप्राः स्वकर्मविजितांगतिम् । गच्छन्तिसहपत्नीभिः सुतैरपिचशाश्वतीम् ॥ २६ ॥ त्वामग्नेजलदानाहुः खेविषक्तानसविद्युतः । दहन्तिसर्वभूतानि त्वत्तो निष्क्रम्यहेतयः ॥ २७ ॥ जातवेदस्त्वयैवेदं विश्वंसृष्टंमहाद्युते । त्वयैवकर्मविहितंभूतं सर्वंचराचरम ॥ २८ ॥ त्वयातपोविहिताःपूर्वं त्वयिसर्वमिदंजगत् । त्वयिहव्यञ्चकव्यं च यथावत्सम्प्रतिष्ठितम् ॥ २९ ॥ त्वमेवदहनोदेव त्वंधातात्वंबृहस्पतिः । त्वमश्विनौयमौमित्रः सोमस्त्वमसिचानिलः ॥ ३० ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंस्तुतस्तदातेन मन्दपालेनपावकः । तुतोषतस्यनृपते मुनेरमिततेजसः ॥३१॥ उवाचचैनंप्रीतात्मा किमिष्टंकरवाणिते । तमब्रवीन्मन्दपालः प्रांजलिर्हव्यवाहनम् । प्रदहनखाण्डवंदावं

तुम्हीं ने संसारको रचाहै, और तुम्हारे न रहने से आजही जगन्मण्डल नष्टहोता । ब्राह्मणगण तुम्हीं को प्रणामकर स्त्री पुत्रोंके साथ शाश्वत लोक को जय करके उस में आते हैं ।२६ हेअग्ने ! पण्डितलोग तुमको विद्युतके साथ आकाशमें स्थित मेघ कहतेहैं । हेपावक ! तुम से शिखा निकलकर सर्व भूतों को जलाती है । हेमहाद्युते ! कर्मोंका विधान करनेवाला वेद तुम्हाराही वचनहै, और यह सब स्थावर जंगम आदि जीवातुम्हींसे बने हैं ।२८। हेअग्ने ! पहिले तुम्हींमें जलका बिधानहै, यह सम्पूर्ण जगत तुम में स्थितहै और सम्पूर्ण हव्यकव्य तुम्हीं को आश्रय कर विद्यमानहैं । हे देव ! तुम्हीं दहन, तुम्हीं विधाता, तुम्हीं बृहस्पति, तुम्हीं दोनों अश्विनीकुमार, तुम्हीं अर्क, तुम्हीं सोम और तुम्हीं पवनस्वरूपहो ।३०। वैशम्पायन ने कहा, कि हेमहाराज ! अति तेजस्वी मन्दपाल मुनि के इसप्रकार अग्निकी स्तुति करनेपर अग्नि उनपर प्रसन्नहुए और प्रीति पूर्वक उनसे कहा, कि बोलो तुम्हारा अभीष्ट क्याहै, मैं पूरा कर देता हूं । मन्दपाल दोनों हाथजोड

den in the breasts of all, poets call you matchless, they also call you 'of three kinds' and 'eight kinds' and offer sacrifices to you. Maharshis say that you are the creator of the world and without you no one can live. Brahmans bow to you and gain the eternal world with their wives and children. The learned say that you are cloud and stay in the sky with lightning. Your flames burn all things. The Vedas containing the manner of work are uttered by you. You are the maker of all moveables and immoveables. Water was at first contained in you and you are the supporter of all world. Sacrifices to gods and manes are offered through you. You are Dahan Vidhata, Vrihaspati, Aswinikumar, Ark, Som and Pavan ! 30. Vaishampayan said that Agni was gratified by the entreaties of Mandpal and spoke to him kindly, saying, "Please let me know your desire and I shall satisfy it." With joined hands Mandpal said, "Donot burn

ममपुत्रान्विसर्ज्जय ॥ ३२ ॥ यथेतितत्प्रतिश्रुत्य भगवान्हव्यवाहनः । खाण्डवेतेन कालेन प्रजज्वालदिधक्षया ॥ ३३ ॥

इत्यादिपर्व्वणि मयदर्शनपर्व्वणि शार्ङ्गकोपाख्याने त्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः ॥२३०॥

वैशम्पायन उवाच । ततःप्रज्वलितेवह्नौ शार्ङ्गकास्तेसुदुःखिताः । व्यथिताःपरमोद्विग्नानाधिजग्मुःपरायणम् ॥ १ ॥ निशम्यपुत्रकान्बालान् मातातेषांतपस्विनी । जरितादुःखशोकार्त्ता विललापसुदुःखिता ॥ २ ॥ जरितोवाच । अयमग्निर्द्दहन्कक्षमित् आयातिभीषणः । जगत्सन्दीपयन्भीमो ममदुःखविवर्द्धनः ॥ ३ ॥ इमेचमांकर्षयन्ति शिशवोमन्दचेतसः । अबर्हाश्चरणैर्हीनाः पूर्व्वेषांनःपरायणाः ॥४॥ त्रासयंश्चायमायाति लेलिहानोमहीरुहान् । अजातपक्षाश्चसुता नशक्ताःसरणेमम ॥ ५ ॥ आदायचनश-

कर बोले, कि हे हव्यवाहन ! तुम जब खाण्डववनको जलाओ गे तब मेरेबच्चों को मत जलाना । भगवान् हव्यवाहन ने तथास्तु कहकर मान लिया, और उस काल खाण्डव-दाह के वास्ते जल उठे ॥ ३३ ॥

अध्याय २३१ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर अग्नि के जलानेपर वे शार्ङ्गकपक्षीके बच्चे बहुत भय खाकर घबराउठे, उनको ढूंढने परभी बचने का कोई उपाय नहीं मिला । उनकी माता तपस्विनी जरिता बच्चोंको बहुत छोटे देखकर दुःख शोक से विलपतीहुई कहने लगी।२। कि मेरा दुःख बढानेवाला यह भयानक अग्नि बनको जलाताहुआ सबस्थान में उजाला करता डरावने स्वरूपमें आ रहाहै । मेरेछोटे छोटे बच्चों के पंख नहीं जमे, वे उड़ नहीं सकते और अज्ञानहैं और यह पुरुषोंकी एकही गतिहैं।४।यह मेरेहृदय दुखा रहेहैं । यह अग्नि हर घड़ी वृक्षोंको चाटता और भय दिलाता इधर आरहाहै । पर मेरे इन विना पंखके बच्चोंको भागनेकी शक्ति नहीं है, और मुझ अकेलीकोभी इतनी सामर्थ्य नहीं है, कि इन सबों को लेकर इस विपत समुद्र से भाग सकूं इनको छोडकर भाग भी नहीं सकती हूं । हा ! मेरा हृदय मानों डोलरहाहै।६।मैं किस बच्चे को लेकर जाऊं,

my children at the time of burning the forest of Khandav." Agni granted the request and began to burn the forest.33.

CHAPTER CCXXXI

Vaishampayan said that at the commencement of burning the young birds were much terrified but could get no place of refuge. Their mether, the ascetic *Jarita*, crying and weeping with grief and sorrow, said, "Agni is coming this way to my great grief. The light is moving forward in dreadful form. My young ones are unfledged and cannot fly. They are giving much trouble and grief to my heart. Fire comes on burning the trees dreadfully but my young ones have no power of flying and I am unable to extri-

क्रोमि पुत्रांस्तरितुमात्मना । नचत्यक्तुमहंशक्ता हृदयंदूयतीवमे ॥ ६ ॥ कन्तुजह्यामहं
पुत्रंकमादायव्रजाम्यहम् । किन्नुमेस्यात्कृतंकृत्वा किंवागन्यतपुत्रकाः ॥ ७ ॥ चिन्त-
याना विमोक्षंवो नाधिगच्छामिकिञ्चन । छादयिष्यामिवोगात्रैः करिष्येमरणंसह ॥ ८ ॥
जरितारौकुलंह्येतत् ज्येष्ठत्वेनप्रतिष्ठितम् । सारिसृक्कःप्रजायेत पितॄणांकुलवर्द्धनः ॥ ९ ॥
स्तम्बमित्रस्तपःकुर्य्यात् द्रोणोब्रह्मविदाम्वरः । इत्येवमुक्त्वाप्रययौ पितावोनिर्घृणःपुरा
॥ १० ॥ कमुपादायशक्येयं गन्तुंकष्टापदुत्तमा । किन्नुकृत्वाकृतंकार्य्यं भवेदितिच
विह्वला । नापश्यत्स्वधियामोक्षं स्वसुतानांतदानलात् ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच ।
एवंब्रुवाणांशार्ङ्गास्ते प्रत्यूचुरथमातरम् । स्नेहमुत्सृज्यमातस्त्वं पतयत्रनहव्यवाट् ॥ १२ ॥
अस्मास्विहविनष्टेषु भवितारःसुतास्तव । त्वयिमातर्विनष्टायां ननःस्यात्कुलसन्ततिः

किसको छोड़ू, क्या करूं जो मनोरथ सिद्ध हो ! ऐ बेटो ! तुम क्या विचारते हो ।
मैं तो सोच समझ कर तुम्हारे बचने का कोई उपाय नहीं देखती; मैं अपनी देहसे
तुमको छिपाकर अन्त में तुम सबों के साथ जल मरूंगी ॥ ८ ॥ तुम्हारे निर्दयी पिताने पहिले
जानेके काल में कहा था, कि " मेरे चार बेटोंमें ज्येष्ठ जरितारी नामक पुत्रसे वंश
प्रतिष्ठित होगा सारिसृक्क नामक पुत्र सन्तान उपजाकर कुल बढ़ावेगा, स्तम्बमित्रनामक
पुत्र तपस्या करेगा और द्रोण नामक प्रशंसित पुत्र वेद में पण्डित होगा " ॥ १० ॥ पर
अब यह दुःखदायी विपद आपड़ी, मैं किसे ले जा सकूंगी ! क्या करने से कार्य्य को
निबटा सकूंगी जरिता ऐसे बहुबिधि सोच कर घबरा उठी उसको अपनी बुद्धिसे अपने
पुत्रोंको बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा । वैशम्पायनने कहा, कि शार्ङ्गकोंने माता
को इस प्रकार बिलपते सुनकर कहा, कि माता ! तू स्नेह छोड़ कर वहां जा, कि जहां
आग नहीं हो ॥ १२ ॥ हे माता ! हम मर जायंगे तो तेरी और सन्तान उपज सकेंगी, पर तेरे
मरने से वंश-रक्षाका उपाय न रहेगा । हे माता ! अब तेरे लिये वह काल आ पहुंचा है,

cate them from this sea of trouble. I have no heart to fly away and leave them alone. *My* mind is in a state of suspense and I cannot choose which to leave and which one to take away. What should I do? What do you think my children. I see no way to save you. I have resolved to cover you with my body and to die with you. 8. At the time of his departure your cruel father had said, "Out of my four sons the eldest *Jaritari* will bestow his name on the family, Sarasika, the second, will perpetuate the line by producing sons, Stambmitra will perform asceticism and Dron will be a scholar of the Vedas."10. Now this trouble has come upon us. Which of my sons can I take with me and how shall I manage it?" *Jarita* was thus in a state of suspense and could not devise a remedy. Vaishampayan said that the young ones told their mother to leave

॥ १३ ॥ अन्वेक्ष्यैतदुभयं क्षेमंस्याद्यत्कुलस्यनः । तद्वैकर्तुंपरःकालो मातरेषभवेत्तव
॥ १४ ॥ मात्वंसर्वविनाशाय स्नेहंकार्षीःसुतेषुनः । नहीदंकर्ममोघंस्याल्लोककामस्यनः
पितुः ॥ १५ ॥ जरितोवाच । इदमाखोर्बिलंभूमौ वृक्षस्यास्यसमीपतः । तदाविशध्वं
त्वरितावह्नेरत्रनवोभयम् ॥ १६ ॥ ततोऽहंपांशुना छिद्रमपिधास्यामिपुत्रकाः । एवं
प्रतिकृतंमन्ये ज्वलतःकृष्णवर्त्मनः ॥ १७ ॥ ततएष्याम्यतीतेऽग्नौ विहन्तुंपांशुसञ्चयम् ।
रोचतामेषवोवादो मोक्षार्थञ्चहुताशनात् ॥१८॥ शार्ङ्गका ऊचुः । अबर्हान्मांसभूता-
न्नःक्रव्यादाखुर्विनाशयेत् । पश्यमाताभयमिदं प्रवेष्टुंनात्रशक्नुमः ॥ १९ ॥ कथमग्निर्न
नोभक्षयेत् कथनाखुर्ननाशयेत् । कथंनस्यात्पितामोघः कथंमाताध्रियेतनः ॥ २० ॥
बिलआखोर्विनाशः स्यादग्नेराकाशचारिणाम् । अन्ववेक्ष्यैतदुभयं श्रेयानदाहोनभक्ष-

जब कि हमारे साथ प्राण छोडना अथवा हमें छोड़कर अपने को बचाना, इन दो विषयों की भलेप्रकार आलोचनाकर वही करना चाहिये । जिस के करनेसे हमारे कुलका मंगल हो तू फिर सर्वनाशी पुत्रस्नेह मत कर, ऐसा करने से स्वर्गलोकदायी पुत्र चाहनेवाले पिता का सब कर्म व्यर्थ होजायगा।१५।जरिता बोली, कि हेपुत्रो ! इस वृक्ष के निकट धरती के भीतर मूषका बिल दीख पडता है तुम तुरन्त इसमें जा घुसो, यहां अग्निका भय जाता रहेगा। तुम्हारे इस में जानेपर मैं मिट्टी से इस बिलका मुंह तोप दूंगी, अब प्रज्वलित अग्नि से बचनेका यही एक उपाय देखतीहूं । जब आग बुझेगी तब मैं आकर बिलके मुखसे राखका ढेर हटादूंगी तुम अग्निसे बचने के लिये मेरा यहवचन मानो।१८। शार्ङ्गकों ने कहा, कि हमारेपंख नहीं जमे हैं, हम मांस पिंडही हैं, सो मांस खानेवाले मूष अवश्य हमको नष्ट करेंगे, इस भयकी बातको जान बूझकर हम इस के भीतर घुस नहीं सकते । अब क्योंकर अग्नि हमें न जलावे क्योंकर मूष हमे न खावे, क्योंकर पिताका पुत्र उपजाना व्यर्थ न होवे, इनमेंसे किसीका एकभी उपाय नहीं देखते, सो निश्चयही हमारी मृत्यु आ पहुँचीहै । पर बिलमें घुसें तो मूष से और बाहर रहें तो

them and save herself from fire, for by so doing she would be able to produce more offspring, that she should soon decide whether to leave or die with them and that by her death the family line would become extinct and the purpose of their father would come to nought." 15. *Jarita* replied, " I see a rat's hole in the vicinity of this tree. You shall have no fear from fire if you will enter it. I shall cover the mouth of the hole with dust. I see no other way to save you from fire. I shall remove the heap of ashes from the mouth of the hole. You must mind my advice." 18. The young ones replied, " We are yet pieces of flesh without feathers. The rats will devour us. Knowing this we dare not enter this hole. We see no way to save ourselves from burning, to escape being devoured by rats, to render the purpose of our father in bringing us forth unfutile, or to

जम् ॥ २१ ॥ गर्हितं मरणंनः स्यादाखुना भक्षिते बिले । शिष्टादिष्टः परित्यागः शरीरस्य हुताशनात् ॥ २२ ॥

इत्यादिपर्वणि मयदर्शनपर्वणि जरिताविलापे एकत्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २३१ ॥

जरितोवाच ॥ अस्माद्बिलान्निष्पतित मारवुं श्येनो जहारतम् । क्षुद्रंपद्भ्यांगृहीत्वा च यातोनात्रभयंहिवः ॥१॥ शार्ङ्गका ऊचु ॥ नहृतंतत्रयंविद्म श्येनेनाखुं कथञ्चन । अन्येऽपिभवितारोऽत्र तेभ्योऽपिभयमेवनः ॥ २ ॥ संशयोवह्निरागच्छेद्दृष्टं वायोर्निवर्त्तनम् । मृत्युर्नोविलवासिभ्यो विलस्यान्नात्रसंशयः ॥ ३ ॥ निःसंशयात्संशयितो मृत्युर्मातर्विशिष्यते । चरखेत्वंयथान्यायं पुत्रानाप्स्यसिशोभनान् ॥ ४ ॥ जरितोवाच । अहंवेगेनतंतान्तमद्राक्षं पततांवरम् । बिलादाखुंसमादाय श्येनंपुत्रामहाबल-

अग्नि से मरेंगे, इन दो मृत्युओं के विषय में समझ बूझकर देखनेसे यही युक्तिहोती है, कि अग्नि से जल मरना अच्छाहै, मूष से खायेजाना उचित नहीं है, क्योंकि शिष्ट हुताशनके मुख में देहछोडने से सुगतिहोगी, विल में मूष से खाये जाने से अनुचित मृत्यु होगी ॥ २२ ॥

अध्याय २३२ ॥

जरिताबोली, कि इस गढे से एक छोटा मूष निकलाथा, एक बाज आकर पावोंसे उसे पकड ले गयाहै, इस विल में तुमको भय नहीं है शार्ङ्गकों ने कहा, कि हम बाजसे मूषके ले जाने का ब्योरा नहीं जानते, और लेभी गयाहो तो इस बिलमें बहुत और मूष भी होसकतेहैं, उनसे हमको बिना सन्देह भयहोरहाहै।२।और यहां अग्नि आवें कि नहीं इस में सन्देहहै, क्योंकि उलटी वायुसे अग्नि का बुझनाभी देखा गयाहै, सो बिल में रहने से निश्चयही हमारी मृत्युहोगी और बाहर रहने से मृत्युहोनेमें सन्देहहै । हेमाता ! जिस स्थान में मृत्युका होना निश्चय है, उस से वह किसीप्रकार अच्छा है, कि जहां मृत्यु में सन्देहहै, सो न्याय के अनुसार तुमको आकाशहीको उडजाना उचितहै तुम्हारा जीवन बचे तो तुम दूसरे अच्छे पुत्र पासकोगी ।४। जरिता बोली, कि हे बेटो ! जब पक्षी

save the life of our mother. Our death is certain—we shall be devoured by rats if we enter the hole and shall be burnt by fire if we remain here. Of the two deaths, the latter seems preferable. To be eaten by rats in worse; (for by going into the mouth of fire we shall gain a state of bliss.) It is an improper death to be eaten by rats.22.

CHAPTER CCXXXII

Jarita said, "A little mouse had come out of this hole and was seized by a hawk," The young ones said, "We know nothing of the mouse being taken by the hawk and supposing a mouse was so seized, there may be others in the whole and may eat us. Agni's coming this way is not certain, for a contrary wind can turn it away.

म् ॥ ५ ॥ तंपतन्तंमहावेगात्त्वरिता पृष्ठतोऽन्वगाम । आशिषोऽस्यप्रयुञ्जाना हरतो
मूषिकंबिलात् ॥ ६ ॥ योनोद्वेष्टारमादाय श्येनराजप्रधावसि । भवत्वंदिवमास्थाय
निरमित्रोहिरण्मयः ॥ ७ ॥ सयदाभक्षितस्तेन श्येनेनाखुःपतत्रिणा । तदाहंतमनुज्ञा
प्यप्रत्युपायांपुनर्गृहम् ॥ ८ ॥ प्रविशध्वंबिलंपुत्रा विश्रब्धानास्तिवोभयम् । श्येनेन
ममपश्यन्त्या हृतआखुर्महात्मना ॥ ९ ॥ शार्ङ्गका ऊचुः । नविद्मोहहृतंमातः श्येननाखुं
कथञ्चन । अविज्ञायनशक्यामः प्रवेष्टुंविवरंशुचः ॥ १० ॥ जरितोवाच । अहंतमभि-
जानामि हृतंश्येनेनमूषिकम् । नास्तिवोऽत्रभयंपुत्राः क्रियतांवचनंमम ॥ ११ ॥ शार्ङ्ग
का ऊचुः । नत्वंमिथ्योपचारेण मोक्षयेथाभयाद्धिनः । समाकुलेषुज्ञानेषु नबुद्धिकृतंम
वतम् ॥ १२ ॥ नचोपकृतमस्माभिर्नचास्मान्वेत्थयेवयम् । पीड्यमानाबिवर्षस्मान्

वह बाज बिलसे मूषको लेकर वेगसे भागा था, तब मैंने उस के पीछे दौडकर अशीस दियाथा, कि 'हे बाजराज! तुम हमारे शत्रुको लेकर भागतेहो; सो तुम बिना शत्रु देव लोकमें सुनहली देह पाकर बसो।७। अनन्तर उस बाज के मूषको खाजाने पर मैं उसे जताकर घरको लौट आई। हे बेटा! अब तुम चित्तमें कोई शंका न उठाकर बिलमें जाओ, वहां तुमको कोई शंका न होगी, महात्मा बाजने मेरेसामनेही मूषको खाडाला है शार्ङ्गोंने कहाः कि हे माता हमने नहीं देखा, कि बाज मूषको हर लेगयाहै, सो हम विशेष न जानकर बिलमें घुस नहीं सकते।१०।जरितावोली, कि बेटा तुम मेरीबात मानो, इस में तुम्हें कोई भय नहीं है, क्योंकि मैं जानतीहूं, कि बाज मूषको हर लेगया है। शार्ङ्गोंने कहा, कि हम यह नहीं समझते कि तुम झूठे उपचारसे हमारा भय भगातीहो, क्योंकि बुद्धि भयद्वारा बिगडनेसे जोकर्म कियाजाताहै, वह ज्ञान से नहीं होताहै।१२।हम ने कभी तुम्हारा कोई उपकार नहीं किया और तुम यहभी नहीं जानती कि हम कौनहैं,

---

Our death is certain if we enter the hole, but it is not so here. A place where death is possible is better than the one where it is certain. It would be reasonable for you to fly away to the sky. You will be able to produce other offspring if you can save your life." 4. *Jarita* said, " I had followed the hawk carrying the mouse and had blessed it saying that as he had caught our enemy he would live in the country of gods and get a golden body. I came back when the hawk had eaten the mouse. You should, therefore, have no fear from the mice. The hawk ate it in my presence." 9. The young ones again said, " We did not see the hawk carrying the mouse and can not enter the hole without knowing more." *Jarita* said, " My sons, you must listen to me. You have no fear, for I know that the hawk carried away the mouse." The young ones replied, " We donot understand why you are removing our fear by telling lies. One

कासतीकिंवयंतत ॥ १३ ॥ तरुणीदर्शनीयासि समर्थाभर्तुरेषणे। अनुगच्छपतिंमातः
पुत्रानाप्स्यसिशोभनान ॥ १४ ॥ वयमग्निंसमाविश्य लोकानाप्स्यामशोभनान्।
अथास्मान्नदहेदग्निरायास्त्वं पुनरेवनः ॥१५॥वैशम्पायनउवाच॥एवमुक्त्वाततःशार्ङ्गी
पुत्रानुत्सृज्यखाण्डवे। जगामत्वरितादेशं क्षेममग्नेरनामयम् ॥ १६ ॥ ततस्तीक्ष्णा-
र्चिरभ्यागात्त्वरितो हव्यवाहनः। यत्रशार्ङ्गाबभूवुस्ते मन्दपालस्यपुत्रकाः ॥ १७ ॥
ततस्तंज्वलितंदृष्ट्वा ज्वलनंतेविहंगमाः।जरितारिस्ततोवाक्यं श्रावयामासपावकम्॥१८।

इत्यादिपर्वणि मयदर्शनपर्वणि शार्ङ्गकोपाख्याने द्वात्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २३२।

फिर क्यों कष्ट उठाकर हमको बचानेकी चेष्टा कर रहीहो ? देखो न तो तुम हमारी कोईहो और न हम तुम्हारे कोई लगतेहैं। हेमा ! तुम युवती और रूपवती हो और पति ढूंढनेकी सामर्थ्यभी रखतीहो, सो तुम पतिके पीछे जाओ, उससे अच्छा पुत्र पा सकोगी। १४। हम अग्निमें घुसकर अच्छे लोक में जायँगे। यदि अग्नि हमको न जलावे, तो फिर तुम हमारे पास आना। वैशम्पायन ने कहा, कि शार्ङ्गी पुत्रों से यह बात सुनकर, उन्हें उस खाण्डववन में छोडकर तुरन्त ऐसी बिन पीडाकी जगहमें चली गयी, कि जहां अग्नि का भय नहीं था।१६। अनन्त अग्नि वेगसे और तेज शिखायें लिये मन्दपालके पुत्र शार्ङ्गकोंके घोसलेके पास आये। तब उन पक्षियोंने प्रज्वलित अग्निको देखा, और उनका ज्येष्ठ उस अग्नि को सुना सुनाकर कहने लगा ॥ १८ ॥

---

who loses his wits from fear can not act wisely. We have never yet done you any good and you donot know who we are. Why then, do you take the trouble to save us. We have no connection with you. Mother, you are young and beautiful and can seek out your husband. Go and seek him, so that you may get a good son by him. 14. We shall attain a better world if we are burnt by fire. You can come back to us if we are not burnt." Vaishampayan said that having heard this from her young ones, the mother flew away to a place of safety. In the meantime fire was coming on and reached near the nest. The birds, saw it and the eldest one spoke out in the hearing of Agni.



जरितारि रुवाच । पुरतःकृच्छ्रकालस्य धीमानजागर्तिपूरुषः । सकृच्छ्रकालं संप्राप्य व्यथांनैवेतिकर्हिचित् ॥ १ ॥ यस्तुकृच्छ्रमनुप्राप्तं निचेतानावबुध्यते । सकृच्छ्रकालेव्यथितो नश्रेयोविन्दतेमहत् ॥२॥ सारिसृक्क उवाच । धीरस्त्वमसिमेधावी प्राणकृच्छ्रमिदंचनः । प्राज्ञःशूरोबहूनांहि भवत्येकोनसंशयः ॥ ३ ॥ स्तम्बमित्र उवाच । ज्येष्ठस्तातोभवतिवै ज्येष्ठोमुञ्चतिकृच्छ्रतः । ज्येष्ठश्चेन्नप्रजानाति कनीयान् किंकरिष्यति ॥ ४ ॥ द्रोण उवाच॥हिरण्यरेतास्त्वरितो ज्वलन्नायातिनःक्षयम । सप्तजिह्वाननःक्रूरो लेलिहानोविसर्पति ।५। वैशम्पायन उवाच । एवंसम्भाष्यतेऽन्योन्यं मन्दपालस्यपुत्रकाः । तुष्टुवुःप्रयताभूत्वा यथाशृणुपार्थिव ।६॥ जरितारिरुवाच॥ आत्मासिवायोर्ज्वलन शरीरमसिवीरुधाम्।योनिरापश्चतेशुक्र योनिस्त्वमसिचाम्भसः ॥ ७ ॥ ऊर्ध्वंचाधश्चसर्पन्ति पृष्ठतःपार्श्वतस्तथा । आर्चिषस्तेमहावीर्य रश्मयःसवि

अध्याय २३३ ॥

जरितारि बोले, कि ज्ञानी जन मृत्युकाल के पहिलेसे जागते रहतेहैं, उनको कभी मृत्युकी पीडा सहनी नहीं पडती । विन चेतन जन मृत्युकाल आजाने पर सोतेहुए के समान रहताहै, उसको मृत्युकी पीडा भोगनी पडती है, और वह मोक्षको नहीं पासकताहै । सारिसृक्क बोला, हमारा यह प्राणका क्लेश आगया है, तुम धीर और बुद्धिमान हो, तुम्हीं हमारी रक्षा करो, क्योंकि बहुतेरों मेसे एकही पुरुष बुद्धिमान और शूरहोता है ।२। स्तम्बमित्र बोला, ज्येष्ठ भ्राता कनिष्ठों के त्राताहोते हैं, सो ज्येष्ठ भ्राताही विपतसे बचातेहैं । जो ज्येष्ठ भाई न बचावें तो कनिष्ठ क्या करसक्ताहै ।४। द्रोणबोला, कि वह कुटिल कर्मवाला सुवर्णरेता सात जीभ सात मुंह सहित वेगसे जलाता लहलहाता हमारे घोसलेपर आरहा है । वैशम्पायनने कहा, कि हे पृथ्वीनाथ ! मन्दपाल के पुत्रों ने ऐसा कह सुनकर जिसप्रकार अग्निका स्तव कियाथा, वह कहताहूं सुनो।६।जरितारिबोला, कि तुम वायुकी आत्माहो, तुम लताओंकी देहहो । हे शुक्र ! तुम्हारे उपजने का स्थान, जल है, और तुम जलके उपजाने का स्थानहो । हेमहावीर्य ! तुम्हारी शिखा सूर्यके उजाले के

CHAPTER CCXXXIII

Jaritari said, "The wise are wide awake before they die. They never suffer the pangs of death. An unwise one remains asleep till death. He suffers its pangs and connot get salvation." Sarisrikka said, "Our death is coming. You are wise and brave. Protect us. One out of many turns wise and brave." Stambmitra said, "Elder brothers protect the younger ones in trouble. What can the latter do if the former do not protect them." Dron said, "The cruel one of seven mouths and seven tongues in coming to our nest !"5.Vaishampayan continued that having said this the children of Mandpal began

सुर्पथः ॥ ८ ॥ सारिसृक उवाच । मातानप्रणष्टापितरं नविद्मःपक्षाजातानैवनो धूमकेतो । ननस्त्राताविद्यतेवै त्वदन्यस्तस्मादस्मांस्त्राहि बालांस्त्वमग्ने ॥ ९ ॥ यदग्नेतेशिवं रूपंयेच ते सप्त हेतयः । तेननः परिपाहित्वमार्त्तान्नः शरणैषिणः ॥ १० ॥ त्वमेवैकस्तपसेजातवेदो नान्यस्त्रप्ताविद्यतेगोषुदेव । ऋषीनस्मान्वालकान् पालयस्व परेणास्मान्प्रैहिवैहव्यवाह ॥ ११ ॥ स्तम्बमित्र उवाच । सर्वमग्नेत्वमेवैकस्त्वयिसर्वमिदंजगत् । त्वंधारयसिभूतानि भुवनंत्वंविभर्षिच ॥ १२ ॥ त्वमग्निर्हव्यवाहस्त्वं त्वमेवपरमंहविः । मनीषिणस्त्वांजानन्ति बहुधाचैकधापिच ॥ १३ ॥ सृष्ट्वालोकांस्त्रीनिमान् हव्यवाहकाले प्राप्तेपचसिपुनःसमिद्धः । त्वंसर्वस्यभुवनस्य प्रसूतिस्त्वमेवाग्ने भवसिपुनःप्रतिष्ठा ॥ १४ ॥ द्रोणउवाच । त्वमन्नंप्राणिभिर्भुक्तमन्तर्भूतो जगत्पते।

समान ऊंच नीचे पीछे किनारे और सब जगह फैली रहती हैं।८। सारिसृकबोला, कि हे धूमकेतो ! हमारी मां दृष्टि के बाहर उडगई है, पिताकोभी हम नहीं पहिचानते और अभीतक हमारे पंख नहीं जमे हम बहुत बच्चे हैं । हेअग्ने ! अब तुम्हारे विना हमारा बचानेवाला नहीं है, सो तुम हमको बचाओ। हे अग्ने ! तुम्हारा जो कल्याणकारी रूप और सात शिखा हैं, उन्हींसे हम भय खाये और शरण लिये हुओंको बचाओ ।१०। हे जातवेद ! तुम अकेलेही ताप फैलातेहो । हे देव ! किसी किरणको तुम्हारे विना ताप पहुंचाने वाला कोई नहीं है । हे हव्यवाहन ! हम ऋषि पुत्र और बच्चेहैं, हमारी रक्षाकरो हमारे यहांसे अन्य स्थानको जाओ । स्तम्ब मित्र बोला, कि हे अग्ने ! तुम अकेले सम्पूर्ण ब्राह्मण रूपी हो, तुम्हीं पर यह सम्पूर्ण जग विराजमान हैं; तुम जीवों को पालते हो, तुम तेजः पदार्थ हो तुम हव्यको वहन करते हो और तुम अच्छे हव्यरूपी हो । पण्डितलोग तुमको कारण रूपमें एकरूपी और कार्य्य रूपमें बहुरूपी जानते हैं । हे हव्यवाहन अग्ने तुम पहिले सृष्टिको रचतेहो, आगे काल आने पर तुम्हीं बढकर फिर उनका नाश करते हो, सो तुम्हीं संपूर्ण भुवनका उत्पत्ति--स्थानहो और प्रलय स्थानभी तुम्हीं हो।१४।द्रोण

to praise Agni in the following words: *Jaritari* said, " You are the soul of air and body of creepers, O Agni ! Shukr, the place of your birth is water and water comes out of you. Your streaks spread high, low and sideways like the light of the sun." 8. Sarsrikka said, " Our mother has flown away out of sight. We donot know our father and are yet unfledged and of very tender age. We have no protector except you. We are afraid of your auspicious looks and seven flames. Save us. You are the giver of heat and no ray can get heat without you. Carrier of sacrifices, we are rishi's children and young. Leave us and go away to some other direction," 11. Stamb-mitra said, " You are the representative of Brahmans and the stay of all the world. You give nourishment to living beings.

नित्यमव्रद्धःपचसि त्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ सूर्य्योभूत्वारश्मिभिर्ज्जातवेदो भू-
मेरम्भोभूमिजातान् रसांश्च । विश्वानादायपुनरुत्सृज्यकाले दृष्ट्वावृष्ट्याभावयसीहशुक्र
॥१६॥ त्वत्तएताःपुनःशुक्र वीरुधोहरितच्छदाः । जायन्तेपुष्करिण्यश्च सुभद्रश्चमहो-
दधिः ॥ १७ ॥ इदंवैसद्मतिग्मांशो वरुणस्यपरायणम । शिवस्त्राताभवास्माकं मास्मा
नद्यविनाशय ॥ १८ ॥ पिङ्गाक्षलोहितग्रीव कृष्णवर्त्मनहुताशन । परेणपैहिमुञ्चास्मा
न् सागरस्यगृहानिव ॥ १९ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तोजातवेदा द्रोणेनब्रह्म
वादिना । द्रोणमाहप्रतीतात्मा मन्दपालप्रतिज्ञया ॥ २० ॥ अग्निरुवाच । ऋषिर्द्रोण
स्त्वमसिवै ब्रह्मैतद्व्याहृतंत्वया । ईप्सितंतेकरिष्यामि नचतेविद्यतेभयम् ॥ २१ ॥

बोला, कि हे जगपते ! तुम जीवोंके भीतर रहकर बढ़तेहुए उनका खायाहुआ अन्न नित्य नित्य पचाते हो, सो सब भूत तुम्हारी ही शरण में रहते हैं । हे शुक्र ! हे जातवेद तुम सूर्य्य स्वरूपबनकर किरण से भूमिमें उपजा हुआ सब रस और धरतीमें स्थित जल लेकर समय समय पर फिर उसे वृष्टि द्वारा छोड़कर सब अनाज उपजातेहो । १६ । हे शुक्र ! तुम्हीं से यह सब पत्तेवाली लता, सरोवर और मङ्गल निधान समुद्र उपज रहे हैं । हे कडे किरणधारिन् ! हमारी यह देहरसनेन्द्रिय के साथ जलपति वरुण पर निर्भर है अत एव तुम जब उस जलके विधाता हो, सो हमारे कल्याणकारी हो, ऐसी दशामें हमको बचानाही तुमको उचित है, तुम आज हमको नष्टमतकरो ।१८। हे पिङ्गनेत्र ! हे लाल ग्रीव ! हे कृष्णवर्त्मन् । हे हुताशन ! तुम हमसे दूर रहो, सागरके पास बने घरके समान हमें छोड़ो । वैशम्पायन ने कहा, कि आगे जातवेदा अग्नि द्रोणकी यह बात सुन प्रसन्न हुए मन्दपालसे जो कुछ सुनाथा, स्मरणकर बोले।२०। हे द्रोण ! तुम ऋषि हो, तुमने जो कहा, वह वेदस्वरूप है, तुम्हारी अभिलाषा पूरी करूंगा, तुम भय मत खाओ ।

You are light. You carry the sacrifices and are a fit oblation to gods. (Learned men know you as carse in one shape alone and of many forms as effect.) You create the world in the beginning and destroy it again in time. You are, therefore, the creator and destroyer of the world." Dron said, "Residing within the bodies of living beings, you digest their food. They are, therefore, under your protection. In the shape of the sun, you draw water from the earth by your rays and again send it in time as rain which produces grain.16.All these leafy creepers, tanks and the sea which gives blessings, are produced from you. Our structure owes its existence to water and as creator of water you are our benefactor. Under these circumstances it is proper for you to protect us and not to burn us. Keep aloof from us and leave us like a house constructed near the sea." Vaishampayan said that Agni was pleased to hear

मन्दपालेनवैयूयं ममपूर्वंनिवेदिताः । वर्ज्जयेःपुत्रकान्महयंदहन् दावमितिस्मह ॥ २२ ॥ तस्यतद्वचनंद्रोण त्वयायच्चेहभाषितम् । उभयंमेगरीयस्तु ब्रूहिकिंकरवाणिते । भृश प्रीतोऽस्मिभद्रंते ब्रह्मनस्तोत्रेणसत्तम ॥ २३ ॥ द्रोण उवाच । इमेमार्ज्जारकाः शुक्र नित्यमुद्वेजयन्तिनः । एतान्कुरुष्वदंष्ट्रास्त्वं हुताशनसबान्धवान् ॥ २४ ॥ तथातत् कृतवानग्निरभ्यनुज्ञाय शार्ङ्गकान् । ददाहखाण्डवंदावं समिद्धोजनमेजय ॥ २५ ॥ इत्यादिपर्वणि मयदर्शनपर्वणि शार्ङ्गकोपाख्याने त्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः ॥ २३३ ॥

वैशम्पायन उवाच । मन्दपालोऽपिकौरव्य चिन्तयामासपुत्रकान् । उक्त्वापि चसतिग्मांशु नैवशर्माधिगच्छति ॥ १ ॥ सतप्यमानःपुत्रार्थे लपितामिदमब्रवीत् । कथंनुशक्ताःशरणे लपितेममपुत्रकाः ॥ २ ॥ वर्द्धमानेहुतवहे वातेचाशुप्रवायति । अ

पहिले मन्दपाल ने तुम्हारे लिये मुझसे कहा था, कि "जब तुम खाण्डव वनको जलाओ तब मेरे पुत्रोंको न जलाना।" ।२२।हेद्रोण ! मन्दपालकी वह बात और तुम्हारी यहबात हमारे लिये बहुत अधिक हुई है, सो कहो, तुम्हारे लिये मुझको क्या करना होगा ? हे ब्रह्मश्रेष्ठ ! तुम्हारी इस स्तुति पर मैं बड़ा कृतार्थ हुआ हूं तुम्हारा मङ्गल होगा । द्रोण बोला, कि हे हुताशन शुक्र ! यह सब बिल्ली नित्य हमको सताती हैं, सो तुम इन्हें वंश सहित जलाओ । अनन्तर अग्निने शार्ङ्गकोंको जता जताकर उनकी प्रार्थना पूरी की और चढकर खाण्डव बनको जलाने लगे ॥ २५ ॥

अध्याय २३४ ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि हे कौरव्य इधर वह मन्दपाल तेज प्रकाशवान अग्नि से वैसा वचन कहने परभी पुत्रोंके लिये सोचमें रहे, किसीप्रकार मनको स्थिर नहीं कर सके । वह पुत्र के लिये मनको उदासकर लपिता से बोले, लपिते नहीं जानता मेरे बेटे जो चलना नहीं जानते हैं कैसेहैं ।२। जब वायु चलने के साथ अग्नि तेजहोगा तबमेरे

this from Dron and remembering the words of Mandpal, said, "Dron, you are a Rishi and have spoken in accordance with the Vedas. I grant your request. Have no fear. Mandpal has already requested me to spare you at the time of burning the forest. 22. Your words in addition to those of Mandpal have great weight upon me. Let me know, what am I to do for you. I am much pleased to hear the praise from you. You are fortunate." Dron said, "These cats are a source of constant trouble to us. Burn them all." Agni granted the request and proceeded to burn the forest of Khandav.

CHAPTER CCXXXIV

Vaishampayan said that Mandpal was anxious for the safety of his children in spite of Agni's promise and could not control himself. Being troubled in his mind he said to Lapita, "I know

सपर्थात्विमोक्षाय भविष्यन्तिममात्मजाः ॥ ३ ॥ कथन्त्वशक्तात्राणाय माताःतेषांतप-
स्विनी । भविष्यतिहिशोकार्त्ता पुत्रत्राणमपश्यति ॥ ४ ॥ कथमुड्डीपनेऽशक्तान् प-
तनेचपममात्मजान् । सन्तप्यमानाबहुधा वाशमानाप्रधावति ॥ ५ ॥ जरितारिःकथं
पुत्रःसारिसृक्कः कथश्चमे । स्तम्बमित्रः कथंद्रोणः कथंसाचतपस्विनी ॥ ६ ॥ लालप्य-
मानंतमृषिं मन्दपालंयथावने । लपितामत्युवाचेदं सासूयमिवभारत ॥ ७ ॥ नतेपुत्रेष्व
वेक्षास्ति यानृषीनुक्तवानसि । तेजस्विनोवीर्य्यवन्तो नतेषांज्वलनाद्भयम् ॥ ८ ॥
त्वयाग्नौतेपरीताश्च स्वयंहिममसन्निधौ । प्रतिश्रुतंतथाचेति ज्वलनेनमहात्मनः ॥ ९ ॥
लोकपालोनतां वाचमुक्त्वामिथ्या करिष्यति । समक्षंबन्धकृत्येन तेनतंस्वस्थमानसम्
॥ १० ॥ तामेवतुममामित्रां चिन्तयन्परितप्यसे । ध्रुवंमयिनतेस्नेहो यथातस्यांपुरा
भवत् ॥ ११ ॥ नहिपक्षवतान्याय्यं निःस्नेहेनसुहृज्जने । पीड्यमानउपद्रष्टुं शक्तेनात्मा

बेटे अग्नि से बच नहीं सकेंगे, उनकी माता क्योंकर उन बच्चों को बचा सकेगी ? वह तपस्विनी पुत्रोंको बचाने का उपाय न देखकर शोक से विकलहोगी ।४। क्योंकर ऊपर उड़ने में असमर्थ मेरे बच्चों को लेकर हृदय में दुःख पा बहुतरोती पीटती दौडेगी हा बेटा जरितारि क्योंकर जियेगा, सारिसृक्क क्योंकर प्राण बचावे गा, स्तम्ब मित्र क्योंकर बचेगा, द्रोण क्योंकर रक्षा पावेगा, मेरी वह तपस्विनी स्त्री क्योंकर जीसकेंगी।६।हेभारत महर्षि मन्दपाल बन में इसप्रकार विलप रहे थे, वह देखकर लपिता द्वेषवश उनसे कह नेलगी, कि तुमने जिन पुत्रोंकी बातकही उन के लिये मत सोचो, वे तेजस्वी और वीर्य वन्तहैं, अग्नि से उनको भय नहीं है।८। और तुमने स्वयं उन पुत्रोंकी रक्षाके लिये अग्नि से कहा था। महात्मा हुताशन नेभी तथास्तु कहकर उस बातको मान लियाथा। वह लोकपालहोकर कभी कहीहुई बातकी विरुद्धता नहीं करेंगे इस लिये इस विषयमें तुम्हारा चित्त स्वस्थहै।१०।वास्तवमें तुम्हारा मन बन्धु के कार्यका विरोधी है तुम मेरीशत्रु जरिताहीको स्मरणकर व्याकुलहोरहेहो। पहिले जरिता पर तुम्हारा जैसा स्नेह था अब मुझ

nothing about my children who cannot walk. They cannot escape from fire when it is inflamed by wind. How can their mother protect them ? How sorry she would be when she sees no way to save her unfledged young ones ? How can my ascetic wife remain alive ?"6. Maharshi *Mandpal* was thus crying in the wilderness when Lapita said to him with jealousy, "Donot be anxious for your children. They are glorious and powerful and have no fear from Agni, for you yourself recommended them to Agni and he promised to spare them. Being the protector of the world he cannot break his promise. Be cheerful. In fact your mind should be free from such care. You are anxious for the safety of my enemy, *Jarita*, and donot love me as you loved her. Those who have two sides, may be anxious for

कथञ्चन ॥ १२ ॥ गच्छत्वंजरितामेव यदर्थंपरितप्यसे । चरिष्याम्यहमप्येका यथाकु पुरुषाश्रिता ॥ १३ ॥ मन्दपाल उवाच । नाहमेवंचरेलोके यथात्वमभिमन्यसे । अपत्यहेतोर्विचरे तच्चकृच्छ्रगतंमम ॥ १४ ॥ भूतंहित्वाचभाव्यर्थे योऽवलम्बेत्समन्द-धीः । अवमन्येतंलोको यथेच्छसितथाकुरु ॥ १५ ॥ एषाहिप्रज्वलन्नाग्निर्लेलिहानो महीरुहान् । अद्विग्नेहृदिसन्तापं जनयत्यशिवंमम ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्माद्देशादतिक्रान्ते ज्वलनेजरितापुनः । जगामपुत्रकानेव जरितापुत्रगृद्धिनी ॥१७॥ सातान्कुशलिनःसर्वान् विमुक्तान्जातवेदसः । रोरूयमाणानददृशे वनेपुत्रान्निरामयान ॥ १८ ॥ अश्रूणिमुमुचेतेषांदर्शनात् सापुनःपुनः । एकैकशश्चतान्सर्वान् क्रोश-

पर वैसा नहीं है, जिनके दोपक्ष हैं वह स्त्री पुत्रादि स्वजनों को कष्ट में पडने से स्नेह खो उनकी उपेक्षा कर सकताहै, उसको कभी आत्मपक्षकी उपेक्षा न करनी चाहिये।१२। सो अब तुम जिसके लिये शोक करते हो, उस जरिताही के निकट चले जाओ मैंने न समझ बूझकर जैसे पुरुषकी शरण लीथी, उसी के फल से अकेली चरा करूंगी।मन्दपाल बोला, तुम मुझको जैसा समझ रही हो, मैं उस भाव से नहीं चलता हूं, पर केवल सन्तान उपजानेही के लिये ऐसे फिर रहाहूं, अब मेरी उपजायी सन्तान कष्ट में पडी हैं।१४।जो गये विषयको छोड भावीकी आशाकरताहै, वह मूढजन लोगोंका अनादर प्राप्त करताहै, सो तुम जो चाहतीहो सो करो, मेरा हृदय उन सन्तानोंके लिये बड़ा उदास है यह प्रज्वलित अग्नि वृक्ष को चाटते हुए मेरे उस विकल हृदय में अमंगलका भय और दुःखहीको लारहाहै ।१६। वैशम्पायन ने कहा, अनन्तर अग्निके शार्ङ्गकों के घोसले को छोडकर आगे बढनेपर जरिता रोतीपीटती हुई तथा पुत्रोंको ढूंढती फिरती वहांजा पहुँची और देखा, कि सब पुत्र वनमें अग्निसे बचे चंगे और कुशल से हैं।१७।अनन्तर वे माता को देखकर रोने लगे। जरिता उनको देखकर बार बार आंसू गिराने लगी और

the safety of their wives and children. They should not care for them. 12. You may now go to *Jarita* for whom you are so anxious. I shall roam alone as a punishment for having loved such a man knowingly." *Mandpal* said, "I am not as you think me to be. I am here for the production of offspring. My children are now in trouble. He who does not care for the past in the hope of future is regarded as a fool and is not respected by the wise. You may do as you like. I am very anxious for them. The advancing fire is giving me trouble." Vaishampayan said that when fire had left the nest of Sharangaks and gone forward, *Jarita* came weeping in search of her young ones and saw them safe and sound. They began to weep as they saw her. *Jarita* wept tears of joy and embraced them one by one. At this time *Mandpal* reached there, but

मानान्वपद्यत ॥ १९ ॥ ततोऽभ्यगच्छत्सहसा मन्दपालोऽपिभारत । अथतेसर्वएवैना नाभ्यनन्दंस्तदासुताः ॥ २० ॥ लालप्यमानमेकैकं जरितांचपुनःपुनः । नचैवोचुस्तदा किंचित्तमृषिंसाध्वसाधुवा ॥ २१ ॥ मन्दपाल उवाच । ज्येष्ठःसुतस्तेकतमः कतमस्तस्यचानुजः । मध्यमःकतमश्चैव कनीयानकतमश्चते ॥२२॥ एवंब्रुवन्तंदुःखार्त्तंकिंमांन प्रतिभाषसे । कृतवानापिहित्यागं नैवशान्तिमितोलभे ॥ २३ ॥ जरितोवाच । किन्नु ज्येष्ठेनतेकार्य्यं किमनन्तरजेनते । किंवामध्यमजातेन किंकनिष्ठनवापुनः ॥ २४ ॥ यांत्वंमांसर्वतो हीनामुत्सृज्यासिगतःपुरा । तामेवलपितांगच्छ तरुणींचारुहासिनीम् । २५ ॥ मन्दपाल उवाच । नस्त्रीणांविद्यते किंचिदमुत्रपुरुषान्तरात् । सापत्नकमृते लोके नान्यदर्थविनाशनम् ॥ २६ ॥ वैराग्निदीपनंचैव भृशमुद्वेगकारिच । सुव्रताचापि कल्याणि सर्वभूतेषुविश्रुता ॥ २७ ॥ अरुन्धती महात्मानं वशिष्ठंपर्य्यशंकत । विशुद्ध

उनको हर घडी चिल्लाते देखकर धीरे धीरे सबको निकट जाकर गले लगाया ।१९। हे भारत ! इस अवसर में महर्षि मन्दपाल एकायक जा पहुंचे, उनके पुत्रोंने उनको देख कर आनन्द प्रकाश नहीं किया । वह ऋषि हर पुत्र और जरितासे बार बार सम्भाषण करने लगे, पर उन्होंने भला बुरा कुछभी उत्तर नहीं दिया । आगे मन्दपाल जरिताको नाम लेकर बोले, कौन तुमारा बडा बेटा, कौन मझला, कौन तीसरा और कौन छोटा है।२२।मैं दुःखवश बार बार तुम से यह पूंछताहूं तुम क्यों प्रतिउत्तर वा सम्भाषण नहीं करतीहो । मै तुम्हें छोडकर यहां से चले जाकर शान्ति पा नहीं सका । जरिता ने कहा तुमको बड़े बेटे, मझले तीसरे बेटेवा छोटे बेटेसे क्या प्रयोजन है पहिले तुम ने मुझको हर बातमें निकृष्ट देखाथा, जिसके पास गये थे, अब उस मधुरहासिनी युवती लपिताहीके पास जाओ ।२५। मन्दपाल बोला, नारियों के लिये सौत वा दूसर पुरुष के बिना लोक इसमें अधिक शोचनीय बैरकी आग जलानेवाला और परलोकमें पुरुषार्थ नष्टकारी और कुछ दीख नहीं पड़ता सप्तर्षि के बीच में स्थित ऋषिश्रेष्ठ महानुभव वसिष्ठ

his children did not express any joy at seeing him. The rishi talked again and again with *Jarita* and the children but, they gave him no reply. *Mandpal* again addressed *Jarita* and asked her, " Which is the eldest born, which second, which third and which the youngest?22. I ask you again and again, but you give me no reply. I could not get peace of mind from the time I left you." *Jarita* replied, " What have you to do with the children ? You found out defects in me and went to Lapita of sweet smiles. Go to her again," *Mandpal* replied, " There is none in this world more inimical, or destroyer of glory in the next, than a cowife. The great rishi, Vasisth, sitting among seven rishis and pure-minded, always loved his wife, but in spite of all that love virtuous Arundhati accused

भावमत्यन्तं सदाप्रियहितेरतम् ॥ २८ ॥ सप्तर्षिमध्यगंवीरमवमेनेच तंमुनिम् । अ-
पध्यानेनसातेन धूमारुणसमप्रभा । लक्ष्यालक्ष्यानाभिरूपा निमित्तमिवपश्यति ।२९
अपत्यहेतोःसंप्राप्तं तथात्वमपिमामिह । इष्टमेवंगतंहित्वं सातथैवाद्यवर्त्तते ॥ ३० ॥
नहिभार्य्येतिविश्वासः कार्य्यःपुंसाकथञ्चन । नहिकार्य्यमनुध्याति नारीपुत्रवतीसती
॥ ३१ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्तेसर्वएवैनं पुत्राःसम्यगुपासते । सचतानात्म-
जान् सर्वानाश्वासयितुमुद्यतः ॥ ३२ ॥ मन्दपाल उवाच । युष्माकमपवर्गार्थं विज्ञप्तो
ज्वलनोमया । अग्निनाचतथेत्येवं प्रतिज्ञातंमहात्मना ॥ ३३ ॥ अग्नेर्वचनमाज्ञाय मा-
तुर्धर्मज्ञतांचवः । भवतांचपरंवीर्य्यं पूर्वंनाहमिहागतः ॥ ३४ ॥ नसन्तापोहिवःकार्य्यः
पुत्रकाहृदिसांप्रति । ऋषीन्वेदहुताशोऽपि ब्रह्मतद्विदितञ्चवः ॥ ३५ ॥ वैशम्पायनं

अति पवित्र स्वभावी और सदा पत्नी के प्रेमी और हितकारी कार्य में लगे रहते थे तिस
परभी सर्व लोकोंमें प्रशंसिता सुव्रता अरुन्धतीने इन ऋषिवर वसिष्ठको व्यभिचार का
कलंक लगाकर अनादर कियाथा । २८ । वह कल्याणी अरुन्धती वैसी अनुचित चिन्ता
करने पर धुंआ और सूर्यसमान प्रकाशवती, बिन देखे रूप धरी कभी दीखती कभी
न दीखती कुलक्षणोंके समान लोगोंकी आंखोंमें पडती है ।२९। वसिष्ठ जैसे अरुन्धतीके
अनिष्ट नहीं थे मैंभी वैसेही तुम्हारा अनिष्ट नहीं हूं, मैं केवल सन्तानहीके लिये मिलाहूं,
ऐसी दशा में तुम मुझपर अरुन्धतीके समान व्यवहार करती हो; स्त्रियों को भार्या कह
कर कदापि न विश्वास करनाचाहिये, उनके पुत्र होनेसे वे पतिकी सेवादि कार्य अवश्य
कर्तव्य करके नहीं समझती।३१।वैशम्पायनने कहा, कि अनन्तर उनके पुत्र उनकी उपा-
सना में प्रवृत्तहुए; वहभी उन पुत्रोंको ढाढस देनेलगे । मन्दपाल बोले, मैंने तुमको अग्नि
में जलजाने से बचाने लिये महानुभव अग्नि को जतायाथा, उसपर उन्होंनेभी तथास्तु
कहकर मान लियाथा, मैं उन अग्निकी बात तुम्हारे माताकी धर्मनिष्ठा और तुम्हारेवीर्य
को स्मरणकर पहिले यहां नहीं आयाथा।३४।हे बेटो ! तुम मुझसे दुःख मत मानो । तुम

him of adultery and she is seen like a harlot by the people on account of her own fault.29. Vashisth was no more the enemy of Arundhati than I am yours. I had formed connection with you to produce offspring and you behave with me like Arundhati. Women should never be trusted as wives. They do not think it their duty to attend upon their husbands when children are born to them." Vaishampayan said that after this the children praised their father and he comforted them in return.32. Mandpal said, "I had requested Agni to spare you and he had granted my request. I did not come to you earlier on account of Agni's promise, your mother's piety and your prowess. Donot be displeased with me, my sons. You are famous scholars of the Vedas. Agni knows you well." Vaisham-

उवाच । एवमाश्वासितानपुत्रान भार्य्यामादायसद्विजः । मन्दपालस्ततोदेशादन्यं देशं जगामह ॥ ३६ ॥ भगवानपितिग्मांशुः समिद्धःखाण्डवंगतः । ददाहसहकृष्णाभ्यां जनयन्जगतोहितम् ॥ ३७ ॥ वसामेदोवहाःकुल्यास्तत्र पीत्वाचपावकः । जगामप-रमांतृप्तिं दर्शयामासचार्जुनम् ॥ ३८ ॥ ततोऽन्तरिक्षाद्भगवानवतीर्य्य पुरन्दरः । मरुद्गणैर्वृतःपार्थं केशवंचेदमब्रवीत् ॥ ३९ ॥ कृतंयुवाभ्यां कर्मेदममरैरपि दुष्करम् । वरंवृणीतंतुष्टोऽस्मि दुर्लभंपुरुषेष्विह ॥ ४० ॥ पार्थस्तुवरयामास शक्रादस्त्राणिसर्व-शः । प्रदातुंतच्चशक्रस्तु कालंचक्रेमहाद्युतिः ॥ ४१ ॥ यदाप्रसन्नो भगवान्महादेवो भविष्यति । तदातुभ्यंप्रदास्यामि पाण्डवास्त्राणिसर्वशः ॥ ४२ ॥ अहमेवचतंकालं वेत्स्याभिकुरुनन्दन । तपसागहताचापि दास्यामिभवतोऽप्यहम् ॥ ४३ ॥ आग्नेया-निचसर्वाणि वायव्यानिचसर्वशः । मदीयानिचसर्वाणि ग्रहीष्यसिधनञ्जय ॥ ४४॥

वेदमें प्रसिद्ध, ऋषिहो, अग्निभी तुमको जानते हैं । बैशम्पायन ने कहा, कि अनन्तर ऋषि मन्दपाल पुत्रोंको समझा बुझाकर पत्नी को साथलेकर वहांसे दूसरे स्थानकोगये।३६। भगवान अग्नि ने इसप्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुनकी सहायता से जगतके हितके निमित्त खाण्डवबन को जलाया । उस स्थान में मेद और बसाकी नदी सोखकर परम परितृप्त होकर अर्जुन के सामने प्रगटहुए ।३६। अनन्तर भगवान इन्द्र देवोंसे घेरेजाकर आकाश मण्डल से उतरकर अर्जुन और केशव से बोले, कि जो कर्म देवतालोगभी सहज में नहीं कर सकते, तुमने उसे पूरा किया है, अब मैं तुम पर प्रसन्न हूं, तुम वर मांगो, यद्यपि पुरुष के लिये वह दुर्लभहो तौभी तुमको दूंगा।४०।अनंतर पार्थने इन्द्रजीसे सबअस्त्र मांगे । अति द्युतिमान देवराज उन्हें देनेका काल निश्चयकर बोले, कि हे पाण्डव ! जब भगवान महादेव तुमपर प्रसन्नहोंगे, तब मैं तुमको सब अस्त्र देदूंगा।४२।हेकुरुनन्दन!जब उन अस्त्रों के देनेका काल आपहुँचेगा तब मैं जान लूंगा, मैं तुम्हारी महा तपस्या से तुमको सब अग्न्यास्त्र सब वायव्य अस्त्र और अपने दूसरे अस्त्रोंकोभी देदूंगा ।४४। तुम

payan said that having comforted the children, *Mundpal* went elsewhere with his wife.36, Bhagwan Agni had thus burnt the forest of Khandav for the good of the world with the help of Shree Krishna and Arjun and having soaked all the fat and blood he appeared before Arjun. Indra also surrounded by gods came down there from the sky and said, "You have done the work which even the gods can not do with ease. I am now much pleased with you. You may ask me a boon and I shall grant it even if it be difficult to obtain." Upon this Arjun requested him to give his weapons. Indra said that he would give him the weapons if he pleased *Mahadeo*, and that he would give him all the missiles thrown by air and fire at the proper time. Vasudev asked the boon of his own perpetual friendship with Arjun

वासुदेवोऽपिजग्राह प्रीतिंपार्थेनशाश्वतीम् । ददौसुरपतिश्चैव वरंकृष्णायधीमते ।४५।
एवंदत्त्वावरंताभ्यां सहदेवैर्मरुत्पतिः । हुताशनमनुज्ञाप्य जगामत्रिदिवंप्रभुः ॥४६॥
पावकश्चतदादावं दग्ध्वासमृगपक्षिणम् । अहानिपञ्चचैकंच विररामसुतर्पितः ।४७।
जग्ध्वामांसानिपीत्वाच मेदांसिरुधिराणिच । युक्तःपरमयाप्रीत्या तावुवाचाच्युतार्जुनौ ॥ ४८ ॥ युवाभ्यांपुरुषाग्राभ्यां तर्पितोऽस्मियथासुखम् । अनुजानामिवांवीरौ चरतंयत्रवाञ्छितम ॥ ४९ ॥ एवंतौसमनुज्ञातौ पावकेनमहात्मना । अर्जुनोवासुदेवश्च दानवश्चमयस्तथा ॥ ५० ॥ परिक्रम्यततःसर्वे त्रयोऽपिभरतर्षभ । रमणीयेनदीकूले सहितासमुपाविशन् ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासक्यां आदिपर्वणि मयदर्शनपर्वणि वरप्रदानेचतुस्त्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २३४ ॥

समाप्तं मयदर्शनपर्वणि आदिपर्वंच ॥

लेना अनन्तर वासुदेवने प्रार्थनाकी, कि अर्जुनसे उनका सदा प्रेम बनारहे । देवराजने सुबुद्धिवान श्रीकृष्णको वर दिया, प्रभु देवराज इस प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुनको वर देकर हुताशन से सम्भाषण करके देवलोकमें गये ।४६। भगवान पावक मृग पक्षियों के सहित खाण्डववन को जलाकर अति तृप्तहोकर पन्द्रह दिन के पीछे बुझगये । वह रक्त मेद और मांसखा परम प्रसन्नहो श्रीकृष्ण और अर्जुन से बोले।४८। कि तुम दोनों वीर और पुरुषों में श्रेष्ठहो, मैं तुम्हीं से बड़ा सुखपाकर तृप्तहुआ, अब आज्ञा करता हूं, कि तुम्हारी गति न रुकेगी, जहां चाहोगे, वहीं जासकोगे । हे भरतश्रेष्ठ ! महात्मा पावकके उनको ऐसी आज्ञा देनेपर अर्जुन वासुदेव और मय दानव यह तीन एकत्रहोकर कुछ काल घूम फिरकर सुन्दर नदी तटपर जाबैठे ॥ ५१ ॥ आदिपर्व समाप्त ॥

---

and Indra granted the request. Having granted these boons to Krishn and Arjun and talked with Hutashan (Agni), Indra went back to the country of gods.46.Having satisfied himself by burning all the creatures the forest of Khandav, Agni extinguished his flames and being much pleased he said to Shree Krishn and Arjun, " You two are the bravest and best of men, I am much pleased with you. I grant you the boon of being able to go everywhere without hinderance." *After* this conversation with *Agni*, *Arjun*, *Vasudev* and *Maya* went together to different places till, at last, they came to the charming bank of a river."51.



IMPORTANT NOTICE.

By the grace of God the Adi Parb of the Mahabharat has come to end. It is the largest Parb and has taken nearly a year to complete. Our year began in May 1902 and must come to its end in April 1903. We had promised to give 1200 pages a year to our subscribers. The year has come to an end before 1200 pages could be sent. We promise, however, to make up the deficiency within the next three months i. e., in addition to the 300 hundred pages of the three months they will have the pages that are sent short of 1200. The next number will be ready in the first week of May 1903 *subscribers are requested to send their subscriptions for the next year as soon as possible* or we shall have to send the next number by V. P. Subscribers will kindly quote their number in the coupon of the money order.

RAM KRISHNA & Co.
MORADABA .

आवश्यक सूचना.

ईश्वरकी कृपा से महाभारत का आदिपर्व पूराहुआ—यह पर्व सबसे बड़ाहै, लगभग एक साल में पूराहुआहै—हमने मई सन् १९०२से महाभारत छापना आरम्भकिया था अब अप्रैल १९०३ है-हमने ग्राहकोंको १२०० पृष्ठ देनेको कहाथा परन्तु पूरे नहीं होसके—यह कमी अगले तीन महीने में पूरीकी जायगी। जूलाई तक १५०० पृष्ठ पूरे होंगे—अगला अंक मई १९०३ के पहिले सप्ताह में तय्यारहोगा। अतएव निवेदनहै कि आगामी वर्ष का चंदा इस अंकके पहुँचतेही मनी आर्डर द्वारा भेजें—ग्राहक नं० अवश्य कौपन पर लिखदें।

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद.

आदिपर्वका सूचीपत्र

